शास्त्र-चर्चा

कृतघ्न

ब्रह्मघ्ने च सुरापे च
चौरे भग्नव्रते तथा ।
निष्कृतिर्विहिता सद्भि
कृतघ्ने नास्ति निष्कृति ।।
(महाभारत मोक्ष धर्म पर्व)

ब्रह्महत्यारे, मद्यपी, चोर और व्रत भग करने वाले मनुष्य को महात्माओ ने प्रायश्चित बताया है किन्तु कृतघ्न के लिए कोई प्रायश्चित नही ।

वेद

वेदाश्च वदितव्य च
विदित्वा च यथास्थितिम ।
एव वेद विदित्याहु-
रतोऽन्यो वातरेचक ।

जो वेदो और उनके द्वारा जानने योग्य को ठीक-ठीक जानता है उसी को वेद वेत्ता कहते हैं । जो अन्य लोग वेद नही पढते वह केवल धौंकनी के समान मु ह से हवा छोडते हैं ।

तीर्थ

तीर्थाना हृदय तीर्थं
शुचीना हृदय शुचि ।
महा० मोक्ष धर्म पर्व

तीर्थों मे श्रेष्ठ तीर्थ विशुद्ध हृदय है और पवित्र वस्तुओ मे भी विशुद्ध हृदय ही है ।

वाणी

वात्सल्यात्सव भूतेभ्यो
वाच्या श्रोत्र सुखागिर ।
परितापोपघातश्च
पारुष्य चात्र गर्हितम् ।।

वाणी ऐसी बोले जिसमे प्राणियो के प्रति स्नेह भरा हो जो कानो को सुखद हो । दूसरो को पीडा देना, मारना और कटु वचन सुनाना—ये सब निन्दित कार्य है ।

भू दान पुण्य और भू हरण पाप

न हि भूमि प्रदानाद् वै
दाममन्यद् विशिष्यते ।
न चापि भूमिहरणात्
पापमन्यद विशिष्यते ।।

भूमि दान से बढ कर दूसरा दान नही है और भूमि छीन लेन से बढ कर कोई पाप नहीं है ।

सारा दान-पुण्य नष्ट

आश्रुतस्य प्रदानेन
दत्तस्य हरणेन च ।
जन्मप्रभृति यद् दत्त
तत सर्वं तु विनश्यति ।।

देने की प्रतिज्ञा की हुई वस्तु को न देने से अथवा दी हुई वस्तुओं को छीन लेने से जन्म भर का किया हुआ सारा दान-पुण्य नष्ट हो जाता है ।

धन भेजें

कृपया सार्वदेशिक का धन मनीआर्डर से भेजने मे शीघ्रता करें ।

—प्रबन्धक

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यसमाज ने अपने जन्मकाल से ही 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा लगाया है। 'सारे संसार को आर्य बनाओ'—यह एक ऐसी पवित्र प्रेरणा है कि प्रत्येक आर्यसमाजी सदा इससे मनोबल सचित करता रहता है। यही कारण है कि जब कोई भी आर्यसमाजी देश या विदेश में कहीं भी किसी नई आर्यसमाज के स्थापित होने का या कहीं विधर्मियो द्वारा आर्य वैदिक धर्म के अगीकार किए जाने का समाचार सुनता है तो उसकी छाती फूलकर गज भर की हो जाती है। वह सोचता है कि यदि आर्य-समाज की इसी प्रकार दिन-दूनी रात-चौगुनी प्रगति होती रही तो समस्त विश्व को आर्य बनने में आशातीत विलम्ब नहीं लगेगा।

परन्तु चित्र का यह पहलू जितना आशाजनक है उसका दूसरा पहलू उतना ही निराशाजनक भी है। अधिकांश आर्यसमाजियों की यह प्रवृत्ति हो गई है कि वे प्रचार पर जितना बल देते हैं उतना आचार पर नहीं देते। ठीक है, प्रचार का भी अपना स्थान है और अपने स्थान पर उसका सबसे अधिक महत्व भी है, परन्तु जो 'आचारः परमो धर्मः' के स्थान पर 'प्रचारः परमो धर्मः' को सिंहासनासीन करना चाहते हैं वे गाड़ी के आगे घोड़ा जोतने के बजाय घोड़े के आगे गाड़ी जोतना चाहते हैं।

कितने आर्यसमाजी ऐसे हैं जो स्वयं किसी आर्य विद्वान् के सत्सग या उसकी वाणी से प्रभावित होकर स्वय तो आर्यसमाज के रंग में रग गए और रंग चढ़ने के पश्चात् उन्होंने अपने में से अनार्य और अवैदिक कुरीतियों को भी तिलांजलि दे दी, परन्तु उनके घरों की देवियां अभी तक उन्हीं अवैदिक कुरीतियों के अन्धकूप में पड़ी हुई हैं। धन्य हैं वे सद्गृहस्थ जिनके घरों में पति और पत्नी दोनों समानरूप से आर्य विचारों के हैं और दोनों समानरूप से अवैदिक कुरीतियों एवं अन्धविश्वासों से पृथक् हैं।

परन्तु वे सद्गृहस्थ कहां हैं जहा पति और पत्नी के साथ साथ उनके बालक भी आर्य विचारो के हों? आर्य विचारो की बात छोड़िए, देखने में तो यह आता है कि अधिकांश सम्पन्न आर्य परिवारों के बालक और बालिकाएं ईसाइयों के मिशन स्कूलो में पढते हैं या उन स्कूलों में पढते हैं जहा प्रारम्भसे ही अग्रेजी मे गिटपिट-गिटपिट करना जरूर सिखा दिया जाता है, और चाहे कुछ सिखाया जाए या न सिखाया जाए। कितने ऐसे आर्य परिवार हैं जो 'डैडी' या 'मम्मी' के अभिशाप से कलकित नहीं हैं? कितने ही भद्रपुरुष तो स्वय प्रयत्नपूर्वक अपने बच्चों को 'माता' और 'पिता' जैसे शुद्ध सस्कृति-निष्ठ शब्दो की अवहेलना करके 'डैडी' और 'मम्मी' शब्दो की उपासना करना सिखाते हैं। यदि ऐसे बच्चों में वैदिक धर्म और आर्यसस्कृति के प्रति अनुराग न जगे तो इसमें सिवाय उन माता-पिता के और किसी का दोष नहीं है। डिब्बे का विलायती दूध पीने वाले बच्चों में यदि मा बाप के अदबार की झलक दिखाई न दे तो किसका दोष है?

इस सबका एक ही उपाय है। आर्यसमाज को केवल अपने तक सीमित मत रखिए। ससार को आर्य बनाना चाहते हैं तो पहले अपने आपको, अपने परिवार को और अपने बालकों को आर्य बनाइए। प्रचार से पहले आचार पर ध्यान दीजिए। समाज के साप्ताहिक सत्सग मे या आर्य पर्वों पर होने वाली विशिष्ट सार्वजनिक सभाओं मे अपनी पत्नी, अपने बच्चो और अपने परिवार के शेष सदस्यों को साथ लेकर सम्मिलित होइए। सारे परिवार को एकत्रित करके प्रात साथ सामूहिक सन्ध्या करिए, नित्य नहीं तो यथावसर पारिवारिक सत्सग और यज्ञ कीजिए।

देखने में यह बात बहुत छोटी प्रतीत होती हो, परन्तु परिणाम की दृष्टि से यह बहुत बडी बात है। आजकल प्राय लोगो को यह शिकायत होती है कि हम तो आर्यसमाजी बन गए, परन्तु हमारे बच्चो पर आर्यसमाज का कोई सस्कार नहीं, न वे आर्यसमाज मे आना पसन्द करते हैं। शिकायत तो ठीक है, परन्तु इस शिकायत की सारी जिम्मेदारी उन बुजुर्ग लोगों पर है जिन्होने आज तक कभी अपने परिवार या अपने बच्चों के सस्कार सुधारने की ओर ध्यान नहीं दिया। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगों में सपरिवार सोत्साह सम्मिलित होने का प्रण लीजिए और उस प्रण के पालन का पूरा प्रयत्न कीजिए, फिर देखिए कि आपके बच्चों में आर्यत्व के संस्कार जागृत होते हैं या नहीं।

हम आचार के इस अग को अपने जीवन मे नहीं ढालते इसीलिए हमारा प्रचार निर्जीव हो जाता है। 'आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः'—आचार से हीन व्यक्ति का वेद भी उद्धार नहीं कर सकते। हम प्रचार पर जितना बल देते हैं यदि उतना ही बल आचार पर भी देने लग जाएं तो हमारा जीवन स्वय इतना सुगन्धित हो उठे कि उसकी सुगन्ध से अन्य लोग भी आर्यसमाज की शरण में आना अपने लिए गौरव की बात समझें। जिस दिन यह स्थिति उत्पन्न हो जाएगी उसी दिन हमे अपने आप को दिव्य देव दयानन्द का अनुयायी कहलाने का वास्तविक अधिकार होगा, उससे पहले नहीं। हम ससार को जैसा कुछ बनाना चाहते हैं वैसा पहले हमे स्वय बनना पड़ेगा। तभी 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा पूरी तरह चरितार्थ होगा।

शक्ति का प्रतीक

इस बार २५ दिसम्बर को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान-दिवस के उपलक्ष्य में जैसा शानदार जलूस निकला वैसा गत कई वर्षों से नहीं निकला था। वैसे तो 'श्रेयसि केन तृप्यते' की भावना के अनुसार अच्छी बात में तृप्ति कैसी? न ही कहने का यह भाव है कि उस जलूस में कोई कमियां नहीं थीं या उससे और अच्छा प्रदर्शन या और अच्छी व्यवस्था नहीं हो सकती थी। पर फिर भी इतना निस्सकोच कहा जा सकता है कि उस जलूस से राजधानी मे आर्यसमाज के सगठन और शक्ति का उचित मूल्याकन करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलेगा।

यों तो यह राजधानी है और आए दिन कोई न कोई जलूस यहां किसी न किसी इलाके में निकलता ही रहता है तथा प्रमुख बाजारों में मेले जैसी भीड़-भाड़ तो रोज ही लगी रहती है, परन्तु जैसा अनुशासन-बद्ध, और एक सगठन-सूत्र मे पिरोया वह जलूस था वैसे जलूस राजधानी में भी बहुत कम ही निकल पाते हैं। लगभग सप्ताह भर पहले ही निकला विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन की शोभायात्रा से इस जलूस की तुलना करने पर सामान्य दर्शक के मन मे भी यह बात आए बिना नहीं रहती कि वह शोभायात्रा विशाल हिन्दू समाज की अशक्ति और असगठन-कुशलता की द्योतक थी तो यह जलूस आर्यसमाज की शक्ति और सगठन-कुशलता का ज्वलन्त प्रतीक था।

विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन की शोभायात्रा को हीन बताना या किसी भी दृष्टि से उसकी अवमानना करना हमारा लक्ष्य नहीं है। हम तो केवल इस बात की ओर सकेत करना चाहते हैं कि योजना और बुद्धिमत्ता का जब किसी संगठन के साथ मेल हो जाता है तो उसका रूप कैसा निखर उठता है - यह बात देखनी थी तो दिल्ली की डेढ सौ के लगभग आर्य समाजों की ओर से समवेत होकर सम्मिलित रूप से निकाले गए इस वर्ष के श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के जलूस को देखते।

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से भी एक निवेदन है। और वह यह कि जब किसी एक आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में कोई जलूस निकले और उसमें अनवधानता वश कोई कमी रह जाए तो वह दृष्टि से ओझल हो सकती है। परन्तु श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का जलूस किसी एक आर्यसमाज का, या आर्य समाज के अन्तर्गत किसी दल-विशेष का जलूस नहीं होता, वह तो आर्य समाज की सामूहिक शक्ति का और सगठन की विशालता का परिचायक होता है। इसलिए उसमें कहीं कोई कमी रह जाए तो उससे समस्त आर्य समाज की शक्ति के अवमूल्यन का अवसर लोगों को मिल जाएगा। हम आवश्यकता से अधिक अपना मूल्य नहीं आकते, परन्तु अवमूल्यन के लिए भी हम हरगिज तैयार नहीं हैं। हम चाहते हैं कि आर्यसमाज के प्रशसक, और उसके विरोधी भी, उसका उचित मूल्यांकन तो करना सीखें।

भविष्य में प्रत्येक आर्यसमाज को और प्रत्येक आर्यसमाजी को सदल-बल, अत्यन्त उत्साह के साथ, उस जलूस में और अधिक सख्या में सम्मिलित होने का निश्चय करना चाहिए। जिन क्षेत्रों में अब भी कहीं कहीं हतोत्साहिता, निराशा, आलस्य, और 'अरे, इन बातों में क्या रखा है'—की मनोवृत्ति वाला वैराग्य छाया हुआ है, इस बार के जलूस को देखकर उनका वह असमयोचित वैराग्य भी दूर हो गया होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

सामयिक-चर्चा

पंजाबी सूबा

श्री सन्तसिंह सेखों के २ लेख २ और ३ दिसम्बर ६५ के हिन्दुस्तान में छपे थे जिनका शीर्षक 'पंजाबी राज्य की समस्या' था। ये दोनों लेख विवादास्पद थे इनमें आर्य समाज पर भी कुछ आक्षेप किए गए थे। सोनीपत मण्डी के श्री बदलूराम गुप्त ने इनके प्रसंग में एक पत्र द्वारा अपने विचार ११ दिसम्बर के हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रकाशित किए है जिनमें उन दोनों का उत्तर आ जाता है। श्री बदलूराम जी का पत्र इस प्रकार है:—

"श्री सन्तसिंह के दोनों लेखों का भाव यह है कि पंजाबी हिन्दू अपनी मातृभाषा पंजाबी से अलग-थलग हो गया है और आर्यसमाज के प्रभाव के कारण उसने अपनी मातृभाषा को मातृ भाषा मानना छोड़ दिया है। उनकी दृष्टि में पंजाबी के भविष्य और पंजाबी हिन्दू को पंजाबी के साथ पुनर्मिलन के लिए पृथक् पंजाबी राज्य का निर्माण आवश्यक है जिसमें राज्याधिकारी समस्त साधनों को पंजाबी के प्रयोग और विकास कार्य्य में लगा सकें। ऐसा हो जाने पर श्री सेखों की मान्यतानुसार दोनों जातियों से सौहार्द उत्पन्न होने में सहायता मिलेगी।

पंजाबी हिन्दू से यह मांग करते हुए कि वह अपने समस्त सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहार में एक मात्र पंजाबी का प्रयोग करे, श्री सेखों समस्या के आवश्यक पहलू की उपेक्षा करते है। पंजाबी का प्रयोग प्रायः बोली के रूप मे होता आ रहा है। हिन्दुओं को एक ओर छोड़कर देखा जाय तो विदित होगा कि बहुत थोड़े से उच्च शिक्षित सिक्ख परस्पर में तथा दूसरों के साथ पत्र व्यवहार मे गुरुमुखी में लिखित पंजाबी का प्रयोग करते हैं। वे अधिकतर अंग्रेजी में पत्र व्यवहार करते है। आर्यसमाज द्वारा पंजाबी के मुकाबले मे हिन्दी को वरीयता देने का एक कारण यह था कि लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति और उनकी भावनाओं की सन्तुष्टि के लिए पंजाबी हिन्दी के समान न तो समृद्ध थी और न विकसित। अतः श्री सेखों का पंजाबी हिन्दुओं से यह आशा करना कि वे अपनी समस्त गतिविधि को एक ही भाषा तक सीमित रखें, युक्तियुक्त नहीं है।

— वर्तमान स्थिति मे जब कि हिन्दी केन्द्र की और पंजाबी के साथ हिन्दी पंजाब की सरकारी भाषा हो सिक्खों द्वारा हिन्दी की और हिन्दुओं द्वारा पंजाबी की उपेक्षा करना हितकर न होगा। श्री सेखों की यह शिकायत कि पंजाब में हिन्दी के विकास के लिए यत्न हो रहा है और धन व्यय किया जा रहा है नितान्त अनुचित है। समस्त राज्यों में विविध राज भाषाओं के प्रयोग और विकास के साथ २ हिन्दी के विकास के लिए यत्न हो रहा है और बड़ी २ राशियां इस काम पर खर्च की जा रही है। पंजाब राज्य के अधिकारियों ने पंजाबी की स्थिति को सुरक्षित और इसका विकास करने के लिए कोई प्रयत्न उठा नहीं रखा है।

हिन्दुओं की इस मांग को कि उन्हें पंजाबी को देवनागरी लिपि में लिखने की छूट दे दी जाय एक मात्र अपने सिक्ख भाईयों की इच्छा की पूर्त्यर्थ अस्वीकार कर दिया गया था।

प्रस्तावित पंजाबी राज्य में पंजाबी हिन्दू द्वारा समस्त क्षेत्रों मे पंजाबी का प्रयोग होने से वह पंजाबी के पुराने गढ़ मे वापस आ जायगा, श्री सेखों के मस्तिष्क में पंजाबी हिन्दू के सुधार का जो यह उपाय काम कर रहा है उसमें उनकी असहिष्णुता प्रतिबिम्बित हो रही है जो दोनो जातियों के मेल-मिलाप की भावना को नष्ट कर देने वाली है। जोर जबरदस्ती से कोई भी भाषा उचित नहीं होती। इस प्रश्न को इस रूपमें लेना प्रजातन्त्र प्रणाली का गला घोंटना है। इससे तो इस सन्देह की पुष्टि होती है कि पंजाबी राज्य और सिक्ख राज्य में कोई भेद न रहेगा। इसी कारण से राज्य पुनर्गठन आयोग द्वारा सिक्ख राज्य की मांग का स्वीकार किया जाना संभव न हो सका था।

गुरुमुखी न लिपि है और न भाषा

श्री बलवीरसिंह (चण्डीगढ़) १०-१२-६५ के ट्रिब्यून में लिखा है

"गुरुमुखी न तो लिपि है और न भाषा है यह गुरुवाणी का पर्याय है और पवित्र ग्रन्थ में स्थान २ पर पाई जाती है। वस्तुतः इसका शाब्दिक अर्थ है 'गुरुओं की कहावतें।' यह मुश्किल से लिपि का स्थान ले सकती है। गुरुवाणी के रूप में गुरुमुखी गुरुओंके लिखित वा अलिखित साहित्य के लिए प्रयुक्त हो सकती है जो पंजाबी साहित्य का एक भाग है। समस्त पंजाबी साहित्य के लिए इसका प्रयोग नहीं हो सकता।

यह बात असंदिग्ध है कि पवित्र गुरुओं के प्रादुर्भाव से पूर्व भी पंजाबी भाषा और पंजाबी लिपियों का अब से कुछ भिन्न रूप मे अस्तित्व विद्यमान था अतः गुरुओं के साथ न तो भाषा ग्रथित की जा सकती है और न लिपि। गुरुओं से जो सदैव प्रजातन्त्रीय सिद्धान्तों के पृष्ठ पोषक रहे देश की भाषा और लिपि को साम्प्रदायिक रंग देने की आशा नहीं की जा सकती थी।"

स्कूलों में भ्रष्टाचार

सहायता प्राप्त अनेक प्राइवेट शिक्षणालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं में इस बात पर असंतोष व्याप्त है कि अनुदान के रूप में प्रबन्ध विभाग उनका पूर्ण नियत वेतन तो प्राप्त करता है परन्तु प्रतिमास नियत वेतन में कुछ राशि काटकर दी जाती और रसीद पूर्ण वेतन की प्राप्त की जाती है। कटा हुआ धन प्रायः उनसे प्राप्त दान के रूप में दिखाया जाता है। यह परिपाटी भी एक प्रकार का भ्रष्टाचार है जिसका नैतिक और वैधानिक दृष्टि से समर्थन नहीं किया जा सकता। असहाय अध्यापकों वा अध्यापिकाओं का वेतन काटकर इस प्रकार असहायावस्था से अनुचित लाभ उठाना नितान्त अनुचित है। उनका वेतन काटने से जिस राशि की पूर्ति करने का यत्न किया जाता है उस की पूर्ति चन्दे और दान से होनी चाहिए। यदि प्रबन्ध विभाग ऐसा करने में असमर्थ हो तो इस भ्रष्टाचार का आश्रय लेने की अपेक्षा उस संस्था को बन्द कर देना श्रेयस्कर है। आर्यसमाज की संस्थाओं में तो ऐसा कदापि न होना चाहिए परन्तु खेद है कई संस्थाओं में इस भ्रष्टाचार का आश्रय लिया जा रहा है। जिससे न केवल संस्था का ही अपितु आर्यसमाज का भी अपयश होता है। आर्य्य समाज की संस्थाओं को तो इस दिशा मे स्वस्थ मार्ग दर्शन करना चाहिए। इसी में उनका गौरव है।

गुरुमुखी, पश्तो, संस्कृत, हिन्दी और देवनागरी लिपि

ता० ३ अगस्त १९३७ को महात्मा गाधी ने श्री प० जवाहरलाल नेहरू जी को एक पत्र मे भाषाओ के सम्बन्ध मे अपने विचार प्रकट किये थे। जिसमे आज की भाषा समस्या का समाधान निहित है पाठको के विचारार्थ उस महत्वपूर्ण पत्र को यहा ज्यो का त्यो प्रकाशित किया जाता है।

—सम्पादक

रेल मे

३ अगस्त १९३७

प्रिय जवाहरलाल

यह मैं दिल्ली से जानेवाली रेल गाडी मे लिख रहा हू। मेरा प्राक्कथन या जो कुछ भी इसे कहो साथ मे है। मैं तुम्हे कोई लम्बी चौडी चीज नही दे सका।

तुमने पश्तो और पजाबी के पहले शायद रखा है। मेरा सुझाव है कि तुम यह क्रिया विशेषण हटा दो। मिसाल के लिए खानसाहब पश्तो को कभी नही छोडेगे। मेरा खयाल है वह किस लिपि मे लिखी जाती है। भूल गया हू किसमे? और पजाबी? गुरुमुखी मे लिखी हुई पजाबी के लिए सिक्ख तो मर मिटेंगे। उस लिपि मे कोई शोभा नही है। लेकिन मुझे मालूम हुआ है कि सिंधी की तरह वह भी सिक्खो को हिन्दुओ से अलग करने के लिए खास तौर पर ईजाद की गई थी। यह बात हो या न हो फिलहाल तो सिक्खो को गुरुमुखी छोडने को राजी करना मुझे असम्भव लगता है।

तुमने चारो दक्षिणी भाषाओ मे से कोई सामान्य लिपि तैयार करने का सुझाव दिया है मुझे उनके लिए चारो की मिली जुली लिपि की तरह ही देवनागरी भी उतनी ही आसान मालूम होती है। व्यवहारिक दृष्टि से उन चारो मे से मिली जुली लिपि का आविष्कार हो नही सकता इस लिए मेरा सुझाव है कि तुम सिर्फ इतनी ही सामान्य सिफारिश करो कि जहा कही सम्भव हो जिन प्रान्तीय भाषाओ का संस्कृत से सजीव सम्बन्ध है व अगर उसकी शाखाए नही हू तो उन्हे सशोधित देवनागरी अपना लेनी चाहिए। तुम्हे मालूम होगा कि यह प्रचार जारी है।

बस अगर तुम मेरी तरह सोचते हो तो तुम्हे यह आशा प्रकट करने में सकोच नही होना चाहिए कि चू कि किसी न किसी दिन हिन्दुओ और मुसलमानो को दिल से एक होना ही है इसलिए जो हिन्दुस्तानी बोलते हैं उन्हे भी एक देवनागरी लिपि ही अपना लेनी चाहिए क्योकि वह अधिक वैज्ञानिक है और संस्कृत से निकली हुई भाषाओ की महान प्रान्तीय लिपियो के निकट है

अगर तुम मेरे सुझाव आशिक या पूरे स्वीकार कर लेते हो तो तुम्हे आवश्यक परिवर्तन मजूर करते हुए स्थानो को खोज निकालने मे कोई कठिनाई नही होगी। तुम्हारा समय बचाने की खातिर मैंने स्वय ही ऐसा करने का इरादा किया था परन्तु अभी मुझे अपने शरीर पर इतना भार नही डालना चाहिए।

मैं यह मान लेता हू कि तुम्हारे सुझाव के मेरे समर्थन का यह अर्थ नही है कि मैं हिन्दी सम्मेलन वालो से हिन्दी शब्द का प्रयोग छोड देने को कहू। मुझे विश्वास है कि तुम्हारा यह मतलब नही हो सकता। मैं जहा तक सोच सकता हू मैं उस मतलब को अतिम सीमा तक ले गया हू।

अगर तुम मेरे सुझावो को स्वीकार नही कर सकते तो ठीक ठीक बात बताने की खातिर प्राक्कथन मे यह वाक्य जोड देना बेहतर होगा बहरहाल मुझे उनका सामान्य ढग पर समर्थन करने मे कोई सकोच नही है।

आशा है इन्दू का आपरेशन सकुशल हो जायगा।

सस्नेह

बापू

श्रद्धा के फूल

श्री प० नरेन्द्र जी हैदराबाद

आर्यसमाज का आन्दोलन १९वीं शताब्दि के इतिहास मे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस क्रांति के प्रवर्तक मन्त्र दृष्टा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रचार शास्त्रार्थ साहित्य सृजन और उसके प्रसार ने देश के हजारो व्यक्तियो के जीवन पर एक जादू का सा प्रभाव किया

ऋषि के दिव्य जीवन और महान विचारो मे प्रभावित होने वालो मे जहा प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी एम० ए० अमर शहीद लेखराम जी इत्यादि बने वहीं अपने गृहस्थ की सभी सुख-सुविधाओ का परित्याग कर महर्षि के विचारो का प्रचार और प्रसार करने का संकल्प लेकर जो हिन्दू समाज छूत छात जाति पाति इत्यादि के कच्चे सूत्रो मे बद्ध था उसे विमुक्त करने का स्वामी श्रद्धानन्द जी ने एक महान क्रान्तिकारी कार्यक्रम का सूत्रपात किया था।

महर्षि के प्रादुर्भाव से पूर्व हिन्दु समाज मे यह धारणा धर्म का रूप लिए हुई थी कि हिन्दु समाज मे अन्य मतावलम्बियो का प्रवेश अग्राह्य और स्वधर्मावलम्बी विधर्मी होने पर उसकी रोक थाम का कोई उपाय न था। इसी प्रकार हिन्दु समाज के सिद्धान्तो पर किए जाने वाले आक्रमणो का उत्तर देने का अभाव भी व्यापकरूप मे विद्यमान था। इसी कारण मुसलमान ईसाई तथा अन्य मतावलम्बी हिन्दु समाज के सिद्धान्तो का उपहास कर उसे लज्जित किया करते थे और हिन्दु समाज के बडे बडे दिग्गज विद्वान नेता तथा महान् मठाधिपतियो इत्यादि ने भी प्रतिकार का कोई साहस नही दिखाया यही कारण था कि हिन्दु समाज के हजारो युवक इससे विवश होकर हिन्दू धर्म का त्याग करते हुए मुसलमान ईसाई इत्यादि बन गए हिन्दु समाज की इन निर्बल नीतियो और इसके धर्माधिपतियो के मौन को दृष्टिगत कर महर्षि ने जहा हिन्दू समाज की त्रुटियो पर आधारित आक्रमणो का प्रतिकार किया वहा मुसलमानो और ईसाइयो की सैद्धान्तिक उन दुर्बलताओ को जिनसे कि जन समाज अनभिज्ञ था सर्व सामान्य के बीच ला खडा किया यह प्रयास स्वामी जी का हिन्दू धर्म के विरोधियो के लिए मुह तोड जवाब था इसी के परिणाम स्वरूप हिन्दु धर्म पर आरोपो के साहस के स्थान पर उन्हे स्वय अपने सिद्धान्तो की छान बीन के लिए बाध्य होना पडा यह एक महर्षि का महान् चमत्कार था।

महर्षि के इस महान मिशन को पूरा करने के उद्देश्य को लेकर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने कार्यक्षेत्र मे प्रवेश किया। आपका यही जाति पाति और छूत-छात के खण्डन व शुद्धि के लिए बल का कार्य ही था कि आपको अपने जीवन का बलिदान करना पडा आपका यह बलिदान हिन्दू समाज के मृतक शरीर मे प्राण सचार की सजीवनी सिद्ध हुआ और अद्भुत जागृति को जन्म दिया। आर्य समाज के आन्दोलन के उज्ज्वल इतिहास की अमर गाथा आपके सीने से निकलने वाली रुधिर धारा जो मातृभूमि के वक्षस्थल पर पड रही थी सो पूर्ण हुई। आज अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के उस महान् कार्य का पूर्ति देने और समूचे आर्य जगत के लिए कर्त्तव्य निष्ठा और श्रद्धा की महान् प्रेरणा है। धर्म

निष्पक्षता की आड मे आज ईसाई व मुसलमानो के द्वारा किया जाने वाला हिन्दु मतावलम्बियो का धर्म परिवर्तन हमारे लिए गम्भीर और विचारणीय समस्या है। इस सब की रोक थाम करते हुए प्रयत्न की आवश्यकता है कि हम सब शुद्धि के कार्य को दृढता पूर्वक बढाते हुए अपनी श्रद्धाजली अमर शहीद के चरणो मे अर्पित करें।

पुनर्जन्म और स्मृति

माननीय श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०

जो लोग पुनर्जन्म या आवागमन के सिद्धान्त को नहीं स्वीकार करते जैसे मुसलमान और ईसाई, उनका सबसे बड़ा आक्षेप यह है कि यदि हम पहले किसी योनि मे थे और उसको त्यागकर हम वर्तमान योनि में आये हैं तो उस योनि की हमको स्मृति क्यों नहीं है। यद्यपि इस आक्षेप का कोई दार्शनिक अथवा न्याय-शास्त्र सम्बन्धी आधार नही है तथापि सर्व साधारण के लिये एक आपत्ति अवश्य है। भारतवर्ष के हिन्दुओ, जैनियों तथा बौद्धो के समक्ष तो यह प्रश्न आता ही नही। इनके विश्वास की आधार शिला तो उस भावना के ऊपर है जो सहस्रो वर्षों से चली आ रही है अर्थात् जीवन के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जीवन तो अवश्यम्भावी है। यह लोग कभी स्मृतिसम्बन्धी प्रश्न नही उठाते। परन्तु जिन मतो के आचार्यों ने पुनर्जन्म के सिद्धान्त के विरुद्ध व्यवस्था दी है उनके अनुगामियो के मन मे तो यह आक्षेप बड़ी तीव्रता के साथ उठता रहता है। उनकी समझ मे नही आता कि यदि एक जीव एक योनि को छोड़कर दूसरी योनि को धारण करे तो उस योनि की स्मृति क्यों न रहे।

दार्शनिक दृष्टि से तो यह एक सरल बात है। किसी घटना की स्मृति तो उसके अस्तित्व का प्रबल प्रमाण है परन्तु इसका उलटा ठीक नही। अर्थात् स्मृति का अभाव घटना के अभाव को प्रमाणित नही करता। यह एक मोटी और सीधी बात है और हर आदमी की समझ में आ सकती है। उदाहरण के लिये, मुझे याद है कि मैंने अमुक दिन कानपुर मे अमुक मकान देखा। अत. स्मरण है अत. स्वीकार कर लेना चाहिये कि उस मकान का अस्तित्व अवश्यमेव रहा होगा। मुझे याद है कि मैं ५० वर्ष पूर्व अमुक मकान मे रहता था। यह याद ही मेरे लिये एक पक्का प्रमाण है कि ५० वर्ष पूर्व उस मकान का अस्तित्व था परन्तु यदि मैं भूल जाता हूं तो यह भूलना (विस्मृति) इस बात का प्रमाण नही कि उस मकान का अस्तित्व न था। सम्भव है कि घटना का अस्तित्व रहा हो और मुझे विस्मृत हो गया हो। विस्मृति स्मृति का अभाव है अस्तित्व का अभाव नहीं, अस्तित्व का अभाव होता तो विस्मृति शब्द ही निरर्थक हो जाता।

विद्यार्थीगण बहुत सा पाठ भूल जाते हैं। अर्थात् उनको याद नहीं रहती, इसीलिये वह कहा करते हैं कि "पढ़ा तो था याद नहीं है।" याद का न होना इस बात का प्रमाण नही कि पढ़ा ही न था। नैयायिकों की भाषा मे यो कहेंगे कि स्मृति का अस्तित्व किसी घटना के अस्तित्व का समीचीन प्रमाण है परन्तु स्मृति का अभाव घटना के अभाव का प्रमाण नही। यदि मुझे याद है कि मैं कानपुर में पढा करता था तो यह बात सिद्ध हो गई कि मैं कानपुर में पढा करता था। परन्तु यदि याद नहीं है तो यह स्मरण का अभाव इस बात का प्रमाण नहीं कि मैं कानपुर मे नहीं पढता था। सम्भव है कि घटना हुई हो और मुझे उसकी याद न रही हो।

इस युक्ति का पुनर्जन्म के सिद्धान्त से यह सम्बन्ध है कि यदि मुझे याद है कि मैं पिछले जन्म में अमुक स्थान पर था तो पूर्व जन्म सिद्ध है। परन्तु यदि स्मृति नहीं है तो यह मान बैठना युक्तिसगत न होगा कि पुनर्जन्म हुआ ही नहीं। मुझे अपने इसी (वर्तमान] जन्म की सैकड़ों बातों की याद नहीं रही, जिन मित्रों के साथ प्रतिदिन उठते बैठते थे उनकी आकृति भूल गये. नाम भूल गये कभी-कभी यह कहते हुये लज्जित होना पड़ता है कि मैं आपको भूल गया। इसलिये किसी घटना की स्मृति का अभाव उस घटना के अभाव का प्रमाण नहीं यदि उस घटना के होने के अन्य प्रबल प्रमाण हैं तो विस्मृति (भूल) की उस प्रकरण में कोई मूल्य नही रहा और पुनर्जन्म के प्रकरण में विस्मृति का आक्षेप कुछ महत्त्व नहीं रखता।

परन्तु मैं इस लेख में यह दर्शाना चाहता हूं कि पिछले जन्म की स्मृति सबको रहती है केवल स्मृति का रूप बदल जाता है। स्मृति के स्थूलता और सूक्ष्मता की अपेक्षा से कई रूप हैं। जैसे मुझे याद है कि कभी मैंने चार का पहाड़ा पढा था। यह पहाड़ा मुझे आज भी याद है और पहले की अपेक्षा अधिक स्पष्टता से याद है। पहले तो पहाड़ा सुनाने में सावधानी की आवश्यकता होती थी। आज झट से बता सकता है कि चार सत्ते अट्ठाईस, परन्तु मुझे कुछ भी याद नहीं कि यह पहाड़ा मैंने कब, कहीं, और किस से सीखा था। सीखने का स्थान, सीखने का समय, सीखने के साधन सब विस्मृति (भूल) के गर्त में विलीन हो गये। बहुत परिश्रम करके भी याद नहीं आते क्योंकि यह वस्तुयें (देश, काल साधन) घटना के स्थूल (गौण) अङ्ग थे। परन्तु पहाड़ा मुख्य (सूक्ष्मतम) था वही शेष रह गया।

सस्कृत भाषा मे इन सूक्ष्म अङ्गों का नाम "सस्कार" है। जब किसी घटना का सन्निकर्ष हमारी इन्द्रियों से होता है तो वह घटना तो शीघ्र ही समाप्त हो जाती है परन्तु उसका प्रभाव हमारे मन पर शेष रह जाता है और हमारा मन यथाशक्ति इन प्रभावों को सुरक्षित रखने की कोशिश करता है। यह संस्कार क्या है? थोड़ा सोचिये।

एक युवा पुरुष एक युवती स्त्री को किसी 'बस' में यात्रा करते देखता है। 'बस' के अड्डे पर दोनों उतर कर अपने अपने घर चल देते हैं। परन्तु एक दूसरे की आकृति का चित्र मनः पटल पर अंकित रह जाता है। यह चित्र दोनों मन अपने अपने साथ ले गये। यह चित्र परस्पर-मिलन का एक सूक्ष्म अङ्ग है, मन में सात बालिश्त का स्थूल शरीर तो घुस नहीं सकता। केवल चित्र घुस सकता है। मनों ने इस सूक्ष्म अङ्ग को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया। यदि यह प्रभाव गहरे हैं तो देश और काल की दूरी पर भी वे एक दूसरे को याद रखते हैं। योगदर्शन मे स्मृति की यह परिभाषा की है —

अनुभूत-विषयासम्प्रमोषः स्मृतिः। (योगदर्शन १-११) अर्थात् जिस विषय का हमने अनुभव प्राप्त किया है उस को किसी ने चुराया नहीं। यही स्मृति है। अर्थात् हमने जो कमाई की थी वह चोरी नहीं गई। सुरक्षित हमारे पास है। हमने यहां दो शरीरों और उनके चित्रों का वर्णन किया है। स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर यह पहला पग है, परन्तु यह नहीं समझना चाहिये कि स्थूलता के नीचे सूक्ष्मता का केवल एक ही तल (स्तर) है। सूक्ष्मता तो क्रमशः बढ़ती जाती है। जब हम चित्र देखते हैं तो मूल वस्तु की भी स्मृति रहती है। चित्र शरीर की अपेक्षा सूक्ष्म है। परन्तु चित्र में भी स्थूलता है। सस्कार क्रमशः अधिक सूक्ष्म होते जाते है।

आपने बहुधा अनुभव किया होगा कि आप किसी मित्र को भूल गये। परन्तु उसकी बोल चाल उसकी चाल ढाल और उसके सम्बन्धों का कुछ धुंधला सा भाव है। वस्तु से 'भाव" तक पहुंचना स्थूल वस्तु को सूक्ष्म करना है।

अनुभूति और स्मृति के मध्य में कोसो की दूरी हो सकती है। आप भारत से अमेरिका चले जाइये। भारत की अनुभूतियां आपके साथ जायेंगी। सहस्रो कोसो की यात्रा में बाधक नहीं है। जहां आप जाते हैं वहा आपका मन जाता है आपकी अनुभूतियो की स्मृति जाती है। इस स्मृति के आविर्भाव में भेद हो सकता है। कभी कभी आपके दूसरे कार्य्य इस स्मृति को दबाये रखते हैं। ऐसा तो प्रतिदिन होता है। जब आप किसी सिनीमा को देखने जाते हैं तो आपका मन उस दृश्य में इतना लीन हो जाता है। कि आप घर की समस्त बातें भूल जाते हैं और घर की याद आपको केवल उस समय आती है जब तमाशा समाप्त हो जाता है और आप उस स्थल को छोड़ने पर बाधित होते हैं। उस समय आपका घर तो मौजूद था। आप यह नहीं कह सकते कि आपने जिन दो घण्टों को सिनेमा में व्यतीत किया उस काल में घर का अभाव हो गया हो। उसके भाव (स्थिति) का पर्याप्त प्रमाण है आप नौकर से कह आये थे कि हमारे लिये भोजन बना रखना, नौकर घर पर खाना पकाता रहा। यदि उस समय में घर का अस्तित्व न रहता तो खाना कैसे तैय्यार मिलता। इसलिये दो घण्टों तक आपको घर की याद नहीं रही। यह बात घर के अभाव को सिद्ध नहीं करती। स्थूल स्मृति न भी हो तो भी सस्कार तो मन में उपस्थित हैं। आपने उन सस्कारो को सुरक्षित रक्खा है। क्रमशः

—आर्य समाज कोसीकलां में बलिदान दिवस मनाया गया। श्री म० खेमचन्द जी आर्य, डा० के० एस. आर्य पं० ओ३मप्रकाश जी तथा पं० जगन्नाथ प्रसाद जी के भाषण हुए।

आर्यसमाज ध्यान दे

श्री राजेन्द्र 'जिज्ञासु' प्राध्यापक दयानन्द कालेज शोलापुर

आर्य समाज एक जागरुक संस्था मानी जाती है। पौराणिक लोगों के देवी देवताओं के रूप, रंग, अंग आदि विचित्र प्रकार के होते हैं। शिव जी के तीन नेत्र कहे जाते हैं। किसी के तीन नेत्र होते हैं या नहीं यह तो पौराणिक अपने मन से ही पूछें परन्तु इस में सन्देह नहीं कि आर्य समाज की जीवन दायिनी विचारधारा को ग्रहण कर के व्यक्ति में दो महान शक्तियां का प्रादुर्भाव होता है। वे दो शक्तियां हैं साहस एवं सूझ। यहसूझ आर्यों का तीसरा नेत्र कहा जा सकता है।

आने वाली विपत्ति को आर्य जन आने से पहले ही भांप लेते हैं। जब दूसरों की आंखों से विपदा अभी छिपी ही होती है तब आर्य इस से जूझने के लिये संघर्ष की तय्यारियां करने एवं दूसरों को सजग रहने का सन्देश देते हैं। इतिहास के पृष्ठ उठा कर देखिए, इस तथ्य की पुष्टि करेंगे।

देश में तो अलीगढ़ विद्यापीठ की देश घाती साम्प्रदायक मनोवृत्तियों पर वहां गु डों द्वारा मचाये गये हुल्लड़ व दंगे के पश्चात् रोष प्रकट किया गया है। आर्य समाज के नेता राष्ट्र वीर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने तो अर्द्धशताब्दी पूर्व इस से देश को सावधान किया था। श्री स्वामी जी महाराज भी उच्च शिक्षा के लिये पहले अलीगढ़ विद्यापीठ में प्रविष्ट हुए जब वहां के साम्प्रदायिक वातावरण मे उन का दम घुटने लगा तो वह इस विषैले वातावरण से बाहर निकल आये। सर सय्यद अहमद खां की प्रार्थना पर जुलाई १८७७ में लार्ड लिटन ने आधार शिक्षा रखी थी। इस विद्यालय के लिये सर सय्यद अहमद ने हिन्दुओं से भी बहुत धन प्राप्त किया। हिंदुओंसे धन प्राप्त करने के लिये वह स्थान स्थान पर राष्ट्रीय एकता पर भाषण देते रहे। हिन्दु मेरी दायीं आंख व मुसलमान बायीं ऐसा वह कहते रहे। जब धन बटोर लिये तो सर सय्यद अपने हृदय के पापों को देर तक न छिपा सके।

वास्तविकता यह है कि वह पहले ही साम्प्रदायक मनोवृत्ति रखते थे। हम किसी पर आरोप क्यों लगायें? तथ्य स्वयं बोल रहे हैं। मौलाना हाली ने सर सय्यद की जीवनी में लिखा है कि १८६८ में जब काशी के हिन्दी प्रेमियों ने हिन्दी को उस का उचित स्थान दिलाने के कुछ प्रयत्न किये तो सर सय्यद को दु.ख हुआ क्योंकि वह उर्दू के पोषक थे। अब वह समझते थे कि हिन्दु मुसलमान मिल कर नहीं रह सकते फिर भी अपनी भावनायें छिपा कर हिन्दुओं से धन संग्रह करते रहे।

जब १८८५ में कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन बम्बई में हुआ तो सरसय्यद को भारी धक्का लगा। उन्होंने १८८६ के आरम्भ से ही Mohammadans Educational conference की घोषणा कर दी। कांग्रेस अधिवेशन की तिथियों पर ही यह सम्मेलन रखा जाता था ताकि मुसलमान इस में सम्मिलित न हो सकें। उन्होंने कांग्रेस के विरोध में बड़े-बड़े विषैले भाषण दिये। पंजाब में आ कर मुसलमानो को हिन्दुओं से पृथक् किया। क्या-क्या किया यह एक लम्बी कहानी है। जब देश के अन्य नेता लोक प्रिय बनने की होड में लग कर इस ढोल का पोल खोलने का नैतिक साहस नहीं कर सकते थे तब आर्य समाज के नेता ला० लाजपत राय ने सर सय्यद के नाम खुले पत्र लिख कर राष्ट्र को सचेत किया फिर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने इस षड्यन्त्र का भाण्डा फोड़ा।

यह एक उदाहरण है आर्यों की जागरुकता का। परन्तु आज हम क्या हैं और कहा हैं? गत वर्ष मैंने प्रयाग से प्रकाशित इतिहास की एक अंग्रेजी पुस्तक देखी उस मे मुसलमानों की अराष्ट्रीय वृत्तियो, देश विभाजन आदि का सारा दायित्व हिन्दुओ पर डाला गया है। लोकमान्य तिलक, लाल लाजपत राय जी को विशेष प्रसाद दिया गया है। ऋषि दयानन्द पर तो कृपा वृष्टि हुई है साथ ही 'रंगीला रसूल' को साम्प्रदायिकता व मुस्लिमलीग के संगठन आदि का कारण बताया गया है। पुस्तक एक अंग्रेज ने लिखी है। एक पुस्तक 'Modern India and the West' देखने का अवसर मिला इस के लेखक ने प्रयाग से प्रकाशित पुस्तक की पूरी नकल की है। वाक्य भी प्राय: वही थे। पुस्तक पढ़ कर मैं कह उठा कि मुसलमान लोगों ने आर्यों की जागरुकता ले ली है। हमारे कितने कालेज हैं? कितने स्कूल हैं? श्री डा० गोकुल चन्द नारग सरीखे इतिहासज्ञ हमारे समाज में हैं फिर भी हम प्रोपेगण्डा में पिट गये। हमारी संस्थाओं को सिवाय परीक्षा परिणाम निकालने के और कोई चिन्ता ही नहीं।

और तो और श्री रामगोपाल जी सरीखे पत्रकार व इतिहासकार ने Indian Muslims में रंगीला रसूल की चर्चा की है। ऐसे प्रहार हम पर होते हैं परन्तु हम मौन हैं। ऐसे लेखकों को अपना दृष्टि कोण हम न देंगे तो और कौन दे गा। तथ्य से यदि वह आखें बन्द किये हुए हैं तो प्रकाश फैलाना हमारा कर्त्तव्य है। इन को बताना चाहिए कि मुस्लिम-लीग का जन्म रंगीला रसूल से पूर्व हुआ था। साम्प्रदायक निर्वाचन का सिद्धान्त लखनऊ कांग्रेस से भी पहले जन्म ले चुका था। अलीगढ विद्यापीठ के आदि प्रिंसिपल Beck महोदय घृणाद्वेष के बीज कभी के बो चुके थे। Beck के उत्तराधिकारी Archilobd ने मुस्लिम लीग के निर्माण व पृथकता के सिद्धात का आन्दोलन चलाया उसी की प्रेरणा से १-१०-१९०६ को शिमला में भारतीय मुसलमानो का एक शिष्टमण्डल लार्ड मिनटो से मिला जो स्मरण पत्र वायसराय को दिया गया और जो उत्तर उसे ने दिया वह पढ़कर सब तथ्य सामने आ जाता है। देश में मुस्लिम संस्थायें स्वय अंग्रेज सरकार ने खुलवाई। स्वय लार्ड मिनटो ने यह तथ्य स्वीकार किया है।

मुसलमानों की पृथकतावादी नीति की निन्दा करने की यदि किसी कायर मे साहस नहीं। यदि कोई सत्य व तथ्य की हत्या पर तुला ही हुआ है तो भी हम उससे कहेंगे कि वह श्री रामगोपाल की Indian Muslims का परिशिष्ट अवश्य देख लें। यह लोग भूल जाते हैं कि 'रंगीला रसूल' उन्नीसवीं सदी का महर्षि आदि कई लम्बर पुस्तकों का एक प्रत्योत्तर था। इन लाल भुजक्कड़ों को ऋषि के गो रक्षा आन्दोलन में भी मुसलमानों की कुर्बानी का विरोध दीखता है। ऐसा लिखते हुए इन को लज्जा नहीं आती। लीग को बचाने के लिये इन को 'शुद्धि' आन्दोलन को भी घसीटना पड़ता है। ऐसे चतुर लेखकों को राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के शब्दों में हम पूछेंगे कि यदि मुसलमान ईसाई दिनरात अपने मत के प्रसार में जुटे हुए हैं तो फिर स्वामी श्रद्धानन्द या आर्य समाज के वेद प्रसार के अधिकार पर आप को क्यों आपत्ति है? आर्य समाज पर तो योजनाबद्ध वार किये जा रहे हैं। ऐसा लिखने वालों में अधिक अंग्रेज लोग हैं जिनकी पुस्तकें यहां भी छप रही हैं।

अखंड-भारत

ले०—डा० अजनी नन्दन वर्मा
'तरुण' मछली शहर

कहे छियालिस करोड़ मिलकर।
अखण्ड भारत, अखण्ड भारत ॥
सुनो शत्रुओं सचेत होकर।
अखण्ड भारत, अखण्ड भारत ॥

यहां के कण-कण से शौर्य टपके।
यहां के वीरों की बाहू फड़के ॥
यहां के सैनिक ललकारते हैं।
अखण्ड भारत, अखण्ड भारत ॥

हम हैं अहिंसक और शान्ति वादी।
नहीं हैं कायर ये तुम समझ लो
हम हैं भारतीय, भारत हमारा
हटो यहा से तुम आततायी ॥
नहीं हटोगे तो मार डाले
अखण्ड भारत, अखण्ड भारत।

हमारी गंगा, हमारी जमुना।
हमारे पर्वत हमारी सीमा ॥
सब एक स्वर से पुकारते हैं।
अखण्ड भारत, अखण्ड भारत ॥

हमारे सूरज हमारे चन्दा।
हमारी पृथ्वी हमारा सागर ॥
पवन यही है पुकार करता।
अखण्ड भारत अखण्ड भारत ॥

हमारी माता बहन हमारी।
हमारे बन्धु सखा हमारे ॥
सभी के स्वर से ये बोल निकले।
अखण्ड भारत, अखण्ड भारत ॥

पहाड़ी कश्मीर औ कच्छ का रण।
अमर शहीदों की आत्मायें ॥
दशो दिशाओं में बात गूंजी।
अखण्ड भारत, अखण्ड भारत ॥

ये आर्य भूमि, ये वेद भूमि।
ये वीर भूमि ये युद्ध भूमि ॥
यहां का 'सार्वदेशिक' घोष करता।
अखण्ड भारत, अखण्ड भारत ॥

देश रक्षा की मौलिक दिशाएं

श्री पं० कालीचरण "प्रकाश" आर्योपदेशक,

देश पर पाकिस्तान ने ५ अगस्त ६५ को अपने घुसपैठिए भेजकर आक्रमण किया और जब इनका प्रतिकार प्रारम्भ हुआ तब उसने विधिवत् सेनाओं का प्रयोग कर दिया। इस पर भारत सरकार ने आक्रमण के स्रोतों को बन्द करने की दृष्टि से सीमाओं के लांघने की उचितता अनुभव करते हुये अपनी सेना को आगे बढने की अनुमति दे दी। १ सितम्बर तक इस स्थिति का अवलोकन ससार के राष्ट्र राजनयिक तमाशाई के रूप मे करते रहे। जब भारत ने शक्ति लगाकर निर्णायक स्थिति उत्पन्न करने का प्रयत्न किया तो पाकिस्तान के माध्यम से राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति चाहने वाले राष्ट्र तिलमिला उठे और युद्ध विराम की बात प्रस्तुत की। भारत ने इस मौलिक बात का स्वागत किया और कहा कि युद्ध विराम हमे स्वीकार है। दूसरी ओर पाकिस्तान-नित नई शर्तें प्रस्तुत करता रहा। युद्ध विराम भी हो गया। परन्तु युद्ध अभी अविराम है।

पाकिस्तान का ५ अगस्त वाला आक्रमण देश के लिए नई बात नहीं है। इतिहास के पढने वाले जानते हैं कि भारत पर आक्रमण होते ही रहे थे और भारतीय भी आक्रमणकारियों को अपने शौर्य का परिचय देते रहे हैं। आक्रमण एक तूफान हैं और भारतीय दृढ़ चट्टान! तूफान आते हैं और चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जाते रहे हैं। यह एक क्रमिक विशाल शृखलाहै। भारत अपनी जगह दृढ़ है तो भारत पर आक्रमण करने वाले भी समय-समय पर आक्रमण की शक्ति सजो लेते रहे हैं। हमारा ऐसा विश्वास है कि जब तक ससार में "देवी" और "आसुरी" प्रवृत्तियें रत हैं, आक्रमण और उनसे रक्षा एक दूसरे से चलते ही रहेंगे। इसलिए भारतीयों को देश रक्षा के लिए स्थायी उपाय ही सोचने पड़ेंगे जो समय-समय पर काम आ सकें।

प्रस्तुत आक्रमण से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में जो विशेष तथ्य हैं वह इस प्रकार कि प्रवृत्ति की दृष्टि से पहले यह विचारणीय हैं कि संसार का कौन राष्ट्र भारत का वास्तविक हितैषी है और कौनसा बगुला भक्ति अवसर साधक? पश्चिमी राष्ट्र ब्रिटेन आदि भारत हितैषि हैं? यह तो उनके व्यवहार से सिद्ध न हो सका अपितु उन्होंने पाकिस्तान और भारत को संसार के सम्मुख अपने बी० बी० सी० के द्वारा जिस रूप में प्रस्तुत किया वह उसका नग्न चित्र था। इसी प्रकार अमेरिका ने जो अपना परिचय दिया वह शस्त्रास्त्र के देने में आक्रमणकारी और आक्रान्ता दोनों को ही एक पंक्ति में खड़ा कर दिया जब कि भारत नैतिक दृष्टि से अपनी रक्षा के लिए शस्त्रास्त्र के पाने का पूर्णाधिकारी था। तीसरा महान् राष्ट्र रशिया जो शाब्दिक सहानुभूति भारत के साथ बनाए हुए है उसे भी पूर्ण विश्वास के योग्य नही कहा जा सकता, क्योंकि आज तक भी इसके आश्वासन कोरे आश्वासन बनकर रह गए हैं।

तथ्य यह है कि भारत विश्व का एक सिद्ध और समृद्ध देश है, तभी ससार के देश इसे ललचायी दृष्टि से हथियाने प्रयत्नशील रहे हैं। कोई खुले चुनौती देता है तो कोई चुनौती देने वाले की पीठ ठोकता है। पाकिस्तान और चीन के आक्रमण आश्चर्य की बात नहीं है। आश्चर्य की बात तो यह है कि हम रक्षा के साधनो में अन्य राष्ट्रो पर निर्भर रहे हैं। जिस अंश तक हमने अपने देश में पूर्ति की वही शक्ति हमारे लिए समय पर काम आई क्या बेंगलूर में बने विमान और क्या आर्डिनेन्स फैक्टरी द्वारा निर्मित शस्त्रास्त्र! भारत के प्राच्याचार्यो ने तो पारद से भी चलने वाले विमानों की खोज की थी। महर्षि भारद्वाज द्वारा प्रणीत "विमान शास्त्र" इस सम्बन्ध की अमूल्य निधि कही जा सकती है।

खाद्यान्न की दिशा में कुछेक वर्षों से देश के कर्णाधारों की स्थिति अमेरिका और आस्ट्रेलिया पर निर्भर रही है। वस्तुतः देश में उत्पादन वृद्धि के मौलिक साधनोंकी ओर ध्यान ही नहीं दिया गया। यदि दिया भी गया तो वह उसका कृतिम रूप था। उत्पादन वृद्धि के निमित्त प्रयासों के नाम पर राज्य मिशनरी और योजना आयोगों की योजनाए ही समुन्नत होती रहीं। उत्पादन उन्नति आकाश पुष्प की भांति एक आकर्षण ही आकर्षण बनी रही। आज जब अमेरिका अपना सड़ा अन्न भी देने को उद्यत् नही तब देश के कर्णाधार चिंतित है कि क्या बनेगा? देश हैरत में है कि पहले अशिक्षित-किसानों की उस क्रिया के प्रति जब वे क्षितिज की ओर मुह करके आशा लगाए बैठते थे तब उन्हें अन्य विश्वासी आदि की उपाधि से विभूषित किया जाता था परन्तु आज के शिक्षित कर्णाधार जब अमेरिका और आस्ट्रेलिया भी क्षितिज की ओर मुह किए हुए आशान्वित हैं, तब पूर्व के अशिक्षित किसान और आज के शिक्षित कर्णाधारों में अन्तर की कौन सी रेखा खींची जाए एक प्रश्न है। खाद्य की दृष्टि से देश की आत्मनिर्भर होने की दिशा मे कुछेक मौलिक बातें हैं जिनकी और नितान्त ईमानदारी के साथ कर्त्तव्य परायणता की मूर्त शक्ति बनकर लगना होगा। तभी उत्पादन वृद्धि संभव है अन्यथा यह एक सुखद स्वप्न ही रह जायगा। उदाहरणार्थ पहले खेती के लिए पशु से होने वाली खाद की उपलब्धि एव इस दिशा में योग्य प्रयत्न और किसान को वास्तविक रूप से प्रोत्साहित करने वाले प्रयत्नों की आवश्यकता है। यदि राज्य द्वारा किसानो को आर्थिक सहायता आदि की कोई योजना की जाए तो इसमे राज्य कर्मचारियों द्वारा घूस खोरी के लिए उत्पन्न की जाने वाली विघ्न-बाधाओ का घोर शत्रुरूप में निवारण किया जाना अनिवार्य है अन्यथा किसान को इसका सही लाभ नहीं पहुंचता। बल्कि उल्टे वह ऋणी हो जाता है। इसके अतिरिक्त कृषि एक व्यक्ति से होने वाला कार्य नहीं। इसके लिए उसे मजदूरों की भी आवश्यकता होती है। मजदूरी का जो आज अनुपात है और मजदूरों में ठीक काम न करने की प्रवृत्ति है वह भी कृषक के लिए एक बड़ी समस्या है। वह अनुभव करता है कि मौसम पर जितनी ऊंची मजदूरी देकर वह कार्य सम्पन्न करवाता है, उपज में उतने का उसे माल नहीं निकलता इसलिए ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि ऊंची मजदूरी और मजदूरों में कम काम करने की प्रवृत्ति का अन्त कैसे हो?

यह कुछ तथ्य है जो गम्भीरता से विचारने पर देश को दौर्बल्यरूप मे घेरे हुए दिखाई देते हैं।

इनके अतिरिक्त हमारे कर्णाधारो में शत्रु और मित्र को परखने की भी शक्ति क्षीण दिखाई देती है, जो प्रशासन मे एक महत्व का विषय है। इण्डोनेशिया आदि सांप्रदायिक कीडोंने अपनी जिस घिनौनी सांप्रदायिक प्रवृत्ति का परिचय पाकिस्तानी व्यवहार समर्थन रूप मे दिया, वह आखें खोलनेके लिए कुछ कम नहींहै।

अन्त में और भी एक महत्वपूर्ण अंश है जिसको प्रस्तुत करना अनिवार्य है, वह यह कि कुछेक लोग प्रस्तुत पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण की स्थिति के सम्बन्ध मे इस बात का प्रचार करते हैं कि यह लड़ाई धर्म निरपेक्षता तथा धर्म पेक्ष राज्यकी प्रवृति आत्मक स्थिति का द्वन्द का युद्ध है। वास्तविकता में यह बात ऐसी नहीं है। पाकिस्तान निरा साम्प्रदायिक दृष्टि का राज्य है भारत असाम्प्रदायिक प्रवृत्ति का राज्य है। भारतकी प्रशासनिक प्रणाली विशुद्धता-महर्षि दयानन्द के इस दृष्टिकोण की कि अपने पराए से पक्षपात रहित व्यवहारात्मक राज्य होना चाहिए? "आधारितहै। महर्षि ने इस दृष्टिकोण के अनुसार सत्य व्यवहार पूर्ण पक्षपात रहित राज्य और राज्य व्यवहार की भावना देश वासियों में निर्माण पायेगी तभी एक साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों को पहिचाने का समर्थ लोगों में होगा तो दूसरी ओर हम ससार के राष्ट्रों को साम्प्रदायिकता की गन्दगी से मुक्त कर शुद्ध मानवतावादी दिव्य दृष्टि प्रदानितकर सकेंगे। जिसमें सुख, समृद्धि कल्याण और पारस्परिक अभिवृद्धि निहित होगी।

शुभकामना

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के मुखपत्र 'सार्वदेशिक' को साप्ताहिक रूप मे देखकर मुझे अतिशय प्रसन्नता हुई। प्रचार और जनसंपर्क के वर्तमान युग मे समाचार पत्र ही जनता के साथ सीधा सपर्क स्थापित करने के लिए उपयुक्त माध्यम है।

आर्यसमाज के सार्वदेशिक सगठन के लिए अपने मन्तव्यों, गतिविधियों तथा समय-समय पर स्वीकृत नीतियों के प्रचार प्रसार के लिए आवश्यकता तो एक दैनिक पत्र की है। किन्तु अभी साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन ही दूरदर्शिता पूर्ण है। मैं सर्वान्तःकरण से इस अभियान की सफलता चाहता हूं। सामान्यतः देश-विदेश के समस्त आर्यजनों से और विशेषतः बिहार राज्य के आर्यभाईयों से अपील करता हूं कि वे अधिक से अधिक ग्राहक बनाने एवं साप्ताहिक सार्वदेशिक के प्रचार कार्य में लग जायं। निस्सन्देह हमारा सामूहिक प्रयास सार्वदेशिक सभा को इस स्थिति में ला सकता है, जिससे यह साप्ताहिक संस्करण दैनिक रूप ले ले।

श्री विष्णुदेव नारायण, एडवोकेट
उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना

ऋग्वेद और चक्रवर्ती राज्य

पूज्य श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज संसद सदस्य

एन्द्र सानसि रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठ मूतये भर ॥

ऋग्० मं० १ सू० ८ मं० १

सब मनुष्यों को सर्व शक्तिमान् अन्तर्यामी ईश्वर का आश्रय करके अपने पूर्ण पुरुषार्थ के साथ चक्रवर्ती राज्य के आनन्द को बढाने वाली विद्या की वृद्धि, सुवर्णादिधन और सेनादि बल सब प्रकार से रखना चाहिए जिससे अपने आप को तथा सब प्राणियो को सुख हो।

स गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथुश्रवो बृहत्। विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ॥

ऋग्० मं० १ सू० ६ मं० ७

मनुष्यो को चाहिए कि ब्रह्मचर्य का धारण, विषयो की लपटता का त्याग, भोजन आदि व्यवहारों के श्रेष्ठ नियमों से विद्या और चक्रवर्ती राज्य की लक्ष्मी को सिद्ध करके संपूर्ण आयु भोगने के लिए पूर्वोक्त धन के जोड़ने की इच्छा अपने पुरुषार्थ द्वारा करे कि जिससे इस ससार का वा परमार्थ का दृढ़ और विशाल अर्थात् अति श्रेष्ठ सुख सदैव बना रहे परन्तु यह उक्त सुख केवल ईश्वर की प्रार्थना से ही नही मिल सकता किन्तु उसकी प्राप्ति के लिए पूर्ण पुरुषार्थ भी करना अवश्य उचित है।

मायाभिरिन्द्रमायिनं त्वं शुष्णमवातिर।

ऋग्० मं० १ सू० ११ मं० ७

बुद्धिमान् मनुष्यो को ईश्वर आज्ञा देता है कि साम, दाम, दण्ड और भेद की युक्ति से दुष्ट और शत्रु जनो की निवृत्ति करके विद्या और चक्रवर्ती राज्य की यथावत् उन्नति करनी चाहिए तथा जैसे इस ससार में कपटी, छली और दुष्ट पुरुष वृद्धि को प्राप्त नहीं वैसा उपाय निरन्तर करना चाहिए।

इन्द्रा वरुणयोरहं सम्राजोरव आवृणे।

ऋग्० मं० १ सू० १७ मं० १

जैसे प्रकाशमान, संसार के उपकार करने सब सुखों को देने व्यवहारों के हेतु और चक्रवर्ती राजा के समान सबकी रक्षा करने वाले सूर्य और चन्द्रमा हैं वैसे ही हम लोगों को भी होना चाहिए।

यो रेवान् या अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः। सनः सिषक्तु यस्तुरः ॥

ऋग्० मं० १ सू० १८ मं० २

जो मनुष्य सत्यभाषण आदि नियमों से संयुक्त ईश्वर की आज्ञा का अनुष्ठान करते हैं वे अविद्या आदि रोगों से रहित और शरीर वा आत्मा की पुष्टि वाले होकर चक्रवर्ती राज्य आदि धन तथा सब रोगों को हरने वाली औषधियों को प्राप्त होते हैं।

निषसादधृत व्रतोवरुण. पस्त्यास्वा। साम्राज्याय सुक्रतु. ॥

ऋग्० मं० १ सू० २५ मं० १०

जैसे परमेश्वर सब प्राणियों का उत्तम राजा है वैसे तो ईश्वर की आज्ञा मे वर्तमान शरीर और बुद्धि बलयुक्त मनुष्य हैं। वे ही साम्राज्य करने योग्य होते हैं।

उच्छिष्ट चम्वोर्भर सोम पवित्र आसृज ॥

ऋग्० मं० १ सू० २८ मं० ६

राजपुरुषों को चाहिए कि दो प्रकार की सेना रक्खें अर्थात् एक सवारों की दूसरी पैदलो की। उनके लिए उत्तम रस और शस्त्र आदि सामग्री इकट्ठी करें। अच्छी शिक्षा और औषधि देकर शुद्ध बलयुक्त और नीरोग कर पृथिवी पर एक चक्र राज्य नित्य करें।

स सन्तुत्या अरातयो बोधन्तु शूर रातय. ॥

ऋग्० मं० १ सू० २९ मं० ४

हम लोगो को अपनी सेना में शूर ही मनुष्य रखकर आनन्दित करने चाहिएं जिससे भय के मारे दुष्ट शत्रुजन जैसे निद्रा मे शात होते हैं वैसे सर्वदा हो। जो हम लोग निष्कण्टक अर्थात् बेखटके चक्रवर्ती राज्य का सेवन नित्य करें।

त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः पुरुरवसे सुकृते ॥

ऋग्० मं० १ सू० ३१ मं० ४

जिस जगदीश्वर ने सूर्य आदि जगत् रचा वा जिस विद्वान से सुशिक्षा का ग्रहण किया जाता है उस परमेश्वर वा विद्वान की प्राप्ति अच्छे कर्मों से होती है तथा चक्रवर्ती राज्य आदि धन का सुख भी वैसे होता है।

त्वं नो अग्ने सनये धनानां यशसं। कारु कृणुहि स्तवानः ॥

ऋग्० मं० १ सू० ३१ मं० ८

मनुष्यों को परमेश्वर की इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए कि हे परमेश्वर कृपा करके हम लोगों में उत्तम धन देने वाली सब शिल्पविद्या के जानने वाले उत्तम विद्वानों को सिद्ध कीजिए जिससे हम लोग उनके साथ नवीन २ पुरुषार्थ करके पृथिवी के राज्य और सब पदार्थों से यथा योग्य उपकार ग्रहण करें।

परियदिन्द्र रोदसि उभे अबुभोजीर्महिना ॥

ऋग्० मं० १ सू० ३३ मं० ९

जैसे सूर्य लोक सब पृथिव्यादि मूर्तिमान् लोकों का प्रकाश आकर्षण से धारण और पालन करने वाला होकर मेघ और रात्रि के अन्धकार को निवारण करता है वैसे ही हे मनुष्यो! आप लोग उत्तम शिक्षित विद्वानों से मूर्खों की मूढता छुड़ा और दुष्ट शत्रुओं को शिक्षा देकर महाराज्य के का भोग नित्य कीजिए।

आ नासत्यात्रि भिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं। मधुपेयमश्विना ॥

ऋग्० मं० १ सू० ३४ मं० ११

जब मनुष्य ऐसे यानो में बैठ उनको चलाते हैं तब तीन दिन और तीन रात्रियों में सुख से समुद्र के पार तथा ग्यारह दिन ग्यारह रात्रियों में ब्रह्माण्ड के चारों ओर जाने को समर्थ हो सकते हैं। इसी प्रकार करते हुए विद्वान् लोग सुख युक्त पूर्ण आयु को प्राप्त हों। दुःखों को दूर और शत्रुओं को जीतकर चक्रवर्ती राज्य भोगने वाले होते हैं।

पराहयत् स्थिर हथ नरो वर्त्तयथा गुरु।

ऋग्० मं० १ सू० ३९ मं० ३

जैसे वेगयुक्त वायु वृक्षादि को उखाड़, तोड़, झझोड़ देते और पृथिव्यादि को धरते हैं वैसे धार्मिक न्यायाधीश अधर्माचारो को रोक के धर्मयुक्त न्याय से प्रजा का धारण करें और सेनापति दृढ बलयुक्त हो उत्तम सेना का धारण शत्रुओं को पृथ्वी पर चक्रवर्ती राज्य का सेवन कर सब दिशाओं मे अपनी उत्तम कीर्ति का प्रचार करें और जैसे प्राण सबसे अधिक प्रिय होते हैं वैसे राजपुरुष प्रजा को प्रिय हो।

य रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा। नूचित्स दम्यते जनः ॥

ऋग्० मं० १ सू० ४१ मं० १

मनुष्यों को उचित है कि सबसे उत्कृष्ट सेना सभाध्यक्ष सबका मित्र दूत पढ़ाने वा उपदेश करने वाले धार्मिक मनुष्य को न्यायाधीश करे तथा उन विद्वानों के सकाश से रक्षा आदि को प्राप्त हो। सब शत्रुओं को शीघ्र मार और चक्रवर्ती राज्य का पालन करके सब के हित को सपादन करें किसी को भी मृत्यु से भय करना योग्य नहीं हैं। क्योंकि जिसका जन्म हुआ है उनकी मृत्यु अवश्य होती है। इसलिए मृत्यु से डरना मूर्खों का काम है।

सुगः पथा अनृक्षर आदित्यास ऋतयते। नात्रावखादो अस्तिवः ॥

ऋग्० मं० १ सू० ४१ मं० ४

मनुष्यों को भूमि, समुद्र, अन्तरिक्ष में रथ, नौका, विमानों के लिए सरल, दृढ, कण्टक, चोर, डाकू, भय आदि दोष रहित मार्गों को सपादन करना चाहिए, जहा किसी को कुछ भी दुःख वा भय न हो। इन सबको सिद्ध करके अखण्ड चक्रवर्ती राज्य को भोग करना या कराना चाहिए।

प्रधानो विश्व सौभग हिरण्यवाशी मत्तम। धनानि सुषणा कृधि ॥

ऋग्० मं० १ सू० ४२ मं० ६

ईश्वर के अनन्त सौभाग्य वा सभा सेना न्यायाधीश धार्मिक मनुष्य चक्रवर्ती राज्य आदि सौभाग्य होने से इन दोनों के आश्रय से मनुष्यों को असख्यात् विद्या सुवर्ण आदि धनों की प्राप्ति से अत्यन्त सुखो के भोग को प्राप्त होना वा कराना चाहिए।

अस्मेसोम श्रियमधि निधेहि शतस्य नृणाम्। महिश्रवस्तु विनृम्णम् ॥

ऋग्० मं० १ सू० ४३ मं० ७

कोई प्राणी परमेश्वर की कृपा सभाध्यक्ष की सहायता वा अपने पुरुषार्थ के बिना पूर्ण विद्या चक्रवर्ती राज्य और लक्ष्मी को प्राप्त नही हो सकता।

अग्ने विवस्वदुषसश्चित्र राधो अमर्त्य।

ऋग्० मं० १ सू० ४४ मं० १

मनुष्यो को परमेश्वर की आज्ञा पालने के लिए अपने पुरुषार्थ से परमेश्वर वा आलस्य रहित उत्तम विद्वानों का आश्रय लेकर चक्रवर्ती राज्य वाले विद्वान् लोग जो उत्तम गुण और श्रेष्ठ अपने करने योग्य कर्म हैं उसी को नित्य करें और जो दुष्ट कर्म हैं उनको कभी न करें।

नि त्वा होतारमृत्विजं दधिरे वसुवित्तमम्।

ऋग्० मं० १ सू० ४५ मं० ७

जो मनुष्य उत्तम कार्य सिद्धि के लिए प्रयत्न करते और चक्रवर्ती राज्य श्री और विद्या धन की सिद्धि करने को समर्थ हो सकते हैं। वे शोक को प्राप्त नहीं होते।

(क्रमशः)

—: अर्थगति :—

वीतराग संन्यासी श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज
(गतांक से आगे)

अदृष्टपूर्व स्वभाव सब में विराजमान होता हुआ भी सब से न्यारा है, इस महान् और महत्वपूर्ण संसार का उसी से पसारा है। सब कुछ बनाता है परन्तु स्वय बनावट में नहीं आता, समस्त प्राणियो के कर्मानुकूल जन्म-मरण का निमित्त है, परन्तु स्वय न कभी जन्म ही लेता है और न कभी मरता है। छोटे से छोटे और महान् से महान् है। न्याय के करने में सर्वदा सावधान है। यदि किसी को कर्मानुसार कष्ट देता है तो उससे उसका सुधार है, और यदि किसी को सुख मिलता है तो उसमें भी उसका प्यार है। यह कैसा सद्विचार है, यदि मनुष्य की बुद्धि में आ जावे तो इसका बेड़ा ससार सागर से पार है, परन्तु मोह ममता की अशुद्धि के कारण साधारण पुरुषों की बुद्धि इस उलझन के सुलझाने इस बिगड़ी हुई बात के बनाने में लाचार है, सत्सग, स्वाध्याय ईश्वर प्रेम और उदारतादि गुणों के उदय होने से ही इसका उद्धार है। वह सितार कैसे बजेगी जो बेतार है, वह औरों का उपकार कैसे करेगा जो स्वय बीमार है। अतः सीतार पर तार चढाओ फिर बजाओ। प्रथम स्वयं औषध का सेवन करके अपने को नीरोग बनाओ फिर उपकार करने में मन को लगाओ यह राजमार्ग है इसमें भूलने का भय नहीं है, कैसी विचित्र बात है, यदि कोई पुरुष ईश्वर से इन्कार करता है तो इसमे भी वह चमकता है। यदि कोई इनकार करता है तो इसमें भी दमकता है। समस्त प्रपञ्च की रचना करने पर भी अकर्त्ता और स्वयं निराधार हो कर भी विश्व का धर्त्ता है। सदा एक रस है परिवर्तन मे नहीं आता। इस का ही यथार्थ ज्ञान जीवत्मा को बन्धन से छुडाता है। सकल विश्व का स्वामी है, इसका ही नाम अन्तर्यामी है। सब ब्रह्माण्ड को नियम मे चलाता है और स्वयं अचल है, इस नियामक का जो नियम है वह सब अटल है। नीचे, ऊपर मध्यभाग की मर्यादा से बाहर जाता है। कैसी वस्तु है समझ नहीं आता? वह निराकार है परन्तु विश्व-प्रेम का भण्डार है। आदि और अन्त से दूर, सर्व विश्व में भरपूर। यदि कोई प्रेम-नेत्र से उसकी ओर देखता है तो वह सहस्रों नेत्रों से उसको निहारता है। यदि कोई प्रीति की रीति को जगाकर अंगुली को उठाता है तो वह प्रेमपुरित सहस्रों हाथों को फैलता है। किञ्चित् ज्ञानदृष्टि को खोल नजर आता है वह तेरे प्रेम से अधिक प्रेम दिखाता है, पर भूल से तेरी बुद्धि में नहीं आता। अल्पवयस्क लघु बालक पिता से रूठ कर इधर उधर को जाता है। अप्रसन्नता के कारण वह पिता को देखना भी नहीं चाहता परन्तु पिता करुणामयी दृष्टि से देखता हुआ उसके ही इर्द गिर्द चक्कर लगाता है। कभी कभी माता दुग्धपान करने वाले शिशु को रोष से दूर त्याग देती है तो भी वह बालक माता की ओर ही निहारता है और रुदन करता हुआ उसके चरणों की तरफ ही भागता है। क्या करे दुर्बल है। माता को अपने प्रेममय हाथों में लेकर अन्त में उसकी इच्छा को पूरा करना ही होता है। क्या विचित्रता है, कहीं पिता प्रेमवश पुत्र की ओर जाता है, और कहीं बालक प्रेम से माता के चरणों में आता है। यह परमात्मा का स्वभाव है, सत्य है या स्वाब है वही जाने ॥

परमात्मा के स्वरूपलक्षण का निरूपण—

सच्चित्सुखात्मको हि सः। २४॥

'स' शब्द परमात्मा की ओर सकेत कर रहा है। वह सत्-चित् है और परमात्मा की सत्ता व्यापक है और उस सत्तामे ज्ञान और आनन्द स्वरूप से समान रूप से विद्यमान हैं। इसमें कदापि किसी काल में भी वृद्धि ह्रास नहीं होता अतएव यह परमात्मा का स्वरूप लक्षण कहा है। अर्थात् जिस रूप से जिस वस्तु का निरूपण कियाजावे वह उसका स्वरूपलक्षण कहलाता है। तटस्थलक्षण इस से भिन्न होना है, वह कभी अपनी परिस्थिति को त्याग देता है। सत् चित् अगर परमेश्वर का लक्षण करें तो यह परिणामशील सत्ता और अल्पज्ञ चेतन का सहचारी होकर परमात्मा का तटस्थलक्षण बन जाता है आनन्द के समावेश ने व्यापक सत्ता और पूर्ण ज्ञान के विधान से इसको स्वरूपलक्षण बना दिया है। विशेषण जो सजातीय का व्यावर्तक होता है, उसको भी तटस्थ-लक्षण कहना ठीक है। सजातीय के व्यावर्तक को लक्षण या स्वरूपलक्षण कहते हैं। आनन्द परमात्मा का और ज्ञान से जीवात्मा का बोध तो हो सकता है परन्तु सुख और ज्ञान दोनों गुण हैं इनको किसी द्रव्य के आश्रित ही होना चाहिये। अतएव तत् शब्द का ग्रहण किया गया। सत् प्रकृति सच्चित् जीवात्मा, और सच्चिदानन्द परमात्मा है। यह तीन विशेषण किस लिये हैं?

संभवव्यभिचाराभ्यां स्याद्विशेषणमर्थवत् ।२५॥

विशेषण सार्थक वहां ही होता है जहां सम्भव और व्यभिचार हो। अन्यत्र इसकी व्यर्थापत्ति है। जब वस्तु एक ही है तब विशेषण किस का व्यावर्तक होगा। व्यावर्तकता के अभाव से स्वयमेव समर्थकता की हानि होगी। अतएव विशेषण समर्थ होना चाहिए॥

दृष्टान्त—कोई स्वामी अपने द्वादशवर्षीय भृत्य बालक को यह कहे कि तुम बाजार से दुग्ध लाओ। चलते समय यह बता दे कि गौ का दूध लाना, इस कथन से बकरी और भैंस आदि के दूध की व्यावृत्ति और गौ के दुग्ध में प्रवृत्ति होती है। यहां सभव और व्यभिचार दोनों विद्यमान हैं। परन्तु किसी दिवस उस भृत्य को स्वामी यह कहे कि जाओ तुम बाजार से श्वेत दूध लाओ, इस कथन को श्रवण कर वह अल्पवयस्क भृत्य उपहास से कहेगा कि भगवन्! दुग्ध तो श्वेत (सफेद, ही होता है। लाल, काला और पीला होने की सम्भावना ही नही तो यह श्वेत विशेषण बन ही नहीं सकता। यह आप का अयुक्त वचन, युक्तिविरुद्ध कथन मान्य नहीं। अतएव स्वरूप से यदि एक ही वस्तु हो तो विशेषण वहां उपयोगी नहीं हो सकता। जब अन्य की प्रवृत्ति ही नहीं तो विशेषण व्यावृत्ति किस की करेगा। अतएव लक्षण ठीक होवा चाहिए—

अतिव्याप्ति-अव्याप्ति-असम्भव दोषशून्यं यत्तदेव लक्षणम्

उस लक्षण के द्वारा ही लक्ष्य वस्तु का यथार्थ बोध होता है जो लक्षण उपरोक्त तीन दोषों से रहित हो—

प्रथम दोष अतिव्याप्ति है—जो लक्षण लक्ष्य वस्तु में विद्यमान होकर वस्त्वन्तर में भी दिखाई देता है वह लक्षण अतिव्याप्ति दोष से दूषित होता है। यदि गौ का लक्षण ऐसा किया जावे कि "सींग वाले पशु को गौ कहते हैं" तो यह लक्षण गौ में तो विद्यमान है किन्तु भैंस और बकरी में भी देखा जाता है, अतएव उक्त लक्षण अतिव्याप्ति दोष से दूषित है॥

द्वितीय अव्याप्ति दोष है—लक्ष्य के एक देश में जिस लक्षण की सत्ता का सद्भाव हो वह अव्याप्ति दोष कहलाता है। जैसे 'गौ कृष्ण होती है' यह लक्षण लक्ष्य के एक देश में देखा जाता है क्योंकि गौ रक्त, श्वेत और पीत भी देखी जाती है, अतएव लक्षण अव्याप्त है॥

तृतीय असंभव दोष है—जिस लक्षण का लक्ष्य वस्तु में समावेश ही न हो वह लक्षण असंभव दोष युक्त है। यथा 'गौ एक खुर वाली होती है' गौ में इस लक्षण की सम्भावना ही नहीं। तीनों दोष लक्षण में नहीं होने चाहिएं। केवल लक्ष्य में ही लक्षण का अन्वय होने से लक्षण निर्दोष होता है। इसको ही व्याप्ति कहते हैं। यथा 'सास्ना वाले पशु को गौ कहते हैं। यह लक्षण अन्य किसी पशु में न जाकर केवल गौ में ही संघटित होता है। अतएव यह सल्लक्षण है। एव सच्चिदानन्द ब्रह्म का लक्षण है। यदि 'सद् ब्रह्म' इतना ही ब्रह्म का लक्षण करते तो यह ब्रह्म में व्याप्त होकर प्रकृति में भी सगत हो जाता। यदि 'सच्चित् ब्रह्म है' ऐसा लक्षण करते तो प्रकृति से व्यावृत्त होकर जीवात्मा में इसकी अनुवृत्ति हो जाती। इस लिये आनन्द का समावेश करने से सत् प्रकृति और सच्चित् जीवात्मा से पृथक् होकर केवल ब्रह्म ही इसका लक्ष्य बनता है।

— क्रमश

आर्य समाज चिरैया (गया)

आर्य समाज की स्थापना हुई। सर्वश्री नारायणदेव आर्य प्रधान, वासुदेव मिस्त्री उपप्रधान, मोतीलाल मन्त्री, धर्मदेवप्रकाश स० मन्त्री, डोमीराम निरीक्षक, ईश्वरप्रसाद साहू कोषाध्यक्ष, रामेश्वरप्रसाद साहू पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

संसदीय समिति तोड़ दी जाय

स० हुकमसिंह जनता का विश्वास खो चुके हैं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल शालवाले ने श्री उत्तम सिंह दुग्गल एव श्री लक्ष्मणसिंह गिल के भ्रामक वक्तव्य का खण्डन करते हुए सरकार को चेतावनी दी है कि सरदार हुकमसिंह की अध्यक्षता मे उनकी स्वय निर्मित ससदीय समिति प्रारम्भ से ही कुछ ऐसे लोगो से गठित की गई है जो पजाबी सूबा के सम्बन्ध मे चिरकाल से ही अपना मन बना चुके है। श्री हुकमसिंह पर विभिन्न क्षेत्रो से बार बार आरोप लगाये जा चुके है कि उनकी निष्पक्षता सन्दिग्ध है। ऐसा भी कहा जा रहा है कि उन्होने सविधान पर हस्ताक्षर नही किए।

मास्टर तारासिंह के आन्दोलन के समय विदेशी पत्रकारो की सवाद-गोष्ठी मे से भारतीय पत्रकारो को बाहर निकाल देना यह सरदार साहब की भारतीयता का एक नमूना है। पण्डित नेहरू उनकी कांग्रेस पार्टी प्रारम्भ से ही साम्प्रदायिकता के सामने झुकती चली आयी है। इसका ही दुष्परिणाम पाकिस्तान के रूप मे विष वृक्ष बनकर आज भारत सन्तान के सामने भारी अशान्ति का कारण बना हुआ है। श्री दुग्गल तथा सरदार गिल ने अपने अकाली साथी सरदार हुकमसिंह द्वारा गठित ससदीय समिति के कार्यों की भर पेट प्रशसा की है। मैं इन तीनो महानुभावो के साथ श्री नन्दा जी और उनके साथियो से सार्वजनिक रूप से पूछना चाहता हू कि इस तथाकथित समिति के सामने पजाबी सूबा के विरोध मे ज्ञापन देने वाले आर्य समाज, हिन्दू-महा सभा, जनसघ, सनातन धर्म सभा, जैन समुदाय मजहबी रमदासी सिख, नाम धारी सिख आदि अनेक सस्याओ के किस किस व्यक्ति को बुलाकर बातचीत की गई है।

मैं श्री नन्दा जी से पूछना चाहता हू कि ससदीय समिति की घोषणा करते हुए उन्होने साफतौर पर कहा था कि सरदार हुकमसिंह द्वारा गठित समिति केवल सलाहकार समिति होगी और यह प्रारम्भ से लेकर सच्चर फार्मूला, रीजनल फार्मूला आदि की जाच करेगी और अपनी रिपोर्ट मन्त्रिमण्डलीय समिति जिसके सदस्य श्री महावीर त्यागी, श्री यशवन्तराव चह्वाण, और श्रीमती इंदिरागान्धी है पेश करेगी और यह मन्त्रिमण्डलीय समिति ही पार्लियामेंट को अपनी अन्तिम रिपोर्ट देगी जिस पर ससद के खुले अधिवेशन मे विचार किया जायगा।

जनता को बताया जाय कि श्री महावीर त्यागी श्री चह्वाण तथा श्रीमती इंदिरागाधी की मन्त्रिमण्डलीय समिति की क्या स्थिति है? क्या सरदार हुकमसिंह के दबाव मे आकर यह तोड दी गई है?

अकाली नेताओ ने पजाबियों के स्वाभिमान की बात कही है। मैं उनसे पूछना चाहता हू कि क्या अकाली ही पजाबी हैं? पजाबी रीजन के ४५ प्रतिशत हिन्दू २२ लाख से अधिक मजहबी रमदासी सिख सत्गुरु जगजीतसिंह के लाखो नामधारी सिख लाखो की सख्या मे पजाब के हरिजन जिनमे सिख और हिन्दू दोनो शामिल हैं तथा मन्त्रिमण्डल मे उपस्थित पजाब विधान सभा के सदस्य, पजाब कांग्रेस आर्य समाज, जनसघ, सनातन धर्म सभा, हिन्दू महासभा, जैन समाज आदि क्या ये पजाबी नही हैं?

बहुमत के रहने वाले पजाबी रीजन के इन पजाबी भाइयो के स्वाभिमान के साथ यदि सरदार हुकमसिंह की साम्प्रदायिकता की धमकी मे आकर सरकार ने कोई फैसला किया तो इसे किसी अवस्था मे भी स्वीकार नही किया जायगा। श्री नन्दाजी अपनी स्थिति स्पष्ट करे और अपने वायदो को पूरा करे। यदि उन्होने पण्डित नेहरू की भाति अकालियो की साम्प्रदायिक माग को मान कर पजाब की स्थिति को बिगाड दिया तो देश की जागृत जनता श्री नन्दाजी से त्याग पत्र मागने पर बाधित होगी।

मैंने एक मुलाकात मे श्री नन्दाजी से पूछा था कि पजाबी सूबा की रूप रेखा आपके पास क्या है? श्री नन्दा जी ने उत्तर मे कहा था कि सरकार के पास कोई रूप रेखा नही है। हम तो खुले दिमाग से विचार करेगे और सत्य और तथ्य को ग्रहण करेगे। मैं पूछना चाहता हू कि वर्तमान पजाब क्या पजाबी सूबा नही है? क्या बगाली, मद्रासी या कश्मीरी सूबा है?

वस्तुत सन्त फतहसिंह की कल्पना का भाषायी सूबा तो श्री कैरो बना ही गये हैं। मास्टर तारासिंह और सन्त फतहसिंह मे इस समय भारी सघर्ष है। मास्टर तारासिंह का कहना है कि सन्त फतहसिंह गद्दार है। हमे भाषायी सूबा नही चाहिए। हमे तो आत्म निर्णय के आधार पर मिस्टर जिन्ना की तरह का स्वतन्त्र सिख राज्य चाहिए। इसलिए वे नागालैण्ड के ईसाइयो और पाकिस्तानी एव कश्मीर के पाकिस्तान समर्थक मुसलमानो का खुला समर्थन कर रहे है।

श्री नन्दाजी ने साम्प्रदायिको को खुली छुटटी देकर अपनी स्थिति अत्यन्त पतली बनाली है। मैं खुले तौर पर कहना चाहता हू कि देश को पतली स्थिति बनाने वाला मन्त्री नही चाहिए। या तो वे अपनी स्थिति ठीक करे अन्यथा उन्हे त्याग पत्र दे देना चाहिए।

आर्य पर्व-सूची

(सम्वत् २०२२-२०२३, सन् १९६६ ई०)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाजो की सूचना के लिए प्रतिवर्ष स्वीकृत आर्य पर्वो की सूची प्रकाशित किया करती है। सन् १९६६ की सूची निम्न प्रकार है

क्रम स०	नाम पर्व	सौर तिथि	चन्द्र तिथि	अग्रेजी तिथि	दिन
१	मकर सक्रान्ति	३०-९-२०२२	माघ कृ० ८ स० २०२२	१४-१-६६	शुक्रवार
२	बसन्त पचमी	१५ १०-२०२२	माघ शु० ५ स० २०२२	२७-१-६६	गुरुवार
३	सीताष्टमी	२-११-२०२२	फा० कृ० ८ स० २०२२	१३-२ ६६	रविवार
४	दयानन्द बोधोत्सव शिवरात्रि)	७-११-२०२२	फा० कृ० १३ स० २०२२	१८-२-६६	शुक्रवार
५	लेखराम तृतीया	१२-११-२०२२	फा० शु० ३ स० २०२२	२३-२-६६	बुधवार
६	बसन्त नवसस्येष्टि (होली)	२३-११-२०२२	फा० शु० १४ स० २०२२	६ ३ ६६	रविवार
७	नव सवत्सरोत्सव एव आर्यसमाज स्थापना दिवस	१०-१२-२०२२	चैत्र शु० १ स० २०२३	२३-३ ६६	बुधवार
८	रामनवमी	१८-१२-२०२२	चैत्र शु० ९ स० २०२३	३१-३-६६	गुरुवार
९	हरितृतीया	५-४-२०२३	श्रावण शु० ३ स० २०२३	२०-७-६६	बुधवार
१०.	श्रावणी उपाकर्म,सत्याग्रह बलिदान दिवस	१४-५-२०२३	श्रा० शु० १५ स० २०२३	३०-८-६६	मगलवार
११	कृष्ण जन्माष्टमी	२३-५-२०२३	भा० कृ० ८ स० २०२३	८-९-६६	गुरुवार
१२.	विजय दशमी	७-७-२०२३	आ० शु० १० स० २०२३	२३-१०-६६	रविवार
१३	ऋषिनिर्वाणोत्सव (दीपावली)	२७-७-२०२३	का० कृ० ३० स० २०२३	१२-११-६६	शनिवार
१४.	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	९-९-२०-२३	म० शु० ११ स० २०२३	२३-१२-६६	शुक्रवार

इन पर्वो को उत्साह पूर्वक ससमारोह मना कर इन्हे आर्य समाज के प्रसार और वैदिक धर्म के प्रचार का महान् साधन बनाना चाहिये।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली का ८१वां वार्षिक अधिवेशन

राजधानी की सबसे बड़ी आर्य समाज दीवानहाल का ८१वां वार्षिकोत्सव १७, १८, १९ दिसम्बर को गान्धी ग्राउण्ड में बड़े समारोह से मनाया गया। उत्सव श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी के यज्ञ से आरम्भ हुआ और सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री बाबू सोमनाथ जी मरवाहा एडवोकेट ने पवित्र ओ३म् ध्वजा को लहराया। इस अवसर पर भाषण देते हुए श्री मरवाह जी ने कहा—इस झण्डे पर ओ३म् जगदुत्पादक परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम ओ३म् है। यह ध्वजा मन्दिरों में ही नहीं हर घर और हर दुकान पर इसे लहराना चाहिये। जिससे हमारा आस्तिक भाव बढ़े और हर समय हमारे सामने ओ३म् स्मरण रहे।

साय-काल को श्री मनोहर लाल जी बगाई एडवोकेट के कर कमलों द्वारा आर्य साहित्य तथा चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। बगाई जी ने कहा कि हम इस प्रदर्शनी से अपने पूर्वजों के बलिदानों की स्मृति और कार्यों का दिग्दर्शन करें। इस प्रदर्शनी में हमारा अमूल्य वैदिक साहित्य है जिसे साधारण जनों को देखने का अवसर प्राप्त नहीं होता।

रात्री मे आचार्य श्री प० हरिदत्त जी शास्त्री की अध्यक्षता मे एक विशाल सस्कृत सम्मेलन हुआ। जिसमे श्री उग्र सेन जी शास्त्री, महामन्त्री दिल्ली राज्य सस्कृत परिषद्, श्री प० चारूदेव जी शास्त्री, श्री प० हनुमन्तप्रसाद जी श्री डा० मण्डन मिश्र जी श्री दयानन्द जी भार्गव, श्री कुमारी ताहिरा बेगम, इत्यादि महानुभावो के सस्कृत की आवश्यकता, और उसके महत्वपर विशेषव्याख्यान हुए। उन्होंने कहा कि समस्त भाषाओ के ताल मेल के लिए सस्कृत का होना परम अनिवार्य है। शिक्षा विभाग को यह प्रस्ताव भेज ने का निश्चय हुआ कि सस्कृत को उच्चतर स्थान दिलाया जाए। इस सम्मेलन के आयोजक श्री प० सुरेन्द्रकुमार जी शास्त्री साहित्यरत्न थे।

तत्पश्चात् श्री कुवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर का एक घण्टा ओजस्वी भाषाण हुआ। इस में आर्य समाज की गई सेवाओं का वर्णन किया गया श्री मुसाफिर जी ने ओरदार शब्दों में कहा कि दयानन्द के सैनिक बिना किसी लालसा के देश हित को दृष्टि कोण में रख कर अपना सर्वस्व न्योछावर करते आये हैं और वह देश के लिए बडी से बड़ी कुर्बानी करने के लिए सदा तैयार रहते हैं।

१८, दिसम्बर को प्रात. श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी का अत्यन्त प्रभावशाली भाषण हुआ। स्वामी जी ने कहा कि बिना उपकार और परमार्थ का जीवन बनाए मनुष्य कदापि उन्नति नहीं कर सकता।

श्री प० भगवद्दत्त जी बी० ए० वैदिक अनुसधान कर्ता की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन मे हुआ। जिसमे श्री प० ओ३म् प्रकाश जी शास्त्री ने वेदों के आविर्भाव और उसकी आवश्यकता पर प्रभाव शाली वक्तव्य दिया। श्री आचार्य हरिदत्त जी शास्त्री ने वेद और पुराण विषय पर अपने विचार रखे एव वेदों की महानता बतलाई।

रात्रि को आर्य समाज की विभूति युवक सन्यासी श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती का अत्यन्त प्रभाशाली भाषण, युग धर्म विषय पर हुआ। श्री स्वामी जी महाराज ने संसार की प्रगतियों और चल रहे सघर्षों पर दृष्टि डालते हुए जोरदार शब्दों में कहा कि दुनिया के व्यक्ति जब तक वादों के चक्कर मे पड़े रहेगे तब तक कल्याण नहीं हो सकता। केवल वैदिक धर्म ही ससार को सुख और शान्ती दे सकता है इसको अपनाए बिना कल्याण असम्भव है।

१९, दिसम्बर यज्ञोपरान्त प्रात: काल श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी ने अध्यात्मवाद की व्याख्या की।

मध्याह्न मे आर्यसमाज दीवानहाल के मन्त्री श्री बी० पी० जोशी एडवोकेट ने वार्षिक विवरण सुनाया। श्री ला० रामगोपाल जी ने आर्य समाज की प्रगतियों तथा उसकी ससार पर छाप एवं भावि कार्य कर्मों पर अत्यन्त प्रेरणा दायक भाषण दिया।

सभा-प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास

इनकी अपील पर १५ हजार रुपया जमा हो गया।

तत्पश्चात् श्री प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में २५, ३० हजार नर नारियों के विशाल जनसमूह में आर्य सम्मेलन हुआ। सम्मेलन मे अनेक गम्भीर एवं महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुए।

सभाध्यक्ष की ओर से निम्न प्रस्ताव जनता ने करतलध्वनि के साथ स्वीकार किये—

प्रस्ताव संख्या १

यह आर्य सम्मेलन देश की संकट पूर्ण खाद्य समस्या पर गहरी चिन्ता व्यक्त करता हुआ अपनी सरकार को निम्न प्रकार उपयोगी सुझाव देना अपना कर्तव्य समझता है।

१—खाद्य समस्या का समाधान करने के लिए तुरन्त गो हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया जाए, क्योंकि दूध घी का बाहुल्य होने पर ही अन्न की खपत कम हो सकती है।

२—देश में मांसाहार के प्रचार से चरित्रहीनता एवं अनेक प्रकार के चरित्र दोष जन साधारण में बड़ी तेजी से आ रहे हैं। सरकार के प्रचार विभाग द्वारा मांसाहार के प्रयोग पर बल देने के कारण जनता में यह विश्वास जड़ पकड़ता जा रहा है कि मांस खाने में कोई दोष नहीं। अतः सरकार तुरन्त हिंसक प्रचार को बन्द करे, और ऐसे दिए जाने वाले अनुदान रोके जाएं।

३—यह सम्मेलन सरकार से अनुरोध करता है कि देश के कृषक बन्धुओ को विशेष रूप से प्रेरित किया जाए कि भूमि में अधिक से अधिक अन्न उपजाने की कोशिश करें और गन्ना तम्बाकू आदि बोने में जो भूमि उपयोग में लाई जाती है वह भूमि अन्न उपजाने के उपयोग में लाएं। क्योंकि शक्कर और तम्बाकू के बिना जीवन यापन हो सकता है परन्तु अन्न के बिना जीवन यापन संभव नही।

४—देश वासियों से यह सम्मेलन अपील करता है कि वे प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री की अपील पर कम से कम अन्न का प्रयोग करें और सप्ताह मे एक समय का उपवास करके देश की खाद्य समस्या के समाधान मे अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करें।

इस प्रस्ताव का सर्व सम्मति से अनुमोदन हुआ।

प्रस्ताव संख्या २

प्रस्तावक श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती।

अनुमोदक १ श्री आर्च बिशप लाट पादरी विलियम साहब।

२ श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी, अध्यक्ष वेद व्यास आश्रम पान पोस उड़ीसा।

आर्य समाज दीवान हाल के ८१ वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित यह आर्य सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध पूर्वक मांग करता है, कि

(शेष पृष्ठ १४ पर)

राजधानी में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती की धूम

३ मील लम्बे जलूस और विराट् सभा में आर्यों की अमर हुतात्मा को श्रद्धांजलि

चांदनी चौक में स्वामी जी का स्मारक बनाने की मांग और 'पंजाबी सूबा' का विरोध

दिल्ली, २५ दिसम्बर।

स्वतन्त्रता-सग्राम के वीर सेनानी, शुद्धि आन्दोलन के अग्रदूत तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के सस्थापक अमर हुतात्मा श्रीस्वामी श्रद्धानन्द जी की ३९वी बलिदान जयन्ती आज राजधानी की सवा सौ आर्य समाजो तथा विभिन्न आर्य और हिन्दू सस्थाओ की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान मे बड़े समारोह पूर्वक मनाई गई।

श्रद्धानन्द बलिदान भवन मे, जहा २३ दिसम्बर १९२६ को एक धर्मान्ध मुसलमान ने पूज्य स्वामी जी के सीने मे पिस्तौल की गोली मार कर उन्हे शहीद किया था। हवन-यज्ञ के पश्चात् ठीक १२ बजे तीन मील लम्बा विशाल जलूस आरम्भ हुआ।

जलूस मे १०० से ऊपर मण्डलिया, ५० के लगभग ट्रक तथा मोटर, लगभग दर्जनो बैंड, आर्य समाज नया बास की प्रचार गाडी तथा अनेक लेजियम मण्डलिया सम्मिलित थी। दयानन्द विद्या मन्दिर, गाधी नगर की छात्राए और सनातन धर्म कन्या हायर सैकण्डरी स्कूल, नबीकरीम का बैंड जनता को विशेषत आकर्षित कर रहा था। इस वर्ष दिल्ली के आस-पास के ग्रामो नरेला बल्लभ गढ़, गुरुकुल गदपुरी गुडगाव पानीपत, फरीदाबाद सोहना पलवल आदि से भी आर्यबन्धु पधारे हुए थे।

जलूस मे श्री स्वामी आत्मानन्द जी तीर्थ, आर्य सन्यासिनी विद्योत्तमा जी यती ला० राम गोपाल जी शालवाले, श्री सोमनाथ जी मरवाहा, श्री नारायणदास जी कपूर श्री रामलाल जी ठेकेदार, श्री ला० दीवानचन्द जी श्री डा० गिरीधारी लाल जी ढल्ला, वैद्य मूलचन्द जी, श्री ला० मेलाराम जी, श्री न्यादरमल जी श्री मनोहरलाल जी बगई और श्री देवराज जी चड्ढा इत्यादि महानुभाव सम्मिलित थे।

विराट सार्वजनिक सभा

जलूस अब एक विराट सार्वजनिक सभा मे परिणत हो गया। उसकी अध्यक्षता श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले ने की और विभिन्न महानुभावो ने पूज्य स्वामी जी के चरणो मे भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए ला० रामगोपाल जी ने सभी उपस्थित जनो को आज के भव्य जलूस पर बधाई देते हुए सरकार से माग की कि घटा घर, जहा अमर हुतात्मा ने गोरो की मगीनो के आगे अपनी छाती तान दी थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रतिमा शीघ्र स्थापित की जाव। उन्होने प्रबल शब्दो मे कहा कि घटाघर पर किसी नेता का स्मारक बन सकता है तो केवल स्वामी श्रद्धानन्द जी का। अत गृहमन्त्री श्री नन्दा जी इसको शीघ्र क्रियान्वित करावे तथा नगर निगम के ७ जनवरी ६४ के प्रस्ताव की प्रतिष्ठा बढावें। उन्होने आर्यसमाजी बन्धुओं से अनुरोध किया कि सगठन के अद्भुत प्रणेता स्वामी श्रद्धानन्द के पदचिह्नो पर चलते हुए आर्य समाज के सगठन को नष्ट-भ्रष्ट करने की चेष्टा करने वाले पथमार्गियो से सावधान रहे।
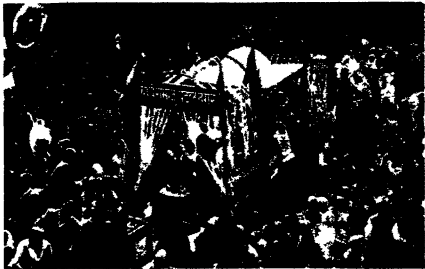
बलिदान दिवस की विराट शोभा यात्रा मे हजारो आर्य नर नारियो का जन समूह।

श्री प्रो० उत्तमचन्द 'शरर' ने कहा कि स्वामी जी ने निर्भीकता से आर्य समाज, राष्ट्र, दलितो तथा सिखो की सेवा की। आज सिख कृतघ्न हो गये है और पजाब को खण्डित करना चाहते है।

आर्य सन्यासिनी विद्योत्तमा यती ने श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी ने थोडे से जीवन म बहुत बड़े काम किए। आर्य समाज का इतिहास बलिदानो का इतिहास है और स्वामी जी का जीवन उसका ज्वलन्त प्रमाण है।

श्री करतार सिह जी 'गुलशन तथा श्री तेजराम जी वैदिक मिशनरी ने कविताओ द्वारा श्रद्धा के पुष्प भेंट किये।

ओम्प्रकाश
मन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की विराट शोभा यात्रा मे आर्य केन्द्रीय सभा के गणमान्य अधिकारी

देश भर में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

—आर्यसमाज मुगल सराय मे श्री रामजी प्रसाद जी आर्यभिक्षु ने बिराट सभा मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के महान् जीवन पर प्रकाश डाला।

—आर्य समाज सदर बाजार बरेली कैन्ट मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बडी धूम धाम से मनाया गया।

—आर्य युवक समाज करनाल की तरफ से अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया गया। प्रधानता ब्र० विद्याव्रत जी ने की। प्रि० मेलारामजी बर्क, श्री रामप्याराजी, एम. एल ए, राधाकृष्ण जी एडवोकेट तथा डा० दुर्गासिह जी ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

—आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी के तत्वावधानमे आर्यसमाज बुलानाला मे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवम प० सत्यदेवजी शास्त्री कीअध्यक्षता मे मनायागया। समारोह मे श्री हरीशचन्द्र जी श्रीवास्तव, आनन्द प्रकाश जी, प्रेमचन्द आर्य, प० रेवती प्रसाद जी शर्मा, डा० मोहनराम गापाल दास जी कपूर धर्मवीर मेहता आदि के भाषण तथा कवितायें हुई।

—आर्यसमाज खडवा मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस ससमारोह मनाया गया। सर्व श्री डा० रघुनाथ सिह जी वर्मा, बी० एस० भण्डारी, अक्षयकुमार जी वर्मा, रामचन्द्र जी आर्य, सुखराम जी आर्य प्रचारक तथा नारायण प्रसाद निगम आदि के भाषण एव सगीत हुए।

—आर्यसमाज शेखपुरा (बिहार) दिनाक २१-१२-६५ मे तीन दिन तक ससमारोह मनाया गया। श्री प० गगाधर जी शास्त्री, श्री प० रामानन्द जी शास्त्री आदि बिद्वानो के महत्त्वपूर्ण भाषण हुए।

—

आर्यसमाजदीवानहाल

(पृष्ठ १२ का शेष)

धर्म प्रचार के नाम पर राजनैतिक षड्यन्त्र करने वाले विदेशी पादरियों को अविलम्ब देश से निष्कासित कर दिया जावे।

इससम्मेलन का यह निश्चित मत है कि यह गोरेपादरी देश की सीमावर्ती कालोनियों में बैठ कर भारत की आन्तरिक स्थिति में "हस्तक्षेप करते हैं," और देश की गोपनीयता से विदेशियों को अवगत करते हैं, तथा आन्तरिक रूप में देश की अपढ़ तथा ग्रामीण जनता को भारत सरकार के विरुद्ध भड़काते हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है नागालैंड तथा झाडखंड की जटिल समस्या।

यह सम्मेलन सरकार को सचेत करना अपना कर्त्तव्य समझता है कि विदेशों से मिलने वाली अरबों रुपयों की सहायता से विदेशी पादरी भारत का मानचित्र बदलने की तैयारी कर रहे हैं, अत: यह सहायता तुरन्त बन्द की जावे और नियोगी कमीशन की रिपोर्ट पर आचरण किया जावे।

प्रस्ताव संख्या ३

प्रस्तावक—श्री पंडित ओ३म् प्रकाश जी शास्त्री विद्याभास्कर

अनुमोदक—श्री आचार्य वाचस्पति जी शास्त्री

यह आर्य सम्मेलन पंजाबी सूबा के प्रश्न पर विचार करने के लिए गृहमन्त्री द्वारा बनायी गई उप समितियों के प्रस्ताव को अवांछनीय समझता है। इस सम्मेलन का दृढ़मत है कि विभाजित पंजाब का और विभाजन करना एक भयकर राष्ट्रीय भूल होगी और उसके परिणाम बड़े भयंकर होंगे। आर्यसमाज एकता के अपने पुनीत संकल्प को प्रत्येक स्थिति में स्थिर रखने के लिए पूर्ण प्रयत्न करता रहा है और भविष्य में भी करता रहेगा। पंजाब द्विभाषी राज्य है और उसका वही रूप रहना देश के लिए कल्याणकारी है किन्तु पंजाबी रीजन में हिन्दी के साथ जो पक्षपातपूर्ण व्याहार किया जा रहा है वह राष्ट्र के लिए घातक है।

कतिपय सूत्रों से यह ध्वनि भी सुनने में आती है कि समूचे पंजाब को गुरुमुखी एवं पंजाबी के नाम से सारे पंजाब की एक भाषा राज्य बनाया जाए। अतः यह सम्मेलन सरकार को यह चेतावनी देना अपना कर्त्तव्य समझता है कि हिन्दी ही पंजाब की बहुमुखी भाषा है। यदि कुछ साम्प्रदायिक तत्वों को सन्तुष्ट करने के लिए सरकार ने हरियाणा पर गुरुमुखी लादने का प्रयत्न किया तो इसका पूरी शक्ति से विरोध किया जाएगा।

अतः इस सम्मेलन की यह निश्चित धारणा है कि विदेशीआक्रमण के इस भयानक समय में सरकार इस प्रकार के विषयों पर कोई विचार न करें।

दानी नहीं—डाकू

यो हृत्वा गोसहस्राणि नृपो दद्यात-रक्षिता। स शब्दमात्रफल भाग राजा भवति तस्कर.॥ म० मोक्ष अ० सू६१

जो राजा दूसरों की हजारों गौएँ छीन कर दान करता है और प्रजा की रक्षा नहीं करता, वह नाम मात्र का ही दानी और राजा है। वास्तव में तो वह चोर और डाकू है।

विशेषांक

बड़ी सावधानी से सभी सदस्यों को भेजा गया है किन्तु अनेक बन्धुओं को अब तक नहीं मिला। बीच में कहां गायब हो जाते हैं इसके लिए हम क्या कहें। आप पोस्ट आफिस से पूछें और हमें भी लिखें। हमारी हार्दिक भावना यह है कि चाहे कार्यालय को हानि उठानी पड़े किन्तु अपने सदस्यों को नहीं। —प्रबन्धक

शोक

—मास्टर शिवचरण दास जी (आजीवन सदस्य सार्वदेशिक सभा) के जामाता तथा हरियाणा के पुराने आर्य नेता श्री ला० रामनारायण जी बी० ए० के सुपुत्र श्री हरिश्चन्द्र जी का लम्बी बीमारी के कारण स्थानीय विलिंगडन हस्पताल में स्वर्गवास हो गया। इस होनहार युवक के आकस्मिक निधन पर सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले ने एक वक्तव्य में शोक प्रकट करते हुए दोनों कुलों के शोक सन्तप्त जनों के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट की।

—आर्य अनाथालय दिल्ली के पुराने कार्यकर्ता श्री प० जगन्नाथ जी का ६३ वर्ष की आयुमें स्वर्गवास होगया। श्री पंडितजी आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल के प्रचारकों मे थे।

—आर्य समाज, सायला (सौराष्ट्र) ने अपने सदस्य तथा प्रसिद्ध आर्य-क्रान्तिकारी श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के सहयोगी श्री सरदारसिंह जी राणा के सुपुत्र श्री नटवरसिंह जी राणा के ६५ वर्ष की आयु में देहावसान पर शोक प्रस्ताव किया है।

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

एक महत्वपूर्ण शुद्धि

पूना-यहां के धनी मानी, प्रतिष्ठित पारसी परिवार की एक सभ्य, सुशील, सुशिक्षित, चौबीस वर्षीय कन्या का वैदिक धर्म में पुन: प्रवेश प्रात.काल के समय हुआ। उसका नया नाम सुजाता रक्खा गया। यह संस्कार बम्बई के आचार्य रुद्रमित्रजी तथा पूना के प० सोमव्रतजी वाचस्पति द्वारा किया गया। साय काल के समय 'सुजाता' का विवाह मेजर आफिसर दिनेशशरण अग्रवाल के साथ सम्पन्न हुआ।

शुद्धि तथा विवाह के समय वधु-वर के माता-पिता तथा परिवार के अन्य लोग उपस्थित थे और उन्होंने पूरा सहयोग दिया। बाद में पूना क्लब में दिये गये स्वागत समारोह (रिसेप्शन) में भारतीय सेना के कतिपय अधिकारी, प्राय पांच-छ सौ की बहुसंख्या में पारसी प्रतिष्ठित स्त्री पुरुष, माननीय राजा गोविन्दलालजी, पूना आर्यसमाज के प्रधान डा० जांगिराजी, उपप्रधान श्री तेजपाल जी बजाज आदि सन्मान्य नागरिक उपस्थित थे। वधु-वर को भेंट स्वरूप उपहार दिये गये।

इस कार्य में राजा गोविन्दलाल जी, पूना समाज के प्रधान, उपप्रधान तथा अन्य आर्यसमाजी लोगों का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा।

महेशदत्त दूबे

मुस्लिम युवती का शुद्धिकरण तथा विवाह

कुमारी सलमा (बेबी नाज) मिर्जादाऊद बेग की शुद्धि लोअर परेल आर्य समाज द्वारा पंडित लक्ष्मणराव भोपले जी ने की और उस का नाम कुमारी अनुराधा आर्य रखा गया और उसका विवाह पंडित जी ने कुमार सुभाष (सुभीराज) चिमन लाल कक्कर के साथ कराया। इन दोनों समारंभों में सिनेमाक्षेत्र के अनेक लोग उपस्थित थे।

बी० एस० यादव
मन्त्री
आर्य समाज लो० प० बम्बई

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज खंडवा ने आर्य समाज के प्रधान श्री पं० रामचन्द्र जी निवारी के असामयिक निधन पर शोक प्रकट किया है।

कैलाशचन्द्र पालीवाल
प्रचार मन्त्री आर्य समाज, खण्डवा

आर्य समाज भोपाल

आर्य समाज हेवी इलेक्ट्रीकल्स भोपाल का वार्षिकोत्सव ता० १८-१९-२० फरवरी १९६६ को होगा।

अ० भा० आर्ययुवक शिक्षण शिविर

मुल्तान डी० ए० वी० हायर सेकेण्डरी स्कूल पटेल नगर नई दिल्ली में २४ से ३१ दिसम्बर ६५ तक पंजाब प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद की ओर से आ० भा० आर्य युवक शिक्षण शिविर लगा। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य युवक वर्ग में आर्य समाज के प्रचार का आन्दोलन तीव्र करना था। अनेक विद्वानों एव नेताओं के भाषण हुए। भोजन एव निवास का उचित प्रबध था। शिविर श्री स्वामी समर्पणानन्द जी की अध्यक्षता मे लगा।

हर प्रकाश बन्धु
संयोजक

आर्य समाज खालापार

सहारनपुर का वार्षिकोत्सव ता० १२-१३-१४ दिसम्बरको समारोह पूर्वक मनाया गया।

आर्य समाज गया

का ४३ वां स्थगित वार्षिकोत्सव दि० ३१ मार्च से ३ अप्रैल ६६ तक बहुत धूम धाम से होने जा रहा है। इस अवसर पर कई एक प्रकार के नये-नये सम्मेलन होंगे।

सार्थ वदत सद्धया

सम्पादकीय

कल्याण मार्ग का पथिक

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर 'सार्वदेशिक' के विशेषांक के रूप में प्रकाशित 'कल्याण मार्ग के पथिक' का हमारे पाठकों ने तथा समस्त आर्यजगत् ने जैसा उत्साह पूर्ण स्वागत किया है वह हमारे लिए गर्व की वस्तु है। हमने पहले ही अपनी नियमित ग्राहक सख्या से कई गुणा अधिक मात्रा मे वह अक प्रकाशित किया था। परन्तु हमे मन ही मन जिस बात से भय लग रहा था वही बात हो गई।

आर्य तो वह होता है जो न स्वयं सोता है और न दूसरों को सोने देता है। परन्तु कुछ आर्यजन अपने पार्श्ववर्ती समुदाय के वातावरण से प्रभावित होकर सोने के इतने अधिक आदि हो चुके हैं कि उचित समय पर उनकी नींद नहीं खुलती। यही देखिए, 'सार्वदेशिक' के इस विशेषाक की समस्त प्रतियां समाप्त हो चुकी हैं किन्तु फिर भी धड़ाधड़ आर्डर आए जा रहे हैं। कोई दिन भी ऐसा नही जाता जिस दिन की डाक से सैंकड़ों नए आर्डर नहीं आ जाते। इन कृपालु महानुभावों से हम पूछना चाहते हैं कि अब तक आप कहां सो रहे थे? यदि उचित समय पर आपके आर्डर आगए होते या आप नियमित रूप से 'सार्वदेशिक' के ग्राहक बन गए होते तो हमें आपको निराश करने के लिए विवश नहीं होना पड़ता।

कुछ लोगों ने आग्रह किया है कि हम उस विशेषांक को फिर बड़ी मात्रा में दुबारा छपवाएं और नए आर्डरों की पूर्ति करें। परन्तु आप हमारी समस्या भी तो समझिए। यह ठीक है कि किसी व्यावसायिक लाभ की दृष्टि से 'सार्वदेशिक' का प्रकाशन नहीं किया जा रहा है, परन्तु लगातार घाटा उठाकर किसी कार्य को चिरकाल तक जारी रखना अत्यन्त दुष्कर है। इस महगाई के युग में, जबकि कागज और छपाई दोनों ही प्रभूत व्ययसाध्य है, पहले से ही पुष्कल मात्रा में किसी चीज को छापकर रखना बुद्धिमता नहीं है।

हमारे मन में क्या क्या योजनाएं हैं, यह समय से पूर्व हम प्रकट करना नहीं चाहते। परन्तु इतना निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि जिन महानुभावों ने पीछे आर्डर भेजे हैं और जो सो-सो कर जागे हैं, यदि भविष्य में भी उनका यही रवैया रहा तो उन्हें फिर पछताना पड़ेगा इसका केवल एक ही उपाय है कि जितनी भी जल्दी हो सके, आप वार्षिक चन्दा भेजकर 'सार्वदेशिक' के नियमित ग्राहकों की सूची में अपना नाम लिखा लीजिए। तब आपको हमारे सभी विशेषाक और सामन्य अक नियमित रूप से मिलते रहेंगे। जितनी जल्दी आप स्वय ग्राहक बनें उतनी ही जल्दी आप लाभान्वित होंगे और जितनी अधिक सख्या में अन्यों को ग्राहक बनाएंगे उतने ही आप आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार में सहायक होंगे।

दशमेश के शस्त्र

दशमेश गुरु गोविन्द सिंह के लन्दन से भारत आए पांच शस्त्रों का पालम हवाई अड्डे पर जैसा शानदार स्वागत हुआ है वह सर्वथा राष्ट्रीय गौरव के अनुरूप है लार्ड डलहौजी कभी उन्हें भारत से इसीलिए इंगलैण्ड ले गए थे कि इन्हें देखकर भारतवासियो मे कहीं अपने देश की तड़प पैदा न हो सके। अग्रेजों ने अपने शासनकाल में भारतीय स्वाभिमान के प्रत्येक प्रतीक को इसी प्रकार स्थानांतरित कर या नष्टकर भारतीयों की आखो से ओझल करने का पूरा प्रयत्न किया था। भारतीयो के मानस पर आंगल प्रभुत्व का सिक्का बिठाना और राष्ट्रीय स्वाभिमान को नष्ट करना उनका प्रमुख लक्ष्य था। इसीलिए उन्होंने अपने शासनकाल में अग्रेजी ढग के जूते को भी जो तौफीक अता की वह भारत के किसी नेता की पगडी तक को नहीं दी। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् यह प्रक्रिया उलट जानी चाहिए थी— अर्थात् स्वाधीन भारत मे दासता के समस्त प्रतीक नष्ट कर दिए जाते और राष्ट्रीय आत्माभिमान को जागृत करने वाले प्रतीकों की सादर प्रतिष्ठा होती। ब्रिटिश दासता के प्रतीक तो अभी भारत से नहीं मिटाए जा सके, परन्तु गुरु गोविन्दसिंह के शस्त्रों का भारत आना हम राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीकों की पुनः प्रतिष्ठा का ही अग समझते हैं। इसी दृष्टि से भारत के प्रधान मन्त्री द्वारा उनका स्वागत भी उचित है क्योंकि प्रधानमन्त्री ही राष्ट्र का सही प्रतिनिधि सदा समझा जाता है।

परन्तु भारत लौटने के पश्चात् इन शस्त्रों को जैसा साम्प्रदायिक रूप दिया जा रहा है वह राष्ट्रीय गौरव के सर्वथा विपरीत है। पंजाब के सिख राज्यपाल को उन शस्त्रों का समर्पण, फिर गुरुद्वारा रकाबगज तक उनका जलूस, बड़ा दीवान, दस दिन तक नुमाइश और फिर आनन्दपुर के गुरुद्वारे मे उनकी प्रतिष्ठा की व्यवस्था करना उन शस्त्रों के राष्ट्रीय स्वरूप को छिपाकर साम्प्रदायिक रूप देना है। अच्छा होता कि इन शस्त्रों को किसी गुरुद्वारे मे न रख कर राष्ट्रीय सग्रहालय मे रखा जाता। गुरुद्वारे मे रखने पर तो वे सिख सम्प्रदाय की ही सम्पत्ति माने जाएंगे और उनसे सिख सम्प्रदाय ही प्रेरणा ग्रहण कर सकेगा। व्यापक राष्ट्रीय महत्त्व की वस्तु को सम्प्रदाय की सीमा तक सकुचित कर देना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। इससे तो केवल साम्प्रदायिकता को ही बल मिलेगा, राष्ट्रीयता को नहीं। शिवाजी की तलवार, राणा प्रताप के भाले और गुरुगोविन्द सिंह के इन पांच शस्त्रों को किसी एक ही केन्द्रीय स्थान पर रखा जाना चाहिए ताकि भावी पीढी उनसे राष्ट्रीय गौरव को अक्षुण रखने की प्रेरणा ग्रहण कर सके।

पंजाबी सूबे की आड़ में

सितम्बर मास मे भारत पाक सघर्ष के रुकते ही केन्द्रीय गृह-मन्त्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने पजाबी सूबे की मांग के सम्बन्ध में विचार करने के लिए जितनी तेजी से तीन सदस्यों की मन्त्रिमन्डलीय समिति बनाई थी उसको देश के सभी मनीषियों ने जल्दबाजी और अदूर-दर्शिता की सज्ञा दी थी। उसके तुरन्त पश्चात् ही लोकसभा के अध्यक्ष सरदार हुक्मसिंह की अध्यक्षता में एक ससदीय समिति भी बना डाली गई जिसका काम था मंत्रिमडलीय समिति को सलाह देना। इस संसदीय समिति के कार्य क्षेत्र की और विचार क्षेत्र की सीमा भी निर्धारित नहीं की जा सकी थी कि श्री हुक्मसिंह ने जिस ढग से उस समिति का गठन किया उससे उनकी निष्पक्षता में जनता को सन्देह का अवसर मिल गया।

लोकसभा का अध्यक्ष दलीय राजनीति मे सदा पृथक् समझा जाता है और उसको वैसा होना भी चाहिए। अतीत मे श्री हुक्मसिह पजाबी सूबे के प्रबल समर्थक रहे हैं और वे अब भी अपने उन विचारों को तिलांजलि नही दे सके हैं। जहां तक विचार-स्वातन्त्र्य का सम्बन्ध है, श्री हुक्मसिंह को भी व्यक्तिगत विचार-निष्ठा की स्वतन्त्रता है, परन्तु लोकसभा के अध्यक्ष के पुनीत पद का दुरुपयोग होता देख पड़े तो यह असह्य है। ससदीय समिति अपना परामर्श मन्त्रिमडलीय समिति को दे या अपना प्रतिवेदन ससद के समक्ष प्रस्तुत करे, यह बात गौण है। मुख्य बात यह है कि उस समिति का गठन ही ऐसे सदस्यों से हुआ है जो विभिन्न समयों पर पहले ही अपने विचार व्यक्त कर चुके हैं इसलिए उनसे पूर्वाग्रह से मुक्त होकर निष्पक्ष दृष्टि मे विचार की आशा नहीं की जा सकती।

उस समिति में कुछ सदस्य ऐसे हैं जो स्पष्ट रूप से पजाबी सूबे के पक्षपाती हैं, कुछ पृथक् हरियाणा के पक्षपाती हैं और कुछ पृथक् विदर्भ के पक्षपाती हैं। इन सबके सोचने की दिशा लगभग एक जैसी है। सदस्यों में ऐसे बहुत कम लोग हैं जो व्यापक राष्ट्रीय हित चिन्तन के लिए विख्यात हों अधिकाश क्षुद्र प्रादेशिक इकाइयों की स्थापना के नाम से अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को पूरा करने के पक्षपाती हैं। ऐसे स्वार्थी लोगों में अन्दर ही अन्दर ठीक वैसा ही एक मानसिक समझौता रहता है जिसकी ओर 'चोर चोर मौसरे भाई' की कहावत इंगित करती है। इस प्रकार के लोग यदि एकत्रित हो जाएं तो वे क्या सलाह देंगे, यह पहले से ही कल्पना की जा सकती है। जनता का सन्देह व्यर्थ नहीं है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि श्री हुक्मसिंह द्वारा गठित इस ससदीय समिति को भग करने की माग स्वय कांग्रेसी नेताओं द्वारा की जा रही है। पजाब प्रदेश कांग्रेस समिति और पजाब राज्य का कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल जो अभी तक उच्च सत्ता के आदेश से इस विषय में अपनी जबान न खोलना ही अपना धर्म समझते थे अब सोते सोते जाग पड़े हैं। जब उन्होंने पानी को सिर के ऊपर से गुजरते हुए देखा तो वे चुप नहीं रह सके। अब पजाब प्रदेश कांग्रेस और पजाब का मन्त्रिमण्डल दोनों खुल्लम-खुल्ला पजाबी सूबे की मांग का तथा स्वेच्छाचारितापूर्ण ढग से बनाई गई ससदीय सलाहकार समिति का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया है। देर आयद दुरुस्त आयद-अकल जब आ जाए तभी ठीक है।

जिस न्यायाधीश की न्यायबुद्धि में से जनता का विश्वास उठ जाए उसे न्याय के लिये कोई केस सौंपना जानबूझकर अन्याय को प्रश्रय देना है। [क्रमशः]

——

सामयिक-चर्चा

ईसाई-प्रचार विरोध कार्यार्थ

सार्वदेशिक सभा के हाथ दृढ करो

विदेशी पादरियों के व्यापक एव उग्र अराष्ट्रिय प्रचार तथा हिन्दुओं के नित्य सामूहिक मत-परिवर्तन को रोकने की आवश्यकता के विषय मे अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है।

बिहार, उड़ीसा, छोटानागपुर, आसाम, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर-प्रदेश, नागालैण्ड आदि के पिछड़े वर्गों विशेषतः पर्वतीय एव सीमावर्ती अचलों तथा वनवासियों मे वे बड़े सक्रिय हैं।

लोगों के अज्ञान, निर्धनता एव सामाजिक पिछड़ेपन से लाभ उठाकर और भय, प्रलोभन और नाना प्रकार के कुत्सित हथकडे अपना कर वे लोग हिन्दुओं को ईसाई बनाने में रत हैं क्योंकि शिक्षित और सम्पन्न समाज में तो उनकी दाल गलने नहीं पाती।

उनके अर्थ तथा प्रचारकों आदि के साधन बड़े विशाल है जिनका यथेष्ट सामना करना दुरुह है। उनके धार्मिक सिद्धान्त इतने लचर हैं कि उनके आधार पर वे एक दिन भी अपना प्रचार नहीं कर सकते अत. वे अर्थ और नाना प्रकार के भौतिक प्रलोभनों का आश्रय लेकर ईसाइयत का प्रचार करते और अपने चेले मूंडते हैं।

हमारे राज्य से भी उन्हे अपनी गर्हित प्रगतियो के प्रसार में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता एव सहयोग मिलता है। स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात् ईसाई प्रचारकों को यह सूझ गई थी कि स्वतन्त्र भारत में उन्हे अपनी आपत्तिजनक प्रगतियों को जारी रखने की छूट न रहेगी परन्तु भला हो हमारी सम्प्रदाय निरपेक्ष नीति का जिसके कारण उनका भय न केवल निर्मूल ही सिद्ध हुआ अर्थात् उन्हे अपनी प्रगतियो को वेग के साथ जारी रखने की छूट भी मिल गई जिसके फलस्वरूप ब्रिटिश काल के समय की अपेक्षा हिन्दुओं की बहुत बड़ी संख्या ईसाइयत के दायरे मे पहुच गई और इस प्रकार राष्ट्रविरोधी तथा सस्कृति विरोधी एक बड़ी सेना ईसाइयो के निर्णय पर रख जाने दी गई।

नेपाल मे हिन्दुओ का विधर्मी बनाया जाना कानूनन वर्जित है। अभी हाल मे एक विदेशी ईसाई प्रचारिका को नेपाल राज्य से इसलिए निर्वासित कर दिया गया है कि वह अनुचित रूप से हिन्दुओ को ईसाई बनाने के कुत्सित कार्य मे सलग्न पाई गई थी।

यदि हमारा राज्य इस प्रकार की सतर्कता वर्ते तो आपत्तिजनक मत-परिवर्त न एव विदेशी पादरियो की गर्हित प्रगतियो पर प्रतिबन्ध लग जाय और नागालैण्ड, झारखण्ड, ईसाई-स्तान आदि की मांगों और उनसे उत्पन्न परेशानियों एव कठिनाईयो से राज्य बच जाय। परन्तु खेद है हमारा राज्य इस खतरे को उस उग्रता से अनुभव नहीं करता जिस उग्रता से इसका अनुभव होना चाहिए। हमारा प्रशासन सब कुछ देखते और सुनते हुए भी अन्धा बना हुआ है।

विदेश के ईसाई सस्थानों एव राज्य सरकारों से करोड़ों रुपया भारत को ईसाई बहुल राज्य बनाने के दुष्प्रयत्न की सफलता के लिए विदेशी ईसाई मिशनों को प्राप्त हो रहा है। यदि इस सहायता पर तथा इसके व्यय पर सरकारी प्रतिबन्ध लग जाय तो उन पादरियों की हिम्मत टूट जाय और इस सहायता के अभिशापों में बहुत कमी व्याप्त हो जाय। इस सहायता के आदान-प्रदान मे बहाना यह बनाया जाता है कि भारत मे कम्यूनिज्म के प्रसार का भय है अतः इस भय के निराकरण के लिये ही ईसाई मिशन क्रियारत हैं और उन्हें सहायता दी जानी आवश्यक है।

राज्य को अनेक बार प्रेरणा की गई कि वह थोथे एव देश-हित-विरोधी मत-परिवर्तन को नियन्त्रित करने केलिये सक्रिय पग उठाए। कम से कम मत-परिवर्तन के रजिस्ट्रेशन तथा मत-परिवर्तन करने से पूर्व सरकारी अनुमति प्राप्त की ही व्यवस्था कर दे। साथ ही जो आदिवासी कहे जाने वाले भाई ईसाई बन जाय उनको सरकारी सहायता प्राप्त करने का अधिकार न रहे। इस प्रतिबन्ध के न होने से वे दुहरे लाभ मे रहते हैं। वे सरकार तथा ईसाई मिशन से मिलने वाली दोनों सहायताओं से लाभ उठाते और ईसाइयत से चिपके रहने मे अपना लाभ समझते हैं।

आर्य समाज अपने परिमित साधनों से इस खतरे के निवारण के कार्य मे सलग्न है और देश तथा हिन्दुओं के हितैषी इस दिशा मे आर्य समाज से बड़ी-बड़ी आशायें रखते है। उनका ऐसी आशा करना उचित है। साथ ही आर्य समाज के हाथ करना उनका कर्त्तव्य है। आर्य समाज इस कार्य पर लाखों रुपया व्यय कर रहा है परन्तु ईसाई मिशन के करोड़ों रुपयो के व्यय की तुलना में यह राशि नगण्य है।

सार्वदेशिक सभा इस कार्य पर प्रतिमास लगभग २५००) मासिक व्यय कर रही है वह भी अन्य खर्चों के बलिदान पर। कार्य इतना विशाल और आवश्यक है कि वह इच्छा रखते और यत्न करते हुए भी इसे यथेष्ट रूप मे आगे बढा नहीं पा रही। इसके लिए करोडों रुपयों की आवश्यकता है। यदि प्रत्येक हिन्दू अपना छोटे से छोटा और धनपति बड़े से बडा आर्थिक भाग देने का दृढ निश्चय करके उसे पूरा करे तो १ वर्ष में ही सभा को करोड़ो रुपया प्राप्त हो सकता है। इस दिशा मे प्रत्येक आर्य आर्य समाज, हिन्दू और हिन्दू सस्थान को प्रयत्नशील होना चाहिए और अपना भाग मनी आर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान) नई देहली-१ को भेज देना चाहिए। प्रत्येक आर्य समाज को मुख्यतः उन समाजों को जिनकी अच्छी स्थिर आय है, आवश्यकतानुसार अपने इलाके में स्वय या उपदेशक रख कर तत्काल इस कार्य को प्रारम्भ कर देना चाहिए। यदि उनके इलाके मे यह समस्या विद्यमान न हो तो अपना भाग सार्वदेशिक सभा को भेजना चाहिये।

इस समय सभा उडीसा छोटा नागपुर, राजस्थान, बासवाडा, उज्जैन लश्कर, उत्तरप्रदेश के अलीगढ, मथुरा जिलो तथा कुमायूं के पर्वतीय अंचल, आसाम, बगाल, त्रिपुरा आदि मे ईसाइयों एव बहाइयों की आपत्तिजनक प्रगतियों के निराकरण के कार्य मे रत हैं। ७ केन्द्रो में २३ प्रचारक काम कर रहे हैं। ८ पाठशालाएं, १० धर्मार्थ औषधालय, २ विद्यार्थी आश्रम जनसेवा के कार्य में सलग्न हैं। पिछले ६ महीनों मे ४५०० शुद्धियां हुई हैं और ७० हजार व्यक्तियां को बहाई मत में जाने से रोका गया है।

३ केन्द्रों के लिए १-१ साइक्लोस्टाइल मशीन, टाइप राइटर, मैजिक लालटेनों तथा जीपों की तात्कालिक आवश्यकता हैं। सम्पन्न एवं हिन्दूहित से अनुप्राणित व्यक्ति इन आवश्यकताओं को सहज ही पूरा कर सकते हैं।

आशा है सभा के हाथ दृढ़ करने और तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्त्यर्थ सभा को यथेष्ट आर्थिक सहायता मिलेगी।

— रघुनाथ प्रसाद पाठक

राष्ट्र धर्म

श्रीसुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी०, गोरखपुर

राष्ट्रधर्म और राजधर्म ये दो वस्तुयें हैं। राजधर्म से विश्व के सभी राजाओं एवं शासकों का अपने शासित और प्रजाओं के प्रति क्या कर्त्तव्य है इसका उल्लेख षष्ठ समुल्लास में स्वामी दयानन्द जी महाराज ने किया है। इस राजधर्म को समझने से पहले राष्ट्रधर्म को समझना आवश्यक है। राष्ट्रधर्म पर जब हम अपने कदम बढाते चलेंगे तो राज्यधर्म अपने आप उत्कृष्ट मार्ग पर चलता चला जायगा। राष्ट्रधर्म को समझने के लिए हमें पहले राष्ट्र शब्द पर विचार करना होगा।

राष्ट्र एक मानवी सगठन है। इसके अन्तर्गत एक अच्छी जनसख्या का होना अनिवार्य है, क्योंकि भ्रातृत्व भावना के व्यापक रूप को ही राष्ट्र की भावना कहा जा सकता है। साधारणतः राष्ट्रीयता में ये पाच बातें सयुक्त हैं : १. देश २. धर्म ३ भाषा ४. इतिहास और ५. राजनीतिक एकता। ये पांचों अथवा इनमे से कुछ के विद्यमान होने से राष्ट्रीयता बनती है। यह आवश्यक नहीं कि राष्ट्रीयता के पांचों चिह्न विद्यमान हो। ऐसा भी हो सकता है कि जहा इनमे से एक ही बलवान् रीति पर विद्यमान हो वहां भी एक राष्ट्रीयता का सबध उत्पन्न हो जाय।

देश - राष्ट्रनिर्माण मे भूमि प्राकृतिक सौन्दर्य, नदी, पर्वत, समुद्र, वृक्ष, हरियाली, खेत, उपवन, पुष्पादि प्राकृतिक वस्तुयें सदियों से उस देश के अन्दर रहने वालों को अनुप्राणित किया करती हैं। मनुष्य की विचारधारा पर, उनके रहन सहन पर, उनके कार्य करने के ढग पर वहा की भौगोलिक बातों का गहरा प्रभाव होता है। उनसे लोगों को उतनी ही ममता हो जाती है जितनी मां बाप, भाई बहन से हुआ करती है। वे हमारे लिए आदर और पूजा की वस्तुयें बन जाती हैं, क्योंकि उनका साहचर्य हमारे पूर्वजों से रहा है। हमें आज हिमालय, गगा, गोदावरी, रामेश्वर, मथुरा, अयोध्या से कितनी ममता हो गई है। वे हमें एक बनाने में कितना हाथ रखते हैं। यही भाव राष्ट्र निर्माण में सहायक होता है। 'भारत माता' के प्रति इस सबकी गहरी ममता हमें एक सूत्र में पिरोने में कितनी सहायक सिद्ध हुई है।

धर्म राष्ट्रके निर्माण मे धार्मिक एकता भी एक महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है। प्रायः यह देखा जाता है कि एक धर्म के मानने वाले आपस मे आसानी से मिल-जुलकर रहते है और धार्मिक परिपाटियों और रीति-रिवाजो की एकता के कारण उनके जीवन का कार्यक्रम भी एकरूपता में बंध जाता है और वे आपस में एक प्रकार का साम्य अनुभव करने लगते हैं। धर्म का विरोध जाति को खण्डित कर देता है जैसा कि भारतवर्ष के दो खण्ड धर्म के नाम पर किए गए और आज पाकिस्तान भारत के मुसलमानों को धर्म के नाम पर उत्तेजित करना चाहता है। आज पाकिस्तान धर्म के नाम पर काश्मीर को भारत का अंग न मान कर अपने में मिलाने की अनेक दुश्चेष्टायें कर रहा है।

भाषा— भाषा की एकता भी राष्ट्र निर्माण मे महत्वपूर्ण स्थान रखती है। जर्मनी-इंग्लैंड के महायुद्ध में अमेरिका की सहानुभूति और सहयोग इग्लैंड के प्रति भाषा की एकता के कारण स्वाभाविक थी। आयर्लेण्ड के अन्दर जातीयता का नाश करने के लिए अंग्रेजों ने वहां की भाषा का नाश करके आंगल भाषा को उसके स्थान पर प्रचलित किया। जर्मनी ने फ्रास के कुछ ग्राम जीतकर वहा से फ्रांसीसी भाषा का अस्तित्व मिटाने की चेष्टा की। इस सबध में एक मनोरजक घटना का उल्लेख करना अनुचित न होगा। एक फ्रासीसी कन्या एक पाठशाला में पढ़ती थी। जर्मनी की महारानी ने उस पाठशाला को देखा और वे उस कन्या पर बड़ी प्रसन्न हुई। क्योंकि कन्या ने उनसे प्रार्थना की 'हमारी पाठशाला मे जर्मन के स्थान पर फ्रांसीसी भाषा में पढ़ाईहो।' अस्तु ! आज भारतवर्ष में राष्ट्रभाषा की अवहेलना अंग्रेजों का एक षड्यन्त्र है। जो षड्यन्त्र लार्ड मैकाले ने भारतीयों को काला अंग्रेज बनाने के लिए चलाया था और आज भी अंग्रेजी के उपासक अर्थात् दूसरे शब्दों में काले अंग्रेज देश से अंग्रेजी को मिटाने को तैयार नहीं हैं। स्वामी दयानन्द ने राष्ट्रीयता के इस तत्व को समझा था और इसीलिए स्वय गुजराती होते हुए, संस्कृत के विद्वान् होते हुए भी सम्पूर्ण भारत राष्ट्र के हित को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी (आर्यभाषा) का प्रचार-प्रसार और निर्माण उन्होंने किया।

प्राचीन इतिहास का एक होना— इतिहास भी एकता और राष्ट्रीयता का चिह्न है। अपनी पुरातन जनोक्तियों और महात्माओं के साथ हमारा स्नेह हमारे रक्त मे पाया जाता है। जब हमारे किसी महापुरुष की वीरता और साहस का वर्णन हमारे सामने किया जाता है तो हममें से प्रत्येक के हृदय में एक प्रकार का आह्लाद उत्पन्न हो जाता है, हमारे हृदयों में एक प्रकार की गति उत्पन्न हो जाती है। यह गति उत्पन्न होना ही राष्ट्रीयता की भावना है।

राजनैतिक एकता—मनुष्य के शरीर में जीवन शक्ति होती है, जिसका काम शरीर के भीतर के उत्पन्न हुए विकारों को ठीक करना और बाह्य आक्रामकों से उसकी रक्षा करना है। भिन्न भिन्न रोग हैजा, प्लेग आदि के कीटाणु हम पर आक्रमण करते हैं, हमारी जीवन शक्ति उनका सामना करती है। जिनकी शक्ति क्षीण होती है वे आखेट में पड़कर प्राण त्याग करते हैं। पर्याप्त शक्ति होने पर रोगों के कारणों का प्रभाव शरीर पर कुछ नहीं हो सकता। राष्ट्र मे शासक, सरकार या राजा ही राष्ट्रीय शरीर अर्थात् राज्य के भीतरी विकारों और बाह्य आक्रामको से उसकी रक्षा करता है। राज्य ही सब अंगों की दुर्बलता को दूर करता है। साराश यह है कि जिस जाति मे अपना राज्य नहीं उसकी राष्ट्रीयता मर गई क्योंकि उसके शरीर की सारी शक्ति गिर गई। स्वराज्य ही राष्ट्रीयता को ससार में प्रकट करता है।

इस प्रकार राष्ट्रीयता कोई स्थूल वस्तु नही जिसे देखा जा सके। राष्ट्रीयता तो एक भावना मात्र है। इस भावना के वश होकर एक समुदाय विशेष साथ रहता है, उसके सदस्य समान उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रयास करते हैं और वे समस्त मनुष्य अपने को एक समझते है तथा उन व्यक्तियों से पृथक्ता का अनुभव करते हैं जो समुदाय के सदस्य नहीं होते। यह भावना जिनमें पाई जाती है उसे राष्ट्र कहते हैं।

इस राष्ट्र के प्रति प्राचीन आर्यों की बड़ी भावना, बड़ी मार्मिकता और प्रोज्ज्वल अनुभूति निबद्ध है। राष्ट्र के अभ्युदय के लिए आर्य अपना सर्वस्व देने के लिए तैयार रहते थे। राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राण तक हवन करने को आर्य सदा सन्नद्ध रहते थे। उनकी प्रबल अभिलाषा थी 'वरुण राष्ट्र को अविचल करें, बृहस्पति राष्ट्र को स्थिर करें, इन्द्र राष्ट्र को सुदृढ़ करे और अग्निदेव राष्ट्रको निश्चल रूप से धारण करें—

ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पति। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयता ध्रुवम्।

ऋग्वेद १०-१७३-५

आर्यों की एक मात्र कामना थी—

"आ राष्ट्रे राजन्य: शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्।"

यजुर्वेद २२.२२

आर्यों की उत्कट उत्कंठा थी—

"वय राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:।"

यजुर्वेद ९-२३

अपने राष्ट्र में नेता बनकर हम जागरणशील रहें।

आर्यों का दृढ़ विश्वास था—

'ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।

ब्रह्मचर्य रूप तप के बल से ही राजा राष्ट्र की रक्षा कर सकता है। राष्ट्र धर्म के रूप में प्रत्येक निवासी को अपने मन में सोचना चाहिए:—

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम् अभिषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशा विषासहिः।

अथर्ववेद १२-१-५४

मैं अपनी मातृभूमि के लिए और उसके दुःख विमोचन के लिए सब प्रकार के कष्ट सहने को तैयार हू। वे कष्ट जिस ओर से आवें, चाहे जिस समय आवें, मुझे चिन्ता नहीं।

मातृभूमि के प्रति, राष्ट्र के प्रति हृदयमें मधुर भावनायें रहनी चाहिएं:—

यद् वदामि मधुमत् तद् वदामि यदीक्षे तद्वनन्ति मा। त्विषीमानस्मि जूतिमानवान्यान् हन्मि दोधत ।।

अथर्व १२-१-५८

अपनी मातृभूमि के सम्बन्ध में जो कहता हू वह उसकी सहायता के लिए है। मैं ज्योतिःपूर्ण, वर्चस्वशाली और बुद्धियुक्त होकर मातृभूमि का दोहन करने वाले शत्रुओं का विनाश करता हूं।

राष्ट्रीय एकता, सगठन या अखडता किन बातों से हो सकती है और राष्ट्रनिवासियों का क्या धर्म है

(शेष पृष्ठ १५ पर)

कर्ण और श्रीकृष्ण का रणक्षेत्र में धर्म-संवाद

चतुरसेन गुप्त

हजारों वर्षों से भारत विदेशियों द्वारा पादाक्रान्त और पराधीन होता आरहा है। गत १७ वर्षों से भारत ने खंडित-किन्तु स्वतन्त्र होने की सांस ली।

स्वतन्त्र भारत को वैधानिक ढाचे के कारण कुछ ऐसी जटिलताओं में फंसना पड़ गया जिसके कारण भारत के बहुसख्यक समुदाय को राजनीति, अर्थ नीति, सांस्कृतिक एव धर्म के क्षेत्रों में अपार हानि उठानी पड़ी और पड़ रही है। सांस्कृतिक, धर्म और अर्थ की समस्या पर कुछ ठहर कर विचार करना मान भी लें तो भी राजनीति की दृष्टि से आर्यजाति बिल्कुल पिछड़ गई प्रतीत होती है। सत्य तो यह है कि आज की राजनीति में आर्य जाति और उसकी सम्पूर्ण मान्यताऐं ओझल कर दी गई हैं।

गत वर्षों में जब-जब देश विदेश में आर्य जाति पर अकारण अत्याचार हुए, बलात् धर्म परिवर्तन, लूटमार, कतल, अबलाओं का अपहरण और घर-बार दहन जैसे घोरतम क्रूर अत्याचार हुए तब-तब, जब इसके प्रतिकार के लिये यदि किसी ने विचार किया तो तुरन्त राष्ट्र के कर्णधारों की ओर से एक ही प्रचार किया गया कि—हमारा देश बुद्ध का देश है अशोक का देश है और महात्मा गाधी का देश है। हमारी विचार धारा और परम्परा हमें इनसे ही मिली है। किन्तु खेद है कि आज तक इनके श्रीमुख ने यह नहीं कहा कि यह देश राम का, कृष्ण का, चाणक्य-चन्द्रगुप्त का, शिवाजी और दयानन्द का भी है।

यह मैं मानता हूं कि जब वैराग्य उदय हो, राजपाट के सुखों पर लात मार कर जगल की राह लेनी हो, जब मूक पशुओं के वध की चीत्कार से कलेजा टूक-टूक और कान फटे जा रहे हों और जब यज्ञों में घी-सामग्री के बजाय पशु धकेले जा रहे हों तब इसके निवारणार्थ यदि इसे बुद्ध का देश कहें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। किन्तु भाग्य की विडम्बना कहूं या और कुछ, आज जब अपने राष्ट्र में बुद्ध के नामका नारा लगाया जाताहो, राष्ट्र ध्वज में अशोक चक्र को स्थान देकर वन्दना की जाती हो, साथ ही प्रतिदिन पशुवध की चीत्कार भी सुनी जा रहीहो, मदिरापान तीव्र-गति से बढ़ रहा हो, मांस भक्षण को सरकारी प्रोत्साहन दिया जा रहा हो और जब वैराग्य के स्थान पर विला-सिता ने अधिकार कर लिया हो—तब इस देश को बुद्ध का देश बताना—देश वासियों को बुद्धू बनाने के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है।

ऐसे ही जब हम निहत्थे हों, दरिद्र और पराधीन हों तब ऐसी दशा में राष्ट्र को महात्मा गाधी का देश मानने के लिये मैं बिल्कुल तय्यार हू और तय्यार हूं अहिंसा पर चलने और चर्खा चलाने के लिये।

किन्तु जब राष्ट्र स्वतन्त्र हो गया हो, पराधीनता की बेड़ियां कट कर गल गई हों, निर्धनता निशाचरी के पीछे हम डडा लिये फिर रहे हों, अस्त्र-शस्त्रागार तथा उसके निर्माण पर हमारा पूरा अधिकार हो, ऐसी परिस्थिति मे भी जब राष्ट्र को अंदर और बाहर की शत्रु शक्तियों से खतरा उपस्थित हो तब आततायी और अत्या-चारियों का मुह तोड़ने से मुंह मोड़ना फिर गाधी जी की आड में राष्ट्र को अहिंसा का पाठ पढ़ाना, कायरता को पनपाना और राष्ट्र को छिन्न-भिन्न करना है। ऐसी दशा में राष्ट्र को गांधी जी का देस बताना उनके साथ न्याय नही कहा जा सकता।

अत. आज की इस भयकर परिस्थिति में जब राष्ट्र पर विदेशी शत्रुओं की क्रूर दृष्टिहो, जब राष्ट्रीय एकता की कड़ियें टूक-टूक हो रही हों, जब राष्ट्र की आस्तीन में सांप पल रहे हों जब घर-घर और गली-गली मे विदेशी एजेन्ट सक्रिय घूम रहे हों तब राष्ट्र मे आवश्यकता है धनुर्धर राम की, चक्रधारी कृष्ण की, नीतिज्ञ चाणक्य की तथा वेदज्ञ दयानन्द की।

जो लोग मार खाते, पिटते और अपहरण होते हुए भी यह कहना चाहते हैं कि हमे बदले की भावना से दूर होकर सहिष्णु होना चाहियें। अपकार का बदला उपकार से देना चाहिये उन लोगो को कृष्ण और चाणक्य की नीतियां ही मार्गदृष्टा हो सकती हैं—बुद्ध की नहीं।

इस सन्दर्भ में महाभारत की उस घटना पर ध्यानदें जब महाभारत के युद्ध मे कर्ण का पहिया पृथ्वी में धंस गया तब कर्ण व्याकुल हो उठा और दोनों हाथ हिला कर—अर्जुन से धर्म की दुहाई देने लगा—

भो भो पार्थ महेष्वास मुहूर्तं परिपालय।
यावच्चक्रमिदं ग्रस्तमुद्धरामि महीतलात्॥
(महा० कर्ण० अ० ९० । १०८)

महाधनुर्धर कुन्ती कुमार! दो घडी प्रतीक्षा करो, जिससे मैं इस फसे हुए पहिये को पृथ्वीतल से निकाल लूं।

त्व च शूरतमो लोके साधुवृत्तश्च पाण्डव। अभिज्ञो युद्धधर्माणां वेदान्तावभृथाप्लुतः। दिव्यास्त्रविदमेयात्मा कार्तवीर्यसमो युधि ॥ १ । ४॥

पाण्डुनन्दन! तुम लोक मे महान् शूर और सदाचारी माने जाते हो। युद्ध के धर्मों को जानते हो। वेदान्त का अध्ययन रूपी यज्ञ समाप्त करके तुम उसमें अवभृथ स्नान कर चुके हो। तुम्हें दिव्यास्त्रों का ज्ञान है। तुम अमेय आत्मबल से सम्पन्न तथा युद्धस्थल में कार्तवीर्य अर्जुन के समान पराक्रमी हो।

कर्ण की गिड़गिड़ाहट, अकड़ और धर्मोपदेश सुनने के पश्चात् श्री कृष्ण जी ने कर्ण को फटकारते हुए कहा—

तमब्रवीद् वासुदेवो रथस्थो,
राधेय दिष्ट्या स्मरसीह धर्मम्।
प्रायेण नीचा व्यसनेषु मग्ना,
निन्दन्ति दैवं कुकृत न तु स्वम्॥
(म० कर्ण० अ० ९१ । १)

अर्थ—रथ पर बैठे हुए श्रीकृष्ण ने कर्ण से कहा—राधानन्दन! सौभाग्य की बात है कि अब यहां तुम्हे धर्म की याद आ रही है। प्रायः यह देखने में आता है कि नीच मनुष्य विपत्ति में पड़ने पर दैव की ही निन्दा करते हैं अपने कुकर्मों की नहीं।

यद् द्रौपदीमेकवस्त्रा सभाया—मानाययेस्त्व च सुयोधनश्च। दुःशासनः शकुनि सौबलश्च, न ते कर्ण प्रत्यभात्तत्र धर्मः॥ २॥

कर्ण! जब तुमने तथा दुर्योधन, दुःशासन और सुबलपुत्र शकुनि ने एक वस्त्र धारण करने वाली रजस्वला द्रौपदी को सभा में बुलवाया था, उस समय तुम्हारे मन में धर्म का विचार नहीं उठा था।

यदा सभायां राजानमनक्षज्ञं युधिष्ठिरम्। अजैषीच्छकुनिर्ज्ञानात् क्व ते धर्मस्तदा गतः॥ ३॥

जब कौरव सभा में जूए के खेल का ज्ञान न रखने वाले राजा युधि-ष्ठिर को शकुनि ने जान-बूझ कर छलपूर्वक हराया था, उस समय तुम्हारा धर्म कहां चला गया था।

वनवासे व्यतीते च कर्ण वर्षे त्रयोदशे। न प्रयच्छसि यद् राज्यं क्व ते धर्मस्तदा गतः॥ ४॥

कर्ण! वनवास का तेरहवां वर्ष बीत जाने पर भी जब तुमने पाण्डवों का राज्य उन्हें वापस नहीं दिया था, उस समय तुम्हारा धर्म कहां चला गया था।

यद् भीमसेनं सर्पैश्च विषयुक्तैश्च भोजनैः। आचरत् त्वन्मते राजा क्व ते धर्मस्तदा गत.॥ ५॥

जब राजा दुर्योधन ने तुम्हारी ही सलाह लेकर भीमसेन को जहर मिलाया हुआ अन्न खिलाया और उन्हें सर्पों से डसवाया, उस समय तुम्हारा धर्म कहां गया था।

यद् वारणावते पार्थान् सुप्ताञ्जतुगृहे तदा। आदीपयस्त्व राधेय क्व ते धर्मस्तदा गतः॥ ६॥

राधानन्दन! उन दिनों वारणावत-नगर में लाक्षा भवन के भीतर सोये हुए कुन्तीकुमारों को जब तुमने जलाने का प्रयत्न कराया था, तब उस समय तुम्हारा धर्म कहां गया था।

यदा रजस्वलां कृष्णा दुःशासन-वशे स्थिताम्। सभायां प्राहसः कर्ण क्व ते धर्मस्तदा गत.॥ ७॥

कर्ण! भरी सभा में दुःशासन के वश मे पड़ी हुई रजस्वला द्रौपदी को लक्ष्य करके जब तुमने उपहास किया था, तब तुम्हारा धर्म कहां चला गया था।

यदनार्यैं पुरा कृष्णां क्लिश्यमानामनागसम्। उपप्रेक्षसि राधेय क्व ते धर्मस्तदा गतः॥ ८॥

राधानन्दन! पहले नीच कौरवों द्वारा क्लेश पाती हुई निरपराध द्रौपदी को जब तुम निकट से देख रहे थे, उस समय तुम्हारा धर्म कहां गया था।

विनष्टाः पाण्डवा. कृष्णे शाश्वतं नरकं गताः। पतिमन्यं वृणीष्वेति वदंस्त्वं गजगामिनीम् उपप्रेक्षसि राधेय क्व ते धर्मस्तदा गतः।

(याद है न, तुमने द्रौपदी से कहा था) 'कृष्णे पाण्डव नष्ट हो गये, सदा के लिये नरक में पड़ गये। अब तू किसी दूसरे पति का वरण कर ले। जब तुम ऐसी बात कहते हुए गज-

(शेष १२ पृष्ठ पर)

—: शाकाहार :—

पत्र-लेखक का जन्म एक ऐसे कुटुम्ब मे हुआ है जहा मासाहार खूब चलता है। मांस खाने के लिए माता-पिता के दबाव को सह लेने मे वे अब तक सफल रहे हैं। किन्तु अब उनका कहना है कि "एक पुस्तक में इस विषय पर स्वामी विवेकानन्द का मत पढ़कर मेरा विश्वास डिग रहा है। स्वामी जी की सम्मति मे अपनी इस वर्तमान स्थिति में हिन्दुस्तानियों के लिये मासाहार परमावश्यक है और अपने मित्रों को वे नि.सकोच मास खाने की सलाह देते है। वे तो यहा तक कहते है कि 'अगर इससे तुम्हे पाप भी लगे तो वह मेरे सिर डाल दो। मैं उसे सह लूंगा।' मैं किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया हूं। मुझे समझ मे नही आता कि मांस खाऊं या नहीं।"

प्रमाणभूत माने हुए व्यक्ति के वचनों में इस प्रकार का अन्धविश्वास दिमाग की कमजोरी का चिह्न है। पत्र-लेखक को अगर दृढ़ विश्वास है कि मास खाना अनुचित है तो फिर सारे ससार की राय उसके विरुद्ध होने पर भी वह क्यों डिगे? अपने विश्वास का निश्चय करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिये, किन्तु एक बार निश्चय कर लेने के बाद बड़ों से बड़ों के विरोध करने पर उसका समर्थन करना ही चाहिये।

स्वामी जी का लेख मैंने देखा नहीं है, किन्तु मुझे भय है कि पत्र-लेखकने उनका मत ठीक ठीक ही उतारा है। मेरी राय बखूबी जाहिर है। किसी भी देश मे, किसी भी जलवायु में और किसी भी स्थिति में, जिसमें मनुष्यों का रहना साधारणत: सम्भव हो, मेरी समझ मे हम लोगों के लिये मांसाहार आवश्यक नही है। मेरा विश्वास है कि हमारी नस्ल मनुष्य जाति) के लिये मासाहार अनुपयुक्त है। अगर हम पशुओं से अपने को ऊंचा मानते हैं, तो फिर उनकी नकल करने में भूल करते हैं यह बात अनुभव-सिद्ध है कि जिन्हें आत्म-संयम इष्ट हो, उनके लिए मांसाहार अनुपयुक्त है।

चरित्र-गठन और आत्म-सयम के लिये भोजन के महत्व का अनुमान करने मे अति करना भी भूल है। जिस बात को भूलना नहीं होगा कि इसके लिये भोजन एक मुख्य वस्तु

है। मगर जिस प्रकार भोजन में किसी तरह का सयम न रखना और मनमाना खाना-पीना अनुचित है, उसी प्रकार सभी धर्म-कर्म का सार भोजन मे ही मान बैठना भी, जैसा कि प्राय. हिन्दुस्तान मे हुआ करता है, गलत है। हिन्दू-धर्म के अमूल्य उपदेशो मे शाकाहार भी एक है। इसे हलके मन से छोड देना ठीक नहीं होगा। इसलिये इस भूल का सशोधन करना परमावश्यकहै कि शाकाहार के कारण दिमाग व देह मे हम कमजोर हो गये हैं और कर्म शीलता मे आलसी या निराग्रही बन गये हैं। हिन्दू धर्म के बड़े से बड़े सुधारक अपने अपने जमाने के सबसे बड़े कर्मठ पुरुष हुए हैं। जैसे शकर या दयानन्द के जमाने का कौन पुरुष उन से अधिक कर्मशीलता दिखा सका था।

लेकिन पत्र-लेखक भाई को मेरी बात को प्रमाण-वाक्य नही मान लेना चाहिये। आहार कोई ऐसी वस्तु नहीं है कि जिसका निश्चय विश्वास के आधार पर किया जाय। इसका फैसला हरएक को अपने लिये आप ही बुद्धिपूर्वक कर लेना चाहिये। अब शाकाहार पर खासकर पश्चिम के देशों में काफी साहित्य तैयार हो गया है। उसे पढने से हरएक सत्य-शोधक को लाभ होगा। कोई एक प्रसिद्ध डाक्टरो का इस साहित्य के तैयार करने में हाथ है यहा। हिन्दुस्तान में शाकाहार के लिए हमें उत्तेजन देने की कोई आवश्यकता नहीं पडी है। यहा तो इसे सर्वोत्तम और आदरणीय ही अब तक माना जाता रहा है। खैर, इस भाई के समान वे दूसरे लोग भी जिनका मन इस विषय मे डावाडोल हो, पश्चिम के देशों मे बढते हुये शाकाहार-आन्दोलन के साहित्य का मनन कर सकते हैं।

हिन्दी नवजीवन, ७-१०-२६

मनुष्य को स्वाद के लिए नहीं बल्कि शरीर के निर्वाह के लिये ही खाना चाहिये। जब प्रत्येक इन्द्रिय केवल शरीर के लिए और शरीर के द्वारा आत्मा के दर्शन के लिए ही काम करती है, तब उसके रस शून्यवत् हो जाते हैं और तभी कहा जा सकता कि वह स्वाभाविक रूप से बरतती है।

जैसी स्वाभाविकता प्राप्त करने के लिए जितने प्रयोग किये जाय उतने कम ही हैं, और ऐसा करते हुए अनेक शरीरों की आहुति देनी पड़े, तो उसे भी हमे तुच्छ समझना चाहिये। आज तो उलटी धारा बह रही है। नश्वर शरीर को सजाने के लिए, उसकी उमर बढाने के लिए हम अनेक प्राणियों की बलि देते हैं, फिर भी उससे शरीर और आत्मा दोनों का हनन होता है। एक रोग को मिटाने की कोशिश मे, इन्द्रियो के भोगो को भोगने का यत्न करने में हम अनेक नये रोग उत्पन्न कर लेते हैं और अन्त में भोग भोगने की शक्ति भी खो बैठते हैं। और अपनी आखों के सामने हो रही इस क्रिया को देखने से हम इनकार करते हैं!

आत्मकथा पृ० २८०-८१ (१९५८)

मनुष्य जैसा आहार करता है, वैसा ही वह बनता है - इस कहावत मे काफी सत्य है। आहार जितना तामस होगा, शरीर भी उतना ही तामस होगा।

हरिजन, ५-८-'३३

हमारी सरकार कभी अन्न की कमी के नाम पर और कभी पौष्टिक तत्त्व के नाम पर राष्ट्र में मासाहार का व्यापक प्रचार कर रही है। करोडो रुपया बहा कर देशवासियों को मांस भक्षी बनाया जा रहा है। मास भक्षण का मद्य से और मद्य का मास भक्षण से गहरा सम्बन्ध है तभी तो आज शराब खोरी और मास भक्षण दिन-दूना और रात चौगुना बढ़ रहा है जो हमारे राष्ट्र के लिए भयकर अभिशाप है—वरदान नही। आश्चर्य तो यह है कि यह सब काड हो रहा है—महात्मा गाधी के नाम लेवाओ की ओर से। प्रस्तुत लेख महात्मा गाधी का है। क्या गांधीजी के नाम का अहर्निश जप करने वाली सरकार और जनता इस पर ठडे हृदय से विचार करेगी और फिर मूक प्राणियो की मूक चीतकार को बन्द करके अहिंसा एव सदाचार की स्थापना की ओर ध्यान देने मे उद्यत होगी।

सम्पादक

आर्यसमाज जालना

महाराष्ट्र)

दिनाक २४ दिसम्बर को सायकाल ६बजे माननीय श्री प०प्रकाशवीर जी शास्त्री ससद सदस्य जालना पधारे। स्टेशन पर हजारों व्यक्तियो ने गगनभेदी जयघोषों और पुष्पहारो द्वारा श्री शास्त्री जी का स्वागत किया प्रमुख महानुभावों मे सभा प्रधान श्री प० नरेन्द्र शर्मा जी श्री घनश्यामदेव जी शर्मा, श्री गोपालदेव जी शास्त्री एव आर्य समाज के अनेक अधिकारी थे।

श्री पं० नरेन्द्र जी की अध्यक्षता में मान्य श्री शास्त्री जी ने पाक, चीन नागालैंड, गोवा एव अन्य समस्या पर लगातार दो घण्टे तक प्रभावशाली भाषण दिया जिसे जनता ने बारम्बार करतल ध्वनि के साथ सुना।

अन्त में सभाध्यक्ष श्री प० नरेन्द्र जी के ओजस्वी भाषण और श्री रामचन्द्र जी मन्त्री धन्यवाद के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री

ऋग्वेद और चक्रवर्ती राज्य

पूज्य श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ससद सदस्य

(गतांक से आगे)

युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरापुरं । समिदं हस्योजसा ।।

ऋग्० मं० १ सू० ५३ म० ७

मनुष्यों को चाहिए कि बहुत उत्तम २ मित्रों को प्राप्त दुष्ट शत्रुओं का निवारण दुष्ट दल वा शत्रुओं के पुरों को विदारण सब अन्यायकारी मनुष्यो को निरन्तर कैद घर में बाध ताड़ना दे, और धर्मयुक्त चक्रवर्ती राज्य को पालन करके उत्तम ऐश्वर्य को सिद्ध करें

ससुष्टुभां सस्तुभा सप्तविप्रै । स्वरेणाद्रि स्वर्यो३ नवग्वैः ।।

ऋग्० म० १ सू० ६२ म० ४

सभाध्यक्ष आदि अत्यन्त उत्तम-उत्तम विद्या, बल से युक्तों के साथ वर्त के विद्यारूपी न्याय के प्रकाश से अन्याय वा दुष्टों का निवारण कर चक्रवर्ती राज्य का पालन करें।

स नो नृणा नृतमोरिशादा ।

ऋग्० मं० ७७ म० ४

मनुष्यों को चाहिए कि अत्युत्तम सभाध्यक्ष मनुष्यों के सहित सभा बना के राज्य व्यवहार की रक्षा से चक्रवर्ती राज्य की शिक्षा करे इसके बिना कभी स्थिर राज्य नहीं हो सकता।

शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्यानि शशा अहिम चन्नंनु स्वराज्यम् ।।

ऋग्० म० १ सू० ८० मं० १

मनुष्यो को चाहिए कि चक्रवर्ती राज्य की सामग्री इकट्ठी कर और उसकी रक्षा करके विद्या और सुख की निरन्तर वृद्धि करें।

ऋषीणां च स्तुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम् ।

ऋग्० म० १ सू० ८४ मं० २

सत्क्रिया के बिना चक्रवर्ती राज्य आदि की प्राप्ति और रक्षण नहीं हो सकते इस हेतु से सब मनुष्यों को यह अनुष्ठान करना उचित है।

देवेन नो मनसा देव सोम रायो भागं। सहसावन्नभियुध्य ।।

ऋग्० म० १ सू० ९१ म० २३

मनुष्यों को चाहिए कि परम उत्तम सेनाध्यक्ष और औषधिगण का आश्रय और युद्ध मे प्रवृत्ति कर उत्साह के साथ अपनी सेना को जोड़ और शत्रुओं की सेना का पराज्य कर चक्रवर्ती राज्य के ऐश्वर्य को प्राप्त हो।

स सूनुभिर्न रूद्रेभिऋं भ्वा ।

ऋग्० म० १ सू० १०० म० ५

जो सेना आदि का अधिपति पुत्र के तुल्य सत्कार किए और शस्त्र अस्त्रों से सिद्ध होने वाली युद्ध विद्या से शिक्षा दिए हुए सेवको के साथ वर्तमान बलवान् सेना को अच्छे प्रकार प्रकट कर अति कठिन भी सग्राम में दुष्ट शत्रुओं को हार देता और धार्मिक मनुष्यों की पालना करता हुआ चक्रवर्ती राज्य कर सकता है। वही सब सेना तथा प्रजा के जनों का सदा सत्कार करने योग्य है।

यदिन्द्राग्नी अवमस्या पृथिव्या मध्यमस्यां परमस्यामुत स्थ. ।।

ऋग्० म० १ सू० १०८ म० ९

उत्तम मध्यम और निकृष्ट गुण कर्म और स्वभाव के भेद से जो २ राज्य हैं, वहा २ वैसे ही उत्तम मध्यम निकृष्ट गुण कर्म और स्वभाव के मनुष्यो को स्थापन कर और चक्रवर्ती राज्य करके सब को आनन्द भोगना भोगवाना चाहिए।

बर्हिषि यज्ञे अस्मिन् प्रचर्षणी मादयेथां सुतस्य ।।

ऋग्० म० १ सू० १०९ मं० ५

मनुष्य जिनसे धनो का विभाग करते हैं वा शत्रुओं को जीत के समस्त पृथ्वी पर राज्य कर सकते हैं उनको कार्य की सिद्धि के लिए कैसे न यथा योग्य कामों मे युक्त करें।

ऋभुर्न इन्द्र शवसा नवीयान् भुर्वाजेभिर्वसुर्ददि ।

ऋग्० म० १ सू० ११० म० ७

विद्वान् शूरवीर और विद्वानो में अच्छे विद्वान् के सहायो से युक्त हम लोग अच्छी शिक्षा की हुई प्रसन्न और पुष्ट अपनी सेनाओ से जो सेना को लिए हुए हैं उन शत्रुओं का तिरस्कार कर धार्मिक प्रजा जनों को पाल चक्रवर्ती राज्य को निरन्तर सेवें।

क्षत्राय त्व श्रवसे त्व महीया इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै ।

ऋग्० म० १ सू० ११३ मं० ६

जैसे विद्या विनय से प्रकाश मान सत्पुरुष सब समीपस्थ पदार्थों को व्याप्त होकर उनके गुणों के प्रकाश से समस्त अर्थों को सिद्ध करने वाले होते हैं। वैसे राजादि पुरुष विद्या न्याय और धर्मादि को सब ओर से व्याप्त होकर चक्रवर्ती राज्य की यथावत् रक्षा से सब आनन्द को सिद्ध करें।

अवेनुं दस्त्रास्तर्यं विषक्ताम-पिन्वतं शयवे । अश्विना गाम् ।।

साम, दाम, दण्ड, भेद अर्थात् शान्ति किसी प्रकार का दबाव दड देना और एक से दूसरे को तोड़ फोड उसको बैमन करना आदि राज कामो से भूमि के राज्य को पाकर धर्म से सदैव उसकी रक्षा करो।

यवं वृकेणाश्विना वयन्तेषदुहन्ता-मनुषाय दस्त्रा । अभि दस्युं बकुरेणा धमन्तोरू ज्योति २ चक्रथुरार्याय ।।

ऋग्० म० १ सू० ११७ म० २१

राजपुरुषो को चाहिए कि प्रजा-जनों मे जो कण्टक, लम्पट, चोर, झूठा और खरे बोलने वाले दुष्ट मनुष्य हैं उनको रोक खेती आदि कामो से युक्त वैश्य प्रजाजनो की रक्षा और खेती आदि कामो की उन्नति कर अत्यन्त विस्तीर्ण राज्य का सेवन करें।

ऋतस्य गोपावधितिष्ठयो रथ सत्यधर्माणा परमे व्योमनि ।

यमत्र मित्रा वरुणा वथो युव तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वतेदिवः ।।

ऋग्० म० ५ सू० ६३ म० १

जहा धार्मिक विद्वान् पुत्र की जैसे वैसे प्रजा की पालना करने वाले राजा आदि होते हैं वहा उचित काल मे वृष्टि और उचित काल मे मृत्यु होती है।

सम्राजा उग्रा वृषभा दिवस्पती पृथिव्या मित्रा वरुणा विचर्षणी ।

चित्रो भेरभ्रंरूप तिष्ठ्यो ख द्यां वर्षयथो असुरस्य मायया ।।

ऋग्० म० ५ सू० ६३ म० ३

हे प्रजाजनो ! जो राजा और मन्त्री आदि जन न्याय और विनय से प्रकाशमान दुष्टो मे तेजस्वी और कठोर दड के देने वाले सूर्य और वायु के सदृश मनोरथो की वृष्टि करने वाले हैं वे यशस्वी और प्रजाओ के प्रिय होते हैं।

प्रवो मित्राय गायत वरुणाय विषा गिरा । महिक्षत्रावृत बृहत् ।।

ऋग्० म० ५ सू० ६८ म० १

जो विद्वानो मे विद्वान् राजपुरुष चक्रवर्ती राज्य को सिद्ध कर सकते हैं वे ही यशस्वी होते हैं।

प्र सम्राजो असुरस्य प्रशस्ति पुं स कृष्टी नामनु मायस्य ।

ऋग्० मं० ७ सू० ६ म० १

हे मनुष्यों जो शुभ गुण कर्म और स्वभावों से युक्त वन्दनीय और प्रशंसा के योग्य हो उस चक्रवर्ती राजा की शुभ कर्मों से हुई प्रशंसा करो।

पुन: के चक्रवर्ती राज्यं कर्तुमर्हन्तीत्याह ।

फिर कौन चक्रवर्ती राज्य करने के योग्य होते हैं यह कहते हैं—

नू इत्था ते पूर्वथा च प्रवाच्यं यदङ्गिरोभ्योऽवृणोरप व्रजामिन्द्र ।

ऋग्० म० १ सू० १३२ मं० ४

जिसके राज्य में दुष्ट वचन कहने वाले चोर और व्यभिचारी नही हैं वे चक्रवर्ती राज्य करने को समर्थ होते हैं।

प्रसु ज्येष्ठ निचिराभ्या बृहन्नमो हव्य मति भरता ।

ऋग्० मं० १ सू० १३६ मं० १

जो जन बहुत काल से प्रवृत पढाने और उपदेश करने वालों के समीप से विद्या और अच्छे उपदेशों को शीघ्र ग्रहण करते वे चक्रवर्ती राजा होने के योग्य होते हैं और इनका ऐश्वर्य्य कभी नष्ट नही होता है।

तेनो गृणाने महिनी महिश्रवः क्षत्र द्यावा पृथिवी धासथो बृहत् ।।

ऋग्० म० १ सू० १६० म० ५

जो जन्म भूमि के गुणों को जानने वालो की विद्या को जान के उससे उपयोग करना जानते हैं वे अत्यन्त बल को पाकर सब पृथिवी का राज्य कर सकते हैं।

मुषाय सूर्यं कवे चक्रमीशान ओजसा ।

ऋग्० मं० १ सू० १७५ म० ४

जो चक्रवर्ती राज्य करने की इच्छा करें वे डाकू और दुष्टाचारी मनुष्यो को निवार के न्याय को प्रवृत करावें।

स्वयुरिन्द्र स्वराडसि स्मद्दिष्टिः स्वयशस्तर ।

ऋग्० म० ३ सू० ४५ म० ५

वही चक्रवर्ती राजा होने के योग्य होता है जो अत्यन्त प्रशसायुक्त गुण कर्म और स्वभाव वाला है और वही राजा सबका वृद्धि कारक होता है।

मित्र सम्राजो वरुणो युवान आदित्यास कवय पप्रथाना ।

ऋग्० म० ३ सू० ५४ म० १०

जैसे चक्रवर्ती राजा अपनी आज्ञा से सम्पूर्ण न्याय को प्रकाशित करता है वैसे ही यथार्थ वक्ता विद्वान् लोग अध्यापन और उपदेश से परमेश्वर और उसकी आज्ञा को प्रसिद्ध करते हैं और जो लोग अड़तालीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य करके पूर्ण विद्या युक्त हैं वे ही इसके कहने सुनने निश्चय और अभ्यास करने और प्रत्यक्ष करने को समर्थ होते हैं।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

कृत्रिम साधनों द्वारा परिवार नियोजन से हानि

श्री दिनेशचन्द्र 'दिनकर' देवनगर, फीरोजाबाद

लूप (छल्ला) प्रणाली, नसबन्दी, गर्भ निरोधक दवाओं का प्रयोग, एव गर्भपात को कानूनी मान्यता प्रदान कर देने से हम अपने राष्ट्र की बढ़ती हुई जनसख्या को रोक तो सकते हैं परन्तु उपर्युक्त प्रणालियो के केवल एक ही पहलू को देखकर अगर हम यह समझ लें कि इससे राष्ट्र की एक बहुत बडी समस्या हल हो जायेगी तो इसे केवल मृग-मरीचिका ही कहा जावेगा। इसमें कोई शक नहीं कि अगर हमने राष्ट्र की बढती हुई जनसख्या को रोकने का प्रयास नहीं किया तो राष्ट्र की कई समस्यायें अधूरी ही रह जायेंगी। परन्तु जिन प्रणालियों के द्वारा हम इन्हे रोकना चाहते हैं वे ऐसी हैं जो निश्चय ही भविष्य मे हमारे राष्ट्र की रीढ की हड्डी को तोड कर रख देगी। पूज्य बापू ने अपनी पुस्तक अनीति की राह पर' में एक स्थानपर लिखा है—"हम कृत्रिम साधनों से सन्तानोत्पादन रोकना तो चाहते हैं परन्तु इन साधनों से हानि नही होती इसका सबूत ही नहीं मिलता। हा, सफल और ज्ञानवान स्त्री रोग-चिकित्सकों और मानस रोग-चिकित्सकों के पास इसे साबित करने के लिये जबरदस्त मसाला मौजूद है कि इन साधनो से काम लेना शरीर, स्वास्थ्य और नीति दोनों के लिये अति हानिकर है। और यह खुली बात है कि सन्तान की कामना न हो तो पति-पत्नी मे से किसी को भी सयम के लिये प्रेरित करने वाली कोई शक्ति नही रहती। पुरुष का जी उस स्त्री से भर जाता है, उसकी पुरुषार्थ की कामना मन्द पड़ जाती है। स्त्री उसे दूसरी स्त्रियो के पास जाने से रोकने के लिये उसे अपना ही गुलाम बना रखना चाहती है। अरसे तक गर्भाधान न होने देने से उनकी अपनी भोगेच्छा भी भड़कती जाती है। नतीजा यह होता है कि पुरुष कुछ ही वर्ष में निर्वीर्य हो जाता है। और किसी भी रोग का सामना कर सकने का बल उसमे नहीं रहता। इस निर्वीर्यता से बचने के लिये अक्सर कुत्सित साधनों से काम लिया जाता है, जिससे स्त्री-पुरुष के मन में एक दूसरे के लिये तिरस्कार की भावना पैदा होती है तथा अन्त में कभी २ सम्बन्ध-विच्छेद तक की नौबत आ जाती है।"

कैंसर रोग के विशेषज्ञ का कहना है कि इन कृत्रिम साधनों का व्यवहार कैंसर रोग का भी कारण होता है। नारी-देह की एक कोमलतम झिल्ली पर इन साधनों का बहुत बुरा असर होता है—और उससे कितने ही रोग पैदा होते हैं। कितने ही प्रतिष्ठित डाक्टरो का यह भी कहना है कि इन साधनों को काम में लाने के कारण ही बहुत सी स्त्रिया बाझ बन जाती हैं। उनका जीवन नीरस हो जाता है और ससार उनके लिये विष रूप हो जाता है।

जज लिंडसे (अमरीका) अपने देश के युवा अपराधियों का विचार करने वाली अदालत मे अरसे तक न्यायाधीश रह चुके हैं। आपने अपनी एक पुस्तक मे वर्जीनिया एलिस नाम की एक युवती का पत्र उद्धृत किया है। वह बेचारी लिखती है कि मैं चार होशियार डाक्टरों से मिल चुकी और मेरे पति दूसरे दो डाक्टरों की सलाह ले चुके। इन छहों डाक्टरों का कहना है कि गर्भ निरोध के साधनों को काम मे लाने से थोड़े दिनों तक स्त्री-पुरुष के स्वास्थ्य पर कोई असर पडता भले ही दिखाई न दे, पर कुछ ही दिनों में दोनों हाथ मलने लगते हैं, और इन अनिष्ट से ऐसी व्याधि की उत्पत्ति होती है जिसका आपरेशन 'एपिसाइटस' (आत का फोड़ा) और गालस्टोन (पित्ताशय की पथरी) के नाम से किया जाता है।

प्रचलित गर्भ निरोधक दवाओं का प्रयोग अथवा अन्य प्रणालियों द्वारा हम सन्तति को रोकना तो चाहेगे परन्तु इसका प्रभाव क्या पड़ेगा वह भी देखिये गान्धी जी लिखते हैं—"इससे अपनी वासना को दबाने के लिये कोई बुद्धि सगठन हेतु नही रह जाता, और यह पति-पत्नी के लिये जब तक भोगेच्छा निर्बल नही हो जाती या बुढापा नही आ जाता तब तक वीर्य-नाश करते रहने का दरवाजा खोल देता है इसके सिवा इसका बुरा असर वैवाहिक सम्बन्ध के बाहर भी पड़े बिना नहीं रहता। यह अनियमित, अवैध और असफल-जनक सन्तान रहित सम्बन्धका रास्ता खोल देता है, जो आधुनिक उद्योग-नीति, समाज शास्त्र और राजनीति की दृष्टि से खतरे से भरी बात है।"

फ्रान्स में जहा आज से करीब दो सदी पूर्व इस प्रथा का चलन हो चुका था। उसकी दशा आज क्या है यह देखिये। उसकी राजधानी पेरिस मे ७० हजार तो ऐसी वेश्याऐं हैं जिनके नाम वेश्याओं के रजिस्टर में दर्ज हैं। 'अन रजिस्टर्ड' खानगी वेश्याओ की सख्या उनसे कई गुनी है। उनके और नगरो में भी यह बुराई बुरी तरह फैल रही है। जननेन्द्रिय के रोगों का भी कोई हद हिसाब नहीं है और लाखों स्त्रियां विवाहित-अविवाहित दोनो उनसे पीड़ित हो डाक्टरो के दर की खाक छान रही हैं। फ्रान्स के लोग इसी भ्रष्टता के लिये सारी दुनिया में वद-नाम हो रहे हैं और फ्रैंच कुमारिया बुरदाफरोशी के बाजार में दिन-दिन अधिक सख्या में पहुच रही हैं।

सबसे भयावह बात तो यह है कि इन साधनों का एक बार धडल्ले से जहा प्रचार हुआ कि फिर इस गन्दे ज्ञान का प्रचार रोकने के लिये कोई उपाय नहीं रहता। उसे रोकने की शक्ति भी किसी की नहीं रह जाती। सबसे पहिले ये बातें युवा वर्ग में पहुचती हैं। फ्रान्स के वेश्यागृहों में कोमल वय की कुंवारी और विवाहिता दोनो तरह की अभागी स्त्रियों के यौवन और चरित्र की हाट लग रही है।

उपर्युक्त तथ्यो के आधार पर हम कह सकते हैं कि आजभी परिवार नियोजन जिन प्रचलित प्रणालियो के ऊपर आधारित है वे आज के कालिज में पढने वाले लड़के लडकियो को निर्भय होकर सहवास सुख भोगने की सलाह देगा। कुछ वर्ग को यह कहते सुना गया है कि उपर्युक्त प्रणालियो द्वारा हम सहवास सुख भोगते हुये कम बच्चे पैदा करके, अपने परिवार को सुख देते हुये देश मे स्वर्ग को उतार लायेंगे। परन्तु मैं कहता हू कि स्वर्ग तो दूर, इन हालातो मे हम घर-घर को नर्क बना कर रख देंगे। जन-साधारण में इन साधनो का प्रचार हुआ तो लोग बेमौत मरेंगे। घुल-घुल कर, सिसक-सिसक कर मरेंगे और शायद यह सत्यानाश देखकर ही आने वाली पीढ़िया इन साधनो से प्रेत की तरह भागना सीखेंगी।

मध्यप्रदेश में श्री कौशलजी का प्रचार कार्य

ग्राम चरनाल तहसील सिहोर में दल कार्य प्रारम्भ करने की दृष्टि से श्री श्याम लालजी चोरसिया M. A B. E. D. के आमन्त्रण पर श्री लक्ष्मी नारायण जी शर्मा सचालक सहकारी बैंक के साथ गया रात्री को प्रचार किया।

वैरनिया की मडल बैठक में भाग लेने गया। साथ श्री लक्ष्मी-नारायण जी शर्मा M.A.B.E.D. संचालक सहकारी बैंक तथा श्री बाबू लाल जी M A B.E.D. सहायक सचालक आर्य वीर दल म० प्र० भी थे बैठक की जानकारी निम्न है।

इस मण्डल मे लगभग १४ शाखायें हैं तथा अगले मास मे ४ शाखायें और खोलने का निश्चय किया तथा कार्य विभाजन किया।

आर्थिक इस मण्डल मे लगभग २००० रुपया कोष मे है। बैंक में जमा करने का आदेश है।

पुस्तकालय—इस मण्डल में लगभग ४-५ स्थानों पर पुस्तकालय हैं।

लगभग २०, प्रतिनिधियों ने बैठक मे भाग लिया। तहसील स्थान पर एक प्लाट खरीद कर भवन निर्माण कराया जावे जिससे दल को स्थाई आय हो सके। इसके लिये श्री लक्ष्मीनारायण तथा श्री मण्डल पति व एक अन्य सदस्य को मिला करा तीन व्यक्तिओं की समिति बनादी गई।

जिला विदिशा आर्य वीर दल मण्डल कोरवाई की बैठक ली जिसमें १६ प्रतिनिधियों तथा निम्न अधि-कारिओं ने भाग लिया।

१—श्री बाबूलाल तिवारी M. A M E. D प्रान्तीय सचालक।

२—बाबूलाल आनन्द M A. B E सहायक प्रान्तीय सचालक

कोरवाई एक मुस्लिम स्टेट रही है अत नवाब का बहुत प्रभाव है तथा नवाब स्वय एक विद्वान् अच्छा वक्ता तथा मुस्लिम जमायतो का सचालक है इस के प्रभाव के कारण ग्राम ताल मे नित्य गौ वध होता है।

कोषमे केवल ५७ रुपये शेष थे।

पुस्तकालय आर्यसमाज और आर्य वीर दल का एक ही है।

५ से ११ जनवरी तक मेरा प्रचार का कार्य-क्रम बनाया है।

बैठकें बहुत सफल रहीं तथा उत्साह के साथ सफल हुई।

पुनर्जन्म और स्मृति

माननीय श्री प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०

(गताक से आगे)

एक किसी बड़े विद्वान् के मस्तिष्क पर विचार कीजिये। वह कई भाषाओं का विद्वान् है। उसने सैकड़ो पुस्तकें पढ़ी हैं। उसने सहस्रों अनुभव प्राप्त किये है। इन भाषाओं, इन पुस्तकों, इन अनुभवों का आधार था इन्द्रिय-जन्म सन्निकर्ष या अनुभव यह अनुभव इतने बहु-सख्य, इतने बहु-परिमाण और इतने स्थूल, थे कि इस छोटे से मस्तिष्क में उनका प्रवेश तथा सुसरक्षण असमव था परन्तु जब इन घटनाओं ने सूक्ष्म-सस्कारो का रूप धारण कर लिया तो इसी का नाम 'विद्वत्ता' है। यह है स्मृति की महत्ता या महिमा।

एक और दृष्टान्त लीजिये। इस से स्मृति की स्थूलता और सूक्ष्मता भलीभांति समझ में आ सकती है। एक मजदूर किसी काम मे एक एक पैसा कमाता है। जब उसके पास सौ पैसे हो जाते हैं तो उसकी इच्छा होती है कि सौ पैसों के बदले मे एक रुपया मिल जाय तो अच्छा हो। सौ पैसों और एक रुपये का मूल्य तो समान है परन्तु बोझ में बड़ा अन्तर है। सौ पैसे स्थूल हैं और एक रुपया सूक्ष्म। यदि इसी प्रकार कुछ दिनों में उसके पास सौ रुपये हो जायें तो वह सौ रुपयों की स्थूलता से भी तग आ जाता है और उसकी इच्छा होती है कि सौ रुपये का एक नोट खरीद लूं। सौ रुपयो का नोट सौ रुपयो की अपेक्षा सूक्ष्म है। परन्तु मूल्य एक सा है। इस प्रकार हमारे पास जितना धन बढ़ता जाता है हम उसके रूप को अधिक सूक्ष्म बनाने का यत्न करते हैं हमारी छोटी सी जेब मे लाखों रुपये सुगमता से आ जाते हैं।

विद्वत्ता को भी धन ही समझना चाहिये। धन की इकाइया हैं पैसे या रुपये। विद्या की इकाइया हैं अनुभूतिया या ज्ञान-राशि। अनुभूतियों और ज्ञान-राशियों का विषय हैं स्थूल वस्तुयें या स्थूल घटनायें। यह हमारे सूक्ष्म मस्तिष्क में घुस नहीं सकते, इतना बडा हिमालय पर्वत हमारे मस्तिष्क मे कैसे घुसता ? इतनी बड़ी गगा हमारे मस्तिष्क में कैसे समा सकती ? दरवाजा तो बहुत ही छोटा है। जिसको आप आंख की पुतली कहते हैं वह छोटी सी पुतली सभी छोटी बडी चीजों मे सन्निकर्ष करती है। इसी का नाम अनुभूति या प्रत्यक्ष है। यदि आख मे पहाड़ को रख सकने का सामर्थ्य होता तो पहाड हमारी आंख के भीतर प्रवेश कर सकता।

परन्तु यदि हिमालय पर्वत हमारे मस्तिष्क में घुस सकता तो दूसरे लोग हिमालय को कैसे देखते ? केवल एक विद्वान हो सकता था। कई नहीं, यहां इस हिमालय पर्वत को हजारों आदमी देखते हैं। हजारों पशु-पक्षी देखते हैं। इसलिये यह बात सिद्ध हुई कि जिन वस्तुओं का हम ज्ञान प्राप्त करते हैं उनकी अपेक्षा उनका ज्ञान अधिक सूक्ष्म हैं। विद्वान् के मस्तिष्क में ज्ञान रहता है। जानी हुई वस्तुयें ज्यों की त्यों बाहर रहती हैं इस सूक्ष्म ज्ञान का किसी मस्तिष्क मे सुरक्षित (असम्प्रमोष) रखना ही स्मृति है।

एक बात और याद रखनी चाहिये स्मृति और विस्मृति अर्थात् याद और भूल मे क्या भेद है। हम कहा करते हैं कि इतना हमको याद है। इतना भूल गये। हमारा एक पुराना मित्र आया। मैं कहता हू कि शकल तो याद है नाम भूल गया। जब हम उस मित्र के साथ रहते थे तो शकल भी मालूम थी और नाम भी। अब शकल याद है नाम नहीं। मित्र ने स्मरण दिलाया। कई पुरानी बातों की ओर ध्यान आकर्षित किया हमको पूरी बात याद आ गई ! जी हा ! अब याद आ गया। आप पूर्णमल हैं।

अब आप तनिक सोचिये। याद और भूल में क्या भेद है ! तीन चीजें हो गई मित्र से मिलना जुलना। उसकी शकल की याद बनी रहना। उसके नाम को भूल जाना। मिलते जुलते समय जो ज्ञान था जिसे प्रत्यक्ष कहते हैं वह स्थूलतम ज्ञान था। वह छोटे पैसे थे जिनका मूल्य कम था और बोझ अधिक। इन पैसों को हमने रुपयों के रूपमें परिवर्तित किया। मित्र के साथ शारीरिक सम्पर्क तो वहीं छूट गया, सूक्ष्म सस्कार हमारे मन ने ले लिये। इन सस्कारों में से कुछ तो ऊपर पड़े रहे और कुछ ताले में बन्द कर दिये गये। सौ रुपये का नोट हम जेब में रखते थे। जब कई सौ रुपयों के नोट इकट्ठे हो गये तो उनकी रक्षा की चिन्ता हुई। हमने इनको सन्दूक मे बन्द करके ताला लगा दिया यह ताले बन्द सस्कार हमारे मन में सुरक्षित विद्यमान हैं। परन्तु इनके खोलने के लिये कुंजी चाहिये। हम मित्र का नाम भूल गये। वह हमारे मस्तिष्क में था। परन्तु ताले में बन्द था। इसके लिये कुंजी चाहिये थी। जब हमारे मित्र ने कई दृश्यों या घटनाओं का वर्णन किया तो अन्ततोगत्वा ताला खुल गया। इस प्रकार सोचिये। विस्मृति या भूल या स्मृति का उलटा (परस्पर विरोधी) नहीं है। भूल याद को ताले बन्द दशा है। हम जितना प्रत्यक्ष करते हैं उसका थोड़ा अश मस्तिष्क की ऊपर तह पर रहता है। कभी कभी मस्तिष्क की ऊपर तह पर बहुत सी चीजें जमा हो जाती हैं। तो हमको नये प्रत्यक्षों के ग्रहण करने में कठिनाई पड़ती हैं। जैसे किसी अफसर की मेज पर बहुत सी फायलें इकट्ठी हो जायें। तो उसे काम करने में कठिनाई होती है। इसलिये हम चाहते हैं कि पुरानी फायलें गुम तो न हो जायें परन्तु उनको अलग सुरक्षण पूर्वक रख दिया जाय। हिन्दी का शब्द 'रखना' भी सस्कृत के रक्षण से बना है। हमारे ज्ञान में इसी प्रकार क्रमिक वृद्धि होती रहती है जब आवश्यकतानुसार अवसर पड़ने पर हम ताले को खोलते हैं तो विस्मृत वस्तु फिर याद आ जाती है।

'भूल' की हम सबकी शिकायत रहती है। हम चाहते हैं कि किसी बात को कभी न भूलें। यदि यह भूल न होती तो विद्यार्थी को विद्योपार्जन में कितनी सुगमता होती। हम जितनी बात ग्रहण करते हैं उसका बहुत सा भाग विस्मृत हो जाता है। जिनकी स्मरण शक्ति अधिक तीव्र और अधिक स्थायी होती है वही अधिक विद्वान् समझे जाते हैं परन्तु शायद आपने कभी नहीं सोचा कि यदि दैव आप की याद (स्मरण शक्ति) को नित्यत्व (चिरस्थायी) बना देता तो आपकी कठिनाई कितनी बढ़ जाती।

कल्पना कीजिये कि आप किसी महाविद्यालय के विद्यार्थी हैं। उस विद्यालय में भिन्न भिन्न अन्तरों (Periods) मे भिन्न भिन्न विषय पढ़ने पड़ते हैं। आपने पहले पीरियड में संस्कृत का पाठ पढ़ा। दूसरा पीरियड अंग्रेजी का आया। यदि पहले अन्तर में प्रत्यक्ष किये हुये सम्पूर्ण सस्कार दूसरे अन्तर में ज्यों के त्यों रहें तो आपका संस्कृत का पाठ अंग्रेजी के पाठ में बाधक होगा। आपकी इच्छा होगी कि आप पहले घण्टे के संस्कारों को कम से कम उस घण्टे के लिये तो भूल ही जायें। इस प्रकार पुरानी बातों की विस्मृति (भूल) नये ज्ञान के ग्रहण करने में साधक होती है।

हमारे मस्तिष्क के पास बहुत से सुरक्षित तालेदार सन्दूक हैं। उनमें हम अलग अलग सामान रखते हैं और समय पड़ने पर ही खोलते हैं। इसी का नाम है विस्मृति या भूल। यदि आप दफ्तर मे जायें और किसी रोगी सम्बन्धी को घर पर छोड़ जायें तो जब तक आपको उस सम्बन्धी के रोग की याद है आप कार्यालय में काम नहीं कर सकेंगे। आपकी नितान्त इच्छा होगी कि कम से कम दो घण्टे घर को ताक के ऊपर रख कर या ताले मे बन्द करके दफ्तर के कार्य मे संलग्न हो जायें।

हमारे बहुत से प्रिय जन हमारे मध्य से सदा के लिये उठ जाते हैं। उनकी स्मृति शेष रहती है। परन्तु वह स्मृति भी शनैः २ मन्द पड़ जाती है। माता समझती थी कि यदि उस का बच्चा मर जायगा तो वह कैसे जीवित रहेगी। वह वर्ष दो वर्ष पीछे उसे भूल जाती है दैव की महती दया है कि उसने हमको विस्मृति जैसी कल्याण-मयी वस्तु प्रदान की है।

हम यहां दिखा चुके हैं कि विस्मृति भी स्मृति ही है। तालेमे बन्द सम्पत्ति भी तो सम्पत्ति ही है। सम्पत्ति का अभाव नहीं योगदर्शन में पतञ्जलि महामुनि ने एक सूत्र मे लिखा है—

जाति देशकाल व्यवहितानामप्यानन्तर्यं स्मृति-सस्कारयोरेकरूपत्वात्।

(योगदर्शन कैवल्यपाद सूत्र ९)

स्मृति और सस्कार एक ही है और जाति, देश, काल के व्यवधान होने पर भी स्मृति और सस्कार एक ही रहते हैं। प्रत्यक्ष का मस्तिष्क पर सूक्ष्मरूप में बना रहना ही संस्कार है और इसी का नाम याद या स्मृति है। अवस्था के बदलने या काल या देश के बदलने से स्मृति या सस्कार का नैरन्तर्य ज्यों का त्यों रहता है।

क्रमशः

अधिक जनसंख्या का हौवा

महात्मा गांधी की दृष्टि में

सवाल—इण्डियन मेडिकल बोर्ड के सभापति मेजर जनरल सर जान मैकगाका कहना है कि "अकाल तो हिन्दुस्तान में पड़ते ही रहेंगे। सच तो यह है कि हिन्दुस्तान के सामने असम्ब अकाल मुह बाये खड़ा है। अगर हिन्दुस्तान में बढ़ती हुई जनसख्या को घटाने की कोशिश न की गई, तो उसे जबरदस्त मुसीबत का सामना करना पड़ेगा।" क्या इस गम्भीर सवाल पर आप अपनी राय जाहिर करेंगे ?

जवाब—मेरे ख्याल मे अकाल के ऐसे उथले कारण देकर उसका जो सच्चा और एकमात्र कारण है, उस पर से हमारे ध्यान को हटा दिया जाता है। मैं कई दफा कह चुका हूं और फिर कहता हूं कि हिन्दुस्तान के अकाल कुदरत की नाराजी से नहीं, बल्कि सरकारी हाकिमो की लापरवाही से जाने-अनजाने पैदा होने वाली मुसीबत हैं। अगर आदमी कोशिश करे और अक्ल से काम ले, तो अकालों को रोकना मुश्किल नही है। दूसरे देशों मे अकाल को रोकने की ऐसी कोशिशें कामयाब हुई हैं। लेकिन हिन्दुस्तान मे इस तरह लगातार सोच-समझकर कोई कोशिश की ही नहीं गई।

बढ़ती हुई जनसख्या का हौवा कोई नई चीज नहीं। अकसर वह हमारे सामने खड़ा किया गया है। जनसख्या की वृद्धि कोई टालने लायक सकट नहीं, न होना चाहिये। उसे कृत्रिम उपायों से रोकना एक महान् संकट है, फिर चाहे हम उसे जानते हों या न जानते हों। अगर कृत्रिम उपायों का उपयोग आम तौर पर होने लगे, तो वह समूचे राष्ट्र को पतन की ओर ले जायगा। खुशी इस बात की है कि इसकी कोई सम्भावना नहीं है। एक ओर हम विषय-भोग से पैदा होने वाली अनचाही सन्तति का पाप अपने सिर ओढ़ते हैं, और दूसरी तरफ ईश्वर उस पाप को मिटाने के लिये हमें अनाज की तंगी, महामारी और लड़ाई के जरिये सजा करता है। अगर इस तिहरे शाप से बचना हो तो संयमरूपी कारगर उपाय के जरिये अनचाही सन्तति को रोकना चाहिये। देखने वालों को आज भी यह दिखाई पड़ता है कि कृत्रिम उपायो के कैसे बुरे नतीजे होते हैं। नीति की चर्चा में पड़े बिना मैं यही कहना चाहता हूं कि कुत्ते-बिल्ली की तरह होने वाली इस सन्तान वृद्धि को जरूर रोकना चाहिये लेकिन इस बात का खयाल रखना होगा कि ऐसा करने से उसका ज्यादा बुरा नतीजा न निकले। इस बढ़ती हुई प्रजोत्पत्ति को ऐसे उपायों से रोकना चाहिये जिनसे जनता ऊपर उठे, यानी जिसके लिये जनता को उसके जीवन से सम्बन्ध रखने वाली तालीम मिलनी चाहिये, जिससे एक शाप के मिटते ही दूसरे सब अपने आप मिट जायं। यह सोचकर कि रास्ता पहाड़ी है और उसमें चढ़ाइयां हैं, उससे दूर नहीं भागना चाहिये। मनुष्य की प्रगति का मार्ग कठिनाइयों से भरा पड़ा है। उनसे डरना क्या ? उनका तो स्वागत करना चाहिये।

हरिजन सेवक, ३१-३-४६

हमारा यह छोटा सा पृथ्वी-मडल कुछ समय का बना हुआ खिलौना नहीं है। अनगिनत युगों से यह ऐसा ही चला आ रहा है। जनसंख्या की वृद्धि के भार से उसने कभी कष्ट का अनुभव नहीं किया तब कुछ लोगों के मन में एकाएक इस सत्य का उदय कहां से हो गया कि यदि सन्तति-नियमन के कृत्रिम साधनों से जनसंख्या की वृद्धि को रोका न गया, तो अन्न न मिलने से पृथ्वी-मडल का नाश हो जायगा ?

हरिजनसेवक, २०-६-३८

——

समारोहों में खाद्यान्न का उपयोग बन्द करें

आज देश में, पड़ोसी दुश्मन राष्ट्रो द्वारा निमर्म आक्रमण होते रहने के कारण सकटकालीन स्थिति उत्पन्न हो गई है। खाद्यान्न की स्थिति भी आज जितनी भयानक है, उतनी मेरे ज्ञातव्य काल में देश ने कभी अनुभन नही की।

उक्त स्थिति को नियन्त्रण मे लाने व जनता को राहत देने के दिशा मे तथा अन्न विशेष प्रमाण में उत्पन्न कैसे हो, इस दिशा में सरकार द्वारा जनता के सहयोग से अनेक आवश्यक कदम उठाये जा रहे हैं। परन्तु यह कटु सत्य है कि इसका फल बिल्कुल निकट भविष्य मे प्राप्त नहीं होने का।

साधारण रूप से, अगर अनाज की उपज देश मे सन्तोषजनक होती रही, तो १० प्रतिशत आवश्यकता शेष रह जाती थी, जो विदेशों से आयात कर पूरी की जाती रही।

लेकिन देश के दुर्भाग्य से इस वर्ष अनेक आकस्मिक विपत्तियों के आगमन के साथ अनेक राज्यों मे वर्षा का अभाव होने से खाद्यान्न संकट अत्यन्त ही विकट हो गया है, व यह कमी ३५ से ४० प्रतिशत तक आंकी जा रही है। इसका सामना वीरोचित धैर्य और ठोस उपायों से करना परमावश्यक है।

विवाह, यज्ञोपवीत, सत्कार, समारम्भ, मरणोत्तर भोजनादि कारणों को लेकर बड़े या छोटे समारोहों में जन समुदाय का अनेक प्रकार के भोजनादि से सत्कार किया जाता है। आज जब देश अन्न धान्य की दुर्दशा व राष्ट्रीय संकट काल में होकर गुजर

प्रधान सभा

रहा है, उक्त आयोजनों के अवसर पर हम खाद्यान्न का इस प्रकार खुल कर, केवल झूठी प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए उपयोग करें यह अनावश्यक तो है ही, लज्जास्पद भी अवश्य है। खाद्यान्न के बदले में कितने ही प्रकार के उपलब्ध पेय पदार्थों का उपयोग श्रेयस्कर होने के साथ अन्न की वर्तमान गम्भीर परिस्थिति को सुलझाने में काफी अंशों में सहायक सिद्ध होगा।

अन्तमें अपने देशवासियों से, और विशेष कर समस्त आर्य बन्धुओं से बड़ी नम्रता से अपील करूंगा कि किसी भी समारोह में खाद्यान्न का उपयोग बिलकुल बन्द कर दें, और इस प्रकार देश के वर्तमान खाद्यान्न संकट को कम करने में सहायक बनें।

प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास
प्रधान सभा

लेखनी की ललकार

राजेन्द्रकुमार सेठी 'राही', अशोकनगर

रुक जाओ पाकिस्तानियों, कवि की लेखनी पुकारती।
स्याही खून बन चुकी है, हर शब्द में कुर्बानी बन ललकारती॥
यह याद रहे कवि की हर वाणी में कुर्बानी होती है।
इतिहासो के स्वर्णपृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में सोती है॥

पञ्चशील के पैगम्बर का तूने मजाक उड़ाया है।
याद रहे यह देश सदा ही, सांपों से लड़ता आया है॥
सोते हुए निर्भीक सिंह को फिर से आज जगाया है।
खबरदार हो जाओ, देखो काल बनकर के आया है॥

नगर-नगर और गांव-गांव से देखो आज जवान चले।
खेतों खलिहानों हर घर से झूम-झूम कर किसान चले॥
माताओं के, बहिनों के, प्रेमिकाओं के निशान चले।
पूछो इनसे यही कहेंगे, वतन पर अपने कुर्बान चले॥

याद रहे यह गंगा-जमुना का पानी है।
हर बूंद-बूंद मे इसके उभरती शहीदों की निशानी है॥
इतिहास उठाकर देखो भारत के कितने तीर कमान चले।
देखो-देखो रण मे आज कितने, टेन्क, विमान चले॥

(पृष्ठ ८ का शेष)

त्रिरा दिवः सविता सोषवीति राजाना मित्रावरुणा सुपाणी ।

ऋग्० म० ३ सू० ५६ मं० ७

जो राजा लोग परमेश्वर के सदृश गुण कर्म और स्वभाव युक्त हुए प्रजाओं में वर्तमान हैं वे ही चक्रवर्ती राज्य और असंख्य धन को प्राप्त होते हैं ।

त्रिरुत्तमा दूणशा रोचनानि त्रयो राजन्त्य सुरस्य वीराः ।

ऋग्० म० ३ सू० ५६ म० ८

जो लोग जगदीश्वर को प्राणों के सदृश प्रिय, राजा के सदृश उपदेश दाता, न्यायाधीशके सदृश नायक और सूर्य के सदृश अपने से प्रकाशमान् और सब का प्रकाश कर्त्ता मानकर निरन्तर भजते हैं वे ही शत्रुओं के दुःख से जीतने योग्य सत्य के आचरण करने और अन्यों के सुख चाहने वाले हैं वे चक्रवर्ती राज्य को प्राप्त होकर सूर्य के सदृश शोभित होते हैं और वे ही इस ससार मे रक्षा के अधिकारी हों ।

त्वया वय सधन्यस्त्वोतास्तव प्रणीत्यश्याम ।

ऋग्० म० ४ सू० ४ म० १४

अब नौकरों को चाहिए कि राजा के साथ मित्रता और राजा को चाहिए कि सब लोगों के साथ पिता के सदृश बर्ताव रक्खे और परस्पर एक दूसरे की प्रशंसा कर दोषों का नाश और सत्य नीति का प्रचार करके जिस २ कर्म में लज्जा हो उस उसका त्याग कर चक्रवर्ती राज्य का भोग करें ।

अवासृजन्त जिव्रयो न देवा भुव. सम्राळिन्द्र सत्ययोनि. ।

ऋग्० म० ४ सू० १९ मं० २

हे राजन् ! आप सत्य आचरण करने वाले हुए यथार्थ वक्ताओं के सहाय से चक्रवर्ती सार्व भौम हूजिए और जैसे सूर्य मेघ को नष्ट करके संसार को सुख देता है । वैसे चोर डाकुओं का नाश करके प्रजाओं को आनन्द दीजिए ।

ता तू त इन्द्र महतो महानिविश्वे ष्वित्सवनेषु प्रवाच्या ।

ऋग्० म० ४ सू० २२ म० ५

हे मनुष्यो ! जैसे सूर्य किरणों से आकर्षण करके सम्पूर्ण भूगोलों को धारण करता है वैसे ही बड़े सत्पुरुष आदि सामग्री को करके राजा द्वीप और द्वीपान्तरों में स्थित राज्यों को शासन देवे ।

अह भूमिमददामार्यायाहं वृष्टि दाशुषे मर्त्याय ।

ऋग्० मं० ४ सू० २६ मं० २

हे मनुष्यो ! जो न्यायकारी स्वभाव वाले के लिए भूमि का राज्य देता सब के सुख के लिए वृष्टि करता और सब के जीवन के लिए वायु को प्रेरणा करता है और जिस के उपदेश के द्वारा विद्वान् होते हैं उसकी निरन्तर उपासना करो ।

(क्रमशः)

पृष्ठ ६ का शेष

भामिनी द्रौपदी को निकट से आंखें फाड़-फाड़ कर देख रहे थे, उस समय तुम्हारा धर्म कहां चला गया था ।

राज्यलुब्धः पुन. कर्ण समाव्हयसि पाण्डवान् । यदा शकुनिमाश्रित्य क्व ते धर्मस्तदा गत ॥१०॥

कर्ण ! फिर राज्य के लोभ मे पड़ कर तुमने शकुनि की सलाह के अनुसार जब पाण्डवों को दुबारा जुए के लिए बुलवाया, उस समय तुम्हारा धर्म कहां चला गया था ॥ १० ॥

यदाभिमन्युं बहवो युद्धे जघ्नुर्म-हारथा. । परिवार्य रणे बाल क्व ते धर्मस्तदा गतः ॥११॥

जब युद्ध में तुम बहुत से महा-रथियों ने मिल कर बालक अभिमन्यु को चारों ओर से घेर कर मार डाला था, उस समय तुम्हारा धर्म कहा चला गया था ।

यद्येष धर्मस्तत्र न विद्यते हि,
कि सर्वथा तालुविशोषणेन ।
अद्येह धर्म्याणि विधत्स्व सूत,
तथापि जीवन्न विमोक्ष्यसे हि ॥१२॥

यदि उन अवसरों पर यह धर्म नहीं था तो आज भी यहां सर्वथा धर्म की दुहाई देकर तालु सुखाने से क्या लाभ ? सूत ! अब यहां धर्म के कितने ही कार्य क्यों न कर डालो, तथापि जीते-जी तुम्हारा छुटकारा नही हो सकता ।

श्रीकृष्ण द्वारा फटकार सुन, लज्जित होकर कर्ण ने अपना सिर नीचे कर लिया। किन्तु क्रोध से ओंठ फड़फड़ाता हुआ अर्जुन के साथ भयकर युद्ध करने लगा। यह देख कर श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा.—

छिन्ध्यस्य मूर्धानमरेः शरेण
न यावदारोहति वै रथं वृषः ॥३३॥

कर्ण जब तक रथ पर नहीं चढ़ जाता, तब तक ही अपने बाण से इस शत्रु का मस्तक काट डालो ।

श्री कृष्ण द्वारा धर्म की दुहाई देने वाले कर्ण को दी गई डाटफटकार और वीर अर्जुन द्वारा उसका वध कराना, राज धर्म, युद्ध धर्म और क्षत्रिय मर्म की सही और सच्ची व्याख्या है । तथा यह ही वह मार्ग है जिस पर चल कर राष्ट्र रक्षा हो सकती है, शत्रु संहार हो सकता है और तभी धर्म की स्थापना, शांति की व्यवस्था होकर जगत् को सुख और सन्मार्ग प्राप्त हो सकता है अन्यथा नहीं ।

———

पंजाब, दिल्ली और हरियाना के धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों के प्रतिनिधियों का विराट कन्वेंशन

दिल्ली और पजाब के दोनों क्षेत्रों के धार्मिक और सांस्कृतिक सस्थानों के प्रतिनिधियो की एक सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द भवन देहली मे श्री वीरेन्द्र जी एम० ए० की अध्यक्षता मे हुई।

काफी विचार के पश्चात् निम्न लिखित निश्चय हुए —

१—आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य प्रादेशिक सभा पजाब ने पजाबी सूबा के प्रश्न पर विचार के लिए नियुक्त कमेटी की स्थिति के सम्बन्ध में लोक सभा के अध्यक्ष से जो स्पष्टीकरण मांगा है कि यह कमेटी ससदीय समिति है या परामर्शदातृ समिति है जिसे केन्द्रीय गृहमन्त्री महोदय ने लोक सभा के भीतर और बाहर बार २ परामर्श दातृ समिति बताया है उसका यह सभा समर्थन करती है।

२—यह सभा पुनः इस बात को दुहराती है कि किसी भी अवस्था मे पजाब का विभाजन और गुरुमुखी लिपि मे लिखित पजाबी का एक मात्र पजाब की राज्य भाषा के रूप मे लादा जाना सहन न किया जायगा। जब १९५६ मे क्षेत्रीय फार्मूला बनाया गया था तब और बाद मे १९६१ में स्व० प० जवाहर लाल जी नेहरू द्वारा पजाबी सूबा के प्रश्न का अन्तिम रूप से हल हो गया था उनके निर्णय को बदल देने से बहुत सी उलझने पैदा हो जायगी अत पजाब के वर्तमान ढाचे को छेड़ना राष्ट्रहित में न होगा।

३—३० जनवरी ६६ को देहली मे पजाब के हर वर्ग के प्रतिनिधियों का जो पजाबी सूबा के विरुद्ध हो एक कन्वेंशन बुलाया जाय।

४ पजाब के विभाजन, हरयाना के अङ्ग-भङ्ग और पजाब में राज्य भाषा के रूप में पंजाबी की बाध्यता के विरुद्ध आन्दोलन जारी रखने के लिए निम्न लिखित सज्जनों की एक समिति बनाई जाय :—

१—श्री स्वामी गणेशानन्दजी महाराज
२-,, योगीराज सूर्यदेव जी महाराज
३-,, प० मौलीचन्द्र जी शर्मा
४-,, ला० जगतनारायणजी एम पी
५-,, ला० रामगोपाल जी शालवाले (सयोजक)
६-,, चौ० माडूसिंह जी एडवोकेट रोहतक
७-,, पिंडीदास जी ज्ञानी अमृतसर
८-,, यशजी, मिलाप जालन्धर
९-,, वीरेन्द्र जी एम० ए० जालन्धर
०-,, के० नरेन्द्र जी प्रताप दिल्ली
११-,, प० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम०पी०
१२-,, प० कोकचन्द जी शास्त्री हिसार
१३-,, कपिल देव जी शास्त्री गुरुकुल भैंसवाल
१४-,, प्रो० रामसिंह जी एम० ए० दिल्ली
१५-,, श्यामलाल जी फरीदाबाद

क्या मानव जाति के कल्याण के लिए ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता है?

ब्रह्मचारी सुरेशचन्द्र जी 'अरुण' वैद्यनाथ धाम

जीवात्मा अल्पज्ञ और कर्म करने मे स्वतन्त्र तथा फल भोगने मे परतन्त्र है। जैसा कर्म वह करता है, ईश्वर उसके कर्मों का फल तदनुसार ही देता है। मनुष्य पूर्वजन्म के सस्कारों को लेकर पैदा होता है और पूर्वजन्म मे किए गये कर्मों के फलों का भोग करता है। यदि उसको ज्ञान का पुण्य प्रकाश नहीं दिया जाय तो पाप और पुण्य की परिभाषा न जानने के कारण वह अपने दुष्कर्मों के भोग का अपराधी भीन ही हो सकता है।

जिस प्रकार राज्य कायम करने के पहले राज्य का विधान बन जाता है और उसी विधान के अनुसार लोग चलते हैं, इसके विरुद्ध चलने पर वे दण्डित होते हैं उसी प्रकार सृष्टि के आरम्भ मे ईश्वर यदि जीवात्मा को ज्ञान का कोई प्रकाश न दे तो उसके सामने पाप और पुण्य का कोई प्रश्न नही रहेगा अत उसे दण्डित करने का ईश्वर को कोई अधिकार नहीं रहेगा।

डारविन (Darvi e) के सिद्धान्तानुसार विकासवाद में सृष्टि के आरम्भ मे बन्दर (Monkey) से आदमियों की उत्पत्ति हुई है और मनुष्यो को क्रमशः धीरे-धीरे ज्ञान हुआ है। परन्तु यह सर्वमान्य नहीं यद्यपि ऐसी घटनाएं देखी गई हैं कि आदमी का बच्चा सियार (Jo) के बच्चों के साथ उसी के मांद में पाले जाने पर उसी की बोली बोलता है, वैसा ही मास खाता है और उसी प्रकार जगली जीवन व्यतीत करता है। उसमे मनुष्यत्व का विकास ही हो पाता है।

जगली मनुष्य शिक्षा और सभ्यता से बहुत दूर जगलो मे और पहाड़ों पर वास करते हैं। तब तक उनमे कोई विकास नहीं होता जब तक उन्हें किसी योग्य गुरु द्वारा शिक्षा नही दी जाती है। बिना शिक्षा और ज्ञान के न वे सभ्य बन सकते हैं और न मानव जीवन ही जी सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि जन्मे हुए बच्चों को यथा साध्य ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हो और सानव-समाज की सभ्यता तथा प्रकाश मिले, तभी ही वे प्रगतिशील और विकसित मनुष्य बन सकते हैं। बिना शिक्षा-दीक्षा के कोई भी बालक उच्च सस्कार प्राप्त कर सुसभ्य एव योग्य मनुष्य नहीं बन सकता है।

अतः यह सिद्ध हुआ कि सृष्टि के आरम्भ मे भी मानव-समाजके विकास के लिए एक ऐसी शिक्षा की आवश्यकता थी जो मनुष्य को उत्तरोत्तर ज्ञान, मानसिक विकास और कर्त्तव्य निर्देशन के मार्ग की ओर प्रेरित कर सके। इसलिए मानव-समाज के विकास के लिए प्रारम्भिक सृष्टि में उत्पन्न हुए मनुष्य को ज्ञान की आवश्यकता थी।

जो ऋषि पहले अमैथुनी सृष्टि से उत्पन्न हुए उनके हृदय में जो ज्ञान था, उन्होंने उसे आगे आने वाली सृष्टि के बच्चों को दिया। यह कहना होगा कि उनको किसी गुरु ने नही पढ़ाया अत वह ईश्वरीय ज्ञान था।

महर्षि पतञ्जलि ने कहा है कि —
स पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात् ॥

ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में और काल से परे सबका गुरु है, जो ज्ञान का प्रकाश करता है। इसलिए मानव-जाति के कल्याण के लिए ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता है।

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

प्रयाग में प्रचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में कुम्भ मेला क्षेत्र (भूसी) में पुल नं० ५ पार करने पर एक मास तक विशाल पण्डालमे प्रचार होगा।

ता०१८-१६ को आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री की अध्यक्षता मे वेद-सम्मेलन होगा जिसका उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सेठ प्रताप सिंह शूरजी बल्लभदास करेंगे।

ता० २१ को ससद सदस्य श्री श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री जी की अध्यक्षता मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा, उद्घाटन श्री लाला रामगोपाल शालवाले करेंगे।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य विद्वान् नेताओं के भाषण होंगे।

—सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासी वानप्रस्थ मण्डल ज्वालापुर के सहायक मन्त्री स्वामी अभयानन्द जी सरस्वती (लाडवा) ने मण्डल की ओर से तीर्थ और मोक्ष एवं आर्यसमाज के मन्तव्य की कई सहस्र पुस्तकें मेले में प्रचारार्थ भेजी हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की धूम

आर्य समाज (सैक्टर २२ ए) चण्डीगढ़ मे श्री त्रिलोकी नाथ जी प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालेज की अध्यक्षता में, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। श्री प्रो० जयदेव जी कृष्ण लाल जी आदि महानुभावो ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित कीं।

—आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक की ओर से प्रभातफेरी और आर्य केन्द्रीय सभा एव आर्यवीरदल रोहतक के तत्त्वावधान मे बलिदान दिवस मनाया गया। सभा मे प्रो० उत्तमचन्द जी प्रो० रामप्रकाश जी, एव श्री राममेहर जी वकील ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के त्याग और बलिदान पर विचार प्रकट किये।

- १८ फरवरी से ऋषि बोधोत्सव लगातार एक सप्ताह तक मनाया जायेगा।

आर्यसमाज रजौली (गया) में

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। सभा में श्री शिवनन्दनप्रसाद जी ने श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते हुए भी स्वामी श्री द्वारा की गई सेवाओं का वर्णन किया।

— आर्यसमाज काधला(मुजफ्फरनगर) मे श्री हरिश्चन्द्र जी प्रधान एव श्री सीताराम जी ने स्वामी जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

आर्य समाज (सैक्टर २२) चण्डीगढ़

में प्रि० त्रिलोकीनाथ जी की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा में स्वामी विचारानन्द जी स्वामी गवानन्द जी चौ० रूपचन्द जी एडवोकेट, प० रामनाथ जी महोपदेशक, प० सत्यव्रत जी तथा श्री जयदेव जी ने विचार प्रकट किए।

—आर्यसमाज इटारसी की ओर से आर्यकन्या शाला में बलिदान दिवस मनाया गया। श्री स्वामीजी के महान् कार्यों का वर्णन किया गया।

आर्य वीरदल गुंजोटी की ओर से श्री रमेश ठाकुर जी की अध्यक्षता में बलिदान दिवस मनाया गया। अनेक महानुभावों ने अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति श्रद्धाञ्जलिएँ प्रस्तुत कीं।

उत्सव

आर्य समाज बरबीघा (मुंगेर) का ३८ वां महोत्सव ९-१०-११ जनवरी में समारोह सम्पन्न हुआ। अनेक आर्य विद्वान् नेताओं के भाषण हुए।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज फैजाबाद ने वयोवृद्ध सदस्य श्री अयोध्याप्रसाद जी अरोड़ा के सुपुत्र डा० विष्णुदत्त जी अरोड़ा के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करते हुए प्रभु से दिवगत आत्मा को शान्ति और परिवार के लिए धैर्य धारण की प्रार्थना की।

विद्यार्थियों में प्रचार

आर्यसमाज जालना ने श्री प० गोपालदत्त जी शास्त्री की अध्यक्षता में कालेज स्कूल के विद्यार्थियो में प्रचारार्थ, सात सदस्यों की समिति स्थापित की है जिसके उत्साही संयोजक हैं श्रीरामलाल सेवारामाणी जी।

नेत्र-दान शिविर

कोआथ (बिहार) में १३ वां नेत्रदान शिविर मन्त्री श्री डा० भूदेव प्रसाद जी केसरी के तत्वावधान में हो रहा है।

जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान पद्मभूषण श्री डा० दुखनराम जी तथा उनके सुपुत्र डा० देवेन्द्रराम जी अपनी अमूल्य सेवा प्रदान कर रहे हैं।

शिविर के सयोजक वैद्यराज श्री यज्ञेश्वरप्रसाद केसरी सफलता पूर्वक शिविर का संचालन कर रहे हैं।

एक आदर्श दान

आर्य जनता को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री डा० सूर्यदेव जी शर्मा, साहित्यालकार, एम० ए० डी० लिट् ने आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड, अजमेर को ७५००) रु० का दान दिया है जो मण्डल में "डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिर निधि" के रूप मे सदा जमा रहेगा और जिससे सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन होकर सस्ते रियायती मूल्य पर जनता को दिया जाया करेगा इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश का सस्ता सस्करण सदा प्रकासित होकर उसका प्रचार घर घर में होता रहेगा।

श्री डा० सूर्यदेवजी गत वर्षों में इसी प्रकार के सात्विक दान के रूप में लगभग १८,०००) रु० सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, "आर्य मित्र" लखनऊ व आर्यसमाज, अजमेर को प्रदान कर चुके हैं।

आर्य वीर दल, गुंजोटी

के वार्षिक निर्वाचन में श्री दिनकर जी सूर्यवंशी प्रधान, श्री अरविन्द चौधरी उपप्रधान, श्री तुकाराम सुतार मन्त्री श्री प्रकाश पोतदार उपमन्त्री श्री किशोरशाह कोषाध्यक्ष श्री काशी आर्य ग्रन्थपाल चुने गये।

भाषण प्रतियोगिता

वीर हकीकतराय बलिदान जयन्ती बसन्त पचमी को हिन्दू महासभा भवन नई दिल्ली मे मनाई जायगी इस अवसर पर कालेज स्कूलों के विद्यार्थी निबन्ध पढ़ेंगे। प्रथम और द्वितीय १२ छात्रों को पुरस्कार दिये जावेंगे।

प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक अपने नाम २५ जनवरी तक समिति के मन्त्री श्री रामरक्खामल ३६ सरोजनी मार्केट नई दिल्ली के पास भेजें।

आर्यसमाज के उत्तम प्रचारक

श्री पं० आशानन्द जी भजनीक आप रंगीन चित्रों में मैजिक लालटेन द्वारा साथ ही सुमधुर गायनों से जनता को मन्त्रमुग्ध कर देते हैं।

सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली-१ या आर्यसमाज नया बांस दिल्ली द्वारा पण्डित जी से सम्पर्क स्थापित करें।

(पृष्ठ ४ का शेष)

यह निम्न मन्त्र में बड़ी सुन्दरता से वर्णित है:—

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति । सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरु लोकं पृथिवी नः कृणोतु । १२-१-१

अर्थात् बृहत्=वृद्धि सत्यनिष्ठा या महान् सत्य अर्थात् सर्वकाल सर्वावस्था में एक से रहने वाले अटल नियम अर्थात् सार्वभौमिक सार्वजनिक नियम, उग्र बलवान् भयकारी ऋत-व्यवस्था=न्याय व्यवहार=नीतिनियम अर्थात् देशकालानुसार बनाए गए परिवर्तनशील नियम तप=सत्य+ऋत रूपी धर्मानुष्ठान तथा प्राकृतिक कष्ट अथवा शीतोष्ण सुखदुःखादि द्वन्द्वों से होने वाले कष्टों का सहन करना, दीक्षा=कार्य करने में लगन, दृढ़ संकल्प, कटिबद्धता या चतुराई दक्षता, सावधानता, ब्रह्म=ब्रह्मचर्य या आत्मज्ञान अर्थात् सत्य ज्ञान या बड़प्पन की इच्छा, आगे बढ़ने की भावना, यज्ञ=देवपूजा, विद्वानों-वृद्धजनों का आदर सत्कार, संगठन, एकता या सामूहिक कार्य करने की भावना और त्याग पृथ्वी पर या राष्ट्र में रहनेवाले समस्त जन समुदाय, प्राणीवर्ग को धारण, पालन, पोषण और रक्षण करते हैं। अर्थात् राष्ट्र की रक्षा के लिए बृहत् (वृद्धि) सत्यम्, ऋतम्, उग्रम्, दीक्षा, तप, ब्रह्म, यज्ञ ये सभी हैं जिन पर राष्ट्र का मन्दिर खड़ा होता है। अतः राष्ट्र के निवासियों के लिए इन राष्ट्र धर्मों का पालन करना आवश्यक है। यदि हम इनका पालन करेंगे तो हमारा राष्ट्र उन्नत होगा। हमारी अतीत से चली आ रही परम्पराओं का, सभ्यता तथा संस्कृति की रक्षा होगी और भावी जीवन का उत्थान होगा। हमारे लिए राष्ट्र खूब फलेगा, फूलेगा और समृद्ध होगा।

वेदों में जहां राष्ट्र के लिए उपर्युक्त आधार का उल्लेख किया गया है वहां राष्ट्रकर्म भी चार भागों में बांटा गया है। एक मन्त्र में यजुर्वेद में कहा गया है:—

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यम्।
मरुद्भ्यो वैश्यम्, तपसे शूद्रम्।

अर्थात् ज्ञान तथा शिक्षा के लिए ब्राह्मण, शासन तथा युद्ध के लिए क्षत्रिय, व्यापार, कृषि आदि के लिए वैश्य और गृह-उद्योग, शस्त्रास्त्र-कारखानों, मिलों आदि के लिए शूद्र की आवश्यकता है। यदि हम अनुपयुक्त व्यक्तियों को कार्य सौंपेंगे तो राष्ट्र की क्षति होगी अर्थात् राष्ट्र के चार प्रकार के कर्म हैं विद्या, सैन्य, अन्न और श्रम

राष्ट्र को उन्नत करने के लिए, उसके यश को बढ़ाने के लिए राष्ट्र निवासियों को तीन देवियों की पूजा करनी पड़ेगी। ऋग्वेद के एक मन्त्र में इसका उल्लेख किया गया है। मन्त्र है:

इडा सरस्वती मही तिस्रोदेवीर्मयो भुवः। बर्हि सीदन्त्वस्रिधः।

ऋग्वेद १-१३-९

अर्थात् इडा=मातृभाषा, सरस्वती=मातृ संस्कृति (विचार धारा) और मही=मातृभूमि ये तीन आनन्द को देने वाली देवियां हैं इसलिए ये तीनों देवता अन्तःकरण में न भूलते हुए बैठें। ये तीनों देविया ऐसी हैं कि जिनकी उपासना हरेक मनुष्य को करनी चाहिए। इन तीनों देवियों के उपासक राष्ट्र में जितने अधिक होंगे उतना राष्ट्र का अधिक अभ्युदय होगा। इसलिए वेद ने तीनों देवियों के लिए हृदय में स्थान होने की प्रेरणा दी है।

सार्वदेशिक विशेषांक के प्रकाशन पर बधाई

सार्वदेशिक का विशेषांक "कल्याण मार्ग का पथिक" नामक अति उत्तम है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की हस्तलिखित सच्ची जीवन घटनाओं को इस रूप में प्रकाशित कर सभा ने अति सराहनीय कार्य किया है। यह अंक अमूल्य रत्न बनगया है। १) रु० तो इस की निछावर मात्र है। इस अंक को देखकर मेरा चित्त बहुत ही प्रसन्न हुआ है। मैं अपनी शिरोमणि सभा को इसके लिये हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूं।

आचार्य श्री अमरसिंह आर्यपथिक

श्री हेतराम जी आर्य मन्त्री जिला आर्यसमाज राजगढ़ ने इस शुभ प्रयास के लिए हार्दिक बधाई भेजी।

श्री प्रो० वेदीराम जी शर्मा एम० ए० जालन्धर श्रद्धानन्द बलिदान अंक तो वास्तव में बड़ा ही उपयोगी और समयानुकूल सिद्ध हुआ।

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सम्पूर्ण छप गया !

सा म वे द

(मूल मन्त्र और आर्य भाषानुवाद सहित)

भाष्यकार

श्री पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

(स्नातक गुरुकुल कांगड़ी)

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार (४०००) पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थी। तब से इसकी भारी माग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है।

यह २८ पौंड सफेद कागज पर कपड़े की जिल्द और मूल्य ४ रुपये है किन्तु दीपावली से दिसम्बर तक ३) रु० में देंगे। भारी संख्या में मंगाइये, पोस्टेज पृथक्।

हिन्दूराष्ट्र को सच्चा मार्ग दिखानेवाली सर्वश्रेष्ठ धर्म-पुस्तक

वैदिक मनुस्मृति

(श्री सत्यकाम जी सिद्धान्त शास्त्री)

हिन्दी टीका सहित—हिन्दू धर्मग्रन्थों में चारों वेदों के पश्चात् एकमात्र प्रामाणिक पुस्तक यही है। यद्यपि वेदों का समझना साधारण जनों के बस में नहीं, पर मनुस्मृति को नागरी पढा हुआ व्यक्ति भी समझ सकता है। ४०८ पृष्ठ, मूल्य ४॥)

कथावाचकों उपदेशकों, ज्ञानी, विद्वानों तथा हर गृहस्थी के लिए

दृष्टान्त महासागर सम्पूर्ण

(श्री सन्तराम सन्त)

इस ग्रन्थ में वैदिक, लौकिक, सामाजिक धार्मिक ऐतिहासिक, राजनैतिक, भक्ति और ज्ञान-वैराग्य आदि सभी विषयों में अच्छे से अच्छे दृष्टान्तों का संकलन किया है। संसार के अनेक महापुरुषों, राजाओं, विद्वानों एवं सिद्धों के अनुभूत तत्वों का इसमें अनोखा समावेश है। पृष्ठ ५६०, सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) ढाई रुपया, डाक व्यय १॥) अलग।

उपदेश मंजरी—स्वामी दयानन्द जी के उपदेश प्रत्येक आर्य-समाजी को अवश्य अध्ययन करने चाहिये। पूना नगर में दिये गये सम्पूर्ण १५ व्याख्यान इसमें दिये गये हैं। मूल्य २॥) रुपये।

संस्कार विधि—इस पुस्तक में गर्भाधान से लेकर १६ संस्कार कहे हैं जो, ब्रह्मचर्य गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास इन चारों आश्रमों में क्रमानुसार करने होते हैं। मूल्य १॥) रुपया डाक खर्च अलग।

आर्य समाज के नेता—आर्यसमाज के उन आठ महान् नेताओं, जिन्होंने आर्य समाज की नींव रख कर हिन्दू जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया किया है। मूल्य ३) रु० डाक खर्च १॥) रुपया।

महर्षि दयानन्द—जिस समय हिन्दू धर्म अन्धकार में था, लोगों में इपोलशंख बहुत बढ गया था उस समय स्वामी दयानन्द जी का जन्म हुआ। शिवरात्रि को महर्षि को सच्चा ज्ञान होना और जनता को सच्चा ज्ञान देना। मू० ३) रु०।

कथा पच्चीसी—सन्तराम सन्त

जिसमें मनुष्य जाति का उद्धार करने के हेतु ही अनेक शास्त्रों में से भारत भूषण दर्शनानन्द जी ने उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद पच्चीस कथाओं का संग्रह किया है हमने उनको और भी संशोधित एवं सरल बनाकर छापा है। मूल्य केवल १॥) डेढ रुपया, डाकव्यय १) रुपया।

स्वाध्याय योग्य दर्शन शास्त्र

हमारे प्राचीन काल के ऋषि-मुनियों ने छः दर्शन शास्त्र लिखे थे जिनका संसार भर के विद्वानों में बड़ा भारी सम्मान है। वे छहों दर्शन शास्त्र हिन्दी भाष्य सहित हमने प्रकाशित किये हैं। जिनको पढ़कर आप प्राचीन इतिहास, संस्कृति, नियम और विज्ञान से परिचित होंगे। पूरा सेट लेने पर २५) की वी० पी० की जावेगी।

१—सांख्य दर्शन—महर्षि कपिल मुनि प्रणीत और स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज द्वारा भाष्य। मू० २) दो रुपया।

२—न्याय दर्शन—महर्षि गौतम प्रणीत व स्वामी दर्शनानन्दजी द्वारा भाष्य। मूल्य ३।) सवा तीन रुपया।

३—वैशेषिक दर्शन—महर्षि कणाद मुनि प्रणीत साइन्स का मूल स्रोत। मूल्य ३॥) साढे तीन रुपया।

४—योग दर्शन—महर्षि पातञ्जलि मुनि प्रणीत तथा महर्षि व्यास मुनि कृत संस्कृत भाष्य। मूल्य ६) रुपया।

५—वेदान्त दर्शन—श्रीमद्-महर्षि वेदव्यास प्रणीत तथा स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज द्वारा भाष्य। मूल्य ४॥) साढे चार रुपया।

६—मीमांसा दर्शन—महर्षि जैमिनी मुनि प्रणीत हिन्दी भाष्य। मूल्य ६) छः रुपया।

हितोपदेश भाषा रामेश्वर प्रशान्त

उस पुत्र से क्या लाभ जिसने अपने कुल का नाम कलंकित किया है ऐसे पुत्र की माता यदि बांझ हो जाय तो उत्तम है' यही भावना पाटिलीपुत्र के राजा सुदर्शन को सदा सताती थी। विद्वान प० विष्णु शर्मा ने राजकुमार को जो शिक्षा एवं नीति की आख्यायिकाएं सुनाई उनको ही विद्वान प० श्री रामेश्वर 'अशान्त' जी ने सरल भाषा में लिखा है। मूल्य ३) तीन रुपया, डाक व्यय १।) अलग।

सत्यार्थप्रकाश—मोटे अक्षरों मे

१—अब तक सत्यार्थ प्रकाश के कई संस्करण प्रकाशित हुए हैं। समय समयपर विभिन्न संशोधकों, प्रूफ रीडरों आदि ने अपनी समझ के अनुसार जो स्थल उन्हें समझ में नहीं आये उनमे हेर फेर जोड़-तोड़ कर दी है।

२—इसकी दूसरी बड़ी विशेषता पैराग्राफों पर क्रमांक दिया जाना है

३—हर पृष्ठ के ऊपर उस पृष्ठ मे आ रहे विषय का उल्लेख।

४—अकारादि क्रम से प्रमाण सूची पुस्तक का साइज २०×२६/४ २०×१३ इंच है पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई क्लाथ बाईंडिंग। मूल्य १५) डाकव्यय अलग।

सार्वदेशिक सभा तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद, कृषि, बिजली, मोटर पशु पालन इण्डस्ट्रीयल डेरीफार्म रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं। बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगा लें।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१२१

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्लीमें प्रकाशित ·१।

२५-१-६ प्रबस प्रीतपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ फोन २७४७७१ माघ शुक्ला २ सवत् २०२२, २३ जनवरी १९६६, दयानन्दाब्द १४१, सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६६

दराबाद धर्म युद्ध के सफल नेता, त्याग और तप के धनी

आर्यसमाज के निर्माताओं में प्रथम

वेद—आज्ञा

मनुष्य-कर्त्तव्य

मेधां मे वरुणो ददातु,
मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां,
धाता ददातु मे स्वाहा॥

यजु० अ० ३२ म० १५

संस्कृत भावार्थः—

मनुष्या यथाऽऽत्मार्थं गुणकर्मस्वभाव सुखञ्चेच्छेयुस्तादृशमेवाऽन्यार्थम्। यथा स्वस्योन्नतये प्रार्थयेयुस्तथा परमेश्वरस्य विदुषाञ्च सकाशादन्येषामपि प्रार्थयेयुर्न केवल प्रार्थनामेवः कुर्युः किं तर्हि सत्याचरणमपि। यदा यदा विदुषां समीप गच्छेयुस्तदा तदा सर्वेषां कल्याणाय प्रश्नोत्तराणि कुर्युः॥

आर्य भाषा भावार्थः—

मनुष्य जैसे अपने लिये गुण कर्म स्वभाव और सुख को चाहे वैसे औरों के लिये भी चाहें। जैसे अपनी उन्नति की चाहना करें वैसे परमेश्वर और विद्वानों के निकट से अन्यों की उन्नति की प्रार्थना करें। केवल प्रार्थना ही न करें किन्तु सत्य आचरण भी करें। जब जब विद्वानों के निकट जावें तब तब सब के कल्याण के लिये प्रश्न और उत्तर किया करें॥१५॥

—महर्षि दयानन्द सरस्वती
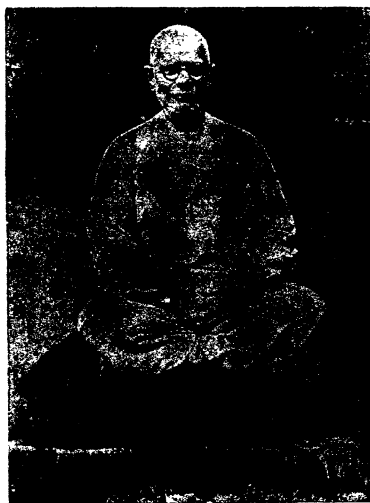
श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

आपका जन्म १०० वर्ष पूर्व बसन्त पचमी के दिन हुआ था।

पाखण्ड की बातें

देखो! तुम्हारे सामने पाखण्ड मत बढते जाते हैं, ईसाई मुसलमान तक होते जाते हैं। तनिक भी तुमसे अपने घर की रक्षा और दूसरों को मिलाना नहीं बन सकता। बनें तो तब जब तुम करना चाहो। जबलों वर्तमान और भविष्यत् मे उन्नतिशील नहीं होते तब लो आर्यावर्त्त और अन्य देशस्थ मनुष्यों की वृद्धि नहीं होती। जब वृद्धि के कारण वेदादिसत्यशास्त्रों का पठन पाठन ब्रह्मचर्यादि आश्रमों के यथावत् अनुष्ठान, सत्योपदेश होते हैं तभी देशोन्नति होती है।

चेत रक्खो! बहुत सी पाखण्ड की बातें तुमको सचमुच दीख पड़ती हैं। जैसे कोई साधु वा दुकानदार पुत्रादि देने की सिद्धियां बतलाता है तब उसके पास बहुत सी स्त्री जाती हैं और हाथ जोडकर पुत्र मागती है और बाबाजी सबको पुत्र होने का आशीर्वाद देता है। उनमें से जिस जिसके पुत्र होता है वह समझती है कि बाबाजी के वचन से हुआ। जब उससे कोई पूछे कि सुअरी, कुत्ती, गधी और कक्कुटी आदि के कच्चे बच्चे किस बाबाजी के वचन से होते हैं तब कुछ भी उत्तर न दे सकेगी।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती

जय-किसान

सम्पादक—रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री
सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

जय-जवान

वर्ष—१
अंक १२

शास्त्र-चर्चा

ये सब निन्दनीय

भीरू राजन्यो ब्राह्मण सर्व भक्ष्यो,
वैश्योऽनीहावान् हीनवर्णोऽलसश्च ।
विद्वाश्चाशीलो वृत्तहीन कुलीन
सत्याद् विभ्रष्टो धार्मिक स्त्री च दुष्टा ।
रागी युक्त, पचमानाऽऽत्महेतो—
मूर्खो वक्ता नृपहीन च राष्ट्रम् ।
एते सर्वे शोच्यता यान्ति राजन् —
यश्चायुक्त स्नेह हीन प्रजासु ॥

डरपोक क्षत्रिय, सर्वभक्षी ब्राह्मण, धनोपार्जन की चेष्टा से रहित अकर्मण्य वैश्य, आलसी शूद्र, उत्तम गुणो से रहित विद्वान्, सदाचार का पालन न करने वाला कुलीन पुरुष, सत्य से भ्रष्ट धार्मिक पुरुष, दुराचारिणी स्त्री विषयासक्त योगी, केवल अपने लिये भोजन बनाने वाला मनुष्य, मूर्ख वक्ता, राजा से रहित राष्ट्र तथा अजितेन्द्रीय होकर प्रजा के प्रति स्नेह न रखने वाला राजा—ये सब-के-सब शोक के योग्य हैं अर्थात् निन्दनीयहैं ।

परेषा यदसूयेत न तत् कुर्यात् स्वय नर ।
यो ह्यसूयुस्तथायुक्त सोऽवहास
नियच्छति ॥

मनुष्य दूसरे के जिस कर्म की निन्दा करे, उसको स्वय भी न करे। जो दूसरे की निन्दा तो करता है, किन्तु स्वय उसी निन्द्य कर्म मे लगा रहता है, वह उपहास का पात्र होता है ।

वेद शास्त्रों का तत्त्व समझो

यो हि वेदे च शास्त्रे च—
ग्रन्थ धारणतत्पर ।
न च ग्रन्थार्थतत्त्वज्ञस्तस्य —
तद्धारण वृथा ॥

जो वेद और शास्त्र के ग्रन्थो को तो याद रखने मे तत्पर है, किन्तु उनके यथार्थ तत्त्व को नही समझता, उनका वह याद रखना व्यर्थ है ।

धर्म धन का संग्रह

धनस्य यस्य राजतो भय न चास्ति—
चोरत ।
मृत च यन्न मुञ्चति समर्जयस्व —
तद् धनम ॥

जिस धन को न तो राजा से भय है और न चोर से ही तथा जो मर जाने पर भी जीव का साथ नही छोडता है उस धर्म-रूपी धन का उपार्जन करो ।

(महाभारत मोक्षधर्मपर्व)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव १८ फरवरी को आ रहा है!

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्य जगत् को बहुत सुन्दर और महान् भेंट प्रस्तुत की जायगी ।

वह भेंट है—महर्षि बोधांक

इसमें महर्षि काल से लेकर अब तक लगभग २०० उन दिवंगत आर्य विद्वानों का सचित्र परिचय होगा जिन्होंने महर्षि के बोध से बोध प्राप्त कर आर्य समाज, आर्य राष्ट्र, आर्यभाषा, आर्य साहित्य आदि के प्रसार में किसी भी प्रकार का योग दान दिया था

२०० चित्रों के सहित इस अंक को

डाक व्यय सहित केवल तीस नए पैसे में देंगे

यह अंक नई पीढ़ी के युवकों को प्रेरणा देगा।

इस अंक की विशेषता का पता तब लगेगा, जब यह प्रकाशित हो जायगा

आप इसे देखते ही यह चर्चा करेंगे कि यह अंक तो १०० नहीं ४०० मंगाना चाहिए था, अब आप जितना भी समझें-आर्डर भेजदें ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

विशेषांक के लिए

बडी सावधानी से सभी सदस्यो को भेजा है किन्तु अनेक बन्धुओ को अब तक भी नही मिला । बीच मे कहा गायब हो गए इस पर हम क्या कहे । आप पोस्ट आफिस से पूछे और हमे भी लिखे । हमारी हार्दिक भावना यह है कि चाहे कार्यालय को हानि उठानी पडे किन्तु अपने सदस्यो को नही । अब पुन छाप रहे हैं जिन्हे नही मिला उन्हे दुबारा भेजेंगे ।

सहयोग चाहिए

सार्वदेशिक साप्ताहिक के प्रकाशन मे हम पूरी शक्ति से जुटे हुए हैं । अब हमे शक्ति चाहिए आपकी । ध्यान रहे आपका सहयोग ही सफलता का साधन है ।

मेरे बाबा जी

ने आर्य समाज की बडी सेवा की थी उनका फोटू भेज दू । क्या खर्च देना होगा । यह एक सज्जन ने पूछा ।

निवेदन है कि आप चित्र भेजे, कुछ खर्च नही पडेगा । हा १००-२०० प्रतिया आप चाहे तो मगा कर स्वजनो मे वितरण करें ।

महर्षि बोधांक

ता० २५ जनवरी से छपने लगेगा आप किन्ही दिवगत आर्य महानुभावो का चित्र छपाना चाहे तो तुरन्त भेज दें ।

— प्रबन्धक

अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज लिखित

कल्याण मार्ग का पथिक पुनः

भारी संख्या में छाप रहे हैं !

कृपया आप अपना आर्डर तुरन्त भेजें

मूल्य वही पोस्टेज सहित १) रुपया होगा।

सात रुपये भेज कर 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' के ग्राहक बनें और 'कल्याण मार्ग का पथिक' इसी में प्राप्त करें ।

सार्वदेशिक दिन-पत्रिका छप गई और हाथों हाथ बिक गई । प्रारम्भ मे कम आर्डर आये, हमने डरकर कम छापी । अब अनेक महानुभावों की निराशा से हमें कष्ट है । —प्रबन्धक

धन भेजें

कृपया सार्वदेशिक का धन मनी-आर्डर से भेजने में शीघ्रता करें ।

— प्रबन्धक

कार्य वदत मनुया

सम्पादकीय

श्री शास्त्री जी की सबसे बड़ी देन

ताशकन्द में श्रीलालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन से सारा देश सन्न रह गया। अबसे कुछ ही मास पूर्व रामलीला मैदान मे ऋषि निर्वाणोत्सव की विशाल सभा मे उन्होने आर्य जनता को सम्बोधित किया था। तब का दृश्य आखो से ओझल नहीं हो रहा है।

गत सितम्बर मे पाकिस्तान के साथ हुए भारत के भीषण युद्ध मे जिस प्रकार उन्होने देश का नेतृत्व किया और परीक्षा की उस घडी के लिए जनता को तैयार किया उसे देखकर सारा संसार स्तब्ध रह गया। आडम्बर हीन, अत्यन्त सादगी का जीवन बिताने वाले, छोटे से कद के इस व्यक्ति में इतनी वज्र दृढ़ता छिपी हुई है, ऐसी किसी को उससे पूर्व कल्पना नहीं थी। उन्होंने दूर-दृष्टि से वक्त की नजाकत को और जनता के मनोभावों को समझा और तदनुकूल आचरण किया। परिणाम यह हुआ कि चन्द्रमा की कलाओं की तरह उनकी लोकप्रियता भी लगातार बढ़ती चली गई।

कई शताब्दियों से भारत की राजनीति एक विचित्र आत्मनिर्मित भूलभुलैयां में पड़ी हुई थी। वह भूल-भुलैयां यह कि हमें केवल आक्रमण से बचाव करना है, कभी भी अपनी ओर से शत्रु पर आक्रमण नहीं करना है। इस भूलभुलैया का ही परिणाम थी गत एक सहस्र वर्ष की दासता। आक्रमण शब्द ही जैसे हमारी राजनीति और युद्धनीति मे से लुप्त हो चुका था। उसी का परिणाम था कि आक्रमणकारी जब अपनी विशाल वाहिनी लेकर हमारी सीमा में घुस आता तब हम चौकन्ने होकर हथियार उठाते। परन्तु जो दुश्मन सैकड़ों मील पार करके हमारे प्रदेश तक बिना किसी अवरोध के बढ़ता चला आया उसने आधी सफलता तो पहले ही प्राप्त कर ली। आक्रमण ही सबसे बड़ी प्रतिरक्षा है और शत्रु की सीमा में घुसकर ही अपनी सीमा की रक्षा होती है युद्ध शास्त्र के इस अविचल नियम को शकारी विक्रमादित्य के बाद मे हम भूल चुके थे। राजनीति मे भी अहिंसा को घुमंडने की वाम प्रक्रिया मे उक्त मानसिक व्यामोह को और बल मिला।

परन्तु लालबहादुर शास्त्री ने कट्टर कांग्रेसी, दृढ़ अहिंसावादी सतत शान्तिवादी होते हुए भी सदियो की उस कलुषित मनोवृत्ति को क्या बदला कि जैसे इतिहास को ही नया

मोड दे दिया। उन्होने स्पष्ट शब्दो मे कहा – "मैत्री के बदले मैत्री, युद्ध के बदले युद्ध, शान्ति के जवाब मे शान्ति और हथियार के जवाब में हथियार।" लाल बहादुर शास्त्री की इस वाणी में ऋषि दयानन्द के "सबके साथ यथायोग्य व्यवहार" करने के ही मन्त्री की गूंज थी। इससे हमारे इस मन्तव्य की और पुष्टि होती है कि ऋषि के बताए मार्ग पर चलने से ही देश का कल्याण हो सकता है।

धर्म की रक्षा के लिए अधर्म का नाश भी उतना ही आवश्यक होता है। बिना खण्डन के मण्डन भी नही हो सकता। साधुओ के परित्राण के लिए दुष्कृतों का विनाश भी अनिवार्य है। जो व्यक्ति दुष्कृतों के विनाश की बिना चिंता किये साधुओ का परित्राण करना चाहता है, वह रामायण और महाभारत की शिक्षाओ की अवहेलना करता है, वैदिक आदेशो का उल्लघन करता है और समस्त ससार के इतिहास को मिथ्या सिद्ध करने का मिथ्या प्रयत्न करता है।

गरीब माता-पिता के पुत्र, निर्धनता मे पले, निर्धनता मे बढे, भारतीय जनता और भारतीयता के प्रतीक, निस्वार्थ, अपने त्याग, तपस्या, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और देशसेवा की भावना से ही देश के सर्वोच्च सम्मानित पद पर प्रतिष्ठित होने वाले जनता के हृदय-सम्राट्, दिवगत श्री लालबहादुर शास्त्री को लोग यों तो अनेक विशेषताओ के कारण, स्मरण रखेंगे, परन्तु हम समझते हैं कि देश को उनकी सबसे बडी देन वही "यथा-योग्य व्यवहार" वाली राजनीति है। हमारी यह भी निश्चित धारणा है कि यह सस्कार श्री शास्त्री ने लाला लाजपतराय के सम्पर्क से प्राप्त किया था, क्योंकि वही उनके राजनीतिक गुरु थे और उन्हीं के दिशा-निर्देशन मे उन्होने राजनीति मे पदार्पण किया था। श्री शास्त्री लाला जी द्वारा सस्थापित लोकसेवक सघ के आजीवन सदस्य थे। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन भी लोकसेवक सघ के ही सदस्य थे। वह लाला जी के ही विचारों की घुट्टी थी जिसके कारण टण्डन जी या शास्त्री जी जैसे व्यक्ति कांग्रेस मे आकर भी अपना स्वतन्त्र चिन्तन कायम रख सके। नहीं तो और कौनसी ऐसी नमक की डली है जो समुद्र में पड़कर घुल नही गई और लालाजी ऋषि दयानन्द के पट्टशिष्य थे, यह किसी को स्मरण कराने की आवश्यकता नही है।

इस प्रकार हम समझते हैं कि दिवगत प्रधानमन्त्री की जो देश को सबसे बडी देन है वह है "यथायोग्य व्यवहार" की सीख, और वह प्रकारान्तर से ऋषि दयानन्द की ही सीख है जिसे श्री शास्त्री ने नये सन्दर्भ मे नये अर्थों से महिमा-मण्डित किया है।

नरहरिविष्णु गाडगिल

श्री नरहरि विष्णु गाडगिल देश के उन मनीषियों में से थे जिन्होंने देश के राजनैतिक और सास्कृतिक क्षेत्र मे समान रूप से अपनी सेवा की स्मरणीय छाप छोडी है। सरदार पटेल के निकट सहयोगी और उनकी विचारधारा के पोषक श्री गाडगिल को कांग्रेस में लोकमान्य

श्रीयुत नरहरि विष्णु गाडगिल,

तिलक की उग्र राष्ट्रवादिता का अनुयायी कहा जा सकता है। वे कुशल सगठन-कर्ता तो थे ही, प्रान्तीय सकीर्णताओं से भी दूर थे। मराठी साहित्य सम्मेलन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन और सस्कृत साहित्य सम्मेलन में विभिन्न पदों पर रह कर उन्होंने जो सेवा की वह इस बात की परिचायक है कि राजनीति के आवर्त में पड कर भी उनका साहित्य और सस्कृति से प्रेम विच्छिन्न नहीं हुआ था। उत्तर भारत मे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के लिए उनका चिर-ऋणी रहेगा। देहावसान के समय भी वे पूना विश्वविद्यालय के तो उपकुलपति ही थे। भौतिक समृद्धि बटोरने के बजाय नि:स्वार्थ भाव से देश सेवा और समाज सेवा की ओर ही उनका विशेष ध्यान था। केन्द्रीय मन्त्री और राज्यपाल के पद तक पहुच कर भी उन्होंने अपनी इस मनोवृत्ति में अन्तर नहीं आने दिया।

यद्यपि वे आर्यसमाजी नहीं थे, फिर भी आर्यसमाज की अनेक गतिविधियो मे उनकी सदा सहानुभूति, और यथासम्भव सहयोग भी रहा। 'सार्वदेशिक' परिवार की ओर से हम दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

पंजाबी सूबे की आड़में (२)

पंजाबी सूबे की माग समस्त पजाबियों की ओर से नहीं है। और तो और, समस्त सिखों की ओर से भी नहीं है। सिखों के भी केवल उस दल की ओर से इसकी मांग की जा रही है जिसे राजनयिक शब्दावलि मे 'सैकालिक-ब्राण्ड के सिख' कहा जा सकता है। जिस प्रकार कूटनीतिज्ञ अंग्रेजो के आशीर्वाद से भारत मे मुस्लिम लीग का जन्म और विकास हुआ था, जिसने अन्तत. देश के विभाजन की मांग कर अपना राष्ट्र-द्रोही रूप सारे ससार के सामने उजागर कर दिया, वही बात अकाली सिखों के साथ भी है। मैकालिक नामक अंग्रेज ने ही उनमे पृथकता के विष-बीज का आरोपण किया और उसी विषबीज के पुष्पित और पल्लवित फल है मा० तारासिंह और सन्त फतहसिंह। यों अन्दर मे ये दोनों भी गुरुद्वारों पर और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी पर अपना नियन्त्रण

(शेष पृष्ठ १५ पर)

राष्ट्र पर भीषण वज्रपात

आर्य सभ्यता के पुजारी के निधन से आर्य जगत् में व्यापक शोक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास ने माननीय श्री गुलजारीलाल जी नन्दा प्रधान मन्त्रीजी को श्री लालबहादुर जी शास्त्री के निधन पर निम्नलिखित शोक सन्देश भेजा है।

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के प्रतीक उच्चकोटि के शासक प्रशस्त राजपुरुष शक्ति के स्रोत स्तम्भ प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुरजी शास्त्री के आकस्मिक असामयिक निधन से समस्त आर्यगण दुखी हैं। अल्पकाल में ही जिन विषम परिस्थितियों का सामना करके गौरवपूर्ण सफलता प्राप्त की है वह चिरस्मरणीय रहेगा तथा भारत के इतिहास में सुवर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। मैं सारे आर्यसमाजों की ओर से तथा अपनी तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। परिवार जनों से समवेदना व्यक्त करता हूं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को चिरन्तन शान्ति प्रदान करे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपाल शालवालों ने माननीय लालबहादुरजी शास्त्री के निधन पर शोक प्रकट करते हुए निम्न लिखित तार राष्ट्रपति महोदय, श्री गुलजारीलाल जी नन्दा तथा मान्य प्रधानमन्त्री जी की पत्नी श्रीमती ललिता शास्त्री जी को भेजा है:—

माननीय लालबहादुर शास्त्री जी प्रधानमन्त्री के निधन से आर्य जगत् स्तब्ध रह गया। भारतीय आकाश पर अन्धकार छा गया। देश की आशाएं धूमिल हो गईं। उनके निधन पर करोड़ों हृदय मूक रुदन कर रहे हैं। वे आड़े समय में देश की नौका के कुशल मांझी बने और उसी पर बलि हो गए। इतना बढ़िया मानव और कुशल प्रशासक देश को मिला परन्तु अल्पकाल में ही वंचित होगया। यह देश और संसार की शान्ति की प्रक्रिया पर करारा आघात है। परमात्मा रक्षा करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक शोक सभा में प्रस्ताव पारित किया जिसमें दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और श्री शास्त्री जी के परिवार के प्रति सम्वेदना का प्रकाश किया गया।

इसके उपरान्त कार्यालय बन्द कर दिया गया।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

दिल्ली-१५ जनवरी आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान में आर्य समाज दीवान हाल में आयोजित सार्वजनिक शोक सभा में आज भारत के यशस्वी प्रधान-मन्त्री तथा आर्य संस्कृति के महान् पुजारी श्री लाल बहादुर जी शास्त्री के परदेश में आकस्मिक एवं हृदय विदारक निधन पर भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। सभा की अध्यक्षता श्री ला० हरिवंश जी ने की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ला० राम गोपाल जी ने हार्दिक सम्वेदना प्रकट करते हुए कहा कि आचार्य चाणक्य के पश्चात् भारत को एक तपस्वी-त्यागी प्रधान-मन्त्री मिला था, पर राष्ट्र का दुर्भाग्य,ताशकन्द समझौते के बोझ ने वह हम से छीन लिया। सन् ३६ से शास्त्री जी किसी न किसी ऊंचे पद पर आसीन होकर जिस तत्परता व ईमानदारी से देश की सेवा कर रहे थे, उस का उदाहरण आज मिलना कठिन है। उन के मन में आर्य धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी, वे भारतीय मान मर्यादा से ओत-प्रोत थे और एक दृढ़-प्रतिज्ञ राजनीतिज्ञ थे। उनकी सब से बड़ी विशेषता यह थी कि वे एक गुट के नहीं, भारत भर के प्रिय थे, विरोधियों को भी साथ लेकर चलते थे। आज भारत-मां की गोद खाली हो गई है। प्रभु करें कि उस की कोख से अनेक लाल बहादुर और पैदा हों।

आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश 'तलवार' ने शोक-प्रस्ताव प्रस्तुत किया जो सर्वसम्मति से पारित हुआ। उस में कहा गया कि शास्त्री जी भारतीय राष्ट्र के वास्तविक कर्णधार थे और जनता के सच्चे प्रतिनिधि। एक निर्धन घराने में उत्पन्न होकर वे देश के सब से ऊंचे आसन पर आरूढ़ हुए और शीघ्र ही जनता के हृदय-सम्राट् बन गए।

श्री बी० पी० जोशी, श्री देवराज चड्ढा, श्रीमती सावित्री देवी और श्री महाशय कृष्ण चन्द्र जी ने भी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

उपस्थित आर्य नर-नारी ने खड़े होकर शास्त्री जी की आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की और देश-हित के उन के कार्यों की पूर्ति के लिए तन, मन, धन न्यौछावर करने का प्रण लिया।

आ० स० मन्दिर काँकरिया रोड, अहमदाबाद

ने प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर जी शास्त्री के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया है।

आर्य समाज इटारसी

ने प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री के निधन पर शोक प्रकट किया और आर्य वाचनालय बन्द रखा गया।

आ० स० जालना (महाराष्ट्र)

१२-१-६६ को एक प्रस्ताव द्वारा प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया है।

दूसरे प्रस्ताव में महाराष्ट्र केसरी मा० श्री गाडगिल महोदय के निधन पर शोक प्रकट किया।

आर्य समाज बरेली कैन्ट

एक प्रस्ताव द्वारा प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया।

आ० स० गुंजोटी

आर्य समाज, आर्य वीर दल और आर्य वीरांगना दल की सम्मिलित सभा में प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

आर्य वीर दल गाजियाबाद

की ओर से एक प्रस्ताव द्वारा श्री शास्त्री जी के निधन पर संवेदना प्रकट की है।

आर्य अनाथालय दिल्ली

के ६०० बालक बालिकाओं ने माननीय प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी की आकस्मिक मृत्यु पर शोक प्रकट किया है।

श्रीयुत पं० गंगाप्रसाद जी रि० चीफ जज चल बसे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी शालवाले ने अपने प्रेस वक्तव्य में श्री प० गंगाप्रसाद जी एम० ए० रि० चीफ जज टिहरी के देहावसान की सूचना देते हुए प्रेस को निम्न प्रेस वक्तव्य दिया है —

आर्य जगत में यह समाचार बड़े दुःख के साथ सुना जायगा कि सार्वदेशिक सभा के भूतपूर्व प्रधान श्रीयुत प० गंगाप्रसाद जी रि० चीफ जज टिहरी का १३ जनवरी ६६ को हरिद्वार में देहान्त होगया।

श्री पण्डित जी मुख्यतः आर्य समाज के उच्च कोटि के अंग्रेजी के लेखक थे। उनका फाउन्टेन हैड आव् रिलीजन नामक ग्रन्थ उन्हें अमर रखेगा।

प्रारम्भ में वे मेरठ कालेज में अंग्रेजी के प्रोफेसर रहे। उसके बाद वर्षों तक डिप्टी कलक्टर रहे। लगभग ७-८ वर्ष तक टिहरी राज्य में मुख्य न्यायाधीश रहे।

विद्यार्थी जीवन से ही वे आर्य समाज की सेवा में संलग्न रहे।
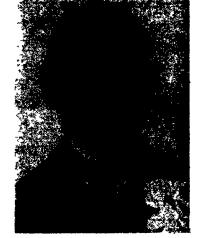
उन्होंने अनेक उच्च पदों पर कार्य किया। वे गत ८-१० वर्ष से अपने पुत्रों के पास रहते थे। १९६० में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने मथुरा की दयानन्द दीक्षा शताब्दी के पुण्य अवसर पर उनकी स्मृति में एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करके उन्हें सम्मानित किया था।

चीफ जज साहब ने अपने बच्चों के अन्तर्जातीय विवाह करके एक अच्छा आदर्श प्रस्तुत किया था।

उनके निधन से आर्य समाज एक मनस्वी विद्वान् प्रौढ लेखक तथा अनुभवी एवं पुराने नेता से वंचित हो गया जिसने उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया था।

सामयिक-चर्चा

श्री शास्त्री जी

प्रधान मन्त्री माननीय श्री लाल बहादुर जी शास्त्री का निधन देश और संसार की महती क्षति है। उन्होंने देश का सही दिशा में मार्ग-दर्शन करके लोगो का प्रेम और विश्वास प्राप्त कर लिया था। भारत-पाक सशस्त्र सघर्ष में देश का दृढता पूर्वक उचित नेतृत्व करके देश के गौरव को बढ़ा कर और सेना की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुन. कायम करके वे देश और ससार के लोगों की दृष्टि में बहुत ऊंचा उठ गए थे। संसार के कोने २ में उनकी मृत्यु पर जिस गम्भीरता और व्यापकता से शोक मनाया गया है वह उनकी लोक प्रियता का सूचक है यदि यह कह दिया जाय तो इसमे अत्युक्ति न होगी। वस्तुत उन्होंने इतिहास को एक अच्छा मोड़ दिया था।

श्री शास्त्री जी एक निर्धन परिवार मे जन्मे सदैव निर्धनता से जूझते रहे और अन्त मे सम्पत्ति धन और जायदाद आदि के सासारिक वैभव से विहीन रहकर ही विदा हो गए। देश के प्रधान मन्त्री के उच्चतम राजनैतिक पद पर पहुंच जाने वाले साधारण एव निर्धन व्यक्ति के विषय में यह बात साधारण नही है। चरित्र के धनी समाज सेवा के दृढ व्रती और सादा जीवन और उच्च विचार के आदर्श से अनुप्राणित व्यक्ति ही ऐसा भव्य उदाहरण प्रस्तुत किया करते हैं। कृतज्ञ देश वासियों ने उनके परिवार के लिए १४००) मासिक का अनुदान देने का निर्णय करके उनकी ईमानदारी का सम्मान किया है यह उचित ही है।

प्रजातन्त्र में छोटे से छोटे व्यक्ति को ऊंचा उठाने का अवसर प्राप्त रहता है। यह सत्य श्री शास्त्री जी के उदाहरण से एक वार पुन प्रतिष्ठित हो गया है। भारत में वही नेता सबके सम्मान का पात्र बन सकता है जो जन-साधारण की भावनाओं एव आकांक्षाओं का प्रतीक हो, जिस का नेतृत्व दृढ़ एव जीवन शुद्ध और सादा हो। और जो सिद्धांतों की बलि न चढाने मे अडिग हो।

श्री शास्त्री जी का सार्वजनिक जीवन प्रातः स्मरणीय श्री लाला लाजपतराय जी के मार्ग-दर्शन मे हुआ जो स्वय आर्य समाज की देन थे। इस प्रकार उनके जीवन पर प्रारम्भिक छाप आर्य समाज की पड़ी और बाद मे महात्मा गाधी के सम्पर्क में आने और रहने से उनकी सार्वजनिक जीवन की शुद्धता न केवल बनी ही रही अपितु निखरती चली गई और अन्त तक कायम रही। स्वभाव की मधुरता वेष भूषा की सादगी और जीवन की पवित्रता, कर्मठता कार्य कुशलता देश-सेवा की लगन और उसी मे अपने को भुलाए रखने आदि २ के कारण वे मित्र और विरोधी सभी के विश्वास-भाजन और आकर्षण का कारण बने रहे।

जब प्रधान मन्त्री बनाए गए तो लोगो की धारणा थी कि यह छोटे कद का व्यक्ति पहाड को उठा न सकेगा परन्तु थोड़े से काल मे ही लोगों की धारणा बदल गई और भारत पाक सघर्ष के काल में वह छोटा सा व्यक्ति इतना ऊंचा उठा कि इसने पहाड़ को ही छू लिया। श्री शास्त्री जी इस बात से बेखबर रहे कि लोगों की दृष्टि में वे कितना ऊंचा उठे हुए थे। यही बात उनकी उच्चता की सूचक है और यही सदैव उन्हें पीढी दर पीढी ऊंचा उठाए रखेंगी।

श्री शास्त्री जी भारत-पाक सघर्ष को टालने मे दूर तक गए। जब पानी सिर से उतर गया तो शक्ति का उत्तर शक्ति से देने के लिए विवश हो गए। शान्ति की खोज मे ताशकन्द गए। वहां वे सफल हुए या असफल यह दूसरी बात है परन्तु उनकी शान्ति प्रियता एव उनकी खोज की उत्सुकता पर सन्देह नही किया जा सकता। उसकी छाप समस्त विश्व पर पड़ी है।

उन्होंने कुछ दिन हुए रामलीला मैदान मे आयोजित एक सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए अन्त में कहा था 'हम रहें या न रहें पर हमारा झण्डा सदा ऊंचा रहे।' यह उद्बोधन इतनी जल्दी मूर्त रूप धारण करेगा-यह किसको पता था। शास्त्री जी अब नहीं रहे परन्तु देश वासियो को देश के झंडे को सदैव ऊंचा रखना है चाहे इसके लिए बड़े से बड़ा मूल्य ही क्यों न चुकाना पड़े।

श्री पं० गंगा प्रसाद जी

जन्म सवत् १९२८ वि० निधन २०२२

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान एव सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री प० गगाप्रसाद जी रि० चीफ जज के निधन का समाचार देते हुए बडा दुःख होता है। श्री पडित जी की मृत्यु के समय आयु लगभग ९५ वर्ष की थी। उनकी मृत्यु से आर्यसमाज पुरानी पीढी और स्वर्णकाल के एक महान् आर्य और ज्योति-स्तम्भ से वचित हो गया है।

श्री प० जी मेरठ के निवासी थे। मेरठ मे शिक्षा समाप्त कर आगरा पढने गए और एम० ए० की डिग्री प्राप्त की। आगरा कालेज मे ही वे आर्यसमाज के सम्पर्क मे आए और डिबेटिंग क्लब आदि की स्थापना की। एम० ए० पास कर लेने पर मेरठ कालेज में अंग्रेजी के प्राध्यापक नियुक्त हो गए इसके बाद डिपुटी कलक्टर बन प्रान्त के विभिन्न स्थानों मे कार्य करते हुए रुडकी पहुंचे। १८-९-१९१८ को कटारपुर में गोवध को लेकर हिन्दू-मुस्लिम झगडा हुआ और सरकार ने इस सम्बन्ध मे उन पर दोषा-रोपण किए। दोषो से मुक्त हो सर्विस छोडकर गुरुकुल वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता बन कार्य करने लगे। कुछ काल बाद टिहरी (गढवाल) राज्य के चीफ जज नियुक्त हुए। टिहरी में आर्यसमाज का विशेष कार्य किया वहा के कार्य के निमित्त सार्वदेशिक सभा में २०००) की स्थिर-निधि कायम की। १९३७ में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की स्वर्ण जयन्ती मेरठ में मनाई गई थी। श्री पंडित जी उसके स्वागताध्यक्ष रहे। सन् ४३ से ४५ तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। १९६० मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने दयानन्द दीक्षा शताब्दी के पुण्य अवसर पर उनकी अमूल्य सेवाओं के आदर स्वरूप मथुरा में उनका सार्वजनिक अभिनन्दन करके अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया।

प० जी वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ और मुख्यतः अंग्रेजी के प्रौढ लेखक थे। उनकी अत्यधिक लोकप्रिय पुस्तक 'फाउन्टेन हैड आव रिलीजन' आर्य-समाज के लिए विशिष्टतम देन है जिसके साथ वे अमर रहेगे। इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद धर्म का आदिस्रोत' नाम से हुआ था जिसके अब तक अनेक सस्करण छप चुके हैं। इसके अतिरिक्त उनकी अनेक छोटी-छोटी पुस्तकें भी विद्यमान है। श्री पडित जी अंग्रेजी भाषा मे प्राय. वैदिक मैगजीन मे लिखा करते थे। वैदिक मैगजीन मे फाउन्टेन हैड के प्राय. सभी अश छप चुके थे। उन्ही लेखों का यह सग्रह है। स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज आर्य समाज के वाङ्मय की विशिष्ट सेवा का श्रेय जिन इनेगिने महानुभावो को दिया करते थे उनमें स्व० श्री प० शिवशकर जी काव्यतीर्थ तथा प० गगाप्रसाद जी भी सम्मिलित थे।

श्री पं० जी ने अपने बच्चों के अन्तर्जातीय विवाह करके आर्यसमाज के एक आदर्श को क्रियात्मक रूप देने का यश भी प्राप्त किया था।

उनका जीवन बडा नियमित था। २४-२५ वर्ष की आयु में क्षय रोग से आक्रान्त हुए शरीर का ९५ वर्ष की लम्बी आयु तक चलते रहना साधारण बात न थी। उनका लम्बा जीवन आर्यसमाज के लिए देन बना रहा।

वे जहा भी जिस सरकारी पद पर रहे आर्य समाज की सेवा करते रहे। उन पर आर्य समाज को गर्व रहा।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिजनों को धैर्य प्रदान करें।

श्री नरहरि विष्णु गाडगिल

जिस समय देश प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर श्री शास्त्री के निधन से आकुल-व्याकुल और शोकमग्न था उसी समय अर्थात् १२ जनवरी को पूना मे श्रीयुत नरहरि विष्णु गाडगिल का देहावसान हुआ और देश के दुर्भाग्य की काली रेखा को और भी अधिक गहरा बना गया।

श्रीयुत गाडगिल महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध कांग्रेस नेता और पुरानी पीढी के सार्वजनिक कार्यकर्त्ता थे। वे उन चुने हुए राजनैतिक लोककर्मियों मे से थे जिन्होंने १९२०-२१ में महात्मा गाधी के आह्वान पर देश-सेवा का व्रत लिया था। कालान्तर मे महाराष्ट्र के सार्वजनिक जीवन मे वे चमक उठे और महाराष्ट्र को अनेक सुयोग्य जन सेवक प्रदान करने का श्रेय प्राप्त किया जिनमे से कुछ महाराष्ट्र राज्य में तथा देश के अन्य भागो मे आज

(शेष पृष्ठ १३ पर)

चाणक्य की युद्धनीति

श्री पं० ब्रह्मदत्त जी शर्मा

भारत की राजनीति मे चाणक्य का बहुत बड़ा स्थान है। उन्होंने अपने से पूर्व प्रणेता मनु, बृहस्पति, भरद्वाज, शुक्र आदि के मतों का जहां-तहां उल्लेख किया है। उन सबकी राजनीति, अर्थनीति और युद्धनीति का समन्वय बड़ी प्रौढता से किया है। पर युद्ध और अर्थनीति के वे परमाचार्य माने गये हैं। शतसहस्रों छोटे-छोटे गणराज्यों को एकत्र कर उन्होंने विशाल भारतीय राष्ट्र को जन्म दिया। उन दिनों तक्षशिला के राजा अम्भीक, शक्तिशाली पर्वतक और मगध के राजा महानन्द तीनों की आपस मे प्रतिस्पर्धा थी। एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिए तत्पर इन सबको एक-एक कर के नष्ट करने के लिए सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया। चाणक्य ने यह ताड़ लिया। उन्होंने पहले पर्वतक के हाथो भेद-नीति से काम ले सिकन्दर की खासी दुर्गति करायी। फिर अम्भीक को युद्ध-नीति का अवलम्ब ले नीचा दिखाया।

महानन्द बड़ा सम्पन्न और ऐश्वर्यशाली था, परन्तु उद्धत और प्रजा-पीड़क। चाणक्य ने पहले तो उसके महामंत्री सुबुद्धि शर्मा से, जो राक्षस मंत्री नाम से प्रसिद्ध हैं, ठीक रास्ते पर उसको लाने के लिए अनुरोध किया। पर जब सफलता न मिली, तो इन सबको ठिकाने लगाने के लिए, एक नये राजा चन्द्रगुप्त को मैदान मे ला खड़ा किया। युद्धनीति के परम पण्डित चाणक्य के सामने न विदेशी और न प्रान्तीय दृष्टि से देखने वाले राजा ठहर सके।

चाणक्य ने सर्वोपरि युद्धनीति को माना है। उनका मत था कि युद्ध डट कर करना चाहिए। शत्रु जब तक हथियार न डाल दे और मुख में तिनका न ले, सारी युद्धसामग्री समर्पित न कर दे, तब तक उसे मारता ही रहे। यह न समझे कि अब यह हीनबल हैं अतएव दया का पात्र है। उन्होंने कहा है

"हीयमानेन संधिं न कुर्वीत।"

अर्थात् नीतिमान बलवान राष्ट्र के लिए यह कदापि उचित नहीं है कि वह पापी निर्दल शत्रु को संग्राम भूमि में उसे बिना मिटाये, उसकी मीठी बातों में आकर संधि करे। उसे भविष्य में शक्तिमान् बनकर, शत्रुता करते रहने के लिए जीवित न रहने दे, क्योंकि शत्रु को जीवित रहते का अवसर देना राजनीतिक मौत रूपी भयकर प्रमाद है तेजस्वी सर्वथा रहना चाहिए, कल्याण इसी में है। क्यों?

"तेजो हि सन्धानहेतुस्तदर्थानाम्॥"

कोष तथा दण्ड देने की योग्यता तेज कहलाता है। धन भडार कोष कहलाता है। दमन तथा सेना ये ही दो दण्ड के भेद हैं। दूसरे के किये अधिक्षेप या अपमान को न सहना तथा इस असहन में प्राणोत्सर्ग तक कर देना तेज है। चाणक्य का अभिप्राय यह है कि चिर काल तक निष्प्रभ होकर जीने की अपेक्षा ज्वालमाला के साथ जीना ही शोभा की बात है; क्योंकि अतुल पराक्रमी प्राणों की परवाह न कर शत्रु को जब दबोच देते हैं, तो युद्ध सामग्री उनके हाथ स्वतः आ जाती है। यह धन प्राप्ति तेज दिखाने से ही आती है।

चाणक्य का मत था कि यदि शत्रु आततायी हो तो उसे अधिक सेना लेकर नष्ट करे। आततायी उसे कहते हैं, जो गाव जला दे, बच्चों को मार दे, स्त्रियों का अपहरण करे।

'गजपाद विग्रह मिव बलवद् विग्रह.॥'

शत्रु का दमन करने के लिए उससे अधिक शक्तिशाली बनकर अर्थात् उसे हाथी के पैर के नीचे कुचल डालने जैसी उससे कई गुनी शक्ति एकत्र करने के पश्चात् ही उससे युद्ध ठाने। उत्कृष्ट युद्धनीति यही है। सदा शत्रु बुद्धि रखने वाले, का दमन करना ही अचूक उपाय है।

कई बार ऐसे प्रसग भी आ जाते हैं कि समान बली से लड़ना उचित नहीं होता, या शत्रु अधिक बलवान है, तब क्या करे? चाणक्य कहते हैं कि तब बुद्धि बल का उपयोग करे।

"एक हन्यान्न वा हन्यात्, इषुर्मुक्तो धनुष्मता। (बुद्धिर्बुद्धिमतोत्सृष्टा, हन्ति राष्ट्रं स नायकम्॥"

अर्थात् धनुषधारी का छोड़ा एक बाण अपने लक्ष्य को मार सके या न मार सके, परन्तु बुद्धिमानों की प्रयुक्त बुद्धि नायक या राजा समेत शत्रु राष्ट्र का ध्वंस कर डालती है इसी तरह उन्होंने स्वय नन्द आदि राजाओ का नाम मिटा दिया था।

'अरि प्रयत्न मभि-समीक्षेत?॥'

अर्थात् शत्रुओं के प्रयत्नों, चेष्टाओं उद्यमों, राज्यलाभों परराष्ट्रों से की हुई उनकी संधियों आदि को अपने गुप्तचरों द्वारा ठीक-ठीक जानता रहे। आत्मरक्षा में पूरी सावधानी का व्यवहार करे। वैरियों की गतिविधियो का चौकन्ना रहने पर ही पता चल सकता है। यदि शत्रु चैन न लेने दे, तो मित्रता किससे करे? चाणक्य का अभिमत है

'शक्तिहीनो बलवन्तमाश्रयेत्। विशेषेण धार्मिकम्।'

अर्थात् यदि साधनों की कमी हो तो राजा किसी ऐसे राष्ट्र से सहायता ले जिससे उसकी सेना के पास शस्त्रों की कमी न रहे तथा उसे इच्छित धन भी मिले। पर इस बात का अवश्य ध्यान रखे कि वह धार्मिक हो, अपने वचनों को पूरा करे और एवज में देश का कुछ हिस्सा न माग बैठे। यह न करने पर भी, उसकी सहायता प्राप्त होने पर सावधानी रखे। कैसे?

'अग्निवत् राजानम् आश्रयेत॥'

अर्थात् किसी राजा से सहायता का सबध जोड़ने पर उसकी ओर से अग्नि के सबध के समान, उसे अपनी हानि न करने देने के लिए सावधान हो व्यवहार करे। प्रयोजन यह कि उससे इतना न घुलमिल जाये कि वह जब चाहे, विश्वासघात कर गला घोटने को उतारू हो जाय। जैसे आग मे जल मरना आग का दुरुपयोग है। परन्तु उसकी दाहिका शक्ति को आत्मरक्षा का साधन बना लेना, जाड़े मे आग सैकने के समान, सदुपयोग है। अनेक युद्धों का प्रसग आने पर या एक शत्रु से ही युद्ध छिड़ने पर राजद्रोही सगठनों का विनाश या अन्त कर दे—

'द्वयोरपीर्ष्यतो द्वैधी भावं कुर्वीत।'

अर्थात् राष्ट्र के ऐश्वर्य से, उसकी समुन्नति से ईर्ष्या रखने वाले विरोध के लिए ही सम्मिलित होने वाले नेताओं की कौन कहे, दो व्यक्तियों तक में अपने कूट प्रयोगों से पारस्परिक मनमुटाव पैदा कर उन ईर्ष्यालुओं की महत्वाकांक्षा को दबा ही न दे, उनके अस्तित्व को ही खत्म कर दे। विरोधी अपना दल ही न बना सके, ऐसा प्रयत्न करें।

सेना पर पूर्ण नियन्त्रण रखने के लिए युद्धमन्त्री कैसा हो, इस बारे में कहा गया है—

'मानी प्रतिपत्तिमान्मतमद्वितीयं मन्त्रिणमुत्पादयेत्॥'

अर्थात् खुद अपनी सूझबूझ रखने वाले, मानी, उन्नतचेता, विचारशील, यशस्वी और राष्ट्र का अभिमान रखने वाले, मन्त्रि-लक्षणों से पूर्ण व्यक्ति को, जो सद्गुणी और स्वराष्ट्र-वासी हो, युद्धमन्त्री का पद दे। प्रधान को चाहिए कि प्रधानमन्त्री के अतिरिक्त, अन्य मत्रियो से मत्रणा करने के अवसर पर उन्हें कल्पित घटनाएं बताकर इस प्रकार सम्मति लिया करे कि ऐसा हो तो क्या करना चाहिए। उस समय जो दत्तचित्त हो और जागरूकता से उत्तर दे, वही युद्धमंत्री होने का अधिकारी है। प्रयोजन यह कि राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री और युद्धमन्त्री ही युद्धस्थिति मे करने या कुछ कहने का उत्तरदायित्व सम्हाले। साथ ही 'श्रुतवन्त, उपधाशुद्ध युद्धमन्त्रिण कुर्यात्' तर्कशास्त्र, दण्डनीति, वार्ता आदि विद्याओं में पारगत, लोभरहित व्यक्ति को ही युद्धमत्री बनाना चाहिए। इसी प्रकार—

'सर्वद्वारेभ्यो युद्धमन्त्रोरक्षितव्यः।'

अर्थात् कोई भी, यहा तक कि लड़ने वाले भी आज्ञा से पूर्व युद्ध का मन्त्र या आदेश न जान सकें, इस प्रकार का पूरा प्रयत्न करे।

चाणक्य पक्के राष्ट्रवादी थे। सारे भारत को एक सूत्र में पिरोकर उन्होंने सर्वत्र राष्ट्रीयता का उपदेश दिया। अपने युद्ध-प्रयत्नों में सफलता प्राप्त कर, जब वे चन्द्रगुप्त को भारत का अधीश्वर बना चुके, तो उन्होंने प्रधानमन्त्री पद छोड दिया और सुबुद्धि शर्मा उपनाम राक्षस को विनयपूर्वक उस पद पर बैठाया इसलिए कि शत्रु सहार में ये सज्जन भीषण पराक्रमी थे, साथ ही उनका डीलडौल भी बड़ा प्रभावशाली था। बिना दण्ड के राज्य शासन चल ही नहीं सकता। इन दोनों की यही मान्यता थी। राष्ट्रद्वेषियों को प्राण-दण्ड देने का चाणक्य ने कई बार उल्लेख किया है। वैसे चाणक्य का अपना जीवन बड़ा त्यागमय रहा। एक कुटी, बैठने को कुशासन, हवन के लिए समिधाएं और छात्रों को राजनीति पढ़ाना। परन्तु राष्ट्र सबल रहे, इसके लिए युद्ध उनका नारा था। दण्ड राजधर्म है। उनका यह कथन कितना सही है कि—

'सर्वो दण्डजितो लोको, दुर्लभो हि शुचिर्नरः।'

(शेष पृष्ठ १५ पर)

दृढ़-प्रतिज्ञ आर्य नरेश

श्री सोहनलाल जी शारदा, आर्यसमाज शाहपुरा

जब हर एक मुसलमान व ईसाई अपने अपने प्रार्थना गृह मस्जिद व गिर्जा में जाकर प्रार्थना कर सकते हैं तो मैं भी मेरे प्रार्थना गृह आर्य-समाज में प्रार्थना करने याने सध्या हवन करने निमित्त जा सकता हूं।

यह था प्रत्युत्तर और वह भी तब दिया गया था कि जब आर्यसमाजी अग्नि परीक्षा में गुजर रहे थे। पटियाला पंजाब आदि कई स्थानों पर आर्यों को विविध प्रकार की यन्त्रणायें अंग्रेज शासकों द्वारा दी जारही थी। तब दृढ़ प्रतिज्ञ आर्य नरेश राजाधिराज सर नाहरसिंह जी K. C. I. E ने रियासतों पर निरक्षक पोलिटिकल एजन्ट को दिया था।

यही नहीं, जब महर्षि के चरणों में बैठ कर श्री राजाधिराज मनुस्मृति पढ़ते थे, तब यह श्लोक पढ़ा कि 'क्षत्रियस्य परोधर्मः प्रजानामेव पालनम्।' तो वे इस पर इतने प्रभावित हुए कि कहीं मेरी आगे आने वाली पीढ़ी कर्त्तव्य च्युत न हो जाय—अपने सूर्य वंशी राज्य चिह्न, झण्डे एवं विशाल भवन के प्रमुख द्वार तथा नगर के प्रमुख द्वार एव प्रत्येक लेखन पत्र के उपर के हिस्से में जिस प्रकार कि आज अशोक चिह्न के नीचे 'सत्यमेव जयते' शब्द अंकित हैं महर्षि के आदेशानुसार 'क्षत्रियस्य परोधर्मः प्रजानामेव पालनम्' यह श्लोकांश लिखा गया जो अब तक विद्यमान है।

अविद्या का नाश विद्या की वृद्धि में तो जो कार्य उस समय महर्षि भक्त इस नरेश ने किया उतना कार्य हमारी यह वर्तमान सरकार कर भी सकेगी या नहीं इसमें हमें संदेह ही है। क्योंकि उनके समय में राज्यादेश था कि निःशुल्क शिक्षा दी जाय। गरीब विद्यार्थियों को पुस्तकें वस्त्र भी निःशुल्क दिये जाते थे। जब विद्यार्थी आगे नगर से बाहर परीक्षा देने जाते थे तब उनका पूरा खर्च राज्य कोष उठाता था। आगे पढ़ने वालों को भी पूरा खर्च सम्मान के साथ दिया जाता था। परीक्षा में उत्तीर्ण प्रत्येक छात्र को पारितोषिक वर्ष के अन्त में स्वयं राजाधिराज विद्यालय में पधार कर अपने हस्त से प्रदान किया करते थे। कितना प्रेम विद्या प्रसारण हेतु था—इस महर्षि भक्त आर्य नरेश का।

वेद प्रचार हेतु एक विशेष निधि स्थापित की जाकर एक शिला लेख लिख कर यह घोषणा की गई कि मेरे बाद मेरी पीढ़ी में कोई भी इस धन को निजी व रियासत के काम न लेकर इसनिधि को ब्रह्म छात्रालय के विद्यार्थियों एवं कर्म काण्ड सीखने वालों को पारितोषिक व पुस्तक तथा आवास प्रवास में खर्च किया जावेगा।

यह थी उनकी वेद प्रचार में निष्ठा।

खेद के साथ लिखना पड़ता है कि राजस्थान बनने के बाद जब सब रियासती कोष पर वर्तमान सरकार का अधिकार हो गया तब हमारे प्रमाद वश उक्त राशी को हमने योंही छोड़ दिया, अन्यथा इस राशी से वेद प्रचार कार्य कुछ न कुछ आगे बढ़ता ही रहता।

महर्षि जब शाहपुरा विराज रहे थे तब राजाधिराज ने यह इच्छा प्रकट की कि मैं तो आपके सत्संग से कृत कृत्य हुआ ही हूं। मगर अन्यों को किस प्रकार करूं। ऐसा उपाय बतलाइये कि जिससे वैदिक धर्मानुयाई अधिकाधिक संख्या में हो जाय।

कहते हैं कि महर्षि ने एक संक्षिप्त पाठ विधि राजाधिराज को बतलाई और आदेश दिया कि पाठ्य पुस्तकों के साथ-साथ इन्हें भी पाठ शालाओं में पढाया जाय। महर्षि ने कहा था के प्रथम कक्षा में आर्य समाज के १० नियम कण्ठस्थ करायें जाय। दूसरी कक्षा मे पञ्चमहायज्ञ विधिस्य सध्या एव आर्योद्देश्य रत्नमाला तथा व्यवहारभानु तीसरी कक्षा में फिर चौथी कक्षा में हवन के मन्त्र ८ स्वस्ति वाचन, शान्ति प्रकरण यज्ञ करने की विधि कक्षा ५ व उससे आगे सत्यार्थ प्रकाश के २ से १० समुल्लास तक शिक्षा दी जाय। बाद में चौथी कक्षा में लाला जगन्नाथ जी मुरादाबाद की लिखी सत्यासत्य निर्णय व महर्षि का बाल जीवन वृत्त भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर दिया गया था। यह पद्धति-कहते हैं कि १८८३ से ही लागू हो गई थी और अब तक स्वतंत्र भारत से पूर्व अर्थात् १९४८ तक जब तक रियासत का विलीनीकरण नहीं हुआ-तब तक पूरे ६५ वर्ष तक चलती रही। इस विधि को चलाने में नरेश को कितनी तात्कालीन ब्रिटिश हकूमत से टक्कर लेनी पडी होगी यह तो वही दृढ व्रती नरेश ही जाने। मगर हम यह पूछ सकते हैं कि आज महर्षि के नाम से जो विद्यालय चल रहे हैं आर्य समाजों द्वारा उनमें मूलतः महर्षि के सिद्धान्तों का क्या इस प्रकार प्रचार किया जारहा है। यदि नहीं तो हमें अवश्य ही वेदारम्भ व सत्यार्थ प्रकाश की पाठ विधि को न भी अपना सके तो भी उपरोक्त पाठ्यक्रम को तो अवश्य अपनाना होगा। यही महर्षि की उत्कट अभिलाषा थी। और उनकी इस अभिलाषा को पूर्ण करके दिखलाया दृढ़ प्रतिज्ञ आर्यनरेश राजाधिराज नाहरसिंह और उनके वंशजो ने। अब हमें वैदिकधर्म प्रचार हेतु उपर्युक्त पाठ्यक्रम से प्रेरणा लेकर दृढ़ प्रतिज्ञ शाहपुरा नरेश की तरह कुछ करना ही चाहिए।

महाराजाधिराज श्री नाहरसिंह जी वर्मा

जृम्भते सार्वदेशिकः

श्री प० रवीन्द्र मिश्र जी, आर्यसमाज बम्बई

ग्रामे देशे विदेशेच, पथ्येषु प्रतिवीथिषु।
वेदानां हि प्रचाराय, जृम्भते सार्वदेशिक.॥

+ + +

ऋषि सम्वन्धिभिर्गद्यै पद्यै र्गीतै समन्वित।
साप्ताहिक सचित्रोऽय-ञ्जृम्भते सार्वदेशिकः॥

+ + +

ऋषिभिर्दर्शित मार्गं पवित्रं व्यस्मरञ्जनाः।
तदुद्धर्तुं म्पुनर्लोके जृम्भते सार्वदेशिकः॥

+ + +

भारत भारत भूयाद् भव्यैर्भावैर्विभूषितम्।
एतदुद्देश्य मादाय जृम्भते सार्वदेशिकः॥

+ + +

समाजेद्वेषरागादि दुर्गुणाये समागताः।
तानुन्मूलितुं मूलाज् जृम्भते सार्वदेशिक॥

+ + +

लोकेषु पुनरार्याणाम् पवित्राचरणम्भवेत्।
एतया शसया ह्येष जम्भते सार्वदेशिक.॥

+ + +

सर्वे सुपथमायान्तु, सर्वे सुमतिमाप्नुयुः।
शुभम्भवतु सर्वत्र, जृम्भते सार्वदेशिकः॥

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और चक्रवर्ती राज्य

पूज्य श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज संसद सदस्य

इन्द्र स्येन्द्रियेण बलाय श्रियैयश-सेऽभिषिञ्चामि ।। यजु० २० । ३ ।।

(इन्द्रस्येन्द्रियेण) परमेश्वर के ऐश्वर्य वा विज्ञान से (बलाय) बलके लिए (श्रिय) चक्रवर्ती राज्य लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए (यशसे) प्रति श्रेष्ठ कीर्ति के लिए 'अभिषिञ्चामि) राज्य पालन के लिए आप को अभि-सिक्त करता हूं।

राजा मे प्राणो अमृत सम्राट् ।।
यजु० २० । ५

(राजा मे प्राण:) परमेश्वर एवं जीवन हेतु वायु (मे) मेरे राजावत् हैं तथा (अमृत) मोक्ष सुख एव ब्रह्म वेद (सम्राट्) चक्रवर्ती राज्य-वत् हैं।

इन्द्रो जयति .. ।
अथर्व० ६ सू० ९८ म० १

हे महा राजेश्वर त्वमुक्त प्रकारेणास्मिन् राज्ये सत्कृतो भव। भवत् सत्कारेण सह वर्त्तमाना वयमस्मिन् चक्रवर्ती राज्ये सदा सत् कृता भवेम (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका) राजधर्म।

हे परमेश्वर आप उत्तम प्रकार से पृथ्वी राज्य मे सत्कार को प्राप्त हो। और आपके सत्कार के साथ वर्त्तमान हम भी इस चक्रवर्ती राज्य मे सदा सत्कृत हों।

तान हम नु राज्याय साम्राज्याय । ऐतरेय ब्रा० प्रां०८ अ० २ कण्डि० ६६

सब मनुष्य इस प्रकार इच्छा करके पुरुषार्थ करें।

परमेश्वर की कृपा से मैं सभा-ध्यक्षत्व की प्राप्ति के लिए तथा (साम्राज्याय) माण्डलिक राजाओं के ऊपर सम्राट पद के लिए तथा सार्व-भौमराज्य के लिए गुणी बनूं।

स एतेनैन्द्रेणं महाभिषेकेरणाभिषिक्त ।
ऐ० ८ । ४ । १९

ऋग्वेदादि० जो क्षत्रिय इस प्रकार के गुण और सत्य कामों मे अभिषिक्त युक्त होता है। वह सब युद्धों को जीत लेता है। तथा सब उत्तम सुख और लोकों का अधिकारी बन कर सब राजाओ के बीच में अत्यन्त उत्तमता को प्राप्त होता है। जिससे इस लोक मे चक्रवर्ती राज्य और लक्ष्मी को भोग के मरणान्तर सम्राट् और अमृत होके परमेश्वर के समीप सब सुखों को भोगता है।

सत्यार्थप्रकाश और चक्रवर्ती राज्य

क्या बिना देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में राज्य वा व्यापार किए स्वदेश की कभी उन्नति हो सकती है। जब स्वदेश ही में स्वदेशी लोग व्यवहार करते हैं और पर देशी स्वदेश में व्यवहार वा राज्य करें तो बिना दारिद्रय और दुख के कुछ भी नहीं हो सकता।

(सत्यार्थ-प्रकाश समुल्लास १०)

पाच सहस्र वर्ष पूर्व तक आर्यों का चक्रवर्ती राज्य था।

एतद्देश प्रसूतस्य शकाशादग्रजन्मन । स्व स्व चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवा ।

मनु० २ । २०, सत्यार्थ प्र० समु०११

सृष्टि की उत्पत्ति से लेके पञ्च सहस्र वर्षोंसे पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्व भौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वो-परि एक मात्र राज्य था अन्य देश में माण्डलिक अर्थात् छोटे २ राजा रहते थे। क्योंकि कौरव पाण्डव पर्यन्त यहां के राज्य और राज्य शासन में सब भूगोल के सब राजा रहते थे।

सत्यार्थप्रकाश समु० ११।

जब रघुगण राजा थे तब रावण भी यहा के आधीन था जब रामचन्द्र के समय मे विरुद्ध हो गया तब उसको रामचन्द्र ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर उसके भाई विभिषण को राज्य दिया था। स्वायम्भव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यो का चक्र-वर्ती राज्य रहा।

सत्यार्थ-प्रकाश समु० ११

(चक्रवर्ती राजाओं की नामावली)

अथ किमे तैर्वा परेऽन्ये ।

मैत्र्युपनिषद प्र० १ खं० ४

इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध होता है कि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्य-कुल में ही हुए थे। जैसे—सुद्युम्न, भूरीद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, अश्वसेन भरत और भरत आदि सार्वभौम सब भूमि मे प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजाओं के नाम लिखे हैं वैसे स्वायम्भव आदि चक्र-वर्ती राजाओ के नाम स्पष्ट मनुस्मृति महाभारतादि ग्रन्थों में लिखें हैं। इन को मिथ्या करना अज्ञानी और पक्षपातियों का काम है।

सत्यार्थप्रकाश समु० ११

विनाशकाले विपरीत बुद्धि. ।

वृद्ध चाणक्य अ० १६ । १७

जब नाश का समय निकट आता है तब उल्टी बुद्धि हो के उल्टे काम करते हैं कोई उनको सीधा समझावे तो उल्टा माने उल्टा समझावे तो सीधा मानें। जब बड़े २ विद्वान् राजा महाराजा, ऋषि महर्षि लोग महाभारत के युद्ध मे बहुत से मारे गए और बहुत से मर गए तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान आपस मे करने लगे। जो बलवान हुआ वह देश को दबा राजा बन बैठा। वैसे ही सर्वत्र आर्यावर्त्त देश खण्ड बण्ड राज्य हो गया पुन. द्वीप द्वीपान्तर के राज्य की व्यवस्था कौन करें।

सत्यार्थप्रकाश समु० ११।

सत्यार्थ प्रकाश और चक्रवर्ती राज्य के प्रमाण

इम देवा असपत्नं सुवध्व महते क्षत्राय ।
यजु० अ० ९ म० ४०

सत्यार्थ-प्रकाश से उदधृत.—

हे (देवा:) विद्वान् राजा प्रजा जनो! आप (इम) इस प्रकार के पुरुष को (महते क्षत्राय) बड़े चक्रवर्ती राज्य के लिए (अ सपत्न शत्रु रहित (सुवध्वम् करो।

सत्यार्थप्रकाश समु० ६।

यह संक्षेप से राजधर्म का वर्णन किया है।

विशेष.—

वेद मनुस्मृति के सप्तम अष्टम नवम अध्याय में और शुक्र नीति तथा विदुर नीति प्रजागर और महाभारत शान्ति पर्व के राजधर्म और आपद्धर्म आदि पुस्तकों में देखकर पूर्ण राजनीति को धारण करके माण्डलिक अथवा सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य करे। और यह समझे कि —परमेश्वर हमारे हाथ से चक्रवर्ती राज्य कर न्याय का प्रकाश कराइये।

प्रजापते. प्रजा अभूम ।
यजु० १८ । २९

अर्थात् हम प्रजा पति परमेश्वर की प्रजा हैं। और परमात्मा हमारा राजा है हम उसके किंकर भृत्य वत् हैं। वह कृपा करके अपनी सृष्टि में हमको राज्याधिकारी करे और हमारे हाथ में अपने सत्य न्याय की प्रवृति करावे।

सत्यार्थप्रकाश समु० ६ अन्तिम पृष्ठ।

इक्ष्वाकु से लेके कौरव पाण्डव तक सब भूगोल में आर्यों का राज्य और वेदों का थोड़ा २ प्रचार आर्या-वर्त से भिन्न देशों मे भी रहता था। इसमे यह प्रमाण है कि ब्रह्मा का पुत्र विराट्, विराट् का मनु, मनु के मारिचि आदि दश उनके स्वयम्भू आदि सात राजा और उनके सन्तान इक्ष वाकु राजा जो आर्यावर्त्त के प्रथम राजा हुए जिन्होंने यह आर्या-वर्त्त बसाया। अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य प्रमाद परस्पर के विरोध करने से अन्य देशों के राज्य करने की कथा ही क्या कहना किन्तु आर्यावर्त्त में भी इस समय आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भय राज्य नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादा क्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। जब दुर्दिन आता है तब देश वासियों को अनेक प्रकार के दुख भोगने पड़ते हैं। कोई कितना हो पर स्वदेशी राज्य जो होता है। वह सर्वोपरि होता है।

आर्याभिविनय और चक्रवर्ती राज्य

वय जयेम वृष्ण्या रूज ।।
ऋ० अ. १। अ ७। व. १४। मं. ४

हे इन्द्र परमात्मन्! "त्वया युजा वय जयेम" आप के साथ वर्त्तमान आपके सहाय से हम दुष्ट शत्रुओं को जीते। कैसा वह शत्रु कि 'आवृतम्' हमारे बलसे घिरा हुआ। हे महा राजाधिराज राजेश्वर! "भरे भरे अस्माकमशमुदवा', युद्ध २ (प्रत्येक युद्ध) में हमारे अश । बल) सेना का "उदव" उत्कृष्ट रीति से कृपा करके रक्षण करो, जिससे किसी युद्ध में क्षीण होके हम पराजय को प्राप्त न हों। किन्तु जिनको आपका सहाय है उनका सर्वत्र विजय ही होता है। हे "इन्द्र मघवन्" महा धनेश्वर। "शत्रुणां वृष्णया" हमारे शत्रुओं के (वीर्य्य) पराक्रमादि को "प्ररूज" प्रभग्न रूग्ण करके नष्ट करदे। "अस्मभ्य वरिव सुगं वृति" हमारे लिए चक्रवर्ती राज्य और साम्राज्य धनको "सुगम" सुख से प्राप्त कर अर्थात् आप की करुणा कटाक्ष से हमारा राज्य और धन सदा वृद्धि को प्राप्त हो।

(शेष पृष्ठ १० पर)

महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

माननीय श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति

यदि हम आर्यसमाज की जीवन यात्रा के मार्ग पर व्यक्तियों के नाम के साइनबोर्ड लगाना चाहें तो पहला साइनबोर्ड महर्षि दयानन्द के नाम का लगेगा, दूसरा आर्यपथिक पंडित लेखरामजी के नाम का तीसरा स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम का और चौथा महात्मा नारायण स्वामी जी के नाम का लगना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान के पश्चात् लगभग २० वर्षों तक जिस कर्णधार ने आर्यसमाज की नौका के चप्पू को सम्भाले रखा वे महात्मा नारायण स्वामी जी थे। उनके समय मे आर्य-समाज पर कई बड़े सकट आये। स्वामी जी ने उन सब सकटो को युद्धपंक्ति के आगे खड़े होकर अपनी छाती पर लिया। आप का नाम आर्य समाज के उन आधा दर्जन महापुरुषो मे गिना जायेगा, जो आर्यसमाज के वर्तमान रूप के निर्माता समझे जा सकते हैं।

श्री नारायण स्वामी जी के जीवन के विकास की एक विशेषता है। कुछ लोग जन्म से ही अपने माथे पर महा-पुरुषता की रेखा लेकर उत्पन्न होते है। उन की साधारण शक्तियां बाल्य-काल से ही भासित होने लगती है। पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे जन्मना महापुरुषो के एक दृष्टान्त थे। वे यदि चिर काल तक जीवित रहे तो उनका आर्यसमाज मे अथवा सार्वजनिक जीवन की किसी भी अन्य शाखा मे ऊंचे पद पर पहुंचना अवश्यम्भावी था। श्री नारायण स्वामी जी महाराज के जीवन की यह विशेषता है कि उसके निर्माण में नैसर्गिक रेखाओ का कम और अध्यवसाय परिश्रम तथा सत्यनिष्ठ का भाग अधिक था। स्वामी जी ने स्वय अपने को नेतृत्व के लिए तैयार किया। उन्हें हम ठीक अर्थों में स्वनिर्मित नेता कह सकते हैं।

स्वामी जी का बचपन का नाम नारायणप्रसाद था। उनके पिता बाबू सूर्यप्रसाद जी सिकन्दराराऊ (उत्तर प्रदेश) में सब रजिस्टिरार थे। कायस्थ होने से उनके कुल का पुराना पेशा सरकारी नौकरी ही था। नारायण प्रसाद जी का जन्म १९२३ विक्रमी (१८६६ ईस्वी) में हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा एक मौलवी से प्राप्त की थी। मौलवी साहब उर्दू और फारसी पढ़ाते थे। नारायण-प्रसाद जी की गिनती अपनी श्रेणी के माध्यम योग्यता के अच्छे लडकों में से थी। अध्यापक लोग आपकी फारसी की योग्यता से बहुत प्रसन्न थे।

नारायणप्रसाद जी अलीगढ़ के गवर्नमेंट हाई स्कूल की नवीं क्लास मे पढ़ते ही थे कि उनके पिता की अकस्मात् मृत्यु हो गई। इस घटना ने उनकी शिक्षा के मार्ग में बाधा डाल दी। उन्हें पढना छोड़कर २२ साल की अवस्था मे ही नौकरी करनी पड़ी। वे मुरादाबाद के कलक्टर के दफ्तर मे क्लर्क पद पर नियुक्त हो गये। उनका विवाह २२ वर्ष की अवस्था मे हो गया था। स्वामी जी ने अपनी आत्म-कथा में लिखा है कि "उस समय की सम्मिलित कुटुम्ब प्रथा के अनुसार मुझे पांच वर्ष तक परिवार से अलग रहना पड़ा।" उसके पश्चात् आपका सकल्प था कि चालीस वर्ष की अवस्था तक गृहस्थ रहकर उसके पश्चात् वानप्रस्थ और पचास साल की अवस्था में संन्यास ले लेंगे। अकस्मात् चालीसवा वर्ष प्रारम्भ ही हुआ था कि आपकी सहधर्मिणी ससार से विदा हो गई। उसके पश्चात् आपका जीवन वस्तुत: एक वीतराग का जीवन ही रहा।

मुरादाबाद मे रहते हुए आपका कई आर्य पुरुषों से मेल जोल हो गया सत्सग का फल यह हुआ कि आपने सत्यार्थप्रकाश पढ़ना आरम्भ कर दिया। सबसे पहले आपको जिस वस्तु ने अपनी ओर आकृष्ट किया, वह आर्यसमाज के दस नियम थे। उनकी सरलता और ऊंचाई पर आप मोहित हो गये। यहीं से आपके आर्यसामा-जिक जीवन का सूत्रपात हुआ। विश्वास की दृढता और विश्वास के अनुसार कार्य करने में मुस्तैदी, ये दो विशेषताएं मुन्शी नारायणप्रसाद जी की पहले से ही थी। आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर विश्वास जमते ही आप सक्रिय आर्यसमाजी बन गये। मुरादा-बाद के आर्यसमाज का बहुत सा काम आपने सम्भाल लिया। आर्यसमाज का कार्य करते हुए आपको अपनी एक न्यूनता अखरी। संस्कृत का ज्ञान न होने से धर्म ग्रन्थों के पढ़ने और यज्ञादि के करने-कराने मे कठिनाई होती थी। मुरादाबाद मे पडित कल्याणदत्त नाम के सस्कृत के विद्वान् थे। आप उनसे अष्टाध्यायी पढने लगे।

जब संयुक्त प्रान्त मे आर्य प्रति-निधि सभा की स्थापना हो गई और नियम-पूर्वक काम चलने लगा तो एक ऐसे अधिकारी की आवश्यकता हुई, जो लिखा पढ़ी कर सके और प्रबन्ध को सम्भाल सके। सबकी दृष्टि मुन्शी नारायण प्रसाद जी पर पड़ी। आपने सहर्ष साथियो की बात मान ली और प्रतिनिधि सभा के कार्यालय का काम अपने जिम्मे ले लिया। उन दिनों आप "मुहर्रिक" नाम के उर्दू साप्ता-हिक पत्र के अवैतनिक सम्पादक भी थे। इन सभी कामों मे लिखना पड़ता था। परिणाम यह हुआ कि आपको लेखन-रोग (Writing disease) हो गया। यह रोग ऐसा होता है कि पहले लिखने मे दायें अंगूठे मे पीड़ा होती है। यदि लिखना जारी रखा जाय तो यह पीडा सारे हाथ मे फैल कर कन्धे तक अपना प्रभाव जमा लेती है। नारायणप्रसाद जी ने जब दाहिने अगूठेमें पीडा अनुभव की तो सव्यसाची का अनुकरण करते हुए बायें हाथ से लिखना आरम्भ कर दिया। लिखने का बहुत सा काम बाएं हाथ से करने लगे। विश्राम पाकर दाहिना अगूठा धीरे-धीरे बहुत कुछ नीरोग हो गया। तो भी आपने बायें हाथ से लिखने का अभ्यास नही छोडा।

१८९६ मे नारायणप्रसाद जी आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री चुने गये। थोडे ही समय मे आप सभा के लिये इतने आवश्यक हो गये कि सभा का कार्यालय ही मुरादाबाद मे पहुच गया। अधिवेशन कही हो, स्थायी कार्यालय मुरादाबाद में ही रहने लगा।

उन दिनों नारायणप्रसाद जी के सामने एक विषम समस्या उपस्थित हो गई। बुन्देलखण्ड में अकाल पड़ जाने के कारण सरकार को कुछ ऐसे आदमियों की आवश्यकता अनुभव हुई, जो उद्यमी होने के साथ-साथ पक्के ईमानदार हों। नारायणप्रसाद जी में दोनों गुण विद्यमान थे। मुरा-दाबाद के कलक्टर ने आपको बुला-कर पूछा कि क्या आप बुन्देलखड जाने को तैयार हैं। आर्थिक दृष्टि से नया पद आकर्षक था परन्तु उससे आर्यसमाज के कार्य को हानि पहुचने की सम्भावना थी। कलक्टर को आशा थी कि मुंशीजी नई नियुक्ति को धन्यवाद पूर्वक स्वीकार कर लेंगे। परन्तु पहले तो आपने सोचने के लिए एक दिन का अवकाश मांगा और दूसरे दिन बुन्देलखण्ड जाने से इन्कार कर दिया। साहब को उस इन्कार पर आश्चर्य हुआ, परन्तु जब उसे मुन्शी जी ने पूरा कारण बताया तब वह सन्तुष्ट हो गया।

वह आर्यसमाज के विकास का प्रारम्भ काल था। सुधारक समाज के पहले अनुयायियों को प्राय: बहुत सी अग्नि-परीक्षाओं मे से होकर गुजरना पड़ता था। सबसे कड़ी परीक्षा होती है, सामाजिक बहिष्कार की। हिन्दू समाज मे उस समय बहिष्कार का यह स्वरूप होता था कि सुधारकों को जाति से बाहर कर दिया जाता था और हुक्का-पानी बन्द करके उनके बच्चों के विवाह आदि सम्बन्धो के रास्ते रोक दिये जाते थे। नारायणप्रसाद जी को भी उन सब परीक्षाओं मे से गुजरना पड़ा। मुरा-दाबाद मे आपने बहुत सी शुद्धिया करवाई थी। आपने प्रस्ताव किया कि केवल नाम मात्र की शुद्धि से सतोष न करके शुद्ध हुए व्यक्ति के हाथ से सब आर्य जनों को पानी पीना चाहिए। इस पर आर्य सभासदों में भयानक बावेला मच गया। म्लेच्छ के हाथ से पानी पीना - यह तो बिलकुल नई बात थी। बहुत से सभासद् त्याग पत्र देने को तैयार हो गये। परन्तु कुछ लोग मुन्शी जी के साथ सहमत हो गये और उन्होंने ईसाई से शुद्ध हुए पण्डित श्रीराम के हाथ से पानी पी लिया। इस पर हिन्दू-समाज ने म्लेच्छ के हाथ से पानी पीने वाले नास्तिको पर सामा-जिक दमन के तीर फेंकने शुरू कर दिये। कहारो को पानी भरने से मना कर दिया। मेहतरों से कहा गया कि उनके घर की सफाई मत करो। उनके परिवार के लोगों को कुएं पर चढ़ने से रोक दिया गया। ये सब सामाजिक अत्याचार मुन्शी जी ने और उनके साथियों ने बड़े धैर्य

(शेष पृष्ठ १२ पर)

परिवार–नियोजन : एक मीठा–विष है

श्री रामचन्द्रराव कल्याणी एम० एल० ए०, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद

राष्ट्र की और भी महान् समस्या बड़े वेग के साथ जो देश मे इस समयफैलती जा रही है, वह "परिवार नियोजन" की है। परिवार-नियोजन के विषय मे प्रारम्भ से ही आर्य-समाज इस मत का है कि इससे दो हानियां स्वाभाविक होंगी । पहली हानि तो व्यभिचार वृद्धि की होगी क्योंकि जो लोग गर्भ-स्थापना और सन्तानोत्पत्ति के भय से व्यभिचार से दूर रहते थे उन्हें इसके लिए खुली छूट और प्रोत्साहन मिलेगा । इस मनोवैज्ञानिक रहस्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि मनुष्य बुराइयों से अधिकांश रूपेण समाज के भय से बचता है। अत्यन्त उच्चकोटि के मनुष्यों की बात छोडिए वह अपवाद होते हैं, नियम सर्व साधारण के लिए होते हैं, महामानवो के लिए नहीं। और सर्वसाधारण सिद्धांतों की गहराई में नहीं जाया करता। उसे अच्छाई और बुराई के विवेचन की न योग्यता होती है न रुचि, वह तो परिस्थितियों के साथ बहाना मात्र जानता है। यौन सम्बन्ध के लिए परिवार-नियोजन के परिणाम स्वरूप परि-स्थितिया उसके अधिक अनुकूल होगी। परिणामत वह व्यभिचार के पक में फस जायगा । जिससे लज्जा का ह्रास और निर्लज्जता की वृद्धि होगी। यह परिवार-नियोजन का प्रकार है भी कृत्रिम जिससे आगे चल कर राष्ट्रीय सतति को स्वास्थ्य सम्बन्धी हानि होने की प्रबल आशका है, जो मानव समाज के लिए बड़ी घिनौनी बात है। स्वाभाविक और प्राकृतिक परिवार-नियोजन की सही प्राप्ति तो स्वाभाविक तथा प्राकृतिक रूपेण जीवन यापन के द्वारा ही सभव है।

दूसरी हानि हमारे विचार से होगी आर्यों (हिन्दुओं) की सख्या घटने की। क्योंकि मुसलमानों पर परिवार-नियोजन का कोई प्रभाव नहीं होगा। प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि हिन्दुओं की ही चिन्ता क्यों है ? तथ्य यह है कि आज के राष्ट्रो की शासन प्रणाली बहुसख्यता पर आधारित है। जो वर्ग या जाति अधिक सख्या मे होगी शासन मे भी उसी का बाहुल्य होगा और वह अपनी सस्कृति, सभ्यता एव धार्मिकता विचारधारा का बाहुल्यता से प्रचार कर सकेगा। इसलिए भी आवश्यक है कि जिस प्रयोग से जनसख्या पर आघात पहुंचे उसके प्रति सावधानी से विचार किया जाए। हिन्दू प्रत्येक नवीन किसी भी विचारधारा का ग्रहण करने को उद्यत रहता है। और आज परिवार-नियोजन की दिशा मे भी हिन्दु ही अग्रसर हुआ है, मुसलमान नहीं। यदि इस सम्बन्ध में आज जैसी ही स्थिति रही तो आगामी २५ वर्षों में भारत वर्ष में हिन्दू-मुसलमान की जनसंख्या का कुछ और ही अनुपात होगा। परि-णामस्वरूप भारत-भारत रहेगा भी क्या ? एक प्रश्न है। आदिकाल से संसार को महान् सांस्कृतिक देन देने वाली आर्य जाति का इतिहास पृष्ठों की सामग्रीमात्र बनकर रह जायगा।

भारत सरकार के सर पर जब से परिवार-नियोजन का भूत सवार हुआ है तभी से आर्य जगत् इस सम्बन्ध में तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रसारित करते चला आया है। आर्यसमाज के उपर्युक्त विचारों की सम्पुष्टि उस समय हुई जब नवम्बर १९६६ के दूसरे सप्ताह मे दिल्ली लाल किला के सामने परेड ग्राउण्ड की जमाअतए-इस्लामी के अखिल भारतीय सम्मेलन मे श्री जवाहरलाल जी नेहरू के निकटतम प्रेमी और तथाकथिक राष्ट्र भक्त मुसलमान मौ० फिजुहल-रहमान साहब ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया था कि "मुसलमान कदापि भारत सरकार के परिवार-नियोजन मे भाग न लें क्योंकि यह इस्लाम की शरह और मुसलमान के ईमान के खिलाफ है। मुसलमान का ईमान है कि अल्लाहमियां इन्सान की रोजी का खुद इन्तजाम करता है। और हर आदमी जो एक मुंह लाता है दो हाथ भी साथ लाता है।" हम इस सबध में अधिक कुछ न लिख कर महात्मा गाधी जी के विचार परिवार-नियोजन के सम्बन्ध में ज्यों के त्यों उद्धृत करेंगे। जो निम्न प्रकार है।

"अगर कृत्रिम उपायों का उपयोग आम तौर पर होने लगे तो वह समूचे राष्ट्र को पतन की ओर ले जायेगा।

मेरा यह विश्वास है कि किसी कृत्रिम रीति से या पश्चिम में प्रच-लित मौजूदा रीतियों से सन्तति निग्रह करना आत्मघात है।

मेरी राय में तो कृत्रिम साधनों के द्वारा संतति नियमन की पुष्टि के लिए नारी जाति को सामने खड़ा करना, उसका अपमान करना है।

मैं कृत्रिम साधनों के हामियों से आग्रह करता हू कि वे इसके नतीजों पर गौर करें। इन साधनों से ज्यादा उपयोग का फल होगा विवाह बंधन का नाश और मन माने प्रेम बंधन की बढ़ती।" अतः आर्य समाज उचित यही अनुभव करते हुए अनुरोध करता है कि कोई भी आर्य हिन्दू) परिवार-नियोजन के कृत्रिम केन्द्रों पर न जाएं। जहां स्वयं इस कृत्रिम प्रयोग से होने वाली हानि से देश को बचाएं वहां अपने इष्ट मित्रों को भी प्रेरणा करें कि वह इस घातक प्रणाली से दूर रहें। प्राचीन आचार्यों की जो इस दिशा में प्रणाली "ब्रह्मचर्य" की रही है यथा योग्य उसका पालन किया जाए जिससे इच्छानुसार सन्तति लाभ और स्वास्थ्य लाभ भी बना रहे।

(पृष्ठ ८ का शेष)

मृडा नो रुद्रोत......रुद्र प्रणीतिषु ।
ऋ० १ । ८ । ५ । २ ॥

हे दुष्टों को रुलाने हारे रुद्रेश्वर! हमको "मृड" सुखी कर तथा" मय-स्कृधि। हमको मय अर्थात् अत्यन्त सुख का सम्पादन कर। "क्षयद्वीराय नमसा विधेमते" शत्रुओं के वीरों का क्षय करने वाले हम लोगों का रक्षण यथावत् कर। "यच्छम्" हे रुद्र ! आप हमारे पिता जनक) और पालक हो हमारी सब प्रजा को सुखी कर, "योश्च" और प्रजा के रोगों का भी नाश कर। जैसे "मनु." मान्य कारक पिता "आयेजे" स्वप्रजा को सगत और अनेक विघ लाडन करता है, वैसे आप हमारा पालन करो। हे रुद्र भगवन् ! "तव प्रणीतिषु" आप की आज्ञा का प्रणय अर्थात् उत्तम न्याय युक्त नीतियों में प्रवृत होके "तद श्याम" वीरों के चक्रवर्ती राज्य को आप के अनुग्रह से प्राप्त हो।

आर्याभिविनय और चक्रवर्ती राज्य

वृहद्वदेम विदथे सुवीराः ।
ऋ० २ । ८ । १२ । ३

"वृहद्वदेम विदथे" विज्ञानादि यज्ञ वा धर्मयुक्त युद्धों में "सुवीरा" अत्यन्त शूरवीर होके बृहत् (सब से बड़े) आप जो पर ब्रह्म उन "वदेम" आप की स्तुति, आप का उपदेश आप की प्रार्थना और उपासना तथा आप का यह बड़ा अखण्ड साम्राज्य और सब मनुष्यों का हित सर्वदा कहे सुने और आप के अनुग्रह से पर-मानन्द को भोगें।

तेजस्वी नावधीतमस्तु मा वि द्विषा वहै। तैत्तिरीयारण्यके ब्रह्मानन्द बल्ली प्रपा० १०। प्रथमानुवाक १।

हे अनन्त विद्यामय भगवन् ! आपकी कृपा दृष्टि से हम लोगों का पठन पाठन परम विद्या युक्त हो और ससार में सब से अधिक प्रका-शित हो और अन्योन्य प्रीति से परम वीर्य पराक्रम से निष्कण्टक चक्रवर्ती राज्य भोगे।

स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम प्रजापतेः प्रजा अभूम वेट् स्वाहा।
यजु० १८ । २९

"स्वरगन्म" उत्तम सुख को प्राप्त हों जब तक जीवें तब तक सदा चक्र-वर्ती राज्यादि भोग से सुखी रहें।

क्षत्राय पिन्वस्व द्यावापृथिवी-भ्यांपिन्वस्व। यजु० ३८ । १४।

हे महाराजाधिराज पर ब्रह्मन् ! क्षत्राय अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के लिए शौर्य, धैर्य नीति विनय, पराक्रम और बलादि उत्तम गुण युक्त कृपा से हम लोगों को यथावत् पुष्ट कर।

राजा का स्वरूप

ककुभं रूप वृषभस्य रोचते ।
यजु० अ० ८ म० ४९

सभाजन और प्रजाजनो को चाहिए कि जिसकी पुण्य प्रशसा, सुन्दर रूप, विद्या, न्याय विनम्र, शूरता, तेज, अपक्षपात, मित्रता सब कार्यों में उत्साह आरोग्य, बल, परा-क्रम, धीरज, जितेन्द्रियता, वेदादि शास्त्रों में श्रद्धा और प्रजा पालन में प्रीति हो उसी को सभा का अधिपति राजा मानें।।४९।।

महर्षि दयानन्द और चक्रवर्ती राज्य

प्रिय सज्जनों हम स्वामी दयानन्द जी महाराज का सत्यभाव ससार को तो क्या भारत के नर नारियों तक भी न पहुचा सके। ऋषि दयानन्द जी महाराज जहां सिद्ध योगी थे वहां प्रकाण्ड विद्वान् त्यागी तपस्वी परोप-कारी निर्भीक दयालु नैष्ठिक ब्रह्मचारी एक राज ऋषि भी थे उनके वेद भाष्य आदि से उद्धृत कर चक्रवर्ती राज्य के स्वामी पुलाक न्याय से कुछ प्रमाण उपस्थित करताहूं आशा है विज्ञ पाठक ऋषि के अन्तस्तल का अध्ययन करेंगे।

पुनर्जन्म और स्मृति

माननीय श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०

(गताक से आगे)

जिस प्रकार ऊंट जब रेत के मैदान मे चलता है तो उसके चिह्न बन जाते हैं इसी प्रकार जब हम किसी चीज को करते या देखते हैं तो इनके निशान हमारे मस्तिष्क पर बन जाते है। शराब पीने वालों को शराब देखते ही शराब पीने की इच्छा हो उठनी है क्योंकि पिछले समय में पी हुई शराब के निशान बने हुये हैं। इसी प्रकार हमारे समस्त जीवन की सब घटनायें हमारे मस्तिष्क पर चिह्न छोड़ जाते हैं इन्ही को संस्कार कहते हैं यह सस्कार कुछ स्थूल होतेहैं कुछ सूक्ष्म। सूक्ष्म सस्कार केवल वासनाओं के रूप मे रहते हैं। हमारी आदतें (स्वभाव) सस्कार ही तो है। और सस्कार क्या हैं? उन घटनाओं के निशान जो स्मृति के रूप में हमारे मस्तिष्क मे सुरक्षित है।

जो काम केवल एक या दो बार किया उसके चिह्न केवल ऊपर सतह पर है और जो बार बार किया उसके चिह्न गहरे हो गये। आदत या स्वभाव के रूप में जो अति सूक्ष्म सस्कार हैं वह दूसरे जन्मों में भी सुरक्षित रहते हैं। यह भी तो स्मरण की कक्षा के बाहर नहींहैं। इन संस्कारोंको कोई काल की दूरी नष्ट नहीं कर सकती। यदि आप गाना जानते है तो भूमि के किसी भी भाग में चले जाइये यह गाना याद रहेगा और कई वर्षों पीछे भी इसकी अभिरुचि बनी रहेगी।

यही कारण है कि जब भिन्न-भिन्न लोग जन्म लेते हैं तो उनकी आदतें भी भिन्न भिन्न होती हैं। कोई अत्यन्त तीव्र बुद्धि के होते हैं कोई बहुत मन्द। किसी का एक प्रकार का स्वभाव होता है। किसी का दूसरे प्रकार का। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न प्राणियों की प्रवृत्तिया भी भिन्न-भिन्न होती हैं। यह प्रवृत्तिया भी पिछले जन्मों की याद (स्मृति) ही है यद्यपि है यह सूक्ष्म। हम शायद यह तो भूल गये कि पिछले जन्म में हम कहां थे। हमारे वंश वाले कौन थे? हम कैसे मकान मे रहते थे। परन्तु जो सस्कार आदतों की शक्ल में एक योनि से दूसरी योनि में हमारे साथ आये वह प्रकाशित करते हैं कि इन सस्कारो का भी पिछले जन्म में कोई स्थूल रूप रहा होगा। रेत के ऊपर जो ऊंट के पैरों के निशान हैं वह ऊंट तो नहीं हैं और न उन के पैर परन्तु हैं वह ऊट के पैर के निशान। इसी प्रकार यदि हम थोडी सी शिक्षा से ही अच्छे गवय्ये बन गये तो यद्यपि हम को पुराने जन्म के गाने याद नहीं रहे यह आदत (प्रवृत्ति) ही उन गानों की याद दिलाती हैं जिनके बिना आदत पड ही नहीं सकती थी।

यदि आप मेरठ मे किसी नये आगन्तुक को बाइसिकिल देवें और वह साइकिल को भली भाति चला सकता है। तो उसे आप यही कहेगे कि आप जब मेरठ आने से पहले नागपुर मे थे तो उस समय भी आप बाइसिकिल चलाते रहे होंगे यदि वह कहे कि मुझे याद नही। तो आप कहेगे कि साईकिल की याद "साइकिल के प्रत्यक्ष" के रूप में न हो तथापि "साइकिल चलाने की याद के रूप" में तो अवश्य है।

योग दर्शन के ऊपर के सूत्र मे दो बातें कहीं हैं —

(१) स्मृति और सस्कार के रूप में भेद नहीं। वह मूल में एक ही हैं।

(२) जाति, देश, काल का परिवर्त्तन इनको नष्ट नही करता।

इसका अर्थ यह है कि यदि जीव एक योनि से दूसरी योनि मे जाय, जैसे मनुष्य योनि से कुत्ते या हाथी का शरीर धारण कर ले और यदि यह दूसरा जन्म अधिक से अधिक दूरी पर किसी दूर देश मे हो अथवा एक जन्म और दूसरे जन्म मे काल की भी अधिक दूरी हो गई हो तो भी सस्कार सुस्थित रहते हैं। देश, काल या जाति की भिन्नता सस्कारों पर प्रभाव नहीं डालती। जैसे शराबी यदि किलार्क से बदल कर इंजिनियर हो जाय या एक नगर से दूसरे नगर में चला जाय तो भी शराब की आदत बनी ही रहेगी। और वह आदत कभी भी कभी बहुत काल के बाद भी उभर सकती है।

इसलिये यह कहना मिथ्या है कि पिछले जन्मों की हमको याद नहीं रहती। याद तो रहती है परन्तु सूक्ष्म रूप में। सस्कार भी तो स्मृति ही हैं। इति।

महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

[पृष्ठ ६ का शेष]

से सह लिये। सरकारी अफसरों ने चाहा कि सामाजिक अत्याचारों के विरुद्ध अदालत मे रपट लिखाई जाय परन्तु मुन्शी जी ने स्पष्ट उत्तर दिया कि स्वामी दयानन्द जी के अनुयायी अत्याचार सह लेंगे, अपने भाइयों के विरुद्ध सरकार का दरवाजा न खटखटाएंगे। इस उत्तर से प्रभावित होकर स्थानीय अधिकारियो ने स्वय उत्पात मचानेवालों को कठोर चेतावनी देकर ठडा किया। उसके पश्चात् आर्यसमाज का कार्य निर्विघ्न होने लगा।

१६०२ में पजाब प्रान्तीय गुरुकुल के हरिद्वार के समीप कागडी ग्राम में आ जाने पर पश्चिमोत्तर प्रदेश के आर्यसमाजियों में भी गुरुकुल स्थापित करने की चर्चा आरम्भ हुई। १६०५ मे सिकन्दराबाद मे एक छोटा सा गुरुकुल खुल गया। २ बर्ष बाद आर्य प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल को सिकन्दराबाद से फर्रुखाबाद मे परिवर्तित कर दिया। परन्तु वहा का वातावरण भी गुरुकुल के लिए अनुकूल नही था। सभा गुरुकुल के लिए उचित स्थान की तलाश कर ही रही थी कि हाथरस के राजा महेन्द्रप्रताप जी ने वृन्दावन के समीप अपना एक बाग गुरुकुल के लिये दान दे दिया। फलत १६११ के अन्तिम महीने मे गुरुकुल वृन्दावन मे पहुच गया।

जिस समय यह बाग गुरुकुल को दान मे मिला, उस समय उसमे झाड़-झखाड भरे हुए थे और रहने योग्य कोई स्थान नही था। सभा ने निश्चय किया कि १६११ के दिसम्बर में गुरुकुल का जो उत्सव हो वह वृन्दावन की भूमि मे ही किया जाय। समय बहुत कम था और काम अत्यधिक। इतना काम और किसी के बलबूते का नहीं था। सभा को निश्चय था कि मुन्शी नारायण प्रसाद जी ही इस किश्ती को पार लगा सकेंगे। आप सच्चे कर्मयोगी थे। जमकर गुरुकुल भूमि मे बैठ गये और थोड़े से दिनों में चमत्कार कर दिखाया। उत्सव से पूर्व बाग की सफाई हो गई। ब्रह्मचारियो के रहने योग्य मकान बन गये और उत्सव की व्यवस्था भी भली प्रकार हो गयी। उन दिनों नया स्थान होने के कारण वहा चोरों का डर बहुत रहता था। उसे दूर करने के लिए मुन्शी नारायणप्रसाद जी (जिन्हें अब असाधारण सेवाओं के कारण आर्य जनता ने महात्मा की पदवी दे दी थी) बन्दूक कन्धे पर रखकर रात-रात भर पहरा दिया करते थे। आप तब गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पद पर आरूढ थे। गुरुकुल का कार्य करने के लिए आपने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया था।

महात्मा नारायणप्रसाद जी ने सन् १६१३ में गुरुकुल के कार्य को सभाला था। आठ वर्ष तक अथक परिश्रम करके आपने उसे एक सुव्यवस्थित संस्था का रूप दे दिया। आवश्यक इमारतें बन गयी, पठन-पाठन का क्रम विधिपूर्वक जारी हो गया और आर्थिक व्यवस्था भी बहुत कुछ ठीक हो गई। सन् १६१६ की वसन्त पचमी पर महात्मा नारायण स्वामी जी की आयु का पचासवा वर्ष समाप्त हो गया। आपका सकल्प था कि आप पचास वर्ष की आयु होने पर विरक्ति धारण कर लेंगे। वसन्त पचमी पर आप गुरुकुल को छोड़कर एकान्तवास के लिए बिदा हो गये। इससे पूर्व दिसम्बर १६१८ के वार्षिकोत्सव पर आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य जनता की ओर से आपको एक अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया था।

गुरुकुल से निवृत्त होकर महात्मा नारायण स्वामी जी ने अल्मोड़े के समीप रामगढ में एकान्त स्थान देख कर एक आश्रम की स्थापना की जिसका नाम नारायणाश्रम रखा गया। वहां बैठकर आपने तपश्चर्या और स्वाध्याय द्वारा अपने को संन्यास आश्रम के लिए तैयार किया और सन् १६२२ के मई मास (वैशाख १६७६) मे सन्यास ले लिया। आपने नाम नारायण स्वामी रखा। आचार्य का कार्य स्वामी सर्वदानन्द जी ने किया।

सन्यास लेने के पश्चात् आप सर्वात्मना आर्यसमाज की सेवा में लग गए १६२३ में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के त्याग-पत्र देने पर आप सार्वदेशिक सभा के प्रधान चुने गये। इस पद से आपने सबसे अधिक महत्वपूर्ण और स्मरणीय जो कार्य किया उसका मथुरा की श्रीमद्दयानन्द जन्म शताब्दी के प्रकरण में विस्तार से वर्णन हो चुका है। मथुरा के बाद टकारा में जन्म शताब्दी मनाई गई और फिर अजमेर में श्रीमद्दयानन्द निर्वाण अर्ध शताब्दी का महोत्सव हुआ। सार्वदेशिक सभा के प्रधान की हैसियत से इन दोनों महोत्सवों की सफलता में श्री नारायण स्वामी जी का मुख्य भाग रहा। सार्वदेशिक सभा के कार्यालय के अर्थ विभाग को व्यवस्था मे लाने की ओर स्वामी जी का प्रारम्भ से ही अधिक ध्यान था। प्रारम्भिक जीवन के सस्कारों के कारण प्रबन्धसम्बन्धी कार्यों में उनका प्रवेश भी अत्यधिक था। यह बात असदिग्ध है कि सार्वदेशिक सभा के आन्तरिक प्रबन्ध को ठीक रखने तथा उसे सुव्यवस्थित रूप देने का अधिकतर श्रेय श्री नारायण स्वामी जी महाराज को ही है।

इन प्रबन्धसम्बन्धी कार्यो के साथ-साथ आपकी वाणी तथा लेख द्वारा प्रचार निरन्तर जारी रहता था। उन दिनों शायद ही आर्यसमाज का कोई बड़ा उत्सव होता हो जिसमें स्वामी जी का व्याख्यान न होता हो। आपके व्याख्यान प्रायः गम्भीर और विचार-पूर्ण होते थे। आपने धर्म विषय पर कई ग्रन्थ भी लिखे।

१६३८ में आर्यसमाज को एक महान् धर्मयुद्ध मे कूदना पड़ा। उसमें आर्यसमाज की शान्तिमयी सेना के प्रधान सेनापति श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज थे। उस युद्ध का वृत्तान्त सुनने से पहले हमने यह आवश्यक समझा है कि जिस महारथी के नेतृत्व में आर्यसमाज ने सफलता प्राप्त की, उसके पूर्व जीवन की एक झाकी दिखा दी जाय। श्री नारायण स्वामी जी का सार्वजनिक जीवन इतना लम्बा और क्रियात्मक रहा था कि जब कठोर परीक्षा की घडी आई तब वे उसके लिए सर्वथा तैयार हो चुके थे।

स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति श्रद्धांजलि

श्रीयुत प्रकाशचन्द्र जी कविरत्न, अजमेर

विश्व वन्द्य देव दयानन्द के प्रसिद्ध शिष्य,
प्राच्य शिक्षा दानी, गुरुज्ञानी, ध्रुवध्यानी थे।
राष्ट्र के परम हितकारी, क्रान्ति के पुजारी,
सत्यव्रतधारी आर्यसभ्यता भिमानी थे॥
आश्रय विहीन, दुखियाओं, दीनो के दृगो मे,
देखकर पानी जो हो जाते पानी-पानी थे।
ईश-अनुरागी, त्यागी, परम गम्भीर, धीर,
कर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदानी थे॥

देव दयानन्द के सन्देश के प्रचार हेतु,
जगती के वैभव सुखो पै लात मार दी।
स्थापित किये 'प्रकाश' गुरुकुल ठौर-ठौर,
शिक्षा दिव्य वेद के आदेश-अनुसार दी॥
म्लेच्छ, मायावीयो के मन्सूबे क्षार-क्षार किये,
दीन, दलितो की दशा बिगड़ी सुधार दी।
किया नवस्फूर्ति का सञ्चार देश भारत में,
सदियो से छाई हुई मुर्दनी उतार दी॥

दमन की चक्की मे कुशासक फिरंगियो की,
पिस रही खूब भारतीय प्रजा भोली थी।
चलती थी गोली निहत्थे निरापराधियो पै,
कपट, कुनीति, क्रूरता की हद होली थी॥
कूद पड़े स्वामी जी स्वातन्त्र्य-समराङ्गण मे,
जिनकी निशक सिंह के समान बोली थी।
स्वाधिकार प्राप्त करने के हेतु देहली में,
शत्रु की सगीनों के समक्ष छाती खोली थी॥

भारतीयता की भव्य चादर पै थी जो लगी,
छूत-छात की कुयश कालिमा, वे धो गये।
देके सहयोग, सान्त्वना 'प्रकाश' सर्वभाति,
दलितों के दारुण दारिद्रय दुःख खो गये॥
शुद्धि, सगठन का बजा के शंख भारत मे,
बिछुड़े जनों को स्नेह-सूत्र में पिरो गये।
प्यारी आर्य जाति के उद्धार करने के हेतु,
पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी शहीद हो गये॥

(पृष्ठ ५ का शेष)

भी उच्च पदों पर आसीन हैं। उन्हीं में से एक प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के श्री ऐन० जी० गोरे है जिन्होंने उनको श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए कहा है कि उनके निधन से महाराष्ट्र के इतिहास का एक युग समाप्त हो गया है।

श्री गाडगिल स्वतन्त्रता संग्राम के एक प्रबल योद्धा होने के साथ-साथ प्रसिद्ध साहित्य सेवी, प्रौढ़ लेखक और कुशल प्रशासक भी थे। उन्होंने मराठी और अंग्रेजी में अर्थशास्त्र, राजनीति और संविधान आदि विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखीं जो अब भी बड़ी लोकप्रिय है। उनकी यात्राओं के वर्णन बड़े रोचक है और उनकी बड़ी बिक्री होती है।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति पर श्री प० जवाहरलाल जी नेहरू ने उन्हें अखिल भारतीय स्तर पर कार्य करने के लिए बुला और वे १० वर्ष तक केन्द्रीय मन्त्री मंडल मे रहे। १९५७ मे बड़े चुनाव मे पराजित हो जाने के बाद वे पंजाब के गवर्नर बनाए गए। श्री प० जवाहरलाल जी की इच्छा थी कि उनके हृदय और मस्तिष्क के गुणों और सार्वजनिक मामलो में उनके लम्बे परिपक्व अनुभव से समाज और प्रशासन लाभ उठाते रहें परन्तु श्री गाडगिल को यह आलंकारिक पद अधिक समय तक प्रभावित न रख सका और उनके स्वतन्त्र कर्तृत्व पर लगे प्रतिबन्धो से उनका मन ऊब गया। जिसके कारण वे उससे मुक्त होने से छटपटाने लगे। अन्त में पदकाल की अवधि समाप्त होने से पूर्व ही वे उससे मुक्त कर दिए गए। इसके बाद वे पूना चले गए और पूना यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर का पद स्वीकर कर लिया। इस शैक्षणिक वातावरण में वे सन्तुष्ट थे परन्तु गत मास उनकी धर्म्मपत्नी के कपड़ो मे अचानक आग लग जाने से हुई उनकी मृत्यु का उन्हे प्रबल आघात लगा जिससे वे रोग शय्या पर पड़ गए और जिसका उनके निधन से ही शमन हुआ।

उनके निधन से देश के रंगमंच से उन थोड़े से बचे हुए उत्साही और निस्स्वार्थ भाव से देश और समाज की सेवा करने वालों मे से एक कुशल अभिनेता तिरोहित हो गया है जो महात्मा तिलक और गांधी जी से प्रभावित होकर कार्यक्षेत्र में उतरे थे और जिनमें अपने विचारों को बनाने और भय एवं प्रलोभनों से ऊपर उठ कर उन्हें प्रकट करने का साहस था। इन शब्दों के साथ हम उनके शोक सतप्त परिजनों के प्रति हार्दिक समवेदना का प्रकाश करते हैं।

आर्यसमाज की एक महान् विभूति

महात्मा नारायण स्वामी जी

आर्य समाज के एक विशिष्ट निर्माता स्व० महात्मा नारायण स्वामी जी का जन्म सम्वत् १९२२ ई० सन् १८६६ की वसंत पंचमी को अलीगढ़ जिले में हुआ था जहां उनके पिता सरकारी सर्विस मे थे। उनके पूर्वजो का निवास स्थान जौनपुर जिले में शृंगारपुर नामक ग्राम था।

स्वामी जी की आरम्भिक शिक्षा कुछ फारसी अरबी की और कुछ अंग्रेजी की हुई थी। जब वे छोटे ही थे तभी उनके पिता जी का देहान्त हो गया और नियमित शिक्षा का क्रम टूट गया और उन्हें मुरादाबाद की कलक्टरी मे नौकरी प्रारम्भ करनी पड़ी।

२३ वर्ष की आयु मे अर्थात् १८९५ मे विवाह हुआ। २ पुत्र उत्पन्न हुए शैशव काल में ही उनकी मृत्यु हो गई। द्वितीय पुत्र के जन्म के कुछ समय बाद प्रसव काल में ही १९११ में उनकी धर्म्म पत्नी का देहान्त हो गया। इस प्रकार ३१ अगस्त १९११ को गृहपत्नी और पुत्र दोनों को खो कर गृहस्थ सम्बन्धी कामों से मुक्त होना पड़ गया।

१९११ से लेकर १९१९ तक गुरुकुल बृन्दावन की सेवा करके उसे ऐसी शानदार अवस्था तक पहुंचाया कि वह उत्तर प्रदेश के आर्य जगत् का गौरव स्थल बन गया। १९१२ मे उन्ही के समय मे गुरुकुल से पहली बार दो स्नातक निकले थे। स्वामी जी का नाम नारायण प्रसाद था। सर्विस काल में मुंशी नारायण प्रसाद गुरुकुल काल में मनीषी नारायण प्रसाद और बाद में महात्मा नारायण प्रसाद, बने। सन्यासी काल में 'महात्मा नारायण स्वामी था। 'महात्मा' शब्द का प्रयोग अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने किया था। उनका कहना था कि 'स्वामी शब्द' तो श्री नारायण स्वामी जी के नाम में ही आ जाता है इसलिए आदरार्थक प्रारम्भिक उपपद 'महात्मा' उचित होगा इसलिए वे सदा 'महात्मा नारायण स्वामी' लिखा करते थे।

१९१९ में गुरुकुल बृन्दावन छोड़ कर स्वामी जी ने नैनीताल जिले मे हिमालय की एक सुन्दर घाटी में रामगढ़ नामक स्थान पर आश्रम बनाया जहा वे अवकाश प्राप्त होने पर रहते. अध्ययन, चिंतन और मनन किया करते थे। उनके जीवन काल में ही हैदराबाद सत्याग्रह के सफल नेतृत्व के आदर स्वरूप रामगढ़ निवासियों ने उनके नाम पर 'नारायण हाईस्कूल' की स्थापना की थी जो इस समय जिले की उन्नततम शिक्षण संस्था है।

सन् १९२२ मे नियम पूर्वक सन्यास ले लिया। संस्कार के समय जब पुत्रेष्णा और वित्तेषणा के त्याग का सकल्प आया तो उन्हें कोई कठिनाई न हुई क्योंकि इनका परित्याग वे कर ही चुके थे। लोकेष्णा के त्याग का व्रत लेते समय उनके चेहरे से प्रकट होता था कि बड़ी दृढ़ता और आत्मिक शक्ति का उपयोग करते हुए आत्म-निरीक्षण के साथ २ उन्होने यह व्रत ग्रहण किया था।

स्वामी जी सार्वदेशिक सभा के जन्मदाताओ मे थे। प्रारम्भ में ही वे आठ दस साल तक उसके मंत्री रहे और उसके बाद लगभग १५ वर्ष तक निरन्तर उसके प्रधान रहे। १९२४ मे सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में मथुरा मे महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव (१५ फरवरी से २१ फरवरी तक) मनाया गया। उसके प्रबन्ध का भार उन्हीं के कंधो पर डाला गया था। इस उत्सव में लगभग ४ लाख व्यक्तियों ने भाग लिया था। प्रबन्ध की उत्कृष्टता और महर्षि के प्रति श्रद्धा की भावना के उद्रेक ने आलंकारिक भाषा मे पृथ्वी पर स्वर्ग के दर्शन करा दिए थे। जिन्होंने इस महोत्सव में भाग लिया था उनके मानस पट पर इसकी स्मृति से अधिक भव्य शायद ही कोई और स्मृति अंकित रही हो। शताब्दी के अवसर पर आर्यों का जो जलूस निकला था और जिन्होंने उस जलूस को देखा था वे आशा नहीं कर सकते थे कि वे पुन इस प्रकार का जलूस देख सकेंगे।

१९३९ में हैदराबाद के धर्म्मयुद्ध और १९४५ मे सिंध के सत्याग्रह में उन्हीं के कुशल नेतृत्व में विजयश्री प्राप्त हुई थी।

८० वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने पर सार्वदेशिक सभा ने नारायण आश्रम में उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया था।

१९४७ में बरेली में केन्सर की बीमारी में यह महान् प्रकाश स्तम्भ हमारी पार्थिव आंखों से ओझल हुआ था।

स्वामी जी महाराज ने 'आत्म दर्शन' कर्त्तव्य दर्पण, मृत्यु परलोक, योग रहस्य, विद्यार्थी जीवन रहस्य, उपनिषदों की टीकाएं आदि अनेक ग्रन्थ आर्यसमाज को प्रदान किए जिनके संस्करण निकलने में देर नहीं होती।

स्वामी जी स्वनिर्मित महान नेता थे। जीवन निर्माण के लिए सन् १८९३ में आर्य समाज के सम्पर्क मे आने और सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने पर वसंत पंचमी के दिन मुरादाबाद मे उन्होने निम्न लिखित सकल्प किए थे।

१—आर्य समाज के नियम और मन्तव्यों का दृढ़ता से पालन।

२—ईमानदारी और परिश्रम से कमाए हुए धन का ही उपयोग।

३—समस्त कार्यों के लिए समय-विभाग।

४—यदि मागना पड़े तो उसमे मर जाना अच्छा है।

५—पत्नी व्रत।

६—नाच, तमाशा, थियेटर देखना, मांस भक्षण करना और शराब पीना पाप है।

८—स्वाध्यायशील होना और हृदय को उच्च सेवा के भाव से भर देना।

९—आराम तलब न होकर कठिन कार्य करने का अभ्यास।

१०—जीवन का अन्तिम भाग केवल परोपकार में लगाना।

ये दस सकल्प शास्त्रानुमोदित हैं। इनका अन्तिम लक्ष्य चरित्र और अर्थ की शुद्धि है। श्री स्वामी जी जब सर्विस में थे तो वहां रिश्वत के बड़े २ प्रलोभन थे। परन्तु वे इनसे ऊपर रहे। क्यामित्र, क्या विरोधी सभी उनकी ईमानदारी के कायल रहे। कलक्टर महोदय इनके काम और ईमानदारी से बड़े प्रभावित थे तभी उसने इनके विषय में यह नोट दिया था कि 'मुंशी नारायण प्रसाद अपनी ईमानदारी के लिए बड़े प्रसिद्ध हैं। कलक्टर ने इन्हें तहसीलदारी के पद के लिए मनोनीत किया परन्तु इन्होंने इस पद को इसलिए अस्वीकार कर दिया कि उन्हे गुरुकुल बृन्दावन का भार सभालना अनिवार्य था। पेंशन लेने मे २ वर्ष शेष थे। परामर्श दिया गया कि इनवैलिड कर प्रार्थना-पत्र देकर अधिकार प्राप्त किया जाय। उन्होंने ऐसा करना भी स्वीकार न किया। सर्विस छोड़ने पर उनके पास २०००) शेष थे उनके १०) मासिक के ब्याज से गुरुकुल में रहते हुए अपना भोजन और वस्त्रों का व्यय चलाया।

स्वाध्याय, अर्थ शुद्धि और चरित्र शुद्धि के बल पर ही वे ऊंचे उठे और आर्यसमाज के एक निर्माता बने। जिन्होंने दयानन्द के सच्चे भिक्षुक बनकर आर्य समाज का प्रचार किया और इसका सफल नेतृत्व किया। उन्होंने आर्य समाज के इतिहास में जो स्थान बनाया हुआ था वह स्पर्धा और प्रसंसा का विषय है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

प्रबन्धक की प्रार्थना

यदि आप सार्वदेशिक के एक प्रति के ग्राहक हैं तो आप कम से कम १० प्रति "महर्षि बोधांक" का आर्डर दें। यह अंक मित्रो को उपहार मे देने योग्य होगा। "महर्षि बोधोत्सव" के दिन तीन रुपये की १० प्रतिएं मित्रो को भेंट करना बडी बात नहीं है।

—प्रति सप्ताह जितनी प्रति आप मगाते हैं उससे १० गुणा "महर्षि बोधांक" का आर्डर दें।

—सभी आश्चर्य कर रहे हैं कि २०० चित्र, चित्रों का परिचय, फिर उत्तम लेख, बढिया कागज और मूल्य कुल ३० नये पैसे! इतना सस्ता कैसे! आज ही आर्डर भेज दें।

कल्याण मार्ग का पथिक

"कल्याण मार्ग का पथिक" का आद्योपान्त स्वाध्याय किया। यह अंक वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति को कल्याण का मार्ग दिखाने वाला है।

निराशा और कलुषित जीवन में ग्रसित व्यक्ति के लिए यह अंक सद्धर्म की ओर ले जाने वाला प्रेरणादायक और ज्ञान वर्धक है।

रामेश्वरप्रसाद
मन्त्री, आर्य समाज रजौली

—"कल्याण मार्ग का पथिक" विशेषांक प्राप्त करके मन में जो प्रसन्नता हुई है। उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। बहुत-बहुत धन्यवाद तथा शतशः बधाईयां।

—श्री प० हरिदत्त जी शास्त्री,हिसार

टंकारा में

महर्षि की जन्म भूमि टंकारा में जाने के लिए इस वर्ष भी ता० १४ फरवरी को दिल्ली से स्पेशल ट्रेन चलेगी। पूरी जानकारी, टंकारा सहायक समिति, आर्यसमाज हनुमान् रोड नई दिल्ली-१ से करे।

शुभ विवाह

श्री हुकमचन्द जी मलूजा के सुपुत्र राजेन्द्रमोहन का विवाह श्री हंसराज जी खट्टर की सुपुत्री कमलेश के साथ श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

उभयपक्ष ने ४६) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली तथा ४६) आर्य अनाथालय दिल्ली को दान दिये।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा हाड़ौती

क्षेत्र का निर्वाचन आर्यसमाज कोटा मे इस प्रकार हुआ। प्रधान श्री रसिक बिहारीलाल उपप्रधान श्री शिवनाथ सिंह त्यागी, मन्त्री श्री रामेश्वरदयाल आर्य, उपमन्त्री श्री सियावरशरण तथा कोषाध्यक्ष श्री जेठा भाई।

वैदिक संस्कार

गया श्री रामचन्द्रसाह जी के सुपुत्र का नामकरण सस्कार श्री लखनलाल जी आर्य के पौरोहित्य मे सानन्द सम्पन्न तथा श्री स्वामी ओंकारानन्द जी का उपदेश हुआ।

उत्सव

पूना केन्द्रीय आर्य समाज मडल के उत्सव में सर्वधर्म सम्मेलन वेदप्रचार सम्मेलन, आर्य वीर दल और आर्य महिला सम्मेलन हुए। श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी तथा श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ससद सदस्य श्री प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु एव श्री प० सुशीला देवी विद्यालङ्कृता के महत्वपूर्ण भाषण हुए।

आ०स० पटेलनगर नई दिल्ली

के वार्षिक चुनाव मे सर्वश्री दीवानचन्द प्रधान, हुकमचन्द बिहारी लाल उपप्रधान, जुगलकिशोर मेहता मन्त्री ए० एन० लखूजा, बलदेवराज उपमन्त्री हरबशलाल आर्य कोषाध्यक्ष, गुरुदत्त चोपड़ा पुस्तकाध्यक्ष एव एस० एन० सचदेव लेखानिरीक्षक चुने गए। अन्तरग सदस्यों मे सर्वश्री हाड़ीमल, विश्वम्भर नाथ, मनोहर लाल बगई, रामशरणदास, बिहारीलाल विज, भगवानदास आर्य, लालचन्द आर्य, बलराज खन्ना विजयकुमार मलहोत्रा, पी ए पुरी, डा० ओम्प्रकाश, मेलाराम, जविन्दाराम, रामलुभाया ठाकुरदास रामस्वरूप खोसला, केशोराम खोसला और दौलतराम चुने गए।

संगीत समारोह

आर्यसमाज पीपाडशहर (राज०) में आदर्श सगीत समारोह हुआ। जिसमें संगीतरत्न श्री पन्नालाल जी पीयूष के मधुर सगीत का हजारों लोगों ने आनन्द प्राप्त किया।

शोक

आर्यसमाज हिलरोड-बान्द्रा बम्बई ने आर्यसमाज के उपप्रधान श्री रामनाथ जी सहगल के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया।

आर्य समाज बीड़ (महाराष्ट्र)

का वार्षिक चुनाव श्री पुरुषोत्तमराव जी चपलगावकर वकील की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। और मार्ग दृष्टा थे श्री प० गोपालदेव जी शास्त्री। सर्वसम्मति से श्री बाबूलाल जी वास्तव्य प्रधान, चन्द्रमोहन पाडे, नटवरलाल जी उपप्रधान, महादेव अप्पा ढेपे मन्त्री नारायणदास जी उपमन्त्री तथा प्रतापसिह जी पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

गुरुकुल गदपुरी

का जयन्ती महोत्सव ११-१२-१३ मार्च १९६६ को मनाने पर विचार करने के लिए दिल्ली के सुप्रसिद्ध नेता बाबू सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट की अध्यक्षता में गुरुकुल में एक सभा हुई। सभामे दिल्ली एवं गुड़गावें जिले के अनेक आर्यसमाज के अधिकारियों ने भाग लिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

के वार्षिक चुनाव मे—

सर्वश्री भक्तराम ऐडवोकेट	—प्रधान
लखपतराय	—उपप्रधान
प्रो० कन्हैयालाल	—उपप्रधान
विद्या सागर	—मन्त्री
देवेन्द्र कुमार	—उपमन्त्री
जगदीश चन्द्र	उपमन्त्री
प्रकाशचन्द्र	—कोषाध्यक्ष
लीलाराम	—पुस्तकाध्यक्ष

आर्य वीर दल, आबूरोड़ का निर्वाचन

सर्वश्री कान्तिलाल जी शाह—अधिष्ठाता, गगाराम जी आर्य—नगर नायक, महेश चन्द्र जी शाह मन्त्री, महेन्द्र कुमार जी जैन—शाखा नायक, जय कुमार जी जैन—शिक्षा नायक, मोहनलाल जी गर्ग—कोषाध्यक्ष, राजेन्द्र प्रसाद जी जैन लेखा-जोखा निरिक्षक। कार्य कारिणि समिति:—१ श्री ललितकुमार जी शाह, २ श्री कबर सैन जी जैन, ३ श्री बनवारी लाल जी अग्रवाल, ४ श्री अमर चन्द जी।

आर्यसमाज मन्दिर, बाढ़

ने एक विशेष सभा में दिवंगत प्रधान मन्त्री महोदय को श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत की।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा

का यह अधिवेशन भारत के प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। श्री शास्त्री जी के निधन से सारा भारत ही नहीं अपितु समूचा राष्ट्र ही शोकातुर हो उठा है।

आर्यसमाज, थानाभवन

ने एक विराट सभा में प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी के निधन पर शोक प्रस्ताव हुआ।

—आर्यसमाज राबर्टसगज ने प्रधानमन्त्री जी की आकस्मिक मृत्यु पर शोक प्रकट किया।

—पूना केन्द्रीय आर्यसमाज प्रचार मडल ने स्वर्गीय श्री शास्त्री जी के निधन पर शोक प्रकट किया।

—आर्यसमाज, नरेला की एक विशेष सभा में प्रधान मन्त्री जी की मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट किया।

आर्यसमाज, अमरोहा

की ओर से एक सभा में प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया।

आर्यसमाज टिहरी

ने एक प्रस्ताव द्वारा श्री शास्त्री जी के निधन पर शोक प्रकट किया।

आर्य समाज सीतामढ़ी

ने एक विशेष सभा मे श्रद्धेय श्री प्रधानमन्त्री जी के आकस्मिक निधन पर श्रद्धाञ्जलि प्रकट की।

आर्य समाज खतौली

ने साधारण सभा में प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया।

आर्य समाज नगरा, झांसी ने शोक प्रस्ताव पारित कर श्रीमती ललिता शास्त्री जी को भेजा है।

माननीय श्री स्वामी जी दिल्ली पधारे

नई दिल्ली और दिल्ली स्टेशन पर भारी स्वागत

दिनांक १६ जनवरी रविवार को रात्रि के ८॥ बजे बम्बई से आर्य नेता श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी दिल्ली पधारे। बम्बई से दिल्ली तक मार्ग में अनेक स्टेशनों पर हजारों आर्य जनों ने विदेश प्रचार से स्वदेश लौटने पर आपको बधाई दी।

नई दिल्ली और दिल्ली स्टेशन पर श्री त्यागी जी का स्वागत करने वाले अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्थापित करके तृतीय स्थानों की पूर्ति करना चाहते हैं। अपने निजी गुट से आगे उनकी दृष्टि नहीं जाती। परन्तु इस समय जनता को बरगलाने के लिए उन्होंने भाषा पर आधारित अन्य राज्यों की तरह पृथक् पंजाबी सूबे का राग अलापा है।

इस पंजाबी सूबे के पीछे उनका पंजाबी भाषा के प्रति प्रेम है या निकृष्ट राजनैतिक स्वार्थ? दूर क्यों जाते हैं, स्वयं मा० तारासिंह के मुंह से सुनिए कि वे क्या चाहते हैं। २८ सितम्बर १९६५ के दैनिक 'प्रभात' में मास्टर जी फरमाते हैं :—

"हमारा ध्येय पंजाबी भाषी राज्य बनाना नहीं है। वह तो केवल एक साधन है। हमारा ध्येय सिख पंथ के स्वतन्त्र अस्तित्व की स्थापना करना है। पंजाबी राज्य का निर्माण इस प्रकार होना चाहिए कि केन्द्रिय सरकार को उसमें हस्तक्षेप का अधिकार न हो।"

फिर २९ सितम्बर को उन्होंने लिखा —"संयुक्त राष्ट्र संघ को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि वह भारत और पाकिस्तान के मध्य जो भी समझौता कराए उसमें सिखों को तथा उनके धर्म को न भूल जाए।"

फिर उसी प्रभात के ३० सितम्बर के अंक में लिखा:—भारत और पाकिस्तान के मध्य इस युद्ध को केवल तभी समाप्त किया जा सकता है जब कि दोनों के बीच एक मध्यवर्ती राज्य की स्थापना हो जाए, और यह एक स्वतन्त्र सिख राज्य ही हो सकता है।"

भाषा के आधार पर पंजाबी सूबे की मांग का समर्थन करने वाले कतिपय दिग्भ्रान्त राजनीतिज्ञों के मुख पर मा० तारासिंह के इन वक्तव्यों ने क्या स्वयमेव काली स्याही नहीं पोत दी है? क्या अब भी किसी को सन्देह है कि पंजाबी सूबे का आंदोलन एक भाषाई आंदोलन है!

यह विशुद्ध राजनैतिक आंदोलन है, और विशुद्ध राजनैतिक दुरभिसन्धि को पूरा करने का षडयन्त्र हैं। यह भाषा का प्रश्न नहीं है, सिख राज्य की स्थापना का और देश के पुनः विभाजन का प्रश्न है। इस दृष्टि से यह राजद्रोह भी है, देशद्रोह भी। समस्त देशभक्तों को सोचना होगा कि वे राष्ट्रद्रोह की इस प्रकार की खुली प्रवृत्तियों को कब तक बर्दाश्त करेंगे? (क्रमशः)

(शेष पृष्ठ ६ का)

अर्थात् संसार के लोग अर्थभय से ही कर्त्तव्य करते और अकर्त्तव्य से बचते हैं। कितने मनुष्य हैं जो निष्ठापूर्वक कर्त्तव्य पालन करते हैं? चाणक्य का कथन है कि 'युद्धोत्साहे लक्ष्मीर्वसति।' यदि युद्ध में तत्पर रहोगे, शत्रु को पछाड़कर ही सांस लोगे तो विजयश्री निश्चय ही गले में माला पहनायेगी।

'युद्धशास्त्रामृत धीमान् अर्थशास्त्र महोदधे।। समुद्दध्रे नमस्तस्मै विष्णुगुप्ताय वेधसे।।'

समाज निर्माता, जगद्वरेण्य उन विष्णुगुप्त चाणक्य को प्रणाम है, जिन्होंन अर्थशास्त्र के महासमुद्र में से युद्धशास्त्र अर्थात् युद्धनीति रूपी अमृत को निकाला।

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्लीसे प्रकाशित -१।

सबस प्र।तपूवक धमानुसार यथायाग्य वत्तना चाहिय ।

ओ३म्

उरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख पत्र

हर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-१ फोन २७४७७१ म घ शुक्ला ९ सवत ०२२ जनव । १९६ दयानन्दाब्द १४१ सृष्टि सम्वत १९७२९४९०६

हर्षि दयानन्द बोधोत्सव सप्ताह समारोह मनाए

वेद—आज्ञा

राजा-प्रजा कर्तव्य

क्षत्रस्य त्वा परस्पाय ब्रह्म
णस्तन्व पाहि विशस्त्वा
धर्मणा वयमनु क्रामाम सुवि-
ताय नव्यसे

यजु० अ० ३८ । म० १९ ॥

संस्कृत भावार्थः—

भावाय —राजा राजपुरुषैश्च धर्मेण विदुष प्रजाश्च सरक्षणीया । एव प्रजाभी राजपुरुषैश्च राजा सदा सरक्षणीय एव न्यायविनयाभ्या वर्त्तित्वा राजप्रजे नूतनमश्वर्य्यमुन्नयेताम् ॥१९॥

आर्य भाषा भावार्थः—

राजा और राजपुरुषो को योग्य है कि धम के साथ विद्वानो और प्रजाजनो की रक्षा कर । वैसे ही प्रजा और राजपुरुषो को चाहिये कि राजा की सदैव रक्षा कर इस प्रकार न्याय तथा विनय के साथ वत्त कर राजा और प्रजा नवीन नवीन ऐश्वय की उन्नति किया कर ॥१९॥

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्यसमाजों के अधिकारियों से

सभा मन्त्री श्री रामगोपाल शालवाले की

अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती

फाल्गुण कृष्णा ७ शनिवार स फाल्गुन कृष्णा १३ शुक्रवार तदा १२ फरवरी स १८ फरवरी तक ऋषि बोधोत्सव सप्ताह मनाय ।

सच्चे तीर्थ

वेदादि सत्यशास्त्रो का पढना धार्मिक विद्वानो का सग परोपकार धर्मानुष्ठान योगाभ्यास निर्वैर निष्कपट सत्यभाषण सत्य का मानना सत्य करना ब्रह्मचर्य आचाय अतिथि माता पिता की सेवा परमेश्वर का स्तुति प्राथना उपासना शान्ति जितेन्द्रियता सुशीलता धर्मयुक्त पुरुषार्थ ज्ञान विज्ञान आदि शुभ गुण कर्म दुखो स तारने वाले होने से तीर्थ है । और जो जलस्थलमय है वे तीर्थ कभी नही हो सकते क्योकि मनुष्य जिन करके दुखो से तरे उनका नाम तीर्थ है । जल स्थल तारने वाले नहा किन्तु डबाकर मारने वाले है । प्रत्युत नौका आदि का नाम तीर्थ हो सकता है क्योकि उनसे भी समुद्र आदि का तरते है ।

परोपकार करना धर्म और परहानि करना अधर्म कहाता है । इसलिए विद्वान का यथायोग्य यत्न करके अज्ञानियो को सत्यमार्ग में तारने के लिये नौका रूप होना चाहिए । सर्वथा मूर्खों के सदृश न करना चाहिए किन्तु जिसमे उनकी और अपनी दिन प्रति दिन उन्नति हो वैसे कम करने उचित है ।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

शास्त्र-चर्चा

ब्राह्मण

सत्यं दानमथाद्रोह,
आनृशस्य त्रपा घृणा।
तपश्च दृश्यते यत्र,
स ब्राह्मण इति स्मृत. ॥४॥

जिसमें सत्य, दान, द्रोह न करने का भाव, क्रूरता का अभाव, लज्जा, दया और तप ये सद्गुण देखे जाते हैं, वह ब्राह्मण माना गया है।

क्षत्रिय

क्षत्रजं सेवते कर्म,
वेदाध्ययन संगत।
दानादानरतिर्यस्तु स,
वै क्षत्रिय उच्यते ॥५॥

जो क्षत्रियोचित युद्ध आदि कर्म का सेवन करता है, वेदों के अध्ययन में लगा रहता है, ब्राह्मणों को दान देता है और प्रजा से कर लेकर उसकी रक्षा करता है, वह क्षत्रिय कहलाता है।

वैश्य

वाणिज्या पशुरक्षा च,
कृष्यादान रति. शुचि।
वेदाध्ययन सम्पन्नः,
स वैश्य इति संज्ञितः ॥६॥

जो वेदाध्ययन से सम्पन्न होकर व्यापार, पशुपालन और खेती का काम करके अन्न संग्रह करते तथा पवित्र रहते हैं वह वैश्य कहलाते हैं।

शूद्र

सर्वभक्षरतिर्नित्यं
सर्वकर्मकरोऽ शुचि।
त्यक्तवेदस्त्वनाचारः
स वै शूद्र इति स्मृतः ॥७॥

जो वेद और सदाचार का परित्याग करके सदा सब कुछ खाने में अनुरक्त रहता है और सब तरह के काम करता है, साथ ही बाहर-भीतर से अपवित्र रहता है, वह शूद्र कहा गया है।

उलाहना देने से क्या लाभ

अलमन्यैरुपालब्धैः कीर्तितैश्च—
व्यतिक्रमैः।
पेशल चानुरूप च कर्त्तव्य—
हितमात्मनः ॥

दूसरो को उलाहना देने तथा लोगों के अन्यान्य अपराधों की चर्चा करने से क्या लाभ? जो सुन्दर, अनुकूल और हित कर जान पड़े वही कर्म करना चाहिये।

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव १८ फरवरी को आ रहा है!

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्य जगत् को बहुत सुन्दर और महान् भेंट प्रस्तुत की जायगी।

वह भेंट है—**महर्षि बोधांक**

इसमें महर्षि काल से लेकर अब तक लगभग २०० उन दिवंगत आर्य विद्वानों का सचित्र परिचय होगा जिन्होंने महर्षि के बोध से बोध प्राप्त कर आर्य समाज, आर्य राष्ट्र, आर्यभाषा, आर्य साहित्य आदि के प्रसार में किसी भी प्रकार का योग दान दिया था

२०० चित्रों के सहित इस अंक को

डाक व्यय सहित केवल तीस नए पैसे में देंगे

यह अंक नई पीढ़ी के युवकों को प्रेरणा देगा।

इस अंक की विशेषता का पता तब लगेगा, जब यह प्रकाशित हो जायगा आप इसे देखते ही यह चर्चा करेंगे कि यह अंक तो १०० नहीं ४०० मंगाना चाहिए था, अब आप जितना भी समझें—आर्डर भेजदें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

विशेषांक के लिए

बड़ी सावधानी से सभी सदस्यों को भेजा है किन्तु अनेक बन्धुओं को अब तक भी नहीं मिला। बीच में कहां गायब हो गए इस पर हम क्या कहें। आप पोष्ट आफिस से पूछें और हमें भी लिखें। हमारी हार्दिक भावना यह है कि चाहें कार्यालय को हानि उठानी पड़े किन्तु अपने सदस्यों को नहीं। अब पुनः छाप रहे हैं जिन्हें नहीं मिला उन्हें दुबारा भेजेंगे।

सहयोग चाहिए

सार्वदेशिक साप्ताहिक के प्रकाशन में हम पूरी शक्ति से जुटे हुए हैं। अब हमें शक्ति चाहिए आपकी। ध्यान रहे आपका सहयोग ही सफलता का साधन है।

मेरे बाबा जी

ने आर्य समाज की बड़ी सेवा की थी उनका फोटू भेज दू। क्या खर्च देना होगा। यह एक सज्जन ने पूछा।

निवेदन है कि आप चित्र भेजें, कुछ खर्च नहीं पड़ेगा। हा १००-२०० प्रतिया आप चाहें तो मगा कर स्वजनों में वितरण करें।

महर्षि बोधांक

ता० २५ जनवरी से छपने लगेगा आप किन्हीं दिवंगत आर्य महानुभावों का चित्र छपाना चाहें तो तुरन्त भेज दें।

—प्रबन्धक

अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज लिखित

कल्याण मार्ग का पथिक पुनः

भारी संख्या में छाप रहे हैं!

कृपया आप अपना आर्डर तुरन्त भेजें

मूल्य वही पोस्टेज सहित १) रुपया होगा।

सात रुपये भेज कर 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' के ग्राहक बनें और 'कल्याण मार्ग का पथिक' इसी में प्राप्त करें।

महर्षि बोधांक

१—अपने मित्रों को भेंट दें
२—अपने पड़ौसियों को दें
३—विशिष्ट महानुभावों को दें
यह प्रचार का सर्वोत्तम साधन है।

धन भेजें

कृपया सार्वदेशिक का धन मनी-आर्डर से भेजने में शीघ्रता करें।

—प्रबन्धक

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

पंजाबी सूबे की आड़ में

(३)

पंजाबी सूबे की आड़ में किस प्रकार सिख राज्य स्थापित करने के गर्हित षडयन्त्र की योजना पूरी की जा रही है, इस पर हम गतांक में प्रकाश डाल चुके हैं। साथ ही हम परामर्श दाता संसदीय समिति के गठन की एकांगिता पर भी प्रकाश डाल चुके हैं। अब रह गई मन्त्रिमण्डलीय समिति—जिसके तीन सदस्य थे, श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्री यशवन्तराव चह्वाण और श्री महावीर त्यागी।

कायदे की बात यह है कि प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्रीके निधन के पश्चात् क्योंकि सारा मन्त्रिमण्डल ही अपदस्थ हो गया था इसलिए जिस हैसियत से उन्हें मन्त्रिमण्डलीय समिति में रखा गया था वह उनकी हैसियत ही समाप्त हो गई। अतः कारण के अभाव में जैसे कार्य नहीं होता वैसे ही वह समिति भी अस्तित्व शून्य हो गई।

नया मन्त्रिमण्डल गठित होने के पश्चात् स्थिति और भी विचित्र हो गई है। श्रीमती इन्दिरा गांधी अब प्रधान मन्त्री हो गई हैं और श्री महावीर त्यागी ताशकन्द समझौते के विरोध में पहले ही मन्त्रिमण्डल से इस्तीफा दे चुके हैं। प्रधान मन्त्री की हैसियत से अब श्रीमती इन्दिरा गांधी उस समिति की सदस्य नहीं रह सकतीं क्योंकि वह समिति गृहमन्त्री द्वारा नियुक्त थी-मन्त्रिमण्डल का एक सदस्य अपने नेता अर्थात् प्रधान मन्त्री को आदेश नहीं दे सकता। श्री महावीर त्यागी अब मन्त्री नहीं रहे इसलिए किसी मन्त्रिमण्डलीय समिति के सदस्य नहीं रह सकते।

अकेले श्री यशवन्त राव जी चह्वाण रह गए—जिनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया—वे पहले मन्त्रिमण्डल मे भी रक्षामन्त्री थे और अब नए मन्त्रिमण्डल में भी। यदि वे अकेले समिति में रहने का आग्रह करें तो रह सकते हैं। पर एक व्यक्ति और समिति? क्या उसे किसी प्रकार समिति कहा जा सकता है?

इस प्रकार हम समझते हैं कि श्री लालबहादुर शास्त्री का निधन होते ही मन्त्रिमण्डलीय समिति नैतिकता की दृष्टि से अस्तित्व शून्य हो गई। किन्तु यदि नैतिकता के प्रति प्रेम न हो तो व्यावहारिकता की दृष्टि से भी नए मन्त्रिमण्डल के गठन के पश्चात् पूर्व घोषित मन्त्रिमण्डलीय समिति अब सर्वथा बेकार हो गई इसलिए अब वह उस विषय पर विचार नहीं कर सकती।

जब मन्त्रिमण्डलीय समिति ही नहीं रही तब उसे परामर्श देने वाली ससदीय समिति का अस्तित्व तो स्वतः ही समाप्त हो जाता है। यह ससदीय समिति परामर्श देगी किसे? मसद को अपनी रिपोर्ट देने का उसे अधिकार है नही यह पहले ही श्री नन्दा घोषित कर चुके हैं। इसके अलावा संसद की ओर से वह समिति बनाई भी नही गई थी—वह तो श्री हुकमसिंह ने लोकसभाध्यक्ष की व्यक्तिगत हैसियत से बनाई थी। श्री हुकमसिंह केवल 'स्पीकर' हैं, समस्त लोकसभा के प्रतिनिधि नहीं हैं। स्पीकर को ही लोकसभा का प्रतिनिधि मान लेना संसत्सदस्यों के ससदीय अधिकारों का हनन होगा।

वर्तमान परिस्थिति में मन्त्रिमण्डलीय समिति और परामर्शदाता समिति इन दोनों की सत्ता अवैध है। यदि गृहमन्त्री चाहें तो दूसरी समिति की घोषणा कर सकते हैं, पर हम आशा करते हैं कि अब वे पहले से अधिक बुद्धिमान् हो गए होंगे, इसलिए पुन वही गलती नहीं दुहरायेंगे। उन्होंने जल्दबाजी में आकर उस समय जो कदम उठाया था उसे सभी क्षेत्रों में अदूरदर्शिता पूर्ण कहा गया था। परिस्थितियों ने उनकी उस अदूरदर्शिता को और उजागर ही किया है।

[क्रमश.]

नया प्रधानमन्त्री

श्री लाल बहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन के पश्चात् श्रीमती इन्दिरा गांधी देश की नई प्रधान मन्त्री बन गई हैं और उनके नए मन्त्रिमडल ने भी शपथ ग्रहण कर ली है। श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री मुरार जी देसाई के बीच जिस प्रकार चुनाव सघर्ष हुआ उसके औचित्य और अनौचित्य के सम्बन्ध मे हमे कुछ नहीं कहना, क्योंकि उसका सम्बन्ध केवल कांग्रेस की आन्तरिक राजनीति से है। परन्तु एक तटस्थ प्रेक्षक की दृष्टि से जब हम उस समस्त चुनाव कांड पर विचार करते हैं तब हमें ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस मे अब अधिनायकवाद के अकुर पूरी तरह प्रस्फुटित हो चुके हैं।

यों तो महात्मा गांधी के युग मे जिस प्रकार नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को बहिष्कृत किया गया और नेहरु-युग में जिस प्रकार श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन और आचार्य कृपलानी को कांग्रेस अध्यक्ष पद छोड़ने को बाधित किया गया, वह भी विशुद्ध तानाशाही के उदाहरण थे, परन्तु इस बार प्रधान मन्त्री के चुनाव में श्री कामराज ने जो रोल अदा किया उससे पूरी तरह स्पष्ट हो गया कि लोकमत का नारा लगाने वाली कांग्रेस के आन्तरिक सगठन में केवल एक व्यक्ति के अधिनायकवाद को ही स्थान है, कांग्रेसियों की आम जन-भावना को नहीं। कांग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज को अपने पद की हैसियत से जहा निष्पक्ष न्यायाधीश का आचरण करना चाहिए था वहां उन्होंने एक पक्ष के वकील के रूप में समस्त लोकतन्त्रीय प्रक्रियाओं को ताक पर रख दिया।

वास्तव में, इस चुनाव में श्रीमती इन्दिरा गाधी और श्री मुरार जी देसाई के मध्य सघर्ष नहीं था, सघर्ष था कामराज और मुरार जी देसाई के मध्य, दलीय स्वार्थ और निष्काम देशसेवाके मध्य, अनीति और सिद्धान्त के मध्य, तानाशाही और जन-भावना के मध्य, राजनीतिक साम्राज्यवाद और सत्ता के विकेन्द्रीकरण के मध्य, सौदेबाजी और एकान्तनिष्ठा के मध्य। इस सब में कामराज की विजय हुई, अर्थात् स्वार्थ, अनीति, तानाशाही और सौदेबाजी की विजय हुई।

परन्तु मुरार जी देसाई की पराजय को भी पराजय नहीं समझा जाना चाहिये। उन्होंने सिद्धान्त की रक्षा कर ली और श्री कामराज की समस्त जोड़-तोड़ के बावजूद उन्होंने एक-तिहाई मत प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया कि कामराज की तानाशाही एक ज्वालामुखी पर आसीन हैं और वह ज्वालामुखी चाहे जिस दिन फट सकता है।

बहरहाल हम इन्दिरा जी के प्रधान मन्त्री बनने का स्वागत करते हैं। परन्तु उनकी सेवा में इतना निवेदन और करना चाहते हैं कि अपने प्रशासन-कौशल अब से उन्हें जनता की इस धारणा को मिथ्या सिद्ध करना है कि उनमें नेहरु जी की पुत्री होने के अलावा और कोई गुण नहीं है या केवल कामराज की मोहरा हैं, या अगले चुनाव को दृष्टि में रखते हुए उन्हें केवल मत-संग्राहक (वोट-कैचर) के तौर पर प्रधान मन्त्री बनाया गया है। साथ ही उन्हें यह भी ध्यान रखना है कि स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री अपने तप और त्याग से तथा भारतीय जनता के दुःख-दर्द की गहरी अनुभूति से एव राजनीति मे 'यथायोग्य व्यवहार' के मन्त्र के समावेश से भारत के प्रधान मन्त्री पद को गौरव के जिस शिखर पर आसीन कर गए हैं, वे आपकी अदूरदर्शिता से कहीं उसे उस शिखर से नीचे न उतार दें।

नेहरु जी की नीतियों पर चलते रहने की बारम्बार दुहाई देते रहने का कोई लाभ नहीं है। नेहरु जी भी मनुष्य थे, उनसे भूलें हुई हैं। शास्त्री जी ने अपने विनीत व्यवहार से उन भूलों के परिमार्जन का प्रयत्न किया। अब यदि उस परिमार्जन-प्रक्रिया को उलट दिया गया तो देश फिर उन्हीं भूलों के आवर्त में फस जायगा जिससे निकलने के लिए वह छटपटा रहा है।

सब से बड़ी बात—उन्हें अपने जीवन मे से और प्रशासन में से अभारतीयता और अभारतीय तत्वों को बाहर निकालना होगा ताकि भारत की जनता उस शासन के साथ आत्मीयता अनुभव कर सके। उसके बिना वे जनता की विश्वास-भाजन नहीं बन सकेंगी। आखिर किसी भी शासन का असली सम्बल तो जनता ही होती है। और लोकतन्त्र में तो विशेषतः। यदि 'लोक' ही साथ नही रहा तो केवल 'तन्त्र' को साथ रखने से क्या होगा? तन्त्र तो राजतन्त्र में भी रहता हैं और अधिनायक तन्त्र में भी, परन्तु इन तन्त्रों के विरुद्ध तो जनता सदा विद्रोह ही करती आई है। कम से कम इतिहास का सबक तो यही है।

इन शब्दों के साथ हम नई प्रधान मन्त्री का पुनः स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि वे इस पद को अपनी बपौती समझने की भूल नहीं करेंगी, प्रत्युत अपनी योग्यता और कृतित्व से यह सिद्ध करेंगी कि पद और व्यक्ति दोनों एक दूसरे को पाकर सार्थक हुए हैं।

——

सामयिक-चर्चा

रूसी और चीनी बाइबिल

सोवियत संघ (रूस) और चीन राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्त्यर्थ पूर्वी और पश्चिमी अफ्रीका में बाइबिल के अपने २ संस्करणों को प्रचारित कर रहे हैं।

रूस ने एक 'सचित्र बाइबिल के नाम से सस्करण प्रचारित किया है जिसमें ईसा मसीह, जोसफ और मरियम को मिलाकर समस्त श्रेष्ठ व्यक्तियों को काली चमड़ी वाला दिखाया गया है और एक मात्र यहूदियों को सफेद चमड़ी वाला अंकित किया गया है। सम्भवतःजान बूझकर समस्त बुरे और भद्दे लोगों को पीली और वक्र दृष्टि वाला (अर्थात् चीनियो जैसे) चित्रित किया गया है।

कम्यूनिस्ट चीनियों का सस्करण न केवल पश्चिम विरोधी ही है अपितु सफेद चमड़ी विरोधी (अर्थात् रूस विरोधी) भी है।

सचित्र बाइबिल के अतिरिक्त दो अन्य सस्करण है जिनके नाम हैं— बाइबिल की कहानिया और 'सच्चा बाइबिल' सच्चे बाइबिल के प्रकाशन में ईसाई पादरियों द्वारा प्रयुक्त परम्परा गत आकार प्रकार आदि की नकल की गई है। वे अंग्रेजी, फ्रेंच, स्वाहिली और पुर्तगीज भाषाओं मे उपलब्ध हैं और सोवियत एकेडमी आव साइंसेज के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित हुए हैं।

सोवियत सांस्कृतिक विभाग ने स्वीकार किया है कि 'सच्चा बाइबिल' मूल रूसी संस्करण का अनुवाद है जिसे सोवियत एकेडमीने १९५४ में छापा था और जो प्रकृत वैज्ञानिक विशेषताओं के कारण नियम से वहां छपता रहा था। सोवियत सास्कृतिक विभाग ने इस बात को अस्वीकार किया है कि 'सचित्र बाइबिल' रूस में छपा वा सोवियत एजन्सियों द्वारा प्रचारित हुआ है।

तीसरे कल्पित बाइबिल का अफ्रीका में लाल चीन के स्रोतों द्वारा प्रचार किया जा रहा है। उसका नाम है 'बाइबिल की कहानियां।' इस बाइबिल की कहानिया सचित्र हैं। उदाहरणार्थ केन (Cain) एक अमेरिकन जवान के रूप मे चित्रित किया गया है जो एक वियतनाम एवेल (Abel) की हत्या कर रहा है। अन्य कहानियां भी इस भावना को सामने रखकर चित्रित की गई है। एक स्थल-पर फ्रांस के जवान एक नीग्रो स्त्री के साथ बलात्कार करते दिखाए गए हैं। दूसरे स्थल पर ब्रिटिश उपनिवेशवादी पूर्वी अफ्रीका मे एक नीग्रो की भूमि का अपहरण करते हैं इत्यादि २।

गोरा द्वारा प्रशासित दक्षिण अफ्रीका, रोडेसिया, मोजाम्बिक, और अगोला में इन कहानियों में खून बहता हुआ दिखाया गया है। कुदाल और घन के चिन्हों से परिवेष्टित एक मात्र कम्यूनिस्ट ही अच्छे व्यक्ति दिखाए गए हैं। रूस के 'सच्चे बाइबिल' मे ईसाइयों के बाइबिल की झूठी बातों का पर्दा फाश किया गया है जिनको ईसाई मिशनरी साम्राज्य वाद के प्रकार का मार्ग साफ करने के लिए अफ्रीका के निवासियों मे प्रचार करते हैं।

रूसी बाइबिल के रचयिताओं ने प्रारम्भ की इस स्थापना का परित्याग कर दिया है कि 'ईसा का अस्तित्व ही न था।' इस बाइबिल में ईसा, उसके पिता और माता मरियम का वर्णन मिलता है। इसमें दिखाया गया है कि ईसा ने निर्धनों और पीड़ितों की ओर से शान्ति पूर्ण सघर्ष के लिए एक सामाजिक वर्ग का निर्माण किया था।

चीनी कम्यूनिस्टों का दावा है कि ईसा मसीह मुख्यतः 'मार्क्सवादी' क्रान्तिकारी और पीड़ित जनों का नेता था जिसने अन्याय और तत्कालीन समाज व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह किया था जिसके फल स्वरूप निहित स्वार्थों और भ्रष्ट यहूदी पडो और पुरोहितों द्वारा वह रोमन राज्याधिकारी के सुपुर्द कर दिया गया था। जिन्हे भय था कि धर्म पर से उनका एकाधिकार छिन जाने से उनकी आय और शक्ति के स्रोत बन्द हो जायेंगे अत उन्होंने उसे सूली पर चढ़वा दिया था।

सोवियत रूस के 'सच्चे बाइबिल' में यह घोषणा की गई है कि प्रतिक्रिया वादियों और सामन्त वर्गों ने एक उपकरण के रूप में ईसाइयत का आविष्कार किया था। उन्होंने ईसा के आदर्शवाद की चोरी करके शताब्दियों पर्यन्त अपने गर्हित उद्देश्यों की पूर्ति के लिये उसका प्रयोग करके उसे विकृत रूप दे दिया था।

इस 'सच्चे बाइबिल' मे 'धर्म युद्ध' धार्मिक साम्राज्यवाद के रूप मे 'पवित्र न्यायालय' धार्मिक नजर बदो के अत्याचारी केम्प के रूप में प्रस्तुत किए गए है। इसके बाद ईसाई मिशनरी आए जिन्होंने युरोप की साम्राज्यवादी शक्तियों के हरावल बनकर अफ्रीका और एशिया में उपनिवेशवाद की जड़ मजबूत की। अब भी वे नए उपनिवेशवाद की ओर से यही कार्य कर रहे हैं। यदि आज ईसा हमारे मध्य मे आ जाय तो वह उन दुष्ट व्यक्तियों को मार भगायेगा जो उसके नाम पर अफ्रीका के लोगो का दोहन और उनपर अत्याचार कर रहे हैं।

सूचना मिली है कि सोवियत रूस का इस प्रकार का प्रौपेगण्डा बड़ा व्यापक और प्रभावशालीहै और इसका ईसाई मिशन द्वारा प्रशिक्षित बुद्धिजीवी नव युवक वर्ग पर बड़ा प्रभाव पड़ रहा है जो 'परिवर्तन की हवा' से सहज ही प्रभावित हो जाते हैं।

ईसा ने देखा कि चीनी बाइबिल मे कहा गया है कि समझाने बुझाने के शान्ति पूर्ण उपायों से गरीब जनता के लिए न्याय की प्राप्ति सभव नहीं है अत. उसने अधिक उग्र और क्रान्तिकारी उपायों का आश्रय लिया जिसके कारण तत्कालीन समाज-व्यवस्था और प्रतिक्रियावादी यहूदी मत के आर्थिक स्वार्थो को खतरा उपस्थित हो गया। चीनी कम्यूनिस्टों का गोरों विरोधी और धर्म विरोधी यह बाइबिल कोई प्रभाव नहीं डाल रहा है। इस पर भी लाल चीन वाले अपने प्रयत्न में लगेहैं चीनी कम्यूनिस्टों द्वारा प्रकाशित एक ट्रैक्ट जिस का नाम 'गुरिल्ला बाइबिल' रखा गया है बडा लोक प्रिय हो रहा है।

यह है ईसाइयत के अस्त्र से ही ईसाइयत का गला काटे और धर्म का दोहन किए जाने का एक ज्वलन्त उदाहरण। पिछड़े क्षेत्रों में ईसाई पादरियों के कारनामों का वर्णन करते हुए एक पाश्चात्य मनीषी ने कहा था कि वहां पहले बाइबिल भेजा जाता है उसके बाद व्यापार और अन्त में फौज। ये तीनों तत्त्व मिलकर उन क्षेत्रों को राजनैतिक परतत्रता की जंजीर में बांध कर साम्राज्य वाद के प्रसार और उसकी दृढ़ता का कारण बन जाते हैं। कम्यूनिस्ट भी अपने पैर जमाने और उन्हें कम्यूनिज्म का गढ़ बनाने के लिए यदि उन्हीं हथकडो को अपनाएं तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। यदि इससे ईसाई पादरियों की आंखें न खुलें तो निश्चय ही यह आश्चर्य की बात होगी।

श्री त्यागी जी का त्याग-पत्र

केन्द्रीय पुनर्वास मन्त्री श्रीयुत महावीर त्यागी ने ताशकन्द घोषणा की कुछ धाराओं के प्रतिवाद स्वरूप त्याग पत्र देकर और केन्द्रीय मडल से पृथक् होकर एक स्वस्थ परम्परा स्थापित की है। उनकी सबसे बड़ी वैधानिक आपत्ति यह थी कि काम चलाऊ मन्त्री मन्डल उस घोषणा का समर्थन करने के लिए अधिकृत न था इस प्रकार की घोषणा करने का अधिकार नियमित रूप से बने हुए मन्त्री मण्डल को ही हो सकता था। अपनी आत्मा की आवाज का अनुसरण करने में श्री त्यागी जी ने जिस साहस एव त्याग का परिचय दिया है वह प्रशसनीय है। इसका एक परिणाम यह भी हुआ कि ताशकन्द घोषणा के विरुद्ध विरोध का जो बवडर उठा था उसकी उग्रता मन्द पड़ गई और कांग्रेस की प्रतिष्ठा की कुछ न कुछ तात्कालिक रक्षा भी हो गई।

श्री त्यागी जी का त्याग पत्र उस समय सामने आया जबकि रावल पिंडी में ताशकन्द घोषणा को लेकर उपद्रव हुए थे। इन दोनों बातों से यह सकेत अवश्य मिला कि भारत और पाकिस्तान दोनों में इस घोषणा के सम्बन्ध मे भय और सन्देह विद्यमान है और इसका क्रियान्वन सरल न होगा।

यतः यह घोषणा दोनो ओर से रिआयतो पर आश्रित है जिससे भारत की अधिक क्षति की सम्भावना है अत. गर्म और नर्म दोनों पक्षों की ओर से इसका विरोध होना आश्चर्य जनक नही है। श्री त्यागी जी की भाति इस घोषणा के सम्बन्ध में सोच ने वाले अनेक देशवासी हैं। हाजीपीर दर्रे से भारतीयो का हट जाना और घुसपैठियों के निष्कासन की कोई व्यवस्था का न होना इस घोषणा के सबसे अधिक आपत्तिजनक अग हैं। इससे भारतीय नागरिको एवं सैनिकों का निराश होना स्वाभाविक है।

अन्तर्राष्ट्रीय सदभाव और शांति की रक्षा की दिशा में यह घोषणा एक आवश्यक कदम हो सकती है परन्तु यदि भारत को इसकी बड़ी से बड़ी कीमत चुकानी पड जाय और पाकिस्तान अपने मतलब की इसकी ऊटपटांग व्याख्या करने लग जाय तो इससे शान्ति खतरे में भी पड़ सकती है। रघुनाथप्रसाद पाठक

धर्मराज युधिष्ठिर के सम्बन्ध में ५ हजार वर्षों का उलझा हुआ प्रश्न

चतुरसेन गुप्त

आज से लगभग ५००० वर्ष पूर्व भारत के राजघराने में राज्याधिकार के लिए एक घोर युद्ध हुआ था, जिसे महाभारत कहा गया है।

महाभारत के सूत्रधार भगवान् श्री कृष्ण राष्ट्रकुल में उत्पन्न हुए इस विवाद को सुलझाने मे अत्यन्त प्रयत्नशील थे। धर्मराज युधिष्ठिर की सलाह पर केवल पाँच गाव पर ही फैसला करने के लिए राजदूत के रूप में कर्मवीर कृष्ण ने सत्तारूढ़ महाराज धृतराष्ट्र और उनके पुत्रों को समझाने का यत्न किया किन्तु भारत का हत-भाग्य! दुर्योधन पांच गांव तो क्याबिना युद्ध के सूई के अग्रभाग जितनी भी भूमि देने को तय्यार नहीं हुआ। निराश होकर श्री कृष्ण को खाली हाथ लौटना पडा? अन्त में भारत के सर्वनाश का वह क्रूर काल आ ही गया जब राज्याधिकार के लिए दोनों कुलों की सेनाएँ कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध के लिए उपस्थित हो गई।

युद्ध-युद्ध ही होता है, युद्ध प्रेम या प्यार की चीज नहीं युद्ध तो तभी होता है जब एक दूसरे के प्रति घोर शत्रुता उत्पन्न हो जाय। शत्रुता तभी उत्पन्न होती है जब भाई-भाई के नारे समाप्त हो जांय, सद्भावना, शिष्ट मण्डल व्यर्थ हो जाय, विरोध पत्र भी रद्दी के टोकरे में फैंक दिये जाय, तभी युद्ध का श्री गणेश होता है अन्यथा नहीं।

जब एक बार युद्धभूमि में आ ही गये तब शत्रु को शत्रु न समझना अथवा पहल शत्रु करे तो हम बचाव करें की नीति पर चलना, मृत्यु को स्वयं निमन्त्रण देना है। युद्ध में हारना और अपने राष्ट्र का स्वय सहार करना है। विश्व का इतिहास साक्षी है कि हमलावर विजयी होता रहा है और बचाव की लड़ाई लड़ने वाला पिटता रहा है। अतः जब युद्ध के मैदान में आ ही गये तब प्रतीक्षा किस बात की। युद्ध में तो विजय प्राप्ति ही एक मात्र लक्ष्य होता है।

युद्ध में विजय पाने के लिए क्षत्रिय के लिए सभी प्रकार के व्यवहार उचित माने गए हैं उसमें अर्थ-अनर्थ की शका, झूठ, छल, धोखा और कपट मे लज्जा एव अपने पराये का मोह यह सब युद्धविजयाभिलाषी के लिए खतरनाक हैं। भारतीय इतिहास ऐसी अनेक घटनाओं से भरा पड़ा है कि जब अधर्म की शका से युद्ध मे हार और निशक होकर किसी भी साधन से विजय के इच्छुक विजयी हुए।

त्रेतायुग में मर्यादापुरुषोत्तमराम का वृक्ष की ओट में छिपकर बाली को मारना, लक्ष्मण द्वारा शूर्पनखा की नाक पर हाथ साफ करना, महावीर हनुमान द्वारा लंका दहन की घटना इस बात के प्रमाण हैं कि शत्रु को पर विजय प्राप्त की थी।

आधुनिक युग के महान् तत्ववेता आर्यसमाज संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा की गई युद्ध में क्षत्रिय के लिये व्यवस्था पर भी ध्यान दें। सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास मे ऋषि लिखते हैं:—

"युद्ध मे भी दृढ़ नि.शक रहकर उससे कभी न हटना न भागना, अर्थात् इस प्रकार से लडना कि जिससे निश्चित विजय होवे, आप बचे, जो भागने से वा शत्रुओं को धोखा देने मे जीत होती हो तो ऐसा ही करना।"

फिर महाभारत में अनेक अवसरों पर भगवान् कृष्ण ने इसी नीति का पालन किया था। भीम द्वारा जरासध का वध करवाने मे भी यही तो नीति थी कि जिस प्रकार हो – शत्रु को नष्ट करना।

> युद्ध के मैदान मे भगवान् श्री कृष्ण के आग्रह पर धर्मराज का झूठ बोलना और इसे अपराध मानकर धर्मराज को नरक की सैर कराना जहा भगवान् कृष्ण का घोर अपमान है वहां राष्ट्र की क्षात्र शक्ति को, क्षात्र धर्म से विमुख कर राष्ट्र को शत्रुओं द्वारा पद दलित करना है कृपया इस लेख पर विचार करें।
>
> —सम्पादक

किसी भी प्रकार से मारने और विध्वस करने में शका नही करनी।

आर्य जाति के आद्य महान् राजनीतिज्ञ भगवान् मनु अ०। १०६ में कहते हैं कि:—

बक वच्चिन्तयेदर्थान् सिंहवच्च पराक्रमेत्। वृक वच्चावलुम्पेत शशवच्च विनिष्पतेत ॥

बगले की भाति अपने प्रयोजनों का चिन्तन करे, सिंह की भाति पराक्रम करे, भेडिये की भाति छिपकर वार करे और खरहा की भांति भाग जाय।

महाभारत आदिपर्व अ० १४०।१० मे कहा हैं —

सुविदीर्णं सुविक्रान्त,सुयुद्ध सुपलायिनम्॥ आपद्यापदि काले च कुर्वीत न विचारयेत।

जब-जब आपत्ति आये तब तब समय के अनुसार तोड़-फोड़, श्रेष्ठ विक्रम, प्रबल युद्ध तथा युक्ति पूर्वक पलायन (युद्ध छोडकर भागना) भी कर ले। इसमें विचार न करें।

इसी नीति पर आचार्य चाणक्य एवं छत्रपति शिवाजी आदि ने शत्रुओं

इतना सब कुछ होने पर भी पता नही क्यों? हजारो वर्षों से हिन्दू समाज मे यह धारणा घर कर गई कि धर्मराज युधिष्ठिर ने द्रोण पुत्र अश्वत्थामा को मृत घोषित करके बडा भयकर पाप किया था जिस कारण धर्मराज को नरक की हवा खानी पडी। इस भ्रान्त धारणा का भयानक परिणाम हिन्दू राष्ट्र को समय-समय पर भोगना पडा और आज तक भोगता रहा है।

भला विचारिये तो सही कि जो भगवान कृष्ण पाण्डवों के विजयाभिलाषी हों, युद्ध की बागडोर सभाले हुए हो और जिन्होंने यह अनुभव कर लिया हो कि यदि आचार्य द्रोण इसी प्रकार हमारी सेनाओं का सहार करते रहे तो हमारी पराजय निश्चित है ऐसी दशा में भगवान् कृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को समझा बुझाकर उनसे "अश्वत्थामा हत." की घोषणा करा कर कौन सा अपराध किया था उन्होंने तो युद्ध मे हो रही पराजय को विजय में परिणत करके महान् राजनीतिज्ञता, कुशल सेनापतित्व और युद्ध धर्म का ठीक आदर्श उपस्थित किया था।

जब श्री कृष्ण के इस आदेश को युधिष्ठिर ने शिरोधार्य करके द्रोण पुत्र के मृत होने की घोषणा कर दी तब युधिष्ठिर को नरक में भेजने का प्रचार करना भगवान श्री कृष्ण का घोर अपमान करनाहै। भला यह कहां की बुद्धिमत्ता और न्याय है कि युधिष्ठिर को प्रेरित करने वाले श्रीकृष्ण को नरक भेजने में तो महाभारत कार मौन, हजारों वर्षो से हिन्दू जाति भी मौन! किन्तु विचारे धर्मराज को नरक। इस घटना पर आर्य जाति को विचार करना ही पड़ेगा।

प्रस्तुत लेख में महाभारत से अनेक प्रमाण दिये हैं जिनसे यह सिद्ध होगा कि भगवान कृष्ण सत्य किसे मानते हैं और असत्य किसे।

महाभारत से अनेक ऐसे भी प्रमाण दिये हैं जिनसे सिद्ध होगा कि धर्मराज युधिष्ठिर ने अनेक अवसरों पर किसी के कहने से नहीं—आप ही स्वेच्छा से कई मिथ्या बातें कहीं और कहलाई थीं—यद्यपि वे मिथ्या बातें भी पापोत्पादक नहीं—किन्तु उतनी ही आवश्यक थीं जितनी युद्ध के मैदान में।

यह भी स्पष्ट कर दूं कि महाभारत से जितने भी प्रमाण यहा दिये जा रहे हैं वह सब गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित महाभारत के आधार पर ही हैं अपनी ओर से कुछ नहीं।

सत्यासत्य की व्याख्या

सत्य-असत्य का विवेचन करते हुए श्रीकृष्ण जी महाभारत कर्णपर्व अध्याय ६९।३२ में कहते हैं. —

प्राणिनामवधस्तात सर्व ज्यायान् मतो मम। अनृतां वा वदेद् वाच न तु हिंस्यात् कथचन ॥

म० कर्ण० ६९। २३

तात! मेरे विचार से प्राणियों की हिंसा न करना ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है। किसी की प्राण रक्षा के लिये झूठ बोलना पड़े तो बोल दे, किन्तु उसकी हिंसा किसी तरह न होने दे।

भवेत सत्यमवक्तव्य वक्तव्यमनृत भवेत्। यत्रानृतं भवेत् सत्यं सत्यं चाप्यनृत भवेद् ॥ ३२ ॥

अर्थ—जहां मिथ्या बोलने का परिणाम सत्य बोलने के समान मंगल कारक हो अथवा जहा सत्य

(अगले पेज पर भी)

बोलने का परिणाम असत्य भाषण के समान अनिष्टकारी हो, वहां असत्य बोलना ही उचित होगा।

विवाह काले रति सम्प्रयोगे प्राणात्यये सर्व धनापहारे। विप्रस्यचार्थे ह्यनृत वदेत पञ्चानृतान्याहुर पातकानि ॥ ३३ ॥

अर्थ—विवाह काल में, स्त्री प्रसङ्ग के समय, किसी के प्राणों पर सङ्कट आने पर, सर्वस्व का अपहरण होते समय तथा ब्राह्मण की भलाई के लिये आवश्यकता हो तो असत्य बोल दे, इन पांच अवसरों पर झूठ बोलने से पाप नहीं होता।

सर्वस्वस्यापहारे तु वक्तव्यमनृत भवेत्। तत्रानृत भवेत् सत्यं सत्य चाप्यनृत भवेत् ॥ ३६ ॥

अर्थ—जब किसी का सर्वस्व छीना जा रहा हो तो उसे बचाने के लिये झूठ बोलना कर्त्तव्य हैं। वहा असत्य ही सत्य और सत्य ही असत्य हो जाता है। जो मूर्ख है, वही यथा-कथचित व्यवहार में लाये हुए एक जैसे सत्य को सर्वत्र आवश्यक समझता है।

भवेत् सत्यमवक्तव्यं न वक्तव्य-मनुष्ठितम। सत्यानृते विनिश्चित्य ततो भवति धर्मवित् ॥ ३५ ॥

अर्थ---केवल अनुष्ठान में लाया गया असत्यरूप सत्य बोलने योग्य नही होता, अतः वैसा सत्य न बोले। पहले सत्य और असत्य का अच्छी तरह निर्णय करके जो परिणाम मे सत्य हो उसका पालन करे। जो ऐसा करता है वही धर्म का ज्ञाता है।

आगे चलकर श्रीकृष्ण ने फिर सत्यासत्य की व्याख्या करते हुए कहा कि ---

अवश्या कूजितव्ये वा शङ्केरन्नप्य-कूजत। श्रेयस्तत्रानृत वक्तु तत् सत्यमविचारितम् ॥ ६० ॥

अर्थ—किन्तु यदि बोलना अनिवार्य हो जाय अथवा न बोलने से लुटेरो को सन्देह होने लगे तो वहा असत्य बोलना ही ठीक है। ऐसे अवसर पर उस असत्य को ही बिना विचारे सत्य समझो।

यः स्तेनैः सह सम्बन्धान्मुच्यते शपथैरपि। श्रेयस्तत्रानृतं वक्तुं तत् सत्यमविचारितम् ॥६३॥

अर्थ – जो झूठी शपथ खाने पर भी लुटेरों के साथ बन्धन मे पड़ने से छुटकारा पा सके, उसके लिये वहां असत्य बोलना ही ठीकहै। उसे बिना विचारे सत्य समझना चाहिए।

न च तैभ्यो धनं देयं शक्ये सति कथंचन। पापेभ्यो हि धनं दत्तं दातार-मपि पीडयेत् ॥६४॥

अर्थ—जहां तक वश चले, किसी तरह उन लुटेरों को धन नहीं देना चाहिये, क्योंकि पापियों को दिया हुआ धन दाता को भी दुःख देता है।

तस्माद् धर्मार्थमनृतमुक्त्वा नानृत भाग भवेत् ॥६५॥

अतः धर्म के लिये झूठ बोलने पर मनुष्य असत्य भाषण के दोष का भागी नही होता।

भगवान कृष्ण द्वारा सत्यासत्य की व्याख्या के पश्चात् अब उस प्रकरण पर भीध्यानदें जब श्रीकृष्ण के समझाने पर धर्मराज को झूठ बोलना पड़ा था। कुन्ती के पुत्रोंको द्रोणाचार्य के बाणो से पीडित एव भयभीत देख कर उनके कल्याण में लगे हुए बुद्धि-मान भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से इस प्रकार कहा —

नैष युद्धे न संग्रामे जेतुं शक्य. कथञ्चन। स धनुर्धन्विनां श्रेष्ठो देवैरपि सवासवैः ॥

म० द्रोणपर्व अ० १९०।१०

पार्थ ! ये द्रोणाचार्य सम्पूर्ण धनुर्धरों में श्रेष्ठ हैं, जब तक इनके हाथों मे धनुष रहेगा, तब तक इन्हें युद्ध में इन्द्र सहित सम्पूर्ण देवता भी किसी प्रकार जीत नहीं सकते।

न्यस्तशस्त्रस्तु संग्रामे शक्यो हन्तु भवेन्नृभि.। आस्थीयतां जये योगो धर्ममुत्सृज्य पाण्डवा ॥ यथा वः सयुगे सर्वान् न हन्याद् रुक्मवाहन ॥११॥

जब ये सग्राम में हथियार डाल देंगे, तभी मनुष्यों द्वारा मारे जा सकते हैं। अत. पाण्डवो ! 'गुरु का वध करना उचित नहीं है' इस धर्म भावना को छोडकर उन पर विजय पाने के लिए कोई यत्न करो, जिससे सुवर्णमय रथ वाले द्रोणाचार्य तुम सब लोगो का वध न कर डालें।

अश्वत्थाम्नि हते नैष युध्येदिति मतिर्मम। त हत सयुगे कश्चिदस्मै शसतु मानव ॥१२॥

मेरा विश्वास है कि अश्वत्थामा के मारे जाने पर ये युद्ध नहीं कर सकते। कोई मनुष्य उनसे जाकर कहे कि "युद्ध मे अश्वत्थामा मारा गया।"

एतन्नारोचयद् राजन् कुन्ती पुत्रो धनजय। अन्ये त्वरोचयन् सर्वे कृच्छ्रेण तु युधिष्ठिर. ॥१३॥

राजन् ! कुन्ती पुत्र अर्जुन को यह बात अच्छी नहीं लगी किन्तु अन्य सब लोगों ने इस युक्ति को पसद कर लिया। केवल कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर बड़ी कठिनाई से इस बात पर राजी हुए।

ततो भीमो महाबाहुरनीके स्वे महागजम्। जघान गदया राजन्न-श्वत्थामानमित्युत ॥१४॥

राजन् ! तब महाबाहु भीमसेन ने अपनी ही सेना के एक विशाल हाथी को गदा से मार डाला। उसका नाम था—अश्वत्थामा।

भीमसेन उस हाथी को मार कर लजाते लजाते युद्धस्थल मे द्रोणाचार्य के पास गये और बड़े जोर से बोले अश्वत्थामा मारा गया। भीमसेन की इसघोषणा से द्रोणाचार्य सन्न रह गये किन्तु अपने पुत्र के बल का उन्हें ज्ञान था, उन्होंने समझा कि यह झूठी बात है। द्रोण बड़े वेग से अपने युद्ध कौशल करते रहे। तदन्तर श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा. —

यद्यर्धं दिवस द्रोणो युध्यते मन्यु-मास्थितः। सत्य ब्रवीमि ते सेना विनाशं समुपैष्यति ॥४५॥

राजन् ! यदि क्रोध में भरे हुए द्रोणाचार्य आधे दिन भी युद्ध करते रहें, तो मैं सच कहता हू, तुम्हारी सेना का सर्वनाश हो जावेगा।

स भवांस्त्रास्तु नो द्रोणात् सत्या-ज्ज्यायोऽनृतं वच.। अनृत जीवित-स्यार्थे वदन्न स्पृश्यतेऽनृतैं ॥४७॥

अत' तुम द्रोणाचार्य से हम लोगों को बचाओ, इस अवसर पर असत्य-भाषण का महत्व सत्य से भी बढ़ कर हैं। किसी की प्राण रक्षा के लिये यदि कदाचित् असत्य बोलना पड़े तो उस बोलने वाले को झूठ का पाप नहीं लगता।

श्रीकृष्ण जी युधिष्ठिर से यह कह ही रहे थे कि बीच में ही भीमसेन ने युधिष्ठिर से कहा कि मैंने एक हाथी मारकर आचार्य द्रोण के पास जाकर घोषणा की कि अश्वत्थामा मारा गया किन्तु आचार्य ने मेरी घोषणा पर विश्वास ही नही किया। अत. आप विजय चाहने वाले भगवान् कृष्ण की बात मान लीजिये और द्रोणाचार्य से कह दीजिये कि "अश्वत्थामा मारा गया।" आपके कहने पर द्रोण युद्ध नहीं करेंगे क्योंकि आप सत्यवादी के रूप मे विख्यात हैं।

तस्य तद् वचन श्रुत्वा कृष्ण-वाक्य प्रचोदितः। भावित्वाच्च महा-राज वक्तु समुपचक्रमे ॥५४॥

भीम की यह बात सुनकर श्रीकृष्ण के आदेश से प्रेरित हो भ विवश राजा युधिष्ठिर वह झूठी बात कहने को तय्यार हो गये।

तमतथ्यभये मग्नो जये सक्तो युधिष्ठिरः। अश्वत्थामा हत इति शब्द मुच्चैश्चकार ह। अव्यक्तमब्रवीद् राजन् हतः कुञ्जर इत्युत ॥५५॥

एक ओर तो वे असत्य के भय में डूबे हुए थे और दूसरी ओर विजय की प्राप्ति के लिये भी आसक्ति पूर्वक प्रयत्न शील थे, अतः राजन् ! उन्होंने 'अश्वत्थामा मारा गया' यह बात तो उच्चस्वर से कही, परन्तु 'हाथी का वध हुआ है' यह बात धीरे से कही।

धर्मराज की इस घोषणा से आचार्य द्रोण पुत्र शोक मे डूब गए और युद्ध के मैदान से हट गये।

धर्मराज द्वारा इस मिथ्या भाषण के कारण उन्हें नरक मे कैसे जाना पड़ा जरा उस प्रसग पर भी विचार करें। महाभारत स्वर्गारोहण पर्व के अध्याय ३ मे इन्द्र ने धर्मराज युधिष्ठिर से कहा —

व्याजेन हि त्वया द्रोण उपचीर्णः सुत प्रति। व्याजेनैव ततो राजन् दर्शितो नरकस्तव ॥१५॥

राजन् ! तुमने गुरुपुत्र अश्वत्थामा के विषय मे छल से काम लेकर द्रोणाचार्य को उनके पुत्र की मृत्यु का विश्वास दिलाया था, इसलिये तुम्हें भी छल से नरक दिखलाया गया है।

नरक की यह घटना महाभारत कार को कहां से और कैसे विदित हुई, कौन नरक से आकर बता गया, इस पर भी महाभारतकार मौन हैं। किन्तु इस नरक की घटना से जहा धर्मराज युधिष्ठिर को हजारों वर्षों से मिथ्यावादी कह कर पुकारा जाता रहा है और जहा इस नरक के डर की भावना से हिन्दू साम्राज्य और हिन्दू सम्राट् परास्त होते रहे हैं वहां कर्मवीर, योगेश्वर श्री कृष्ण की व्यवस्था और वचनो का भी अपमान होता रहा है।

अब कृपया महाभारत के उन स्थलों पर भी गम्भीरता से विचार करें जहां धर्म राज युधिष्ठिर ने स्वेच्छा से अनेक वार स्वय और भाइयों से मिथ्या बुलवाकर आने वाले सर्वस्वहरण के खतरे से अपनी रक्षा की थी। वह घटनाएं यह हैं .--

बारह वर्ष के बनवास की समाप्ति के पश्चात् एक वर्ष के लिए अज्ञात वास में जाने का विचार करते हुए पाडवों ने यह निश्चय किया कि हमें राजा विराट् की राजधानी में चलना चाहिए। इस विचार से युधिष्ठिर ने अपने साथी पुरोहित धौम्य जी, रसोइयों पाकशालाध्यक्ष, आदि तथा द्रौपदी की सेवा करने वाली स्त्रियों को आदेश दिया कि आप लोग

(शेष पेज १४ पर)

खेमकरण के मोर्चे का शहीद

कैप्टन सुरेन्द्र कुमार

श्री कपिलदेव जी शास्त्री, मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल भैंसवाल, रोहतक

१५ सितम्बर को लाहौर के अग्रिम मोर्चे से कप्तान सुरेन्द्र कुमार ने अपने पिता मा० तेगराम को पत्र लिखते हुए लिखा "इस समय हमने दुश्मन की बिल्कुल कमर तोड़ दी है। हमारी शक्ल देखते ही पाकिस्तानी सिपाही दौड़ते हैं। इस समय हम लाहौर के काफी पास हैं, अगले हुक्म का इन्तजार है।"

तीन सितम्बर को क० सुरेन्द्र कुमार अपनी बटालियन के साथ फीरोजपुर से अमृतसर गया। उनकी बटालियन ने छः सितम्बर के प्रात.काल बाघा बार्डर से पाकिस्तानी सेना पर आक्रमण किया। कप्तान सुरेन्द्र कुमार भारतीय सैन्य के अग्रिम दस्तों के साथ पाकिस्तानी फौज को पीछे धकेलते हुए १३ मील पाकिस्तानी सीमा के अन्दर घुसकर बर्की से भी आगे निकल गये। इसी समय सुरेन्द्र कुमार और उनकी बटालियन को हुक्म हुआ कि वे बर्की के मोर्चे से वापिस आकर खेमकरन का मोर्चा संभालें जहां पाकिस्तानी सेना सीमा के अन्दर छ मील तक घुस आई थी।

उन्नीस सितम्बर की रात को कप्तान सुरेन्द्र कुमार अपनी सेना की टुकड़ी के साथ खालड़ा सैक्टर मे राजोके नामक भारतीय गाव मे पहुचे। राजोके पाक सीमा से डेढ मील अन्दर भारतीय सीमा में है। राजोके गाव से दूसरी ओर पाकिस्तानी फौजें डटी खड़ी थी।

बीस सितम्बर के प्रात.काल छ. बजकर दस मिनट पर पाकिस्तान की सेना पर सुरेन्द्र कुमार की बटालियन ने जबरदस्त आक्रमण किया। ६ घण्टे के भयकर युद्ध के बाद भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तानी सैन्य दल को छः मील पीछे खेमकरण की ओर धकेल दिया! २१ सितम्बर को दोनो सेनाओं मे फिर भीषण युद्ध हुआ, सुरेन्द्र कुमार अपनी बटालियन का नेतृत्व करते हुए पाकिस्तानी सेना को शिकस्त पर शिकस्त दे रहे थे, वे अपने सिपाहियों को बढावा देते हुए पाकिस्तानी सैन्य बल पर टूट पड़े, इसी समय उनके सीने पर मशीनगन की पाच गोलिया लगी, ठीक १०-४५ पर क.सुरेन्द्रकुमार धराशायी होगये। जमीन पर गिरने से पहले सुरेन्द्रकुमार ने अपनी सेना को आगे बढने के लिए ललकारा। पाकिस्तानी फौज मैदान छोड कर भाग खडी हुई।

रणक्षेत्र से सुरेन्द्र कुमार को पट्टी हस्पताल पहुंचाया गया। २१ ता० की रात्रि उन्होंने मिलट्री हस्पताल में गुजारी। २२ ता० की रात को कप्तान सुरेन्द्र कुमार फीरोजपुर के मिलिट्री होस्पिटल में पहुचा दिए गये। २३ सितम्बर को प्रात नौ बजे कप्तान सुरेन्द्र कुमार क्षत्रिय धर्म का निर्वाह करते हुए स्वर्ग सिधार गये और उनका शरीर दाहकर्म के लिए दक्षिण पश्चिम पजाब की विख्यात अन्न मण्डी अबोहर मे लाया गया। अबोहर की आबादी पचास हजार के लगभग है।

मातृभूमि पर शहीद होने वाले कप्तान सुरेन्द्र कुमार की अन्तिम क्रिया मे सम्मिलित होने के लिए अबोहर की जनता उमड पड़ी। अरथी के साथ तीस हजार के लगभग भीड थी और दाहक्रिया के बाद अगले दिन प्रात शहीद सुरेन्द्र कुमार की चिता की राख अनेक घरों मे लाई गई।

चार अक्टूबर १९६५ को कप्तान सुरेन्द्र कुमार की तेरहवीं के दिन कई हजार व्यक्ति पजाब राजस्थान और उत्तर प्रदेश से अपनी 'अन्तिम श्रद्धांजलि देने आये हुए थे। पजाब के गृहमत्री सरदार दरबारासिंह ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा पजाब हजारों साल से देश की रक्षा का प्रहरी रहा है। यहा के नौजवानो ने हमेशा ही अपना बलिदान देकर राष्ट्र की रक्षा की है। मा० तेगराम पिछले चौंतीस वर्ष से अबोहर फाजिलका इलाके की सेवा मे लगे हुए हैं। उन्होने चौंतीस-पैंतीस वर्ष मे वह कार्य नही किया जो कप्तान सुरेन्द्र कुमार सत्रह दिन मे करके दिखा गये। मैं पजाब सरकार की ओर से मा० तेगराम जी को आश्वासन दिलाना चाहता हू कि पजाब सरकार अपने शहीदों की याद के लिए हर सभव उपाय करेगी।

इसी प्रकार श्री केशवदेव मालवीय भूतपूर्व मत्री भारत सरकार, श्री इकबालसिंह जी एम० पी० गुरु मीतसिंह जी राज्यमत्री पजाब सरकार आदि ने अपनी श्रद्धांजलिया अर्पित की।

जिस समय मा० तेगराम जी ने अपने इकलौते पुत्र की प्रेरणा दायक बलिदान गाथा सुनाई और यह कहा कि अबोहर की विशाल सभा मे पच्चीस दिन पहले मैंने जो बात कही थी कि "प्रभु ने मुझे एक ही बेटा दियाहै, जीवनभरमें मैंने एक ही निधि सञ्चित की है और वह है मेरा पुत्र सुरेन्द्रकुमार। देश के इस आड़े समय मे मैंने वह मातृभूमि की बलिवेदी पर चढा दिया। मैं सारी उम्र फकीरों की तरह रहा हू और आज सचमुच मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने बेटे की बलि देकर फकीर हो गया हूं। मेरे बुढापे का सबल सुरेन्द्र कुमार तो नहीं रहा पर मेरा सहारा अबोहर की यह जनता होगी जिसकी सेवा मे मेरा सारा जीवन व्यतीत हो गया।"

सभा में मैंने (कपिलदेव शास्त्री) प्रधान मत्री लालबहादुर शास्त्री, सूचना मत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी, रक्षामत्री श्री बलवन्तराव यशवन्तराव चह्वाण, स्थल सेनाध्यक्ष जनरल जयन्तनाथ चौधरी, पजाब के मुख्यमंत्री कामरेड रामकिशन आदि के सदेश पढ़कर सुनाए। प्रधानमत्री लालबहादुर शास्त्री ने लिखा "तेगराम जी! आपके इकलौते पुत्र ने युद्धभूमि में वीरगति पाई है, ऐसा जानकर कष्ट हुआ, भारत मा की रक्षा के लिए कप्तान सुरेन्द्र कुमार जैसे युवकों ने जो बलिदान किये हैं, उन पर राष्ट्र को गौरव है।" श्रीमती इन्दिरा गाधी ने लिखा, "मैं अभी युद्ध के अग्रिम मोर्चे से होकर आईहूं,भारत पाक सीमा युद्ध में भारत की सेना ने जो पराक्रम दिखाया उसकी तुलना ससार के इतिहास मे मिलनी कठिन है। थर्ड नाईन जाट की वीरता की कहानी मैंने मोर्चे पर अनेक लोगों से सुनी, आपका बेटा युद्ध क्षेत्र मे काम आया, मां के दर्द को मैं समझती हू उनके साथ मेरी पूरी हमदर्दी है।

खेमकरण के युद्धक्षेत्र मे राजोके अमर कोट, महमूदपुरा आदि गावों मे प्रत्यक्षदर्शी के तौर पर मैंने देखा कि भारतीय सीमा के एक मीलसे ८ मील के भीतरी क्षेत्र मे चारों ओर युद्ध के विनाश चिह्न बिखरे पड़े हैं। जहां तक नजर जाती थी दूर दूर तक पाकिस्तानी सैन्य दल के विशाल पैटन टैंक यत्र तत्र बिखरे पड़े थे जिनको ढो ढोकर अब भी खीविण्ड नामक

गाव के पास एकत्रित किया जा रहा है, जब तक कोई व्यक्ति स्वय युद्ध-क्षेत्र का दौरा नही कर लेता उस समय तक युद्ध की भीषणता का अनुमान लगाना अत्यधिक कठिन है। महाभारत युद्ध से यह युद्ध किसी प्रकार कम नही रहा। महाभारत का जग अठारह दिन रहा और यह भी अठारह दिन। महाभारत के युद्ध मे ससार भर के राष्ट्र सम्मिलित हुए, इस युद्ध में भी ससार के राष्ट्रों की अपने अपने ढग से दिलचस्पी थी। महाभारत का युद्ध भाइयोंका युद्ध था यह युद्ध भी भाइयों का ही था। महाभारत युद्ध मे अन्य सेनाओं के साथ भरतकुल के लोग सबसे अधिक लड़े, जिन्हें संसार कौरव पाडवों के नाम से जानता है। इस युद्ध में भी अन्य कुलों के अलावा जाट कुल सबसे अधिक लडा, जिन्हे ससार मुसलमान जाट, सिक्ख जाट, और हरियाणा के जाट के नाम से जानता है।

सुरेन्द्र कुमार का जन्म एक सामान्य जाट घराने मे हुआ। ५ नवम्बर १९३८ अर्थात् कार्तिक सुदी अष्टमी सम्वत् १९९५ उनकी जन्मतिथि है उनके पिता मा० तेगराम उत्तरप्रदेश के मेरठ जिले के बामनौली गाव के सिलकल्याण गोत्रीय जाट हैं। चालीस वर्ष पहले उन्होंने २० वर्ष की आयु मे स्वामी केशवानन्द जी के सहयोग से अबोहर जिला फिरोजपुरमें साहित्य सदन की स्थापना की और अब मा० तेगराम का कार्यक्षेत्र ही नहीं घर भी अबोहर ही है।

श्री सुरेन्द्रकुमार ने साहित्य सदन के सूरजमल विद्यालय में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की तथा अबोहर के म्युनिसिपल हाई स्कूल से दशम कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। श्री सुरेन्द्र कुमार मई १९५६ मे डी० ए० वी० कालिज जालन्धर से एन० सी० सी० के० सी सर्टीफिकेट के साथ सम्मान पूर्वक बी० ए० पास हुए। पढते समय श्री

(शेष पृष्ठ १४ पर)

स्वतन्त्रता की रक्षा

लेे० श्री महेशचन्द्र जी, एम०ए०बी०काम०, सासनी

आज हम स्वतन्त्र हैं। राजनैतिक स्वतन्त्रता हमें पूर्णरूप से मिली हुई है। भले ही अन्य दृष्टियों से हम उतने स्वतन्त्र नहीं हो सके हैं जितने होने चाहिये थे। सीमाओं का भी यथोचित प्रबन्ध हमारे राष्ट्रनायकों की बुद्धिमत्ता एवं सेनाधिकारियों की चतुरता से कर दिया गया है। यह भी सच है कि स्वतन्त्रता प्राप्त होने के बाद से सन् १९६२में चीन के आक्रमण से पूर्व तक का ऐसा वातावरण बन गया था कि हम सीमाओं पर आक्रमण का स्वप्न मे भी विचार नहीं करते थे। सामरिक शक्ति की ओर हमारे राष्ट्रके अधिकारी उदासीन थे। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में परस्पर मित्र राष्ट्र बन रहे थे और ऐसी आशा की जाने लगी थी कि अब युद्ध सर्वदा के लिये टल जायेंगे। विश्व एक मत नहीं तो छुट पुट को छोड़कर एक ही स्वर मे पूर्ण शांति का समर्थन कर रहा था और चारों ओर शांति सहिष्णुता के गीत गाये जा रहे थे। किन्तु सन् ६२ में चीन के आक्रमण ने केवल राष्ट्र के अधिकारियों को ही सजग नहीं कर दिया बल्कि भारतीय जनता के रग-रग में एक नवीन रक्त का सचार होने लगा। रणबांकुरों ने ललकार कर चीन को खदेड़ दिया। दूसरी ओर पंडित जी एवं अन्य उच्च अधिकारियों ने देश की सामरिक शक्ति को बढ़ाने की ओर सक्रिय पग उठाया और कल कारखानों मे खिलौने तथा शृंगार की वस्तुओं के स्थान पर युद्ध-सामग्री का निर्माण प्रारम्भ हो गया। सच पूछा जाय तो उसी समय से सजग रहने का यह परिणाम है कि अभी पिछले दिनों में पाकिस्तान के आक्रमण को हमने विफलकरदिया। दुश्मन राष्ट्र के नापाक इरादों को पूर्ण ही न होने दिया बल्कि उसे करारी हार दी तथा अमेरिका के अभेद्य पैटन टैंकों को सहज में ही नष्ट कर दिया। कदाचित् यदि हम सन् ६२ मे चीन के आक्रमण से चेतावनी न लेते तो आज स्थिति दूसरी ही होती।

३-४ वर्षों की तैयारी से हमारे देश ने पाकिस्तान के हौसले को बुरी तरह परास्त किया है उसे देखते हुए यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि यदि यही लगन बनी रही तो निकट भविष्य में शीघ्र ही हम इस योग्य हो जायेंगे कि विश्व का कोई भी राष्ट्र जो अपने को शक्तिशाली समझता हो हमारी ओर इसलिये दृष्टि नही करेगा कि हमारी पवित्र भूमि का अपहरण करे। निश्चय ही भारत वसुन्धरा पर न सोने की कमी है, न बहादुर सैन्य शक्ति की और न किसी अन्य सामान की। अतः अब यह आशा की जाती है कि हमारी राजनैतिक स्वतन्त्रता किसी भी प्रकार खतरे में नहीं है, किन्तु हमें इतने ही से निश्चिन्त होकर नहीं बैठ जाना है। हमें एक ठोस कार्यक्रम अपने समक्ष रखकर उत्साह से उसे पूरा करते रहना है तभी हम शांति और सुरक्षा का वातावरण बनाये रखकर अपना कर्तव्य पालन करने में समर्थ हो सकेंगे।

देश हित को सर्वोपरि समझते हुए हमें अपने हितो का त्याग कर सार्वजनिक हितो की रक्षा करनी होगी। यदि हम व्यष्टि से निकल कर समष्टि मे आ जायेंगे तो देश के बड़े बड़े प्रश्न आसानी से हल हो जायेंगे। हमें देश में रहने वाले राष्ट्र विरोधी तत्वों से पूर्ण सावधान रहना है। ईसाइयत का जहर जो देश मे व्यापक रूप से फैला है जिसके प्रचारक निर्धन, असहाय जनता को इस राज्य की बुराई कर राष्ट्र विरोधी भावनाएं भड़काते हैं उन पर पूर्ण दृष्टि रखनी है। देश के हित में अपना हित समझते हुए देश की आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करना है। देश की मांग पर उसकी रक्षा के लिये हमे अपने वैयक्तिक साधनों को देने के लिये सहर्ष सदैव उद्यत रहना होगा।

२—नागरिक सुरक्षा सम्बन्धी कार्योंमे कोई कमी नही आनी चाहिये। नागरिक सुरक्षा सम्बन्धी ट्रेनिंग यथावत उस समय तक चलती रहें जब तक प्रत्येक घर का कम से कम एक व्यक्ति इस योग्य न हो जाय कि वह अपनी और अपने घर की सुरक्षा किसी भी समय कर सके। समाज की शांति व्यवस्था के लिये नागरिक सुरक्षा आवश्यक है। सकट कालीन स्थिति मे किसी भी राष्ट्र की सरकार के लिये यह प्रायः असम्भव ही है कि वह अपने साधनों से नागरिक सुरक्षा का उत्तम प्रबन्ध कर सके। अतः ऐसे समय में नागरिकों को अपनी, अपने घर की, अपने पड़ोसियों की, अपने समाज की सुरक्षा के लिये सन्नद्ध रहना चाहिये। अतः नागरिक सुरक्षा सम्बन्धी कार्यों में कोई शिथिलता नहीं आनी चाहिये।

३ - सामाजिक शांति को बनाये रखना भी उतना ही आवश्यक है जितना नागरिक सुरक्षा। समाज का यदि कोई भी वर्ग किसी भी प्रकार के अभाव से ग्रस्त हो जायगा तो आंतरिक जन विद्रोह खड़े होने की सम्भावना होती है जो देश की रक्षा के लिये अहितकर है। अत समाज का प्रत्येक व्यक्ति सच्चाई और ईमानदारी से अपना उत्तरदायित्व समझते हुए उसका पालन करे तो समाज में कोई भी अव्यवस्था उत्पन्न होने का प्रश्न नहीं उठता। समाज मे वस्तु के अभाव के कारण नहीं बल्कि उसके दूषित वितरण या हमारी असामाजिकता के कारण समाज के किसी एक वर्ग को विशेष कठिनाई हो जाती है। अत. हमें दलगत स्वार्थों को त्यागकर ऐसे प्रयत्न करने हैंजिससे हमारा एक सगठन हो। समाज का कोई भी वर्ग जीवन की कम से कम आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति, बिना किसी विशेष परेशानी के अवश्य कर सके। समाज के किसी प्राणी में किसी प्रकार की हीनता, अभाव, अशांति, उपद्रव की भावना का उदय न हो। इसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व समाज पर अर्थात् हम पर है अतः हमे अपने हृदयों की सकीर्णता को समाप्त कर सामाजिकता में आना होगा।

४—सामरिक शक्ति संचय का कार्य भी क्रमबद्ध रहना चाहिये। इसमें कोई शिथिलता नहीं आनी चाहिये। आधुनिक युद्ध सामग्री का निर्माण जिस गति से प्रारम्भ कर रखा है उसमें तीव्रता ही आनी चाहिये। सार्वजनिक आय का अधिकतम भाग उस पर उस समय तक व्यय करते रहना चाहिये जब तक इस क्षेत्र में पर्याप्त साधन सम्पन्नता न हो जाय। अन्य प्रशासनिक व्ययों में कमी करनी चाहिये तथा दिखावे और शान-शौकत के खर्चों को बिल्कुल बन्द कर देना चाहिये। इस समय सार्वजनिक राजस्व का नियन्त्रण बड़ी चतुरता से होना चाहिये। विश्व के सभी राष्ट्र सामरिक शक्ति सचय में लगे हुए हैं। अतः सीमा सुरक्षाओं के लिये स्वय शक्तिशाली बनने के लिये समय के अनुरूप आधुनिक अस्त्र शस्त्र निर्विवाद बनाते रहना होगा।

५—अन्त में हमें रणबांकुरो के प्रति भी अपने कर्त्तव्य को नही भुला देना है। देश की रक्षा के लिये बलिदान होने वालों को श्रद्धांजलियां अर्पित करनी चाहिये। उनके परिवारों को आर्थिक एव अन्य सहायता सुविधायें प्रदान करते रहना चाहिये जिससे अन्य व्यक्ति सेना मे भर्ती होने से विमुख न रहें। सैनिकों और बलिदानी सैनिकों के परिवार की थोड़ी सी भी उचित देख भाल का देश की सैन्य शक्ति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार हमें पूर्ण सावधान रहकर अपनी सामाजिकता को कायम रखते हुए अपने अपने कार्य में लगे रहना है तभी हम अपने को पूर्ण सुरक्षित समझ सकते हैं और अपनी कीमती स्वतन्त्रता की रक्षा कर सकते हैं।

श्री स्वा० ध्रुवानन्द

कविरत्न श्री कस्तूरचन्द जी आर्यसमाज पीपाड़शहर

ध्रुव-धर्म धारी सदाचारी ध्रुवानन्द स्वामी,
ध्रुव ही सन्यासी ध्रुव-वेद, वृत धारी थे।
आर्य्य धर्म सत्यार्थी ध्रुव ही निभाये नेम,
ध्रुव आर्य्य कर्म ध्रुव वेदों के प्रचारी थे॥

दिव्य थे प्रकाश किये-विद्या के विकाश,
ध्रुव बोध में विलास एक प्रभु के पुजारी थे।
आर्य्यों के प्रतिष्ठ प्रतीक ध्रुव प्रतिमा थे,
ऋषि-पद्धति के मान्य ध्रुव ब्रह्मचारी थे॥

इंग्लैंड की जीवन झांकी

श्रीयुत ओम्प्रकाश जी त्यागी

इंगलैण्ड ससार का वह देश है जिसने सदियों संसार के अधिकांश भाग पर राज्य किया और एक दिन उसके साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता था। छोटा सा देश होते हुए भी उसने ससार भर पर राज्य किया, और ससार भर के राजनीतिक वातावरण का सचालक कैसे बना रहा? इस रहस्य को पुस्तकों के द्वारा तो मैंने पढ़ा था, परन्तु इस रहस्य को, इस देश, और इस के निवासियों को समीप से देखने की मेरी बहुत दिनो से हार्दिक अभिलाषा थी। इंगलैण्ड को देखने की उत्सुकता का विशेष कारण यह भी था कि भारत के निवासियों और विशेषकर नवयुवक-नवयुवतियों के मस्तिष्क पर इंगलैंड का भूत बुरी तरह सवार है। इगलैण्ड को वह अपना मक्का समझते हैं। इंगलैण्ड की भाषा, वेश व वस्तुओं से तो उन्हे प्यार है ही, परन्तु जो व्यक्ति इंगलैण्ड हो आता है चाहे वह इंगलैण्ड मे आकर सड़क पर झाड़ू ही क्यों न लगाता हो या होटलों की झूठी प्लेटें ही साफ क्यों न करता रहा हो, उसे अपनी श्रद्धा व सम्मान का पात्र मानते हैं। सो अपने देश वासियों की इस मानसिक दासता की वास्तविकता को देखने की बेचैनी हृदय मे थी।

भारत से इगलैण्ड केवल यहा के जीवन का अध्ययन करने के विचार से आना मेरे जैसे साधन हीन व्यक्ति के लिये कठिन था, परन्तु सौभाग्यवश मैं पूर्व अफ्रीका मे प्रचारार्थ आया हुआ था, और इंगलैण्ड में मेरा छोटा भाई, और लड़का थे, और इनके अतिरिक्त पूर्व अफ्रीका के अनेको आर्य बन्धु और विशेष कर आर्य समाज के अद्वितीय विद्वान् प्रचारक श्री उषबुंध जी की लगातार प्रेरणा व आमन्त्रण पर मैंने अफ्रीका से भारत लौटते समय इंगलैण्ड जाने का निश्चय कर लिया और २४ अगस्त को प्रात लन्दन पहुंच गया।

सौभाग्य से मुझे लन्दन मे एक स्थान पर ठहरने का अवसर मिला जहां मेरे लड़के के अतिरिक्त सभी इंगलिश परिवार हैं। अत बड़े समीप से उनकी गतिविधि को देखा। यह बात सत्य है अन्य देशों की भांति इंगलैण्ड में भी निर्धन और धनी लोगों के रहन-सहन व व्यवहार में अन्तर है। मैं इंगलैण्ड के मध्यम श्रेणी के लोगों में ठहरा था। अत: उनका जीवन दोनों के मध्य का या इंगलैण्ड का जीवन कहा जा सकता है।

मकान

इंगलिश जीवन के प्रत्येक अग पर इस छोटे से लेख मे प्रकाश डालना कठिन है। इस लेख को इनके रहन-सहन तक ही सीमित रखना उचित होगा। रहन-सहन मे मकान का स्थान सब से पहिले आता है। मकान ही गृहस्थ को जहां स्थायित्व प्रदान करता है वहा किसी जाति व देश की सस्कृति व सभ्यता को भी प्रकट करने मे सहायक सिद्ध होता है क्योंकि लोग अपनी मनोवृत्ति व स्वभाव के अनुसार ही अपने रहने का स्थान बनाते हैं। बुद्धिमान मनोवैज्ञानिक या इतिहास-कार भिन्न २ काल के मकानों को ही देखकर भिन्न २ काल की सस्कृति व सभ्यता का अनुमान लगाते हैं। अत. मैंने सर्वप्रथम इंगलैण्ड के नये व पुराने मकानों का अध्ययन करना उचित समझा।

भारत के ग्रामीण निवासी को यह जानकर आश्चर्य होगा कि इंग-लैण्ड भर मे एक भी कच्चा मकान नहीं है। यहां के गांव शहरों की अपेक्षा अधिक सुन्दर, शान्त व सुव्यव-स्थित हैं। अच्छे बड़े आदमी शहरों की अपेक्षा गावों में ही रहना पसन्द करते हैं। कोई गाव ऐसा नही जहा सडक, बिजली, बस, डाक, तार, स्कूल, पानी, तथा बाजार की व्यवस्था न हो। समाचार-पत्रों के अतिरिक्त प्रत्येक गाव में टी बी की व्यवस्था है ताकि व्यक्ति घर मे बैठे समस्त ससार के समाचारो के अतिरिक्त सिनेमा, खेल आदि सभी मनोरजन को प्राप्त कर सकता है।

एकरूपता

इंगलैण्ड के मकान के दो ही प्रकार हैं। एक वह मकान है जो शहरों मे कार्यालयो के लिए अमेरीका की नकल में ऊंचे व विशाल नई डिजाइन के साथ बने हैं या अब बनाये जा रहे हैं, और दूसरे वह मकान जो प्रत्येक शहर व गांव में रहने के उद्देश्य से बने हैं। यहां के मकानों को देखकर सब से बडा आश्चर्य यह होता है कि समस्त मकानों की एक ही डिजाइन होती है। अन्य देशों की भांति यहा मकानों की डिजाइनों पर मस्तिष्क व शक्ति लगाने की प्रथा नही है। इंगलैण्ड के जिस भाग मे भी जाओ वहां एक समान ही मकानों का दृश्य दिखलाई देता है। समस्त इंगलैण्ड को देखने के पश्चात् मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि इंगलैण्ड के एक भाग को देखकर एक व्यक्ति इंगलैंड के सभी भागों को देखने का अनुमान लगा सकता है। ऐतिहासिक जगह होने या विशेष नदी व सस्था के कारण ही अन्य स्थान एक दर्शक के आकर्षण के केन्द्र बन पाते हैं।

मकानों की बनावट विशेष रूप से यहां के मौसम का ध्यान करके बनाई गई है। इगलैण्ड मे वर्षा, हवा, जाड़ा व बर्फ बहुधा पड़ते हैं। इस-लिए मकानो की छत नौकीली, ताकि बर्फ जमा न होसके होती हैं। खिड़-कियां अधिकाश शीशे की ऐसी बनी हैं जिनमे से हवा न आसके प्रत्येक घर में बैठने, सोने, पकाने के कमरों के अलावा भोजनालय, टट्टी आदि अवश्य होते हैं। भारतीयों की भांति एक कमरे मे बैठने, सोने, खाने की व्यवस्था करने के यह आदी नहीं हैं। एक कमरे में भी यदि किसी अगरेज को रहना पड़े तो वह अपनी आदत के अनुसार इस कमरे का विभाजन इस प्रकार कागज या लडकी से कर लेता है कि वह ऊपर लिखित कमरे बना ही लेता है। प्रत्येक मकान में टट्टी व स्नानागार होता है, और साथ ही ऐसे सार्वजनिक स्नानागार व टट्टी घर होते हैं जहा पैसे देकर आदमी अपना काम चला लेता है। भारत की भांति इंगलैण्ड मे खेतों व सड़कों पर बैठकर पेशाब या टट्टी, फिरना कोई जानता ही नहीं है इसे यह जगलीपन का चिह्न मानते हैं। यही कारण है कि जो अगरेज या यूरोपियन भारत जाकर वहा के लोगों को खेतों में टट्टी फिरते और मार्गों पर पेशाब करते देख आता है तो वह भारत के बारे मे यही विचार लेकर आता है कि भारत भी अफ्रीका की भांति असभ्य एव पिछड़े लोगों का देश है।

सुन्दरता

इंगलैण्ड के लोग सौन्दर्य प्रेमी होते हैं इसलिये यहां प्रत्येक घर सुन्दर सजा होता है। प्रत्येक घर के सामने छोटा सा बगीचा होता है और प्रत्येक घर के ड्राइगरूम (बैठने के कमरे) में फूलो का गुच्छा सजा होता है। निर्धन लोग जिनके पास एक कमरा ही है और जो नित्य फूल नही खरीद सकते हैं वह प्लास्टिक के फूलों को ही अपने घर में रख देता है। फूलो के लिये अगरेज पागल होता है। वह जब अपने मित्र व रिश्तेदार को मिलने उसके घर या अस्पताल मे मिलने जाता है तो फूल का गुच्छा अवश्य लेजाने का प्रयत्न करता है। यहा तक कि जब वह अपने मृत पूर्वजो से मिलने कबरि-स्तान मे जाता है तो उनके लिये भी वह फूलों का गुलदस्ता ले जाता है प्रत्येक शनिवार व रविवार को इंगलैण्ड में फूलों की सब से अधिक बिक्री होती है।

स्वच्छता

सुन्दरता के अतिरिक्त यहा के घरों की सब से बड़ी विशेषता स्वच्छता की है। यहां घरों में नौकर रखना घर पर हाथी बाधने के समान होताहै। इसलिये वहा प्रत्येक निवासी अपने घरो को स्वय ही स्वच्छ रखते हैं। दिन मे कई २ बार घर को साफ किया जाता है। ऐसे घरों मे जहां बहुत से किरायेदार रहते हैं वहां उसकी सीढ़िया व उन स्थानों को जो सब सम्मिलित होतेहैंसब बारीबारी से साफ करते हैं। घर का कूड़ा बाहर सड़क पर फेंकना यहा गुनाह माना जाता है। काम से लौटकर स्त्री-पुरुष भारत की भांति चारपाई को तग नही करते अपितु अपने घर या बगीचे को ठीक करने में लग जाते हैं। प्रत्येक घर नववधू की भांति प्रत्येक समय सजा रहता है।

इंगलैण्ड के विभिन्न शहरो व नगरों का भ्रमण करते हुए मुझे ऐसे मकान व मौहल्ले भी देखने को मिले जो गन्दे थे या जिनके सामने बगीचे के स्थान पर घास का जगल खड़ा था। परन्तु जांच करने पर पता लगा कि वहां पाकिस्तानी, वैस्ट इण्डीज और भारत के लोग रहते हैं। इनके इस गन्दे रहन सहन को देखकर इंगलैण्ड में पाकिस्तान व भारत की

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्यसमाज और अनुसंधान

श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य, होशियारपुर

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के सारे कार्य की पृष्ठ भूमि मे जो मूल भावना है, उसे यदि एक शब्द में कहा जाय तो वह है सत्य या ज्ञान का प्रसार। इस बात की पुष्टि आर्य समाज के चतुर्थ और अष्टम नियम को देखने से होती है। ४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। ८ अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। तथा सत्यार्थ-प्रकाश की भूमिका से भी यही प्रतिपादित होता है।

किसी विषय के सम्बन्ध में क्या सत्य है? क्या असत्य है? इस का निर्णय प्रमाण और तर्क से होता है। विषय और प्रमाणों की सत्यता तथा असत्यता का ज्ञान अनुसन्धान, खोज, गवेषणा, शोध, Research के बिना नहीं हो सकताहै। अनुसन्धान शब्द अनु+सम् पूर्वक ∠धा धातु से बनता है। सन्धान शब्द का अर्थ होता है लक्ष्य बान्धना या निशाना लगाना और अनुसन्धान शब्द का अर्थ है एक लक्ष्य बान्ध कर उसके पीछे चलना। Jnvention और Discovery की तरह अनुसन्धान भी दो प्रकार का कहा जा सकता है। १ अनुपलब्ध तथ्यो का अन्वेषण। २—उपलब्ध तथ्यो का स्पष्टी करण, पुनर्मूल्यांकन या नई परिभाषा या व्याख्या दर्शाना। अर्थात् अनुसन्धान का भाव है छिपे रहस्यो को प्रकट करना और प्रकट रहस्यो की सत्यता का ज्ञान एव उनको व्यवस्थित और सुसम्बद्ध रूप देना।

उपरोक्त उद्देश्य पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि सत्य या ज्ञान की प्रामाणिकता का बोध बिना अनुसन्धान के नहीं हो सकता है। आर्य समाज जिन विषयों की सत्यता को स्वीकार करता है, उन को याथातथ्य रूप में जन जन तक पहुचाने के लिए अनुसन्धान की पद्धति से उन उन विषयों के सम्बन्ध मे साहित्य सृजन किया जाये।

आर्य समाज का मूल आधार या प्राण वेद है, वेद का वास्तविक अभिप्राय क्या है? तथा अमुक अर्थ और स्वरूप ही इस का समुचित है? इस का प्रतिपादन बिना अनुसन्धान के हो नही सकता। आज भी वेद के सम्बन्ध मे अनेक उलझी हुई गुत्थियां, समाधान का मार्ग देख रही हैं। इस क्षेत्र मे आर्य समाज से बहुत पीछे आने वाले आगे जा रहे हैं। आर्य समाज की एक भी व्यवस्थित और सामूहिक अनुसन्धान शाला नहीं है। यदि अल्पकाय भी ऐसी कोई संस्था होती तो वह भी इस ६० वर्ष मे बहुत कुछ कर चुकी होती। जो आज एक आध है भी वह या तो व्यक्तिगत है, या जनता में उसके परिचय का अभाव है। टकारा का कार्य भी अब कुछ इस दृष्टि से मन्द हो गया है।

आर्य समाज के सिद्धान्तों और उद्देश्यों की गम्भीरता और विशालता को तो देखते हुए बहुत ही विशाल एक अनुसन्धानशाला होनी चाहिये। जिस प्रकार प्रत्येक प्रान्तीय सभा के पास प्रचार के लिए मान्य विद्वान् हैं, वैसे ही प्रत्येक सभा की ओर से कम से कम दो विद्वान् इस कार्य के लिए निश्चित होने चाहिये। सार्वदेशिक सभा की ओर से तो विशेष प्रबन्ध होना चाहिये। वस्तुतः अनुसन्धान संस्था को तो उत्पादन केन्द्र कह सकते हैं, उत्पादन केन्द्र के अभाव मे प्रचार के द्वारा वितरण एक विचित्र बात है।

आज इस दृष्टि से भी आर्य समाज की ओर से अनुसन्धान शाला की अत्यन्त आवश्यकता है। क्योंकि आज भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों मे प्रतिवर्ष भिन्न-भिन्न विषयो पर अनेकों शोध प्रबन्ध लिखे जा रहे हैं जिनके लिखने का प्रकार अधिकतर पाश्चात्य ही होता है। उस दृष्टिकोण को देखने से अनुभव होता है कि उन वैदिक विषयो के सम्बन्ध में उसी स्तर पर आर्यसमाज की ओर से भी कार्य होना चाहिए। इस समस्या के समाधान के लिए निम्न उपाय हो सकते हैं—

१—प्रत्येक सभा का अपने-अपने प्रचार विभाग की तरह अनुसन्धान विभाग भी होना चाहिये।

२—प्रान्तीय सभायें समाजें या धनिक व्यक्ति विश्वविद्यालयों की तरह छात्रवृत्तिया देकर योग्य व्यक्तियों से भिन्न-भिन्न विषयो पर शोध प्रबन्ध लिखवायें।

३—जो व्यक्ति भिन्न-भिन्न स्थानों पर कार्य कर रहे हैं, जैसे कि कालेजों और विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक या अन्य प्रबन्ध आदि कार्यों में नियुक्त व्यक्ति, उन को भिन्न-भिन्न व्यक्ति, समाजें, सभायें अपनायें और उन से अतिरिक्त समय मे कार्य करवायें। भिन्न-भिन्न विषयों के प्राध्यापक अपने-अपने विषयों की दृष्टि से सराहनीय योग दे सकते हैं। आर्थिक समर्थ व्यक्ति तो अपनी-अपनी रुचि के अनुसार इस कार्य में सलग्न रहते ही हैं, कुछ व्यक्ति आर्थिक असमर्थता के कारण चाहते हुए भी इस ओर ध्यान नही दे सकते हैं। अतः उनकी योग्यता का अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

अतः आर्य महानुभावों से प्रार्थना है कि इस पर विचार करने का अवश्य कष्ट करेंगे।

(पृष्ठ ६ का शेष)

बड़ी बदनामी हुई है, और यहा की जनता और सरकार दोनों द्वारा इसके प्रतिरोध व घृणा प्रकट की जारही है। परिणाम स्वरूप पाकिस्तान व भारतीय को कोई अंगरेज मकान नहीं देता, और जिस मोहल्ले में कोई काला व्यक्ति पहुच जाता है वहा से गोरे कूच कर जाते हैं। उसके पीछे रग की नीति भी कारण है, परन्तु हमारे गन्दा रहने की आदत सर्वप्रमुख है। दुर्भाग्यवश पाकिस्तान व भारत से अधिकांश बेपढ़े देहाती मजदूर लोग आये हैं जिनको स्वच्छता का भान ही नहीं है अवस्था यहा तक दयनीय है कि एक २ कमरे मे आठ २ व्यक्ति रहते हैं मुख्यतः पाकिस्तान के लोग बहुत ही गन्दे रहते हैं, परन्तु सूरत में एक जैसे होने के कारण इंगलैंड के लोग उन्हे भारतीय ही समझते हैं।

मकानो का अधिकाश भाग लकडी का होता है, परन्तु सब कपडे, कागज और कालोनी से ऐसा सजा होता है कि लकडी के दर्शन तक नहीं हो पाते हैं। लकडी का प्रयोग इसलिये भी अधिक होता है ताकि बाहर की सर्दी अन्दर न प्रवेश कर सके। सर्दी का सामना करने के लिये प्रत्येक मकान में अगीठिया बनी होती हैं। जिनमे कोयले जलाये जाते हैं। अब नये घरों में घरों को गर्म रखने के लिये बिजली के सहारे अन्य अनेकों उपाय काम मे लाये जारहे हैं। घर से बाहर जब बर्फ पड़ती है और कड़ाके की सर्दी पड़ती है तो घर के अन्दर गर्मी का जैसा मौसम रहता है।

शांति

इंगलिश घरों व मौहल्लों की विशेषता 'शान्ति' भी है। आत्मिक शान्ति नहीं अपितु बाह्य शान्ति। समूचा घर व मौहल्ला व्यक्तियों से भरा रहने पर भी आप को शोर सुनाई नहीं पड़ेगा। यहां के बच्चो को भी चुप व शान्त रहने या धीमे स्वर में बोलने की आदत है। यदि किसी घर में अधिक शोर है तो पड़ौसी पुलिस मे शिकायत कर देते हैं और मुकदमा चल जाता है। घर में रेडियो भी इस प्रकार प्रयोग किया जाता है कि पड़ोस के लोग न सुन लें। इसका यह भी कारण है कि यहां स्त्री-पुरुष दोनों ही मशीन की भांति काम करते हैं। दिन-रात चौबीस घण्टे इंगलैण्ड मे काम होता है। सो जो व्यक्ति रात भर काम करके आया है वह स्वाभाविक रूप से दिन मे सोयेगा। इसलिये वह पड़ौस के शोर को कैसे सहन कर सकता है। यहा तक कि सड़कों पर चलने वाली मोटरें भी अपना हार्न नहीं बजा सकती हैं। इस प्रकार धीमें स्वर में बोलने का अब अंग्रेज लोगों का स्वभाव ही बन गया है। खिल खिलाकर हसने या बोलने का अवसर तो इन्हें कभी नाच घरों क्लबों अथवा शराब घरों में ही मिल पाता है। वहा भी इनकी हसी दबे स्वर में ही होती है।

घरों से बाहर सड़कों पर खड़े होकर बात करने का स्वभाव यहा के स्त्री-पुरुषों का नही है। यहा के मौहल्ले बहुधा सुनसान रहते हैं। बच्चे भी अपने स्वभाव के विपरीत मोहल्लों मे नही खेलते हैं।

बाग व मैदान

इंगलैण्ड की सब से बडी विशेषता यह है कि यहा शहरों नगरों व गांवों के मध्य सुन्दर बगीचे, और घास के मैदान होते हैं। बागो और मैदानो में जहां बच्चो के खेलने की व्यवस्था होती है वहा वृद्धों के लिये सर्वत्र बैंच व कुर्सिया रखी रहती हैं। लन्दन में इन बगीचों और घास के मैदानो को Lungs of London अर्थात् लन्दन के फेफड़े नाम से पुकारते हैं। इस नाम से ही प्रकट होता है कि इनके निर्माण के पीछे सरकार की दृष्टि में जनता के स्वास्थ्य की कितनी ऊची भावना है यह मैदान वास्तव में फेफड़ो का कार्य करते हैं, क्योंकि यह जनता को रात-दिन आक्सीजन देते रहते हैं।

दोपहर के समय स्त्रिया अपने बच्चों को लेकर इन्हीं बगीचों व घास के मैदानों मे जमा हो जाती हैं। छोटे बच्चों को खेलने के लिये बड़े अच्छे साधन होते हैं। जिस दिन धूप निकली हो उस दिन इन मैदानों मे बड़ा सुन्दर दृश्य होता है।

शत्रु से जूझते हुए शहीद *
स्व० श्री गिरीशचन्द्र अग्रवाल

डा० ओम्प्रकाश शर्मा, चिकित्सा अधिकारी, दुजाना (बुलन्दशहर)

२० सितम्बर सन् ६५ की शाम सियालकोट सेक्टर में चोमुंडा के समीप का अल्हड़ स्टेशन (पाकिस्तानी क्षेत्र) का वह भयावह युद्ध स्मरणीय है जिसमें शत्रु से लोहा लेते हुए सैकिण्ड लेफ्टिनेंट श्री गिरीश जी ने अपनी मातृ-भूमि के लिये प्रसन्न, शौर्य युक्त, हसते-हसते बलि दी। राजपूत पलटन का २५ वर्षीय यह जवान शौर्य का पुतला था। आज अकस्मात् चित्रपट के समान उसकी आकृति के साथ-साथ उनके कमांडिंग आफीसर द्वारा कहे गए ये शब्द—अपने एक साथी को शत्रु के क्षेत्र से खोज लाने को उद्यत श्री गिरीश मना करने पर भी केवल ९ साथियों के साथ गया, अपने प्राणो को हथेली पर रखकर शत्रु क्षेत्र मे घुस गया, स्मरण हो रहे हैं।

एक ओर शत्रु का क्षेत्र, सावधान सैनिक युद्ध सामग्री से परिपूर्ण स्थल, दूसरी ओर केवल ९ सैनिकों के साथ गिरीश जी का स्वत शत्रु क्षेत्र मे जाना एक ओर आफीसर उसके शौर्य की मूक प्रशसा कर रहे थे दूसरी ओर विषाद का वातावरण था तभी यह बलिदानी टोली अपने साथी का शव लिये आ पहुची, वातावरण बदल गया, खुशी की लहर छा गयी और सभी ने इस टोली की बड़ी प्रशसा की।

गीता के श्लोक 'हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्' का बार-बार विशेषकर अपने साथियों के सामने उद्घोष करते थे और कहते थे कि मेरे दोनो हाथों मे लड्डू हैं जिन्दा रहता हूं तो ऊंचे-ऊंचे पद प्राप्त करूगा और अगर लडाई मे मारा जाता हू तो मेरी चिरसाध्य बलिदान की कामना पूर्ण होगी। मातृ-भूमि के प्रति अटूट भक्ति थी। हाईस्कूल उत्तीर्ण करने के बाद एक बार सेना के मेजर से बात करते. हुए सन् ६२ मे उन्होने कहा था कि अधिक आयु के कारण यदि कमीशन में अवरोध है तो मैं सिपाही बनूगा, उसमें तो कोई रुकावट नहीं, शक्ति में विश्वास मातृ-भूमि की सेवा की अटूट इच्छा से ही वे फौज में भर्ती हुए थे, अपना जौहर दिखाने के लिए एक बार कहा था कि अब युद्ध छिड़ना ही चाहिए, शत्रु के कारनामों से मुक्ति प्राप्त करने का एक मात्र उपाय है युद्ध, जिसमें भारतीय सेना अपना जौहर दिखा सके।

संक्षिप्त जीवन

ग्राम गवा जि० बदायू निवासी बाबू श्री सतीश चन्द्र जी अग्रवाल (वर्तमान मे अधिशासी अधिकारी नगरपालिका, चन्दौसी) के यहा बदायु नगर मे १६ जनवरी सन् १९४० को वैश्य कुल में जन्म हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद एस० एम० डिग्री कालेज चन्दौसी मे शिक्षा ली, शिक्षा काल में प्रखर बुद्धि के छात्र के साथ ही फुटबाल, क्रिकेट एवं हाकी तथा टैनिस के भी प्रथम श्रेणी के खिलाड़ी थे, हाकी टीम के तो वे ६२-६३) में कैप्टन भी थे। प्रोटोरियल बोर्ड के सीनियर प्रीफेक्ट भी चुने गए थे, आगरा विश्वविद्यालय की हाकी टीम के भी वे खिलाड़ी रह चुके थे, और इन सब से भी बढ़कर था उनका एन० सी० सी० का सर्वश्रेष्ठ कैडिट होना उन्होंने एन० सी० सी० की कई परीक्षाएं भी पास की थीं।

जून १९६३ मे एस० एम० डिग्री कालेज चन्दौसी से बी० ए० पास करने के बाद अपनी चिर साधना के लिए अगस्त ६३ में फौज में प्रवेश कर प्रथम ६ मास आफीसर्स ट्रेनिंग कालेज मद्रास से इंटरमेंशी कमीशन प्राप्त कर राजपूत पलटन मे सेकण्ड लैफ्टिनेन्ट श्री गिरीश जी ने जोशी मठ में अपने जीवन का वह स्वर्णिम पृष्ठ २२ फरवरी सन् ६४ से आरम्भ किया, जो कि २० सितम्बर सन् ६५ की शाम के ६ बजे समाप्त हुआ किन्तु 'कीर्तियंस्य स जीवति' आर्षवाक्य के अनुसार श्री गिरीश जी आज भी जीवित हैं और इस देश के नवयुवकों की प्रेरणा बने रहेंगे। नीचे उनके दो पत्र दिए जाते हैं उनके पिता के नाम .—

1—Letter dated 20-4-64.

'Believe me Babu ji, here I donot feel any difficulty of any type Military is such a big and organized some sort of things that one can never have any difficulty. This apply for other ranks. Now you can understand about officers. I do not mean if one dies while doing his duties and other one thinks this the bad things in army. This is our profession and we are proud that we are serving our country."

2—Letter dated 7th July. 1966.

"I am not happy with the peace station. I want to go to the field again. I have written a letter to my uncle if he could do some thing.''

उनकी वीरगति की सूचना पर उनके पिता बाबू श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल अधिशासी अधिकारी चन्दौसी के हृदयोद्गार—

दिनांक ३० सितम्बर १९६५ को मैं प्रात ९-३० पर बैठा अपने कार्यालय का कार्य कर रहा था, कई अन्य अधिकारी भी थे, डाक एवं तार विभाग का एक चपरासी मेरे नाम एक तार लाया, मेरे पास प्राय डाक व तार मेरे नाम से नहीं वरन पद के नाम से आते हैं। किन्तु उस दिन मेरे नाम से तार था, अत मेरा माथा ठनका, शका मे ही तार खोलकर पढ़ा और स्तब्ध रह गया, मेरे पास बैठे लोगों ने मेरी परेशानी महसूस करी। मैंने तार उनके हाथ में दे दिया, कुछ ही मिनट में खबर शहर भर में इस प्रकार फैल गयी कि जब तक मैं वास्तविकता समझूं उससे भी पहिले परिचित अपरिचित सभी मेरा दुख बटाने मेरे पास आने लगे।

अन्दर से मेरा (पिता का) हृदय पुत्र वियोग से व्याकुल था, रह रहकर रुलाई आरही थी, इधर मैं सारे नगर की सहानुभूति से गर्वित था।

मेरे पुत्र ने देश पर बलिदान देकर न केवल स्वय उच्च स्थान प्राप्त किया, बल्कि परिवार को भी देश में ऊंचा उठा दिया, वास्तविकता तो यह है कि सेना में भरती होकर गिरीश मेरा पुत्र न रहकर देश का पुत्र हो गया था इसी कारण देशवासियों और नगरवासियों को उसकी वीरगति प्राप्त होने पर गर्व और शोक साथ-साथ हुआ देश के नवयुवक इससे देश सेवा के लिए प्रेरणा लें।

उसके समृति चिन्ह निर्माण हेतु निश्चय हो चुका है और कुछ हो रहा है आशा है ये स्मृति चिन्ह हमें प्रेरणा देते रहेंगे।

श्री बाबू सतीशचन्द्र जी अग्रवाल के जन्म स्थान गवां में एक स्थान का नाम (जिसमें प्रमुख बाजार हैं तथा शहीद के पिता का जन्म स्थान भी) गिरीश चौक ससमारोह नामकरण किया गया साथ ही उनका स्मृति चिन्ह भी स्थित किया गया है। अन्य स्थानों पर भी हो रहा है।

ईश-प्रार्थना

(प्रा० राजेन्द्र 'पाल' जिज्ञासु, दयानन्द महाविद्यालय, शोलापुर)

कर्तव्य निष्ठ प्राणी ईश्वर हमें बनाना।
सद्भाव सत्य निष्ठा मन में सदा जगाना॥

आसन बने तुम्हारा यह मन सदन हमारा।
दृढ नीव पर टिका हो जीवन भवन हमारा॥

तेजस्विता निडरता दृढता हमे विनय दो।
धीरज और दक्षता दो स्थिरता हमें विनय दो॥

अन्यायी आततायी अरिदल का नाश करदें।
हम वीरता का अपनी जग में प्रकाश कर दें॥

निबल दु:खी अकिंचन सबके बने सहाई।
भगवन् हमारे मन में हो धुन यही समाई॥

पाखण्ड सब मिटा दे दुर्दैव को भगा दे।
हम जागरूक प्रहरी संसार को जगा दे॥

हो स्रोत प्रेरणा का सद्ज्ञान वेद प्यारा।
यह विश्व में बहा दे पावन पुनीत धारा॥

एक आवश्यक सुझाव

(हमारी शिरोमणि सार्वदेशिक सभा तथा प्रत्येक आर्यसमाज इस पर विचार करे)

पाखण्ड खण्डन शताब्दी

श्री अमरसिंह आर्य पथिक, गाजियाबाद

सवत् १९२३ विक्रमी में महर्षि दयानन्द जी महाराज ने फाल्गुण शुक्ल १ प्रतिपदा को हरिद्वार कुम्भ मेले से पहिले पाखण्ड खण्डिनी पताका गाड़कर सत्य प्रचार का कार्य आरम्भ किया था और कुम्भ मेले की समाप्ति चैत्र सवत् १९२४ तक उसी स्थान पर असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन किया था।

मेरा विचार है कि भूमण्डल भर के आर्यों की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा तथा सारे आर्यसमाज यह निश्चय करें कि—सवत् २०२३ के अन्त और सवत् २०२४ वि० के आरम्भ मे पाखण्ड-खण्डन के पुण्य कार्य को आरम्भ हुए सौ वर्ष पूरे होने पर पाखण्ड खण्डन शताब्दी मनायी जाय।

इस शताब्दी को मनाने के दो प्रकार हो सकते हैं (१) यह कि० सार्वदेशिक स्तर पर सारे आर्यों की ओर से हरिद्वार में पाखण्ड खण्डन शताब्दी का भारी आयोजन किया जाय। वहा लाखों आर्य एकत्रित हों, सारे पाखण्डों का युक्ति प्रमाण युक्त खडन व्याख्यानों द्वारा किया जाय। पाखण्डों के विरुद्ध लाखों ट्रैक्ट छाप कर बांटें जायें। शका समाधान तथा शास्त्रार्थ की घोषणा हो। सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों की बिक्री का विशेष प्रबन्ध हो यह मेला ४ से ७ दिन तक का हो। दूसरा प्रकार यह है कि भूमण्डल के प्रत्येक समाज में फाल्गुण शुक्ल प्रतिपदा सं० २०२४ से वि० तक पाखण्ड खण्डन शताब्दी मास मनाया जाय। उसमें युक्ति प्रमाण युक्त सैद्धान्तिक व्याख्यान हों, सत्यार्थ प्रकाश की कथा हो, सैद्धान्तिक ग्रन्थों की अधिक से अधिक बिक्री की जाय और आर्यसमाज के अधिक से अधिक सदस्य बनाये जायें। प्रचार का प्रयोजन समाज मन्दिरों से बाहर नगर के भिन्न-भिन्न चौकों और निकट २ के ग्रामों में किया जाय।

मेरे विचार में यह शताब्दी ऊपर लिखे दोनों ही प्रकारों से मनाई जाय और इसको ऐसा रूप दिया जाय कि—जिससे बीते हुए सौ वर्षों के कार्यों में जो त्रुटियां रही हों उनका संशोधन हो जाय और आगामी सौ वर्ष के लिये हृदयों तथा मस्तिष्कों पर विशेष छाप लग जाय और विशेष प्रभाव पड़ जाय।

यह शताब्दी किसी सम्प्रदाय विशेष के विरुद्ध न होकर केवल पाखण्डों के विरुद्ध होगी, पाखण्डों का खण्डन तो सभी बुद्धिमान और विद्वान् चाहते हैं और चाहेंगे।

हम सब आर्यों को योग्य है कि—जहां हम भूमण्डल भर के अन्य पाखण्डों का प्रेम पूर्वक निवारण करें वहां अपनी खाट के नीचे भी लाठी घुमाकर देखे कि कहीं हमारे नीचे भी तो कोई पाखण्ड नहीं पनप रहे हैं।

मनुस्मृति का यह वचन समस्त वैदिक धर्मियों ही को नहीं प्रत्येक विद्वान् और बुद्धिमान मनुष्य को शिरोधार्य समझना चाहियेः –

पाखण्डिनो विकर्मस्थान वैडाल-वृत्तिकान शठान्। हैतुकान् बक वृत्तींश्च, वाङ् मात्रेणापि नार्चयेत् ॥

मनु० ४।३०

धूर्तों पाखण्डियों, पाप कर्म करने वालों, बिल्ली की सी वृत्ति वालों, दुष्टों, कुतर्कियों शास्त्र के अश्रद्धालुओं बगुला वृत्ति वालों ढोंगियों का वाणी-मात्र से भी सम्मान और सत्कार नहीं करना चाहिये।

इस समय सारी पृथिवी पाखण्डों से पूरित है धार्मिक सम्प्रदायों में भी पाखण्ड हैं और राजनैतिक दल भी प्रचुर पाखण्डों की दल दल में फंसते और फसाते हैं। आर्यसमाज ही खुल-कर प्रत्येक पाखण्ड के विरुद्ध प्रचार कर सकता है अतः पाखण्डखण्डन शताब्दी आर्यसमाज को अवश्य मनानी चाहिये। ध्यान रहे कि—विशेष अवसरों पर किये विशेष कार्यों का विशेष प्रभाव होता है। इस अवसर से हमको लाभ उठाना चाहिये। यदि आर्यसमाज पाखण्ड-खण्डन का परि-त्याग कर देगा तो यह स्वय भी पाखण्डों मे फस जायगा।

किमधिक लेखेन विचार वर्येषु।

शामली में आर्य राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की धूम

माननीय श्री प्रतापसिंह शूरजी वल्लभ दास का भव्य स्वागत

मार्ग में शाहदरा, खेकड़ा, टटीरी, बड़ौत, एलम, कांधला और भभीसा की आर्य जनता की ओर से हार्दिक स्वागत, फल-फूल और थैली भेंट

शामली—२३ जनवरी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री प्रतापसिंह शूरजी वल्लभ दास बम्बई से दिल्ली होते हुए शामली पधारे। मार्ग मे अनेक बस स्टेशनों पर आर्य जनता ने आपका भव्य स्वागत किया। खेकड़ा निवासियों ने तो अपने माननीय नेता की सेवा मे वेद प्रचारार्थ १०१) की थैली भेंट की और करमूखेड़ी के चौधरी श्री मुन्शीसिंह जी ने १०१) भेंट किया।

शामली पहुंचते ही बस अड्डे पर हजारों जनसमूह ने आपका पुष्पहारों से स्वागत किया। सजे हुए हाथी पर माननीय श्री प्रधान जी एव आर्य जगत् के तरुण तपस्वी सन्यासी श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती एम० ए० विराजमान थे। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ला० रामगोपाल शाल वाले आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री, श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी, श्री महेशचन्द्र जीशास्त्री(बम्बई) एव श्री ला०श्यामलाल जी (बम्बई) कारो पर शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए। नगर के बाजारो मे अनेक स्थानों पर हार्दिक स्वागत हुआ। मकानोंपर से देवियो ने पुष्पवर्षा की। जलूस लगभग २ बजे आर्य समाज मन्दिर के विशाल मडप में समाप्त हुआ।

श्री प० बनारसीदास जी धीमान के निवास पर भोज के पश्चात् एक विराट सभा हुई। आर्यसमाज शामली के प्रधान श्री चौ० इन्द्र वर्मा जी स्पेशल मजिस्ट्रेट ने पुष्पहारों से नेताओ का स्वागत किया। इस अवसर पर थानाभवन, कैराना, ऊन करौदा, भभीसा, कांधला आदि आर्य समाज के अधिकारियों ने अपने नेताओं का हार्दिक स्वागत किया। श्री डा० रहतूलाल जी ने श्री प्रधान जी की सेवा मे एक भावपूर्ण अभिनन्दन पत्र पढ़ा।

सम्मेलन का प्रारम्भ श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती द्वारा ओजस्वी उद्घाटन भाषण के साथ प्रारम्भ हुआ। श्री आचार्य वैद्यनाथजी शास्त्री श्री महेशचन्द्र जी शास्त्री के आर्य राष्ट्र की सुरक्षा पर ओजस्वी भाषण हुए। अन्त में श्री प्रधान जी ने एक प्रस्ताव द्वारा आर्य राष्ट्र की रक्षा पर बल देते हुए राष्ट्र को जागरूक रहने की प्रेरणा दी।
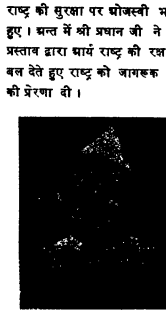
सभा प्रधान

इस अवसर पर श्री श्यामलाल जी ने श्री सेठ जी के सम्मान में एक भोज दिया जिसमें अनेक प्रतिष्ठित नागरिक सम्मिलित थे।

इससे पूर्व दिनांक २२-१-६६ को श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे विदेशों में वैदिक धर्म ध्वजा लहराने वाले प्रसिद्ध आर्य नेता श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी का अनेक आर्य समाजों के अधिकारियों ने पुष्पहारों से स्वागत किया तथा श्री डा० रहतूलाल जी ने अभिनन्दन पत्र द्वारा आपके गुणो की प्रशसा की। श्री त्यागी जी ने विदेशों मे स्थित लाखों हिन्दुओं की अवस्था पर प्रकाश डालते हुए अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया। इस अवसर पर सभा के महामन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी शालवालो ने अस्वस्थ होते हुए भी अपने ओजस्वी भाषण मे आर्य जाति को राष्ट्र रक्षा के लिए प्रतिक्षण तत्परता के साथ जागरूक रहने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर श्री ला० जनार्दन स्वरूप जी पसारी ने अपने नेताओं का भावपूर्ण स्वागत सत्कार किया।

इस सम्मेलन की जनता में बड़ी चहल-पहल रही।

प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के निधन पर आर्यजगत् में शोक

— आर्य समाज देवरीप्रहलादपुर
— आर्य समाज मधुपुर (बगाल)
— आर्य समाज झालापार सहारनपुर
— आर्य समाज भरथना जि० इटावा
— आर्य समाज हकीकतनगर सहारनपुर
— आर्यसमाज तीमारपुर दिल्ली
— आर्यसमाज मानपुर गया
— आर्यसमाज २४८ नानापेठ पूना—१
— आर्यसमाज गुलबर्गा

आर्यसमाज नानापेठ पूना

ने माननीय श्री गाडगिल के निधन पर शोक प्रकट किया है।

आर्यसमाज मधुपुर ने स्थानीय आर्यसमाज के ७१ वर्षीय निःशुल्क सेवक के निधन पर शोक प्रकट किया।

शोक-प्रस्ताव

"आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य-दक्षिण हैदराबाद को यह जानकर अत्यन्त ही दुःख हुआ कि आर्य जगत् के महान् विद्वान् विचारक और नेता पं० गगाप्रसाद जी, एम० ए० रिटायर्ड चीफ जज, टिहरी गढवाल का निधन हो गया है। प० जी आर्य जगत् के मूर्धन्य लेखक गभीर विचारक और महान् नेता थे। आपके निधन से आर्य जगत् को महान् क्षति हुई है। जो निकट भविष्य में स्यात् ही पूर्ण हो सके। सभा इस दुःख मे सभागी है और समवेदना प्रकट करती है। परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवगत् आत्मा को शान्ति और कुटुम्बीजनों को धैर्य प्रदान करें।"

आर्यसमाज बड़हलगंज

के चुनाव में सर्वश्री रामनारायण जी आर्य प्रधान, विद्यासागर जी आर्य उपप्रधान, शारदाप्रसाद जी आर्य मन्त्री हरिहर प्रसाद जी आर्य उपमन्त्री, कन्हैयालाल जी आर्य कोषाध्यक्ष तथा इन्द्र देव आर्य पुस्तकाध्यक्ष और मक्खन लाल आर्य संचालक हुए।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा

दीवानहाल दिल्ली की ओर से महिलाओं ने श्रीमती इन्दिरागांधी को उनके निवास स्थान पर जाकर बधाई दी और शुभकामना प्रकट की।

आर्यसमाज भरतपुर

के निर्वाचन में सर्वश्री गुलाबसिंह जी आर्य प्रधान, डा० एस० आर० सागर तथा प्रेमदेव जी भूषण एडवोकेट उपप्रधान, ओ३म् प्रकाश जी एम० ए० मन्त्री चुन्नीलाल जी रतनलाल जी गुप्ता उपमन्त्री हीरालाल जी गुप्ता कोषाध्यक्ष भारतभूषण जी निरीक्षक एव रतनलाल जी पालडिया पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज दानपुर

वार्षिक निर्वाचन में सर्वश्री बद्रीप्रसाद जी गुप्त प्रधान, रामरक्षपाल जी गुप्त उपप्रधान, प० हरदेव सहाय जी शर्मा मन्त्री मुन्शीलाल जी गुप्त उपमन्त्री, ला० रामचन्द्रजी कोषाध्यक्ष डा० गगाराम जी पुस्तकाध्यक्ष तथा चतुरबिहारी लाल जी खजानची निरीक्षक चुने गए।

वानप्रस्थ में

श्री रमेशचन्द्र जी सस्थापक वेद-प्रचारक मंडल दिल्ली ने २२ जनवरी को गुरुकुल एटा में श्री स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी जी से वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली।

वेद प्रचारक मंडल दिल्ली

की ओर से ग्वालियर नुमायश में आर्य साहित्य और चित्रों की प्रदर्शनी आर्यसमाज लश्कर के सहयोग से की गई। जनता बड़ी प्रभावित हुई।

वेद-सर्वस्व

वेदा मे परमं चक्षुर्वेदा मे परमं बलम्।
वेदा मे परमं धाम वेदा मे ब्रह्म चोत्तरम्॥

वेद ही मेरे उत्तम नेत्र हैं, वेद ही मेरे परम बल हैं। वेद ही मेरे परम आश्रय तथा वेद ही मेरे सर्वोत्तम उपास्य देव हैं।

पेज ६ का बाकी

पाञ्चालदेश को चले जायं और राजा द्रुपद के घर जाकर रहें तथा इन्द्रसेन आदि सेवकों से कहा कि रथों को लेकर यहां से द्वारका को चले जाय। किन्तु यह ध्यान रखना कि :-

सर्वैरपि च वक्तव्य न प्राज्ञायन्त पाण्डवाः। गता ह्यस्मानपाहाय सर्वे द्वैतवनादिति।

(विराट् पर्व अ० ४। ५)

वहां सब लोग यही कहें 'हमें पाण्डवों का कुछ भी पता नहीं हैं।' वे सब द्वैतवन से ही हमें छोड कर न जाने कहां चले गये।

(यह मिथ्या भाषण नहीं तो क्या है)।

धर्मराज युधिष्ठिर के इस आदेश मे कहां और कितनी सत्यता है इस पर भी आप विचार करें और अगली घटना पर भी ध्यान दें :—

जब पांडव विराट् राजधानी के समीप पहुंचे तो महाराज युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा कि तुम्हारा गाडीव बहुत बड़ा और भारी तथा जगत् विख्यात है इससे तो हमें कोई भी पहिचान लेगा। इस पर अर्जुन ने सलाह दी कि श्मशान भूमि के टीले पर यह शमी का बहुत बड़ा सघन वृक्ष है इसकी शाखायें भी बड़ी भयानक हैं, इस वृक्ष पर गांडीव रखते समय कोई हमें देख भी नहीं सकेगा। युधिष्ठिर ने नकुल को आज्ञा दी कि वह सब शस्त्रों को शमी वृक्ष पर बांध दे।

तत्पश्चात् पांडवों ने एक मृतक का शरीर लाकर उस वृक्ष की शाखा में बांध दिया। उसे बांधने का उद्देश्य यह था कि इसकी दुर्गन्ध नाक में पडते ही लोग समझ लेंगे कि इसमे सड़ी लाश बधी है अत दूर से ही इस शमी वृक्ष को त्याग देंगे।

लाश बाधते समय अचानक कुछ गाय चराने वाले ग्वाले और भेड़ पालने वाले गडरिये आ निकले उनके पूछने पर पाडवों ने कहा :—

अशीति शतवर्षेय माता न इति बादिन। कुल धर्मोऽयमस्माक पूर्वैराचरितोऽपि वा॥

(विराट० अ० ६। ३३॥)

यह एक सौ अस्सी वर्ष की हमारी माता है। हमारे कुल का यह धर्म है, इसलिए ऐसा किया है। हमारे पूर्वज भी ऐसा ही करते आये हैं।

अब आप विचार लें कि पाण्डवों के इस कथन में कितना सत्यांश है। शव को अपनी माता बताना, १८० वर्ष की आयु कहना, वृक्ष पर लटकाने को कुल धर्म और हमारे पूर्वज भी ऐसा ही करते आये हैं। यह चारों बातें मिथ्या नहीं तो क्या है। मैं कहता हूं कि यह मिथ्या बातें रक्षार्थ हैं दोष युक्त नहीं। जिस सत्य का भगवान् श्री कृष्ण प्रतिपादन करते हैं, यह वही है।

अब महाराज विराट की राज सभा में सर्व प्रथम धर्मराज युधिष्ठिर प्रवेश करते हैं और कहते हैं कि :—

युधिष्ठिरस्यासमहं पुरा सखा वैयाघ्रपद्यः पुनरस्मि विप्र। अक्षान् प्रयोक्तुं कुशलोऽस्मिदेविना ककेति नाम्नास्मि विराट विश्रुत॥

युधिष्ठिर ने कहा - महाराज विराट! मैं वैयाघ्रपद गोत्र में उत्पन्न ब्राह्मण हूं। लोगों में कक नाम से मेरी प्रसिद्धि है। मैं पहले राजा युधिष्ठिर के साथ रहता था। वे मुझे अपना सखा मानते थे। मैं चौसर खेलने वालों के बीच पासे फैंकने की कला में कुशल हूं।

धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने परिचय में नाम, गोत्र, वर्ण और व्यवसाय चारों ही मिथ्या कहे—यह मिथ्या भाषण किसी के कहने पर नहीं—स्वेच्छा से। जिस महाभारतकार ने श्री कृष्ण द्वारा बुलवाये गए मिथ्या बोलने की घटना को इतना उछाला कि धर्मराज को नरक तक में घसीट दिया, आश्चर्य है कि वह महाभारत कार धर्मराज द्वारा स्वेच्छा से मिथ्या बोलने पर क्यों मौन है।

विराट महाराज के सामने जिस प्रकार युधिष्ठिर ने अपने परिचय में चारो बातें मिथ्या कहीं उसी प्रकार भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और द्रौपदी ने भी अपने-अपने परिचयों में इसी प्रकार की चार-चार मिथ्या बातें कही थी और वह भी धर्मराज युधिष्ठिर की सलाह से।

इस लेख के लिखने का मेरा उद्देश्य यह नहीं हैं कि सब लोग मिथ्याचारी हो जाय, छली-कपटी और धोखेबाजी को अपना आदर्श बना लें किन्तु मेरा उद्देश्य तो इतना ही है कि जिनके प्राणों पर आपड़ी हो, जो दूसरों के प्राणों की रक्षा करना चाहते हों, अथवा जिनके हाथ में राष्ट्र रक्षा की बागडोर हो और जिन्हे राष्ट्र रक्षा के लिए शत्रुओं से लोहा लेना हो एव निरपराध की रक्षा और अपराधी को दण्ड देना जिनका कर्त्तव्य हो। जिनके हाथ में न्याय और शासन हो उन्हे राष्ट्ररक्षार्थ और शत्रुओं से जूझते समय भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा सत्य और झूठ की व्याख्या को स्मरण रखना होगा। साथ ही इस मिथ्या धारणा को दूर करना होगा कि युद्ध के मैदान में कूद कर भी असत्य बोलेंगे तो नरक भोगना पड़ेगा। यह भी ध्यान रहे कि जो इसके अधिकारी हैं उनके लिये ही यह विचार हैं—अनधिकारियों के लिए नहीं।

यह मैं फिर कहता हूं कि यह विचारधारा केवल अधिकारियों के लिये हैं सर्वसाधारण और अनधिकारियों के लिए बिलकुल नहीं।

(पृष्ठ ७ का शेष)

सुरेन्द्र कुमार पजाब, काश्मीर हिमाचल प्रदेश और दिल्ली के अन्तरराज्यीय खेल कूद प्रतियोगिता में दौड में प्रथम स्थान प्राप्त करते रहे। शिक्षा के बाद श्री सुरेन्द्रकुमार सेना का स्थायी कमीशन लेकर लेफ्टिनेण्ट बने। साल भर के अन्दर कप्तान का पद प्राप्त करके अक्टूबर १९६२ में भारत चीन युद्ध के समय में नेफा के मोर्चे पर नियुक्त हुए। १९ नवम्बर १९६२ को डागजोग के स्थान पर चीनी सेना के घेरे में आ गये, परन्तु किसी प्रकार चीनी सेना के घेरे से निकल कर भूटान के भयंकर जगलों और पहाडों के खूंखार रास्तों से होते हुए १५ दिन के बाद बोमदिला पहुंचे।

इसके बाद उन्हें हिमालियन डिवीजन में शामिल किया गया और दो वर्ष पर्यन्त आप हिमालय के ऊंचे पहाडों मे बर्फ से ढकी चोटियों पर वहां की कठिनाइयों को सहने का अभ्यास करते रहे।

जौलाई १९६३ में भारत सरकार के एक उच्च स्तरीय मिशन के साथ लद्दाख के मध्य क्षेत्रीय प्रदेश में साढ़े तीन सौ मील पैदल यात्रा करते हुए ठेठ चीनी सीमा तक साढ़े बाईस हजार फीट की ऊंचाई पर पहुचे। जहां पर दिन और रात भारी हिमपात होता है और शरीर को चीर कर निकलने वाली प्रचण्ड वायु चलती है। वहां से लौटने पर सुरेन्द्र कुमार को अपनी बटालियन का एडजुटेंट बना दिया गया जिस पद पर वे अन्तिम क्षण तक काम करते रहे। भारतीय सेनापतियों का सुरेन्द्र कुमार पर इतना अधिक विश्वास था कि उन्हें बर्फीली हवाओं और चोटियों के अभ्यास के लिए सन् चौंसठ में साल भर शिमला से ७० मील ऊपर अपनी बटालियन के साथ यूल कैम्प में रक्खा गया।

विगत १५ जौलाई को अबोहर में सुरेन्द्र कुमार की सगाई चौ० नरेन्द्रसिंह जी लाम्बा गांव दौलतपुरा जिला हिसार, की कन्या कुमारी लीला से हुई। विवाह से पहले ही कप्तान सुरेन्द्र कुमार भारत पाकिस्तान युद्ध में २३ सितम्बर को शहीद हो गए। २६ वर्षीय गौर वर्ण छः फुटे सुरेन्द्र कुमार को जिसने देखा है वही जान सकता है कि साठ वर्ष के तेगराम ने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपनी कितनी बड़ी निधि कुर्बान कर दी।

अबोहर म्युनिसिपैलटी ने कप्तान सुरेन्द्र कुमार का ऊर्ध्वकाय बुत नगर के सार्वजनिक चौराहे पर लगाने का निश्चय किया है।

शहीदों की चिताओं पर,
लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का
यही बाकी निशां होगा॥

सदाचार

सुखेतु वर्तमानोवै दुःखे वापि नरोत्तम।
सुवृत्ताद् यो न चलते शास्त्रचक्षुः स मानवः॥३१॥

मनुष्य सुख में हो या दुःख में, जो सदाचार से कभी विचलित नहीं होता, वही शास्त्र का ज्ञाता है।

विश्व हिन्दू परिषद् से त्यागपत्र

सार्वदेशिक सभा के प्रधान

श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास का वक्तव्य

मैंने विश्व हिन्दू परिषद् के कोषाध्यक्ष पद से तथा स्थानीय कमिटी के चेयरमैनशिप से त्याग पत्र दे दिया है। मुख्य कारण यह है कि कोषाध्यक्ष के नाते सारी जिम्मेवारी तो मेरे पर आती है पर आज पर्यन्त क्या रुपया जमा हुआ, क्या खर्च हुआ कैसे खर्च हुआ, किस बैंक में जमा है या क्या हो रहा है कुछ भी मालूम नहीं केवल मेरे-नाम को पब्लिक के सामने विश्वास प्राप्त करने को रखने का तो कोई

सभा प्रधान

अर्थ ही नहीं था। यदि किसी प्रकार का अपव्यय होता है या अन्यथा उपयोग होता है तो बदनामी मेरी होनी है।

दूसरी बात ऐसी थी कि कई बार निश्चय करने पर भी कि सभी सम्प्रदाय के मुख्य व्यक्तियों की एक मीटिंग पहले बुलाई जायगी तथा उसमें सम्पूर्ण प्रकार से विचार विनिमय होकर निश्चय किया जायगा, कार्यक्रम बनाया जायगा, योजना बनेगी सारी प्लानिंग होगी कि विश्व हिन्दू परिषद् किस रूप में क्या कार्य करेगी, उसका रूप क्या होगा तथा उसकी योजना बनकर लोगों के सामने आयगी जो सभी सम्प्रदाय को स्वीकार्य होगी अर्थात् जिसमें किसी के लिए कोई आपत्ति जनक सिद्धान्त न होंगे सर्व ग्राह्य तथा सत्य सिद्धान्तों को लेकर ही सारी योजना पहले ही बन जायगी। इन सारी बातों का स्वीकार करने पर भी अद्यावधि ऐसी कोई योजना बनाई नहीं गई तथा सभी सम्प्रदाय के विशेष व्यक्तियों से इस पर कोई राय नहीं ली गई न कोई निर्णय पर ही पहुंचे हैं। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि केवल दो-चार दिन के मेले से कोई लाभ नहीं। क्रियात्मक कदम उठाया जाना चाहिये, केवल सम्मेलन या परिषद् के लिए लाखों रुपये एकत्र किये जायं या व्यय किए जायं यह अनावश्यक तथा अवांछनीय है। यदि रुपये अच्छे काम के लिये संग्रह किये जाते हैं तथा लोग विश्वास और भरोसे पर रुपये देते हैं तो उनको पहले ही जानने का अधिकार है कि उन रुपयों का क्या किया जायगा। रुपये जमा हो जाय, पब्लिक मीटिंग मे प्रस्ताव पास कराकर, मनमाना कतिपय व्यक्ति अपना कार्य सिद्ध करे तो इससे मेरा घोर विरोध है।

स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के प्रति

ले० श्री धर्मजित् जी जिज्ञासु मद्रास

स्वामी जी शत् शत् बार नमस्ते !

जीवन यज्ञ सम्पूर्ण आपका, समाज की बलि वेदि पर।
पूर्णाहुति आपने कीनी, कष्टों में हसते हसते ॥ स्वामी जी० ॥

सत्याग्रहो के ऐ सेनानी, निर्भीकता का तू अवतार।
तव हुकार कभी नहिं भाई, अन्तिम तक चलते चलते ॥ स्वामी जी० ॥

प्रारम्भ से ही आपका जीवन, अध्यवसाय से था परिपूर्ण।
अष्टाध्यायी पूर्ण कर डाली, रोटी के पकते पकते ॥ स्वामी जी० ॥

तेरा जीवन अन्त हुआ क्या, इक युग का ही अन्त हुआ।
समाज नैया सफल खिवैया, दिया आशीश हटते हटते ॥ स्वामी जी० ॥

हम जी आपके चरणानुगामी, यह विश्वास दिलाते हैं।
समाज सेवा में बलि देंगे, तव पथ पर चलते चलते ॥ स्वामी जी० ॥

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्लीसे प्रकाशित -१।

शास्त्र-चर्चा

ग्रह-नक्षत्र

(प्रश्न) क्या जो यह ससार में राजा प्रजा सुखी दुःखी हो रहे हैं यह ग्रहों का फल नही है ?

(उत्तर) नही, यह सब पाप पुण्यों के फल हैं।

(प्रश्न) तो क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है।

(उत्तर) नहीं, जो उसमें अंक, बीज, रेखागणित विद्या है वह सब सच्ची, जो फल की लीला है वह सब झूठी है। (सत्यार्थप्रकाश मे)

— महर्षि दयानन्द सरस्वती

महाभारत मे उमोवाच—

भगवन् भगनेत्रघ्न मानुषाणां विचेष्टितम्। सर्वमात्मकृत चेति श्रुतं मे भगवन्मतम् ॥ लोके ग्रहकृत सर्वं मत्वा कर्म शुभाशुभम्। तदेव ग्रहनक्षत्र प्रायशः पर्युपासते ॥ एष मे सशयो देव त मे त्व छेत्तुमर्हसि।

उमा ने पूछा भगवन्! आपका मत है कि मनुष्यों की जो भली-बुरी अवस्था हैं, वह सब उनकी अपनी ही करनी का फल है। आपके इस मत को मैंने अच्छी तरह सुना, परन्तु लोक मे यह देखा जाता है कि लोग समस्त शुभाशुभ कर्मफल को ग्रह जनित मानकर प्राय. उन ग्रह नक्षत्रों की ही आराधना करते रहते हैं। क्या उनकी यह मान्यता ठीक है? देव! यही मेरा सशय है। आप मेरे इस सदेह का निवारण कीजिये।

श्री महेश्वर उवाच

केवल ग्रहनक्षत्र न करोति शुभाशुभम्। सर्वमात्मकृत कर्म लोकवादो ग्रहा इति ॥

(म० अनु०, अ० १४५)

श्री महेश्वर ने कहा—

केवल ग्रह और नक्षत्र ही शुभाशुभ कर्म फल को उपस्थित नहीं करते हैं। सारा अपना ही किया हुआ कर्म शुभाशुभ फल का उत्पादक होता है। ग्रहों ने कुछ किया है—यह कथन लोगों का प्रवाद मात्र है।

बुद्धि

बुद्धिर्यस्य बल तस्य
निर्बुद्धेस्तु कुत बलम् ॥

जो बुद्धिमान है वही बलवान है जिसके पास बुद्धि नही वह कहां बलवान्।

इसलिए गायत्रीमत्र में भगवान से प्रार्थना करते हैं।

धियो योन· प्रचोदयात्

भगवन्! हमें मेधा बुद्धि प्रदान करो।

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

प्रथम ग्रासे मक्षिकापातः

प्रधानमन्त्री पद ग्रहण करने के पश्चात् श्रीमती इन्दिरा गांधी ने २६ जनवरी को गणराज्य दिवस के पावन पर्व पर राष्ट्र के नाम सन्देश देते हुए आकाशवाणी से जो अपना प्रथम सार्वजनिक भाषण दिया उसे सुन कर बड़ी निराशा हुई। निराशा इसलिए नहीं कि भाषण में कोई कमी थी, या उनकी वाणी में सरसता नहीं थी, प्रत्युत इसलिए कि वह भाषण अंग्रेजी में हुआ।

अंग्रेजी में भाषण देना भी अपने आपमें कोई दोष नहीं है, खास कर तब जब कि नेहरूजी तथा राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन आदि नेताओं ने परम्परा ही ऐसी चला रखी हो। परन्तु स्वर्गीय श्री नेहरूजी भी एक बात का अवश्य ध्यान रखते थे वह यह कि जनता को सम्बोधित करने में वे प्रायः सदा ही हिन्दी को अंग्रेजी के समान स्तर पर रखते थे। परन्तु इन्दिरा जी केवल अंग्रेजी में भाषण देकर रह गई। यह ठीक है कि बाद मे उस अंग्रेजी भाषण का लचर-सा हिन्दी अनुवाद भी आकाश वाणी से प्रसारित किया गया और यह काम भी सौंपा गया एक महिला उद्घोषक को। हम नहीं समझते कि महिला उद्घोषक की योजना जान-बूझ कर इस प्रयोजन से की गई हो कि श्रोता-गण समझें कि हिन्दी भाषण भी इन्दिराजी ही दे रही हैं, परन्तु जनता में तो इस भ्रम के फैलने का अवसर मिला ही। भले ही जनता में बुद्धिभेद पैदा करने का मशा आयोजकों का न रहा हो, पर बुद्धिभेद पैदा तो हुआ ही।

प्रश्न यह है कि इन्दिरा जी ने हिन्दी में भाषण क्यों नहीं दिया। क्या राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन की तरह वे भी हिन्दी से अनभिज्ञ हैं? (यद्यपि संस्कृत के पण्डित हमारे राष्ट्रपति इतने वर्षों के पश्चात् भी हिन्दी से अनभिज्ञ हैं इस तथ्य का औचित्य किसी भी प्रकार हमारे गले नहीं उतरता!) या जिस राष्ट्र की जनता को वे सम्बोधित कर रही थीं वह जनता केवल अंग्रेजी ही समझती है? उन्होंने अपने भाषण मे खाद्य समस्या को हल करने के लिए उत्पादन बढ़ाने पर तथा एतदर्थ किसानों को प्रेरित करने पर जितना जोर दिया उतना कदाचित् अन्य किसी बात पर नहीं। परन्तु क्या भारत के एक प्रतिशत किसान भी अंग्रेजी समझते हैं?

एक मित्र ने कहा कि उनका भाषण भारत की जनता या भारत के किसानों के लिए नहीं था, वह तो विदेशों की जनता और खास कर अमेरिका के किसानों के लिए था, क्योंकि अब भारत की खाद्य समस्या हल करने के लिए उत्पादन बढ़ाने की अपील उन्हीं से की जा सकती है — भारत को अनाज मुहैया करने का उत्तरदायित्व अमेरिका के किसानों पर ही तो है।

दूसरे मित्र ने कहा कि अंग्रेजी में भाषण देकर इन्दिरा जी ने ब्रिटेन के उस अखबार की भविष्यवाणी सही साबित कर दी जिसने इन्दिरा जी के प्रधान मन्त्री बनने पर लिखा था कि "अब भारत की भाषा समस्या हल हो जाएगी, क्योंकि इन्दिरा जी की मातृभाषा अंग्रेजी है इसलिए अन्य भाषाओं के दावे स्वयं समाप्त हो जायेंगे।" इन्दिरा जी की मातृभाषा अर्थात् माता श्रीमती कमला नेहरू की भाषा केवल अंग्रेजी थी या नहीं इसका जवाब दिल्ली के सीताराम बाजार के उस मुहल्ले के व्यक्ति सही तौर पर दे सकेंगे जहां आज भी उनके दूर या पास के रिश्तेदार रहते हैं।

मित्रों की इन व्यंग्योक्तियों को सुन कर हृदय पर चोट लगती है। भारत के संविधान ने हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा स्वीकार किया है। भारत के प्रधान मन्त्री द्वारा ही भारतीय संविधान का नग्न उल्लंघन? भारतीय राष्ट्र के बहुसंख्यक समाज की भाषा की अवहेलना और एक विदेशी भाषा का समादर? हमारे नेता यह कब समझेंगे कि राष्ट्र की समस्त बुराइयों की जड यही दास मनोवृत्ति है जो कभी पाश्चात्य वेष के रूप मे, कभी अंग्रेजी भाषा के मोह के रूप मे और कभी ज्ञान-विज्ञान का भी विदेशों से आयात करने की प्रवृत्ति के रूप में स्वतन्त्र होने के १८ वर्ष पश्चात् भी हमारा पीछा नहीं छोड़ रही है?

जिस ताशकन्द-घोषणा ने हमारे प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के प्राण ले लिये उस ताशकन्द घोषणा का भी मूल पाठ पहले रूसी भाषा में पढ कर सुनाया गया और बाद में उस पर हस्ताक्षर हुए। रूसी भाषा को न पाकिस्तान के प्रतिनिधि जानते थे, न भारत के, फिर रूसी भाषा के प्रति इतना आग्रह क्यों? केवल इस लिए कि रूस की सरजमीं पर जो भी काम होगा उसमें सब से पहला स्थान ससार की किसी अन्य भाषा को नही, केवल रूसी भाषा को ही दिया जाएगा। रूस में सबसे पहला स्थान रूसी भाषा को। परन्तु भारत ही ऐसा अभागा देश है जहां पहला स्थान किसी भारतीय भाषा को नहीं, बल्कि एक विदेशी भाषा को दिया जाता है।

हम आशा करते थे कि हमारी नई प्रधान मन्त्री पहले हिन्दी में भाषण करेंगी। इतना करने मात्र से वे जन-जन के मन के कितना निकट पहुंच जाती, यह उन्हें कौन बताए? परन्तु उन्होंने तो परम्परा तक का पालन नहीं किया और हिंदीकी सर्वथा उपेक्षा ही कर दी। इसे 'प्रथम ग्रासे मक्षिका पात.' न कहें तो और क्या कहे?

पंजाबी सूबे की आड़ में (४)

अंग्रेजी के मुहावरे का अनुवाद करके कहा जाए तो कहा जा सकता है कि बिल्ली फिर थैले से बाहर आ गई है। स्वयम्भू अकाली नेता मास्टर तारासिंह ने फिर अपना मनोगत भाव स्पष्ट कर दिया है कि पजाबी सूबे की माग के पीछे उनका प्रयोजन क्या है। जो लोग इस माग को केवल भाषायी आधार पर राज्य बनाने के सिद्धान्त का विस्तार मात्र मानकर इसका सरल भाव से समर्थन करते हैं, वे देखें कि पजाबी सूबे की आड़ मे यह क्या खेल खेला जा रहा है? यद्यपि भाषायी आधार पर भी यह माग सर्वथा अनुचित है, इस विषय पर हम अगले किसी लेख में प्रकाश डालेंगे। आज तो हम केवल यह बताना चाहते हैं कि यह मांग भाषा सम्बन्धी नहीं, अपितु पृथक् सिख राज्य सम्बन्धी एक राजनीतिक मांग है।

यमुनानगर में अकालियों के एक विशाल सम्मेलन में शेख अब्दुल्ला का समर्थन करते हुए मा० तारासिंह ने कहा कि "हम भी शेख साहब की तरह सिखों को आत्मनिर्णय का अधिकार देने की मांग करते हैं ऐसा अधिकार जिसमे उन्हें भारत से अलग होने की भी छूट हो। सिख केवल तभी जीवित रह सकते है जब कि उनका पृथक् स्वतन्त्र राज्य हो। जब राज्याश्रय हट गया तो बौद्धधर्म भी समाप्त हो गया — इतिहास हमें यही बताता है। इसलिए सिखों का अलग राज्य होना ही चाहिए।

बौद्धधर्म राज्याश्रय हटने से समाप्त हुआ या बर्बर विदेशी आक्रमणकारियों के सामने उनकी अहिंसा की अकृतकार्यता से समाप्त हुआ, या वह समाप्त हुआ आपसी फूट और अपने आन्तरिक बामाचार से—इस पर यद्यपि बहस की जा सकती है, परन्तु मास्टर जी की इस साफगोई से इतना तो साफ हो ही गया कि उनके मन के सिंहासन पर जिस आराध्यदेव की प्रतिमा विराजमान है उसका नाम है शेख अब्दुल्ला। आश्चर्य की बात यह है कि देवता तो राष्ट्रद्रोह के अपराध में कोडाईकनाल में नजरबंद है परन्तु ये उनके अनन्य पुजारी महोदय अभी तक खुले घूम रहे हैं क्या केवल इसी-लिए कि अब तक जिस धरती में राष्ट्रद्रोह के अंकुर नहीं फूटे वे वहां भी अब राष्ट्रद्रोह की फसल लहलहा उठे। परन्तु हमें विश्वास है कि जिस प्रकार मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है उसी प्रकार राष्ट्रद्रोह की अपेक्षा राष्ट्र प्रेम की शक्तियां कहीं अधिक बलवान् हैं और मास्टर तारासिंह जैसे एक क्या अनेक राष्ट्र-द्रोही भी राष्ट्रप्रेम की उन अजेय शक्तियों पर हावी नहीं हो सकते।

अपने उसी भाषण में मास्टर जी ने एक और बड़ी भारी अनुसन्धान की बात कही है। उन्होंने कहा है— "हिन्दू और सिखों में किसी प्रकार कोई भी भेद नहीं है, परन्तु वह आर्यसमाज और उसका प्रवर्तक है जिसने हिन्दुओं और सिखों में वैमनस्य पैदा किया है।" इस रिसर्च के लिए मास्टर साहब को सचमुच ही डाक्टरेट की डिग्री मिलनी चाहिए या उन्नीसवीं और बीसवीं सदी का पंजाब का सारा इतिहास उलट दिया जाना चाहिए।

सच तो यह है कि जिस गो-ब्राह्मण और जनेऊ की रक्षा के लिए हिन्दुओं की शस्त्रभुजा के रूप में सिखमत का प्रचलन हुआ था उसी 'आरज धरम' (आर्यधर्म) का शुद्ध स्वरूप प्रकट करने के लिए हिन्दूजाति की ज्ञानभुजा के रूप में आर्यसमाज

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सामयिक-चर्चा

पंजाबी सूबा

श्री एस० एस० जलोता (गोरखपुर) ७-१-६६ के हिन्दुस्तान टाइम्स में लिखते हैं:—

"वर्तमान गुरुमुखी लिपि का आविष्कार सिक्खों के पांचवें गुरु ने किया था। उन्होंने स्तोत्रों और अपने पूर्ववर्ती गुरुओं की वाणी को उस लिपि में संकलित करना आरम्भ किया जो प्रत्यक्षतः नागरी लिपि का ही एक स्वरूप है। कहा जाता है कि उन्होंने ऐसा इस उद्देश्य से किया था कि पवित्र वाणी सिख मत के थोड़े से चुने हुए लोगों तक सीमित रहे। इसके बाद सिक्खों के सैनिक वर्ग के नेताओं मे पत्र-व्यवहार आदि में गोपनीयता बनाये रखने के उद्देश्य से भी इसका प्रयोग होने लगा था। जब सिख भाई थोड़े से काल के लिए सत्तारूढ हुए तो उन्होंने अपने पूर्ववर्त्ती मुसलमान शासको की प्रचलित पद्धति का अनुसरण करते हुए अदालती और मालगुजारी के कार्यो में उर्दू का मुख्य लिपि के रूप में प्रयोग किया। इस प्रकार गुरुओं के मुख से प्रवाहित हुई पवित्र लिपि पर उन थोड़े से परिवारों का एकाधिकार रहा जो सिखों के पवित्र ग्रन्थ के पठन-पाठन में निष्णात थे। ब्रिटिश शासन के १०० वर्ष से अधिक के काल में भी जिसके अधीन कई सिख राज्य रहे। यही स्थिति प्रायः बनी रही। धार्मिक क्रिया-कलाप एवं प्रवचनो के अतिरिक्त तथाकथित पजाबी लिपि के प्रचार के लिए एक प्रकार से कुछ नहीं हुआ।

इस काल मे बहुसख्यक मुसलमान हिन्दू और सिख पजाबी तो बोलते रहे परन्तु इसका लिखित साहित्य नगण्य रहा। कभी २ ग्राम्य गीतो इत्यादि को जिनका परम्परा से मौखिक आदान-प्रदान होता रहा था कवि या ग्रन्थकार उस लिपि में लिख लेता था जिससे वह परिचित होता था। महात्मा गांधी द्वारा चलाए गये स्वराज्य आदोलन के काल में बहुसख्यक राष्ट्रिय उर्दू के दैनिक पत्रों मे पजाबी की कविताएं छपती थीं, परन्तु उनकी लिपि उर्दू होती थी। उसी काल में पंजाब यूनिवर्सिटी ने उर्दू, हिन्दी और पजाबी साहित्य की परीक्षाएं आरम्भ की। मुसलमानों को पजाबी को उर्दू लिपि मे लिखने की छूट देदी गई थी। इस छूट के दे दिये जाने से सिख विद्वानों को यह कहने का मौका मिल गया कि गैर-मुस्लिमों को पंजाबी भाषा को गुरुमुखी लिपि में लिखना चाहिये। यह पग पीछे ले जाने वाला था। इससे पजाबी बोलने वाले हिन्दुओं का साहित्यिक उत्साह भग हो गया और उन्हे हिन्दी को अपनाने की प्रबल प्रेरणा मिल गई। निस्सन्देह आर्य समाज ने सदैव हिन्दी के प्रयोग का प्रचार किया। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के उदाहरण से भी जो गुजरात में उत्पन्न हुए थे और हिन्दी के प्रबल समर्थक थे हिन्दी के प्रयोग को बल मिला।

परन्तु प्रारम्भ मे आर्य समाज का अधिकाश प्रचार उर्दू लिपि मे ही होता था अवश्य सस्कृत के श्लोक एव मन्त्र इत्यादि हिन्दी लिपि मे दिये जाते थे।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि पजाबी सूबे के समर्थकों द्वारा गुरुमुखी लिपि पर बल दिये जाने से अन्य सब व्यक्ति निरक्षरों के स्तर पर बलात् बिठा दिए जाते हैं। कानूनी व्यवस्था से बाध्यता लादे जाने का कार्य न तो मुस्लिम शासकों ने किया था और न अग्रेज शासकों ने। पजाब में कोई भी यह नहीं चाहताथा कि पक्षपातपूर्ण कानूनी व्यवस्था के द्वारा उसे निरक्षरता और हीनता के स्तर पर ला दिया जाय। भले ही वह व्यवस्था प्रजातन्त्रीय बढ़िया शब्दावलि के आवरण से सावधानता पूर्वक अलकृत ही क्यों न की गई हो। पजाब की शिक्षित एवं राष्ट्रवादी जनता का पजाबी सूबे की कोलाहल पूर्ण माग से डरने का मुख्य कारण यही है।

बधाई

राष्ट्रपति महोदय ने २६ जनवरी को जिन महानुभावों को 'पद्मश्री' की उपाधि से सम्मानित किया है उनमें श्रीयुत डा० हरिशकर शर्मा कविरत्न भी सम्मिलित हैं। इस राजकीय सम्मान के लिए हम सार्वदेशिक परिवार की ओर से श्री पडित जी को हार्दिक बधाई देते हैं।

श्री पंडित जी का आर्य जगत् को परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। वे हरदुआगंज (अलीगढ़) निवासी कवि शिरोमणि नाथूराम जी 'शंकर' के सुयोग्य पुत्र हैं। हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक, कवि और उच्चकोटि के साहित्यकार हैं। पडित जी आर्य जगत् में 'आर्य मित्र' के यशस्वी सम्पादक के रूप में ही सब से अधिक प्रसिद्ध हैं जिनके लम्बे सम्पादन कालमें आर्य मित्र ने प्रचुर प्रसिद्धि और उन्नति प्राप्त की थी। श्री पडित जी अनेक पुस्तकों के प्रणेता हैं जिनमें 'चिड़िया घर' नामक पुस्तक स्वस्थ व्यग एव हास्य के लिए सुप्रसिद्ध है। उनकी अन्य कृतियों में 'धर्म का आदि स्रोत' (फाउन्टेन हैड आफ रिलीजन) का हिन्दी अनुवाद, भजन भास्कर आदि आर्य समाज के साहित्य मे उच्च स्थान रखती हैं।

श्रीमती सरस्वती जी

जिनेवा के निकट हवाई जहाज के विध्वस की भयकर दुर्घटना में जिन स्त्री पुरुषो की मृत्यु हुई है उनमें ईस्ट अफ्रीका के सुप्रसिद्ध आर्य नेता स्व० श्री डी० डी० पुरी की धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती देवी जी भी है। जो देहली ले उस अभागे वायुयान में यात्रा के लिए सवार हुई थी। उनके निधन से आर्य समाज की महती क्षति हुई है। पुरी परिवार ने ईस्ट अफ्रीका तथा भारत मे आर्य समाज के कार्यों में जो मूल्यवान् योगदान किया है उसका बहुत बड़ा श्रेय माता सरस्वती देवी जी को प्राप्त है। देहली रहते हुए भी उन्हें नैरोबी में आर्य समाज के कार्य की चिन्ता रहती थी। यहां से पर्याप्त धन व्यय करके प्रायः साहित्य भिजवाती रहती थीं। सभा के कार्यालय मे उनके अनेक बार दर्शनो का लाभ हुआ, जब कि वे स्वय साहित्य क्रय करके भिजवाने के लिए पधारा करती थीं। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति और उनके शोक सतप्त परिजनों को धैर्य-पूर्वक वियोग को सहन करने की क्षमता प्रदान करें, यही प्रार्थना है अभ्यर्थना है।

साधु टी० एल० वास्वानी

अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री साधु टी० एल० वास्वानी के निधन पर जितना शोक मनाया जाय वह कम है। श्री वास्वानी जी सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं समाज सुधारक थे। सिन्ध को उन जैसा सपूत पैदा करने का गर्व है। यूरोप और अमेरिका आदि के गिने इने-गिने भारतीय विद्वानों की अंग्रेजी को चाव और आदर के साथ पढ़ा जाता है उनमें श्री वास्वानी जी भी सम्मिलित रहे है। अंग्रेजी भाषा पर उन्हें पूर्ण अधिकार था। भाषा लालित्य और भाव सौष्ठव के लिए उनकी कृतियां सुप्रसिद्ध हैं। अग्रेजी गद्य को पढते हुए पद्य का आनन्द आ जाना उनकी कृतियों की विशेषता रही है। वे पटियाला के महेन्द्र कालेज आदि अनेक कालेजों के प्रिंसिपल रहे। वे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के शिक्षा विज्ञ थे। आजन्म ब्रह्मचारी सादगी और सात्विकता की दृष्टि से शब्द के ठीक ठीक भाव मे साधु ही थे। अभिमान उन्हे छू तक न गया था। भारत विभाजन के बाद वे पूना में स्थायी रूप से रहते और मीरा आन्दोलन के जन्मदाता थे। वही पर उनका ८७ वर्ष की आयु में निधन हुआ।

आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के प्रति उनकी बड़ी आस्था एवं श्रद्धा थी। मथुरा शताब्दी के अवसर पर उन्होंने 'टार्च बेयरर' और 'वायस आव् आर्यावर्त्त' दो बहुमूल्य पुस्तकें आर्य समाज के अर्पण की थीं जिनमें महर्षि दयानन्द की स्तुति और आर्य समाज का गौरव हृदयग्राही भाषा में अकित हैं।

उनके निधन से आर्य समाज की भी एक प्रकार से बडी क्षति हुई।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

— रघुनाथप्रसाद पाठक

कृपया ध्यान दें!

अगले सप्ताह का अक महर्षि बोधाक प्रकाशित होगा। बड़े ही दुर्लभ चित्रों का संग्रह हुआ है और इसमे महर्षि के २५ महत्वपूर्ण पत्र भी दिये हैं। ऐसा महत्वपूर्ण विशेषाक का भारी सख्या में आज ही आर्डर भेज दें।

(क) वी० पी० नहीं भेजेंगे।

(ख) या तो आप पहले ही मनीआर्डर भेज दें। या हम पहले अक भेज देंगे आप अक प्राप्त होने पर धन भेजें। जैसा उचित समझें करें—

पर मंगायें जरूर

धर्मवीर पं० लेखराम जी के जीवन पर एक दृष्टि

लेखराम तृतीया के उपलक्ष्य में

लेखक – श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक

स्वर्गीय श्री प० लेखराम जी का आर्य नर नारियों को विशेष परिचय देने की आवश्यकता नही हैं। वे आर्य समाज के उन नर रत्नों में से थे जिन्होंने आर्यसमाज के मान और प्रतिष्ठा को बढ़ाया है और जो आर्यसमाज के लिये जिये और मरे हैं उनमें भी प० लेखराम जी एक बात में अग्रगामी रहे हैं अर्थात् आर्यसमाज में शहादत का दर्वाजा खोलने में आर्य समाज की बलि वेदि पर शहीद होने वालों में पं० जी सबसे पहले वीरात्मा थे।

पं० लेखराम जी आर्यसमाज के उस युग से सम्बन्धित थे जो बहुत उज्ज्वल युग कहा जाता है और जिसकी स्मृतिया आज प्राय: भूतकाल की वस्तु बन गई हैं। पं० जी का यह सौभाग्य ही था। प० जी हमारे सामने एक धर्म प्रचारक के रूप में तथा दुनिया के लोगों के सामने धर्म पर जान निछावर करने वाले एक हिन्दू शहीद के रूप में आते हैं। बाहरी दुनिया को मुख्यतया उनके बलिदान से ही सरोकार है हमें उनके जीवन तथा बलिदान दोनों से ही सरोकार है। हमारे लिये दोनों ही स्फूर्ति और प्रेरणा के कारण हैं, हम पण्डित जी में वैदिक धर्म और आर्य-समाज के लिये अटूट प्रेम और उसके प्रचार के लिये अनुपम धुन पाते हैं, उनमें आर्यत्व मूर्तिमान हुआ देखते हैं। उन्हें हम धर्म प्रचारक के उस आदर्श पर पहुंचा हुआ देखते हैं जिस पर पहुचना शब्द के ठीक २ भाव में धर्म प्रचारक का कर्तव्य है। हम उन्हें आर्य समाज का निर्माण तथा उसके लिये ठोस कार्य करते हुए देखते हैं। हम उन्हें आर्य समाज के शासन और अनुशासन का उतना ही सम्मान करता हुआ देखते हैं जितना उनकी प्रचार गति में बाधक सिद्ध नहीं होता है।

प० जी के हृदय में वैदिक धर्म का अनुराग, महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों के अध्ययन तथा महर्षि के साक्षात सत्सग से पैदा हुआ था और वह भी उस समय जब वह सच्चे धर्म की उहा पोह मे लगा था। जब वह हृदय वेदान्त को आजमा चुका था। कृष्ण भक्ति से ऊब चुका था। उनके जीवन की यह घटना बतलाती है कि उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय और महापुरुषों का सत्संग मनुष्य के हृदय पर उत्तम छाप डालते हैं और यदि वह छाप जिज्ञासु हृदय पर पड़ जाती है तो वह उसकी जीवन धारा को बदल देती है।

ऋषि के ग्रन्थों और उनके सत्सग से प० जी के हृदय पर पडी हुई छाप ने उनकी जीवन धारा को बदल दिया और मामूली से एक कान्सटेबिल को आर्य पथिक लेखराम बना दिया। परमात्मा करे ऐसी ही छाप सदैव संसार के मनुष्यों पर पड़ती रहे। इसके आगे हम उस छाप के प्रभाव को पं० जी के महान् व्रत के द्वारा व्यक्त होते देखते हैं, उस व्रत में सफल होने के लिये उन्हें हर प्रकार की योग्यता सम्पादन करते हैं और उस व्रत में उन्हें दीवाना हुआ देखते हैं, जिसे न मित्रों और घरवालो की मुहब्बत और न विरोधियों और परायों के विरोध और भय की पर्वाह हैं और उसी व्रत की खातिर पेट में छुरा खाते हुए देखते हैं। उच्च और पवित्र व्रत ही ऐसी अवस्था का कारण बनता है। प० जी का व्रत भी महान् था, वह व्रत वैदिक धर्म का प्रचारक बनने और रहने का था, कर्तव्य पालन के लिये न कि पेट पालन के लिये, ऐसे व्रत के धनी ही दुनियां में कोई काम कर पाते हैं और ऐसे ही लोगों का दुनिया मान करता है।

प० जी के हृदय में वैदिक धर्म का कितना अधिक प्रेम था और आर्य समाज की कितनी अधिक हित चिन्ता थी यह तो उनकी शहादत और अन्तिम वसीयत से कि "आर्यसमाज में तहरीर का काम बद न हो", स्पष्ट है ही परन्तु फिर भी उनके जीवन की बहुत सी घटनाओं और भावनाओं से दोनों बातें व्यक्त होती हैं और उत्तम शिक्षा प्रदान करती हैं, उनमें से एक घटना इस प्रकार है. –

"पेशावर शहर के आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सग के बाद अन्तरग होने लगी, विचार यह होने लगा कि जिन तहसीलदार महाशय की धर्मशाला अधिवेशनों के लिये मिली है उनको ही समाज का प्रधान बनाया जाय, तहसीलदार भी विराजमान थे। प० जी ने बिना संकोच के कहा "ये शराब पीते और मांस खाते हैं, ऐसा आदमी प्रधान नही होना चाहिए", अन्य सभासद् तहसीलदार साहब को प्रधान बनाने पर तुल गए तब पं० जी अप्रसन्न होकर उठ गए क्योंकि ऐसे विचार को सुनना भी वे पाप समझते थे।"

यह घटना हमारी ऊंची मनो-वृत्ति की सूचक नहीं है, इसने आर्य-समाज का अकल्याण ही किया है, पं० जी के सामने व्यक्तियों के हितों के मुकाबले में समाज के हित कितना महत्व रखते थे यह इस घटना से प्रकट है। आज प० जी जैसी मनो-वृत्ति रखने वाले हममे से कितने हैं ?

"अमेरिका के चिकागो नगर की प्रदर्शिनी की तय्यारियां हो रही थी और आर्यसमाजो की ओर से कोई विशेष प्रतिनिधि भेजने का विचार छिड़ रहा था। दो व्यक्तियों ने अपने आपको आर्य जनता के सामने पेश किया वे दोनों धूर्त्त थे। पं० जी ने आर्यजनता को इस बात से सचेत कर दिया और स्वय अपील निकाल कर मार्ग व्यय के लिये २०००) तथा एक सुयोग्य अंग्रेजी के विद्वान् की सेवाएं मागी। यह दूसरी बात हैकिकोई भी आर्य पुरुष जाने को तय्यार न हुआ परन्तु प० जी के धर्मानुराग में कोई क्षति नहीं हुई, यदि स्वयं अंग्रेजी पढ़े हुए होते तो अवश्य जहाज में बैठकर चिकागो चले गए होते।

इस यत्न से ऋषि मिशन को देशान्तरों में फैलाने की उनकी इच्छा जाहिर होती है।

"मैसेन्जर में लिखा था कि परोपकारिणी सभा सत्यार्थ प्रकाश मे से वह लेख निकाल दे जो नानकसाहब की बाबत है। पं० जी ने उत्तर में लिखा कि परोपकारिणी सभा इसको नही निकाल सकती। समाज इसे स्वामी जी की तहरीर समझता है और जब तक उसकी गलती मालूम न हो बिल्कुल सही समझता है और गलती मालूम हो जाने पर आर्यसमाज नि० स० ४ के अनुसार भूल स्वीकार करने को तय्यार है।"

"दीवान टेकचन्द जी ने इंगलैंड से आये हुए पत्र के सम्बन्ध मे पं० जी ने कहा कि विविध भाषाओं में सच्चे धर्म की पुस्तकों का अभाव, विविध भाषाओं द्वारा आर्य धर्म का उपदेश करने वालों की कमी, देशान्तरों में आर्य समाज का अस्तित्व नहीं के बराबर, धर्म्म पर जान न्यौछावर करने वालों की सौ फीसदी कमी और उस पर घर की फूट पाहिमाम् अंग्रेज लोग व सिविल सर्विस पास करके जब देखते हैं कि धर्म्म के प्रचार की जरूरत है तो झट उससे पृथक् होकर धर्म्मोपदेशक बनने के लिये प्रार्थनाएं करते हैं। फिर ईश्वर जाने स्वीकार हो या न हो, हमारे यहां की हालत वर्णन करने योग्य नही है, हमारे उपदेशकों मे थोड़े विद्वानों के अलावा ऐसे कई हैं जो भोजन भट्टों की सूची में जाने योग्य हैं, मैं वा अन्य कोई समाजो को भली प्रकार जानने वाला उन्हें उपदेशक नहीं मानता क्योंकि वह तो खाकियों में खाकी, उदासियों में उदासी, निर्मलों में निर्मले संन्या-सियों में स्वामी हैं।"

"एक बार जब वजीराबाद के उत्सव पर समाचार मिला कि पण्डित जी का इकलौताबेटा संसार से चल बसा है तो समाज वालों ने समझा कि प० जी उस उत्सव मे नहीं आ सकेंगे यद्यपि शरीक होने का उनका पहिले से प्रोग्राम बना हुआ था। आर्यों ने आश्चर्य से देखा कि पं० जी अपने घर से सीधे उत्सव में आ पहुचे और उस शोकजनक घटना के होते हुए भी अपने धार्मिक कर्त्तव्य का बड़ी गम्भीरता से पालन करते रहे।

इस घटना से कौन हृदय रखने वाला होगा जिसका रोता हुआ हृदय प० जी के आर्यसमाज के प्रति प्रेम और उनकी लगन पर श्रद्धा से उनके चरणों में न झुक जाय और यह न पुकार उठे 'लेखराम तुम धन्य हो, धन्य हो।

पं० जी के गुण और आदर्श

पं० जी के भीतर सफल प्रचारक के कई गुण और विशेषताएं थीं, उनमें निर्भीकता थी, दृढ़ता थी, कार्य करने की अनथक शक्ति थी तथा त्याग तपस्या, सदाचार और सरलता का जीवन था।

निर्भीकता

उनकी निर्भीकता की घटनाएं

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ ५ का शेष)

उनके जीवन में मिलती हैं, पंजाब सभा मे जब १८६४ में पहुचे तो सभासद लोग आपस मे इस विषय पर कानाफूसी करने लगे कि जाहिल मुसलमानों के बेजा जोश से रक्षा के लिये पुलिस का प्रबन्ध करना चाहिए। प० जी ने यह सुनकर मन्त्री को कहा "यदि मैं मुसलमानों से डरूं तो घर मे क्यो न बैठ रहू, प्रचार के लिये बाहर क्यों निकलू ? पुलीस की कुछ जरूरत नहीं। सुतरां प० जी ने निर्भयता पूर्वक प्रचार किया। धर्मवीर अपनी जान हथेली पर लिये फिरा करते थे। आर्यों ने उनका नाम अली रक्खा हुआ था।

दृढ़ता

प० जी के जीवन मे हठ अधिक था परन्तु इस हठ ने उन्हे प्रतिज्ञा पालन का धुनी बना दिया था। एक बार जो मुंह से निकला उसे निभाने का सदैव यत्न किया। जहा उनमे धर्म्म के साथ प्रेम का भाव सर्व साधारण से कही बढ़ कर था वहा उसके निभाने के लिये प्राण समर्पण तक का भी बड़ा उच्च भाव था, इसके उदाहरण जहा बचपन में मिलते हैं, वहां युवावस्था में यह भाव यौवन पर चढ़ा हुआ पाते है। अपने धर्मोपदेशक अखबार के लिये एक दो बार कातिब न मिलने पर स्वयं अभ्यास करके छपाने की स्याही से कापिया लिखते हुए हम उन्हे देखते हैं। १२ वर्ष की आयु में ही अपनी चाची को एकादशी का व्रत करते देखकर चाची के मना करने पर भी उपवास करने लग गए थे और जब तक उस पर श्रद्धा रही दृढता पूर्वक उसे निवाहा, ज्वर हो, फोड़े निकले हों, चलने के अयोग्य हो, पुत्र की मृत्यु का शोक हो, कोई भी आपत्ति उनको कर्त्तव्य पालन से नही रोक सकती थी। सध्या इत्यादि नित्य कर्म में बड़े दृढ़ रहते थे, एक बार यात्रा मे हाथ पैर इत्यादि धोने के लिये पानी न मिलने पर भी संध्या करने बैठ गए, एक साथी ने पूछा "प० जी पेशावरी सध्या हो चुकी", पं० जी ने गम्भीर स्वर मे उत्तर दिया "तुम पोप हो जो बिना पानी मिले ब्रह्म यज्ञ नहीं कर सकते। भोले भाई, स्नान कर्म है जो हुआ या न हुआ, परन्तु सध्या धर्म है और उसका न करना पाप है।" बचपन मे जब मदरसे मे प्यास लगी तो मदरसे का घड़ा भ्रष्ट देखकर मौलवी से प्यास बुझाने के लिये घर जाने की आज्ञा मांगी, मौलवी साहब ने फरमाया "यहीं पी लो, छुट्टी नहीं मिल सकती, आत्माभिमानी और निर्भीक लेखराम ने तो फिर न मौलवी साहब से ही गिड़-गिड़ाकर पूछा और न ही भ्रष्ट घड़े से पानी पिया, सायंकाल तक प्यासे ही बीता दिया। ये दोनों गुण उनमें हम पराकाष्ठा तक पहुंचे हुए देखते हैं।

पं० लेखराम मिडिल की परीक्षा में शामिल हुए थे। भारतवर्ष के इतिहास सम्बन्धी प्रश्न के उत्तर सरकारी किताबों के अनुसार देने की जगह आपने उनका खण्डन कर दिया। फलतः इतिहास में एक भी अंक न प्राप्त हुआ। किन्तु उसी में इतिहास फेल लेखराम को कुछ वर्षों के बाद पेशावर प्रान्त के हाकिमों ने जिले का इतिहास लिखने के लिये मसाला जमा करने के काम पर लगातार इतिहास की उनकी योग्यता को स्वीकार किया था। उनके लिये धर्म, धर्म था और अधर्म अधर्म। वह नहीं समझ सकते थे कि आग और पानी का कभी मेल हो सकता है, उनकी हठ का यह भाव कभी २ व्यर्थ छिद्रान्वेषण की अवस्था तक पहुंच जाता था और उससे बाह्य दृष्टि से उपदेश के काम को हानि भी पहुच जाती थी। बहुत से महापुरुषों की सम्मति है कि अपने मन्तव्यों तथा धर्म के नियमों से न गिरकर भी राजी नामा हो सकता है इस उक्ति के अनुसार हठ का भाव यदि निर्बलता है तो वह प० लेखराम जी के जीवन में था यह स्वीकार करना चाहिए।

क्रोध

यह प्रसिद्ध है कि साधारण सच्चे आदमी प्रायः क्रोधी अधिक होते हैं। प० जी में क्रोध की मात्रा अधिक थी। योगी धर्मोपदेशक ही क्रोध पर काबू रखते हैं। साधारण व्यक्तियों में यह निर्बलता होती है। बहुत कम इसके अपवाद होते हैं और उन असाधारण व्यक्तियों की यह कमजोरी जिनका प्रायः सदैव मूढ़ता कुटिलता और अधर्म से वास्ता पड़ता हो, भयंकर रूप धारण कर लेती है। पं० जी साधारण उपदेशक थे, योगी न थे और उनका नाता सदैव मूढ़ता इत्यादि से पड़ता था। यदि हम उनमें अत्यधिक क्रोध की मात्रा पाते हैं तो इसमे आश्चर्य की कोई बात नहीं है। हम इसे पं० जी की एक कमजोरी जरूर समझते हैं, इस कमजोरी के होते हुए भी उनके जीवन चरित्र में हम यह कहीं नहीं पाते कि उससे किसी को कभी हानि पहुची हो।

त्याग

पुलीस के बदनाम महकमे से एक मामूली कान्सटेबिल के रूप में बाहर निकल कर किसे आशा हो सकती थी कि प० जी उसकी बुराइयों से पृथक् रहे होंगे, परन्तु वे निर्दोष ही बाहर निकले। विरोधी वायुमण्डल में से निर्दोष बाहर निकलना इस बात का सूचक है कि उनमें स्वाभाविक पवित्रता थी जो ऐसे वायु मण्डल मे लोगों की रक्षा करती है, और वह पवित्रता उन्हें अपने कुल से मिली थी। तम्बाकू पीने की आदत तो बचपन से ही छोड़ दी थी। मास मद्य तथा अन्य मादक द्रव्यों के कभी समीप ही नही गए। पाप रूपी दूषण तो अलग रहा, जीते जी किसी व्यसन को पास नही आने दिया और तो और पान भी कभी नही खाया, कपड़ों के बनाव चुनाव को वे जनानापन के नाम से पुकारा करते थे। स्वास्थ्य बड़ा उत्तम रहता था। इसलिये कपड़ो से उसे सजाने की जरूरत न थी। जब तक अनिवार्य न हो जाता, इन्टर क्लास में कभी यात्रा न करते थे। और जो व्यय होता वही सभा से लेते थे। जहाँ अन्य उपदेशक पूरे इक्के का किराया १) लगाते वहा आर्य पथिक के बिलों में उसी स्थान का किराया साढ़े ३ आने दर्ज होता। जहां कुली से सामान उठवा कर ले जाने मे बचत होती वहा इक्का गाड़ी पर नहीं बैठते थे। यदि यात्रा में कहीं उतरने से अपना काम भी होता तो वहा का किराया सभा से न लेते।

सदाचार

साधारण मामलों में तो प्राय. अच्छे उपदेशक सत्यवादी पाये जाते हैं परन्तु आर्य सिद्धान्तों के मानने में उच्चकोटि के उपदेशक भी गिर जाते हैं और स्वयं जिस सिद्धान्त पर सन्देह हो उसको भी सिद्ध करने खड़े हो जाते हैं। पं० जी का व्यवहार इससे सर्वथा विरुद्ध था। जब तक नियोग समझ मे नहीं आया था तब तक खुली सम्मति देते थे और जब द्विजों के लिये नियोग की आज्ञा समझली तो उसकी पुष्टि मे पुस्तक लिख दी। सचमुच प० लेखराम जी का अन्दर बाहर एकसा था।

पं० जी का कार्य

प० जी का मौखिक प्रचार जितना विस्तृत था उनका लेखबद्ध प्रचार उतना ही गहरा था। उन्होंने १६ साल के अर्से में बहुत से समाजों की स्थापना की, बहुत से लोगों की शुद्धि की, बहुतों को विधर्मी बनने से बचाया, अनेकों ग्रन्थ लिखे, उनकी तहरीर बड़ी सच्ची और खरी होती थी। मुसलमानो ने उनकी तहरीरो की जब्ती के लिये कई बार अदालतों के दरवाजे खटखटाए परन्तु वहां वे कामयाब न हुए, उन तहरीरों का कुन्दन आग में से होकर भी कुन्दन ही साबित हुआ। उनकी तहरीर के महत्वपूर्ण अंगों में ऋषि जीवन की सामग्री का प्रान्त२ मे घूमकर इकट्ठा करना और उसे तरतीब देना है। उनके ग्रन्थों का संग्रह "कुलयाते मुसाफिर" नाम की पुस्तक है। उनकी वसीयत यह थी कि आर्य समाज से तहरीर का काम बद न हो। "तहरीर" शब्द से उनका मतलब ठोस और उपयोगी साहित्य से था। आर्यसमाज को देखना चाहिए कि तब से इसने कितना ठोस साहित्य पैदा किया है और कितनी उसकी रक्षा की है।

आर्य प्रचारक ध्यान दें

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री लाला रामगोपाल जी शाल वाले ने आदेश दिया है कि:—

देश भर में जितने भी उपदेशक और भजनोपदेशक महानुभाव आर्य समाज के प्रचार में लगे हुए हैं उन्हे सार्वदेशिक पत्र प्रति सप्ताह बिना मूल्य भेजा जाय।

कृपया प्रचारक महानुभाव अपने-अपने पूरे पते शीघ्र लिखें। जिससे महर्षि बोधांक भी उन्हे मिल सके।

—प्रबन्धक

राष्ट्र निर्माता स्वामी दयानन्द

१९ वीं शताब्दी के उस अन्धकार युग में जब समस्त भारत देश निराशा के प्रवाह में अपने महान् गौरव व इतिहास परम्परा और धर्म विस्मृति के गहरे गर्त में डाल विनाश की ओर बहा जा रहा था, सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के उपरान्त भारत वर्ष के जनमानस को विदेशी शासन ने पूर्णरूप से आतंकित कर दिया था, राष्ट्रीय विचारधारा तथा भावना को नष्ट करने के हेतु सभी सम्भव प्रयत्न किये जा रहे थे। भारतीय सभ्यता संस्कृति, शिक्षा दीक्षा और भाषा के स्थान पर पाश्चात्य सस्कृति और विदेशी भाषा का प्रवाह प्रबल था, राष्ट्रीय जागरण के प्रकाश स्तम्भो को स्वेच्छा चारिता रूपी प्रबल पवन के वेग से उखाड़ा जा रहा था, पराधीनता और अज्ञान का कुचक्र सभी कुछ समाप्त करने को उद्यत था, ऐसे इस महान् अन्धकार तथा निराशा की सकट मय घड़ियों में हिन्दुस्तान के गौरव पूर्ण इतिहास की परम्परा अमिट बनाये रखने के हेतु भारतीय क्षितिज पर स्वामी दयानन्द का प्रादुर्भाव और आर्य समाज का आविर्भाव हुआ। स्वामी जी ने अपनी अमर वाणी एव निर्भय लेखनी के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण आत्म गौरव, स्वराज्य एव स्वतन्त्रता का सर्व प्रथम अमर सदेश दिया।

आज के कुछ विचारक और राजनीतिज्ञ स्वामी दयानन्द को केवल समाज सुधारक ही मानते हैं, किन्तु वे स्वामी दयानन्द के राष्ट्रीय कार्यों को भूल जाते हैं यह खेद और आश्चर्य की बात है कि नवयुग प्रवर्तक और आदर्श भारतीय राष्ट्र निर्माता के रूप में उनकी उतनी ख्याती नहीं जितनी होनी चाहिये थी यद्यपि, नेता सुभाषचन्द्र जी जैसे कई राजनीतिज्ञ नेताओं ने उनके इस रूप को पहिचाना और निम्न आशय के रूप में श्रद्धाञ्जलि दी। "स्वामी दयानन्द उन महापुरुषों में से एक थे। जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो उसके आचार सम्बन्धी पुनरुत्थान राजनीतिक एवं धार्मिक पुनरुत्थान के कारण हुए।" भारत के उपप्रधान मंत्री राजनीतिज्ञ शिरोमणि लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल ने ६ नवम्बर १९५१ ई० को देहली रामलीला मैदान में महर्षि निर्वाणोत्सव पर अपनी श्रद्धाञ्जलि देते हुये कहा था कि "स्वामी दयानन्द का सबसे बड़ा योगदान यह रहा है कि उन्होंने देश को किंकर्तव्यविमूढ़ता के गहरे गड्ढे में गिर जाने से बचाया, उन्होंने ही भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नीव डाली थी। भारत के महामहिम राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने २४ फरवरी १९६३ को ऋषिबोध के अवसर पर श्रद्धाञ्जलि देते हुये कहा था कि "स्वामी दयानन्द नव भारत के निर्माताओं में से सर्वोत्तम थे। उन्होंने राजनीतिक धार्मिक और सास्कृतिक दृष्टि से भारत के उद्धार और मोक्ष के लिए निरन्तर प्रयत्न किया।" इससे उत्तम श्रद्धाञ्जलि क्या हो सकती है उन्होने स्वामी जी को केवल धार्मिक, सामाजिक सास्कृतिक सुधारक ही नही माना बल्कि राजनीतिक भी माना है। इस प्रकार उक्त महापुरुषों के कथनो से स्वामी जी के स्वराज्य स्वतन्त्रता और राजनीतिक कार्यों तथा देश भक्ति के पक्षों की सम्यक् जानकारी प्राप्त होती है।

जिन साहित्यकारों तथा राजनीतिज्ञों ने स्वामी दयानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थों का अध्ययन किया है वह जानते हैं कि किस प्रकार उन्होने अपने जीवन काल मे अपनी निर्भय लेखनी और ओजस्वी भाषणों के माध्यम से स्वराज्य और स्वतन्त्रता के लिए अनवरत प्रयत्न किये। स्वतन्त्रता की भावना व्यक्त करते हुये वे अपनी अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास मे लिखते हैं कि "कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम है। माता-पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" महर्षि दयानन्द के स्वराज्य के महत्व विषयक ये शब्द स्वर्णाक्षरों मे अकित करने योग्य हैं। इसके साथ साथ स्वामी जी ने अपने भाषणों के माध्यम से भी स्वतन्त्रता की भावना को जाग्रत किया। उनके ऐसे परिपक्व निर्भीक विचारों को सुनते ही विदेशी सत्ता की जड़ें हिलने लगी। परिणाम स्वरूप जनवरी सन् १८७३ ई० में उस समय के अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड नार्थ ब्रूक मे ने कलकत्ता स्वामी जी को भेंट के लिए बुलाया था। वार्तालाप के बीच गवर्नर ने स्वामी से कहा कि—"स्वामी जी क्या आप अपनी ईश्वर प्रार्थना मे देश पर हमारे अखण्ड शासन की प्रार्थना भी किया करेंगे?" इस पर महर्षि ने कहा "मैं किसी ऐसी बात को मानने में असमर्थ हू, क्योंकि मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे देश-वासियो को अबाध राजनीतिज्ञ उन्नति और ससार के राज्यों मे समानता का दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी ही चाहिये। श्रीमान् जी! ईश्वर से नित्य सायं प्रात. उसकी अपार कृपा से इस देश को विदेशियो की दास्ता से मुक्ति की ही मैं प्रार्थना करता हू।"

नगे फकीर महात्मा गांधी से चर्चिल को जितना भय था उससे कहीं अधिक लार्ड नार्थ ब्रूक के मन में विद्रोही फकीर स्वामी दयानन्द के लिए इस मुलाकात से प्रारम्भ हो

१९ फरवरी जिनकी बोध रात्रि है

श्री रामनारायण शास्त्री विद्याभास्कर, आगरा

लेखक

गया था और वह सर्वथा स्वाभाविक ही था। राष्ट्रीय जागरण का प्रभाव जन-जन में व्याप्त होकर उनमें स्वदेश प्रेम, आत्म गौरव की भावना जगाने का श्रेय स्वामी दयानन्द को ही था। जिसके परिणामस्वरूप विदेशी दासता के विरुद्ध पुन: एक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। स्वामी दयानन्द की दिव्यदृष्टि में राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति हेतु स्वराज्य सर्व प्रथम आवश्यक था। राष्ट्र गौरव और आत्म सम्मान के अनुरूप स्वभाषा स्वदेश भूषा तथा स्वदेशी को जितना महत्व ऋषि दयानन्द ने दिया, उस रूप में उनसे प्रथम कोई न दे सका, उनके पश्चात् भी केवल महात्मा गांधी ने ही उनके पथ का अवलम्बन किया। क्या यह कम महत्व की बात है कि गुजराती होते हुये भी राष्ट्र भाषा हिन्दी बनाने का स्वप्न सर्व प्रथम स्वामी जी ने ही देखा था। आपस की फूट में अधोगति का प्रमुख कलक मानते थे। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्ट लिखा कि "जब भाई भाई आपस में लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पच बन बैठता है। देखो आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया पर अभी तक वही रोग पीछे लगा है।" इस प्रकार स्पष्ट है कि वे सम्पूर्ण भारतीयों को आपस में भाई भाई के समान एक रूप में देखना चाहते थे।

वर्तमान समय में ससार के विभिन्न देशों में प्रजातन्त्र, तथा अधिनायकवाद शासनों का प्रचार है लेकिन महर्षि दयानन्द ने वेद तथा शास्त्रो के आधार को लेकर आज से लगभग ८५ वर्ष पूर्व ऐसी शासन पद्धति का मार्ग दर्शन किया जिससे स्वाधीनता को प्राप्त कर हम उच्छृंखलता न कर सकें। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास में लिखा कि "एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार नहीं देना चाहिये, किन्तु राजा जो सभापति तदाधीन सभा, सभाधीन राजा और सभा प्रजा के आधीन रहे।" यह स्वामी दयानन्द की सच्चे लोकतत्र की कल्पना क्या इससे सुन्दर दुनिया में कोई लोकतन्त्र की कल्पना उस समय कर सकता था। स्वामी दयानन्द का राष्ट्र वाद स्फटिक मणि की तरह स्पष्ट है। देश भक्ति हिमालय की तरह उज्ज्वल और स्वतन्त्रता सम्बंध भावना समझौते की निर्बलता से सर्वथा अलिप्त थी। अपने देश की चर्चा करते हुये उनका रोम रोम उत्कृष्ट देश भक्ति से पुलकित हो उठता था। अपने देश के सम्बंध मे उन्होने लिखा था कि "यह आर्यावर्त्त ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है इसीलिए इस भूमि

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सह-शिक्षा हिन्दू जाति के विनाश का कारण

लेखक—डा० रघुवीर सरन मुख्य सगठक उत्तर-प्रदेश,
अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध समिति,

भारत स्वतन्त्र होने के पश्चात् इन सत्तरह अठारह वर्षों में जहां देश में अन्य कुरीतियां फैली है वहां नास्तिकता ने भी पर्याप्त उन्नति की है। नास्तिकता बढ़ने का कारण धर्म निरपेक्ष राज्य है। परन्तु इस धर्म निरपेक्षता का प्रभाव हिन्दू जाति तक ही सीमित रहा है। ईसाई मुसलमान व सिख इससे बच रहे हैं। धर्म निरपेक्षता का प्रभाव हिन्दू जाति पर इस कारण भी अधिक हुआ कि सहस्रो वर्षों से अनेक मत मतान्तरों मे उलझी हुई जाति किसी भी एक धर्म को मानने वाली न रह सकी। आज का हिन्दू, मुख्यतया शिक्षित हिन्दू वर्ग तो इस धर्म कर्म की बात को झझट व साम्प्रदायिकता समझता है। यदि ऐसा ही दृष्टिकोण ईसाई मुसलमान आदि का भी होता तो भी हिन्दू किसी सीमा तक सुरक्षित रह सकता था।

हिन्दू का दृष्टिकोण पाश्चात्य बन चुका है। इसका कारण पाश्चात्य शिक्षा पद्धति व प्रणाली है। सह-शिक्षा अर्थात् लड़के व लड़कियों का साथ-साथ एक ही शिक्षणालय में विद्या प्राप्त करना आज कल की शिक्षा प्रणाली का एक आवश्यक अग बनता चला जा रहा है। भारतीय दृष्टिकोण तो यह था कि ६ वर्ष का बालक भी बालिकाओं की पाठशाला मे वह ६ वर्ष की बालिका बालको की पाठशाला मे न जावे। बालक बालिकाओं की पाठशाला मे कम से कम ६ मील का अन्तर होना आवश्यकीय था। शिक्षा पद्धतियां भी पृथक्-पृथक् थी। इस प्रकार उच्च से उच्च शिक्षा दी जाती थी। सह शिक्षा जिन देशो में प्रचलित है वहां की परिस्थितिया अत्यन्त बिगड़ चुकी है। दैनिक प्रताप जालन्धर के सम्पादक महोदय श्री वीरेन्द्र जी विदेश यात्रा पर गये थे। भारत से अमरीका जाते हुये रास्ते मे फान्स, 'इगलैण्ड आदि देशों के मुख्य-मुख्य नगर पैरिस व लन्दन आदि में रुकते' हुये गये थे। फ्रांस के विषय मे उन्होंने लिखा था कि लडके लड़कियां जब अपने गांव से स्कूल को चलते हैं तो सीधे स्कूल न जाकर मार्ग में पार्कों मैं पहुचते हैं। कुछ समय तक प्रेम लीला का पाठ करते हैं तब स्कूल में पाठ के लिये जाते हैं। स्कूल मे भी यही क्रम चलता रहता है। इस सह शिक्षा का यह कुफल है कि अकेले एक पैरिस नगर में अविवाहित लड़कियों ने एक वर्ष मे ५ हजार अवैध बच्चों को जन्म दिया। लन्दन का समाचार है कि हजारों लड़के व लड़कियां वयस्क व अल्प वयस्क मदिरा के नशे में मस्त होकर शहर के बाजारो में घुस पड़े और दूकानो को लूटना व आपस मे एक दूसरे से गुत्थम गुत्था आरम्भ करके रास्ते रोक दिये। तुरन्त पुलिस बुलाई गई तब उन पर काबू पाया गया। यह है इस आधुनिक शिक्षा प्रणाली के करिश्मे। जिसके कुछ-कुछ लक्षण भारतीय नव युवकों व युवतियों मे भी दृष्टिगोचर होने लगे।

मैं जिस आने वाले सर्वनाश की ओर हिन्दुओं (आर्यो) का ध्यान आकर्षित करने लगा हू वह है भारत मे उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही सह-शिक्षा के कारण हिन्दुओं के सामूहिक धर्म परिवर्तन की आशका। हिन्दूओं का सामूहिक धर्म परिवर्तन ही क्यों हो रहा है और होगा इस पर गम्भीरता से विचार करना है। जिन स्कूलों में हिन्दुओं के लड़के व लड़कियां शिक्षा प्राप्त कर रहे है उन्हीं स्कूलो में ईसाई व सिख लड़के व लड़किया पढ रहे हैं मुसलमान लड़के भी पढ़ रहे है परन्तु मुसलमान लड़कियां नहीं पढ़ रहीं। मुसलमान अपनी कन्याओं को या तो घरो में ही कुरान शरीफ पढा कर सन्तुष्ट हो जाते हैं या अपनी कन्याओं को मुस्लिम कन्या पाठ शालाओं में ही पठन पाठन को भेजते हैं। मुस्लिम कन्याएं तो किसी भी दूसरे स्कूल में शिक्षा प्राप्ति हेतु नही जाने दी जाती अत: मुस्लिम स्त्री जाति सुरक्षित है।

सह-शिक्षा मे चरित्र हीनता का होना यह माना हुआ दोष है। हिन्दू लड़के व लड़कियो के ही सह-शिक्षा के स्कूल होते तो भी हिन्दू जाति की इतनी हानि न थी। माता पिता के विरोध करने पर भी चरित्र भ्रष्ट होकर हिन्दू लडके व लड़कियों के ही परस्पर प्रेम सम्बन्ध होते परन्तु सह-शिक्षा में यह होगा कि जाति पाति में जकड़े हुये हिन्दू समाज के नवयुवक व नवयुवतिया परस्पर प्रेम पाश मे बन्धकर हिन्दू जाति में नहीं रह सकेंगे।

परिणाम यह होगा कि यह अपने धर्म की तिलांजलि देंगे व ईसाई मुसलमान या सिख होकर अपनी प्रेमलीला को पूर्ण करेंगे। हिन्दू नवयुवक ईसाई युवती से प्रेम करके ईसाई सख्या को बढावा देगा। हिन्दू नवयुतिया ईसाई मुस्लिम या सिख नवयुवकों को आकर्षित करके या आकर्षित होकर विधर्मियो की सख्या को ही बढावा देंगे। क्योंकि पाश्चात्य सभ्यता या शिक्षा में दीक्षित होकर भी हिन्दू अभी अत्यन्त सकुचित मनोवृति का है। अपने लड़के व लड़कियों को अहिन्दूओं से विवाह करने की 'आज्ञा अभी हिन्दू नहीं दे सकता भले ही ऐसे पाशों मे बन्धे युवक युवतियां अपने धर्म या माता पिता को क्यों न त्याग दे। अब पाठक स्वय विचारे कि देश में सह-शिक्षा के प्रचार व प्रसार से हिन्दूओं का ही सर्वनाश होने जा रहा है या नहीं।

श्री अरुणा आसिफ अली व नैपाल के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री कोईराला की बहन आदि इस के जीते जागते प्रमाण है। ऐसी न जाने कितनी हिन्दू ललिनाएं विधर्मियों के घर बसा चुकी है। हिन्दुओं को अपने धर्म का ज्ञान ही नहीं है ऐसे धर्म ज्ञान शून्य माता पिता के घर मे बालक व बालिकाओं के लिये धर्म शिक्षा का अभाव, उधर धर्म निरपेक्ष राज्य होने के कारण स्कूल कालिजों मे धर्म शिक्षा का अभाव हिन्दू जाति के अस्तित्व को विनाशकारी सिद्ध हो रहा है। किन्तु ईसाई मुसलमान व सिख शिक्षा सस्थाओं मे तथा मस्जिदों गिरजाघरो और गुरुद्वारों मे अपने मजहबो की शिक्षा अब भी दी जा रही है। मुसलमानो के छोटे २ बालक भी रोजे व नमाज के अभ्यासी हैं। बालक पन से ही बच्चों के हृदयपटल पर मजहब की नीम जमा दी जाती है। युवा होकर यह विचार और भी परिपक्व हो जाते हैं।

हिन्दुओं ! यदि जीवित रहना है तो रोको इस सह-शिक्षा के प्रभाव को। घरो पर धार्मिक शिक्षा प्राप्ति का प्रबन्ध करो, स्वय भी धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करो। स्त्री व बच्चों को भी धार्मिक विचारों का बनाओ वरन सर्वनाश होने में सन्देह व बिलम्ब नही है।

—

पृष्ठ ७ का शेष)

का नाम स्वर्ण भूमि है, क्योकि यही स्वर्णादि रत्नो को उत्पन्न करती है।"

इस प्रकार स्वामी जी ने आर्यावर्त्त देश की महत्ता तथा गौरव का ध्यान दिलाते हुए स्वराज्य प्राप्ति एक भाषा आपस के व्यवहारों में समता, छूआछात अस्पृस्यता को दूर करने के लिए अविरल प्रयत्न किये थे। यह अकाट्य सत्य है कि स्वामी दयानन्द सच्चे राष्ट्र नायक और सन्मार्ग प्रदर्शक थे। यही कारण है कि आज ससार में सर्वोपरि आचार्य महापुरुष महात्मा गांधी स्वामी जी के विषय मे लिखते हैं कि "मेरे पिता तो मुझे आत्मिक धन दे गये हैं, आवश्यक है कि मैं इसमें कुछ उन्नति करू। तब ही कुटुम्ब व जाति का और देश का भला हो सकता है।" वर्तमान राजनीतिक क्षेत्र के सेनापति महात्मा गांधी का ऋषि को आत्मिक बल प्रदान कर्त्ता पिता, क्या अर्थ रखता है? स्पष्ट है कि आज जो जागृति भारत में दृष्टिगोचर हो रही है उसके प्रथम प्रवर्तक पिता महर्षि दयानन्द थे। इस बात की पुष्टि भारत के स्वर्गीय प्रधान मन्त्री लाल बहादुर शास्त्री के इस कथन से भी होती हैं कि "स्वामी जी महान् राष्ट्र नायक थे, उन जैसा विद्वान् और क्रान्तिकारी नेता मिलना कठिन है। अटूट ईश्वर विश्वास के साथ उन्होंने रूढ़िवादिता से जबरदस्त टक्कर ली और सामाजिक धार्मिक तथा राजनीतिज्ञ क्रान्ति मचा दी। ऐसे समय मे जब करना तो क्या सोचना भी कठिन था। उन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी का घोषनाद किया और छूतछात तथा जात-पात के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा। स्वराज्य और स्वदेशी का उन्होंने ऐसी लहर चलाई जिससे इण्डियन नेशनल कांग्रेस के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार हो गई। उनके प्रचार से हिन्दू धर्म का उत्थान हुआ और भारत की सुप्तात्मा जाग पड़ी।' अत. ऐसे स्वराज्य के मन्त्र दाता नवयुग प्रवर्तक आदर्श राष्ट्र निर्माता महर्षि स्वामी दयानन्द जिन्होंने भारत वर्ष को स्वतन्त्र कराने के लिए १७ बार जहर के प्याले पिये और भारत वासियों को अमृत पिला गये उनके चरणों में शतश. प्रणाम।

आर्य समाज और आर्य कुमार आन्दोलन

श्री देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक

नवयुवक ही किसी देश, जाति और धर्म के भावी रक्षक होते हैं, और उनकी समस्यायें ही उस देश, जाति और धर्म की समस्यायें हुआ करती हैं। किसी भी देश का उत्थान उसके नवयुवकों की शक्ति और स्फूर्ति के बल पर होता उसके अनुभवी तथा कार्यकुशल व्यक्तियों के नेतृत्व में चलकर नवयुवक समाज को विचित्र रूप मे प्रभावित करते हैं। जब-जब नवयुवकों और कुमारों में स्फूर्ति का ह्रास होने लगता है तब-तब समाज में भी क्षीणता आने लगती है।

प्रत्येक प्रगतिशील राष्ट्र युवको और कुमारो की इस शक्ति का महत्व समझते हैं। वह जानते हैं कि इनकी शक्ति का यदि उपयोग किया गया तो हमारा राष्ट्र उन्नति के रास्ते पर कहीं का कही बढ जायगा। और यह एक निर्विवाद सत्य है कि हमारे देश में अब तक जितने भी क्रान्तिकारी सामाजिक परिवर्तन हुये हैं वह सब युवकों द्वारा ही किये गये हैं। युवक दयानन्द ने ही दण्डी गुरु विरजानन्द के चरणों में बैठकर भारत से अविद्या और अज्ञान के अन्धेरे को दूर भगा देने का व्रत लिया था। मुन्शीराम की युवावस्था मे ही उनमे परिवर्तन आया और उसी समय से उनके उस भव्य स्वरूप के दर्शन हुये जिसने उन्हें लाला मुन्शीराम से महात्मा मुन्शीराम और स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया।

स्फूर्ति और नेतृत्व

किन्तु जैसा कि मैं पहले ही निवेदन कर चुका हू युवकों मे स्फूर्ति और साहस तो होता है परन्तु आवश्यकता होती है इस साहस तथा स्फूर्ति को सही दिशा मे प्रवृत्त करा देने की। इसके लिये उस समाज के अनुभवी नेताओं के ऊपर ही मार्ग प्रदर्शन का उत्तरदायित्व रहता है। आर्य समाजों तथा आर्य कुमार सभाओ के बीच सही सम्बन्ध होना चाहिये। आर्य कुमार ही आर्य समाज के भावी नेता तथा उसके शक्ति पुंज हैं। मेरा विश्वास है कि कुमारों मे जितना ही धार्मिक जीवन तथा सगठन आयेगा उतना ही आर्यसमाज सबल हो सकेगा। और इनको पथ-प्रदर्शन करेंगे आर्य समाज के योग्य सन्यासी अनुभवी नेता तथा सिद्धहस्त विचारक।

पिता-पुत्र

मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य समाज और आर्यकुमार सभाओं की स्थिति परिवार में पिता-पुत्र की स्थिति के समान है, पिता आदेश-सम्मति देता है, मार्ग प्रदर्शन करता है, पुत्र उस आदेश का पालन करता है। वह अपना आचरण अपने पिता के आदेशानुसार बनाता हुआ अपने परिवार के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। और सबके साथ पिता पुत्र के लिये अपना अपरिचित स्नेह और अपनी रक्षा का वरदहस्त बढा देता है। पिता ऐसे गुणी पुत्र को पाकर हर्ष से फूला नहीं समाता और पुत्र अपने पिता का आशीर्वाद प्राप्त करके गौरव अनुभव करता है।

आज आर्य समाज ने अपने विभिन्न आन्दोलनों मे कुमारो और नवयुवकों की शक्ति और उनके उत्साह को परख लिया है। हैदराबाद के जेलों मे शहीद होने वालों में कई कुमारों के नाम गौरव के साथ लिये जा सकते हैं। दिल्ली के शहीद शान्ति-स्वरूप का बलिदान अभी हमारी स्मृति में ही था। लाहौर की चौक-मती की घटना और अमर शहीद श्री परमानन्द का बलिदान तो अभी कल की चीज है। हिन्दी के लिये अपने प्राणो की आहुति देने वाले नया बास ग्राम के अमर शहीद सुमेरसिंह को कौन भुला सकता है? आवश्यकता इस बात की है कि आर्य कुमारों के इस अदम्य साहस और उत्साह से आर्य समाज लाभ उठाये।

नेतृत्व बपौती नहीं

नेतृत्व को अपनी बपौती समझने वाले कतिपय आर्य भाइयों ने इस भय से कि कल आर्य समाज कुमारों के हाथ मे चला जायगा, कुमार सभाओं को कभी भी प्रोत्साहन नहीं दिया! और कभी तो उनके मार्ग मे बाधायें भी डाली हैं। यह स्थिति बड़ी दयनीय है। आर्य समाज अन्य सम्प्रदायों की भांति बड़ी-बड़ी आयुओं में विचार परिवर्तन और मत परिवर्तन करने वाले (Converts) के बल पर नहीं चल सकता। यदि निर्वाचन के लिये कुछ व्यक्तियों को सदस्य बना कर ही आर्य समाज चला लेना है तो यह केवल एक दुराशा मात्र ही होगी। आर्य समाज को वह भगवती भागीरथी बनाना होगा जिसके लिये उसके आदि स्रोत गंगोत्तरी से निरन्तर नवीन जल आता रहता है और जो जल देश को धन-धान्य से समृद्ध बनाता हुआ अन्त मे अनन्त सागर के गर्भ मे निरन्तर विलीन होता रहता है। वह उस झील के समान बन कर जीवित नहीं रह सकता जिसमे जल आने का साधन तो नही है पर उसमे से कोई न कोई नाला निकलता ही रहता है।

जहा मेरा आर्य भाइयों से अनुरोध है कि वह कुमार सभाओ को अपनाये तथा उन मे जागृति और जीवन डालने का प्रयत्न करें वहा कुमार सभाओं को भी मेरी सम्मति है कि वह अपनी स्थानीय समाजों से सहयोग करें। उनकी योजनाओं मे रचनात्मक सहयोग दें और अपने लिये उनसे पथ-प्रदर्शन और सहायता मागें। इसी मार्ग को अपनाने में आर्य समाज का भविष्य अच्छा हो सकता है अन्यथा ऋषि का कार्य पूरा होना कठिन ही दीखता है। आर्य कुमारो के जोश तथा बूढ़ों के होश के एक केन्द्र मे आ जाने पर हम अपने देश की नौका को सफलता-पूर्वक पार ले जा सकेंगे।

लेखक
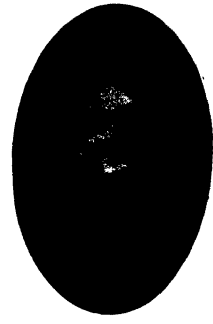
अत. आर्य भाइयों से निवेदन है कि वे अपने बालकों को कुमार सभाओ में अवश्य भेजें, जहा पर कुमार सभाए नहीं हैं वहा पर कुमार सभाओ का सगठन करें और जहां पर यह भी सम्भव नहीं है वहां आर्य भाई अपने साथ अपने बालकों को समाज में होने वाले यज्ञादि कार्यक्रम में साथ ले जावें जिससे बालकों के मन में वैदिक सस्कार पड़ सकें और वे आर्य राष्ट्र, आर्य जाति, आर्य धर्म, आर्य सस्कृति एव आर्य भाषा के जागरूक प्रहरी बन सकें।

——

राष्ट्र भाषा के प्रचार का साधन

देवनागरी तारों के प्रचार की योजना

आवश्यकता

देश में रेलवे विभाग और डाक तार विभाग की ओर से कई हजार तार बाबुओं को देवनागरी में तार भेजने का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। देवनागरी के तारों में जनता को कई प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं और वे तार अंग्रेजी तारों की अपेक्षा सस्ते भी पड़ते हैं। फिर भी उन सुविधाओं की जानकारी बहुत कम व्यक्तियों को है। जनता द्वारा देवनागरी में तार कम भेजने से तार बाबुओं को भी अपने प्रशिक्षण को उपयोग में लाने का अवसर नही मिलता। इस कारण जब कभी कोई तार देवनागरी में लिखा तारघर में दिया जाता है तो कई तार बाबू भी उसे भेजने में असुविधा अनुभव करते हैं। इस स्थिति को सुधारने के लिए यह आवश्यक है कि देवनागरी में तारों का प्रचार करने का विशेष प्रयत्न किया जाए और जनता के उस वर्ग को जिन्हें बहुधा तार भेजने पड़ते हैं देवनागरी के तारों में मिलने वाली सुविधाओं और इस प्रकार के तार के नमूनों से परिचित कराया जाए। देवनागरी मे तार लिखने और पढने में सुविधा होगी और दामों मे भी बचत होगी, यह बात समझ लेने पर जब बहुत अधिक व्यक्ति देवनागरी में तार भेजने लगेंगे तो उससे तार बाबुओं को देवनागरी के तार भेजने और प्राप्त करने का अभ्यास बढेगा।

देवनागरी तारों में दामों की बचत

देवनागरी तारों में शब्द गिनने के कुछ विशेष नियम हैं जिनसे वे तार सस्ते बैठते हैं। उन नियमों की जानकारी केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तिका "देवनागरी में तार" में प्रस्तुत की गई है। इस पुस्तिका में ऐसे कई सौ वाक्यांश दिए गए हैं जिनके लिए अंग्रेजी के तारों मे कई-कई शब्दों का प्रभार लगता है परन्तु हिन्दी में उसके लिए या तो एक शब्द से काम चल जाता है अथवा समासयुक्त शब्दों का प्रयोग करके अथवा विभक्ति को मिलाकर लिखने से केवल एक शब्द का प्रभार चार्ज) देना पडता है। उदाहरण के लिए 'day and night' अंग्रेजी मे ३ शब्द हैं परन्तु हिन्दी तार मे 'रातदिन' एक शब्द माना जाएगा। इसी प्रकार अंग्रेजी मे 'sent by goods train' में ४ शब्द माने जाएंगे परन्तु हिन्दी मे 'मालगाडीसे भेजदिया' इसके लिए दो शब्दो का प्रभार देना होगा। 'Again and again' अंग्रेजी में ३ शब्दो का वाक्यांश माना जाएगा परन्तु इसका हिन्दी पर्याय 'बारबार' एक शब्द। इसी तरह 'will be able to come' के लिए 'आसकूंगा', 'wear and tear' के लिए 'टूटफूट', 'Deputy Minister' के लिए 'उपमन्त्री', 'Chief Editer' के लिए 'मुख्यसम्पादक', 'Working Committee' के लिए 'कार्यसमिति', 'Errors and Omissions' के लिए 'भूलचूक' का प्रयोग करके कितनी बचत हो जाती है। ऐसे २६६ उदाहरण उस पुस्तिका में मिलेंगे।

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी पर्याय
Expedite	जल्दी करो
Arrange	प्रबन्ध करो
Contact	सम्पर्क करें
Informed	सूचित किया
Wire	तार दो

तार मे लिखने का रूप

जल्दीकरो प्रबन्धकरो सम्पर्ककरें सूचितकिया तारदो

अंग्रेजी के कुछ क्रियावाचक शब्द ऐसे हैं कि उनके हिन्दी पर्याय दो शब्दों में आते हैं, परन्तु उनको यदि मिलाकर लिखा जाय तो तार के लिए एक ही शब्द माना जाता है, जैसे।

तारों के नमूने

वैसे तो साधारण हिन्दी जानने वाले व्यक्ति भी सुगमता से हिन्दी में तार अपने आप लिख लेंगे। फिर भी जिन व्यक्तियों ने अब तक हिन्दी में तार नही देखे हैं वे इस प्रकार के तार स्वय लिखने से पहले विभिन्न विषयो पर हिन्दी मे लिखे तारों के प्रत्यक्ष नमूने देखना चाहते हैं। इसी दृष्टि से पारिवारिक, न्यायालय सम्बन्धी, व्यावसायिक, सरकारी, कम्पनी सम्बन्धी आदि विषयों के ३५० तारो के नमूने भी उपर्युक्त पुस्तिका में प्रस्तुत किए गए हैं। यदि इस पुस्तिका की प्रतियां तारघरों की खिडकियों के पास रख दी जाएं तो तार भेजने वालो को तार हिन्दी में लिख लेने मे बहुत सहायता मिल सकेगी।

प्रचार किस प्रकार किया जाए

जो कार्यकर्ता देवनागरी तारों का प्रचलन बढ़ाने के लिए अपनी सेवाएं रचनात्मक रूप मे प्रस्तुत करना चाहते हो उनके लिए सुझाव है कि वे अपने निकटवर्ती क्षेत्र के उन लोगों को जिन्हें बहुधा तार भेजने या लिखने पड़ते हैं यह बात जानने के लिए आमन्त्रित करें कि सस्ते तार किस प्रकार से भेजे जा सकते हैं। बात चीत केवल एक घण्टे की रखी जाए और उस दौरान पुस्तिका मे से छांटे गए विशिष्ट उदाहरणों के आधार पर उपस्थित व्यक्तियों को बताया जाए कि हिन्दी में तार लिखना कितना सुगम रहता है और वे तार कितने सस्ते पड़ते हैं। यदि प्रत्यक्ष उदाहरणों से कार्यकर्ता यह बात अच्छी तरह सिद्ध कर सके कि देवनागरी में तार भेजने से सचमुच ही दामों की काफी बचत होती है तो यह निश्चित है कि अधिकांश व्यक्ति भविष्य मे अपने तार हिन्दी में देने लगेंगे।

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित "देवनागरी में तार" से साभार उद्धृत।

आर्य जगत् के माननीय विद्वान

श्री डा० हरिशंकर जी शर्मा डी० लिट्

भारत सरकार के राष्ट्रपति महोदय द्वारा

पद्मश्री

की उपाधि से सम्मानित होने पर

सार्वदेशिक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

नेपाल के महामहिम महाराजाधिराज तथा सौ० महाराणी महोदय का आर्य समाज नैनीताल की ओर से स्वागत तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की ओर से आर्य साहित्य भेंट करते हुए आर्य समाज के मन्त्री श्री बांकेलाल जी बसल पास मे राज पुत्री तथा उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री बिश्वनाथ दास महोदय।

राजा या राष्ट्रपति के गुण और उसका उद्देश्य

श्री सुरेशचन्द्र वेदालकार एम० ए० एल० टी०
डी० ए० वी० कालेज, गोरखपुर

सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास मे जिस राज्यपद्धति का उल्लेख स्वामी दयानन्द ने किया है उसमे राजा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। राजा भी निर्वाचित व्यक्ति होता था और उसे आजकल हम राष्ट्रपति भी कह सकते हैं। इसके गुणों का उल्लेख करते हुए स्वामी दयानन्द जी ने मनुस्मृति अध्याय ७-४-६-७ श्लोकों का प्रमाण देते हुए लिखा :—

इन्द्रानिलयमार्कायामग्नेश्च वरुणस्य च। चन्द्रवित्तेशयोश्चैव मात्रा निर्हृत्य शाश्वती ॥ तपत्यादित्यवच्चैष चक्षूंषि च मनांसि च। न चैनं भुवि शक्नोति कश्चिदप्यभिवीक्षितुम् ॥ सोऽग्निर्भवति वायुश्च सोऽर्कः सोमः स धर्मराट्। स कुबेर स वरुण. स महेन्द्र प्रभावत ॥

यह सभेश, सभापति, राजा या राष्ट्रपति इन्द्र अर्थात् विद्युत् के समान शीघ्र ऐश्वर्यकर्ता, वायु के समान प्राणवत् प्रिय और हृदय की बात जानने-वाला, सूर्य के समान न्याय विद्या धर्म का प्रकाशक, अन्धकार अर्थात् अविद्या अन्याय का निरोधक, अग्नि के समान दुष्टो को भस्म करने वाला वरुण अर्थात् बांधने वाले के सदृश दुष्टो को अनेक प्रकार से बांधने वाला चन्द्र के तुल्य श्रेष्ठ पुरुषों को आनन्ददाता, धनाध्यक्ष के समान कोशों का पूर्ण करने वाला, सभापति होवे। जो सूर्यवत् प्रतापी, सबके बाहर और भीतर मनों को अपने तेज से तपाने वाला जिसको पृथ्वी में कड़ी दृष्टि से देखने को कोई भी समर्थ न हो। और जो अपने प्रभाव से अग्नि, वायु, सूर्य, सोम, धर्म प्रकाशक, धन वर्द्धक, दुष्टों को बन्धन कर्ता, बड़े ऐश्वर्यवाला होवे वही सभाध्यक्ष, सभेश होने योग्य होवे।

राष्ट्र मे सर्वश्रेष्ठ पुरुष ही प्रजा की अनुमति से राज सिंहासन पर बिठाया जाता था। ऋग्वेद के १०। १६६ मत्र में आया है कि शासन ग्रहण करते हुए राजा पुरोहित से कहता है :—

ऋषभ मा समानानां सपत्नाना विषासहिम्। हन्तारं शत्रूणां कृधि विराज गोपतिं गवाम्।

अर्थात् मैं समान देशीय पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हुआ हूं, विरोधियों के आक्रमणों का सहने वाला हूं तथा शत्रुओं को मार भगाने वाला हूं इसलिए मुझे आप राजा बना कर मेरा अभिषेक कीजिए।

यजुर्वेद ९। ४० मे योग्यतम पुरुष को राज्य पद के लिए चुनने की आज्ञा देता हुआ वेद कहता है :—

असपत्न सुवध्वम् महते क्षत्राय, महते ज्येष्ठाय महते जानराज्याय, इन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्रं मस्यै विष एष वोऽमी राजा।

अर्थात् जिसका विरोधी कोई न हो और सारा राष्ट्र जिसके पक्ष मे हो ऐसे पुरुष को बड़े भारी विस्तृत राज्य की अभिवृद्धि, कीर्ति और ऐश्वर्य बढाने के लिए राजा चुनो और सब लोग कहें कि अमुक पिता और अमुक माता के पुत्रको हम राजा बनाते हैं। राजा को चुनने का उपदेश देते हुए वेद भगवान् मनुष्यों को यह कहने का उपदेश देते हैं :—

नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्यै इयन्ते राज्यन्तासियमनो ध्रुवोऽसिधरुण.। कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा ॥

यजुर्वेद। ९।

अर्थात् प्रजा के प्रधान प्रधान कहते हैं 'हे मातृभूमि तुझे नमस्कार है, हे हमारी प्यारी मातृभूमि तुझे नमस्कार है, हे राजन् तू हमारी मातृभूमि का नियन्ता और धारण करने वाला है तुझको हम इस कृषि को प्रफुल्लित करने के लिए, समस्त देशवासियों के कल्याण के लिए उसकी सम्पत्ति की रक्षा के लिए और उनके पालन पोषण के लिए राजा बनाते हैं। तथा फिर वे कहते हैं :—

यात्रं हत्याय शवसे।
इन्द्र त्वा वर्तयामसि ॥

यजुर्वेद। ९।

अर्थात् शत्रुओं से देश की रक्षा के लिए तुझे राजा बनाते हैं। देश की कृषि, देश का आनन्द, देश का धन, देश का पालन पोषण तथा शत्रुओं से देश की रक्षा करने के लिए प्रजा राजा बनाती थी। ऋग्वेद १०। १७३। २ में कहा गया है :—

इहैवैधि माप च्योष्ठाः पर्वत इवा विचा चलिः। इन्द्रा इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्र मुधारय ॥

तुम यहीं पर्वत के समान अविचल होकर रहो। राजच्युत नहीं होना। इन्द्र के सदृश निश्चल होकर यहां रहो। यहां राष्ट्र को धारण करो। अथर्ववेद १२-१-५४ में राजा कहता है :—

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्। अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशा विषासहिः।

मैं अपनी मातृभूमि के लिए और उसके दुख विमोचन के लिए सब प्रकार के कष्ट सहने को तैयार हूं— वे कष्ट जिस ओर से आवें, चाहे जिस समय आवे, मुझे चिन्ता नहीं।

राजा प्रजा पुरुषों से राज्य मांगता हुआ कहता है —

सूर्यत्व वर्चसस्थ राष्ट्र दा राष्ट्र मे दत्त स्वाहा। मान्दास्थ राष्ट्र दा राष्ट्र मे दत्त स्वाहा॥ व्रजक्षितस्थ राष्ट्र दा राष्ट्र मे दत्त स्वाहा। दाशास्थ राष्ट्र दा राष्ट्र मे दत्त स्वाहा। शविष्ठस्थ राष्ट्र दा राष्ट्र मे दत्त स्वाहा॥ शक्करीस्थ राष्ट्र दा राष्ट्र मे दत्त स्वाहा। जनभृतस्थ राष्ट्र दा राष्ट्र मे दत्त स्वाहा॥ विश्वभृतस्थ राष्ट्र दा राष्ट्र मे दत्त स्वाहा।

मधुमतीर्मधुमतीभि पच्यन्तामहिक्षत्रं क्षत्रियाय दम्वाना अनाधृष्टा. सीदत सहौजसोमहिक्षत्रं क्षत्रियाय दधती. ॥ यजु० १०। ४।

अर्थात् सूर्य के समान दीप्त विद्वान् प्रजा पुरुषो! राष्ट्र का देना आप के अधिकार मे है आप मुझ को राष्ट्र दीजिए। आप सबको आनन्द देने वाले हैं, आप गौ आदि पशुओं तक की रक्षा करने वाले हैं, आप सर्वजनों का पालन पोषण और जीवमात्र की रक्षा करने वाले हैं आप मुझे राष्ट्र दीजिए। आप वीर हैं, सब के प्रति माधुर्य दिखाने वाले हैं आप मिलकर बड़ा भारी राष्ट्र मुझे दीजिए और शत्रुओ से निर्भय होकर अपने बल को बढ़ाते हुए राष्ट्र मे निवास कीजिए।

इस प्रकार शासन पर राजा आरूढ़ होता था। शासन पर आरूढ़ होने की क्रिया को राज्याभिषेक की क्रिया कहते थे। राजा का अभिषेक संबंधी क्रिया कलाप बड़ा विशद और प्रजा के प्रति उसके कर्तव्यों का बोधक होता था। अभिषेक के समय 'राजानो राजकृतः' राजको राजा बनाने वाले मुख्य राज्याधिकारी, पुरोहित, सेनापति, ग्रामणी आदि एकत्र होते थे और उस समय राजा को एक पलाश वृक्ष की शाखा दी जाती थी। इस शाखा को 'पर्ण' और 'मयि' कहा जाता था। यही राज्य की थाती का साकेतिक चिन्ह था। इस थाती को या धरोहर को देने वालों को 'रत्नी' की संज्ञा दी जाती थी। वह इनका आदर सत्कार कर 'पृथ्वी माता' या राष्ट्र माता की अनुमति प्राप्त करता था। और उसके बाद अनेक नदियों के मिश्रित जलसे स्नान करने के बाद राज चिन्हों को धारण करता था। और प्रतिज्ञा करता था "यदि मैं प्रजा का द्रोह करू तो अपने जीवन, अपने पुण्य फल, अपनी सन्तान आदि सबसे वंचित किया जाऊं।" और उसके बाद सिंहासन पर बैठने के पश्चात् पुरोहित जल छिडकते हुए कहता था 'देवताओ, अमुक बाप के बेटे और अमुक विशः के अमुक राजा को राजशक्ति के लिए दृढ़ बनाओ और जन राज्य के लिए इसे शत्रु रहित करो।'

पुनः पुरोहित राजा से कहता था। यह राज्य तुम्हें कृषि के लिए, रक्षा (क्षेम) के लिए, समृद्धि के लिए और पुष्टि के लिए दिया गया है। तुम इसके सचालक (यन्ता) नियामक और ध्रुव धारण कर्ता हो। इसके बाद राज्य उसको एक धरोहर के रूप में सौंप दिया जाता था।

इसके पश्चात् राजा की पीठ पर पुरोहित राजदण्ड से हलकी चोट करता था। इसका भाव यह था कि "राजा भी दण्ड से रहित नहीं है।" इस अभिषेक के बाद राजा पर शासन का बड़ा भारी भार आ जाता था। और इस कार्य को सचालन करने के लिए वह प्रजा के प्रतिनिधियों का सहयोग और सलाह लेता था। उसका शासन का उद्देश्य प्रजा का हित होता था। राजा के लिए स्पष्ट रूप मे कहा गया है कि वह प्रजा के प्रतिनिधियों की बात मान कर शासन चलाये जिससे प्रजा का हित हो। यदि राजा अपने मत पर चलता हुआ मन मानी करेगा तो :—

प्रभु स्वातन्त्र्य मापन्नो ह्यनर्थायैव कल्पते। भिन्न राष्ट्रा भवेत्सद्यो भिन्न प्रकृति रेव च। (शान्ति पर्व)

अर्थात् राजा अपने मत पर चले

(शेष पृष्ठ १२ पर)

राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन के निर्णय

श्री दयास्वरूप जी स्वागत मन्त्री, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन प्रयाग

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग की ओर से कुम्भ नगर प्रयाग मे दिनांक २१ जनवरी को मसूराश्रम बम्बई के ब्र० श्री दत्तमूर्त्ति जी की अध्यक्षता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ जिसमें निम्न प्रस्ताव पारित हुए।

१—यह सम्मेलन विगत सितम्बर ६५ में भारत पाक संघर्ष के समय भारतीय सेना के नौजवानों ने जो शौर्य एवं राष्ट्र प्रेम का अद्भुत परिचय दिया है उसके प्रति कृतज्ञता एवं आभार प्रदर्शित करता है तथा उन समस्त वीर सैनिकों के प्रति जिन्होंने अपने प्राणों को इस युद्ध मे उत्सर्ग किया है श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता है। शोक ग्रस्त परिवारों के के प्रति पूर्ण सद्भावना तथा दिवंगतो की यश कीर्ति सदैव अमर रहे, ऐसी अभिलाषा व्यक्त करता है।

२—विगत वर्ष भारत पाक युद्ध के समय भारतीय जनता ने जिस धैर्य उत्साह एवं राष्ट्रीय एकता का परिचय दिया है वह देश के इतिहास में अपूर्व घटना है यह सम्मेलन भारत की समस्त जनता को तदर्थ बधाई देता है तथा भूरि-भूरि अभिनन्दन करता है और आशावान है कि भविष्य में यह एकता दृढ होती जायेगी।

३—यह सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा एव विकास को ध्यान में रखते हुए नवोदित शक्तिशाली राष्ट्र इस्राईल को मान्यता प्रदान करें।

४ - यह सम्मेलन भारत पाक सघर्ष के अवसर पर उन समस्त राष्ट्रों को विशेषतयः जापान, मलेशिया, सिंगापूर आदि, जिन्होंने पाकिस्तान को स्पष्ट रूप से आक्रमणकारी घोषित किया था, के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

५—यह सम्मेलन राष्ट्र की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सरकार से सादर अनुरोध करता है कि एटम बम निर्माण की घोषणा करे। आज का समय तथा हमारी शत्रुओं से घिरी हुई जो स्थिति है उसमे इस अस्त्र का बनाना नितान्त आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है।

६—यह सम्मेलन भारत सरकार से साग्रह निवेदन करता है कि अपनी हठधर्मी का परित्याग करके समस्त भारत में गोहत्या का अविलम्ब प्रतिषेध कर दे। भारतीय जनता की मनोभावना का आदर तथा देश की एकता के लिये यह पग उठाना अत्यन्त आवश्यक है।

७—यह सम्मेलन भारत सरकार से प्रबल अनुरोध करता है कि अब भाषा तथा सम्प्रदाय के आधार पर वर्तमान प्रदेशों का और अधिक विभाजन न किया जाय। वर्तमान पंजाबी सूबा की साम्प्रदायिक मांग एवं हरियाना की अवसरवादी मांग को सरकार अविलम्ब स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दे।

८—यह सम्मेलन भारत सरकार से बड़े ही प्रबल शब्दों में अनुरोध करता है कि विदेशी मिशनरियों के धर्म प्रचार की ओट में भारत के मानचित्र को बदलने तथा ईसाईस्तान के बनाने की योजनाओं से सतर्क हो जाय और इस प्रकार के राष्ट्र विरोधी कार्यों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दें।

९ अभी हम एक महासंकट का मुकाबला कर चुके हैं और भविष्य में इससे भी बड़े सकट हमारे ऊपर मडरा रहे हैं। अत यह सम्मेलन बड़े ही प्रभावकारी एव प्रबल शब्दों में भारत सरकार एव विधायकों से अनुरोध करता है कि निम्न बातों को कार्य रूप मे परिणित करके राष्ट्र की सुरक्षा दृढ़ होने में सहायता प्रदान करें।

(क) राष्ट्र में कोई भी सामाजिक नियम विशेष वर्ग या जाति को ध्यान में रखकर न बनाया जाय अपितु प्रत्येक नियम राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के लिये समान रूप से अनिवार्य हो।

(ख) केन्द्रीय सत्ता को अधिक सुदृढ एव शक्ति शाली होना आवश्यक है अत. एकात्मक (यूनिटरी) सरकार बनाने की ओर अविलम्ब पग उठाये जांय और प्रदेशों में भेद न किया जाय तदर्थ काश्मीर के सम्बन्ध की धारा ३७० समाप्त की जाय।

(ग) जातीय सस्थाओं को अवैध घोषित किया जाय।

श्री दयास्वरूप जी, स्वागत मन्त्री ने समस्त आगन्तुक महानुभावों, विशेष कर मसूराश्रम बम्बई के ब्रह्मचारी दत्त मूर्त्ति, दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर के प्रतिनिधि प्रोफेसर रमेश चन्द्र जी अवस्थी, आर्कबिशप भारत राष्ट्रीय चर्च पादरी, एम० ए० जोइल एस० विलियम्स एव प० पद्म कान्त मालवीय, के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

(पृष्ठ ११ का शेष)

तो राष्ट्र में बड़े भारी अनर्थ का कारण होगा तथा राज्याधिकारी मण्डल और सारा राष्ट्र उसके विरुद्ध हो जायेगा। शुक्राचार्य की तो सम्मति है :—

न कर्षयेत् प्रजा कार्यमिषतश्च नृपः सदा। अपि स्वाणुवदासीत शुष्यन्परिगतः क्षुधा।

अर्थात् चाहे राजा भूख के मारे सूख कर काठ हो जाय पर अपने लिए प्रजा को कभी न सताये।

क्योंकि :—

अन्यथा स्वप्रजातापो नृपं दहति सान्वयम्।

अर्थात् प्रजा से जो सन्ताप की अग्नि उठती है वह राजा तथा उसके सारे वंश को दग्ध करके ही शान्त हो जाती हैं।

अग्नि पुराण में कहा है :—

राष्ट्रपीडा करो राजा नरके वसते चिरम्। अरक्षिता प्रजायस्य नरकं तस्य मन्दिरम्॥

- राष्ट्र को पीड़ित करने वाला राजा चिरकाल के लिए नरक में सड़ता है। तथा जो पीड़ा नहीं देता परन्तु प्रजा की रक्षा भी नहीं करता ऐसे राजा के लिए भी नरक में मन्दिर बना रहता है।

चाणक्य ने लिखा है :—

प्रजा सुखे सुख राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्। नात्मप्रिय हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्॥

अर्थात् प्रजा के सुख में राजा का सुख है और प्रजा के हित में राजा का हित है अपना प्रिय प्रजाओं का हित नहीं और प्रजाओं का प्रिय उसका हित है।

महाभारतकार ने कहा है :—

धिक् तस्य जीवितं राज्ञो राष्ट्रं यस्यावसीदति।

अर्थात् उस राजा का या शासक का जीवन धिक्कार है जिस के राज्य में प्रजायें दु:ख पाती हैं।

सत्यार्थप्रकाश के षष्ठ समुल्लास में इसी शासन का उल्लेख है। यदि यह शासन अपना कर्तव्य समझें तो राज्य उन्नति के शिखर पर जा सकता है।

बोध का स्वरूप

श्री स्वामी गगागिरि जी महाराज, आचार्य, गुरुकुल रायकोट

मनुष्य का मन या मस्तिष्क इतनी पूर्ण वस्तु है कि अर्वाचीन वैज्ञानिक भी उसके विषय मे बहुत कम जान पाये हैं। विचारकों के सामने इस समय तीन विद्यायें हैं। प्राणि तत्व शास्त्र, भौतिक विज्ञान और मानसशास्त्र अर्थात् मनोविज्ञान। प्राणि विद्या के पण्डित जीवन और चैतन्य की खोज करते हैं। उनके अनुसन्धानों का प्रधान क्षेत्र जीवन कोष है। जिसमें वह चैतन्य का अनुभव करते हैं। बहुत परिश्रम के पश्चात् भी यह ज्ञान नहीं हो सका कि घटक-कोष, जिसके समुदाय से चैतन्य का जीवन प्रगट होता है, प्राण किस प्रकार उत्पन्न होता है। भौतिक विज्ञान का सर्वस्व परमाणु है। परमाणु की अन्तर-रचना के और स्वरूप के विषय में भी वैज्ञानिक खोज में लगे हैं। उसकी आन्तरिक रचना के और स्वरूप के विषय में भी जो कुछ मालूम हुआ है बहुत कम है।

मनोविज्ञान का सम्बन्ध मन की शक्तियों से है। मन के स्वरूप का निर्णय करना उपर्युक्त दोनों शास्त्रो के विषयों में भी बहुत अधिक है। और कठिन है। चैतन्य के स्फुरणों को ग्रहण करने मे समर्थ मन है। मन के सदृश अब कोई भी पदार्थ इस जगत में नही है। जड़ और चैतन्य की पारस्परिक क्रिया, प्रतिक्रिया का माध्यम मन है। इस समय पश्चिमी शास्त्रों को इतना मालूम हुआ है कि मन के दो भाग हैं—प्रत्यक्ष और परोक्ष। इन्हे ही जाग्रत और सुषुप्त कहा जाता है। सुषुप्त या परोक्ष निहित मन यदि परिणाम में एक सहस्र शाखक माना जाए तो उसकी तुलना मे एक अश के बराबर तो प्रत्यक्ष को समझना चाहिए। हमारा ज्ञान विचार से था। इनका बहुत अधिक व्यापार जागृत मानस से ही विवृत्त होता है। परन्तु जाग्रत मन की विभूति परोक्ष मन है। परोक्ष में मन की तुलना इतनी है जितनी कि ब्रह्माण्ड तुलना में एक परमाणु की है। हमारे समस्त इस जन्म के संस्कार

शेष पेज १४ पर

गुरुमुख निहालसिंह का भाषण दुर्भाग्यपूर्ण

राज्य सरकार को उसका कड़ा नोटिस लेना चाहिए

ला० रामगोपाल शालवाला की जोरदार मांग

दिल्ली, १ फरवरी ६६। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महा मन्त्री श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल श्री गुरुमुख निहालसिंह के अमृतसर के दूसरे सिक्ख इतिहास सम्मेलन में २९ जनवरी ६६ को दिए गए अध्यक्षीय भाषण के इस अंश पर घोर आपत्ति की है कि यदि पजाबी सूबे की मांग खूबसूरती के साथ पूरी न की गई तो पजाब मे बम्बई और दक्षिण जैसी दुःखद घटनाओं की पुनरावृत्ति हो सकती है। बम्बई मे महाराष्ट्र के निर्माण और दक्षिण मे भाषायी प्रश्न को लेकर उपद्रव हुए थे, श्री गुरुमुख निहालसिंह का सकेत इन दुःखद घटनाओं की ओर ही है। लालाजी ने सम्वाददाताओं को बताया कि यदि भाषण की रिपोर्ट समाचार पत्रों में सही छपी है तो यह भाषण वस्तुतः बड़ा दुर्भाग्य पूर्ण है। उन्होंने मांग की है कि राज्य को इस भाषण का कड़ा नोटिस लेकर उनके विरुद्ध तत्काल कानूनी कार्यवाही करनी चाहिए।

श्री शालवाले ने मुख्यमन्त्री श्री रामकिशन के वक्तव्य पर जो उन्होंने ३० जनवरीको अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए दिया है सतोष व्यक्त करते हुए कहा कि इस भाषण का प्रतिवाद करना ही काफी नहीं है अपितु इसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही का किया जाना भी आवश्यक है।

श्री गुरुमुखनिहालसिंह एक जिम्मेवार व्यक्ति है। वर्षों तक कालेजों के प्रिंसिपल रहे तथा देहली की विधान सभा के अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं। उन जैसे शिक्षित व्यक्ति को यह शोभा नहीं देता कि वे अपने भाषणों में ऐसा विष उगले जिससे राष्ट्र की एकता के भग होने और विविध वर्गों में कटुता व्याप्त होने की आशका हो। भाषण की स्वतन्त्रता का अर्थ जबान को बे लगाम कर देना तो नहीं है।

श्री शालवाले ने कहा कि पजाबी सूबे के निर्माण की अकालियों की साम्प्रदायिक एवं अव्यवहार्य मांग की पूर्ति के लिए सर्व सामान्य तो क्या जिम्मेवार सज्जन भी औचित्य और अनौचित्य की परवाह किए बिना कितना संकीर्ण और आपत्तिजनक रवैया इख्तियार कर सकते हैं यह गुरुमुख निहालसिंह के वक्तव्य से स्पष्ट है। उन्हें तथा उन जैसे विचार रखने वाले पजाबी सूबे के पक्ष पोषकों को स्मरण रखना चाहिए कि पजाबी सूबे के निर्माण के विरुद्ध भी भावनाए कम उग्र नहीं है।

अन्त मे श्री शालवाले ने कहा कि धमकियां देना व्यर्थ है। पजाबी सूबे के निर्माण के विषय मे जनता को युक्तियो एवं औचित्य से कायल करना चाहिए। प्रशासनिक सैनिक, आर्थिक एवं सास्कृतिक किसी भी दृष्टि से क्यों न देखा जाय विभाजित पंजाब को काट छांटकर अकालियों की भावना के पजाबी सूबे का निर्माण युक्तियों एव औचित्य की कसौटी पर अव्यवहार्य एव हानिकर सिद्ध हो चुका है फिर इस मरे हुए प्रश्न को जीवित करने से क्या लाभ ?

आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली ने

५०० महर्षि बोधांक

का आर्डर दिया है जिसे वह विशिष्ठ व्यक्तियों को भेंट करेंगे। यह निर्णय देश की सभी आर्य समाजों के लिए अनुकरणीय है।

सभा-मन्त्री का भाषण

वाराणसी २७-१-६६ श्री लाला रामगोपाल शालवाले मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, मातृ-मन्दिर के शिलान्यास समारोह मे सम्मिलित होने के लिये यहा पधारे। मध्यान्ह मे ३ बजे एक विशाल जन सभा मे भाषण करते हुए उन्होंने बनारस के आर्य सामाजिक पुरुषों को सगठित रूप से प्रचार और प्रसार में भाग लेने की प्रेरणा की। उन्होंने कहा कि इस सकट काल मे आर्य समाज का विशेष दायित्व है। आर्य हिन्दू सस्कृति को अन्दर और बाहर से जिस प्रकार का खतरा आज है उससे पूर्व कदाचित कभी नहीं हुआ था। देश के नवयुवक और नवयुवतियों में भौतिक वाद के प्रति आकर्षण का बढ़ जाना देश की धार्मिक स्थिति को सर्वथा कमजोर कर देने वाला है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की चर्चा करते हुए आपने कहा कि जिस दृढ़ता के साथ विश्व विद्यालय के छात्रो ने हिन्दू शब्द के हटाये जाने का विरोध किया है उसके लिये वे निःसन्देह बधाई के पात्र हैं। आपने कहा कि देश द्रोही तत्वों के पनपने की बीमारी तो मुसलिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ मे थी परन्तु हमारी भोली सरकार इलाज काशी हिन्दू विश्व विद्यालय का कर रही है। यह बड़े आश्चर्य की बात है।

श्री रामगोपाल शालवाले ने देश की अखण्डता को चुनौती देने वाले पजाबी सूबे की मांग का विरोध करते हुए वाराणसी के आर्य हिन्दुओं को सगठित रूप से आन्दोलन करने की प्रेरणा की।

निर्वाचन

आर्य युवक परिषद् दिल्ली के निर्वाचन में।

अध्यक्ष सर्व—श्री प० देवव्रतजी धर्मेन्दु, उपाध्यक्ष—मा० ईश्वर दत्त जी तथा राम देव तनेजा मन्त्री—प्रो० ओ३म् प्रकाश उप मन्त्री—जगदीशचन्द्र विद्यार्थी प्रचार मन्त्री—नरेन्द्र कुमार परीक्षा मन्त्री हरिदत्तजी तथा—ओ३मप्रकाश जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज-स्थापना

शोलापुर के पूर्वी भाग साखरपेठ मे नवीन आर्य समाज की स्थापना हुई श्री मुरलीधर जी भूतड़ा प्रधान चुने गए।

आर्यसमाज हसनगंज पार

लखनऊ के निर्वाचन में श्री डा० गुरुमुखराम जी मदन एम. ए. पी. एच डी. प्रधान, श्री नारायण जी, श्री सोमेन्द्रनाथ जी उपप्रधान, श्री विद्यानन्द मन्त्री, श्री भगवतीप्रसाद जी उपमन्त्री, श्री लालबहादुर सिंह जी कोषाध्यक्ष तथा श्री देवेन्द्रनाथ चौधरी जी पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

शोक प्रस्ताव

—निम्न आर्य संस्थाओं ने प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किए हैं :—

१—आर्य समाज खण्डवा।
२—आर्य समाज छतरपुर।
३—आर्य समाज फोर्ट बम्बई।
४—आर्य समाज रेलवे कालोनी, कोटा।
५—आर्य समाज देवरी महमदपुर।
६—आर्यसमाज हसनगंजपार लखनऊ
७—आर्य समाज राधेपुरी दिल्ली।

आर्य समाज टागा पूर्वी अफ्रीका ने माननीय लाल बहादुर जी शास्त्री के निधन पर एक विशेष सभा में निम्न शोक प्रस्ताव पारित करके हाई कमिश्नर टनजानिया (दारासलेम) के द्वारा भारत के मान्य राष्ट्रपति महोदय को भेजा है।

बसन्त उत्सव

—आर्य समाज जालना (महाराष्ट्र) में बसन्त पर्व वृहद यज्ञ के साथ मनाया गया, आर्य कुमारों के भजन, सौ० सविता देवी जी तथा श्री गोपाल देव शास्त्री के भाषण हुए।

आर्यसमाज मुरादनगर

आर्डिनेन्स फैक्टरी के चुनाव मे सर्वश्री राजमणि शर्मा प्रधान, रमाशकरसिंह उपप्रधान, रामप्रसाद मन्त्री दीनानाथ उपमन्त्री, प्रचारमन्त्री मनीषीदेव, कोषाध्यक्ष हुशियारसिंह, पुस्तकाध्यक्ष पुरोहित बालमुकन्दजी, निरीक्षक सत्यार्थप्रकाश जी तथा आर्य कन्या पाठशाला के मन्त्री कृष्णकुमार उपमन्त्री शिवप्रसाद कपिल और कोषाध्यक्ष भीमसिंह जी चुने गए।

आर्यसमाज चांदपुर

के चुनाव में सर्वश्री अमीचन्द गुप्ता प्रधान, बिशनसिंह उपप्रधान, किशोरीलाल मंत्री, मदनमोहन, रामकुमार उपमंत्री, वेदप्रकाश कोषाध्यक्ष प्रतापसिंह पुस्तकाध्यक्ष तथा सोमदेव जी निरीक्षक चुने गए।

आर्यसमाज हांसी

के निर्वाचन में सर्वश्री इन्द्राजसिंह प्रधान, मूलचन्द जयकिशनदास उपप्रधान, सत्यपाल मन्त्री, ब्रह्मराजनन्दलाल उपमंत्री, केशवराम कोषाध्यक्ष चुने गए।

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

पंजाबी सूबे के प्रश्न पर

१३ फरवरी को दिल्ली में विराट सभा होगी

पंजाबी सूबा सम्बन्धी निर्माण की गई मंत्रिमण्डलीय समिति के पुनर्गठन के सरकारी नीति एवं पंजाब की अखण्डता को सुरक्षित रखने के लिये भावी कार्यक्रम का निर्माण करने के निमित्त तारीख १३ फरवरी १९६६ रविवार को मध्यान्ह एक बजे से आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल में एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया है जिसमें पंजाब की समस्याओं पर गम्भीरता से विचार किया जायेगा। इस बैठक के पश्चात् एक विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन किया जा रहा है। आप सहमत होंगे कि पंजाब एवं अन्य प्रान्तों की जनता को पंजाबी सूबे की अनुचित मांग से अवगत कराने के लिये एक संगठित आन्दोलनात्मक अभियान प्रारम्भ करने की आवश्यकता है।

अतः १३ फरवरी १९६६ रविवार को आप अवश्य दिल्ली पधारने का कष्ट करें और अपने आने की सूचना मुझे सम्मेलन से पूर्व देने का अनुग्रह करें।

रामगोपाल
मन्त्री

कल्याण मार्ग का पथिक

निस्सन्देह बड़ा प्रशंसनीय और रोचक है। प्रत्येक भारतीय नवयुवक को पढ़ना चाहिये। जो इसे नाविल की भांति आदि से अंत तक बिना पढ़े न छोड़ेगा। रोचक तो है ही पर उससे कहीं अधिक और शिक्षाप्रद है। आपका परिश्रम सराहनीय है।

— काशिव जी, उज्जैन

कल्याण मार्ग का पथिक प्राप्त करके बहुत खुशी हुई। इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यह विशेषांक आर्य जनता के लिये विशेष प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक है। इस विशेषांक को समस्त आर्य जनता ही नहीं—समस्त भारतवासियों को पढ़ना चाहिये। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा रचित यह 'कल्याण मार्ग का पथिक' बहुत ही श्रेष्ठ है। मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

— कान्तिरमण भारद्वाज, हाथरस

श्री त्यागी जी का स्वागत

मध्यभारत आर्य प्रतिनिधि सभा लश्कर एवं ग्वालियर की तीनो आर्यसमाजों के सैंकड़ो सदस्यों ने स्वदेश लौटने पर मार्ग में लश्कर स्टेशन पर माननीय श्री ओमप्रकाश जी त्यागी का स्वागत किया।

ऋषि मेला

दिल्ली—नई दिल्ली के १५० आर्य समाजों की आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी रामलीला मैदान मे ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में एक विशाल ऋषि मेला होगा।

इस अवसर पर भारत सरकार के कतिपय मन्त्री एवं ससद सदस्य तथा अन्य आर्य विद्वान् महर्षि के प्रति विचार प्रकट करेंगे।

आर्य समाज गया में

गणतन्त्र दिवस आर्यसमाज में यज्ञ-हवन के साथ मनाया गया। अनेक महत्वपूर्ण भाषण हुए।

आर्य समाज देवास

ने आर्य जगत के विद्वान् श्री प० गगाप्रसाद जी तथा वानप्रस्थी श्री हरिकृष्ण जी सोलकी इन्दौर के निधन पर शोक प्रकट किया।

आर्य समाज पुलबंगश दिल्ली

के निर्वाचन में सर्वश्री नन्दलाल प्रधान, हसराज, सुरेन्द्रकुमार मन्त्री, रामधन उपमन्त्री, मलिक बृजलाल कोषाध्यक्ष एवं पारवानी जी पुस्तकाध्यक्ष चुने गये।

आर्य कुमार सभा

पुलबगश प्रतिदिन सायकाल ६ से ७ तक लगती है।

आर्य समाज कटरा बांदा

१८—१९—२० फरवरी को वार्षिकोत्सव होगा।

शोक प्रस्ताव

—आर्य कन्या गुरुकुल, पोरबन्दर ने आर्य विद्वान् श्री पं० गंगाप्रसाद जी एम० ए० के निधन पर शोक प्रकट किया।

आर्य समाज, गुंजोटी ने प० गगाप्रसाद जी एम० ए० डाक्टर भाभा तथा गाडगिल महोदय के निधन पर पर शोक प्रकट किया।

—आर्य समाज, चण्डीगढ़ (सेक्टर २२) ने वयोवृद्ध आर्य विद्वान् श्री प० गगाप्रसाद जी चीफ जज के निधन पर शोक प्रकट किया।

—आर्य समाज शोलापुर ने श्री गाडगिल तथा श्री प० गगाप्रसाद जी एम० ए० चीफ जज के निधन पर शोक प्रकट किया।

—आर्यसमाज गुलाबसागर जोधपुर ने श्री प० गगाप्रसाद जी एम० ए० रि० चीफ जज की मृत्यु पर शोक प्रकट किया।

—आर्य समाज सदर झांसी ने वयोवृद्ध नेता श्री प० गगाप्रसाद जी एम० ए० के निधन पर शोक प्रस्ताव किया।

—आर्य वीर दल गुंजोटी की ओर से श्री कृष्ण विद्यालय में लाला लाजपतराय का जन्म दिन तथा सुभाषचन्द्र बोस की पुण्यतिथि मनाई गई।

आर्य वीर दल, आर्य वीरांगना दल आर्यसमाज गुंजोटी तथा श्रीकृष्ण विद्यालय के छात्रों की सम्मिलित सभा में २०-१-६६ को हिन्दी दिवस मनाया गया।

(पृष्ठ ३ का शेष)

का जन्म हुआ था। सिखमत केवल तलवार के मोर्चे पर विधर्मियों की प्रबल विभीषिका से हिन्दू जाति को यत्किंचित् त्राण दे सका, पर ज्ञान मोर्चे पर विधर्मियों और विदेशियों के जघन्य षड्यन्त्रों से हिन्दू जाति की रक्षा करने का श्रेय यदि किसी को प्राप्त है तो वह केवल आर्यसमाज को।

हिन्दू जाति का सरक्षण दोनों का समान उद्देश्य था। परन्तु जैसे राजनीति के क्षेत्र में अंग्रेजों को 'फूट डालो और राज्य करो। की कूट नीति चमत्कारी सिद्ध हुई, वैसे ही धर्म के क्षेत्र में भी उनकी कूटनीति रंग लाई। जैसे भारत की एक राष्ट्रीयता को हानि पहुंचाने के लिए अंग्रेजों ने भारत के मुसलमानों को कांग्रेस से अलग करके मुस्लिम लीग के रूप में खड़ा कर दिया, वैसे ही मेकालिफ जैसे अंग्रेजों ने अकाली आण्ड के सिखों को हिन्दुओं से अलग करने का प्रयत्न किया। मा० तारासिंह की नेतागिरी उन्हीं मेकालियन जैसे कूटनीतिज्ञों के आशीर्वाद का फल है—आज यह सत्य किसी भी राष्ट्रीय इतिहास के अध्येता से छिपा नहीं है। परन्तु जिनको राष्ट्र से ही कोई वास्ता नहीं उन्हें सत्य से भी क्या वास्ता! इसीलिए उन्हें सच्ची बात कहने वाला अपना दुश्मन दिखाई देता है।

आर्यसमाज का सबसे बड़ा अपराध यही है कि वह राष्ट्र के सामने सत्य को प्रकट करता है, क्योंकि "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने का "गुरुमन्त्र उसे घुट्टी मे मिला है। परन्तु चोर को चांदना कब सुहाता है? आर्यसमाज के ही कारण मास्टर जी की अराष्ट्रीय चौर्य-रात्रि पर यान नहीं चढने पाती, इसीलिए उनका आर्यसमाज के प्रति यह आक्रोश है।

चोरो! सावधान! आर्यसमाज का चौकीदार अभी सोया नहीं है। वह पहरे पर तैनात है। उसके एक हाथ में वेदरूपी मशाल की रोशनी है और दूसरे हाथ मे राष्ट्रीयता की लाठी है। इस लगुड हस्त चौकीदार के सामने तुम्हारी नही चलेगी।

—क्रमश

(पृष्ठ १२ का शेष)

और जन्मान्तर के भी, इसी परोक्ष मन के श्वेतपत्र पर छपे रहते हैं। उस पर पड़े हुए अक्स अनन्त हैं। उसमे गिनती के छापों को हम प्रयत्न से स्पष्ट सिद्ध कर पाते हैं। इस छोटी सी नर देह मे समाया हुआ मनुष्य भी अत्यन्त महान् है और विराट है।

प्रत्यक्ष मन शान्त और अल्प है। परोक्ष मन अनन्त अमृत है। उपनिषद मे मुनि सनत कुमार जी ने नारद जी को उपदेश में कहा है यो वै भूमातत अमृतय। भूमा की ओर अग्रसर होने का नाम ही बोध है। इसी को प्राप्त कौन करता है! मनुष्य का चोला प्राप्त करके जो परोक्ष मन को जगाता है वह ही प्राप्त कर सकता है। ऋ० ५-४४-१४। "यो जागार तमृचा कामयन्ते" वेद उपदेश करता है। जो जागता है ऋग्वेद उसी को बोध ज्ञान देता है। जो आत्मा नींद में सोया पड़ा है वह उस भूमा के बोध को प्राप्त नहीं कर सकता है।

हमारा कर्तव्य

(प्रो० जगमोहन मित्तल एम० ए०)

मैं स्वयम् आर्यसमाज की वर्तमान शिथिलता की बड़ी आलोचना करता रहा हूं। प्रान्तीय सभाएं क्या कररही है, केन्द्रीय सभा में तो झगड़े हैं इत्यादि इत्यादि। धीरे धीरे मेरी समझ में यह बात आई कि मैं क्या कर रहा हूं। क्या मैंने देश समाज और आर्यसमाज के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा कर दिया है? क्या मेरे पड़ोस में ईसाई और मुसलमान नहीं है? क्या मैंने अपने पड़ोस के अनाथों और विधवाओं की कुछ सभाल की है। क्या मेरे पड़ोस में नियमित रूप से वेद का प्रचार होता रहा है? अगर नहीं तो मुझे दूसरों की आलोचना का क्या अधिकार है।

मेरे पड़ोस में, मेरे समीप तो गन्दगी पड़ी हुई है और मैं अजमेर और दिल्ली वालों को दोष दे रहा हूं। यह कहां का न्याय है। हर आर्य समाजी स्वयम् ही प्रचारक है। अगर पक्षी का मुख्य धर्म उड़ना है और अग्नि का मुख्य धर्म गर्मी देनी है तो आर्यसमाजी का मुख्य धर्म प्रचार करना है। आर्यसमाजी और प्रचारक तो पर्यायवाची शब्द है और इसलिए वेद प्रचार पूर्ण पुरुषार्थ के साथ दिन रात करना हर आर्य का धर्म है। राजनैतिक धार्मिक आर्थिक सामाजिक शैक्षणिक एव लोक कल्याण के क्षेत्र खाली पड़े हैं। सबसे अच्छा कार्य क्षेत्र अपना मोहल्ला और अपना शहर ही है। जहां आप रहते हैं, हर आदमी से जानकारी रखते हैं, उसके स्वभाव से परिचित हैं। वहा किस क्षेत्र मे कार्य की आवश्यकता है यह भी आप भली भांति जानते हो वहीं युवकों की एक टोली बनाओ और कार्य मे जुट जाओ। शुद्धि आन्दोलन आर्य स्कूल, आर्य औषधालय एवम् आर्यसमाज के यज्ञ एव उपदेशको के प्रचार को कराओ। ऐसा कौनसा काम है जो मनुष्य परिश्रम एव योजना से नहीं कर सकता। जब ईसाई पादरी विदेशों से आकर अनजाने प्रदेश मे धर्म प्रचार करते हों, तो क्या आप अपने क्षेत्र में नहीं कर सकते?

आप कहेंगे उनके पास तो विदेशों से धन आता है। मैं पूछता हूं क्या आपके पास धनिकों एव पैसे की कमी है? आप कहेंगे वे तो नौकरी का और पैसे का प्रलोभन देते है। मैं कहता हू आपको कौन रोकता है? आज भी हिन्दू बड़ी बड़ी फैक्टरी और उद्योग शालाओं के मालिक हैं जहां हजारों को रोजगार मिलता है।

ऐसी कौनसी बात है जो उनमे है और हममे नही है। हम तो उनमें लाखों गुणो लाभ मे हैं। इसलिए भाइयो कमर कस उठ जाओ, बुद्धि से विचार कर और योजना बनाकर काम करो और अपने अपने शहर में शुद्धि का डका बजा दो। देखो केन्द्रीय और प्रान्तीय सभाए आपको सहायता देती हैं या नहीं।

अभिनन्दन

पद्मश्री श्री डा० हरिशंकर जी शर्मा
डी० लिट् आगरा,

श्रीयुत ओम्प्रकाश महोदय,
त्यागी जी वर वन्दन हैं।
आप पधारे प्रिय स्वदेश में,
स्वागत है, अभिनन्दन है॥
आर्यवीर वर, जा विदेश में,
वैदिक धर्म प्रचार किया,
दयानन्द ऋषि के आदेशों का,
सबको सन्देश दिया।

❀ ❀ ❀

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सम्पूर्ण छप गया !

सा म वे द

(मूल मन्त्र और आर्य भाषानुवाद सहित)

भाष्यकार

श्री पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

(स्नातक गुरुकुल कांगड़ी)

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार (४०००) पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थी। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है।

यह २८ पौंड सफेद कागज पर कपड़े की जिल्द और मूल्य ४ रुपये है किन्तु दीपावली से दिसम्बर तक ३) रु० में देंगे। भारी संख्या में मंगवाइये, पोस्टेज पृथक्।

हिन्दूराष्ट्र को सच्चा मार्ग दिखानेवाली सर्वश्रेष्ठ धर्म-पुस्तक

वैदिक मनुस्मृति

(श्री सत्यकाम जी सिद्धान्त शास्त्री)

हिन्दी टीका सहित—हिन्दू धर्मग्रन्थों में चारों वेदों के पश्चात् एकमात्र प्रामाणिक पुस्तक यही है। यद्यपि वेदों का समझना साधारण जनों के बस में नहीं, पर मनुस्मृति को नागरी पढ़ा हुआ व्यक्ति भी समझ सकता है। ४०८ पृष्ठ, मूल्य ४॥)

कथावाचकों उपदेशकों, ज्ञानी, विद्वानों तथा हर गृहस्थी के लिए

दृष्टान्त महासागर सम्पूर्ण

(श्री सन्तराम सन्त)

इस ग्रन्थ में वैदिक, लौकिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, भक्ति और ज्ञान-वैराग्य आदि सभी विषयों में अच्छे से अच्छे दृष्टान्तों का संकलन किया है। संसार के अनेक महापुरुषों, राजाओं, विद्वानों एवं सिद्धों के अनुभूत तत्वों का इसमें अनोखा समावेश है। पृष्ठ २५०, सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) ढाई रुपया, डाक व्यय १॥) अलग।

उपदेश मंजरी—स्वामी दयानन्द जी के उपदेश प्रत्येक आर्य-समाजी को अवश्य अध्ययन करने चाहिये। पूना नगर में दिये गये सम्पूर्ण १५ व्याख्यान इसमें दिये गये हैं। मूल्य २॥) रुपये।

संस्कार विधि—इस पुस्तक में गर्भाधान से लेकर १६ संस्कार कहे हैं जो, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास इन चारों आश्रमों में क्रमानुसार करने होते हैं। मूल्य १॥) रुपया, डा० खर्च अलग।

आर्य समाज के नेता—आर्यसमाज के उन आठ महान् नेताओं, जिन्होंने आर्य समाज की नींव रख कर हिन्दू जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया किया है। मूल्य ३) रु० डाक खर्च १॥) रुपया।

महर्षि दयानन्द—जिस समय हिन्दू धर्म अन्धकार में था, लोगों में ढपोलशंख बहुत बढ़ गया था, उस समय स्वामी दयानन्द जी का जन्म हुआ। शिवरात्रि को महर्षि को सच्चा ज्ञान होना और जनता को सच्चा ज्ञान देना। मू० ३) रु०।

कथा पच्चीसी— सन्तराम सन्त

जिसमें मनुष्य जाति का उद्धार करने के हेतु ही अनेक शास्त्रों में से भारत भूषण दर्शनानन्द जी ने उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद पच्चीस कथाओं का संग्रह किया है हमने उनको और भी संशोधित एवं सरल बनाकर छापा है। मूल्य केवल १॥) डेढ़ रुपया, डाकव्यय १) रुपया।

स्वाध्याय योग्य दर्शन शास्त्र

हमारे प्राचीन काल के ऋषि-मुनियों ने छः दर्शन शास्त्र लिखे थे जिनका संसार भर के विद्वानों में बड़ा भारी सम्मान है। ये छहों दर्शन शास्त्र हिन्दी भाष्य सहित हमने प्रकाशित किये हैं। जिनको पढ़कर आप प्राचीन इतिहास, संस्कृति, नियम और विज्ञान से परिचित होंगे। पूरा सैट लेने पर २५) की वी० पी० की जावेगी।

१—सांख्य दर्शन:—महर्षि कपिल मुनि प्रणीत और स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज द्वारा भाष्य। मू० २) दो रुपया।

२—न्याय दर्शन:—महर्षि गौतम प्रणीत व स्वामी दर्शनानन्दजी द्वारा भाष्य। मूल्य ३) सवा तीन रुपया।

३—वैशेषिक दर्शन:—महर्षि कणाद मुनि प्रणीत साइन्स का मूल स्रोत। मूल्य ३॥) साढ़े तीन रुपया।

४—योग दर्शन:—महर्षि पातञ्जलि मुनि प्रणीत तथा, महर्षि व्यास मुनि कृत संस्कृत भाष्य। मूल्य ६) रुपया।

५—वेदान्त दर्शन:—श्रीमन्महर्षि वेदव्यास प्रणीत तथा स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज द्वारा भाष्य। मूल्य ४॥) साढ़े चार रुपया।

६—मीमांसा दर्शन:—महर्षि जैमिनी मुनि प्रणीत हिन्दी भाष्य। मूल्य ६) छः रुपया।

हितोपदेश भाषा रामेश्वर प्रशान्त

उस पुत्र से क्या लाभ जिसने अपने कुल का नाम कलंकित किया है ऐसे पुत्र की माता यदि बांझ हो जाय तो उत्तम है' यही भावना पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन को सदा सताती थी। विद्वान् पं० विष्णु शर्मा ने राजकुमार को जो शिक्षा एवं नीति की आख्यायिकाएं सुनाई उनको ही विद्वान् पं० श्री रामेश्वर 'अशान्त' जी ने सरल भाषा में लिखा है। मूल्य ३) तीन रुपया, डाक व्यय १॥) अलग।

सत्यार्थप्रकाश
मोटे अक्षरों में

२—इसकी दूसरी बड़ी विशेषता पैराग्राफों पर क्रमांक दिया जाना है

३—हर पृष्ठ के ऊपर उस पृष्ठ में आ रहे विषय का उल्लेख।

४—अकारादि क्रम से प्रमाण सूची, पुस्तक का साइज २०×२६/४ २०×१३ इंच है पृष्ठ संख्या ४८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई क्लाथ बाईंडिंग। मूल्य १५) डाकव्यय अलग।

सार्वदेशिक सभा तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद, कृषि, बिजली, मोटर, पशु पालन, इंडस्ट्रीयल, डेरीफार्म रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं। बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगा लें।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१६१

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

शास्त्र-चर्चा

तेज और क्षमा

बलि ने पूछा—

क्षमा स्विच्छ्रेयसी तात उताहो तेज इत्युत । एतन्मे संशयं तात यथावद् ब्रूहि पृच्छते ॥३॥

तात ¡ क्षमा और तेज में से क्षमा श्रेष्ठ है अथवा तेज ? यह मेरा सशय है । मैं इसका समाधान पूछता हूं । आप इस प्रश्न का यथार्थ निर्णय दीजिये ।

प्रहलाद ने कहा—

न श्रेय. सतत तेजो
न नित्य श्रेयसी क्षमा ॥६॥

तात ! न तो तेज ही सदा श्रेष्ठ है और न क्षमा ही ।

क्षमा करने में दोष—

यो नित्य क्षमते तात बहून दोषान् स विन्दति । भृत्या परिभवन्त्येनमुदासीनास्तथारय ॥७॥

सर्वभूतानि चाप्यस्य न नमन्ति कदाचन । तस्मान्नित्य क्षमा तात पण्डितैरपि वर्जिता ॥८॥

तात ! जो सदा क्षमा ही करता है, उसे अनेक दोष प्राप्त होते हैं । उसके भृत्य, शत्रु तथा उदासीन व्यक्ति सभी उसका तिरस्कार करते हैं । कोई भी प्राणी कभी उसके सामने विनयपूर्ण बर्ताव नहीं करते, अतः तात ! सदा क्षमा करना विद्वानों के लिए भी वर्जित है ।

अवज्ञाय हित भृत्या भजन्ते बहुदोषताम् । आदातुं चास्य वित्तानि प्रार्थयन्तेऽल्पचेतस ॥९॥

सेवकगण उसकी अवहेलना करके बहुत अपराध करते रहते हैं । इतना ही नही, वे मूर्ख भृत्यगण उसके धन को हड़प लेनेका भी हौसला करते हैं ।

धन वस्त्राण्यलकाराञ्छयनान्यासनानि च । भोजनान्यथ पानानि सर्वोपकरणानि च ॥१०।

आददीरन्नधि कृता यथाकाममचेतस. । प्रदिष्टानि च देयानि न दद्युर्भर्तृशासनात् ॥११॥

विभिन्न कार्यों में नियुक्त किये हुए मूर्ख सेवक अपने इच्छानुसार क्षमाशील स्वामी के रथ, वस्त्र, अलकार, शय्या, आसन, भोजन, पान तथा समस्त सामग्रियो का उपयोग करते रहते हैं तथा स्वामी की आज्ञा होने पर भी किसी को देने योग्य वस्तुएं नहीं देते हैं ।

न चैन भर्तृ पूजाभि पूजयन्ति . चन । अवज्ञान हि लोकेऽस्मिन् मरणादपि गर्हितम् ॥१२॥

स्वामी का जितना आदर होना चाहिये, उनका आदर वे किसी प्रकार भी नहीं करते । इस ससार में सेवकों द्वारा अपमान तो मृत्यु से भी अधिक निन्दित है ।

क्षमिण तादृश तात ब्रुवन्ति कटुकान्यपि । प्रेष्याः पुत्राश्च भृत्याश्च तथोदासीन वृत्तय ॥१३॥

तात ! उपर्युक्त क्षमाशील को उसके सेवक, पुत्र, भृत्य तथा उदासीन वृत्ति के लोग कटु वचन भी सुनाया करते हैं ।

अथास्य दारानिच्छन्ति परिभूय क्षमावत. । दाराश्चास्य प्रवर्तन्ते यथाकाममचेतस ॥१४॥

इतना ही नहीं, वे क्षमाशील स्वामी की अवहेलना करके उसकी स्त्रियों को भी हस्तगत करना चाहते हैं और वैसे पुरुष की मूर्ख स्त्रिया भी स्वेच्छाचार मे प्रवृत्त हो जाती हैं ।

एते चान्ये च बहवो नित्य दोषा क्षमावताम् । अथ वैरोचने दोषानिमान् विद्धय क्षमावताम् ॥१६॥

सदा क्षमा करने वाले पुरुषों को ये तथा और भी बहुत से दोष प्राप्त होते हैं । अब क्षमा न करने वालों के दोषों को सुनो ।

क्षमा न करने में दोष—

अस्थाने यदि वा स्थाने सतत रजसाऽऽवृत. । क्रुद्धो दण्डान् प्रणयति विविधान् स्वेन तेजसा ॥१७॥

क्रोधी मनुष्य रजोगुण से आवृत्त होकर योग्य या अयोग्य अवसर का विचार किये बिना ही अपने उत्तेजित स्वभाव से लोगों को नाना प्रकार के दण्ड देता रहता है ।

मित्रै सह विरोध च प्राप्नुते तेजसाऽऽवृत । आप्नोति द्वेष्यतां चैव लोकान् स्वजनतस्तथा ॥१८॥

उत्तेजना से व्याप्त मनुष्य मित्रों से विरोध पैदा कर लेता है तथा साधारण लोगों और स्वजनों का द्वेष पात्र बन जाता है ।

सोऽवमानादर्थं ह्नानिमुपालम्भमनादरम् । सतापद्वेष मोहांश्च शत्रूंश्च लभते नर ॥१९॥

वह मनुष्य दूसरों का अपमान करने के कारण सदा धन की हानि उठाता है । उपालम्भ सुनता और अनादर पाता है । इतना ही नही, वह सन्ताप, द्वेष, मोह तथा नये-नये शत्रु पैदा कर लेता है ।

क्रोधाद् दण्डान्मनुष्येषु विविधान् पुरुषोऽनयात् । भ्रश्यते शीघ्रमैश्वर्यात् प्राणेभ्यः स्वजनादपि ॥२०॥

मनुष्य क्रोधवश अन्यायपूर्वक दूसरे लोगों पर नाना प्रकार के दण्ड का प्रयोग करके अपने ऐश्वर्य, प्राण और स्वजनों से भी हाथ धो बैठता है ।

योपकर्तंश्च हर्तृंश्च तेजसैवोपगच्छति । तस्मादुद्विजते लोक सर्पाद् वेश्मगतादिव ॥२१॥

जो उपकारी मनुष्यों और चोरों के साथ भी उत्तेजना युक्त बर्ताव ही करता है- उससे सब लोग उसी प्रकार उद्विग्न होते हैं, जैसे घर मे रहने वाले सर्प से ।

यस्मादुद्विजते लोक कथं तस्य भवो भवेत् । अन्तर तस्य द्रष्ट्वैव लोको विकुरुते ध्रुवम् ॥२२॥

जिससे सब लोग उद्विग्न होते हैं, उसे ऐश्वर्य की प्राप्ति कैसे हो सकती है ? उसका थोड़ा-सा भी छिद्र देखकर लोग निश्चय ही उसकी बुराई करने लगते हैं ।

तस्मान्नात्युत्सृजेत् तेजो न च नित्यं मृदुर्भवेत् । काले काले तु सम्प्राप्ते मृदुस्तीक्ष्णोऽपि वा भवेत् ॥२३

इस लिए न तो सदा उत्तेजना का ही प्रयोग करे और न सर्वथा कोमल ही बना रहे । समय-समय पर आवश्यकता के अनुसार कभी कोमल और कभी तेज स्वभाव वाला बन जाय ।

काले मृदुर्यो भवति काले भवति दारुण: । स वै सुखमवाप्नोति लोकेऽमुष्मिन्निहैव च ॥२४॥

जो मौका देखकर कोमल होता है और उपयुक्त अवसर आने पर भयकर बन जाता है, वही इहलोक और परलोक मे सुख पाता है ।

(महा० वन पर्व)

स्वास्थ्य-शिक्षा

प्रश्न मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक कैसे रह सकता है ?

उत्तर—जिनका आहार विहार ठीक होता है वह रोगी नही होते ।

प्रश्न—क्या त्याज्य है क्या ग्राह्य, पथ्यापथ्य बतलायें ?

उत्तर सड़े गले फल, बासी बिगड़ा हुआ अन्न, अडे, मछली, मांस, विष्ठा खने वाले जैसे सुअर, भेड, मुर्गा, बत्तख यह खगार मल टट्टी) को तुरन्त खा जाते हैं । इनके मास खाने वाले मनुष्यों के मुख से ऐसी दुर्गन्ध आती है जैसे कर्क सड़ता हो । ऐसे शराब, तमाखु, सुलफा, चण्डू पीने बालों के हो जाती है ।

प्रश्न—क्या मास खाना पाप है?

उत्तर मांस मनुष्यों का भोजन नहीं है । मांस खाने वाले जन्तुओं के नेश होती है । उनको पसीना नहीं आता, जीभ निकाल कर राल डालते हैं और जीभ मे चकल २ करके पानी पीते हैं उनके पास रहने से मुर्दारों जैसी दुर्गन्ध आती है । वह धर्माधर्म नहीं जानते और प्रायः रोगी जानवरों का मांस खाने वालों के जो रोग जानवर के मास में होता है वही खाने वालों के हो जाता है । ऐसे मांसाहारी लोगों के बड़े २ भयकर रोग हो जाते हैं जो लाख दवाई करने पर भी नहीं जाते ।

आज कल के खोटे समय में खाद्य पदार्थों के शुद्ध न मिलने से लोग निर्बल होते जा रहे हैं । पहले पुरुष बलवान् होते थे । वे लोग शीतकाल में रसायन औषधि खाकर दूध घृत खाते पीते थे यों बलवान होते थे । वे शीतकाल में च्यवनप्राश, शतावरी पाक, अश्वगन्ध पाक, गोखरु पाक, सुपारी पाक खाते थे । इतना ही नहीं, हमारे वैद्यक शास्त्रों में लिखे मोती, मूंगा, स्वर्ण भस्म, चांदी भस्म, वंग भस्म, फौलाद भस्म और चन्द्रोदय बटी, सिद्ध मकरध्वज, बृहद्वात चिन्तामणि, कस्तूरी बटी, स्वर्ण मालती वसन्तादि बलकारक बुद्धिवर्द्धक रसायन खाकर पुष्ट और आरोग्य यों ही होते थे कि उत्तम रसायन खाकर शुद्ध घृत दुग्ध मिला प्रात सेर दो सेर बात की बात मे पीकर पचा जाते थे । आज कल के बाबू चाय मे ज्यादा दूध हो तो पीते ही दस्त लग जाते हैं । इन्हे मक्खन तो हजम नहीं होता । मुर्गी का पेशाब अडों में जो पीप-सा निकलता है उसे चट कर कहते हैं इसमें विटामिन बढ़िया हैं । ऐसे गन्दे पदार्थ त्याग कर जो आदमी सुन्दर आहार करता है वही तेजस्वी और बलवान होता है ।

आहार के साथ विहार भी उत्तम करे । प्रात काल उठ कर शौचादि से निवृत्त होकर शुद्ध वायु का सेवन करे । लौट कर दातुन करे, तैल का मर्दन करे, व्यायाम करे । स्नान करके ईश्वर स्तुति प्रार्थना सन्ध्या हवन करके बादाम का पाक या गाजर का पाक और ऊपर लिखी जो भी चीज प्राप्त हो सामर्थ्यानुसार दूध दही छाछ सेवन करके दफ्तर वाला दफ्तर जावे दुकान वाला दुकान जावे । सदाचार का जीवन बनावे, यह विहार है । सदा आहार विहार पवित्र करने से मनुष्य बलवान गुणवान शक्तिशाली होता है । यह स्वास्थ्य शिक्षा परोपकार के हित लिखी है ।

राजवैद्य श्री मूलचन्द्रार्य, नई दिल्ली)

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

महर्षि बोधांक

महर्षि बोधांक का सर्वत्र जैसा स्वागत हुआ है उससे हमारा प्रसन्न होना स्वाभाविक है। उस अंक में हमने जानबूझकर लेखों की भरमार नहीं की थी, इसलिए सम्भव है कि विशेषांकों में लेखों का बाहुल्य देखने की आदी कुछ लोगों की आंखों को हमारा यह प्रयास विचित्र प्रतीत हुआ हो। परन्तु महर्षि के बोध से बोध प्राप्त करने वाले दिवंगत विशिष्ट आर्यजनों का एकत्र सचित्र परिचय अपने आप में एक अभिनव आयोजन था। कितने ही ऐसे महानुभाव थे जिनका चित्र पहली बार प्रकाशित हुआ है। ऐसे लोगों के चित्र भी दुर्लभ थे। उनको प्राप्त करने में हमें कितना परिश्रम करना पड़ा होगा, पाठक इसकी कल्पना ही कर सकते हैं। हम चाहते थे कि चित्रों का परिचय कुछ अधिक विस्तार से देते, परन्तु कागज की कमी के कारण हमें स्थानभाव का वशंवद होना पड़ा।

फिर भी, इस अभूतपूर्व आयोजन का स्वागत भी अभूतपूर्व हुआ। अभीतक लगातार आर्डर आ रहे हैं। हमने निश्चय किया है कि मार्च मास से जो नए ग्राहक बनेंगे उनको भी हम महर्षि बोधांक की एक प्रति मुफ्त भेंट करेंगे। हम जानते हैं कि महर्षि बोधांक की केवल एक प्रति पाकर किसी ग्राहक को सन्तोष नहीं होगा, क्योंकि वे उसकी और अधिक प्रतियां लेना चाहेंगे, परन्तु जिस अंक की इतनी अधिक मांग है उसके सम्बन्ध में इससे अधिक रियायत करना हमारी क्षमता से बाहर है इसलिए आप जितनी अधिक संख्या मे और जितनी जल्दी नए ग्राहक बनाकर भेजेंगे उतने ही लाभ मे रहेंगे।

प्रत्येक आर्यसमाज में और प्रत्येक आर्य परिवार में 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक पहुंचना ही चाहिए जिस आर्यसमाज से आपका सम्बन्ध है वहां पता लगाइए कि सार्वदेशिक साप्ताहिक पहुंचता है या नहीं। यदि नहीं पहुंचता तो उसकी व्यवस्था कराइए। इसके बाद देखिए कि आप के परिवार में यह पत्र पहुचता है या नहीं। आप अपने समस्त परिवार के लिए इसे अत्यन्त उपयोगी पाएंगे। यदि आप अपने बच्चों में वैदिक धर्म के संस्कार और आर्यसमाज के प्रति प्रेम पैदा करना चाहते हैं तो 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक इस विनम्र सेवा के लिए सदा सन्नद्ध रहेगा।

न हृदय, न बुद्धि

गत सितम्बर में भारत और पाकिस्तान का युद्ध छिड़ जाने के कारण पंजाबी सूबे की मांग के सम्बध में चर्चा लुप्तप्राय हो चुकी थी, किन्तु युद्ध विराम होते ही तुरन्त केन्द्रीय गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने मंत्रिमंडलीय समिति और संसदीय सलाहकार समिति की घोषणा करके चिनगारी पर से राख हटा दी। और अब लोकसभा मे ताशकन्द घोषणा पर कांग्रेसी बहुमत के बल पर स्वीकृति की मुहर लगवाने के बाद सरकार जैसे और सब समस्याओं की ओर से मुंह फेर कर पंजाबी सूबे के सम्बन्ध में कोई न कोई निर्णय कर लेने को आतुर हो उठी है।

जयपुर के कांग्रेस अधिवेशन का और केन्द्र में नए मन्त्रिमंडल के पदारूढ होने का अब तक एक ही निष्कर्ष सामने आया था और वह यह कि सब समस्याओं को ज्यों का त्यों लटकता रहने दिया जाए। परन्तु पंजाबी सूबे के सम्बन्ध में वह 'ज्यों की त्यों' मनोवृत्ति भी नहीं रही। इस समय कांग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज और केन्द्रीयमन्त्रिमण्डल काइसप्रश्न पर दो टूक फैसला क्या होगा, यह अभी किसी को पता नहीं है, इसलिए उसके सम्बन्ध मे कोई पेशनगोई नहीं कर सकते। परन्तु हम तो इस उतावली को देखकर हैरान हैं। क्या ये राजनीतिज्ञ लोग यह भूल गए कि 'जल्दी का काम शैतान का' होता है। नीतिकारों ने कहा है।

> अतिरभसकृतानां
> कर्मणामाविपत्ते:
> भवति हृदयदाही
> शल्यतुल्यो विपाकः।

—बहुत जल्दबाजी में आकर जो काम किया जाता है वह विपत्ति को लाने वाला होता है और उसका परिणाम तीव्र शल्य के सामने हृदय को बेधने वाला होता है।

परन्तु हृदयहीनता कदाचित् राजनीति की पहली सीढ़ी होती है। जब हृदय ही नहीं तो हृदयदाही शल्य की क्या चिन्ता ?

यदि हृदयहीनता का ही प्रश्न हो तो शायद क्षन्तव्य भी हो जाए। परन्तु यहां तो बुद्धि हीनता का प्रसंग भी उपस्थित है।

पंजाबी सूबे की मांग की आड में किस प्रकार अंग्रेजों की भारत को कमजोर बनाने की मनोवृत्ति प्रस्फुटित हो रही है, किस प्रकार देश के विभाजन के दुःखद इतिहास की पुनरावृत्ति की जा रही है, किस प्रकार कट्टर साम्प्रदायिकता और देशद्रोह की प्रवृत्ति को भाषायी मांग का जामा पहनाया जा रहा है, किस प्रकार सिक्खिस्तान के रूप में नया पाकिस्तान बनाने की दुरभिसन्धि की जा रही है—हम समय समय पर पत्र मे दिए गए लेखो और सम्पादकीय टिप्पणियों में इस विषय पर प्रकाश डालते रहे हैं और हमें यह भी दृढ निश्चय है कि देश का समस्त समझदार वर्ग तथा ९९ प्रतिशत जनता हमारे ही दृष्टिकोण की पोषक है। परन्तु हम यह भी जानते हैं कि जो लोग "पाकिस्तान केवल हमारी लाश पर ही बन सकता है"—अहर्निश यह घोषणा करते हुए भी पाकिस्तान के निर्माण के समझौते पर हस्ताक्षर कर सकते हैं, उनकी आत्मा को पुन देश के किसी अन्य विभाजन को स्वीकार करते हुए भी रञ्चमात्र क्लेश नही होगा। कारण, उनके सामने समग्र राष्ट्र का हित उतना प्रमुख नहीं जितना व्यक्तिगत स्वार्थ या दलीय स्वार्थ है। और यही राष्ट्र का सब से बड़ा दुर्भाग्य है।

जो लोग अपने दल को राष्ट्र से बड़ा मानते हैं उनके सामने राष्ट्रहित सदा गौण रहता है। यही तो परले सिरे की साम्प्रदायिकता है। पंजाबी सूबे की मांग करने वाले अकालियों और उस मांग का समर्थन करने वाले कम्युनिस्टों तथा कतिपय अन्य राजनीतिक दल वाले लोगों में इसी निकृष्ट और संकुचित मनोवृत्ति का विकास हुआ है। और सरकार ? भले ही किसी शासनारूढ राजनीतिक दल से उसका निर्माण हुआ हो, परन्तु यदि वह जल्दबाजी में आकर किसी राष्ट्र-विघटनकारी मनोवृत्ति को प्रश्रय देती है तो उसे भी उसी संकुचित मनोवृत्ति का शिकार मानना होगा। पंजाबी सूबे की मांग के सम्बन्ध में सरकार की जल्दबाजी से उसी मनोवृत्ति की गन्ध आती है। इसी लिए इसे हम बुद्धिहीनता की संज्ञा देते हैं।

बड़ा मोटा प्रश्न है . क्या पाकिस्तान के निर्माण से देश की कोई समस्या हल हुई है ? यदि इसका उत्तर 'नहीं' में है तो पंजाब के विभाजन से भी किसी प्रकार की कोई समस्या हल हो सकेगी, यह निरी मृगमरीचिका है। विभाजन से कोई समस्या हल नहीं होती, बल्कि नई समस्याएं पैदा होती हैं। चाहिए तो यह था कि मुस्लिम लीग की देशद्रोहिता को पुरस्कृत करने के लिए आंग्लकूटनीति ने जिस पाकिस्तान का निर्माण किया था हम उस पाकिस्तान को भारत मे पुन. मिलाकर आंग्लकूटनीति को विफल कर देते, परन्तु हमारी मोतियों वाली सरकार देशद्रोहिता को पुन. पुरस्कृत करने का प्रयत्न कर रही है। पाकिस्तान को भारत में मिलाने की बात तो अलग, बिचारे रहे सहे पंजाब के और विभाजन की तैयारी ? यह हृदयहीनता भी है और बुद्धिहीनता भी।

सदस्यों से

१—जिन महानुभावो ने अभी तक अपना वार्षिक चन्दा नहीं भेजा। कृपया तुरन्त भेजें।

२ महर्षि बोधांक का धन भेजने में शीघ्रता करें।

३—कुछ महानुभावों ने अभी तक "कल्याण मार्ग का पथिक" का धन नहीं भेजा, कृपया अब भेजने में देर न करें।

४—साप्ताहिक प्रतियों का धन प्रतिमास भेजते रहना चाहिये।

५—हमारा लक्ष्य आर्य जनता को महत्वपूर्ण उत्तम और सस्ते से सस्ते विशेषांक देना है। इसकी सफलता आपके उत्साह और सहयोग पर ही निर्भर है।

६ आप अपने मित्रों और साथियों को सार्वदेशिक के ग्राहक बनने की प्रेरणा करें।

७ महर्षि बोधांक और बलिदान अंक तो आपने प्राप्त कर ही लिए हैं। अब आप 'दो महान् विशेषांक' प्राप्त करने के लिए उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कीजिये।

८—महर्षि बोधांक में हमने २०० चित्र देने की घोषणा की थी किन्तु चित्र छपे २२८। हमे खेद है कि कुछ आवश्यक चित्र छपने रह गये जो या तो हमें मिले नहीं, या हमें सूझे नहीं, या हमें आर्य जनता ने सुझाये नहीं।

—प्रबन्धक

सामयिक-चर्चा

परिवार नियोजन आन्दोलन असफल हो रहा है

१२ फरवरी को देहली की परिवार नियोजन एसोसियेशन के तत्वावधान मे एक सेमीनार हुआ। उसमे वक्ताओं ने यह स्वीकार किया कि परिवार नियोजन की योजना आबादी की वृद्धि को रोकने में असफल सिद्ध हुई है। जो योजना भोगवाद और लम्पटता को खुली छुट्टी देने वाली हो वह असफल हुए बिना नहीं रह सकती। इस दिशा में जो यत्न हो रहा है वह मूल को सींचने के स्थान में पत्तों को सींचने के समान निरर्थक ही है। जबतक भोगवाद की प्रवृत्तियों को उभारा दिया जाता रहेगा तब तक इस समस्या का समुचित समाधान सम्भव न हो सकेगा। सादे जीवन और उच्च विचार की संयमयुक्त प्रवृत्तियों को जगाने और प्रोत्साहित किये जाने की आवश्यकता है। इस ओर नहीं के बराबर ध्यान दिया जा रहा है। यह बड़े खेद की बात है। सेमीनार में यह स्पष्ट किया गया है कि गत वर्ष की तुलना में आबादी मे १७ प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

इस सेमीनार मे यह विचार करना था कि परिवार नियोजन की योजना की सफलता के लिए गर्भपात को कानून सम्मत बनाया जाय या नही? चिकित्सक लोग जिन्होंने सेमीनार में भाग लिया गर्भपात को कानून सम्मत बनाये जाने के परम विरोधी थे।

उनका मत था कि इससे समस्या का समाधान न होगा। उनका यह भी मत था कि प्रशिक्षण द्वारा लोगों में यह भावना जागृत की जाय कि आबादी के न घटने से देश में अधिकाधिक भुखमरी, निर्धनता और आपाधापी व्याप्त हो जायगी। गर्भपात को कानून सम्मत बनाये जाने का विरोध इसलिए भी किया गया कि इससे स्त्रियों को शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की हानि होने का भय है। जिन लोगों की यह धारणा है कि सामाजिक और धार्मिक रूढिवादिता के कारण इस उपाय का विरोध किया जाता है उन्हे सेमीनार मे उपस्थित सुप्रसिद्ध चिकित्सकों के सर्व सम्मत मत पर ध्यान देना चाहिए कि गर्भपात का कानून सम्मत बनाया जाना न केवल नैतिकता की ही दृष्टि से अपितु चिकित्सा की दृष्टि से भी हानिकारक एव ग्लानिप्रद है।

गर्भपात को वैधानिक रूप देने के पक्षपातियो की मान्यता है कि गर्भपात कराना न तो अधर्म है और न इससे अनैतिकता का प्रसार ही हो सकता है। जनसख्या की रोक-थाम के लिए इसका आश्रय अवश्य लिया जाना चाहिये। यह ठीक है कि जब प्रसव काल में माता का जीवन खतरे में हो, बच्चे के प्राणों का सकट उपस्थित हो गया हो तब चिकित्सकों के परामर्श पर गर्भपात का आश्रय लिया जाना उचित ही है। बलात्कार के कारण गर्भ-स्थिति हो जाने पर यदि कोई स्त्री बच्चे को जन्म न देना चाहे और मृगी, कुष्ठ आदि भयंकर बीमारियों से पीड़ित व्यक्तियों की सन्तानो का उत्पन्न होना या किया जाना सामाजिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अवांछनीय हो तब भी गर्भपात उचित ठहराया जा सकता है परन्तु एक मात्र जनसख्या को कम करने के निमित्त इसे जायज करार दिया जाना नितान्त अनुचित है। यह कहना कि इससे दुराचार को प्रोत्साहन न मिलेगा और जिसे दुराचारी बनना होगा वह गर्भ निरोध के कृत्रिम साधनों के होते हुए और गर्भपात को वैधानिक रूप दिये बिना भी दुराचारी बन सकता है थोथा तर्क है। दुराचारी बनने के साधन उपस्थित करना तो समाज का काम नही है। गर्भपात का कानून सम्मत बनना स्पष्ट ही इस प्रकार का एक साधन है। कहा जाता है कि गरीबी और अभाव के कष्टों से बचाने के लिए यदि बच्चे को प्रसव के समय ही समाप्त करके उसे ससार की हवा न दिखाई जाय तो ऐसा करना अधर्म नहीं धर्म है। भोगवादी दृष्टिकोण से यह बात सही है परन्तु इतिहास की साक्षी इसके विरुद्ध है। ससार का नेतृत्व करने वाले महान् व्यक्ति प्रायः कष्ट और अभाव के जीवन में से गुजर कर ही समाज के शिरमौर बने हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार संसार मे अवतरित होता है। इस अकाट्य सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता। जिसे ससार में आना होगा वह आकर रहेगा चाहे मानव उसके आगमन को रोकने का सिर तोड़ यत्न क्यों न करे। जिसे सम्पन्न घर मे उत्पन्न होना होगा वह सम्पन्न घर में और जिसे निर्धन घर मे उत्पन्न होना होगा वह निर्धन घर मे उत्पन्न होगा।

ससार मे अधिक संख्या गरीबों की ही है अतः वे प्रभु के प्यारे हैं। अभाव व निर्धनता मे भी वे नैतिकता का झंडा ऊंचा किये हुए हैं। साधारणत. उनका मानसिक सम्मान इसी ओर है—सन्तति नियमन सास्कृतिक दृष्टिकोण से अवश्य होना चाहिए। आर्थिक दृष्टिकोण से ऐसा करना सस्कृति की रक्षा के लिये परम घातक है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से सन्तति नियमन के लिए दम्पति को अपने पर पूर्ण संयम रखना अनिवार्य होता है और सन्तान की इच्छा होने पर ही सन्तानोत्पत्ति करना प्रशंसनीय होता है। जो लोग कृत्रिम साधनों एव गर्भपात से सन्तति नियमन का प्रचार करते हैं उन्हें समाज का वातावरण शुद्ध और सात्विक बनाने के लिये यत्नशील होना चाहिए। इस प्रकार वे समाज हितैषिता का वास्तविक परिचय दे सकते हैं। यह तर्क भी उपस्थित किया जा सकता है कि जापान ने गर्भपात का आश्रय लिया तो उसकी जनसख्या ५० प्रतिशत घट गई। परन्तु यदि भोगवादियों के दृष्टिकोण के अनुसार लूप आदि का आश्रय लेते जो उस समय उपलब्ध न थे तो गर्भपात की उन्हे आवश्यकता ही न रहती। अत यह तर्क भी कुण्ठित हो चुका है।

कृत्रिम प्रसाधनों से सन्तान निरोध शारीरिक एव मानसिक स्वास्थ्य, सास्कृतिक वरिष्ठता आदि प्रत्येक दृष्टि से हेय एवं त्याज्य है।

— रघुनाथ प्रसाद पाठक

— .० —

संयुक्त पंजाब संरक्षण समिति की घोषणा

पंजाबी सूबा नहीं—बनने देंगे

हर बलिदान के लिए आर्य जनता तय्यार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के तत्वावधान मे आर्यसमाज दीवान हाल मे हुई विराट सभा में निम्न प्रस्ताव पारित हुआ है।

पजाब और दिल्ली की धार्मिक और सास्कृतिक सस्थाओं के प्रतिनिधियों का यह कन्वेंशन पुन अपने इस विश्वास को स्पष्ट कर देना चाहता है कि भाषा के आधार पर पंजाब का विभाजन समस्त राज्य के हितों के लिए हानिकारक होगा और किसी भी अवस्था में सहन न किया जायगा।

१९४८ से ही अकाली दल ने पजाब के विभाजन की माग शुरू कर दी थी और तब से लेकर अनेक बार यह माग दुहराई जाती रही है परन्तु भारत सरकार और कांग्रेस हाईकमान द्वारा प्रत्येक बार यह मांग साम्प्रदायिक समझी जाकर रद्द की जाती रही है। पजाब में पजाबी भाषा की उन्नति के लिए जो भी सभव था वह किया जा चुका है। इस मांग को स्वीकार न करने का यह भी एक हेतु था।

१९६१ में जब मास्टर तारासिंह ने आमरण अनशन शुरू किया था तब स्व० पं० जवाहर लाल जी नेहरू प्रधानमन्त्री ने तथा श्री स्व० लाल बहादुर जी शास्त्री ने जो उस समय भारत सरकार के गृहमन्त्री थे यह घोषणा की थी कि केन्द्रीय सरकार कभी भी पजाबी सूबे की माग को स्वीकार नहीं कर सकती क्योंकि यह विशुद्ध साम्प्रदायिक मांग है। इस बात की जाच के लिए कि सरकारी नौकरियों मे, राजनैतिक नियुक्तियों आदि मे सिखों के साथ कोई अन्याय तो नही हो रहा है एक उच्चस्तरीय कमीशन नियुक्त किया गया था, जिसके सदस्य भारत के अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश, श्रीयुत एस० आर० दास, वर्तमान शिक्षामन्त्री श्रीयुत एम० सी० छागला और सर सी० पी० रामास्वामी अय्यर मनोनीत किए गए थे। यह कमीशन पूर्ण जाच करने के बाद इस परिणाम पर पहुंचा था कि सिखों का यह आरोप नितान्त निराधार था कि भारत सरकार उनके साथ भेद भाव का बर्ताव करती है। यह देखकर बड़ा दुःख होता है कि भारत सरकार ने पार्लियामेन्ट के सदस्यों की परामर्शदातृ समिति का निर्माण करके इस

[शेष पृष्ठ १४ पर]

महर्षि दयानन्द तथा सत्यार्थ प्रकाश

१९वीं शती के एक पादरी की दृष्टि में

श्री पिण्डीदास जी ज्ञानी, प्रधान, आर्य समाज अमृतसर

महर्षि दयानन्द सरस्वती को केवल आठ वर्ष के लगभग समय काम करने को मिला। परन्तु आप-अपने प्रकाण्ड पाण्डित्य, अद्वितीय विद्या, अभूतपूर्व शारीरिक बल, पाप-पाखण्ड पर प्रहार करने का साहस, विधर्मियों की युक्ति युक्त कड़ी आलोचना तथा निर्भीकता आदि दिव्य गुणों की गहरी छाप विश्व भर के हृदय पटल पर छोड़ गये। उनके समकालीन महा पुरुषों ने मुक्त कण्ठ से इन गुणों के कारण आपकी भूरि भूरि प्रशसा की यथा --

मिस्टर एम० विण्टर्निटज ने कहा—"हमें यह स्वीकार करना पड़ता है कि दयानन्द सरस्वती ने ही हमें बताया कि वेद मूर्त्ति पूजा की आज्ञा नहीं देते ।"

मैडम ब्लैवैटस्की ने लिखा—"यह बात निर्विवाद है कि शंकराचार्य्य के बाद भारत ने दयानन्द से बड़ा कोई संस्कृत का विद्वान् उच्चकोटि का अध्यात्म तत्त्वदर्शी, अधिक प्रभाव शाली प्रवक्ता, और हर प्रकार के पाप का कट्टर शत्रु नहीं देखा ·· ।"

कर्नल आल्काट ने स्वीकार किया "भारत में से एक दिव्य आत्मा का पर लोक गमन हुआ है। पण्डित दयानन्द सरस्वती ससार से चल दिये। वह अदम्य उत्साही थे, शक्तिशाली सुधारक थे ।"

दूसरे अनेकों महानुभावों ने उन्हें विविध दृष्टि कोणों से श्रद्धाञ्जलियां अर्पित कीं। परन्तु आज हम पाठक महानुभावों के समक्ष एक विदेशी ईसाई पादरी के शब्द उद्धृत कर रहे हैं जो उसने महर्षि के परलोक गमन से नौ साल बाद लिखे थे –

❁ "पण्डित दयानन्द सरस्वती ने ब्राह्मण (पौराणिक रूढ़िवाद) धर्म से कुछ इसी प्रकार विमुक्ति प्राप्त कर ली जिस प्रकार लूथर ने रोम के चर्च के प्रभाव से। लूथर ने पुरातन तथा नूतन अहदनामे के प्रमाण से रोमन चर्च और परम्पराओं के विरुद्ध जनता से अपील की। पण्डित दयानन्द सरस्वती ने पौराणिक विचारधाराओं तथा स्मार्त्त धर्म की अपेक्षा, प्राचीनतम भारतीय वाङ्मय का प्रामाण्य स्वीकार किया। लूथर, का उद्घोष था-'लौटो वापस बाईबल की ओर' इसी प्रकार पण्डित दयानन्द सरस्वती का आदेश था—'लौटो वापस वेदों की ओर।' उक्त धार्मिक उद्घोष के साथ-स्पष्टतया न सही --'आर्य्यावर्त्त आर्य्यों के लिये' का सकेत भी अन्तर्हित था। उपरिलिखित दोनों उद्घोषों को एकत्रित करने पर हम इस धार्मिक एव राजनैतिक सिद्धान्त पर पहुचते हैं कि भारत का धर्म तथा राजनैतिक राज्य सत्ता पर आर्यों का ही स्वत्व होना चाहिये। या दूसरे शब्दों मे यह कि भारतीय धर्म आर्य्यों के लिये और भारतीय शासन विधान भी केवल भारतीयों के लिये। प्रथम ध्येय की प्राप्ति के लिये वेदाभिमुख होकर भारतीय धर्म्म का सुधार तथा पवित्रीकरण आवश्यक था। साथ ही इस के विदेशीय धर्मों यथा इसलाम और ईसाईयत का मूलोच्छेदन भी अनिवार्य था। इस प्रकार पडित दयानन्द के कार्य्य क्रम में भारतीय धर्म का सुधार और विदेशीय धर्मों का उन्मूलन सम्मिलित था। दूसरे लक्ष्य के सम्बन्ध में, ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य समाज के प्रवर्त्तक ने यह शिक्षा दी कि वेदों की पवित्र शिक्षाओं की ओर मुंह फेर लेने पर भारत वासी आत्म-शासन की योग्यता प्राप्त कर लेंगे, परिणामतः स्वातन्त्र्य की उपलब्धि उन्हें स्वयमेव हो जायगी। मैं पण्डित दयानन्द सरस्वती पर राजद्रोही होने का लाञ्छन नही लगा रहा। भारतवर्ष के प्रत्येक हितचिन्तक की यह अभिलाषा है कि ऐसा समय आयगा जबकि विद्या के प्रचार, वीभत्स सामाजिक कुरीतियों के सुधार और सब से बढकर वास्तविक धार्मिक भावनाओं के प्रचार द्वारा भारतीय जनता स्वराज्य के योग्य हो जायगी।

उक्त सदर्भ मे यह स्पष्ट है कि पण्डित दयानन्द सरस्वती महान् उदार विचारों के महात्मा थे। वह दिव्य स्वप्नों को देखते थे, वे एक ऐसे भारत का स्वप्न देख रहे थे, जिस की समस्त भ्रान्त भावनाओं का पूर्णरूपेण विध्वंस हो गया हो,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

❁ Pandit Dayanand Saraswati became finally emancipated from the authority of Brahmanism in some such way as Luther b came emancipated from the authority of the Church of Rome. Luther appealed from the Roman Church and the authority of tradition to the Scriptures of the old and new Testament Pandit Dayanand Saraswati appealed from Brahmanical Church and the authority of Smriti to the earliest and most sacred of Indian scriptures The watchword of Luther was Back to the Bible, the watchword of Pandit Dayanand was 'Back to the Vedas, with this religious watchword another wachword was implicitly, if not explicitly, combined another wachword, namely 'India for the Indians'. Combining these two, we have the principle, both religious and political that the religion of India as well as the Sovereignty of India ought to belong to the Indian people, in other words Indian religion for the Indians and Indian sovereignty for the Indians. In order to accomplish the first end Indian religion was to be reformed and purified by a return to the Vedas, and foreign religions as Islam and Christianity were to be extirpated. Thus the program included reform for indigenous religion and extirpation for foreign religions With regard to the second end the founder of the Arya Samaj seems to have taught that a return to the pure teachings of the Vedas would gradually fit the people of India for self-rule and that independendce would ultimately come to them. I am not charging Pandit Dayanand Sarawati with disloyalty. Every sincere well-wisher of India hopes that the time will come when the Indian people through the spread of education and the removal of bad social custom and above all through the prevelence of true religion will be fitted for self Govt It is evident from all this that Pandit Dayanand Saraswati was a man of large views. He was a dreamer of splendid dreams. He had a vision of India purged of her superstitions, filled with the fruits of science, worshipping one God, fitted for self-rule, having a place in the sisterhood of nations, and restored to her ancient glory. All this was to be accomplished by throwing overboard the accumulated superstitions of the centuries and returning to the pure and inspired teachings of the Vedas. Thus the founder of the Arya Samaj was akind of Indian Elijah or John

आर्यसमाज धारूर का हीरक जयन्ती महोत्सव

पंजाबी सूबे का निर्माण आर्यसमाज कदापि सहन नहीं करेगा

श्री ला० रामगोपाल जी, आचार्य कृष्ण जी तथा पं० नरेन्द्र जी का भव्य स्वागत

आर्य समाज-जिला धारूर:—बीड हीरक जयन्ती समारोह ५, फरवरी से ८ फरवरी ५६ तक बड़े धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर नगर के सारे दुकानों को ओ३म् पताकाओं झण्डियों से खूब अलंकृत किया गया था। और कई स्वागत द्वार भी बनाये गये थे।

बस स्टेण्ड पर आर्य नेताओं के पहुचते ही पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत किया गया और बाजे के साथ निवास-स्थान तक उन्हे ले आया गया। मार्ग भर में वैदिक धर्म की जय, आर्यसमाज अमर रहे, ऋषि दयानन्द की जय के नारों से आकाश गूंजता रहा। हीरक जयन्ती के अवसर पर श्री प० भगवान स्वरूप जी "न्याय भूषण", श्री आचार्य कृष्ण जी, श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, प० नरेन्द्र जी, श्री ओ३म्प्रकाश जी भजनीक, श्री प्रेमचन्द्र जी "प्रेम", पं० ज्ञानेन्द्र जी शर्मा, श्री प० सत्यप्रिय जी शास्त्री पधारे थे।

प्रथम दिन के अधिवेशन के सभापति श्री न्याय भूषण भगवान स्वरूप जी थे। सर्वप्रथम श्री नरेन्द्रप्रसाद जी शुक्ल ने आगन्तुक आर्य नेताओं का निमन्त्रित प्रतिनिधियो का स्वागत किया। चार दिन तक श्री लाला रामगोपाल जी, आचार्य कृष्ण जी, श्री प० नरेन्द्र जी आदि के वर्तमान परिस्थितियों सम्बन्धी विषयों पर गम्भीरता तथा ओजस्वीपूर्ण भाषण हुए। बीड़ जिला - सम्मेलन का आयोजन भी किया गया था। सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अम्बाजोगाई, परली बेजनाथ, बीड़, केवराई, कलम चाण्डवल, रेणापूर, तेर आदि स्थानों से आर्य समाज के प्रतिनिधि आये थे। इस सम्मेलन में जिला.—बीड़ के आर्य समाज की प्रगति के लिए एक प्रस्ताव तथा गौ हत्या निरोध के लिये एक प्रस्ताव पारित किया गया। इस समारोह को सफल बनाने में श्री नरेन्द्र प्रसाद जी शुक्ल, श्री सत्यदेव जी, श्री आर्यभानु जी आदि ने काफी परिश्रम किया।

७ फरवरी ६६ को राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन श्री प० नरेन्द्र जी, प्रधान सभा की अध्यक्षता मे किया गया। इस अवसर पर आचार्य कृष्ण जी, लाला रामगोपाल जी तथा प० सत्यप्रिय जी शास्त्री का राष्ट्र के प्रति स्वतन्त्र भारत के नागरिकों का कर्त्तव्य तथा वर्तमान शासकोका ध्यान सीमावर्ती शत्रुओं से सतर्क रहने और सुरक्षा के पूर्ण प्रबन्ध करने की ओर आकृष्ट किया। श्री लाला रामगोपाल जी ने कहा कि भारत की एकता को खण्डित करने के लिये पुन. पंजाबी सूबे का प्रश्न खड़ा किया जा रहा है। पजाबी सूबे के षडयन्त्र को हम, आर्यसमाजी कभी भी सहन नहीं कर सकेंगे और अपनी भरपूर शक्ति से इसका विरोध करेंगे। चाहे हमें इसके लिये बड़े से बड़ा बलिदान ही क्यों न देना पड़े।

श्री सत्यदेवजी आर्य, मन्त्री आर्य समाज धारूर ने श्री लाला रामगोपाल जी, को आश्वासन दिलाया कि शिरोमणि सार्वदेसिक सभा के आह्वान पर आर्य समाज धारूर के सहस्त्रों की सख्या में आर्य युवक दिल्ली भेजे जायेंगे।

दिनांक १० फरवरी को हैदराबाद में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण द्वारा आमन्त्रित कार्यकर्ता बैठक में श्री लाला रामगोपाल जी, मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने जहां आज के वर्तमान-स्थिति में आर्य समाज की आवश्यकता पर जोर दिया वहा ही उन्होंने पंजाबी सूबे के विषय को भी दुहराया। अन्त में श्री छगनलाल विजयवर्गीय जी उपमन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री लालाजी को विश्वास दिलाया कि आवश्यकता होने पर मध्य दक्षिण से हजारों की सख्या मे आर्य नवयुवक इस यज्ञ मे भाग लेने दिल्ली पहुंचेंगे कार्यकर्ताओं ने इस घोषणा का करतल ध्वनि में स्वागत किया।

श्री पं० नरेन्द्र प्रसाद जी शुक्ल
स्वागताध्यक्ष
हीरक जयन्ती-आर्यसमाज, धारूर

[आपमें सौम्यता, सत्यता, वीरता सेवा और उदारता के नैसर्गिक गुण विद्यमान हैं। आप ७ वर्षों से नगर-पालिका के अध्यक्ष हैं]

(पृष्ठ ५ का शेष)

जो कि वैज्ञानिक सत्यताओं से परिपूरित हो, जो कि एक ईश्वर की पूजा करता हो, जो स्वातन्त्र्य का अधिकारी बन चुका हो, जिसे ससार के राष्ट्र-समुदाय मे सम्मानित स्थान उपलब्ध हो चुका हो, और जिसने अपने अतीत गौरव को प्राप्त कर लिया हो। इस लक्ष्य के प्राप्त्यर्थ शताब्दियों से संचित भ्रान्त धारणाओं का विनाश अनिवार्य था और यह सब कुछ वेदों की पवित्र एव प्रेरणा दायक शिक्षाओं की ओर अग्रसर होकर ही उपलब्ध करना था। इस प्रकार हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि आर्य्य समाज का प्रवर्त्तक एक प्रकार से भारतीय एलीजाह अथवा बपतस्मा देने वाला जान था, जिसने अपना यह कर्त्तव्य अनुभव किया कि आधुनिक भारत की पतित सन्तानों के हृदयों को वैदिक काल के उत्कृष्ट पूर्वजों की ओर फेर कर भूत काल तथा वर्त्तमान् काल का समन्वय कर दे। उसके मिशन की महत्ता को दृष्टि गोचर रख लेने पर उसकी आलोचनाओं की तीव्रता को समझने में सहायता मिलती है। ऐलीजाह बॉलके पैगम्बरों के साथ व्यवहार करते समय विशेष मृदुता का प्रदर्शन नही किया करता था। और न ही लूथर रोमन चर्च के साथ सहिष्णुता का प्रयोग करता था। इसी प्रकार पण्डित दयानन्द सरस्वती दृढ़भित्ती के आश्रयपर खड़े होकर एक ओर पौराणिकों के आक्रमणों का प्रतिकार करते थे और दूसरी ओर इसलाम और ईसाईयत के विदेशी धर्मों का मुकाबिला। इन परिस्थितियों में हमें कोई हैरानगी नहीं होती जब हम उन्हें पूरे बल पूर्वक करारी चोट करते देखते हैं। लूथर ने रोमन चर्च पर ताबड़तोड़ हमले किये और पण्डित दयानन्द ने पौराणिक परम्पराओं के विरुद्ध।

अनुमान कीजिये कि जब लूथर रोम के साथ युद्ध कर रहा था, उन्हीं दिनों योरोप में इसलाम का ऐसा प्रबल प्रचार होने लगता जो कि लूथर की समस्त सुधारवादी भावनाओं को निगलता प्रतीत होता, ऐसी परिस्थितियों में लूथर इस के अतिरिक्त कि घर में तो धर्म च्युत रोमन चर्च पर

(शेष पृष्ठ १४ पर)

the Baptist, who felt himself called to turn the hearts of the degenerate children of modern India to their fathers of the glorious Vedic age, to reconcile the present with the past. The character of the mission helps to account for the violence of his methods of controversy. Elijah was not specially gentle in his dealings with the prophets of Baal, nor was Luther very tender towards the Roman Church In like manner Pandit Dayanand Sarswati stood with his back to the wall, facing on the one hand the attacks of theBrahmanical heirarchy and on

[Continued on page 14]

महर्षि दयानन्द क्या चाहते थे?

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी

शिवरात्रि के पुनीत अवसर पर सच्चे शिव और उसके सत्य-ज्ञान को प्राप्त करने की ऐसी तीव्र अभिलाषा उत्पन्न हुई कि वह अपने माता-पिता, घर, भौतिक सुख सभी को छोड़कर अपने लक्ष्य-प्राप्ति के निमित्त निकल पड़े। वर्षों जगलों में साधना की, अनेकों विद्वानों के पास गये और अन्त में गुरु विरजानन्द के चरणों में अपनी ज्ञान-पिपासा को शान्त कर संसार के अज्ञानान्धकार को समाप्त करने की दीक्षा व प्रतिज्ञा की।

महर्षि का लक्ष्य समूची मानव जाति का कल्याण था। उनकी दृष्टि में अज्ञान ही ससार के समस्त सघर्षों, अन्याय-अत्याचारो कष्टो का मूल था इसी के विनाश मे वह दृढ प्रतिज्ञ थे, और इस पर किसी प्रकार का समझौता, दया, लिहाज व पक्षपात् करने को उद्यत नहीं थे। एक समय था जब कि अपने-पराये सभी उनके विरोधी थे अर्थात् समूचा ससार उनके विपरीत था। उनके अनुकूल यदि कोई था तो एक मात्र परम पिता परमात्मा था। उसी के बल पर वह निर्भय होकर संसार भर का सामना करने को उद्यत हुये थे।

संसार के कल्याणार्थ समस्त वर्ग सघर्षों एव सकीर्ण साम्प्रदायिकता को समाप्त कर महर्षि ससार के समस्त मानवों की एकता स्थापित करने को कितने उत्सुक थे यह उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है -

"यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं। वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो २ बातें सब के अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक-दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जो कि स्वार्थी लोगों को प्रिय हो, सब मनुष्यों को दुःख सागर में डुबा दिया है।"

"जब तक इस मनुष्य जाति में मिथ्या परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष-विद्वज्जन ईर्षा द्वेष छोड़कर सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहें तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि विद्वानो के विरोध ही ने सब को विरोध जाल में फसा

महर्षि दयानन्द सरस्वती

रखा है, यदि ये लोग अपने प्रयोजन मे न फस कर सब के प्रयोजन को सिद्ध करना चाहे तो अभी एकमत हो जायें।"

"बहुत मनुष्य ऐसे हैं जिनको अपने दोष तो नहीं दीखते किन्तु दूसरों के दोष देखने में अत्युद्युक्त रहते हैं। यह न्याय की बात नहीं क्योंकि प्रथम अपने दोष देख एव निकाल के पश्चात् दूसरों के दोषो में दृष्टि देके निकालें।

ऊपर लिखित लक्ष्य को सन्मुख रखकर जब महर्षि दयानन्द ने मानव जाति के हितार्थ सत्य मार्ग की खोज की तो उन्होने दृढता के साथ कहा कि यदि मानव समाज सुख, शान्ति, एकता एवं प्रगति चाहता है तो उसे अपने आचरण में इन उपदेशों को लाना ही होगा अर्थात—

आर्य समाज के १० नियम

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४ सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।

६—ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये।

८—अविद्या का नाश, और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

महर्षि दयानन्द जी द्वारा घोषित इन दस उपदेशों में संसार भर के धार्मिक सामाजिक, आर्थिक एव राजनीतिक प्रश्नों व समस्याओं का समाधान निहित है। संसार में अनेकों महापुरुषों ने मानव जाति के कल्याणार्थ अपनी मान्यताओं को उपस्थित किया है, परन्तु उनमें से ऐसे महापुरुष नहीं के बराबर ही है जिनकी मान्यता को चुनौती व आलोचना का सामना न करना पड़ा हो और जिन्होंने थोड़े से शब्दों में ससार की समस्त समस्याओं का समाधान उपस्थित किया हो।

महान् आश्चर्य की बात यह है कि पूंजीवाद एव साम्यवाद के दोषों को दूरकर उनके समान गुणोंको रखने वाला मध्य मार्ग महर्षि ने अपने १०वें सिद्धान्त में बड़े ही प्रशंसनीय ढग से रखा है। इस सिद्धान्त में मानव की स्वतन्त्रता को स्थिर रखते हुये समाज को पूंजीवादी मनोवृति एव शोषण से बचाने का सर्वोत्तम उपाय है।

दुर्भाग्यवश महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण को संसार के सन्मुख उपस्थित करने मे आर्य समाज असमर्थ रहा है। आशा है आर्य-समाज इस दिशा में प्रयत्न करेगा।

ओ३म् ध्वज वन्दना

[ले०—डा० अजनी नन्दन वर्मा 'तरुण' मछलीशहर]

बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
हाथ ओ३म् ध्वज लिए, बढ़े चलो, बढ़े चलो॥

आर्यों के देश में, आर्यों के वेश में।
आर्यों सी नीति हो, आर्यों सी प्रीति हो॥

हाथ ओ३म् ध्वज लिए..........।

सबको समान मान कर, भेदभाव छोड़ कर।
आर्य समाज साथ ले के, वीर तुम बढ़े चलो॥

हाथ ओ३म् ध्वज लिए..........।

ध्वज कहीं झुके नहीं, पग कहीं रुके नहीं।
सपूत वीर आर्य के, बढ़े चलो, बढ़े चलो॥

हाथ ओ३म् ध्वज लिए..........।

साथ कोई हो न हो, इसकी तुम्हें परवाह न हो।
ध्वज की आन मान कर, वीर तुम बढ़े चलो॥

हाथ ओ३म् ध्वज लिए . .....।

नारा हमारा एक हो, जय हो आर्य भूमि की।
एक साथ ध्वनि उठे, ध्वज कहीं झुके नहीं॥

हाथ ओ३म् ध्वज लिए ... .।

ऋषि दयानन्द की कृपा रहे औ वेदध्वनि गूंजती रहे।
और "तरुण" की यही पुकार रहे कि॥

हाथ ओ३म् ध्वज लिए वीर तुम बढ़े चलो।
हाथ ओ३म् ध्वज लिए वीर तुम बढ़े चलो॥
बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो॥

राज्य और दण्ड

श्रीसुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम०ए०एल०टी०, डी० बी० कालेज, गोरखपुर

शासन का राज्याधिकारी, सैनिक और जनता के अनुशासन से अत्यधिक घनिष्ठ संबंध है और अनुशासन का पुरस्कार और दण्ड से। पुरस्कार और दण्ड का आधार नियमों का पालन और नियमों का उल्लंघन है। नियमों का पालन करके विद्यालयों में विद्यार्थी और शासन में कर्मचारी पुरस्कृत होते हैं तो दूसरों में कार्यों को करने की प्रेरणा मिलती है और दूसरी ओर नियमों का उल्लंघन समाज तथा राष्ट्र को उच्छिन्न कर सकता है। इसलिए राज्य के लिए दण्ड की अत्यधिक आवश्यकता है। स्वामी दयानन्द ने अनुशासन को अत्यधिक महत्व दिया है और उस अनुशासन को स्थापित करने के लिए दण्ड की आवश्यकता और महत्व बतलाते हुए लिखा है :—

स राजा पुरुषो दण्डः स नेता शासिता च सः। चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्यप्रतिभूः स्मृतः। दण्ड शास्ति प्रजा सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति। दण्डः सुप्तेषु जागर्ति, दण्ड धर्मं विदुर्बुधाः।

अर्थात् जो दण्ड है वही पुरुष, राजा, वही न्याय का प्रचारकर्ता, और सबका शासनकर्ता, वही चार वर्ण और चार आश्रमों के धर्म का प्रतिभू अर्थात् जामिन है। वही प्रजाका शासनकर्ता, वही सब प्रजा का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है। इसलिए बुद्धिमान् लोग दण्ड को ही धर्म कहते हैं।

विचारणीय यह है समाज और राज्य मे शान्ति कब रह सकती है? उस शाति की स्थापना का क्या उपाय है? राज्य मे शांति तभी रह सकती है जब राज्य के नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करे एव दूसरे के अधिकारों मे हस्ताक्षेप न करें। परन्तु प्रत्येक राज्य में कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो कि न तो राज्य के नियमों का ठीक से पालन करते हैं और अन्य व्यक्तियों के अधिकारों में हस्ताक्षेप भी करते हैं। यदि यह दशा राज्य में बनी रहे तो शान्ति और सुव्यवस्था के स्थान पर अराजकता छा जाए। व्यक्ति का विकास और राज्य की उन्नति रुक जाय। अत राज्य के नियमों की अवहेलना करने वालों एवं अन्य व्यक्तियों के अधिकारों का अपहरण करने वालों को राज्य दण्ड देता है। इस प्रकार दण्ड का उद्देश्य राज्य के नियमों का पालन एव राज्य के नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना है। आधुनिक काल में दण्ड के विषय में तीन सिद्धान्त माने जाते हैं। —

(१) प्रतिशोधात्मक सिद्धान्त।
(२) भयावह सिद्धान्त।
(३) सुधारक सिद्धान्त।

प्रतिशोधक सिद्धान्त (Petri hutian) के अनुसार जिस व्यक्ति के प्रति अपराध किया गया हो उसे अपराधी को दण्ड देने का स्वय अधिकार है। अर्थात् दूसरे शब्दों में हम इसे इस प्रकार कह सकते है कि आंख के बदले आंख, कान, के बदले कान काट लेने का अधिकार उचित और न्यायपूर्ण है। पर आधुनिक युग में इस सिद्धान्त को अनुपयोगी मानकर छोड़ दिया गया है। यह उस समय का सिद्धान्त है जब समाज अत्यन्त निम्न अवस्था में हो, जगली हो और उसका उद्देश्य केवल बदला लेना हो। परन्तु बदले की भावना का अन्त होना संभव नहीं है। पठानों में अब भी एक के पिता को जब कोई मार देता है तो दूसरा उसको मारता है और फिर यह शृंखला चलती चली जाती है इस सिद्धान्त से अराजकता को प्रोत्साहन मिलता है। यह सिद्धान्त दो कारणों से ठीक नहीं। एक तो दण्ड का अधिकार व्यक्ति को न होकर समाज को होना चाहिए और इससे अपराधी के अपराध की न तो समाप्ति होती है और न अपराधी का सुधार ही। इससे दूसरे व्यक्ति भी यह अनुभव नहीं करते कि अपराध करने पर हमारी भी यही दशा होगी। इससे तो अपराध के द्वारा दूसरे को अपराध का प्रोत्साहन मिलता है।

भयावह सिद्धान्त को हम प्रतिरोधक भी कह सकते हैं। इसका उद्देश्य यह है कि वह व्यक्ति दण्ड की भयंकरता को देखकर दुबारा अपराध न करे तथा दूसरे व्यक्ति भी दण्ड की भयकरता की कल्पना मात्र से ही अपराध से विमुक्त हो जाय। इस सिद्धान्त को कुछ लोग अमानवता पूर्ण और निर्दय मानते हैं। परन्तु भयावह सिद्धान्त हमारी सम्मति में राज्य के लिए उपयोगी है। स्वामी दयानन्द भी शासन तथा अनुशासन के लिए इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में मनुस्मृति के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा है—

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा। प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत्साधुपश्यति।

जहां कृष्ण वर्ण, रक्त नेत्र, भयकर, पुरुष के पाप का नाश करने वाला दण्ड विचरता है वहां प्रजा मोह को प्राप्त न होके आनन्दित होती है। परन्तु शर्त यह है कि दण्ड का देने वाला व्यक्ति पक्षपात रहित होना चाहिए।

दण्ड का तीसरा सिद्धान्त सुधारक सिद्धान्त है। इसके अनुसार अपराधी को सजा न देकर उसका मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इलाज किया जाना आवश्यक है। अपराधी को उचित वातावरण में रखकर शिक्षा दी जावे तो अपराधी सुयोग्य नागरिक हो सकता है। उनका कहना है कि अपराधी किसी मस्तिष्क सम्बन्धी विकृति के कारण ही अपराध करने को बाधित होता है। यह सिद्धान्त सुनने में जितना सुन्दर प्रतीत होता है उतना क्रियात्मक नही। इस सिद्धान्त की क्रियात्मकता मे सबसे बड़ी बाधा तो यह लगती है कि जब अपराधी अपराध करके सामाजिक अव्यवस्था उपस्थित कर देगा तब तो जाकर उसका सुधार प्रारम्भ किया जायगा और जब वह सुधरेगा तब तक दूसरे हजारों अपने सुधार के लिए आ उपस्थित होंगे? कोई हत्या करके आएगा, कोई चोरी करके, कोई तस्कर व्यापारी के रूप में आएगा? क्या यह सब विकृत मस्तिष्क के व्यक्ति माने जायेंगे। बाल्कट जैसे तस्कर व्यापारी को पकड़ने के लिए अमेरिका, इंगलैंड और भारत की पुलिस कई बार चकमें में पड़ने के बाद अब पकड़ पाई है। क्या यह व्यक्ति विकृत मस्तिष्क के सुधार से ठीक हो जायगा? हमारा तो विचार है कि वह सुधारकों को ही सुधार लेगा। यह सिद्धान्त रिफोर्मेटरी विद्यालयों के बालकों के सुधार में कुछ सहायता भले ही कर ले परन्तु राज्य के अपराधियों को तो वह और भी अपराध करने की प्रेरणा देगा। स्वामी जी के विचारों में इन तीनों सिद्धान्तों का सम्यक् रूप से विचार करके प्रयोग किया जा सकता है। प्रतिशोधक सिद्धान्त इस अंश में उचित है कि बदले की भावना व्यक्ति से हटाकर राज्य के हाथ में दे दी जाय। इसीलिए स्वामी जी महाराज ने लिखा है: —

येन येन यथांगेन स्तेनो नृषु विचेष्टते। तत्तदेव हरेदस्य प्रत्यादेशाय पार्थिव:॥

जिस प्रकार जिस-जिस अंग से मनुष्य विरुद्ध चेष्टा करता है उस अग को राजा सब मनुष्यों की शिक्षा के लिए हरण अर्थात् छेदन करदे। यहा प्रतिशोधक तथा भयावह दोनों सिद्धान्तों का समर्थन किया है। परन्तु दण्ड तो अन्तिम वस्तु है। प्रारम्भ में मनोवैज्ञानिक और साधारण उपायों का अपराधी के सुधार के लिए प्रयत्न किया जा सकता है। स्वामी दयानन्द ने दण्ड प्रयोग की विधि भी लिखी है। उनका कहना है कि यदि किसी व्यक्ति को दण्ड देना ही हो तो प्रथम वाणीका दण्ड देना चाहिए। वाणी के दण्ड से आशय समझाना, बुझाना और उसकी निन्दा करना है। दूसरा दण्ड धन दण्ड है और उसके बाद कारावास, अग छेदन या फांसी आदि का दण्ड है। अन्तिम कठोर दंडों के विषय में प्रश्न किया जा सकता है कि जब मनुष्य किसी को जीवन नहीं दे सकता, अगों का निर्माण नहीं कर सकता तो क्यों उसे अग छेदन या प्राण आदि के दण्ड दिए जांय? स्वामी दयानन्द ने इसे स्पष्ट किया है और लिखा है "यह कड़ा दण्ड नहीं, जो इसको कड़ा दण्ड जानते हैं वे राजनीति को नहीं समझते। एक पुरुष को इस प्रकार दण्ड देने से सब लोग बुरे काम करने से अलग रहेंगे और धर्म मार्ग में स्थित रहेंगे।" आगे पुनः स्पष्ट करते हुए लिखा है "वह कड़ा दण्ड न दिया जाय तो पाप बढ़ जायेंगे और जहां पहले एक आदमी को कड़ा दण्ड देने से सुधार हो सकता था अब वहां सैंकड़ों व्यक्तियों को हल्का दण्ड देने से वह एक आदमी की अपेक्षा परिमाण में अधिक होगा और अभीष्ट की सिद्धि भी न होगी।"

आगे उन्होंने अच्छी तरह विचार करके दण्ड देने का उल्लेख करते हुए लिखा है:—

[शेष पृष्ठ १२ पर]

देवास (मध्य प्रदेश) आर्य समाज के संस्थापक—

श्री स्वामी चैतन्यदेव जी महाराज

(श्री पं० भगवती प्रसाद जी मिश्र आर्य सिद्धान्त रत्न)

> महर्षि बोधांक में प्रकाशनार्थ अनेक महानुभावों ने उपयोगी लेख और जीवन परिचय भेजे थे। जो स्थानाभाव के कारण नहीं छप सके। उन सभी लेखों को सार्वदेशिक में क्रमशः प्रकाशित करते रहेंगे। इन लेखों में अनेक महत्वपूर्ण शिक्षाप्रद प्रेरणा और स्फूर्ति दायक सामग्री पाठकों को मिलेगी।
>
> —सम्पादक

आर्यसमाज देवास के संस्थापक पूज्य स्वामी चैतन्यदेव जी महाराज का जन्म संवत् १९१४ में मारवाड़ में मीराबाई के मेड़तारोड़ से १० मील पर स्थित ग्राम गगराना में हुआ था। आपकी माताजी का नाम छगनबाई और पिता का नाम छोटूराम था। स्वामी जी का जन्म नाम गोवर्धनलाल था। छोटी अवस्था में ही स्वामी जी ग्राम गगराना (मारवाड) से परिवार सहित आकर देवास मे बस गए थे, यही पर आप की शिक्षा हुई थी। स्वामी जी बचपन से ही अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि के बालक थे।

एक बार आपने पिताजी से पूछा कि "मेरा गुरु कौन है ?" तो पिताजी ने कहा कि "अभी गुरु नही किया है।" इस उत्तर से स्वामी जी की उत्कट अभिलाषा गुरु बनाने की हो गई। स्वामीजी के पिता शिवभक्त थे और प्रतिवर्ष शिवरात्रि को ओंकारेश्वर की पैदल यात्रा किया करते थे। पिताजी से ही स्वामी जी ने गुरुमहात्म भी सुन रखा था।

सत्यार्थ प्रकाश गुरु मिला

गुरु की तलाश में सन् १९३४की गुरु पौर्णिमा के दिन आपने नाथद्वारा जाने लिये यात्रा प्रारम्भ की। ट्रेन मे यात्रा करते हुये एक सज्जन ने पूछा "कुछ पढ़े लिखे हो ?" स्वामी जी ने कहा जी हा। उस सज्जन ने स्वामी जी के हाथ मे एक पुस्तक रखते हुये कहा "इसे पढ़ो।" पुस्तक जब हाथ मे रखी तब वह अचानक बीच मे से खुल गई थी। स्वामी जी ने ट्रेन में ही इस पुस्तक के कुछ पृष्ठों को पढा। पुस्तक पढ़ते ही एक दम स्वामी जी के मस्तिक में विचारों की क्रान्ति पैदा हो गई, एक ज्वाला सी भड़क उठी। जन्म जन्मान्तरों का एकत्रित अन्धकार नष्ट हो गया। स्वामी जी ने विचारा कि इस ग्रन्थ में तो सत्य ही सत्य भरा पड़ा है जो सत्य हजारों वर्षों से छिपा था, आज प्रत्यक्ष होगया। इस सत्य का प्रकाश तो हजारों गुरु भी मिलकर नहीं कर सकते। बस अब मुझे गुरुकरने की क्या आवश्यकता है। जिस गुरु की खोज को मैं निकला था वह आज मुझे प्राप्त हो चुका है—इस ग्रन्थ ने सत्य की राह बतला दी है। अब भ्रम-जाल के गुरुओं के पास भटक कर क्या करूंगा। ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर अंकित था "सत्यार्थ प्रकाश" महर्षि दयानन्द सरस्वती का महान् क्रान्तिकारी ग्रन्थ। स्वामी जी ने ग्रन्थ प्राप्ति का पता नोट किया व नाथद्वारा न जाकर वापिस घर लौट आए।

स्वामी जी ने तुरन्त ही सत्यार्थ-प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सस्कारविधि आदि अनेक ग्रन्थ मगाकर उनका अध्ययन किया। फिर क्या था जीवन ही बदल गया और आप में वह शक्ति आ गई कि आर्यसमाज के लिये बड़ी से बड़ी विपत्तियां सहीं और अन्त मे आर्यसमाज की स्थापना कर जीवन के अन्तिम क्षण तक सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार घूम-घूम कर किया।

मालवे मे आप ही सबसे पुराने आर्यसमाजी थे आपने सन् १८९३ ई० मे देवास मे आर्य समाज की स्थापना की थी।

एक बार एक आर्योपदेशक देवास आये। श्री भागीरथ जी कसेरा के निवास स्थान पर आर्यसमाज का अधिवेशन हुआ। यज्ञ तथा वेदोपदेश हुआ। विरोधियों को, आर्यो के इस धार्मिक कार्यक्रम से बड़ी जलन पैदा हुई और उन्होंने विरोध करना प्रारभ कर दिया। भागीरथ जी कसेरा के मकान में आग लगा दी और विरोधियों ने ही थाने में जाकर यह रिपोर्ट लिखा दी के आर्यों ने मकान में हवन करके आग लगाई है क्योंकि भागीरथ जी कसेरा किराये के इस मकान में रहते थे। पुलिस आई और गोर्धन लालजी (स्वामीजी) उनके छोटे भाई गोपीलाल जी और प०काशीनाथ जी व्यास आदि १०आर्यसमाजी कार्य-कर्ताओं को पकड़ ले गई। बाद में नगर सेठ श्री रतनलाल जी मोदी ने सब आर्यों को जमानतें देकर छुड़वाया न्यायालय मे मुकद्दमा चलाया गया किन्तु घटना असत्य सिद्ध होने से सभी छोड़ दिये गये।

जब पजाब में धर्मवीर प० लेखराम जी की हत्या करके कातिल फरार हो गया था उसका हुलिया समाचार पत्रों में स्वामी जी ने पढ़ लिया था। उन दिनों आपकी देवास मे बड़ी भारी दुकान थी। अतर, मुरब्बा और औषधिया भी दुकान मे थी। एक दिन एक काला,ठिगना व्यक्ति जिसका सामने का दात टूटा हुआ था दुकान पर आया। यह व्यक्ति विक्षिप्त सा था और इसने सख्या (जहैर) मांगी। गोवर्धनलाल जी ने देखते ही समझ लिया कि यह वही बदमाश हत्यारा है जिसने धर्मवीर प० लेखराम जी की हत्या की है। और अब आत्महत्या करना चाहता है। स्वामी जी ने तुरन्त पुलिस को सूचना दी और पजाब आर्य प्रति० सभा को टेलीग्राम किया व हत्यारे को पुलिस के जिम्मे किया। हत्यारा पुलिस को चकमा देकर चल दिया और बाद में काफी दौड़-धूप करने पर भी नहीं मिला।

उन दिनों आर्यसमाज के विरोधियों ने अनेक विचित्र बातें जनता में फैला रखी थी और कहते थे आर्य लोग कुंवे में जहर डाल रहे हैं परिणाम यह होता था कि जब कभी स्वामी जी और इनके सहयोगी ग्राम प्रचार हेतु जाते थे तो लोग इन्हें लाठियां लेकर मारने को दौड़ते थे। कुछ लोग कुवे और तालाबों पर लाठियां लेकर पहुंच जाते थे। किन्तु जब स्वामी जी गाव वालो को उपदेश देते और समझाते तब उनका भ्रम दूर हो जाता था।

कई बार गांव वालों ने स्वामी जी व उनके साथी कार्यकर्ताओं के खिलाफ यह रिपोर्ट की के आर्य लोग कुंओं में तालाब में जहर डाल रहे हैं। पुलिस इन्हें पकड़ ले गई जब जहर डालने का प्रमाण नहीं मिला तब छोड़ा गया।

विरोधियों ने देवास मे जितना अधिक आर्यसमाज का विरोध किया स्वामी जी ने उतना ही अधिक परिश्रम और मुसीबतें उठाने के बाद भी आर्यसमाज के कार्य को बढाया। होली पर, विरोधी लोग स्वामी जी के पुतले बनाकर जलाते थे और जनाजा भी निकाला करते थे।

आप ८५ वर्ष की अवस्था में देशभक्त कुंवर चांदकरण जी शारदा के साथ हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में गये थे। गुलबर्गा जेल में महात्मा नारायण स्वामी जी के साथ रहे। अजमेर आर्य प्रतिनिधि सभा की जयती के अवसर पर आप देवास से अजमेर तक पैदल यात्रा करते हुये हाथ में ओ३म् की पताका लिये हुए गाव २ मे प्रचार करते हुए गये थे।

एक बार महाराजा बड़ौदा देवास आए और देवास जूनियर नरेश के यहा जब ठहरे हुये थे तब स्वामी जी महाराज ने बडौदा नरेश से आर्यसमाज मदिर में पधारने की प्रार्थना की। दोनों नरेश आर्य मदिर में पधारे। स्वामी-जी ने उपदेश किया जिसका दोनों नरेशों पर अमिट प्रभाव पड़ा। श्रीमन्त मल्हारराव महाराजा साहेब (देवास जूनियर नरेश स्वामीजी का अत्यधिक सम्मान करते थे और राज-दरबार में आमन्त्रित किया करते थे। महाराजा साहेब ने स्वामी जी को राजसभा का सदस्य नामजद करके सम्मानित किया था। महाराजा साहेब श्रावणी पर्व पर समाज मदिर में पधारा करते थे।

३१जनवरी १-२ फरवरी १९०३ ई० को देवास आर्यसमाज का प्रथम वार्षिकोत्सव हुआ था इसमें दोनों राज्यों (सीनियर-जूनियर) के नरेश सम्मिलित हुये थे।

देवास आर्यसमाज की दृढ़ता एव उत्तरोत्तर उन्नति होती रही और दूर २ तक स्वामी जी की ख्याति फैल गई। स्वामीजी ने आर्य जगत् के बड़े २ विद्वानों को आमन्त्रित कर उपदेश करवाए जिनमें प० गणपति शर्मा, स्वामी नित्यानन्द जी महाराज स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी एव प०रुद्रदत्त जी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

आपका सम्पूर्ण परिवार दृढ़ आर्य था। आपके कारण आपके पिताजी माताजी, धर्मपत्नि व छोटे भाई सभी आर्य हो गये थे। आपकी धर्मशीला

(शेष पृष्ठ १२ पर)

बाल-बुद्धि वा आप्त-बुद्धि

शास्त्रार्थ महारथी श्री अमरसिंह जी आर्य पथिक गाजियाबाद

आज से १२८ वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द जी महाराज जो उस समय मूलजी कहलाते थे, ने अपने पिताजी की आज्ञा से शिवरात्रि का व्रत रक्खा और अपने पिताजी के साथ टङ्कारा के शिव मन्दिर में जाकर रात्रि जागरण किया। और भी कई व्रत रखने वाले उस मन्दिर में उपस्थित थे कुछ देर तक जागकर सभी सोने और ऊंघने लगे पर सच्ची लगन वाले मूलजी नहीं सोये वह यह देखने के लिये जागते रहे कि-शिवजी भगवान् अपनी गोल मटोल मूर्त्ति पर चढ़े हुए चढावे को कब खाते हैं और कैसे खाते हैं।

कुछ देर में उन्होंने देखा कि पत्थर की वह गोल पिण्डी तो कुछ नही खाती है पर इधर उधर से चूहे आकर उसके ऊपर चढ़ते और पिण्डी पर चढे हुए सिंघाडे आदि पदार्थों को खाते और उठा उठा कर भाग जाते हैं और चूहे भागते भी उन मनुष्यों के डरसे हैं जो उस मन्दिर में बैठे और लेटे हुए हैं। शिव की बताई जाने वाली गोल मटोल पिण्डी तो हिलती जुलती ही नहीं वह तो न खाती है न चूहों को हटाती है।

उनके मस्तिष्क में प्रश्न उत्पन्न हुआ कि 'लोग इसको भक्तों का कल्याण करने वाला शिव कहते हैं यह अपने भोजन की भी रक्षा नहीं कर सकता। अपने ऊपर चढने वाले चूहों को भी नहीं हटा सकता, यह भक्तों का कल्याण कैसे करेगा!

उन्होंने अपने पिताजी से यह प्रश्न किया, वह सन्तोष जनक उत्तर न दे सके और उन्होंने अपने पुत्र को डांट कर ही चुप करना चाहा पर डाट फटकार से शका का तो समाधान नहीं हुआ और उलटा यही लाभ उनको हुआ कि मेरे प्रश्न का उत्तर पिताजी के पास नहीं है। वह और उनके साथी सब अन्ध श्रद्धा और अन्ध विश्वास से ही इस गोल मटोल पत्थर की पूजा कर रहे हैं।

उन्होंने निश्चय किया कि इस विषय में अधिक से अधिक खोज की जाय, वेदादि सत्य शास्त्रों को पढा जाय और उनका मत जान कर पूरा निर्णय किया जाय।

पत्थर की जड़ता को देखकर उनके हृदय में इसका बीजारोपण हो गया कि मूर्ति जड़ है न यह अपने लिये कुछ कर सकती है न अन्यों के लिये।

आर्य समाज उस दिन को ऋषि दयानन्द का बोध दिवस मानता है जिस दिन इन्होंने जड़ को चेतन समझने वालों के बीच में रहते हुए जड को जड समझ लिया और सैंकड़ों वर्षों से वंश परम्परा में चला आया अविद्या का पर्दा उनके ऊपर न रहा और उनको बोध हो गया कि अनात्मा (जड़) को आत्मा मानना अज्ञान है अविद्या है।

मूर्ति पूजा के पक्षपाती मूर्ति पूजा से अपनी आजीविका चलाने वाले लोग कहते हैं कि मूलजी (दयानन्दजी) की बालबुद्धि थी उनको मूर्ति पूजा का रहस्य समझ में नहीं आया। एक बालक ने बालबुद्धि से देखा कि जिसको लोग शिव कहते हैं वह अपनी और अपने भोजन की रक्षा नहीं कर सकता है तो भक्तों का कल्याण भी न कर सकेगा। आर्य समाजी लोग तो बालक की बाल बुद्धि के पीछे चल पड़े हैं।

मैं आज पौराणिकों के एक पुराण के प्रमाण से बताना चाहता हू कि जैसा विचार आज से १२८ वर्ष पहिले १४ वर्षके बालक मूलजी (दयानन्दजी) के मस्तिष्क में उत्पन्न हुआ था वह पौराणिकों के मत में भी बालबुद्धि बाल-विचार नहीं था अपितु आप्त बुद्धि का था।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण खण्ड ४ (श्री कृष्ण जन्म खण्ड) अध्याय २७ श्लोक ६८-६९-७०-७१ में यह प्रसङ्ग है कि जब कि स्त्रियां देवी का व्रत करके यमुना में नंगी स्नान कर रही थीं तब पौराणिकों में परमेश्वर पूर्णावतार माने जाने वाले श्री कृष्ण जी उन व्रजस्त्रियों गोपियों के वस्त्र जो जमुना के किनारे पर रक्खे थे उनको लेकर वृक्ष पर चढ़ गये और गोपियां स्नान करके जमुना से बाहर निकलने को तयार हुई तो अपने वस्त्रों को उस स्थान पर न देखकर बहुत व्याकुल हुई तो पौराणिकों के माने हुए परब्रह्म परमेश्वर श्री कृष्णजी उन गोपियों से कहने लगे

कथ यास्यथ नग्नाश्च व्रतस्व किं भविष्यति। व्रताराध्या कथ सा च वस्तूनि किं न रक्षति ॥६८॥

चिन्ता कुरुत तां पूज्यां, पूजार्हां बलिरीश्वरीम्। युष्माकमीदृशी देवी न शक्ता वस्तु रक्षणे ॥६९॥

कथ व्रतफलं सा वो दातु शक्ता सुरेश्वरी। फलं प्रदातु या शक्ता सा शक्ता सर्व कर्मणि ॥७०॥

श्री कृष्णस्य वच. श्रुत्वा चिन्तामापुर्व्रजस्त्रियः ॥७१॥

तुम नगी किस प्रकार जाओगी और तुम्हारे व्रत का क्या होगा? जो तुम्हारे व्रत से पूजा और आराधना के योग्य है क्या वह तुम्हारी वस्तुओं की रक्षा नहीं करती है। वा वह तुम्हारी वस्तुओ की रक्षा क्यो नहीं करती है?

तुम उस पूजी जाने वाली, पूजा के योग्य बलि = भेट की स्वामिनी देवी को याद करो उसको पुकारो। तुम्हारी ऐसी देवी है जो तुम्हारी वस्तुओं की रक्षा नहीं कर सकती है।

वह देवों की स्वामिनी सुरेश्वरी तुमको किस प्रकार फल देगी (जो तुम्हारे वस्त्रों की रक्षा नहीं कर सकी) जो फल देने में समर्थ है वह सर्व कर्मों में समर्थ है। अर्थात् जो तुम्हारी वस्तुओं की रक्षा नही कर सकी वह फल भी कदापि नहीं दे सकती है।

श्री कृष्ण जी के इस विचार से ऋषि दयानन्द जी के उस बाल्यकाल के विचार को मिलाकर देखो कि जो शिव कहलाने वाला यह गोल मटोल पत्थर अपने ऊपर चढाये हुए फलादि की रक्षा नहीं कर सका वह भक्तों की रक्षा कैसे करेगा? और शिवरात्रि के व्रतका फल कैसे देगा? जो यह व्रत का फल देने की और भक्तों का कल्याण करने की शक्ति रखता तो अपनी भोज्य सामग्री की भी रक्षा कर सकता। जो यह नहीं कर सका वह और भी कुछ न कर सकेगा।

अब पौराणिक लोग मूर्ति पूजा के हिमायती सोचें कि उनके माने हुए सर्वोपरि पूर्णावतार की यह बुद्धि बाल बुद्धि थी वा ईश्वर बुद्धि? यदि उनकी यह बाल बुद्धि नही थी तो ऋषि दयानन्द जी की भी निश्चय यह आप्त बुद्धि थी और सर्वथा वेदादि सत्य शास्त्रों के अनुकूल थी।

शिव कहे जाने वाले गोल मटोल पत्थर को देखकर महाकवि शङ्कर जी की उक्ति—

शैलविशाल महीतल फोड,
　बढ़े तिनको तुम तोड़ कढ़े हो।
लैबुड़की जलधार धड़ाधड़,
　ने धरि गोल मटोल गढ़े हो॥
जीवन हीन कलेवर धारि,
　विराज रहे न लिखे न पढ़े हो।
हे जड़देव शिला सुत शङ्कर,
　भारत पै करि कोप चढ़े हो॥

—:०:—

चेतन के ठौर जड पूजें जड़ मूरति को,
बन्धन अबोध के न जाने कब टूटेंगे।
भूत प्रेत भैरव भवानी कालिकाके मिस,
कबलों कटेंगे पशु, पानघट फूटेंगे॥
कबलों न जाल कुण्डलीमुके उड़ेंगे रङ्ग,
कबलों पिण्डदानकी प्रथा सोप्राणछूटेंगे।
शङ्कर न जबलों प्रचार होय वेदनु को,
भारत को तबलों लबार लण्ठ लूटेंगे॥

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

महर्षि बोधांक का सर्वत्र स्वागत

—आर्यसमाज शामली के मन्त्री श्री डा० रहतूलाल जी ने भूरि-भूरि प्रशसा की है।

—श्री ब्रह्मदेव नारायण सिन्हा जी आर्य सीतामढी (बिहार) इसे देखकर मैं गद्‌गद् हो गया। इस अद्भुत प्रयत्न के लिये बधाई।

श्री विद्यार्थी जी रोहतकसे — ऐसा परिश्रम किसी और पत्रिका में नही दिखाई देता। इसके लिये बधाई स्वीकार करें।

—श्री डा० ओम्प्रकाश जी शर्मा बुजाना। जी नहीं चाहता कि बोधाक को हाथ से नीचे रख दूं। सस्ता, सुन्दर ऊपर से आकर्षक, भीतर से उपयोगी प्रेरणा स्रोत। हार्दिक बधाई

—आर्य जगत् के महान् नेताओं, विद्वानो, प्रचारकों तथा हुतात्माओं के सैकड़ों चित्रो से परिपूर्ण यह अक प्रत्येक दृष्टि से उपयोगी व सग्रह करने योग्य हैं।

तेगराम-लोक सेवक आश्रम, अबोहर।

आर्यसमाज गुंजोटी

ने परिवार नियोजन के विरोध मे आवाज बुलन्द की। जनता को समझा-बुझाकर इस मीठे विष के प्रभाव से रोकने का पूरा प्रयत्न किया गया। जब जनता को यह ज्ञान हुआ कि इस मीठे विष के प्रभाव में केवल हिन्दू ही फस कर घट रहे हैं और मुसलमान, ईसाई इससे अछूते रहकर बढ़ रहे हैं तब जनता सावधान हो गई। परिणामतः परिवार नियोजन शिविर असफल हो गया।

टंकारा यात्रा ट्रेन

नई दिल्ली १४ फरवरी सोमवार की रात्रि के ११ बजे दिल्ली जंकशन स्टेशन से टकारा यात्रा ट्रेन ने महर्षि की जन्म भूमि टकारा को प्रस्थान किया। मार्ग में गुड़गांवा और अजमेर आदि स्टेशनों पर स्थानीय आर्य संस्थाओ एवं आर्य नर-नारियों ने भारी स्वागत सत्कार किया।

आर्यसमाज लातूर

का वार्षिक उत्सव ता० ८-९-१० मार्च को मनाया जा रहा है। अनेक आर्य नेता और विद्वान् पधारेंगे।

आर्यसमाज खन्ना

का वार्षिक उत्सव ता० ४-५-६ मार्च को होगा इससे पूर्व ता० २४-२५-२६ फरवरी को श्री नन्दलाल जी वैदिक मिशनरी के मैजिक लालटेन द्वारा भाषण और २७ फरवरी से श्री स्वामी आनन्द गिरी जी की कथा होगी।

आर्यसमाज जौनपुर

के निर्वाचन मे सर्वश्री प० सूर्यबली जी प्रधान, रामावतार जी उपप्रधान, तारानाथ जी मन्त्री, चुन्नीलाल जी किशोरीलाल जी उपमन्त्री, रामनारायण जी कोषाध्यक्ष, सीताराम जी बी० ए० पुस्तकाध्यक्ष एव मगरूराम जी निरीक्षक चुने गए।

आर्यसमाज अमरोहा

के निर्वाचन मे सर्वश्री वीरेन्द्रकुमार जी प्रधान, लाला बनवारीलाल जी उपप्रधान प्रेम बिहारी जी आर्य मन्त्री, राजेन्द्र प्रसाद जी उपमन्त्री, शान्तिप्रसाद जी कोषाध्यक्ष रामानन्द जी वर्मा पुस्तकाध्यक्ष तथा छोटेलाल जी निरीक्षक चुने गए।

दक्षिण दिल्ली आर्य प्रचार मंडल

के चुनाव में सर्वश्री प्राणनाथ जी चड्ढ एम० ए०, एल० एल० बी० प्रधान, जगदेव जी मन्त्री एवं चर्णलाल जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज बगहा

के चुनाव मे सर्वश्री मिश्रीलाल जी आर्य प्रधान, जयनन्दनसिंह जी तथा रामकिशन जी उपप्रधान, रामधनीसिंहजी उपमन्त्री, ज्वालाप्रसाद जी कोषाध्यक्ष, ललताप्रसाद सिंह जी निरीक्षक, शीतलाप्रसाद सिंह जी इन्जीनियर तथा रामदुलारसिंह जी प्रचार मंत्री और नरेन्द्रवीर सिंह जी ग्राम नायक आर्यवीर दल चुने गए।

आर्यसमाज भरतपुर ने

विख्यात् आर्य विद्वान् श्री पं० गगाप्रसाद जी चीफ जज टिहरी एवं महान् महर्षि भक्त साधु श्री टी० एल० वास्वानी जी के निधन पर शोक प्रकट किया है।

आर्यसमाज नया बाजार

लश्कर के निर्वाचन में सर्वश्री डा० महावीरसिंह जी प्रधान, बाबूलाल जी गुप्त तथा इन्द्रसेन जी गुप्त उपप्रधान डा० फूलसिंह जी मन्त्री वसन्त सिंह जी तथा सुरेन्द्र जी विद्यावाचस्पति उपमन्त्री हरवंशलाल जी कोषाध्यक्ष, जगदीशचन्द्र जी उपकोषाध्यक्ष रामावतार शर्मा जी पुस्तकाध्यक्ष एव लक्ष्मणप्रसाद जी अग्रवाल निरीक्षक चुने गए।

अ० भा० आर्य सभा पीलीभीत का

—द्वितीय वार्षिकोत्सव ४-५-६ मार्च को सिपरा बेरीपुर मे होगा। अनेक विद्वान् नेता भाग लेंगे। ५ मार्च को चुनाव होगा।

—वैदिक रीति से होलिकोत्सव मनाया जावेगा।

शोकसमाचार

आर्यसमाज छपरा (बिहार) के प्रधान श्री रामकृष्णराम जी का ६६ वर्ष की आयु मे निधन हो गया। प्रधानजी की मृत्यु से आर्यसमाज छपरा और उसके अन्तर्गत कई आर्य शिक्षा सस्थाओं को भारी क्षति हुई है। उनके शोक मे सभी शिक्षा सस्थाएँ बद कर दी गई और आर्यसमाज छपरा की शोक सभा में दिवगत आत्मा को शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

आर्यसमाज कोसीकलां

—के निर्वाचन में सर्वश्री चिरमोलीराम जी आर्य प्रधान, चन्दीलाल जी आर्य उपप्रधान, चन्द्रभान जी आर्य मन्त्री, ओम्प्रकाश जी आर्य तथा कन्हैयालालजी आर्य उपमन्त्री, सोनपाल जी आर्य कोषाध्यक्ष कुन्दनलालजी आर्य पुस्तकाध्यक्ष तथा धरनीधर जी शर्मा निरीक्षक चुने गए।

—आर्य कन्या विद्यालय एव आर्य वैदिक पाठशाला के व्यवस्थापक श्री सुदर्शनकुमार जी आर्य तथा श्री रामजीलाल आर्य निर्वाचित हुए।

—महर्षि दयानन्द बोधोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

आर्यसमाज जलाना

—उपनयन संस्कार, कु० रमेश, कु० सुरेश का प्रातः ८ बजे और

—मुंडन सस्कार, जालना के प्रसिद्ध डा० नरेन्द्रप्रसाद जी आर्य की सुपुत्री का विवाह संस्कार प्रसिद्ध आर्य नेता श्री प० उदयभानु जी एडवोकेट के सुपुत्र विद्याप्रकाश का विवाह संस्कार नासिक निवासी श्री सुआलाल की सुपुत्री के साथ श्री पं० गोपालदेव जी शास्त्री ने कराया।

आर्य वीरदल देवबंद

के निर्वाचन में सर्वश्री सोमदत्त जी धीमान प्रधान, रामपालसिंह जी आर्य मन्त्री-शाखा संचालक तथा बगाली बाबू शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज चौक लखनऊ

की ओर से महर्षि बोधोत्सव ससमारोह मनाया गया इस अवसर पर छूतछात के भेद-भाव को दूर कर सभी वर्गों के व्यक्तियों ने एक पक्ति में बैठकर भोजन किया।

और ७ मार्च को पवित्र और आदर्श होली मिलन होगा।

आर्यसमाज तिलकनगर

नई दिल्ली के निर्वाचन मे सर्वश्री धनपतराय जी एम० ए० प्रधान, फकीरचन्द चोपड़ा जी उपप्रधान, कविराज काशीराम जी वैद्य मन्त्री, भिलावाराम जी उपमन्त्री, मास्टर कर्मचन्द जी कोषाध्यक्ष मास्टर सुहिन्दाराम जी पुस्तकाध्यक्ष, हरपालसिंह जी स्टोर कीपर तथा हरनामदास जी आडीटर चुने गए।

आर्यसमाज (२२ सैक्टर) चण्डीगढ़

में ऋषि बोधोत्सव सप्ताह के उपलक्ष्य में बालीबाल टूर्नामेंट किया गया। उद्घाटन आर्यसमाज के प्रधान चौ० रूपचन्द जी एडवोकेट ने किया। १४ टीमों ने भाग लिया। विजयी खिलाड़ियों को, बोधोत्सव के दिन केप्टन डा० तुलसीदास जी रि० डायरेक्टर मैडीकल एज्यूकेशन पजाब, पारितोषिक वितरण करेंगे।

दिनांक १३ फरवरी रविवार को एक मुसलिम महिला की शुद्धि की गई और वीणाकुमारी नाम रखा गया। मध्यान्ह समय में महिला का विवाह संस्कार हुआ।

गुरुकुल महाविद्यलय ज्वालापुर

का ५८ वां वार्षिकोत्सव वैशाखी के अवसर पर ता० ८ से ११ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया जावेगा। अनेक महत्वपूर्ण सम्मेलन और अनुभवी शिक्षा शास्त्री, नेता और विद्वानों के भाषण होंगे।

आर्यसमाज गुना

का वार्षिकोत्सव २५-२६-२७-२८ फरवरी को मनाया जावेगा।

(पृष्ठ ८ का शेष)

समीक्ष्य सः धृत. सम्यक् सर्वा-रञ्जयति प्रजाः। असमीक्ष्य प्रणीतस्तु विनाशयति सर्वतः। दुष्येयुः सर्व-वर्णाश्च भिद्येरन्सर्वसेतव। सर्व लोक प्रकोपश्च भवेद्दण्डस्य विभ्रमात्।

अर्थात् जो दण्ड अच्छे प्रकार विचार से किया जाय तो वह सब प्रजाओं को आनन्दित कर देता है। और विना विचारे चलाने पर सब ओर से राजा का विनाश कर देता है। दण्ड के विभ्रम से सब वर्ण, सब मर्यादायें छिन्न भिन्न हो जाय। दण्ड के यथावत् न होने से सब लोकों का प्रकोप हो जाय।

दण्ड देने का अधिकार किसको है यह भी स्वामी जी ने मनुस्मृति के आधार पर बताया है। वे कहते हैं: —

तस्याहु. सप्रणेतार राजान सत्यवादिनम्। समीक्ष्य कारिण प्राज्ञ धर्मकामार्थ को विदम्।

अर्थात् जो उस दण्ड को चलाने वाला, सत्यवादी, विचार कर करने वाला, बुद्धिमान् धर्म, अर्थ, काम की सिद्धि करने में पडित राजा है उसी को उस दण्ड का चलाने वाला विद्वान् लोग कहते हैं। आगे वे कहते हैं:—

तं राजा प्रणयन्सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते। कामात्मा विषमः क्षुद्रो दण्डेनैव निहन्यते॥

जो राजा दण्ड को ठीक तरह चलाता है वह धर्म अर्थ, और काम की सिद्धि को बढ़ाता है और जो विषय में लम्पट, टेढ़ा, ईर्ष्या करने हारा, क्षुद्र, नीच बुद्धि न्यायाधीश राजा होता है, वह दण्ड से ही मारा जाता है।

दण्डो हि सुमहत्तेजो दुर्धरश्चाकृतात्मभिः। धर्माद्विचलितं हन्ति नृपमेव सबान्धवम्।

जब दण्ड अत्यन्त तेजोमय है उसको अविद्वान् अधर्मात्मा धारण नहीं कर सकता तब वह दण्ड धर्म से रहित राजा का अपने बन्धु बान्धवों के साथ नाश कर देता है इसलिए यह दण्ड निम्नलिखित व्यक्तियों से धारण करने योग्य नहीं है।

सोऽसहायेन मूढेन लुब्धेनाकृत बुद्धिना। न शक्यो न्यायतो नेतुं सक्तेन विषयेषु च।

आप्त पुरुषों के असहाय, विद्या और सुशिक्षा से रहित, विषयों मे आसक्त, मूढ़ है वह दण्ड को चलाने में कभी समर्थ नहीं हो सकता। दण्ड को तो वही व्यक्ति चला सकता है जो :—

शुचिना सत्यसंधेन यथा शास्त्रानुसारिण। प्रयेतुं शक्यते दण्ड: सुसहायेन धीमता॥

अर्थात् जो पवित्र आत्मा, सत्याचार और सत्पुरुषों का संगी यथावत् नीति शास्त्र के अनुसार चलने वाला, श्रेष्ठ पुरुषों की सहायता से युक्त बुद्धिमान् हैं वही न्यायरूपी दण्ड को चलाने में समर्थ होता है।

इस प्रकार षष्ठ समुल्लास में स्वामी दयानन्द के दण्ड विषयक निम्नलिखित सिद्धान्त समझे जा सकते हैं :

(१) दण्ड अपराध के अनुपात में (Prstoastienate) होना चाहिए। किसी अपराध के लिए कोई निश्चित दण्ड नहीं होना चाहिए। यह तो न्यायाधीश का काम है कि वह अपराधी की परिस्थिति और मनोवृत्ति को देखकर दण्ड दे।

(२) दण्ड अपराध के अनुरूप होना चाहिए जिससे अपराधी और अन्य लोग यह समझ लें कि इस अपराध के लिए ऐसा दण्ड क्यों दिया गया।

(३) दण्ड ऐसा होना चाहिए कि दूसरे भी वैसा अपराध करने से रुकें। वह उनके लिए उदाहरण स्वरूप हो।

(४) दण्ड अपराधी का सुधार करने वाला हो। उसकी नीच वृत्तियों को दबाए और उच्चवृत्तियों को उभारें।

(५) दण्ड ऐसा होना चाहिए जिससे अपराधी ने जो हानि पहुंचाई है उसकी क्षति पूर्ति करे।

६) दण्ड ऐसा होना चाहिए जिसे अच्छी प्रकार सोच विचार कर दिया गया हो।

यह है स्वामी जी ने राज्य के विषय में षष्ठ समुल्लास में जो दण्ड सबंधी विचार व्यक्त किए हैं। यदि आज सरकारी अधिकारी और शासन इन विचारों का लाभ उठायें तो देश में उत्तम राज्य व्यवस्था हो सकती है।

+

(पृष्ठ ९ का शेष)

पत्नी ने स्त्री आर्यसमाज की स्थापना की थी। अचानक छोटे भाई गोपीलाल जी का देहान्त हो जाने से स्वामीजी को वैराग्य हो गया और आपने दुकान का कारोबार बद कर दिया और सम्पूर्ण समय आर्यसमाज के प्रचार में लगाते रहे।

वैदिक शिक्षा के हेतु आपने अपने पुत्र पं० वीरसेन जी वेदश्रमी को गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश कराया प० वीरसेन जी आज आर्य जगत् के प्रसिद्ध यज्ञ विज्ञानाचार्य हैं और वेद सदन इन्दौर के सस्थापक हैं। प० वीरसेन जी की आर्यसमाज मे सस्वर वेदपाठ करने वालों मे बड़ी प्रतिष्ठा है और यज्ञ-विज्ञान की खोज लगे हुए हैं।

स्वामी चैतन्यदेव जी महाराज मालवे में सर्वप्रथम वानप्रस्थ एव संन्यास ग्रहण करने वाले आर्य थे। बाल्यावस्था का नाम गोवर्धनलाल जी था। जब वानप्रस्थाश्रम ग्रहण किया तो आपका नाम स्वामी सत्यानन्द धर्मसेवक हुआ। लगभग ६० वर्ष की अवस्था मे सन् १९३८ में आर्यसमाज इन्दौर की स्वर्ण जयन्ति के अवसर पर आपने स्वामी चिदानन्द सरस्वती से सन्यास ग्रहण किया तब से आप स्वामी चैतन्यदेव जी महाराज के नाम से विख्यात हुये।

देवास में जब आर्यसमाज की स्थापना हुई तब आपके प्रभाव मे बहुत से सज्जन वैदिक धर्म में दीक्षित हुये उनमें सरदार मूलचन्द राव जी कदम, सरदार दिवाकर रावजी कदम, सरदार शकरराव कोठारी फायनस मिनिस्टर देवास, बाबू रामगोपाल आर्य, सेठ श्रीराम जी तथा प० मुरलीधर जी आदि उल्लेखनीय हैं।

दिनांक २०-११-४६ई० की रात्रि को १२ बजे ९६ वर्ष की आयु में स्वामी जी का स्वर्गवास वेदसदन महारानी रोड इन्दौर में अपने सुपुत्र पं० वीरसेन जी वेदश्रमी के यहां पर हुआ।

दिनांक २१-११-४६ को प्रातः काल इन्दौर, देवास, महू आदि के आर्यसमाजी एवं वैदिक धर्मावलम्बियों की विशाल उपस्थिति मे अन्त्येष्टि सस्कार सम्पन्न हुआ। स्वामी जी का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था जो भी इनसे मिलता था उस पर आर्य समाज का प्रभाव आवश्यम्भावी था। स्वामीजी का मध्यप्रदेश के कई स्थानों पर प्रभाव पडा जिसके परिणाम स्वरूप ही वहा आर्यसमाजो की स्थापना हुई। लेखक स्वय स्वामी जी के ही आशीर्वाद से वैदिक धर्म की शरण में आया है स्वामी जी के तपस्वी जीवन ने आर्यों के लिये एक ऐसा आदर्श स्थापित किया है कि जिसका अनुकरण मानव-जीवन की धारा को बदल देता है।

स्वामी जी के कार्य आर्यसमाज में सदैव आदर के साथ स्मरण किये जावेंगे।

सूचना

—आर्य मेला प्रचार समिति (शिवशकरी) की मासिक बैठक ३ मार्च को आर्यसमाज मदिर दीक्षित पुर में होगी। आर्यवीरदल के प्रधान और मत्री समय पर पहुंचे।

—जिला आर्यवीर दल मीरजापुर के तत्वावधान में ३०-३१ मार्च १ अप्रैल को शिवशकरी मेले में प्रचार का आयोजन किया है। आर्यवीर गणवेश में पधारें।

आर्यसमाज मैनपुरी

के निर्वाचन में सर्व श्री शम्भूदयाल जी प्रधान, डा० नारायणदास जी उपप्रधान, हरिश्चन्द्र जी एडवोकेट मत्री गिरिजाशकर जी उपमत्री, शिवशंकर जी पुस्तकाध्यक्ष, रामप्रसाद जी कोषाध्यक्ष, तथा मूलचन्द जी प्रबन्धक प्रेम पाठशाला, यमुनाप्रसाद जी भू-सम्पत्ति, अधिष्ठाता चुने गए।

महर्षि प्रदत्त वैदिक मार्ग ही कल्याणकारी

इस मार्ग से ही शान्ति सम्भव है

आर्य जनता से कर्तव्य-पालन की अपील

नई दिल्ली, १८ फरवरी। आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में आज रामलीला मैदान में महर्षि दयानन्द के बोध-दिवस के उपलक्ष्य में एक विशाल ऋषि मेले का समारोह पूर्वक आयोजन किया गया। प्रातः ८ बजे हवन-यज्ञ से कार्यवाही आरम्भ हुई और साय ५ बजे तक विभिन्न कार्यक्रम चलते रहे। ९ बजे ओ३म् ध्वजारोहण हुआ और फिर आर्यसमाजों, आर्य स्त्री समाजों, आर्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के खेल तथा सन्ध्या नियम दौड़ें हुई और उत्साह का वातावरण बना रहा। आर्य समाजों के सदस्यों की रस्साकशी का दृश्य विशेष आकर्षण रखता था।

भोजन तथा विश्राम के पश्चात् १॥ बजे से आर्य सस्थाओं के बालक-बालिकाओं का सगीत आदि का मनोरजक कार्यक्रम आरम्भ हुआ जिसे सहस्रों आर्य नर-नारियों ने बड़े प्रेम से सुना और पारितोषिक के रूप में रुपए देकर बच्चों का उत्साह बढ़ाया। आर्य कुमार पाठशाला मवाना (मेरठ) और आर्य वैदिक पाठशाला, आर्यनगर (नई दिल्ली) के छोटे-छोटे बच्चों का सहगान तथा ऋषिजीवन पर प्रश्नोत्तर प्रशंसा का केन्द्र बने रहे। भारत के भावी निर्माताओं, आर्य जाति के इन लालों से उत्सव की शोभा बहुत बढी।

३ बजे से ऋषि बोधोत्सव की कार्यवाही आरम्भ हुई इसकी अध्यक्षता ऋषि मिशन के दीवाने, अफ्रीका और लन्दन मे वैदिक धर्म के सफल प्रचारक, श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ने की। वे दो वर्ष की विदेश यात्रा से कुछ ही दिन पूर्व लौटे थे और उन्होंने अपने भाषण मे वहा की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि की कृपा तथा उनके भक्तो की लग्न के कारण विदेशों में भी वैदिक नाद बज रहा है। पर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का घोषनाद करने वालो को अभी बहुत कुछ करना शेष है। महर्षि दयानन्द के बताए सत्य के मार्ग पर चलने से ही संसार में शान्ति की स्थापना होगी। अत. हमे उनके सर्वतो मुखी क्रान्ति के नाद को पुन. सुनना और विश्व को सुनाना होगा। भारत में आज भी कुरीतियां हैं। आज भी मानसिक दासता है, आज भी भाषावाद व प्रान्तवाद के झगड़े हैं, आर्य समाज का यह पवित्र कर्त्तव्य है कि डटकर इनका सामना करे और भारत को एक आदर्श राष्ट्र बनाए।

'वीर अर्जुन' व 'प्रताप' के सचालक श्री के० नरेन्द्र ने महर्षि के चरणों में श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि आज के दिन ऋषि के बोध से हमें भी बोध प्राप्त करना चाहिए और ऋषि-ऋण चुकाने का प्रण लेना चाहिए। उन्होने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मातृभूमि भारत पर जो नाना प्रकार के सकट आए हुए हैं। इसका केवल एक ही कारण है कि महर्षि के बताए हुए मार्ग पर देश चला नही। उन्होंने आर्य बन्धुओं को आह्वान किया कि वे पहले स्वय उस मार्ग को अच्छी प्रकार समझें और फिर निडरता से उसके प्रचार मे अधिक उत्साह से जुट जाए।

श्री डा० गोवर्धनलाल जी दत्त, श्री कवर लाल जी गुप्त तथा श्री प्रो० रामस्वरूप जी ने भी अपनी श्रद्धाजलि भेंट की। उन्होंने कहा कि महर्षि का सन्देश है कि आर्य सस्कृति की रक्षा की जाए और जीवन को यज्ञमय बनाया जाए। व्यक्ति, समाज, देश और विश्व के जीवन में क्रान्ति मचाई जाए और चारों ओर छाए अन्धकार को दूर किया जाए।

श्री ब्रह्मचारी महेश जी तथा श्री खैरायती रामजी 'पथिक' ने कविताओ द्वारा महर्षि का गुण-गान किया।

सार्वदेशिक सभा के मत्री श्री ला० राम गोपाल जी शालवाले ने महर्षि का बोधोत्सव मनाते हुए आर्यसमाज के इस उत्तरदायित्व को दोहराने का सकल्प लेने की आर्य-मात्र से प्रेरणा की कि भारत-मा के और टुकड़े नहीं होने देंगे। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि पंजाबी सूबे की मांग का डट कर मुकाबला किया जाएगा और पजाब की रक्षा के लिए जो भी बलिदान देने पड़े, दिए जाएंगे।

अन्त में श्री त्यागी जी ने रस्साकशी, सन्ध्या तथा नियम दौड़, भाषण निबन्ध आदि प्रतियोगिताओं में जीतने वाले बन्धुओं में पारितोषिक वितरण किए।

ओम्प्रकाश
मत्री

(पृष्ठ ६ का शेष)

करारी चोट करे और विदेशी धर्म इसलाम के प्रचार को प्रदम्य उत्साह से रोक दे। उस समय में वह अहिंसक मृदुता का व्यवहार कदाचित् न करता। इस उदाहरण से पण्डित दयानन्द की कार्य्य पद्धति जिस के अनुसार वे एक ओर घृणित पौराणिक परम्पराओं और दूसरी ओर विदेशीय धर्म्मों—इसलाम और ईसाईयत के साथ लोहा ले रहे थे, स्पष्ट हो जाती है। उनकी सम्मति में एक (पौराणिक परम्पराओं) में काट-छांट और सुधार की और दूसरों के सर्वनाश की परमावश्यकता थी। सत्यार्थ प्रकाश के वे समुल्लास जिन में इसलाम और ईसाईयत की आलोचना की गई है, वास्तव में उन दोनों (इसलाम तथा ईसाईयत) के मूलोच्छेदन का साहित्य प्रतीत होते हैं अर्थात् उन से भारतीय सन्तानों के हृदयों में से समस्त विदेशीय भ्रान्त भावनाओं का समूलोन्मूलन ही अभीष्ट था।

लाहौर निवासी मिस्टर एच. डी. ग्रिस्वोल्ड महोदय का वह लेख जो उन्होंने जनवरी १८९२ के इण्डियन एवेञ्जलिकल रीव्यू में लिखा जिसे डा० जे० एन० फर्कोहर महोदय ने अपनी 'पुस्तक भारत के आधुनिक धार्मिक आन्दोलन' के पृष्ठ १११-११३ पर और १९६५ में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर द्वारा प्रकाशित वैदिक गुरमति नामी पुस्तक के पृष्ठ २७४-२७६ पर विद्वान् लेखक श्री डा० धर्म्मानन्त सिंह जी ने उद्धत किया।

—:०:—

the other hand the assaults of the foreign religions Islam and Christianity. Under these circumstances we can hardly wonder that he struck back as hard as he could. Luther dealt heavy blows at the Roman Church as Pandit Dayanand did at the Brahmanical Church Suppose now that while Luther was fighting with Rome, an extensive and powerful Mohammaden propaganda, which threatened to devour all the fruits of the reformation, was found all over Europe, what would Luther have done under these circumstances, but smite the apostate Roman Church at home and the Mohammaden propaganda from abroad with impartial zeal and violence and with no great effort to be fair and appreciative. This illustrates exactly Pandit Dayanand's attitude towards the degenerate Brahmanical Church on the one hand, and the foreign faiths–Christianity and Islam on the other. In his opinion the one needed to be purged and pruned, the others, to be extirpated. The sections in the Satyartha Prakash which deal with the criticism of Islam and Christianity are evidently intended to be the literature of such extirpation, i e. to be the means of rooting out all such foreign superstitions from the sons of India".

(Article of Dr. H. D. Griswold of Lahore, in the 'Indian Evangelical Review'for January,1892, quoted by Dr J N Farquhar, in his Modern Religious Movements in ndia PPIII-I13 and recently by Dr Dharmanant Singh Ph. D. in his book 'Vedic Gurmat, on PP .74-276 and published by the Arya Pradeshik Pratinidhi Sabha, Jullunder.

—:०.—

[पृष्ठ ४ का शेष]

प्रश्न को पुनः जीवित कर दिया है।

सन्त फतह सिंह के ताजा प्रेस वक्तव्य से यह बात असंदिग्ध रूप से स्पष्ट होगई है कि यह प्रश्न विशुद्ध भाषा का नहीं है अपितु पंजाब में एक वर्ग विशेष की राजनैतिक सत्ता थोपने की साम्प्रदायिक मांग है। सत ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि उनकी कल्पना के पंजाबी सूबे में पंजाबी को अपनी भाषा स्वीकार न करने वालों के लिए कोई स्थान न होगा इससे भारत सरकार और उन लोगों की आंख खुल जानी चाहिए जिनकी यह मान्यता है कि पंजाबी सूबे की मांग को स्वीकार कर लेने से पंजाब की समस्या का समाधान हो जायगा।

यह कन्वेंशन अपनी इस मान्यता को पुन: संपुष्टि करता है कि संविधान के अनुसार अल्प संख्यकों की भाषा के रूप में गुरमुखी में लिखित पंजाबी भाषा प्रत्येक संरक्षण की अधिकारिणी है परन्तु जो इसे अपनी भाषा स्वीकार नहीं करते उनपर न तो यह भाषा लादी जानी चाहिए और न लादी जा सकती है विशेषतः पंजाब के हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रों में।

इस कन्वेंशन की सम्मति में, पंजाब की वर्तमान व्यवस्था को भंग करने वाले किसी भी प्रयत्न से अनेक उलझनें पैदा हो जायगी और स्व० सरदार बल्लभभाई पटेल, स्व० मौलाना अबदुलकलाम आजाद, स्व० श्री गोविन्द बल्लभ पन्त, स्व० श्री जवाहर लाल जी नेहरू और स्व० श्री लाल बहादुर जी शास्त्री ने संसद के भीतर और बाहर जो आश्वासन दिए थे ऐसा करना उन आश्वासनों के सर्वथा विरुद्ध होगा।

इस कन्वेंशन की सम्मति में समय आगया है कि अब पंजाब की एकता और संगठन की सुरक्षा के लिये बड़े से बड़ा बलिदान दिया जाय। इसलिये यह कन्वेंशन श्री रामगोपाल शालवाले, श्री स्वामी सूर्य देव जी और श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का धन्यवाद करता है कि उन्होंने इस महान् कार्य के लिये अपना बलिदान देने के लिये अपने आपको अर्पण किया है।

यह भी निश्चय हुआ कि १७ महानुभावों की एक्शन कमेटी मे निम्नलिखित महानुभावों के नाम बढ़ाए जायं: —

१—श्री स्वामी अरविन्दानन्द जी, २—श्री स्वामी सत्यानन्द जी, ३ - श्री ज्ञानी रामसिंह जी।

यह कमेटी आन्दोलन को तीव्र करने के लिए समय २ पर पग उठायगी और कार्य क्रम निर्धारित करेगी।

उपर्युक्त तीनों महानुभावों के बलिदान का कार्य क्रम भी यही कमेटी निर्धारित करेगी।

निबन्ध प्रतियोगिता

आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आर्य युवक परिषद् की ओर से स्कूलों के छात्र छात्राओं की निबन्ध प्रतियोगिता कराने का आयोजन किया गया है जिसका विषय है—

आर्य समाज के दस नियमों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिये।

निबन्ध हिन्दी भाषा में, फुलस्केप साईज के दो पृष्ठों मे स्याही से तथा अपना लिखा होना चाहिये जो १ मार्च १९६६ तक परिषद् कार्यालय, १६५४, कूचा दखिनीराय, दरियागंज, दिल्ली-६ के पते पर भेज देवें।

परिषद की ओर से सर्वोत्तम ८ विजेता छात्र-छात्राओं को पारितोषिक दिये जायेंगे।

प्रधान, देवव्रत. धर्मेन्दु

हा! विश्वनाथ जी

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली के सहायक मन्त्री, कर्मठ आर्य नेता श्री ला० विश्वनाथजी सर्राफ का अचानक हृदय की गतिबन्द हो जाने से स्वर्गवास हो गया।

श्री लाला जी दिन रात आर्य समाज के लिए चिन्तन और कठोर परिश्रम करते रहते थे उनका उत्तम स्वास्थ्य था, और बलिष्ठ थे।

आप मध्याह्न ३ बजे सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी शालवालों के साथ श्री ला० बालमुकन्द जी आहूजा सभा-कोषाध्यक्ष की दुकान पर आर्य समाज के कार्यार्थ गए थे, अभी पांच मिनिट भी नहीं हुए कि आप अचानक श्री ला० रामगोपाल जी की गोद में गिर पड़े और तुरन्त ही प्राणपखेरू उड़ गए।

आपकी मृत्यु से दिल्ली की आर्य समाजों में भारी शोक छाया हुआ है। आपकी अर्थी के साथ दिल्ली के हजारों आर्य-नर-नारी शमशान घाट पहुंचे।

आर्य समाज दीवान हाल में एक विराट शोक सभा मान्य श्री गुरुदत्त जी की अध्यक्षता में हुई जिसमें श्री बी० पी० जोशी एडवोकेट, श्री सोमनाथ जी मरवाहा एडवोकेट, श्री जोतीप्रसाद जी गुप्ता तथा अन्य महानुभावों ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से दिवंगत आत्मा के लिए श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत की।

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन माम तक मारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता	१०)
अथर्ववेद संहिता	८)
यजुर्वेद संहिता	४)
सामवेद संहिता	३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	२)५०
सत्यार्थप्रकाश	२)
संस्कारविधि	१)२५
पंच महायज्ञ विधि	)२५
व्यवहार भानु	)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग	५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र	१) सैकड़ा
ओ३म ध्वज २७×४० इञ्च	२)५०
,, ,, ३६×५४ इञ्च	४)५०
,, ,, ४५×६७ इञ्च	६)५०
कर्त्तव्य दर्पण	)४०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश	३)२५
मराठी सत्यार्थप्रकाश	१)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश	३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति	७)
शिक्षण-तरङ्गिणी	५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी	७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी	५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र	)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से)	)५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्	)५०
कठोपनिषद्)५० प्रश्नोपनिषद्	)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्	)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद्	१)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य	१ २५
मृत्यु और परलोक	१)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य	)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला	३)
बृहद् विमान शास्त्र	१०)
वैदिक वन्दन	५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत)	३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी)	३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द)	२)५०
अभ्यास और वैराग्य	१)६५
निज जीवन वृत बनिका (सजिल्द)	)७५
बाल जीवन सोपान	१)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म	६२
उपनिषद् कथामाला	)७५
सन्तति निग्रह	१)२५
नया संसार	)२०
आदर्श गुरु शिष्य	)२५
कुल्लियात आर्य मुसाफिर	६)
पुरुष सूक्त	)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत)	१)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर	.६२
स्वर्ग में हड़ताल	)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा	४)५०
भोज प्रबन्ध	२)२५
वैदिक तत्व मीमांसा	)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा	५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं	)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप	२)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द	)६२
वेद और विज्ञान	)७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन	)३७
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द	)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा	)५०
इराक की यात्रा	२)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र	)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र	)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां	)७५
बाल संस्कृत सुधा	)५०
वैदिक ईश वन्दना	)४०
वैदिक योगामृत	)६२
दयानन्द दिग्दर्शन	)७५
भ्रम निवारण	)३०
वैदिक राष्ट्रीयता	)२५
वेद की इयत्ता	१)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह	)७५
कर्म और भोग	१)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश	२)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श	)७५
वैदिक युग और आदि मानव	४)
वैदिक इतिहास विमर्श	७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम (पूर्वार्द्ध)	१)५०
,, ,, (उत्तरार्द्ध)	१)५०
वैदिक संस्कृति	)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति	)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज	)३७
आर्य समाज की नीति	)२५
सायण और दयानन्द	१)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू	५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश	)७५
वैदिक सूक्ति सुधा	)३०
ऋषि दयानन्द वचनामृत	)२०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र	)५०
संस्कार महत्व	)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व	)६२

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

गीता विमर्श	)७५
गीता की पृष्ठ भूमि	)४०
ऋषि दयानन्द और गीता	)१५
आर्य समाज का नवनिर्माण	)१२
ब्राह्मण समाज के तीन महापातक	)५०
भारत में मूर्ति पूजा	२)
गीता समीक्षा	१)

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	)३१
चरित्र निर्माण	१)१५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण	)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	)२५
दौलत की मार	)२५
अनुशासन का विधान	२५
धर्म और धन	)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार	१)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली	)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि	)५०

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

कांग्रेस का सिरदर्द	)५०
आर्य समाज और साम्प्रदायिकता	)३१
भारत में भयंकर ईसाई षड्यंत्र	)२५
आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना	)२०
आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण	)६

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय	२)
आर्य समाज के महाधन	२)५०
एशिया का वेनिस	)७५
स्वराज्य दर्शन	१)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर	१)५०
भजन भास्कर	१)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण	२)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी	१)२५
सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास	)७५
सार्वदेशिक सभा के निर्णय	)४५
आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव	)६०
आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण	१)
आर्य समाज का परिचय	१)

ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज जालना में माननीय श्री एस० डी० वैद्य ज्युडिशियल मजिस्ट्रेट महोदय की अध्यक्षता में दिनांक १८-२-६६ को ससमारोह मनाया गया। अनेक महानुभावों ने महर्षि के गुणगान करते हुए श्रद्धांजलि प्रकट की।

इस अवसर पर प्रभातफेरी, यज्ञ तथा ११ यज्ञोपवीत संस्कार हुए मध्यान्ह में वाद-विवाद प्रतियोगिता हुई।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ फोन २७४७७१ चैत्र कृष्णा १ सवत् २०२३, ७ मार्च १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६६

जाब का विभाजन राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा

वेद—आज्ञा

मनुष्य का कर्त्तव्य

त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्,
देवस्य हेडोऽअव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो,
विश्वा द्वेषांꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥

यजुर्वेद अ० २१ मन्त्र ३

संस्कृत भावार्थः—

कोऽपि मनुष्यो विदुषामनादर कोऽपि विद्वान् विद्यार्थिनामसत्कारं च न कुर्यात्सर्वे मिलित्वेर्ष्या क्रोधादि दोषांस्त्यक्त्वा सर्वेषां सखायो भवेयु ॥

आर्य भाषा भावार्थः—

कोई भी मनुष्य विद्वानों का अनादर और कोई भी विद्वान् विद्यार्थियों का असत्कार न करे, सब मिल के ईर्ष्या, क्रोध आदि दोषों को छोड़ के सब के मित्र होवें।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

सिक्खों का बहुमत विभाजन विरोधी

अकालियों के आगे घुटने टेक नीति पर सरकार चली तो सारे देश का आर्य-हिन्दू और देशभक्त सिक्ख सरकार से डटकर मोर्चा लेंगे।

हजारों हिन्दू व सिक्ख बलिदान को तैयार
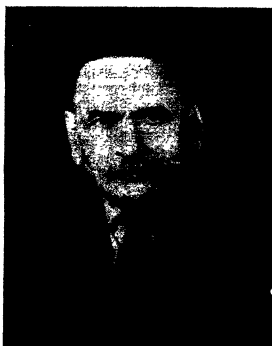
सभा-मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले की जालन्धर मे

सरकार को चेतावनी

रायबहादुर श्री बा० रतनलाल जी बी० ए० एल० एल० बी० मेरठ
(अवकाश प्राप्त सेशन जज एव मालवे के १४ राज्यो के हाईकोर्ट के जज)
आपका अंग्रेजी भाषा पर असाधारण अधिकार है। वैदिक सिद्धान्तो के पूर्ण मर्मज्ञ हैं। आजकल आप सत्यार्थप्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद कर रहे हैं।

सुपात्र किसे कहते हैं

जो ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय, वेदा विद्या के पढ़ने-पढ़ाने हारे सुशी सत्यवादी, परोपकारप्रिय, पुरुषा उदार, विद्याधर्म की निरन्तर उन्न करने हारे, धर्मात्मा, शान्त, नि स्तुति मे हर्ष शोक रहित, निर्भ उत्साही, योगी, ज्ञानी, सृष्टिक्रम, वेदा ईश्वर के गुणकर्मस्वभावानुकूल वर्तम करने हारे, न्याय की रीतियुक्त प पातरहित सत्योपदेश और सत्यशा के पढ़ने-पढ़ाने हारे के परीक्षक, कि की लल्लो पत्तो न करे, प्रश्नों के यथा समाधानकर्त्ता, अपने आत्मा के तु अन्य का भी सुख दुःख हानि ला समझने वाले, अविद्यादि क्लेश दुराग्रहाऽभिमान रहित, अमृत समान अपमान और विष के समा मान को समझने वाले सन्तोषी, कोई प्रीति मे जितना देवे उतने ही प्रसन्न, एक बार आपत्काल मे मा भी, न देने व वर्जने पर भी दुःख बुरी चेष्टा न करना, वहां से झट जाना, उसकी निन्दा न करना, सु पुरुषों के साथ मित्रता, दुःखियों करुणा, पुण्यात्माओं मे आनन्द पापियों से उपेक्षा अर्थात् राग-द्वेषरहि रहना, सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यका निष्कपट, ईर्ष्या द्वेषरहित, गम्भीराश सत्पुरुष, धर्म मे युक्त और सर्व दुष्टाचार से रहित, अपने तन मन ध को परोपकार करने मे लगाने वा पराये सुख के लिये अपने प्राणो भी समर्पितकर्त्ता इत्यादि शुभलक्ष युक्त सुपात्र होते हैं।

—महर्षि दयानन्द सरस्व

शास्त्र-चर्चा

तेज और क्षमा

क्षमा करने के अवसर

क्षमा कालांस्तु वक्ष्यामि शृणु मे विस्तरेण तान्। ये ते नित्यमसंत्याज्य यथा प्राहुर्मनीषिण. ॥२५॥

अब मैं तुम्हें क्षमा के योग्य अवसर बताता हूं, उन्हें विस्तार पूर्वक सुनो, जैसा कि मनीषी पुरुष कहते हैं, उन अवसरों का तुम्हें त्याग नहीं करना चाहिये।

पूर्वोपकारी यस्ते स्यादपराधे गरीयसी। उपकारेण तत् तस्य क्षन्तव्यमपराधिन ॥२६॥

जिसने पहले कभी तुम्हारा उपकार किया हो, उससे यदि कोई भारी अपराध हो जाय, तो भी पहले के उपकार का स्मरण करके उस अपराधी को तुम्हें क्षमा कर देना चाहिये।

अबुद्धिमाश्रितानां तु क्षन्तव्यमपराधिनाम्। न हि सर्वत्र पाण्डित्य सुलभ पुरुषेण वै ॥२७॥

जिन्होने अनजान में अपराध कर डाला हो, उनका वह अपराध क्षमा के ही योग्य है, क्योंकि किसी भी पुरुष के लिए सर्वत्र विद्वत्ता (बुद्धिमानी) ही सुलभ हो, यह सम्भव नहीं है।

अथ चेद् बुद्धिजं कृत्वा ब्रूयुस्ते तदबुद्धिजम्। पापान् स्वल्पेऽपि तान् हन्यादपराधे तथा नृजून् ॥२८॥

परन्तु जो जान-बूझ कर किये हुए अपराध को भी कर लेने बाद अनजान में किया हुआ बताते हों, उन उद्दण्ड पापियों को थोडे-से अपराध के लिए भी अवश्य दण्ड देना चाहिए।

सर्वस्यैकोऽपराधस्ते क्षन्तव्य प्राणिनो भवेत्। द्वितीये सति वध्यस्तु स्वल्पेऽप्यपकृते भवेत् ॥२९॥

सभी प्राणियों का एक अपराध तो तुम्हे क्षमा ही कर देना चाहिये। यदि उससे फिर दुबारा अपराध बन जाये तो थोड़े-से अपराध के लिए भी उसे दण्ड देना आवश्यक है।

अजानता भवेत् कश्चिदपराधः कृतो यदि। क्षन्तव्यमेव तस्याहु सुपरीक्ष्य परीक्षया ॥३०॥

अच्छी तरह जांच-पड़ताल करने पर यदि यह सिद्ध हो जाय कि अमुक अपराध अनजान में ही हो गया है, तो उसे क्षमा के ही योग्य बताया गया है।

मृदुना दारुण हन्ति मृदुना हन्त्यदारुणम्। नासाध्यं मृदुना किंचित् तस्मात् तीव्रतरं मृदु. ॥३१॥

मनुष्य मृदु स्वभाव के द्वारा उग्रस्वभाव तथा शान्त स्वभाव के शत्रु का भी नाश कर देता है, मृदुता से कुछ भी असाध्य नहीं है। अतः मृदुतापूर्ण नीति को तीव्रतर समझें।

देशकालौ तु सम्प्रेक्ष्य बलाबलमथात्मनः। नादेशकाले किंचित् स्याद् देशकालौ प्रतीक्षताम् ॥ तथा लोकभयाच्चैव क्षन्तव्यमपराधिनः ॥३२॥

देश, काल तथा अपने बलाबल का विचार करके ही मृदुता (सामनीति) का प्रयोग करना चाहिए। अयोग्य देश अथवा अनुपयुक्त काल में उसके प्रयोग से कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता, अत. उपयुक्त देश-काल की प्रतीक्षा करनी चाहिए। कहीं लोक के भय से भी अपराधी को क्षमा दान देने की आवश्यकता होती है।

एत एव विधा काला क्षमाया. परिकीर्तिताः। अतोऽन्यथानुवर्तत्सु तेजसः काल उच्यते ॥३३।

इस प्रकार ये क्षमा के अवसर बताये गये हैं। इनके विपरीत बर्ताव करने वालों को राह पर लाने के लिए तेज उत्तेजना पूर्ण बर्ताव का अवसर कहा गया है।

—:o.—

द्रौपदी कहती है—

तदहं तेजसः काल तव मन्ये नराधिप। धार्तराष्ट्रेषु लुब्धेषु सततं चापकारिषु ॥३४॥

नरेश्वर! धृतराष्ट्र के पुत्र लोभी तथा सदा आपका अपकार करने वाले हैं, अतः उनके प्रति आपके तेज के प्रयोग का यह अवसर आया है, ऐसा मेरा मत है।

न हि कश्चित् क्षमा कालो विद्यतेऽद्य कुरून् प्रति। तेजसश्चागते काले तेज उत्स्रष्टुमर्हसि ॥३५॥

कौरवों के प्रति अब क्षमा का कोई अवसर नहीं है। अब तेज प्रकट करने का अवसर प्राप्त है, अत. उन पर आपको अपने तेज का ही प्रयोग करना चाहिये।

मृदुर्भवत्यवज्ञातस्तीक्ष्णादुद्विजते जनः। काले प्राप्ते द्वय चैतद् यो वेद स महीपति. ॥३६॥

कोमलता पूर्ण बर्ताव करने वाले की सब लोग अवहेलना करते हैं और तीक्ष्ण स्वभाव वाले पुरुष से सबको उद्वेग प्राप्त होता है। जो उचित अवसर आने पर इन दोनों का प्रयोग करना जानता है, वही सफल भूपाल है।

—:o.—

अभ्यागत और अतिथि सत्कार

अभ्यागतो ज्ञातपूर्वो ह्यज्ञातोऽतिथिरुच्यते। तयो. पूजा द्विज कुर्यादिति पौराणिकी श्रुति ॥

पहले का परिचित यदि घर आवे तो उसे अभ्यागत कहते हैं और अपरिचित पुरुष अतिथि कहाता है। द्विजों को इन दोनों ही की पूजा करनी चाहिये।

मोघ ध्रुव प्रोर्णयति मोघमस्य तु पच्यते। मोघमन्न सदाश्नाति योऽतिथिं न च पूजयेत् ॥

जो अतिथि का सत्कार नहीं करता, उसका ऊनी वस्त्र ओढ़ना, अपने लिये रसोई बनवाना और भोजन करना सब कुछ निश्चय ही व्यर्थ है।

चाण्डालोऽप्यतिथि. प्राप्तो देशकालेऽन्नकांक्षया। अभ्युद्गम्यो गृहस्थेन पूजनीयश्च सर्वदा ॥

यदि देशकाल के अनुसार अन्न की इच्छा से चाण्डाल भी अतिथि के रूप में आ जावे तो गृहस्थ पुरुष को सदा उसका सत्कार करना चाहिये।

साङ्गोपाङ्गांस्तु यो वेदान् पठतीह दिने दिने। न चातिथि पूजयति वृथा भवति स द्विज. ॥

जो प्रतिदिन साङ्गोपाङ्ग वेदों का स्वाध्याय करता है, किन्तु अतिथि की पूजा नहीं करता, उस द्विज का जीवन व्यर्थ है।

देश काल च पात्र च स्वशक्ति च निरीक्ष्य च। अल्पं समं महद् वापि कुर्यादातिथ्यमाप्तवान् ॥

इसलिये श्रद्धालु होकर देश,काल, पात्र और अपनी शक्ति का विचार करके अल्प, मध्यम अथवा महान् रूप में अतिथि सत्कार अवश्य करना चाहिये।

जुआ, शराब, शिकार निषेध

स्त्रियोऽक्षा मृगया पानमेतत् कामसमुत्थितम्। दुःख चतुष्टयं प्रोक्तं यैर्नरो भ्रश्यते श्रिय. ॥

म० वनपर्व अ० १३।७)

स्त्रियों में आसक्ति, जुआ खेलना, शिकार खेलना और मद्य पान यह चार प्रकार के भोग कामजनित दुःख हैं जिनके कारण मनुष्य अपने धन और ऐश्वर्य से भ्रष्ट हो जाता है।

शराब पीने पर फांसी

श्रीकृष्ण, बलराम, उग्रसेन और बभ्रु का आदेश

अद्य प्रभृति सर्वेषु वृष्ण्यन्धक कुलेष्विह। सुरासवो न कर्त्तव्य. सर्वैर्नगरवासिभिः ॥

आज से समस्त वृष्णिवंशी और अन्धकवंशी क्षत्रियों के यहां कोई भी नगर निवासी मदिरा न तैयार करें।

– :o: -

वार्त्तं वदत मदृया

सम्पादकीय

सावरकर की वसीयत

स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर का ८३ वर्ष की आयु में २६ फर्वरी को बम्बई में देहान्त क्या हुआ कि जैसे राष्ट्र के लिए तिल-तिल करके जलने वाला अखण्ड दीपक बुझ गया। जहां तक देश की स्वतन्त्रता के लिए कुर्बानी का प्रश्न है, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर से बढ़कर और व्यक्तित्व दृष्टिगोचर नहीं होता। अगुलि कटा कर शहीद होने की आकांक्षा रखने वाली भारत के नेताओं की वर्तमान पीढ़ी कदाचित् इस महापुरुष का सही मूल्यांकन कर ही नहीं कर सकती।

सन् १९५७ में, १८५७ की राज्य-क्रान्ति की शताब्दी मनाये जाने के उपलक्ष्य में वीर सावरकर अन्तिम बार दिल्ली आए थे। उस समय अपने प्रति सम्मान प्रकट किये जाने पर उन्होंने एक स्वागत-समारोह में स्वागत-कर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा था:—"आजतक जिस किसी व्यक्ति ने मेरा साथ दिया है उसे या तो कालापानी मिला है, या देश-निर्वासन मिला है, या फांसी मिली है। इससे अधिक मैं किसी को कुछ दिला भी नहीं सकता। आप लोग मेरा स्वागत करके मुझसे क्या आशा करते हैं, मैं नहीं जानता। मुझे तो इसी बात की प्रसन्नता है कि मेरे जीते जी मेरा जीवन-लक्ष्य पूरा हो गया। अंग्रेज यहां से चले गये और भारत स्वतन्त्र हो गया। अब इस देश की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण रखना और इसे समृद्धि के शिखर पर पहुंचाना आप लोगों का काम है। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं इतना ही कह सकता हूं कि मुझे अपने भाग्य पर कोई पश्चात्ताप नहीं है।"

विदेशी शासन में जिसके कष्टों की सीमा नहीं थी और स्वदेशी शासन ने भी जिसके साथ कभी न्याय नहीं किया, उसके व्यक्तित्व की यह कैसी तेजस्विनी ज्वाला है? जब लोग देश-सेवा के प्रमाण पत्र पेश करके बड़े से बड़े राजनैतिक पदों के लिए अपनी अर्हता सिद्ध करने की होड़ लगाए हुए हों और स्वातन्त्र्य-संघर्ष के दिनों की छोटी से छोटी कुर्बानी का भी चैक भुनाने वालों की भीड़ की आपाधापी मची हो, तब जिस व्यक्ति को इन लोगों के भाग्य से ईर्ष्या नहीं, उसकी तेजस्विता और राष्ट्रनिष्ठा को क्या कहा जाए? ऐसा वही कह सकता है जिसने अपने व्यक्तित्व को राष्ट्र की आत्मा में समाहित कर दिया हो। सावरकर भी जैसे राष्ट्र की वेदी पर अपने निजी व्यक्तित्व को सर्वात्मना निश्शेष कर चुके थे।

ऋषि दयानन्द के पट्टशिष्य थे श्यामजीकृष्ण वर्मा और श्यामजीकृष्ण वर्मा के पट्ट शिष्य थे स्वातन्त्र्य वीर सावरकर। ऋषि दयानन्द की ज्योति से ज्योति ग्रहण करके श्यामजी कृष्ण वर्मा ने न केवल अपनी आत्मा को ज्योतित किया, प्रत्युत 'क्रान्तिकारियों के गुरु' के रूप में अनेक भारतीय युवकों के हृदयों में क्रान्ति की ऐसी ज्योति जगाई कि ब्रिटिश साम्राज्य का महान् शक्तिशाली दमन चक्र भी उसे बुझा नहीं सका। उन्हीं ज्योतिर्धरों में अपनी अद्भुत आभा से देदीप्यमान है सावरकर का नाम। सावरकर के नाम में ही जैसे तीक्ष्ण छुरे की धार-सी तेजी है। सावरकर का नाम और काम युग-युगान्तर तक राष्ट्रभक्तों को अपने राष्ट्र के लिये सब प्रकार की कुर्बानी करने की प्रेरणा देता रहेगा।

वीर सावरकर की वसीयत भी उन्हीं के अनुरूप है। उसकी अन्तिम इच्छा थी कि उनकी मृत्यु पर किसी तरह की हड़ताल या छुट्टी करके दैनिक काम का हर्ज न किया जाए, उनकी शवयात्रा का भारी भरकम जलूस भी न निकले, वेदमन्त्रों के साथ बिजली की चिता में शरीर जला कर अन्त्येष्टि पूरी कर ली जाए और उसके बाद पिण्ड दान या श्राद्ध जैसी कोई क्रिया न हो। सावरकर की यह वसीयत भी उनके प्रगतिशील विचारों तथा उनकी राष्ट्र निष्ठा की द्योतक है।

सावरकर की इस वसीयत में अपनी ओर से हम इतना और जोड़ना चाहते हैं कि सावरकर ने आजन्म जिस राष्ट्र की और राष्ट्र धर्म की उपासना की है उस राष्ट्र और उस राष्ट्रधर्म के सही स्वरूप को देशवासी समझें, इस वीर पुरुष को साम्प्रदायिक कहने की गलती न करें और राष्ट्र-पुरुष के रूप में ही इस अद्वितीय वीर से प्रेरणा ग्रहण करें।

वंशीधर विद्यालंकार

हैदराबाद के प्राच्य महाविद्यालय के आचार्य श्री वंशीधर विद्यालङ्कार सरकार की एक हिन्दी सम्बन्धी समिति में भाग लेने के लिये दिल्ली पहुंचे और हवाई अड्डे पर उतरते ही उन्हें दिल का दौरा पड़ गया। उन्हें विलिंगडन अस्पताल पहुंचाया गया जहां २२ फर्वरी को उनका देहान्त हो गया। उनके निधन का समाचार सुनते ही हैदराबाद में जिस प्रकार समस्त शिक्षा संस्थाएं और बाजार बन्द हो गए और शोकाकुल जनता अपनी शोक-संवेदना प्रकट करने के लिए उनके घर की ओर उमड़ पड़ी उससे उनकी लोकप्रियता का पता लगता है। डेरागाजी खां का निवासी एक व्यक्ति सुदूर दक्षिण में आकर अपनी सेवाओं के कारण इतनी लोकप्रियता अर्जित कर ले, यह सामान्य बात नहीं है।

सदा प्रसन्न-मुख वंशीधर जी अपने अन्तरतम में विशुद्ध साहित्यिक व्यक्ति थे। विद्या ही उनका व्यसन था। गुरुकुल कांगड़ी से स्नातक बनने के पश्चात् कुछ काल तक उन्होंने दक्षिण भारत में आर्यसमाज का प्रचार भी किया था। परन्तु बाद में शिक्षा जगत् तथा हिन्दी और संस्कृत की सेवा ही उनका जीवन लक्ष्य बन गया। उर्दू के गढ़ उस्मानिया विश्वविद्यालय में उन्होंने विभागाध्यक्ष के रूप में हिन्दी और संस्कृत के प्रति छात्रों की रुचि पैदा की। उसी का परिणाम है कि हैदराबाद तथा दक्षिण भारत के विभिन्न कालेजों में आज हिन्दी या संस्कृत के प्राध्यापक पद पर जितने लोग आसीन हैं वे अधिकतर उनकी शिष्य मण्डली के ही अन्तर्गत हैं।

भावुक हृदय के कवि, सुलेखक, 'अजन्ता' पत्रिका के सफल सम्पादक, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के उज्ज्वल रत्न और केवल विद्यालंकार की उपाधि के बल पर ही शिक्षा क्षेत्र के उच्चतम पदों तक पहुंचने वाले आर्य समाज के इस विनम्र साधक को हमारी श्रद्धांजलि!

'यह भाषायी मांग नहीं है'

सहयोगी 'हिन्दुस्तान' भारत के राष्ट्रीय विचारधारा के अग्रगण्य दैनिक पत्रों में है। पंजाबी सूबे की जिस मांग को 'भाषायी मांग' का आवरण दिया जा रहा है उसके सम्बन्ध में उसने उक्त शीर्षक से एक सम्पादकीय लेख में लिखा है:—

जिस बात को छिपाने के लिए तरह तरह के शाब्दिक व्यायाम किए जाते हैं वही बात घूम फिर कर जबान पर आए बिना नहीं रहती। भाषा के नाम पर पंजाबी सूबे की मांग जोरों पर है और इस समय सरकार इस सम्बन्ध में कुछ न कुछ करने को आतुर है। भाषा के नाम पर अन्य राज्यों की तरह पंजाबी सूबे की मांग का जो औचित्य सिद्ध किया जाता है वह कितना खोखला है यह अकाली दल के अध्यक्ष श्री भूपिन्दर सिंह के वक्तव्य से स्पष्ट हो जाता है।

अन्य भाषायी राज्यों के साथ तुलना करना भी कितना भ्रामक है? क्या देश में बंगाली सूबा, या मराठी सूबा, या तेलगू सूबा, या कन्नड़ सूबा, या तमिल सूबा, या हिन्दी सूबा नाम का कोई राज्य है? यदि नहीं तो 'पंजाबी सूबा' नाम किस लिए? केवल पंजाब नाम में क्या खराबी है?

रही बात पंजाब में पंजाबी भाषा को एकाधिकार सौंप देने की। हम पूछते हैं कि यदि यह विशुद्ध भाषायी मांग है तो इसका आग्रह केवल सिखों की ओर से, सो भी अकालियों की ओर से ही, क्यों किया जाता है? क्या कोई अन्य ऐसा राज्य है जहां की आधी आबादी प्रादेशिक भाषा को उस राज्य में एकाधिकार देने की विरोधी हो? यहीं से इस मांग की साम्प्रदायिकता प्रारम्भ होती है। यदि विशुद्ध भाषायी मांग होती तो अन्य राज्यों की तरह यहां भी राज्य के समस्त निवासियों की ओर से यह मांग की जाती, कोई इसका विरोधी नहीं होता। यह भाषायी मांग सर्वथा नहीं है। अकाली दल के १९ वें वार्षिक अधिवेशन के अध्यक्ष पद से श्री भूपिन्दरसिंह ने साफ कहा है—यह भाषायी मांग नहीं है, बल्कि सिखों के पृथक् अस्तित्व की मांग है। और यह मांग करने वाले किस रूप में सोचते हैं उसका प्रमाण है उनके वक्तव्य का अगला अंश। उनका कहना है 'पाकिस्तान में छूटे गुरुद्वारों के सम्बन्ध में हमें पाकिस्तान सरकार से सीधी बात करने दी जाए, भारत सरकार उसमें कोई दखल न दे।' अपने वक्तव्य में सरदार भूपिन्दर सिंह ने कश्मीर को भी अलग देश के रूप में याद किया है और अपने पड़ोसी देशों के रूप में उन्होंने चीन, अफगानिस्तान और तिब्बत के साथ कश्मीर का भी नाम गिनाया है। उनका कहना यह भी है कि 'पंजाबी सूबे की मांग तक हमारा संघर्ष सीमित नहीं है, हम सरकार से भी तब तक लड़ेंगे जब तक सिखों के ऊपर अन्य किसी की भी प्रभुता समाप्त नहीं हो जाती।'

क्या यह मनोवृत्ति राष्ट्रीयता की द्योतक है? यदि इसका नाम भी राष्ट्रीयता हो तो राष्ट्रद्रोह शब्द का अर्थ कुछ और होना चाहिए। क्या ऐसे वक्तव्यों के बाद पंजाबी सूबे की मांग इस योग्य ठहरती है कि कोई राष्ट्रीय सरकार उस पर विचार भी करे?

हमारा विश्वास है कि देश के समस्त राष्ट्रप्रेमी उक्त विचारों के समर्थक हैं। हम अपनी ओर से इस सम्बन्ध में कोई और टिप्पणी करना आवश्यक नहीं समझते। क्या हमारी राष्ट्रीय सरकार ऐसे राष्ट्रीय समाचार पत्रों के विचारों का भी आदर नहीं करेगी?

—:०:—

सामयिक-चर्चा

मांसाहार के कारण शरीर से गन्ध निकलना

सर विल्फ्रेड केन्ट की चेतावनी के अनुसार "मांस खाने से शरीर से गन्ध निकलती है।"

इन महाशय ने ३०-८-६५ के 'सन्' नामक पत्र के अंक में प्रकाशित अपने एक लेख में कहा है कि यदि दक्षिण वियतनाम में लड़ने वाले आस्ट्रेलियन जवान बहुत थोड़ा मांस मिलने की शिकायत करना छोड़ दें और मांसाहार का सर्वथा परित्याग कर दें तो इससे उनका बड़ा लाभ हो सकता है।

सर विल्फ्रेड लेख के अन्त में "वियतकोंग (उत्तरी वियतनाम) के छापा मार शाकाहारी हैं, इसके फल स्वरूप उनकी सूंघने की शक्ति बड़ी विकसित एवं तीव्र है और वे ३० से ५० गज की दूरी से ही मांसाहारी गन्ध से उसका पता लगा लेते हैं।"

यह है मांसाहार पर शाकाहार की विजय का अद्भुत उदाहरण।

रक्त-संचार का कृष्ण पक्ष

जान बचाने के लिये शरीर में दूसरों का रक्त चढ़ाया जाता है। परोपकार और मानवता की दृष्टि से यह प्रक्रिया प्रशंसनीय समझी जाती है।

दान में अथवा मूल्य पर रक्त लेकर उसका संग्रह किया जाता और इसे रक्त बैंक की संज्ञा दी जाती है। परन्तु इस शुभ कार्य का दूसरा पक्ष भी है जो उपेक्षणीय नहीं है। कुछ व्यक्तियों की यह मान्यता है कि एक व्यक्ति का रक्त दूसरे के शरीर में चढ़ाया जाना निरापद नहीं है। आध्यात्मिक दृष्टि से यह प्रक्रिया अनेक व्यक्तियों को घृणित जान पड़ती है। अवांछनीय चरित्र के व्यक्तियों के रक्त के इंजेक्शन लगाने अथवा रोग के कीटाणुओं से ओत-प्रोत रक्त का संचार करने की कल्पना से ही वे लोग कांप जाते हैं। इस प्रसंग में घटित खेद पूर्ण घटनाओं की सूची बड़ी लम्बी बनाई जाती है। सुजाक और उपदंश जैसी घृणित बीमारियों के रोगियों को रक्त चढ़ाये जाने के शिकार हुए अनेक व्यक्ति अपने भाग्य पर रो रहे हैं।

प्रश्न यह है कि रक्त संचार के बिना लोगों के प्राण किस प्रकार बचाए जायें। कहा जाता है कि रक्त-संचार का मुक्त आश्रय लिये जाने से पूर्व गोंद, कांटेदार एक पौधे की पत्तियों और नमक से बने हुए इंजेक्शन से जानें बचाई जाती थीं। इस इंजेक्शन का प्रयोग क्यों न किया जाय?

अभी हाल में (Dextran) डैक्सट्रन औषधि का आविष्कार हुआ है जो परीक्षित है और बाजार में आ चुकी है। यह औषधि रक्त-संचार का रामबाण विकल्प बताई जाती है। चिकित्सकों का कर्त्तव्य है कि वे दोनों विकल्पों की उपादेयता का परीक्षण करें। इस सम्बन्ध में जनवरी फरवरी १९६० के थियोसोफीकल जनरल (लन्दन) में उद्धृत एक लेख से पर्याप्त सहायता ली जा सकती है। उनका दायित्व है कि वे यह देखें कि रक्त-संग्रह एव रक्त-संचार की मानवीय भावना की प्रबल प्रेरणा एव प्रक्रिया से मानव का हित होने के स्थान में उसका अहित न हो जाय।

कन्वेन्ट शिक्षा का अभिशाप

वर्तमान स्कूलों को हेय और अपने गौरव के विरुद्ध समझने वाले देश के समर्थ एव सम्पन्न अनेक हिन्दू अपने बच्चों को कन्वेन्ट (ईसाई शिक्षालय) में पढ़ाना उपयुक्त समझ कर उन्हें उनमें प्रविष्ट कराते हैं। कुछ व्यक्ति कन्वेन्टों के वातावरण और शिक्षा के स्तर की वरीयता के आकर्षण के कारण अपने बच्चों को उनमें पढ़ाते हैं।

निस्सन्देह वे बच्चे साधारण स्कूलों के बच्चों की तुलना में अधिक सभ्य, अधिक शिष्ट और वेशभूषा आदि की दृष्टि से अधिक सुन्दर देख पड़ते हैं परन्तु उनका सांस्कृतिक विकास नगण्य रहता है। पाश्चात्यता के रंग में रंगे हुए ये बच्चे जातीय आदर्शों, अपने धर्म और अपनी संस्कृति से न केवल अनभिज्ञ ही रहते अपितु उनके विरोधी भी बन जाते हैं। वे भारतीय पर्वों के प्रति वह उत्साह नहीं दिखाते, जो बड़े दिन आदि ईसाई पर्वों के प्रति प्रदर्शित करते हैं। भारत में तलाकों की वृद्धि का एक प्रमुख कारण इन कन्वेन्टों की शिक्षा दीक्षा भी बताया गया है। धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीयता के बलिदान पर उपार्जित बाह्य शिष्टता, सभ्यता और सुघड़ता की तुलनायें उस सेब के साथ की जा सकती है जो बाहर से तो बड़ा सुहावना देख पड़ता हो परन्तु जिसके भीतर कीड़े भरे हुए हों। हो सकता है कि कन्वेन्ट में अपने बच्चों को पढ़ाने वाले अभिभावकों को इस बात की अनुभूति होती हो। गुरुकुल आदि इन कन्वेन्टों का विकल्प हो सकते हैं जहां बच्चे का सांस्कृतिक विकास सम्भव और सुरक्षित रहता है। सबसे आवश्यक यह है कि माता पिता आदि ८ वर्ष की आयु तक बच्चे की सुशिक्षा के परम दायित्व को अनुभव करें और उसे स्वयं सुन्दरता से पूरा करें। इस दायित्व से पराङ्मुख रहने के कारण ही उनकी कठिनाइयां बढ़ती और बच्चे हाथ से निकल कर उनकी चिन्ता में वृद्धि का कारण बन जाते हैं।

— रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह है—आर्यत्व

१—एक आर्य सज्जन ने सूचित किया कि आप मेरे नाम दो प्रति भूल से भेज रहे हैं किन्तु मैंने एक प्रति का ७) चन्दा दिया है। अतः एक ही प्रति भेजा करें। भूल के कारण सभा को हानि न हो।

धन्यवाद!

२—एक आर्य सज्जन को दिसम्बर में 'कल्याण मार्ग का पथिक' की एक प्रति भेजी थी, भूल से उनके नाम लिखना और फिर उनसे एक रुपया लेना रह गया किन्तु दो मास बाद देरी के लिए क्षमा मांगते हुए उन्होंने स्वयं ही १) रुपया भेज दिया। धन्यवाद!

३ किसी का पैसा आया हो पत्र न पहुंच रहा तो कृपया सूचित करते रहें।

४ - कृपया सार्वदेशिक का पैसा भेजने में शीघ्रता करें। आपके धन से ही तो यह सारी सेवा हो सकेगी।

५—आप एक प्रति मंगाते हैं, तो आज से कम से कम पांच प्रतियों के लिए पांच मित्रों को प्रेरणा कीजिये। आपके इस साधारण से काम से हमें बड़ी शक्ति मिलेगी।

—प्रबन्धक

—:०.

स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर

भारतीय क्रान्तिकारियों के युवराज, महर्षि दयानन्द सरस्वती के पट्ट शिष्य, हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्थान के सच्चे पुजारी थे

ला० रामगोपाल जी शालवाले की श्रद्धांजलि

बम्बई में दिवंगत हो गए। आपके जीवन का महत्वपूर्ण भाग काले पानी की कालकोठरियों में, फिर अपने घर में नजरबन्दी और अन्त में भारतीय स्वतन्त्रता के प्रभात में दिल्ली के लाल किले की जेल में व्यतीत हुआ था। तब से आप निरन्तर रोग शय्या पर पड़े हुए भी हिन्दी, हिन्दू, और हिन्दुस्थान की उन्नति की कामना करते हुए ८३ वर्ष की आयु में दिवंगत हो गए।

श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री की श्रद्धांजलि

नई दिल्ली, १७ फरवरी। निर्दलीय संसदसदस्य श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री ने स्वातंत्र्य वीर सावरकर के निधन पर उन्हें श्रद्धांजलि भेंट करते हुए एक वक्तव्य में कहा है कि देश में क्रांतिकारियों के एक चमकते हुए अध्याय की समाप्ति हो गई है।

श्री शास्त्रीजी ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि जीवन भर संघर्षों से जूझने वाले इस देशभक्त को स्वतंत्रता के बाद भी वीरोचित सन्मान नहीं मिल पाया। भारत सरकार श्री चर्चिल की स्मृति में तो राष्ट्रीय झंडे झुका सकती है, पर इस महान् भारत मां के सपूत को यह सम्मान भी नहीं दिया गया।

आर्य युवक परिषद के प्रधान श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु ने परिषद की बैठक में देश के महान क्रांतिकारी एवं देशभक्त वीर विनायक दामोदर सावरकर की मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया गया और उनके संतप्त परिवार से सहानुभूति प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई।

—:०:—

महर्षि दयानन्द सरस्वती से शंका समाधान

योग साधन और कर्मफल

फर्रुखाबाद में ता० १९ मई शनीवार सन् १८८० को महर्षि श्री स्वामी जी महाराज के व्याख्यान मे मिस्टर स्काट साहब मजिष्ट्रेट और ज्वाईन्ट मजिष्ट्रेट मि० डानिस्टल साहब भी उपस्थित थे। इन्होंने श्री स्वामी जी महाराज से योग और कर्मफल विषयक कुछेक महत्व पूर्ण प्रश्न किये। श्री प० गणेशप्रसाद जी शर्मा जो श्री स्वामी जी महाराज के साथ रहे और अनेक भाषण सुने थे। उनके लिखे "फर्रुखाबाद का इतिहास" से आर्य जनता के लाभार्थ उद्धृत कर रहे हैं।

मि० डानिस्टन साहब ने स्वामी जी से पूछा कि हम लोग योग साधन करना चाहें तो उससे होने वाले लाभ पा सकते हैं ?

स्वामी जी का उत्तर आप मद्य मांस का सेवन करते हुए योगाभ्यास नहीं कर सकते। यदि इन वस्तुओं को त्याग कर नियम पालन पूर्वक अभ्यास करें तो सफल हो सकते हैं। यह सुन कर जट साहब दग रह गए।

मेजिस्ट्रेट स्काट साहब तो श्री जी की वक्तृता पर इतने मोहित हुए कि फर्रुखाबाद भी यथावसर स्वामीजी के व्याख्यानों मे पधारते रहे। आप बहुत सज्जन शासक थे। आपके एक पैर मे कुछ लग थी। आपने स्वामी जी से पूछा कि आप कर्मफल होने की बाबत कह चुके हैं सो कैसे ज्ञात हो कि कर्म का फल होता है।

स्वामी जी ने उत्तर में कहा कि आपके पैर में (लगड़ापन) कैसेहै ?

मि० स्काट-ईश्वर की इच्छा से।

स्वामी जी--यही तो कर्म फल है जो ईश्वरीय न्याय से प्राप्त हुआ, इच्छा से नहीं। परमात्मा को सब ही मत वाले न्यायकारी मानते हैं यदि ईश्वर की इच्छा (मर्जी) ही केवल मानी जाय तो यह इच्छा कैसी कि एक को सुडोल बनावे दूसरे को बेडौल। अधा, लूला, व बहिरा आदि ऐसा मानने से उसके न्याय में बट्टा लगता है और कर्मफल मानने से इच्छा आगे नहीं आती अर्थात् न्याय प्रदर्शित होता है।

मि० स्काट-कर्मफल क्या चीज है ?

स्वामी जी सुख दुःख के भोग का नाम कर्मफल है। जिस भोग का हेतु इस जन्म में ज्ञात न हो उसे पूर्व जन्म कृत कर्म का फल जानना चाहिए। आर्य धर्मशास्त्र यही बताता है और यह युक्ति से भी सिद्ध है।

इस प्रकार उत्तर पाकर साहब बहादुर बहुत प्रसन्न हुए।

कायमगंज के प्रसिद्ध रईस चौबे परमानन्द जी तथा वहीं के पं० बलदेव प्रसाद जी दर्शनार्थ पधारे इन सज्जनों ने नीचे लिखे अनुसार शंका समाधान किया।

प० बलदेव प्रसाद जी—क्षत्रिय लोग जो मृगया (शिकार) से जीवों का वध करते हैं, उनको जीवहिंसा का पाप लगता है या नहीं ?

स्वामी जी—हिंसक जीव जो अपने दुष्ट स्वभाव से खेती और पालनीय पशुओं तथा मनुष्योंका नाश करते हैं। उनके मारने से मनुष्यों और पशुओं की रक्षा होती है किसी की हानि नहीं, अतः ऐसी शिकार मे दोष नहीं।

पडित जी—पाप क्या है ?

स्वामी जी - जिससे मनुष्य की हानि होती है वह पाप कर्म है।

पडित जी - इस प्रकार तो बूढ़े आदमियों के मारने पर पाप न होना चाहिए।

स्वामी जी – वृद्धों के मारने में कृतघ्नता रूप महापाप है। वृद्ध पुरुष अपने अनुभव से जनसमुदाय की भलाई कर सकते हैं।

चौबे परमानन्द जी—मद्यपान मे क्या दोष है ? उससे तो किसी का प्राण नाश नहीं होता।

स्वामी जी—मद्यपान सब भांति निन्दित है। मद्यपीजन उन्मत्त होकर औरो की सामान्य हानि नहीं बरन प्राण नास तक कर देता है और आप भी अपराध वश मारा जाता वा ऊंचे नीचे गिर कर मृत्यु को प्राप्त होता है। अथवा रोगार्त्त हो मरता वा दुःख को प्राप्त होता है। अकरणीय करता और विद्या धन आदि उत्तम पदार्थों की प्राप्ति से वञ्चित रहता है, अतः मद्यपान करणीय नहीं है।

चौबे जी – सब मद्यों अर्थात् भंग शराब आदि में समान दोष है वा न्यूनाधिक।

स्वामी जी—जिस में जितना अधिक मद होता उतना ही अधिक उस मे दोष है। जो द्रव्य बुद्धि को बिगाड़ते हैं। मादक कहाते हैं—

बुद्धि लुम्पति यद्द्रव्य मद कारी तदुच्यते" वर्जयेन्मधु मांसंच भौमानि कवकानिच। भूस्तृणं शिग्रुकं चैव श्लेष्मांतक फलानिच।

मनु० अ० ६० श्लो० १४।

इत्यादि प्रमाण देकर भली-भांति समझाया कि मदिरा भग, अफीम, गांजा आदि ये सब ही निषिद्ध हैं। यह भी कहा कि इसमें अधिक पाप ब्राह्मण को लगता है। यह सुन चौबे जी ने प्रसन्नता प्रकट की।

लाला मन्नीलाल जी—सध्या, कै बार करनी चाहिए।

स्वामी जी—प्रातः और साय दो काल में। यही तो सधि बेला कहाती हैं। महाभारत से भी श्री कृष्णचन्द्र का दो काल संध्या करना प्रमाणित है।

लाला मन्नीलाल जी-सन्ध्या कहां करनी चाहिए।

स्वामी जी---एकान्त वन में और जलाशय के किनारे पवित्र होकर इसमे महर्षिमनु की साक्षी है पूर्वां सन्ध्या जप स्तिष्ठेत् सवित्री मार्ग दर्शनात्। पश्चिमान्तु समास्तीनः सम्यगृक्ष विभावनात्।

(अ० २ श्लो० १०१।

अपां समीपे नियतो नैत्यिक विधि मास्थितः। सावित्रीमप्य धीयीत गत्वारण्यसमाहितः॥ (१०४)

जब श्रीकृष्ण जी द्वारका से हस्तिनापुर गए तो दो काल में सध्या की—तथा भागवत में।

सायप्रात रूपसितगुर्बमयकं सुरोत्तमान्। सन्ध्ये उभेच यद्वाक जपन्ब्रह्म समाहितम्॥

लाला मदन मोहनलाल जी — बाजे लोग आपको आठ गप्पें बताने वाला कहते हैं। वे आठ गप्पें क्या हैं ? जिनसे धूर्त लोग आपकी शान में गप्पाष्टक शब्द प्रयोग करते हैं।

स्वामीजी—आठ गप्पें इस प्रकार हैं। मुझे चाहें जो कहा जाय चिन्ता नही। मैं ऐसों के कहने का भोंडा नहीं मानता हूं।

१—मनुष्यकृत ब्रह्म वैवर्त आदि जो पौराणिक ग्रन्थ हैं, यह पहिली गप्प है।

२—देव बुद्धि से पाषाणादि पूजन दूसरी गप्प है।

३—शैव, शाक्त, गाणपत्य, वैष्णव आदि सम्प्रदाय तीसरी गप्प।

४—तन्त्र ग्रन्थों से प्रतिपादित वाममार्ग चौथी गप्प।

५—विजयादि मादक द्रव्यों का सेवन पांचवी गप्प।

६—परस्त्री गमन छठी गप्प।

७—चोरी करना सातवीं गप्प।

८ छल, अभिमान, मिथ्या भाषण, आठवीं गप्प है।

इस प्रकार सत्याष्टक भी हैं। इस मर्म को जब लोग समझेंगे तो सत्याष्टकी भी कहेंगे। ऐसी छोटी बातों पर तुमको ध्यान न देना चाहिये।

आठ सत्याष्टक ये हैं

१--ईश्वर और ऋषि प्रणीत ऋग्वेदादि २१ शास्त्र पहिला सत्य है।

२—ब्रह्मचर्य्याश्रम में गुरु सेवा तथा स्वधर्मानुष्ठान पूर्वक वेदों का पठन-पाठन द्वितीय सत्य।

३—वेदोक्त वर्णाश्रमानुकूल निज धर्म संध्यावन्दन अग्नि होत्र का अनुष्ठान तृतीय सत्य।

४ शास्त्राज्ञानुसार अपनी स्त्री से सम्बन्ध करना और पंच महायज्ञ विधि का अनुष्ठान, ऋतु काल में निज स्त्री से सम्भोग और श्रुति स्मृति की आज्ञानुसार आचार व्यवहार रखना चतुर्थ सत्य है।

५—इसमें शम, दम, तपश्चरण, यमप्रभृति समाधिपर्यन्त उपासना और सत्सग पूर्वक वानप्रस्थाश्रम को ग्रहण करना पाँचवां सत्य है।

६—विचार, विवेक, वैराग्य, पराविद्या का अभ्यास और सन्यास ग्रहण करके सब कर्मों के फलों की इच्छा न करना छठा सत्य है।

७—ज्ञान और विज्ञान से समस्त अनर्थ, मृत्यु, जन्म, हर्ष, शोक, काम क्रोध, लोभ, मोह, सग और द्वेष, के त्यागने का अनुष्ठान सप्तम् सत्य है।

८—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष अभिनिवेश, तम, रज, सत, सब क्लेशों से निवृत्त हो पंच महाभूतों से अतीत होकर मोक्ष स्वरूप आनन्द को प्राप्त होना आठवा सत्य है।

लाला गब्बूलालजी ने पूछा महा-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य राज्य अमेठी के स्वर्गस्थ आर्य नरेशों का संक्षिप्त परिचय

महाराजा लाल माधवसिंह

अमेठी के महाराजा लाल माधव सिंह जी 'क्षितिपाल' का शुभ जन्म १८२५ ई० में हुआ था। सन् १८९१ ई० तक उन्होंने ४७ वर्ष राज्य शासन किया था। सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये थे। एक बार कतिपय मेम और बच्चे पकड़ कर आये तब दया करके उन्हें सुरक्षित प्रयाग के किले मे पहुचवा दिया जिस पर तत्कालीन प्रान्तीय शासक सर हेनरी लारेन्स ने एक लाख रुपये वार्षिक की स्थायी माफी का आदेश पत्र भेजा परन्तु उन्होंने उसे लेकर अंग्रेजों से लड़ना बन्द नहीं किया और १० नवम्बर १८५८ ई० तक बराबर युद्ध किया। महाराजा ने साहित्य सेवा भी बहुत की। कविता में अपना नाम 'क्षितिपाल' लिखते थे। पचीसों काव्य ग्रन्थ लिखे थे जिनमे अधिकतर छप चुके हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जब सं० १९२६ वि० में काशी पधारे थे तब अमेठी राज्य के आनन्द बाग में ठहरे थे और वहीं पर ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ था। महाराजा लाल माधवसिंह जी ने श्री स्वामी जी महाराज के दर्शन किये थे।

—:o:—

महाराजा भगवान् बक्स सिंह

श्रीमान् महाराजा भगवान् बक्स सिंह महोदय के० आई० एच० का शुभ जन्म २९ जनवरी १८६९ ई० को हुआ था। ७१ वर्ष तक शासन काल मे विद्या का प्रशस्त प्रचार हुआ था। देहाती क्षेत्र मे सर्वप्रथम अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की थी तथा सुलतानपुर में लाखों की सम्पत्ति दान करके अमेठी राज महिला चिकित्सालय स्थापित किया था। आपकी सार्वजनिक सेवाओं से प्रसन्न होकर सरकार ने के० आई० एच० की प्रथम श्रेणीस्थ स्वर्ण पदक प्रदान किया था परन्तु आप चाटुकारी नहीं करते थे। पण्डित मोतीलाल नेहरू से तथा महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय से विशेष मित्रता थी। नमक सत्याग्रह के समय रियासत कौरट कर ली गयी थी।

महाराजा साहिब को विद्या तथा व्यायाम से विशेष प्रेम था, बाल्मीकीय रामायण तथा सत्यार्थप्रकाश बहुत प्रिय थे और भगवान् श्री रामचन्द्र एव महर्षि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा थी।

स्वर्गवास ५ जून १९६२ ई० को ९३ (तिरानवे) वर्ष की आयु में हुआ।

—:o.—

राजकुमार रणवीर सिंह 'वीर'

अमेठी नरेश महाराजा भगवान् बक्स सिंह के द्वितीय राजकुमार रणवीरसिंह जी 'वीर' बहुत प्रतिभाशाली थे। बचपन में सत्यार्थप्रकाश पढने से विचारों में क्रान्ति आ गयी।

केवल १० वर्ष की अवस्था से गद्य और १३ वर्ष की अवस्था से पद्य लिखने लगे थे। व्याख्यान भी १२ वर्ष की अवस्था से देने लगे थे। शुभ जन्म २१ जुलाई १८९९ ई० को हुआ था और शरीरान्त २ फरवरी १९२१ ई० को। शरीर से भी बहुत हृष्ट पुष्ट थे परन्तु एक बार ज्वर आया और विश्राम न किया जिससे केवल २१ वर्ष की अवस्था में इस असार ससार से चले गये।

महर्षि दयानन्द के प्रति अपार श्रद्धा थी। वैदिक धर्म प्रचार, शिक्षा प्रसार तथा समाज सुधार को जीवन का लक्ष्य बनाये हुए थे।

(पृष्ठ ५ का शेष)

राज ! मुझे शंका है, कि भीष्मपितामह क्या इसी बहती हुई गगा के पुत्र थे ? और गौरा पार्वती जी क्या पर्वतराज हिमालय की कन्या थी।

स्वामी जी का उत्तर—भीष्मजी की माता का नाम गंगा था और उनके पिता का नाम शान्तनु था। दोनों ऐसे ही नरदेह धारी थे। जैसे अबके लोग हैं। गगा जमना आदि अब भी अनेक स्त्रियों के नाम हैं। नाम से जल वाली गंगा को नहीं जानना, बहती गंगा नरदेह धारिणी नहीं है। इसी प्रकार हिमालय वा हिमाचल नामक मनुष्य की कन्या वा पहाड़ी देश के उत्पन्न होने से हिमालय पुत्री, पार्वती कही गई। अब भी जो लोग पहाड पर बसते हैं। पार्वतीय कहलाते हैं और बहुधा पहाड़ी गौर वर्ण होते हैं। (अत.) गौरी, गौरे रग के कारण गुणवाचक नाम माना जा सकता है। पत्थर से कोई कन्या नहीं उत्पन्न हो सकती, न पत्थर बोलते हैं। पर्वती राजा वा जमींदार तो हैं। ससार में सृष्टिक्रम के विरुद्ध कुछ नहीं होता।

लाला जगन्नाथप्रसाद जी—मनुष्य का कर्त्तव्य क्या है ?

स्वामी जी—ईश्वर की प्राप्ति।

लाला जी—ईश्वर कैसे प्राप्त होता है ?

स्वामी जी—ईश्वरीय आज्ञाओं के पालन करने से।

लाला जी—ईश्वरीय आज्ञाएं क्या हैं ?

स्वामी जी—वेदानुकूल आचरण करे। मनुक्त दश धर्म के लक्षणों पर चले। दश अधर्मों का त्याग करे।

लाला जी—यज्ञोपवीत किन २ वर्णों का होना चाहिए ?

स्वामी जी—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का उपनयन होना चाहिए।

लाला जी—गायत्री तीनों वर्णों की एक ही है वा पृथक् ?

स्वामी जी—वेदों में गायत्री मन्त्र एक ही तीनों वर्णों को एक ही गायत्री दी जाती है।

लाला जी—कुछ लोग जुदी २ गायत्री बताते हैं, यहां तक कि बढ़ई गायत्री बताई जाती है ?

स्वामी जी—यह सब गप्प है। किसी एक की पृथक गायत्री नहीं।

लाला जी—कंठी जो गुसाईं लोग देते हैं, वह क्या बात है ?

स्वामी जी—यह वेद शास्त्र के विरुद्ध गोस्वामी लोगों के घर की बनाई लीला है। इन्होंने अपना एक सम्प्रदाय बनाकर उसके ग्रन्थों की निराली रचना की। अपनी स्मृति भी कपोल कल्पित गढ़ी है। उपनिषद् भी राम तापिनी, गोपाल तापिनी आदि बना रक्खी हैं। और विद्या विहीन बहुत से चेले बना लिए हैं। कंठी, तिलक, छाप का कहीं वेदादि सच्छास्त्रों में विधान नहीं है।

लाला जी यज्ञोपवीत किसका किस समय होना चाहिए ?

स्वामी जी—ब्राह्मण के बालक का गर्भ वा जन्म से आठवें वर्ष, क्षत्रिय का ११ वें और वैश्य का बारहवें वर्ष में हो। और जो ब्राह्म तेज की इच्छा हो तो क्रमशः तीनों ५-६-८ वीं साल में भी कर सकते हैं। जो जिस वर्ण का समय नियत है वह मुख्य उससे दूने काल के उपरान्त व्रात्य सज्ञा हो जाती है। उस में प्रायश्चित पूर्वक कार्य करना होता है। अतः द्विजों को समय का अतिक्रमण न करना चाहिये।

एक और परसाद नामी (गुजराती) ब्राह्मण कुछ लोगों के कहने से स्वामी जी के साथ झगड़ा करने के लिए भेजा गया था, ऐसी जनश्रुति है कि उसने इस प्रकार प्रश्नोत्तर किए।

बाबा जी महाराज ! देवमूर्ति को आप साक्षात् ईश्वर मानते हैं वा नहीं।

स्वामी जी—पाषाणादि कोई मूर्ति ईश्वर नहीं, तुम ईश्वर का स्वरूप नहीं जानते।

ब्राह्मण—मैं जानता हूं, ईश्वर सच्चिदानन्द और भक्त वत्सल है और भक्तों के कारण जन्म लेता है।

स्वामी जी—सच्चिदानन्द और भक्त वत्सल जो तुमने कहा सो ठीक है। परन्तु जन्म नहीं लेता। उसको अजन्मा कहा है, यह शब्द रामायण में भी तुमने सुना होगा, सत्य कहो।

ब्राह्मण—हां, सुना तो है।

इस प्रकार कुछ काल तक नम्रता से वार्तालाप होने पर स्वामी जी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने लाठी फेंक दी और श्री चरणों पर गिर पड़ा। और सदाचारी ब्राह्मण की भांति रहने लगा, (परसाद) ब्राह्मण अपनी अंतिम अवस्था तक नेक चलन रहा था, यह हम देख चुके हैं।

प्रयाग कुम्भ के पुण्य पर्व पर आयोजित

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री डा० सत्यप्रकाश

(अध्यक्ष, रसायन विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय) का

स्वागत भाषण

भारतीय राष्ट्र के प्रेमियो तथा कर्णधारो !

प्रयाग नगरी में कुम्भ के पर्व पर आप सब अभ्यागतों का स्वागत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। प्रयाग की ऐतिहासिकता और कुम्भ पर्व सम्बन्धी भावनाओं से आपको परिचित कराने की आवश्यकता ही क्या है ? वस्तुतः भारतवर्ष की यह नगरी प्रत्येक युग में ही पवित्र और पावन मानी गयी है। यज्ञ स्थली होने के कारण इसका नाम प्रयाग पड़ा। श्रेष्ठतम समस्त कार्यों का नाम ही यज्ञ है, अतः श्रेष्ठतम आयोजनाओं का प्रवर्तन प्रयाग की विशेषता रही है। गंगा और यमुना के दोनों तीरों पर योजनों तक फैली हुई यह भूमि प्रयाग का तीर्थ क्षेत्र मानी जाती है। गंगा पार प्रतिष्ठान पुरी या झूंसी, एवं ३५-३६ मील दूरी पर स्थित कौशाम्बी, सभी प्रयाग क्षेत्र के अन्तर्गत हैं, जिन्होंने इतिहास में यश प्राप्त किया। महर्षि भारद्वाज की विद्याधानी अपनी परम्परा के लिये प्रसिद्ध है। शतपथ ब्राह्मण में प्रोति कौशाम्बेय कौसुरुबिन्दि और उद्दालक का उल्लेख है। कौसुरुबिन्द कौशाम्बी का निवासी था। कौशाम्बी के पड़ोस में ही लगभग दो मील दूरी पर पभोसा नामक स्थली पर महर्षि कणाद का आश्रम था जहाँ उसने अपने वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित परमाणुवाद और कार्य-कारणवाद की नींव डाली, जो आज के युग की आधारशिला बनी हुई है। आज का युग परमाणु-युग कहलाने लगा है, और परमाणु की सर्व प्रथम कल्पना भारत में महर्षि कणाद की और यूनान में ल्यूक्रिटिस और डिमोक्रिटिस की देन है।

प्रयाग की इस नगरी ने युग-प्रवर्त्तक पुरुषों को पोषित किया। वैदिक काल से लेकर वर्तमान शती तक का इतिहास इस नगरी के गौरव का इतिहास है। अशोक, अकबर और अनेक सम्राटों के सम्मानित यह नगरी देश के वर्तमान इतिहास में महामना मालवीय, जवाहरलाल नेहरु, राजर्षि टण्डन और दिवंगत प्रधान मन्त्री लालबहादुर जी की तपोभूमि रही है। नरमदल के राजनीतिज्ञों में चिन्तामणि और तेज बहादुर सप्रू का नाम इस नगरी से सम्बद्ध है। सप्रू के ऐलबर्ट रोड के निवास स्थान पर और मोतीलाल जी के आनन्द भवन में देश की ऐतिहासिक आयोजनायें इन लोगों के जीवन काल में हीं बनीं, और इस नगरी ने राष्ट्र की वर्तमान जागृति में महत्वपूर्ण भाग लिया। अतः ऐसी ऐतिहासिक नगरी में अभ्यागतों का स्वागत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है ?

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित वैदिक यन्त्रालय आरम्भिक दिनों में प्रयाग में ही था जहां से वेदांग प्रकाश और वेदभाष्य के बहुत से फर्मे छपे। इस प्रकार युग-पुरुष महर्षि दयानन्द के जीवन से भी, इस नगरी का सम्बन्ध रहा। प्रयाग ऐसी ऐतिहासिक नगरी में आप राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में भाग लेने आए हैं, और वह भी कुम्भ ऐसे पर्व पर, यह बात कम महत्व की नहीं है। कुम्भ मेले की विशालकायता संसार का कोई और मेला नहीं कर सकता। वर्तमान युग मे कुम्भ मेले के ही अवसर पर देश ने एक नयी क्रान्ति को जन्म दिया था। कुम्भ के पर्व पर ही हरद्वार में युग प्रवर्तक दयानन्द ने "पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा" लहराई और ज्ञान एव व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्ति का नारा लगाया। "पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा" हमें आज भी सन्मार्ग पर चलने का सकेत कर रही है। पाखण्ड न केवल धार्मिक और साम्प्रदायिक क्षेत्रों में ही अनर्थ कर रहे हैं, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में भी वे उतना ही अनिष्ट का कारण बन रहे हैं। पुराने युग में धर्मध्वजियों से जिस प्रकार सतर्क रहना आवश्यक था, वर्तमान युग में दलध्वजियों से भी उतना सतंक रहना वाञ्छनीय है। धर्माधिकारियों के मठ, अखाड़े, झंडे और पण्डे थे, इसी प्रकार देश की वर्तमान जागृति में राजनीतिज्ञों के भी मठ, अखाड़े, झंडे और पण्डे विभिन्न नामों से हमारे सामने आ रहे हैं। इनमें कुछ दल इस देश की भूमि से ही उद्भूत है, किन्तु कुछ दूर देशों से भी आए हुए हैं, रूस से और अमरीका से, इन दलों के आचार्य भी है, प्रचारक भी और धन कुबेर भी इनके पृष्ठ पोषक हैं। राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में कहीं-कही इनकी सद्भावनायें हमारे साथ है, तो कहीं-कहीं उनके षडयंत्र और कूटचक्र भी देखने को मिल जाते हैं। इस प्रकार पुराने देशी-विदेशी मतमतान्तरों से जैसे हमें सतर्क रहना आवश्यक हो गया हैं उसी प्रकार आज इन नये मतमतान्तरों और उनके नये आचार्यों से भी हमें सतर्क रहना है। धर्म की आड़ में विदेशी शासन हमारे देश मे अनिष्ट का कारण बना, और आज राजनीतिक विचारों की आड़ में देश में एक नयी परतन्त्रता प्रवेश पा रही है, जिससे हमें सावधान रहना चाहिये। आप सब लोग जो इस राष्ट्र रक्षा सम्मेलनमें भाग लेंगे, उन समस्याओं पर सम्भवतः कुछ विचार करेंगे जो नये रूप में आज प्रस्तुत हो गयी है

यह राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आर्य-विचारकों की विचार-धारा का सम्मेलन है। आर्य विचारक मानव मात्र के कल्याण की बात सोचता है। आर्य विचारक पृथिवी मात्र को अपनी माता या मातृभूमि मानता है, और मानव मात्र को अपना बन्धु। आर्य समाज की स्थापना सब देशों के कल्याण के लिए है, और महर्षि दयानन्द ने जो विचार धारा हमारे समक्ष प्रस्तुत की, उसके अनुसार गंगा जितनी पवित्र है, वोल्गा या टेम्स भी उतनी ही, हिमालय जितना पवित्र है, आल्पस भी उतना ही, प्रयाग जितना पवित्र है, मक्का भी उतना ही। प्रत्येक राष्ट्र के उन्नायक वीर विजेता एक सी ही स्तुति के पात्र हैं, और मनीषी विचारक भी। हमें सभी राष्ट्रों को सद्भावना से देखना है। आर्यों का यह वैदिक राष्ट्रीय गीत—

"आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा. सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥" (यजु० २२।२२)

मंगल कामनायें प्रत्येक राष्ट्र के लिए करता है। प्रत्येक राष्ट्र में पाण्डित्य एवं आचार-पूर्ण ब्राह्मण हों, शूर क्षत्रिय हों, प्रचुर दूध देने वाली गायें और बलवान घोड़े हों, सब प्रकार से योग्य मातायें और बहिनें हों, सब देशों में, समयानुसार वर्षा हो, और सब राष्ट्र फल-फूल धन-धान्य से सम्पन्न हों। सर्वत्र योग-क्षेम हो।

विश्वबन्धुत्व और मानव-मात्र के कल्याण की भावना राष्ट्रीय भावनाओं का पोषण करती है, उसमें बाधक नहीं है। आततायियों का युद्ध में हनन भी विश्वकल्याण की भावना से ही है। दण्ड और शासन के मूल में भी सद्भावनायें हैं। इसलिए ब्रह्म-शक्ति और क्षात्र-शक्ति दोनों का प्रतिपादन वैदिक संस्कृति की विशेषता है। बल, तेज, वीर्य, योग और मन्यु इन पांचों गुणों का व्यक्ति और समष्टि में महत्वपूर्ण स्थान है। शक्तिशाली राष्ट्र के निवासी ही 'बलमसि बलं मे देहि' से लेकर 'मन्युरसि मन्युं मे देहि' तक के शब्दों में ओजस्वी प्रार्थना कर सकते हैं और इन गुणों की उपलब्धि के अनन्तर ही वे 'सहोऽसि सहो मे देहि' कहने के अधिकारी बनते हैं।

बीसवीं शती में राष्ट्र-रक्षा का प्रश्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न बन गया है। आजकल ऐसा लगता है कि भूखण्ड के समस्त राष्ट्र सोवियट यूनियन और संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका के दो प्रबल दलों में बंट गये हैं। पचास वर्ष पूर्व इन दोनों राष्ट्रों को कोई नहीं पूछता था। पचास वर्ष के पश्चात् इनकी क्या स्थिति होगी, और कौनसी अन्य शक्तियां उत्पन्न होंगी, कोई नहीं कह सकता। आज भारत पिछड़ा हुआ है, रूस और जापान भी ५०-६० वर्ष पूर्व इतने ही पिछड़े थे।

अतः हममें आत्म विश्वास होना आवश्यक है, और हमारा राष्ट्र शक्तिशाली बन सकता है, ऐसा निश्चय हममें होना चाहिये। देश में बड़े होने की क्षमता है, पुराना इतिहास भी हमारे अतीत के उत्कर्ष का साक्षी है। आवश्यकता है तपस्या और नीतिमत्ता की। पुरुषार्थ और आत्म-निर्भरता ही हमारा सम्बल होना चाहिये। भीख मांग कर हम अपने को सबल नहीं बना सकते। अन्य देशों के दान और अनुग्रह हमें किसी समय परावलम्बी बना देंगे। पर अपने देश को सम्पन्न बनाने के लिये देश के व्यक्तियों को अथक परिश्रम करना पड़ेगा तपस्या द्वारा ही हम वसुन्धरा का दोहन कर सकते हैं। उच्च वैदिक सिद्धान्त यदि हमारे समाज में नैतिकता का प्रचार न कर सके, तो इसका कलंक उन सब धार्मिक संस्थाओं को लगेगा, जिनसे आशा की जाती है, कि वे राष्ट्र की और अधिक सेवा न कर सकें, तो कम से कम नैतिकता का स्तर ही ऊंचा बना दें। स्वतन्त्र भारत में यदि नैतिकता का स्तर नीचा होता गया, तो इसके लिये हम दोषी किसको ठहरा सकते हैं ? शासक और प्रजा, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य नैतिकता के स्तर में पतित हो गये, तो फिर राष्ट्र-रक्षा का स्वप्न देखना भी व्यर्थ है।

मुझे विश्वास है कि राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन में आप क्रियात्मक सुझाव अपने कार्य के लिये प्रस्तुत करेंगे।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

प्रयाग कुम्भ के पुण्य पर्व पर आयोजित

वेद सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष
श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय
का स्वागत-भाषण

वैदिक संस्कृति के प्रेमियो,
देवियो और सज्जनो !

दुर्भाग्य का विषय है कि आज की कार्यवाही का आरम्भ दो मर्म वेदनाओं के उल्लेख से होता है। एक तो भारत-विभूति प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री का देश की विजय पताका फैलाते हुए ताशकन्द के राजनैतिक रणक्षेत्र से अकस्मात् ११ जनवरी को लुप्त होजाना, जिसने विश्व के सभी देशों और नर-नारियों को पीड़ित कर रक्खा है।

अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति
वज्रस्य हृदयम्।

दूसरा १२ जनवरी को श्री गंगाप्रसाद, एम० ए०, एम० आर० ए० एस रिटायर्ड चीफ जज, टेहरी का निधन। श्री पंडित जी को आर्यसमाज का महान् वृद्धपुरुष (Grand Old Man) कहना उचित होगा। वह Fountain-Head of Religion आदि कतिपय पुस्तकों के लेखक, तपस्वी, आदर्श संयमी महान् आत्मा थे। उनकी आयु १०० वर्ष से कुछ ही कम थी। गत ६० वर्ष से निरन्तर आर्य समाज की सेवा कर रहे थे। अब दो आंसू बहाने के पश्चात् हम आज की कार्यवाही की अग्रश्री करते हैं।

मैं स्वागताध्यक्ष हूं। इसका अर्थ यह है कि स्वागतकारिणी समिति ने मुझ से अनुरोध किया है कि उनकी ओर से आदरपूर्वक आपका स्वागत करूं। अतः इस अधिकार से मैं आज नम्रता और सम्मान के साथ आपका स्वागत करता हूं। और प्रार्थना करता हूं कि—

विष्टरो विष्टरो विष्टर-प्रति गृह्यताम्।

स्वागताध्यक्ष का दूसरा कर्त्तव्य यह है कि जिस कार्य के लिये आपको निमन्त्रित किया है उसको संक्षेप से आपके समक्ष रख दूं।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु।
(ऋ० १० । १२१ । १०)

हम यजमान हैं। और आप हैं ऋत्विज। हमने किसी कामना को लेकर यह यज्ञ रचा है। यज्ञ की सफलता में आपकी सहायता अपेक्षित है। जिससे यज्ञ का अनुष्ठान यथेष्ट रूप से हो सके।

इस यज्ञ का नाम मैं "लोकम्पृण" यज्ञ रखता हूं। यह नाम कुछ अपरिचित सा प्रतीत होता है। जब यज्ञ की वेदी बनाई जाती है और ईंटें चिनी जाती हैं तो बीच बीच में कहीं कहीं खुलार (छिद्र) छूट जाती है। इन छिद्रों को 'लोक' (अवकाश) या खाली जगह कहते हैं। उनको भरने के लिये जो ईंटे ठूंस दी जाती हैं, उनका नाम है "लोकम्पृण इष्टियां"। वैदिक संस्कृति रूपी प्राचीनतम वेदी में युग युगान्तर के तूफानों तथा बाह्य और आभ्यन्तर विप्लवों के कारण जो छिद्र आ गये हैं और जिनके कारण यह वेदी निर्बल हो गई है उन छिद्रों को भर कर आप इस वेदी को फिर से सुदृढ़ कर देवें यही आप से मांग है।

वैदिक संस्कृति का कुम्भ मेले के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। भारत प्राचीनतम देश है। गंगा प्राचीनतम नदी है। और कुम्भ का मेला भी बहुत पुराना प्रतीत होता है। ऋग्वेद में आया है—

उपह्वरे गिरीणां संगमे च
नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत॥
(ऋग्वेद ८ । ६ । २८)

अर्थात् पहाड़ों की उपत्यकाओं में और नदियों के संगम पर महात्माओं को आत्मदर्शन की प्रेरणा मिलती है। कुम्भ इसी प्रेरणा के लिये रचा गया होगा। कुम्भ प्रयाग में होता है और हरिद्वार में। हरिद्वार में पहाड़ भी हैं और गंगा भी। संगम नहीं है। प्रयाग में पहाड़ तो नहीं है। संगम है। पहाड़ स्थिति का प्रतीक है और नदी गति का। हरिद्वार में हिमालय पर्वत ईश्वर के स्थाणुत्व (अचलता) का स्मरण दिलाता है और गंगा जगत् की चलायमानता का। प्रयाग में गंगा और यमुना के संगम को देखकर हम जगत् की भिन्न-भिन्न प्रगतियों का एकीकरण कर सकते हैं। वैदिक संस्कृति का उद्देश्य भी आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक प्रगतियों का समन्वय है। जब आप गंगा में स्नान करते हैं तो हमारे पूर्वज हमको पुकार-पुकार कर सचेत करते हैं।

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

आत्मा में गंगा बहे क्यों न तू न्हावरे।

गंगा और यमुना के साथ जब आपकी आत्मा में बहने वाली गंगा अर्थात् सरस्वती का सम्मेलन होगा तभी तो आप कुम्भ-महात्म के भागी हो सकेंगे। "महात्म्य" (महा + आत्मा + ष्यञ) का तो यही अर्थ है कि आपको आध्यात्मिक बड़प्पन प्राप्त हो। इसलिये कुम्भ का महात्म्य चाहता है कि आप वैदिक संस्कृति के प्रचार और प्रसार के उपायों पर गम्भीरता से विचार करें।

'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। इसका पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' (आर्यसमाज का नियम ३)

सृष्टि के आरम्भ से लेकर अब तक इस भूमण्डल पर जितनी संस्कृतियों का प्रादुर्भाव या प्रसार हुआ उन सबका आदि स्रोत वेद थे। ऋग्वेद में लिखा है:—

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं,
यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्
प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः॥
(ऋ० १० । ७१ । १)

अर्थात् आदि सृष्टि में ऋषियों के हृदयों में विज्ञान के मूल रूप शब्द और ज्ञान और उनके सम्बन्ध (नाम और नामी) का आविर्भाव हुआ। वही वैदिक आदि भाषा थी। वही सभी भाषाओं की जननी है। और उस भाषा में "निहित" भाव थे वही वैदिक संस्कृति थी। इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर ऋषियों ने मानव-समाज की नींव डाली। वन साफ किये। पहाड़ खोदे। नदियों पर पुल बनाये। नगर बसाये। राष्ट्र स्थापित किये। राष्ट्र विधानों का निर्माण किया। वर्णाश्रम रूपी सामाजिक प्रथाओं का निर्माण किया। कालान्तर में वैदिक संस्कृति समस्त संसार में फैल गई। मनुस्मृति में लिखा है:—

एतद् देश प्रसूतस्य
सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्
पृथिव्यां सर्वमानवाः॥
(मनु० २ । २०)

अर्थात् भारत के विद्वानों ने ही भूमण्डल के अन्य निवासियों को आचार व्यवहार की शिक्षा दी। भारत के गुरुत्व को सुदृढ़ रखने के लिये ही मनु ने उपदेश दिया था—

योऽनधीत्य द्विजो वेद-
मन्यत्र कुरुते श्रमम्।
सजीवन्नेव शूद्रत्व-
माशु गच्छति सान्वयः॥
(मनु०अ०२, श्लो० १४६।१६८)

कि जो विद्वान् वेद को छोड़ कर अन्यत्र परिश्रम करता है वह अपने वंश के लोगों के साथ शूद्रत्व को प्राप्त होता है। गीता में ऐसा ही कथन है—

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य
वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति
न सुखं न परांगतिम्॥
(गीता १६ । २३)

अर्थात् जो वेदों की स्वार्थवश अवहेलना करता है उसे न सुख मिलता है न मोक्ष।

परन्तु अब वह बात तो नहीं रही। हिमालय वही है परन्तु वेद की ध्वनि नहीं। मेले वही हैं। परन्तु वेदों का नाम नहीं। चतुर्वेदी और द्विवेदी या त्रिपाठी घरानों के प्राचीन नाम चले आते हैं। परन्तु अभाव है उन गुणों का जिनके कारण इन नामों के अधिकारी बने।

यथा काष्ठ मयो हस्ती॥ मनु०

यह अवस्थान्तर कैसे हो गया? विचार का स्थल है। और इसी विचार के लिये आपको कष्ट दिया गया है। यदि कुम्भ के कार्यक्रम में वेद सम्मेलन का स्वामी रूप से स्थान मिल सका तो हम आर्य जाति की खोई हुई महत्ता को पुनः प्राप्त कर सकेंगे। इस विषय में वेद स्वयं चेतावनी देता है:—

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं, न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः॥
(ऋग्वेद ८ । २ । १८)

अर्थात् जो अपना कर्त्तव्य पालन करते हैं देव उन्हीं को प्यार करते हैं। वह सोने वालों को नहीं चाहते। प्रमादी पुरुष को वे भारी दण्ड देते हैं।

हमारी वैदिक संस्कृति के प्रहरी

जब सो गये तो देव ने उनको कड़ा दण्ड दिया। हमारी अधोगति का यही कारण है।

इस अति प्राचीन भारत के इतिहास का विवेचन तो कठिन है परन्तु मध्यकाल के इतिहास से पता चलता है कि वैदिक संस्कृति पर सब से पूर्व इसी देश में तीन भारी आक्रमण हुए। चार्वाक आदि नास्तिकों का, दूसरा बौद्धों का, तीसरा जैनियों का।

नास्तिक न वेद को मानते हैं। न ईश्वर को, न किसी अभौतिक सत्ता को। उनका सिद्धान्त तो यह है:—

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्।
ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य।
पुनरागमन कुतः॥

यही आजकल के कम्यूनिज्म का मत है। परन्तु संसार में किसी देश या किसी युग मे नास्तिकों का प्रभुत्व नहीं रह सका। शुद्ध भौतिकवाद पर तो कोई समाज दो दिन भी नहीं चल सकता। अतः चारवाकों का कभी कोई प्रभाव नहीं रहा। रहे बौद्ध और जैन। यह केवल दार्शनिक सम्प्रदाय थे। इनका सांस्कृतिक ढांचा तो वही रहा। वही कर्मफल का सिद्धान्त, वही पुनर्जन्म, वही समाज व्यवस्था। अतः कुछ साम्प्रदायिक विष के होते हुए भी वैदिक-संस्कृति कुछ विकृत रूप में बनी रही। और स्वामी शंकराचार्य तथा अन्य आचार्यों ने वैदिक सस्कृति की नौका को डूबने से बचा लिया।

परन्तु पिछली कुछ शताब्दियों में दो बड़े प्रबल आक्रमण हुये—दो विदेशी सस्कृतियों के अर्थात् एक ईसाई और दूसरी इस्लामी। इनसे हमारी संस्कृति को जो क्षति पहुंची है वह बड़ी भयावह है। आजकल क्षेत्र में केवल तीन संस्कृतियां है जो अपने ढङ्ग से संसार पर विजय प्राप्त करने के स्वप्न देख रही हैं। ईसाई संस्कृति वैज्ञानिक ढङ्ग से आगे बढ़ रही है और उस का सर्वत्र बोलबाला है। इस्लाम का ढङ्ग दूसरा है। परन्तु भारतवर्ष में उसका प्रभाव कम नहीं है। भारत के उच्च पद पर आरूढ़ नेताओं से हम कम्पोजिट कल्चर (Composite Cultura) अर्थात् मिश्रित संस्कृति की बात सुनते रहते हैं। राजनैतिक क्षेत्र में कम्पोजिट कल्चर का क्या महत्व है? उसका विश्लेषण हम यहां करना नहीं चाहते। हमारा तात्पर्य केवल इतना है कि इस मिश्रित कलचर का वैदिक-संस्कृति के अस्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस्लामी नेता कम्पोजिट कलचर को कुछ महत्व नहीं देते और न वह वैदिक संस्कृति को आदर पूर्वक जीवित रहने के पक्षपाती हैं। अत. इसका सीधा अर्थ यह है कि जो हिन्दू नेता कम्पोजिट कलचर के प्रशंसक हैं वह वैदिक संस्कृति की ओर से उतने ही उदासीन हैं। तो फिर कौन है जो वैदिक संस्कृति की अधोगति को रोक सके। और गीता या मनु की दी हुई चेतावनी पर ध्यान देकर मानव जाति को विनाश से बचा सके। यदि आक्रमणकारी विदेशी सस्कृतियां अपनी कुचेष्टाओं में सफल हो गई तो न कोई गीता को पूछेगा, न स्मृतियों को, न रामायण को, न महाभारत को। यह बात तो यूरोप, अमेरिका, पश्चिमी एशिया या उत्तरी और पूर्वी अफ्रीका पर दृष्टि डालने से ही स्पष्ट हो जाती है, भारतीय मुसलमान या ईसाइयों की दिनचर्या से ही प्रकट हो जाती है। हमारा अभिप्राय किसी संस्कृति के दोषों को दिखाना नहीं। हम तो उस प्रभाव से सचेत रहना चाहते हैं जो हमारी सस्कृति को ह्रास की ओर ले जाती है। आप के दांत आप के लिये कितने ही सुन्दर हों, यदि वह हमको काटते हैं तो हमको उससे बचकर ही रहना होगा।

भारतीय पण्डित वर्ग ने वेदों का पाठन इसलिये छोड दिया कि उनकी दृष्टि में कलियुग जैसे अपवित्र युग में वेद अपवित्र हो जायेंगे। वह तो सतयुग के ही योग्य थे। विदेशियों की दृष्टि में वेद अर्द्धशिक्षित या अविकसित देश या काल की गाथायें हैं जिनका आजकल के उन्नतशील युग में केवल ऐतिहासिक मूल्य है। हमारे विश्वविद्यालयों में वेदों का अध्ययन केवल मृत-प्राय अतीत के अविकसित साहित्य के नमूने के तौर पर रक्खा गया है। वैदिक-संस्कृति के पुनर्जीवित करने अथवा विदेशी सस्कृतियों से उसकी रक्षा के लिये नहीं। इस वैज्ञानिक युग मे भी ईसाई देशों मे ईसाई-साहित्य और मुसलमानी देशों में इस्लामी साहित्य का मुख्य उद्देश उन उन संस्कृतियों को सुदृढ़ और विस्तृत करना है। वहां के संस्कृतज्ञ वेदों के विद्वान् भी वेदों की तुलनात्मक अपूर्णता को ही दर्शाते हैं। इनमें से अधिकतर लेखक तो ईसाई पादरी हैं। इनकी वेदपरखने की कसौटी और है और बाइबिल और कुरान के परखने की और। उन को भारतीय ऋषि-मुनियों की सूक्तियां तो पुराने जमाने के गडरियों के गीत नजर आते हैं परन्तु दो सहस्र वर्ष पुराने पैलिस्टायन (Palestine) या चौदह सौ वर्ष पुराने अरब को वह उस दृष्टि से नहीं देखते। मैक्डौमल आदि यूरोपियन विद्वानों ने भारतीय माइथोलोजी (Mythology) या देव-गाथाओं का जितना विवेचनात्मक वर्णन किया है उतना बाइबिल या कुरान की माईथोलोजी का नहीं। यही दृष्टिकोण दायभाग में हमारे भारतीय विश्वविद्यालयों के वेदाचार्यों को मिला है। मैंने अपनी दो पुस्तकों (१) क्रिश्चियनिटी इन इण्डिया (Christianiy in India—भारत में ईसाइयत) और मसाबीहुल इस्लाम (इस्लाम के दीपक) में संक्षेपतः यह दिखाया है कि यद्यपि वैदिक संस्कृति बहुत पुरानी है और उसमें इस दीर्घकाल के जीवन मे बहुत कुछ विकृति भी हुई है तथापि इन नवीन उद्धत संस्कृतियों से वह किसी बात में छोटी नहीं है। सूर्य की प्राचीनता अन्य लैम्पों की अपेक्षा उसके लाघव की सूचक नहीं हैं। वेद आज भी नये हैं क्योंकि सृष्टि का कानून कभी पुराना नहीं होता।

देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।
अथर्ववेद १०। ८। ३२

'परमात्मा के काव्य को देखो, वह न कभी मरता है, न पुराना होता है।'

नवीन ईसाई सस्कृति तथा इस्लामी संस्कृति के संपोषक वैदिक सस्कृति पर आक्षेप करते हैं:—

पहला आक्षेप यह है कि वे एक ईश्वरवादी (Monotheisits) है। और वेद अनेक देवी-देवताओं का पोषक (Polytheist) है। उन्होंने यह मिथ्या धारणा कैसे बना ली और संसार ने इसको कैसे मान लिया? इसका एक मात्र कारण यही प्रतीत होता है कि तलवार तो थी, तलवार चलाने वाला हाथ नहीं था। स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेद के एक छोटे से वाक्य से आक्षेप की निराधारता को स्पष्ट कर दिया।

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।
(ऋ० १। १६४। ४६)

ईश्वर एक है। उसके नाम बहुत हैं। कुरान में ईश्वर के लिये लगभग ९९ नाम आये हैं। बाइबिल में तो भिन्न-भिन्न भाषान्तरों में नामों की भिन्नता है।

दूसरा आक्षेप है मूर्तिपूजा का। वेद में मूर्तिपूजा का विधान तो है नहीं। हां, ईसाई और मुसल्मान धर्म वाले मूर्तियों के भजक रहे हैं। मूर्ति-पूजा के नहीं। दूसरों की मूर्तियां तोड़ते रहे और अपनी मूर्तियां गढ़ते रहे। किसी मुसलमान ने संग असवद (काले पत्थर को) नहीं तोड़ा। मक्के की मस्जिद में अब भी उसकी पूजा होती है। कबरों की पूजा तो सर्व-व्यापी सी है। (देखिये मेरी ऊपर लिखी दो पुस्तकें)

ईसाइयों का दावा है कि ईश्वर के साथ पितृत्व का सम्बन्ध तो उन हीं की देन है। ऋग्वेद ने तो आरम्भिक सूक्त में ही कह दिया कि

स नः पितेव (ऋग्वेद १।१।९)

अर्थात् ईश्वर पिता के तुल्य है। 'इव' अर्थात् 'तुल्य' शब्द इसलिये रख दिया कि भूल से कोई ईश्वर का भौतिक पुल्लिंगी पिता न समझ ले।

इसी प्रकार के अन्य आक्षेप भी हैं जिनका समाधान वेदों के अध्ययन और प्रचार से ही हो सकता है।

हिन्दू धर्म में बहुत सी रूढ़ियां और दन्त कथायें हैं जिनका आधार वेद नहीं हैं परन्तु जिनके कारण वैदिक संस्कृति उपहास का विषय बन रही है। दो तीन बातों को ही आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूं।

यह प्रसिद्ध है कि इन्द्र स्वर्ग का महाराजा है। शची उसकी पत्नी है। अवध के नवाबों के शासन काल में इसी के अनुरूप इन्द्र सभा बनाई गई थी। 'शची' शब्द वेद में आया है। जैसे ऋग्वेद मंडल १, सूक्त ३०, मंत्र १५ में। परन्तु वहां सायणाचार्य ने 'शचीभिः' का अर्थ 'कर्मभिः' (शुभ-कर्म) लिया है। इन्द्र की कामवासना की तृप्त करने वाली 'इन्द्राणी' नहीं। इसी प्रकार 'शिवः सखा' (ऋग्वेद १।३१।१) में 'शिवः' का अर्थ सायण ने 'शोभनः' (उत्तम) किया है। 'कुमार सम्भव' का 'शिव' नहीं। (ऋग्वेद २।२३।१) में 'गणपति' शब्द आता है। परन्तु हाथी का सिर उनके धड़ से कैसे जोड़ा गया यह प्रचलित कथा वेदों से कोई सम्बन्ध नहीं रखती। इसी प्रकार 'गो' (गायों) शब्द को देखकर लोग समझते हैं कि सतयुग में यज्ञ में गायें मारी जाती थी। सायण ने 'गो' का अर्थ किया है, "गो विकारैः" अर्थात् दूध, घृत, दही आदि पथ्य भव्य जिनमें 'गो मांस' शामिल नहीं है। इसलिए 'यज्ञ' का नाम 'अध्वर' है जिसमें किसी प्राणी की हिंसा न हो सके। परन्तु सब से आश्चर्यजनक बात सर्वसाधारण के लिये होगी 'अश्वमेध' यज्ञ की बात। प्रसिद्ध यह है कि अश्वमेध यज्ञ में घोड़े की

(शेष पृष्ठ १२ पर)

जीवन लक्ष्य

ले० श्री महेशचन्द्र जी एम० ए०, आर्य समाज सासनी

'जार तन के चोले का पाना बच्चों का खेल नहीं' किसी कवि की उक्त पंक्ति स्मरण होते ही मानव मस्तिष्क में अनेक संकल्प विकल्प उत्पन्न होने लगते हैं, यह अनुभूति होती है कि मनुष्य जीवन की प्राप्ति बहुत दुर्लभ है। फिर इस अनमोल हीरा जीवन को क्या ऐसे ही गंवा देना चाहिये? मानव और पशु में विवेक बुद्धि का ही एक विशिष्ट अन्तर है। अतः यह परमावश्यक है कि हम अपना जीवन लक्ष्य पहिचानें। समाज में अनेक श्रेणियों, विविध विचारों के व्यक्ति मिलते हैं, कइयों के आचार विचारों की निकृष्टता को देखकर बड़ी खिन्नता का अनुभव होता है। समाज में व्याप्त पारिवारिक वैषम्य की खाई, अपने पराये की आवश्यकता से अधिक निर्लज्जता, स्वार्थ और पदलोलुपता का अत्यधिक आकर्षण, नैतिक गन्दगी जिस रूप में व्याप्त है उसका एक मात्र कारण जीवन लक्ष्य को न पहिचानना है।

हमारा क्या जीवन लक्ष्य हो? यह प्रश्न बड़ा गंभीर और महत्वपूर्ण है इसके लिये विवेकपूर्ण अपने जीवन के कार्य कलापों का निश्चय करना होता है। पेट की तुष्टि तो सब कर ही लेते हैं मान-अपमान से, सरलता-कठिनाई से, किन्तु जीवन उन्हीं का सार्थक है जिनके जन्म से समाज का और देश का उत्थान हो।

देश आर्थिक दृष्टि से दुर्बल नहीं है किन्तु उसे दुर्बल बना रखा है। भारत वसुन्धरा पर किसी भी पदार्थ की कमी नहीं है, फिर आर्थिक संकट क्यों है इस पर गंभीरता से विचार करना है। मेरी समझ में आर्थिक दुर्बलता का एकमात्र कारण धार्मिकता, नैतिकता, सदव्यवहार और सदाचार की कमी है। हम इतने स्वार्थी हो गये हैं कि हमने अपने जीवन के लक्ष्य को पहिचानने का प्रयत्न नहीं किया है। कुछ ने पहिचाना है तो उसे प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं किया है। हम व्यक्तिगत साधन सम्पन्नता के संचय में जुटे हुए हैं, व्यक्तिगत लाभ और लोभ के कारण समष्टि या समाज और देश की हानि का ध्यान नहीं रखते। हम आवश्यकता से अधिक भौतिकवादी हो गये हैं। हमने जीवन का लक्ष्य अधिकाधिक धन सम्पन्नता मान लिया है, उसे ही सुख और शांति का मूल समझ लिया है। इसी के परिणाम स्वरूप सामाजिक असमानता और दुर्बलता दिखाई देती है। इस आर्थिक साधन सम्पन्नता की होड़ से ही सामाजिक जीवन में बुराइयां उत्पन्न हो गई हैं। समाज भी इस ढङ्ग से भ्रष्टाचार के संक्रामक रोग से ग्रसित है कि उच्च सेवा प्राप्त अधिकारियों से लेकर निम्नतम वेतन भोगी सेवक एवं अन्य वर्गों के व्यक्ति प्रायः इसमें ही लिप्त हैं। सब यह समझते हैं कि रिश्वत-लेना-देना पाप है। अत्याचार, अन्याय अमानुषिक हैं; झूठ और मिथ्याचरण अनुचित एवं असंगत है, फिर जानते हुए समाज में यह सब दोष बहुलता से क्यों पाये जा रहे हैं? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है और वह यही कि हमने अपना जीवन लक्ष्य नहीं पहिचाना है। अतः आवश्यकता दूसरों के सुधारकों की नहीं, किन्तु स्वयं के सुधारने की है। हमें अपना जीवन लक्ष्य पहिचान कर उसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील रहकर सुखमय जीवन यापन करना चाहिये।

जीवन का मुख्य लक्ष्य ऋषियों द्वारा प्रशस्त आदर्श जीवन प्राप्ति है। हम परमपिता परमात्मा की सत्ता का मान करते हुए, सुखों को आधार मानते हुए पवित्र, आनन्दमय, परोपकारी, सामाजिक जीवन व्यतीत कर मानव जीवन की सार्थकता प्रदर्शित करें यही हमारे जीवन का लक्ष्य होगा।

जीवन को सार्थक बनाने के लिये हमें निम्न पांच बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

(१) यम नियम का पूर्ण पालन जीवन का सच्चा सुख और आनन्द प्राप्ति के लिये स्वस्थ शरीर और मन की प्रथम आवश्यकता है इसके लिये यम नियमों का पूर्ण रूप से पालन करना होगा। इनका पालन ही एक ऐसा साधन है जिससे मनुष्य का जीवन कुन्दन बन जायगा। वह सांसारिक सभी बुराइयों से बच जायगा।

(२) परहित भावना-हमें अपना तो पूर्ण विकास करना ही है, किन्तु साथ ही दूसरों का भी हित अवश्य देखना है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के १० नियमों में मानव जीवन के कल्याण की समस्त विधि वर्णन कर दी है। ९ वें नियम के अनुसार प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये, यदि इसी भावना को साथ लेकर समाज का प्रत्येक सदस्य अपना कार्य करे तो पारस्परिक कलह और अशांति सदा, सर्वदा के लिये विलुप्त हो जायेंगी, क्योंकि इस एक वाक्य में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव भरा है, जिसका उदय होता अमरत्व और देवत्व है, जब सब अपने ही कुटुम्ब के हैं तो ईर्ष्या, द्वेष, भेदभाव किससे? अतः मनुष्य को थोड़ा बहुत जो कुछ हो सके परहित के कार्य अवश्य करने चाहिये। सच्चे कर्मण्य वही हैं जो सामाजिक बड़े बड़े कार्यों को करने में एक विशेष प्रकार का आनन्द अनुभव करते हैं।

(३) परमात्मा पर अटल विश्वास-परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास रखकर अपना कर्म किये चलना है। परमात्मा निराकार है सभी में समाया हुआ है अतः सभी अपने है, पराया कोई नहीं है, फिर घृणा फूट मन में कैसा? परमात्मा सर्वशक्तिमान है, न्यायकारी है अतः उसकी सर्वत्र उपस्थिति और जगत की रचना देख कर, अथवा अनुभव कर श्रद्धापूर्वक उसके प्रति विश्वास रख गीता के फलासक्ति शून्य कर्म के सिद्धान्त पर अपनी विवेक बुद्धि से उचित कर्म किये जाना ही जीवन का लक्ष्य है। पुण्य कर्म कमाने हैं, पूर्ण यश प्राप्त करना है। सीमित आयु के समय का पूरा पूरा उपयोग करना है। समय का मूल्य समझना है।

(४) समय का सदुपयोग एवं सत् स्वाध्याय-बीते हुए समय का एक एक मिनट लाखों अशर्फी के बदले भी प्राप्त नहीं हो सकता। अतः बड़े गम्भीर चिन्तन के उपरान्त यही निश्चय करना चाहिये कि सत्कर्मों में अनवरत लगा रहना है, आलसी अथवा प्रमादी नहीं बनना है। किसी लेखक के शब्द याद आते हैं 'मनुष्य बन का सड़ जाना आसान है, किन्तु घिस जाना कठिन' देखो-लोहा काम में आता है चमकता रहता है, बेकार पड़ा रहने पर जंग लग कर गल जाता है और टूटने लगता है। अतः जीवन लक्ष्य कर्म को प्रधान समझते हुए समय का सदुपयोग करना है।

समय का सदुपयोग करने के लिए, अपने विवेक को जाग्रत करने के लिए और मैं कौन हूं? इस संसार में क्यों आया हूं? मेरा संसार के प्रति क्या कर्तव्य है यह सब जानना जरूरी है। यह केवल सच्चे गुरु द्वारा या सद् स्वाध्याय द्वारा ही जाना जा सकता है। गुरु तो कुछ समय ही नियमित शिक्षण कराते हैं, किन्तु स्वाध्याय को सबसे बड़ा गुरु बनाया जा सकता है। दैनिक जीविकोपार्जन से बचे समय को स्वाध्याय में लगा देने से व्यर्थ की बातों से बचा जाता है, मानसिक सुख, शांति प्राप्त होती है, कार्य समय पर होता है, ज्ञान की वृद्धि होती है और समय का सदुपयोग होता है इसके विपरीत अन्य प्रकार का साहित्य पढ़ते रहने से इनके विपरीत अनेक दुष्परिणाम होते हैं।

(५) पारस्परिक व्यवहार-अपने व्यवहार के प्रति हमें विशेष जागरूक रहना है। संसार नाट्यशाला है उसमें प्रत्येक को अपना अपना खेल खेलना है। जीवन मरण अवश्यम्भावी है। जो इस धरा पर उत्पन्न हुआ है उसे एक न एक दिन इस मिट्टी में ही मिल जाना है बस इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमे अपना व्यवहार इतना उत्तम और उच्च कोटि का बना लेना चाहिये कि सर्वत्र हमारी प्रशंसा हो। हो सकता है समाज के कुछ ना समझ व्यक्ति आप से असन्तुष्ट हो जायं किन्तु समाज का बहुमत आपको चाहेगा, यदि आपका व्यवहार उत्तम होगा। हर व्यक्ति यह चाहता है कि दूसरे उससे अच्छा व्यवहार करें तो क्या दूसरे भी उससे अच्छे व्यवहार के आकांक्षी नहीं होंगे? यही बात विचार करते हुए अपना व्यवहार अच्छा रखना चाहिये। संसार में पैसा, पद कोई भी वस्तु चरित्र से बढ़कर नहीं है। सच्चरित्र व्यक्ति निश्चिन्त, निर्द्वन्द, निर्भय कहीं भी खड़ा हो सकता है, जबकि दुश्चरित्र को स्थान, समूह देख कर खड़ा होना पड़ता है और वहां भी कांपता हुआ खड़ा होता है क्योंकि उसके अन्तर हृदय में स्वयं भी यह भाव होता है कि वह दुश्चरित्र है किन्तु वह अपनी कुप्रवृत्तियों में ऐसा घुल मिल जाता है और इतना शिथिल और आसक्त हो जाता है कि अपना पथ भूल जाता है। अतः चरित्रवान बनकर सबसे यथा योग्य उचित व्यवहार करके समाज में सम्मान जीवन व्यतीत करना मानव का जीवन लक्ष्य होना चाहिये।

अन्त में मानव जीवन का लक्ष्य जीवन रूपी खेल को इस भांति खेलना समझा जा सकता है जिससे देश का कल्याण हो, अपनी और समाज की उन्नति हो। जिसके कृत्यों से समाज सुखी हो, उसके जैव समाप्ति (अर्थात् मरणोपरान्त) पर भी युग युगों तक उसके देश की प्रशंसा आने वाली पीढ़ियां करती रहें और ऐसा सफल जीवन बनाने के लिये महर्षि प्रणीत आर्य समाज के दस 'सार्वभौमिक सुनहरी नियमों' का मनन और पालन आवश्यक है।

सन्त फतेहसिंह जी के साथ मेरा व्रत

सन्त जी ने यह घोषणा कर रक्खी है अगर पंजाबी सूबा न बना तो वह दरबार साहिब के अन्दर एक मकान की तीसरी मंजिल पर बन्द कमरे में बैठे हुई जीवित ही जल जायेंगे उनके प्रतिद्वन्दी मास्टर तारासिंह सन्तजी के पंजाबी सूबा से सर्वथा असन्तुष्ट हैं और ऐसा पजाबी सूबा बनाना चाहते हैं जो प्रभु सत्ता सम्पन्न (Fuil fledged Sove reign State) घृणा पर आधारित इस प्रकार के राज्य मे हो जिसमें हिन्दु समाज के अन्तंगत हरिजनों और देश भक्त सिक्खों व अन्य जातियों को भी रहना कठिन हो जायेगा। सन्त जी के इस निश्चय से पजाब और सारे भारत का वातावरण इतना दूषित हो चुका है कि इस देश की जनता जिसमें देशभक्त नामधारी रामदासी सिक्ख, राधा स्वामी, सनातन धर्मी, आर्य समाजी, जैनी और हरिजन आदि यह सोचने को विवश हो गये है कि अगर हमारी सरकार अकालियों के दबाव के सामने झुक गईतो उनकी धांधली और दुर-उत्साह और भी बढ जायेगा, हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। केन्द्रीय सरकार यद्यपि उनकी अवैधानिक और साम्प्रदायिक मांगों को सर्वथा अनुचित समझती है तथापि समय-समय पर गत वर्षों में उनके दबाव के कारण झुकती आई है। जिसके परिणाम स्वरूप पंजाब के बहुसख्यक लोगों से विशेषतया कांगडा व हरियाना के भाईयों के साथ-साथ विकास सम्बन्धी कार्यों में प्राय. अन्याय होता रहा है। ऐसी शोचनीय अवस्था में पजाब की एकता प्रिय जनता की प्रतिनिधि पजाब सयुक्त समिति ने साहस पूर्वक उनके साम्प्रदायिक आन्दोलन से टक्कर लेने का दृढ निश्चय किया है।

मेरा अन्तःकरण मुझे पूर्णतया यह प्रेरणा दे रहाहै कि इस घोर अन्यायके निवारण और देश में भ्रातृभाव उत्पन्न करने के लिये समिति की आज्ञानुसार सन्तजी के विरोध में व्रत का अनुष्ठान करते हुए किसी मकान के अन्दर छिप कर नहीं अपितु भारी जनता के समक्ष अपने शरीर को अग्नि में भस्मसात करते हुए पवित्र कर्त्तव्य का पालन करूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे व अन्य प्रिय भाइयों के बलिदान से इस घोर साम्प्रदायिकता की अग्नि शांत हो जायेगी। इस ऋषियों और गुरुओ के देश, वीर भूमि पजाब के लोग पारस्परिक प्रेम से फलते-फूलते रहेंगे और विशाल भारत का सबल अग बन करके उन्नति करेंगे। एक विशेष बात यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि मेरा यह व्रत जहां अकालियों की घोर साम्प्रदायिक मार्गो के विरोध में होगा वहां कांगड़ा और हरियाणा के वीर भूमि के लोगों के साथ किये जारहे अन्याय के विरोध में भी होगा।

जिस पावन भूमि में एकता तथा प्रेम का सचार करने के लिये श्री गुरु नानक देव जी तथा गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपना जीवन लगा दिया उस पजाब की अखण्डता के लिये पजाब की एकता प्रिय भाइयों सम्भल कर तैयार हो जाओ और अराष्ट्रिय और साम्प्रदायिक तत्वों को सदा के लिये असफल बना दो।

—.०—

महर्षि भक्त—सीकर निवासी
योगी कालूराम शर्मा जी

यह महर्षि के महान् भक्त थे, कहते हैं कि इन्हें तन्द्रावस्था मे ही महर्षि के दर्शन हुए थे।

उसी समय महर्षि के अनन्य भक्त हुए। महर्षि से भेंट की और इनका महर्षि के साथ पत्र व्यवहार भी हुआ था। इन्होंने हजारो जनों को गायत्री मन्त्र देकर वैदिक धर्मी बनाया था।

श्री विश्वनाथ जी

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली के उपमन्त्री। गत सप्ताह आपका हृदयगति बन्द होने के कारण स्वर्गवास हो गया। आर्य समाज दिल्ली और हिन्दू महासभा के आप कर्मठ कार्यकर्ता थे।

(पृष्ठ ६ का शेष)

बलि दी जाती थी। ऋग्वेद में अश्वमेघ शब्द पाच स्थानों पर आया है —

(१) ऋ० ५।२।२७।४ मे 'अश्वमेधाय'। (२) ऋ० ५।२७।५ में 'अश्वमेधस्य'। (३) ऋ० ५।२७।६ में 'अश्वमेधे'। (४) ऋ० ८।६८।१५ में आश्वमेधस्य'। (५) ऋ० ८।६८।१६ में आश्वमेधे'।

सायणाचार्य ने 'अश्वमेध' एक राजा का नाम बताया है। और 'आश्वमेध' (अपत्यवाचक) उसके पुत्र का। प्रतीत होता है कि किसी युग में 'मेध' शब्द नामों के अन्त में आता था जैसे आजकल 'लाल' या प्रसाद' आता हैं। क्योंकि एक ऋषि का नाम है 'प्रियमेध', दूसरे का 'नृमेध'। घोड़े के मारने की कथा कैसे चल पड़ी?

इस प्रकार शुद्ध वैदिक सिक्कों पर कालान्तर में जो मोर्चा लग गया है वह तो आप विद्वानों के परिश्रम से ही दूर हो सकेगा।

जब हम सोचते हैं कि यदि पाकिस्तान या चीन की विजय हो गई तो हमारी क्या दुर्दशा होगी? यह चित्र मन में आते ही हमारे रक्त मे जोश आ जाता हैं और हम हर प्रकार का त्याग करने को उद्यत हो जाते हैं। इसी प्रकार यदि हम सोचें कि यदि 'वेद' प्रचार बन्द हो गया और अन्य सस्कृतियों की विजय होगई तो हमारी क्या दशा होगी? न श्रुति रहेगी, न स्मृति, न गीता, न रामायण, न चार वर्ण, न चार आश्रम, न कुम्भ आदि मेले। तो उस दुर्दशा का चित्र खींचते ही हमारे मन में वैदिक सस्कृति की रक्षाके लिये नया जोश उत्पन्न होगा। हमारे विद्वानों का दृष्टिकोण बदलेगा और बहुत से नये उपाय सूझ जायेंगे जिनसे भावी मानव जाति का कल्याण हो सके और चटकीले मुलम्मेदार आभूषण को त्याग कर हम शुद्ध स्वर्ण की खोज कर सकें।

आज आपको इसी धर्म युद्ध में सम्मिलित होने के लिये निमन्त्रित किया गया है।

यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः।

मैजिक लालटेन के प्रचारक
श्री पं०देवकीनन्दनजी शर्मा देव

रगीन चित्रों से मैजिक लालटेन द्वारा बहुत ही रोचक और प्रभावोत्पादक प्रचार करते हैं। इच्छुक महोदय—एफ १३६ लक्ष्मी नगर शाहदरा दिल्ली-३२ से पत्र-व्यवहार करें।

(पृष्ठ ७ का शेष)

कब, किसने कहा पर किस तरह कितनी भूल कर दी, इसकी लम्बी सूची बनाने से हमारे इष्ट की सिद्धि न होगी। किस व्यक्ति या समष्टि ने अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति नहीं की, कब हमसे क्या भूलें हुई या अपनेसे इतर दूसरों को क्या-क्या करना चाहिये, इसकी अपेक्षा हमें स्वय क्या करना है, यह बात अधिक सोचने की है। हम सब की कामना यह है कि राष्ट्र हमारा सम्पन्न हो, और प्रबल राष्ट्रों की पक्ति में बराबर के स्थान पर आसीन होकर हमारा राष्ट्र विश्व में मानव कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करे। यदि हमारा राष्ट्र प्रबल और शक्तिशाली न हुआ, तो फिर हमारे सुझावों और आदर्शों का भी कोई मूल्य न होगा।

मैंने आपका बहुत समय इस स्वागत में ले लिया। आजकल की सकटकालीन परिस्थिति में मैं निम्न ऋचा द्वारा ईश्वर से योग-क्षेम की प्रार्थना कर सकता हूं

स क्षेवृधमभि धा द्युम्न मस्मे महि क्षत्रजनाषा लिन्द्र तव्यम्। रक्षा च नो मघोन. पाहि सूरीन् राये च न: स्वपत्या इषे धा.॥ (ऋ० १।५४।११।

अर्थात् हे इन्द्र परमात्मन्, सुख की वृद्धि करने वाला हमें यश प्राप्त हो; राष्ट्र को उत्कर्ष की ओर ले जाने वाला शत्रुघाती हममें बल हो। हमारे धन धनवानों की रक्षा कर, हमारे विद्वानों को निरापद कर। हमारे राष्ट्र को उत्तम सन्तान, अन्न एवं ऐश्वर्य प्राप्ति के साधनों के प्रति समर्थ कर।

(पृष्ठ २ का शेष)

ततो राजभयात् सर्वे नियम चक्रिरे तदा। नरा: शासनमाज्ञाय रामस्याक्लिष्ट कर्मण: ॥

अनायास ही महान् कर्म करने वाले बलराम जी का यह शासन समझ कर सब लोगों ने राजा के भय से यह नियम बना लिया कि "आज से न तो मदिरा बनाना है और न पीना।"

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

महर्षि बोधांक

बोधांक के लिए बधाई ! यह अंक अपने में बेजोड़ है। इसमें कई ऐसे चित्र हैं जो अलभ्य हैं।

सार्वदेशिक साप्ताहिक ने अल्पायु में ही दो विशेषांक निकाल कर इलाघनीय कार्य किया है। इस कार्य के लिए जितनी भी बधाई दी जाय—थोड़ी ही है।

—जगदीशचन्द्र (बिहार)

—बोधांक बहुत सुन्दर और प्रभावोत्पादक है। आर्य समाज के महारथियों के चित्र तथा उनके सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी देकर एक बहुत ही आवश्यक कार्य किया है।

—राम बहादुर वकील
पूरनपुर

—महर्षि बोधांक बड़ा ही सुन्दर निकाला गया। इस अनथक परिश्रम के लिए आपका आर्य जगत आभारी है। हमारी समाज की ओर से आप को धन्यवाद।

राजाराम तिवारी, छिन्दवाड़ा

आर्य संन्यासी मण्डल

के निर्वाचन में मुख्य प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी, प्रधान श्री स्वामी रामानन्द जी शास्त्री एम० पी०, उपप्रधान श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी एम० पी० श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी शास्त्री बम्बई, प्रधान मन्त्री श्री वेदस्वामी मेधारथी एम० ए०, मन्त्री स्वामी वेदानन्द सरस्वती, उपमन्त्री श्री स्वामी सर्वानन्द जी शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष श्री स्वामी सुखानन्द जी सरस्वती तथा कोषाध्यक्ष श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी चुने गए।

आर्य समाज खंडवा

आर्य समाज खंडवा पूर्व निमाड़ ने दि० ६-२-६६ को मांसाहार का घोर विरोध करते हुए निम्न प्रस्ताव पारित किया है।

आज की यह साधारण सभा जैसा कि समाचार पत्रों में शासन कि ओर से इस संकट कालिन परिस्थिति में अन्न पूर्ति के नाम पर शाकाहारी जनता में मांस उपयोग करने का प्रचार कर वैदिक सिद्धान्तों की अवहेलना की जा रही है, साथ ही धर्म निरपेक्षता का गला घोटा जा रहा है। आर्य जनता इसे सहन नहीं कर सकती अगर शासन की यही गतिविधि रही तो शायद शाकाहारी जनता की ओर से आर्य समाज को आन्दोलन करना पड़ेगा।

आशा है शासनाधिकारीगण इस ओर ध्यान देकर इस घृणित प्रचार को बन्द करने की कृपा करेंगे।

आर्य समाज, राजगढ़

नई दिल्ली के चुनाव में श्री विद्यासागर जी प्रधान, डा० राजेन्द्रनाथ जी, चेतराम जी उपप्रधान, मास्टर रिक्षपालसिंह जी मन्त्री, श्री दयानन्द जी, कन्हैयालाल जी उपमन्त्री, कोषाध्यक्ष श्री गुरुदत्त जी, पुस्तकाध्यक्ष श्री हुकमसिंह जी तथा सुरेन्द्रनाथ जी निरीक्षक चुने गए।

पंजाबी सूबे का विरोध

आर्य समाज दीवालहेड़ी ने एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से मांग की है कि भारत की एकता के लिए पंजाबी सूबे की माग को रद्द किया जाय। यदि सरकार ने इस पर ध्यान न दिया तो आर्य जनता बड़े से बड़ा बलिदान देने को तय्यार होगी।

आर्य समाज आजमगढ़

के निर्वाचन में प्रधान श्री बच्चालाल जी, उपप्रधान श्रीबृजलालजी, तथा श्री दूधनाथ, मन्त्री श्री शुभनारायण गुप्त, उपमन्त्री श्री कपिलदेव राय तथा श्री रामनरेश जी, पुस्तकाध्यक्ष श्री सुदर्शन जी, कोषाध्यक्ष श्री रामप्रसादसिंह जी, निरीक्षक श्री सच्चिदानन्द सिन्हा एव श्री वेदप्रकाश जी प्रचार मन्त्री चुने गए।

आर्य समाज, सावली पंचपुरी

के चुनाव में श्री धर्मचन्द्र जी आर्य प्रधान, श्री रघुनाथसिंह जी डंगार उपप्रधान श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम मन्त्री, श्री चन्द्रमणि जी श्री तोता राम जी श्री मगुलाल जी अध्यापक उपमन्त्री, श्री सन्तनसिंह जी आर्य कोषाध्यक्ष तथा श्री दयालाल जी आर्य निरीक्षक चुने गए।

आर्य समाज देवास

के चुनाव में सर्वश्री मुरारीलाल जी श्रीवास्तव प्रधान, प्रो० रामप्रकाश जी आर्य उपप्रधान, विश्वदेव शर्मा मन्त्री, माणकलाल जी स्वर्णकार उपमन्त्री, कल्याणमल जी माहेश्वरी कोषाध्यक्ष, विजयसिंह जी स्वर्णकार पुस्तकाध्यक्ष एव श्री बरन्दलाल जी तलरेजा निरीक्षक चुने गए।

आर्यसमाज, शाहगंज

के चुनाव में प्रधान श्री डा० शम्भूनाथ आर्य उपप्रधान श्री राधेश्याम आर्य, मन्त्री श्री राधेश्याम सेठ, उपमन्त्री श्री भारत भूषण, कोषाध्यक्ष श्री नन्दकिशोर, पुस्तकाध्यक्ष श्री रमापति श्रीवास्तव एवं निरीक्षक श्री प० काशीनाथ आर्य चुने गए। सभाप्रतिनिधि श्री म० पुरुषोत्तम आर्य।

आर्य समाज मंगवाल

के चुनाव में सर्वश्री ठा० धर्मसिंह जी सूबेदार प्रधान, महाशय खुशीराम जी मन्त्री, मास्टर रेखूराम जी स० मन्त्री, प० रामचन्द्र जी शास्त्री कोषाध्यक्ष तथा राजेन्द्रपाल जी सैनी निरीक्षक चुने गए।

सर्वश्री ठा० दलीपसिंह जी, रायसाहब बख्शीशसिंह जी, डा० चूड़ामणि जी चैयरमैन तथा रोशनलाल जी एम० ए० संरक्षक चुने गए।

आर्य समाज चण्डीगढ़

चण्डीगढ़ की सभी आर्यसमाजों की ओर से ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम अत्यन्त रोचक एव प्रभावशाली था। उस दिन प्रातः एव रात्रि दोनों समय पण्डाल नर-नारियों से खचाखच भरा था। चण्डीगढ़ आर्य समाज के इतिहास मे यह अवसर अविस्मरणीय रहेगा। हजारों नर-नारियों का इस प्रकार का समूह हिन्दी आन्दोलन के दिनों को स्मरण करा रहा था। डा० तुलसीदास जी का अध्यक्षीय भाषण महर्षि के गुणगानों से ओत-प्रोत था। युवक हृदय सम्राट श्री कृष्ण आर्य का ओजपूर्ण एव अनूठा वक्तव्य युवको को अपने कर्त्तव्य की ओर अग्रसर होने के लिए आह्वान कर रहा था।

वृत्तपत्र में नाम छपेगा,
पहिनूंगा स्वागत समिहार।
छोड़ चलो यह क्षुद्र भावना,
आर्य जाति के तारण हार।"

श्री बलबीर जी वर्मा की इस कविता ने श्रोताओं के हृदय को एक नई उमंग दी। प्रिंसिपल त्रिलोकीनाथ जी, हंसराज जी, वायरलैस, बहिन सीतादेवी जी, स्वामी रामेश्वरानन्दजी ने महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी लोक सभा सदस्य ने प्रातः एव रात्रि को अपने भाषण में पञ्जाब की वर्तमान अवस्था पर प्रकाश डालते हुए आर्य जनता को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान कराया। डी. ए. वी स्कूल के विद्यार्थियों एवं मोतीराम स्कूल की छात्राओं ने ऋषि के गुणगान किए। "दयानन्द सप्ताह के पूरे कार्यक्रम में श्री ब्रह्मानन्द जी के अस्वस्थ होते हुए भी उनके श्रद्धा, भक्ति एवं ओजस्वी भजनों की धूमधाम रही।"

आर्यसमाज साधु आश्रम खाड़वा

में महर्षि बोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री स्वामी अभयानन्द जी ने ओ३म् ध्वजा फहराई। विशेष यज्ञ-हवन के पश्चात् ऋषि लगर-भंडारा हुआ जिसमें लगभग ५०० नर-नारियों ने भोजन किया।

६ अप्रैल से १० तक अथर्ववेद पारायण महायज्ञ होगा।

आर्य समाज, खगड़िया

में महर्षि बोधोत्सव धूम-धाम से से सम्पन्न हुआ। प्रातः यज्ञ और रात्रि में दीपमालिका जलाई गई। श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य की अध्यक्षता में विराट सभा हुई जिसमें सर्वश्री सोहनलाल जी एम०ए० श्री बालेश्वर प्रसादसिंह श्री सुन्दरलाल जी आदि के भाषण हुए।

आर्य समाज, शाहपुरा

में महर्षि बोधोत्सव बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रभात फेरी निकली। विशेष यज्ञ के पश्चात् आर्य नर-नारियों ने केसरिया बाना पहन कर शोभा यात्रा में भाग लिया। नगर मे विभिन्न स्थानों पर शोभा यात्रा का दूध आदि से सत्कार किया गया।

सायकाल तोपखाने के विशाल प्राङ्गण मे अनेक महानुभावों ने महर्षि जीवन पर भाषण दिये।

आर्य समाज, फलावदा

में महर्षि बोध सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। शिवरात्रि के दिन जलूस निकाला गया। श्री डा० भगवतदत्त जी प्रधान आर्य उपसभा मेरठ का महर्षि जीवन पर भाषण हुआ।

आर्य समाज, शामली

में महर्षि बोध सप्ताह धूम-धाम से मनाया गया। सप्ताह भर प्रभात फेरी हुई और पूरे सप्ताह परिवारों में विशेष यज्ञ हुए। परिवारों की ओर से उपस्थित नर-नारियों का मिष्टान्न से सत्कार किया गया।

—:०:—

पं. वंशीधर जी विद्यालंकार का जीवन परिचय

श्री पं० नरेन्द्र जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद

पं० वंशीधर जी विद्यालंकार हिन्दी जगत् में कवि, आलोचक और पत्रकार के रूप में प्रख्यात हैं। हिन्दी के विकास तथा प्रसार में उनकी सेवाएं बहुमूल्य और स्मरणीय हैं। उठते-बैठते, चलते-फिरते हर समय उन्हें हिन्दी की साहित्य वृद्धि और प्रसार की धुन लगी रहती थी। ६५ वर्ष की आयु में भी वे साहित्य सेवामें लगे हुए थे और ग्रन्थों लिखते रहते थे। उनकी स्मरणशक्ति बहुत चमत्कार पूर्ण थी। संस्कृत-साहित्य के भी वे विद्वान् और मर्मज्ञ थे। उनकी आलोचना मौलिक और रचनात्मक होती थी। उनकी काव्य-रचना सरस, सुन्दर और आकर्षक होती थी। वे अच्छे वक्ता थे। उनकी रुचि बड़ी कलात्मक थी। सुन्दर तथा कलात्मक वस्तुओं के संग्रह का उन्हें बहुत शौक था। उन्होंने देश के कोने-कोने का भ्रमण किया था। बर्मा और सिलोन भी वे गये थे। उनके मित्रों, परिचितों और प्रशंसकों का क्षेत्र बहुत विस्तृत और देश के सभी प्रदेशों तक फैला हुआ था। २२ फरवरी १९६६ को देहली मे उनके स्वर्गवास के समाचार से सहस्रों व्यक्तियों को आघात पहुंचा है।

प० वंशीधर जी का जन्म सन् १९०० ई० मे क्वेटा में हुआ। आपके पिता का नाम श्री रोशनलाल था। आपकी शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में हुई। सन् १९२१ ई० में आप वहां से स्नातक बनकर निकले। उसी समय से आपके नाम के साथ विद्यालंकार की उपाधि इस प्रकार लग गयी थी कि वह पंडितजीके नाम का अंश बन गयी। आप स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के विशेष कृपा पात्र थे। वहां से निकल कर आपने स्वामी जी महाराज की प्रेरणा से बंगाल, बर्मा और अन्य प्रदेशों में आर्य समाज के प्रचार के लिए भ्रमण किया। गुजरात मे आर्य समाज के एक गुरुकुल में अध्यापन कार्य किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रयत्नों और प्रेरणा से १९२४ में अपनी जाति बिरादरी का बन्धन तोड़कर हैदराबाद के पुराने आर्य समाजी श्री शिवप्रसाद जी आर्य की ज्येष्ठ कन्या से विवाह किया, जिसके कारण आपको अनेक पारिवारिक संकटों का सामना करना पड़ा था। मौलाना अब्दुल हकबाबा ए-उर्दू पंडित जी की काव्य प्रतिभा से ऐसे प्रभावित हुए थे कि १९२६ में औरंगाबाद इण्टर कालेज में उन्हें प्राध्यापक के पद पर नियुक्त किया। कुछ वर्ष आप वहां प्राध्यापक रहकर उस्मानिया विश्वविद्यालय के आर्ट्स कालेजमें चले आये। मौलाना अब्दुलहक सा० हैदराबाद आ गये थे अतः उन्हें भी हैदराबाद बुला लिया। हैदराबाद में १९३८ मे आये और तब से १९६६ तक यही नगरी उनका कार्यक्षेत्र बनी रही। वे हिन्दी और संस्कृत के प्राध्यापक थे। १९५० में उस्मानिया विश्वविद्यालय में स्वतन्त्र हिन्दी विभाग के खोलने का प्रश्न उठा। हिन्दी विभाग को खोलने मे उन्होने बहुत परिश्रम किया। प्रारम्भ में अकेले ही बी०ए० और एम० ए० की श्रेणियों को पढ़ाते थे। इस प्रकार उन्हें कई-कई घण्टे कार्य करना पड़ता था। उस्मानिया विश्वविद्यालय की स्थापना और विकास का बहुत अधिक श्रेय पंडितजी को ही है। सन् १९५५ में वे हिन्दी विभाग के नाते रिटायर हुए और उन्होंने नानकराम भगवान दास साइन्स कालेज के प्रिन्सिपल के नाते कार्य किया। और मार्च १९६१ तक प्रिन्सिपल रहे। इसी बीच सन् १९५६ में ओरियण्टल कालेज की स्थापना की और उसके प्रिन्सिपल के रूप में कार्य किया। आप ही के प्रयत्नों से राधाकृष्ण हिन्दी रिसर्च इन्स्टिट्यूट की भी स्थापना हुई।

हिन्दी प्रचार सभा में गत २५ वर्षों से पंडित जी अनेक रूपों में कार्य करते रहे हैं। सभा के विकास और संवर्धन में पंडित जी का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। पंडित जी ने साहित्य के प्रकाशन, अजन्ता पत्रिका के संचालन और सम्पादन तथा परीक्षाओं के संचालन में बहुत योगदान दिया है। अजन्ता पत्रिका के उच्च स्तर और साहित्यिक स्वरूप को बनाये रखने में उन्होंने बहुत परिश्रम किया।

प० वंशीधर जी विद्यालंकार की साहित्यिक सेवाओं और शैक्षणिक उपलब्धियों को ध्यान में रख कर गुरुकुल कांगड़ी ने अपनी उच्चतर मानद उपाधि विद्यामार्तण्ड से उन्हें विभूषित किया। पंडित जी की काव्य रचना के दो संग्रह "मेरे फूल" और "देव वन" प्रकाशित हुए हैं। बालकों

(श्री पं० वंशीधर जी विद्यालंकार)

के लिए "बालपद" नाम से एक संग्रह प्रकाशित हुआ है। टैगोर के आलोचनात्मक निबन्धों का अनुवाद 'साहित्य' नाम से प्रकाशित हुआ है जो विश्वविद्यालय की उच्च परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में है। पंडित जी का एक आलोचनात्मक प्रबन्ध अंग्रेजी में "शकुन्तला-एट्रेजेडी एण्ड अदर एसेज" नामक भी प्रकाशित हुआ है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी से सम्बन्धित एक सरकारी कमेटी के वे सदस्य थे। उसी की बैठक में भाग लेने के लिए वे ८ फरवरी ६६ को देहली गये हुए थे। वहीं पर अचानक वे अस्वस्थ हो गये। उन्हें विलिंग्डन नर्सिंग होम में प्रविष्ट किया था। २२ फरवरी ६६ के दोपहर में उन्हें जोर की खांसी आई और इसी से उनके प्राण पखेरू उड़ गये। उन्हें हाई ब्लड प्रेशर था। सीने में दर्द की भी कभी-कभी शिकायत होती थी। उनके पीछे विधवा पत्नी, दो लड़के और तीन लड़कियां हैं।

प० वंशीधर जी विद्यालंकार के स्वर्गवास से हिन्दी के क्षेत्र का एक प्रबल सेनानी इस भूमि से उठ गया। हिन्दी के प्रश्न पर शेर की भांति निडर होकर वे किसी का भी विरोध करते थे। उनका निधन हिन्दी जगत की बहुत बड़ी क्षति है।

—:०:—

मेरा जीवन यह आला हो

(महात्मा नारायण स्वामी जी को यह भावपूर्ण भजन अत्यन्त प्रिय था। आर्य जीवन को उच्च बनाने की इसमें प्रेरणा है। सभी आर्य बन्धु इसे परिवार और समाज में मिल कर गाया करेंगे तो यह गीत जीवन का सहायक होगा।) —सम्पादक

यही है आरजू भगवन्
मेरा जीवन यह आला हो।
परोपकारी, सदाचारी व
लम्बी उमर वाला हो॥
सरलता, शीलता, एकता हो,
भूषण मेरे जीवन के।
सचाई सादगी श्रद्धा के,
मन सांचे मे ढाला हो॥
तजूं छल झूठ चालाकी,
बनूं सत्पथ अनुरागी।
गुनाहों और खताओं से,
मेरा जीवन निराला हो॥
तेरी भक्ती में ओ भगवन,
लगादूं अपना मैं तन मन।
दिखाने के लिये हाथों में,
मैली हो न माला हो॥
मेरा वेदोक्त हो जीवन,
कहाऊं वर्ण अनुरागी।
रहूं आज्ञा में वेदों की,
न हमसे वेद टाला हो॥
तजूं सब खोटे भावों को,
तजूं दुर-वासनाओं को।
तेरे विज्ञान दीपक का,
मेरे मन में उजाला हो॥
सदाचारी रहूं हरदम,
बुराई दूर हो मन से।
क्रोध और काम ने मुझ पर,
न जादू कोई डाला हो॥
मुसीबत हो कि राहत हो,
रहूं हर हाल में साबिर।
न घबराऊं न पछताऊं,
न कुछ फरियादो नाला हो॥
पिलादे मोक्ष की बूटी,
मरण जीवन से हो छुट्टी।
विनय अन्तिम यह अर्जुन की,
अगर मंजूरे वाला हो॥

आर्य समाज, गया

की ओर से ऋषि बोधोत्सव पर्व बहुत धूम-धाम से मनाया गया।

आर्य समाज बलरामपुर तथा दीक्षा विद्यालय में ऋषि बोध सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री एम० ए० श्री सत्यनारायणजी द्विवेदी आर्य तथा अन्य विद्वानों ने भाग लिया।

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २)५०
सत्यार्थप्रकाश २)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
व्यवहार भानु)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र १) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७×४० इञ्च २)५०
" " ३६×५४ इञ्च ४)५०
" " ४५×६७ इञ्च ६)५०
कर्त्तव्य दर्पण)५०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)३५
मराठी सत्यार्थप्रकाश १)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से))५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
कठोपनिषद्)५० प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १ २५
मृत्यु और परलोक १)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
अभ्यास और वैराग्य १)६५
निज जीवन वृत वनिका (सजिल्द))७५
बाल जीवन सोपान १)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म ६२
उपनिषद् कथामाला)७५
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार)६०
आदर्श गुरु शिष्य)२५
कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
पुरुष सूक्त)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर ६२
स्वर्ग में हड़ताल)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)२५
वैदिक तत्व मीमांसा)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
वेद और विज्ञान)७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३७
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
इराक की यात्रा २)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक ईश वन्दना ४०
वैदिक योगामृत)६२
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
भ्रम निवारण)३०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
वेद की इयत्ता १)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह)७५
कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम् (पूर्वार्द्ध) १)५०
" " (उत्तरार्द्ध) १)५०
वैदिक संस्कृति)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
सायण और दयानन्द ३)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)५०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०
संस्कार महत्व)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

गीता विमर्श)७५
गीता की पृष्ठ भूमि)४०
ऋषि दयानन्द और गीता)१५
आर्य समाज का नवनिर्माण)१२
ब्राह्मण समाज के तीन महापातक)५०
भारत में मूर्ति पूजा २)
गीता समीक्षा १)

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
चरित्र निर्माण १)१५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
अनुशासन का विधान २५
धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

कांग्रेस का सिरदर्द)५०
आर्य समाज और साम्प्रदायिकता)३१
भारत में भयंकर ईसाई षड्यंत्र)२५
आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना)२०
आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण)६

इन पर ४० प्रतिशत कमीशन

यमपितृ परिचय २)
आर्य समाज के महाधन २)५०
एशिया का वेनिस)७५
स्वराज्य दर्शन १)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
भजन भास्कर १)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५
सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५
आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण १)
आर्य समाज का परिचय १)

सत्यार्थ प्रकाश

मंगाईये।

मूल्य २) नैट

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सम्पूर्ण छप गया !

सा म वे द

(मूल मन्त्र और आर्य भाषानुवाद सहित)

भाष्यकार

श्री पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

(स्नातक गुरुकुल कांगड़ी)

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार (४०००) पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थी। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है।

यह २८ पौंड सफेद कागज पर कपड़े की जिल्द और मूल्य ४ रुपये है। भारी संख्या में मंगवाइये, पोस्टेज पृथक्।

हिन्दूराष्ट्र को सच्चा मार्ग दिखानेवाली सर्वश्रेष्ठ धर्म-पुस्तक

वैदिक मनुस्मृति

(श्री सत्यकाम जी सिद्धान्त शास्त्री)

हिन्दी टीका सहित—हिन्दू धर्मग्रन्थों में चारों वेदों के पश्चात् एकमात्र प्रामाणिक पुस्तक यही है। यद्यपि वेदों का समझना साधारण जनों के बस में नहीं, पर मनुस्मृति को नागरी पढ़ा हुआ व्यक्ति भी समझ सकता है। ४०८ पृष्ठ, मूल्य ४॥)

कथावाचकों उपदेशकों, ज्ञानी, विद्वानों तथा हर गृहस्थी के लिए

दृष्टान्त महासागर सम्पूर्ण

(श्री सन्तराम सन्त)

इस ग्रन्थ में वैदिक, लौकिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, भक्ति और ज्ञान-वैराग्य आदि सभी विषयों में अच्छे से अच्छे दृष्टान्तों का संकलन किया है। संसार के अनेक महापुरुषों, राजाओं, विद्वानों एवं सिद्धों के अनुभूत तत्वों का इसमें अनोखा समावेश है। पृष्ठ २५०, सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) ढाई रुपया, डाक व्यय १॥) अलग।

उपदेश मंजरी—स्वामी दयानन्द जी के उपदेश प्रत्येक आर्य-समाजी को अवश्य अध्ययन करने चाहिये। पूना नगर में दिये गये सम्पूर्ण १५ व्याख्यान इसमें दिये गये हैं। मूल्य २॥) रुपये।

संस्कार विधि—इस पुस्तक में गर्भाधान से लेकर १६ संस्कार कहे हैं जो, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास इन चारों आश्रमों में क्रमानुसार करने होते हैं। मूल्य १॥) रुपया, डा० खर्च अलग।

आर्य समाज के नेता—आर्यसमाज के उन आठ महान् नेताओं, जिन्होंने आर्य समाज की नींव रख कर हिन्दू जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया किया है। मूल्य ३) रु० डाक खर्च १॥) रुपया।

महर्षि दयानन्द—जिस समय हिन्दू धर्म अन्धकार में था, लोगों में ढपोलशंख बहुत बढ़ गया था, उस समय स्वामी दयानन्द जी का जन्म हुआ। शिवरात्रि को महर्षि को सच्चा ज्ञान होना और जनता को सच्चा ज्ञान देना। मू० ३) रु०।

कथा पच्चीसी— सन्तराम सन्त

जिसमें मनुष्य जाति का उद्धार करने के हेतु ही अनेक शास्त्रों में से भारत भूषण दर्शनानन्द जी ने उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद पच्चीस कथाओं का संग्रह किया है हमने उनको और भी संशोधित एवं सरल बनाकर छापा है। मूल्य केवल १॥) डेढ़ रुपया, डाकव्यय १) रुपया।

स्वाध्याय योग्य दर्शन शास्त्र

हमारे प्राचीन काल के ऋषि-मुनियों ने छः दर्शन शास्त्र लिखे थे जिनका संसार भर के विद्वानों में बड़ा भारी सम्मान है। ये छहों दर्शन शास्त्र हिन्दी भाष्य सहित हमने प्रकाशित किये हैं। जिनको पढ़कर आप प्राचीन इतिहास, संस्कृति, नियम और विज्ञान से परिचित होंगे। पूरा सैट लेने पर २५) की वी० पी० की जावेगी।

१—सांख्य दर्शनः—महर्षि कपिल मुनि प्रणीत और स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज द्वारा भाष्य। मू० २) दो रुपया।

२—न्याय दर्शनः—महर्षि गौतम प्रणीत व स्वामी दर्शनानन्दजी द्वारा भाष्य। मूल्य ३) सवा तीन रुपया।

३—वैशेषिक दर्शनः—महर्षि कणाद मुनि प्रणीत साइन्स का मूल स्रोत। मूल्य ३॥) साढ़े तीन रुपया।

४—योग दर्शनः—महर्षि पातञ्जलि मुनि प्रणीत तथा महर्षि व्यास मुनि कृत संस्कृत भाष्य। मूल्य [illegible] रुपया।

५—वेदान्त दर्शनः—श्रीमन्महर्षि वेदव्यास प्रणीत तथा स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज द्वारा भाष्य। मूल्य ४॥) साढ़े चार रुपया।

६—मीमांसा दर्शनः—महर्षि जैमिनी मुनि प्रणीत हिन्दी भाष्य। मूल्य ६) छः रुपया।

हितोपदेश भाषा रामेश्वर प्रशान्त

उस पुत्र से क्या लाभ जिसने अपने कुल का नाम कलंकित किया है ऐसे पुत्र की माता यदि बांझ हो जाय तो उत्तम है' यही भावना पाटिलीपुत्र के राजा सुदर्शन को सदा सताती थी। विद्वान् पं० विष्णु शर्मा ने राजकुमार को जो शिक्षा एवं नीति की आख्यायिकाएं सुनाई उनको ही विद्वान् पं० श्री रामेश्वर 'अशान्त' जी ने सरल भाषा में लिखा है। मूल्य ३) तीन रुपया, डाक व्यय १॥) अलग।

सत्यार्थप्रकाश

मोटे अक्षरों में

२—इसकी दूसरी बड़ी विशेषता पैराग्राफों पर क्रमांक दिया जाना है

३—हर पृष्ठ के ऊपर उस पृष्ठ में आ रहे विषय का उल्लेख।

४—अकारादि क्रम से प्रमाण सूची, पुस्तक का साइज २०×२६/४ २०×१३ इंच है पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई क्लाथ बाईडिंग। मूल्य १५) डाकव्यय अलग।

सार्वदेशिक सभा तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद, कृषि, बिजली, मोटर, पशु पालन, इन्डस्ट्रीयल, डेरीफार्म रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं। बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगा लें।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१६१

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

शास्त्र-चर्चा

ये सब पापी है

धर्मघ्नाना वृथा जन्म लुब्धाना पापिना तथा । वृथा पाक च ये अश्नाति परदाररताश्च ये । पाक भेदकरा ये च ये च स्यु सत्यवर्जिता ॥

जो धर्म का नाश करने वाले, लोभी, पापी, बलिवैश्वदेव किये बिना भोजन करने वाले, परस्त्रीगामी भोजन मे भेद करने वाले और असत्य-भाषी हैं, उनका जन्म वृथा है।

मृष्टमश्नाति यश्चैक विक्रोश-मानेस्तु बान्धवै । पितरमातर चैव उपाध्याय गुरु तथा । मातुल मातुलानीं च यो निहत्याच्छपेत वा ॥

ब्राह्मणश्चैव यो भूत्वा सन्ध्योपासनवर्जित । नि स्वाहो नि स्वधश्चैव शूद्राणामन्नभुग द्विज । वृथा जन्म-मान्यचैतेषा पापिनोविद्धि पाण्डव ॥

हे युधिष्ठिर ! जो बन्धु-बान्धवों को क्लेश देकर अकेले ही मिठाई खाने वाले हैं, जो माता-पिता अध्यापक गुरु और मामा-मामी को मारते या गाली देते हैं, जो ब्राह्मण होकर भी सन्ध्योपासन से रहित हैं, जो अग्निहोत्र का त्याग करने वाले हैं, जो ब्राह्मण होकर शूद्र का अन्न खाने वाले हैं। इन्ही पापियो के जन्म को समझना चाहिये।

(म० आश्वमेधिकपर्व प्र० ९२।)

कांग्रेस का निर्णय-राष्ट्र से विश्वासघात

श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले का वक्तव्य

सयुक्त पजाब संरक्षण समिति के सयोजक श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने कांग्रेस महा समिति द्वारा पजाबी सूबे के निर्णय पर एक वक्तव्य में कहा कि कांग्रेस के नेताओ का यह निर्णय राष्ट्र को छिन्न-भिन्न करने की दिशा में एक दुर्भाग्य-पूर्ण पग है।

इस निर्णय ने जहाँ स्वर्गीय प्रधान-मन्त्री प० जवाहर लाल नेहरू द्वारा दिये गए आश्वासनो की भी धज्जिया बखेर दी हैं वहा तथाकथित पजाबी-भाषी क्षेत्र के ४५ प्रतिशत हिन्दुओ एव २५ प्रतिशत नामधारी, मजहबी और रामदासी कांग्रेसी सिखो का भविष्य भी दुर्भाग्य पूर्ण और अन्धकार-मय बना दिया है। कांग्रेसी नेताओ ने अकाली साम्प्रदायिकता के सामने घुटने टेककर अपनी पुरानी दुर्बल नीति का परिचय दिया है। इन्ही नेताओ ने मुस्लिमलीग से भयभीत होकर देश का विभाजन कराया था और अब पुन खण्डित पजाब को और खण्डित करके राष्ट्र के साथ विश्वास घात किया है। इस भयकर भूल की जो प्रतिक्रिया होगी उसका अनुमान करना कठिन है।

आर्यसमाज स्थापना दिवस २३ मार्च ६६ को मनाएँ

आर्य समाज का स्थापना दिवस आर्य समाज के स्वीकृत पर्वों मे से एक महान पर्व है। सार्वदेशिक सभा के निश्चयानुसार इस वर्ष यह पर्व २३-३-६६ को मनाया जायगा। इसकी सूचना आर्य समाजें अपने नगर मे विशाल रूप मे प्रचारित करें और इसका आयोजन बहुत उत्तम ढग से किया जाय। सब समाजो के लिए कार्य-क्रम निम्न प्रकार निश्चित किया गया है —

प्रभात फेरी

प्रात काल ग्रामो, कस्बो और नगरों मे प्रभात फेरी हो जिसमे यत्न किया जाय कि समस्त आर्य नर नारी और आर्यसमाज से प्रेम रखने वाले इतर जन बहु सख्या मे सम्मिलित हो और यह विशाल और भव्य रूप ग्रहण करें।

सार्वजनिक सभा

प्रात मध्याह्न या सायकाल को स्वसुविधानुसार आर्य मन्दिरो इत्यादि मे सार्वजनिक सभाए की जाय। सभा का कार्य क्रम आरम्भ करने से पूर्व सभा स्थल पर बृहत् यज्ञ किया जाय। स्थापना दिवस के उपलक्ष मे प्रत्येक आर्य परिवार मे प्रात यज्ञोपरान्त ओ३मध्वजारोहण होना चाहिए। सभा मे वेद मन्त्रो का पाठ प्रवचन और व्याख्यान हो। तत्पश्चात् स्थापना दिवस के उपलक्ष मे आर्यसमाज के विगत कार्य का सिंहावलोकन किया जाय और वैदिकधर्म एव आर्य सस्कृति के प्रचार, शुद्धि एव सगठन कार्य के विस्तार, कुरीतियो के निवारण तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी को राजभाषा के सिंहासन पर आरूढ़ करने, आर्य सभासदो द्वारा निजी एव सार्वजनिक कार्यों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करने तथा आर्यसमाज के सगठन को दृढ बनाने की प्रतिज्ञा की जाय।

स्मरण रहे कि सार्वजनिक सभाओं मे आर्य समाज की महिमा और उसकी आवश्यकता पर ही बल दिया जाय। त्रुटियो के वर्णन का स्थान अन्तरग सभा से बाहर कहीं नहीं है। यह बात आप के ध्यान से ओझल न होने पावे।

आर्य घरों और मन्दिरों में दीपमाला

इस दिन प्रत्येक आर्य परिवार अपने घरो मे दीपमाला करें। ओ३मध्वज प्रत्येक घर तथा समाज मन्दिर पर लहराया जाना आवश्यक है। इसी दिन आर्यसमाज मन्दिरो और सस्थाओं मे भी रोशनी की जाए।

वेद प्रचार निधि के लिए धन संग्रह

इस दिवस की सार्वजनिक सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की वेद-प्रचार-निधि के लिए अधिक से अधिक धन सग्रह करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ के पते पर मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा तुरन्त भेज दे। सब प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ की सहमति से सभा ने गत कई वर्षों से निश्चय किया हुआ है कि आर्य समाज स्थापना दिवस के पवित्र पर्व के उपलक्ष मे प्रत्येक आर्यसमाज अपने सभासदों से उनके परिवारो के प्रत्येक व्यक्ति से और प्रत्येक आर्य अन्यों से पुष्कल धन राशि एकत्र करके सभा की वेद प्रचार निधि के लिए भेजें।

आर्य समाजों की स्थापना

यह भी यत्न किया जाय कि उस दिन निकट वर्ती स्थानो मे जहा आर्य समाज नही हैं बहु सख्या मे आर्य समाजें स्थापित किए जायें और आर्य सदस्यो की सख्या बढाई जाय।

आत्म निरीक्षण

इसी दिन प्रत्येक आर्य एव आर्य सभासद् आत्म-निरीक्षण करे और देखे कि उसके वैयक्तिक एव सामाजिक आचरण से आर्य समाज का गौरव बढा है या नही और आर्यसमाज के कार्य के विस्तार में उसका कोई योगदान रहा है या नही। यदि इनमे कोई त्रुटि रही हो तो उसके सुधार और अपने को आर्य समाज के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनाने का व्रत लेना चाहिए।

रामगोपाल
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

संघटन या विघटन

जिस बात की आशंका थी, दिन दिन उसी के सत्य होने के लक्षण दृष्टिगोचर होने जा रहे हैं।

आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही सदा राष्ट्र की संघटन कारी शक्तियों के साथ रहा है, विघटनकारी शक्तियों के साथ नहीं क्योंकि उसकी दृष्टि में महर्षि दयानन्द का वह प्रोज्ज्वल राष्ट्रवाद समाया हुआ है जिसके बल पर प्रत्येक आर्यसमाजी इस भारत राष्ट्र को पुनः उन्नति के चरमशिखा पर ले जाना ही अपने जीवन का परम पवित्र लक्ष्य समझता है। यही कारण है कि अन्य मतवादी जहां साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के कलुष से कलुषित हैं वहां आर्यसमाज में उस प्रकार के संकीर्ण सम्प्रदायवाद को कहीं कोई स्थान नहीं। आर्यसमाज ने आज तक 'केवल आर्यसमाजियों के लिए' के नाम से कभी कोई रियायत या सुविधा नहीं मांगी।

आर्यसमाज की नस-नस में राष्ट्रवाद का रक्त संचारित होता है। इसीलिए राष्ट्रवाद की विरोधी या भारत के विघटन को प्रोत्साहन देने वाली प्रवृत्तियों के प्रति जैसा तीव्र आक्रोश आर्यसमाज के मन में लहरें मारने लगता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। देश के विघटनकारी तत्वों के साथ किसी भी प्रकार के समझौते या अ-रियायत का आर्यसमाज इसीलिए सदा से विरोधी रहा है राष्ट्र के इसी विघटन को बचाने के लिए ही आर्य समाज ने पंजाबी सूबे के विरोध में अपना स्वर बुलन्द किया है और जब तक आर्यसमाज का नाम शेष है तब तक वह इस प्रकार की राष्ट्र-विघटनकारी शक्तियों का सदा विरोध करता रहेगा।

राजनैतिक दल सदा राजनैतिक स्वार्थों से परिचालित होते हैं। उनके लिए दलीय हित ही सर्वोपरि होते हैं। दलीय हितों की खातिर वे तरह-तरह की तोड़-जोड़ करते रहते हैं। कहीं समझौता करते हैं, कहीं गठबन्धन करते हैं। उससे समस्या का समाधान तो होता नहीं, प्रत्युत कुछ काल पश्चात् वह समस्या और उग्ररूप में प्रकट होती है। जैसे ऐलोपैथिक या डाक्टरी दवाई रोग का समूल-उन्मूलन नहीं करती, उसे दबा देती है, परिणाम यह होता है कि शरीर के अन्दर ही अन्दर विष फैलता जाता है और कालान्तर में वह किसी अन्य उग्र व्याधि के रूप में प्रस्फुरित हो उठता है। इसीलिए उसे आसुरी चिकित्सा कहते हैं। भारत सरकार भी इसी प्रकार आसुरी चिकित्सा के बल पर ही समस्याओं को हल करना चाहती है। परन्तु समस्याएं हल कहां होती हैं?

हम अपने मन की आशंका की बात कह रहे थे। पाकिस्तान के निर्माण के रूप में देश का विभाजन स्वीकार करके उस समय के नेताओं ने भले ही राजनीतिक अवसरवादिता का परिचय दिया हो, परन्तु तभी से देश की राजनीति में विघटनकारी प्रवृत्तियों के साथ समझौते की एक परम्परा पड़ गई और वह परम्परा आज भी ज्यों की त्यों कायम है। इसी परम्परा ने पंजाबी सूबे की मांग को प्रश्रय दिया है, इसी ने पृथक् नागालैण्ड की को परवान चढ़ाया है और इसी परम्परा ने अब पृथक् मिजो लैण्ड की मांग के लिए हिंसात्मक उपद्रवों के सिरे पर देश को लाकर खड़ा कर दिया है।

हम इस प्रकार की मनोवृत्ति की शुरूआत पाकिस्तान के निर्माण से ही मानते हैं। स्वातंत्र्य आन्दोलन का विरोध करने के कारण मुस्लिम लीगी नेताओं को तत्कालीन ब्रिटिश महाप्रभु पुरस्कृत करना चाहते थे, इसमें भारत को कमजोर करने की उनकी दुरभिसन्धि और एशिया में अपना एक शाश्वत पिछलग्गू तैयार करने का उनका प्रच्छन्न स्वार्थ तो निहित था ही। नोआखाली और कलकत्ता के हत्याकाण्ड से आतंकित होकर कांग्रेसी नेता अंग्रेजों की इस चाल में आ गए। पाकिस्तान बन गया, हजारों लोगों का कत्ले-आम हुआ, करोड़ों लोग घर से बेघर हुए, परन्तु मुस्लिम लीग तो पुरस्कृत हो ही गई। आज जो पाकिस्तान के शासक हैं वे वही चन्द परिवार हैं जो हमेशा अंग्रेजों की जूतियां चाटते रहे, १८५७ की राज्यक्रान्ति में या बाद के स्वातंत्र्य-आन्दोलनों में जिन्होंने कभी राष्ट्र का साथ नहीं दिया, वरन हमेशा राष्ट्र के शत्रुओं का साथ दिया।

पाकिस्तान के निर्माण के बाद भी आंग्लकूटनीति शान्त नहीं हुई। उसका चक्र बदस्तूर चलता रहा। जिस तरह उसने राष्ट्र के विरोध के लिए मुस्लिम लीग को पुरस्कृत करवाया, उसी तरह अब वह राष्ट्र-विरोधी सिखों को पुरस्कृत करवाना चाह रही है। पंजाबीसूबे की मांग को जो लोग केवल भाषायी मांग मानते हैं। उनकी अबोधता पर तरस आता है। उनके सामने आंग्ल-कूटनीति के इतिहास का परिप्रेक्ष्य उपस्थित नहीं है। या वे राजनैतिक अवसरवादिता की आड़ में पुनः जान-बूझकर अपनी आंखों पर पट्टी बांध रहे हैं। हम कहते हैं कि पंजाबी सूबे की मांग उसी शृंखला की एक कड़ी है जिसने पाकिस्तान का निर्माण किया था। यहां भी आंग्ल-कूटनीति और राष्ट्र विरोधियों का सम्मिलित षड़यन्त्र खुलकर खेल रहा है।

इससे आगे बढ़कर हम कहना चाहते हैं कि नागालैण्ड या मिजोलैण्ड भी उसी षड़यन्त्र की कड़ियां हैं। यहां भी राष्ट्र-विरोधियों को पुरस्कृत करवाने की आंग्ल-दुरभिसंधि ज्यों की त्यों है कश्मीर की समस्या को इस कड़ी के साथ और जोड़ लीजिए और फिर देखिए कि भारत को सदा के लिए दुर्बल बनाए रखने के लिए आंग्ल-कूटनीति ने क्या गुल खिलाए हैं: उत्तर में कश्मीर, उत्तर-पश्चिम में पंजाबी सूबा, उत्तर-पूर्व में नागालैण्ड और उत्तर-दक्षिण में मिजोलैण्ड। इन सबकी पृथक् प्रदेश और स्वतन्त्रता की मांग में कितने प्रतिशत आंग्ल-कूटनीति का हाथ है, यह विवाद करना बेकार है। परन्तु क्या राजनीति का क-ख-ग जानने वाला देश का कोई भी ऐसा राजनीतिज्ञ है जो यह कह सके कि इन चारों समस्याओं में ब्रिटेन का या आंग्ल-कूटनीति का कोई हाथ नहीं है? ज्यों ज्यों रहस्यों पर से पर्दा हटता जाएगा त्यों त्यों आंग्ल कूटनीति का इन समस्याओं में प्रबलतर हाथ प्रकट होता जाएगा और हमारी सरकार जैसे पाकिस्तान के निर्माण-काल से इस कूटनीति की शिकार बनती चली आई है वैसे ही अब भी बनती चली जा रही है।

इसका भी कारण यह है कि अंग्रेजों के साथ समझौता करके ही वह पदारूढ़ हुई है। यदि सन् ४७ में अंग्रेज ने अंग्रेजों से समझौता न किया होता और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज का अभियान सफल हो जाता तो देश के शासन की बागडोर समझौता पसंद कांग्रेसियों के हाथ में होने के बजाय उन क्रान्तिकारियों के हाथ में होती जिनके सामने राष्ट्रहित के सिवाय और कोई लक्ष्य नहीं था। परन्तु देश में उठने वाली इस क्रान्ति की लहर को न अंग्रेज सफल होता हुआ देखना चाहते थे, न कांग्रेसी। इसलिए दोनों ने अपने-अपने स्वार्थों की खातिर पाकिस्तान के निर्माण की शर्त पर समझौता कर लिया। परिणाम-अंग्रेज खुशियों के नगाड़े बजाते और जय-जयकार करवाते भारत से गए और कांग्रेस ने सत्ता की कुर्सी पाई।

परन्तु अंग्रेज गए कहां? वे अंग्रेजित पसंद कांग्रेसी नेताओं के रूप में और व्यापक पैमाने पर छा गए। पाकिस्तान उनका अड्डा था ही। कश्मीर में उन्होंने शेख अब्दुल्ला को छोड़ा। नागा नेता फिजो को अपने साथ मिलाया, विद्रोही नागाओं की छूत अपने पादरियों के द्वारा असम की मिजो पहाड़ियों में फैलाई और इधर मास्टर तारासिंह को चने पर चढ़ाया। कश्मीर, पंजाबी सूबा नागालैण्ड और मिजोलैण्ड जैसे एक ही नाटक के चार अंक हैं। चारों अंकों में पात्र भिन्न-भिन्न हैं। परन्तु इस सारे नाटक का सूत्रधार एक ही है। सूत्रधार जान-बूझ कर मंच पर नहीं आता। परन्तु पर्दे के पीछे इशारे करते और सूत्र संचालन करते उस सूत्रधार को जो नहीं देख पाता उसे निरा नासमझी समझना चाहिए।

पाकिस्तान के निर्माण के समय राष्ट्र की अखण्डता के परिपूर्ण, और अनिवार्य आस्था का अभाव स्पष्ट परिलक्षित हो गया। राष्ट्र की एकता में वही आस्था का अभाव परिलक्षित हुआ। कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बताकर भी उसे पूर्णतः भारत में विलीन न करने में। अखण्डता के प्रति वही अनास्था प्रकट हुई पंजाबी सूबे की मांग के लिए दी जाने वाली धमकियों के आगे झुकने में। वही अनास्था है विद्रोही नागाओं से वार्ता करने में। जब विद्रोही नागाओं और अकाली सिखों के हाथ वार्ता के स्तर तक सरकार को झुकते मिजो के पहाड़ी लोगों ने देख लिया तो इन्हें भी रास्ता सूझ गया और उन्होंने पृथक् मिजोलैण्ड की मांग मनवाने के लिए बाकायदा विद्रोह कर दिया।

देश के और भिन्न-भिन्न भागों में इस प्रकार के विघटनकारी विद्रोह अन्दर ही अन्दर पनप रहे हैं, यह केवल कल्पना का ही विषय है। परन्तु यह निश्चित रूप से कहा जा

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सामयिक-चर्चा

पंजाबी सूबे के निर्माण-सम्बन्धी कांग्रेस कार्य समिति का निश्चय

समाचार पत्रों की प्रतिक्रिया

पंजाब के स्वरूप का आने वाली घटनाओं के सम्बन्ध में कांग्रेस कार्य समिति का निर्णय गोल मोल है। गोल मोल या गुप्त भाषा का अर्थ समझने की विशिष्ट योग्यता रखने वाले लोग भी इस विषय पर वार्तालाप करने से इन्कार कर रहे हैं। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को प्रस्ताव के बारे मे अपनी सम्मति प्रकट नहीं करनी है यद्यपि प्रस्ताव को उन्हें ही क्रियान्वित करना है। श्रीयुत कामराज ने जो बहुत थोड़ा बोलने या कहने के लिए सुप्रसिद्ध है अपने को केवल एक वाक्य तक सीमित रखा है। इस सबके फल स्वरूप उन क्षेत्रों के द्वारा जो इस विषय पर बोलने का अधिकार कम रखते हैं आलोचनाओं की बाढ़ सी आ गई है। वे प्रस्ताव का मन माना अर्थ लगा रहे हैं जो अर्थ लगाना चाहिए वह भी और जो न लगाना चाहिए वह भी।

प्रस्ताव में केवल यह कहा गया है। कि "पंजाब के वर्तमान राज्य में से एक ऐसा राज्य बनाया जाय जिसकी राज्य भाषा पंजाबी हो" इस प्रस्ताव से पंजाबी की भाषायी भावना या आकांक्षा की स्पष्टतः पूर्ति हो जाती है। परन्तु कई प्रश्नों का समाधान बाकी रह जाता है। कुछ व्यक्ति इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि इस प्रस्ताव से पंजाब का विभाजन होना है, हरियाना के प्रवक्ता भी विभाजन चाहते हैं। परन्तु जन संघ विभाजन का परम विरोधी है। विभाजन अनिवार्य नहीं है इसका संकेत श्री फखरुद्दीन अहमद ने किया है। उन्होंने कहा है कि वर्तमान पंजाब के एक भाषा भाषी राज्य बने रहने की संभावना भी बनी रह सकती है। श्री अहमद आसाम के निवासी हैं और उनके मस्तिष्क में संभवतः अपने राज्य का अनुभव होगा। आसाम के समान ही पंजाब की गुत्थी का समाधान किया जाय यह बात भी हवा मे उड़ रही थी। कहा जाता है कि श्री ढेबर इस के प्रबल समर्थक थे।

परन्तु बौद्धिक स्तर पर, समाधान पर बहस करने के मार्ग में अनेक बाधाएं खड़ी हो गई थीं जिनमे प्रकट वा प्रच्छन्न साम्प्रदायिक विचार धारा और भावातिरेक भी सम्मिलित थे। आसाम के १९६० के उपद्रवों से स्पष्ट हो गया था कि जन संहार के लिए दो विभिन्न धर्म्मों के अनुयायियों का होना आवश्यक नहीं है। आसाम के उपद्रवों में मरने और मारने वाले हिन्दू ही थे। अन्त में यह समाधान किया गया था कि आसामी राज्य की एक मात्र मुख्य राज्य भाषा रहेगी और जिन जिलों में बंगाली और अंग्रेजी भाषाएं प्रचलित होंगी वहां जिला स्तर तक इन दोनों का प्रयोग जारी रहेगा। यदि पंजाब को अभिभाजित रहना था और उसकी राज्य भाषा पंजाबी नहीं रहनी थी तो राज्य के विभाजन की आपत्ति मोल लिए बिना वह आसाम के अनुभव से लाभान्वित होने का यत्न करता।

अब यह आवश्यक है कि सन्त फतहसिंह अपने एकान्त वास को छोड़कर सरकार के साथ बात चीत करें या अपने प्रतिनिधियों के द्वारा ऐसा करें। कांग्रेस कार्य समिति के प्रस्ताव का स्वागत करते हुए सन्त ने कहा है कि हरियाना और पहाड़ी जिलों के लोगों की भावनाओं का आदर होना चाहिए था। जब तक सरकार अपना मन्तव्य न बताए तब तक अनिश्चितता बनी रहेगी और दोनों पक्षों के अव्यवहार्य रुखों को समर्थन प्राप्त होता रहेगा। सरकार को सहयोग पूर्ण समाधान करना है और यही पंजाबी या हिन्दी भाषा भाषी जन समूह चाहता है। परन्तु सहयोग पूर्ण प्रक्रिया प्रारम्भ होने से पूर्व सुनिश्चित समाधान प्रस्तावित होना चाहिए। परन्तु पहेलियों एवं गुफाओं में बातचीत करने से तो विद्यमान गड़बड़ के अधिक बढ़ने की ही आशंका है।

श्री नन्दा ने यह कहा बताते हैं कि यदि पंजाबी सूबे का निर्माण होना है तो यह कार्य अभी हो जाना चाहिए जब कि सरकार घटनाओं का मार्ग-दर्शन करने की स्थिति में है।

उस सरकार की ओर से ऐसे शब्दों का आना आश्चर्य जनक है जो हर बार सर्वत्र अन्य मार्ग की अपेक्षा घटनाओं की दया पर रही है। यदि सरकार अब भी घटनाओं के प्रवाह को बदलना चाहती है और तूफान को काबू में नहीं रख सकती है तो वह जनता के सहयोग से ही ऐसा कर सकती है और इसीलिए उसे जनता को पूर्णतया अपने विश्वास में लेना चाहिए।

पंजाब का प्रमुख दैनिक
अंग्रेजी पत्र ट्रिब्यून (११-३-६६)

पंजाबी सूबा

कांग्रेस कार्य समिति ने जिन दो वाक्यों में अपने प्रस्ताव को गूंथा है हमें भय है कि वह अपनी अस्पष्टता और सूक्ष्मता से बहु अर्थी हो सकता है। क्या इसका मतलब यह है कि कांग्रेस कार्य्य समिति अपने आपमें काफी विभक्त है और इस प्रकार किसी निश्चित निर्णय पर नहीं पहुंच सकी है या क्या कार्य समिति ने विकट यथार्थ के सामने अविचल खड़ा रहने के बजाय पलायन का मार्ग ही बेहतर समझा है?

इन दो वाक्यों वाले प्रस्ताव का लक्ष्य चाहे जो हो किन्तु यह साफ है कि भाषावार राज्य-निर्माण के सिद्धांत को फिर से जीवित करने के अलावा कार्य समिति ने पंजाबी सूबे के चारों तरफ एकत्र हो गई जटिलताओं को मिटाने और अनेक शंका आशंकाओं से विमुक्त नए वातावरण को स्वस्थ बनाने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

सन्त फतहसिंह ने मास्टर जी के रोल की निन्दा करते हुए अपनी मांग को सीधे पंजाबी सूबे तक ही सीमित रखा, यों उनकी इस मांग के पीछे भी प्रेरणा अकाली राज्य की ही है, इसके प्रमाण भी लोगों ने प्रस्तुत किए हैं।

कांग्रेस कार्य समिति के प्रस्ताव के स्पष्टीकरण के बाद ही उसका सही २ मूल्यांकन हो सकेगा किन्तु फिलहाल इतना अवश्य कहा जा सकता है कि [illegible] सन्तुष्ट नहीं किया है। दूसरे इस [illegible] प्रांत-निर्माण की वे प्रक्रिया फिर जीवित [illegible] है जिनकी प्रचंडता से यह राष्ट्र एक दिन अपनी नींव में विचलित हो उठा था।

(दैनिक हिन्दुस्तान दिल्ली)
११-३-६६

(२)

विभाजित पंजाब का विभाजन किसी भी अवस्था में पंजाब और पंजाबी के लिए सर्वोत्तम वस्तु नहीं है। नया राज्य आकार में छोटा होगा और उसके मार्ग में अनेक आर्थिक कठिनाइयां उपस्थित होंगी। इसकी कृषि योग्य भूमि के अधिकांश भाग में प्रायः नदी रहेंगी और इसमें बहुत कम उद्योग-धन्धे चालू हो सकेंगे।

परन्तु इस प्रकार के विचारों का महत्व नहीं रहता जबकि कोई सिक्खों जैसी कोई जाति अपने को काल्पनिक कष्टों की मोटी बाड़ से परिवेष्टित करना पसन्द करे और जिसे ऐसे नेतृत्व का सौभाग्य प्राप्त हो जिसके लक्ष्य में जाति का वास्तविक न हित और जिसकी दृष्टि एकसाथ छोटे २ लाभों पर केन्द्रित हो।

कांग्रेस कार्य समिति ने बड़े दुःख और क्लेश के साथ पंजाब के विभाजन का निर्णय किया है। अन्तिम क्षण तक कार्य समिति यह आशा लगाए बैठी रही कि एक भाषा भाषी राज्य के प्रस्ताव या आसाम के फार्मूला से कार्य बन जायगा। परन्तु मंगलवार की शाम को वह इस निर्णय पर पहुंची कि पंजाब में जो स्थिति है उसमें मुख्यतम आवश्यकता ऐसी वस्तु की नहीं है जो बुद्धि संगत हो अपितु ऐसी वस्तु की आवश्यकता है जो स्वीकार करने योग्य हो।

सरकार ने नए राज्य का निर्माण करना मान लिया है अतः उसे राज्य की सीमाओं का निर्धारण कर देना चाहिए और इस कार्य में पूरी ईमानदारी बरतनी चाहिए यदि सरकार ने विभाजन रेखा में गोलमाल करके एक भाषा भाषी फार्मूला लागू करने का यत्न किया तो यह बड़ी बुरी बात होगी। यदि उसने ऐसा किया या ऐसा आभास होने दिया तो सरकार अकालियों की साम्प्रदायिकता को और अधिक प्रोत्साहन देगी।

[illegible]
हिन्दुस्तान टाइम्स
[illegible]

मा. तारासिंह का वक्तव्य या हिज़ मास्टर्स वाइस

श्री पिंडीदास जी ज्ञानी, प्रधान, आर्य समाज, अमृतसर

औरंगजेब की अत्याचारी राज्य-सत्ता को समूलोन्मूलन करने का दृढ़ संकल्प करके श्री गुरु गोविन्दसिंह जी ने आज से २६६ वर्ष पूर्व वैशाखी के पवित्र हिन्दु पर्व के दिन खालसा सेनाओं की स्थापना की। विविध हिन्दु जातियों के पांच सरफ़ोश नवयुवकों को खण्डे का अमृत पिला कर उन्हें पांच प्यारों का नाम दिया गया। खालसा जत्थों की वेषभूषा के लिये जो पांच 'ककार' अनिवार्य घोषित किये गये, उन्हें भी प्राचीन समय की पैदल हिन्दु सेनाओं के सदृश ही रखा गया। प्रमाणार्थ देखिये सस्कृत पुस्तक 'नल चम्पू' जिसे त्रिविक्रम भट्ट ने दशमेश पिता से पौने चार सौ साल पूर्व सम्वत् ९७५ ईस्वी में लिखा था उक्त पुस्तक में महाराज नल के श्वशुर राजा भीम की पैदल सेनाओं के सम्बन्ध में लिखा है—

(१) कठिन प्रकोष्ठ सुठल्लोह वलयैर।

(२) ऊर्ध्व बद्धोद्भूट जूटकैः।

अलक कराल मौलिभिरर्

(३) अर्धोरुक परिधानैर।

(४) निशात कुन्त पाणिभिर।

अभितस्त्वरित पातिभिः पत्ति-भिरनुगम्य मान

"वासिदूरेऽभ्यदृश्यत भीम भूमि-पाल:।"

अर्थात्—भीम नामी राजा का अनुसरण करने वाली पैदल फौज के (१) सुदृढ़ बाहुओं पर लोहे के कड़े थे, (२) उनके केस ऊपर की तर्फ करके जूड़े बन्धे हुए, थे, (३) घुटनों तक वस्त्र कच्छे) पहने हुए थे, (४) हाथों में तेज धार वाले भाले थामे हुए थे। राजा भीम भी निकट ही नजर आ रहा था।" इत्यादि

उक्त उद्धरण से स्पष्ट सिद्ध है कि प्राचीन हिन्दुओं की पैदल सेनाओं की वर्दी में (१) कड़े (२) केसों के ऊपर की तर्फ बधे हुए जूड़े (३) घुटनों तक जांघिया (कच्छा) (४) हाथों में तेज धार वाला (जो गुरु जी के समय में तलवार में बदल गई थी और (५) बिखरे बालों की सजावट और सम्भाल के लिये 'कंकतिका' (कंघा) शामिल थे। या यूं कहिये कि हिन्दुओं के गुरु श्री दशमेश पिता जी ने अपने और अपने पुरुखाओं के पवित्र हिन्दु धर्म के संरक्षण तथा हिन्दुस्वराज्य के स्थापन के लिये हिन्दुओं में से सरफ़ोश हिन्दु नवयुवकों को पुराने हिन्दु राजाओं की पैदल सेनाओं की सी वेष-भूषा से सुसज्जित करके कुर्बानियां करने के लिये प्रेरित किया, और 'चिड़ियों से बाज लड़वाने तथा सवा लाख से एक एक वीर को लड़ा देने' का चमत्कार करके इतिहास की धारा को ही बदल कर रख दिया।

दशमेश पिता जी के सचखण्ड सिधारने के बाद हिन्दु जाति और हिन्दुस्थान ने अनेक क्रान्तियों को देखा। हर प्रकार के अत्याचारों को सहन किया, परन्तु किसी के मस्तिष्क में यह विचार तक भी नहीं आ सका कि कभी नाखुनों से गोश्त को अलग किया जा सकता है। जहा खालसा सेनाऐं 'सत्य श्री अकाल' का गगन भेदी उद्घोष लगा कर शत्रु सेना का सर्वनाश किया करती थी, वहा दशमेश पिता का महावाक्य कि।

"सकल जगत् में खालसा पन्थ गाजै
जगै धर्म हिन्दू सकल द्वन्द्व भाजै"

भी सदा उत्साह वर्धनार्थ उनकी जिह्वा पर रहा करता था।

औरंगजेब की मृत्यु के अनन्तर हिन्दु जाति ने फरुखसियर का दानवी शासन भी देखा। खालसा सेनाओं के वीरों के सिरों के बदले नकद इनाम मिलते भी देखे। मीर मन्नू के अत्याचारों के मुकाबले में वीर खालसा सेनाओं का उत्साहवर्धक उद्घोष कि –

'मन्नू साडी दातरी ते,
असीं मन्नू दे सीर।
ज्यों ज्यों मन्नू सानूं वड्ढे,
त्यों त्यों दूणो होए'

ऐसे भयानक समय में भी कहीं पृथक्ता की भावना पैदा होती नहीं देखी गई।

हमने पजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह जी का शानदार स्वराज्य भी देखा, जिसकी छत्र-छाया में सरदार हरिसिंह नलवा और अकाली फूला-सिंह जैसे वीर सेनाध्यक्षों के नेतृत्व में हमारी सेनाओं ने गत एक सहस्र वर्षों से निरन्तर होने वाले उन आक्रमणों, के प्रवाह को जो कि हिन्दुस्थान की पश्चिमोत्तर सीमाओं से बे-रोक-टोक पहाड़ी नालों की बाढ़ की भान्ति बढ़ते चले आया करते थे, न केवल रोक ही दिया, प्रत्युत शत्रु के घर पर ताबड़-तोड़ हमले करके, उसे सदा के लिये शक्ति हीन बना कर रख दिया। तब भी हमारी कौम में कोई ऐसा देश द्रोही अथवा जाति घातक व्यक्ति पैदा न हो पाया जो अपने पुरुखाओं से नकार करता, जो अपनी सस्कृति अथवा सभ्यता से विमुख होता जिस ने अपनी 'अढ़ाई ईंट की अलग मस्जिद खड़ी करने' का दुस्साहस किया हो।

परन्तु खेद कि हमारा कोई पुराना जातीय पाप या कौमी गुनाह सामने आ गया और पजाब केसरी महाराजा रणजीतसिंह जी के स्वर्गारोहण के पश्चात् शेर की मांद मे अंग्रेज लूमड़ी ने प्रवेश प्राप्त करके पञ्चनद प्रदेश की पवित्र भूमि पर अपने मनहूस कदम जमा लिये। वह घर से ही 'फूट डालो और राज्य करो' की बांसुरी बजाता आया। भाई को भाई से लड़ाना, सतानों को माता-पिताओं के विरुद्ध खड़ा करना, अपने राज्य की दृढ़ता के लिये उसने जरूरी समझा। मुसलमानों को हिन्दुओं के और मुसलिम लीग को कांग्रेस के विरुद्ध उभारा इसीपर बस न करके उसने हिन्दुओं-हिन्दुओं मे घृणा की खाई बनाने के लिये कुछ स्वार्थियों को पदों, खिताबों, जागीरों और सरदारियों के लालच में फांसा। मिस्टर एम. ए. मैकालिफ, मिस्टर ट्रम्प और कई अन्य उच्च अधिकार प्राप्त अंग्रेजों ने अपने जीवन इस 'नेक काम' के लिये समर्पित कर दिये। धार्मिक ग्रन्थों के अनुवाद किये गये, स्वार्थ सिद्धि के लिये ऐतिहासिक घटनाओं को तोड़-मरोड़ा गया, उस से हिन्दुओं की एक नगण्य सी संख्या पर उनका जादू कुछ हद तक चल गया और वे पथ-भ्रष्ट भी हुए। इसी सन्दर्भ में यह समझ लेना चाहिये कि मास्टर तारा सिंह और उनके कुछ साथी वही बोली बोलते हैं जो आज से ६०-६५ वर्ष पूर्व उनके उक्त अंग्रेज गुरुओं ने उन्हें पढ़ाई थी, वही पाठ पढ़ते हैं जो उन्हें कण्ठस्थ कराया गया था।

अभी कुछ दिन पूर्व मास्टर तारा-सिंह ने जो कुछ जगाधरी में कहा कि—

"सिख तभी जीवित रह सकते हैं यदि उन्हें पृथक् स्वतन्त्र राज्य सत्ता प्राप्त हो जाय क्योंकि जब राज्य का संरक्षण दूर हो गया तो बुद्धधर्म समाप्त हो गया था इत्यादि।' यह शब्द पढ़कर हमें ग्रामोफोन रीकार्डों के विज्ञापन पर अंकित शब्द 'हिजमास्टर्सवाइस' का स्मरण हो आया।

जिस मिस्टर मैकालिफ का नाम ऊपर लिखा गया है उसने 'सिख रिलिजन' नाम का एक बृहद् ग्रन्थ लिखा था। उसके कुछ उद्धरण स्थाली पुलाक न्याय से पाठकों के ज्ञान के लिये प्रस्तुत हैं। ध्यान दीजिये—

In our times one of principal agencies for the preservation of the Sikh Religion has been the practise of military officers commanding. Sikh Regiments to send Sikh recruits to receive baptism according to the rites pre scribed by Guru Gobind Singh and endevour to preserve them in their sub squent career from the contagion of idolatory. The military thus ignor ing or despising the restraints imposed by the civil policy of what is ca lled religion's neutrality have practically become the main heirophants and guardians of the Sikh Religion. Preface Page 25

अर्थात्—'हमारे समय में सिख धर्म के संरक्षण के लिये सिख पल्टनों के अंग्रेज अधिकारी अपने सिख रंगरूटों को गुरुगोविन्द सिंह के आदेशानुसार 'पाहुल' लेने के लिये भेज देते हैं। साथ ही वे यह यत्न भी करते हैं कि यह अमृतधारी युवक मूर्तिपूजकों के स्पर्श से सुरक्षित रहने के लिये अपनी भावी जीवनचर्या में उनसे अलग ही रहा करें। यद्यपि उक्त सेनाध्यक्षों की यह कृति सरकार की धर्मनिरपेक्षता की उद्घोषित सिविल नीति की खुल्लम-खुल्ला अवहेलना है; तथापि ये फौजी अफसर वस्तुतः सिखधर्म के सरपरस्त एवं संरक्षक बन गये हैं।" (भूमिका

पृष्ठ २५)

Hinduism has embraced Sikhism in its fold. the still comparatively young religion is making a vigorous struggle for life, but its ultimate destruction is inevitable without state support

Preface Page VII

अर्थात्—'हिन्दु धर्म ने सिख पन्थ को अपनी लपेट में जकड़ लिया है। अपेक्षाकृत नवीन सिख पन्थ अपने सरक्षण के लिये प्राणपण से प्रयत्न शील है, परन्तु यदि शासन इस की रक्षा न करे तो इस का सर्वनाश अवश्यम्भावी है।" (भूमिका पृष्ठ ५७)

As Budhism without state Support completely lost its hold in India, so it is apprehended that without state support Sikhism will also be lost in the great chaos of Indian Religions

Introduction P P. vii

अर्थात्—सरकारी सहायता से वञ्चित हो जाने पर जिस प्रकार बुद्धधर्म हिन्दुस्थान में से पूर्णरूपेण विनष्ट हो गया, उसी प्रकार यदि सरकार सहायता न करे तो सिख पन्थ के हिन्दुस्थानी मत- मतान्तरों की गड़बड़ी में विलीन हो जाने का भारी भय है।' (भूमिका पृष्ठ ५७)

Truely wonderful are the strength and vitality of Hinduism In this way many Centuries ago, Hinduism on its own ground disposed off Budhism. In this way it absorbed the religion of the Sythian invaders of Northern India in this way it has converted the uneducated Islam in India into a Semi-Paganism, and in this way it is desposing of the reformed and once hopeful religion of Baba Nanak.

Introduction PP 38

अर्थात्—वास्तव में हिन्दु धर्म की शक्ति असीम है। इसी तरह कई शताब्दियां पूर्व हिन्दु धर्म ने अपने देश बुद्ध धर्म को समाप्त किया इसी ढंग से हिन्दु धर्म ने उत्तरीय भारत के सीथियन आक्रमणकारियों के धर्म को आत्मसात् किया। इसी भांति इसने अनपढ़ मुसलमानों के धर्म को एक अर्ध-मूर्ति पूजक मत में परिवर्तित किया। अब इसी कार्य्य पद्धति का अवलम्बन करके यह हिन्दु-धर्म बाबा नानक के सुधरे हुए और आशा जनक धर्म को खाये जा रहा है ·· ·· भूमिका पृष्ठ ८८।

I am not without hope that when en'ightened rulers become acquanited with the merits of the Sikh religion. they will not willingly let it perish in the great abyss in which so many creeds have been engulfed.

Introduction P.P. 14

अर्थात्—मुझे निराशा नहीं है क्योंकि जब बुद्धिजीवी सरकारी कर्मचारी सिख धर्म के गुणों का ज्ञान प्राप्त कर लेंगे तो वे इसे हिन्दुधर्म को गहरी खाई में जिसने कि इससे पूर्व अनेकों मत-मतान्तरों को पचा लिया है, प्रसन्नता पूर्वक निमग्न नहीं होने देंगे " भूमिका पृष्ठ ८८

पाठक वृन्द ! दशमेश पिता के सहारये मैकालफी चेले-चांटे साधारणत. और मास्टर तारासिंह और उनके कुछ साथी किस निर्लज्जता और ढिठाई से हिज मास्टर्स वाइस के रीकार्ड की भांति समय समय पर 'हम हिन्दु नहीं, 'हम हिन्दुओं के दबेल बनकर नहीं रहेंगे, हमें पृथक् स्वतन्त्र राज्यसत्ता दरकार हैं, 'हमारी सभ्यता हिन्दुओं से पृथक्, हमारी सस्कृति अलग और हमारा धर्म अलहदा है,', हमें हिन्दुओं पर बिल्कुल कोई विश्वास नहीं, आदि की रट लगाते रहते हैं।

गत दिसम्बर में हमें मास्टर जी की सेवा में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त हुआ। वार्त्तालाप में जब आपने अलहदगी का राग अलपना आरम्भ किया, तो हमने प्रार्थना की कि सीमा पर स्वतन्त्र राज्य की स्थापना से कई प्रकार के सन्देह उत्पन्न होना सम्भव हैं, तो आप इकदम उत्तेजित होकर फर्माने लगे –"हम पाकिस्तान से समझौता कर लेंगे, हम शैतान से निपटारा कर लेंगे, मगर इन हिन्दुओं पर विश्वास नहीं करेंगे।"

और अब 'गद्दारे आजम' अब्दुल्ला की हां में हा मिलाना, पाकिस्तानियों की तरह कश्मीरियों के आत्म निर्णय के अधिकार का अनुमोदन करना, स्वदेश से पृथक् हो जाने की मांग करना, पाकिस्तानके साथ समझौता और शैतान के साथ सुलह की बात प्रकट करना वस्तुत: भयानक देश-द्रोहात्मक विचार-धारा का प्रदर्शन करना है जो कि एक देशभक्त को शोभा नहीं देता। बाकी रही बात मुंह-फट्ट फक्कड़ों, गैर-जिम्मेदार वक्ताओं, सस्ती वाह्-वाह के अभिलाषियों, बेकार नीतिज्ञों, सत्तरे-बहत्तरें बेलगाम सफेद हाथियों की कानून शिकनी की धमकियों गुजरात महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश जैसी अमन-शिकनी की पुनरावृत्ति की याद दहानियां की, इसके लिये इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि 'मन खूब मेशनासम पीराने पारसा रा' इसी लिये कहने पर विवश हुए हैं कि—

"न खञ्जर उठेगी न तलवार तुमसे
ये बाजू मिरे आजमाए हुए हैं।"

आकिलां रा इशारा काफस्त।

अर्थात् बुद्धिमानों के लिये इशारा ही काफी होता है।

इस प्रकार के फसादी तत्वों के साथ कैसे निपटना उचितहै यह शासन का कर्तव्य है, परन्तु खेद इस बात का है कि हमारे राज्य कर्मचारी गाढ़निद्रा में खुर्राटे भरते रहते हैं और उनकी निद्रा तब भंग होती है, जब पानी सिर पर से गुजर जाता है।

प्रभु रक्षा करे।

पंजाब का विभाजन खतरनाक

अकाली हमारे नेता नहीं, २७ लाख सिक्खोंके नेताओंका ज्ञापन

पंजाब के देशभक्त सिख नेताओं की भारत सरकार और कांग्रेस उच्चाधिकारियों से भेंट
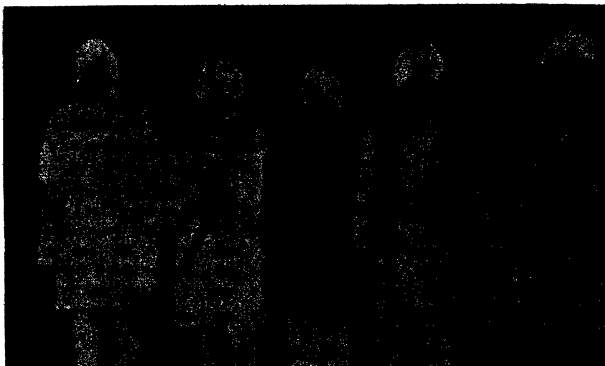
बाएं से दाएं—सन्त तारासिंह महामन्त्री आल इण्डिया मजहबी सिक्ख उदासीन सन्त मण्डल, सन्त [illegible] उपप्रधान पंजाब सन्त मण्डल, श्री उत्तमसिंह बाकी उपप्रधान तथा स० हरनाम सिंह मुन्शी महामन्त्री आल इण्डिया शिरोमणि बाबा जीवनसिंह मजहबी दल और सरदार [illegible] सिंह [illegible] बाबा जीवनसिंह दल तथा पंजाब मजहबी सिक्ख फैडरेशन।

मैं इस स्वराज्य के लिए नहीं लड़ा था !

मान्यश्री श्री प्रकाश जी, भूतपूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र

मुझे तो ऐसा लगता है कि भविष्य में हमारे समाज के दो वर्ग होंगे। एक वर्ग शक्तिशाली सरकारी अधिकारियों का होगा और दूसरा बेचारी जनता का--उन्हें नागरिक कहने का साहस नहीं होगा। प्रजा अधिकारियों की हर ज्यादती सहन करती जाएगी और कानूनी कर ही नहीं, गैर कानूनी पैसा भी चुकाती जाएगी और समझेगी कि यही उचित कानून है।

मैं जानता हूं कि लोग यह मानने लगे हैं कि अपना काम करवाना है तो हाथ गरम करने ही होंगे। न्यायालयों में अभियोग वर्षों तक चलते रहते हैं और हर पेशी से लोग यही कहते लौटते हैं कि "तारीख पड़ गई ?" क्या बताऊं, जनसाधारण की इस विवशता पर मुझे कितना क्रोध आता है।

हमारे सर्वशक्ति-सम्पन्न अधिकारी भी कई श्रेणियों में बटे हुए होंगे। आज भी प्रथम से चतुर्थ तक चार श्रेणियां हैं। प्राचीन भारत के चार वर्णों के समान ही चारों को अलग-अलग सुविधाएं प्राप्त हैं और इन चारों के भी ऊपर विराजमान हैं---राष्ट्रपति, राज्यपाल तथा मन्त्री, जो मनचाही कर सकते हैं और जिन पर मानो कोई कानून लागू ही नहीं होता।

पिछले दिनों किसी ने शिकायत की थी कि विदेशों से लौटने पर लोगों को कस्टम के तौर-तरीकों से बड़ी परेशानी होती है। सम्बन्धित मन्त्री महोदय शिकायत पर बिगड़ गए। उन्होंने रेडियो पर तुरन्त जवाब दिया कि कस्टम का इंतजाम बहुत बढ़िया है।

कुछ समय हुआ, मेरी भानजी अमरीका से लौटी। कस्टम वालों ने उसका सारा सामान उथल-पुथल कर डाला और उसे वापस करीने से रखने में किसी ने नाम को भी सहायता न की। बेचारी की रुलाई फूट पड़ी। किसी भी कस्टम कर्मचारी को सामान की यह दुर्दशा करने का अधिकार नहीं होना चाहिए।

मुझे स्मरण है, जब मैं बम्बई का राज्यपाल था, तब भी एक बार मेरी भानजी विदेश से आई थी और मैं उसे लेने हवाई अड्डे पर गया था। तब उसे जरा भी परेशानी नहीं उठानी पड़ी। कस्टम वालों ने मुझे देखा और सामान की सूची मेरी भानजी ने दी, उसे स्वीकार करके उचित ड्यूटी ले ली।

मगर चूंकि इस बार कोई उच्च पदारूढ़ व्यक्ति उसे लेने नहीं आया था, उसे बड़ी परेशानी झेलनी पड़ी। मन्त्री महोदय चाहें, तो इस बात से अपना दिल ठण्डा कर सकते है।

राज्यपाल रहते हुए, अपने पिता और पुत्र की मृत्यु पर मेरा पाला सम्पत्ति कर के अधिकारियों से भी पड़ा था, लेकिन कोई तकलीफ नहीं हुई। मैंने सम्पत्ति के जो विवरण दिये, वे सब स्वीकार कर लिये गये और कुछ ही सप्ताह में सारा मामला निपट गया।

राज्यपाल पद से हटने के बाद सम्पत्ति कर का ही एक और मामला आया। मेरे एक सम्बन्धी की मृत्यु हो गई। सम्पत्ति का सारा ब्यौरा वही पहले जैसा था, लेकिन परेशानी का अन्त ही नहीं था। जज महोदय भी समय से पहले सुनवाई बन्द कर देते और महीनों आगे की तारीख डालते जाते। हफ्तों में निपट जाने वाला मामला साल भर से भी अधिक चला। हमें विवश होकर ऊंचे ब्याज पर एक लाख रुपया उधार लेना पड़ा। सम्पत्ति करके भुगतान के प्रमाण-पत्र बिना उत्तराधिकारी प्रमाण-पत्र नहीं मिलता। सम्पत्ति कर के अधिकारियों ने बनारस से इलाहाबाद के कई चक्कर लगवाए। आखिर ५० हजार रुपए सम्पत्ति करके भरे। फिर १० हजार रुपए उत्तराधिकार के प्रमाण-पत्र के लिए देने पड़े। दूसरे खर्च रहे अलग। यदि मृत व्यक्ति की सम्पत्ति हमारे हाथ में होती, तो ये सब खर्च उसी में से हो सकते थे। उत्तराधिकार का प्रमाण-पत्र न मिलने से बैंक रुपया नहीं उठाने देते थे। उस सम्बन्धी ने बीमा करवा रखा था, परन्तु पालिसी किसी के नाम 'एसाइन' नहीं की थी। इसलिए जीवन बीमा नियम उत्तराधिकार का प्रमाण पत्र देखना चाहता था। अन्त में जब जीवन बीमा निगम ने चेक दिया, तो बैंक ने उसका भुगतान नहीं किया, क्योंकि उस पर हस्ताक्षर किसी ऐसे अधिकारी ने कर दिये थे जिसे चेक पर हस्ताक्षर करने का अधिकार नहीं था। बीमे का काम जब गैर सरकारी कम्पनियां करती थीं, उस समय अगर ऐसी गलती हो जाती, तो उनकी मुसीबत हो जाती, लेकिन अब सरकारी काम है, कौन परवाह करता है ?

जीवन बीमा निगम को सालाना ३८ करोड़ रुपए का मुनाफा होता है। मन्त्रिगण उसकी प्रशंसा करते नहीं अघाते। कभी उन्होंने यह जानने का प्रयास ही नहीं किया कि पालिसियो के भुगतान मे कितना विलम्ब होता है, चेकों का भुगतान समय पर क्यों नहीं होता, और नियमों की पेचीदगी तथा खर्चे के कारण कितनी पालसिया रद्द हो गयी हैं।

मुझे याद है कि पुराने समय में काशी विद्यापीठ के एक अध्यापक की मृत्यु पर बीमा कम्पनी के आदमी खुद बनारस आये थे। उस अध्यापक की विधवा की मुझ से शनाख्त करवा कर उन्होंने पालसी के दो हजार रुपये हाथों-हाथ चुका दिए थे। यह अध्यापक यदि जीवन बीमा निगम बनाने के बाद मरे होते तो उनकी विधवा पत्नी उत्तराधिकार का प्रमाण पत्र प्राप्त करने की कठिनाई में ही उलझी रहती और प्रमाण-पत्र पाने का खर्च पालिसी की रकम के बराबर बैठता। शायद इन कोशिशों से ही वापिसी का रुपया लेने की मियाद निकल जाती और बेचारी हाथ मलती ही रह जाती।

छोटे से लेकर बड़े तक, सब सरकारी अधिकारियों के अधिकार हैं, सुविधाएं हैं, सुरक्षा है, लेकिन कर्तव्य और उत्तरदायित्व कुछ नहीं है। काम करने की आवश्यकता भी नहीं है, क्योंकि उनसे कोई सवाल तो कर ही नहीं सकता। अगर पूछताछ करें, तो वे पड़ताल कर दें।

बेचारे कर-दाता को नोटिस मिलते ही कर की राशि जमा करनी पड़ती है, मगर कर-अधिकार उसके मामलों को वर्षों घसीटे जाते हैं। गरीब नागरिक को कहीं चैन नहीं। शिकायत तो कानून की शरण लेने की सलाह दी जाती है, मानो अदालती कार्रवाई बहुत सीधी है।

संसद में दिए गए एक सरकारी बयान के अनुसार डाकखानों के बचत खातों में बारह करोड़ रुपए की रकम ऐसी है, जिसका कोई दावेदार नहीं। सरकार अपना यह कर्तव्य नहीं समझती कि वह इस धन के मालिकों का पता लगाकर उनका पैसा उन्हें दे दे।

जो लोग समाजवादी समाज के निर्माण और इंसान-इंसान मे समानता स्थापित करने की बातें करते हैं, वे आंखों पर साफ चश्मा लगाकर देखें कि वास्तव में हमारे चारों ओर हो क्या रहा है ? पचास वर्ष सार्वजनिक कार्यों में बिताने के बाद, जब मैं देखता हूं कि जनसाधारण की हालत क्या हो गई है और सरकारी कर्मचारियों के हाथ में कितनी शक्ति आ गई है, तो मुझे असीम कष्ट होता है।

निश्चय ही यह तो वह स्वराज्य नहीं है, जिसके लिए मैंने काम किया था। मुझे दुख है कि अपने दुखिया देश के ये हाल देखने को आज जिंदा हूं। शासकों से मैं यही कहना चाहता हूं कि ऐसे लोगों पर राज्य करने में कोई गौरव और शान नहीं है, जो आत्म-सम्मान गंवा चुके हैं, जो रिश्वत लेना और देना स्वाभाविक समझते हैं, जिन्होंने यह बात मान ली है कि आदमी के लिए दो ही रास्ते हैं· या तो वह सरकार का पुर्जा बनकर गैर जिम्मेदाराना हुकूमत करे या गुलाम बन कर सत्ताधिकारियों के हाथों अपना शोषण कराये, दुर्व्यवहार सहे।

(नवनीत से साभार)

संस्कृत और हम

श्री विश्वम्भर देव जी शास्त्री, देवबन्द

त्रिभाषा फार्मूलों के जन्मकाल से ही भारतीय आत्मा संस्कृत की उपेक्षा देख आन्तरिक आहें भरने लगी थी, वे आहें बढ़ते २ राष्ट्र-नेताओं के मुखारविन्द से गत पक्ष प्रत्यक्ष रूप से फूट पड़ी। इसमें भारतीय संस्कृति के ज्ञाता पूज्य राष्ट्रपति तथा शिक्षा मन्त्री महोदय आदि ने अपने भाषणों की झड़ी लगाकर संस्कृत को पुनर्जीवन प्रदान करने की आशा जमा दीं, यह सौभाग्य का विषय है।

परन्तु दानी का दान तभी सफल हो सकता है जब दान के योग्य सुपात्र भी हों। किन्तु देखा जाता है कि यह सुपात्रता आज अपने हीं परन्तु विचारो में पराये बने व्यक्ति के हाथो में तिलमिला रही है।

आज का बालक ही कल का नागरिक बनेगा। इसका निर्माण शिक्षा संस्थाओं मे होता है। निर्माता शिक्षक तथा आश्रयदाता सस्था के उच्च अधिकारी हैं। चाहे वह राजकीय हों या व्यक्तिगत सभी पर उसका उत्तरदायित्व है। हमारे नेताओं का प्रयास तभी सफल होगा जब शिक्षा सस्थाओं में पढ़ने वाले बालकों के अन्दर अपनी भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि प्रदान की जाय तथा सस्कृत भाषा के अध्ययन के लिये क्षेत्र तैयार किया जा सकता है। इसके लिए हम कितना यत्न कर रहे हैं यही विचारणीय विषय हैं। सरकार गतवर्षों से सस्कृत प्रचार के लिए प्रचुर आर्थिक सहायता दे रही है। जिससे अनेकों सस्थायें लाभान्वित होरही हैं। विशेष रूप मे उत्तर प्रदेश में प्राय. सभी विद्यालयों में एक सस्कृत अध्यापक का वेतन राज्य से दिया जाता है। सस्कृत पाठशालायें भी सरकारी अनुदान से प्राण धारण कर रही हैं। परन्तु कुछ की दशा पुनरपि शोचनीय बनी हुई है। कहीं छात्र हैं तो प्रबन्ध नही, प्रबन्ध है तो छात्र नही। अग्रेजी विद्यालयों में भी गतवर्षों से कक्षा ८ संस्कृत से उत्तीर्ण छात्रों को कक्षा ९ मे संस्कृत विषय लेने पर छात्रवृत्तियां भी दी जा रही हैं। इस प्रकार सरकार ने संस्कृत प्रचार के लिए १८ करोड़ धन राशि निश्चित की इतना होते हुए देखना तो यह है कि हम उसके लिये कर क्या रहे हैं। इस विषय पर देखने से अत्यन्त निराशा ही होती है। उत्तर प्रदेश ही क्या अन्य राज्यों की शिक्षण संस्थाओं मे सस्कृत की नितान्त उपेक्षा हो रही है। उत्तर प्रदेश के ही कुछ उदाहरण उपस्थित हैं।

वर्तमान अंग्रेजी स्कूल अधिकतर पराधीन भारत मे संस्कृत पाठशालाओ के रूप में खोले गए। उस समय ये सस्कृति तथा स्वतन्त्रता के प्रतीक थे।

शनै. २ समय बदला, दुर्भाग्य से अंग्रेजियत का बोलबाला हुआ। जो शिक्षा आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा शारीरिक विकास के लिए दी जाती थी, वह अब केवल नौकरी करने के लिए बन गई। जिसके माध्यम से विचारो मे अग्रेज और रंग से ही भारतीय शिक्षित, अग्रेजो की कठपुतली बन कार्यालयों मे कलर्क काम करने लगे। अब स्वतन्त्र भारत में भी यह लोकोक्ति चरितार्थ हो रही है कि "रस्सी जली पर बल नहीं गए" अग्रेज तो गये किन्तु अंग्रेजियत हमने अपना ली। ज्ञानवान समझ सकते है कि भारतीय संस्कृति संसार का कितना हित कर चुकी तथा अब भी कर रही है। इस सस्कृति का मूल केन्द्र संस्कृत साहित्य ही तो है। खेद है, भारतीयता से रहित लोग आखो में पट्टी बांध स्वज्ञान सूर्य को नही देखना चाहते। उन पर न सरकार के अनुदान का प्रभाव और न स्वसस्कृति का, उन्हे केवल चाहिए धन।

इसी भावना से सस्कृत की प्राचीन पाठशालाओं का अंग्रेजी स्कूल और कालेजों मे विलीनीकरण होता जा रहा है। जिनमें बच्चों के कोमल मस्तिष्क मे यह भावना भरी जाती है कि संस्कृत पढ़कर जीवन नष्ट करना है। इसको पढ़कर कहीं नौकरी तो मिलती ही नहीं। ऐसे भौतिक युग में नौकरी की ही भावना रखने वाले छात्रों के हृदय में सस्कृत के प्रति निष्ठा स्वतः समाप्त हो जाती है। माता-पिता भी संस्कृत इसलिए नहीं पढ़ाते कि इसको पढ़कर आर्थिक कोई लाभ नही है। जब स्कूल, घर और साथियों का वातावरण ही छात्र के अनुकूल नहीं तब कैसे वह सस्कृत पढ़ने का साहस कर सकता है यह एक प्रमुख समस्या है।

एक ओर जर्मन आदि देशों में संस्कृत से महान् वैज्ञानिक आविष्कार हो रहे हैं जिसके लिए वहाँ विश्वविद्यालय खुले हुए हैं। दुःख है संस्कृत की जन्मभूमि भारत में उसको हेय की दृष्टि से देखा जाता है। उत्तर प्रदेश में इस समय मिडिल तक सस्कृत अनिवार्य रूप मे चल रही हैं परन्तु आगे की कक्षाओं मे पुन. उसका भविष्य अन्धकारमय ही दिखाई दे रहा है। इसका एक बड़ा कारण है छात्रों का अर्थकरी विद्या विज्ञान की ओर चलना। चाहने वाले उत्तम बुद्धि के बालक-सस्कृत इसलिए नही ले पाते कि उनके विषयों के वर्गीकरण में अधिकारी लोग सस्कृत रखते ही नहीं। शेष छात्रों की दशा निराली है जिसको अंग्रेजी भी नही आती वह विवश होकर सस्कृत ले लेता है जो कि अल्प संख्या में होते हैं।

हाई स्कूल तथा इण्टर कक्षाओं में हिन्दी के साथ सस्कृत अनिवार्य है, परन्तु बहुत से विद्यालयों में उसको पढ़ने के लिए उचित प्रबन्ध नहीं है। बिना संस्कृतज्ञ हिन्दी अध्यापकों पर सस्कृत पढ़ाने का भार थोपा जाता है।

इससे यह फल निकलता है कि छात्रों को जो कुछ ज्ञान हो सकता था उससे भी वञ्चित हो जाते हैं। परीक्षा काल में केवल रटरटाकर कुछ अङ्क प्राप्त कर लेना ही उनके भाग मे रहता है। इस विधिहीन ज्ञान से अरुचि के अतिरिक्त और हो ही क्या सकता है। इस प्रकार विज्ञान के छात्रों का सस्कृत ज्ञान से वञ्चित रह जाना एक महान् अभिशाप है।

अधिकतर सस्थाओं में सस्कृत के सप्ताह में चार घण्टों में से तीन ही घण्टे रखे जाते हैं तथा किसी कक्षा मे तो केवल दो ही घण्टे लगा कर अधिकारी वर्ग इसी में अपना संस्कृत के प्रति इति कर्तव्य प्रदर्शित कर कृतज्ञता प्रकट कर देते हैं। इण्टर कक्षा में तो सस्कृत लेने वाले छात्र होते ही पहले कम हैं परन्तु जहां बिना अंग्रेजी वाले छात्र अधिकारी वर्ग के सम्मुख आये तुरन्त उनका पारा चढ जाता है और छात्र लताड़ खाये बिना बच नहीं सकता। छात्रों के सस्कृत पढने विषयक प्रार्थना पत्रों को तिरस्कृत कर फेंक दिया जाता है। संस्कृत और उसके प्रेमी छात्रों का ऐसा ही अपमान होता है जैसे गांधी जी का दक्षिण अफ्रीका में अनेकों स्थानों पर हुआ। इतना ही नहीं गर्वभरे मठाधीश कहते हैं कि संस्कृत पढकर भीख मांगोगे। इस प्रकार हमारी सस्कृति की जन्मदात्री सस्कृत को अपमानित होना पड़ता है। भगवान् ऐसे लोगों की बुद्धि पवित्र करे। जिन संस्थाओं में सस्कृत के लिए मिलने वाली छात्रवृत्तियों के आवेदन पत्र छात्रों को नहीं दिए जाते वहां के अधिकारी और क्या हित कर सकते हैं। न जाने देश में अभी कितने ऐसे विद्यामठ होंगे जहां के महन्त संस्कृत के प्रति उपरोक्त व्यवहार कर रहे होंगे, क्या उनके आधीन पलने वाले छात्र राष्ट्रभक्त बन सकते हैं?

छात्रों के अन्दर आज अनुशासन हीनता का मुख्य कारण है नैतिक शिक्षा का अभाव। वस्तुत संस्कृत के समुचित प्रबन्ध के द्वारा यह कमी पूर्ण की जा सकती है। संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक रूप दिया जाय, नौकरी में सुविधा तथा शिक्षण संस्थाओं की उपेक्षावृत्ति दूर की जाय तो सुधार अवश्य होगा। तभी हमारे नेताओं तथा विद्वानों की भावनाएं सफल होंगी। संस्कृति और राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। यदि प्रत्येक शिक्षाधिकारी अपने क्षेत्र में उपरोक्त कमियों को दूर करने का प्रयत्न करे तो सरकार का धन और जनता की सन्तान का सदुपयोग अवश्य होगा। यही हमे विचारना है।

राष्ट्रपति, संसद-सदस्य और मंत्री क्या करें?

(श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी०,
डी० वी० कालेज, गोरखपुर)

(भारतवर्ष के निर्माण में आर्यसमाज का एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। आर्यसमाज का मार्गदर्शन सत्यार्थ-प्रकाश करता है। सत्यार्थप्रकाश एक ऐसी पुस्तक है जिसमें राज्य के मूलभूत सिद्धान्तों का पूरी गहराई के साथ विवेचन किया गया है और आज जब देश की आन्तरिक और बाह्य व्यवस्था सुधार की अपेक्षा रखती है ऐसे समय 'सत्यार्थ-प्रकाश' की प्रेरणा यदि राष्ट्र प्राप्त कर सके तो उसका भविष्य उज्ज्वल होगा यह निर्विवाद सत्य है।)

—लेखक

आज भारतवर्ष की शासन व्यवस्था और संविधान में राष्ट्रपति का सर्वोच्च स्थान है। उसकी सहायता के लिए केन्द्र में लोक सभा और राज्य सभा या राज्यपरिषद् नाम की दो सभायें हैं। राष्ट्रपति अपने शासन को ठीक तरह चला सके इसके लिए वह एक मन्त्रिमण्डल का निर्माण करता है। इस मन्त्रिमण्डल का नेता वह होता है जो ससद में बहुमत पार्टी का नेता होता है। यह स्वाभाविक है कि वह अपने मन्त्रिमण्डल में योग्यता के आधार पर नहीं परन्तु अपने दल के आधार पर मन्त्रियों को नियुक्त करता है। प्राचीन काल मे वेदों के आधार पर राष्ट्रपति, संसद और मन्त्रिमण्डल का निर्माण होता था। अथर्व वेद ८। १०। १। में आया है—

विराड् वा इदमग्र आसीत् तस्या जातायाः सर्वमबिभेदियमेवेदं भविष्यतीति ।१। सोदक्रामत् सा गार्हपत्ये न्यक्रामत् ।२। गृहमेधी गृहपतिर्भवति य एव वेद ।३। सोदक्रामत् सा सभाया न्यक्रामत् ।८। यन्त्यस्य सभां सभ्यो भवति ए एव वेद ।९। सोदक्रामत् सा समितौ न्यक्रामत् ।१०। यन्त्यस्य समितिं सामित्यो भवति य एव वेद ।११। सोदक्रामत् सामंत्रणे न्यक्रामत् ।१२।यन्त्यस्यामंत्रणमामणीयो भवति य एव वेद ।१३।

अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में (विराड्) राजा से रहित केवल प्रजा शक्ति थी। वह प्रजाशक्ति उत्क्रांत हो गई और गृहपति में परिणत हो गई अर्थात् जो अलग अलग मनुष्य थे उनके व्यवस्थित कुटुम्ब बन गए। यह प्रजाशक्ति उत्क्रांत हो गई और वह सभा में परिणत हो गई। वह प्रजाशक्ति उत्क्रांत हो गई और वह समिति में परिणत हो गई अर्थात् अनेक ग्रामों के समूहों की सुव्यवस्था के लिए ग्राम सभाओं के प्रतिनिधियों से समितियां बनीं। फिर वह प्रजाशक्ति उत्क्रमण को प्राप्त हुई और 'आमन्त्रण' मे परिणत हो गई। इस प्रकार ग्राम की लोक सभा का नाम सभा है। प्रांत की प्रान्तीय विधान सभा का नाम 'समिति' और जो मन्त्रिमण्डल राष्ट्र का नियमन करता है उसका नाम 'आमन्त्रण' होता है। ये तीन सभायें राष्ट्र की स्वराज्य पद्धति की शासक सभायें हैं। इनके शासन से बहुपाटय का शासन चलाया जाता है। अथर्व वेद ७। १२ मन्त्र में कहा गया है—

सभा च मा समितिश्चावतां प्रजापते र्दुहितरौ सविदाने। येना सगच्छा उप मा स शिक्षाच्चारु वदानि पितरः सगतेषु।

अर्थात् प्रजारक्षक राजा की पुत्रीवत् पालन योग्य लोक सभा और राष्ट्र परिषद् हैं ये दोनों मेरी रक्षा करें। ये दोनो मेल कराने वाली हैं। जिस सभासद के साथ मैं मिलूं वह मुझे ज्ञान दे। हे पालन करने वाले सभासदों, सभाओं मे मैं ठीक बोलूं। सभा और समिति प्रजा का पालन करने वाली राजा की दुहितायें हैं। पिता दुहिता अर्थात् पुत्री का पालक होता है। परन्तु पुत्री पर अधिकार पति का होगा पिता का नहीं। ठीक इस प्रकार राजा लोक सभाओं का पालक है परन्तु लोक सभा राजा के अधिकार से बाहर है अर्थात् राज्य शासन का सुधार आदि करने मे लोक सभा पूर्ण स्वतन्त्र है। इन दोनों सभाओं में प्रजा की सम्मतियों का मेल होता है। इसलिए इन सभाओं के सभासदों से मिलकर प्रजा के मत का ज्ञान राजा प्राप्त करे। लोक सभा के सभासद भी राजा को अपनी निष्पक्षपात सम्मति देते रहें। वास्तविक राज्य के शासक और पालक लोक सभा के सभासद ही हैं। राजा और लोक सभा के सभासदों का सदा परस्पर प्रेमपूर्वक भाषण होवे और कभी विद्वेष के शब्द न उच्चारे जायें। इस सभा को वेद में बहुत महत्व दिया है। एक मन्त्र में आया है—

विद्म ते सभे नाम नरिष्टा नाम वा असि। ये ते के च सभासदस्ते मे सन्तु सवाचस.। अ० ७। १२। ३

अर्थात्—हे सभे! तेरा नाम 'नरिष्टा' किसी का नाश न करने वाली स्वयं नष्ट न होने वाली और (नर इष्टा) लोगों के लिए इष्ठ करने वाली है। इसलिए इस मन्त्र में आगे कहा गया है कि जिस राज्य मे लोक सभा होती है और लोक सभा द्वारा जहां का राज्य शासन चलाया जाता है वहा राजा को और लोगों को अर्थात् किसी को भी कोई कष्ट नहीं होता। परन्तु लोक सभा से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए सब सभासद सत्यभाषण कर्ता होने चाहिए। सभी सत्यभाषी सभासदों की सभा से राष्ट्र का सच्चा कल्याण हो सकता है। इसीलिए इस बात को ध्यान मे रखते हुए स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश में मनुस्मृति के आधार पर राजसभासद् मन्त्री तथा राजा के लिए योग्यता का उल्लेख किया है और लिखा है —

मौलान् शास्त्रविद. शूरान् लब्धलक्षान् कुलोद्गतान्। सचिवान्सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्।

अर्थात्—स्वराज्य स्वदेश में उत्पन्न, वेदादि शास्त्रों के ज्ञाता, शूरवीर जिनका लक्ष्य निष्फल न हो और कुलीन, सुपरीक्षित सात या आठ उत्तम, धार्मिक, चतुर मन्त्री करे। यदि आवश्यकता हो तो राजा को यह अधिकार दिया गया है कि वह अधिक भी मन्त्री नियुक्त कर सकता है। लिखा है –

अन्यानपि प्रकुर्वीत शुचीन् प्रज्ञानवस्थितान्। सम्यगर्थसमाहर्तॄनमात्यान्सुपरीक्षितान्॥ निवर्तेतास्य यावद्भिरितिकर्तव्यता नृभिः। तावतोऽतन्द्रितान्दक्षान् प्रकुर्वीत विचक्षणान्॥

अन्य भी पवित्रात्मा, बुद्धिमान्, निश्चित बुद्धि, पदार्थों के सग्रह करने में अतिचतुर सुपरीक्षित मन्त्री करे। जितने मनुष्यों से राजकार्य सिद्ध हो सके उतने आलस्य रहित बलवान् और बड़े बड़े चतुर प्रधान पुरुषों को राजा अधिकारी नियुक्त करे।

राज्य को ठीक तरह से चलाने के लिए दूतों का भी बड़ा भारी महत्व है। वास्तव में अपने देश को दूसरे देशों में प्रतिष्ठा कायम करना दूत पर भी निर्भर है। इसलिए शासन को ठीक चलाने के लिए राजा तथा मन्त्रियों को दूत भी नियुक्त करने चाहिए। दूत कौन हो इसके विषय में स्वामी जी महाराज ने लिखा है—

दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशारदम्। इङ्गिताकारचेष्टज्ञं शुचिं दक्षं कुलोद्गतम्॥ अनुरक्तः शुचिर्दक्षः स्मृतिमान् देशकालवित्। वपुष्मान्वीतभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते॥

अर्थात्—प्रशसित कुल में उत्पन्न चतुर, पवित्र, हावभाव और चेष्टा से भीतर तथा भविष्य में होने वाली बात को जानने वाला सब शास्त्रों मे विशारद चतुर व्यक्ति को दूत बनाये। वह दूत ऐसा होना चाहिए कि राजकार्य में अत्यन्त उत्साह, प्रीति युक्त, निष्कपटी, पवित्रात्मा, चतुर, बहुत समय की बात को भी न भूलने वाला, देश और कालानुकूल वर्तमान का कर्ता, सुन्दर रूप युक्त, निर्भय और बड़ा वक्ता हो वही राजा का दूत होने में युक्त है। दूत का महत्व वर्णन करते हुए बतलाया है—

दूत एव हि सघत्ते भिनत्येव च सहतान् दूतस्तत् कुरुते कर्म भिद्यन्ते येन वा न वा।

अर्थात्—दूत उसको कहते हैं जो फूट मे मेल और मिले हुए को फोड़ तोड़ देवे। दूत वह कर्म करे जिससे शत्रुओं मे फूट होवे। आगे स्वामी जी ने लिखा है "सभापति और सब सभासद् या दूत आदि यथार्थ से दूसरे विरोधी राजाओं का अभिप्राय जानकर वैसा प्रयत्न करें कि जिससे अपने को पीडा न हो।" वे कहते हैं "राजा और राज सभासद् अलब्ध की प्राप्ति की इच्छा, प्राप्त की प्रयत्न से रक्षा करे, रक्षित को बढ़ावें और बढ़े हुए धन को वेद विद्या धर्म का, प्रचार विद्यार्थी, वेदमार्गोपदेशक तथा असमर्थ अनाथों के पालन मे लगावे। यह ध्यान रखें कि कोई शत्रु अपने छिद्र अर्थात् निर्बलता को न जान सके और स्वय शत्रु के छिद्रों को जानता रहे। जैसे कछुआ आपने अगों को गुप्त रखता है वैसे शत्रु के प्रवेश करने के छिद्र को गुप्त रखे।" उन्होंने आगे बताया है—जैसे बगुला ध्यानावस्थित होकर मछली के पकड़ने को ताकता है वैसे

(शेष पृष्ठ १२ पर)

राष्ट्र-निर्माण में सत्यार्थप्रकाश का योगदान

श्री जगदीश प्रसाद सिंह, "आर्य सिद्धान्त रत्न"
को-आपरेटिव इन्सपेक्टर, नूरसराय (जिला पटना)

राष्ट्र-निर्माण में साहित्य का बहुत बड़ा हाथ है। देश के वर्चस्व के उद्दीपन में भाग बहुत ही अधिक है। साहित्य अपने वर्तमान समाज का जहां ज्ञापक है, वहां उसका निर्माता भी है। आइये इसी पृष्ठ-भूमि में इस युग के महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का एक अध्ययन करें।

साधारणतः जो लोग इस ग्रन्थ में "गहरे" नहीं घुसे हैं उनका यह विचार है कि यह ग्रन्थ साम्प्रदायिक, असहिष्णुता से ऊपर नहीं उठा है। यह एक सम्प्रदाय विशेष का धर्म ग्रन्थ के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इस युग के राष्ट्र पुरुष म० गांधी ने भी कुछ ऐसा ही विचार प्रकट किया है। वे मई १९२४ के यंग इन्डिया मे लिखते हैं। "मैंने आर्यसमाजियों की बाइबिल सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ा है।

मैंने इतने बड़े सुधारक का ऐसा निराशा जनक ग्रन्थ आज तक नहीं पढ़ा। ...मेरी सम्मति में आर्य समाज" सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं की उत्तमताओं से उन्नत नहीं हो रहा है, अपितु उसकी उन्नति का कारण उसके सस्थापक का विशुद्ध चरित्र हैं।"(यंग इन्डिया मई १९२४)

१९वीं शताब्दी का यह महान् ग्रन्थ १८७४ में महर्षि दयानन्द द्वारा लिखा गया। इसका प्रथम सस्करण १८७४ में निकला उस समय इस ग्रन्थ में केवल १२ ही समुल्लास थे। स्वामी जी ने इसका दूसरा सस्करण १८८४ में लिखा इस सस्करण में १४ समुल्लास हैं। स्वामी जी के मरने के बाद यह सस्करण प्रकाशित हुआ। १९८४ से १९५९ तक अनेक सस्करण तथा ६ लाख १७ हजार प्रतियां छप चुकी है।

१९ वीं शती के अन्त और २० वीं शती के पूर्वार्द्ध मे देश में जो राजनैतिक उथल-पुथल मची, राष्ट्रीयता की जो महान् लहर आई, उसका बहुत कुछ श्रेय "सत्यार्थ प्रकाश' को है। १८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जो आक्रमण हुए वे केवल राजनैतिक ही नहीं बल्कि सास्कृतिक भी थे। सांस्कृतिक, एव धार्मिक दृष्टि से वह हमला राजनैतिक हमले से कहीं अधिक खतरनाक था। देश ईसाईयत के रंग में रग दिया जाय, इसके लिए योजना बद्ध कार्यवाई शुरू हुई परन्तु सत्यार्थ प्रकाश ने इसके विरोध में जो क्रांति की उसके फल स्वरूप यह योजना पूर्ण रूपेण सफल न हो सकी। इस ग्रन्थ के निर्माता महर्षि दयानन्द जी का हृदय महान् देश प्रेम,से ओत-प्रोत था। उनकी राष्ट्रीयता केवल राज्य परिवर्तन तक ही सीमित नहीं थी, पराधीनता के पाश से मुक्ति का अर्थ केवल शारीरिक-दासता की ही मुक्ति नहीं थी। उनकी दृष्टि में मनुष्य के शारीरिक पतन के पूर्व उसका मानसिक पतन होता है। अत महर्षि दयानन्द ने अपने इस ग्रन्थ में मानसिक गुलामी की मुक्ति के लिए जनता को आवाहन किया। कोई भी राष्ट्र राजनैतिक पराधीनता के पूर्व मानसिक, दृष्टि से पराभूत होता है। उसका सामाजिक, चरित्र इतना गिर जाता है कि जब कोई उसके सामाजिक स्तर को ऊंचा बनाने के लिए प्रयत्न करता है तब उसका वह प्रबल विरोधी हो जाता है।

महर्षि दयानन्द के समक्ष समस्त हिन्दु समाज पाखण्ड रूढ़ियों, अन्ध, श्रद्धा, पोपलीला एवं अंध विश्वास का चैलेन्ज लिए खड़ा था। सन् ११९२ ई० के लगभग भारत के महान् सम्राट पृथ्वीराज की हार से इस देश की गुलामी की शृंखला आरम्भ होती है। स्वय पृथ्वीराज की हार नहीं, बल्कि महान् भारत जिन कारणों से पराभूत हुआ उसमें अंध विश्वास भी एक कारण रहा। राजनैतिक दासता भी महर्षि दयानन्दके समक्ष एक दूसरे चैलेन्ज के रूप में खड़ी थी। परन्तु इस ललकार से जूझने के पूर्व वे सामाजिक रूढ़ियों से जूझना चाहते थे। पाठक आज हम १९६५ के स्पुतनिक युग में हैं हमारे सामने अंध विश्वास रूढ़ियां पोपलीला कोई महत्व नहीं रखती हैं। परन्तु जरा आप ८०।८१ वर्ष पूर्व की सामाजिक दशा की कल्पना करें और उस परिस्थिति से जूझने वाले उस महान् योद्धा के उस महान् कार्य की मीमांसा करें तो आप समझेंगे कि सचमुच वह कार्य अपने में जितना महान् होगा उतना ही वह कठिन एवं दुस्तर भी रहा होगा।

स्वामी दयानन्द जी एक चतुर शिल्पी थे। वे राष्ट्र को जिस प्रकार से देखना चाहते थे उसके रूप का सृजन, राष्ट्र के बच्चों से ही आरम्भ किया। कुम्भकार मृत-पीड को मन चाहा आकार देताहै उसके बादपरिपक्व अवस्था में उसका वह आकार स्थिर होताहै। उसीप्रकार महर्षिने भी बच्चों के मानसिक स्तर के निर्माण की बात प्रथम सोची। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास का अध्ययन हम इसी दृष्टि से करें।

बड़े-बड़े शूरवीरों को जो अकेले ही सैकड़ों में अपना जौहर दिखाते हैं भूत-प्रेत के मानसिक भय के आगे हथियार डाल देते देखता हूं। फलित-ज्योतिष का संस्कार बच्चों पर इस प्रभावकारी ढग से पड़ता है कि जीवन भर वह इन चक्करों में पड़ा रहता है। उसके सारे व्यवहार आकाशीय ग्रहों के गीत से प्रभावित रहते हैं। कभी शनि की दशा तो कभी मगल की दशा के चक्कर में वह पड़ा रहता है। राष्ट्र के बड़े से कर्णधार भी इन ग्रहों के जाल से बड़े भयभीत रहते हैं। भूत प्रेत के मिथ्या डर से वह इतना पराभूत रहता है कि गहन अंधेरी रात में श्मशान के रास्ते जाने से उसकी धोती ढीली हो जाती है इसका राष्ट्रीय प्रभाव क्या होता है। इस पर विचार करें।

अगर बाल्यावस्था से ही हृदय भयभीत है तो आगे चलकर जीवन सदा ही भयभीत रहेगा। राष्ट्र का एक-एक बच्चा राष्ट्रीय ईकाई है। अगर वह भयभीत है। तो राष्ट्रीय चरित्र कभी भी वर्चस्व नहीं हो सकता। इतिहास साक्षी है कि हमारे अनेकों पराजय इन ज्योतिषियों के मिथ्या विश्वास के ही कारण हुए हैं। जब तक हम जन्म पत्रों,भूत-प्रेतों, साधु फकीरों के चमत्कारों के चक्कर में रहेंगे हमारा राष्ट्र कभी भी तेजस्वी नहीं हो सकता। राष्ट्र निर्माण की आधार शिला ये राष्ट्र के छोटे-छोटे बच्चे ही हैं। अतः इनके हृदय से इस कल्पित मिथ्या विश्वासों को हटाना परम राष्ट्रीय कर्तव्य है और सच्ची राष्ट्रीयता की आधार शिलाहै।

स्वामी जी के पूर्व कई सुधारक हो गये हैं, उनकी वाणियां उनके शब्द आज भी हैं परन्तु किसी सुधारक ने भी राष्ट्र के इस भयंकर रोग की ओर ध्यान नहीं दिया। इस रोग की चिकित्सा तो दूर रही, उनकी कल्पना में भी यह बात नहीं आई कि देश के बच्चे का निर्माण प्रथम है।

सत्यार्थ प्रकाश का दूसरा समुल्लास जहां इन मिथ्या विश्वासों की धज्जियां उड़ाता है वहां राष्ट्र के नौनिहालों का निर्माण किस ढग से किया जाय इस पर भी यथेष्ट प्रकाश डालता है।

राष्ट्र की शिक्षा पद्धति क्या हो?

इस पर विचार, ऋषि दयानन्द ने काफी गहरा किया है। सत्यार्थ-प्रकाश जिस युग में लिखा गया, उस समय देश में जो शिक्षा पद्धति थी, उससे शिक्षण प्राप्त युवकों के अन्दर अपनी सस्कृति, समाज धर्म के प्रति एक विद्रोह की भावनायें पनपती थी। वे देश-भक्ति के स्थान पर अंग्रेज प्रभुओं की प्रशस्ति गान की कामना करते थे। लार्ड मेकाले, जो इस शिक्षा पद्धति का पिता था, उसकी कल्पना यही थी कि मेरे द्वारा निर्धारित शिक्षा-मार्ग से शिक्षित युवक हिन्दुस्तानी रग से हिन्दुस्थानी भले ही रहे पर मन से पूर्ण रूपेण अंग्रेज के क्रीतदास बन कर रहें। महर्षि दयानन्द की पैनी दृष्टि ने अंग्रेजों की इस भांप को जांच लिया, परख लिया, अतः इसके विरोध में सत्यार्थ प्रकाश में एक नवीन शिक्षा प्रणाली (जो प्राचीन एव वैदिक है) की रूप-रेखा प्रस्तुत की। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की देन सत्यार्थ प्रकाश ही है। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत अपनी सस्कृति समाज सभ्यता के प्रति अटूट निष्ठा के गहरे विचारों से भरा हुआ हृदय एव सुलझे हुए मस्तिष्क को लेकर इस शिक्षणालय से युवक निकले, ऐसी कल्पना ऋषि दयानन्द ने की और इसकी बुनियाद सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास मे रखा। पाठक? जरा आप इस समुल्लास को राष्ट्रीय भावना की दृष्टि से पारायण करें। आप अपनी दृष्टि को आज से ८०।८१ वर्ष पूर्व ले जाइए और उस युग की कल्पना करें। उस समय सारा भारत अंग्रेजों के आतक से आतकित था। लोग सहमें हुए थे। दबे हुए से थे। राष्ट्र क्या है, इसे वे जानने-समझने के लिए तैयार नहीं थे क्योंकि उनकी आत्मा तैमीन के बोझों से दबी हुई थी। जब राष्ट्रीय

(शेष पृष्ठ १२ पर

पंजाब का विभाजन देश के साथ खिलवाड़

देशभक्त चिंतित, देशद्रोही प्रसन्न—भारत सरकार को हजारों तार

कांग्रेस के निर्णय से देश भर में भयंकर रोष

देशभर की हजारों आर्यसमाजो ने अपने विशेष अधिवेशनों में पंजाबी सूबे के विरोध में प्रस्ताव पारित करते हुए सरकारी निर्णय का विरोध करने के लिए प्रण किया। प्रस्ताव की प्रतिलिपियां, राष्ट्रपति, प्रधान-मंत्री गृहमन्त्री सार्वदेशिक सभा तथा समाचार पत्रों को भेजी गई। निम्न आर्यसमाजों का नाम मुख्य है—

आर्यसमाज घाटमपुर, उमरी, बीठूपुर, मुरलीपुर, बमना, असधना, मथुरापुर, चौबेपुर, मलौली, रनजीत-पुर केवड़िया, देवली, कुंवरपुर, कर्नापुर, पहरी लालपुर, कुड़नी, कैथा, तीमारपुर (दिल्ली) चण्डीगढ़, नगर आर्यसमाज झांसी, फैजाबाद, कोटद्वार सावली आदि पंचपुरी, नरही (लखनऊ) फीरोजपुर छावनी, कालपी, कानपुर के आर्यसमाज लाजपतनगर, शास्त्री-नगर, गोविन्दनगर, गोविन्दनगर-स्त्री आर्यसमाज, ग्वालटोली, आर्य तर्क-मण्डल, जूही, सीसामऊ, सीसामऊ-स्त्री समाज, रेलपार, नवाबगंज, स्त्रीसमाज, नवाबगंज, मेस्टन रोड-केन्द्रीय आर्यसभा, देवास, खुरजा, भाटापुरा, नेमदारगंज (गया), हापुड़ दयानन्द भवन नागपुर, सोहसराय, देवबन्द महिला आर्यसमाज बिसौली, साठखेड़ा, इन्दौर, किरावली लश्कर, बम्बई (पटेलभाई), मारहरा (एटा), (एटा), बरेटा मण्डी, अकोला, नार-नौल, गोविन्दपुरी (मेरठ), बैर (भरतपुर), सुलतान बाजार हैदराबाद, जगाधरी, इमली खेड़ा (सहारनपुर), सुलतानपुर लोधी, न्यू कालोनी गुड़-गांवा, राजकोट, बैंक बाजार पानीपत, नन्दा नगर (इन्दौर), मल्हारगंज (इन्दौर), हंसापुरी (नागपुर), वजीर-गंज (गोंडा), जौनपुर, राजकोट जय-पुर (कृष्णपोल बाजार), खांवपुर (अलवर), लाजपत नगर (कानपुर), कोसीकलां, देवरिया, पुसद, सीसामऊ (कानपुर), नकुड़ (सहारनपुर), देहरा गोपीपुर, पंजाब एकता समिति लारेन्स रोड अमृतसर गुना, रायबरेली, सरदारपुरा (जोधपुर), बिहारीपुर (बरेली) दयानन्द सेवाश्रम बदायूं, हस्पताल रोड जम्मू, कैथल (करनाल) रायपुर, मण्डी, उस्मानाबाद रुद्रमूली, नगीना, माडलटाऊन लुधियाना, सुसनेर सदर बाजार झांसी, रतलाम, राज-मंडी आगरा, जालना, गुना, डलहौजी छावनी, एटा, असुरन (गोरखपुर), बाडमेर, काशीपुर, कटरा प्रयाग, बंगा, रेलबाजार कानपुर, सरकड़ा, भोजपुर खेड़ी, बकेवर, आमला, कांठ, धर्मपेट नागपुर, बलरामपुर, गोंडा महमदाबाद, मुरार (ग्वालियर) महू-नार, रानी की सराय आजमगढ़, जनकनगर (सहारनपुर), निरपुड़ा (मेरठ), भरतपुर फतहपुर बिश्नोई, खन्ना, करोलबाग (दिल्ली), हिन्दू एकता समिति फतहबाद, आर्यस्त्री समाज रुड़की, अर्जुननगर गुड़गावां, हरिद्वार, होली (उस्मानाबाद), स्त्री आर्यसमाज देहरादून, गोरखपुर, जौन-पुर साठखेड़ा, (मन्दसौर) कन्या गुरु-कुल महाविद्यालय हाथरस, लोअर बाजार शिमला, बरनाला,

इनके अतिरिक्त अन्य भी अनेक स्थानों पर पंजाबी सूबे के विरोध में प्रस्ताव पारित करके भारत-सरकार के पास भेजे गये हैं। जिसकी सूचना सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में निरन्तर प्रतिदिन बड़ी संख्या में आ रही है।

(पृष्ठ ६ का शेष)

धर्म संग्रह का विचार करे, इत्यादि पदार्थ और बल की वृद्धि कर शत्रु को जीतने के लिए सिंह के समान पराक्रम करे, चीता के समान छिप-कर शत्रुओं को पकड़े और समीप में आए बलवान् शत्रुओं से शशक (खरगोश) के समान भाग जाय और पश्चात् उनको छल, बल से जीते।" स्वामी दयानन्द ने लिखा है "जैसे प्राणियों के प्राण शरीर को कृषित करने से क्षीण हो जाते हैं वैसे ही प्रजाओं को दुर्बल करने से शासकों के प्राण अर्थात् बलादि बन्धु-बान्धवों सहित नष्ट हो जाते हैं। अतः राजा, राजसभासद् और मंत्रियों को चाहिए कि जिससे राजकार्य की सिद्धि के लिए ऐसा प्रयत्न करें कि जिससे राजकार्य यथावत् सिद्ध हो जो शासन राज्यपालन में सब प्रकार तत्पर रहता है उसको सुख बढ़ता है।

शासन व्यवस्था को सुदृढ़ और सुचारु रूप से चलाने के स्वामी जी ने सभी अधिकार केन्द्री भूत करने का समर्थन नहीं किया है परन्तु स्वायत्त शासन पर बल दिया है और लिखा है "दो, तीन, पांच और सौ ग्रामों के बीच में एक एक राजस्थान रखे जिस में यथायोग्य भृत्य और कामदार आदि राजपुरुषों को रखकर सब राज्य के कार्यों को पूरा करें। एक एक ग्राम में एक एक प्रधान पुरुष को रखे, उन्हीं दस ग्रामों के ऊपर दूसरा, उन्हीं बीस ग्रामों के ऊपर तीसरा, उन्हीं सौ ग्रामों के ऊपर चौथा और उन्हीं सहस्र ग्रामों के ऊपर पांचवां पुरुष रखे अर्थात् जैसे आजकल एक ग्राम में एक पटवारी, उन्हीं दस ग्रामों में एक थाना और दो थानें पर एक बड़ा थाना और उन पांच थानों पर एक तहसील और दस तहसीलों पर एक जिला किया गया है वह मनु महाराज के बताये नियमों के आधार पर बनाया गया है और इस प्रकार ग्राम-पति गुप्त रूप से ग्राम के दोष को दस-ग्राम पति, दस ग्रामाधिपति बीस ग्रामाधिपति को, वह शतग्रामाधिपति को, वह सहस्र को प्रतिदिन बताया करे। और बीस २ ग्राम के पंच अधि-पति सौ सौ ग्राम के अध्यक्ष को और वे सहस्र २ के दस अधिपति दस अधिपति दस सहस्र के अधिपति को और लक्ष ग्रामों की राजसभा को प्रति-दिन की वास्तविक स्थिति को जनाया करें। और वे सब राजसभा महाराज सभा अर्थात् सार्वभौम चक्रवर्ती महा-

राज समझें सब भूगोल का वर्तमान जनाया करें।

इस प्रकार राजा, राजसभासद् मंत्रियों को करने का वर्णन स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में किया है यदि वेदोक्त विधि से प्रजा-तन्त्र का विकास हो तो हमारी बहुत सी कठिनाइयां समाप्त हो जायंगी।

—:o:—

(पृष्ठ १० का शेष)

शिक्षा ही नहीं तो राष्ट्र क्या है। वे क्या समझें। अंग्रेजी सरकार ने यत्र-तत्र स्कूल एवं कालेजों को खोल रक्खा था परन्तु उससे निकले युवक देश भक्त नहीं बल्कि गुलामी से प्रेम करने वाले निकलते थे। सत्यार्थ-प्रकाश ने ऐसी शिक्षा के विरुद्ध सिंह-नाद किया।

—:o:—

आर्य समाज बापूनगर मेरठ

के वार्षिक निर्वाचन में सर्वश्री जानकीनाथ प्रधान, लालचन्द जी तथा गोविन्द लाल जी उपप्रधान, हरवंशलालजी ओबेराय मंत्री देवेश्वर-चन्द्र गुप्ता तथा राजकुमार जी तलवाड़ उपमंत्री, रामनाथ जी चोपड़ा कोषाध्यक्ष, तथा पुरुषत्त जी लेखा-निरीक्षक चुने गए।

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ६६ वां वार्षिकोत्सव

देश की सुप्रसिद्ध आर्य शिक्षण संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ६६ वां वार्षिकोत्सव ११, १२, १३, १४ अप्रैल को मनाया जायगा जिसमें देश के तथा आर्यसमाज के नेता व संन्यासी महानुभाव पधारेंगे और आर्यसमाज की वर्तमान समस्याओं पर अपने विचार प्रगट करेंगे। इस उत्सव पर वेद सम्मेलन तथा संस्कृत सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया गया है। आयुर्वेद तथा हिन्दी की वर्तमान समस्याओं पर विचार किया जायगा।

गुरुकुल शिक्षा प्रणालियों के प्रेमियों से प्रार्थना है कि वे इस अवसर पर पधारने की कृपा करें।

वीर सावरकर के निधन पर शोक

आर्य समाज दयानन्द सेवाश्रम बदायूं ने श्री ... एडवोकेट की अध्यक्षता में शोक प्रस्ताव पारित किया।

आर्य समाज कोसी कलां ने वीर सावरकर के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया।

आर्य समाज, देवबन्द

ऋषि बोधोत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया। श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने महर्षि का गुणानुवाद करते हुए कहा कि यदि हिन्दू समाज महर्षि के बताए हुए मार्ग पर चलता तो राष्ट्र इस भयंकर विपत्ति में न फंसता।

आर्य समाज देवबन्द के वार्षिक चुनाव में।

प्रधान:—सर्वश्री ला० बद्रीप्रसाद जी
उपप्रधान:—„ शम्भूनाथ जी आहूजा
मन्त्री:—„ विश्वम्भरदेव जी शास्त्री
उपमन्त्री—„ मोहनलाल जी पटवारी तथा मोहनलाल जी मण्डी वाले
कोषाध्यक्ष:—सर्वश्री बाबूराम जी मण्डी वाले
पुस्तकाध्यक्ष:—„ सेवाराम जी शर्मा एम० ए०
आय व्यय लेखा निरीक्षक:—श्री मा० प्रतापसिंह जी शर्मा

आर्य वीर दल गाजियाबाद

सर्वश्री ... संचालक श्रीकृष्ण, वेदप्रकाश आर्य सहायक, रामकुमार गोयल शाखा सचालक, डा० मूलराज अरोड़ा सरक्षक सत्यपाल मन्त्री, अरविन्द कुमार उपमन्त्री, महेन्द्रकुमार मित्तल कोषाध्यक्ष, विजय कुमार गोयल पुस्तकाध्यक्ष तथा शिवकुमार सिंघल शाखा नायक चुने गए।

आर्यसमाज (सेक्टर) चण्डीगढ़

में सर्वश्री नानकचन्द पंडित प्रधान, सन्तराम सैनी, प्रि० हरिराम, प्रि० त्रिलोकीनाथ, प्रकाशचन्द महाजन तथा श्रीमती विद्यावती अग्रवाल उपप्रधान, देशराज मलिक मन्त्री, टेकराम, रामप्रताप, विजयकुमार तथा श्रीमती मलिक उपमन्त्री रामकृष्ण गुप्त कोषाध्यक्ष अविनाशीलाल पुस्तकाध्यक्ष तथा निरीक्षक रामलाल जी जौहरी चुने गए।

आर्य समाज बदायूं

के निर्वाचन में सर्वश्री शान्तिस्वरूप जी प्रधान, सियाराम जी एडवोकेट, धर्मपाल जी रस्तोगी, श्री कुंजबिहारीलाल जी उपप्रधान, राजाराम जी आर्य मन्त्री, प्रभुप्रकाश जी एडवोकेट, सुखराम जी सर्राफ, रामचन्द जी अध्यापक उपमन्त्री, रामस्वरूप जी वर्मा कोषाध्यक्ष, ओ३मप्रकाश जी वैश्य पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज खण्डवा

की ओर से सेठ कन्हैयालाल जी खण्डेलवाल के निवास पर श्री बी०ए० भंडारी प्रधान आर्यसमाज की अध्यक्षता में होली सोत्साह मनायी गया।

आर्य समाज शामली

की ओर से पवित्र होली धूमधाम से मनाई गई। ... ज्वालापुर और टंकी के क्षेत्र में विशेष यज्ञ-हवन हुए।

आर्य समाज ..., बलरामपुर

के चुनाव में श्री रामप्रकाश जी वर्मा प्रधान हुए।

आर्य समाज हरिद्वार

के निर्वाचन में सर्वश्री देवदासजी प्रधान केशोप्रसादजी जिज्ञासु उपप्रधान, केहरसिंहजी एम० ए० मन्त्री, श्वेतकेतु जी विद्यालंकार ... उपमन्त्री, हरिहरजी कोषाध्यक्ष नत्थनलालजी पुस्तकाध्यक्ष तथा कर्मचन्द जी निरीक्षक चुने गए।

आर्य समाज पुल बंगश दिल्ली

में दयानन्द धर्मार्थ होमियो औषधालय और वाचनालय से जनता भारी लाभ उठा रही है।

आर्य समाज जौनपुर

का वार्षिकोत्सव दि० ७ से १० अप्रैल तक मनाया जावेगा। अनेक आर्य विद्वान पधारेंगे।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

नई दिल्ली (राजौरी गार्डन मे श्री जे० आर० कोचर जी महोदय के गृह पर तारीख ८ मार्च से श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक के पौरोहित्य में प्रातः-सायं सम्पूर्ण यजुर्वेद से यज्ञ हो रहा है। प्रत्येक मन्त्र पाठ के साथ मन्त्र का भावार्थ भी पढ़ा जाता है। अनेक आर्य नर-नारी यज्ञ में भाग ले रहे हैं। ता० १८ मार्च को पूर्णाहुति होगी।

गायत्री महायज्ञ

श्री कर्मचन्द जी खन्ना के गृह पर राजौरी गार्डन नई दिल्ली में १ से ५ मार्च ६६ तक श्री प०देवव्रतजी धर्मेन्दु, आर्योपदेशक के पौरोहित्य में गायत्री महायज्ञ प्रतिदिन २ घण्टे तक होता रहा। राजौरी गार्डन के आर्य स्त्री पुरुष भारी संख्या में इस यज्ञ में पधारते रहे।

पंजाबी सूबा

निम्न समाजों ने भी पंजाबी सूबे का विरोध किया है।

आर्य समाज पहासू, डेरा बाबानानक, दयानन्द गंज इन्दौर भरथना, बीसलपुरा, शिवहारा (बिजनौर, बांकनेर (अलीगढ़)।

आर्यसमाज कलासी लाईन सहारनपुर, आर्यसमाज मानसा, आर्यसमाज फरीदाबाद टाउनशिप, आर्यसमाज ठठियारी मुहल्ला बटाला, आर्यसमाज माडल-टाउन सोनीपत, आर्यसमाज, प्रागपुर कांगड़ा, आर्यसमाज मदसाली (होशियारपुर) आर्यसमाज कुन्दरकी, आर्यसमाज श्री करनपुर, आर्यसमाज शामली, आर्यसमाज विनयनगर नई दिल्ली आर्य-जहांगीराबाद महिला आर्यसमाज सदर लखनऊ आर्यसमाज भोपाल, आर्यसमाज महेन्द्रगढ़, आर्यसमाज नवांशहर दिल्ली, आर्यसमाज कपूरथल, आर्यसमाज ... वैदिक संस्थान, बालावाली, आर्यसमाज बिलासपुर, आर्यसमाज सुलतानपुर, आर्यसमाज अलनकठ, आर्यसमाज इलाहाबाद।

चन्द्रनगर, श्री गंगानगर, कोसी-कलां, मोहना, सरसपुर, अहमदाबाद, मुबारकपुर, टांडा, माडल टाउन अम्बाला, कुरेसनगर अहमदाबाद, टमकोर (भूझनू), बादा, सरैया (कानपुर), परमानन्द कालोनी बीकानेर, मोदीनगर, शिवपुरी।

छात्र-छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान मे ता० १८ फरवरी १९६६ को ऋषि मेला रामलीला मैदान मे मध्याह्न १२ बजे से स्कूलों के छात्र-छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता "ऋषि दयानन्द के उपकार" विषय पर बड़े समारोह पूर्वक हुई जिसकी अध्यक्षता माननीय श्री सोमनाथजी मरवाहा एडवोकेट ने की लगभग २० छात्र-छात्राओंने पूरी तय्यारी के साथ इसमे भाग लिया। पण्डाल जनता से ठसा-ठस भरा था।

श्री सोमनाथ जी मरवाहा एडवोकेट

श्री सोमनाथ जी मरवाहा ने आर्य्य-युवक परिषद् को १०१) ६० दान में देने की कृपा की और छात्र-छात्राओं को अपना आशीर्वाद भी दिया।

परिषद् के प्रधान श्री देवव्रत जी धर्मेन्दु ने श्री मरवाहा जी को दान के लिए तथा आर्य्य केन्द्रीय सभा को मुख्य मच पर प्रतियोगिता आयोजित करने की सुविधा प्रदान करने के लिए बहुतर धन्यवाद दिया।

१ जिन महानुभावों ने अभी तक अपना वार्षिक चन्दा नहीं भेजा। कृपया तुरन्त भेजें।

२ ... भेजने में शीघ्रता करें।

आर्यसंन्यासी श्रीस्वामी सत्यानन्दजी महाराज
का प्रेस सम्वाददाताओं की गोष्ठी में महत्वपूर्ण वक्तव्य

आर्य समाज पंजाब का विभाजन न होने देगा

स्वामी जी द्वारा आत्माहुति की घोषणा

राष्ट्र के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती ने १५ मार्च से पंजाब की एकता और अखण्डता के लिए आत्माहुति देने के अपने निश्चय की घोषणा करते हुए सभी देश प्रेमियों से अपील की है कि वे पूरी शक्ति के साथ सीमान्त प्रदेश पंजाब के बटवारे का तीव्र विरोध करें।

कांग्रेस कार्य समिति द्वारा ९ मार्च को सिद्धान्तः पंजाबी सूबे की मांग स्वीकार करने को साम्प्रदायिक तत्वों के आगे घुटने टेकने को दुर्भाग्य पूर्ण बताते हुए स्वामी जी महाराज ने कहा कि इससे देश में विभाजन प्रवृत्तियों को भारी प्रोत्साहन मिलेगा।

आपने कहा कि हमारा संघर्ष किसी भी वर्ग या जाति के विरुद्ध न होकर उस मनोवृत्ति के विरुद्ध है जिसके कारण पहले भी देश का बंटवारा हुआ और आज भी उसी विष को, भाषा की आड़ में फैलाया जा रहा है। अतः हमारी यह निश्चित मांग है कि किसी भी स्थिति में पंजाब का विभाजन न होनाचाहिए और समय समय पर स्वर्गीय प्रधानमन्त्री प० नेहरू ने जो आश्वासन जनता को संसद में और संसद के बाहर दिए वे वर्तमान सरकार को दृढ़ता से उन आश्वासनों को पूरा करना चाहिए। आपने कहा कि आज पंजाब के विरुद्ध तीव्र रोष फैला है। यह स्वाभाविक ही है। मेरी इच्छा है कि पंजाब के सभी वर्ग एक साथ मिल कर कांग्रेस कार्य समिति के निर्णय के विरुद्ध रोष प्रकट करें किन्तु हमें पूर्णतया अहिंसात्मक रहते हुए सभी वर्गों में सद्भावना और प्रेम बनाए रखना चाहिए। हम कभी भी यह न भूलें कि हम सर्वत्र परस्पर प्रेम से एक साथ रहने के लिए ही यह संघर्ष कर रहे हैं।

आपने कहा कि मेरा संकल्प है कि मैं पंजाब की एकता और अखण्डता के लिए अपनी आहुति दे दूंगा। मुझे विश्वास है कि देश से प्रेम करने वाला प्रत्येक व्यक्ति पंजाब की एकता के लिए इस महान् यज्ञ में अपना आशीर्वाद और स्नेह प्रदान करेगा।

सरकार को अपना यह काला निर्णय बदलना ही होगा, इसके लिए प्रत्येक बलिदान देनेको हम तैयार हैं।

(पृष्ठ ३ का शेष)

सकता है कि विघटनकारी प्रवृत्तियों के साथ यदि इसी प्रकार समझौता करने की तैयारी सरकार दिखाती रही तो देश को खण्ड-खण्ड होने से बचाया नहीं जा सकता। राष्ट्रद्रोहियों को संसार के किसी अन्य देशमें इस प्रकार पुरस्कृत करने की परम्परा नहीं है जैसी अपने देश में चल पड़ी है यह मनोवृत्ति देश को सर्वनाश की ओर ले जाने वाली है। चाहे मिजोलैण्ड हो, चाहे नागालैण्ड हो, चाहे पंजाबी सूबा हो, चाहे कश्मीर हो—राष्ट्रद्रोहियों के मन में जब तक किसी न किसी प्रकार पुरस्कृत होने की भावना बनी रहेगी तब तक वे हमेशा विद्रोह का झण्डा बुलंद करते रहेंगे। आवश्यकता इस बात की है कि समस्त राष्ट्रद्रोहियों के समक्ष यह बात दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट हो जानी चाहिए कि वे केवल दण्ड के ही पात्र हैं, पुरस्कार के नहीं। यदि इतना विवेक भी नहीं आया तो सर्वनाश की खाई तैयार है।

विवेक भ्रष्टानां भवति
विनिपातः शतमुखः।

संयुक्त पंजाब संरक्षण समिति द्वारा
१४-३-६६को सर्वसम्मति से स्वीकृत प्रस्ताव

यह संयुक्त पंजाब संरक्षण समिति ९ मार्च को कांग्रेस कार्य समिति द्वारा पंजाबी सूबे की मांग सिद्धान्ततः स्वीकार करने को, सरकार व स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री नेहरू द्वारा (संसद में व संसदसे बाहर) दिए गए आश्वासनों के विरुद्ध, राष्ट्र हित के लिए हानिकर व पंजाब की शान्ति, एकता और उन्नति के लिए अत्यन्त अनुचित एवं अविश्वास की भावना के विपरीत पग समझती है।

इस समिति का यह दृढ़ विश्वास है कि भारत के सीमान्त प्रदेश पंजाब का विभाजन किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।

अतः यह समिति सरकार से आग्रह पूर्वक यह मांग करती है कि वह कांग्रेस कार्य समिति के निर्णय को अस्वीकार करके निष्पक्ष रूप से विचार करे और कोई ऐसा सर्वसम्मत हल ढूंढने का यत्न करे जिससे सभी पक्षों के साथ न्याय हो।

इस समिति का यह विश्वास है कि सरकार व कांग्रेस कार्य समिति ने सन्त फतहसिंह की धमकियों से डरकर ही पंजाब का विभाजन सिद्धांततः स्वीकार किया है। अतः यह समिति आवश्यक समझती है कि हम बड़े से बड़ा बलिदान देकर भी सरकार को बाधित करें कि वे राष्ट्र हित की दृष्टि से अपने निर्णय पर पुनर्विचार करें।

अतः यह समिति स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती के १५ मार्च से आमरण अनशन को आरम्भ करने की स्वीकृति देती है। समिति देश की समस्त राष्ट्र प्रेमी जनता से पंजाब का विभाजन रोकने में सहयोग देने की अपील करती है।

यह समिति जनता से पूर्णतया शान्त, अहिंसात्मक रहने और सद्भावना पूर्ण हिन्दू सिक्ख एकता का वातावरण बनाए रखने की अपील करती है।

यह समिति केवल राष्ट्र हित की भावना से यह संघर्ष आरम्भ कर रही है। समिति का यह संघर्ष किसी भी वर्ग विशेष के विरुद्ध न होकर सरकार द्वारा उत्पन्न उस परिस्थिति को रोकने के लिए है जिससे पंजाब की एकता, सुरक्षा और उन्नति संकट में पड़ गयी है।

समिति को पूर्ण विश्वास है कि देश को अखण्ड और साम्प्रदायिकता की विषाक्त भावना से मुक्त रखने के इच्छुक सभी वर्गों का सहयोग आशीर्वाद उसे प्राप्त होगा और कांग्रेस व सरकार को अपने अनुचित निर्णय पर पुनर्विचार कर पंजाब को एक रखना ही होगा।

सार्वदेशिक साप्ताहिक का प्रेस एवं रजिस्ट्रेशन आफ बुक एक्ट की धारा १९ डी के स्वामित्व आदि के सम्बन्ध में विवरण:—

१. प्रकाशन का स्थान	नई दिल्ली-१
२. प्रकाशन की बारी	साप्ताहिक
३. मुद्रक, नाम, राष्ट्रीयता तथा पता:	रघुनाथप्रसाद पाठक भारतीय महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१
४. प्रकाशक, नाम, राष्ट्रीयता और पता	(संख्या तीन के अनुसार)
५. सम्पादक, नाम, राष्ट्रीयता और पता	(संख्या तीन के अनुसार)
६. उन व्यक्तियों के नाम पते जो इस अखबार के मालिक या साझीदार हैं या इसकी सारी पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक हिस्सेदार हैं।	स्वामिनि, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

मैं रघुनाथ प्रसाद पाठक यह घोषित करता हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है।

७-३-६६ (ह०) रघुनाथ प्रसाद पाठक प्रकाशक

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता	१०)
अथर्ववेद संहिता	८)
यजुर्वेद संहिता	४)
सामवेद संहिता	३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	२)५०
सत्यार्थप्रकाश	२)
संस्कारविधि	१)२५
पंच महायज्ञ विधि	)२५
व्यवहार भानु	)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग	५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र	१) सैकड़ा
ओ३म ध्वज २७×४० इञ्च	२)५०
,, ,, ३६×५४ इञ्च	४)५०
,, ,, ४५×६७ इञ्च	६)५०
कर्त्तव्य दर्पण	)४०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश	३)७५
मराठी सत्यार्थप्रकाश	१)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश	३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति	७)
शिक्षण-तरङ्गिणी	५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी	७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी	५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र	)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से)	)५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्	)५०
कठोपनिषद्)५० प्रश्नोपनिषद्	)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्	)२५
ऐतरेयोपनिषद्)७५ तैत्तिरीयोपनिषद्	१)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य	१)२५
मृत्यु और परलोक	१)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य	)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला	३)
बृहद् विमान शास्त्र	१०)
वैदिक वन्दन	५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत)	३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी)	३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द)	२)५०
अभ्यास और वैराग्य	१)६५
निज जीवन वृत वनिका (सजिल्द)	)७५
बाल जीवन सोपान	१)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म	)६२
उपनिषद् कथामाला	)७५
सन्तति निग्रह	१)२५
नया संसार	)६०
आदर्श गुरु शिष्य	)७५
कुलियात आर्य मुसाफिर	६)
पुरुष सूक्त	)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत)	१)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर	)६२
स्वर्ग में हड़ताल	)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा	४)५०
भोज प्रबन्ध	२)७५
वैदिक तत्व मीमांसा	)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा	५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं	)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप	२)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द	)६२
वेद और विज्ञान	)७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन	)३७
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द	)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा	)५०
इराक की यात्रा	२)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र	)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र	)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां	)७५
बाल संस्कृत सुधा	)५०
वैदिक ईश वन्दना	)४०
वैदिक योगामृत	)६२
दयानन्द दिग्दर्शन	)७५
भ्रम निवारण	)३०
वैदिक राष्ट्रीयता	)२५
वेद की इयत्ता	१)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह	)७५
कर्म और भोग	१)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश	२)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श	)७५
वैदिक युग और आदि मानव	४)
वैदिक इतिहास विमर्श	७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम (पूर्वार्द्ध)	१)५०
,, ,, (उत्तरार्द्ध)	१)५०
वैदिक संस्कृति	)७५
मुक्ति से पुनरावृत्ति	)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज	)३७
आर्य समाज की नीति	)२५
सायण और दयानन्द	१)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू	५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश	)७५
वैदिक सूक्ति सुधा	)५०
ऋषि दयानन्द वचनामृत	)५०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र	)५०
संस्कार महत्व	)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व	)६२

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

गीता विमर्श	)७५
गीता की पृष्ठ भूमि	)४०
ऋषि दयानन्द और गीता	)१५
आर्य समाज का नवनिर्माण	)१२
ब्राह्मण समाज के तीन महापातक	)५०
भारत में मूर्ति पूजा	२)
गीता समीक्षा	१)

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	)३१
चरित्र निर्माण	१)१५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण	)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	)२५
दौलत की मार	)२५
अनुशासन का विधान	)२५
धर्म और धन	)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार	१)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली	)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि	)५०

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

कांग्रेस का सिरदर्द	)५०
आर्य समाज और साम्प्रदायिकता	)३१
भारत में भयंकर ईसाई षड्यंत्र	)२५
आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना	)२०
आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण	)६

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय	२)
आर्य समाज के महाधन	२)५०
एशिया का वेनिस	)७५
स्वराज्य दर्शन	१)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर	१)५०
भजन भास्कर	१)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण	२)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी	१)२५
सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास	)७५
सार्वदेशिक सभा के निर्णय	)४५
आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव	)६०
आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण	१)
आर्य समाज का परिचय	१)

सत्यार्थ प्रकाश

मंगाईये।

मूल्य २) नैट

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सा म वे द

(मूल मंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित)

भाष्यकार श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

(स्नातक गुरुकुल कांगड़ी)

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार (४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थी। तबसे इसकी भारी माग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है।

यह २८ पौंड सफेद कागज पर कपड़े की जिल्द और मूल्य ४ रुपये है भारी सख्या मे मगवाइये। पोस्टेज पृथक।

हिन्दू राष्ट्र को सच्चा मार्ग दिखाने वाली सर्वश्रेष्ठ धर्म पुस्तक

वैदिक-मनुस्मृति श्री सत्यकामजी

हिन्दी टीका सहित — हिन्दू धर्म ग्रन्थो मे चारो वेदो के पश्चात् एक मात्र प्रमाणिक पुस्तक यही है। यद्यपि वेदो का समझना साधारण जनो के वश मे नहीं पर मनुस्मृति को नागरी पढ़ा हुआ व्यक्ति भी समझ सकता है। ४९८, पृष्ठ मूल्य ४॥) साढे चार

बृहत् दृष्टान्त सागर सम्पूर्ण पाँचों भाग

पं० हनुमान प्रसाद शर्मा

इस ग्रन्थ मे वैदिक, लौकिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य आदि सभी विषयो के अच्छे से अच्छे दृष्टान्तों का सकलन किया है। ससार के अनेक महापुरुषों, सन्तो, राजाओ, विद्वानों एव सिद्धो के अनुभूत तथ्यो का अनोखा समावेश है। सच तो यह है कि यह अकेला ग्रन्थ सभी श्रेणी के लोगों के सभी प्रकार की मानसिक पीडाओ को मार भगाने के लिए पर्याप्त है। कथावाचक कथा मे, उपदेशक अपने प्रतिपाद्य विषय मे और अध्यापक इसके प्रयोग से छात्रो पर मोहिनी डालते हैं। बालक कहानी के रूप मे इसे पढकर मनोरजन का आनन्द ले सकते हैं। वृद्ध इस ग्रन्थ के पन्ने-पन्ने मे अपने भगवान् और उनके भक्तो की झाकी पा सकते हैं। मातायें इसे पढकर अपने मतलब का ज्ञान प्राप्तकर सकती हैं। इस प्रकार सबका ज्ञान इस पुस्तक से बढ सकता है। पृष्ठ सख्या ८६८

सजिल्द, मूल्य केवल १०॥) साढे दस रुपये, डाक व्यय २) अलग।

उपदेश-मंजरी—स्वामी दयानन्द जी के उपदेश हर आर्य समाजो को अवश्य अध्ययन करने चाहिए। पूना नगर मे दिए गय सम्पूर्ण व्याख्यान इसमे दिए गए है। मूल्य २॥ ढाई रुपये।

संस्कार विधि — इस पुस्तक मे गर्भाधान से लेकर १५ सस्कार कहे हैं जो, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास इन चारो आश्रमों मे क्रमानुसार करते होते हैं। मूल्य १॥) डेढ रुपये डाक खर्च अलग।

आर्यसमाज के नेता — आर्य समाज के उन आठ महान नेताओ, जिन्होंने आर्य समाज की नीव रखकर हिन्दू जाति पर बहुत बडा उपकार किया है। मूल्य ३) तीन रु० डाक खर्च १॥, डेढ रुपये।

महर्षि दयानन्द—जिस समय हिन्दू धर्म अन्धकार मे था, लोगों मे ढपोलशख बहुत बढ गया था उस समय स्वामी दयानन्दजी का जन्म हुआ और शिवरात्रि को महर्षि जी को सच्चा ज्ञान मिला। मूल्य ३)

कथा पच्चीसी—सतराम सत

जिसमे मनुष्य जाति का उद्धार करने के हेतु ही अनेक शास्त्रों में से भारत-भूषण स्वामी दयानानन्द जी न उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद पच्चीस कथाओ का सग्रह किया है। हमने उनको और भी सशोधित एव सरल बनाकर छापा है। मूल्य केवल १॥) डेढ रुपया डाक व्यय १।

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

१—अब तक सत्यार्थप्रकाश के कई संस्करण प्रकाशित हुए हैं।

२—इसकी दूसरी बड़ी विशेषता पैराग्राफों पर क्रमांक दिया जाना है।

३—अकारादिक्रम से प्रमाण सूची। पुस्तक का आकार १०× १३ इंच है। पृष्ठ संख्या ५८०, बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई क्लाथ बाइंडिंग - मूल्य लागत मात्र १५) पन्द्रह रुपये, एक साथ पांच कापी मंगाने पर ५०) पचास रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१—सांख्य दर्शन— मू० २.००
२—न्याय दर्शन— मू० ३ २५
३—वैशेषिक दर्शन—मू० ३ ५०
४—योग दर्शन— मू० ६ ००
५—वेदान्त दर्शन — मू० ५.५०
६—मीमासादर्शन— मू० ६ ००

उपनिषदप्रकाश—स्वामी दर्शनानन्दजी

इनमे लौकिक व पारलौकिक उन्नति की महत्वपूर्ण शिक्षाए भरी पडी हैं। मूल्य ६ ०० छ रुपया।

हितोपदेशभाषा ले० रामेश्वर 'प्रशांत'

'उस पुत्र से क्या लाभ जिसने अपने कुल का नाम कलकित किया है ऐसे पुत्र की माता यदि बाझ हो जाय तो उत्तम है' यही भावना पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन को सदा सताती थी। विद्वान् प० विष्णुशर्मा ने राजकुमारों को जो शिक्षा एव नीति की आख्यायिकायें सुनाई उनको ही विद्वान् प० श्री रामेश्वर 'प्रशान्त' जी ने सरल भाषा मे लिखा है। मूल्य ३) तीन रुपया।

अन्य आर्य साहित्य

(१) विद्यार्थी शिष्टाचार	१ ५०
(२) पचतत्र	३ ५०
(३) जाग रे मानव	१ ००
(४) कौटिल्य अर्थशास्त्र	१० ००
(५) चाणक्य नीति	१ ००
(६) भर्तृ हरि शतक	१ ५०
७) कर्तव्य दर्पण	१ ५०
८) वैदिक सध्या	४ ०० सैकडा
(९) वैदिक हवन मन्त्र	१० ०० सैकडा
(१०) वैदिक सत्सग गुटका	१५ ०० सैकडा
(११) ऋग्वेद ७ जिल्दो मे	५६ ००
(१२) यजुर्वेद २ जिल्दो मे	१६ ००
(१३) सामवेद १ जिल्द मे	८ ००
(१४) अथर्ववेद ४ जिल्दो मे	३२ ००
१५) वाल्मीकि रामायण	१२ ००
(१६) महाभारत भाषा	१२ ००
(१७) हनुमान जीवन चरित्र	४ ५०
(१८) आर्य सगीत रामायण	५ ००

हिन्दी के हर विषय की ५००० पुस्तकों की विस्तृत जानकारी वास्ते ४०० पृष्ठों की 'ज्ञान की कुन्जी' केवल १.७५ रुपया मनीआर्डर या डाक टिकट भेजकर प्राप्त करें।

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद, कृषि, बिजली, मोटर, पशुपालन, टेक्नीकल, डेरीफार्म, रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकडो पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४११९

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-१ | फोन २७४७७१ | चैत्र शुक्ला १ सवत् २०२३ | ३ माच १९६६ | दयानन्दाब्द १४२ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९०६

गुरुकुल कां.डी

आर्यसंन्यासी स्वामी सत्यानन्दजी का अनशन समाप्त

वेद—आज्ञा

कैसे बढते है

दव बर्हिर्वयोधस दवमिन्द्र-मवर्धयत्। गायत्र्या छन्दसेन्द्रिय चक्षुरिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधे-यस्य वतुयज ॥ ३५ ॥

यजुर्वेद अ० २८ मन्त्र ३५

संस्कृत भावार्थः—

—अत्र वाचकलु० – यथा ऽऽकाश सूयप्रकाशो वधते तथा वेदेषु प्रज्ञा वधते। येऽस्मि ससारे वेदद्वारा सर्वा सत्यविद्या जानीयुस्ते सवतो वर्धेरन् ॥ ३५ ॥

आर्य भाषा भावार्थः—

जैसे आकाश म सूय का प्रकाश बढता है वैसे वेदो का अभ्यास करने से बुद्धि बढती है। जो इस जगत मे वेद के द्वारा सब सत्य विद्याओ को जानें वे सब ओर से बढें ॥ ३५ ॥

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्यसमाज संस्थापक वेदोद्धारक युग द्रष्टा महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आज से ९१ वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला १ सम्वत् १९३२ को बम्बई (काकडवाडी) मे आर्य राष्ट्र आर्य धर्म आर्य सस्कृति एव आर्य भाषा के उत्थान और प्रचारार्थ तथा अज्ञान पाखण्ड और कुरीतियो के निवारणार्थ

आर्य समाज की स्थापना

की थी। आओ हम सब आर्यबन्धु मिल कर बैठ और विचार करें कि हमने कहा तक अपने कर्तव्य का पालन किया और अब क्या करना है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

वजन घट रहा है

कमजोरी बढ रही है

फिर भी स्वामी जी प्रसन्न

लाखो दर्शनार्थियो की भीड

— ० —

प्रधान मन्त्री

श्रीमती इन्दिरा

की अपील

समिति विचार कर रही है।

स्पेशल स्पेशल—

गृहमन्त्री द्वारा आश्वासन

देश भर म अपार हर्ष

दिनाक माच बुधवार आर्य नेताओ के एक शिष्ट मडल जिसमे श्री प्रकाशवीर शास्त्री एम श्री लाला जगतनारायण सम्पादक श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक वीर प्र श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी श्री रामगोपाल जी शालवाले … श्री गुलजारीलाल जी नन्दा से मुलाकात की।

शिष्ट मडल ने पजाब आर्य हिन्दुओ के धार्मिक सास्कृतिक व्यापारिक और … सम्बन्धी दृष्टिकोण प्रस्तुत कि… शिष्टमण्डल ने पजाब म … समाजियो जनसघियो और निरपराध लोगो की रिहाई सम्पत्ति तथा जायदादा की वापि… पुलिस के अत्याचारो की जाच माग की जिसे श्री नन्दा जी ने … पूवक सुना और उन पर उचित … म विचार करने का आश्वासन दि…

शिष्ट मण्डल से श्री गृह… महोदय ने अनशन समाप्त कर… समय स्वय आर्य समाज दीवान… म आकर श्री स्वामी जी के … करने के लिए कहा।

श्री स्वामीजी आज बुधवारसाय ७ बजे अनशन समाप्त करेंगे।

शास्त्र-चर्चा

वेद-वाणी

यह अश्व रूपी काल

ओ३म् कालो अश्वो वहति सप्तरश्मि सहस्राक्षो अजरो भूरि रेता। तमारोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा ॥

अथर्व १९ का ५३ सू० १ मन्त्र

यह काल-अश्व सुतरुण महान् है,
चला आ रहा वेगवान् ।
यह सप्तरश्मि भव भासमान,
यह सहस्राक्ष बहुबल निधान ॥
यह खींच रहा ब्रह्माण्ड-यान,
रवि शशि जिसके पहिए समान ।
चढ़ते इस पर हैं बुद्धिमान
पिस जाते नीचेगिर अजान ॥

श्री वागीश्वर जी विद्यालंकार

दोनों समय सन्ध्या

ब्राह्मणा सर्व भूताना धर्मकोशस्य गुप्तये। किं पुनर्ये च कौन्तेय सन्ध्या नित्यमुपासते।

कुन्तीनन्दन! सारे प्राणियो के धर्म रूपी खजाने की रक्षा करने के लिये साधारण ब्राह्मण भी समर्थ है, फिर जो नित्य सन्ध्योपासना करते हैं, उनके विषय में तो कहना ही क्या है।

साय प्रातस्तु ये सन्ध्या सम्यग्नित्यमुपासते। नाव वेदमयीं कृत्वा तरन्ते तारयन्ति च ॥

जो प्रतिदिन सवेरे और शाम को विधिवत सन्ध्योपासना करते हैं वे वेदमयी नौका का सहारा लेकर इस ससार-समुद्र से स्वय भी तर जाते हैं और दूसरों को भी तार देते हैं।

सन्ध्यामुपासते ये वै नित्यमेव द्विजोत्तमा। ते यान्ति नरशार्दूल ब्रह्मलोक न सशय ॥

पुरुषसिंह! जो श्रेष्ठ द्विज प्रतिदिन सन्ध्योपासन करते हैं वे नि सन्देह ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।

वेद माता—गायत्री

यो जपेत् पावनी देवी गायत्रीं वेदमातरम्। न सीदेत प्रतिगृह्णान पृथिवी च स सागरम् ॥

जो ब्राह्मण सबको पवित्र बनाने वाली वेद माता गायत्री देवी का जप करता है, वह समुद्रपर्यन्त पृथ्वी का दान लेने पर भी प्रतिग्रह के दोष से दु खी नहीं होता।

तस्मात् तु सर्ववेदाना सावित्री प्राण उच्यते। निर्जीवा हीतरे वेदा विना सावित्रिया नृप ॥

इसलिये गायत्री सम्पूर्ण वेदों का प्राण कहलाती है। नरेश्वर! गायत्री के बिना सभी वेद निर्जीव हैं।

नीती की बात

जयेत् कदर्य दानेन सत्येनानृतवादिनम्। क्षमया क्रूरकर्माणमसाधु साधुना जयेत्।

म० वनपर्व अ० १९४। ६

नीच प्रकृति वाले को दान देकर वश में करे। असत्यवादी के सत्य भाषण से जीते। क्रूर को क्षमा से और दुष्ट को उत्तम व्यवहार से अपने वश मे करे।

मरने वाला स्वर्ग में—मारने वाला इस लोक मे पूजित

स्वर्गे हता प्रपूज्यन्ते हन्ता त्वत्रैव पूज्यते। द्वावेतौ सुख मे धेते हन्ता यश्चैव हन्यते ॥

मारे गये योद्धा स्वर्ग मे पूजित होते हैं, किन्तु मरने वाला इसी लोक मे पूजा पाता है। अत युद्ध मे दोनो ही सुखी होते हैं—जो मारता है वह और जो मारा जाता है वह ॥

०—

सदस्यों से

१ जिन महानुभावों ने अभी तक अपना वार्षिक चन्दा नहीं भेजा। कृपया तुरन्त भेजें।

२—महर्षि बोधाक का [illegible] में शीघ्रता करें।

३—कुछ महानुभावों ने अभी तक "कल्याण मार्ग का पथिक' का धन नहीं भेजा, कृपया अब भेजने मे देर न करें।

४ सप्ताहिक प्रतियो का धन प्रति मास भेजते रहना चाहिये।

५—हमारा लक्ष्य आर्यजनता को महत्वपूर्ण उत्तम और सस्ते से सस्ते विशेषाक देना है। इसकी सफलता आपके उत्साह और सहयोग पर ही निर्भर है।

७—महर्षि बोधांक और बलिदान अक तो आपने प्राप्त कर ही लिए हैं। अब आप दो महान् विशेषाक १ आर्यसमाज परिचयाक, २ आर्य शिक्षा प्रसाराक प्राप्त करने के लिए उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कीजिये।

८—महर्षि बोधाक मे हमने २०० चित्र देने की घोषणा की थी किन्तु चित्र छपे २२८। हमें खेद है कि कुछ आवश्यक चित्र छपने से रह गये जो या तो हमे मिले नहीं, या हमे सूझे नही या हमे आर्य जनता ने सुझाये नहीं।

—प्रबन्धक

यार्थ यवत मवूया

सम्पादकीय

स्वामी सत्यानन्द जी का अनशन

'सार्वदेशिक' अंक पाठकों के हाथ में पहुंचने तक स्वामी सत्यानन्द जी महाराज को अपना अनशन प्रारम्भ किए एक सप्ताह से ऊपर हो जाएगा। यद्यपि विभिन्न दलों और सम्बद्ध व्यक्तियों की ओर से दौड़ धूप जारी है, किन्तु सरकार का जो रवैया जारी है, उससे ऐसा नहीं लगता कि स्वामी जी का अनशन तुड़वाने के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण हो सकेगा।

हम बारम्बार लिख चुके हैं। 'विवेक भ्रष्टाना भवति विनिपात शतमुख",—विवेक से भ्रष्ट जनों का पतन सैकड़ों गुणा होता है। इस समय भारत सरकार विवेक भ्रष्टता के मार्ग पर अन्धी होकर चल रही है। उसके सामने राष्ट्र हित का प्रश्न रत्ती भर भी नहीं है, केवल संकीर्ण दल हित का प्रश्न है। इसी संकीर्ण दल-हित की खातिर उसने पंजाब का और विभाजन करके पंजाबी सूबा बनाने का मन्तव्य प्रकट किया है।

पहले इस ढंग का प्रस्ताव कांग्रेस कार्यसमिति ने पास किया, फिर अब संसदीय समिति ने भी पंजाबी सूबे के समर्थन में ही अपनी रिपोर्ट दे दी है। देश के समस्त समाचार-पत्रों ने कांग्रेस कार्य समिति के इस निश्चय को अयुक्तियुक्त, साहसिकता पूर्ण और साम्प्रदायिक शक्तियों के आगे आत्मसमर्पण कहा है। और तो और जनता के मन में अब यह सन्देह घर करता जा रहा है कि उत्तर भारत को खण्ड खण्ड करके अपने अंगूठे के नीचे रखने के लिए कामराज की ही यह सारी साजिश है।

इस सन्देह में कहां तक सचाई है, हम नहीं जानते, परन्तु कन्नाधक का वह सन्देह की पुष्टि करता ही नजर आता है। श्री लालबहादुर शास्त्री के स्वर्गवास के पश्चात् श्री कामराज का अधिनायकवाद जिसप्रकार [illegible] देश रहा है, वह देश के लिए खतरे की घण्टी है। अब न मणि [illegible] कोई ढूढन है, न [illegible] का 'कामराज करे सो होय' वाली स्थिति है। और श्री कामराज? बहुत हुआ तो दलीय हित से परे उनकी दृष्टि नहीं जाती।

जब सन्त फतेहसिंह ने आमरण अनशन की और आत्मदाह की धमकी दी तो सदा धमकियों के आगे झुकने वाली सरकार को और कांग्रेसी नेताओं को लगा कि आगामी आम चुनावों में पंजाब में कांग्रेस की खैर नहीं, और जैसे पहले उन्होंने अकालियों से गठबन्धन किया था वैसे ही अब भी गुपचुप गठबन्धन कर लिया। कांग्रेस द्वारा पंजाबी सूबे की मांग की स्वीकृति की घोषणा होते ही सन्त फतहसिंह ने अपने समस्त अनुयायियों को कांग्रेस का समर्थन करने का आदेश दे दिया। चलिए, राष्ट्र जाए भाड़ में, दोनों का उल्लू सीधा हो गया। सन्त जी ने पंजाबी सूबे का आश्वासन पाया और कांग्रेस ने अगले आम चुनावों में जीतने की शतरंजी चाल चली। इसे कामराज का कूटनीतिक कौशल कहा जाए या विवेक भ्रष्टता की चरम सीमा।

हम पूछना चाहते हैं कि सन्त फतहसिंह की धमकी के सिवाय और कौनसी नई परिस्थिति पैदा हो गई थी जिसके कारण सन् १९५६ में श्री नेहरू द्वारा पंजाब का विभाजन किसी भी अवस्था में स्वीकार न करने के निर्णय को उलट दिया गया?

तुष्टीकरण में श्री नेहरू भी कम नहीं थे, किन्तु राष्ट्र के लिए स्पष्ट खतरों को वे समझते थे और केवल दलीय हित के लिए वे इस निकृष्ट संकीर्णता तक उतरने को तैयार नहीं थे जिस हद तक कामराज उतर गए हैं और कामराज केवल वर्तमान को देखते हैं, राष्ट्र के दूरगामी हितों को देखने की दृष्टि उन्होंने नहीं पाई।

पाकिस्तान का निर्माण, नागालैण्ड, मिजोलैण्ड कश्मीर की समस्या और पंजाबी सूबा ये सब एक ही मनोवृत्ति के विभिन्न विस्फोट हैं। पाकिस्तान का निर्माण नेहरू प्रभृति नेताओं तथा बागल-कूटनीति के गठबन्धन का फल था, नागालैण्ड और कश्मीर की समस्या श्री नेहरू की भूलों का परिणाम है, मिजोलैण्ड की मांग उसी की एक शाखा है। परन्तु जिस भूल को करने से नेहरू जी भी सतर्कता पूर्वक दूर रहे, उस भूल को कलंक की तरह ओढ़ने का श्रेय भावी इतिहासकार कामराज युग को ही देगा। यह भूल देश को और क्या-क्या दुर्दिन दिखाएगी—यह कल्पना करके भी कलेजा कांपता है।

स्वामी सत्यानन्द जी का अनशन कांग्रेस की इस भयंकर भूल के प्रति राष्ट्र को सचेत करने के लिए ही है। अब भी समय है, यदि समग्र राष्ट्र उठकर खड़ा हो जाए और एक-स्वर से कांग्रेसी कर्णधारों को अपनी गलती समझने के लिए बाध्य कर दे तो राष्ट्र विघटन से बच सकता है। अन्यथा क्षुद्राशयी व्यक्ति तो राष्ट्र को खण्ड खण्ड करके ही छोड़ेंगे।

राष्ट्रवासियो! सावधान!!!

आर्यसमाज स्थापना दिवस

इस बार २३ मार्च, १९६६ को आर्यसमाज स्थापना दिवस पड़ रहा है।

भारत के इतिहास में आर्यसमाज की स्थापना अपने आप में एक अत्यन्त महत्व पूर्ण घटना है। आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व भी इस देश में सैकड़ों सम्प्रदाय थे। आर्यसमाज की स्थापना के बाद वे सब सम्प्रदाय समाप्त हो गए, यह नहीं कहा जा सकता प्रत्युत आए दिन और नए-नए सम्प्रदायों के प्रचलन की ही बात सुनी जाती है।

जैसे भारतवर्ष नाना सम्प्रदायों का देश है, वैसे ही नाना राजनीतिक दलों का भी आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व इस देश में कोई राजनीतिक दल था या नहीं यह हमारी जानकारी नहीं है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म भी सन् १८८५ ई० में हुआ था, जब कि आर्यसमाज की स्थापना उससे दस वर्ष पहले—सन् १८७५ ई० में हो चुकी थी। अब तो आए दिन नए नए राजनीतिक दलों की स्थापना रोज मर्रा की बात बन गई है।

प्रश्न होगा कि नाना सम्प्रदायों और नाना राजनीतिक दलों के लिए सदा से अत्यन्त उर्वर सिद्ध होने वाली इस भारतभूमि में आर्यसमाज की स्थापना को ही हम इतिहास की अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना क्यों कहते हैं? क्या आर्यसमाज भी एक दयानन्दी सम्प्रदाय या दयानन्दी दल नहीं है।

आर्यसमाज के साथ बहुत उदारता दिखाने वाले भी विपक्षी सज्जन प्रायः आर्यसमाज को एक दयानन्दी सम्प्रदाय दल की संज्ञा देते हैं। इससे आगे वे नहीं जा पाते।

परन्तु यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि आर्यसमाज न कोई सम्प्रदाय है, न कोई राजनीतिक दल, न कोई दयानन्दी मत है। जिन लोगों के मन पर सदा साम्प्रदायिकता या राजनीति का भूत सवार रहता है, वे कल्पना नहीं कर सकते कि सम्प्रदाय या राजनीति से ऊपर उठकर भी कोई चीज हो सकती है।

आर्यसमाज एक विचार धारा है, एक आन्दोलन है, एक बौद्धिक क्रान्ति है। यह ऐसे व्यक्तियों का समाज है जो स्वयं आर्य (श्रेष्ठ) बनना चाहते हैं। व्यक्तिगत, सामाजिक राष्ट्रीय विश्वजनीन जीवन को लगातार श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करना ही इसका ध्येय है। धर्म के रूप में यह वेद को प्रमाण मानता है, क्योंकि वेद सम्प्रदायातीत है, मानव मात्र के लिए सृष्टि के आदि में दिया गया वह ईश्वरीय ज्ञान है। अन्ध विश्वासों कुरीतियों और बुद्धि-विरुद्ध मान्यताओं से आर्यसमाज को चिढ़ है। आर्यसमाज को चिढ़ है ऐसे लोगों से भी जो निरे व्यक्तिगत या दलगत स्वार्थों के लिए राष्ट्रद्रोही और मानवताद्रोही कार्यों में लिप्त रहते हैं। सत्य को ग्रहण करने और असत्यको छोड़ने के लिए सदा उद्यत रहना आर्यसमाजी की पहली कसौटी है। यही कारण है कि किन्हीं भी कारणों से, किसी भी रूप में, असत्य को आश्रय देने वालों को आर्यसमाज का यह खरापन नहीं सुहाता। 'चोर न प्यारी चांदनी' वाली बात है।

आर्यसमाज की दृष्टि में ऋषि दयानन्द भी कोई अवतार या पैगम्बर, या गद्दीधारी महन्त, या अपनी शिष्य-परम्परा चलाने वाले गुरुडमवादियों जैसे गुरु नहीं हैं बल्कि एक ऐसे पथ-प्रदर्शक हैं जिन्होंने स्पष्ट रूप से यह घोषणा की है कि "मैं तो उस मार्ग का निर्देश करने आया हूं जिस मार्ग पर ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषि मुनि चलते आए हैं। जो उस मार्ग पर चलेगा, उसी का उद्धार होगा दयानन्द के नाम की माला जपने वाले या ओम दयानन्दाय नम का मन्त्र की तरह पाठ करने वाले व्यक्ति का नहीं।"

इसीलिए आर्यसमाज एक ऐसा अनुपम संगठन है जिसकी तुलना संसार के और किसी संगठन से नहीं हो सकती। इसीलिए आर्यसमाज की स्थापना को हमने इतिहास की अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना कहा है।

क्या आप आर्यसमाजी हैं? यदि हां, तो आर्यसमाज स्थापना दिवस के इस पुण्य पर्व पर अपने मन में यह हिसाब लगाइए कि आपके अपने जीवन में कितना आर्यत्व आया है और आपने दूसरों को आर्य बनाने के लिए अब तक क्या किया है? यदि आपको इन दोनों प्रश्नों का उत्तर देते हुए अपने प्रयत्नमें कहीं शिथिलता दिखाई देती है तो ईमानदारी से और प्राण-पण से उस शिथिलता को दूर करने में लग जाइए—

मन चाहा फल पाया उसने
जो आलसी बनके पड़ा न रहा।

सामयिक-चर्चा

स्थापना दिवस का उद्बोधन

हम २३ मार्च को आर्यसमाज स्थापना दिवस मनायेंगे। इस दिवस का विस्तृत कार्यक्रम आर्य समाजों में सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से प्रचारित किया जा चुका है। आशा है यह दिवस पूर्ण सफलता और समारोह के साथ मनाया जायगा।

यह दिवस आर्य जनों के लिए आत्मचिन्तन का भी दिवस है। प्रत्येक आर्य को यह देखना है कि मेरा आर्य समाज की उन्नति और यश-वृद्धि में कोई योग है या नहीं? यदि नहीं तो क्यों?

आर्य समाज की स्थापना १८७५ में हुई थी। ९० वर्ष के काल में आर्यसमाज ने क्या धर्म प्रचार, क्या साहित्य निर्माण, क्या समाज-सुधार, क्या कुरीति निवारण, क्या शिक्षा प्रसार, क्या अनाथों एवं विधवाओं के रक्षण, क्या, दलितों के उद्धार, क्या अकाल आदि के समय पीड़ितों की सहायता एवं रक्षा, क्या सार्वजनिक जीवन की शुद्धता, क्या संगठन प्रियता, प्रबन्ध पटुता आदि २ विषयों में चामत्कारिक सफलताएं प्राप्त कीं और समाज का मार्ग-दर्शन किया है। धार्मिक विशुद्धता और समाज सुधार की दिशा में उसने लोगों को स्वस्थ एवं उन्नत विचारधारा प्रदान करने का श्रेय प्राप्त किया है।

आर्य समाज का सुनहरा युग वह था जबकि आर्य समाज के सदस्यों में सदाचार की भावना उच्च थी और स्वाध्याय एवं ज्ञान प्राप्ति की लालसा प्रबल थी इसके कारण हमारी बौद्धिक एव आचारिक गरिमा बढ़ी चढ़ी थी। समाज को बनाने वाले लोग वे थे जिनमें चरित्र की शुद्धता त्याग की भावना और कार्य की सच्ची लगन थी। उन्होंने ही आर्य समाज को सुनहरे युग के दर्शन कराए और उसका सही नेतृत्व किया था। समाज को जीवन-ज्योति देने वाले कुछ ही व्यक्ति होते हैं। अवश्य सामाजिक वातावरण मनुष्य को बनाने या बिगाड़ने में बहुत कुछ काम करता है परन्तु समाज को बनाने या बिगाड़ने वाले व्यक्ति ही हुआ करते हैं। यदि घरों में २-४ अच्छी पुस्तकें पहुंच जाती हैं और उनका अध्ययन एवं मनन किया जाता है तो उन घरों के लिए राजकीय प्रशासन की बहुत कम आवश्यकता रह जाती है इसी स्थापना के अनुसार जिस समाज में अधिक अच्छे एवं सुयोग्य व्यक्ति मिल जाते हैं वे उसे चमकाकर शक्ति बना देते हैं। समाज का गौरव और शक्ति वे ही व्यक्ति होते और उसका नेतृत्व उनके हाथ में सुरक्षित रहता है। कोई लक्ष्य कितना ही उच्च क्यों न हो यदि वह निकम्मे एवं स्वार्थी लोगों के हाथ में पड़ जाता है तो उसमें खराबी व्याप्त होकर लोग उपेक्षा करने लग जाते हैं।

सिद्धान्तों की वरीयता पर्याप्त नहीं होती। एक मात्र इस वरीयता के आधार पर लोगों की निष्ठा उनकी ओर आकृष्ट नहीं की जा सकती। लोग चरित्र की उच्चता से प्रभावित होते हैं। वे जहां भी बौद्धिक आभा, नैतिक वरीयता, आध्यात्मिक उच्चता और श्रेष्ठ जीवन की सुगन्धि पाते हैं वहां ही अनजाने श्रद्धा से अपना मस्तक झुका देते और लाभान्वित होते हैं। जब तक आत्मा के दर्शन करने के लिए उच्चतर वस्तु नहीं मिलती तबतक वह शुष्क उच्च सिद्धान्त एव उपदेश पर ध्यान नहीं देती।

यदि हमें अपने समाज को पुनः सुनहरे युग में लाना अभीष्ट हो और अभीष्ट होना भी चाहिए यदि हमें समाज को ऊंचा उठाने की आकांक्षा हो तो हमारे बीच में इस कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ कार्य होने चाहिएं यदि हमें समाज को महान् बनाना है तो हमें महान व्यक्ति पैदा करने होंगे जिनका मानसिक क्षितिज विशाल हो, जिनके हृदय शेरों जैसे हों। जो ज्ञानवान, सदाचारी, धार्मिक एवं कर्मठ हों।

धर्म्म की प्रतिष्ठा अधर्मियों एवं स्वार्थियों से कदापि नहीं हो सकती। धर्म की प्रतिष्ठा परमात्मा को प्यार करने वालों से ही सकती है। माया और भोगवाद में लिप्त व्यक्ति नहीं अपितु परमात्मा की सेवा करने वाले ही धार्मिक वातावरण व्याप्त करके मनुष्य एव समाज को ऊंचा उठाने का यश प्राप्त करते हैं। यदि समाज में श्रेष्ठ जनों का बाहुल्य हो जाय जिनकी भावनाएं उच्च हों और जिनका जीवन तप, त्याग और श्रद्धा का जीवन हो तब उन्हें सत्ता, लोक प्रियता या प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिए कोई प्रयास न करना होगा। उनका जीवन स्वयं उन पर आशाओं की वर्षा करेगा। सच्चे मनुष्यत्व का कभी क्षय नहीं होता। जब वह मरुस्थल की हवा में क्षीण होता और अपना पराग सीता हुआ देख पड़ता है तब भी उसकी मधुर सुगन्धि वायु के पंखों पर उड़कर इधर उधर बिखरती और नव जीवन प्रदान करती रहती है।

आर्य समाज स्थापना दिवस के पुण्य अवसरपर प्रत्येक आर्य एवं आर्य समाज के हितैषी और प्रेमी को आत्म-चिन्तन करते हुए स्वयं मनुष्य बनने और दूसरों को बनाने तथा समाज का उपयोगी अंग बनने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। यही धर्म का तथा धार्मिक संगठनों एवं संस्थाओं का लक्ष्य होता है। यही आर्यसमाज का लक्ष्य है। तभी आर्य समाज की क्षीण शक्ति पुनः प्राप्त हो सकती और उसकी आवाज अनसुनी नहीं हो सकती जैसा कि आजकल दीख पड़ रहा है।

अपराध

कुछ दिन हुए अमेरिका के प्रेसीडेण्ट जानसन ने कहा था कि अमेरिका में प्रत्येक ५ मिनिट में डकैती, प्रत्येक ३ मिनिट में ज्यादती के आक्रमण, प्रति १ मिनिट में १ कार की चोरी और प्रत्येक २८ सेकण्ड में चोरी की वारदात होती है। इन अपराधों से राष्ट्र को प्रतिवर्ष १३००० करोड़ रुपयों की क्षति होती है, यह अपराध वृद्धि अमेरिका तक ही सीमित नहीं है। ब्रिटेन के अनुदार दलीय चुनाव के भाषण में यह बतला दिया गया है कि वह दल अपराध वृद्धि और बाल-अपराधों को रोकेगा। रूस में भी वहां के नवयुवकों में समाज-विरोधी व्यवहार वृद्धिमद है। यूरोप में भी अपराधों ने एक बड़ी समस्या का रूप धारण किया हुआ है। अपराध वृद्धि ने समाज-शास्त्रियों के इस दोष को [illegible] किया है कि निर्धनता के दूर होने और कुण्ठा के [illegible] अपराध प्रवृत्ति नियन्त्रित हो जाती है। जिस समाज में लोगों में [illegible], लज्जा, [illegible] एव [illegible] न हो उस समाज को ही वे लोग छिन्न भिन्न करने के कारण बन जायं तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

जहां [illegible] और [illegible] उड़ाना जीवन का उद्देश्य हो, जहां मनुष्य का मूल्य रुपयों, और पाइयों में आंका जाता हो, जहां मनुष्य की पाशविक वृत्तियों को उत्तेजित करने के लिए गर्हित मनोरञ्जन, दूषित चित्रपट, अश्लील फिल्मों के प्रदर्शन, अश्लील वासना, तामसिक भोजन कुत्सित साहित्य, बल प्रयोग एवं हिंसा तथा जीवन की स्पर्धा का विषाक्त वातावरण व्याप्त और जहां अणुबम के भय से जीवन की क्षण भंगुरता मुंह बाए खड़ी हो वहां अपराधों में वृद्धि के सिवा और क्या आशा की जा सकती है? जबतक अपने को अच्छा बनाकर समाज को ऊंचा उठाने का जीवनोद्देश्य नहीं बनता तबतक अपराधों में रोक-थाम का होना दुष्कर है जबतक समाज से सत्प्रेरणाएं नहीं मिलतीं, समाज का मार्ग-दर्शन करने वालों के वैयक्तिक और सार्वजनिक जीवन में एकरूपता और सुचारुता नहीं आती और जबतक धर्मसंस्कारों का जीवन की योजना में प्राधान्य नहीं होता. तबतक अपराध प्रवृत्ति समाप्त नहीं हो सकती।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य समाज के मन्त्री महोदयों से

आवश्यक निवेदन

आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में प्रत्येक आर्य समाज सार्वदेशिक सभा के वेदप्रचार कोष में प्रतिवर्ष कुछ न कुछ दान देते हैं। आपका यह सात्विक दान वेदप्रचार के विभिन्न कार्यों में व्यय होता है।

सभा का वार्षिक व्यय हजारों में नहीं लाखों में है यह सब आर्य जनता पर ही निर्भर है।

अतः प्रत्येक आर्य समाज से प्रार्थना है कि वह संग्रह करके मनीआर्डर या चैक द्वारा भेजने में शीघ्रता करें।

मन्त्री

सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली-१

विदेशों में आर्यसमाज

श्री रघुनाथप्रसाद जी पाठक

जहां तक आर्य समाज के विदेश प्रचार का सम्बन्ध है, हमें यह स्वीकार करना होगा कि हमारे प्रचार का केन्द्रबिन्दु भारतीय प्रवासियों तक ही सीमित रहा है। युरोपियनों वा अमेरिकनों आदिकों में हमारा प्रचार नाम मात्र के लिए हुआ है। आवश्यकता इस बात की है कि हमारा प्रचार प्रवासी भाइयों में होने के साथ २ यूरोप और अमेरिका आदि में भी होना चाहिए। महर्षि दयानन्द के जीवन लक्ष्य और आर्य समाज के उद्देश्य की पूर्ति सारे संसार मे वैदिक धर्म के प्रचार और आर्य संस्कृति के विस्तार से ही होगी।

विदेशों और उपनिवेशों में स्थायी रूप से ३०-३५ लाख की सख्या में बसे हुए प्रवासी भारतीयों को आर्य समाज के आधार और आश्रय की अत्यन्त आवश्यकता है और रही है। भारत में आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो उनकी धार्मिक आकांक्षाओं की तृप्ति, सामाजिक त्रुटियों की पूर्ति और राष्ट्रीय भावनाओं की अभिवृद्धि कर सकती है। आर्य समाज ने प्रवासी भाइयों की जो सेवा की है उनकी सभी प्रशंसा करते हैं। प्रवासी भाइयों में नवजीवन और नवचेतन उत्पन्न करने का अधिकांश श्रेय आर्य समाज को है। स्व० दीनबन्धु श्री सी० एफ० एण्ड्रूज ने महर्षि दयानन्द की पुण्य स्मृति पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए लिखा था "उपनिवेशों में प्रवासी भाइयों के लिए आर्य समाज जो कुछ कर रहा है, उससे मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्थाहै, जो मातृभूमि भारत केप्रति प्रवासियों के हृदय में अनुराग पैदा करती है, राष्ट्र भाषा हिन्दी का विशेष रूप से प्रचार करती है और पुरातन आर्य संस्कृति की जिस पर प्रत्येक भारतीय का जन्मसिद्ध अधिकार है, हित की रक्षा पर विशेष ध्यान रखती है। दक्षिण अफ्रीका और रोडेशिया, केनिया और युगाण्डा, जंजीबार और टैंगेनिका, फ़िजी और मौरीशस, मलाया और सिंगापुर इत्यादि सभी उपनिवेशों में आर्य समाज द्वारा वैदिक धर्म और आर्य सम्यता का प्रचार और रक्षण हुआ है। कई वर्षों से मैंने समाचार पत्रों में लेख लिख कर जनता को आर्य समाज के कार्यों से परिचित कराने का प्रयास किया है। इन लेखों का हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराके भी मैंने प्रकाशित कराया है जिससे अंग्रेजी जानने वालों के अतिरिक्त अन्य भाषा भाषियों को भी आर्य समाज की जानकारी प्राप्त हो। आर्य समाज में जीवन शक्ति और उत्साह है अतः मुझे विश्वास है कि उसका भविष्य उज्ज्वल एवं आशाप्रद है। भारत की जो संस्थाएं प्रवासी भारतीयों की सेवा कर सकती हैं उनमें आर्य समाज से बढ़कर क्रियाशील उत्साही और शक्तिशाली दूसरी कोई संस्था नहीं है।

पूर्वावस्था

विदेशों और उपनिवेशों में प्रवासी कल्याण और उत्थान के लिए आर्य समाज ने जो कुछ किया है उसका महत्व समझने के लिए पूर्वावस्था पर एक दृष्टि डाल लेना आवश्यक है। आधुनिक युग में जब संसार से गुलामी की प्रथा उठ गई, हब्शियों को दासता के बन्धन से मुक्ति मिली तब उपनिवेशों के गोरे किसानों को मजदूरों का अभाव खटकने लगा। उन्हें सस्ते और मेहनती मजदूरों की आवश्यकता पड़ी। इसलिए गुलामी का पुनर्जन्म शर्तबन्दी कुली प्रथा (Indentured Labour System) के रूप में भारतवर्ष में हुआ और यहां से संसार को सम्यता सिखाने वालों की सन्तान औपनिवेशिक गोरों की गुलामी करने के लिए भारतकी विदेशी सरकार द्वारा भूमण्डल के भिन्न २ भागों में भेजे जाने लगे। सन् १८३४ में इस अध गुलामी प्रथा का जन्म हुआ। लगभग १०० वर्ष तक यह अबाध रूप से प्रचलित रही और प्रथम महायुद्ध के समय घोर आंदोलन के फलस्वरूप इसका अन्त हुआ। इस प्रकार १८३४ से १९१८ तक नैटाल, मौरिशस, फ़िजी, ट्रीनीडाट, डमरेरा आदि उपनिवेशों में जो भारतीय शर्तबन्दी की पट्टा लिखकर गए उनमें लगभग ३० लाख वहीं स्थायी रूप से बस गए।

इस कुली प्रथा का शिकार होने वालों में अधिकांश संख्या गावों के भोले भाले हिन्दुओं की थी जो आर्थिक वा सामाजिक परिपीडन से विवश होकर वा बहकाए जाकर उपनिवेशों में स्वर्ग की कल्पना कर बैठते थे। परन्तु कुली डिपो में और जहाजों पर जब उनके साथ पशुओं जैसा व्यवहार होता था, जब उन्हें धार्मिक विश्वासों और रीति रिवाजों को तिलांजलि देनी पड़ती थी, जब हिन्दू, मुसलमान, ईसाई के भेदभाव से पृथक् रह कर उन्हें सब के साथ खाने, पीने रहने और सहवास करने के लिए विवश होकर, धर्मकर्म, आचार विचार, जातपांत और छूआछूत को मिटाना पड़ता था तब उन्हें अपनी भूल पर पछतावा होता था। परन्तु उस समय पछताने से कुछ न होता था।

उपनिवेशों मे पहुंचने पर उनका यह विश्वास दृढ़ हो जाता था कि टापुओं में धर्म का पालन और रक्षण असम्भव है। जिन वस्तुओंको हिन्दू छूनाभी पाप समझते थे वे सहज ही उनके पेट मे हज्म होने लगी। मुर्गे का मांस और मदिरा की प्याली सबसे बड़ी नियामत समझी जाने लगी। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की सख्या बहुत कम थी। सरकारी विधान के अनुसार १०० पुरुष पीछे ४० स्त्रिया भरती करके उपनिवेशों में भेजी जाती थी। अतएव स्त्रियों के लिए लड़ाई झगड़े होते थे, सिर फूटते थे, सजाएं मिलती थीं, हत्याऐं होती थीं और फांसियां लगती थीं। कुली शास्त्र के अनुसार हिन्दुओं का धर्म-विहित विवाह नाजायज था। पुरोहित थे प्रोटेक्टर साहब और उनका दफ्तर था, विवाह मण्डप, यहीं पर विवाहों की रजिस्ट्री हुआ करती थी। इसके बिना पत्नी पर पति का कोई अधिकार नहीं होता था।

हिन्दू अपने त्योहारो को भी भूल बैठे। होली, दिवाली, रामनवमी, और कृष्णाष्टमी आदि पर्व विस्मृति के समुद्र में डूब गए। कौन कब आता है और कब जाता है इसकी न किसी को जरूरत थी और न परवाह। हिन्दुओं के लिए सबसे बड़ा त्योहार मुहर्रम बन गया। हिन्दुओं के घर ताजिए बनते, उनकी स्त्रिया मर्सिया गातीं और हसन-हुसेन साहब पर शीरनी, पजे और मलीदे आदि चढ़ातीं; यही हिन्दुओं का प्रमुख त्योहार माना जाता और इसी अवसर पर कोठियों में कूलियों को भी छुट्टी मिलती थी। सबसे अधिक मजा तो यह कि ताजिए के दाएं बाए या आगे पीछे का बखेड़ा उठाकर हिन्दू लोग आपस में लड़ पड़ते थे और प्रति वर्ष अनेक हिन्दुओं के सिर फूटते, टांगे टूटतीं और और मौत भी हो जाती।

हिन्दुओं में मृतक दाह के स्थान पर मुर्दे जमीन में गाड़ने और कब्रों पर फूल पत्तियां चढ़ाने की प्रथा भी प्रचलित हो गई। धीरे २ हिन्दुत्व का लोप होता ही गया। यद्यपि ब्राह्मणों की भरती वर्जित थी, तो भी कुछ नामधारी ब्राह्मण पापी पेट की आग बुझाने के लिए नाम और जात बदलकर उपनिवेशों में पहुंच गए थे। वे हिन्दुओं को अपने पुराने पथ की ओर प्रेरित करने में असमर्थ सिद्ध हुए। फिर भी उन्होंने हनुमान चालीसा, रामलीला, अर्जुन गीता, सूर्यपुराण और सत्यनारायण की कथा के प्रताप से यत्र तत्र हिन्दुत्व का चिन्ह बनाए रखा।

प्रवासी हिन्दुओं के लिए सबसे भयकर बात यह हुई कि उनकी आत्मा का धर्म अब लोप होता गया और धार्मिकता के नष्ट हो जाने से उसके नैतिक आचार विचार की मिट्टी पलीत हो गई। परिणाम यह हुआ कि हिन्दुओं के इस दुरवस्था से ईसाई और मुसलमानों ने खूब लाभ उठाया। हिन्दू युवक धड़ाधड़ ईसाई और मुसलमान बनते चले जाते थे।

श्री स्वामी विवेकानन्द का उदाहरण देकर यह बात कही जाती है कि जिस प्रकार उन्होंने अमेरिकन जनता को आध्यात्मिकता की सुधा पिलाकर उस देश में वेदान्त का सिक्का जमाया उसी प्रकार आर्य समाज को भी यूरोप और अमेरिका में वैदिक धर्म की पताका फहरा देनी चाहिए। किन्तु हमारे भाइयों को कदाचित् यह ज्ञात नहीं है कि जिस समय स्वामी विवेकानन्द अमेरिका के न्यूयार्क, चिकागो, बोस्टन आदि नगरों में मुट्ठी भर अमेरिकन नर-नारियों को वेदान्ती बनाकर मठों की स्थापना कर रहे थे, ठीक उसी समय अमेरिका की दक्षिणीय भाग में डमरारा, ट्रीनीडाड, जमैका, ग्रनेडा आदि उपनिवेशों में हजारों प्रवासी हिन्दू स्वधर्म को छोड़कर धड़ाधड़ ईसाई हो रहे थे। आज उन उपनिवेशों में कोई विरला ही शिक्षित व्यक्ति हिन्दू धर्म का अनुयायी रह गया था, अन्यथा सभी पढ़े लिखे युवक ईसाईयत की शरण में चले गए थे। उन अभागे हिन्दुओं पर न स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि पड़ी और न कोई उनके किसी भी शिष्य की।

ऐसा प्रतीत होने लगा कि निकट भविष्य में शर्तबन्दी में गए हिन्दुओं के वंशजों में हिन्दुत्व का चिन्ह ही मिट जाएगा। ठीक उसी समय उपनिवेशों में आर्य समाज की ओर से वैदिक धर्म का सन्देश पहुंच गया और हिन्दुओं के अस्तित्व की रक्षा हो गई। —अपूर्ण

राष्ट्रीय आन्दोलन और महात्मा मुन्शीराम

> जिस कांग्रेस का आधार अधर्म पर है, उसका प्राप्त कराया हुआ स्वराज्य कभी भी फलदायक नहीं होगा, कभी भी सुख तथा शान्ति का राज्य फैलाने वाला न होगा......
>
> महात्मा मुन्शीराम

सन् १९१८ के अन्तिम महीनों में भारत के राजनैतिक वातावरण में एक नई क्रांति ने प्रवेश किया। १९१४ में योरुप का जो पहला महासंग्राम आरम्भ हुआ था, वह १९१८ के नवम्बर मास में समाप्त हो गया। देश में राष्ट्रीय भावना बहुत पहले जागृत हो चुकी थी। १८५७ की सशस्त्र राज्य-क्रांति उठती हुई राष्ट्रीय भावना का रूपान्तर था। वह अनेक कारणों से असफल हो गई परन्तु उस के साथ राष्ट्रीय जागृति समाप्त नहीं हुई। वह और भी अधिक गहरी और व्यापक होती गई। १८८५ में कांग्रेस की स्थापना हुई। कांग्रेस का उद्देश्य विशुद्ध राजनैतिक था। महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म का जो विशाल रूप ससार के सामने रखा था, राजनीति भी उसका एक अंग था। यही कारण था कि प्रारम्भ से ही आर्यसमाज के सदस्य किसी-न-किसी रूप में कांग्रेस तथा अन्य राजनीति कार्य करने वाली संस्थाओं में प्रमुख कार्य करते रहे। ला० लाजपतराय जी और उनके बहुत से अनुयायी अम्बाले के बाबू मुरलीधर जी और अन्य अनेक शिक्षित आर्य सज्जन अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार राजनीतिक आंदोलन में बराबर सहयोग देते रहे। लाला जी का स्थान तो देश के प्रमुख राजनीतिक नेताओं में गिना जाने लगा था। उनका नाम कांग्रेस के अग्रगामी दल के तीन प्रमुख नेताओं में आ गया था। उन तीन नेताओं का सगृहीत नाम 'लाल बाल पाल' यह था। इस नाम की व्याख्या पहले हो चुकी है। १९१८ के अत में स्थिति में जो नया परिवर्तन हुआ, वह यह था कि युद्ध से सम्बन्ध रखने वाली अनेक घटनाओं के कारण देश में जोश का तापमान बहुत ऊंचा चला गया था। जब सब तरह से तैयार जर्मन साम्राज्य के साथ अकस्मात् इंगलैण्ड को टक्कर लेनी पड़ी तब उसने सहायता के लिए अन्य उपनिवेशों के सामने भी हाथ पसारा। इंग्लैण्ड को मालूम था कि भारत के निवासी उसके शासन से संतुष्ट नहीं हैं और स्वाधीन होने के लिए उतावले हैं। इस कारण वह स्वयं डरता था कि उसकी याचना का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिलेगा। परन्तु भारत की नस-नस में क्षमा और उदारता के उपदेश बसे हुए हैं। वेद ने, उपनिषदों ने, अन्य धर्म-शास्त्रों ने, महात्मा बुद्ध ने और अंत में मध्यकालीन भक्तों ने भारतवासियों को यही उपदेश दिया था कि यदि शत्रु भी आपत्ति में फंस जाय तो उस पर दया करो और उसकी सहायता करो। जब इंग्लैण्ड सकट में फस जाय तो उस पर दया करो और उसकी सहायता करो। जब इंग्लैण्ड सकट में पड़ गया तब भारतवासियों ने दिल खोलकर उसकी सहायता की। देश की प्रत्येक श्रेणी के लोगों से सरकार ने जो मांगा, उसे वही मिला। धन मांगा तो नरेशों और पूंजीपतियों ने थैलियां बरसा दीं। मरने के लिए सिपाही मांगे तो कारखानों को छोड कर मजदूर और खेत को छोड़ कर किसान भरती के दफ्तरों में आ पहुंचे। भारत की ओर से ऐसी आशातीत सहायता मिलने से इंगलिश लोग आश्चर्यित हुए और प्रसन्न भी हुए। उस प्रसन्नता को शब्दों द्वारा बार-बार प्रकट किया। स्वयं इंग्लैण्ड के सम्राट् ने भारतवासियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए उन्हें यह आश्वासन दिया कि हम भारतवासियों द्वारा दी गई सहायता को कभी नहीं भूलेंगे और उनकी राजनीतिक अभिलाषाओं का आदर करेंगे परन्तु युद्ध समस्त होने पर जो उपहार भारत को मिला, वह रौलेट एक्ट के रूप में था, जिसे उस समय भारतवासियों ने 'काला कानून' का नाम दिया था।

काला कानून १९१९ के मार्च मास में स्वीकार हुआ। महात्मा गांधी तब दक्षिण अफ्रीका से निवृत्त होकर भारत में आ चुके थे और यहां की समस्याओं का अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने रौलट एक्ट के पास होने से पहले ही भारत के गवर्नर जनरल को यह चेतावनी दे दी थी कि यदि जनता की इच्छा के विरुद्ध सरकार ने उस दमनकारी कानून को स्वीकार किया तो देश में विरोध प्रदर्शन के लिए निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive Resistence) का आन्दोलन जारी कर दिया जायगा। सरकार ने उस चेतावनी को अनसुना करके काला कानून पास कर दिया। फलतः महात्मा जी ने सत्याग्रह की घोषणा कर दी।

इस इतिहास में कई स्थलों पर यह बतलाया जा चुका है कि स्वराज्य आर्यसमाजियों के लिए केवल नीति का अंग न होकर धर्म का आवश्यक अंग माना गया था। वेदों में स्वराज्य के उत्तम राज्य होने का विधान है, "अदीनाः स्याम शरद. शतम्" आदि वेद वाक्यों में दासता से छूटने की प्रार्थना अनेक स्थानों पर मिलती है और महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में इस सिद्धान्त का स्पष्ट शब्दों में प्रतिपादन है कि प्रत्येक देश के लिए अपना राज्य ही सबसे उत्तम राज्य है, विदेशी राज्य चाहे कितना ही शोभन दिखाई दे वह निकृष्ट हैं। इन स्पष्ट आदेशों के होते हुए यह तो स्वाभाविक ही था कि आर्य जन देश की स्वाधीनता के लिए किये जाने वाले सब प्रयत्नों में उत्साह से भाग लेते परन्तु १९१९ से पूर्व कुछ कारणों से सर्वसाधारण आर्यसमाजियों ने कांग्रेस की राजनीति में भाग नहीं लिया। ला० लाजपत राय जी ने अपने आत्म चरित में उन कारणों कर स्पष्टीकरण किया है। उनमें से दो कारण मुख्य थे। कुछ लोग यह समझते थे कि कि कांग्रेस हिन्दू हितों का विशेष ध्यान नहीं रखती इस कारण आर्यसमाजियों को उसमें भाग न लेना चाहिए। यह मत उन लोगों का था, जो आर्यसमाज को मुख्य रूप से हिन्दू सुधारक संस्था मानते थे। ऐसा मानने वाले सज्जन या तो सरकारी कर्मचारी थे अथवा उन शिक्षित पेशों से सम्बन्ध रखने वाले थे जिनका सपर्क सरकार से रहता है। वे प्रभावशाली तो थे परन्तु उनकी संख्या अधिक नहीं थी। सर्वसाधारण आर्यसमाजियों के प्रचलित राजनीति में भाग न लेने का दूसरा ही कारण था। उस विचार धारा के मुख्य व्याख्याता महात्मा मुंशीराम जी थे। उस विचारधारा का ठीक स्वरूप बतलाने के लिए हम नीचे महात्मा जी के उस लेख का उद्धरण देते हैं जो उन्होंने सूरत के कांग्रेस अधिवेशन की घटनाओं के बारे सद्धर्म-प्रचारक में लिखा था।

"आज तुम्हारी अपनी इंद्रियां तुम्हारे अपने वश में नहीं, जब अपने मन पर तुम्हारा कुछ अधिकर नहीं, तब तुम दूसरों से क्या अधिकार प्राप्त कर सकते हो? अधिकार! अधिकार!! अधिकार!!! हा। तुमने किस गिरे हुए शिक्षणालय में शिक्षा प्राप्त की थी? क्या तुमने कर्तव्य कभी नहीं सुना? क्या तुम धर्म शब्द से अनभिज्ञ हो? मातृभूमि मे अधिकार का क्या काम? यहां धर्म ही आश्रय दे सकता है। अधिकार शब्द से सकामता की गन्ध आती है। विषय-वासना का दृष्टिगोचर होता है। इस अधिकार की वासना को अपने हृदय से नोंच कर फेंक दो। निष्काम भाव से धर्म का सेवन करो। माता पर जब चारों ओर से प्रहार हो रहे हों, जब उनके केश पकड़ कर दुष्ट दुःशासन उसको भूमि पर घसीट रहा हो क्या वह समय अधिकार की पुकार मचाने का है? शब्दों पर झगड़ा करते हो? क्यों न स्वराज्य प्राप्ति के साधनों को सिद्ध करने में लगो? स्वराज्य के प्रकार का झगड़ा आने वाली सन्तानों के लिए छोड़ो। उनकी स्वतंत्रता पर इस समय इन झगड़ों से जंजीरें डालना अधर्म है। इस समय दोनों छल-कपट से काम ले रहे हैं।

जिस कांग्रेस का आधार अधर्म पर है, उसका प्राप्त कराया हुआ स्वराज्य कभी भी फलदायक न होगा, कभी भी सुख तथा शान्ति का राज्य फैलाने वाला न होगा......एक ऐसे धार्मिक दल की आवश्यकता है जो विरोधी को धोखा देना भी वैसा ही पाप समझता हो, जैसा कि अपने भाई को, जो सरकारी अत्याचारों को प्रकट करते हुए अपने भाइयों की दुष्टता तथा उनके अत्याचारों को भी न छिपाने वाला हो, जो मौत के भय से भी न्याय के पक्ष का विचार तक मन में न लाने वाला हो। पोलिटिकल जगत् में ऐसे मनुष्यों की आवश्यकता है। क्या कोई महात्मा आगे आने का साहस करेगा क्या उसके पीछे चलने

शेष ७ पर

(पृष्ठ ६ का शेष)

वाले ५ पुरुष भी निकलेंगे ? यदि इतना भी नहीं हो सकता तो स्वराज्य प्राप्ति के प्रोग्राम को पचास वर्षों के लिये तह करके रख दो।"

ऐसे ही एक दूसरे लेख में आपने लिखा था—

"यदि अग्नि और खड्ग की धार पर चलने वाले दस पागल आर्य भी निकल आवें तो राजा और प्रजा दोनों को होश में ला सकते हैं।......... भगवन् ! आर्यसमाजों की आंखें जाने कब खुलेंगी ?" इसी दृष्टि से आप नरम दल वालों के लिये "भिखार्थी" गरम दल वालों के लिये 'सुखार्थी' और सरकार के लिये 'गोराशाही' शब्दों का प्रयोग किया करते थे।

इस उद्धरण से स्पष्ट होगा कि महात्मा मुन्शीराम जी और उन जैसे विचार रखने वाले आर्यसमाजी स्वराज्य-प्राप्ति के तो पक्षपाती थे परन्तु कांग्रेस के दोनों दल जिन कार्य-नीतियों का अवलम्बन करके स्वराज्य प्राप्त करने का यत्न कर रहे थे, उनसे सहमत न थे। वे माडरेट नेताओं की योग्यता के कायल थे परन्तु उनकी भिक्षा-नीति को पसन्द नहीं करते थे। उनका विश्वास था कि मांगने से स्वराज्य नहीं मिलता, स्वराज्य तब मिलेगा जब भारतवासी उसके योग्य बन जायेंगे। गरमदल वालों के बारे में उनकी सम्मति बन गयी थी कि वे लोग कहते बहुत कुछ हैं और करते बहुत कम हैं। वे प्रदर्शन को मुख्य समझते हैं और ठोस काम को गौण। आतंकवादमें उनकी आस्था नहीं थी। इन सब कारणों से अधिकतर आर्यसमाजी १९१८ तक प्रचलित राजनीति के प्रति उपेक्षा का भाव रखते रहे। महात्मा गांधी ने सत्याग्रह की घोषणा करते हुए देश के सामने सत्य, अहिंसा और पवित्र जीवन के जो आदर्श रखे, उन्होंने महात्मा मुन्शीराम जी और उनके साथियों पर अद्भुत असर किया। वह तो मानों एक चमत्कार ही हुआ यों महात्मा गांधी जी का स्वामी श्रद्धानन्द जी से मानसिक और साक्षात्कार का परिचय कई वर्ष पुराना था। अपने भारत आने से पूर्व जब गांधी जी ने अपने सत्याग्रह आश्रम के बालकों को भारत भेजा तब उन्हें यह आदेश दे दिया कि वह भारत सत्याग्रह आश्रम की स्थापना तक गुरुकुल कांगड़ी में रहें। सत्याग्रह आश्रम के बालक, जिनमें श्री गांधी जी के होनहार पुत्र देवदास गांधी भी थे, कई महीनों तक गुरुकुल कांगड़ी में रहे। यद्यपि दोनों महात्माओं की यह समीपता अनौपचारिक थी तो भी उससे यह अवश्य स्पष्ट होता था कि दोनों के जीवन सम्बन्धी आदर्शों में बहुत समानता है। दोनों का परस्पर बन्धुत्व एक दम स्थूल रूप में प्रकट हो गया। फलतः बम्बई में गांधी जी के सत्याग्रह की घोषणा करने का समाचार पढ़ते ही स्वामी जी ने उन्हें इस आशय का तार दे दिया, कि "मैंने अभी-अभी सत्याग्रह की प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। इस धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने से मैं बहुत प्रसन्न हूं।"

आर्यसमाज के सर्व-सम्मानित नेता के सत्याग्रह संग्राम मे कूदने का परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाजियों में एक बिजली सी दौड़ गई। जो आर्यसमाजी तब तक राजनीति के प्रति उपेक्षा का भाव रखते थे वे उसके सबसे अगले मोर्चे पर आकर खड़े हो गए। अगले एक मास के अन्दर-अन्दर सहस्रों नर-नारियों ने सत्याग्रह के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। इतना ही नहीं, यदि शहरों और ग्रामों के सत्याग्रह आन्दोलन का विस्तृत इतिहास तैयार किया जाय तो मालूम होगा कि देश के उत्तरीय प्रान्तों में आर्यसमाजी लोग युद्ध की सब से अगली पंक्ति में लड़ते रहे। प्रारम्भिक वर्षों में जिन महिलाओं ने राजनीति में भाग लिया, उनकी आधे से अधिक संख्या आर्यजगत् में आयी थी।

सत्याग्रह की घोषणा के दो दिन पश्चात् दिल्ली में सत्याग्रह कमेटी बना दी गई थी। कमेटी में लगभग एक तिहाई मुसलमान, एक-तिहाई आर्यसमाजी और शेष एक-तिहाई अन्य कांग्रेसी थे। खिलाफत सम्बन्धी नाराजगी के कारण मुसलमान उस समय राष्ट्र की राजनीति की ओर झुकने लगे थे। सत्याग्रह-कमेटी के दो मंत्री थे, इन्द्र विद्यावाचस्पति और डा० अब्दुल रहमान। सत्याग्रह-आन्दोलन के उस प्रारम्भिक युग में दिल्ली ने जो महत्वपूर्ण भाग लिया, वह राष्ट्रीय इतिहास का विषय है। यह सर्वसम्मत सत्य है कि दिल्ली के उस चमत्कार-पूर्ण कार्य का एक मुख्य कारण स्व० श्रद्धानन्द जी का तेजस्वी नेतृत्व था। उनके नेतृत्व में जो कार्यकर्ता युद्ध को चला रहे थे, उनमें बड़ी संख्या आर्यजनों की थी, जिनमें आर्य-देवियां भी सम्मिलित थीं। स्वामी जी द्वारा जामा मस्जिद और फतेहपुरी मस्जिद के मेम्बरों पर वेद मंत्र की व्याख्या के साथ सत्याग्रह के सिद्धान्तों पर भाषण उस युग की एक महत्वपूर्ण घटना है।

दिल्ली की रोमांच पैदा करने वाली घटना की प्रतिक्रिया देश भर मे हुई। जन संख्या में अनुपात की दृष्टि से बहुत कम होते हुए भी आर्यसमाजियों ने न केवल प्रारम्भिक वर्षों में, अपितु अन्तिम सफलता तक स्वाधीनता के संग्राम में आगे बढ़ कर महत्वपूर्ण भाग लिया। ऐसे समय आए, जब कांग्रेस के नेताओं में आर्यसमाज और आर्यसमाजियों के बारे में सर्वथा निर्मूल भ्रमात्मक विचार फैल गए। परन्तु जिन आर्यजनों ने वेदों से अदीनता का पाठ पढ़ा था और महर्षि दयानन्द से यह शिक्षा प्राप्त की थी कि अच्छे से अच्छा भी विदेशी राज्य स्वराज्य की बराबरी नहीं कर सकता, वे अन्त तक स्वाधीनता के रणक्षेत्र में डटे रहे। न उन्हें अंग्रेजी सरकार का दमन बेदिल कर सका और न कुछ भ्रान्त राजनीतिक नेताओं की विरोध-भावना लक्ष्य से च्युत कर सकी। वे अन्त तक सत्याग्रह संग्राम की अगली पंक्ति मे जान जोखम में डाल कर लड़ते रहे।

—:०:—

सत्यार्थप्रकाश में शत्रु-विजय

श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी०, डी० बी० कालेज, गोरखपुर

स्वामी दयानन्द व्यावहारिक, दूरदर्शी और उच्चविचारक तथा मननशील महामानव थे। बड़े व्यक्ति आदर्शवादिता के वेग में बह कर कभी कभी मार्गभ्रष्ट हो जाते हैं। मार्गभ्रष्ट से मेरा मतलब यह नहीं कि वे स्वयं आचार से गिर जाते हैं परन्तु वे अपने आदर्श में उस स्थान पर पहुंच जाते हैं जहा मनुष्य के पैर जमीन पर नहीं रहते और वह आधार शून्य होकर गिर पड़ता है। अहिंसा, हिंसा तथा युद्ध और अयुद्ध के विषय में भी यही बात है। वर्तमान काल मे १९६२ ई० से पूर्व जब चीन ने भारत पर आक्रमण नहीं किया था उस समय भारत भी विश्वशान्ति के लिए जिस मार्ग पर चल रहा था वह अत्यन्त ही अनुपयुक्त था और शायद उसका परिणाम भारत का सर्वनाश होता। युद्ध बुरी वस्तु है। परन्तु, यह भी उतना ही मानव समाज के लिए आवश्यक है जितनी शांति। ससार में यही कारण है कि योद्धाओं की पूजा होती है। हिन्दू धर्म ने योद्धाओं को अवतार माना। राम और कृष्ण योद्धा थे अतः उनके ऊपर महाकाव्य लिखे गये। महर्षि दयानन्द अकेले थे परन्तु उनमें भी योद्धाओं की शक्ति थी, योद्धाओं का तेज था, योद्धाओं की स्फूर्ति और निर्भीकता थी और उन्होंने योद्धाओं की भांति युद्ध भूमि में लड़ते हुए अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया। तब भला वे सत्यार्थ-प्रकाश में राजनीति के प्रकरण में युद्ध को कैसे भूल जाते। सत्यार्थ प्रकाश, सत्य का प्रकाशक है। और वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। तो हम यह भी कह सकते हैं कि 'सत्यार्थप्रकाश वेद की व्याख्या है। वेदों में शत्रुओं के दलन का पूर्णरूप से समर्थन किया गया है। वेद विरुद्ध धर्मों जैन और बौद्ध धर्म-ने 'अहिंसा' का अशुद्ध मतलब लेकर जिस नीति का प्रतिपादन किया, उससे देश को जो दिन देखने पड़े उसके विरुद्ध क्षात्रधर्म को जागृत करने के लिए स्वामी जी ने युद्ध के विषय में अनेक महत्वपूर्ण चर्चायें की है। मातृभूमि की स्वतन्त्रता की रक्षा के अर्थ युद्ध करने की तैयारी की सूचना देने वाले वेदों में अनेक मन्त्र हैं। हमें युद्ध की तैयारी कैसी करनी चाहिए, कैसे लड़ना चाहिए सब का उल्लेख वेदों में है। अथर्व वेद के ११। ९ के प्रथम मन्त्र में आया है "वीरों के जो बाहुबल और अस्त्र शस्त्र आदि हैं तथा अन्तः करण के अन्दर जो विचार और संकल्प हैं, उनको शत्रु के साथ युद्ध करते समय अवश्य बर्तना चाहिए। हर एक शास्त्रास्त्र को तथा युक्तियों और उपायों को बरत कर शत्रु का पराजय और अपना विजय सम्पादन करना चाहिए। तथापि शत्रु के साथ युद्ध करने के पूर्व, युद्ध के समय तथा युद्ध के पश्चात् भी मनकी उदारता के साथ सब व्यवहार करना चाहिए।" दूसरे मन्त्र में कहा है—

उत्तिष्ठत सं नह्यध्वम् मित्रा देवजना यूयम्। संदृष्टाः गुप्ताः वः सन्तु या नो मित्राण्यर्बुदे ॥

अर्थात्—हे मित्र दल के लोगो! तुम देवता सदृश लोग हो। अब उठो और योग्य रीति से तैयार हो जाओ। हे वीर! जो हमारे मित्र हैं वे तुम लोगों के ठीक प्रकार देखे हुए और तुम्हारे से सुरक्षित होवें। जो स्वयं सेवक अपने मित्र होकर अपने शत्रु के साथ युद्ध करने के लिए आते हैं उनको 'मित्रदल' कहते हैं। जो स्वार्थ त्याग कर दुष्ट शत्रु को हटाने के लिए होने वाले युद्ध में अपनी आहुति देने को सिद्ध होते हैं, वे देवताओं के समान पूज्य होने के कारण उनको 'देवजन' कहते हैं। इन सब वीरों को युद्ध के दिनों में सदा सर्वदा सब प्रकार से सिद्ध अर्थात् तैयार रहना उचित है। किस समय युद्ध का अवसर होता है यह निश्चित नहीं है, इसलिए सर्वदा सब प्रकार से तैयार रहना आवश्यक होता है। युद्ध के समय अपने मित्रों को सुरक्षित रखना चाहिए। और शत्रुओं पर हमला करना चाहिए। अगले मन्त्र में कहा है—

उत्तिष्ठत मा रभेथामादान सन्दाभ्याम्। अमित्राणां सेना अभिधत्तमर्बुदे ॥

हे वीरो उठो, पकड़ने और बांधने के उपायों से चढ़ाई का आरम्भ करो और शत्रुओं की सेनाओं पर चढ़ाई करो। फिर कहा है—

उत्तिष्ठ त्वं देवजनार्बुदे सेनया सह। भञ्जन्नमित्राणां सेनां भोगेभिः परिवारय।

हे देवता सदृश मनुष्य शूर सेना-पति वीर! तू सेना के साथ उठ शत्रुओं की सेना को नष्ट भ्रष्ट करता हुआ सेना की व्यूह रचना के द्वारा शत्रु का ऐसा हो जाय कि फिर वह शत्रु न उठ सके। एक मन्त्र में कहा है—

उद्वेपय त्वमर्बुदेऽमित्राणाममूः सिचः। जयांश्च जिष्णुश्चामित्रां जयतामिन्द्र मेदिनौ।

हे शूरवीर! शत्रुओं की इन सेना पंक्तियों को तू कंपा दे। शत्रुओं को जीतने वाला और जयशाली वीर ये दोनों प्रभु के साथ रहते हुए विजय प्राप्त करें। शूर वीर ऐसा युद्ध करें कि शत्रु की सेना के सैनिक कांपने लग जायं। शत्रुओं को जीतने वाले वीर प्रभु का स्मरण न छोड़ें और घमण्ड में न आवें। प्रभु का ध्यान कर के अपने चित्त को स्थिर और पवित्र रखें।

अथर्व वेद के ११। १०। २ मन्त्र का भाव है "जो वीर अपने राष्ट्रीय झण्डे की रक्षा के लिए युद्ध करते हैं और विजय प्राप्त करते हैं वे ही राष्ट्र के संरक्षक होने के कारण

(शेष १४ पर)

आर्य समाज स्थापना दिवस के मंगल अवसर पर

(महाराज विक्रमादित्य के विजय-सम्वतसर चैत्र शुक्ला १ सम्वत् २०२३ बुधवार)

सार्वदेशिक की ओर से सम्पूर्ण आर्य जगत् का

हार्दिक अभिनन्दन

आर्य परिवारों में योग-क्षेम के लिए शुभ कामना

आओ, आर्य बन्धुओ!

ईर्ष्या, राग-द्वेष, वैर-विरोध, छल-कपट, पाखण्ड, अज्ञान, अन्धकार और कुमार्ग से हट कर वेद-मार्ग ज्ञान-मार्ग एवं आर्य-मार्ग के पथिक स्वयं बनें, औरों को बनावें।

माता-पिता का आदर, गुरुजनों की सेवा, पुत्रों में स्नेह, आर्य भाइयों में मधुरता, मित्रों में मैत्री, पति-पत्नी में सात्विक धर्म-बन्धन, यही हमारा आदर्श रहे।

स्वधर्म, स्वभाषा, स्वराष्ट्र एव स्वसंस्कृति पर हमें अभिमान हो।

हम गो-पालक हों ॥ पशु-रक्षक हों ॥ अहिंसक हों ॥

मांसाहार, मादक-द्रव्य, और द्यूत से सर्वथा दूर हों ॥

—सार्वदेशिक

Bhagwan Dayanand Saraswati and the Upanishads

by Rai Bahadur Ratan Lal, B. A., LL. B.
Formerly Common Chief Justice of 14 Malwa States
(Madhya Pradesh) High Courts.

(2)

At this stage it is essential to narrate and discuss what the Upanishads themselves hold on the subject for if the Vedic age in the world was the earliest when the most luminons of the spiritual dawns radiated their golden rays on the horizen of the world', the Upanishadic age in India was the next, 'not merely a greater efflorescence but the acknowledged source of numerous profound philosophies'.

Testimony of the Upanishads themselves.

(1) Kena Upanishad says:-

Tasyaitapo-dama-karmeti pratistha Vedah sarvangani Satyam ayatanam (4.8) It means:-

" Austerity, control of senses, and good action are the foundation of Upanishad or divine knowledge, the Vedas are its bodies and truth its abode" (page 34 of Ganga Prasad's English translation of Kena Upanishad).Even if Vedangas, the six sciences by which the understanding and application of the Vedas are effected be introduced in the interpretation, these were not revealed to the four Rishis in the beginning of the creation. These Vedangas are reputed to include phonetics, rituals, grammar; etymology, metrics and astronomy. This class of literature, "as said by the learned authors of the Vedic age on page 472, "which comes under this head does not form part of the Vedic literature but is in close association with it. It is not the Veda, a divine revelation but the Vedanga, 'the limbs of the Veda' constituting works of human authorship"

(2) Katha Upanishad:—

"Sarve veda yat padam amananti, tapamsi sarvani cha yad vadanti, Yadicchanto brahmacharyam chranti, tat te padam samgrahena bravimi aum ityatat, (I, 2, 15)

It means:—"Which word all the Vedas proclaim for attaininig whom all the penances are prescribed; desiring knowledge of whom they perform brahmacharya (celibacy with study of the Vedas) that symbol I tell the briefly: It is Om" (p.49 of Ganga Prasad's Kathopanishad). It is obvious that the authority of all the Vedas is quoted as first authority for the symbol and they are not included in the Upanishads, otherwise reference to Vedas in this mantra would obviously have been in a different language.

(3) Mundak Upanishad:—

There are two Mantras 4 and 6 in second Mundaka, First section which run thus:—

(i) Agnir murdha, chakshushi chandrasuryau, dishahshrotre, vagvi vritas cha vedah;

Vayuh prano hridyam visvam, asya-padbhyam prithivi hy esha sarva-bhutantaratma. (II.1.4)

(ii) Tasmad richa sama yajumsi diksa yajnas cha sarve kratavo dakshinas cha,

samvatsaras cha yajamanas cha lokah somo yatra pavate yatra suryah (II.I.6)

'From him (emanated) the Mantras of the RIK, the Sama and the Yajur-Vedas the initiatory rites, the burnt offerings, all the sacrifices, the donations, the year, and also the sacrificer, (and) the worlds in which the sun and moon purify (2. 1. 6)

It is clear that this Upanishad proclaims that the Vedas alone are the revealed word of God and that the Vedas Rig. Sama and Yajur emanated from him. The author includes no other work in God's Revelation.

"The Eternal Spirit that resides in the interior of all things, has disposed the fire instead of the brain the sun and the moon in lieu of the two eyes, the open directions of space in lieu of ear cavities, the Vedas as His organs of speech, the atmosphere as His lungs, the whole universe as His heart and the planets as His feet. It is thus that He lives." (Gurudat's Works, 2nd edition, Exposition of Mandukyopnishad, p. 142) (2. I. 4).

4. Prashna Upanishad

There are some Mantras in the Prashna Upanishad which prove that its author believed that the Vedas are authoritative source of all knowledge and are to be followed.

(i) Rigbhiretam, yajurbhirantariksham, samabhir yettat kavayo vedayante, tam aum karen—aivaya tanenanveti vidvan yat tae chantam, ajaram' abhayam param cati (VI.7)

(ii) araiva rathanabhau prane sarvam pratisthitam, rio yajumsi samani yajnah ksghatram brahma cha (II. 6.)

The interpretation of these mantras is given below:—By the mantras of the Rigveda the wise obtains this (Physical world); by the mantras of the Yajurveda the firmanent (astral), by the mantras of the Samaveda that which the sages know asSom - loka Brahma Loka. The wise (obtains) by the vehicle of the word, Aum alone, that which is Peace, Undecaying, Immortal, Fearless and Supreme.

(2) As spokes in the centre of a wheel so in Prana are all established the Rigveda, the Yajurveda, the Samveda, the Yagya, Valour and Knowledge.

5. Tattiriya Upanishad

The Taittiriya Upanishad has the following on the Vedas:—

(i, Vedas anuchyacharyontevasinam anushasti (I. 11. 1) 'Having taught the Veda, the teacher instructs the pupil,.

It is obvious that Veda was the aim and end of education in Upanishadic period and occupied the first place in the scheme of studies.

After giving the pupil the necessary instructions such as—speak the truth, follow Dharma and so on, the Upanishad says in I. 11.4:

(Continued on page 10)

Continued form page 9

(ii) esha adeshah, esha upadeshah esha vedopanishat, etad anu-shasanam evam upasitavyam evam u chaitad upasyam.(1-12.6)

In other words "This is the command. This is the teaching. This is the inner teaching of Veda This is the instruction. This should one worship. (Adaptation of Dr. Radhakrishnan's translation on p. 5.39 of his Principal Upanishads In 1.5.2. the Upanishad says:—

(iii) bhur iti va agnih bhuva iti vayuh suvar iti adityah, maha iti chandramah, chandramasa va va sarvani jyotinsi mahiyante. 1.5 2)

Its interpretation: Bhuh, verily is the Rigveda verses; Bhuvah is the Samveda verses, Suvah is the Yajur-veda verses, Mah is Brahma, By Brahm do all the Vedas become great.

Again in I.4 1 this Upanishad says:-
(iv) yas chandasam rishabho vishva-rupah chhandobhyo dhyamritat sambabhuve (1. 4. 1)

"May that Indra who has been manifested as comprising the Nature of all being more immortal than the immortal Vedas.

Hence according to this Upanishad the Vedas are immortal, they are to be the fulcrum of man's conduct in life and are great because they proceed from Brahma, who is greater, as the author is always greater than his work.

6 Svetasvatara Upanishad

Here are some Mantras of this Upanishad which give its idea of Vedas:—

(i) Ted veda guhyopanishatsu gudham, tad brahma—vedayate brahma yonim Ye purvam deva rishayascha tad viduh, te tanmaya amrita vai babhuvuh.

(ii) Richo,aksahre parame vyoman yasmin deva adhi vishve nisheduh,

Yas tam na vedakim richa karis-yati ya it tad vidus ta ime samasate (IV.8)

It is taken from Rig Veda 1 64-39-Atharva veda 9. 10 18

(iii) Yo brahmanam vidadhati purvam yo vai vedanscha prahinoti tasmai tam ha devam atma-buddhi-prakasham mumukshur vai saranam aham prapadye (VI. 18)

These may be translated as follows—

(1)He is concealed in the Upanishads, which explain the secret meaning of the Vedas. Him Brahman knows as the source of the Vedas. The former sages and Rishis who knew the Vedas knew Him and verily became immortal. .v 6)

(ii) Brahma is imperishable, the highest and the best and all pervading like Akasha. In Him are established the four Vedas the Rig etc. (here the word Rig is used as a class name for the four Vedas . In Him are stationed all the learned, the organs of cognition and action all the globes,the sun etc. What will he who does not know Him and does not obey His will, who obtains the doing of universal goods, do withe the Veda mantras he has read ? He can never reap the fruit boasting the knowledge of the meaning of the Vedas. But they who know that Brahma, obtain fully the fruit called virtual worldly riches desires and salvation It is, therefore imperative that the Vedas etc should be intelligently real (IV.8. (Introduction to the commentay on the Veda by Dayananda. English translation by Ghasiram page 437).

(III) He (God) who first creates Brahma and then gives the Vedas to him, to that God, the manifester of knowledge of Himself. do I, desirous of liberation approach for protection. (VI. 18) (Continued)

आर्य जगत्

आर्य समाज मलाही

में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव धूमधाम से मनाया गया। श्री बलदेवप्रसाद जी बी० ए० का सारगर्भित भाषण हुआ।

होलिकोत्सव-चौराहे पर बृहत् हवन-यज्ञ हुआ। स्वामी महावीरानन्द जी और बलदेवप्रसाद जी बी० ए० के भाषण हुए। जनता से कुरीतियों को छोड़ने की अपीलें कीं जिससे जनता पर भारी प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज के उपप्रधान श्री श्रद्धानन्द प्रसाद जी की सुपुत्री कुमारी शकुन्तला का विवाह श्री आनन्द प्रसाद जी के साथ पूर्ण वैदिक रीति से श्री पं० बी०के० शास्त्री तथा प० रामदेव शर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

चुनाव

आर्य समाज सरोजनी नगर नई दिल्ली में सर्वश्री सजानचन्द जी भाटिया प्रधान, महेन्द्रनाथ झा, बालकराम जी महेन्द्र तथा सावित्रीदेवी जी उपप्रधान, अटलकुमार जी गर्ग मन्त्री, आनन्द स्वरूप जी गाधी, मदनमोहन जी सूरी तथा रामप्यारीदेवी जी उपमन्त्री, दीनानाथ जी कोषाध्यक्ष, बृजलाल जी कल्याल पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

मराठवाड़ा आर्य सम्मेलन

बीड़ (महाराष्ट्र) में मई में होगा। सम्मेलन की सफलता के लिए सर्वश्री प० नरेन्द्र जी, प्रधान सभा, रामचन्द्रराव कल्याणी एम० एल० ए० मन्त्री सभा, बाबूलालजी श्रीवास्तव,प्रधानमार्यसमाज. जगतनारायण जी तोतला कोषाध्यक्ष, श्री महादेवप्पा डेपे जी मन्त्री ने आर्य जनता से अपील की है। श्री सत्यदेव आर्य और श्री गोपालदेव शास्त्री संयोजक चुने गए।

आर्य समाज कृष्णानगर

ने पंजाब के टुकड़े करने का विरोध किया है। और श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज द्वारा अनशन पर गहरी चिन्ता प्रकट की है।

आर्य समाज शामली

ने श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज और वीर यज्ञदत्त जी शर्मा द्वारा अनशन पर गहरी चिन्ता प्रकट करते हुए मंगलमय भगवान् से स्वस्थ होने की प्रार्थना की है।

प्रार्थना करो

आर्य युवक संघ शामली के प्रधान श्री रहतूलाल ने एक प्रस्ताव द्वारा देश भर के आर्य युवकों से अपील की है कि महान् आर्य संन्यासी श्री स्वामी सत्यानन्दजी महाराज तथा वीर यज्ञदत्त जी की स्वास्थ्य रक्षा के लिये प्रार्थना करें।

आर्य समाज बड़ौत

ने एक प्रस्ताव द्वारा पंजाब के टुकड़े करने का घोर विरोध किया है।

चुनाव

आर्य समाज चौढेरा (बुलन्द शहर) के निर्वाचन में श्री डा० मगलसेन जी शर्मा प्रधान, श्री डालचन्द जी उपप्रधान, श्री बाबूलाल जी अध्यापक मन्त्री, श्री चन्द्रपालसिंह उपमन्त्री, श्री हरदेव जी कोषाध्यक्ष, श्री ओहरीप्रसाद पुस्तकाध्यक्ष एवं श्री राधेश्याम जी निरीक्षक चुने गए।

अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा पटना बिहार से सम्बन्धित-गुरुकुल महाविद्यालय बैरगनिया, बिहार ने आर्य जगत् से आर्थिक सहयोग की अपील की है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की शिक्षा का परिणाम शतप्रतिशत रहा है।

आर्य समाज गंगोह

की ओर से गंगोह में ब्रह्माकुमारी प्रचार का विरोध किया गया जिससे एक ब्रह्माकुमारी प्रचारिका वहां से चली गई।

आर्य समाज शक्तिनगर नई दिल्ली

ने एक प्रस्ताव द्वारा पंजाबी सूबा और हरियाणा के पृथक् निर्माण का घोर विरोध किया है।

क्रान्ति के महान् देवता

श्री ओम्प्रकाश जी एम० ए०, बी० टी०,
मन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द वस्तुत: महान् क्रान्तिकारी थे। उन्होंने व्रत-जीवन में वह अनोखी क्रान्ति मचाई कि भारत ही नहीं, फ्रांस के महान् लेखक रोम्यां रोलां ने कह दिया कि ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति-शून्य शरीर में दुर्धर्ष शक्ति तथा सिंह-पराक्रम फूंक दिया है। आप दयानन्द के जीवन-तत्वों तथा उपदेशों पर यदि दृष्टिपात करें तो आप को एक ही नाद दिखाई पड़ेगा 'क्रान्ति' और वह भी सर्वतोमुखी, क्या व्यक्तिगत जीवन और क्या समष्टिगत जीवन, हर एक के लिए उस दिव्यात्मा ने एक अद्भुत सन्देश दिया। आप किसी भी क्षेत्र पर दृष्टि डाले, आप को उस में दयानन्द की अन्तर्ध्वनि स्पष्ट सुनाई देगी। उन्होंने हिन्दू ही नहीं, ईसाई-मुस्लिम को भी वेदामृत का पान कराने का घोर प्रयास किया। उन्होंने भारत ही नहीं संसार भर के उपकार का बीड़ा उठाने का आदेश अपने 'आर्य-समाज' को दिया और प्राणि-मात्र को 'मनुर्भव' (मनुष्य बन) का पवित्र उपदेश दिया। फिर उस दिव्य पुरुष की क्रान्ति विद्रोह पर नहीं, शान्ति पर आधारित है। उस महात्मा की क्रान्ति वैमनस्य पर नहीं, प्रेम पर अवलम्बित है। वे प्रबल, अकाट्य युक्तियों से मानव के हृदय को जीवन तथा समाज में क्रान्ति लाने की अपील करते हैं। किसी डंडे या बम का आश्रय लेकर नहीं। उन का अपना जीवन इस चौमुखी क्रान्ति का मुंह बोलता चित्र है। तभी तो जीते जी उन्होंने कई सुप्त आत्माओं को जगाया और प्राण छोड़ते-छोड़ते नास्तिक-शिरोमणि गुरुदत्त को जीवन-दान दे गए।

व्यक्ति गत जीवन में क्रान्ति

दयानन्द ने सुमुख ध्वनि से कहा कि मनुष्य का सब से मुख्य कर्तव्य है अपने जीवन में क्रान्ति लाना। जब तक वह अपने व्यक्ति गत जीवन में सुधार नहीं करेगा, तब तक वह किसी के काम क्या आ सकेगा! एक रोगी मनुष्य अपने लिए ही भार होता है, वह दूसरों की सेवा क्या करेगा? अत: महर्षिवर ने कहा कि हर मानव को शारीरिक स्वास्थ्य की ओर [illegible] ध्यान देना चाहिये। बिना स्वस्थ शरीर के न अपना न संसार का कोई काम हो सकेगा, और शारीरिक स्वास्थ्य का आधार उन्होंने 'ब्रह्मचर्य' बताया।

पर इसी से क्या व्यक्तिगत जीवन मे क्रान्ति आ जाएगी? नहीं, कदापि नहीं! अन्तर्दृष्टी महर्षि ने कहा कि इस के साथ २ मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य भी चाहिए। उस बलिष्ठ शरीर से क्या लाभ जो किसी के काम न आकर दूसरों के ताड़न-पीड़न में ही लगा रहे। वह बल किस काम का जो बलहीनों के शोषण को ही अपना ध्येय बनाए रखे। उस शक्ति का क्या प्रयोजन जो अन्याय और अत्याचार को ही बढ़ावा देती रहे! अत: दिव्यदृष्टि वाले उस योगी ने कहा कि साथ-साथ मन को पवित्र और आत्मा को निर्मल बनाने की ओर भी ध्यान देना चाहिए। मन में वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष और घृणा यदि हर समय ठाठें मारते रहते हों तो व्यक्तिगत जीवन में उन्नति कैसे हुई? हृदय यदि हर समय अहंकार और क्रोध का ही पुञ्ज बना रहता हो, किसी से बदला लेने, किसी को तंग करने, किसी को दिल दुखाने के लिए ही कराहता रहता हो, तो व्यक्तिगत जीवन में सुधार कैसा? यदि मन हर समय अशान्त रहे और किसी निष्काम सेवा का, या काम करने, या किसी दुखिया के दर्द को को मिटाने की प्रेरणा इन्द्रियों को नहीं देता तो जीवन में क्रान्ति क्या हुई?

और इस की योजना भी उन्होंने बता दी—मानव मात्र को आर्य 'श्रेष्ठ पुरुष' बनने का आदेश दिया। प्रत्येक आर्य के नित्य कर्म में ब्रह्मयज्ञ 'सन्ध्या' को मुख्य स्थान दिया और कहा कि मन को सब ओर घुमाओ और देखो कि हर ओर प्रभु की छटा विराजमान है। हर ओर से उस परम पिता के सुरक्षा के तीर आप के सम्मुख आ रहे हैं। उस परमात्म देव का धन्यवाद करो कि उसने यह सब कुछ बिना मूल्य के हमें प्रदान किया। और साथ ही उससे डरो! वह सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी है, वह हर काम को देखता है और सब शुभा-शुभ कर्मों का फल देता है। अत: जो कुछ ईमानदारी से प्राप्त होता है, उसी को आनन्द से भोगो, 'मा गृधः कस्यस्विद्धनम्' (किसी दूसरे के धन पर लोभ दृष्टि न रखो) यह शरीर नश्वर है, अमानत के रूप में तुम्हें कुछ समय के लिए मिला है, इस से कुछ पुण्य कमा लो। नित्य प्रात: सायं उस प्रकाश स्वरूप की शरण मे बैठ कर, बिजली के उस महान् पावर हाउस से अपनी आत्मा में प्रकाश लाने का यत्न-प्रयत्न किया करो। प्रकृति के चका चौंध करने वाले माया जाल में फस कर 'आत्मान विद्धि' के पवित्र उपदेश को न भूलो। महर्षि ने ललकार कर कहा था, "याद रखो, केवल कहने से कुछ न होगा, करने से ही कुछ बनेगा- "यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्।"

सामाजिक क्रान्ति

केवल व्यक्तिगत जीवन में क्रान्ति लाने से ही क्या सब समस्यायें सुलझ जाएंगी? उस महान् त्यागी ने हिमालय की चोटी से सिंहनाद बजा कर कहा 'नहीं' मनुष्य समाज का ही तो अंग है, वह समाज के बिना रह ही नहीं सकता, उसे अपने बन्धु-बान्धवों, दोस्त-मित्रों, पड़ोसी-पड़ोसियों, देश विदेश-वासियों से निर्वाह करना है। अत: उसे समाज में क्रान्ति लाने का भी घोर प्रयत्न करना चाहिए। आर्य समाज के नवें नियम के द्वारा ऋषि ने इस का स्पष्टीकरण कर दिया—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

दयानन्द ने स्वयं समाधि के महान् आनन्द को लात मार कर आर्य जाति की दयनीय दशा पर खुले क्षेत्र में आकर अश्रुपात किया। भारत की दरिद्र नारी को रात के समय अपने मृत पुत्र को बिना कफन नदी में बहाता देख कर दयानन्द रो पड़े। उन्होंने ईंटें फूल समझ कर खाई, विष के घूंट अमृत समझ कर पीए, पर अपने इस दिव्य सन्देश को चरितार्थ करने से वह जरा भी डग-मगाए नहीं और एक प्रबल सामाजिक क्रान्ति मचा दी।

उन्होंने कहा कि यह घोर पाप है कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से इस लिए घृणा करे कि वह तथाकथित नीच कुल में उत्पन्न हुआ है अथवा उस का रंग काला है। महर्षिवर ने कहा कि यह अधर्म की पराकाष्ठा है कि एक मानव की छाया से भी हम घबराएं, उस के कुंए पर चढ़ने मात्र से जल गन्दला हो जाए, उसके दर्शन-मात्र से भगवान् के तथा कथित पत्थर के रूप में देवी देवता भ्रष्ट हो जाए। दयानन्द की आत्मा अछूतों की दलिता-वस्था देख कर कराह उठी। बाल विधवाओं का रुदन सुन कर उनके हृदय में विद्रोह की एक प्रचण्ड ज्वाला भड़क उठी और उन्होंने वह अद्वितीय सामाजिक क्रान्ति मचा दी कि महात्मा गान्धी तक ने उन्हें अछूतोद्धार के क्षेत्र में अपना गुरु माना।

राजनीतिक क्रान्ति

राजनीतिक क्रान्ति तथा देश भक्ति की भावना में दयानन्द किसी से पीछे नहीं। १८५७ का स्वातन्त्र्य संग्राम अपने पूरे यौवन पर था। अंग्रेज अपने साम्राज्य के नशे में उसे विद्रोह का नाम दे रहा था। उस समय के महर्षि के जीवन के दो तीन वर्ष के समय का जीवन-वृत्तान्त न उन्होंने स्वय दिया न अन्य लोग कुछ जान पाए। ऐसे अन्वेषक अब हैं जिन का विचार है कि देश भक्ति की एक प्रचण्ड भावना दिल में रखने वाला दयानन्द उस समय देश के सैनिकों का गुप्त रूपेण नेतृत्व कर रहा था और देश के कोने-कोने में घूम कर सर्वसाधारण को विदेशी शासन के विरुद्ध उत्तेजित कर रहा था। आप उन के अमर-ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' के छटे समुल्लास को उठा कर राष्ट्र-निर्माण के भिन्न-भिन्न अंगों पर उनके विचार पढ़ लीजिए और देखिए कि आदर्श राजनीति के वे आधार हैं कि नहीं। धर्म, राज्य, विद्या आर्य सभाओं का निर्माण तथा प्रजा तन्त्र की उच्च भावना, दुष्टों को कड़ा दण्ड आदि का उदाहरण देना ही यहां पर्याप्त होगा।

'स्वराज्य' और 'स्वदेशी' शब्दों का आदर्श राष्ट्र-निर्माता दयानन्द ने उस समय नाद बजाया जब इण्डियन नैशनल कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था और विदेशी राज्य के विरुद्ध एक शब्द भी कहना जब घोर राज-नीतिक अपराध समझा जाता था। उस समय महर्षि ने स्पष्ट कोमल शब्दों में लिखा।

'कोई कितना ही कहे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा,न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।

(अपूर्ण)

स्वामी दयानन्द संसार को क्यों प्यारा है ?

श्री पं० नरेन्द्र जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद

स्वामी दयानन्द ने १९ वीं शताब्दि में जो क्रान्ति पैदा की है, शायद ही किसी अन्य शताब्दि में इस प्रकार की क्रान्ति हुई हो। स्वामी दयानन्द से पूर्व भारतमाता ने एक नहीं अनेकों सुधारकों को जन्म दिया है। केरल प्रान्त ने स्वामी शंकराचार्य को, तो बंगाल ने स्वामी विवेकानन्द, विद्या सागर और राजाराम मोहनराय को तो पंजाब की पवित्र भूमि ने रामतीर्थ, नानक और गुरु गोविन्द को जन्म दिया। इन महानुभावों ने समय की स्थिति से प्रभावित होकर जो भी जाति की सेवाएं की हैं, वह जाति और देश के लिए गर्व का कारण है। लेकिन दयानन्द का व्यक्तित्व इन सबसे निराला था, वह समय के प्रभाव से ऊंचा था। क्योंकि उसे अपने प्रभु पर पूरा भरोसा था। भला प्रभु का प्यारा सांसारिक ऐश्वर्यों में कब फस सकता है। यही वजह है कि –

स्वामी दयानन्द संसार को प्यारा है !

ससार अज्ञान, अन्धकार में फंसा हुआ था। वैदिक संस्कृति यवन राज्य के प्रभुत्व से, आर्यों के दिलों से नष्ट हो चुकी थी और रही सही को पाश्चात्य सभ्यता ने नष्ट करने की ठान रखी थी। ऐसे समय में किसी मां के पूत ने वैदिक संस्कृति के पुनरुद्धार का बीड़ा नहीं उठाया। लेकिन धन्य हो भारत माता के सपूत दयानन्द योगिराज को, कि, जिसने लौकिक सुखों को तिलांजलि देकर नास्तिकता के घनघोर बादलों को छिन्न-भिन्न करके ईश्वर-भाव को हृदयों में जागृत किया, और प्रत्येक नवयुवक को वैदिक सभ्यता का मत-वाला बनाकर वैदिक संस्कृति की रक्षा की। धन्य हो। योग से बढ़कर संस्कृति की विशेषता देने वाले दया-नन्द धन्य हो। यही एक कारण है कि—

तू संसार को प्यारा है

पराधीनता की बेडियों से जकड़ी हुई भारतमाता के विलाप को किसने सुना ? और उसकी पराधीनता को नष्ट करने के उपाय किसने ससार को बताये ? वह महर्षि दयानन्द था, जिसने कहा कि "एक धर्म का पालन, एक पुस्तक का सहारा, देशी वस्तु का प्रयोग, राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार" यह वह विचार है, जिन के धारण करने से भारतमाता पराधी-नता से मुक्त हो सकती है। इन भावों को भारतियों के हृदय में जागृत करने वाले महर्षि ! तुझे प्रणाम है। इस लिये

तू संसार को प्यारा है

सहारनपुर के निवासियों ने तुझे डराया, लाहौर वालों ने तुझे घर से बाहर किया, पूना के पोप पण्डितों ने तेरी बेइज्जती की। लेकिन धन्य हो बेखौफ दयानन्द, तूने किसी की परवाह नहीं की, क्योंकि तेरा जीवन वेदों के सत्य सिद्धान्तों पर निर्धारित था। तू ईश्वर का अमृत पुत्र था। उसका अनादि सन्देश संसार को सुनाने आया था। तुझे कौन डरा सकता। तुझे संसार वालों का डर न था-था तो ईश्वर का। यह सिद्धान्त जो तूने, "ईश्वर से डरो, दुनिया वालों से नहीं" हमें सिखाया इसलिये

दयानन्द तू संसार को प्यारा है

वेदों का पवित्र सन्देश, शास्त्रों के सूक्ष्म सिद्धान्त, उपनिषदों का उच्च भाव, गीता के वचन सब के सब जाति के हृदय पटल पर से मिट चुके थे। जाति कायर और भयभीत हो चुकी थी। लेकिन दयानन्द ने अपनी मृत्यु के शानदार दृश्य को संसार के सामने रख कर हिन्दू जाति को मरना सिखाया। और आत्मा के अमरत्व का सबक पढाया इसलिये –

दयानन्द तू ससार को प्यारा है।

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

आर्य समाज गंगोह (सहारनपुर)

ने बजाजी सूबे के निर्माण का घोर विरोध किया।

सैकड़ों आर्य नर-नारियों द्वारा अनशन

आर्य युवक संघ तथा आर्यसमाज जालसी की प्रेरणा पर सैकड़ों आर्य नर नारियों ने एक दिन का अनशन किया है।

आर्य समाज, टिहरी

ने यज्ञ-हवन के साथ शास्त्रोचित होली मनाई। जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज, समहूर

का वार्षिकोत्सव ता० ८-९-१० अप्रैल को होना निश्चित हुआ है।

आर्य समाज, झांसी

के चुनाव में सर्वश्री गयाप्रसादजी प्रधान, सीताराम जी वर्मा उपप्रधान, सीताराम जी आर्य मन्त्री ब्रजबिहारी निगम उपमन्त्री, जगजीवन लाल जी कोषाध्यक्ष, तथा भगवत सिंह जी पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज, शामली

के चुनाव में सर्वश्री इन्द्र वर्मा जी प्रधान, ला० वेदप्रकाश और प० भगत सिंह जी उपप्रधान, बनारसीदास जी बीमान मन्त्री, गुरुचरण और श्याम लाल जी उपमन्त्री, रहतूलाल जी गुप्त कोषाध्यक्ष सुभाषचन्दजी पुस्तकाध्यक्ष तथा रामप्रसाद जी निरीक्षक चुने गए।

आर्य समाज, चौक इलाहाबाद

के चुनाव में सर्वश्री बैजनाथ प्रसाद गुप्त प्रधान, डा० दयास्वरूपजी आदि पांच उपप्रधान, हरिमोहनलालजी मन्त्री, कृष्णप्रसादजी आदि ५ उपमन्त्री एवं नवरत्न विद्यालंकार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज श्रद्धानन्द पथ रांची

की ओर से डारेन्डा में आर्य-समाज की स्थापना की गई। सर्वश्री जयपाल ठाकुर प्रधान, नन्दकुमारराम मन्त्री, सच्चिदानन्दसिंह उपमन्त्री एवं लक्ष्मीराम जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आ०स० रांची, कुम्बा, सिमडेगा

और जयपुर की आर्य समाजों के तत्वावधान में सिमडेगा में गांधी मेले के अवसर पर वैदिक प्रचार का सफल कार्य-क्रम रहा।

—आप अपने मित्रों और साथियों को सार्वदेशिक के ग्राहक बनने की प्रेरणा करें।

शोक समाचार

श्री प्रधान सीताराम जी कपूर का ८५ वर्ष की आयु में आकस्मिक दिल्ली में घर पर आकर निधन हो गया।

प्रधान जी पर्याप्त समय से वेद विद्यालय गुरुकुल घरौण्डा जि०करनाल के ब्रह्मचारियों के संरक्षक रहे, और गुरुकुल से पूर्व भी अनाथालय एवं आर्य समाज के प्रधान पद पर दिल्ली और फिरोजपुर आदि नगरों में कार्य करते रहे। उनके निधन से गुरुकुल तथा आर्य समाज की बड़ी क्षति हुई।

वेद विद्यालय गुरुकुल घरौण्डा के अधिकारी और ब्रह्मचारियों ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए, भगवान् से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा परिवार को धैर्य प्रदान करें।

बजार (कुल्लू) निवासी महाशय चिरञ्जीलाल जी का ७२ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप स्वाध्याय-शील, दृढ़ आर्य थे।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, प्रयाग ने स्वातन्त्र्य वीर सावरकर, श्री कालू राम जी गुप्त, श्री सालिगराम जी गुप्त के निधन पर शोक प्रकट किया है।

आ.स., देवनगर, फिरोजाबाद

के निर्वाचन में सर्वश्री डा० दीवानचन्द खुराना प्रधान, महेन्द्रदत्त पालीवाल उपप्रधान, दिनेशचन्द 'दिनकर' मन्त्री, इन्द्रपाल गुप्त उपमन्त्री, महेन्द्रकुमार श्रीवास्तव कोषाध्यक्ष, खूबचन्द आर्य पुस्तकाध्यक्ष तथा महेशचन्द श्रीवास्तव निरीक्षक चुने गए।

आ.स. स्वामी श्रद्धानन्द रोड रांची

ने श्री नन्दकुमारलाल जी एडवोकेट के निधन पर शोक प्रकट किया है आप बिहार के समाजसेवी नगर पालिकाध्यक्ष तथा विधान परिषद के सदस्य रह चुके थे।

आर्य औषधालय

आर्य समाज बरबीघा की ओर से स्थापित आर्य औषधालय जनता की भारी सेवा कर रहा है। हजारों रोगी लाभ उठा चुके हैं।

प्रचारक हैं

आर्य समाज बरबीघा में संस्कार उपदेश, कथा तथा शंका समाधान के लिए विद्वान् प्रस्तुत हैं।

आर्य समाज देहरादून

के लिये निम्न पदाधिकारी सर्व-सम्मति से चुने गये।

श्री प० हीरानन्द प्रधान
श्री पं० तेजकृष्ण दीनानाथ
धर्मेन्द्रसिंह उपप्रधान,
श्री विद्या भास्कर शास्त्री मन्त्री,
श्री देवदत्त, दलीपसिंह,
ईश्वर दयाल उपमन्त्री,
श्री लक्ष्मीचन्द कोषाध्यक्ष
श्री देवदत्त जी स० कोषाध्यक्ष,
श्री हर्ष पवतीय पुस्तकाध्यक्ष,
श्री हवमणी स०,
श्री अखिलमोहन निरीक्षक।

धन्यवाद-पत्र

हमारी शिरोमणि सभा द्वारा अद्भुत प्रयत्न से महर्षि बोधांक का सुन्दर नमूना आर्य जनता के समक्ष रखा। निःसन्देह यह एक महान कार्य है। बोधांक को देख कर पढ़ कर तथा समझ कर, नया उत्साह मिला।

आर्य समाज के सभी सभासदों ने बड़े उत्साहसे इसको ग्रहण किया। और अब सभी के मुख से बोधांक की भूरि-भूरि प्रशंसा की जा रही है।

इस बोधांक में जिन-जिन महानुभावों का सहयोग रहा है। वे धन्यवाद के पात्र हैं, आर्य समाज पीपाड़ के सभी सदस्यों की ओर से धन्यवाद स्वीकार करावें।

(पृष्ठ ८ का शेष)

सच्चे शासक हैं। और अब राज्य उनका ही है। इन वीरों के मन में ये ही भाव होते हैं कि जो दुष्ट और उपद्रवी होते हैं अर्थात् उनका वेध हमेशा दुष्ट मनुष्यों पर ही होना चाहिए। वीर पुरुष दुष्टों का शासन करें और शिष्टों का पालन करें। यही शासन है। जो इस प्रकार शासन करते हैं वे ही क्षत्रिय 'ईश' कहलाते हैं।"

प्राचीन काल में संग्राम में स्थल सेना और रथारोहिणी सेना होती थी। पदातिक अपना अपना अस्त्रशस्त्र लाते थे। रथी अपने रथ पर आते थे। धनुष, बाण, भाला, बरछा, कृपाण, फरसा मुद्गर आदि का युद्ध में बाहुल्य था। योद्धा लोहे इत्यादि के अस्त्र धारण कर युद्ध भूमि में उतरते थे। बाणों की अनी (शल्य) धातु की होती थी। विषधर बाण भी काम में लाए जाते थे। युद्ध के विषय में यजुर्वेद २९-३९ में आया है--

"धनुष से हम गौएं जीतें, धनुष से युद्ध जीतें, धनुष से तीक्ष्ण समर जीतें धनुष शत्रु की कामनायें कुचलता है। धनुष से हम सारी दिशायें जीत डालें।"

ठीक इसी आशय का मन्त्र ऋग्वेद ६ मण्डल ७५ सूक्त का दूसरा मन्त्र भी है। इस ७५ वें सूक्त के १९ मन्त्रों में रणांगण का और शस्त्रास्त्रों का बड़ा साहसिक और मार्मिक वर्णन है। ५ वां मन्त्र कहता है—

'यह तूणीर अनेक बाणों का पिता है। कितने ही बाण इसके पुत्र हैं। बाण निकालने के समय यह तूणीर 'चिश्चा' शब्द करता है। यह योद्धा के पृष्ठ देश मे निबद्ध रह कर युद्धकाल में बाणों का प्रसव करता हुआ सारी सेना को जीत डालता है। सातवां मन्त्र ऐसा विवरण देता है--

'घोड़े टापों से धूलि उड़ाते हुए और रथ के साथ सवेग जाते हुए हिन हिनाते हैं। घोड़े पलायन न करके हिंसक शत्रुओं को टापों से पीटते हैं।'

तेरहवें मन्त्र में आया है—

'हस्तघ्न (ज्या के आघात से हाथ को बचाने के लिए बंधा हुआ चम) ज्या के आघात का निवारण करता हुआ सर्प की तरह शरीर के द्वारा प्रकोष्ठ (बाहु से मणिबन्ध तक) को परिवेष्टित करता है, सारे ज्ञातव्य विषयों को जानता है और पौरुषशाली होकर चारों ओर से रक्षा करता है।'

सोलहवें मन्त्र में आया है—

मन्त्र द्वारा तेज किए गए और हिंसा परायण बाण, तुम छोड़े जाकर गिरो, जाओ और शत्रुओं पर पड़ जाओ। किसी भी शत्रु को जीते जी नहीं छोड़ना।

यह सारा सूक्त देखने पर वेदों में युद्ध का महात्म्य प्रतिपादित पाया जाता है। इस संग्राम का नेता राजा होता था। वह समस्त सूक्त युद्ध भूमिका वीर भाव है। प्रत्येक मन्त्र में वीर शास्त्रों से बात करता हुआ प्रतीत होता है।

ऋग्वेद १। ३९। २ मन्त्र है:—

स्थिराः व. सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे। युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः॥

अर्थात् हमारे शस्त्र शत्रुओं को दूर भगाने के लिए सुदृढ़ रहें। और शत्रुओं का प्रतिबन्धन करने के लिए बलवान रहें। तुम्हारी शक्ति प्रशंसनीय होवे। कपटी दुष्ट की शक्ति बढ़कर न होवे। अथर्ववेद में सीसे की गोली से शत्रुओं को बेधने का आदेश दिया है —

सीसमाध्याह वरुणः सीसायाग्नि रुपावति सीसं म इन्द्रः प्रायच्छत्तदंग यातुचातनम्॥ अ० १। १६। २

इदं विष्कन्धं सहत इदं बाधते अत्त्रिण अनेन विश्वा ससहे या जातानि पिशाच्याः।

अ० १। १६। ३

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्। त त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा।

अ० १। १६। ४

अर्थात् वरुण जल का देवता, अग्नि आग की देवता, इन्द्र विद्युत का देवता है। अर्थात् जल, अग्नि विद्युत से संस्कार किया हुआ सीसा अर्थात् उसकी गोली डाकुओं का नाश करती है यह सीसे की गोली लुटेरों, शत्रुओं और डाकुओं को पराभूत करती है। यह राक्षसों, दुष्टों को हटाती है जो पिशाच और रुधिर पीने वाली जातियां हैं उन सबको इससे जीता जाता है।

आगे लिखा है गौ, घोड़ा, मनुष्य आदि की हिंसा करने वाले तथा हमारे वीरों के नाश की बात करने वाले, दुष्ट डाकू लुटेरे और विदेशी जो कोई हमला करने वाले हों उन पर गोली चलानी चाहिए और उनको दंड देकर सज्जनों की रक्षा करनी चाहिए।

शत्रुओं पर धूमास्त्र का प्रयोग करने की चर्चा करते हुए अथर्ववेद के ३। २। ६, ऋग्वेद के १। ८२। ८ और १। ३९ में कहा गया है—

"शत्रु की सेना जिस समय हमारे ऊपर चढ़ाई करने आ रही हो उस समय शत्रु पर धूमास्त्र फेंक कर उनकी ऐसी अवस्था बनानी चाहिए कि उनके सैनिकों में से कोई एक दूसरे को न जान सके।"

"वीर पुरुष विजय प्राप्ति, यश, आदि के उद्देश्य से उत्साह युद्ध करें। जिससे लोग उनसे डरें और शत्रु भी भय खायें।

इस प्रकार वेदों में शत्रुओं से युद्ध करने उन्हें परास्त करने का उल्लेख स्पष्ट रूप से मिलता है इसी आधार पर सत्यार्थ प्रकाश में युद्ध नीति का स्वामी दयानन्द ने उल्लेख किया है। यह देखने योग्य है। (क्रमशः)

प्रधानमंत्री और गृहमंत्री से

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों की भेंट

स्व० श्री नेहरू जी के आश्वासनों को याद करो

नई दिल्ली १९ मार्च।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों का एक प्रतिनिधि मण्डल पंजाबी सूबे की समस्या पर बातचीत करने के लिए प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी से कल रात उनके निवास स्थान पर मिला। प्रतिनिधि मण्डल ने प्रधान मन्त्री से मांग की कि कांग्रेस कार्य समिति द्वारा गत ९ मार्च को जो निर्णय किया है उसे वापस लिया जाय।

प्रतिनिधि मण्डल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री लाला रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में मिला। प्रतिनिधियों में वीरअर्जुन के सम्पादक श्री के० नरेन्द्र और आर्यवीरदल के संचालक श्री ओ३म्-प्रकाश जी त्यागी तथा आर्य केन्द्रीय सभा के उपप्रधान श्री सोमनाथ जी मरवाहा एडवोकेट थे। प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी से जब यह शिकायत की गई कि उन्होंने अपने एक वक्तव्य के द्वारा पंजाब की जनता को यह आश्वासन दिया था कि सरकार पंजाब का कोई ऐसा हल खोजने का प्रयत्न करेगी जिसमें समस्त वर्ग सहमत हों परन्तु आपने ऐसा नहीं किया? उन्होंने उत्तर उत्तर में कहा कि उन्होंने इसके लिये श्री हुकम सिंह जी के नेतृत्व में एक कमेटी बनाई है तब प्रतिनिधि मण्डल ने शिकायत की कि कांग्रेस कार्य समिति ने पंजाबी सूबे के सम्बन्ध में जो निर्णय सरदार हुकमसिंह के अध्यक्षता में गठित संसदीय समिति के आधार पर किया गया है। उसमें अधिकांश उन्हीं व्यक्तियों व संस्थाओं को आमन्त्रित किया है जो पंजाबी सूबे के पक्ष में है और इसका विरोध करने वालों को नहीं बुलाया। उसमें आर्य समाज, नामधारी सिख, मजहबी रामदासी सिख, तथा बहुत सी उन प्रभावशाली संस्थाओं के प्रतिनिधियों की उपेक्षा की गई जिनसे सम्बन्धित व्यक्ति पंजाब में भारी संख्या में रहते हैं।

श्रीमती गांधी से श्री वीरेन्द्र तथा श्री यश की गिरफ्तारी की ओर भी ध्यान आकर्षित करते हुए सरकार द्वारा पंजाबी सूबे का विरोध करने वाले व्यक्तियों को दमन करने की निन्दा की। श्रीमती गांधी ने इन दोनों नेताओं की गिरफ्तारी के प्रति अपनी जानकारी न होने का भाव प्रकट किया। बात-चीत के दौरान श्रीमती गांधी ने कोई आश्वासन नहीं दिया और इस सम्बन्ध में स्वराष्ट्र मन्त्री श्री नंदा से बातचीत करने की सलाह दी। इस अवसर पर प्रधानमन्त्री ने स्वामी सत्यानन्द जी का अनशन तुड़वाने का प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों से अनुरोध किया। प्रधानमन्त्री को उत्तर में बताया कि जब तक कोई उचित आश्वासन नहीं मिलता तब तक स्वामी जी द्वारा अनशन समाप्त करने की चर्चा कैसे की जा सकती है। जिस सिद्धान्त के लिए स्वामी जी अनशन कर रहे हैं उसकी ओर यदि सरकार कोई आश्वासन दें तो इस सम्बन्ध में विचार किया जा सकता है।

दिनांक २० मार्च को गृहमंत्री श्री नन्दा जी से भी भेंट हुई और आज २१ मार्च तक बातचीत चल रही है।

दिल्ली की आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सामवेद

(मूल मंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित)

भाष्यकार श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

(स्नातक गुरुकुल कांगड़ी)

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् मे भारी प्रशंसा हुई और चार हजार (४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थी। तबसे इसकी भारी माग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस मे छपवाया है।

यह २८ पौंड सफेद कागज पर कपडे की जिल्द और मूल्य ४ रुपये है भारी संख्या मे मगवाइये। पोस्टेज पृथक।

हिन्दू राष्ट्र को सच्चा मार्ग दिखाने वाली सर्वश्रेष्ठ धर्म पुस्तक

वैदिक-मनुस्मृति श्री सत्यकामजी

हिन्दी टीका सहित—हिन्दू धर्म ग्रन्थो मे चारो वेदो के पश्चात् एक मात्र प्रमाणिक पुस्तक यही है। यद्यपि वेदो का समझना साधारण जनो के बस मे नहीं, पर मनुस्मृति को नागरी पढा हुआ व्यक्ति भी समझ सकता है। ४६८, पृष्ठ मूल्य ४।।) साढे चार

बृहद् दृष्टान्त सागर सम्पूर्ण पाँचों भाग

प० हनुमान प्रसाद शर्मा

इस ग्रन्थ मे वैदिक, लौकिक सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक राजनैतिक, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य आदि सभी विषयो के अच्छे से अच्छे दृष्टान्तो का संकलन किया है। संसार के अनेक महापुरुषो, सन्तों, राजाओ, विद्वानो एव सिद्धो के अनुभूत तथ्यो का अनोखा समावेश है। सच तो यह है कि यह अकेला ग्रन्थ सभी श्रेणी के लोगो के सभी प्रकार की मानसिक पीडाओ को मार भगाने के लिए पर्याप्त है। कथावाचक कथा मे, उपदेशक अपने प्रतिपाद्य विषय मे और अध्यापक इसके प्रयोग से छात्रो पर मोहिनी डालते हैं। बालक कहानी के रूप मे इसे पढकर मनोरंजन का आनन्द ले सकते है। वृद्ध इस ग्रन्थ के पन्ने-पन्ने मे अपने भगवान् और उनके भक्तो की झाकी पा सकते हैं। माताये इसे पढकर अपने मतलब का ज्ञान प्राप्तकर सकती हैं। इस प्रकार सबका ज्ञान इस पुस्तक मे बढ सकता है। पृष्ठ संख्या ८६८

सजिल्द, मूल्य केवल १०।।) साढे दस रुपया, डाक व्यय २) अलग।

उपदेश-मंजरी—स्वामी दयानन्द जी के उपदेश हर आर्य समाजों को अवश्य अध्ययन करने चाहिए। पूना नगर मे दिए गये सम्पूर्ण व्याख्यान इसमे दिए गए है। मूल्य २।।) ढाई रुपये।

संस्कार विधि—इस पुस्तक मे गर्भाधान से लेकर १५ संस्कार कहे हैं जो, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास इन चारो आश्रमो मे क्रमानुसार करने होते हैं। मूल्य १।।) डेढ रुपये डाक खर्च अलग।

आर्यसमाज के नेता—आर्य समाज के उन आठ महान् नेताओ, जिन्होंने आर्य समाज की नीव रखकर हिन्दू जाति पर बहुत बडा उपकार किया है। मूल्य ३) तीन रु० डाक खर्च १।। डेढ रुपये।

महर्षि दयानन्द—जिस समय हिन्दू धर्म अन्धकार में था, लोगों मे ढपोलशख बहुत बढ गया था उस समय स्वामी दयानन्दजी का जन्म हुआ और शिवरात्रि को महर्षि जी को सच्चा ज्ञान मिला। मूल्य २)

कथा पच्चीसी—सतराम सत

जिसमे मनुष्य जाति का उद्धार करने के हेतु ही अनेक शास्त्रों मे से भारत-भूषण स्वामी दर्शनानन्द जी ने उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद पच्चीस कथाओ का संग्रह किया है। हमने उनको और भी संशोधित एव सरल बनाकर छापा है। मूल्य केवल १।।) डेढ रुपया डाक व्यय १)

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

१—अब तक सत्यार्थप्रकाश के कई संस्करण प्रकाशित हुए हैं।

२—इसकी दूसरी बड़ी विशेषता पैराग्राफों पर क्रमांक दिया जाना है।

३—अकारादिक्रम से प्रमाण सूची। पुस्तक का आकार १०×१३ इंच है। पृष्ठ संख्या ५८०, बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई क्लाथ बाइंडिंग - मूल्य लागत मात्र १५) पन्द्रह रुपये, एक साथ पांच कापी मंगाने पर ५०) पचास रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१—सांख्य दर्शन— मू० २.००
२—न्याय दर्शन— मू० ३.२५
३—वैशेषिक दर्शन—मू० ३.५०
४—योग दर्शन— मू० ६.००
५—वेदान्त दर्शन — मू० ५.५०
६—मीमांसादर्शन— मू० ६.००

उपनिषदप्रकाश—स्वामी दर्शनानन्दजी

इनमें लौकिक व पारलौकिक उन्नति की महत्वपूर्ण शिक्षाए भरी पडी हैं। मूल्य ६.०० छ रुपया।

हितोपदेशभाषा ले० रामेश्वर 'अशांत'

'उस पुत्र मे क्या लाभ जिसने अपने कुल का नाम कलंकित किया है ऐसे पुत्र की माता यदि बाझ हो जाय तो उत्तम है' यही भावना पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन को सदा सताती थी। विद्वान् प० विष्णुशर्मा ने राजकुमारों को जो शिक्षा एव नीति की आख्यायिकायें सुनाई उनको ही विद्वान प० श्री रामेश्वर 'अशान्त' जी ने सरल भाषा मे लिखा है। मूल्य ३) तीन रुपया।

अन्य आर्य साहित्य

पुस्तक	मूल्य
(१) विद्यार्थी शिष्टाचार	१.५०
(२) पचतत्र	३.५०
(३) जाग ऐ मानव	१.००
(४) कौटिल्य अर्थशास्त्र	१०.००
(५) चाणक्य नीति	१.००
(६) भर्तृहरि शतक	१.५०
७) कर्तव्य दर्पण	१.५०
८) वैदिक सध्या	४.०० सैकड़ा
(९) वैदिक हवन मन्त्र	१०.०० सैकड़ा
(१०) वैदिक सत्सग गुटका	१५.०० सैकड़ा
(११) ऋग्वेद ७ जिल्दो मे	५६.००
(१२) यजुर्वेद २ जिल्दो मे	१६.००
(१३) सामवेद १ जिल्द म	८.००
(१४) अथर्ववेद ४ जिल्दो मे	३२.००
(१५) बाल्मीकि रामायण	१२.००
(१६) महाभारत भाषा	१२.००
(१७) हनुमान जीवन चरित्र	४.५०
(१८) आर्य सगीत रामायण	३.००

हिन्दी के हर विषय की ५००० पुस्तकों की विस्तृत जानकारी वास्ते ४०० पृष्ठों की 'ज्ञान की कुन्जी' केवल १.७५ रुपया मनीआर्डर या डाक टिकट भेजकर प्राप्त करें।

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद, कृषि, बिजली, मोटर, पशुपालन, टकनीकल डेरीफार्म, रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकडों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१६१

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्

उरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–१ फोन २७४७७१ चैत्र शुक्ला ६ संवत् २०२३ २७ मार्च १९६६ दयानन्दाब्द १४२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६७

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्श से प्रेरणा प्राप्त क

वेद—आज्ञा

राजा का कर्त्तव्य

वाजवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥११॥

यजु॰ अ॰ २१ म॰ ११

संस्कृत भावार्थः—

यथा विद्वांसो विद्यादानोपदेशाभ्यां सर्वान् सुखयन्ति तथैव राजपुरुषा रक्षाऽभयदानाभ्यां सर्वान् सुखयन्तु। धर्म्यमार्गेषु गच्छन्तोऽर्थकाममोक्षान् प्राप्नुवन्तु ॥११॥

आर्य भाषा भावार्थः—

जैसे विद्वान् लोग विद्यादान से और उपदेश से सबको सुखी करते हैं वैसे ही राजपुरुष रक्षा और अभयदान से सबको सुखी करें तथा धर्मयुक्त मार्गों में चलते हुए अर्थ काम और मोक्ष इन तीन पुरुषार्थ के फलों को प्राप्त होवें ॥ ११ ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वराज्य को रामराज्य के सांचे में

ढालने का देशवासी व्रत ले।

दयानन्द कालेजो के संस्थापक—

त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी

जिनका जन्म-दिवस १९ अप्रैल को मनाया जायगा।

कुपात्र किसे कहते

जो छली कपटी स्वार्थी विष काम क्रोध लोभ मोह से युक्त प हानि करने वाले लपटी मिथ्यावा अविद्वान् कुसंगी आलसी जो दाता हो उसके पास बारम्बार माग करना धरना दिये पश्चात् हठता से मांगते ही जाना सन्तोष होना जो न दे उसकी निन्दा कर शाप और गाली प्रदान आदि दे अनेक बार जो सेवा करे और बार न करे तो उसका शत्रु बन जा ऊपर से साधु का वेश बना लोगो बहकाकर ठगना और अपने प पदार्थ हो तो भी मेरे पास कुछ नहीं है कहना सबको फुसला फु कर स्वार्थ सिद्ध करना रात दिन भ मांगने में ही प्रवृत्त रहना निमन्त्र दिये पर यथेष्ट भंगादि मादक द्र खा पीकर बहुत सा पराया पद खाना पुनः उन्मत्त होकर प्रमा होना सत्य मार्ग का विरोध झ झूठ मार्ग में अपने प्रयोजनार्थ चल चलाना वैसे अपने चेलों को म अपनी ही सेवा करने का उप करना अन्य योग्य पुरुषों सेवा करने का नहीं सद्विद्या प्रवृत्ति के विरोधी जगत व्यवहार अर्थात् स्त्री पुरुष माता पि सन्तान राजा प्रजा इष्ट मित्रो अप्रीति करना कि ये सब असत्य और जगत् भी मिथ्या है इत्य दुष्ट उपदेश करना आदि कुपात्रो लक्षण है। महर्षि दयानन्द सरस्

वार्षिक ७) रु॰ विदेश १ पौंड एक प्रति १९ पैसे

जय-किसान

सम्पादक— रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री
सहायक सम्पादक— रघुनाथ प्रसाद पाठक

जय-जवान

वर्ष १ अंक ७०

राम-चर्चा

देवर का आदर्श

लक्ष्मण कहते है —

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले। नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभि वन्दनात ॥

भाई राम! मैं इन बाजूबन्दो को नहीं पहिचानता और न इन कुण्डलो को ही पहिचानता हू, मैं तो नित्य भाभी के चरण वन्दन करने के कारण नूपुरो (बिछुओं) को पहिचानता हू— ये उन्ही के हैं।

सत्य वक्ता—राम

अनृत नोक्तपूर्वं मे न च वक्ष्ये कदाचन। एतत्ते प्रतिजानामि सत्येनैव शपाम्यहम ॥

(वा० किष्किन्धा काण्ड)

मैंने कभी पहले झूठ नही बोला, और न आगे कभी बोलूगा, यह मैं आपसे सर्वथा सत्य कहता हू और सत्य की शपथ खाकर कहता हू।

मित्रों का कर्त्तव्य

आढ्यो वापि दरिद्रो वा दु:खित: सुखितोऽपि वा। निर्दोषश्च सदोषश्च वयस्य: परमा गति: ॥

धनत्याग: सुखत्यागो देशत्यागोऽपि वाऽनघ। वयस्यार्थे प्रवर्तन्ते स्नेहं दृष्ट्वा तथाविधम ॥

(वाल्मीकि किष्किन्धा काड)

मित्र चाहे धनी हो या दरिद्र हो, दुखी हो या सुखी हो, निर्दोष हो या सदोष हो, कैसी भी हालत मे क्यो न हो, फिर भी मित्र उसका परम सहायक हुआ करता है। इस प्रकार स्नेही मित्र के लिए धन त्याग, सुख-त्याग, देश त्याग, सब कुछ किया जाता है।

इन्हें मृत्यु-दण्ड

राम-बाली से —

औरसीं भगिनीं वापि भार्यां वाप्यनुजस्य य:। प्रचरेत नर: कामात्तस्य दण्डो वध: स्मृत ॥

पुत्री, बहिन और छोटे भाई की पत्नी से कामाचार से जो मनुष्य बरते, उसके लिए मृत्यु दण्ड कहा गया है। (वा० रामायण कि०का०)

कैकेयी, मन्थरा और राम

रामे वा भरते वाऽहं विशेषं नोपलक्षये। तस्मात्तुष्टास्मि यद्राजा रामं राज्येऽभिषेक्ष्यति ॥

केकयी कहती है:—

मैं राम और भरत मे कोई भेद नही देखती, इसलिये मैं प्रसन्न हू कि राजा, राम को राज्याभिषिक्त करेंगे।

धर्मज्ञो गुणवान्दान्त: कृतज्ञ: सत्यवाञ्छुचि। रामो राजसुतो ज्येष्ठो यौवराज्यमतोऽर्हति ॥

भ्रातृन्भृत्यांश्च दीर्घायु: पितृवत्पालयिष्यति। संतप्यसे कथं कुब्जे श्रुत्वा रामाभिषेचनम ॥

रामचन्द्र धर्मज्ञ हैं गुणवान है जितेन्द्रिय हैं, कृतज्ञ है, सत्यग्राही है और पवित्र है। इसके साथ ही वह राजा का बड़ा पुत्र भी है, अत वही राज्य का अधिकारी है। उसकी दीर्घायु हो, वह भाइयो और भृत्यो को पिता के समान पालेगा। अरि कुब्जे! राम का अभिषेक सुनकर तू क्यो सतप्त हो रही है।

फिर—दुष्ट सग नही देय विधाता!

आर्य समाजों के मन्त्री महोदयों से

आवश्यक निवेदन

आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे प्रत्येक आर्य सदस्य सार्वदेशिक सभा के वेद प्रचार कोष मे प्रतिवर्ष कुछ न कुछ दान देते है। आपका यह सात्विक दान वेद प्रचार, के विभिन्न मार्गों मे व्यय होना है।

सभा का वार्षिक व्यय हजारो मे नही, लाखो मे है यह सब आर्य जनता पर ही निर्भर है।

अत प्रत्येक आर्य सदस्य से धन सग्रह करके मनीआर्डर या चेक द्वारा भेजने की शीघ्रता करे।

रामगोपाल शालवाले
मन्त्री
सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली-१

'कल्याण मार्ग का पथिक' और 'महर्षि बोधांक'
तो आपने देख लिये
अब आगामी चार मास में तीन महान विशेषाङ्क
आपकी भेंट करेंगे।

१ शिक्षा-प्रसार-अंक

आर्य जगत् में लगभग ४०० हाई स्कूल, हायर सेकण्डरी स्कूल डिग्री कालेज तथा गुरुकुल ऐसे हैं जिन पर आर्य जगत् को गर्व है। भारत भर में एक कानपुर का डी० ए० वी० कालेज ही ऐसा है जिसमें पांच हजार विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। इन सब आर्य शिक्षा संस्थाओं पर लगभग — **चार करोड़ रुपया** प्रतिवर्ष व्यय होता है। आर्य जगत का यह महान् "शिक्षा कार्य" प्रकाश में लाने के लिए ही इस अंक की तैयारी कर रहे हैं।

इस अंक में लगभग ४०० शिक्षा-संस्थाओं का परिचय ४०० प्रिन्सिपलों के चित्रों सहित देंगे। बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई और ४०० चित्रों के इस अंक को केवल ६० पैसे में देंगे।

अब तक १०० कालेजो का परिचय —प्रिन्सिपलो के चित्र आ चुके हैं।

आप आज ही एक पत्र द्वारा बड़े से बड़ा अपना आर्डर भेजें।

२ आर्य समाज-परिचयांक

भारत और भारत से बाहर चार हजार से अधिक आर्य समाजें हैं। लाखों सदस्य हैं। करोड़ों रुपया व्यय करते हैं।

किन्तु सर्व साधारण को पता नहीं!
आर्यसमाज की सदस्य संख्या, आय-व्यय,
मन्त्री का चित्र और नाम इस अङ्क में देंगे।

यह विशेषांक भी विशेष ही होगा

हजारों मन्त्रियों के चित्रों सहित यह विशेषांक आर्य जगत का दर्शनीय अंक होगा।

इसका मूल्य केवल १)१० पैसा होगा

प्रत्येक आर्य समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री महोदय स्वसंस्था का परिचय और चित्र भेजने में शीघ्रता करें।

इस महान् अंक पर २५-३० हजार रुपया व्यय होगा। सभा पर इतनी भारी धनराशि का भार न पड़े और सुगमता से अंक प्रकाशित हो जाय इसके लिए मन्त्री महोदयों से, कम से कम १० अंक लेने और उसके ११) अग्रिम भेजने की प्रार्थना की थी। हर्ष की बात है कि आर्यसमाजों के मन्त्री महानुभावों ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की और धन भेज रहे हैं।

आप जिस किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री हैं—उसका परिचय, अपना नाम और चित्र भेजने में देर न करें।

३ एकादश-उपनिषदांक

मूल संस्कृत और हिन्दी अनुवाद सहित केवल दो रुपये मे, श्रावणी के वेद सप्ताह पर आपकी भेंट करेंगे। अभी से आर्डर नोट करा दें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली १

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

रामनवमी

इस वर्ष चैत्र शुक्ला ९ (३१ मार्च) को पुनः रामनवमी आ रही है। वैसे तो रामनवमी प्रतिवर्ष ही आती है और देश भर में फैले राम के भक्त प्रतिवर्ष मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म दिवस धूमधाम से मनाते हैं। जब कोई जाति किसी महापुरुष को अवतार मानकर और मन्दिरों में उसकी मूर्तियां स्थापित करके उन मूर्तियों की पूजा में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेती है, तब इसका स्पष्ट अर्थ यह होता है कि पूजा-पाठ से आगे बढ़कर उस महापुरुष के जीवन से अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रेरणा लेने की प्रवृत्ति उस जाति में समाप्त हो गई। अवतारवाद और मूर्तिपूजा के अनेकानेक अभिशापों में यही सबसे बड़ा अभिशाप है। यदि ऐसी बात न होती तो 'निशिचर हीन करौं मही' का प्रण करने वाले और दस्युराज दशकन्धर का वध करने वाले राम के उपासक आज दस्युओं के आगे घुटने टेकने वाले, दीन-हीन, कायर और अहिंसा के उपासक न बन जाते। लोग भूल जाते हैं कि अहिंसा स्वयं में साध्य नहीं है, प्रत्युत एक साधनमात्र है। अहिंसा को परम और निरपेक्ष (एब सोल्यूट) धर्म समझने की मनोवृत्ति वैदिक धर्म की विचारधारा नहीं है। गीता के शब्दों में वह 'अनार्यजुष्ट' है, 'अस्वर्ग्य' है और 'अकीर्तिकर' है।

जिस राम ने अपने भुजबल से उत्तर-भारत और दक्षिण भारत को एक आर्य साम्राज्य का अंग बना दिया और इस प्रकार उस युग में अखण्ड भारत को संघटित करके दिखा दिया, आज उसी राम के उपासक राष्ट्र के खण्डित होने की चिन्ता न करें, बल्कि राष्ट्र की विघटनकारी शक्तियों को प्रश्रय दें, उन्हें राम का उपासक कैसे कहा जाए! मर्यादा पुरुषोत्तम राम साक्षात् आदर्शों के साकार थे, जीवन के [illegible] थे— और आज [illegible] के नाम पर राष्ट्र में [illegible] की विरा-कृत किया जाता है और समाजवाद के नाम पर राष्ट्र में से पौरुष एवं व्यक्तिगत उपक्रम को छीना जाता है।

स्वराज्य-प्राप्ति के बाद भारत की जनता में जो सबसे बड़ा परिवर्तन आया है वह यही है कि पहले जनता जिस काम को अच्छा समझती थी उसे अपने पौरुष और पहल से पूरा करने में जुट जाती थी। किसी भी शुभ कार्य के लिए जनता सरकार का मुंह नहीं जोहती थी। इसके विपरीत सरकार यदि उस काम का विरोध करती थी तो उस विरोध से जनता के उत्साह में चार चांद लग जाते थे और उतनी ही जल्दी जनता उस काम को पूरा करके दिखा देती थी। परन्तु अब जनता प्रत्येक काम में सरकार का मुंह देखती है। और हमारी सरकार? वह तो जैसे अंग्रेजों की स्थानापन्न भर है— अंग्रेजी और अंग्रेजियत का वैसा ही बोलबाला, हरेक समस्या के समाधान के लिए वैसी ही पश्चिमाभिमुखी 'नमाज' की प्रवृत्ति। स्वावलम्बन और आत्मविश्वास की भावना न सरकार में रही, न जनता में। यदि यह मनोवृत्ति न होती तो खाद्यान्न की दृष्टि से यह देश कभी का आत्मनिर्भर बन चुका होता। इस प्रकार भिक्षा पात्र हाथ में लिए दर-दर भीख मांगता आज वह दृष्टिगोचर नहीं होता।

लंका को जीतने के लिए राम के पास क्या साधन थे—जरा कल्पना तो करिए। प्राकार-परिवेष्टित और प्रशिक्षित सैनिकों से सुसज्जित स्वर्णपुरी लंका को जीतना है, बीच में है अथाह समुद्र—जिसे पैदल पार करना है, रावण जैसा दुर्धर्ष योद्धा मुकाबले पर है, और राम के सहायक कौन हैं—बन्दर-भालू या जंगली जातियां; फिर भी अकेले राम ने राक्षस कुल का नाश करके छोड़ा और लंका को जीत कर छोड़ा। निष्कर्ष के रूप में कवि कहता है—

क्रियासिद्धिः सत्त्वे।
वसति महतां नोपकरणे॥

सफलता साधनों पर निर्भर नहीं, किन्तु महापुरुषों का सत्त्व, उनकी आत्मा का बल और उनका दृढ़ निश्चय ही उन्हें सफल बनाता है।

रामनवमी के दिन इसी सत्त्व की आन्तरिक बल की, दृढ़निश्चय की, पौरुष की और आत्मविश्वास की उपासना हमें करनी है।

अनशन की समाप्ति

पंजाबी सूबे के विरोध में, दीवान-हाल में अनशन रत आर्य सन्यासी श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने २३ मार्च की शाम को, गृहमन्त्री के कतिपय आश्वासनों के आधार पर, पंजाब एकता समिति के परामर्श के अनुसार, अपना अनशन त्याग दिया है। आर्य-जगत् में सर्वत्र इस समाचार से राहत अनुभव की जाएगी। गुरुकुल झेहलम के भूतपूर्व आचार्य और अब यमुनानगर में तपोमूर्ति स्वर्गीय श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के उत्तराधिकारी के रूप में उपदेशक विद्यालय के आचार्य, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, का जीवन आर्यसमाज और राष्ट्र के लिए बहुमूल्य है आर्यसमाज को समर्पित जीवन के धनी सन्यासी का यह जीवन चिरकाल तक आर्यसमाज का पथ-प्रदर्शन करता रहे और उसका वरद आशीर्वाद जनता को कुमार्गगामी होने से सदा बचाता रहे यही कामना है।

प्रश्न यह है कि जिन उद्देश्यों को लेकर यह अनशन किया गया था, क्या वे पूरे हो गए। इसका एकदम सकारात्मक उत्तर देना कठिन है। अन्य राजनैतिक दलों की तरह किसी राजनैतिक स्वार्थ की सिद्धि इस अनशन का उद्देश्य नहीं था। राष्ट्र के विघटन की प्रवृत्ति के आगे सरकार के झुकते चले जाने की नीति के विरुद्ध यह अनशन था। इस प्रकार यह अनशन एक सिद्धान्त के लिए था। यह गनीमत है कि पंजाब की मौलिक एकता बनाए रखने का आश्वासन गृहमन्त्री ने दिया है। यद्यपि राजनीतिक नेताओं के आश्वासन सदा सोलह आने सही उतरते हों, यह कहना कठिन है। सन् १९५६ में नेहरू जी ने पंजाब का और विभाजन न करने का आश्वासन दिया था—वह आश्वासन क्या हुआ! परन्तु आर्यसमाज ने गृहमन्त्री के आश्वासनों को स्वीकार करके अपनी ओर से सदाशयता का परिचय दिया है, इसमें सन्देह नहीं। जहां तक स्वामी जी का प्रश्न है, उन्होंने अपनी ओर से अनुशासन के आदर्श का पालन किया है। जब पंजाब एकता संरक्षक-समिति ने आह्वान किया तब स्वामी जी बलिदान के लिए तय्यार हो गए और जब समिति ने उन्हें अनशन त्यागने का परामर्श दिया, तब उन्होंने अनशन त्याग दिया। इससे आर्यसमाज के अनुशासन की और स्वामी जी की अनुशासन प्रियता की तो पुष्टि हो गई, परन्तु हम समझते हैं कि इससे सरकार पर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व आ गया है।

सरकार यह न समझे कि उसने आश्वासनों से तूफान को शांत कर दिया है। यह तूफान अभी ज्यों का त्यों है। केवल कुछ समय के लिए प्रसुप्त हो गया है। यदि सरकार ने अपने आश्वासन पूरे न किए तो यह तूफान और उग्र रूप में प्रकट होगा। स्वामी जी की तपस्या सरकार को अपने आश्वासन पूरे करने की अनिवार्य प्रेरणा दे।

महर्षि बोधांक और कल्याण मार्ग का पथिक

'सार्वदेशिक' साप्ताहिक के विशेषांकों के रूप में 'महर्षि बोधांक' और 'कल्याण मार्ग का पथिक' की जैसी धूम रही उसे आर्यसमाज के इतिहास की अभूतपूर्व घटना कहना चाहिए। ये दोनों अंक हमने सामान्य अंकों की अपेक्षा कई गुणा भारी संख्या में छपवाए थे और देखते-देखते सब प्रतियां समाप्त हो गईं परन्तु मांग फिर भी बनी रही। इन दोनों विशेषांकों के लिए आर्डर अभी तक आ रहे हैं। विवश होकर हमें दोनों विशेषांक पुनः छापने का निश्चय करना पड़ा।

'महर्षि बोधांक' तो दुबारा छपकर तैयार है और 'कल्याण मार्ग का पथिक' अभी प्रेस में है। किसी व्यावसायिक लाभ की दृष्टि से 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारम्भ नहीं किया गया—यह हमारे पाठकों को मालूम है। हम तो केवल लागत-मात्र मूल्य पर आर्यसमाज और वैदिक धर्म की विचारधारा जन-जन तक पहुंचाना चाहते हैं। आर्य जनता के उत्साह से हमारा उत्साह भी बढ़ता है। दोनों विशेषांकों को दुबारा छपवाना उसी उत्साह और सहयोग का परिणाम है हम अपनी शक्ति भर पाठकों और ग्राहकों को निराश नहीं होने देंगे। अब उक्त दोनों विशेषांकों की जितनी प्रतियां आप मंगाना चाहते हैं, मंगाइए। हमें आप की मांग पूरी करने में प्रसन्नता होगी।

पर इसका सही उपाय तो यह है कि आप 'सार्वदेशिक, के नियमित ग्राहक बन जाएं और अपने इष्टमित्रों को भी इसका नियमित ग्राहक बनाकर उनका चन्दा 'सार्वदेशिक' कार्यालय में भिजवायें। ऐसा करने पर सब सामान्य अंक और विशेषांक आपको घर बैठे नियमित रूप से मिलते रहेंगे।

हमें आशा ही नहीं, विश्वास है, कि आप अपने कर्त्तव्य को पहचानते हैं।

सामयिक-चर्चा

भाषायी अल्पसंख्यक वर्ग

२३ मार्च को जो शिष्ट मण्डल गृहमन्त्री श्री नन्दा जी से मिला था उसने यह प्रश्न किया बताते हैं कि पंजाबी राज्य में संविधान के अनुसार हिन्दू लोग अल्पसंख्यक स्वीकार किए जायेंगे। प्रश्न करने का अच्छा ढंग यह होता कि पंजाबी राज्य के हिन्दी भाषा भाषी लोगों को भाषायी अल्प संख्यकों के संवैधानिक अधिकार प्राप्त होंगे या नहीं। धार्मिक अल्प संख्यक और भाषायी अल्प संख्यक दो विभिन्न भावनाएं हैं और ये एक दूसरे से पृथक् ही रखी जानी चाहिए। निस्सन्देह संविधान में धार्मिक और भाषायी दोनों प्रकार के अल्प संख्यकों के संरक्षण का विधान है। श्रीयुत नन्दा के २१ मार्च के वक्तव्य में भी कहा गया है कि अल्प संख्यकों के उचित अधिकारों 'भाषायी वा अन्य' का दोनों इकाइयों (राज्यों) में स्वभावत पूर्णतया किया जायगा।

इस समय पंजाबी और हिन्दी दोनों क्षेत्रों में भाषायी अल्प संख्यक वर्ग हैं। हिन्दी क्षेत्र में १४ लाख ३६ हजार पंजाबी बोलने वाले हैं और वे सब सिख नहीं हैं जिनकी आबादी केवल १० लाख ८५ हजार है। ये आंकड़े १९६१ की जन गणना के हैं। इसी प्रकार पंजाबी क्षेत्र के ४३ लाख ३१ हजार हिन्दुओं में सभी हिन्दी बोलने वाले नहीं हैं क्योंकि हिन्दी बोलने वाले हिन्दुओं की संख्या केवल ३२ लाख ७८ हजार है। अल्प संख्यक शब्द की संविधान में व्याख्या नहीं की गई है। परन्तु यह स्पष्ट है कि जहां भी सीमा का निर्धारण होगा, वहां परिणामत भाषायी अल्प संख्यक वर्ग होंगे और इस प्रकार के वर्गों को कठिनाइयों से बचाए रखने का यथा सम्भव पूरा पूरा प्रयत्न होना चाहिए।

भाषायी अल्प संख्यक वर्ग कैसे बनता है इस प्रश्न का भाषायी अल्प संख्यक वर्ग के लिए नियत कमीशन की १९६० की रिपोर्ट में उत्तर देते हुए कहा गया है 'भाषायी अल्प संख्यक वर्ग का अभिप्राय क्या है यह संविधान की धारा २९ और ३० से स्पष्ट है। भाषायी अल्प संख्यक वे हैं जो भारत में वा उसके किसी भाग में निवास करते हों और जिनकी अपनी विशेष भाषा वा लिपि हो। यह जरूरी नहीं है कि वह भाषा संविधान की ८वीं कंडिका में वर्णित १४ भाषाओं में से कोई हो। दूसरे शब्दों में राज्य स्तर पर भाषायी अल्पसंख्यक वर्ग का अभिप्राय वह वर्ग है जिसकी मातृभाषा राज्य की मुख्य भाषा से भिन्न हो और जिला और तालुका स्तर पर जिले या तालुके की मुख्य भाषा से भिन्न हो।" २९वीं धारा के अनुसार अल्प संख्यक वर्ग को अपनी भाषा और लिपि को बनाए रखने का अधिकार प्राप्त है। धारा ३० में राज्य के लिए अल्पसंख्यक वर्ग की शिक्षा संस्थाओं को सरकारी अनुदान देने में भेद भाव का बर्ताव करने की मनाही की गई है।

पंजाबी रीजन के ३१.९ प्रतिशतक हिन्दी बोलने वालों को पंजाबी सीखनी होगी और हिन्दी क्षेत्र के १४.३ प्रतिशतक पंजाबी बोलने वालों को हिन्दी सीखनी होगी। इसी में उनका अपना और परस्पर का हित है।

धार्मिक अल्पसंख्यक वर्ग के विपरीत भाषायी अल्प संख्यक वर्ग सदैव अल्पसंख्यक वर्ग बना रहे यह आवश्यक नहीं है। वह बहुसंख्यक वर्ग की भाषा सीख कर बहुसंख्यक वर्ग में लीन हो सकता है।

लिपि के सम्बन्ध में बड़ी गर्मी उत्पन्न हुई है। इसकी आवश्यकता न थी। गुरुमुखी और देवनागरी लिपि के लिए लड़ने वाले लोग अपना ध्यान और समय और अधिक उपयोगी काम में लगा सकते हैं। समस्त भारतीय भाषाओं के लिए एक ही लिपि या उसके अभाव में क्षेत्रीय भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग होना बड़ा उच्च एवं उदार विचार है। यदि पंजाबी को देवनागरी लिपि में लिखे जाने की छूट पर समझौता हो जाय तो यह भी उदार भावना की विजय होगी। हिन्दी राष्ट्र भाषा है और प्रत्येक भारतीय से इसको सीखने की आशा की जाती है।

(ट्रिब्यून मार्च २६, १९६६ के अंग्रेजी लेख का सार)

बर्मा से पादरियों का देश निकाला

रंगून का पी० टी० आई० द्वारा प्रसारित २८ मार्च का समाचार है कि ब्रह्मदेश की सरकार ने समस्त विदेशी ईसाई मिशनरियों को इस वर्ष के अन्त तक ब्रह्म देश को छोड़ देने का आदेश दिया है।

यह आज्ञा उन सभी विदेशी मिशनरियों पर लागू होगी जो १९४८ में ब्रह्मदेश में आकर तब से अपना प्रचार कार्य कर रहे हैं। इस आज्ञा का कारण तत्काल प्राप्त नहीं हो सका है।

ब्रह्मदेश में इस समय २०० से अधिक ईसाई पादरी, और अन्य कार्यकर्त्ता हैं जिनमें रोमन कथोलिक एंग्लीकिन्स और बैपटिस्ट सम्मिलित हैं।

इस आज्ञा का पूर्ण विवरण प्राप्त हो जाने पर ही हम अपने विचार प्रकट करेंगे।

देहलवी जी शतायु हों

चैत्र शुक्ल ९ वी को मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म हुआ था। इसी पुण्य तिथि पर अब से ८५ वर्ष पूर्व तार्किक शिरोमणि श्रद्धेय श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी का जन्म हुआ था। ३१ मार्च ६६ को हापुड़ में उनकी ८५वीं वर्षगांठ मनाई जायगी। परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री प० जी शतायु हों।

श्री पंडित जी का परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। वे आर्यसमाज के भूषण हैं और उसके लिए विशिष्ट देन है। आर्य समाज के प्रभावशाली सिद्धान्तों की व्याख्या जिस ढंग से वे करते हैं उस ढंग से शायद ही और कोई विद्वान् कर सकता है। विधर्मियों से शास्त्रार्थ करके उन्होंने अनेक मोर्चों पर विजय प्राप्त की और आर्यसमाज के गौरव को बढ़ाया है। उनका मधुर तर्क और उनकी शैली इतनी शिष्ट एवं बढ़िया होती है कि विरोधियों को भी उसका कायल हो जाना पड़ता है। ऐसे महान् विद्वान् की वर्षगांठ के पुण्य अवसर पर हम सार्वदेशिक परिवार की ओर से उन्हें बधाई देते और उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

'डा० सूर्यदेव शर्म्मा स्थिर निधि'

२१-४-६४ की सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग द्वारा स्वीकृत

१—यह निधि ४०००) की 'डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिर निधि' के नाम से रहेगी।

२—इसका मूलधन ४०००) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में जमा रहेगा और इसकी व्यवस्था तथा ब्याज का उपयोग सभा ही करेगी।

३—इस धन के ब्याज से सार्वदेशिक पत्र सार्वजनिक संस्थाओं पुस्तकालयों तथा वाचनालयों आदि को रियायती मूल्य पर दिया जाया करेगा। इन संस्थाओं आदि का निर्णय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा होगा।

४—वर्ष में दो बार प्रति वर्ष (कार्तिक तथा चैत्रमास) ऋषि निर्वाण तथा आर्य समाज स्थापना के उपलक्ष्य में इस निधि की सूचना सार्वदेशिक पत्र में प्रमुख स्थान पर डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिर निधि के हैडिंग से प्रकाशित हुआ करेगी।

५—सम्मानार्थ सार्वदेशिक पत्र सदा श्री डा० सूर्यदेव जी के पास जाता रहेगा।

६—प्रतिवर्ष सभा की बैलेन्सशीट में इस स्थिर निधि का उल्लेख होना आवश्यक होगा। प्रतिवर्ष इसके ब्याज का हिसाब तथा जिन संस्थाओं को उक्त रियायती मूल्य पर सार्वदेशिक दिया जावेगा उनकी सूची श्री डा० जी के पास सूचनार्थ भेजी जाया करेगी। (७) यदि कभी (ईश्वर न करे) सार्वदेशिक पत्र का प्रकाशन बन्द हो जावे तो इस स्थिर निधि के ब्याज का उपयोग सार्वदेशिक सभा द्वारा वैदिक साहित्य प्रकाशन में होगा।

रामगोपाल
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, देहली,
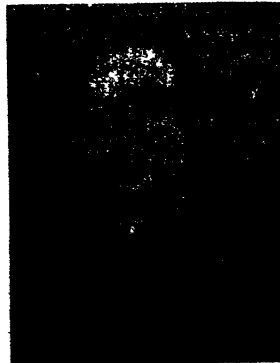
वैदिक धर्म प्रसार

और सूचनायें

आर्यसमाज राजौरी गार्डन दिल्ली

आर्य समाज राजोरी गार्डन नई दिल्ली मे आर्य समाज स्थापना दिवस बडे समारोह पूर्वक मनाया गया ।

श्री प० देवव्रत जी 'धर्मेन्दु' आर्योपदेशक का इस अवसर पर महत्वपूर्ण भाषण हुआ, जिसमे उन्होंने आर्य समाज स्थापना दिवस का इतिहास तथा आय समाज द्वारा किये आज तक के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए भावी कार्य क्रम की रूप रेखा रखी । पण्डाल स्त्री पुरुषो से भरा हुआ था ।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्य युवक परिषद दिल्ली द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे स्कूल के छात्र-छात्राओ की आर्य समाज के नियमो पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई थी बहुत-से छात्र छात्राओ ने इसमे उत्साह से भाग लिया ।

८ छात्र छात्राओ को पारितोषिक का अधिकारी घोषित किया गया ।

शुद्धि

आर्य समाज बलरामपुर मे २० मार्च को श्री रामलखन भूज लालपुर निवासी को उनकी मुस्लिम धर्मपत्नी सहित शुद्ध कर वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया, और उसका का नाम कलसुमा के स्थान पर शान्ति देवी रखा गया ।

आर्य समाज, खंडवा

के निर्वाचन मे श्री बी० एस० भण्डारी, प्रधान श्री रामकृष्ण पालीवाल, श्री रामचन्द्र आर्य उपप्रधान, श्री डा० अक्षयकुमार वर्मा मन्त्री, श्री कृपाराम आर्य—श्री कैलाशचन्द्र पाली वाल उपमन्त्री श्री प० हरिश्चन्द्र तिवारी कोषाध्यक्ष, श्री रमेशचन्द्र शर्मा पुस्तकाध्यक्ष एव श्री अनन्तरायकर निरीक्षक चुने गये ।

आर्य समाज, पूना

के चुनाव मे श्री डा० डी० एम० वागिराजी प्रधान, श्री तेजपाल बंजाज उपप्रधान, श्री सोमव्रत जी वाचस्पति मन्त्री, श्री खियालदास मेहता उपमन्त्री-श्री मुकुन्द सोनी कोषाध्यक्ष, तथा श्री अनन्तराम जी आनन्द पुस्तकाध्यक्ष चुने गये ।

कांग्रेस का विषवृक्ष फल देनेलगा

कांग्रेस महासमिति ने भाषा के आधार पर प्रान्तो के विभाजन का प्रस्ताव स्वीकृत कर राष्ट्र मे जो विष का बीज बोया था वह अब फल देने लगा है ।

पजाबी सूबा और हरियाणा राज्य के निर्णय के पश्चात् अब विदर्भ, कोकणी भोजपुरी तथा उर्दू आदि के आधार पर राज्यो के निर्माण की माग प्रारम्भ हो गई है ।

क्या आश्चर्य है कि एक दिन मेवाडी भाषा के आधार पर मेवाड राज्य और मारवाडी के आधार पर मारवाडराज्य की माग भी प्रारम्भ हो जाय । क्या सरदार पटेल का भारत फिर टुकडे-टुकडे होने जा रहा दे ।

—रहतुलाल गुप्त, शामली

आर्य समाज, आलना

मे आर्य समाज स्थापना दिवस श्री ओम्प्रकाश जी अग्रवाल की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया । श्रीमती सविता देवी प० गोपालदेव शास्त्री के भाषण एव श्री रमेश जी के सुमधुर गायन हुए ।

नामकरण संस्कार

आर्य समाज आलना के कोषाध्यक्ष श्री बाबूलाल जी राठौर की सुपुत्री उषा कुमारी का नामकरण सस्कार-श्री प० गोपाल देव शास्त्री के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ ।

आर्य समाज, नरवाना

आर्य समाज नरवाना के भूतपूर्व प्रधान श्री अनन्तराम जी आर्य के सुपुत्र श्री धर्मपाल आर्य मन्त्री आर्य समाज के सुपुत्र चि० आदित्यकुमार का नामकरण संस्कार श्री ब्र० जगदीश चन्द्र जी के पुरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर श्री धर्मपाल जी ने ४००) आर्य कन्या पाठशाला, १०१) आर्यसमाज और १०१) आर्य वीर दल को प्रदान किये।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

—आर्यसमाज, स्वामी श्रद्धानन्द भवन, विश्वेश्वरपुरम् बंगलौर में आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह-पूर्वक मनाया गया।

—आर्य समाज लश्कर की ओर से आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह से मनाया गया। श्री आचार्य भारत भूषण जी त्यागी तथा रविन्द्रनाथ जी के महत्वपूर्ण भाषण हुए।

आर्यसमाज अमरोहा में

आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। सामूहिक जल-पान और विराट सभा में श्री मसूराम जी शास्त्री तथा श्री राजाराम जी शास्त्री के भाषण हुए।

आर्यसमाज मौडल बस्ती

शीदीपुरा का वार्षिकोत्सव १२, १३,१४ मार्च को मनाया गया। नगर कीर्तन ६ मार्च को बड़ी धूम-धाम से निकला। ७ मार्च तक दैनिकयज्ञ तथा रात्रि को स्वामी सुधानन्द जी के मनोहर प्रवचन होते रहे वेद सम्मेलन अखण्ड पंजाब सम्मेलन बड़ी सफलता से मनाए गए। अखण्डपंजाब सम्मेलन की अध्यक्षता श्री ला० राम गोपाल जो मंत्री सार्वदेशिक सभा ने की उत्सव में आर्यसमाज की ओर से वैदिक साहित्य काफी संख्या में बांटा गया।

आर्यसमाज अग्रवालमंडी

टटीरी (मेरठ) का वार्षिकोत्सव बड़ी धूम-धाम से हुआ। अनेक विद्वानों के भाषण हुए।

आर्यसमाज रक्सौल

में आर्यसमाज स्थापना दिवस महर्षि दयानन्द भवन में मनाया गया। श्री बी० के० शास्त्री जी का प्रभावपूर्ण भाषण हुआ।

आर्ष गुरुकुल यज्ञ तीर्थ एटा

का वार्षिक महोत्सव ता० २ अप्रैल से होगा। अनेक संन्यासी और विद्वान् पधारेंगे।

आर्यसमाज बरौदा

के निर्वाचन में श्री च० बिष्णुदयाल प्रधान, श्री रामबलीराव, श्री राजेन्द्रप्रसाद सर्राफ उपप्रधान, श्री डा० कामेश्वरराय वर्मा मंत्री श्री हरगौरी लाल, श्री नागसहाय उपमंत्री श्री भोलाप्रसाद निरीक्षक तथा श्री सुरेन्द्र प्रसाद पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज पीलीभीत

के चुनाव में श्री यशपाल शास्त्री प्रधान श्री रणजीत वानप्रस्थी उपप्रधान, श्री इन्द्रदेव विद्यावाचस्पति मन्त्री श्री नवल किशोर उपमन्त्री श्री जानकी प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज सरसपुर

अहमदाबाद का ३५ वा वार्षिकोत्सव ता० ८ से १७ अप्रैल तक होगा अनेक विद्वान् सन्यासी महानुभाव पधारेंगे।

आर्यसमाज मेंहनगर

के निर्वाचन में श्री अनन्तराम पंजाबी प्रधान, श्री रामचन्द्र राय शर्मा उपप्रधान, श्री चिरोंजीलाल मंत्री, श्री अच्छेलाल उपमंत्री श्री हरिहरप्रसाद कोषाध्यक्ष,श्रीअनमोलपुस्तकाध्यक्ष, श्री जयराम राय जी निरीक्षक चुने गए।

मद्रास में वैदिक धर्म प्रचार

सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री स्वामी मेधार्थी श्री विद्यालंकार सामवेदाचार्य, शास्त्री रत्न, एम ए० एल० टी० ने दस दिन तक मद्रास में प्रचार किया। आपकी यज्ञ विधि और वेदों का शुद्ध उच्चारण प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। श्री गुजराती मंडल, श्री गुजराती महासमाज एवं आर्यसमाज मद्रास के तत्वावधान में आपके अनेक भाषण हुए।

पुरोहित चाहिये

(१)आर्यसमाज, सागर(म०प्र०)के लिये योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क स्थापित करें।

(२) पूरे समय के लिए योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। वेतन ग्रेड १००-५-१२५ रहने के लिए स्थान निःशुल्क। प्रार्थना पत्र योग्यता व समाज कार्य का अनुभव वर्णन कर, मन्त्री आर्य समाज गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका रामबाग सब्जीमंडी दिल्ली के पास २० अप्रैल तक भेजें।

पंजाब एकता आन्दोलन का सिंहावलोकन

संयुक्त पंजाब संरक्षण समिति के मन्त्री

श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले

सभा मन्त्री का वक्तव्य

सरकार से वार्तालाप और विविध पत्रों की प्रतिक्रिया

"वस्तुत. आज स्वच्छ संगठन एवं नेतृत्व की कमी से ही हिन्दू जाति की यह अवस्था हुई है। कुछ निहित स्वार्थों को लेकर लोग ऐसे आन्दोलनों में आकर उसे अन्दर और बाहर से खराब करते है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

पंजाब विभाजन की समस्या का हल आर्य समाज अपने ढग से करना चाहता था और इसकेलिए कई महीनों से तैयारियां हो रही थीं। सैकड़ों की संख्या में मेमोरंडम केन्द्रीय सरकार को भेजे गए। मजहबी सिक्खों और रमदासी सिखों से भी इस सम्बन्ध में सहयोग लिया गया। यह सब कुछ करने के बावजूद गत ६ मार्च को जालन्धर में सयुक्त पजाब संरक्षण समिति की बैठक हुई और उसमें १५ मार्च से अनशन व्रत द्वारा विधिवत इस आन्दोलन को चलाने की घोषणा कर दी गई। उस समय जनसंघ के नेता श्री यज्ञदत्त जी इस अनशन के मैदान में नहीं थे।

यकायक ६ मार्च को वे अनशन पर बैठ गए। हमने सोचा यह ठीक है दुगनी शक्ति से सरकार का मुकाबला होगा।

१५ मार्च को श्री स्वामी सत्यानन्द जी जालन्धर-घोषणा के अनुसार अनशन पर बैठ गए। १८ मार्च को श्री यज्ञदत्त जी की हालत खराब हो जाने पर श्री नन्दा जी ने जनसघ के नेताओं को दिल्ली बुलाया और समझौता की बात-चीत शुरु की। इस पर जनसघी नेताओं ने श्री नन्दा जी से कहा कि इसमें आर्य समाज के नेताओं को शामिल करो। इस पर १९ मार्च को श्री नन्दा जी ने टेलीफोन करके मुझे आने के लिए कहा। मैंने उत्तर दिया कि मैं अकेला नहीं आ सकता। मेरे साथ श्री के० नरेन्द्र जी, श्री सोमनाथ जी मरवाहा तथा श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी भी आयेंगे।

इस पर मुझे कहा गया कि हम विचार करके उत्तर देते हैं। थोड़ी देर के पश्चात् गृहमन्त्रालय से फोन आया कि सबको साथ लेकर आ जाओ। मैं उपर्युक्त तीनों साथियों को साथ लेकर मध्यान्ह १२॥ बजे उनकी कोठी पर पहुंचगया।

वहां कुछ ड्राफ्ट तैयार हो रहे थे जो हमें सुनाए गए जिनमें विभाजन के पश्चात् एक हाई कोर्ट, एक राज्यपाल. एक पब्लिक सर्विस कमीशन कुछ इस प्रकार की बातें थी। हम लोगों ने गृहमन्त्री जी से कहा कि जब तक इस वार्त्ता में पजाब में गिरफ्तार हुए श्री वीरेन्द्र जी, श्री यश जी, श्री ला० जगतनारायण जी तथा श्री बलराम जी दास टन्डन को शरीक नहीं किया जाता तब तक यह बात आगे नहीं चल सकती। इस पर श्री नन्दा जी ने पजाब के मुख्य मन्त्री श्री राम किशन को बुलाकर कहा कि वायर लेस से खबर करके इन नेताओं को रिहा कराया जाय और यहां बुलाया जाय। इस पर उस समय की मीटिंग खत्म हुई और हम सायकाल वापस आ गए।

२० मार्च को प्रातः पुनः बुलाया गया। उस समय उपर्युक्त चारों सज्जन रिहा होकर दिल्ली पहुंच चुके थे और श्री नन्दा जी के घर पर वार्त्तालाप में शामिल हुए। उस समय श्री नन्दा जी ने कहा कि कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी पंजाब का विभाजन स्वीकार कर चुकी है अब वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव तथा संविधान की धाराओं में से कुछ मिल सके तो बात करो। इस पर उन्हें कहा गया कि हम पंजाब का विभाजन तो स्वीकार नहीं करेंगे परन्तु कांग्रेस वर्किंग कमेटी के २८ शब्दोंवाले प्रस्ताव में कहा गया है कि वर्तमान पजाबमें से भाषायी आधार पर पंजाबी सूबा बनाया जायगा।

वर्तमान पजाब में जिला कांगड़ा भी मौजूद है और वर्किङ्ग कमेटी ने उसे हिमाचल प्रदेश में मिलाने का कोई प्रस्ताव नहीं किया किन्तु श्री कामराज ने अपनी ओर से कांगड़ा को हिमाचल में मिलाने की सिफारिश की जो सर्वथा अयुक्तहै। वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव के अनुसार कांगड़ा को पजाब से अलग नहीं किया जा सकता।

यह स्मरणीय है कि पजाबी सूबा बन जाने पर भी यदि कांगड़ा जिला पंजाब में रहता है तो वहां निश्चित रूप से हिन्दुओं का बहुमत होगा जिसे अकालियों ने कभी पसन्द नहीं किया।

दूसरी बात उन्हें कही गई है कि भाषा पजाबी स्वीकार की गई है किन्तु उसकी कोई लिपि निश्चित नहीं हुई। अतः संवैधानिक अधिकारों के आधार पर पजाबी को देवनागरी और गुरुमुखी लिपि दोनों में लिखने की छूट होनी चाहिए।

उपर्युक्त वार्त्तालाप के अनन्तर हमने श्री नन्दा जी से कहा कि वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव एवं संविधान के अनुसार हमारी इन मांगों की स्वीकृति का आश्वासन मिलना चाहिए तथा हमारी सस्थाओं को सरकारी संरक्षण प्राप्त होने की गारंटी मिलनी चाहिए। यह भी कि आर्यसमाज, सनातन धर्म आदि के स्कूल, कालेज आदि शैक्षण तथा अन्य संस्थाओं के साथ कोई भेदभावना पूर्ण बर्ताव न होगा।

इसके अतिरिक्त उनसे मांग की गई है कि इस आन्दोलन में हजारों व्यक्ति गिरफ्तार किए गए उन्हें रिहा किया जाय। जो सम्पत्ति जब्त की गई है वह लौटाई जाय। लुध्याना जालधर भिवानी, अमृतसर में पुलीस के द्वारा जो अत्याचार किए गए हैं। उनकी न्यायिक जांच कराई जायं।

ठीक जिस समय हमारी बातचीत चल रही थी हमारी जानकारी के बिना श्री अटल बिहारी वाजपेयी श्रीमती इन्दिरा गांधी से समझौता कर चुके थे। श्री नन्दा जी को प्रधान मंत्री का फोन आ गया इस पर उन्होंने हमारे वार्त्तालाप को स्थगित कर दिया और कहा कि कल १२॥ बजे आपको पुनः बुलाया जायगा। हम लोग लौट आए किन्तु प्रातःकाल उठने पर समाचार पत्रों से विदित हुआ कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने घोषणा की है कि आज सायंकाल ७॥ बजे वीर यज्ञदत्त जी अमृतसर में अपना अनशन खोल देंगे। मुझे बहुत ही धक्का लगा और अपने मनमें कहा कि इतिहास ने एक बार पुनः अपने को दुहराया है।

मैं दीवान हाल में गया। स्वामी जी के दर्शन किए। वे भी बड़े दुःखी थे। हमने समझा आधा मैदान हमारे हाथ से निकल गया। १२॥ बज गए परन्तु श्री नन्दा जी ने हमें नहीं बुलाया किन्तु एक बजे के करीब श्री अटल बिहारी वाजपेयी श्री के० नरेन्द्र श्री डाक्टर बलदेव प्रकाश और श्री कृष्णलाल दीवान हाल में हमारे पास आए। उस समय मैं तथा श्री स्वामी जी वहां थे। उन्होंने हमसे कहा कि श्री वीर यज्ञदत्त जी ७॥ बजे अनशन छोड़ रहे हैं श्री स्वामी जी का अनशन छुड़वाओ। हमने उत्तर दिया कि जब तक संयुक्त पंजाब संरक्षण समिति आज्ञा न दे दे हम ऐसा नहीं कर सकते। हम मीटिंग बुलायेंगे उसका फैसला होने पर अनशन तोड़ा जा सकता है।

मैंने तार देकर २२मार्च को दीवान हाल में मीटिंग बुलाई। दूसरे दिन मीटिंग हुई और उसमें निश्चय हुआ कि जब तक श्री नन्दा जी हमारी मांगों पर उचित विचार करने का आश्वासन नहीं देते तब तक अनशन स्थगित नहीं हो सकता। श्री नन्दा जी से भेंट करने के लिए ५ सज्जनों की उपसमिति बना दी।

दूसरे दिन श्रीनन्दा जी ने पार्लियामेंट में हमें बुलाया। आर्यसमाज के डेपुटेशन में श्री प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी०, श्री वीरेन्द्र जी, श्री ला० जगतनारायण जी तथा श्री त्यागी जी सम्मिलित थे। हम श्री नन्दा जी से मिले। उस समय परराष्ट्र विभाग के राज्य मन्त्री श्री दिनेशसिंह तथा उपमत्री श्री बी० एम० शुक्ला भी उपस्थित थे। हमने जो मांगे प्रस्तुत की वे उनको भेजे गए पत्र में भेज दी गई है। श्री नन्दा जी ने उन पर उचित विचार करने का हमें आश्वासन दिया।

श्रीनन्दाजी की सेवा में

माननीय श्री गुलजारीलाल जी नन्दा
गृह मन्त्री, भारत सरकार
नई दिल्ली

माननीय महोदय,

आज प्रातः हमारे शिष्ट मण्डल के साथ आप का जो. वार्तालाप हुआ

है उनके [illegible] हम नीचे उन बातों को [illegible] करते हैं जो [illegible] के समय प्रस्तुत की गई थीं। आपने यह निर्देश देने की कृपा की थी कि हम इन सब बातों को लिखित रूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत करें जिससे कि सरकार उन पर विचार कर ले।

१—पंजाबी भाषा भाषी राज्य में लोगों को पंजाबी भाषा गुरमुखी या देवनागरी किसी भी लिपि में लिखने की छूट होनी चाहिए।

२—यदि कांगड़ा को पंजाबी सूबे से पृथक् होने की छूट देने का निश्चय हो तो वही छूट पंजाबी क्षेत्र में हिन्दी भाषा भाषी अन्य क्षेत्रों को भी दी जानी चाहिए।

३—पंजाबी सूबे में हिन्दुओं की स्थिति क्या होगी? क्या संविधान में अल्प सख्यकों के लिए निहित सरक्षण उन्हें प्राप्त होंगे? तथा वे सरक्षण भी जो समय समय पर संसद द्वारा स्वीकार किये गए हैं।

४ पंजाबी सूबा में हिन्दी की स्थिति क्या होगी। सरकार द्वारा स्वीकृत और संसद द्वारा सम्पुष्ट सिद्धान्त के अनुसार वही राज्य एक भाषा भाषी कहलाता है जहां के ७० प्रतिशत लोगों ने एक ही भाषा को अपनी मातृ-भाषा उद्घोषित किया हो। प्रस्तावित पंजाबी सूबे में कम से कम ४० प्रतिशत व्यक्ति ऐसे होंगे जिन्होंने अपनी मातृभाषा हिन्दी उद्घोषित की है। ऐसी अवस्था में सरकार पंजाबी सूबे को एक भाषा भाषी राज्य क्यों कर कह सकेगी?

५—वह कसौटी क्या होगी जिसके आधार पर सरकार यह निश्चय करेगी कि कोई क्षेत्र-विशेष पंजाबी सूबे में मिलना चाहता है या बाहर रहना चाहता है।

६—सरकार आर्य समाज, सनातन धर्म सभा तथा अन्य हिन्दू संस्थाओं द्वारा संचालित बहु संख्यक सामाजिक शैक्षणिक और धार्मिक संस्थाओं को क्या संरक्षण प्रदान करेगी जो इस समय उस क्षेत्र में विद्यमान हैं जिसे पंजाबी सूबे का रूप दिया जावेगा।

उपर्युक्त बातों के स्पष्टीकरण के अनुरोध के अतिरिक्त हम पंजाब की स्थिति को सामान्य बनाने के लिए आप से प्रार्थना करेंगे कि सरकार तत्काल आज्ञा प्रचारित करके—

१—उन सब लोगों को रिहा कर दे जो पंजाब के वर्तमान आन्दोलन के प्रसंग में गिरफ्तार किए गए हैं।

२ पानीपत की घटना की [illegible] को [illegible] और दिल्ली, जालन्धर लुधियाना और अमृतसर में हुए पुलिस के जुलमों की वैधानिक जांच कराई जाय। जिन लोगों को पुलिस चाहती थी और जिनकी सम्पत्ति जब्त कर ली गई है वह उनको लौटा दी जाय। और जहां सम्पत्ति की क्षति पहुंची है अथवा नष्ट हो गई है उसका पर्याप्त मुआवजा दिया जाय।

४—उन निर्दोष व्यक्तियों के परिवारों को भी मुआवजा दिया जाए जो पुलिस की गोलियों से मारे गए हैं।

हमें विश्वास है कि उपर्युक्त बातों के सम्बन्ध में आप सरकारी स्पष्टीकरण शीघ्र ही भिजवा देंगे।

भवदीय

१—प्रकाशवीर शास्त्री एम. पी. २— [illegible]नारायण एम पी ३—वीरेन्द्र एम. ए. ४ ओम्प्रकाश त्यागी ५—रामगोपाल शालवाले।

पंजाबी सूबे में हिन्दी भाषियों को संरक्षण

श्री नन्दा की लोकसभा में घोषणा

प्रश्नों का उत्तर न मिलने पर विरोधियों का वाकआउट

नई दिल्ली, २१ मार्च।

भारत सरकार ने आज संसद के दोनों सदनों में घोषणा की कि वर्तमान पंजाब राज्य का भाषायी आधार पर पुनर्गठन करना सिद्धांत रूप से स्वीकार कर लिया है। गृह-मंत्री नन्दा जी ने उक्त घोषणा करते हुए बताया कि सरकार इस निर्णय को अमल में लाने के लिए शीघ्र कदम उठाएगी।

नन्दा जी ने यह भी घोषणा की कि प्रस्तावित पुनर्गठन के बाद जो इकाइयां बनेंगी, उनमें भाषायी या अन्य अल्पसंख्यकों के वैधानिक अधिकारों और हितों की रक्षा की जायगी।

उन्होंने यह भी कहा कि सरकार सिद्धांत रूप में यह स्वीकार करती है कि सीमाएं विशेषज्ञों की मदद से निर्धारित की जाएंगी।

लोकसभा में गृहमंत्री के वक्तव्य के बाद विरोधी सदस्यों ने उपाध्यक्ष श्री कृष्णमूर्ति राव से, जो उस समय अध्यक्ष के पद पर बैठे थे, प्रश्न पूछने की अनुमति मांगी। कुछ देर की अनिश्चितता के बाद उपाध्यक्ष ने विरोधी सदस्यों को अनुमति देने से इन्कार कर दिया। जिस ढंग से यह सब हुआ, उस पर विरोध प्रकट करते हुए सभी विरोधी सदस्य सदन से बाहर उठकर चले गए।

इसी बीच श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी ने प्रश्न किया कि चूंकि गृहमंत्री के वक्तव्य में हरियाना प्रांत की कोई चर्चा नहीं है इसीलिए क्या गृहमंत्री बताएंगे कि हरियाना प्रांत की स्थापना [illegible] नहीं। उन्होंने यह भी पूछा कि क्या विशेषज्ञों की समिति आगामी आम चुनावों के पहले अपनी रिपोर्ट दे देगी।

गृहमंत्री नन्दा जी ने कहा कि केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने अभी पंजाब के पुनर्गठन का सिद्धांत ही स्वीकार किया है। कई अन्य प्रश्नों पर अभी विचार नहीं हुआ है, इसलिए मैं फिल हाल प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थ नहीं हूं।

गृह मन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा का पूरा वक्तव्य इस प्रकार है:—

माननीय अध्यक्ष महोदय की अध्यक्षता में संसद सदस्यों की समिति ने जो रिपोर्ट दी थी, वह १८ मार्च, १९६६ को सदन में पेश की गई थी।

समिति इस नतीजे पर पहुंची है कि पंजाब की जनता और देश के हित में पंजाब राज्य का भाषायी आधार पर पुनर्गठन किया जाए। समिति की सिफारिश है कि—

(१) पंजाबी क्षेत्र एक भाषायी पंजाबी राज्य बनाया जाए।

(२) पंजाब के जो पहाड़ी क्षेत्र हिन्दी क्षेत्र में शामिल हैं और जो हिमाचल प्रदेश से लगे हुए हैं और भाषायी तथा सांस्कृतिक दृष्टि से हिमाचल प्रदेश के निकट हैं, वे हिमाचल प्रदेश में मिलाए जाने चाहिएं, और

(३) बाकी के इलाकों का [illegible] से हरियाना राज्य बनाया जाए।

सरकार ने इन सिफारिशों पर गौर से विचार किया है। सरकार ने यह सिद्धान्त रूप में स्वीकार करने का निश्चय किया है कि वर्तमान पंजाब राज्य का भाषायी आधार पर पुनर्गठन किया जाए।

समिति ने यह भी सिफारिश की है कि अगर सीमा में कोई परिवर्तन करना पड़े, तो आवश्यक सुझाव देने के लिए तुरन्त ही विशेषज्ञों की एक समिति बनाई जानी चाहिए। सरकार सिद्धान्त रूप में यह स्वीकार करती है कि सीमाएं विशेषज्ञों की मदद से निर्धारित की जानी चाहिएं। सरकार पंजाब राज्य के पुनर्गठन के निश्चय को कार्य रूप देने के लिए शीघ्र ही कार्रवाई करेगी।

ये निर्णय घोषित करने से पहले सरकार ने उन प्रार्थनाओं और मांगों पर गौर से विचार किया, जो विभिन्न लोगों ने उससे कीं, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जो प्रस्तावित रूपरेखा के अनुसार पंजाब के पुनर्गठन के विरुद्ध हैं। ऐसे कुछ लोगों के साथ लम्बी वार्ता के दौरान पुनर्गठन के बारे में गलतफहमियां और भ्रान्तियां काफी हद तक दूर की गईं। सरकार ने उन्हें यह स्पष्ट कर दिया है कि—

(१) पंजाब का प्रस्तावित पुनर्गठन भाषायी आधार पर होगा, और इस मामले में कोई साम्प्रदायिक या धार्मिक बात नहीं आने दी जाएगी,

(२) प्रस्तावित पुनर्गठन के बाद जो इकाइयां बनेंगी, उनमें वे समान बातें सभी सम्बन्धित व्यक्तियों की सलाह से रखी जायेंगी जो सम्भव होंगी।

(३) स्वाभाविक है कि इन इकाइयों में भाषायी या अन्य अल्पसंख्यकों के वैधानिक अधिकारों और हितों की पूरी रक्षा की जाएगी।

सरकार को विश्वास और आशा है कि पंजाब के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले नेता और लोग शान्तिपूर्ण स्थिति बनाए रखने में सरकार को अपेक्षित रचनात्मक सहयोग देंगे, सभी वर्गों के लोगों में एकता और भाईचारा बनाए रखेंगे और पंजाब के पुनर्गठन के बारे में किए गये निर्णयों को सुचारु रूप से और शीघ्र ही लागू करने के लिए उपयुक्त वातावरण बनायेंगे।

मैं इस अवसर पर एक बार फिर सरकार की तरफ से [illegible] की ओर से उन लोगों के परिवारों को अपनी सहानुभूति देना चाहता हूं जिनकी [illegible] के दर्गों में [illegible] गई है।

अन्त में उन्होंने कहा कि सरकार श्री [illegible] द्वारा अपने [illegible] को समाप्त करने के निर्णय का स्वागत करती है।

मुन्शी जी से वेद-भाष्यकार—

श्री क्षेमकरण दास चतुर्वेदी

श्री काशिव जी, उज्जैन

प० क्षेम करण दास जी का जन्म सक्सेना (सक्सेना) कायस्थ शमसाबादी सेठ घराने में सम्वत् १८०५ वि० (३ नवम्बर सन् १८४८ ई०) को शाहपुर मंडराक ग्राम, जि० अलीगढ़ (उ० प्र०) में हुआ। आपके पूर्वज पटवारी रहे। आपके पिता का नाम ला० कुन्दनलाल था। पांच वर्ष की आयु में ही फारसी पढ़ना आरम्भ हो गया। १० मई सन् १८५७ ई० (सम्वत् १९१४ वि०) में मेरठ से प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम (विद्रोह) आरम्भ हुआ। आपसी लूटमार भी बहुत हुई। वह बड़ा भयानक दृश्य था जब आपके कुटुम्बी जन अपने ग्राम से पैदल अलीगढ़ को भागे। अलीगढ़ में हिन्दू मुसल्मानों में भी लूट मार हुई, अतः ये लोग अलीगढ़ से शमसाबाद चले गये और विद्रोह शांत होने पर अलीगढ़ में फारसी पढ़ कर मुन्शी हो गये। सन् १८६४ ई० में आपने १५ वर्ष की अवस्था में कलकत्ता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी की एन्ट्रेन्स परीक्षा पास की और आगरा कालिज में एफ० ए० में पढ़ने लगे परन्तु घर की दशा खराब होने से पढ़ाई बन्द करनी पड़ी। तत्पश्चात् अलीगढ़ हाई स्कूल में १०)रु० मासिक पर और मुरादाबाद में २५)रु० मासिक वेतन की नौकरी करते हुए रुड़की कालिज से एकाउन्टेन्ट की परीक्षा पास की। तदोपरान्त बिलासपुर इटावा स्टेट रेलवे में ४०) रु० मासिक पर कार्य किया और डिस्ट्रिक्ट इन्जीनियर, इण्डियन मिडलैन्ड के दफ्तर में ७०)मासिक पर काम किया। १९०१ में जोधपुर बीकानेर रेल्वे के मैनेजर के दफ्तर में ८०) रु० मासिक पर काम किया। वहां से ५१ वर्ष की आयु में नौकरी छोड़ दी। उस समय प्रोवीडेन्ट फन्ड इत्यादि सब मिला कर उनके पास पाँच छैः हजार रुपया था।

इस धन से शहर में नया मकान बनाकर उसी में रहने लगे। यहीं अपने पिताजी का अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से किया। अपनी पहिली स्त्री के देहान्त के पश्चात् २४-११-१८९९ को विधवा विवाह प्रचारार्थ एक विधवा से विवाह किया। आप पौराणिक विचार के थे। उनसे चमार नौकरों को एक दिन उन्होंने कहते सुना "या की ठेल म्हारो ही है।" एक पण्डित से आपने एक मन्त्र का अर्थ पूछा। उसने उत्तर दिया। तुम कायस्थ शूद्र हो, शूद्रों को वेदार्थ बताना निषेध है।" आप यह सुनकर चुप हो गये।

जब सम्वत् १९३३ (सन् १८७७ ई०) में महर्षि दयानन्द सरस्वती मुरादाबाद पधारे तो अपने व्याख्यान के आरम्भ में "ओ३म् शन्नो मित्रः ... अवतु वक्तारम्" मन्त्र का पाठ करते थे। पण्डित जी भी उन सत्संगों में प्रतिदिन जाया करते थे। प्रातःकाल जब महर्षि दयानन्द दण्ड लेकर नगर से बाहर भ्रमण करने जाते थे तो श्री० पण्डित जी उनके दर्शन कर अभिवादनके उत्तर में उनसे "आनंदित रहो" का आशीर्वाद प्राप्त करते। आपने एक दिन स्वामीजी से पूछा कि क्या संन्यासी से यज्ञोपवीत लेना शास्त्रोक्त है ? उन्होंने उत्तर दिया कि "यह शास्त्रोक्त है।" यह पूछे जाने पर कि हमारा धर्म क्या है ?

श्री पं० क्षेमकरणदास जी चतुर्वेदी

उन्होंने उत्तर दिया कि हम सब का धर्म वैदिक धर्म है।" और पण्डितजी की पीठ ठोंक कर कहा "ईश्वर करे" तू वेदों को पढ कर उनका प्रचार करे।" सन् १८८० ई० से १८८४ ई० तक आप आर्यसमाज मुरादाबाद के मन्त्री चुने जाते रहे। ३० अक्टूबर सन् १८८३ को महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्वर्गवास हुआ।

पण्डितजी ने भगवानदत्त शर्मा से पजाब की शास्त्री परीक्षा के ग्रन्थ और ऋग्वेद पढ़ा और व्याकरण केसरी प० गुरन लाल चन्द्र शर्मा से जोधपुर में व्याकरण, निरुक्त, वेदादि शास्त्रों का अध्ययन किया।

२९ जुलाई १९०७ में जोधपुर से प्रयाग में अपने पुत्र श्री० विष्णु दयाल के पास आ रहे। यहां वेदों की उत्कण्ठा और बढ़ी। ऋग्वेद में १०, ५८९, अथर्ववेद में ५,९७७, यजुर्वेद मे १९७५, और सामवेद में १८७२ मन्त्र हैं। सन् १९०८ में बड़ोदा जाकर सामवेद भाष्य में दक्षिण परीक्षा में उत्तीर्ण हुये और सामवेदी कहलाये। यजुर्वेद को महीधर और स्वामी दयानन्द सरस्वती के भाष्यों से पढ़ा। अथर्ववेद पर सायण भाष्य पूरा नहीं है। जनवरी १९११ ई० को गंगा तट पर गुरुकुल कांगड़ी के पास पर्णकुटी में रहे। विद्वजनों के सहयोग से अथर्ववेद का पदार्थ और भाष्य आरम्भ किया और बड़ोदा की परीक्षा में उत्तीर्ण हो त्रिवेदी कहलाये।

अथर्ववेद भाष्य

आपको स्वाध्याय में शब्दों की व्युत्पत्ति के साथ पदार्थ करने में सदैव रुचि रही। बड़ी आयु होते हुए भी तन, मन, धन तीर्थ यात्राओं में व्यर्थ न खोकर इस भाष्य के करने में लगा दिया। पहिला काण्ड सन् १९१२ में छपा। श्री चतुर्वेदी जी अथर्ववेद का भाष्य करते, लिखते, और प्रूफ शोधते थे। लागत बहुत आती थी। धीरे धीरे ६ कांड छप गए। चतुर्वेदी जी एक जगह अपनी आत्म जीवनी में लिखते हैं:—"कभी कभी भाष्य बड़ा कठिन आ जाता था। समझ में न बैठने से जी घबराने लगता था। तब मैं परमेश्वर से लज्जा रखने की प्रार्थना करता और स्वामी दयानन्दजी का स्मरण करता। रात्रि स्वप्न में ऐसा जान पड़ता था कि स्वामी जी उस मन्त्र का भाष्य अपने लेखक को मेरे सामने लिखा रहे हैं। मेरी कठिनाई दूर हो जाती थी। कभी २ विद्वानों से मिलते मिलाते हुए, एकांत में रात्रि को सोते हुए, प्रातः भ्रमण करते हुए अथवा बाग आदि में घूमते हुए कठिन अर्थ ज्ञात हो जाते थे।"

श्री प० क्षेमकरणदासजी चतुर्वेदी कास्वर्गवास जयपुर (राजपूताने) में फाल्गुन कृष्ण १० सम्वत् १९८५ दिन रविवार को ९० वर्ष ३ मास १० दिन की आयु में हुआ।

श्रीराम-गुण-गान

सत्पुरुष-पुङ्गव, सत्यवादी, सयमी श्रीराम थे।
प्रतिभा-निधान, पराक्रमी, धृति शील, सद्गुणधाम थे।
परम-प्रतापी, प्रजारञ्जन, शत्रुविजयी वीर थे।
ज्ञानी सदाचारी, सुधी, धर्मज्ञ, दानी धीर थे ॥
कल्याणकर उनके सभी शुभलक्षणों को धार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण-पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो ॥१॥
श्रुति-तत्त्व-वेत्ता, सत्यसंध, कृतज्ञ, गौरववान थे।
ससार के हित में सदा तत्पर, महाविद्वान् थे ॥
निस्पृह, प्रजाप्रिय, नयनिपुण, अभिराम, अवगुणहीन थे।
आदर्श आर्य, उदार, करुणासिन्धु, शुचि, शालीन थे ॥
वे सदा सर्वप्रकार से हैं पूजनीय विचार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण-पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो ॥२॥
श्रीराम ने जो कर दिखाया धर्म के विश्वास में।
ऐसा न अन्य उदाहरण है जगत के इतिहास में ॥
दृढ़ हो उन्हीं के पुण्य-पथ पर चाहिए चलना हमें।
हम आर्य हिन्दू-मात्र, रामचरित्र-कानन में रमें ॥
होगा इसी से देश का कल्याण, सम्मति-सार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण-पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो ॥३॥
उस सद्गुणी की जीवनी को लक्ष्य अपना मान लें।
आओ, सखे ! सत्कर्म का संकल्प मन में ठान लें ॥
श्रद्धा-सहित हम उस महात्मा का निरन्तर ध्यान लें।
इस लोक से उद्धार पाकर स्वर्ग में विश्राम लें ॥
अब त्याग "रामनरेश" उर में भक्ति-रश्मि पसार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण-पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो ॥४॥

(कविवर श्री रामनरेश त्रिपाठी)

महर्षि नारद और वाल्मीकि-मुनि संवाद

तपःस्वाध्याय निरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्। नारदं परिपप्रच्छ वाल्मिकिर्मुनिपुंगवम् ॥१॥

तपश्चर्या पूर्वक स्वाध्याय में निरत तपस्वी वाल्मीकि ने विद्वानों तथा मुनियों में श्रेष्ठ नारद से पूछा—

को न्वस्मिन्सांप्रतं लोके गुणवान्कश्च वीर्यवान्। धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ॥२॥

चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः। विद्वान्कः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः ॥३॥

आत्मवान्को जितक्रोधो द्युतिमान्कोऽनसूयकः। कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे ॥

एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं परं कौतूहलं हि मे। महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम् ॥४॥

"भगवन्! संप्रति इस लोक मे कौन अधिक गुणवान् है, कौन विशेष पराक्रमी, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवाक् और दृढ़व्रती है? चरित्र से युक्त कौन है, समर्थ कौन है, सब प्राणियों का हितकर कौन है, विद्वान कौन है, समर्थ कौन है और किस के दर्शन सब को प्रिय हैं? आत्मन्वी, जितक्रोध, तेजस्वी कौन है, और युद्ध में जब क्रोध आता है तो किससे बड़े २ देवों तक भयभीत होने लगते हैं? इस बात के जानने की मुझे इच्छा है और मेरे अन्दर प्रबल उत्कण्ठा है। महर्षि! आप ऐसे गुणयुक्त नेता को जानने का समर्थ रखते हैं।"

श्रुत्वा चैतत् त्रिलोकज्ञो वाल्मीकेर्नारदो वचः श्रूयतामिति चामन्त्र्य प्रहृष्टो वाक्यमब्रवीत् ॥६॥

बहवो दुर्लभाश्चैव ये त्वया कीर्तिता गुणाः। मुने वक्ष्याम्यहं बुद्ध्वा तैर्युक्तः श्रूयतां नरः ॥७॥

पहले क्या हुआ, अब क्या हो रहा है, इस प्रकार इतिहास के मर्मज्ञ नारद ने वाल्मीकि के इस निवेदन को सुनकर प्रहृष्ट मन के साथ कहा—"अच्छा मुनि! सुनिए। आपने जिन गुणों का बखान किया है, वे गुण बहुत दुर्लभ हैं विरले ही पुरुष इन गुणों वाले पाए जाते हैं। मैं सोच-विचार के बाद इन गुणों से युक्त नेता का वर्णन करता हूं, सुनिए।"

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः। नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान्धृतिमान्वशी ॥८॥

बुद्धिमान्नीतिमान्वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिबर्हणः। विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः ॥९॥

महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिंदमः। आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः ॥१०॥

समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान्। पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः ॥११॥

धर्मज्ञः सत्यसंधश्च प्रजानां च हिते रतः। यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान् ॥१२॥

"इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न राम का नाम आप लोगों ने सुन रखा है। वह सच्चे आत्मा वाला, महापराक्रमी,

-: धर्मज्ञ-राम :-

तेजस्वी, धैर्यवान, वशी, बुद्धिमान्, वाग्मी, शोभासपन्न, और शत्रुओं को परास्त करने वाला है। उसके कन्धे विशाल हैं, भुजायें लम्बी हैं, गर्दन शंख के समान तीन रेखाओं वाली है, और ठोडी बड़ी है। उसकी छाती चौड़ी है, बड़े धनुष को वह धारण करता है उसके कन्धों के जोड़ मांस से छिपे हुए हैं, रिपु-दमन है, भुजायें घुटनों तक पहुंचती हैं, सिर सुन्दर सुडौल है, माथा बड़ा है, और अच्छा विक्रमशाली हैं। वह दुःख-सुख में एक समान रहने वाला है, उसके अंगों का विन्यास छोटा-बड़ा जैसा चाहिये ठीक वैसा ही समभाव से है, रंग प्यारा है, प्रतापी है, छाती उभरी हुई है, आंखे बड़ी २ हैं, और शुभलक्षणों के कारण लक्ष्मी-सम्पन्न है। लोक व्यवहार धर्म का ज्ञाता है, सत्यप्रतिज्ञ है, प्रजाहित में रत रहता है, यशस्वी है। ज्ञान-सपन्न है, पवित्र है, जितेन्द्रिय है, और समाधि लगाने वाला है।

प्रजापतिसमः श्रीमान्धाता रिपुनिषूदनः। रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता ॥१३॥

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता। वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः ॥१४॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान्प्रतिमानवान्। सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः ॥१५॥

सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः। आर्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः ॥१६॥

वह प्रजापति ब्रह्मा के समान प्रजा का पालन करने वाला और शत्रुओं को निर्मूल करने वाला श्रीमान् है, प्राणिमात्र का रक्षक है और अपने संगी-साथियों की भी रक्षा करता है। वह वेद-वेदांग का मर्मज्ञ और धनुर्वेद में निष्णात है, (इस प्रकार शास्त्र और शास्त्र दोनों में प्रवीण है) वह आयुष्य, अस्त्रास्त्र व सैन्यसंचालन, नृत्य-गीत वादित्र, तथा शिल्पकला सम्बन्धी सब शास्त्रों (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अथर्ववेद) का रहस्य-ज्ञाता है। तीव्र स्मृति वाला, समय पर तुरन्त सूझ-बूझ रखने वाला, सबका प्यारा, साधु स्वभाव, दीनता रहित, और दीर्घदर्शी है। जिस प्रकार चहुं ओर से आकर नदियें समुद्र मे आ मिलती हैं इसी प्रकार इसके यहां सज्जनों का आगमन सदा जारी रहता है। आर्य है, सब के साथ न्यायानुसार समान व्यवहार करने वाला है, और सदैव प्रियदर्शन बना रहता है।

स च सर्वगुणोपेतः कौशल्यानन्दवर्धनः। समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव ॥१७॥

विष्णुना सदृशो वीर्ये सोमवत्प्रियदर्शनः। कालाग्नि सदृशः क्रोधे क्षमया पृथिवीसमः ॥१८॥

वह सर्वगुणसंपन्न राम कौसल्या माता के आनन्द को बढ़ाने वाला है। वह गम्भीरता में समुद्र के समान, धैर्य में हिमालय के समान, पराक्रम में विष्णु राजा के समान, प्रियदर्शनता में चन्द्रमा के समान, क्रोध मे कालरूपी अग्नि के समान और क्षमा में पृथिवी के समान है।"

राम की अयोध्या नगरी

तस्मिन्पुरवरे हृष्टा धर्मात्मानो बहुश्रुताः। नरास्तुष्टा धनैः स्वैः स्वैर लुब्धाः सत्यवादिनः ॥११॥

नाल्पसन्निचयः कश्चिद् आसीत्तस्मिन्पुरोत्तमे। कुटुम्बी यो ह्यसिद्धार्थोऽगवाश्वधनधान्यवान् ॥१२॥

कामी वा न कदर्यो वा नृशंसः पुरुषः क्वचित्। द्रष्टुं शक्यमयोध्यायां नाविद्वान्न च नास्तिकः ॥१३

सर्वे नराश्च नार्यश्च धर्मशीलाः सुसंयताः। मुदिता शीलवृत्ताभ्यां महर्षय इवामलाः ॥१४॥

नाकुण्डली नामुकुटी नास्रग्वी नाल्पभोगवान्। नामृष्टो न नलिप्ताङ्गो नासुगन्धश्च विद्यते ॥१५॥

नामृष्टभोजी नादाता नाप्यनङ्गदनिष्कधृक्। नाहस्ताभरणो वापि दृश्यते नाप्यनात्मवान् ॥१६

नानाहिताग्निर्नायज्वा न क्षुद्रो वा न तस्करः। कश्चिदासीदयोध्यायां न चावृत्तो न संकरः ॥१७॥

स्वकर्मनिरता नित्यं ब्राह्मणा विजितेन्द्रियाः। दानाध्ययनशीलाश्च संयताश्च प्रतिग्रहे ॥१८

उस श्रेष्ठ नगरी में नर-नारी प्रसन्नवदन, धर्मात्मा, बहुश्रुत, अपने २ धनों से सन्तुष्ट तथा पराये धन के अनिच्छुक, और सत्यवादी थे। उस श्रेष्ठ नगरी में आवश्यकता से कम सचयवाला कोई न था, ऐसा कोई गृहस्थ न था जिस की आवश्यकताएं पूरी न होती हों, और ऐसा भी कोई न था जिसके घर मे गाय-घोड़ा-धन धान्य न हो। अयोध्या में कहीं किसी कामी, कृपण, क्रूर, मूर्ख, नास्तिक नर-नारी का दृष्टिगोचर होना शक्य न था। प्रत्युत उस नगरी में सब नर-नारी धर्मशील, सयमी, प्रसन्न, शील किंवा चरित्र के कारण महर्षियों के समान निर्मल थे। उस नगरी में कोई गृहस्थ बिना कुंडल पहने, बिना मुकुट धारण किए, बिना फूल माला डाले, आवश्यकता से न्यून भोग सामग्रीवाला, मलिन शरीर, चन्दनानुलेपन किंवा अन्य सुगन्ध पदार्थों से रहित, शुद्धभोजन से वंचित दान न देने वाला, बाजूबन्द-कण्ठहार कंगन आभूषणों को न पहने हुआ, और आत्मिक बल से रहित न दीख पड़ता था। अयोध्या में कोई गृहस्थ अनाहिताग्नि (जिसने गार्हपत्याग्नि को स्थापित न कर रखा हो, यज्ञ न कर रखा हो), यज्ञ न करने वाला क्षुद्राशय, पर-पदार्थहर्ता, चरित्रहीन, और वर्ण-धर्म से भ्रष्ट न था।

नास्तिको नानृती वापि न कश्चिदबहुश्रुतः। नासूयको न नाविद्वान्विद्यते क्वचित् ॥१९॥

नाषडङ्गविदत्रास्ति नाव्रतो नासहस्रदः। न दीनः क्षिप्तचित्तो वा व्यथितो वापि कश्चन ॥२०॥

कश्चिन्नरो वा नारी वा नाश्रीमान्नाप्यरूपवान्। द्रष्टुं शक्यमयोध्यायां नापि राजन्यभक्तिमान् ॥२१

वर्णेष्वग्र्यचतुर्थेषु देवता-

(शेष पृष्ठ पर)

मर्यादा पुरुषोत्तम आर्य–राम

श्री पं० भवानी प्रसाद जी

भारतीय इतिवृत्त के इस निशा-काल के तिमिरावृत नभोमण्डल में कई ऐसी ज्योतियां जगमगा रही हैं, जो इस ससार मरुस्थली के मार्गभ्रष्ट पथिकों को पथप्रदर्शन करके अपनी जीवन यात्रा को पूरी करने में सहायता देती रहती हैं, परन्तु उनमें इक्ष्वाकु-कुल-कुमुद-चन्द्र श्री रामचन्द्र का सर्वोत्कृष्ट-समुज्ज्वल प्रकाश ही इस कड़ी मंजिल को अन्त तक पहुंचाने या पूरी करने में पूरा सहायक और सब से बढ़कर पथप्रदर्शक है। यूं तो इन चमकती हुई ताराओं की सख्या संख्यातीत है, पर उनमें सर्वनयनाभिराम श्री रामचन्द्र का प्रकृष्ट प्रकाश ही सर्वातिशायी और सर्वव्यापी है। यदि इस घनघोर अंधियारी रात्रि में जगद्वन्द्य श्री राम के आदर्श-जीवन की जाज्वल्यमान शीतल किरणावली का प्रकाश प्रसार न पाता, तो भारतीय यात्री का कहीं ठिकाना न था। इस सूचिभेद्यअन्धकार में उसको न जाने कहां से कहां भटकना पड़ता।

इस समय भारत के शृंखलाबद्ध इतिहास की अप्राप्यता में यदि भारतीय अपना मस्तक समुन्नत जातियों के समक्ष ऊंचा उठाकर चल सकते हैं, तो महात्मा राम के आदर्श-चरित की विद्यमानता में। यदि प्राचीनतम ऐतिहासिक जाति होने का गौरव उनको प्राप्त है, तो वह सूर्य्य-कुल-कमल-दिवाकर राम की अनुकरणीय पावनी जीवनी की प्रस्तुति से। यदि भारताभिजनों को धार्मिक, सत्यवक्ता, सत्यसन्ध, सभ्य और दृढ़व्रत होने का अभिमान है, तो प्राचीन भारत के धर्मप्राण तथा गौरवसर्वस्व श्रीराम के पवित्र चरित्र की विद्यमानता से।

यदि पूर्णपरिश्रम से ससार के समस्त स्मरणीय जनों की जीवनियां एकत्रित की जांय, तो हम को उनमें से किसी एक जीवनी में वह सर्वगुण-राशि एकत्र न मिल सकेगी, जिससे सर्वगुणाधार श्रीराम का जीवन भरपूर है। आज हमारे पास भगवान् रामचन्द्र का ही एक ऐसा आदर्श चरित्र उपस्थित है जो अन्य महात्माओं के बचे बचाये उपलब्ध चरित्रों से सर्व-श्रेष्ठ और सब से बढ़कर शिक्षाप्रद है। वस्तुतः श्रीराम का जीवन सर्व-मर्यादाओं का ऐसा उत्तम आदर्श है कि मर्यादापुरुषोत्तम की उपाधि केवल उनके लिए ही रूढ़ हो गई है। जब किसी को सुराज का उदाहरण देना होता है तो "रामराज्य" का [illegible] किया जाता है।

केवल लोकमर्यादा की अक्षुण्ण स्थिति बनी रखने के लिए निष्काम कर्म करते रहने के वैदिक धर्म के सिद्धान्त का पूर्णरूप से पालन करके प्रातःस्मरणीय श्री रामचन्द्र ने ही दिखलाया था।

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च। न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः॥

(वाल्मीकिरामायण)

अर्थ—"राज्याभिषेकार्थ बुलाए हुए और वन के लिए विदा किए हुए रामचन्द्र के मुख के आकार में मैंने कुछ भी अन्तर नहीं देखा" आदि-कवि श्री वाल्मीकि का यह शब्द-चित्र निष्काम कर्मवीर श्री रामचन्द्रजी का ही यथार्थ चित्र था।

स्वकुलदीपक, मातृमोदवर्धक तथा पितृनिदेशपालक पुत्र, एकपत्नीव्रत-निरत, प्राणप्रियाभार्यासखा, सुहृद्दुःख-विमोचक मित्र, लोकसंग्राहक, प्रजा-पालक नरेश, सन्तानवत्सलपिता और ससार मर्यादाव्यवस्थापक, परोपकारक, पुरुषरत्न का एकत्र एकीकृत सन्निवेश, सूर्यवंशप्रभाकर, कौसल्योल्लासकारक, दशरथानन्दवर्धन, जानकीजीवन, सुग्रीवसुहृद्, अखिलार्यनिषेवितपादपद्म, साकेताधीश्वर, महाराजाधिराज, भगवान् रामचन्द्र में ही पाया जाता है।

दक्षिणापथ के सुदूरवर्ती, अविद्यान्धकारपूर्ण महाकान्तार में वैदिक आर्यसभ्यता का प्रकाश प्राधान्येन सर्वप्रथम लोकदिग्विजयी श्री राम ने ही पहुंचाया था। यद्यपि इससे पूर्व अगस्त्य ऋषि ने वैदिक सभ्यता के आलोक को दक्षिण में फैलाने का यत्न किया था परन्तु उनने उससे पूर्व आलोकित सुदूरवर्ती, [illegible] किया था।

महाराज रामचन्द्र के दक्षिण-विजय से पूर्व विन्ध्याचल पार का महाकान्तार इन्द्रियलोलुप, अनेक कदाचाररतचित्त नररक्त-पिपासु राक्षसों का लीला-निकेतन बना हुआ था, उसमें सर्वत्र उन्हीं का एकाधिपत्य वर्तमान था या यत्र-तत्र (कहीं-कहीं) वानरवंश के एक दो छोटे राज्य विद्यमान थे। इन्हीं वानरों का एक राज्य पम्पापुरी (वर्तमान मैसूर राज्य में उत्तरीय पेनर नदी के उद्गम स्थान पर चन्द्रदुर्ग पर्वत के निकट) में वानरराज बालि की अध्यक्षता में स्थित था। परन्तु उसके राज परिवार में धर्म पराङ्मुखता के कारण धन कलत्र को लक्ष्य करके गृहकलह मचा हुआ था और उसके फलस्वरूप वानरराज बालि का कनिष्ठ भ्राता सुग्रीव अपने मित्र महावीर हनुमान् के साथ अपने ज्येष्ठ भ्राता से भयभीत होकर ऋष्यमूक (वर्तमान मैसूर राज्य में उत्तरीय पेनर नदी का उद्गम स्थान चन्द्रदुर्ग पर्वत) पर जा छिपा था। इन्हीं वानरों और राक्षसों को वाल्मीकिरामायण के अन्तिम आधुनिक सस्करण में अलौकिक योनि राक्षस, कपि तथा ऋक्ष (रीछ) बतलाया गया है और उनके आकारों को असाधारण और भयङ्कर चित्रित किया गया है पर वस्तुतः ये सब जातियां वर्तमान मद्रास प्रान्त निवासियों के पूर्वज द्रविडवंशीय थे।

श्री रामचन्द्र ने पितृ आज्ञा को शिर धर कर, अयोध्या के महा-साम्राज्य को त्यागकर और इसी महाकान्तार के दण्डकारण्य में निर्वासित होकर अपने प्रेम और सदुपदेश से उक्त वानर जाति को अपना मित्र बनाया और सुग्रीव से सौहार्द्र की स्थापना करके उसके धनकलत्रापहारी भ्राता बालि को मार कर उसका राज्य सुग्रीव को दिया तथा अत्याचारी राक्षसों के दमन के लिए महावीर हनुमान के सेनापतित्व में उन्हीं वानरों की अपनी सङ्गठन शक्ति से प्रबल और सुशिक्षित सेना सन्नद्ध की। उसी सेना की सहायता से लंकाद्वीप के अतुल बलशाली तथा महापराक्रमी राक्षसजाति के साम्राज्य का उसके अधीश्वर प्रबलप्रतापी अत्याचारी रावण सहित विध्वंस किया। किन्तु श्री रामचन्द्र सदृश आर्य दिग्विजेता का विषय साम्राज्यविस्तार या संपत्तिसञ्चयमात्र नहीं था। उन्होंने विजित प्रदेश में धर्म की विजय-वैजयन्ती उड़ा कर, भूतपूर्व लंकेश्वर रावण के स्थान में उसके अनुज,

लेखक

धर्मपरायण को ही प्रजापालनार्थ अभिषिक्त कर दिया। इस प्रकार दक्षिणापथ मे आर्यसभ्यता का प्रसार करके अपनी वनवास यात्रा की अवधि पूर्ण होने पर श्रीरामचन्द्र अपनी पैतृक राजधानी अयोध्या मे लौट आए और स्वपितृपरम्परासाकेत राज्य के सिंहासन पर अभिषिक्त होकर यावज्जीवन नृपति धर्म का पालन करते रहे।

इस क्षुद्र निबन्ध मे पुण्यश्लोक, विश्वविश्रुतकीर्ति, लोकाभिराम श्रीराम की पुण्यगाथा कहां तक वर्णन की जा सकती है। काव्य उनके यशोगान से भरे पड़े हैं। भारतीय कवियों ने अपनी उच्च कल्पना का पूर्ण परिचय देकर शब्दचित्र के जितने मनोरम और सुन्दर स्वरूप बनाए हैं, देववाणी के सिद्धसारस्वतों ने अपनी प्रखर प्रतिभा का जितना चमत्कार दिखलाया है, उनमें से अधिकांश में राम के पथप्रदर्शक पावनचरित्र का वर्णन पाया जाता है। भाषा-कवियों की भी जिह्वा उनका यश वर्णन करने से नहीं थकती। हिन्दी के महाकवि तुलसीदास अपने रामचरित्रमानस में रामचरित्र का प्रवाह बहाकर अपने को अमर बना गए हैं। बङ्गभाषा की कृत्तवासा रामायण में भी रामचरित्र बङ्गदेश के कुटीर और प्रासादों में गाया जाता है।

हमारे लिए इससे अधिक सौभाग्य और क्या हो सकता है कि हम ऐसे मर्यादापुरुषोत्तम आदर्शचरित्र की सन्तान हैं। उन्हीं पवित्र नाम राम के जन्मदिन की शुभतिथि चैत्र सुदि नवमी है। हमारे पूर्वजों ने हम पर एक यह भी बड़ा उपकार किया है कि इस लोकाभ्युदयकारक जन्म की

(शेष १० पर)

(पृष्ठ ८ का शेष)

तिथिपूजकाः । कृतज्ञारच वदान्याश्च शूरा विक्रमसंयुताः ॥२२॥

दीर्घायुषो नराः सर्वे धर्मं सत्यं च संश्रिताः । पुत्रपौत्रैश्च नित्यं स्त्रीभिः पुरोत्तमे ॥२३॥

क्षत्रं ब्रह्ममुखं चासीद्वैश्याः क्षत्रमनुव्रताः । शूद्राः स्वकर्मनिरताः स्त्रीन्वर्णानुपचारिणः ॥२४॥

वहां के ब्राह्मण सदैव अपने कर्मों में तत्पर, जितेन्द्रिय, दान और स्वाध्यायशील, तथा दान लेने मे बड़े सयमी थे, (अर्थात् जहां तक बन पड़ता था दान न लेते थे)। वहां कोई नास्तिक, कोई झूठा, कोई ऐसा जो बहुश्रुत न हो, कोई ईर्ष्यालु, कोई अशक्त या मूर्ख नहीं था। वहां षडंग वेद का अज्ञाता, अव्रती, अबहुश्रुत, दीन, पागल, या सताया हुआ कोई नहीं था। अयोध्या में कोई पुरुष या स्त्री कान्तिरहित, सुन्दररूप रहित या दशरथ-राज्य में कोई भक्तिहीन नहीं देखा जा सकता था। ब्राह्मण आदि चारों वर्णों में स्त्री-पुरुष माता-पिता आदि देवों और अतिथियों के पूजक, कृतज्ञ, दानशील, शूर और पराक्रमी थे। उस श्रेष्ठपुरी में सब नर दीर्घ आयु वाले, सत्य-धर्म के अनुगामी और नित्य स्त्री-पुत्र-पौत्रों सहित थे, (अर्थात् उनकी भी अकाल मृत्यु नहीं होती थी)। क्षत्रिय ब्राह्मणों के आज्ञाकारी, वैश्य क्षत्रियों के अनुगामी, और शूद्र अपने सेवा-कार्य में तत्पर रहते हुए तीनों वर्णों की सेवा करते वाले थे।

आर्य देवी सीता

रावण को फटकार

निवर्तय मनो मत्तः स्वजने प्रीयतां मनः । न मां प्रार्थयितुं युक्तस्त्वं सिद्धिमिव पापकृत् ॥२॥

अकार्यं न मया कार्यम् एकपत्न्या विगर्हितम् । कुलं सम्प्राप्तया पुण्यं कुले महति जातया ॥३॥

एवमुक्त्वा तु वैदेही रावणं तं यशस्विनी । रावणं पृष्ठतः कृत्वा भूयो वचनमब्रवीत् ॥४॥

नाहमौपयिकी भार्या परभार्या सती तव । साधु धर्ममवेक्षस्व साधु साधु व्रतं चर ॥५॥

यथा तव तथाऽन्येषां रक्ष्या दारा निशाचर । आत्मानमुपमां कृत्वा स्वेषु दारेषु रम्यताम् ॥६॥

अतुष्टं स्वेषु दारेषु चपलं चपलेन्द्रियम् । नयन्ति निकृतिप्रज्ञं परदाराः पराभवम् ॥७॥

इह सन्तो न वा सन्ति सतो वा नानुवर्तसे । तथा हि विपरीता ते बुद्धिराचारवर्जिता ॥८॥

वचो मिथ्याप्रणीतात्मा पथ्यमुक्तं विचक्षणैः । राक्षसानामभावाय त्वं वा न प्रतिपद्यसे ॥९॥

अकृतात्मानमासाद्य राजानमनये रतम् । समृद्धानि विनश्यन्ति राष्ट्राणि नगराणि च ॥१०॥

"मेरे से मन हटा, और अपनी स्त्री में मन को युक्त कर। मेरे से प्रार्थना करने के तू योग्य नहीं, जैसे कि पापी ब्रह्म-प्राप्ति रूपी सिद्धि को नहीं पा सकता। एक तो मैं पतिव्रता, दूसरे पुण्य पतिकुल को मैंने प्राप्त किया, और तीसरे उच्च कुल में मेरा जन्म, सो मैं निन्दित तथा अकार्य काम को कैसे कर सकती हूं?"

यशस्विनी वैदेही ने रावण को इस प्रकार कहकर उसकी ओर पीठ फेर ली और आगे कहने लगी—

"एक तो मैं दूसरे की पत्नी, और फिर सती, सो मैं तेरी भार्या होने लायक नहीं हूं। तू साधु धर्म की एक ओर दृष्टि रख और साधुतया साधु-व्रत का आचरण कर। अरे निशाचर! जैसे अपनी की, वैसे दूसरों की स्त्रियों की भी रक्षा करनी चाहिये। सो, अपने को दूसरे के स्थान पर रखकर अपनी ही स्त्री में रमण कर। जो चपल मनुष्य चपलेन्द्रिय बनकर अपनी स्त्री में प्रसन्न नहीं रहता, उस धिक्कारयुक्त बुद्धि वाले को पराई स्त्रियां तिरस्कृत किया करती हैं।"

"क्या यहां लंका में सन्त लोग नहीं रहते? यदि रहते हैं, तो क्या तू उन सन्तों के पीछे नहीं चलता, जिससे तेरी बुद्धि आचारभ्रष्ट उलटी हो रही है? अथवा क्या तू अपने को झूठे प्रणय में फंसा कर दीर्घदर्शी विद्वानों द्वारा कथित हितकारी वचन को, राक्षसों के विनाश के लिए, नहीं मान रहा? याद रख, अनीति में रत अजितेन्द्रिय राजा को पाकर समृद्ध राष्ट्र तथा नगर विनष्ट हो जाया करते हैं।

राम के राज्य में

राघवश्चापि धर्मात्मा प्राप्य राज्यमनुत्तमम् । ईजे बहुविधैर्यज्ञैः ससुतभ्रातृबान्धवः ॥२८॥

न पर्यदेवन् विधवा न च व्यालकृतं भयम् । न व्याधिजं भयं चासीद् रामे राज्यं प्रशासति ॥२९॥

निर्दस्युरभवल्लोको नानर्थं कश्चिदस्पृशत् । न च स्म वृद्धा बालानां प्रेतकार्याणि कुर्वते ॥३०॥

सर्वं मुदितमेवासीत् सर्वो धर्मपरोऽभवत् । [illegible] नाभ्यहिंसन् परस्परम् ॥३१॥

आसन्वर्षसहस्राणि तथा पुत्र[illegible] । निरामया विशोकाश्च रामे राज्यं प्रशासति ॥३२॥

नित्यमूला नित्यफलास्तरवस्तत्र पुष्पिताः । कामवर्षी च पर्जन्यः सुखस्पर्शश्च मारुतः ॥३३॥

स्वकर्मसु प्रवर्तन्ते तुष्टाः स्वैरेव कर्मभिः । आसन्प्रजा धर्मपरा रामे शासति नानृताः ॥३४॥

अनुपम राज्य पाकर धर्मात्मा राम ने भी अपने पूर्व-पुरुषों के समान मित्रों, भाइयों, बान्धवों की सहायता से बहुविध लोकोपकारी कार्य किए। परिणाम स्वरूप राम के राज्य-शासन में कहीं विधवाओं का करुण-क्रन्दन नहीं था, कहीं शठों-हिंसकों का भय नहीं था, और कहीं रोग का डर न था। राज्य भर में न डाकुओं-चोरों-गठकतरों-लुटेरों का नाम था, न कोई किसी पर-पदार्थ को छूता था, और न कभी वृद्ध लोगों ने बालकों का मृतक संस्कार किया। एवं, सब प्रजाजन सदा आनन्द-प्रसन्न थे। सब अपने २ कर्तव्य धर्म में तत्पर थे, और राम को आदर्श रूप में देखते हुए परस्पर में किसी ने किसी को दुःख नहीं दिया। राम के राज्य-शासन में मनुष्य दीर्घजीवी थे, सन्तान बलवान् होती थी, और सब रोग रहित व शोक-रहित थे। देश में वृक्ष समय पर फूलते थे, क्योंकि मेघ कामवर्षी रहता और हवा सुखदायिनी चला करती थी। सब लोग अपने २ कर्मों से सन्तुष्ट रहकर अपने २ कर्मों में लगे रहते, जिससे राम के राज्य में समस्त प्रजा सत्यपरायण थी, असत्यवादी न थी।

(पृष्ठ ९ का शेष)

तिथि इस चैत्र शुक्ला नवमी को हम तक अविच्छिन्न रूप से पहुंचा दिया है। परन्तु आज कुछ [illegible] में विजय, [illegible] रामनवमी प्रभृति जयन्तियों को [illegible] रीति से नहीं मनाते और उनके वास्तविक उद्देश्यों को भूलकर मनघड़न्त आदि वृथा रूढ़ियों में फंस गए हैं। शिक्षा से आलोकित हृदय सुधारकों और वैदिकधर्मावलम्बी आर्य महाशयों का कर्तव्य है कि लुप्तप्राय-विशुद्ध-वीरपूजा की प्रथा का पुनरुद्धार करें और अपने आदर्श महापुरुषों की जन्मतिथियों और स्मारकों को शिक्षाप्रद प्रकारों से मनाएं तथा सर्वसाधारण के लिए पथप्रदर्शक बनें। आज के दिन मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र के चरित्र के अध्ययन वा स्वाध्याय के लिए रामायण की कथा की प्रथा को पुनःप्रचारित करना चाहिए। यज्ञ और दान का शुभानुष्ठान होना चाहिए और अपने पूर्व-पुरुषों के पदचिन्हों पर चलते हुए धर्म के तीनों स्कंध यज्ञ, अध्ययन और दान के विशेष आचरण में ही ऐसे शुभ दिनों को बिताना चाहिए, जिससे कि हम अपनी उन्नति करते हुए अन्यों के उद्धार के हेतु बन सकें।

(आर्य पर्वपद्धति से)

आर्यसमाज और नशाबन्दी

सरकार का कर्तव्य

हमारे लिए यह शर्म की बात होगी कि हम अब भी झिझक-झिझक कर नशाबन्दी की तरफ अपना कदम उठाएं।

श्री डा० युद्धवीर सिंह जी

यूं तो भारत में प्रचलित सभी धर्मों में मद्यपान का निषेध है और समय-समय पर सन्तों, महात्माओं व धार्मिक गुरुओं ने नशों के विरुद्ध प्रचार भी किया है पर आधुनिक काल में आर्य समाज ने अपने शुरू के जीवन में नशाबन्दी पर बड़ा बल दिया, जिससे हजारों-लाखों भाइयों ने सब प्रकार के नशों का परित्याग किया। महात्मा गांधी ने भी स्वराज्य के लिए किये जाने वाले आन्दोलन के शुरू में ही नशाबन्दी, विशेषतया मद्य-निषेध को बड़ा महत्व दिया।

चार स्तम्भों में से एक

सन् १९१९ में जब सत्याग्रह व असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, तो गांधी जी ने देश के सम्मुख चतुर्मुखी रचनात्मक प्रोग्राम रखा।

१ जातीय एकता।

२ विदेशी वस्त्र का बायकाट और स्वदेशी वस्त्र, विशेषतया हाथ से कती तथा हाथ से बुनी खादी का प्रचार।

३ मद्य-निषेध।

४—छूआछूत।

उन्होंने तब घोषणा की थी कि स्वराज्य की आलादार इमारत इन चार स्तम्भों पर ही खड़ी होगी। अब आप स्वयं सोच सकते हैं कि ये स्तम्भ हमारे आजाद भारत की इमारत के लिए आज भी कितने जरूरी हैं। इनमें से एक के भी कमजोर पड़ते ही सारी इमारत ढह सकती है।

स्वराज्य की पहली किरण के साथ

सन् १९३७ में जब नया विधान लागू हुआ और स्वराज्य की पहली किरण के हमें दर्शन हुए तथा प्रथम बार सत्ता कांग्रेस के हाथ में आई और सूबों में कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल बने, तब तुरन्त कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया।

"चूंकि १९२०, यानी असहयोग के प्रारम्भ से ही शराब और मादक पदार्थों की पूरी बन्दी कांग्रेस के कार्य-क्रम का एक खास अंग रहा है और हजारों स्त्री-पुरुषों को इसके लिए जेल तथा शारीरिक कष्ट सहने पड़े हैं, कार्य-समिति की राय है कि अब कांग्रेसी मन्त्रियों को इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यत्न करना चाहिए। कार्य समिति प्रान्तों के मन्त्रियों से और देशी राज्यों से भी अपील करती है कि वे भी नैतिक और सामाजिक कल्याण के लिए इस कार्य-क्रम को हाथ में लें।"

यह प्रस्ताव स्वयं बताता है कि कांग्रेस के नेतागण भी मद्य-निषेध को कितना महत्व देते थे।

सब से बड़ा काम

२८ अगस्त १९३७ के कार्य-समिति के उपर्युक्त प्रस्ताव पर 'हरिजन-सेवक' में गांधी जी ने लिखा था—"कार्य समिति के इस प्रस्ताव को मैं उसके अब तक के अमल में (भले वह गैरकानूनी ही हो) कोई उल्लेखनीय कमी नहीं हुई है—तब तो फिर इस पाप की कमाई के मोह में फंस जाएंगे और वह हालत आज से भी बुरी होगी।

"पर मुझे ऐसा कोई भय नहीं है। मुझे तो विश्वास है कि हमारे राष्ट्र में इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक नैतिक बल जरूर है। अगर हम शराब की पूरी बन्दी करने पर तुल जाएं तो तीन साल के अन्तर में नहीं, केवल छः महीने में ही हम उसके अन्त के दर्शन कर लेंगे और जब सारा देश यह देख

> ## यह था आदर्श राज्य
>
> महाराज अश्वपति की घोषणा—
>
> न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो
> नानाहिताग्निर्नाविद्वान्न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥
>
> (छान्दोग्योपनिषद् प्र० ५ ख० ११। ५)
>
> मेरे राज्य में न चोर है, न कोई कृपण है, न कोई मदिरा पीने वाला है, न कोई अग्निहोत्र रहित है, न कोई अपढ़ है, न कोई व्यभिचारी है और जब कोई भी पुरुष व्यभिचारी नहीं तो स्त्री व्यभिचारिणी कहां हो सकती है।
>
> आज है कोई राष्ट्र-जो ऐसी घोषणा करे।

कार्यमय जीवन में सब से बड़ा काम समझता हूं।"

इस सब से यह साफ जाहिर हो जाता है कि राष्ट्रपिता ने नशाबन्दी को अपने कार्य-क्रम में कितना बड़ा स्थान दे रखा था। उन्होंने शराबबन्दी के कार्य को कार्य-समिति का सबसे बड़ा काम बतलाया था।

इसी लेख में आगे चलकर बापूजी लिखते हैं—

"मैं जानता हूं कि बहुत से लोगों को यह सन्देह है कि शराब की पूरी बन्दी कैसे होगी। उनका ख्याल है कि उसके लिए आय के लोभ को रोकना बड़ा कठिन होगा। उनकी दलील यह है कि अकेलापन तो हर किसी तरह शराब या मादक चीजें प्राप्त कर ही लेंगे, और जब बन्दी लोग देखेंगे कि इस बन्दी के चलते तो केवल सरकारी आय की कुर्बानी मात्र है—इससे मादक वस्तुओं की लेगा कि यह तो सचमुच हो गया तो शेष प्रान्त और देशी राज्यों को भी उस अटल होनहार के सामने सिर झुकाना होगा।

"इसलिए, हमें हक है कि हम केवल हिन्दुस्तान के ही सभी दलों से नहीं—यहां तक कि यूरोपीय लोगों से भी सहानुभूति और सहयोग की अपेक्षा न करें, बल्कि समस्त संसार के उत्तमोत्तम पुरुषों से भी यही अपेक्षा करें।"

राज्य का कर्तव्य

राजा प्रजा के पिता तुल्य होता है। राजा के स्थान पर आज हमारी संसद है और मन्त्रीमण्डल हैं। जिस तरह एक शराबी भी अपने पुत्र का शराब पीना पसन्द नहीं करता बल्कि उसे रोकता है, एवं कोई भी माता-पिता अपने नासमझ छोटे बच्चे को अफीम नहीं खाने देता, कोई जहरीला पेय यदि वह पीने भी लगे तो उसे जबरदस्ती रोकता है, आग में हाथ नहीं डालने देता, उसी तरह, हमारी सरकार का कर्तव्य है कि प्रजा को इन जहरीली मादककारी वस्तुओं के सेवन से रोके।

राज्य का यह मुख्य कर्तव्य है कि अपने देश की प्रतिष्ठा को बनाए रखे, चरित्र को ऊंचा उठाए और देश को सुखी और सम्पन्न बनाए। जहां स्वदेशी, अस्पृश्यता-निवारण और एकता पर बल दे वहां इस चौथे स्तम्भ अर्थात्, नशाबन्दी पर भी पूरा जोर दे। राज्य के अतिरिक्त आज जनता का भी कर्तव्य है कि वह आने वाले चुनाव में उन्हीं लोगों को राय दे, जो देश में नशाबन्दी लाने का प्रयत्न करें। जनता जैसा अपने प्रतिनिधि से चाहेगी, वैसा वह करेगा। हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि हम अपनी सरकार को नशाबन्दी पूरी तरह से लागू करने के लिए मजबूर कर दें। जो लोग नशाबन्दी में पूरा विश्वास रखते हैं, उनका कर्तव्य है कि वे अपना संगठन बनाएं और देश को इस कलंक से मुक्त करें।

१९३७ के गांधी जी के जिस लेख का हमने ऊपर जिक्र किया है, उसके अन्त में कुछ सुझाव गांधी जी ने दिये हैं जिनमें से मुख्य-मुख्य हम नीचे उद्धृत करते हैं।

(१) हर प्रान्त का एक नक्शा बनाया जाए, जिसमें वे स्थान या गांव बताएं जहां कि शराब वगैरा नशीली चीजों की दुकानें हों।

(२) इनके लाइसेंसों की मीयाद खत्म होते ही ये दुकानें बन्द कर दी जाएं।

(३) शराब की आय—जब तक वह होती रहे—शराब वगैरा की पूरी बन्दी के लिए ही पूर्णतः सुरक्षित रख दी जाए।

(४) जहां-जहां संभव हो शराब वगैरा की दुकानों की जगह उपाहार-गृह और क्रीड़ागार बना दिए जाएं।

(५) आबकारी विभाग के तमाम वर्तमान कर्मचारी यह पता लगाने के काम में लगा दिये जाएं कि कानून के खिलाफ कहीं कोई शराब की भट्टी तो नहीं लगा रहा है, या शराब तो नहीं पी रहा है।

(६) शिक्षा-संस्थाओं से हम प्रार्थना करें कि वे अपने शिक्षकों तथा विद्यार्थियों का कुछ समय इस कार्य के लिए दें।

(७) डाक्टरों से प्रार्थना करें कि

(शेष पेज १४ पर)

क्रान्ति के महान् देवता

श्री ओम्प्रकाश जी एम० ए०, बी० टी०,
मन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

(गतांक से आगे)

दयानन्द उस समय की देशी रियासतों में गए और वहां के राजाओं पर अपना प्रभाव जमा कर बीचों-बीच उन्हें भारत को अंग्रेजों से स्वतन्त्र कराने के लिए उत्साहित करते रहे। उन्होंने 'इण्डिया' वासियों को आर्यावर्त की याद दिलाई। और आर्यों के चक्रवर्ती राज्य की चर्चा बार-बार की तथा देश के पतन पर बार-बार रुदन करके वहां के लोगों में राजनीतिक क्रान्ति मचानी चाही। भाषाकी एकता एकराष्ट्रके लिए संजीवनी है। अत: सारी आयु संस्कृत का पठन-पाठन करने और गुजराती मातृभाषा होने पर भी उस आदर्श देशभक्त दयानन्द ने अपने जीवन के अन्तिम काल में आर्य भाषा हिन्दी सीखी और उसी में भाषण दिये तथा अपने ग्रन्थ लिखे। क्या यह दयानन्द की राजनीति की अपूर्व विजय नहीं कि भारत के स्वाधीन होने पर भारत के कर्णधारों ने हृदय की गहराई में उस महान् दूर-द्रष्टा महापुरुष की बात को माना और हिन्दी को ही भारत की राजभाषा घोषित किया। उनकी स्मृति में बने दयानन्द विद्यालयों और आर्य गुरुकुलों ने अपने आचार्य के आदेश को शिरोधार्य कर अंग्रेजी शासन काल में भी हिन्दी को माध्यम बना कर राष्ट्र-भाषा की जो सेवा की, वह स्वर्णाक्षरों में लिखी जाने योग्य है। स्वतन्त्रता के बाद पजाब में राष्ट्र-भाषा हिन्दी पर आई विपत्ति को देख कर दयानन्द के वीर सैनिक तड़प उठे और देश के कोने २ से सहस्रों की सख्या में आकर कैरोंशाही से टकराए।

धार्मिक-क्रान्ति

आचार्य दयानन्द की सबसे बड़ी क्रान्ति सम्भवत: धार्मिक जगत् में है। ससार में भिन्न-भिन्न मत-मतान्तर फैल चुके थे तथा कई प्रकार के पाखण्ड जारी हो चुके थे। भारतवर्ष तो रूढ़िवाद और अन्ध विश्वास का गढ़ बन चुका था। दयानन्द ने सन् १८४६ में सच्चे शिव की खोज में घर छोड़ा था। नाना प्रकार के स्थानों, पर्वतों के दुर्गम शिखरों, जगलों की भयानक कन्दराओं और नदियों के तटों पर योग सीखते और सच्चे गुरु की खोज करते-करते वे दण्डी स्वामी विरजानन्द के पास मथुरा में पहुंचे। वहां दिन-रात तपस्या करके उन्होंने वेद विद्या को सीखा और गुरु को दक्षिणा में वैदिक धर्म के पुनरुत्थान में जीवन तक बलिदान कर देने की प्रतिज्ञा की। फिर क्या था, वे मैदान में कूद पड़े।

उन्होंने देखा कि भारत के लोग एक ईश्वर की पूजा छोड़ कर लाखों देवी-देवताओं को ईश्वर बना बैठे हैं और पत्थर की पूजा के चक्कर में पड़ चुके हैं। लोगों के जीवन में ईश्वर का नाम तक नहीं, आडम्बर बहुत। दयानन्द ने हरिद्वार के मेले पर 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' गाड़ दी और ललकार कर कहा कि मूर्तिपूजा और अवतारवाद ने ईश्वर भक्ति को लुप्त कर दिया है। मृतक श्राद्ध ने भ्रष्टाचार ही फैलाया है, व संस्कृत पुस्तक को ब्रह्मवाणी समझने से वैदिक विद्या का ह्रास हुआ है और हर मनुष्य की पुस्तक को प्रामाणिक कह कर आर्ष-ग्रन्थों का पठन-पाठन रुक गया है।

क्या दयानन्द की धार्मिक क्रान्ति का यह परिणाम नहीं कि आज जन्मगत शूद्र तथा महिलाएं अत्यन्त विद्वान् बन कर स्वतन्त्र भारत की केन्द्रीय सरकार के बड़े-बड़े पदों को सुशोभित कर रहे हैं। दयानन्द ने अकाट्य प्रमाणों से सिद्ध किया कि ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि जन्म से नहीं कर्म से बनते हैं। मनुष्य को दुर्बल बना देने वाली अहिंसा हमारा धर्म नहीं, धर्म तो वास्तव मे इस जीवन और परलोक के जीवन को सुधारने वाला है - 'यतोऽभ्युदयनि:श्रेयससिद्धि: स धर्म: ।' अन्याय, अत्याचार को मिटाने के लिए ब्राह्मण कृष्ण का उपदेश जब दुर्योधन न मानेगा तो वह क्षत्रिय अर्जुन को युद्ध करने का आदेश देगा ही। इसी बात को स्पष्ट करने के लिए महर्षि ने आर्य समाज का नियम बनाया। सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए। शुद्ध वर्णाश्रम का ठीक पालन ही वैदिक धर्म का सार भूत सन्देश है, यह नाद दयानन्द ने बजाया था। उन्होंने उच्च स्वर से कहा था कि भक्ति और शक्ति, शस्त्र और शास्त्र जब तक इकट्ठे नहीं चलेंगे, राष्ट्र का कल्याण नहीं होगा।

जातीय क्रान्ति

आर्यजाति के अस्तित्व को बचाने के लिए निर्भय दयानन्द ने एक अनोखी क्रान्ति मचाई। भारत की प्रचलित धर्म प्रणाली के कूड़ा करकट को ही उस महान् ऋषि ने साफ नहीं किया, बल्कि संसार में फैलरहे मजहबों को भी उन्होंने खुली चुनौती दी। भारत में अंग्रेजी राज्य से प्रेरित ईसाई मिशनरी यहां की भोली भाली दरिद्र, अपढ़ जनता को उल्लू बनाकर इसे ईसाई मत में प्रविष्ट कर रहे थे। एक ओर ईसाई मत को मानने वाले अंग्रेजों का दमन-चक्र जारी था और दूसरी ओर हजरत ईसा के कथित शान्ति उपदेशों की चर्चा थी। और मुसलमान बहिश्त के मेवों और हूरों के अनूठे प्रलोभन देकर उन्हें कुरान शरीफ की दीक्षा दे रहे थे कि जो हजरत मुहम्मद पर ईमान न लाएगा, वह काफिर है और उसे दोजख की प्रचण्ड अग्नि में झुलसना पड़ेगा।

अन्ध विश्वासी हिन्दू किसी को अछूत कह कर और किसी को म्लेच्छ द्वारा छूत कह कर उन्हें मुस्लिम-ईसाई बनने की प्रेरणा दे रहे थे। दयानन्द की आत्मा कराह उठी। आर्य जाति का नाश होता वे न देख सके और उन्होंने जीवन की परवाह न करते हुए ईसाई मुसलमानों को ललकारा और पादरियों और मौलवियों से डटकर कहा कि कुरान और बाईबल वेद के सूर्य के सामने दीपक समान है। परमात्मा रूपी पिता को मिलने के लिए हम पुत्रों को हजरत मुहम्मद या हजरत ईसा जैसे एजेन्टों की आवश्यकता नहीं। हमारे कर्म ही जीवन दान बख्शेंगे। "काफिरों को मित्र मत बनाओ" कुरान की इस उक्ति की तुलना अद्वितीय विद्वान् दयानन्द ने वेद के उपदेश "मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे" (हम सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखें) से करके संसार पर इस्लाम के सम्प्रदायवाद की कली खोल दी और वेद की मानवता का सन्देश उसे दिया।

स्वतन्त्र भारत के लौह पुरुष सरदार पटेल के शब्दों में सब से बड़ा काम जो उस दिव्य पुरुष ने किया वह है शुद्धि का अमृत पिलाना, जो भूले भटके हिन्दू आर्य जाति को छोड़ कर विधर्मी बन गये थे, उन्हें फिर आर्य जाति में लाना। आज शुद्धि के बल पर कोई हिन्दू आपको ईसाई-मुस्लिम बनता नहीं दीखेगा और कई बिछुड़े भाई पुन: आर्य बन्धुओं के गले मिलते जाए हैं। यह महान् दयानन्द का सबसे बड़ा प्रताप है।

कहां तक गुणगान किया जावे। नि:सन्देह दयानन्द आदर्श क्रान्तिकारी थे। उन्होंने मनुष्य को अपने जीवन में सर्वतोमुखी क्रान्ति लाकर समाज, धर्म राष्ट्र और संसार में क्रान्ति मचा देने का ऐसा सारगर्भित आदेश दिया कि जहां विश्व कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने उन्हें 'आधुनिक भारत का मार्गदर्शक' श्रीमती एनी बेसेंट ने 'हिन्दुस्थान हिन्दुस्थानियों के लिए' का नारा लगाने वाले पहले व्यक्ति, सर सैयद अहमद खां ने 'एक ज्योतिर्मय निराकार परमेश्वर की आराधना करने की शिक्षा देने वाले अत्यन्त श्रेष्ठ पुरुष' कहा, वहां अमरीका के महान् योगी एण्ड्रू जैक्सन अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने में सम्भवत: सबसे बाजी ले गए। जब उन्होंने कहा—दयानन्द ने एक ऐसी अग्नि आर्य समाज के रूप में प्रज्वलित की जो संसार भर की घृणा, साम्राज्यशाही और पाप को नष्ट-भ्रष्ट कर देगी।

प्रभु हमें शक्ति दे कि हम दिव्य द्रष्टा दयानन्द के क्रान्ति के महान् उपदेश को हृदयङ्गम करके उस महर्षि के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के घोषनाद को सार्थक करने के लिए कुछ कर सकें।

(पेज ११ का शेष)

वे दल बनाकर उन लोगों को जाकर समझाएं जिन्हें शराब आदि नशीली चीजों की लत है।

(८) डाक्टर वैद्य और हकीमों से इस सम्बन्ध में वैतनिक या अवैतनिक सहायता और सलाह लें कि नशेबाजों से नशा किस तरह छुड़ाया जाए, और उन्हें उसके बजाय कौनसी चीजें या पेय दिये जाएं, जो नशीले न हों।

नशाबन्दी सुख-समृद्धि के लिए आवश्यक

यह बात १९३७ की है जब हम स्वतन्त्र नहीं थे। उसके १० वर्ष बाद हम स्वतन्त्रता का काफी उपभोग कर चुके हैं। अब हमारे लिए यह शर्म की बात होगी कि हम अब भी झिझक-झिझक कर नशाबन्दी की तरफ अपना कदम उठाएं। नशाबन्दी न केवल देश की नैतिक उन्नति के लिए आवश्यक है, बल्कि देश की आर्थिक सुख-समृद्धि के लिए भी जरूरी है।

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २)५०
सत्यार्थप्रकाश २)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
व्यवहार भानु)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
आर्यसमाज वेश पत्र १) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७ × ४० इञ्च २)५०
,, ,, ३६ × ५४ इञ्च ४)५०
,, ,, ४५ × ६० इञ्च ६)५०
कर्त्तव्य दर्पण)४०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
मराठी सत्यार्थप्रकाश १)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से))५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
कठोपनिषद् ५० प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १ २५
मृत्यु और परलोक १)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
अभ्यास और वैराग्य १)६५
निज जीवन वृत वनिका (सजिल्द))७५
बाल जीवन सोपान १)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म)६०

उपनिषद् कथामाला)२५
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार)२०
आदर्श गुरु शिष्य)२५
कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
पुरुष सूक्त)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर ६२
स्वर्ग में हड़ताल)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)२५
वैदिक तत्व मीमांसा)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
वेद और विज्ञान ७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३७
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
इराक की यात्रा २)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक ईश वन्दना ४०
वैदिक योगामृत)६२
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
भ्रम निवारण)३०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
वेद की इयत्ता १)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह)७५
कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम (पूर्वार्द्ध) १)५०
,, ,, (उत्तरार्द्ध) १)५०
वैदिक संस्कृति)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
सायण और दयानन्द १)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)५०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)५०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०

संस्कार महत्व)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

गीता विमर्श)७५
गीता की पृष्ठ भूमि)४०
ऋषि दयानन्द और गीता)७५
आर्य समाज का नवनिर्माण)१२
ब्राह्मण समाज के तीन महापातक)५०
भारत में मूर्ति पूजा २)
गीता समीक्षा १)

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
चरित्र निर्माण १)१५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
अनुशासन का विधान २५
धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

कांग्रेस का सिरदर्द)५०
आर्य समाज और साम्प्रदायिकता)३१
भारत में भयंकर ईसाई षड्यंत्र)२५
आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना)२०
आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण ६

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय २)
आर्य समाज के महाधन २)५०
एशिया का वेनिस)७५
स्वराज्य दर्शन १)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
भजन भास्कर १)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५
सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५
आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण १)
आर्य समाज का परिचय १)

सत्यार्थ प्रकाश

मंगाईये ।

मूल्य २) नैट

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सा म वे द

(मूल मंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित)
भाष्यकार श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार
(स्नातक गुरुकुल कांगड़ी)

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार (४०००) पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थीं। तबसे इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है।

यह २८ पौंड सफेद कागज पर कपड़े की जिल्द और मूल्य ४ रुपये है भारी संख्या में मंगवाइये पोस्टेज पृथक।

हिन्दू राष्ट्र को सच्चा मार्ग दिखाने वाली सर्वश्रेष्ठ धर्म पुस्तक

वैदिक-मनुस्मृति श्री सत्यकामजी

हिन्दी टीका सहित हिन्दू धर्म ग्रन्थों में चारों वेदों के पश्चात एक मात्र प्रमाणिक पुस्तक यही है। यद्यपि वेदों का समझना साधारण जनों के बस में नहीं पर मनुस्मृति को नागरी पढ़ा हुआ व्यक्ति भी समझ सकता है। ४१८ पृष्ठ मूल्य ४॥) साढ़े चार

बृहत् दृष्टान्त सागर सम्पूर्ण पाँचों भाग
पं० हनुमान प्रसाद शर्मा

इस ग्रन्थ में वैदिक लौकिक सामाजिक धार्मिक ऐतिहासिक राजनैतिक भक्ति ज्ञान वैराग्य आदि सभी विषयों के अच्छे से अच्छे दृष्टान्तों का संकलन किया है। संसार के अनेक महापुरुषों सन्तों राजाओं विद्वानों एवं सिद्धों के अनुभूत तथ्यों का अनोखा समावेश है। सच तो यह है कि यह अकेला ग्रन्थ सभी श्रेणी के लोगों के सभी प्रकार की मानसिक पीडाओं को मार भगाने के लिए पर्याप्त है। कथावाचक कथा में उपदेशक अपने प्रतिपाद्य विषय में और अध्यापक इसके प्रयोग से छात्रों पर मोहिनी डालते हैं। बालक कहानी के रूप में इसे पढ़कर मनोरंजन का आनन्द ले सकते हैं। वृद्ध इस ग्रन्थ के पन्ने-पन्ने में अपने भगवान और उनके भक्तों की झांकी पा सकते हैं। माताएं इसे पढ़कर अपने मतलब का ज्ञान प्राप्तकर सकती हैं। इस प्रकार सबका ज्ञान इस पुस्तक से बढ़ सकता है पृष्ठ संख्या ८६८

सजिल्द मूल्य केवल १०) मात्र दस रुपया डाक व्यय २) अलग।

उपदेश मंजरी—स्वामी दयानन्द जी के उपदेश हर आर्य समाजों को अवश्य अध्ययन करने चाहिए पूना नगर में दिए गये सम्पूर्ण व्याख्यान इसमें दिए गए हैं। मूल्य २॥ ढाई रुपये।

संस्कार विधि—इस पुस्तक में गर्भाधान से लेकर १६ संस्कार कहे हैं जो ब्रह्मचर्य गृहस्थ वान प्रस्थ सन्यास इन चारों आश्रमों में क्रमानुसार करने होते हैं। मूल्य १॥) डेढ़ रुपये डाक खर्च अलग

आर्यसमाज के नेता आर्य समाज के उन आठ महान् नेताओं जिन्होंने आर्य समाज की नींव रखकर हिन्दू जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मूल्य ३) तीन रु० डाक खर्च १॥ डेढ रुपये

महर्षि दयानन्द—जिस समय हिन्दू धर्म अन्धकार में था लोगों में अंधविश्वास बहुत बढ़ गया था उस समय स्वामी दयानन्दजी का जन्म हुआ और शिव रात्रि को महर्षि जी को सच्चा ज्ञान मिला। मूल्य ३)

कथा पच्चीसी—सतराम मत

जिसमें मनुष्य जाति का उद्धार करने के हेतु ही अनेक शास्त्रों में से भारत भूषण स्वामी दर्शनानन्द जी ने उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद पच्चीस कथाओं का संग्रह किया है हमने उनको और भी संशोधित एवं सरल बनाकर छापा है मूल्य केवल १) एक रुपया डाक व्यय १)

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

१—अब तक सत्यार्थप्रकाश के कई संस्करण प्रकाशित हुए हैं।

२—इसकी दूसरी बड़ी विशेषता पैराग्राफों पर क्रमांक दिया जाना है।

३—अकारादिक्रम से प्रमाण सूची। पुस्तक का आकार १०×१३ इंच है। पृष्ठ संख्या ५८०, बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई क्लाथ बाइंडिंग - मूल्य लागत मात्र १५) पन्द्रह रुपये, एक साथ पांच कापी मंगाने पर ५०) पचास रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१—सांख्य दर्शन	मू० २ ००
२ न्याय दर्शन	मू० ३ २५
३—वैशेषिक दर्शन	मू० ३ ५०
४—योग दर्शन—	मू० ६ ००
५ वेदान्त दर्शन —	मू० ५ ५०
६—मीमांसादर्शन—	मू० ६ ००

उपनिषद्प्रकाश—स्वामी दर्शनानन्दजी

इसमें लौकिक व पारलौकिक उन्नति की महत्वपूर्ण शिक्षाएं भरी पड़ी हैं। मूल्य ६ ०० छः रुपया।

हितोपदेश भाषा ले० रामेश्वर 'अशांत'

उस पुत्र से क्या लाभ जिसने अपने कुल का नाम कलंकित किया है ऐसे पुत्र की माता बांझ हो जाय तो उत्तम है यही भावना पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन को सदा सताती थी। विद्वान् प० विष्णुशर्मा ने राजकुमारों को जो शिक्षा एवं नीति की व्याख्या कथाएँ सुनाई उनको ही विद्वान् पं० श्री रामेश्वर अशान्त जी ने सरल भाषा में लिखा है। मूल्य ३) तीन रुपया।

अन्य आर्य साहित्य

(१) विद्यार्थी शिष्टाचार	१ ५०
(२ पंचतंत्र	५०
(जाग रे मानव	१ ००
(४) कौटिल्य अर्थशास्त्र	१० ००
(५) चाणक्य नीति	२ ००
(भर्तृहरि शतक	१ ५०
७ कर्तव्य दर्पण	१ ५०
८) वैदिक सन्ध्या	४ ०० सैकड़ा
(९) वैदिक हवन मंत्र	१० ०० सैकड़ा
(१०) वैदिक सत्संग गुटका	१५ ० सैकड़ा
(११) ऋग्वेद ७ जिल्दों में	५६ ००
(१) यजुर्वेद २ जिल्दों में	१६ ००
(१३) सामवेद १ जिल्द में	८ ००
(१४) अथर्ववेद ४ जिल्दों में	३ ००
(१५) वाल्मीकि रामायण	१२ ००
(१६) महाभारत भाषा	१२ ००
(१७) हनुमान जीवन चरित्र	४ ५०
(१८) आर्य संगीत रामायण	५ ००

हिन्दी के हर विषय की ५००० पुस्तकों की विस्तृत जानकारी वाला ४०० पृष्ठों की ज्ञान की कुन्जी केवल १-५ रुपया मनीआर्डर या डाक टिकट भेजकर प्राप्त करें।

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त आयुर्वेद कृषि बिजली मोटर पशुपालन टेक्नीकल डेरीफार्म रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ो पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१६१

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली १ से प्रकाशित

सबसु प्रातपूवक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख प[त्र]

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ | फोन २७४७७१ | वैशाख कृष्णा २ संवत् २०२३ | ७ अप्रैल १९६६ | दयानन्दाब्द १४२ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९

गुरुकुल कांगड़ी और महाविद्यालय ज्वालापुर

आर्य जगत् के महान् ज्ञानतीर्थ

जिनके महोत्सव ८ से १५ अप्रैल तक हो रहे हैं

विदेशों में वैदिक धर्म प्रचारार्थ—

सा० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिष्ठित सदस्य

महात्मा आनन्दस्वामीजी सरस्वती

दिनांक ६ अप्रैल बुधवार प्रातः ६ बजे वायुयान द्वारा

थाईलैंड की राजधानी बैंकाक को प्रस्थान

वेद—आज्ञा

न्याय से राज्य

होता यक्षद्वनस्पतिँ शमितारँ शतक्रतु भीमं न मन्युँ राजानं व्याघ्रं नमसाश्विना भामँ सरस्वती भिषगिन्द्राय दुहऽइन्द्रियं पय सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज।

यजुर्वेद अ० २१। ३९

संस्कृत भावार्थः —

ये मनुष्या विद्यया वर्हिं शान्त्या विद्वांसः पुरुषार्थेन प्रज्ञां न्यायेन राज्यं च प्राप्यैश्वर्यं वर्द्धयन्ति त ऐहिकपारमार्थिके सुखे प्राप्नुवन्ति।

आर्य भाषा भावार्थः —

जो मनुष्य सीख विद्या से अग्नि शांति से विद्वान् पुरुषार्थ से बुद्धि और न्याय से राज्य को प्राप्त हो के ऐश्वर्य को बढ़ाते हैं वे इस जन्म और परजन्म के सुख को प्राप्त होते हैं।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

पढने-पढाने के वि[घ्न]

जो विद्या पढने पढाने के [विघ्न] हैं उनको छोड देवें। जैसे [कुसंग] अर्थात् दुष्ट विषयी जनों का [संग,] दुष्टव्यसन् जैसे मद्यादि [सेवन] और वेश्यागमनादि, बाल्या[वस्था] में विवाह अर्थात् पच्चीसवें [वर्ष] से पूर्व पुरुष और सोलहवें [वर्ष से] पूर्व स्त्री का विवाह हो [जाना,] पूर्ण ब्रह्मचर्य न होना, राजा, [माता] पिता और विद्वानों का [प्रेम] वेदादि शास्त्रों के प्रचार [में न] होना, अति भोजन, अति जाग[रण] करना, पढने-पढाने, परीक्षा [लेने] वा देने में आलस्य वा [कपट] करना, सर्वोपरि विद्या का [लाभ] न समझना, ब्रह्मचर्य से बुद्धि, पराक्रम, आरोग्य, रा[ज्य, ध]न की वृद्धि न मानना, ई[श्वर] का ध्यान छोड अन्य पाषाण [आदि] जड मूर्ति के दर्शन पूजन में [व्यर्थ] काल खोना, माता, पिता, अ[तिथि] और आचार्य, विद्वान् इ[नको] सत्य मूर्ति मानकर, सेवा सत्[संग] न करना, वर्णाश्रम के धर्म [को] छोड ऊर्ध्वपुण्ड्र, त्रिपुण्ड्र, ति[लक,] कण्ठी, मालाधारण, एकाद[शी,] त्रयोदशी आदि व्रत कर[ना,] काश्यादि तीर्थ और राम, कृ[ष्ण,] नारायण, शिव, भगवती, गणेश के नाम स्मरण से पाप दूर होने [का] विश्वास। महर्षि दया[नन्द]

बल-चर्चा

बल

बल वाव विज्ञानाद् भूय.। अपि ह शत विज्ञानवतामेको बलवानाकम्पयते । स यदा बली भवत्यथोत्थाता भवत्युत्तिष्ठन परिचरिता भवति, परिचरन्नुपसत्ता भवत्युपसीदन् द्रष्टा भवति, श्रोता भवति, मन्ता भवति, बोद्धा भवति, कर्ता भवति, विज्ञाता भवति ॥१॥

सनत्कुमार ने कहा—बल ही विज्ञान से अधिक है। निश्चय, सौ विज्ञान वालो को एक बलवान् कम्पा देता है। वह ज्ञानी जब बली होता है तभी काम करने को खड़ा होता हुआ सेवा करने लग जाता है, सेवा करता हुआ सत्सग मे बैठने वाला हो जाता है, सत्सग मे बैठता हुआ तत्त्व को देखने वाला हो जाता है। तदनन्तर श्रोता होता है मनन करने वाला होता है तत्त्वज्ञाता होता है, सत्कर्म-कर्ता होता है और आत्मज्ञाता हो जाता है। वास्तव मे बल आत्म-शक्ति का ही प्रकाश है।

बलेन वै पृथिवी तिष्ठति, बलेनान्तरिक्ष, बलेन द्यौ, बलेन पर्वता, बलेन देवमनुष्या., बलेन पशवश्च, वयासि, च, तृणवनस्पतय, श्वापदान्याकीटपतगपिपीलकम्। बलेन लाकस्तिष्ठति। बलमुपास्स्वेति ॥२॥

बल से ही पृथिवी ठहरी हुई है, बल से आकाश बल से द्युलोक बल मे पवत, बल स देव-मनुष्य बल स पशु बल से पक्षी बल स तृण वनस्पतिया, बल से हिंस्र जीव कीट पतग तथा चींटिया, ये सब अपने स्वभाव मे ठहरे हुए हैं। भगवान् का नियम और उसकी नियति ही परम बल है। उसी से सब की स्थिति है। बल से लोक अपनी मर्यादा मे स्थित है। हे नारद! तू बल की प्राप्ति कर। आत्मा को शक्तिमय जान।

स यो बल ब्रह्मे त्युपास्ते, यावद्-बलस्य गत तत्रास्य यथाकामचारो भवतिया बल ब्रह्मे त्युपास्ते ।अस्ति भगवो बलाद् भूय इति। बलाद्वाव भूयाऽस्ति। तन्मे भगवान ब्रवी त्विति ॥३॥

जो जन बल को महान् जानकर भगवान् की उपासना करता है जहा तक बल की गति है वहा तक उसका स्वच्छन्द सचार होताहै। शेष पूर्ववत्।

सदस्यों से

१— जिन महानुभावों ने अभी तक अपना वार्षिक चन्दा नहीं भेजा। कृपया तुरन्त भेजें।

२—महर्षि बोधाक का धन भेजने में शीघ्रता करें।

३—कुछ महानुभावों ने अभी तक "कल्याण मार्ग का पथिक" का धन नहीं भेजा, कृपया अब भेजने में देर न करें।

४ सप्ताहिक प्रतियों का धन प्रति मास भेजते रहना चाहिये।

५—हमारा लक्ष्य आर्यजनता को महत्वपूर्ण उत्तम और सस्ते से सस्ते विशेषाक देना है। इसकी सफलता आपके उत्साह और सहयोग पर ही निर्भर है।

७— महर्षि बोधांक और बलिदान अक तो आपने प्राप्त कर ही लिए हैं। अब आप 'दो महान् विशेषाक १ आर्यसमाज परिचयाक २ आर्य शिक्षा प्रसाराक प्राप्त करने के लिए उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कीजिये।

८—महर्षि बोधाक मे हमने २०० चित्र देने की घोषणा की थी किन्तु चित्र छपे २२८। हमे खेद है कि कुछ आवश्यक चित्र छपने से रह गये जो या तो हमे मिले नहीं, या हमे सूझे नही, या हमे आर्य जनता ने सुझाये नही।

—प्रबन्धक

आर्य ममाजों के मन्त्री महोदयों से

आवश्यक निवेदन

आय समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे प्रत्येक आर्य सदस्य सार्वदेशिक सभा के वेद प्रचार कोष मे प्रतिवर्ष कुछ न कुछ दान देते हैं। आपका यह सात्विक दान वेद प्रचार के विभिन्न मार्गों मे व्यय होता है।

सभा का वार्षिक व्यय हजारो मे नही, लाखो मे है यह सब आर्य जनता पर ही निर्भर है।

अत प्रत्येक आर्य सदस्य से धन सग्रह करके मनीआर्डर या चेक द्वारा भेजने की शीघ्रता करे।

रामगोपाल शालवाले
मन्त्री
सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली-१

'कल्याण मार्ग का पथिक' और 'महर्षि बोधांक'
तो आपने देख लिये
अब आगामी चार मास में तीन महान् विशेषाङ्क
आपकी भेंट करेंगे।

१ शिक्षा-प्रसार-अंक

आर्य जगत में लगभग ४०० हाई स्कूल, हायर सेकण्डरी स्कूल डिग्री कालेज तथा गुरुकुल ऐसे हैं जिन पर आर्य जगत् को गर्व है। भारत भर में एक कानपुर का डी० ए० वी० कालेज ही ऐसा है जिसमें पांच हजार विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। इन सब आर्य शिक्षा संस्थाओं पर लगभग —

चार करोड़ रुपया

प्रतिवर्ष व्यय होता है। आर्य जगत का यह महान् "शिक्षा कार्य" प्रकाश में लाने के लिए ही इस अंक की तैयारी कर रहे हैं।

इस अंक में लगभग ४०० शिक्षा-संस्थाओं का परिचय ४०० प्रिन्सिपलों के चित्रों सहित देंगे। बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई और ४०० चित्रों के इस अंक को केवल ६० पैसे में देंगे।

अब तक १०० कालेजों का परिचय —प्रिन्सिपलों के चित्र आ चुके हैं।

आप आज ही एक पत्र द्वारा बड़े से बड़ा अपना आर्डर भेजें।

२ आर्य समाज-परिचयांक

भारत और भारत से बाहर चार हजार से अधिक आर्य समाजें हैं। लाखों सदस्य हैं। करोड़ों रुपया व्यय करते हैं।

किन्तु सर्व साधारण को पता नहीं!
आर्यसमाज की सदस्य संख्या, आय-व्यय,
मन्त्री का चित्र और नाम इस अङ्क में देंगे।

यह विशेषांक भी विशेष ही होगा

हजारों मन्त्रियों के चित्रों सहित यह विशेषाक आर्य जगत् का दर्शनीय अक होगा।

इसका मूल्य केवल १)१० पैसा होगा

प्रत्येक आर्य समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा किसी भी आर्य सस्था के मन्त्री महोदय स्वसस्था का परिचय और चित्र भेजने मे शीघ्रता करें।

इस महान अंक पर २५-३० हजार रुपया व्यय होगा। सभा पर इतनी भारी धनराशि का भार न पड़े और सुगमता से अंक प्रकाशित हो जाय इसके लिए मन्त्री महोदयों से, कम से कम १० अंक लेने और उसके ११) अग्रिम भेजने की प्रार्थना की थी। हर्ष की बात है कि आर्यसमाजों के मन्त्री महानुभावों ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की और धन भेज रहे हैं।

आप जिस किसी भी आर्य सस्था के मन्त्री हैं—उसका परिचय अपना नाम और चित्र भेजने मे देर न करें।

३ एकादश-उपनिषद्-अंक

मूल सस्कृत और हिन्दी अनुवाद सहित केवल दो रुपये में, श्रावणी के वेद सप्ताह पर आपको भेंट करेंगे। अभी से आर्डर नोट करा दें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

मार्ग वक्त भवृषा

सम्पादकीय

भारत सरकार कब चेतेगी ?

भारत धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र है। परन्तु इस धर्म-निरपेक्षता का जितना दुरुपयोग ईसाई पादरियों ने किया है, उतना कदाचित् किसी अन्य मतावलम्बी ने नहीं किया। वैसे भी धर्म निरपेक्षता के आवरण में भारत सरकार की कुछ ऐसी प्रवृत्ति रही है कि उसकी दृष्टि में हिन्दुत्व का आग्रह जैसा साम्प्रदायिकता का द्योतक रहा वैसा इस्लाम और ईसाइयत का आग्रह नहीं। यह भी प्रकारान्तर से आत्म-अवमानना और हीन ग्रन्थि की निशानी है। ब्रिटिश दासता के काल में अंग्रेज महाप्रभुओं ने जान बूझकर दास पैदा करने वाली अपनी विशिष्ट शिक्षा-प्रणाली के द्वारा भारतीय जन-मानस में यही भावना ठूंस ठूंस कर भरी थी। वही मनोवृत्ति आज तक चली आ रही है।

हम 'स्व' का आदर करना भूल गए। स्वधर्म, स्वभाषा, स्व-संस्कृति, स्ववेश, स्वदेश—इन सब में 'स्व' का ही तो महत्व था। स्वराज्य-प्राप्ति में भी हमारा उद्देश्य इसी 'स्व' की पुनः स्थापना था। परन्तु जिन्होंने कभी 'स्व' की साधना नहीं की और सदा 'पर' की बुद्धि से ही चल कर 'पर प्रत्ययनेय बुद्धिता' का परिचय दिया उनके हाथों में पड़ कर स्वराज्य भी 'स्व' की परिपूर्ण आभा से मण्डित नहीं हो सका। स्वतन्त्रता के १९ वर्ष पश्चात् भी 'स्व' आज भी उतना ही निरादृत है जितना कि 'पर' आदृत है। इसकी सबसे बड़ी कसौटी यह है कि राष्ट्र के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने वाले स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर आज तक राष्ट्रीय नेताओं में स्थान प्राप्त नहीं कर सके, क्योंकि वे सदा हिन्दुत्व का आग्रह करते रहे, जब कि इस्लाम का आग्रह करने वाले और आजन्म कट्टर मुसलमान मौलाना अब्दुल कलाम आजाद राष्ट्रीय नेताओं की प्रथम श्रेणी में स्थान पा गए। ऐसा केवल इसी देश में सम्भव है, संसार के अन्य किसी देश में नहीं।

बात हम ईसाइयत की कह रहे थे। जब राजनीति में राष्ट्रीयता की बात कही जाती है तब उसी राष्ट्रीयता का राजनीति के अलावा अन्य क्षेत्रों में विस्तार क्यों नहीं किया जाता? राष्ट्रीयता के लिए हम एक बड़ी सामान्य कसौटी निर्धारित करते हैं। जिस राष्ट्रवादी का किसी भी प्रकार का प्रेरणा स्रोत राष्ट्र के बाहर न हो, वह राष्ट्रीय है। इस समय हम मतवादिता की दृष्टि से नहीं, विशुद्ध राष्ट्रीयता की दृष्टि से बात करते हैं। और इस सर्व-सामान्य कसौटी के आधार पर हम कह सकते हैं कि जिनके पीर पैगम्बर भारत से बाहर के हैं, जिनके धर्म ग्रन्थ अभारतीय भाषाओं में हैं, जिनके तीर्थ स्थान भारत से बाहर हैं, जिनके प्रेरणा स्रोत भारत भूमि के अलावा किसी अन्य देश की भूमि में विद्यमान हैं, वे भारतीय नहीं हैं, उनका भारतीयकरण किया जाना शेष है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि हम कल-कारखानों और बड़े-बड़े उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की बात तो करते हैं, परन्तु साम्प्रदायिकता मतान्धता की मूढ़ता से ग्रस्त दिमागों का राष्ट्रीयकरण नहीं करना चाहते। हम मूल को बिना सींचे केवल पल्लवों को सींचना चाहते हैं। मास्को से प्रेरणा लेने वाले या वाशिंगटन और लन्दन को अपना काबा-किबला समझने वाले अथवा पाकिस्तान को ही पाक (पवित्र) स्थान समझने वाले—इन सब के मन में समान रूप से अराष्ट्रीयता का ज्वार लहरा रहा है और राष्ट्रीय सरकार को सदा इनसे सावधान रहना होगा।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के तुरन्त पश्चात् जितने विदेशी ईसाई पादरी भारत में थे उन सब ने अपने बोरिया-बिस्तर बांध कर भारत से जाने की तैयारी कर ली। वे समझ गये थे कि अब स्वतन्त्र भारत में हमारी दाल नहीं गलेगी। परन्तु उन्हें क्या मालूम था कि भारत के नए शासक भी प्रच्छन्न अंग्रेज हैं—वे भी राष्ट्रीय 'स्व' से उतने ही दूर जितने इनके पूर्ववर्ती थे। ज्यों ही सरकार की धर्म-निरपेक्षता की घोषणा उन्होंने देखी और उन्हें असलियत पता लगी, वे फिर जम कर यहां बैठ गए। अपने विशिष्ट प्रभाव-क्षेत्र चुन-चुन कर उन्होंने अपने लिए शिकारगाह तैयार कर लिए और भारत सरकार ने अपनी दिवान्धता में उन स्थानों को ईसाइयों का अभयारण्य बन जाने दिया। इस दृष्टि से आधुनिक भारत के जितने नाज़ुक उपद्रव-स्थल हैं उन पर दृष्टि डालिए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि वे सब के सब विदेशी ईसाई पादरियों की करामात है।

चाहे गोआ को लीजिये, चाहे केरल को, चाहे नागालैण्ड को, चाहे मिजोलैण्ड को और चाहे फिलहाल प्रसुप्त झारखण्ड को—ये सबके सब स्थान विदेशी ईसाई पादरियों के प्रभाव क्षेत्र में हैं। निहित स्वार्थ वाले सम्बद्ध राष्ट्र भारत स्थित इन विदेशी पादरियों की किस किस रूपमें सहायता करते हैं, जनता के सामने यह पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। परन्तु डिब्बा-बन्द दूध के रूप में, मुफ्त दवाइयों के रूप मे, प्रचुर अनैतिक साहित्य के रूप में, छात्रवृत्तियों के रूप में, विशिष्ट अनुदानों के रूप में और बहुत बार सहायता के तौर पर प्राप्त अनाज के रूप में प्रकारान्तर से ईसाइयत को ही प्रोत्साहन दिया जाता है। केवल परोपकार के लिए सहायता करने वाले धर्मात्माओं का यह रूप नहीं है।

विदेशी ईसाई पादरियों के इस राष्ट्रघाती रूप को सबसे पहले पहचाना चीन ने। चीन की मुख्य भूमि पर अधिकार होते ही वहां की साम्यवादी सरकार ने सबसे पहला जो काम किया वह यह था कि समस्त विदेशी पादरियों को अपने देश से निर्वासित कर दिया। जो लुके-छिपे रह गए, अपने गुप्तचरों द्वारा उनका पता लगने पर उन्हें गुप्त रूप से ही मरवा दिया और उनके बारे में बाहर की दुनिया कुछ भी नहीं जान सकी। अब वही पग उठाया है बर्मा की सरकार ने। बर्मा की सरकार ने भी इस वर्ष के अन्त तक समस्त विदेशी ईसाई मिशनरियों को बर्मा से चले जाने का आदेश दिया है।

परन्तु भारत सरकार अभी तक सोई हुई है। देश के लिए भयकर किन्तु आसन्न इस खतरे की उग्रता को वह नहीं समझती। देश की सीमाओं पर विद्यमान वन्य जातियों में भारत-विद्रोह के बीज इन विदेशी पादरियों ने बड़े प्रयत्न से बोये हैं। कहीं वे बीज अंकुर के रूप में फूट चुके हैं, कहीं फूटने वाले हैं, और कहीं-कहीं बीज अंकुर से आगे बढ़ कर पौधे और वृक्ष का रूप धारण करते जा रहे हैं। भारत सरकार कब चेतेगी? पता नहीं, चेतेगी भी या नहीं? हम तो अपना शंख बजा ही रहे हैं।

हमारे विशेषांक

'सार्वदेशिक' साप्ताहिक के विशेषांकों की सर्वत्र धूम है। 'कल्याण मार्ग का पथिक' और 'महर्षि बोधांक' की इतनी मांग रही कि हमें उन्हें दुबारा छापने का निश्चय करना पड़ा। दुबारा छपी प्रतियां भी अब समाप्ति की ओर हैं। जनता के इस अभूतपूर्व उत्साह से हमारा हौसला भी इतना बुलन्द हो गया है कि ग. अंक में हमने आगामी चार मास में तीन और विशेषांकों की घोषणा कर दी है। विशेषांक होंगे—

१. शिक्षा-प्रसार अङ्क,
२. आर्यसमाज-परिचयांक,
३. एकादश उपनिषद् अंक

और ये तीनों विशेषांक अपने-अपने ढंग के अनोखे होंगे।

देश में शिक्षा के प्रसार में जितना योग आर्यसमाज का है उतना किसी और संस्था का नहीं। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि देश की वर्तमान शिक्षित पीढ़ी पर आर्यसमाज की विचारधारा का जितना प्रभाव है उससे कहीं अधिक प्रभाव भावी पीढ़ी पर होगा। यह आर्यसमाज का सबसे अधिक ठोस कार्य है। सैकड़ों स्कूल-कालेजों और गुरुकुलों में यह भावी पीढ़ी पल रही है। लगभग ४०० शिक्षा संस्थाओं और उनके प्रिन्सिपलों का सचित्र परिचय शिक्षा-प्रसार अंक में होगा।

आर्यसमाज परिचयांक में देश और विदेश की समस्त आर्यसमाजों का जिन की संख्या चार हजार से ऊपर है—विवरण तथा उनके वर्तमान मन्त्रियों का सचित्र परिचय होगा। इसे एक प्रकार से आर्यसमाज की 'डायरेक्टरी' कहा जा सकता है।

तीसरा विशेषांक है—एकादश उपनिषद् अंक। ऋषि ने जिन ग्यारह उपनिषदों को मान्यता दी है उनको मूल संस्कृत और हिन्दी अनुवाद सहित यह विशेषांक अध्यात्मप्रेमियों के लिए अनुपम भेंट होगी।

ये तीनों विशेषांक कितने संग्रहणीय हैं, यह इनके नाममात्र से स्पष्ट है। हम इन तीनों विशेषांकों की सामग्री जुटाने में लगे हुए हैं। यथावसर इनके प्रकाशन की तिथि घोषित की जाएगी।

आप अभी से 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक के अधिक से अधिक ग्राहक बनाने में जुट जाइए ताकि ये विशेषांक नियमित रूप से अनायास ही अधिक से अधिक हाथों में पहुंच सकें।

—०—

सामयिक-चर्चा

त्याग मूर्ति महात्मा हंसराज जी

(जिनका जन्म दिवस १९ अप्रैल को मनाया जायगा।)

महात्मा हंसराज जी आर्य समाज के एक महान् नेता और अखिल भारतीय प्रसिद्धि के शिक्षा शास्त्री थे। उनकी गणना आर्य समाज और पंजाब के निर्माताओं में की जाती है।

उन्होंने डी० ए० वी० स्कूल को पंजाब के ही नहीं अपितु देश के मूर्धन्य कालेज का रूप दिया जिससे हजारों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करके निकले जिनमें से अनेक उच्च सरकारी पदों पर आरूढ़ हुए। डी० ए० वी० कालेज लाहौर की टक्कर का शायद ही अन्य कोई कालेज रहा हो जिसकी शिक्षा का स्तर, विद्यार्थियों की संख्या और अनुशासन की भावना सर्वोपरि रह सकती हो। पंजाब और उसके बाहर डी० ए० वी० एवं आर्य स्कूलों तथा कालेजों का जो जाल बिछा उसका प्रमुखतम श्रेय महात्मा हंसराज जी को उनकी प्रबन्ध पटुता, कार्य कुशलता और कर्मठता को प्राप्त है।

उन्होंने डी० ए० वी० कालेज और आर्य समाज की निस्वार्थ सेवा का व्रत उस समय लिया जब कि वे सहज ही किसी गवर्नमेंट कालेज के प्रिंसिपल या उच्च सरकारी पदाधिकारी बन कर वैभव और अधिकार में खेलते परन्तु उन्होंने धन-वैभव पर लात मार-कर सेवा और त्याग का भव्य उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने अभाव और कष्टों का जीवन स्वेच्छा से अपनाया और उसका दृढ़ता और प्रसन्नता से निर्वाह किया। वे चुपचाप कार्य करने वाले महान् पुरुष थे। कीर्ति उनके पीछे २ चलती थी।

डी० ए० वी० आन्दोलन में व्याप्त मिशनरी भावना सर्वत्र ही प्रशंसा का विषय रही है जिस पर महात्मा हंसराज जी की छाप लगी हुई देख पड़ती है।

महात्मा हंसराज जी ने अन्य क्षेत्रों में भी आर्य समाज की प्रशंसनीय सेवा की। शुद्धि, दलितोद्धार, पीड़ितो की सेवा सहायता और रक्षा की दिशा में भी उन्होंने बड़ा भारी कार्य किया था।

वस्तुतः उनका जीवन हमारे लिए प्रकाश-स्तम्भ कार्य करता है जिससे न जाने कितनों के जीवन-दीप जलते और प्रकाशित होते रहेंगे।

रामगोपाल शालवाले
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

अन्न संकट का दोहन

विदेश में भारत के वर्तमान अन्न संकट का जो चित्र प्रस्तुत किया जा रहा है वह भारतीयों की सम्मान भावना को ठेस पहुंचाने वाला है। अमेरिका आदि के समाचार पत्रों में इस प्रकार के समाचार छप रहे हैं कि इस वर्ष १ करोड़ के लगभग भारतवासी भूख से मर जायंगे। अर्द्धनग्न एवं भूख से तड़पते हुए बच्चों के चित्र छापे जा रहे हैं। विदेशी पर्यटकों के समाचार पत्रों में इस आशय के विवरण छप रहे हैं कि भारत में लाखों व्यक्ति जीवन संघर्ष में तल्लीन हैं। इस प्रकार के समाचारों एवं विवरणों के प्रकाशन से भारत अनेक देशों की दया का पात्र बन गया प्रतीत होता है। संसार के विभिन्न भागों से विविध प्रकार की सहायता भेजे जाने में तत्परता दिखाई जा रही है। पोप महोदय ने संसार के लोगों से भारतवासियों की सहायता करने की अपील की है। इस देश के आर्थिक उद्धार के लिए युरोप के अनेक चर्चों में विशेष प्रार्थनाएं की जा रही है। आस्ट्रेलिया के स्कूलों के बालकों और फ्रांस तथा इटली के जनसाधारण ने हमारे लिए अन्न भेजा है। अमेरिका और ब्रिटेन जैसे समृद्ध देशों ने बड़े पैमाने पर सहायता की घोषणा की है। प्रतीत होता है कि भारत के अन्न संकट को जान में या अनजान में बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया जा रहा है। क्या हमारा अन्न संकट इतना निराशा-जनक है कि विदेशके स्कूलों के बच्चों और गृह-पत्नियों के दान को स्वीकार किया जाय? अवश्य विदेशी सरकारों की सहायता स्वीकार की जा सकती है। आत्म-सम्मान खोकर सहायता का स्वीकार किया जाना अवांछनीय है।

हमारे केन्द्रीय खाद्य मन्त्री की शिकायत है कि विदेश के कुछ व्यक्ति और समाचार पत्र भारत के संकट को बढ़ा चढ़ाकर दिखाकर भारत को बदनाम करने पर तुले हुए हैं। इस प्रकार के आन्दोलन के यत्न की निन्दा होनी ही चाहिए। परन्तु जो देश या व्यक्ति मानवता की प्रेरणा पर सहायता का हाथ बटा रहे हैं उनके इरादों पर सन्देह न करते हुए भी कहा जा सकता है कि वे अवांछनीय आन्दोलन से पथ-भ्रष्ट हो रहे हैं।

केन्द्रीय गृहमन्त्री महोदय ने विदेशी राजदूतों की बैठक में उन्हें प्रेरणा दी है कि यह आन्दोलन बन्द होना चाहिए। देश में अकाल पड़ने या भुखमरी की कोई आशंका नहीं है।

परन्तु भारत का वास्तविक चित्र यह है कि लाखों व्यक्तियों को दिन में भरपेट भोजन नहीं मिलता। वे भूख की ज्वाला से और पीड़ित रहते हैं। उत्पादन को बढ़ाने और न्याय पूर्ण वितरण से ही चित्र को बदला जा सकता है। जो विदेशी लोग हमारे देश के भूखों के लिए अन्न संग्रह के कार्य में संलग्न हैं उन्हें निश्चय यह जानकर दुःख होगा कि हमारे यहां पैसा देकर भी लोग अन्न के होते हुए भी उसे क्रय नहीं कर पाते और हमारे मन्त्रीगण, तथा अन्य जिम्मेवार व्यक्ति दावतों आदि के द्वारा अन्न का अपराध पूर्ण दुरुपयोग करते हैं।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

गो सदनों की स्थापना का व्रत लें

सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल शालवाले का जैनियों की विराट सभा में प्रस्ताव

स्वामी दयानन्द सरस्वती और महावीर स्वामी का भारत आज हिंसा में लिप्त है। वर्तमान् समय में अंग्रेजी काल की अपेक्षा मांसाहार की प्रवृत्ति बढ़ रही है और गोहत्या का कलंक ज्यों का त्यों बना हुआ है। महात्मा गांधी जी ने कहा था कि यदि उनके सन्मुख स्वतन्त्रता और गोरक्षा में से एक को चुनने के लिये कहा जाय तो वह गोरक्षा को ही प्रमुखता देंगे, परन्तु दुर्भाग्यवश भारत सरकार महात्मा गांधी का नाम लेती है, परन्तु उनके बतलाये मार्ग पर नहीं चलती है। यह शब्द आर्य समाज के नेता ला० रामगोपाल जी ने जैन मित्र मंडल दिल्ली द्वारा श्रममन्त्री माननीय जगजीवन राम जी की अध्यक्षता में कहे।

सभा में उपस्थित जैन-बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए श्री लाला जी ने कहा कि हिन्दु धर्म और जैन-धर्म में दार्शनिक मत-भेद के रहते हुए भी दोनों का आधार शास्त्र एक है। अहिंसा को दोनों ही धर्मावलम्बियों ने परम धर्म माना है। अत दोनों धर्मावलम्बी एक साथ मिलकर देश में बढ़ रहे हिंसा व मांसाहार की प्रवृत्ति को रोकने का प्रयत्न करें, और सर्वत्र 'गो-सदनों' का निर्माण करके गोरक्षा की दिशा में सक्रिय पग उठायें। आर्य समाज इस पुनीत कार्य में प्रत्येक से सहयोग करने को तैयार है।

श्री लाला जी के भाषण के पश्चात् श्रममन्त्री श्री जगजीवन राम जी ने हिंसा-अहिंसा के विवेचन करने का असफल प्रयत्न किया। अपने भाषण में आप इतने बौखलाये और आपने यहां तक कह डाला कि यह बात सरासर गलत है कि भारत में पहिले की अपेक्षा हिंसा और मांसाहार बढ़ रहा है मांसाहार आदिकाल से चला आ रहा है और ब्राह्मण तक मांसाहार करते थे और आज भी करते हैं। यहां ऋषि-मुनि गाय का मांस खाते थे। अहिंसा का मजाक उड़ाते हुये आपने कहा कि अहिंसा का पालन असम्भव है। खाते, पीते, उठते, बैठते मानव से हिंसा होना स्वाभाविक ही है।

श्री जगजीवनराम जी ने क्रोधावेश में आकर और किस सभा में बोल रहे हैं हिंसा-अहिंसा के विवेचन में अपनी असफलता को अनुभव करते हुये आप आर्य-समाज की आलोचना पर उतर आये। आपने कहा कि आर्य समाज में भी पार्टीबाजी है और जाति-पांति की भावना है। आपने चैलेन्ज देते हुये कहा कि आर्य समाज में एक भी व्यक्ति जाति-पांति तोड़कर अपने बच्चों के विवाह करने को तैयार नहीं। उनके चेलैन्ज को स्वीकार करते हुये लाला जी ने कहा कि मैंने अपने सभी बच्चों के विवाह जाति-पांति तोड़कर किये हैं। इस पर श्री जगजीवनराम जी चुप हो गये।

पंजाबी सूबा, हरियाना राज्य बनाने की मांग

पहाड़ी क्षेत्रों को हिमाचल प्रदेश में मिलाने की सिफारिश

संसदीय समिति की रिपोर्ट संसद में पेश

समाचार पत्रों की प्रतिक्रिया

पंजाबी सूबा सम्बन्धी संसद सदस्यों की समिति ने सिफारिश की है कि वर्तमान पंजाब राज्य का भाषा के आधार पर पुनर्गठन किया जाए, एक राज्य पंजाबी भाषी लोगों का बनाया जाए, दूसरा राज्य हिन्दी भाषी हरियाना क्षेत्र के लोगों का बनाया जाए और पंजाब के पहाड़ी जिले हिमाचल प्रदेश के साथ मिला दिए जाएं।

रिपोर्ट में जो आज लोक सभा में पेश की गई, कहा गया है कि जालन्धर होशियारपुर, लुधियाना, फिरोजपुर, अमृतसर, गुरदासपुर, पटियाला, भटिण्डा, कपूरथला तथा अम्बाला और संगरूर के कुछ हिस्से पंजाबी भाषी क्षेत्र में शामिल किए जाएं, हिसार, रोहतक, गुड़गांव, करनाल महेन्द्रगढ़ और अम्बाला व संगरूर की कुछ तहसीलें हरियाना प्रान्त में शामिल किए जाएं तथा शिमला, कांगड़ा और लाहौल व स्पिति हिमाचल राज्य में शामिल किए जाएं। अम्बाला जिले के रोपड़, मुरिण्डा और चंडीगढ़ निर्वाचन क्षेत्र (विधान सभा) तथा संगरूर जिले के जींद और नरवाना तहसील हरियाना प्रान्त में शामिल किए जाएं।

समिति ने सिफारिश की है कि पंजाबी भाषी राज्य, हरियाणा प्रान्त और पहाड़ी जिलों के हिमाचल राज्य में मिलाने के लिए सीमा निर्धारण करने के उद्देश्य से शीघ्र विशेषज्ञों की समिति बनाई जाए और उसमें जल्द से जल्द काम पूरा करने को कहा जाए।

२८ पृष्ठ की इस रिपोर्ट पर सदस्यों की २३ पृष्ठ की टिप्पणियां है। इसके अतिरिक्त ३५ पृष्ठ की सूचियां हैं और अन्त में एक नक्शे में विभिन्न राज्यों की सीमा बताई गई है।

लोक सभा के अध्यक्ष श्री हुकम सिंह, संसदीय समिति के अध्यक्ष हैं। समिति के सदस्य ये हैं। डा० एम० एस० अणे, श्री मनीराम बागड़ी, चौधरी ब्रह्मप्रकाश, श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी, श्री डी० एस० गुलसर्मा, श्री हेमराज, महाराणा कर्णीसिंह, श्री लहरीसिंह श्री सुरजीतसिंह मजीठिया, श्री केशवदेव मालवीय, श्री हीरेन मुखर्जी, श्री कृष्णचन्द्र पन्त, श्री रामु-राम, श्री अमरनाथ विद्यालंकार (लोक सभा से), श्री बंसीलाल, श्री उत्तमसिंह दुग्गल, श्री योगेन्द्रसिंह श्री डाह्याभाई पटेल, श्री सादिक अली, कुमारी शांता वशिष्ठ और श्री अटलबिहारी बाजपेयी (राज्य सभा) हैं।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी ही एक ऐसे सदस्य हैं जिन्होंने इस रिपोर्ट की सिफारिशों का पूर्णतः विरोध किया है।

चौधरी ब्रह्मप्रकाश और कुमारी शान्ता वशिष्ठ ने हरियाणा प्रान्त में राजस्थान और उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्र तथा दिल्ली को शामिल करने का सुझाव दिया है।

श्री बंसीलाल ने कहा है कि अमृतसर के गुरुद्वारा को अकाली नेतागण राजनीतिक काम में ला रहे हैं, गुरुद्वारा, मन्दिर, मस्जिद और गिरजाघरों को राजनीतिक काम में नहीं लाने देने के प्रश्न पर सरकार को गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

उन पंजाबी भाषी क्षेत्रों का जिसके लिए पंजाबी क्षेत्रीय कमेटी निर्धारित की गई थीं, पंजाबी सूबा बनाया जाए।

पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों को जो हिमाचल प्रदेश से लगे हुए हैं। हिमाचल प्रदेश में मिला दिया जाए।

शेष हिन्दी भाषी क्षेत्रों का हरियाना राज्य बना दिया जाए।

समिति ने यह भी सिफारिश की है कि तीनों हिस्सों के सीमा निर्धारण के लिए तत्काल ही विशेषज्ञों की एक समिति बना दी जाए जिससे यह अनुरोध किया जाए कि तीनों की सीमा का निर्धारण कर जल्दी अपनी सिफारिश दे।

समिति ने जिसके अध्यक्ष लोकसभा के अध्यक्ष श्री हुकमसिंह हैं अपनी रिपोर्ट में बताया है कि समिति ने इस बात की पूरी कोशिश की कि पंजाब के पुनर्गठन के सम्बन्ध में ऐसा हल निकाला जाए जो सबको स्वीकार हो लेकिन यह सम्भव नहीं हो सका और लोकतन्त्र में यह आवश्यक भी नहीं है।

इसलिए दूसरा सबसे अच्छा उपाय अपनाया गया।

समिति ने विभिन्न विचारधाराओं के लोगों से गवाहियां लीं तथा अपने पास आए ज्ञापनों का भी अध्ययन किया। इसके बाद पंजाब तथा देश के लोगों के हितों का ध्यान रखकर समिति ने यह निर्णय किया कि केवल भाषाके आधार पर ही वर्तमान पंजाब का पुनर्गठन किया जाए।

जनसंघी नेता श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने विमति टिप्पणी करते हुए पंजाब के पुनर्गठन की सिफारिशों का विरोध किया है। उन्होंने कहा है कि हर वर्ग की जनता मे एकता की कोशिश करते हुए उनकी राय लेकर पंजाब की समस्या का सर्वसम्मत हल ढूंढना चाहिए। श्री बाजपेयी ने इस बात पर दुःख प्रकट किया है कि संसदीय समिति ने इसके लिए प्रयत्न भी नहीं किया। क्षेत्रीय समिति के १९५७ के आदेश की प्रथम धारा में कहा गया है कि पंजाबी क्षेत्र में गुरदासपुर, अमृतसर, भटिंडा, जालंधर, होशियारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, कपूरथला और पटियाला जिले शामिल हैं। इसमें अम्बाला जिले और संगरूर जिले के रोपड़, मोरिंडा और चंडीगढ विधानसभाई क्षेत्र शामिल हैं। जींद और नरवाना तहसीलें इसमें शामिल नहीं है।

समिति ने इस प्रस्ताव पर अपने विचार व्यक्त नहीं किए है कि राजस्थान और उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों, दिल्ली तथा पंजाब के हरियाना क्षेत्र को मिलाकर विशाल हरियाना राज्य बनाया जाए। समिति ने कहा है कि ये मामले उसके कार्यक्षेत्र से नहीं आते। यह सुझाव दिया गया था कि पंजाब का हरियाना क्षेत्र दिल्ली में मिला दिया जाए क्योंकि पुराने दिल्ली प्रांत से उसे अलग किया गया था।

समिति ने इस सुझाव पर भी कोई सिफारिस नहीं की है। उसने यह बात सरकार पर छोड़ दी है कि वह बाद में विचार कर सकती है कि क्या नई दिल्ली नगर पालिका क्षेत्र को केन्द्रीय सरकार के प्रत्यक्ष प्रशासन में रखकर दिल्ली नगरनिगम क्षेत्र को हरियाना में मिलाया जाना सम्भव है।

समिति ने इस बात पर भी विचार नहीं किया कि राजस्थान के कुछ क्षेत्रों का पंजाबी भाषी राज्य या हरियाना राज्य में मिलाया जाए या नहीं। समिति ने कहा है कि इस पर विचार करना उसके कार्य-क्षेत्र के बाहर है।

इस समिति ने आशा प्रकट की है कि देश के विभिन्न राजनीतिक व अन्य तत्व तथा विशेषतः पंजाब की जनता प्रस्तावित सुझाव को सहयोगी भावना से स्वीकार करेगी और वर्तमान पंजाब राज्य की जनता की एकता व समृद्धि के लिए कार्यकर सकेगी।

आठ पत्र

इसमें ८ पत्र जुड़े हुए हैं। ये पत्र डा० एम० एस० अणे, श्री एस० एम० द्विवेदी श्री बंसीलाल, श्री कर्णीसिंह श्री मजीठिया, श्री बाजपेयी, ब्रह्मप्रकाश और कुमारी शान्ता वशिष्ठ और श्री डाह्याभाई पटेलहैं।

श्री बाजपेयी को छोड़कर समिति के अन्य सदस्य समिति की सिफारिशों से आमतौर पर सहमत है। श्री बाजपेयी ने अपनी विमति टिप्पणी में कहा है कि मैं समिति की रिपोर्ट से सहमत नहीं हो सकता जिसमें कहा गया है कि वह ऐसा सहयोगी हल ढूंढने में असफल रही है जिससे पंजाबी भाषा क्षेत्र और हिन्दी भाषी क्षेत्र दोनों की जनता सतुष्ट हो।

(दैनिक हिन्दुस्तान से)

पंजाबी सूबे की प्रतिक्रिया

नैपाल

पंजाब तथा अन्य स्थानों पर हुए उपद्रवों एवं भीड़ द्वारा हिंसा एवं बल प्रयोग की दुःखद घटनाओं से काठ मांडू (नैपाल) स्थित प्रत्येक भारतीय को दुःख हुआ है।

पंजाब काठमांडू से सैकड़ों मील दूर है परन्तु बलिष्ठ पंजाबियों से दूर नहीं है। काठ मांडू नगर में सैकड़ों पजाबी ट्रक ड्राइवर एवं भारतीय राजदूतावास तथा भारतीय सहायता मिशन में अनेक पंजाबी भाई हैं।

पंजाब का चित्र स्पष्ट नहीं है। यहां पंजाबियों से प्रेम भी किया जाता है और घृणा भी। उनके भांगड़ा नृत्य और उनकी स्पष्टवादिता से लोग प्रभावित हैं परन्तु उनकी दुर्बलताएं भी सर्वत्र विदित हैं जो भुलाई नहीं जा सकतीं। (शेष ६ पर)

पंजाबी सूबा

कांग्रेस कार्य समिति के प्रस्ताव के बाद जिसमें पंजाबी सूबा बनाना स्वीकार किया गया है। पंजाब में जो घटनाएँ घटीं उनका स्थानीय समाचार पत्रों ने काफी प्रचार किया। फ्रेंच न्यूज एजेन्सी ने (जिस पर स्थानीय समाचार वैदेशिक समाचारों के लिए निर्भर रहते हैं)। यह समाचार प्रसारित करने की शरारत की कि कांग्रेस के प्रस्ताव में एक 'सिख राज्य' बनाना स्वीकार कर लिया गया है। इसने यह भी कहा कि भारत की कुल जन सख्या में सिखों की आबादी ३ प्रतिशत है परन्तु भारतीय सैनिकों में उनका प्रतिशत ३० है।

राइजिंग 'नैपाल' नामक सरकारी समाचार पत्र के देहली स्थित सम्वाद-दाता ने लिखा कि पंजाब के बहु-संख्यक हिंदुओं के भय का आधार है। उन्हें भय है कि पंजाबी सूबा स्वतः 'सिख राज्य' बन जायगा।

सम्वाददाता ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय का स्मरण कराते हुए कहा है कि उस समय सिखों के एक वर्ग ने खुले तौर पर स्वतन्त्र सिख राज्य की माँग की थी।

'दैनिक नैपाल' ने इस विषय पर एक अशुद्ध और भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला सम्पादकीय लेख लिखा है परन्तु दूसरे सायंकालीन दैनिक 'नैपाली' ने भारत की कठिनाइयों के प्रति अधिक जानकारी और समझदारी का परिचय दिया है। इस पत्र ने एक सुसगत एव सयत अग्रलेख में सुझाव दिया है कि वह समय आगया है जबकि भारतीय नेताओं को संघीय प्रशासन के स्थान में एकात्मक प्रशासन के प्रस्ताव पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए। देश में पृथकतावादी प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने का यही एक मार्ग है।

काठ मांडू के पंजाबियों में साम्प्रदायिक लाइनों पर दुर्भाग्य पूर्ण प्रतिक्रिया देख पड़ी। मुझे एक भी ऐसा सिख नहीं मिला। चाहे वह बड़ा अफसर हो या कारखाने में काम करने वाला मैकनिक जो इस प्रस्ताव से खुश न हुआ हो। स्थानीय गुरु द्वारा के साप्ताहिक सत्संग में असाधारण भीड़ और चहल-पहल देख पड़ी।

परन्तु असिक्ख हिन्दू भयभीत देख पड़े। भारतीय कूटनीतिक सेवा का एक बड़ा अधिकारी अपने रोष को न छुपा सका और उसने प्रस्ताव को बड़ा दुर्भाग्य पूर्ण बताया। एक मात्र सन्तोष यहहै कि घर (पंजाब) के उपद्रवों से यहां के पंजाबी वर्ग के पारस्परिक सम्बन्ध नहीं बिगड़े हैं।

(ट्रिब्यून मार्च ३०-१९६६)

२०००) का सार्वदेशिक सभा को दान

देवव्रत धर्म्मेन्दु पुस्तक प्रकाशन निधि १२-१-१९६३ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत

१२—विशेष रूप से सभा प्रधान जी की अनुमति से श्रीयुत पं० देवव्रत जी धर्म्मेन्दु (कटरा भवानी प्रसाद कूंचा दक्खनीराय दरियागंज) दिल्ली की पुस्तकें प्रकाशनार्थ २०००) के दान की स्वीकृति का विषय प्रस्तुत होकर श्री धर्म्मेन्दु जी का २३-१२-६२ का पत्र पढ़ा गया। निश्चय हुआ कि यह दान स्वीकार किया जाय और इस राशि से दानी की इच्छानुसार देवव्रत धर्म्मेन्दु पुस्तक प्रकाशन निधि सभा मे स्थापित करके इस निधि से उनकी निम्नलिखित पुस्तकें छपाई जाती रहा करें और पुस्तकों पर इस निधि का उल्लेख कर दिया जाया करे।

(१) ऋषि दयानन्द वचनामृत (२) वैदिक सूक्ति सुधा (३) वेद संदेश।

रामगोपाल
मन्त्री सार्वदेशिक सभा, देहली,

पंजाबी सूबा असामयिक और राजनीतिक भूल होगी

पंजाबी सूबे के बारे में कांग्रेस कार्यकारिणी का निर्णय वे ठीक समय पर की गयी राजनीतिक भूल है। यों निर्णय का पूरा अभिप्राय अभी तक स्पष्ट नहीं हुआ है पर इतना स्पष्ट है कि निर्णय (क) दबाव में आकर (ख) गड़बड़ी के आतंक से किया है। ये दोनों आधार पहले ही सन्दिग्ध विवेकमयता को और भी सन्देहास्पद बना देते हैं और भविष्य के बारे में कोई आश्वासन नहीं देते।

पंजाबी सूबे की स्वीकृति पहली बार सन्दर्भ रहित (प्रशासनिक सुविधा रहित) भाषावार प्रान्त के सिद्धान्त को मान्यता दे रही है। पहली बार प्रशासनिक पुनः सगठन के व्यावहारिक उपाय के बदले सीधे-साधे विभाजन के सिद्धान्त को स्वीकृति दी गयी जान पड़ रही है। दूसरे कटुतर शब्दों में कहें कि अब पहले पहल कांग्रेस उस तर्क को प्रश्रय दे रही है जो भारत-पाकिस्तान के विभाजन का आधार बनाया गया था।

और इसीलिये भाषावार प्रशासनिक इकाई की तर्क संगत ऐतिहासिक सन्दर्भ के कारण, यहां राजनीतिक दुर्बलता के लिये एक ओट बन जाती है। और इस रूप में इसका अनुमोदन करना हमारे लिये असम्भव हो जाता है। लाचारी की दलील देकर भी हम उसे गले से नीचे नहीं उतार पाते।

—सम्पादकीय, दिनमान १८ मार्च ६६

पंजाब के विभाजन से भारत की एकता को खतरा
—ब्रिटिश पत्रों का मत

लन्दन १७ मार्च-पंजाबी सूबे के सम्बन्ध में कांग्रेस कार्य समिति के निर्णय से उत्पन्न अशान्त स्थिति पर विचार प्रकट करते हुए "टाइम्स" और "स्काट्समैन" दोनों पत्रों ने अपने अग्रलेखों में भावनापूर्ण टिप्पणियां लिखी है—

टाइम्स ने लिखा है कि-पंजाबी भाषी राज्य बनाने की स्वीकृति देते हुए भारत सरकार यह आशा नहीं कर सकती थी कि इस कदम से उत्पात नहीं होंगे।

इस बारे में श्री नेहरू का भी यह दृष्टिकोण था कि सिक्खों की पंजाबी सूबे की मांग भाषायी सूबे की अपेक्षा सिक्ख प्रभुत्व वाले सूबे की स्थापना की मांग है।

टाइम्स ने प्रश्न किया है कि कांग्रेस ने तब यह मांग क्यों मान ली जबकि उसे सन्त फतहसिंह द्वारा केवल एक नये उपवास का ही खतरा था, सन्त के साथ इस आन्दोलन में अब मास्टर तारासिंह द्वारा सचालित आन्दोलन की अपेक्षा अधिक जोश है। उदाहरण के लिये साम्यवादियों के साथ हुई सांठ-गांठ ने इस आन्दोलन को एक प्रगतिशील राजनीतिक रंग दे दिया है।

'टाइम्स' ने यह भी चेतावनी दी है कि सिक्ख आन्दोलन ने जैसे जोर पकड़ा था वैसे ही जनसंघ द्वारा एक हिन्दू आन्दोलन भी जोर पकड़ सकता है।

"स्काट्समैन" ने लिखा है—सिक्ख बाहुल्य वाले राज्य के विरुद्ध हिन्दुओं का सोचना काफी बड़े तर्क पर आधारित है क्योंकि चाहे सिक्ख अभी पृथकतावादी नहीं है लेकिन समय आने पर मास्टर तारासिंह के विचार वाले सिक्ख हावी हो सकते हैं।

इंगलैंड का आकर्षण

स्वप्न नहीं सत्यता है

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी

सृष्टि के आदि काल के समस्त धार्मिक सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थायें अथवा सरकार मानव समाज को सुखी बनाने का प्रयत्न करती चली आ रही है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये वर्तमान युग में इज्मों अर्थात् भिन्न २ राजनीतिक सिद्धान्तों की उत्पत्ति हो रही है। इन सिद्धान्तों में साम्यवाद सब से अग्रसर एवं प्रगति शील माना जाता है, परन्तु उसमें लोगों की व्यक्तिगत् स्वतन्त्रता या विचारों की स्वतन्त्रता को कोई स्थान नहीं है। पूंजीवादी प्रथा अन्याय, अत्याचार व शोषण के लिये प्रसिद्ध है। साम्यवाद ने इसी को समाप्त करने के लिये जन्म लिया है।

पूंजीवादी देश में भी मानव समाज को सुखी बनाया जा सकता है। या सब को रोटी, कपड़ा, मकान आदि की चिन्ता से मुक्त किया जा सकता है इस का मुझे इंगलैण्ड आने से पूर्व विश्वास नहीं था, परन्तु इंगलैण्ड आकर मेरी वह भ्रान्ति दूर होगई, और व्यक्ति की स्वतन्त्रताको स्थिर रखते हुये सुखी समाज की जो मैं कल्पना किया करता था वह मैंने इंगलैण्ड में आकर अपनी आंखों से देख लिया। यदि इंगलैण्ड की सरकार पूंजीवादी मनोवृत्ति पर भी किसी प्रकार काबू पा सके या मजदूरों के परिश्रम का अधिक से अधिक फल मजदूरों तक पहुंचाने की व्यवस्था कर सके तो फिर इंगलैंड सुख की दृष्टि से स्वर्ग बन सकता है।

यह स्वप्न नहीं सत्यता है इंगलैण्ड में अविवाहित लोगों से अधिक टैक्स लिया जाता है और विवाहितों से कम। विवाहित जीवन में भी जब स्त्री गर्भवती होती है तो सरकार उसके दूध और शक्तिदायक भोजन (टानिक) एक चौथाई मूल्य पर ही देने की व्यवस्था करती है ताकि माता के गर्भ में पलने वाली राष्ट्र की भावी आशा 'सन्तान' का भली प्रकार निर्माण हो सके। काम करने वाली स्त्रियों को बच्चा पैदा होने से तीन मास पूर्व से और ३ मास बाद तक सवेतन छुट्टी मिलने की व्यवस्था है। बच्चा पैदा होने के समय माता को स्वतन्त्रता है कि वह अपनी सुविधानुसार घर पर बच्चा जने व अस्पताल में सरकार इसकी निःशुल्क व्यवस्था करती है। इतना ही नहीं बच्चा पैदा होने के पश्चात् विशेष खान-पान और बच्चे के कपड़े आदि के लिये २१ पौण्ड अर्थात् लगभग ३५० रु० सरकार देती है।

बच्चा पैदा होने पर सरकार बच्चे को पांच वर्ष की आयु होने तक उसे फ्री दूध देती है और उसके लिये शक्ति दायक भोजन (टॉनिक) चौथाई दाम पर दिलाती है। पहले बच्चे के बाद जितने बच्चे पैदा होते हैं उन सब पर प्रति बच्चा दूध के अतिरिक्त साढ़े बारह शिलिंग अर्थात् लगभग आठ रुपये प्रति सप्ताह सहायतार्थ देती है। पांच वर्ष के पश्चात् बच्चों में उपस्थित स्त्री के बच्चों का खर्च दे सकती है।

इंगलैण्ड में लड़के को १६ वर्ष और लड़की को १४ वर्ष की आयु तक स्कूल में जाना ही पड़ता है। नाबालिग बच्चे को काम पर लगाना कानूनन मना है। बच्चों के सुख का सरकार इतना ध्यान रखती है कि यदि कोई यह शिकायत पुलिस में करदे कि अमुक माता-पिता अपने बच्चों को बहुत मारते हैं या उसकी उपेक्षा करते हैं तो पुलिस उन पर केस चला देती है।

स्कूल छोड़ने के पश्चात् प्रत्येक नवयुवक व नवयुवती को नौकरी देने का उत्तरदायित्व सरकार पर होता है। नवयुवक ही क्या प्रत्येक इंगलैण्ड निवासी का उत्तर दायित्व के पढ़ने की निःशुल्क व्यवस्था सरकार की ओर से है। स्कूल में बच्चों को निःशुल्क एक समय दूध व भोजन देने का भी प्रबन्ध है। प्राइमरी से लगाकर यूनीवर्सिटी तक की शिक्षा इंगलैण्ड में फ्री है।

मुझे यहां यह उल्लेख करते हुये हार्दिक खेद हो रहा है कि इंगलैण्ड में बसे अधिकांश पाकिस्तानी भारतीय परिवार फेमीली प्लानिंग के महत्व से बहुधा अनभिज्ञ या इसके विरोधी होते हैं। पाकिस्तानी मुसलमान तो इसे अपने धर्म के विरुद्ध समझते हैं। सो इंगलैण्ड में भी इनके बच्चों की संख्या आश्चर्य जनक है। पाकिस्तान या भारत में तो बच्चा पैदा होते समय माता-पिता को कुछ चिन्ता भी होती है परन्तु यहां तो माता-पिता मिठाइयां बांटते हैं। इतने तक ही यदि बात सीमित रहे तो कोई बात नहीं, परन्तु इससे आगे दुःखद बात यह है कि बहुत से पाकिस्तानी व भारतीय झूठे प्रमाण पत्र पेश करके सिद्ध करते हैं कि उनके बच्चे अमुक संख्या में पाकिस्तान या भारत में है। चूंकि मुसलमान को चार स्त्रियां रखने की अनुमति है तो पाकिस्तानी लोग यह सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं कि उनके बहुत बच्चे हैं। ऐसे प्रमाण हैं जहां एक पाकिस्तानी ने अपने २८ बच्चे सिद्ध किये। इन मांगों से तंग आकर सरकार ने कानून बना दिया है कि सरकार इंगलैण्ड सरकार पर होता है। यदि सरकार किसी नवयुवक या व्यक्ति को काम देने में असमर्थ हैं तो वह उसे भोजन, कपड़ा व अन्य खर्च के लिये कम से कम पांच पौण्ड अर्थात् लगभग १०० रु० प्रति सप्ताह घर बैठे देती है। जो लोग अस्वस्थ अपंग अथवा काम करने के लायक नहीं हैं उन्हें घर बैठे सरकार पैसा देती है।

प्रत्येक व्यक्ति को काम या सहायता देने तक ही सरकार की सहायता सीमित नहीं अपितु शिक्षा के समान इंगलैण्ड में इलाज भी निःशुल्क है। कोई भी बीमारी है और चाहे कितना भी खर्च इलाज पर होता हो वह सरकार वहन करती है। इलाज भी अच्छे से अच्छा करने और सरलता से प्राप्त होने की सरकारी व्यवस्था है। व्यक्ति फोन के द्वारा सरकारी डाक्टर को अपने घर बुला सकता है। प्रत्येक परिवार किसी न किसी डाक्टर के साथ बंधा होता है। शहर के प्रत्येक भाग में सरकारी डाक्टर होते हैं जिन्हें दवाइयों के अतिरिक्त प्रति मरीज निश्चित राशि सरकार देतीहै। इसलिए प्रत्येक डाक्टर अपने मरीजों का अच्छा इलाज करके और उनके साथ अच्छा व्यवहार करके अपने से अधिक से अधिक परिवारों को जोड़ने का प्रयत्न करता है ताकि उसकी आय अधिक से अधिक हो। साढ़े तीन हजार से अधिक व्यक्तियों की संख्या हो जाने पर सरकार डाक्टर को एक सहायक डाक्टर देती है जिसका वेतन सरकार देती है।

बूढ़ों के लिये सरकार ने विशेष सुविधायें दी हैं। इंगलैण्ड में बच्चे बड़े होने पर माता पिता से बहुधा अलग ही हो जाते हैं। माता-पिता की बुढ़ापे में सेवा करने की बात यहां के बच्चे नहीं जानते हैं। यहां ऐसे सौभाग्य शाली माता-पिता बिरले ही होंगे जिनके बच्चे बड़े होने पर उनके साथ रहते हैं या उनकी सेवा व सहायता करते हैं। हां पैसे या सम्पत्ति वाले माता-पिता के साथ पैसे के लोभ में कुछ बच्चे प्रेम का ड्रामा अवश्य खेलते रहते हैं। अतः बूढ़ों की दयनीय अवस्था का ध्यान करके सरकार ने इन्हें बड़ी सुविधायें प्रदान की है। पेंशन के अतिरिक्त राष्ट्रीय सहायता कोष से इन्हें प्रति सप्ताह सहायता मिलती है। बस या ट्रेन में इन्हें सर्वत्र निःशुल्क यात्रा करने की अनुमति है। सिनेमा घर में केवल छः पैनी अर्थात् तीन आने देकर ही टिकट मिल जाता है। बूढ़ों के समान ही विधवाओं को भी सरकार की ओर से विशेष सुविधायें दी जाती हैं।

रहने के लिये सस्ते मकानों की व्यवस्था भी सरकार की ओर से है। प्रत्येक जिला की सरकार (Country Council) अपने क्षेत्र में मकान बनवाकर थोड़े किराये पर लोगों को देती है। जो मकान खरीदना चाहें उन्हें भी इस प्रकार मकान देती है कि मकान के किराये से ही १५ या २० वर्ष में मकान अपना हो जाता है। इस सुविधा का लाभ उठाकर भारत व पाकिस्तान के लोगों ने बहुत बड़ी संख्या में मकान ले लिये हैं। अंग्रेज धन जमा करने का आदि नहीं। पैसा हाथ में आते ही खर्च कर डालता है। इसके विपरीत भारतीय पैसे हाथ में आजाने पर उसे छोड़ने के पक्षपाती नहीं है। इसलिए एक भारतीय इंगलैण्ड में आकर शीघ्र अपना मकान व बैंक बैलेंस बना लेता है। जो भारतीय ऐसा नहीं कर पाया उसे अभागा या अयोग्य ही कहा जासकता है। यहां पर पढ़ने वाले भारतीय विद्यार्थियों तक ने प्राइवेट मजदूरी से अपने मकान बना लिये हैं।

इस समस्त सुखद वर्णन को सुनकर बहुत से लोग आश्चर्य चकित होंगे और सोचेंगे कि सरकार ऐसी

(शेष १० पर)

सत्यार्थ प्रकाश में आदर्श शत्रु विजय

श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी०,
डी० बी० कालेज, गोरखपुर

इस प्रकार वेदों में युद्ध का समर्थन किया गया है। इसका मतलब यह नहीं कि वेद युद्ध की प्रेरणा देते हैं। वेद का सिद्धान्त तो विश्वबन्धुत्व है। वहां 'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे' मित्र की दृष्टि से सम्पूर्ण प्राणियों को देखें का आदेश है। परन्तु कुटिल जनों से परिपूरित इस विश्व में उनसे सज्जनों की रक्षा मानवता की स्थापना और मनुष्यत्व के विकास के लिए यह आवश्यक है कि उनको दण्ड दिया जाय। इसलिए सज्जनों के रक्षक राजाओं के लिए युद्ध नीति का समर्थन सत्यार्थप्रकाश में भी किया गया है।

विचार के विषय दो प्रकार के हो सकते हैं। एक तो राज्य की व्यवस्था सम्बन्धी और दूसरे युद्ध सम्बन्धी। राज्य की साधारण व्यवस्था सम्बन्धी मन्त्रणा में तो लोक सभा, विधान सभा आदि का विषय हो सकता है परन्तु युद्ध नीति विषयक वार्ता एकान्त में करनी चाहिए। आजकल भी हम देखते हैं जनता तथा राष्ट्रहित को समक्ष रख कर युद्ध विषयक चर्चायें संसद में नहीं की जाती। युद्ध नीति और दूसरे राष्ट्रों से सम्पर्क के विषय में स्वामी जी ने नीति का उल्लेख किया है और लिखा है:—

आसनं च चैव यानं च
सन्धिं विग्रहमेव च।
कार्यं वीक्ष्य प्रयुञ्जीत
द्वैधं संश्रयमेव च॥
सन्धिं तु द्विविधं विद्या-
द्राजा विग्रहमेव च।
उभे यानासने चैव
द्विविधः संश्रयः स्मृतः॥

अर्थात् सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव और संश्रय यह युद्ध नीतियां हैं। इनको यथा समय प्रयुक्त करे। सन्धि दो प्रकार की होती है। शत्रु से हृदय से मित्रता स्थापित करना और उनसे हृदयसे मित्रता नभी रहे तो भी वर्तमान् और भविष्यत् में करने के काम बराबर करता जाय अर्थात् व्यावहारिक दृष्टि से उससे मेल बनाये रखे। आज कल यह सन्धियां अनेक राष्ट्रों में चलती हैं।

विग्रह युद्ध को कहते हैं। यह विग्रह अपने लिए किया जा सकता है अथवा मित्र का अपराध करनेवाले शत्रु के साथ युद्ध किया जाता है।

यान गमन को कहते हैं। अकस्मात् कोई कार्य प्राप्त होने पर एकाकी व मित्र के साथ मिलकर शत्रु की ओर जाना यह यान कहलाता है।

आसन एक स्थान पर बैठे रहना है। अपनी युद्ध की तैयारी न होने से, युद्ध का उपयुक्त अवसर न होने से अथवा अपने मित्र के अनुरोध से अपने स्थान पर बैठे रहना आसन है।

द्वैधीभाव का मतलब है सेना को दो भागों में बांट कर युद्ध करना। पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहीम लोधी की सेनाओं को इसी विधि से परास्त किया था। झांसी की रानी को परास्त करने के लिए अंग्रेजों ने यह रीति अपनाई थी।

संश्रय का अर्थ है आश्रय लेना। शत्रु का शत्रु हमारा मित्र होता है। अतः हमारा शत्रु यदि किसी दूसरे शत्रु से युद्ध में फंसा हो उस समय शत्रु के शत्रु का साथ देना अथवा कार्य सिद्धि के लिए किसी बलवान् राजा की शरण लेना जिससे शत्रु से पीड़ित न हों संश्रय है।

इन छः नियमों का समय-समय पर प्रयोग करना चाहिए। स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश में यह भी लिखा है कि जब राजा शत्रुओं से युद्ध करने के लिए जाय तब अपने राज्य की रक्षा का सब प्रबन्ध और यात्रा की सामग्री यथाविधि करके सब सेना, यान, वाहन शस्त्रादि पूर्ण लेकर सर्वत्र दूतों अर्थात् समाचारों को देने वाले पुरुषों को गुप्त रूप से स्थापन करके शत्रुओं की ओर युद्ध करने जावे। यदि राज्य की रक्षा का प्रबन्ध नहीं होगा तो अर्काट के घेरे में चांदा साहब की जो दशा क्लाइव ने की वही हालत योद्धा राजा की हो सकती है। गुप्त समाचारों को देने वाले जासूसों की आज के युद्ध में कितनी आवश्यकता है यह इसी बात से ज्ञात हो सकती है कि आज कल योद्धा राष्ट्र शत्रु देश के नैतिक बल, योजनाओं तथा साहस को नष्ट करने के लिए पांचवां कालम अर्थात् अपने आदमियों को दूसरे राष्ट्र में रखते हैं। जो एक सेना से भी अधिक प्रभावशाली कार्य करते हैं।

युद्ध के प्रकारों का भी स्वामी दयानन्द ने उल्लेख किया है। युद्ध तीन मार्गों से किया जाने का विधान है स्थल (भूमि) में, दूसरा जल (समुद्र या नदियां) में तीसरा आकाश मार्गों को शुद्ध बनाकर। भूमि पर रथ, अश्व, हाथी, जल में नौका, जहाज इत्यादि से और आकाश में विमानादि यानों से जावे। पैदल, रथ, हाथी, घोड़े शस्त्र और अस्त्र खान पानादि सामग्री को यथावत् साथ ले बलयुक्त होकर किसी निमित्त को प्रसिद्ध करके शत्रु के नगर के समीप धीरे धीरे जावे। युद्ध के प्रकरण मे स्वामी दयानन्द ने शत्रु को परास्त करने के लिए अनेक प्रकार के व्यूहों का भी वर्णन किया है जैसे गुल्म-व्यूह अर्थात् दृढ़ स्तम्भों के तुल्य युद्ध-विद्या से सुशिक्षित धार्मिक स्थित होने और युद्ध करने में चतुर भय-रहित और जिनके मन में किसी प्रकार का विकार न हो उनको चारों ओर सेना के रखना चाहिए। दण्ड के समान सेमान सेना को चलाना दण्ड-व्यूह, शकट अर्थात् गाड़ी के समान सेना को चलाना शकट व्यूह। जैसे सूअर एक सूअर के पीछे दौड़ते जाते हैं और कभी-कभी सब मिलकर एक झुण्ड हो जाते हैं वराह व्यूह, जैसे मकर पानी में चलते हैं वैसे चलना मकर व्यूह। इसी प्रकार सूची व्यूह, नीलकण्ठ व्यूह पद्मव्यूह आदि हैं। इस प्रकरण में यह भी बताया है कि शतघ्नी (तोप) वा भुसुंडी (बन्दूक) छूट रही हो तो सर्प व्यूह अर्थात् सर्प के समान सोते-सोते चले जांय जब तोपों के पास पहुंचे तब उनको मार वा पकड़ तोपों का मुख शत्रु की ओर कर उन्हीं से शत्रु को मारे। इस प्रकार शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए अन्न, चारा, इन्धन, जल इत्यादि को नष्ट करने का उल्लेख है।

इस प्रकार युद्ध के समय कड़ाई का व्यवहार करने के बाद भी आगे उन्होंने प्रजाओं के साथ अच्छा व्यवहार करने की शिक्षा दी है। जैसे युद्ध के समय यह भी लिखा है 'जिस समय युद्ध होता हो उस समय लड़ने वालों को उत्साहित और हर्षित करे, जब युद्ध बन्द हो जाय तब जिससे शौर्य और युद्ध में उत्साह हो वैसे वक्तृत्वों से सब के चित्त को खान-पान अस्त्र-शस्त्र सहाय और औषधादि से प्रसन्न रखे। व्यूह के बिना न लड़ाई करे न करावे।' उन्होंने तो युद्ध के समय यहां तक कहा है, शत्रु के तालाब, नगर के प्रकोट और खाई को तोड़ फोड़ दे, रात्रि में उनको भय देवे और जीतने का उपाय करे।' इन सब व्यवहारों में कितनी मनोवैज्ञानिकता और वास्तविकता है यह युद्ध विशारद अवश्य समझेंगे।

युद्ध में विजय के बाद क्या करना है इस विषय में भी उन्होंने स्पष्ट लिखा है "जीत कर शत्रुओं के साथ प्रमाण अर्थात् प्रतिज्ञादि लिखा लेवे और जो उचित समझे तो उसी के वंशस्थ किसी धार्मिक पुरुष को राजा कर दे और उससे लिखा लेवे कि तुमको हमारी आज्ञा के अनुकूल अर्थात् जैसी धर्मयुक्त राजनीति है उसके अनुसार चल के न्याय से प्रजा का पालन करना होगा। ऐसे उपदेश करे और ऐसे पुरुष उनके पास रखे कि जिससे पुनः उपद्रव न हो। और जो हारा हुआ है उसका सत्कार प्रधान पुरुषों के साथ मिल कर रत्नादि उत्तम पदार्थों के दान से करे और ऐसा न करे कि जिससे उसका योग क्षेम भी न हो, जो उसको बन्दीगृह करे तो भी उसका सत्कार यथायोग्य रखे जिससे वह हारने के शोक से रहित होकर आनन्द में रहे। क्योंकि संसार में दूसरे का पदार्थ ग्रहण करना अप्रीति और देना प्रीति का कारण होता है। और विशेष करके समय पर उचित क्रिया करना और उस पराजित के मनोवाञ्छित पदार्थों का देना बहुत उत्तम है, और कभी उसको चिढ़ावे नहीं, न हंसी न ठट्ठा करे और न उसके सामने हमने तुमको पराजित किया है ऐसा भी न कहे, किन्तु आप हमारे भाई हैं इत्यादि मान्य प्रतिष्ठा सदा करे।"

इस प्रकार वेदों के आधार पर जो शत्रु दलन सत्यार्थ प्रकाश में उल्लिखित है वह कितना आदर्श और कितना उच्च है। क्या आज के विश्व को यह शिक्षा मार्ग दर्शन देगी?

—•—

हमारे आर्य कुमार कैसे हों ?

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु, आर्योपदेशक

आर्य (श्रेष्ठ सर्व गुण सम्पन्न) कुमार (कुत्सित भावनाओं को दूर भगाने में समर्थ, मानापमान का ध्यान छोड़ कर देश, जाति व धर्म की सेवा में सदा तत्पर रहने वाला ही आर्य कुमार कहला सकता है ऐसे ही कुमारों से राष्ट्र उन्नति के शिखर पर पहुंच सकता है।

उसकी दृष्टि सदा दूसरों के गुणों को ग्रहण करने में लगी रहती है। उसका जीवन सरल, सादा और दृढ़ (सम्प्रष्ट) और विचार उच्च होते हैं। उसकी योग्यता ज्ञान बढ़ा-चढ़ा किन्तु नम्रता प्रशंसनीय होती है।

आर्य कुमार किसी मान, परितोषिक अथवा स्वार्थ सिद्धि के भाव से नहीं केवल कर्तव्य बुद्धि से ही सदा "सेवा धर्म" में प्रवृत्त रहता है।

वह अपने से बड़ों का आदर, बराबर वालों से प्रेम तथा छोटों से दया उनकी रक्षा का व्यवहार करता है। दरिद्रोंकी सहायता करताहै चाहे वह किसी जाति या धर्म का हो, अपकार करने वाले के साथ भी उपकार बुद्धि रखता और पतितों के साथ सहानुभूति रखकर उन्हें उठाने का प्रयत्न करता है।

आर्य कुमार को कहां "हां" कहना और कहा "न" कहना इसका पूर्ण ज्ञान होता है। समय पड़ने पर क्रोध से, लोभ से तथा भय से, जिसकी बुद्धि सत्य कहने 'यथार्थ हां और न कहने से नहीं घबराती वह सभी क्षेत्रों में आगे ही आगे बढ़ता है।

वह वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञाता तथा उन पर (पक्का) दृढ़ होता है वह हिल मिल जिसने जैसे कहा वैसे मानने वाला नहीं होता। न ही दूसरों की प्रसन्नता पाने के लिए अपने सिद्धान्तों का त्याग करता है।

सुधार का उपासक किन्तु धैर्यशील, पर मत सहिष्णु, आर्य कुमार ही आर्य सिद्धान्तों का प्रचार कर सकता है वह संकुचित भावों को त्याग कर उदारता के भावों को अपनाता है। आर्य कुमार की बुद्धि, द्वन्द्व कलह, वाद् युद्ध, दल बन्दी पक्षपात, दुरभिमान आदि से कलुषित नहीं होती।

वह हृदय का कोमल, आत्मा का शुद्ध तपस्वी, सहनशील, परिश्रमी, मधुर वाक् तथा आज्ञाकारी होता है उसकी वाणी हित की, काम की किन्तु प्रिय जितनी बात चाहिए उतनी तुली सार्थक कहने वाला होता है।

आर्य कुमार प्रतिदिन सन्ध्या, यज्ञ, सद् ग्रन्थों का स्वाध्याय, सत्संग करने के साथ २ एकान्त में बैठकर स्व 'आत्म परीक्षण' करने वाला होता है। वह केवल नाम का आर्य कुमार न होकर आचरण वाला सच्चा आर्य कुमार होता है।

आर्य कुमार अपनी शक्ति, अपने ज्ञान, और क्रियात्मिक आचरण के अनुरूप ही बोलता है। उसका समय दूसरों के छिद्रान्वेषण में व्यर्थ नहीं जाता। वह "ब्रह्मचर्य व्रत" का यथा विधि और रीति पूर्णतया पालन करता हुआ रोग, शोक से बचा रहता है। स्कूल कालेजादि में पढ़तेहुए अपनी आर्य सभ्यता, संस्कृति को प्यार करते हुए अपनी वेशभूषा आचार, विचार का पूर्णतया ऐसे ढग से ध्यान रखता है जिससे "संयम" का जीवन व्यतीत करने में कठिनाई न हो।

आर्य कुमार नये युग के नये प्रकाश में अपने को पाश्चात्य अन्धकार पूर्ण संस्कारों से बचाता हुआ देश के लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है।

संसार में निर्बल का कोई स्थान नहीं अतः वह पूर्ण तथा सबल बनता है। सदैव "शक्ति" और "ज्ञान" के संचय में तत्पर रहता है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ आत्मा वास करती है।

स्मरण रहे विद्या, बुद्धि, बल शून्य लोगों ने संसार में कोई काम नहीं किया। उतावले, संकुचित भाव वाले और राग द्वेष में फंसे हुए लोग कभी उद्दिष्ट स्थल पर नहीं पहुंचे।

आर्य कुमार का यदि ईश्वर पर दृढ़ विश्वास है। उसे स्वावलम्बन का अभ्यास है। आत्म परीक्षण की टेव है तो परमेश्वर सदैव उसे बल देता रहेगा।

आर्य कुमार भौतिक सुखों में आसक्त होकर आत्मोन्नति के लक्ष्य को भूलने वाला नहीं होना चाहिये। न ही वह स्व प्रशंसा तथा परनिन्दा से प्रसन्न हो। उसे अपने मुंह अपनी बड़ाई गाने की टेव भी नहीं होनी चाहिये।

उसे अशिष्ट व्यवहार तथा अश्लील शब्द कभी प्रयोग नहीं करने चाहिये। न ही दूसरों की उन्नति व ऐश्वर्य देखकर उससे "ईर्षा" करनी चाहिये। अपनी अविनय, भूल या अपराध पर क्षमा याचना करने का उसका स्वभाव होना चाहिये।

आर्य कुमार "विलासी" नहीं होता, उसकी आवश्यकतायें बढ़ी हुई नहीं होती। विदेशी वस्तुओं की चमक दमक का वह दास नहीं होता।

उसे उच्च नैतिक आदर्शों के प्रति निष्ठावान होना है। आर्य कुमार अच्छी बात-चीत करना जानता है उसे दूसरों की अच्छी बातें सुनने का भी ढंग आता है। वह अपनी ही राम कहानी सुनाने का आदि नहीं होता। समय वा स्थान का ध्यान रखता है। हर मामलेमें वाद-विवाद नहीं करता।

आर्य कुमार "मादक द्रव्यों" को पतन का कारण मानकर उनसे बचता है जिस से चरित्र, बुद्धि, बल, स्वास्थ्य तथा मान मर्यादा की रक्षा कर सकता है।

आर्य कुमार "अन्ध विश्वासी" नहीं होते वे तर्क और युक्ति अनुसार अपने जीवन का निर्माण करते हैं। व्यर्थ के रीति-रिवाजों से वे ऊपर होते हैं।

आर्य कुमारों की "कथनी" और "करनी" में समानता होती है वह नैतिकता और सदाचार को अपनाता है। वह नाम और प्रतिष्ठा के भाव त्याग कर "कर्तव्य भावना" से सत्कर्म करता है।

आर्य कुमार संकीर्णता, साम्प्रदायिकता तथा कलह आदि से घृणा करता है और "सच्चा व्यापक धर्म" स्वीकार करता है। नम्रता, मिलनसारिता, मैत्री आदि गुणों को अपनाता है। व्यक्ति राष्ट्र और विश्व के नव निर्माण में प्रयत्नशील रहता है। संसार से अज्ञान, अन्याय और अभाव को मिटा कर "मानवता" की रक्षा करना अपने जीवन का उद्देश्य मानता है। क्रियात्मिक जीवन व्यतीत कर कर्मवीर बनता है।

आर्य कुमार सावधान व सतर्क रहता है वह अपनी शक्तिको पहचानता है और सदा अपने जीवन का निर्माण करता रहता है वह उत्तम २ गुणों को धारता दिव्य और महान् बनता है उसे भौतिक वाद, नास्तिकता और चरित्र हीनता से घृणा होती है वह अध्यात्मवादी, आस्तिक और सदाचारी बन यश व कीर्ति का अधिकारी बनता है।

माता, पिता और गुरुजनों का वह सदा पूर्ण आदर करता है। यही आर्य कुमारों की सच्ची पहचान है इस दृष्टि से आर्य कुमारों की संख्या जितनी बढ़ेगी उतना ही आर्य समाज का महत्त्व, वैदिक धर्म का महत्व बढ़ेगा ऐसे ही आर्य कुमारों से देश और जाति का उद्धार हो सकता है। ऐसे आर्य कुमार ही देश व समाज की भावी आशायें हैं। और महान् धन हैं। यही कुमार घर को देश को, तथा संसार को स्वर्ग समान बना सकते हैं।

आज हमारा देश स्वतन्त्र है। अतः हमारे कुमारों को उन्नति के सभी साधन सुलभ हैं। ईश्वर करें कि हमारे कुमार सभी प्रकार से अर्थात् शारीरिक मानसिक बौद्धिक, धार्मिक, चारित्रिक और आत्मिक रूप से अपनी अपनी शक्तियां विकसित कर उन्नति के शिखर पर पहुंच अपने जीवनों को सुखी व कीर्तिमान बना सकें और देश व समाज का यश भी बढ़ा सकें।

पूज्य देहलवी जी की सेवा में ५००) भेंट

आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले, उपप्रधान श्री डा० गिरधारी लाल जी ढल्ला तथा श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी आदि श्रद्धेय श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी के ८६ वें वर्ष प्रवेश के उपलक्ष में पंडित जी के निवास स्थान पर हापुड़ गए। श्री पंडित जी के स्वास्थ्य की मंगलकामना करते हुए उनकी सेवा में आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली की ओर से ५००) की थैली भेंट की।

हैदराबाद में रजाकारी तत्व सिर उठा रहा है

उर्दू की आड़ में इस्लामी राज्य की मांग

हैदराबाद के साम्प्रदायिक मुसलमानों तथा रजाकार काल को मजलिस इत्तहादुल मुसलमान ने एक भयानक कुचक्र चलाया है। इस समय उन्होंने उर्दू की आड़ ले रखी है। गत दो वर्षों से आन्ध्र के उर्दू पत्रों ने इस बात का एक बवण्डर खड़ा कर दिया है कि उर्दू को भी तेलुगु के समान राजभाषा स्वीकार कर लिया जाए। देश की जो भी समस्या हो इन उर्दू पोषकों का उसकी ओर कोई ध्यान नहीं। उन्हें केवल उर्दू का ढोल पीटने की ही धुन है। उधर उर्दू माध्यम वाले स्कूलों में छात्रों के न मिलने पर उनके वर्ग बन्द होते जा रहे हैं किन्तु उर्दू पत्रों में उर्दू माध्यम के स्कूलों और समानान्तर उर्दू वर्गों के खोलने की मांग जारी है, ताकि उर्दू पढ़ाने के नाम पर कुछ लोगों को रोजी मिल जाए।

क्या उर्दू अल्प संख्यकों की भाषा है ?

प्रश्न यह है कि किसी भी प्रदेश के अल्पसंख्यकों की मर्यादा क्या है ? क्या प्रदेश की सम्पूर्ण जनसंख्या का २।४।५ प्रतिशत समूह भी अल्पसंख्यकों की परिभाषा में आता है? और क्या उनकी भाषा को क्षेत्रीय भाषा का दर्जा दिया जा सकता है ? हैदराबाद नगर और तेलंगाने क्षेत्र के कुछ नगरों को छोड़ दें तो आन्ध्र में उर्दू भाषा, जो प्रायः सभी मुसलमान है बहुत कम हैं। सम्पूर्ण आन्ध्र प्रदेश की जन संख्या ३ करोड़ ५७ लाख से अधिक है। इनमें उर्दू भाषी ५।६ प्रतिशत भी नहीं है। क्या ५।६ प्रतिशत की भाषा उर्दू को आन्ध्र प्रदेश की मूल भाषा तेलुगु के समान राजभाषा का पद दिया जाएगा ?

वोटों का चक्कर

इस समय आन्ध्र प्रदेश विधान सभा के सामने तेलुगु को राजभाषा बनाने का बिल विचाराधीन है। बिल सिलेक्ट कमेटी के सुपुर्द किया गया है। आन्ध्र के मुख्य मन्त्री पर सभी मुस्लिम (कांग्रेसी, साम्यवादी श्री मखदूम मोहियोदीन सहित) विधायक इस बात का दबाव डाल रहे हैं कि बिल में उर्दू को तेलुगु के समान दर्जा दिया जाए। आन्ध्र के कुछ ऐसे विधायक जो तेलंगाना क्षेत्र से बाहर के हैं और जो साम्प्रदायिक और रजाकारी मुस्लिम मनोवृत्ति से सर्वथा अपरिचित हैं।

मुख्य मंत्री श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी और विधि मन्त्री श्री पी० वी० नरसिंहाराव पर निरन्तर दबाव डाल रहे हैं कि मुस्लिम वोटों की खातिर उर्दू को तेलुगु के समान राजभाषा स्वीकार किया जाए। हैदराबाद नगर में मुस्लिम वोट की समस्या है। इसी नगर के असेम्बली के २।३ सीटों की खातिर सदा के लिए उर्दू का फन्दा गले में डालने की तैयारी हो रही है। साम्प्रदायिक मुसलमानों की पीठ ठोकता है। इसके पीछे मुसलमानों की हिमायत प्राप्त करना उद्देश्य है।

हिन्दी का भी विरोध

एक आश्चर्य की बात कि प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से उर्दू के हिमायती हिन्दी के विकास को सहन नहीं करते। जहां भी संभव हो हिन्दी की उपेक्षा में एड़ी चोटी का जोर लगा देते हैं। आन्ध्र के कुछ विधायक हिन्दी के बड़े विरोधी हैं। उनमें से कुछ उर्दू की इसलिए हिमायत कर रहे हैं कि उर्दू के कारण हिन्दी का प्रभाव कम होगा। आन्ध्र में आज हाई स्कूल का प्रत्येक छात्र किसी न किसी रूप में हिन्दी

स्थान-स्थान पर सभाओं में देशद्रोहात्मक भाषणों का सिलसिला

हुकूमत मुसलमानों के वोटों के चक्कर में किंकर्तव्यविमूढ़

श्री जगनलाल जी विजयवर्गी

उर्दू की आड़ में देशद्रोहिता

मेलादुलनबी के जलसों में, उर्दू की मांग के लिए आमन्त्रित सभाओं में, उर्दू लेखकों और कवियों के जन्म अथवा मृत्यु दिवस के जलसों में, ऐसी-ऐसी भयानक और देश द्रोहात्मक तकरीरें हो रही हैं कि जिनमें भारतीय विधान को चुनौती दी जा रही है, उसको गैर इस्लामी कहकर उसके प्रति द्वेष और घृणा की भावना फैलाई जा रही है। मजलिस इत्तेहादुल मुसलमीन के तुरन्त हुए उत्सव में तो देशद्रोहिता का नग्न प्रदर्शन हुआ है। ऐसे व्यक्तियोंने भी विषैले भाषण दिये हैं जिन पर न्यायालय ने जबान बन्दी की पाबन्दी लगा दी है। हुकूमत इसलिए विवश है कि—

(१) आगामी चुनावों में उसे मुस्लिम वोट चाहिए, (२) आन्ध्र के गृह मन्त्री मुसलमान हैं और पुलीस और सी० आइ० डी० का विभाग मुसलमानों से पटा पड़ा है और (३) कांग्रेस की गुटबाजी इतनी भयानक है कि यदि एक ऐसे देशद्रोहियों के विरुद्ध कोई सख्त कदम उठाता है तो दूसरा मन्त्री उन साम्प्र-

अनिवार्य रूप से पढ़ता है। उर्दू भी तेलुगु के साथ-साथ राजभाषा बन जाए तो उर्दू की शिक्षा अनिवार्य हो जाएगी और हिन्दी का स्थान विचलित होगा। हैदराबाद के विचारशील और दूरदर्शी लोग उर्दू के इस आन्दोलन को अत्यन्त चिन्ता की दृष्टि से देख रहे हैं।

मुसलमानों की ईमानदारी का इनाम उर्दू

एक विधायक ने जो, विरोध-पक्ष से सम्बन्ध है विधान सभा में भाषण देते हुए, कहा कि पाकिस्तान से संघर्ष के दिनों में मुसलमानों ने जो सेवाएं की हैं उनको दृष्टि में रखते हुए उर्दू की मांग को स्वीकार किया जाए।

पेज ७ का शेष

सुन्दर व्यवस्था करने में कैसे समर्थ होती है ? या इतना धन वह कहां से प्राप्त करती है ? तो यहां इतना ही कहना पर्याप्त है कि सरकार केवल श्रेय ले रही है। जनता अपने ही पैसे को भिन्न २ सहायता के रूप में प्राप्त कर रही है। इंगलैण्ड में प्रत्येक काम करने वाले व्यक्ति को नेशनल इंश्योरेंस और नेशनल हैल्थ सर्विस का टैक्स देना ही पड़ता है। टैक्स काट कर ही सब को वेतन मिलता है। सरकार के लिये सुविधा यही है कि यहां की अधिकांश जनता नौकर पेशा है।

इंगलैण्ड मे सब से बड़ी सुविधा यह है कि यहां काम करने वाले कम हैं और नौकरियां अधिक हैं। भारत की तरह यहां बेकारी नहीं अपितु काम करने वालो की कमी है। यहां मालिक नहीं अपितु मजदूर चुनाव करता है कि उसे कहां अधिक सुविधा व पैसा मिलेगा।

इस प्रकार इंगलैण्ड में लोगों को रोटी, कपड़ा मकान दवा व शिक्षा जैसी अनिवार्य वस्तुओं की चिन्ता नहीं, और नाहीं इन्हें चिन्ता कल की है। इन का कल अर्थात् भविष्य हर हालत में सुरक्षित है। इसी लिये इंगलैण्ड का व्यक्ति पैसा जमा करने का आदि नहीं है क्योंकि वह समझता है कि हर हालत में उसको खाने को मिलेगा। भारत में धनी से धनी व्यक्ति का भविष्य भी हर समय अन्धकार में रहता है और मनुष्य पैसा पास में रहते हुये भी अपने खाने-पीने पर अधिक व्यय न करके भविष्य के लिये जमा ही करता रहता है।

समस्त सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने के पश्चात् इंगलैण्ड के लोग बहुत सुखी होंगे ? उन्हें किसी प्रकार की चिन्ता नहीं होगी ? यह प्रश्न उठने स्वाभाविक है। इन प्रश्नों का उत्तर यही है कि वहां दुःख और चिन्ता दोनों ही सर्वत्र विराजमान हैं। चिन्ता इतनी है कि वहां भी सरकार को पागल खाने बनाने पड़े हैं। चिन्ता व दुःख यहां के लोगों के चेहरे पर प्रत्यक्ष दिखाई देती है। इनकी चिन्ता व दुःख के कारण विचित्र ही हैं। इन कारणों पर किसी अन्य लेख में प्रकाश डाला जायगा।

शिक्षा के अग्रदूत—

महात्मा हंसराज

श्री दयानन्द आर्य, एम० ए० रिसर्च स्कालर,
साधु आश्रम, होशियारपुर

महात्मा हंसराज जी का जन्म १९ अप्रैल १८६४ ई० में पजाब प्रांत जिला होशियारपुर के बजवाड़ा ग्राम में हुआ। उनके पिता लाला चूनीलाल मध्यवर्ग से सम्बन्ध रखते थे, आय इतनी कम थी कि परिवार का निर्वाह बड़ी कठिनता से होता था। महात्मा जी की प्रारम्भिक शिक्षा तो अपने गांव के विद्यालय में हुई। छः वर्ष की अवस्था में इनकी सगाई कर दी गई। दुर्भाग्यवश १२ वर्ष की आयु में पिता जी का स्वर्गवास हो गया। सारे परिवार को विपत्ति झेलनी पड़ी। हंसराज जब हाई स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने जाते तो मार्ग में पड़ने वाला चो जो ग्रीष्म-काल में तप जाता था। हंसराज नंगे पांव इसे पार किया करते। परिवार की निर्धनता में वह तपस्वी पला।

१८७७ ई० में अपने बड़े भाई मुल्कराज के साथ वे कालेज-शिक्षा के लिए लाहौर चले गए। वहां यूनिवर्सिटी कालेज में प्रवेश ले लिया। उनके सहपाठियों में ला० लाजपतराय जी के भाषणों में अग्नि बरसती थी। जब कि हंसराज जी का शांत भाषण जनता के लिए शांतिप्रियता का संदेश देता था। १८७७ ई० में आर्यसमाज के संस्थापक युग-प्रवर्तक ऋषि दयानन्द लाहौर में आए। उसी वर्ष वहां आर्यसमाज की नींव रखी गई। लाला साईं दास, जो चीफ कोर्ट के अनुवादक थे, आर्यसमाज के मन्त्री बने। वे नवयुवकों को आर्यसमाज में लाया करते थे। उनके सम्पर्क एवं प्रेरणा से लाला लाजपतराय, हंसराज व गुरुदत्त का झुकाव आर्यसमाज की ओर हो गया। २१ वर्ष की आयु में हंसराज जी की शिक्षा का चरण समाप्त हुआ। विद्यार्थी-काल में इन युवकों ने एक अर्ध-मासिक पत्रिका प्रकाशित करनी आरम्भ कर दी थी। आर्यसमाज की स्थिति आरम्भ में आकांक्षाएं बहुत ऊंची व साधन सीमित वाली थी जिसमें महात्मा जी का योगदान अमर है।

महात्मा हंसराज की पैतृक सम्पत्ति शून्य के निकट थी, उनकी शिक्षा का भार बड़े भाई ने उठाया था। किन्तु जब महर्षि दयानन्द के सच्चे स्मारक के रूप में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल की स्थापना की गई तो महात्मा हंसराज ने अपना जीवन इस विद्यालय के अर्पण कर दिया। जब १८८९ ई० में स्कूल को कालेज के रूप में परिणत किया तो इसका प्रिंसिपल कौन बने, यह जटिल समस्या थी। लाला लालचन्द जी चाहते थे कि कालेज के प्रिंसिपल कालेज के आदर्शों की प्रतिमा हों। अतः महात्मा हंसराज जी को यह प्रतिष्ठित पद योग्य समझ कर सौंपा गया।

महात्मा हंसराज जी ने अपनी सूक्ष्म ईक्षिका से देखा था कि ईसाई अपने स्थापित विद्यालयों में अपनी संस्कृति का केवल प्रसार ही नहीं करते प्रत्युत भारतीय संस्कृति के बारे में विद्वेष-घृणा की भावना भर रहे हैं। अतः इस दृष्टि को सामने रख कर महात्मा जी ने डी० ए० वी० कालेज में शिक्षा का भारतीयकरण कर दिया जिससे भारतीय संस्कृति के आधारभूत ग्रन्थ वेद-शास्त्रों का अध्ययन होने लगा। उन्होंने संस्था के नाम में दयानन्द का नाम रखा ताकि ऋषि दयानन्द का संदेश सदा सम्मुख बना रहे। वे स्वयं छात्रों को धर्म-शिक्षा पढ़ाते थे ताकि विद्यार्थी अपने देश की प्राचीनता के गौरव को समझें। उनकी मान्यता थी कि मानव को सुसंस्कृत रूप देने का श्रेय सुशिक्षा को है, यह वह निर्माण-शाला है जिसमें भावी राष्ट्र कर्णधार बनते हैं। उनका जीवन मुख्य रूप से शिक्षा-क्षेत्र में गुजरा।

प्रारम्भ में डी ए. वी. कालेज के सर्वप्रथम पाठ्य-क्रम में अष्टाध्यायी, महाभाष्यादि लिखे हुए थे इससे उनकी संस्कृत-निष्ठा का सारगर्भित परिचय मिलता है। शिक्षा के कार्यों से उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है।

महात्मा हंसराजजी की महत्ता का परिगणन करने के लिए हमें उन कठिनाइयों को देखना होगा जिनको चीरते हुए उन्होंने सरकारी सहायता लिए बिना ही महाविद्यालय का सुचारु रूप से संचालन किया। कालेज की स्थापना के बाद लाहौर में इस्लामिया, दयालसिंह व सनातन-धर्म कालेज खुले। अमृतसर में खालसा कालेज स्थापित किया गया। सनातन-धर्म कालेज के उद्घाटन-समारोह में जम्मू-कश्मीर के महाराजा प्रतापसिंह ने भाषण करते हुए हंसराज जी को देख कर कहा था, हंसराज जी, उन्हें भी एक हंसराज ला दीजिए।

वास्तव में भारतीय शिक्षा-व्यवस्था में महात्मा हंसराजजी ने एक नया मोड़ दिया, उसका रुख पश्चिम की ओर से पूर्व को कर दिया। इसके साथ-साथ दयानन्द कालेज में विभिन्न ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था हुई, विद्यार्थी आश्रमों मे रह कर स्वजीवन को नियमपूर्वक विधि से व्यतीत करने लगे। डी.ए वी. कालेज की स्थापना का लक्ष्य केवल पाश्चात्य विज्ञान तथा अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य की शिक्षा देना ही नहीं था, प्रत्युत प्राचीन वैदिक व संस्कृत का प्रचार भी था।

महात्मा जी के जीवन की एक सबसे बड़ी विशेषता थी कि एक उच्च शिक्षा-संस्था के प्रिंसिपल होते हुए भी प्राचीन ऋषि-मुनियों की भांति तपस्या की मौन मूर्ति थे। वे कहा करते थे कि शिक्षा-संस्थाएं तात्विक रूप से शिक्षा-संस्थाएं बनी रहें। राजनीति के संघर्षों में विद्यार्थी न उलझें। उन्हें उस समय राजनीति में प्रवेश करने की अनेकों प्रेरणाएं दी गईं किन्तु उनका मत था कि मैंने एक बार निर्णय कर लिया सो कर लिया। यह सौभाग्य की बात है कि कृष्णसिंह के पुत्र अजीतसिंह व उनके पुत्र भगत सिंह ने भारत की सर्व प्रथम शिक्षा-संस्था से, जिसके निर्माता महात्मा हंसराज थे, शिक्षा प्राप्त करके राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। निस्सन्देह भारतीय इतिहास के शिक्षा-क्षेत्र में का महात्मा हंसराज योगदान सदैव अग्रणी रहेगा।

महर्षि बोधांक

महाशिवरात्रि के पवित्र अवसर पर आपका प्रकाशित 'महर्षि बोधांक' मिला इनके अन्तर्गत संकलित आर्य पुण्य आत्माओं की चित्रावली को देखते समय अपने को गौरवके अथाह सागर में डूबा हुआ पाया कि इस तरह के प्रयासने वास्तवमें आर्य संस्कृति की मर्यादा को ताजा कर दिया है।

मैं हृदय से "सार्वदेशिक" की शुभ कामना चाहता हूं और इसके प्रचार और प्रसार में १ घण्टा समय प्रति सप्ताह देने की प्रतिज्ञा करता हूं। दामोदरराय वर्मा

आर्या-वर्त्त

[कवि कस्तूरचन्द 'धनसार' आ० स०, पीपाड़ शहर]

(१)

समस्त ही भू-भाग्य पर यहां, आर्यों के निज राज थे !
बल,वेद,विद्या-द्रव्य से सुसज्जित सबविधि साज थे !!
गंग-सिन्धु से हिंगलाज तक रामेश्वर के थे यहां !
अमरनाथ से कन्या कुमारी तक स्वराज थे यहां !!

(२)

आर्यों की है मूल भाषा, संस्कृति-सुरवानी है !
सृष्टिकी आदि में रची सब, विद्याकी महारानी है !!
सब विश्व भाषा की जननी वेद वाणी है यही !
अति मृदु, रसयुत सर्वगुणमय, लोक-मानी है यही !!

(३)

अनेक भाषा बोलते हैं, मिटती रहती बदल के !
किन्तु न भाषा बदलती शुद्ध-रूप रहती अचल वे !!
वे राज्य-भाषा, देव-भाषा, वेद-भाषा भासती !
है शुद्ध अति निरदोष प्यारी, विश्व को प्रकाशती !!

(४)

सत्य नीति-रीति सर्वविधियुत, जानते यजमान थे !
बोलते ऋचाएं शुद्ध-मन्त्र-ओम् जपते महान् थे !!
सब वेदपाठी, इष्ट ईश्वर, मानते थे सब यहां !
वर योगि विद्या योग की वह, जानते थे सब यहां !!

आर्य नेताओं की ललकार

यदि सरकार ने पंजाबी सूबा सम्बन्धी अपने वचन पूरे न किये तो पुनः प्रबल आन्दोलन छिड़ जायेगा।

श्री ओम्प्रकाश जी, मन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

नई दिल्ली २७ मार्च।

विश्व को वैदिक धर्म की सच्ची मानवता का पाठ पढ़ाने वाले और भारत के राष्ट्रीय जीवन में सर्वतोमुखी क्रान्ति मचाने वाले आर्यसमाज का ९१ वां स्थापनादिवस आज सायं समारोह पूर्वक अजमलखां पार्क करोलबाग में आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, के तत्वावधान में सार्वजनिक रूप में मनाया गया।

सभा की अध्यक्षता श्री रामेश्वरानन्द जी संसत्सदस्य ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने साम्प्रदायिकता के आगे झुकने की अपनी नीति के अनुरूप अकालियों से भयभीत होकर पंजाबी सूबा का जो निर्माण किया है उसके परिणाम बहुत भयंकर होंगे और देश में पृथकतावादी तत्व जोर पकड़ते जावेंगे। पंजाबी सूबा विरोधी आर्यसमाज के आन्दोलन के मध्य हरियाना के आर्यसमाजी नेताओं ने जो पार्ट किया, उसी के कारण महान् शक्ति तथा बलिदान की भावना पास होते हुए भी आर्य समाज को सफलता प्राप्त न हो सकी। उन्होंने कहा कि अकाली तो १८५७ से ही देश द्रोह करते रहे हैं। हमारे आज के कमजोर नेताओं ने उनकी यह साम्प्रदायिक मांग मान ली जिसे पं० नेहरू पं० पन्त तथा सरदार पटेल जैसे नेताओं ने ठुकरा दिया था।। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास की चर्चा करते हुए उन्होंने जोरदार शब्दों में कहा कि भारत के कल्याण के लिये अब अवश्य राजनीति में भाग लेना चाहिये।

प्रसिद्ध आर्य नेता श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले ने आरम्भ में बड़े दुःख भरे शब्दों में पंजाबी सूबे के निर्माण की चर्चा की और इसे राष्ट्र के लिये घातक बताया। जिस पंजाब का निर्माण आर्यसमाज के महान् नेताओं में स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपत राय तथा महात्मा हंसराज ने किया था, उसके टुकड़े करके आज भारत सरकार ने हमारे हृदयों पर बहुत बड़ा घाव लगाया है। कांग्रेस सरकार ने पंजाब के आज के बड़े-बड़े कांग्रेसी नेताओं की भी कुछ परवाह न की, परन्तु उसे समझ लेना चाहिये कि इसके परिणाम भयंकर होंगे। लालाजी ने प्रबल शब्दों में चेतावनी दी कि यदि प्रधान-मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा गृह मन्त्री श्री नन्दा द्वारा दिये गये आश्वासनों पर ईमानदारी से अमल न किया गया, तो आर्य समाज अपना संघर्ष तीव्र कर देगा।

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी ने कहा कि कांग्रेस का जन्म आर्य समाज के जन्म से दस वर्ष पश्चात् हुआ था, पर चूंकि आर्यसमाज के कुछ नेताओं ने राजनीति से अलग रहने की भयावह भूल की थी, आर्य समाज पिछड़ गया। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि राजनीति वैदिक धर्म का अंग है, और यदि आर्य समाज ने इस ओर ध्यान न दिया, तो वह और घाटे में रहेगा। आर्यसमाज के विगत ९० वर्ष के सेवा, शिक्षा, सामाजिक सुधार तथा धर्म-प्रचार के शानदार कार्यों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमें वेद का अनुवाद विभिन्न देशीय व विदेशीय भाषाओं

शेष पेज १४ पर

सभा मंत्री श्री लाला रामगोपाल का वक्तव्य

अखिल भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के बारे में जनता भ्रम में न पड़े

मेरा ध्यान १-४-६६ के नवभारत टाइम्स में प्रकाशित एक समाचार की ओर आकृष्ट किया गया है जिसमें लिखा गया है कि अखिल भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा की कार्य कारिणी ने पंजाबी सूबे के निर्णय का समर्थन किया है। यह बैठक श्री कन्हैयालाल वाल्मीकी की अध्यक्षता में सरायफूस में हुई बताई गई है।

इस समाचार को पढ़कर मुझे आश्चर्य हुआ। श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के अधिकारियों से ज्ञात करने पर विदित हुआ कि उक्त सभा की कोई भी बैठक श्री कन्हैयालाल की अध्यक्षता में नहीं हुई और न उसमें पंजाबी सूबे के समर्थन में कोई प्रस्ताव ही पारित हुआ। प्रतीत होता है कि यह कुछ स्वार्थी व्यक्तियों की शरारत है जो सभा के सम्बन्ध में भ्रम फैलाना चाहते हैं।

अखिल भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा सार्वदेशिक सभा के आधीन है,जिसके वर्तमान प्रधान श्री ला० हरबंसलाल चौपड़ा और मंत्री श्री रामनाथ सहगल हैं। अतः जनता को शरारती लोगों से सावधान रहना चाहिए और सभा की स्थिति के सम्बन्ध में किसी भ्रम का शिकार न बनना चाहिए।

सराय फूस में श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा का न तो कार्यालय है और न उसका कोई भवन ही है।

हार्दिक अभिनन्दन

नई दिल्ली ४ अप्रैल। सभा प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास, सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल शालवाले, आचार्य श्री वैद्यनाथ जी शास्त्री, आर्यसमाज दीवानहाल के उपप्रधान श्री डा० गिरधारीलाल जी दत्ता तथा मन्त्री श्री वी० पी० जोशी एडवोकेट, श्री सहदेवचन्द्र जी एवं श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी आदि ने श्री ला० रलाराम मेलाराम जी के निवास स्थान पर जाकर—

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

की सेवा में उपस्थित होकर पुष्पहारों से स्वागत किया और विदेश प्रचार यात्रा के लिए हार्दिक बधाई दी।

सत्यार्थप्रकाश परीक्षाएं

आर्य युवक परिषद् दिल्ली की ओर से महर्षि दयानन्द जी के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाऐं गत् वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी वेद सप्ताह में रविवार ४ सितम्बर १९६६ को सारे भारतवर्ष में आयोजित की जा रही हैं। परीक्षाओं सम्बन्धी नई पाठविधि, नियमावली, केन्द्र स्थापना पत्र एवं आवेदन पत्रादि के लिये परीक्षा कार्यालय, आर्यसमाज मोडल बस्ती शीदीपुरा दिल्ली ५ के पते पर पत्र व्यवहार करें।।

देवव्रतः धर्मेन्दु
प्रधान

आर्यसमाज, वैर (भरतपुर)

के चुनाव में श्री मनोहरलाल जी प्रधान तथा डा० मदनगोपालजी मन्त्री चुने गए।

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

आर्य समाज, बड़ौत

के निर्वाचन में श्री चौ० अर्जुन सिंह प्रधान, श्री प्रिंसिपल माधवसिंह तथा श्री कालेराम उपप्रधान, श्री यशोवर्धन शास्त्री मन्त्री, ऋषिपाल सिंह जी उपमन्त्री श्री सरदारीलाल कोषाध्यक्ष एवं श्री धर्मवीरसिंह शास्त्री पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

केन्द्रीय आर्यसमाज

सरोजनी नगर नई दिल्ली के चुनाव में श्री सजानचन्द्र भाटिया प्रधान श्री महेन्द्रनाथ झा श्री बालक राम महेन्द्र श्रीमती सावित्री देवी उपप्रधान, श्री अटलकुमार गर्ग मन्त्री श्री आनन्दस्वरूप गांधी, श्री मदनमोहन सूरी, श्रीमती रामप्यारी उपमन्त्री, श्री दीनानाथ कोषाध्यक्ष एवं श्री वृजलाल कत्याल पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

दयानन्द जयन्ती

आर्य समाज अमुआ के मन्त्री महोदय ने सुझाव दिया है कि चैत्र शुक्ला १ से १० तक प्रति वर्ष दयानन्द जयन्ती मनाई जाया करें।

श्री पं० देवप्रकाशजी

आर्य जगत के वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० देवप्रकाशजी शास्त्रार्थ महारथी दिनांक १ अप्रैल से ३० अप्रैल तक रतलाम संभाग (मध्य प्रदेश) की ओर से आर्य समाजों में—श्री पं० जी का स्वागत, थैली भेंट और पंडित जी के भाषण होंगे।

उत्सव

आर्य समाज लातूर (महाराष्ट्र) का वार्षिकोत्सव समारोह से सम्पन्न हुआ। सभा प्रधान श्री प० नरेन्द्र जी, श्री प्रो० राजेन्द्र जी, आचार्य कृष्ण जी के महत्वपूर्ण भाषण तथा पन्नालाल पीयूष के सुमधुर भजन हुए।

सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज गांधीग्राम, विशाखा पत्तनम् में सामवेद परायण यज्ञ, और श्री पं० गोपदेव जी दार्शनिक वैदिक स्कालर के गम्भीर भाषण हुए।

आर्यसमाज मुजफ्फरनगर

के चुनाव में श्री छज्जूसिंह जी प्रधान तथा श्री अनूपसिंह जी मन्त्री चुने गए।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज अमुआ का वार्षिक उत्सव दिनांक १५-१६-१७-१८ अप्रैल को होगा।

श्री दयानन्द पुरस्कार

यह सूचित किया जाता है कि श्री दयानन्द पुरस्कार के लिए विचारार्थ लेखक, वेद, दर्शन, तथा आर्यसमाज के अन्य सिद्धान्तों पर प्रकाशित अपनी मौलिक अनुसन्धानपूर्ण रचनाओं की पांच-पांच प्रतियां सभा कार्यालय को ३० अप्रैल ६६ तक भेज सकते हैं।

ये प्रकाशित रचनायें १९६५ जनवरी से दिसम्बर १९६५ के काल की ही होनी चाहिए। पूर्व विज्ञापन के अनुसार जिन लेखकों ने अपनी कृतियां विचारार्थ भेज दी हैं उन्हें पुनः भेजने की आवश्यकता नहीं। श्रेष्ठ रचनाओं पर एक सहस्र रुपये का एक पुरस्कार दिया जावेगा।

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

नई दिल्ली

आर्योप प्रतिनिधि सभा गढ़वाल

के निर्वाचन में श्री मधुर जी शास्त्री प्रधान तथा श्री तोताराम जी जुगड़ाण आर्य मिसनरी मन्त्री चुने गए।

आर्यसमाज कोटद्वार में

श्री रूपचन्द्र जी वर्मा प्रधान एव श्री उमरावलाल जी आर्य मन्त्री चुने गए। श्री मक्खनलाल जी आर्य, आर्य कन्या पाठशालाके प्रबन्धक हुए।

चुनाव

आर्य उपप्रतिनिधि सभा देहरादून के चुनाव में श्री पं० तेजकृष्ण जी कौल प्रधान तथा श्री दलीपसिंह जी मन्त्री चुने गए।

चुनाव

आर्य समाज (शुगर मिल) खतौली के चुनाव में श्री विद्यासागर अरोड़ा चीफ इन्जिनियर प्रधान और श्री सेवकराम यात्री मन्त्री चुने गए।

१२ का शेष पेज

में करने का घोर प्रयास करना चाहिये। महात्मा देवीचन्द जी ने दो वेदों का अनुवाद अंग्रेजी में किया, दूसरे विद्वानों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिये। आर्यों को तथा आर्य समाज की सभाओं को वायु के वेग से इस ओर लग जाना चाहिये तथा अपनी सन्तानों को लगाना चाहिये। हमें यह न भूलना चाहिये कि आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद-प्रचार है।

गुरुकुल चित्तौड़ गढ़ के आचार्य श्री स्वामी व्रतानन्द जी ने कहा कि भारत का कल्याण आर्य समाज ही कर सकता है, अतः आर्यों को संगठित होकर प्रभु विश्वास द्वारा प्रत्येक अन्याय से टक्कर लेनी चाहिये। दयानन्द संन्यास आश्रम गाजियाबाद के आचार्य श्री स्वामी विद्यानन्द जी ने कहा कि आर्य समाज का सबसे बड़ा शत्रु अंग्रेज था, उसने पाकिस्तान बनवाया और उसी ने अकाली साम्प्रदायिकता को हवा दी। दयानन्द साल्वेशन मिशन के प्रचारक श्री ला० देवराज जी वैदिक मिशनरी ने कहा कि महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य की धाक मैक्समूलर जैसे पश्चिमी विद्वानों के हृदय पर भी थी और जो काम आर्य समाज ने अपने लघु जीवन में किये-कोई धार्मिक संस्था न कर सकी।

इनके अतिरिक्त विरजानन्द अन्ध कन्या विद्यालय की छात्राओं श्री करतार सिंह जी गुलशन श्री रामदास जी बजवा तथा कुमारी कान्त ने कविताओं द्वारा आर्यसमाज के कार्य-कलापों का दिग्दर्शन करवाया।

आर्यसमाज नागपुर

—दयानन्द भवन में श्रीमती सरोजकुमारी जी श्रीवास्तव एम० ए० बी० टी० की अध्यक्षता में आर्यसमाज स्थापना दिवस सम्पन्न हुआ। अनेक विद्वानों के भाषण हुए।

—आर्य प्रतिनिधि सभा नागपुर द्वारा संचालित वेद वेदांग विद्यालय नागपुर के उत्तीर्ण ३२ छात्रों को सभा प्रधान श्री विश्वम्भर प्रसाद जी शर्माजी ने प्रमाण पत्र वितरित किये।

— महिला आर्यसमाज के चुनाव में श्रीमती सत्यारानी जी खुराना प्रधाना और श्रीमती चन्द्रकान्ता जी विद्यालंकृता मन्त्रिणी चुनी गई।

आर्य समाज, लातूर

के तत्वावधान में जिला प्रचार समिति की स्थापना की है जिसके प्रधान श्री पं० वेदकुमार जी विद्यालंकार और मन्त्री श्री पं० हरिश्चन्द्र जी धर्माधिकारी चुने गए हैं।

शोक

—श्री ला० सहदेवचन्द्र जी (सदस्य आर्यसमाज दीवानहाल) श्री सुखदेवचन्द्र जी उपप्रधान आर्य समाज माडल बस्ती के पूज्य पिता श्रीजी का ७४ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप पूर्ण स्वस्थ और आर्य विचारों के थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

श्री योगीलाल जी आर्य प्रधान आर्य समाज वारिसलीगंज (गया) का ता० १३-३-६६ को स्वर्गवास हो गया। आपके निधन से आर्य समाज तथा अन्य संस्थाओं की बड़ी क्षति हुई।

आर्यसमाजों को सूचना

आप अपने प्रचार में जन-जन तक आर्यसमाज और देश भक्ति के विचारों को पहुंचाना चाहते हैं तो आधुनिक प्रचार के ढंग को अपनाइये।

पं० आशानन्द भजनीक आर्यसमाज नया बांस दिल्ली-६

ने बहुत अच्छे रंगीन चित्र (Slides) तैयार किए हैं। जो पर्दे पर (film) की भांति दिखाए जाते हैं। जब उनके ढंग के चित्र अथवा शहीदों के चित्र पर्दे पर चलते हैं तो पंडाल के कौने-२ से भारत माता की जय, ऋषि दयानन्द की जय के नाद गूंज उठते हैं। उनके भजनों में भी जोश आता है। क्योंकि सभा से आप रिटायर हो गए हैं, मेरी प्रबल इच्छा है कि एक बार आप उन्हें अपने यहां अवश्य बुलाएं।

कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता	१०)
अथर्ववेद संहिता	८)
यजुर्वेद संहिता	४)
सामवेद संहिता	३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	२)५०
सत्यार्थप्रकाश	२)
संस्कारविधि	१)२५
पंच महायज्ञ विधि	)२५
व्यवहार भानु	)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग	५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र	१) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७×४० इन्च	२)५०
,, ,, ३६×५४ इन्च	४)५०
,, ,, ४५×६० इन्च	६)५०
कर्तव्य दर्पण	)५०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश	३)२५
मराठी सत्यार्थप्रकाश	१)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश	३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति	७)
शिक्षण-तरङ्गिणी	५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी	७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी	५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र	)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से)	)५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्	)५०
कठोपनिषद् ५० प्रश्नोपनिषद्	)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्	)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद्	१)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य	१ २५
मृत्यु और परलोक	१)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य	)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला	३)
बृहद् विमान शास्त्र	१०)
वैदिक वन्दन	५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत)	३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी)	३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द)	२)५०
अभ्यास और वैराग्य	१)६५
निज जीवन वृत्त बनिका (सजिल्द)	)७५
बाल जीवन सोपान	१)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म	६२
उपनिषद् कथामाला	)२५
सन्तति निग्रह	१)२५
नया संसार	)६०
आदर्श गुरु शिष्य	)२५
कुल्लियात आर्य मुसाफिर	६)
पुरुष सूक्त	)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत)	१)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर	६२
स्वर्ग में हड़ताल	)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा	४)५०
भोज प्रबन्ध	२)२५
वैदिक तत्व मीमांसा	)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा	५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं	)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप	२)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द	)६०
वेद और विज्ञान	)७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन	)३०
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द	)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा	)५०
इराक की यात्रा	२)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र	)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र	)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां	)७५
बाल संस्कृत सुधा	)५०
वैदिक ईश वन्दना	४०
वैदिक योगामृत	)६२
दयानन्द दिग्दर्शन	)७५
भ्रम निवारण	)३०
वैदिक राष्ट्रीयता	)२५
वेद की इयत्ता	१)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह	)७५
कर्म और भोग	१)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश	२)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श	)७५
वैदिक युग और आदि मानव	४)
वैदिक इतिहास विमर्श	७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम् (पूर्वार्द्ध)	१)५०
,, ,, (उत्तरार्द्ध)	१)५०
वैदिक संस्कृति	)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति	)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज	)३७
आर्य समाज की नीति	)२५
सायण और दयानन्द	१)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू	५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश	)७५
वैदिक सूक्ति सुधा	)५०
ऋषि दयानन्द वचनामृत	)३०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र	)५०
संस्कार महत्व	)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व	)६२

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

गीता विमर्श	)७५
गीता की पृष्ठ भूमि	)४०
ऋषि दयानन्द और गीता	)१५
आर्य समाज का नवनिर्माण	)१२
ब्राह्मण समाज के तीन महापातक	)५०
भारत में मूर्ति पूजा	२)
गीता समीक्षा	१)

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	)३१
चरित्र निर्माण	१)१५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण	)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	)२५
दौलत की मार	)२५
अनुशासन का विधान	२५
धर्म और धन	)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार	१)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली	)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि	)५०

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

कांग्रेस का सिरदर्द	)५०
आर्य समाज और साम्प्रदायिकता	)३१
भारत में भयंकर ईसाई षड्यंत्र	)२१
आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना	)२०
आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण	,१

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय	२)
आर्य समाज के महाधन	२)५०
एशिया का वेनिस	)७५
स्वराज्य दर्शन	१)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर	१)५०
भजन भास्कर	१)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण	२)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी	१)२५
सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास	)७५
सार्वदेशिक सभा के निर्णय	)४५
आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव	)६०
आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण	१)
आर्य समाज का परिचय	१)

सत्यार्थ प्रकाश

मंगाईये।

मूल्य २) नैट

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

देहली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सा म वे द

(मूल मंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित)

भाष्यकार श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

(स्नातक गुरुकुल कांगड़ी)

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार (४०००) पुस्तकें हाथो-हाथ बिक गई थी। तबसे इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है।

यह २८ पौंड सफेद कागज पर कपड़े की जिल्द और मूल्य ४ रुपये है भारी संख्या मे मगवाइये। पोस्टेज पृथक।

●

हिन्दू राष्ट्र को सच्चा मार्ग दिखाने वाली सर्वश्रेष्ठ धर्म पुस्तक

वैदिक-मनुस्मृति श्री सत्यकामजी

हिन्दी टीका सहित—हिन्दू धर्म ग्रन्थो मे चारो वेदो के पश्चात एक मात्र प्रमाणिक पुस्तक यही है। यद्यपि वेदो का समझना साधारण जनो के बस मे नहीं पर मनुस्मृति को नागरी पढा हुआ व्यक्ति भी समझ सकता है। ४६८ पृष्ठ मूल्य ४॥) साढे चार

बृहत् दृष्टान्त सागर सम्पूर्ण पाँचों भाग

प० हनुमान प्रसाद शर्मा

इस ग्रन्थ मे वैदिक लौकिक सामाजिक धार्मिक, एतिहासिक राजनैतिक भक्ति ज्ञान, वैराग्य आदि सभी विषयो के अच्छे से अच्छे दृष्टान्तों का सकलन किया है। ससार के अनेक महापुरुषों सन्तो, राजाओ विद्वानों एव सिद्धो के अनुभूत तथ्यो का अनोखा समावेश है। सच तो यह है कि यह अकेला ग्रन्थ सभी श्रेणी के लोगो क सभी प्रकार की मानसिक पीडाओ को मार भगान क लिए पर्याप्त है। कथावाचक कथा म उपदेशक अपने प्रतिपाद्य विषय म और अध्यापक इसके प्रयोग म छात्रो पर मोहिनी डालत हैं। बालक कहानी क रूप मे इसे पढकर मनोरजन का आनन्द ले सकते हैं। वृद्ध इस ग्रन्थ के पन्ने-पन्ने मे अपने भगवान् और उनके भक्तो की झाकी पा सकते है। मातायें इसे पढकर अपने मतलब का ज्ञान प्राप्तकर सकती है। इस प्रकार सबका ज्ञान इस पुस्तक मे बढ सकता है। पृष्ठ संख्या ८६८

सजिल्द, मूल्य केवल १०॥) साढे दस रुपया डाक व्यय २) अलग।

उपदेश मंजरी—स्वामी दयानन्द जी के उपदेश हर आर्य समाजो को अवश्य अध्ययन करने चाहिए। पूना नगर में दिए गये सम्पूर्ण व्याख्यान इसमे दिए गए हैं। मूल्य २॥) ढाई रुपये।

संस्कार विधि—इस पुस्तक मे गर्भाधान से लेकर १५ सस्कार कहे हैं जो, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वान प्रस्थ सन्यास इन चारो आश्रमो मे क्रमानुसार करने होते है। मूल्य १॥) डेढ रुपये डाक खर्च अलग।

आर्यसमाज के नेता आर्य समाज के उन आठ महान नेताओ, जिन्होने आर्य समाज की नींव रखकर हिन्दू जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मूल्य ३) तीन रु० डाक खर्च १॥ डेढ रुपये।

महर्षि दयानन्द—जिस समय हिन्दू धर्म अन्धकार मे था, लोगो मे ढपोलशख बहुत बढ गया था उस समय स्वामी दयानन्दजी का जन्म हुआ और शिवरात्रि को महर्षि जी को सच्चा ज्ञान मिला। मूल्य ३)

कथा पच्चीसी—सतराम सत

जिसमे मनुष्य जाति का उद्धार करने के हेतु ही अनेक शास्त्रों मे से भारत-भूषण स्वामी दर्शनानन्द जी ने उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद पच्चीस कथाओं का सग्रह किया है। हमने उनको और भी सशोधित एव सरल बनाकर छापा है। मूल्य केवल १॥) डेढ रुपया डाक व्यय १

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

१—अब तक सत्यार्थप्रकाश के कई संस्करण प्रकाशित हुए हैं।

२—इसकी दूसरी बड़ी विशेषता पैराग्राफों पर क्रमांक दिया जाना है।

३—अकारादिक्रम से प्रमाण सूची। पुस्तक का आकार १०×१३ इंच है। पृष्ठ संख्या ५८०, बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई क्लाथ बाइंडिग - मूल्य लागत मात्र १५) पन्द्रह रुपये, एक साथ पांच कापी मंगाने पर ५०) पचास रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१—सांख्य दर्शन — मू० २ ००
२—न्याय दर्शन — मू० ३ २५
३—वैशेषिक दर्शन मू० ३ ५०
४—योग दर्शन — मू० ६ ००
५—वेदान्त दर्शन — मू० ५ ५०
६—मीमांसादर्शन — मू० ६ ५०

उपनिषद्प्रकाश—स्वामी दर्शनानन्दजी

इसमे लौकिक व पारलौकिक उन्नति की महत्वपूर्ण शिक्षाए भरी पडी हैं। मूल्य ६ ०० छ रुपया।

हितोपदेश भाषा ले० रामेश्वर 'प्रशान्त'

'उस पुत्र से क्या लाभ जिसने अपने कुल का नाम कलंकित किया है ऐसे पुत्र की माता यदि बांझ हो जाय तो उत्तम है' यही भावना पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन को सदा सताती थी। विद्वान् प० विष्णुशर्मा ने राजकुमारो को जो शिक्षा एव नीति की आख्यायिकायें सुनाई उनको ही विद्वान् प० श्री रामेश्वर प्रशान्त जी ने सरल भाषा मे लिखा है। मूल्य ३) तीन रुपया।

अन्य आर्य साहित्य

पुस्तक	मूल्य
(१) विद्यार्थी शिष्टाचार	१ ५०
(२) पंचतंत्र	३.५०
(३) आग ऐ आलम	१ ००
(४) कौटिल्य अर्थशास्त्र	१० ००
(५) चाणक्य नीति	१ ००
(६) भर्तृहरि शतक	१ ५०
७) कर्तव्य दर्पण	१ ५०
(८) वैदिक सध्या	४ ०० सैकड़ा
(९) वैदिक हवन मंत्र	१० ०० सैकड़ा
(१०) वैदिक सत्सग गुटका	१५ ०० सैकड़ा
(११) ऋग्वेद ७ जिल्दों म	५६ ००
(१२) यजुर्वेद २ जिल्दा मे	१६ ००
(१३) सामवेद १ जिल्द मे	८ ००
(१४) अथर्ववेद ४ जिल्दो म	३२ ००
(१५) वाल्मीकि रामायण	१२ ००
(१६) महाभारत भाषा	१२ ००
(१७) हनुमान जीवन चरित्र	४.५०
(१८) आर्य सगीत रामायण	५ ००

हिन्दी के हर विषय की ५००० पुस्तकों की विस्तृत जानकारी वास्ते ४०० पृष्ठों की 'ज्ञान की कुन्जी' केवल १ ७५ रुपया मनीआर्डर या डाक टिकट भेजकर प्राप्त करें।

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद, कृषि बिजली मोटर, पशुपालन, टेक्नीकल डेरीफार्म रेडियो आदि सभी विषयो पर हमने सैंकडो पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१२३

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली १ से प्रकाशित

आ प०
स्कालर के सम्भीर

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

ओ३म्

उरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली–१ | फोन २७४७७१ | वैशाख शुक्ला ३ संवत् २०२३ | ३ अप्रैल १९६६ | दयानन्दाब्द १४ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६

वेद—आज्ञा

परोपकारी

उप यह्वी सुपेशसा विश्वे देवा अमर्त्या । त्रिष्टुप छन्द इहेन्द्रिय पष्ठवाड् गौर्वयो दधुः ॥१७॥

यजुर्वेद अ० २१ । १७

संस्कृत भावार्थ —

यथा पृथिव्यादय पदार्था परोपकारिण सन्ति। तथाऽत्र मनुष्यैर्भवितव्यम् ॥

आर्य भाषा भावार्थ —

जैसे पृथ्वी आदि पदार्थ परोपकारी है वैसे इस जगत् में मनुष्यों को होना चाहिए।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

विदेशों में वैदिक धर्म प्रचार

नैरोबी (पूर्वीय अफ्रीका) की विराट सभा में वेद मन्त्रों द्वारा प्रार्थना करते हुए

आर्य नेता श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी

ाी सभा में विराजमान हैं—भारत के हाई कमिश्नर महामहिम श्री आर० के० टण्डन, और श्रीमती ब्रिटिश हाई कमिश्नर, केनिया के महामहिम राष्ट्रपति श्री जोमोकेन्याता, ाष्ट्रपति माननीय श्री ओडिंगा-ओगिंगा, घाना के महामहिम हाईकमिश्नर, पाकिस्तान ाई कमिश्नर तथा इन्डियन कांग्रेस एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री एम० के० अमीन ादि अनेक गणमान्य महानुभाव।

शास्त्र-चर्चा

वैदिक प्रार्थना

मा व स्तेन ईशत माघशंसः ।

यजु० १ । १ ॥

हे प्रजाजनो ! तुम पर ऐसा व्यक्ति राज्य न करे जो चोर हो, जो प्रजा का धन चुरा लेता हो, जो ईमानदार न हो और जो कि पापकर्म की प्रशंसा करता हो।

भूताय त्वा नारातये स्वरभि विख्येषम् ॥

यजु० १ । ११ ॥

मैं जो कुछ कमाऊं उसे प्राणि मात्र के भले के लिये लगा दूं । न देने के लिये न कमाऊं । इस प्रकार राष्ट्र मे ही मैं ह र्ग को अपने सामने देख लूं ।

मा मेर्मा मविकथाः ॥

यजु० १ । २३ ॥

हे प्रजाजनो ! अच्छे कामो क करने मे भय मत करो और भय के कारण अपने कर्तव्य मार्ग से विचलित भी न होओ।

सुक्ष्मा चासि शिवा चासि स्योना चासि सुषदा चास्यूर्जस्वती चासि पयस्वती च ।

यजु० १ । २७ ॥

हे राष्ट्रभूमि ! तुझ मे उत्तम क्षमा का भाव हो । तू सबका कल्याण करने वाली तथा सबको सुख देने वाली बन । उठने बैठने तथा रहने की जगह प्रत्येक प्रजाजन को मिले । प्रत्येक मे बल और प्राणशक्ति हो । प्रत्येक को दूध तथा अन्न मिले ।

भुवपतये स्वाहा भुवनपतये स्वाहा भूतानां पतये स्वाहा ।

यजु० २ । २ ॥

राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति पृथिवी के पति परमात्मा के नाम पर राष्ट्र क लिये पूर्ण त्याग करे । जगत् के पति परमात्मा क नाम पर राष्ट्र के लिये पूर्ण त्याग करे । सब प्राणियो क पति परमात्मा क नाम पर राष्ट्र क लिये पूर्ण त्याग करे ।

पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं पाहि मां यज्ञन्यम् ।

यजु० २ । ६ ॥

राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा से प्रार्थना किया करे कि हे परमात्मन् ! आप हमारे राष्ट्र-यज्ञ की रक्षा की जये हमारे राष्ट्र यज्ञ के पति की रक्षा कीजिये हमारे राष्ट्र यज्ञ के नेता की रक्षा कीजिये ।

प्रसन्न हुए

हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री प० नरेन्द्र जी, साप्ताहिक सार्वदेशिक कार्यालय मे पधारे । आपने सार्वदेशिक के महर्षि बोधांक और कल्याण मार्ग का पथिक के प्रकाशन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आर्यसमाज परिचयांक और शिक्षा प्रसारांक की योजना से आप बड़े प्रभावित हुए ।

जब आपने आर्यसमाज के मन्त्रियों और शिक्षा संस्थाओं के आचार्यों के आये हुए सैकड़ों चित्रों को देखा तो आपने कहा कि यह तो आर्यजगत् में बहुत ही महान् कार्य होगा । इसमें सभी आर्य संस्थाओं का परिचय आ जाना चाहिए । आन्ध्र प्रदेशकी सभी आर्य संस्थाओके परिचय भिजवाने की आपने आशा प्रकट की।

१००) दान

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली के सदस्य श्री बा० सहदेवचन्द जी ने अपने स्वर्गीय पिता श्री दीवानचन्द जी की पुण्य स्मृति मे विविध संस्थाओ को १०००)दान दिया है इनमे १००) सार्वदेशिक साप्ताहिक को १५ विद्या विद्यालयो मे एक वर्ष तक अमूल्य भेजने के लिए प्रदान किया है। धन्यवाद

प्रबन्धक

चिरायु हो

सार्वदेशिक प्रेस के फोरमैन श्री रामप्रताप जी तिवारी को बहुत दिन की प्रतीक्षा के पश्चात् प्रभु की कृपा से पुत्र रत्न की प्राप्ति सुनकर मुझे हार्दिक आनन्द हुआ । ईश्वर करे कि बालक यशस्वी और चिरायु हो ।

— चतुरसेनगुप्त

एक महत्वपूर्ण सुझाव

आर्यसमाज सामली के मन्त्री श्री बनारसीदास जी श्रीमान् का सुझाव हैं कि परिचयांक में प्रधान का नाम भी होना चाहिए ।

सुझाव उत्तमहै । धन्यवाद प्रधान का शुभ नाम भी देगे ।

४५००) दान

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली ने श्री निहालचन्द भाग्या देवी फण्ड की ओर से ४५००) गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को दान दिया है ।

कन्या की आवश्यकता

एक सुन्दर स्वस्थ २७ वर्षीय दो सौ रुपये मासिक कमाने वाले अध्यापक के लिए दसवीं या हाईस्कूल पास गृह-कार्य मे दक्ष-सुशील कन्या की । जाति बन्धनका प्रश्न नहीं परन्तु जाट या खत्री को प्रमुखता दी जावेगी । पत्र व्यवहार का पता —

विनेशचन्द्र "दिनकर"

मन्त्री आर्यसमाज,देवनगर-फीरोजाबाद

१ आर्य समाज-परिचयांक

भारत और भारत से बाहर चार हजार से अधिक आर्य समाजें हैं । लाखों सदस्य हैं । करोड़ों रुपया व्यय करते हैं ।

किन्तु सर्व साधारण को पता नहीं !

इसमें आर्यसमाज की सदस्य संख्या, आय-व्यय, मन्त्री का चित्र और प्रधान का नाम इस अङ्क में देंगे

यह विशेषांक भी विशेष ही होगा

हजारों मन्त्रियों के चित्रों सहित यह विशेषांक आर्य जगत का दर्शनीय अंक होगा ।

इसका मूल्य केवल १)१० पैसा होगा

प्रत्येक आर्य समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री महोदय स्वसंस्था का परिचय और चित्र भेजने मे शीघ्रता करें ।

इस महान् अंक पर २५-३० हजार रुपया व्यय होगा । सभा पर इतनी भारी धनराशि का भार न पड़े और सुगमता से अंक प्रकाशित हो जाय इसके लिए मन्त्री महोदयों से, कम से कम १० अंक लेने और उसके ११) अग्रिम भेजने की प्रार्थना की थी । हर्ष की बात है कि आर्यसमाजों के मन्त्री महानुभावों ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की और धन भेज रहे हैं ।

आप जिस किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री हैं—उसका परिचय अपना नाम और चित्र तथा प्रधान का नाम भेजने मे देर न करें ।

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

उत्सव तो अवश्य करिए—लेकिन....

यों तो आर्य समाजों के उत्सव वर्ष भर चलते रहते हैं, परन्तु जिस तरह अन्य प्राकृतिक पदार्थों का एक विशेष मौसम होता है उसी प्रकार ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य-समाजों के उत्सवों का भी विशेष 'सीजन' है। आर्यसमाज का प्रचार पंजाब और उत्तर प्रदेश में अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक है, इसलिए पंजाब और उत्तरप्रदेश की आर्य-समाजों के उत्सवों को लक्ष्य करके ही हम 'विशेष मौसम' की बात कह रहे हैं।

वह मौसम है फरवरी से अप्रैल और सितम्बर से नवम्बर मास के अन्त तक। अधिकांश आर्यसमाजों के उत्सव इन्हीं मासों में होते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि बीच के जो महीने हैं, मई से अगस्त और दिसम्बर से जनवरी, उनमें उत्सव नहीं होते। प्रत्युत बहुत-सी प्रमुख आर्यसमाजों के उत्सव तो ठेठ गर्मियों के, ठेठ बरसात के या ठेठ सर्दियों के ही महीनों में होते हैं। परन्तु हमने जो 'उत्सवों के सीजन' की बात कही है वह इसी विचार से कि जब विशेष गर्मी, सर्दी या वर्षा न हो तब मौसम सुहावना रहता है और ऐसा सुहावना मौसम मकर संक्रान्ति (लगभग १४ जनवरी) के बाद और भाद्रपद में कृष्ण जन्माष्टमी (लगभग अगस्त का मध्य) के बाद ही सम्भव है।

अन्य होली, दिवाली आदि सार्व-जनिक उत्सव जैसे जन-जीवन के उल्लास के प्रतीक होते हैं वैसे ही आर्य समाजों के उत्सव भी आर्यसमाजी जनता के उत्साह के प्रतीक होते हैं। यों ये उत्सव प्रचार के साधन भी होते हैं और किसी भी आर्यसमाज के वार्षिक कार्यकलाप के लेखे-जोखे का भी यही अवसर होता है। हम समझते हैं कि देश में जितने उत्सव प्रतिवर्ष आर्य-समाजों के होते हैं उतने कदाचित् अन्य किसी संस्था के नहीं। यह आर्यसमाज के जीवित जागृत होने की निशानी तो है ही, साथ ही इस बात की भी निशानी है कि देश में आर्यजनों से बढ़कर कोई और वर्ग उत्साह सम्पन्न नहीं, न ही आर्यसमाज से बढ़कर कोई संगठित संस्था है। यह बात कहते समय देश के सभी राजनीतिक दलों और धार्मिक सम्प्रदायों की यथार्थ स्थिति का चित्र भी हमारे सामने है और हमें विश्वास है कि कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति हमारी बात को अतिरंजना युक्त नहीं कहेगा।

यह केवल एक उज्ज्वल पहलू है। आर्यसमाजों और आर्य समाजियों का नित्य नवीन उत्साह सर्वथा और सर्वदा प्रशंसनीय है। परन्तु इस उत्साह में भी हमें एक दिग्-भ्रम दृष्टिगोचर होता है जिसकी ओर संकेत करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। वह दिग्-भ्रम यह है कि छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी आर्यसमाज का भी उत्सव तब तक सफल नहीं माना जाता जब तक उसमें स्थानीय, या राज्य के, या केन्द्र के किसी राजनीतिक नेता की उपस्थिति न हो। यह प्रवृत्ति अत्यन्त घातक तथा दुःखदायी है। कभी कभी तो बड़े बड़े उत्सवों पर यह दृश्य देखने में आता है कि आर्य-समाज के उच्च विद्वान्, त्यागी-तपस्वी संन्यासी-महात्मा और उपदेशक महानुभाव तो नीचे बिठाए जाते हैं और शीर्षस्थान दिया जाता है उन राजनीतिक नेताओं को जिनकी योग्यता और चरित्र दोनों जनता की दृष्टि में संदिग्ध होते हैं। यह दृश्य देखकर किस वैदिक धर्माभिमानी के जी में जलन नहीं होगी।

राजनीतिक नेताओं से हमें द्वेष नहीं है। वे भी अपने ही देशवासी हैं, अपने ही समाज के अंग है, और उनमें से बहुतों ने देश की स्वाधीनता के लिए और जाति के उत्थान के लिए पर्याप्त कष्ट भी सहन किया है। परन्तु प्रत्येक राजनीतिक नेता के बारे में यह बात नहीं कही जा सकती। कुछ राजनीतिक नेता तो केवल अपनी जोड़-तोड़ की छल छद्ममयी वृत्ति के कारण ही, दलीय स्वार्थ-सोपान पर चढ़कर, उस पद तक पहुंचे होते हैं। उनके व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता के बजाय कूटनीति का ही—जो भ्रष्टाचार का पर्याय है—अधिक समावेश होता है। हम यह भी जानते हैं कि कतिपय राजनीतिक नेता वाणी के व्यापार में कुशल होते हैं, इसलिए जब संस्था के मंच पर जाते हैं वे उस संस्था के अनुयायियों को मनमाने वाली बातें कहने के अभ्यस्त हो जाते हैं। ऐसा करने में उन्हें इस बात की भी चिन्ता नहीं होती कि कल अमुक सभा के मंच पर उन्होंने क्या कहा था और आज इस सभा के मंच पर उससे उल्टी बात कैसे कह रहे हैं। वदतो व्याघात, ठकुर सुहाती, अवसर-वादिता, रामाय स्वस्ति और रावणाय स्वस्ति, दोनों साथ-साथ कहने की वृत्ति उनके जीवन का अंग बन चुकी होती है।

इसके लिए राजनीतिक नेताओं को दोष देने के बजाय हम उन आर्य-समाजियों को दोषी समझते हैं जो अपने आर्य विद्वानों का तिरस्कार करके ऐसे 'मत्स्य-मर्कट' राजनीतिक नेताओं के स्वागत-सम्भार में ही अपनी सारी शक्ति व्यय कर देते हैं और उत्सव के उपलक्ष्य में एकत्रित जन-समुदाय को पथ्य-हित-मित मानसिक भोजन से वंचित कर देते हैं। राज-नीतिक नेताओं को बेशक बुलाइए, उन्हें अपनी विचारधारा से प्रभावित करने के लिए और अपने कार्यकलाप का परिचय देने के लिए, न कि उनके छिछोरे विचार से प्रभावित होने के लिए, या उन्हें एक सार्वजनिक मंच अनायास सुलभ करने के लिए।

किसी किसी स्थान की जनता की भी ऐसी मनोवृत्ति हो जाती है कि जब तक कतिपय विशिष्ट राज-नीतिक नेताओं को उत्सव मे आमन्त्रित न किया जाए तब तक वे आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में आना उचित नहीं समझते। कहते हैं—'क्या करेंगे आ-कर, कोई बड़ा राजनीतिक नेता तो आया ही नहीं।' यह मनोवृत्ति सही नहीं है। राजनीति या राजनीतिक नेता केवल 'चार दिन की चांदनी' हैं, बाकी तो फिर निरी अंधेरी रात है।

राजनीतिक नेताओं के प्रति इस अनावश्यक आसक्ति का ही परिणाम है कि अब आर्यसमाज के मञ्च से प्रायः धार्मिक सिद्धान्तपरक या विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान सुनने को नहीं मिलते। कभी कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि जिस वार्षिकोत्सव को हम वेदप्रचार का सर्वोत्तम साधन बनाना चाहते हैं उसमें वेदप्रचार ही नहीं होता, बाकी सब कुछ होता है।

आर्य समाज की वेदी अपनी विशेषता है, पवित्रता है उसे कलंकित मत करिए। राजनीतिक नेताओं के बाहुल्य से जनता को दिग्-भ्रान्त मत करिए। इतने वर्षों की इस कुप्रवृत्ति से जनता की रुचि भी विमार्ग पर आरूढ़ हो चुकी है, यह हम मानते हैं, परन्तु उसे पुनः सुमार्ग पर लाना भी तो हमारा, आपका और आर्यसमाजियों का ही कर्तव्य है, किसी अन्य का नहीं।

आजकल उत्सवों का 'सीजन' चरम पर है इसलिए यह चेतावनी का स्वर है।

—

आस्तीन का सांप

मकतबा दीनिया देवबन्द ने सन् १९६६ की दैनन्दिनी 'मदनी डायरी' के नाम से छापी है इसमें एशिया और अफ्रीका के देशों का मुस्लिम मर्दुमशुमारी के तनासब' शीर्षक से एक नक्शा छापा है जिसमें ७१ देशों की मुस्लिम जनसंख्या का विवरण है। पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि इन ७१ देशों में एक देश कश्मीर भी है।

क्या आप जानते हैं कि संसार के नक्शे में कश्मीर नाम का यह देश कहां है? इतना तो हम भी जानते हैं कि कश्मीर नाम का एक राज्य है जो भारत का अभिन्न अंग है, परन्तु कश्मीर नाम का स्वतन्त्र देश तो कोई नहीं। जिस कश्मीर को हम जानते है यदि उसी कश्मीर को देव-बन्द वालों ने अपने नक्शे में दिखाया है तो उनसे पूछा जा सकता है कि क्या उनकी देशभक्ति का यही प्रमाण है?

जिन शिक्षण संस्थाओं में देश-द्रोह का इस प्रकार का पाठ पढ़ाया जाता है जब उनके कारनामों की चर्चा जनता में होती है तो सरकार द्वारा लीपापोती की जाती है और ऐसे देशद्रोही तत्त्वों पर पर्दा डाला जाता है। इसका सबसे बुरा परि-णाम यह होता है कि मुसलमानों में जो देशभक्त लोग हैं वे भी अनावश्यक रूप से बदनाम होते हैं। मुस्लिम जनता को ऐसे आस्तीनों के सांपों से बचाया जाए।

—

क्षमा याचना

प्रेस के अनिवार्य कारणवश ता० १५ अप्रैल का अंक प्रकाशित नहीं किया जा सका।

इस विवशता के कारण पाठक महानुभावों से क्षमा प्रार्थी हैं।

सामयिक-चर्चा

नकली अवतारों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा

वीर अर्जुन दिनांक ६-४-६६ मे प्रकाशित पिलखुवा के एक समाचार के अनुसार गोवर्धनपुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वामी निरंजनदेव जी तीर्थ ने सनातन धर्म्म सभा पिलखुवा द्वारा आयोजित सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए कहा कि देश में जो पाखण्डी नकली अवतार बन कर धार्मिक जनता को भ्रमित कर रहे हैं उनसे जनता को सावधान रहने की आवश्यकता है।

श्री शंकराचार्य ने कहा कि एक पाखण्डी सिर पर मुकुट बांधकर बंसी बजाकर, अपने को भगवान कृष्ण का अवतार बताकर जनता को लूटता है, उसके विरुद्ध आर्य समाज ने जो मुरादनगर में सम्मेलन का आयोजन किया है उसकी सफलता के लिए हमारा आशीर्वाद है। इन नकली अवतारों के विरुद्ध आर्य समाज व सनातन धर्म्म सभी को मिलकर संयुक्त रूप से विरोध करना चाहिए।

यह भाषण स्वागत योग्य है। अवतार वाद की भयंकर प्रतिक्रिया के रूप में ये नकली अवतार हमारे सामने आते हैं। प्रसन्नता है कि सनातन धर्म्म के बड़े २ दिमाग नकली अवतारों की धूर्तताओं को अनुभव करके खुलेआम उनका विरोध करने पर कटिबद्ध हो गए हैं और इस प्रकार इस दिशा में सनातन धर्म्मावलम्बियों का स्वस्थ मार्ग-दर्शन करने लगे हैं। उनका यह सहयोग इस प्रकार के पाखण्डों के निराकरण में बड़ा सहायक सिद्ध होगा।

आर्य समाज ने मुरादनगर में आयोजित होने वाले डिवाइनलाइट के पाखण्ड का जिसे एक नकली अवतार ने लोगों को पथ-भ्रष्ट करने का साधन बनाया हुआ है डटकर विरोध करने का प्रबन्ध किया है। नकली अवतार का प्रचारक कैम्प १२, १३, १४ अप्रैल को मुरादनगर (मेरठ) में गंगा की नहर पर लगा। आर्य समाजों द्वारा वहीं पर उन्हीं दिनों में वेद महायज्ञ करने का सफल आयोजन किया गया।

आशा है सनातन धर्म्म सभाएं एवं आर्य समाज संयुक्त मोर्चा बना कर इस पाखण्ड का निराकरण करने में कोई प्रयत्न उठा न रखेंगे और भोली भाली धर्म्म भीरु जनता इस पाखण्ड से सावधान रहेगी।

मांसाहार पर शाकाहार की विजय

प्रकृति के नियम अकाट्य एवं निष्पक्ष रूप से कार्य करते हैं और करोड़ पतियों तक का लिहाज नहीं करते। 'मनुष्य जो बोता है वह अवश्य काटता है' इस नियम में कभी कोई व्यवधान उपस्थित नहीं होता। दो करोड़ पतियों के सम्बन्ध में यह बात प्रकाश में आई थी कि वे दुःखी हैं क्योंकि वे सबसे बड़ी सम्पदा-स्वास्थ्य से वंचित थे। एन्ड्र कारनेगी ने यह कहा था कि मैं स्वस्थ्य स्थल पर स्थित एक झोंपड़े के बदले में अपने विशाल महल को दे सकता हूं क्योंकि मैं खाना हजम नहीं कर पाता हूं।" जोहन डी० राकफेलर ने कहा था कि "मैं १० लाख डालर उस व्यक्ति को दे सकता हूं जो मेरे पुराने कब्ज को दूर कर दे।" इस सबका कारण क्या है? इस पर प्रकाश डालते हुए हेरल्ड आव् गोल्डन एज नामक पत्र लिखता है :—

"कार्य से कारण की उत्पत्ति होती है। जब तक मानव प्राणी (जिसे प्रकृति ने शाकाहारी बनाया है) पशुओं का मांस खाना जारी रखेगा जो कसाईखानों में भय और असहाय पीड़ा से त्रस्त और ग्रस्त करके काटे जाते हैं तब तक पृथ्वी तल पर शरीर और मस्तिष्क की बीमारियां बनी रहेंगी।"

आगे चलकर इस पत्र ने सैन-फ्रांसिस्को के एक कैप्टेन ई० डायमण्ड का उदाहरण प्रस्तुत किया है जो लगभग १५० वर्ष की आयु में मरा था। और जिसने ६३ वर्ष की आयु में मांसाहार का परित्याग करके विशुद्ध शाकाहार को अपनाया था।

जब वह मांसाहारी था तब वह ६३ वर्ष की आयु में १०७ वर्ष तक की आयु की तुलना में अधिक बूढ़ा देख पड़ता था। उस समय उसकी कमर झुक गई थी। परन्तु १०७ वर्ष की आयु में कमर का झुकाव समाप्त हो गया था। उसकी आंखों में अधिक रोशनी तथा तेज व्याप्त हो गया था। वह प्रति दिन २० मील पैदल चलता था। १०७ वर्ष की आयु में उसने एक प्रेस सम्वाददाता को निम्नलिखित वक्तव्य अंकित कराया था:—

"पिछले पचास वर्ष में मैंने ३ बातों पर आचरण किया है। पहली यह कि मैंने यथासम्भव शुद्ध वायु का सेवन किया है। गहरे सांस लेने का अभ्यास जारी रखा है। दूसरी यह कि श्रेष्ठतम हड्डियां और रक्त बनाने वाली भोजन किया है। तीसरी यह कि शुद्धतम जल का उपयोग किया है।

जब मैंने स्वस्थ एवं श्रेष्ठ जीवन की प्राप्ति की तय्यारी आरम्भ की तो मैंने मांस का परित्याग कर दिया। मैंने अनुभव किया कि मांस में पोषक तत्वों की अपेक्षा बीमारियां या उनके कारण अधिक व्याप्त हैं।

मैं अन्न फल और शाक भाजी खाता हूं। मैं गर्म या उबाला हुआ पानी पीता हूं। मैं प्रत्येक रात्रि में न्हाता हूं और जोड़ों में जैतून का तेल लगाता हूं।

मैंने कभी भी सिगरट, सिगार और शराब आदि नशीली वस्तुओं का सेवन नहीं किया है। यहां तक कि चाय और काफी का भी परित्याग कर दिया था। इनमें से किसी में भी खाद्य पदार्थ नहीं है और इनके प्रयोग से प्रकृति अप्रसन्न होती है। अपने धन के सदुपयोग के कई अच्छे उपाय विद्यमान हैं। प्रतिदिन शरीर में जो क्षय होता है अन्न से उसकी पूर्ति होती रहती है। उत्तेजक पदार्थों में किसी प्रकार का अन्न नहीं होता। जो व्यक्ति इनमें ग्रस्त होता है वह अपनी आयु कम करता है।

५० वर्ष से अधिक समय से मैं शाकाहारी जीवन व्यतीत कर रहा हूं। मैं कोई कारण नहीं देखता हूं कि मेरा जीवन छोटा हो। इस समय अर्थात् १०७ वर्ष की आयु में भी मैं भला चंगा हूं। मैं अच्छी तरह खाता और सोता हूं और इस बड़ी आयु में भी जवान अनुभव करता हूं।"

निस्सन्देह धन की अपेक्षा स्वास्थ्य श्रेष्ठ होता है। कौन है जो इस बात से इन्कार करे कि कैप्टेन डायमण्ड कार्नेगी और राकफेलर की तुलना में अधिक धनवान था। यही कारण है कि हमारे ऋषियों ने शारीरिक मानसिक एवं आत्मिक स्वास्थ्य एवं विकास पर विशेष बल दिया है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

हिन्दी अभी तक अपने पद पर प्रतिष्ठित नहीं हुई

गुरुकुल महाविद्यालय में श्री राजबहादुर जी का भाषण

हरिद्वार, १२ अप्रैल। केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारणमन्त्री श्री राजबहादुर ने गुरुकुल महाविद्यालय के ५८ वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर आयोजित राज्य भाषा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कल यहां कहा कि हिन्दी को हमने राजभाषा का पद दिया है किन्तु अभी तक वह अपने पद पर पूर्णतः प्रतिष्ठित नहीं है, यह खेदजनक है।

राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन गुरुकुल के नवनिर्वाचित कुलपति श्री डा. रामधारीसिंह दिनकर ने किया। श्री राजबहादुर ने कहा कि हिन्दी के विकास के लिए सरकार पूरी तरह सजग है। दक्षिण भारत में हिन्दी विरोध की हमने कभी कल्पना नहीं की थी। उन्होंने कहा कि राजकार्य में हिन्दी के आने से देश की एकता तथा लोकतन्त्र की भावना दृढ़ होगी। सूचना मन्त्री ने आश्वासन दिया कि अहिन्दी भाषियों पर बलपूर्वक हिन्दी नहीं लादी जायेगी।

सूचना मन्त्री ने कहा कि हिन्दी समाचार पत्रों और समाचार समितियों के लिए जितना होना चाहिए था, उतना नहीं हुआ है इस बात से वे पूरी तरह अवगत हैं। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे इस दिशा में भरसक प्रयत्न करेंगे।

राजभाषा सम्मेलन में भाषण करते हुए संसत्सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने कहा कि भाषा का प्रश्न राजनीतिज्ञों के हाथों से निकाल कर साहित्यकारों के सुपुर्द करना चाहिए तभी हिन्दी का विकास होगा।

सम्मेलन में एक प्रस्ताव द्वारा सरकार से मांग की गई कि वह मुख्य मन्त्री सम्मेलन के निश्चय के अनुसार देवनागरी लिपि को सभी भाषाओं की वैकल्पिक लिपि स्वीकार करे।

❁

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की एक झांकी

माननीय श्री पं० प्रकाशवीरजी शास्त्री संसद् सदस्य, प्रधान महाविद्यालय

समावर्तन संस्कार समाप्त हो चुका और अब दीक्षान्त समारोह प्रारम्भ हो रहा है। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर आज अपने इन नवीन स्नातकों को दीक्षान्त समारोह में विदाई देने के साथ साथ आज से अपने ६९वें वर्ष में पदार्पण कर रहाहै। पिछले ६८ वर्षों में इस सांस्कृतिक शिक्षणालय ने जो देश और समाज की सेवा की है उससे आपमें से अधिकांश व्यक्ति भली भांति परिचित हैं। अब तक लगभग पांच हजार छात्र यहां से शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। इनमें २०० से अधिक छात्र विदेशों के भी थे और आधे सहस्र के लगभग छात्र सुदूर दक्षिण अथवा अहिन्दी भाषी राज्यों से यहां पढ़ने आये थे। आज भी इस संस्था में लगभग ५० अहिन्दी भाषी राज्यों के छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और ७ छात्र विदेशों के हैं।

इस शिक्षणालय के जन्मदाता श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वतीजी की यह हार्दिक इच्छा थी कि प्राचीन भारतीय संस्कृति जो देश के पराधीन होने से धीरे धीरे लुप्त होती जा रही थी उसकी रक्षा की जाय। भारत के प्राचीन नालन्दा और तक्षशिला आदि विश्वविद्यालयों में जिस बड़ी संख्या में दूसरे देशों के छात्र अपनी संस्कृति को भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित करने की शिक्षा ग्रहण करने आते थे, स्वामी जी की इच्छा थी कि हरिद्वार के इस प्रसिद्ध तीर्थ स्थान में, न वैसा सम्भव हो तो उससे मिलता जुलता विद्यालय स्थापित किया जाय। उनके तप और उद्देश्यों से प्रेरित होकर विद्वानों और साहित्यिकों का अच्छा जमघट इस संस्था में हो गया। आचार्य नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ तो स्वयं

(आचार्य नरदेवजी शास्त्री वेदतीर्थ)

महाराष्ट्र निवासी होते हुए भी अपना सारा जीवन इस संस्था को देकर चले गये। उनके अतिरिक्त साहित्याचार्य श्री पं० पद्मसिंह जी शर्मा, कविरत्न

(श्री पं० पद्मसिंह जी शर्मा)

सत्यनारायण जी, श्री नाथूराम शर्मा शंकर और व्याकरण के प्रकाण्ड पंडित आचार्य श्री शुद्धबोध तीर्थ जी आदि इस संस्था के प्रमुख संचालकों में रहे हैं। इस संस्था में रहकर कुछ समय तक अध्ययन करने वाले छात्रों में हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डा० राजेन्द्रप्रसाद जी और बाबा राघवदास जी आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं। एक समय था जब भारतीय संस्कृति पर बाहर की कुछ संस्कृति ने आक्रमण किया। आर्य समाज के जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उनका मुंहतोड़ उत्तर दिया। परन्तु विदेशी

(श्रीप० गणपति जी शर्मा)

शासन का सहयोग पाकर वह आक्रमण उनके बाद भी चलता रहा। इस संस्था के संस्थापक तार्किक शिरोमणि स्वामी दर्शनानन्द जी और विद्वद्वर पं० गणपति शर्मा उन विद्वानों में थे जिन्होंने वैदेशिक संस्कृतियों के उन धार्मिक आक्रमणों को सदा सदा के लिए समाप्त ही नहीं कर दिया अपितु कुछ ऐसे ग्रन्थ भी लिखकर वे दे गये जिससे कभी आगे भी इस प्रकार के आक्रमणों की सम्भावना हो तो आने वाली पीढ़ी उन्हें पढ़कर सुगमता से उनका सामना कर सके।

हमारी यह संस्था जहां शिक्षा

(श्री स्वामी दर्शनानन्द जी)

के क्षेत्र में अपना अद्भुत योगदान दे रही है वहां राजनीतिक क्षेत्र में भी इस संस्था का अपना विशेष सहयोग रहा है। उत्तर भारत के निवासी जो उन दिनों की राजनीतिक गतिविधियों से परिचित हैं वह अच्छी तरह से जानते हैं। खासतौर से क्रांतिकारियों

(गुरुवर काशीनाथ जी शर्मा)

और अज्ञात जीवन व्यतीत करने वाले राजनीतिक नेताओं की भी आश्रय स्थल यह गुरुकुल भूमि रही है। महामना प० मदन मोहन मालवीय को यह संस्था बड़ी प्रिय थी। गांधीजी, शेरे पंजाब ला० लाजपतराय जी, देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी आदि के अतिरिक्त लोकमान्य बाल-गंगाधर तिलक, श्री गोपालकृष्ण गोखले, सरदार बल्लभ भाई पटेल, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस और श्री जवाहरलाल जी नेहरू आदि महानुभाव भी यहां आते रहे हैं। स्वतन्त्र होने के बाद इस संस्था का दीक्षान्त भाषण देने के लिये राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी, सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन जी, प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल जी नेहरू, वित्तमन्त्री श्री मोरारजी देसाई, रक्षामन्त्री श्री यशवन्तराव जी चव्हाण, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी आदि महानुभाव पधारते रहे हैं। आज के सम्मानित अतिथि रेल मन्त्री श्री सदाशिव कान्हो जी पाटिल को भी पिछले ३, ४ वर्ष से निरन्तर हम अनुरोध करते रहे परन्तु अपनी व्यस्तताओं से वह समय नहीं निकाल सके। हमारा सौभाग्य है जो आज वह हमारे मध्य मे है। क्योंकि यह संस्था देश की अन्य शिक्षण संस्थाओं से भिन्न सांस्कृतिक भावना से प्रेरित होकर चल रही है। इसलिये यहां उन्हीं प्रमुख व्यक्तियों से दीक्षान्त भाषण देने के लिये अनुरोध किया जाता है जो भारत की अपनी सांस्कृतिक आस्था में विश्वास रखते है। मुझे प्रसन्नता है कि रेल मन्त्री श्री एस० के० पाटिल देश के उन्हीं गिने चुने व्यक्तियों में हैं। सरदार बल्लभ भाई पटेल जिन्होंने भारत की एकता का स्वप्न लिया था और जो उसे पूर्ण करने में अपनी पूरी शक्ति लगा रहे थे, श्री पाटिल सरदारके उस समय दांये हाथ थे। सरदार पटेल का जो विश्वास श्री एस० के० पाटिल ने प्राप्त किया है देश मे उसे और कोई प्राप्त नहीं कर सका। गुरुकुल में आज से हम एक नई और योजना प्रारम्भ करने जा रहे हैं जो अंग्रेजी के माध्यम से चल रहे छोटी आयु के बालकों के उन विद्यालयों को चुनौती देगी जहां स्वतन्त्र भारत में अंग्रेजी के क्रीत दास तैयार किये जाते हैं। इस शिक्षणालय के उस विभाग का नाम भी उसी महापुरुष सरदार पटेल के नाम पर श्री सरदार पटेल बाल मन्दिर रखा है। जिसका शिलान्यास भी आज सरदार के प्रमुखतम साथी श्री एस० के० पाटिल के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ है। श्री पाटिल की सरदार में अनन्य आस्था है। उन्होंने उनकी स्मृति में देश में और भी कई स्मारक बनवाये हैं। परन्तु हरिद्वार के इस पवित्र क्षेत्र में यह सरदार का अपने ढंग का एक अनूठा ही स्मारक रहेगा। हमें विश्वास है कि श्री पाटिल का संरक्षण इसको भी उसी तरह प्राप्त रहेगा जिस तरह देश के अन्य भागों में बने सरदार के कीर्ति मंदिरों को है।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ने गतवर्ष से हमने एक ऐसी योजना भी प्रारम्भ की है जिसमें कम से कम अहिन्दी भाषी राज्यों विशेषकर दक्षिणी राज्यों के प्रतिभाशाली कम कम ५० छात्र भी यहां शिक्षा प्राप्त करें। उनसे किसी प्रकार का भी व्यय न लेकर शिक्षा देने का निश्चय यहां की सभा ने किया है। केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने पहले तो उनके इस भार को स्वयं वहन करने का आश्वासन हमें दिया था। उसी आधार पर लगभग ४० छात्र हमने प्रविष्ट भी कर लिये परन्तु दुर्भाग्य से वह सहयोग अभी तक हमे नहीं मिल सका। पूर्ति के लिये उदार दानी महानुभावों से हमने अनुरोध किया जिनमें से ५०-५० रुपये की छात्रवृत्ति निम्नलिखित महानुभावो ने हमें दी है.—

(१) श्री घनश्याम जी गोयल एयर ट्रांस्पोर्ट कार्पोरेशन कलकत्ता।

५० रुपये मासिक की ५ छात्र-वृत्तियां।

(२)श्री बद्री प्रसाद जी भोरुका ट्रांस्पोर्ट कार्पोरेशन आफ इण्डिया बम्बई

५० रुपये मासिक की ५ छात्र-वृत्तियां।

(३) श्री मथेशदास जी सलूजा रावलपिण्डी फ्लोर मिल्स मुरादबाद।

५० रुपये मासिक की २ छात्र-वृत्तियां।

(४) श्री सेठ गूजरमल जी मोदी मोदी स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स, मोदीनगर। ५० रुपये मासिक की २ छात्र वृत्तियां। यह तथा और अनेक महानुभावों ने छात्र-वृत्तियां दी हैं।

इसके अतिरिक्त भी बम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री बद्रीप्रसाद जी भोरुका ने ५०, ५० रुपये की २५ छात्रवृत्तियां उन छात्रों के लिये दी हैं जिनके पिता अभी हाल में पाकिस्तान के साथ हुए संघर्ष में वीरगति को प्राप्त हो गये। रक्षा मन्त्रालय को इस सम्बन्ध में हमने ऐसे छात्रों के पते भेजने के लिये लिखा था। हमें प्रसन्नता है कि उन सभी छात्रवृत्तियों के आवेदन-पत्र हमें प्राप्त हो गये हैं और जुलाई से उन शहीदों के छात्र-भी यहां आकर अन्य शिक्षार्थियों के साथ शिक्षा लेना प्रारम्भ कर देंगे। विद्यालय के पास छात्रावास की व्यवस्था अभी बहुत अपर्याप्त है। इन नये आने वाले छात्रों के लिये भी पृथक् छात्रावास की व्यवस्था भी जुलाई से पूर्व ही हमको करनी होगी। हमें आशा है कि और दानी महानुभाव इस पवित्र कार्य में निश्चय ही हमारा हाथ बटायेंगे।

सस्था के पास कुछ कृषि योग्य भूमि तथा अपनी एक गौ-शाला भी है। छात्रों को दूध आदि देने की व्यवस्था भी गुरुकुल अपनी गौ-शाला से करता है। अभी यह व्यवस्था छात्रों की सख्या की दृष्टि से पूर्ण नहीं है फिर भी जैसे गत वर्ष बम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री तापड़ियाजी ने कुछ गायें यहां भेजी थीं। मुझे विश्वास है कि इस वर्ष भी कुछ और गायें अच्छी नस्ल की हम आप सबके सहयोग से मगा सकेंगे और उस व्यवस्था को भी पूर्ण कर लेंगे।

इस सस्था के कुलपति आचार्य श्री नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ के बाद महाराष्ट्र के भूतपूर्व राज्यपाल श्रीप्रकाश जी अब तक गुरुकुल के कुलपति थे परन्तु उनकी व्यस्तताओं और दुर्बल स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए सस्था ने इस अपने सर्वोच्च महत्वपूर्ण पद के लिये सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री, प्रसिद्ध साहित्यकार और महाकवि श्री डा० रामधारीसिंह जी दिनकर से सस्था का कुलपति बनने का अनुरोध किया। जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया और आज वह कुलपति के आसन पर विराजमान हैं। अपने हाथों से ही आज दीक्षा लेकर जा रहे नवीन स्नातकों को वह उपाधि वितरण करेंगे। मुझे विश्वास है कि दिनकर जी के सरक्षण में यह सस्था और भी अधिक उन्नति कर सकेगी।

कतिपय स्वीकृत प्रस्ताव

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी की अध्यक्षता में ११-४-६६ को मध्यान्होत्तर एक विराट राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ जिसमें श्रीयुत प० नरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री आदि नेताओं और विद्वानों के भाषण हुए।

पादरी स्काट को निकालो

सम्मेलन में पारित एक प्रस्ताव में भारत सरकार से अनुरोध किया गया कि पादरीस्काट और जयप्रकाश नारायण दोनों को नागालैंड की समस्या से सर्वथा पृथक् कर दिया जाय क्योंकि इन दोनों ने ही वहां की समस्याको विषमतम बनादिया है और पादरी स्काट ही नागालैंड की पृथकता वादी नीति के लिए जिम्मेवार हैं।

एक दूसरे प्रस्ताव में केन्द्रीय सरकार से आर्य समाज व एकता समिति को दिए गए पजाबी सूबा सम्बन्धी आश्वासनों को पूरा करने का अनुरोध किया गया। इस बातपर भी रोष प्रकट किया गया कि पंजाब में अब भी हिन्दुओं के साथ अन्याय किया जा रहा है।

एक अन्य प्रस्ताव में खाद्य समस्या के हल के लिए सम्पूर्ण देश में गो सदनों की स्थापना करने और गोवध निषेध कानून बनाने की जोरदार मांग की गई।

एक प्रस्ताव मे पाकिस्तान और चीन की साठ गांठ के कारण बढ़े हुए खतरे पर चिन्ता व्यक्त करते हुए राज्य व देश वासियों को प्रेरणा की गई कि वे विदेशी अस्त्र-शस्त्रों पर निर्भर न रहते हुए स्वदेश में ही निर्मित अस्त्र-शस्त्रों पर निर्भर रहे।

राजभाषा सम्मेलन

केन्द्रीय सूचना प्रसार मन्त्री माननीय श्री राजबहादुरजी की अध्यक्षता में निम्न प्रस्ताव पारित हुआ।

यह राजभाषा सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि देश मे भारतीय भाषाओं और विशेषकर हिन्दी की उन्नति के लिये कोई उच्च-स्तरीय कार्यक्रम तैयार करे। सम्मेलन की दृष्टि में हिन्दी भाषी राज्यों और केन्द्र के मध्य भी अभी तक हिन्दी के पूर्णतया प्रचलित न होने की बात समझ मे नही आई। राजभाषा को उसका अपेक्षित स्थान देने के लिये देश को हिन्दी भाषी राज्य, सम हिन्दी भाषी राज्य और अहिन्दी भाषी राज्यों की तीन श्रेणियों मे विभक्त करने के यदि प्रयास किये जाय तो शीघ्र सफलता मिलनी सम्भव है।

यह सम्मेलन भाषा जैसे कोमल और देश की एकता के आधारभूत प्रश्न को राजनीतिक हथियार बनाने की भी घोर निन्दा करता है। भारत की सब ही भाषाएं एक मां की पुत्री हैं। सबको मिल जुलकर और समान रूप से ही देश को आगे बढ़ाने में योग देना है। हिन्दी देश के अधिकांश भाग में बोली और समझी जाने से अंग्रेजी का स्थान लेगी। उससे किसी भी भारतीय भाषा को हानि अथवा आंच नहीं आयेगी। परन्तु चतुर राजनीतिज्ञों ने अपनी स्वार्थसिद्धि में आकर भारतीय भाषाओं को भी ऐसी स्थिति में लाकर खड़ा करने का दुष्प्रयास किया मानो वह आपस में एक दूसरे की प्रतिद्वन्द्वी हों। वैसे तो धीरे धीरे वह वातावरण स्वयं घट रहा है फिर भी इस ओर सतर्क रहना अपेक्षित है।

इस सम्मेलन की दृष्टि में भारतीय भाषाओं को निकट लाने के लिये मुख्यमन्त्री सम्मेलन में सर्वसम्मति से पारित उस प्रस्ताव को भी अब व्यवहारिक रूप देने की आवश्यकता है जिसमें कहा गया था—देवनागरी को सब भाषाओं की सामान्य वैकल्पिक लिपि स्वीकार किया जाय।

आर्य सम्मेलन में प्रस्ताव

माननीय श्री प० नरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में हुए आर्य सम्मेलन में निम्न प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

१—प्रत्येक आर्य को चाहिये कि वह अपनी सन्तानों को ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा के साथ वैदिक आचार की शिक्षा भी अवश्य दे तथा इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऋषि दयानन्द की भावनाओं के अनुसार गुरुकुलों में अपनी सन्तानों को अवश्य पढ़ावे।

२—आर्य समाज के उत्तर-दायित्वपूर्ण पदों पर वे ही व्यक्ति चुने जावें जिन्हें अपने कर्मकाण्ड का ज्ञान हो और जिनका जीवन सदाचारपूर्ण हो जिससे दूसरों पर उत्तम प्रभाव पड़ सके।

३—यह सम्मेलन गुरुकुल ज्वालापुर की (अहिन्दी भाषी) प्रदेशों के न्यूनतम पाच पांच छात्रों को गुरुकुल में शिक्षा देकर उन प्रदेशों मे योग्य प्रचारकों की कमी को पूरा करने की योजना का अभिनन्दन करता है और आर्य जनता से अनुरोध करता है कि वह इस महत्वपूर्ण योजना में तन मन धन से पूर्ण सहयोग दे। यह सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि विकट खाद्य समस्या के समाधान के लिये वह गोहत्या को अविलम्ब बन्द करे और देश के विभिन्न भागों में गो सदनों की स्थापना करे।

५—यह सम्मेलन जनता से अनुरोध करता है कि वह हिन्दी भाषा जिसे ऋषि दयानन्द ने आर्य भाषा कहा है उसके प्रचार के लिए अपने सभी व्यवहार हिन्दी भाषा में करें। तथा यह सम्मेलन सरकार से भी अनुरोध करता है कि वह समस्त शासकीय कार्य हिन्दी भाषा के माध्यम से ही करे क्योंकि हिन्दी ही भारतीय जनता की भाषा है।

———

मनुर्भव

श्री पं० रामस्वरूप जी पाराशर, बड़ौत (मेरठ)

[illegible] की [illegible] नेताओं के नेतृत्व और जनता के हार्दिक सहयोग एवं बलिदान के परिणाम स्वरूप आज हम स्वतन्त्र हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश ने औद्योगिक क्षेत्र में आशातीत प्रगति की, कई डैमों का निर्माण हुआ जो हमारी खाद्य समस्या एवं औद्योगिक प्रगति के समाधान का मुख्य साधन सिद्ध हो रहे हैं और होंगे। जलयान, वायुयान और वाष्पयान, रेलवे एन्जिन के कारखानों का प्रचलन हुआ, प्राकृतिक गैसों और तेल कूपों के अन्वेषण का एक जाल सा बिछ गया, पाकिस्तान के युद्धोन्माद को नष्ट करने वाले जेट विमान और टैंक जैसे युद्धोपयोगी समान बना कर आत्म निर्भरता की ओर पग बढ़ाने का सफल प्रयास किया। तीन पंच वर्षीय योजनायें बन चुकीं और अब चौथी की तैयारी है। यह सब विकास कार्य अरबों रुपये विदेशों से ऋण लेकर किये गये।

किन्तु जहां सरकार इस विकास की सड़क पर दौड़ लगाती जा रही है, वहां उसने यह सोचने का कभी कष्ट नहीं किया कि जिस प्रजा के लिये यह सब विकास किये जा रहे हैं उसके नैतिक उत्थान और विकास के लिये क्या किया जा रहा है। सरकार की दशा आज उस पिता की जैसी है जिसने अपनी सन्तान के जीवन को सुखमय बनाने के लिये करोड़ों रुपये जमा किये किन्तु इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि जिस सन्तान के लिये वह धन संग्रह कर रहा है वह चरित्रवान भी है या नहीं। यदि उसमें चारित्रिक दोष आ गये तो पिता द्वारा संग्रहीत करोड़ों रुपया कुछ वर्षों में ही वह आवारा सन्तान नष्ट-भ्रष्ट कर देगी। अतः धन एकत्र करने के साथ-साथ उसके चारित्रिक विकास पर न केवल कड़ी दृष्टि ही रखनी चाहिये अपितु उसे उन्नत करने का प्रत्येक साधन प्रयोग में लाना आवश्यक है। तीन पंचवर्षीय योजनायें बन चुकीं और चौथी अब क्रियान्वित होने जा रही है, इनमें और तो बहुत से निर्माणों की चर्चा है, किन्तु यदि कोई चर्चा नहीं है तो केवल 'मानव निर्माण' की। मानव का निर्माण हुये बिना संसार का निर्माण होगा न भारत का।

भ्रष्टाचार आज अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका है। धर्म-कर्म और नैतिकता को देश निकाला मिल चुका है। रिश्वत, चोर-बाजारी और दलबन्दी का बोल बाला है। स्कूलों और विशेषतया कालिजों में अध्ययन करने वाले छात्र और छात्राओं की बढ़ती हुई उच्छृंखलता देश के लिये आज सरदर्द बनी हुई है डकैतियों के मारे लोगों में भय और आतंक छाया हुआ है। कोई दिन नहीं जाता जिस दिन अपहरण, बलात्कार और निर्मम हत्याओं का हृदय विदारक विवरण समाचार-पत्रों में न छपता हो। मनुष्य के जीवन का मूल्य गाजर-मूली से अधिक नहीं रह गया। नित नई हड़तालें और तोड़-फोड़ पोलीस, के लाठी चार्ज, अश्रु गैस और गोलीकाण्ड साधारण बात बन गये हैं। सब ओर विनाश का ताण्डव नृत्य हो रहा है। कमर तोड़ महंगाई है। सुरसा की तरह बढ़ने वाले नये २ टैक्सों ने देश का कचूमर निकाल दिया है। सरकारी कार्यालयों में लालची तानाशाही का यह हाल है कि जब तक फाइल को चांदी के पहिये न लगें, तब तक वह आगे बढ़ती ही नहीं। सरकारी कर्मचारियों में कार्य क्षमता का अभाव है। कुनबा परस्ती और भाई-भतीजा वाद अपने यौवन पर है। देश की अवस्था आज उस मरे हुये पशु जैसी है जिसकी बोटी नोच-नोचकर खाने को चारों ओर से चील, गिद्ध, कुत्ते और कौवे एकत्र हो जाते हैं। देश वासियों का चारित्रिक पतन सम्भवतः इससे पूर्व इतना कभी नहीं हुआ था।

मनुष्य विचारों का पुतला है। जैसे विचार मिलते हैं वैसा ही वह हो जाता है, अथवा यों कहा जाय कि जैसा विचारता है वैसा बन जाता है। विचार बनते हैं शिक्षा और समाज से। पराजित जर्मनी ने अपनी पराजय के पश्चात् 'जर्मनी विजयी बनो' का उद्घोष घोषित कर चार छः वर्षों में ही अपने को इतना शक्ति शाली बना लिया कि बड़े २ शक्ति शाली राष्ट्रों से टक्कर ले सका। रूस ने अपनी रक्त रंजित महाक्रान्ति के उपरान्त कुछ वर्षों में ही संसारमें अपना विशेष स्थान बना लिया। अफीमची चीन भी अंगड़ाई लेकर खड़ा हो गया और आज सारे संसार विशेषतया एशिया के लिये हौवा बन गया है। किन्तु १८ वर्ष की स्वतन्त्रता के बाद भी हम चारित्रिक क्षेत्र में आगे बढ़ने के स्थान में पीछे हटे हैं। आज के शासन काल में हमारे अन्दर बहुत से चारित्रिक दोष उत्पन्न हुये किन्तु स्वतन्त्र भारत में तो हमारा अधःपतन सम्भवतः चरम सीमा तक पहुंच चुका है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

कई वर्ष हुये रूस ने भारत को चमड़े के जूतों का आर्डर दिया। जब माल वहां पहुंचा तो वह उस माल से जो नमूने के रूप में दिखाया गया था घटिया था। परिणामतः माल वापिस भेज दिया गया जिससे सहस्रों रुपये की आर्थिक हानि के अतिरिक्त देश की साख को गहरा धक्का लगा।

कुछ वर्ष हुए कि भारत की एक कम्पनीने अन्य देश के आर्डर पर पेंसिलों के स्थान पर दातुनें भेज दीं जिसका दुष्परिणाम तो उस कम्पनी ही को भुगतना पड़ा किन्तु बदनामहुआ राष्ट्र।

काका कालेलकर द्वारा सुनाई गई एक अमरीकन युवती की दुखद कहानी का उल्लेख यहां करना अप्रांसगिक न होगा। उस युवती का पत्र-व्यवहार उनसे चलता रहता था। भारत एक आध्यात्मिक देश है ऐसा उस पर प्रभाव था। इस सम्बन्ध में और अधिक ज्ञान प्राप्त करने की अपनी जिज्ञासा को वह रोक न सकी और अपने भारतीय मित्रों से अधिक जानकारी प्राप्त करने का यत्न करती रही। उनके द्वारा जो कुछ वह जान सकी वह यह कि भारत सन्तों, महन्तों तपस्वियों और त्यागियों का देश है। यहां के लोगों की ऊंची नैतिकता का संसार में सादृश्य नहीं है। इससे अत्यन्त प्रभावित होकर उसने अमरीका छोड़ कर सदा के लिये भारत में बसने का निश्चय कर लिया। उसके सम्बन्धियों, घर वालों और मित्रों ने उसे बहुत समझाया कि इस प्रकार हुल्लड़बाजी का सा निर्णय ठीक नहीं है। वह परदेश है। आयु का पता नहीं किस प्रकार जीवन यापन करेगी। लेकिन धार्मिक और आदर्श जीवन बिताने की धुन में उसने किसी की न सुनी। किन्तु जब भारत आई तो अपने स्वप्नों का भारत न पाकर मर्माहत हो गई। यहां का सब कुछ उसने विपरीत पाया, उसने देखा कि प्रत्येक व्यक्ति उसकी धार्मिक भावना से अनुचित लाभ उठाने का यत्न करता है। नैतिकता, स्वच्छता, ईमानदारी, कर्तव्य परायणता का यहां सर्वथा अभाव है। अन्ततः एक दिन जी भर कर वह खूब रोई किन्तु उससे बनता क्या था अमरीका लौट जाने का भी उसमें साहस न था।

किसी धार्मिक स्थान पर चले जाइये, आप देखेंगे कि जो सामग्री सर्व साधारण के उपयोगार्थ वहां नियत की गई थी, उसमें से बहुत सी या तो गायब है अथवा नष्ट भ्रष्टावस्था में है। रेल के डिब्बों में स्वराज्य प्राप्ति के बाद से पर्याप्त सुधार हुआ है। तीसरी श्रेणी के डिब्बे भी बिजलीके पंखे और फ्लशकी टट्टियां वस्त्र टांगने वाली खूंटियों, शीशे और बेसिन आदि से अलंकृत कर दिये गये है। परन्तु मजाल है कि यह सब जनोपयोगी सामान आप अपनी वास्तविक दशा में वहां पायें। यार लोगों ने कहीं पानी की टूटियों पर हाथ साफ किया है तो कहीं खूंटी पर, कहीं पेंच उड़ाये हैं तो कहीं पंखों के और बल्बों के स्विच कहीं २ तो शीशे और पानी वाले पाइपों को ही गायब कर दिया है। यह है नमूना हमारे समाजिक जीवन का।

आज सब ही पतित हो रहे हैं। सब के अन्दर यही एक भाव काम कर रहा है कि अत्यल्प समय और कम से कम पुरुषार्थ द्वारा वह मालामाल हो जायं। जिस देश के बड़े २ अधिकारी और महत्वपूर्ण पदों पर आसीन व्यक्ति चांदी के कुछ टुकड़ों के लिये अपने देश के सैनिक परराष्ट्र सम्बन्धी और व्यापारादि के भेद शत्रु देशों को बता कर अपने देश को नष्ट करके भी वैभवशाली बनने को लालायित हों उस देश का क्या बनेगा। यह बड़े २ डेम और पंच वर्षीय योजनायें उसे कब तक सुरक्षित रख सकेंगीं। देश की पतितोन्मुखी अवस्था देख कर ही तो कवि के मुख से निकल गया—

"कामना राम के राज्य की थी,
पर फूट घृणा बल पाने लगी है।
स्वार्थ की ऐसी बयार बही,
कि बहार भी आंसू बहाने लगी है।।
मानवता को तिलांजलि दे,
जनता नये रंग दिखाने लगी है।
भारत के दुर्भाग्य से हाय,
विनाश की ओर को जाने लगी है।।"

तो क्या यह रोग असाध्य है? मेरा उत्तर है 'नहीं।' फिर दूर करने का उपाय क्या है? उपाय है शिक्षा। शिक्षासे मेरा अभिप्राय केवल अक्षर ज्ञान या बहुपठित होना ही नहीं है। पांच

(शेष १० पर)

संस्कृत का अध्ययन राष्ट्र निर्माण की दृष्टि से रचनात्मक

शिक्षा में धार्मिक विचारों को स्थान मिलना चाहिये

गुरुकुल प्रणाली सर्वोत्तम, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के दीक्षान्त भाषण में केन्द्रीय रेल मन्त्री माननीय श्री सदाशिव कान्होजी पाटिल के उद्गार

कुलपति महोदय, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, देवियो और सज्जनो,

ज्वालापुर गुरुकुल के व्यवस्थापकों, विशेषकर यहां के कुलपति और अपने मित्र श्री प्रकाशवीर शास्त्री का मैं आभारी हूं कि उन्होंने इस संस्था के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मुझे आमंत्रित किया। लोकप्रिय शिक्षण संस्थाओं के निमन्त्रण को यथासंभव मैंने सदा शिरोधार्य किया है, और यह निमंत्रण तो एक ऐसी सार्वजनिक शिक्षण संस्था की ओर से था जो साठ वर्षों से जनता की सेवा कर रही है और जो हरिद्वार की पुनीत नगरी में स्थित है। इसलिए इसे मैंने बड़े हर्ष के साथ स्वीकार किया।

अपने गत चालीस से अधिक वर्षों के सार्वजनिक जीवन में मुझे अनेक शिक्षण संस्थाओं को देखने का सौभाग्य मिला है। महाराष्ट्र में सार्वजनिक समर्थन और उत्साह के बल पर स्थापित अनेक विद्यालय हैं। उनमें से कई विद्यालयों के साथ मेरा थोड़ा बहुत संबंध भी रहा है और अब भी है। इस कारण भी मेरी यह उत्सुकता रही है कि गुरुकुल पद्धति के अनुसार चलायी जाने वाली संस्थाओं को मैं निकट से देखूं। यह मेरे लिए संतोष का विषय है कि ऐसी ही एक प्रमुख संस्था में आने का मुझे आज अवसर मिला है।

गुरुकुल प्रणाली के संबंध में आप लोगों से कुछ कहना शायद मेरे लिए असंगत हो। फिर भी, यह तो मैं जरूर कहना चाहूंगा कि प्राचीन काल से हमारे देश की शिक्षण व्यवस्था में गुरुकुल पद्धति का कितना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मेरा यह मत है कि गुरुकुलों का उद्देश्य केवल लोगों को पढ़ाने और साक्षरता प्रसार करने का ही नहीं था। उन सब विचारों और आदर्शों की नींव भी गुरुकुलों में ही डाली जाती थी जिनके आधार पर भारतीय संस्कृति, हमारी सभ्यता और हमारी विचारधारा का कालान्तर में निर्माण हुआ। शिक्षा स्वयं साध्य है और साधन भी। साध्य इसे इसलिए माना जाता है कि मानव की आन्तरिक प्रवृत्तियां और अन्तर्निहित शक्तियां इसी के कारण विकसित होती हैं। विद्या से ही मनुष्य प्राणियों में श्रेष्ठ कहलाता है। संस्कृत साहित्य में विद्या को साध्य मानकर ही हमारे पूर्वज शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करते थे।

साधन के रूप में भी शिक्षा का स्थान जीवन में कम महत्वपूर्ण नहीं। मनुष्य में मानवी गुणों के विकास, चरित्र-निर्माण और उन सभी क्षमताओं के उदय का साधन शिक्षा ही है जो सामाजिक उन्नति और सुख समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। आज के युग में हम यह कह सकते हैं कि आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही प्रकार की प्रगति का सर्वोत्तम साधन सच्ची शिक्षा है। हजारों वर्षों से गुरुकुलों की शृंखला ने हमारे देश में विद्या और ज्ञान का प्रकाश सब ओर फैलाया है। जिसे संसार भारतीय दर्शन, सभ्यता और विचारधारा कहता है, उसके विकास में भी गुरुकुलों का हाथ था। इसलिए मैं समझता हूं कि आप लोग अपनी प्राचीन परम्परा पर गर्व कर सकते हैं।

यह मैं मानता हूं कि अन्य सार्वजनिक संस्थाओं की तरह गुरुकुलों के लिए भी समय के अनुसार चलना आवश्यक है। हमारे पूर्वजों ने जिन अनेक धर्मों को स्वीकार किया था उनमें एक कालधर्म भी है। काल अथवा समय के अनुसार कार्य करने को ही श्रेष्ठ माना गया है। मुझे बहुत खुशी है कि इस गुरुकुल के व्यवस्थापकों ने शिक्षा में जहां भारतीय विचारधारा और धार्मिक तत्व को ऊंचा स्थान दिया है, वहां सामयिक विषयों की भी अवहेलना नहीं की है। विद्यार्थियों को यहां देश विदेश की सामयिक गतिविधि से ही परिचित नहीं कराया जाता, वर्तमान परिस्थितियों का अध्ययन करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। मैं समझता हूं यही कारण है कि अन्य भाषाओं के साथ अंग्रेजी के अध्ययन की भी यहां अनिवार्य रूप से व्यवस्था की गई है। इसे मैं व्यवस्थापकों की व्यवहारकुशलता और दूरदर्शिता ही कहूंगा।

आज के युग में निस्सन्देह विदेशी भाषाओं, विशेषकर अंग्रेजी जैसी विश्वव्यापी भाषा के अध्ययन का बहुत महत्व है। अंग्रेजी भाषा का ज्ञान-विज्ञान की आधुनिक प्रवृत्तियों से विशेष संबंध है। यद्यपि हम अपनी भाषाओं को ठीक ही सर्वप्रथम स्थान देते हैं, और यह होना भी चाहिए, फिर भी अपने विद्यार्थियों के लिए और भारत की भावी सन्तानों के लिए हमें ज्ञान के किसी भी द्वार को बन्द नहीं करना चाहिए। इसी में देश का कल्याण है और इसी में सच्ची शिक्षा की सार्थकता है।

भले ही मुझे कोई परम्परावादी कहे, किन्तु संस्कृत के संबंध में मैं अपने स्वतन्त्र विचार आप लोगों के सामने रखना चाहता हूं। सभी आधुनिक भाषाविज्ञ संस्कृत को एक महान भाषा मानते हैं, पर हमारे लिए संस्कृत भाषा मात्र नही है। हमारे लिए संस्कृत हजारों वर्ष से इस देश के लोगों के चिन्तन और उनकी उपलब्धियों की सुरक्षित निधि के समान है। यही नहीं, इस भूखण्ड को एक देश के रूप में भारत की संज्ञा भी संस्कृत के कारण ही मिली और संस्कृत के प्रताप से ही व्यापक विभिन्नताओं और विविधताओं के होते हुए यह विशाल भूखण्ड अपनी एकता को बनाये रख सका है। विभिन्नताओं में राष्ट्रीयता तथा एकता का सूत्रपात जिन कारणों से भारतीय जीवन में हुआ, मैं समझता हूं संस्कृत का अध्ययन और प्रसार उनमें सर्वप्रथम है। आश्चर्य की बात यह है कि राष्ट्रीय एकता को दृढ़ बनाये रखने की शक्ति संस्कृत भाषा में जितनी प्राचीन और मध्य युग में थी उतनी ही वर्तमान युग में भी है। आज भी जब कि बहुत सी प्रादेशिक भाषाएं उन्नत हो चुकी हैं और उनके साहित्य समृद्ध हो चुके हैं, संस्कृत ही हमारे लिए समान रूप से प्रेरणा और एकरूपता का स्रोत है। इसलिए मैं संस्कृत के अध्ययन और अध्यापन को राष्ट्र-निर्माण की दृष्टि से रचनात्मक कार्य मानता हूं।

उत्तर भारत में संस्कृत के अध्ययन की परम्परा को जीवित रखने की दिशा में गुरुकुलों ने जो कार्य किया है वह प्रशंसनीय है। इस समय संस्कृत के साथ-साथ आप लोग हिन्दी के विकास और प्रसार में भी पूर्ण योगदान दे रहे हैं, यह और भी अच्छी बात है। हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा है और देर-सबेर इसे भारत में वही स्थान प्राप्त होगा जो किसी भी स्वतंत्र और स्वाभिमानी देश में राष्ट्रभाषा को मिलना चाहिए। यह खुशी की बात है कि साहित्य, इतिहास, दर्शन आदि साधारण विषयों के साथ-साथ विज्ञान के अध्ययन का माध्यम भी आपके गुरुकुल में अधिकतर हिन्दी ही है। विज्ञान को जनसाधारण तक पहुंचाने और स्वयं हिन्दी को विकास के शिखर तक ले जाने का यही एकमात्र उपाय है।

यहां मैं अपनी ओर से एक सुझाव देना चाहता हूं। यद्यपि यह गुरुकुल देश के उत्तरी अंचल में स्थित है, यहां पढ़ने वाले पांच सौ विद्यार्थियों में से बहुत से देश के अन्य भागों से आये हैं। बहुत से विद्यार्थी अहिन्दी भाषी हैं, किन्तु वे दूसरे विद्यार्थियों की तरह हिन्दी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि देश की दूसरी प्रादेशिक भाषाओं के अध्ययन की सुविधा यहां आसानी से हो सकती है। अन्य भारतीय भाषाओं के पठन-पाठन से जहां सभी विद्यार्थियों को लाभ होगा, वहां इस विद्यालय के वातावरण में और विद्यार्थियों के मानसिक दृष्टिकोण में यथेष्ट उदात्त भावना का भी सृजन होगा। यही भावना भारतीय राष्ट्रीयता और देश की एकता की बुनियाद है। ऐसी व्यवस्था से विद्यार्थियों को ही नहीं, बल्कि संपूर्ण राष्ट्र को लाभ पहुंचेगा। एक दूसरे को समझने के लिए दूसरों की भाषा जानना बड़ा आवश्यक है। भाषा ही मनुष्य की अन्तरात्मा और आन्तरिक विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। इसी कारण हमारे विद्यार्थियों का बहुभाषाविद् होना राष्ट्रहित में और उनके निजी मानसिक विकास की दृष्टि से बहुत जरूरी है। मेरा यह सुझाव है कि—

(शेष पृष्ठ ९ पर)

कुरान और गोवध

[ले० आचार्य डा० श्रीरामजी आर्य, कासगंज,उ०प्र०]

इस्लाम के धर्म ग्रन्थ 'कुरान शरीफ' का हमने अनेक बार परायण किया है उसमें हमको एक भी ऐसा स्थल नहीं मिला है जिस में गोवध का आदेश दिया गया हो। कुछ स्थल ऐसे तो हैं जिनमें गौवध की घटना का उल्लेख है, पर उनसे इस कर्म की व्यवस्था सिद्ध नहीं होती है। हम वे सभी स्थल नीचे उद्धृत करते हैं—

"फिर तुमने उनके पीछे (पूजने के लिये) बछड़ा बना लिया, और तुम जुल्म कर रहे थे। ५१। जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि तुमने बछड़े की पूजा करके अपने ऊपर जुल्म किया तो अपने सृष्टिकर्ता के सामने तौबा करो······।५४। मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह तुम से फर्माता है कि एक गाय हलाल करो। वह कहने लगे कि क्या तुम हम से हंसी करते हो। (मूसा ने) कहा कि खुदा मुझ को अपनी पनाह में रखे कि मैं ऐसा नादान न बनूं।६७। वह बोले अपने परवर्दिगार से हमारे लिये दरख्वास्त करो कि हमें भली भांति समझा दे कि वह कैसी हो। (मूसा ने) कहा कि खुदा फर्माता है कि वह गाय न बूढ़ी हो और न बछिया हो, दोनों के बीच की रास, पस तुम को जो हुक्म दिया गया है उस को पूरा करो।६८।··· मूसा ने कहा कि उस का रंग खूब गहरा जर्द हो कि देखने वालों को भला लगे।६९। वह न तो कमेरी हो कि जमीन जोतती हो और न खेतों को पानी देती हो, सही सालिम उसमें किसी तरह का दाग (धब्बा) न हो। वह बोले, हां। अब तुम ठीक पता लाये। गरज उन्होंने गाय हलाल की, और उनसे उम्मेद न थी कि ऐसा करेंगे।७१। (और ऐ याकूब के बेटो) जब तुमने एक शख्स को मार डाला और झगड़ने लगे... ।७२। पस हमने कहा कि गाय का कोई टुकड़ा मुर्दे को छुआ दो इसी तरह खुदा कयामत में मुर्दों को जिलायेगा। वह तुमको अपनी कुदरत का चमत्कार दिखाता है ताकि तुम समझो।७३।" कु० सूरे बकर पारा १।।

"इब्राहीम ने देर न की और भुना हुआ बछेड़ा ले आया।"१२। कु० सूरे हूद पा० १२।"इब्राहीम अपने घर को दौड़ा और एक बछेड़ा घी में तला हुआ ले आया।२६। फिर उनके सामने रखा और (महमानों से) पूछा क्या तुम नहीं खाते?"

कु० सूरे जारियात। पारा २७।।

समीक्षा—ऊपर की आयतों से स्पष्ट है कि अरब में उस युग में गौ की पूजा हुआ करती थी। लोग उस का बड़ा आदर किया करते थे। कुरान शरीफ में गाय या बछड़े की ही पूजा होने का उल्लेख मिलता है, अन्य किसी भी पशु के सत्कार का उसमें उल्लेख नहीं है। यह दूसरी बात है कि मांसाहारी होने से अरब के मूसा व इब्राहीम परिवार के लोग अन्य ऊंट आदि पशुओं के समान गौ व बछड़े को भी मार खा जाते थे। समस्त कुरान में ऊपर की एक घटना के उल्लेख के अतिरिक्त गौ वध की कोई व्यवस्था वा आदेश नहीं मिलता है। गौ वध के लिये मूसा ने गौ भक्त लोगों के हृदय में से गौ पूजा की भावना निकालने के लिये खुदा के नाम पर उन भोले लोगों को बहका कर गौहत्या करायी थी, यह बात उक्त वर्णन से स्पष्ट है। क्योंकि लोगों ने पहिले मूसा की बात को मजाक समझा था। वे हत्या को तैयार नहीं थे। खुदा को भी कुरान में कहना पड़ा था कि 'अगर्चे उनसे यह उम्मीद नहीं थी कि वे गौवध कर डालेंगे। कुरान के अनुसार लोग मूसा के झांसे में आगये थे।

इसके बाद कुरान बताता है कि गाय के गोश्त के स्पर्श से ही मुर्दा-जिन्दा हो गया था। इसका अर्थ यह हुआ कि गाय के दूध-रक्त-गोश्त सभी की उपयोगिता कुरान को स्वीकार है। ऐसी दशा में गौ की हत्या कर के उसे समाप्त करने की मूर्खता न करके उसके दुग्ध से प्राणियों का कल्याण किया जावे यही सर्वोत्तम बात होगी।

कुरान सूरे हूद जारियह के ऊपर के उद्धरणों से केवल इब्राहीम के गौ भक्षक होने का प्रमाण मिलता है। साथ ही इब्राहीम के महमानों से यह पूछने से कि क्या तुम (गौ-मांस) को नहीं खाते हो' यह प्रगट है कि अरब के उस युग के लोग भारत के आर्यों के समान ही गौ पूजक (गौ भक्त) थे। वे गौवध को पाप मानते थे। इब्राहीम और मूसा ने शरारत करके गौवध की प्रथा अरब में चालू कराकर जनता में से गौ भक्ति की भावना को मिटाने का पाप किया था।

कुरान या किसी भी पुस्तक में किसी अच्छी या बुरी ऐतिहासिक घटना का अथवा कपोलकल्पित वर्णन हो जाने से कोई बात व्यवस्था अथवा सर्वमान्य तथा अनुकरणीय नहीं बन सकती है जब तक कि उस बात के आचरण की स्पष्ट व्यवस्था न हो।

अतः सिद्ध है कि गौवध कुरान सम्मत नहीं है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

इस गुरुकुल के सभी विद्यार्थियों को हिन्दी के साथ-साथ एक और भारतीय भाषा का ज्ञान अनिवार्य रूप से कराया जाना चाहिए। ऐसी ही कुछ वर्षों से भारतीय सरकार की नीति भी रही है।

स्वाधीन भारत में शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली क्या हो, यह विषय विवादास्पद हो सकता है, किन्तु इस सम्बन्ध में दो मत नहीं हो सकते कि शिक्षा में धार्मिक विचारों और आध्यात्मिक मूल्यों को भी स्थान मिलना चाहिए। मैं यहां धार्मिक शब्द का प्रयोग संकीर्ण अर्थों में नहीं कर रहा हूं। मेरा अभिप्राय ईश्वर में आस्था और नैतिक कर्तव्य की चेतना से है। व्यक्ति अपने हित में और समाज की उन्नति के हित में जो कुछ भी करता है, धार्मिक तथा नैतिक धारणाओं से उसका निकट का सम्बन्ध है। कर्त्तव्यपरायणता की कल्पना का आधार ही नैतिकता है और स्वयं नैतिकता बहुत हद तक हमारी धार्मिक मान्यताओं और वैयक्तिक तथा सामाजिक आचरण पर आधारित है। इसलिए मेरे विचार से पार्थिव शिक्षा के साथ-साथ आप लोग इस विद्यालय में यदि धार्मिक शिक्षा पर भी जोर देते हैं, यह बात प्रशंसनीय है। इसी प्रकार हम विद्यार्थियों को मानवोचित गुणों और उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित कर सकते हैं। इस दिशा में आपका कार्य अनुसरणीय है और मैं आशा करता हूं कि अन्य शिक्षण संस्थाएं आपसे कुछ सीखने का यत्न करेंगी।

स्वयं शिक्षा के क्षेत्र में हमारी परम्पराएं प्राचीन ही नहीं बहुत व्यापक और ऊंची भी हैं। विद्यार्थी को आरम्भ से ही यह सिखाया जाता था कि माता-पिता, आचार्य और अभ्यागत पूज्य हैं और वे उसके लिए देव-तुल्य हैं। हमारे धर्म ग्रन्थों में इस बात की चर्चा की गयी है। उपनिषदों में विद्यार्थी को सम्बोधित कर के कहा गया है :—

मातृ देवो भव, पितृ देवो भव।
आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव।।

उपनिषदों का यह उपदेश अनेक शताब्दियां बीत जाने के बाद भी हमारे लिए पहले जैसा ही उपयोगी और सामयिक है। जब कभी देश के किसी भाग में आजकल अनुशासन-हीनता देखने में आती है, तो मुझे उपनिषद् की यह सूक्ति याद आ जाती है। मेरी यह धारणा है कि शिक्षणकार्य को अधिक से अधिक लाभप्रद और उपादेय बनाने के लिए यह आवश्यक है कि गुरु और शिष्य के पारस्परिक संबन्धों का धरातल उचित हो। हमें गुरु-शिष्य की पुरानी परम्परा को आजकल की परिस्थितियों के अनुसार पुनर्जीवित करना होगा। तभी गुरुजन आदर के पात्र बन सकेंगे और तभी विद्यार्थी अध्यापकों के पथ-प्रदर्शन से पूरा लाभ उठा सकेंगे। ऐसी स्थिति में अनुशासन में आस्था स्वाभाविक रूप से होगी और अनुशासनहीनता के उभरने का मौका बहुत कम रहेगा।

आप लोगों के दीक्षान्त समारोह संबन्धी कार्यक्रम को देख कर यह भास होता है कि प्राचीन पद्धति के अनुसार यहां गुरु-शिष्य परम्परा के आदर्श को अपनाया गया है। इस दृष्टि से भी अन्य शिक्षण संस्थाओं को इस गुरुकुल की प्रणाली का अनुकरण करना चाहिए। अच्छी बात और गुण जहां से भी मिलें उन्हें अपनाने में संदेह करना ठीक नहीं। आधुनिकवाद अथवा प्रगतिवाद का यह अर्थ नहीं कि प्रत्येक प्राचीन अथवा परम्परागत विचार को तिरस्कृत किया जाय। आधुनिक और प्राचीन के व्यावहारिक और समुचित समन्वय से ही हम आज की स्थिति में मार्ग-दर्शन की आशा कर सकते हैं।

(पृष्ठ ७ का शेष)

यमों और पांच नियमों का यथा संभव पालन ही सच्ची शिक्षा है। इनका नियमित पालन करने से मनुष्य नीचे से ऊपर को चढ़ता है। समाजवादी समाज की यह आधार शिलायें हैं। पांच यम हैं (१) अहिंसा अर्थात् केवल अपने स्वार्थ के लिये किसी को न पीड़ा पहुंचानी न किसी से वैर करना (२) सत्य, जो वस्तु जैसी हो उसे वैसा ही कहना और अपनाना। (३) अस्तेय कि जिस वस्तु पर अपना स्वत्व न हो उसे अनुचित साधनों द्वारा प्राप्त करने का यत्न करना-अपने मनोगत विचारों को अन्यथा करके प्रकट करना (४) ब्रह्मचर्य, सत्य, सात्विक आचार एवं व्यवहार (५) अपरिग्रह आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना पांच-नियम निम्न प्रकार हैं:—शौच सफाई बाहरकी एवं भीतरी अर्थात् मन और शरीर की (२) सन्तोष-दूसरे को उन्नतावस्था में देखकर उससे ईर्ष्या न करे स्वयं भी उन्नत होने का यत्न करना (३) तप-किसी ऊंचे और अच्छे काम को करने का निश्चय कर उसकी पूर्ति में उत्पन्न होने वाले विघ्न और बाधाओं को सहर्ष झेल कर आगे बढ़ते जाना (४) स्वाध्याय नैतिकता और आस्तिक्य को प्रोत्साहन देने वाले ऊंचे और धार्मिक ग्रन्थों का पढ़ना एवं रोज अपने जीवन की पड़ताल करना (५) ईश्वर प्रणिधान-परमात्मा को सर्वव्यापक, सर्वस्रष्टा और सर्वद्रष्टा मान कर बुराइयों से बचना और उसके गुणों को अपने जीवन में यथा शक्ति ढालने का सतत यत्न करना यह है पांच यम और नियम। यह यम नियम विश्वास मात्र के नहीं अपितु जीवन में व्यवहृत करने के सिद्धान्त हैं सर्वसाधारण को इनके पालन में तत्पर करने की प्रेरणा ही सच्ची शिक्षा है। इसी से इस पतितोन्मुख भारत का कल्याण होगा। यदि शिक्षण संस्थाओं के पालन का यथाशक्ति प्रयत्न और अभ्यास कराया जाय तो हमारी नैतिक बुराइयों का उन्मूलन असंभव नहीं। शिक्षण संस्थाओं के अतिरिक्त प्रेस और प्लेट फार्म दोनों को बलि में लाये बिना इन सिद्धान्तों को प्रचारित करना कठिन है। खेद है कि हमारी राष्ट्रीय सरकार की ओर से आज जिस प्रकार के साहित्य-सृजन को प्रोत्साहन दिया जा रहा है और शिक्षण संस्थाओं में जो पुस्तकें पाठ्यक्रम में रक्खी जा रही है यम-नियम की उच्च भावनाओं को परिमार्जित करने के स्थान में उनका मूलोच्छेदन करने वाली है। पाठ्य पुस्तकों में मांस, अण्डे, मछली आदि के सेवन को खुला प्रोत्साहन दिया जा रहा है, चल चित्रों द्वारा न केवल हमारी उच्च और नैतिक परम्पराओं को समाप्त ही किया जा रहा है अपितु कई बार तो उनके द्वारा हमारा भद्दा उपहास भी किया जाता है। और यह सब होता है प्रगतिशीलता के नाम की आड़ में। 'दुनियां का मजा ले लो, दुनिया तुम्हारी है, दुनिया से डरोगे तो दुनियां डरायेगी—दुनियां को लात मारो, दुनियां सलाम करें आदि गाने यदि युवक और युवतियों में उच्छृंखलता पैदा न करेंगे तो क्या युवक और युवतियों को संयम में रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करने में सहायक बन सकेंगे। वासनात्मक प्रेम के अश्लील गाने और रोमांकित चरित्र चित्रण क्या सदाचार की जर्जर भित्ति को खड़ा रहने देंगे? उत्तर है, कदापि नहीं।

सुधार कम और बिगाड़ अधिक हो रहा है। मानना पड़ेगा कि रोग कष्ट साध्य है किन्तु असाध्य नहीं। किसी कवि के शब्दों में 'आवेंगे और रसालम में और कोकिला डारन में कुहकेंगे एक दिना न तु एक दिना। इस भारत के दिन फेर "फिरेंगे।"अतः हमें आशा रखनीचाहिये कि कालान्तर में कोई ऐसी सरकार भी आवेगी जो भारत की नष्ट प्राय नैतिकता को संबल देगी।

वर्तमान राजनीतिक दलों को देखकर तो यह विश्वास करने का साहस नहीं होता कि उनमें से कोई इस नैतिक पतन से भारत का उद्धार कर सके। साम्प्रदायिक संस्थाओं से जिनकी केवल अपने सम्प्रदाय विशेष की सुख सुविधाओं तक ही सीमित है। इसकी चिकित्सा की कोई आशा नहीं। अलबत्ता महात्मा गांधी जैसा कोई राजनीतिक नेता यदि आ जाय जिसकी राजनीति धर्म पर आधारित हो और जो स्वयं नैतिकता का अवतार हो तो राष्ट्र व्यापी इन बुराइयों का उन्मूलन संभव है अन्यथा केवल आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जो इस रोग की सफल चिकित्सा कर सकती है।

इस संक्रान्तिकाल में यदि आर्य समाज सजग और सचेष्ट न हुआ तो भारतीय संस्कृति और नैतिकता का निस्तार होना तथा त्याग और बलिदानों से अर्जित स्वाधीनता का स्थिर रख सकना कठिन है। अंग्रेज के शासन काल में आर्यसमाज ने अपने प्रेस और मौखिक प्रचार एवं शिक्षण संस्थाओं द्वारा जन मानस में बड़े ऊंचे और सात्विक विचारों का सृजन किया था। उसी शिक्षण और विचार धारा की आज देश को आवश्यकता है। पहले यम-नियम की शिक्षा द्वारा मनुष्य का निर्माण हो। मनुष्य का निर्माण होने पर संसार और भारत का निर्माण स्वयमेव हो जायगा। इसी लिए महात्मा मनु ने कहा है।

प्रजातन्त्र का सुसंचालन कैसे होता है?

श्री रघुनाथप्रसाद जी पाठक

भारत वर्ष संसार के सबसे बड़े प्रजातन्त्रों में दूसरे नम्बर पर है। पिछले कुछ अपवादों को छोड़कर प्रायः सभी देशों में यह परीक्षण असफल सिद्ध हुआ और अधिनायकवाद आ धमका। प्रजातन्त्र की सफलता के लिए नागरिकों का नागरिकता के गुणों से और राजनयायिकों का राजनीतिज्ञता से ओतप्रोत होना आवश्यक होता है और इसके लिए पर्याप्त प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

भारत में प्रजातन्त्र की सफलता के लिए वे लोग बड़े लालायित हैं जो स्वयं प्रजातन्त्र व्यवस्था के पृष्ठ पोषक एवं अनुयायी है। परन्तु १८ वर्ष के परीक्षण से ऐसा लगता है कि यहां इस व्यवस्था का सफल होना दुष्कर है। पार्टियों की खींचातानी और देश के हित को पार्टियों के हितों और व्यक्तिगत स्वार्थों पर बलि चढ़ा दी जाने से भाषायी निष्ठा, स्थानीय एवं जातीय और वर्गीय भावनाओं आदि विघटन कारी तत्वों को प्रोत्साहन मिलने से शासन एवं प्रजा में व्याप्त घोर भ्रष्टाचार एव शिथिलता की व्याप्ति से एक प्रकार से अराजकता की स्थिति उपस्थित हो गई और प्रशासन पद्धति में मौलिक परिवर्तन कर देने की मांग उठने लगी है। जिससे कि स्वतन्त्रता की रक्षा और देश वासियों का हित हो।

निस्सन्देह प्रजातन्त्र की पद्धति सर्वोत्कृष्ट पद्धति है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह पद्धति समानता की भावना पर आश्रित है। समानता का अर्थ यह नहीं कि सभी व्यक्ति एक स्तर पर आ जांय। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य के वैयक्तिक एवं समष्टिगत योग क्षेम में कोई व्यवधान उपस्थित न हो। हमने संसदीय प्रणाली अपनाई हुई है। प्रजातन्त्र का संचालन राजनीति दल करता है। प्रजातन्त्र पद्धति में मौलिक त्रुटि भी नहीं होती। दलीय शासन भी इतना बुरा नहीं होता। राजनैतिक दल होते हैं। बुराई दलीय भावना में होती है जो देश और समाज के दूरवर्ती हितों को दलीय हित के अधीन कर देने में भी आगा पीछा नहीं देखती। यही इस प्रणाली की सबसे भयंकर कमी बताई जाती है।

प्रजातन्त्र का सुसंचालन ज्ञानवान, सदाचारी एवं देश के हितों को व्यक्तिगत एवं दलीय हितों से ऊपर रखने वाले महानुभावों से ही सम्भव होता है। राजनैतिक दल भी वही वरदान बनता है जो विशेष मामलों की तुलना में साधारण से साधारण मामलों पर और व्यक्ति की तुलना में सिद्धान्तों एवं आदर्शों पर ध्यान रखता है।

प्रत्येक देशवासी और प्रत्येक उस व्यक्ति को जो राजनीति में पैर रखता है इतिहास की सच्चाइयों और चेतावनियों को पल्लेमें बांध लेना चाहिए। अमेरिका के प्रेसीडेन्ट वाशिंगटन ने अपने देश वासियों को उन अवस्थाओं में जिनमें हमारा देश आज ग्रसा है एक कठोर चेतावनी दी थी। उन्होंने कहा था कि जिस स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए हमने रक्त बहाया है, अपार धन खर्च किया है यदि उसकी रक्षा करनी है तो हमें दलीय भावना और स्थानीय एव जातीय निष्ठा के शैतान को दूर भगाना होगा। यही चेतावनी भारतीयों को दी जा सकती है तभी प्रच्छन्न रूप में बस्तियों का प्रचार और उसका पक्ष समर्थन करना बन्द होगा। इस प्रकार की अनेकानेक भूलों में पंजाबी सूबे के निर्माण की स्वीकृति है। जिसके दुष्परिणाम दो रूपों में प्रजा के सामने आयेंगे परन्तु उस समय जबकि प्रजा का अमित अहित हो चुका होगा।

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

प्रचारक चाहिए

आर्यसमाज डिहरी, आन-सोन (बिहार) को एक भजनोपदेशक की आवश्यकता है।

आर्यसमाज बड़ा बाजार कलकत्ता

का वार्षिकोत्सव दिनांक २८ अप्रेल से ३ मई तक मुहम्मद अली पार्क मे होगा। इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, मद्य निषेध सम्मेलन, तथा गो रक्षा सम्मेलन होगे।

आर्यसमाज करौल बाग

नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनांक ७ ८-९ मई को होगा। उत्सव से पूर्व ता० २१ अप्रैल से ७ मई तक रात्रि के ८। बजे से श्री प० बुद्धीराम जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब वेदों की कथा करेंगे।

आर्यसमाज सरायतरीन

हयातनगर के चुनाव मे श्री बा० मित्रानन्द जी मुख्तार प्रधान तथा श्री म० बिहारीलाल जी मन्त्री निर्वाचित हुए।

आर्यसमाज रामाकृष्णापुरम्

नई दिल्ली के निर्वाचन मे श्री हरवशलाल जी पुरी प्रधान तथा श्री देवीचरण जी बमल मन्त्री चुने गए।

आर्य स्त्री समाज नारायणगढ़

के निर्वाचन मे श्रीमती सोमादेवी जी प्रधाना तथा श्रीमती दयावती जी मन्त्राणी निर्वाचित हुई।

आर्यसमाज रायपुर

के चुनाव मे श्री अनन्तराम जी आर्य प्रधान तथा श्री दयालदास जी विद्यार्थी मन्त्री चुने गए।

बकरों का बलिदान बन्द

— आर्य मेला प्रचार समिति (शिवकरी) दीक्षितपुर की ओर से शिवकरी मेले मे प्रचार किया। फलस्वरूप दो तीन सो बकरो का बलिदान बन्द हो गया।

इस अवसर पर श्री बेचनसिंह जी के नेतृत्व में एक शिबर लगा जिसमे ५५ आर्य वीरों ने भाग लिया।

आर्यसमाज, पानीपत का वार्षिक उत्सव ता० १३-१४-मई को समारोह पूर्वक होगा।

आर्यसमाज लोहरदगा

(बिहार) का ३५ वा वार्षिकोत्सव स्थान धर्मशाला मे धूम-धाम से मनाया गया।

—आर्यसमाज खड़वा के अन्तर्गत दलितोद्धार समिति की ओर से चिरायपुरा ग्राम म १२५ ग्राम के पचो की सभा मे बलाही जाति के सुधार के लिए श्री पूनमचन्द जी आर्य श्री सुखराम जी आर्य सिद्धान्त शास्त्री ने सारगर्भित भाषण दिये और सैकडो धार्मिक पुस्तके वितरित की।

भूल सुधार

सार्वदेशिक के गतांक २१ मे पृष्ठ १३ पर अखिल भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा छपा है। होना चाहिए अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा (रजि०) देहली।

कृपया, पाठक सुधार ले।

सम्पादक

आर्यसमाज स्थापना दिवस

के उपलक्ष्य का दान भेजें। प्रतिवर्ष आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को सभी आर्यसमाजें अपने-अपने सदस्यो से धन सग्रह करक भेजते हैं। एक वर्ष मे केवल एक बार ही सभा आर्य जनता से दान लेती हैं।

अत जिन आर्यसमाजो ने अभी तक अपना-अपना भाग नही भेजा है, वह कृपया भेजने मे शीघ्रता करें।

रामगोपाल शालवाले
मन्त्री सभा

जिन्हें महर्षि के दर्शन हुए थे

हकीम सोनूराम जी दिवंगत

सोनीपत मे जठोई के रहने वाले श्री हकीम सोनूराम जी ११५ वर्ष की आयु मे दिवगत हो गए। हकीम जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के दर्शन किये थे।

हकीम जी के आहार मे दो सेर दूध और एक छटाक मक्खन था। हकीम जी के परिवार मे सौ से अधिक पोते-पड़पोते हैं। इनके ८२ वर्षीय पुत्र श्री नन्दलाल जी हकीम स्वस्थ हैं।

नव मुसलिम शुद्ध

भारतीय हिंदू शुद्धिसभा दिल्ली के तत्वावधान मे ग्राम आलमपुर जिला शाहजहापुर मे २७-३-६६ को ६४ नवमुसलिमो ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। उन्हे उनकी राजपूत बिरादरी मे मिलाया गया।

—ग्राम नवदिया मे १३ नव मुसलिम वैदिक धर्म मे दीक्षित हुए। ग्राम के ठाकुर और ब्राह्मणो ने पूरा सहयोग दिया। सहभोज हुआ।

उत्सव

आर्यसमाज, पटेलनगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव ३० अप्रैल से २ मई तक मनाया जावेगा जिसमे अनेक विद्वान् नेता भाग लेंगे। ता० २४ अप्रैल को मध्यान्ह ३ बजे से शोभा यात्रा निकलेगी।

ता० २४ अप्रैल स १ मई तक ब्रह्मपारायण यज्ञ होगा जिसमे गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारी गण सस्वर वेद पाठ करेंगे।

आर्यसमाज नंगल

टाउनशिप का वार्षिकोत्सव ता० ८ से १० अप्रैल तक बडी धूम-धाम से हुआ। अनेक विद्वानो के भाषण हुए। ता० २ से ७ अप्रैल तक कथा हुई।

उत्सव

आर्यसमाज नवाबगज (बरेली) का उत्सव धूम-धाम से मनाया गया।

—आर्यसमाज खासपुरा मे श्री चौ० शिवचरणसिंह जी की अध्यक्षता मे आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

--आर्य समाज समस्तीपुर का उत्सव १८ से २१ अप्रैल तक समारोह से सम्पन्न हुआ।

-आर्यसमाज टोणी देवी (कागडा) का वार्षिकोत्सव बडी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। अनेक विद्वानो के उपदेश और भजन हुए। १०१) वेद प्रचार के लिए दिये।

—आर्य समाज गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव दिनांक २४-२५ २६ अप्रैल को कम्पनी बाग मे मनाया जावेगा। अनेक विद्वान्— पधारेंगे।

—आर्यसमाज आलमपुर का वार्षिकोत्सव २३ से २७ मार्च तक धूम धाम से सम्पन्न हुआ। अनेक विद्वान्-नेता और संन्यासी तथा भजनीको के प्रवचन हुए।

दि० २८-२९-३० मार्च तक अली गजमे वैदिक धर्म प्रचार हुआ।

--आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला पीलीभीत के चुनाव मे श्री रामबहादुर जी एडवोकेट (पूरनपुर) प्रधान और श्री प्रेमचन्द जी पूरनपुर मन्त्री चुने गए।

--आर्यसमाज पूरनपुर के चुनाव मे श्री गडाराम जी प्रधान तथा श्री सियाराम जी मन्त्री चुने गए। श्री रतनलाल जी अधिष्ठाता भूसम्पत्ति, श्री चुन्नीलाल जी अधिष्ठाता-धर्मशाला तथा श्री डा० सुरेशसिंह जी पाठशाला अधिष्ठाता हुए।

चुनाव

—आर्यसमाज, साहूपुरी (वाराणसी) के चुनाव मे श्री डा० रामखेलावन जी आर्य प्रधान तथा श्री बद्रीनारायणराय जी मन्त्री चुने गए।

—आर्यसमाज एच० बी० ३५७ रेलबाजार छावनी कानपुर के चुनाव मे श्री होशियारसिंह जी मलिक प्रधान और श्री शम्भूराय जी शास्त्री मन्त्री चुने गए।

– आर्यसमाज हैवी इलेक्ट्रिकल्स भोपाल के चुनाव मे श्री केशवदेव जी सेठी प्रधान तथा श्री गोविन्दलाल जी मन्त्री सहित कुल १५ अधिकारी चुने गए।

—आर्यसमाज पिलानी (राजस्थान) के चुनाव मे श्री युधिष्ठिर जी भार्गव प्रधान तथा श्री वैद्य बलवन्तराय जी मेहता मन्त्री चुने गए।

काशी आर्यसमाज

बुलानाला वाराणसी के चुनाव में श्री पं० देवदत्त जी आचार्य प्रधान तथा श्री रणजीतसिंह जी मन्त्री एवं १२ अन्य अधिकारी चुने गए।

वेद मन्दिर

रेलवे कालोनी गोरखपुर में मर्यादापुरुषोत्तम राम के जन्म दिवस पर यज्ञोपरान्त सभा में सारगर्भित भाषण हुए। जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

गो कृष्यादि रक्षिणी सभा

लखनऊ से चुनाव में श्री वासुदेव जी एडवोकेट प्रधान और श्री विक्रमादित्य जी बसल मन्त्री चुने गए।

गो सेवक चाहिये

लखनऊ के १० मील दूर गौरी ग्राम में सार्व० गोकृष्यादि रक्षिणी सभा की भूमि और आश्रम है। उसमें गो-डेरी संचालन के लिए वानप्रस्थ और संन्यासियों की आवश्यकता है। श्री वासुदेवजी श्रीवास्तव एडवोकेट प्रधान ११ कान्ति भवन, सुभाषमार्ग लखनऊ से पत्र व्यवहार करे।

—आर्यसमाज, कामापुर के चुनाव में श्री रुद्रवर्मा जी भटनागर प्रधान एवं श्री प्रेमनारायण जी राठौर मन्त्री चुने गए।

दुःखद समाचार

"आर्य समाज लोधी रोड, नई दिल्ली के उपमंत्री श्री आनन्द प्रकाश सेठी के बुधवार दिनांक ३०-३-६६ को प्रातः अकस्मात निधन से सर्वत्र शोक की लहर फैल गई। अभी श्री सेठी जी की आयु ४५ वर्ष की थी। वे अपने पीछे धर्म पत्नी तीन लड़के तथा ८५ वर्षीय वृद्ध पिता को छोड़ गए हैं।

आर्यसमाज लोधी रोड के साप्ताहिक सत्संग रविवार दिनांक ३-४-६६ के उपरान्त एक शोक सभा हुई जिस में श्री सेठी जी की समाज के प्रति सेवाओं के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा ने दो मिनट मौन धारण कर दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की तथा शोक सतप्त परिवार के प्रति सम्वेदना एवं गहरी सहानुभूति प्रकट की।"

प्राप्ति स्वीकारः—

श्री आचार्य भद्रसेनजी द्वारा लिखित कविराज हरनामदास जी द्वारा भूमिका एवं आदर्श साहित्य निकेतन अजमेर से प्रकाशित दो पुस्तकें—

१—कठिन और असाध्य रोगों की यौगिक प्राकृतिक तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा पृ० १५२ मूल्य १) ७५ छपाई, कागज उत्तम।

२—आदर्श गार्हस्थ्य जीवन पृ० ३०० मूल्य ३) ५० छपाई कागज उत्तम। पुस्तकें पठनीय हैं।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज चौक, प्रयाग ने एक शोक सभा में गोरेगांव बम्बई के ब्रह्मचारी श्री दत्तमूर्ति जी के निधन पर शोक प्रकट किया। महामना ब्रह्मचारी जी ने कुम्भ के अवसर पर आर्यसमाज द्वारा संचालित अराष्ट्रीय ईसाई निरोध सम्मेलन एवं राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का सफल नेतृत्व किया था।

महात्मा हंसराज—एक झलक

श्री प्रो० वेदप्रकाश जी मलहोत्रा एम० ए०
मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब

महात्मा हंसराज आधुनिक पंजाब के निर्माता थे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व के बल से पंजाब के निर्माण में अद्वितीय भाग लिया। वे अपने जीवन के प्रभात में ही समझ गए थे कि इस योद्धाओं की जन्मभूमि में आत्मसम्मान उत्पन्न करने की आवश्यकता है। यदि आर्य कुलोत्पन्न पंजाबी अपनी संस्कृति में स्वाभिमान की भावना उन्नत कर सकें तो भारत के निर्माण में अनोखा योगदान दिया जा सकता है। उन्होंने देखा कि शिक्षा का क्षेत्र इस काम के करने के लिए उत्तम है। इससे न केवल साक्षरता फैल सकती थी अपितु स्वाभिमान की भावना भी उत्पन्न हो सकती थी। भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति के प्रति गौरव की भावना भी इसी के द्वारा ही उत्पन्न हो सकती थी। दूरदर्शी महात्मा हंसराज ने देख लिया कि पूर्व और पश्चिम, प्राचीन और अर्वाचीन का समन्वय ही नवीन भारत के निर्माण की आधार शिला बन सकती है। उनकी इस दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि आज भारत भर में आर्य समाजी शिक्षा संस्थाओं का जाल फैला हुआ है। इन शिक्षा संस्थाओं ने विद्या के प्रसार में प्रशंसनीय कार्य किया है। साक्षरता फैलाने के साथ इन्होंने देश प्रेम की उत्कट भावना भी जन मानस में प्रसारित की है।

महात्मा जी का दूसरा कार्य वेद प्रचार के क्षेत्र में था। उन्होंने बड़ा परिश्रम करके अपने आपको इस कार्य में लीन किया। डी० ए० वी० कालेज के दैनिक धन्धों के अतिरिक्त वेद-प्रचार के लिए सतत प्रयत्न करना उनके गौरव का विशेष कारण था। उन्होंने इस उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त अनेक आर्यसमाजों की स्थापना की। जीवन-पर्यन्त नगर-नगर में घूमकर वेद-सन्देश जनता जनार्दन तक पहुंचाने का यत्न करते रहे। मुझे वह दिन याद है जब अखिल भारती समाज लाहौर में टंकारा से आई हुई दो देवियों ने प्रार्थना की कि आर्य समाज ऋषि दयानन्द की जन्म-भूमि टंकारा में भी ऋषि-सन्देश के प्रसार के लिए कोई प्रचार केन्द्र स्थापित करें। महात्मा जी उस समय खड़े हुए और कहने

श्री महात्मा हंसराज जी

लगे कि उनकी तीव्र इच्छा पंजाब से बाहर प्रचार करने की है। उन्होंने यह भी कहा कि पंजाब में नवयुवक बीस रुपये मासिक वेतन के लिए धक्के खाते-फिरते हैं। मैं दक्षिण में और गुजरात में प्रचार करने वाले नव-युवकों को दुगना वेतन देने के लिये तैयार हूं।

महात्माजी किसी पद पर अधिक देर तक टिके रहने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने जब देख लिया कि श्री साईं दास जी कालेज के कार्य को सम्भाल सकते हैं तो उन्होंने कालिज की सेवा से मुक्ति प्राप्त कर ली। उन्होंने पद लोलुपता को दूर ही रखा।

महात्मा जी सुलझे हुए विचारक तथा लेखक थे। उनकी कथनी और करनी में भेद न था। उनका चरित्र बल सब पर विदित था। उन्होंने अपने प्रसन्न-वदन से बड़ी-बड़ी बाधाओं को पार किया था। सारी आयु अवैतनिक कार्य करने वाला यह नेता पंजाब का हृदय-सम्राट क्यों न बनता। न उनमें दिखावा था न क्रोध न लालच न मोह। वे अपनी सीमाओं को समझते थे अतः उनके निकट जाने वालों को भी अपनी सीमाओं को समझना पड़ता था। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डी० ए० वी० आन्दोलन के जन्म-दाता होने के नाते उन्होंने हमारे ऊपर बड़ा एहसान किया है। इस ऋण को चुकाने का केवल मात्र एक ही तरीका है—हम भी उनके उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनकी तरह ही निरालस और निस्वार्थ सेवा करें। उनका जन्म-दिन सदा यही सन्देश देता रहेगा।

स्यामदेश (थाईलैण्ड) में वेद प्रचार

एक ऐतिहासिक झलक

(पूज्यपाद श्रद्धेय श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती)

स्याम देश जिसे अब थाईलैंड कहा जाता है, बड़ा सुन्दर देश है। प्रति दिशा में हरियाली, दिखाई देती हैं। कितनी ही नदियां बह रही है। यह तीन करोड़ जनसंख्या का देश बुद्धमत को मानने वाला है। इस के राजा राम कहलाते हैं। आज से सवा छः सौ वर्ष पूर्व महाराजा राम तिबोदी ने यह राम राज्य स्थापित किया था। और अयुध्या नाम की नगरी बसा कर इसे अपनी राजधानी बनाया था। सन् १३५० से लेकर १६६५ तक ३३ राजे राज्य करते रहे। तब ब्रह्मा वालों ने आक्रमण कर के अयुध्या को नष्ट कर दिया। परन्तु थोड़े ही समय के पश्चात् चाव फिराय छखी ने फिर रामराज्य स्थापित कर दिया और बैंकाक की नगरी आबाद कर के इसे १७८२ में राजधानी बनाया। और अपने आप को राजा राम-प्रथम का नाम दिया। इस समय जो महानुभाव गद्दी पर बैठे हैं। यह नवम राम है। इन का शुभ नाम श्री भूमि बल अदुलियाडेज है। जो भी गद्दी पर बैठे उसे पहले भिक्षु बनना पड़ता

श्री महात्मा आनन्दस्वामी जी सरस्वती

है और भिक्षुओं की तरह भिक्षा मांगनी पड़ती है। आज से २१०० वर्ष पूर्व महाराजा अशोक ने "सोना-डेरा" और "उत्तर डेरा" दो प्रचारकों को इधर भेजा था। तब इस देश को स्वर्ण भूमि कहते थे। इन दो प्रचारकों ने सब से पहले जिस स्थान पर अपना डेरा डाला उसे नगरम, प्रथम कहते हैं। इसी स्थान से बौद्ध प्रचारकों ने चीन तक बौद्ध मत का विस्तार कर दिया। अभी तक थाई लोगों के आचार व्यवहार पर बौद्ध मत का प्रभाव है। पिछले ६०-७० वर्षों से भारतवासी यहां आने लगे। सिक्खों ने अपने भव्य भवन और गुरुद्वारे बनाये। आर्यत्व और हिन्दुत्व को जीवित रखने के लिए आर्यसमाज मन्दिर और हिन्दुसमाज मन्दिर स्थापित किये। हिन्दुओं ने देखा कि थाई भाषा में अनेक संस्कृत के शब्द हैं और इन लोगों का रहन सहन और संस्कृति भी हिन्दुओं से मिलती जुलती है। थाई और भारतीय लोगों को अधिक निकट लाने के लिए बैंकोक में थाई भारत कल्चर लाज स्वामी सत्यानन्द जी पुरी ने डाली।

इस संस्था के द्वारा महाराजा राम से सम्पर्क बढ़ाने का निरन्तर यत्न होता रहता है। आर्यसमाज वेद विचार के प्रचार के लिए यत्नशील है। स्वर्गवासी, ध्रुवानन्द जी ने यहां भरसक प्रयत्न किया कि थाई लोगों में आर्य समाज को प्रिय बनाया जाय। परन्तु प्रचार के मार्ग में भाषा एक बड़ी भारी रुकावट है। जब तक प्रचारक थाई भाषा न जानता हो तब तक प्रचारक का क्षेत्र भारतीयों तक ही सीमित रहता है। और यहां के भारतियों की अवस्था यह है कि थोड़ा धनी होने पर यह अपने बच्चों को क्रिश्चन स्कूलों में भेज देते हैं। जो नई नसल युवक हो रही है उन का भारतीय संस्कृति और धर्म के साथ बहुत थोड़ा सम्बन्ध रह गया है।

मैं ६ अप्रैल को यहां वायुयान द्वारा पहुंच गया था। उसी दिन से प्रचार कार्य प्रारम्भ कर दिया था और हिन्दु समाज मन्दिर आर्यसमाज तथा विष्णु मन्दिर में वेद की बातें सुना रहा हूं। परन्तु इन मन्दिरों में तो कोई भी थाई नहीं आता। तब उनके कानों तक वेद का सन्देश कैसे पहुंचे। इसके सम्बन्ध में मैं विचार कर रहा हूं जो अगले पत्र में लिखूंगा।

आ०स० लाजपतनगर, कानपुर

के सदस्यों के निर्वाचन में सर्वश्री इन्द्रदेव कपूर प्रधान, अमतनारायण मलिक तथा दुर्गादास जी उपप्रधान, योगेन्द्र कुमार सरीन मन्त्री, राजेन्द्र प्रसाद, मनोहर लाल पाल उपमन्त्री, हंसराज जी सेठ कोषाध्यक्ष, ब्रह्मदत्त नागरथ उपकोषाध्यक्ष, श्रीमती दुर्गावती नागरथ पुस्तकाध्यक्ष, तथा रघुबीरचन्द सरीन निरीक्षक चुने गए।

सरकार से गोवध पर रोक लगाने की मांग

आर्य समाज दीवान हाल में विराट सभा

भारत गोसेवक समाज द्वारा दीवान हाल में आयोजित श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में हुई सार्वजनिक सभा में विविध दलों के नेताओं ने सरकार की भर्त्सना की और जनता से अनुरोध किया कि यदि सरकार गोहत्या को बन्द नहीं करती है तो उसे अपदस्थ कर उसके स्थान पर गोहत्या बन्द कराने वाली सरकार को करें।

सभा में एक प्रस्ताव द्वारा तिहाड़ जेल में बन्दी २० साधु महात्माओं द्वारा गोरक्षार्थ किये जाने वाला आमरण अनशन और इस कारण उनके दिन पर दिन गिरने वाले स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्ता प्रकट करते हुए सरकार से अनुरोध किया कि वह अविलम्ब गोहत्या बन्दी कानून बनाये और कोई दुर्घटना होने से पूर्व अनशनकारी साधुओं को ससम्मान रिहा कर दे। एक अन्य प्रस्ताव में साधुओं के गोरक्षा आन्दोलन का समर्थन करते हुए सभा ने उसे सफल बनाने के लिए पूर्ण सहयोग देने का निश्चय किया।

संसद् के वरिष्ठ कांग्रेसी सदस्य तथा भारत गोसेवक समाज के सभापति श्री डा० सेठ गोविन्द दास जी ने गोरक्षा के लि साधुओं द्वारा किये जाने वाले आन्दोलन का समर्थन करते हुए बताया कि वह और श्री गजाधरजी सोमानी राष्ट्रपति जी से मिले थे। राष्ट्रपति जी ने इस विषय में श्री नन्दा जी से चर्चा करने का आश्वासन दिया है।

स्वामी गवानन्द हरि ने कहा कि गत कुम्भ पर साधु महात्मा गोहत्या के कलंक को मिटाने के लिए आमरण अनशन का निश्चय कर चुके हैं। साधु अपना बलिदान देने में पीछे न रहेंगे।

सभा में रामराज्य परिषद के अध्यक्ष प० नन्दलाल शास्त्री, हिन्दू सभा के श्री सोहनलाल वर्मा, जनसंघ के सुन्दरसिंह भण्डारी संसद सदस्य तथा आर्यसमाज के नेता श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी आदि ने भाषण दिये।

लाड़वा में यज्ञ

आर्य साधु आश्रम लाड़वा (करनाल) का वार्षिक धर्ममेला ५ से १० अप्रैल तक हुआ। अनेक साधु, विद्वान् महात्माओं के प्रवचन और अथर्ववेद परायण महायज्ञ हुआ। यज्ञ में शुद्ध घृत सामग्री के लिए सेठ शिवचन्द्र जी आर्य कपूरथला तथा सेठ रघुवीर शरण जी ने सौ-सौ रुपया दान दिया है।

आर्य जगत के विद्वान्—

पद्मश्री डा० हरिशंकर शर्मा का सम्मान

नई दिल्ली सोमवार। हिन्दी के यशस्वी साहित्यकार तथा पत्रकार श्री डा० हरिशंकर शर्मा ने राष्ट्रभाषा हिन्दी को समृद्ध करने के लिए हिन्दी प्रेमियों से अनुरोध किया।

डा० हरिशंकर आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली में अपने सम्मान में आयोजित एक विशेष समारोह में भाषण कर रहे थे। यह स्वागत समारोह आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

डा० हरिशंकर शर्मा राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित पद्मश्री की उपाधि प्राप्त करने के लिए आज यहां पहुंचे थे।

डा० शर्मा का दिल्ली की सौ से अधिक आर्य समाज संस्थाओं ने हार्दिक स्वागत किया और उन्हें पुष्पमालाएं पहनाकर उनके प्रति अपनी हार्दिक सद्भावना प्रकट की।

प्रसिद्ध आर्य नेता तथा संसद सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने डा० शर्मा का अभिनन्दन करते हुए उनके द्वारा की गई हिन्दी सेवा करने की प्रेरणा को आर्य समाज के क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्ताओं से अपनाने का अनुरोध किया।

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २)५०
सत्यार्थप्रकाश २)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
व्यवहार भानु)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र १) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७×४० इञ्च २)५०
" " ३६×५४ इञ्च ४)५०
" " ४५×६७ इञ्च ६ ५०
कर्त्तव्य दर्पण)४०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
मराठी सत्यार्थप्रकाश १ ३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०

श्री आचार्य वैद्य ।थ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से))५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
कठोपनिषद् ५० प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १ २५
मृत्यु और परलोक १)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
अभ्यास और वैराग्य १)६५
निज जीवन वृत वनिका (सजिल्द))७५
ब्रह्म जीवन सोपान १)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म ६२

उपनिषद् कथामाला)२५
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार)२०
आदर्श गुरु शिष्य)२५
कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
पुरुष सूक्त)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १ ५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर ६२
स्वर्ग में हड़ताल)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)२५
वैदिक तत्व मीमांसा)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाए)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
वेद और विज्ञान ,७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३७
कुरान मे कुछ अति कठोर शब्द)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
इराक की यात्रा २)५०
महर्षि दयानन्द की यात्रा चित्र)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक ईश वन्दना ४०
वैदिक योगामृत)६२
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
भ्रम निवारण)३०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
वेद की इयत्ता १)५०
दर्शनान द ग्रन्थ संग्रह)७५
कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम (पूर्वार्द्ध) १)५०
" " (उत्तरार्द्ध) १)५०
वैदिक संस्कृति)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
सायण और दयानन्द १)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)३०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०

संस्कार महत्व)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

गीता विमर्श)७५
गीता की पृष्ठ भूमि)४०
ऋषि दयानन्द और गीता)१५
आर्य समाज का नवनिर्माण)१२
ब्राह्मण समाज के तीन महापातक)५०
भारत में मूर्ति पूजा २)
गीता समीक्षा १)

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
चरित्र निर्माण १)१५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
अनुशासन का विधान २५
धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

कांग्रेस का सिरदर्द)५०
आर्य समाज और साम्प्रदायिकता)३१
भारत में भयंकर ईसाई षड्यंत्र)२५
आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना)२०
आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण)६

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय २)
आर्य समाज के महाधन २)५०
एशिया का वेनिस)७५
स्वराज्य दर्शन १)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
भजन भास्कर १)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५
सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५
आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण १)
आर्य समाज का परिचय १)

सत्यार्थ प्रकाश

मंगाईये।

मूल्य २) नैट

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सा म वे द

(मूल मंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित)

भाष्यकार श्री पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

(स्नातक गुरुकुल कांगड़ी)

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार (४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थीं। तबसे इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है।

यह २८ पौंड सफेद कागज पर कपड़े की जिल्द और मूल्य ४ रुपये है भारी संख्या मे मगवाइये। पोस्टेज पृथक।

हिन्दू राष्ट्र को सच्चा मार्ग दिखाने वाली सर्वश्रेष्ठ धर्म पुस्तक

वैदिक-मनुस्मृति श्री सत्यकामजी

हिन्दी टीका सहित—हिन्दू धर्म ग्रन्थों में चारों वेदों के पश्चात् एक मात्र प्रमाणिक पुस्तक यही है। यद्यपि वेदों का समझना साधारण जनों के बस में नहीं, पर मनुस्मृति को नागरी पढ़ा हुआ व्यक्ति भी समझ सकता है। ४१८, पृष्ठ मूल्य ४॥) साढे चार

बृहत् दृष्टान्त सागर सम्पूर्ण पाँचों भाग

पं० हनुमान प्रसाद शर्मा

इस ग्रन्थ में वैदिक, लौकिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य आदि सभी विषयों के अच्छे से अच्छे दृष्टान्तों का सकलन किया है। ससार के अनेक महापुरुषों, सन्तों, राजाओं, विद्वानों एव सिद्धों के अनुभूत तथ्यों का अनोखा समावेश है। सच तो यह है कि यह अकेला ग्रन्थ सभी श्रेणी के लोगों के सभी प्रकार की मानसिक पीडाओं को मार भगाने के लिए पर्याप्त है। कथावाचक कथा मे, उपदेशक अपने प्रतिपाद्य विषय मे और अध्यापक इसके प्रयोग से छात्रों पर मोहिनी डालते हैं। बालक कहानी के रूप में इसे पढ़कर मनोरजन का आनन्द ले सकते हैं। वृद्ध इस ग्रन्थ के पन्ने-पन्ने में अपने भगवान् और उनके भक्तों की झांकी पा सकते हैं। मातायें इसे पढ़कर अपने मतलब का ज्ञान प्राप्तकर सकती हैं। इस प्रकार सबका ज्ञान इस पुस्तक से बढ़ सकता है। पृष्ठ संख्या ८६८

सजिल्द, मूल्य केवल १०॥) साढ़े दस रुपया, डाक व्यय २) अलग।

उपदेश-मंजरी—स्वामी दयानन्द जी के उपदेश हर आर्य समाजों को अवश्य अध्ययन करने चाहिएं। पूना नगर मे दिए गये सम्पूर्ण व्याख्यान इसमें दिए गए हैं। मूल्य २॥) ढाई रुपये।

संस्कार विधि—इस पुस्तक में गर्भाधान से लेकर १५ संस्कार कहे हैं जो, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास इन चारों आश्रमों में क्रमानुसार करने होते हैं। मूल्य १॥) डेढ रुपये डाक खर्च अलग।

आर्यसमाज के नेता—आर्य समाज के उन आठ महान् नेताओं, जिन्होंने आर्य समाज की नींव रखकर हिन्दू जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मूल्य ३) तीन रु० डाक खर्च १॥ डेढ़ रुपये।

महर्षि दयानन्द—जिस समय हिन्दू धर्म अन्धकार में था, लोगों में ढपोलशख बहुत बढ गया था उस समय स्वामी दयानन्दजी का जन्म हुआ और शिवरात्रि को महर्षि जी को सच्चा ज्ञान मिला। मूल्य ३)

कथा पच्चीसी—सतराम सत

जिसमें मनुष्य जाति का उद्धार करने के हेतु ही अनेक शास्त्रों में से भारत-भूषण स्वामी दर्शनानन्द जी ने उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद पच्चीस कथाओं का संग्रह किया है। हमने उनको और भी सशोधित एव सरल बनाकर छापा है। मूल्य केवल १॥) डेढ रुपया डाक व्यय १

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

१—अब तक सत्यार्थप्रकाश के कई संस्करण प्रकाशित हुए हैं।

२—इसकी दूसरी बड़ी विशेषता पैराग्राफों पर क्रमांक दिया जाना है।

३—अकारादिक्रम से प्रमाण सूची। पुस्तक का आकार १०×१३ इंच है। पृष्ठ संख्या ५८०, बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई क्लाथ बाइंडिंग - मूल्य लागत मात्र १५) पन्द्रह रुपये, एक साथ पांच कापी मंगाने पर ५०) पचास रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१—सांख्य दर्शन — मू० २.००
२—न्याय दर्शन — मू० ३ ७५
३—वैशेषिक दर्शन—मू० ३.५०
४—योग दर्शन— मू० ६ ००
५—वेदान्त दर्शन —मू० ५.५०
६—मीमांसादर्शन— मू० ९.००

उपनिषदप्रकाश-स्वामी दर्शनानन्दजी

इनमें लौकिक व पारलौकिक उन्नति की महत्वपूर्ण शिक्षाएं भरी पड़ी हैं। मूल्य ६ ०० छ रुपया।

हितोपदेश भाषा -ले० रामेश्वर'अशांत'

'उस पुत्र से क्या लाभ जिसने अपने कुल का नाम कलंकित किया है ऐसे पुत्र की माता यदि बांझ ही रह जाय तो उत्तम है' यही भावना पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन को सदा सताती थी। विद्वान् प० विष्णुशर्मा ने राजकुमारों को जो शिक्षा एव नीति की आख्यायिकायें सुनाई उनको ही विद्वान् प० श्री रामेश्वर 'अशांत' जी ने सरल भाषा में लिखा है। मूल्य ३) तीन रुपया।

अन्य आर्य साहित्य

पुस्तक	मूल्य
(१) विद्यार्थी शिष्टाचार	१ ५०
(२) पचतंत्र	३.५०
(३) जाग ऐ मानव	१.००
(४) कौटिल्य अर्थशास्त्र	१० ००
(५) चाणक्य नीति	१ ००
(६) भर्तृहरि शतक	१.५०
(७) कर्तव्य दर्पण	१.५०
(८) वैदिक सध्या	४.०० सैकड़ा
(९) वैदिक हवन मन्त्र	१० ०० सैकड़ा
(१०) वैदिक सत्सग गुटका	१५ ०० सैकड़ा
(११) ऋग्वेद ७ जिल्दो मे	५६ ००
(१२) यजुर्वेद २ जिल्दों में	१६.००
(१३) सामवेद १ जिल्द मे	८ ००
(१४) अथर्ववेद ४ जिल्दों मे	३२.००
(१५) वाल्मीकि रामायण	१२ ००
(१६) महाभारत भाषा	१२.००
(१७) हनुमान जीवन चरित्र	४.५०
(१८) आर्य सगीत रामायण	५ ००

हिन्दी के हर विषय की ५००० पुस्तकों की विस्तृत जानकारी वास्ते ४०० पृष्ठों की 'ज्ञान की कुन्जी' केवल १.२१ रुपया मनीआर्डर या डाक टिकट भेजकर प्राप्त करें।

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद, कृषि, बिजली, मोटर, पशुपालन, टेक्नीकल, डेरीफार्म, रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३०
२६४१११

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

शास्त्र-चर्चा

काल क्या करता है ?

न काला दण्डमुद्यम्य,
शिर कृन्तति कस्यचित ।
कालस्य बलमेतावद्,
यद्विपरीतार्थदर्शनम् ॥
—(महाभारत शान्ति पर्व)

काल दण्ड उठाकर किसी का सिर नहीं फोडता। काल का बल इतना ही है कि वह विपरीत अर्थ को दिखा देता है। जो जिस स्थिति मे होता है उससे विपरीत दशा दिखला देता है।

दोनों नहीं जानते ?

धर्मं करोमीति करोत्यधर्मम्,
अधर्मकामश्च कराति धर्मम्।
उभे बाल कर्मणी न प्रजानन,
सजायते म्रियते चापि देही ॥

समझता है कि मैं धर्म कर रहा हू पर करता रहता है अधर्म। धर्म करता पर वह भी अधर्म के लिए ऐसा पुरुष धर्म अधर्म के तत्व को नही जानता और जन्म मरण के चक्र मे फसा रहता है।

दोनों को ही भुगतना चाहिए

नैव नित्य जयस्तात,
न नित्य पराजय।
तस्माज्जयश्च भोक्तव्य,
भोक्तव्यश्च पराजय ॥
—(शान्तिपर्व)

न नित्य किसी की जय होती है और न नित्य पराजय इसलिए जय को भी भुगतना चाहिए और पराजय को भी।

ऐसा न कर

मानस प्रतिकूलानि,
प्रेत्य चेह न्नचेच्छसि।
भूताना प्रतिकूलेभ्य
निवर्तस्व नराधिप ॥
(शान्तिपर्व)

यदि तू यह चाहता है कि यहा और दूसरे जन्म मे तेरे प्रतिकूल कोई बात न हो तो तुझे चाहिए कि तू भी कोई ऐसा काम न कर जो प्राणियो के प्रतिकूल हो।

बिना उपदेश दिये, किसी से कुछ मत लो

पिता मेऽमन्यत,
नाननुशिष्य हरेतेति।
(याज्ञवल्क्य)

हे जनक मेरे पिता का कथन था कि बिना उपदेश दिये बिना चार अक्षर कहे किसी से कुछ नही लेना चाहिए।

आज कर सो अब

अद्यैव कुरु यच्छ्रेयो
मा त्वा कालोऽत्यगादयम्।
अकृतेष्वपि कार्येषु,
मृत्युर्वै सम्प्रकर्षति ॥
श्व कार्यमद्य कुर्वीत,
पूर्वाह्णे चापराह्णिकम्।
न हि प्रतीक्षते मृत्यु,
कृतमस्य कृत न वा ॥
को हि जानाति कस्याद्य,
मृत्युकालो भविष्यति ॥
(शान्तिपर्व)

कोई शुभ काम करना हो तो आज ही कर डालो देखो कहीं समय निकल न जाय। काम भले न हुआ तो भी मृत्यु तो खेंच ही लेगा। कल करना हो तो आज करो। दोपहर बाद करनेकी बात हो तो पहले ही पहर मे कर डालो। मृत्यु यह नहीं देखती कि इसका काम हुआ कि नहीं वह तो सिर पर चढ आता है। कौन जानता है कि आज ही मृत्यु न ले जायेगी।

प्राप्ति स्वीकार

१—आर्य समाज क्या है ?
लेखक श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०
मूल्य १० पैसे पृ० १६

२—The Arya Samaj Introduced
मूल्य १० नए पैसे पृ० १६
लेखक श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०
प्रकाशक ट्रैक्ट विभाग आर्यसमाज चौक इलाहाबाद

१—पंच महाभूत विज्ञान
लेखक और प्रकाशक श्री भरतसिंह जी वैद्य मालिकपुर जि० मुजफ्फरनगर
मूल्य२)

२—शुक्र (वीर्य) का क्षय
लेखक और प्रकाशक वही
मू० ८० पैसे

१—सरोज के नाम पत्र
लेखक श्री साई दास जी भंडारी
प्रकाशक स्वामी आत्मानन्द प्रकाशन मन्दिर यमुनानगर
मूल्य ३१ पैसे पृ० १६

१—हकीकत बलिदान (कविता)
मूल्य १० पैसे

२—वीर बन्दा वेरागी
मूल्य १० पैसे
प्रकाशक हकीकतराय सेवा समिति ३६ सरोजनी मार्केट नई दिल्ली

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

मित्रों से सावधान

वेद ने उपदेश दिया है कि अमित्र के साथ साथ हमें मित्र से भी अभय की प्राप्ति हो—

अभयं मित्रात् अभयम् अमित्रात्। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि जिस तरह अपने शत्रुओं से सतर्क रहने की आवश्यकता है उसी तरह अपने मित्रों से भी सतर्क रहने की आवश्यकता है।

मित्रों से सतर्क रहने की बात सुनने में अटपटी लग सकती है, परन्तु गहराई से विचार करने पर इसकी सचाई प्रमुख रूप से उभर कर सामने आती है। बल्कि हम तो यहां तक कहेंगे कि अपने शत्रुओं से सतर्क रहने की जितनी आवश्यकता है उससे कहीं अधिक सतर्कता मित्रों से बरती जानी चाहिए। इसका कारण यह है कि शत्रु की शत्रुता तो स्पष्ट होती है, इसलिए उससे सतर्कता की प्रवृत्ति सहज ही उत्पन्न हो जाती है, परन्तु मित्र से हम शत्रुता की आशा नहीं करते इसलिए उससे सतर्क रहने की आवश्यकता भी अनुभव नहीं करते।

राजनीति में इस सतर्कता की और भी अधिक आवश्यकता होती है। नाना धर्मों और नाना जातियों के इस देश में शासन यदि अपने आपको धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त की घोषणा मात्र से सुरक्षित समझने लग जाए तो इससे बढ़ कर अदूरदर्शिता नहीं हो सकती। वैसे तो धर्मनिरपेक्षता की यह घोषणा भी कितनी खोखली है, यह हम कितनी बार देख चुके हैं, परख चुके हैं।

मित्रों से सतर्क रहने की बात हम जिस कारण से कहने पर विवश हुए हैं उसके दो उदाहरण उपस्थित करते हैं।

हाल में ही राजस्थान के शिक्षा-मन्त्री श्री निरंजननाथ आचार्य के निजी सचिव श्री कुरेशी जासूसी के अभियोग में गिरफ्तार किए गए हैं। किसी मन्त्री का निजी सचिव होता जिसे सरकारी रहस्यों से अवगत होना है, यह कल्पना ही की जा सकती है? राजस्थान विधान सभा में कुछ वर्ष पहले इस विषय में चर्चा-हुई थी। बाड़मेर और जोधपुर के सीमान्तर पर पाक-समर्थक कार्रवाइयों में लगे कई मुस्लिम कांग्रेसी विधायकों के नाम भी लिए गए, किन्तु कांग्रेसी होने के कारण उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की गई। तभी श्री कुरेशी के नाम की भी चर्चा आई थी, परन्तु तब उसे दबा दिया गया। परन्तु अब जांच के बाद उन पर स्पष्ट रूप से अभियोग प्रमाणित हो गया तब उन्हें गिरफ्तार किया गया है। सितम्बर में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध में कई बार बाड़मेर मोर्चे पर भारतीय सेना की अत्यन्त गोपनीय गतिविधियों की भी पाक सेना को जानकारी मिलती रही, क्या उस सबकी जड़ में श्री कुरेशी ही नहीं थे? इतने अर्से तक और युद्ध जैसे नाजुक मौके पर, श्री कुरेशी जैसे व्यक्तियों को ऐसे देश द्रोहितापूर्ण कार्यों के लिए खुली छूट दिए रखना सरकार की कितनी बड़ी दण्डनीय गफलत है?

दूसरा उदाहरण है नागाशान्ति मिशन के सदस्य पादरी स्काट का। स्काट भारत सरकार की सेवा में नहीं हैं, परन्तु शान्ति मिशन के सदस्य के रूप में स्वीकार करके सरकार ने उनको अत्यन्त विश्वसनीयता की प्रतिष्ठा प्रदान कर रखी है। भारत की मित्रता का दम भरने वाले और सर्वोदय संघ के सदस्य स्काट साहब भारत के कैसे मित्र हैं—यह उनके कारनामों से पता लग गया है। विद्रोही नागा-नेता फिजो को ब्रिटेन में बुलाकर उन्हें भारत विरोधी प्रचार का अवसर देना, स्वयं ब्रिटिश समाचार पत्रों में नागाओं पर भारत के अत्याचारों की मनघड़न्त कहानियां प्रकाशित करना नागाओं को विद्रोह के लिए उकसाना और नागा समस्या के समाधान के लिए बर्मा सरकार तथा संयुक्तराष्ट्र संघ के महासचिव को पत्र लिख कर हस्तक्षेप की प्रार्थना करना ये सब उनकी भारत से मित्रता की निशानियां हैं। और हमारी सरकार है कि ऐसे व्यक्ति को भारत से निकाल देने की लोकसभा में जबर्दस्त मांग किए जाने पर भी उस पर अमल नहीं करती। सरकार को और जनता को चाहिए कि वह कुरेशी और स्काट जैसे मित्र बने अमित्रों से भी सदा सावधान रहे—

अभयं मित्रात् अभयम् अमित्रात्।

निरुक्त सम्मर्शः

आर्यसमाज की प्रचार-परम्परा से विरक्त रह कर एकान्त में स्वाध्याय और लेखन-कार्य में निरत रहने वाले, वीतराग, शान्तस्वभाव, विद्यामार्तण्ड श्री स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक आर्यसमाज की विशिष्ट विभूति हैं। वे यशोभीरु विद्याव्यसनी हैं। अब तक छोटे-बड़े कुल मिलाकर लगभग ६२ ग्रन्थों का प्रणयन कर वे वैदिक साहित्य का भण्डार भर चुके हैं। अनेक ग्रन्थ लिख कर उन्होंने अत्यन्त निस्स्वार्थ भाव से सार्वदेशिक सभा को सौंप दिए हैं और सार्वदेशिक सभा की ओर से ही वे ग्रन्थ प्रकाशित भी हुए हैं। उन्हीं के द्वारा लिखित और सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित 'विमान शास्त्र' नामक ग्रन्थ की देश-विदेश के विद्वानों में पर्याप्त चर्चा रही है।

अब स्वामी जी ने अपनी ग्रन्थ-माला में एक अभिनव पुष्प पिरोया है जिसका नाम है—'निरुक्त सम्मर्श'। वेद के छहों अंगों में निरुक्त सबसे प्रमुख है, वह वेदार्थ की कुंजी है। परन्तु भारत के भी अधिकांश आधुनिक वैदिक विद्वान् निरुक्त के अध्ययन की परम्परा से वंचित हैं। पाश्चात्य विद्वान् तो निरुक्त के अध्ययन की चिन्ता ही नहीं करते और अपने ही तथाकथित भाषा-विज्ञान को आधार मान कर दून की हांकते रहते हैं। वेदमन्त्रों के अर्थ के स्थान पर कदर्थ या दूषित अर्थ करने की परम्परा का मूल निरुक्त की ही उपेक्षा है। सायण, महीधर और उव्वट आदि भारतीय भाष्यकारों ने अर्थ का जो अनर्थ किया है उसका मूल भी निरुक्त की उपेक्षा है। सायण आदि के उच्छिष्टभोजी पाश्चात्य विद्वान् और पाश्चात्य विद्वानों की उच्छिष्ट भोजी भारतीय प्राध्यापक मण्डली के भ्रान्त दिशा में चलने का यही कारण है। यास्क ऋषि द्वारा प्रणीत निरुक्त के पठन-पाठन का प्रचार जब तक वेदाभिमानियों में नहीं होगा तब तक वेदमन्त्रों का अनर्थीकरण समाप्त नहीं होगा।

अनेक विद्वानों द्वारा अनेक वर्षों के परिश्रम के पश्चात् भी दुस्साध्य इस ग्रन्थ का स्वामी जी ने एकाकी ही एक वर्ष के अन्दर यह सुन्दर, सारगर्भित और ऋषि दयानन्द की शैली का अनुसरण करने वाला विद्वत्तापूर्ण भाष्य प्रकाशित करके कठिन साधना का परिचय दिया है। प्रामाणिक पाठ की जानकारी के लिए स्वामी जी ने बड़ौदा, जोधपुर, गुरुकुल कांगड़ी और विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान (होश्यारपुर) के पुस्तकालयों के चक्कर लगाये हैं। यास्क ऋषि के मन्तव्य को स्पष्ट करने के लिए अपनी ओर से भाष्य में अतिरिक्त वेद मन्त्र उदाहरणार्थ उद्धृत किए हैं।

इस युग में संस्कृत में भाष्य करना व्यापारिक दृष्टि से भले ही अदूरदर्शिता प्रतीत हो, परन्तु विद्वत्ता की दृष्टि से गैर-आर्यसमाजियों में आर्यसमाज के प्रति जो भ्रान्त धारणा पैदा होती जारही है, उसका निराकरण भी अत्यन्त आवश्यक है। आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड अजमेर में मुद्रित, एक हजार पृष्ठ के इस सजिल्द ग्रन्थ को निजी व्यय से तथा अपने मित्रों द्वारा एतदर्थ प्राप्त साहाय्यधन से प्रकाशित कर के लागत मात्र मूल्य (पन्द्रह रु०) पर वितरित करने के स्वामी जी के इस अभियान का हमारी दृष्टि मे विशिष्ट महत्त्व न होता तो हमने इसे अपनी सम्पादकीय टिप्पणी का विषय न बनाया होता। स्वामी जी के इस अभिनव प्रकाशन को सब ओर से प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

सदस्यों से

१— जिन महानुभावों ने अभी तक अपना वार्षिक चन्दा नहीं भेजा कृपया तुरन्त भेजें।

२—महर्षि बोधांक का धन भेजने में शीघ्रता करें।

३—कुछ महानुभावों ने अभी तक "कल्याण मार्ग का पथिक" का धन नहीं भेजा, कृपया अब भेजने में देर न करें।

४—साप्ताहिक प्रतियों का धन प्रति मास भेजते रहना चाहिये।

५—हमारा लक्ष्य आर्यजनता को महत्त्वपूर्ण उत्तम और सस्ते से सस्ते विशेषांक देना है। इसकी सफलता आपके उत्साह और सहयोग पर ही निर्भर है।

७— महर्षि बोधांक और बलिदान अंक तो आपने प्राप्त कर ही लिए हैं। अब आप 'दो महान् विशेषांक १. आर्यसमाज परिचयांक, २ आर्य शिक्षा प्रसारांक प्राप्त करने के लिए उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कीजिये।

८—महर्षि बोधांक में हमने २०० चित्र देने की घोषणा की थी किन्तु चित्र छपे २२८। हमें खेद है कि कुछ आवश्यक चित्र छपने से रह गये जो या तो हमें मिले नहीं, या हमें सूझे नहीं, या हमें आर्य जनता ने सुझाये नहीं।

—प्रबन्धक

सामयिक-चर्चा

पंजाबी के लिए देवनागरी उपयुक्त है

जो लोग यह तर्क करते हैं कि पजाबी के लिए देवनागरी उपयुक्त साधन नहीं हो सकता उनके लिए दो प्रमुखतम एव प्रतिष्ठतम ग्रन्थों के नाम दिये जाते हैं।

(१) श्री गुरुग्रन्थ साहिब (हिन्दू सिखमिशन अमृतसर द्वारा १९३५ में प्रकाशित।

(२) श्री गुरु गोविन्दसिंह जी की सक्षिप्त जीवनी और उनकी अमृत-वाणी सिक्ख मिशनरी सोसायटी मथुरा द्वारा प्रकाशित।

गुरुमत प्रकाश, आनन्द साहिब, आदि खालसा का नितनेम और श्री जपु साहब आदि अन्य ग्रन्थ देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं।

इन पुस्तकों के अतिरिक्त जो सिख मत से सम्बद्ध हैं, पजाबी के अनेक उपन्यास, कहानियों एव कविताओं की पुस्तकें देवनागरी लिपि मे मौजूद हैं। श्री आचार्य विश्वबन्धुजी (होशियारपुर) द्वारा सपादित पजाबी रामायण विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इन तथ्यों की विद्यमानता मे यह तर्क पथ भ्रष्ट करने वाला है कि पजाबी के लिए देवनागरी उपयुक्त लिपि नहीं हो सकती।

पजाबी के कुछ पृष्ठपोषकों की दलील है कि पजाबी एक मात्र गुरुमुखी लिपि में लिखी जानी चाहिये क्योंकि यह प्रश्न पहले ही तय हो चुका है। परन्तु क्या पजाब का पुन अविभाजन तय शुदा तथ्य न था? परन्तु क्या यह तथ्य एक ही रात मे एक ओर नहीं रख दिया था? तब लिपि का प्रश्न पुन. क्यों नहीं उठाया जा सकता? हमें यही सिद्धांत दोनों मामलों में लागू करना चाहिये। वर्तमान स्थिति मे 'जिओ और जीने दो' के सिद्धान्त पर आचरण किया जाना चाहिये। और पजाबी के लिये देवनागरी और गुरुमुखी दोनों लिपियां स्वीकृत होनी चाहियें।

(ट्रिब्यून ८-४-६६)

चीनियों की परम्परागत धूर्तता

पिछले कुछ वर्षों से चीनी राजनीतिज्ञों के छल-कपट पूर्ण व्यवहार का घिनौना चित्र भारतीयों तथा संसार के अन्य लोगों के समक्ष दृश्यमान हो रहा है और लोग यह सोचने के लिए बाध्य हो रहे हैं कि कन्फ्यूसस के देश के निवासियो के व्यवहार में धूर्तता और छल-कपट क्योंकर व्याप्त हुई? चीनियों मे यह त्रुटि नई नहीं है अपितु पुरानी बताई जाती है। विदेशी लोगों ने जो उनके सम्पर्क में आए इस बात की अनेक पत्रों एव दस्तावेजों में इसकी पुष्टि की है। अपने अनुभव के आधार पर वे लोग इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इस विशाल देश के लोग बनावटी होते हुए भी निर्दय हैं. और कायर होते हुए भी आक्रामक हैं।

सन् १८५९ ई० में पेकिंग स्थित ब्रिटिश कौंसलर आफिस ने अपने एक नोट मे लिखा

"राजनीतिज्ञो से लेकर व्यापारियों, पंडों, पुरोहितों और भिखमगों तक सब ही समान रूप से झूठे प्रतीत होते हैं। उनमें समाचारों और सूचनाओं को एकत्र करने की क्षमता है परन्तु वे इतने अहम्मन्य हैं और उनका नैतिक दर्शन इतना विकृत है कि उनमें सत्य पर पहुंचने की क्षमता नहीं रह गई है।"

अमेरिकन राजदूत १८६० में यह कहने के लिए विवश हो गया था कि मैं शिष्टता और कूटनीतिज्ञता के नियमों एवं परम्पराओं की रक्षा करते हुए इन लोगों के साथ व्यवहार करने में समर्थन हो सका। उनके साथ ऊपरी शिष्टता का तो बर्ताव हुआ उसकी बड़ी खातिरदारी हुई। परन्तु पग २ पर उसके काम में रोड़ा अटकाया जाता रहा। एक व्यापारिक सन्धि की बातचीत करते हुएअमेरिकन मिशन को यह अनुभूति हुई कि यह सभ्य व्यक्तियों के साथ बातचीत नहीं कर रहा है। उनकी कथनी और करनी में घोर अन्तर है।

चीनियों का यह धूर्तता पूर्ण व्यवहार अब तक जारी है मानो उन्हें यह विरासत में प्राप्त हुआ है। उनके इस व्यवहार से न जाने कितने व्यक्ति और देश छले गये और न जाने कितने आगे छले जायेंगे। भारत के राजनीतिज्ञों ने धोखा खाया। इण्डोनेशिया के डाक्टर सुकर्ण की दुर्गति हुई और वह दिन दूर नहीं जब कि पाकिस्तान के प्रशासकों को हम पछताते और हाथ मलते हुए पाएंगे जो इस समय चीनियों के साथ घी शक्कर बने हुए और इतिहास की चेतावनी को अनसुनी करते हुए देख पड रहे हैं।

गणतन्त्र की रक्षा कैसे हो?

गणतन्त्र के सुसचालन के लिए जहां कई बातें आवश्यक होती हैं वहां यह भी आवश्यक होता है कि प्रजा में यह भावना घर कर जाय कि व्यक्ति का हित समष्टि के हित पर अवलम्बित होता है और सार्वजनिक जीवन में वही व्यक्ति प्रजा का सर्वोत्तम प्रतिनिधि होता है जो सब के भले के लिए क्रियारत रहता है। दूसरे शब्दों में जिसका प्रयत्न किसी वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करते हुए उसके स्वार्थ पूर्ण हितों को आगे बढ़ाने पर केन्द्रित नहीं रहता अपितु जो समस्त वर्गों के सच्चे एव ईमानदार लोगों का प्रतिनिधित्व करते हुए समस्त देश के हितों को और उन सभी वर्गों के हितों को आगे बढ़ाता है। वह व्यक्ति इस उक्ति को सामने रखता है कि व्यष्टि का हित समष्टि में और समष्टि का हित व्यष्टि में समाविष्ट होता है।

गणतन्त्र की सुरक्षा के लिये प्रजा के हृदयों में यह मौलिक सत्य मूर्तिमान् रहना चाहिये कि किसी व्यक्ति के पक्ष या विपक्ष में कदापि खड़ा न होना चाहिये केवल इसलिये कि कोई व्यक्ति अमीर है या गरीब है, वह अमुक व्यवसाय में संलग्न है या सलग्न नहीं है, वह हाथों से काम करता है या दिमाग से। हम सबको मनुष्य के रूप में उसके गुणों और कर्मों को व्यवहार का आधार बनाना चाहिए। हमें यह देखना चाहिये कि उसको उससे अधिक या कम न दिया जाय जिसका वह अधिकारी है।

अन्त मे प्रजा को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि गणतन्त्र का अस्तित्व तभी कायम रहता है जबकि स्वतन्त्रता अनुशासन के गुण से अंचित हो जिसके लिये यह अनिवार्य होता है कानून का सभी व्यक्तियों पर समान आधिपत्य हो और कानून का प्रवर्तन दृढ़ता एवं निर्भयता पूर्वक हो जिससे प्रत्येक व्यक्ति को यह अनुभव हो कि कानून से ऊपर या नीचे कोई व्यक्ति नहीं हैं।

हिन्दी के प्रति महर्षि दयानन्द के उपकार

आन्ध्र प्रदेश के श्री सत्यनारायण एम० पी० ने रोहतक में २५ मार्च को भाषण देते हुए इस बात का खण्डन किया कि दक्षिण भारत में हिन्दी पसन्द नहीं की जाती है। उन्होंने यह दावा किया कि उत्तरभारत की अपेक्षा दक्षिण भारत में हिन्दी अधिक लोकप्रिय है और प्राइवेट साधनों से हिन्दी को लोक-प्रिय बनाने का विशेष उद्योग किया जा रहा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती को श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि उनके अथक प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप ही हिन्दी ने देश में पैर जमाये हैं। बाद में गांधी जी से हिन्दी को समर्थन प्राप्त हुआ। उन्होंने यह भी बताया कि आन्ध्र प्रदेश में लगभग २ लाख से अधिक छात्र हिन्दी की परीक्षाओं में बैठते हैं।

ससद-सदस्य महोदय ने वैश्य कालेज रोहतक के वार्षिक समारोह में भाषण देतेहुए ये उद्गार प्रकट किये।

— रघुनाथ प्रसाद पाठक

पटपड़ गंज रोड पर मकान गिराने से जनता में भारी असन्तोष

श्री रामगोपाल शालवाले मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रातः पटपड़ गंज रोड पर स्थित शकूरपुर गांव के पास दिल्ली नगर निगम के कर्मचारियों एव पुलिस द्वारा जो २६ मकान गिराये गये थे उनका आज निरीक्षण किया। उन्होंने एक वक्तव्य में कहा है कि इस क्षेत्र में नगर निगम एवं इन्कम टैक्स कार्यालय के कर्मचारी तथा समाचार पत्रों के थोड़ी आय वाले कर्मचारियों ने अपने मकान बनाये थे। उन्हें बताया गया कि कल जब पुरुष अपने अपने काम पर बाहर गये हुए थे और घरों में केवल स्त्रियां और बच्चे ही थे उस समय पुलिस ने बड़ी निर्दयता के साथ मकानों को गिराना प्रारम्भ करा दिया। यह भी बताया गया कि कुछ मकानों के ताले तोड़ कर उन्हें मलबे का ढेर बना दिया गया। इन्कम टैक्स तथा नगर निगम के जिन कर्मचारियों को सरकार ने क्वार्टर नहीं दिये थे उन लोगों ने मुश्किल से कर्जा लेकर ये मकान बनाये हैं। श्री रामगोपाल शालवाले ने गृहमन्त्री श्री नन्दा को एक पत्र लिखकर बड़ी मार्मिक अपील की है कि वे स्वयं हस्तक्षेप करके भविष्य के लिए इस अत्याचार को रोकें। जिससे जनता में अब अधिक असन्तोष न बढ़े।

इंगलैंड विशेष शिक्षितों का देश नहीं

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी

इंगलैण्ड अपढ़ों व अशिक्षितों का देश है—यह सुनकर बहुत से इंगलैण्ड भक्तों के कान खड़े होंगे, परन्तु यह सत्य है इंगलैण्ड आने से पूर्व मैं भी कभी इसकी कल्पना तक नहीं कर सकता था, और यदि कोई ऐसा कहने का साहस करता तो उसे मैं पागल ही समझता। जिस देश में संसार भर के विद्यार्थी पढ़ने आते हैं, और जहां की डिग्रियों का सर्वत्र मान है, जहां पूज्य गान्धी, जवाहर, तिलक आदि सभी नेता शिक्षा प्राप्त करने आये जहां संसार भर में प्रसिद्ध आक्सफोर्ड और केम्ब्रिज यूनीवर्सिटियां हैं वहां अधिकांश लोग अपठित हों यह कल्पना भला कोई कैसे कर सकता है। इंगलैण्ड पहुंचने पर भी जब मेरे कान में यह बात मेरे एक मित्र के द्वारा पड़ी तो मुझे भी विश्वास न हुआ परन्तु बाद में जब मैंने इसकी जांच की तो हृदय से एक ही आवाज निकली-दीपक के तले ही अन्धेरा है।

इंगलैण्ड में शिक्षा स्कूल से कालेज तक नि:शुल्क है और स्कूल की तरफ से ही विद्यार्थियों को पुस्तक आदि सभी पढ़ने की वस्तु मिलती है। स्कूल में एक समय भोजन बहुत ही कम मूल्य पर मिलता है। और दूध सबको फ्री मिलता है। यहां १५ वर्ष की आयु तक प्रत्येक बच्चे का स्कूल जाना अनिवार्य है। बच्चा स्कूल न जाय तो माता-पिता पर सरकार केस चला देती है। अतः इंगलैण्डके अधिकांश बच्चे १५ वर्ष की आयु तक ही विवश होकर स्कूल जाते हैं और उस दिन की प्रतीक्षा में रहते हैं जब उन्हें स्कूल न जाने का अधिकार प्राप्त हो। इस प्रकार मैट्रिक से आगे बहुत ही कम कालेजों में पढ़ने जाते हैं। मैट्रिक भी सब नहीं कर पाते है।

पढ़ने की इतनी सुविधायें रहते हुये भी इंगलैण्ड के बच्चे आगे पढ़ने में रुचि क्यों नहीं रखते इसके कई कारण हैं। पहिला प्रमुख कारण तो यह है कि इंगलैण्ड में प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने का आदी है। किसी के नियन्त्रण में रहना वह अपना अपमान समझते हैं। यहां तक कि माता-पिता का नियन्त्रण भी उन्हें बन्धन व अत्याचार के रूप में दिखाई देता है। सो प्रत्येक बच्चा सोलह के पश्चात् शीघ्र से शीघ्र स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करता है। माता-पिता भी यहां यह नहीं चाहते कि उनकी कमाई में उनके अतिरिक्त कोई भागीदार बने और मौज उड़ाने में बाधा पड़े और माता-पिता भी यही चाहते हैं कि उनके बच्चे शीघ्र से शीघ्र अपने पैरों पर खड़ा होकर उनका पीछा छोड़ें। इस प्रकार जो बच्चे मातापिता के साथ भी रहना चाहते हैं तो उन्हें भी विवश होकर अपना स्वतन्त्र मार्ग खोजने पर विवश होना पड़ता है। इंगलैण्ड में बहुत कम परिवार ऐसे हैं जहां माता-पिता और बच्चे बड़े होकर साथ २ रहते हैं।

दूसरा बड़ा कारण यह है कि इंगलैण्ड में कुछ प्रमुख नौकरियों को छोड़कर अपढ़ लोग पढ़े लिखे लोगों से अधिक वेतन पाते हैं। क्या भारत के लोग यह विश्वास करेंगे कि इंगलैंड का एक मेहतर जो केवल झाड़ू लगाता है या घरों के पास जमा कूड़े के ड्रमों को उठाकर ड्रम में डाल देता है, अस्पताल में काम करने वाले एक डाक्टर के समान या उससे अधिक वेतन प्राप्त करता है। कार्यालयों में काम करने वाले क्लर्क तो उसके सामने कुछ भी नहीं प्राप्त करते हैं। सो जिस देश में बेपढ़े लोग पढ़े लिखे ही नहीं अपितु विशेष शिक्षा प्राप्त लोगों से अधिक या उनके समान ही वेतन प्राप्त करते हों तो फिर पढ़ने की कठिन तपस्या या कष्ट को कौन मोल लेगा।

इंगलैण्ड में मजदूरों को इतना वेतन मिलता है जितना भारत में प्रान्तों के मिनिस्टरों को मिलता है। यदि यह प्रलोभन मजदूरों को न दिया जाय तो इंगलैण्ड में शारीरिक कठिन काम करने वाला कोई मिले ही नहीं। यही कारण है कि भारत, पाकिस्तान वैस्टइन्डीज के लाखों अपढ़ लोग अपनी जमीन जेवर बेचकर इंगलैण्ड आ गये हैं और देखते २ वहां मकानों के मालिक व धनी बन गये हैं।

तीसरा कारण इंगलैण्ड के बच्चों की अपढ़ता का यह है कि यहां लड़के-लड़कियों की प्रेम-लीला प्रारम्भ से ही चल पड़ती है। प्रेम-लीला को स्थाई रूप देने के लिये प्रत्येक नवयुवक नवयुवती अपने को शीघ्र से शीघ्र कहीं काम पर लगाने का प्रयत्न करता है। लार्ड घराने के बच्चों की यही अभिलाषा होती है।

इंगलैण्ड के अधिकांश लोगों को केवल लिखने-पढ़ने का ही ज्ञान होता है। इससे अधिक साधारण ज्ञान इन्हें होता ही नहीं। कहने को इंगलैण्ड में समाचार पत्रों की संख्या संसार में सब से अधिक है और समाचार-पत्र पढ़ने वालों की संख्या भी यहां सबसे अधिक है। बस, ट्रेन, आदि में जहां जाओ वहां प्रत्येक व्यक्ति की आंखों के सन्मुख आपको समाचार पत्र या पुस्तक मिलेगी और ऐसा प्रतीत होता है कि संसार में अंग्रेजों से अधिक ज्ञानी व्यक्ति कोई नहीं हो सकता है, परन्तु खोज करने पर ज्ञात होगा कि प्रत्येक व्यक्ति समाचार-पत्रोंमें केवल उन्ही पन्नों को पढ़ता है जिन पर घोड़ों की दौड़ क्रास वर्ड या अन्य जूआ सम्बन्धी बातें छपी हैं, और जिनके द्वारा उन्हें एक दो पैनी लगाकर हजारों पौण्ड या लाखों रुपया घर बैठे प्राप्त कर सकते हों। पुस्तक जिन्हें वह पढ़ते हैं नाविलों को छोड़ कुछ नहीं होते हैं।

इंगलैण्ड के लोगों में आप धर्म, राजनीति, विज्ञान आदि सम्बन्धी बात करें तो वह गूंगों की भांति सुनते रहते हैं। इनके ज्ञान का स्तर इतना है कि अभी तक यहां अधिकांश लोग ऐसे हैं जो यह विश्वास रखते हैं कि अफ्रीका की भांति भारत भी जंगली लोगों का देश है, और खाने पीने, रहने आदि का अभी तक ज्ञान नहीं है। अंग्रेजों ने ही उन्हें थोड़ा-बहुत सभ्य बनाया है। स्वयं मुझ से एक इंगलिश महिला एक दिन पूछती थीं क्या भारत में भी लोग इंगलैण्ड की भान्ति घरों में चारपाई पर सोते हैं।"

इंगलैण्ड के लोगों को किसी प्रकार का ज्ञान नहीं सो बात नहीं है। यहां के किसी व्यक्ति से पूछने पर वह तुरन्त आप को बतला देगा कि सन् १८८१ ई० की घुड़दौड़ में कौन घोड़ा जीता था, कब किस पुले में किसको कितना इनाम मिला था, किस फिल्म में कौन २ एक्टर काम करते हैं, किस फिल्मी एक्टर का जन्म, आयु आदि क्या है। समाचार पत्र भी इन्हीं बातों से भरे रहते हैं। यहां के समाचार-पत्रों में काम की बातें व समाचार तो कम ही होते है अधिकांश समाचार तो खेल-कूद व मनोरंजन का व्यापार सम्बन्धी होते हैं।

इंगलैण्ड के कालेज व यूनिवर्सिटियों में अनुपात से इंगलैण्ड की अपेक्षा बाहर के विद्यार्थियों की संख्या अधिक होती है। इंगलैण्ड के बच्चों में भी लार्ड घराने के बच्चे ही अधिकतर होते हैं, जो अपनी प्रतिष्ठा की रक्षार्थ पढ़ते हैं। इन्हीं घराने के लोग बहुधा बड़ी २ नौकरियों व सरकार में मन्त्री के रूप में हैं। इन्हीं के बच्चे विदेशों में इंगलैण्ड की ओर से शासक के रूप में जाते रहे हैं साधारण जनता के बच्चे तो मैट्रिक से आगे बहुधा पढ़ते ही नहीं। कालेज और यूनीवर्सिटियों में भी बहुधा विदेशों के विद्यार्थी ही परीक्षाओं में प्रथम पद प्राप्त करते हैं।

इंगलैण्ड में पठित लोगों की क्या स्थिति है इसका अनुमान इस बात से लग सकता है कि जब भारत-पाकिस्तान का युद्ध हुआ और पाकिस्तान ने अपने डाक्टरों को इंगलैण्ड से वापिस बुलाने की चर्चा चलाई तो इंगलैण्ड में एक तूफान सा आ गया। यहां के समाचार पत्रों ने विषय की गम्भीरता को प्रकट करते हुये कहा कि इंगलैण्ड में भारत और पाकिस्तान के पांच हजार डाक्टर काम कर रहे हैं। यदि दोनों देशों ने इंगलैण्ड से अपने डाक्टर बुला लिये तो इंगलैण्ड के अस्पतालों में ताले लग जायेंगे और यहां की स्वास्थ्य व्यवस्था लड़खड़ा जायगी।

वर्तमान समय में इंगलैण्ड में भारत, पाकिस्तान आदि कामनवैल्थ के देशों के लाखों शिक्षित व्यक्ति यहां के भिन्न २ भागों में कार्य कर रहे हैं। उनके द्वारा ज्ञात हुआ कि योग्यता में एक भारतीय एक इंगलिश से कहीं अधिक योग्य होता है। अंग्रेज अधिकारी भारतीयों की योग्यता से प्रभावित भी है, परन्तु फिर भी वह उन्हें उच्च पद प्रदान नहीं करते। रंग भेद और झूठा स्वाभिमान अंग्रेज अधिकारियोंसे काले लोगों के साथ अन्याय कराता रहता है अन्यथा वह इस बात को अनुभव करते रहते हैं कि बहुधा अंग्रेज नवयुवकों में योग्यता नहीं होती, योग्यता कहां से उत्पन्न हो, उन्हें प्रेमलीला व खेल-कूद से ही अवकाश नहीं मिलता है।

काबे में ही कुफ्र-वाली कहावत इंगलैण्ड में चरितार्थ हो रही है। भारत के लोगों और मुख्यतः नवयुवक नवयुवतियों के स्वप्नों का देवता इंगलैण्ड की आन्तरिक अवस्था क्या है? इस पर उन्हें ध्यान देना चाहिये। गोरी चमड़ी वाले सभी व्यक्ति व देश ज्ञानी और प्रगतिशील होते हैं इस हीनता की भावना का परित्याग कर देना चाहिए।

यह वावेला क्यों ?

(माननीयश्री वीरेन्द्रजी 'दैनिक वीर प्रताप', जालन्धर)

भारत सरकार ने फैसला कर दिया कि पंजाब के विभाजन के बाद दोनों राज्यों की सीमाओं का निर्धारण १९६१ की जनगणना के आधार पर किया जाएगा। इस पर वह सब वर्ग जो कल तक पंजाब के बटवारे के समर्थक बने हुए थे सटपटा उठे हैं। हरियाणा वाले खुश हैं कि १९६१ की जनगणना को सीमा निर्धारण का आधार बना दिया गया है। परन्तु पंजाबी सूबे के समर्थक सिर पीट रहे हैं। जब कांग्रेस कार्यकारिणी ने यह घोषणा की थी कि भाषा के आधार पर पंजाब का विभाजन कर दिया जाये तो यह लोग फूले नहीं समाते थे परन्तु अब झाग की भांति बैठ गये हैं। उन्हें पता चल गया है कि जो पंजाबी सूबा उन्हें मिलने वाला है वह पूर्णतः निष्प्राण और महत्वहीन होगा। अब उन्हें आभास होने लगा है कि जिस पंजाबी भाषा के नाम पर यह सब शरारत फैलाई गई थी अब उसी की हत्या हो रही है और उसी का क्षेत्र इतना सीमित किया जा रहा है कि उसके लिये शायद जीवित रहना भी कठिन हो जाये। तात्पर्य यह कि अब धीरे-धीरे यह आभास पैदा हो रहा है कि पंजाब का विभाजन करवा कर जो मूर्खता की गई उसके परिणाम स्वयं सिखों और पंजाबी भाषा के लिए कितने घातक हो सकते हैं। परन्तु मैं विस्मित हूं कि अब यह चीख-चिल्ला क्यों रहे हैं। सन्त फतहसिंह ने कहा था कि उन्हें इस बात में कोई रुचि नहीं कि पंजाबी सूबा छोटा बनता है या बड़ा, इसमें हिन्दुओं की संख्या अधिक होती है या सिखों की। वह तो केवल यह चाहते हैं कि भारत सरकार एकबार यह सिद्धान्त स्वीकार कर ले कि पंजाबी भाषा का भी एक सूबा बनना चाहिए जैसे कि अन्य भाषाओं के आधार पर बनाते गये हैं। भारत सरकार ने उनकी बात मान ली। अब उन्हें शिकायत नहीं होनी चाहिए। परन्तु हो रही है। ज्यों २ समय व्यतीत हो रहा है, वह स्वयं यह अनुभव कर रहे हैं कि जो कुछ उन्होंने प्राप्त किया है वह लंगड़ा पंजाबी सूबा है। इसके कारण सिख भी बट जायेंगे और पंजाबी भाषा की उन्नति भी रुक जाएगी।

जो कुछ होना था हो चुका। उस पर उसके बहाने का अब कोई लाभ नहीं, परन्तु एक प्रश्न अवश्य उठता है जिसका अकाली नेताओं को उत्तर देना चाहिये। वह कि यदि किसी क्षेत्र के लोग पंजाबी सूबे में रहना नहीं चाहते तो उन्हें क्यों विवश किया जावे? इस समय बहस केवल चार तहसीलों के विषय में ही चल रही है। होशियारपुर की ऊना तहसील, अम्बाला की खरड़, फिरोजपुर की फाजिल्का और गुरुदासपुर की पठानकोट तहसील। १९६१ की जनगणना के अनुसार इन चारों की बहुसंख्या हिन्दी भाषी है। यदि पंजाब का बटवारा भाषा के आधार पर होना है तो यह चारों तहसीलें अनिवार्यतः पंजाबी सूबे से निकल जायेंगी परन्तु यदि एक क्षण के लिये भी यह मान लिया जावे कि यहां के लोग वास्तव में पंजाबी बोलते हैं और उन्होंने साम्प्रदायिक भावनाओं से प्रभावित होकर अपनी भाषा हिन्दी लिखवाई है तब भी यह प्रश्न पैदा होगा कि यदि इन तहसीलों की बहुसंख्या पंजाबी सूबे में नहीं रहना चाहती तो उन्हें क्यों विवश किया जावे? इस देश में अभी अकाली तानाशाही स्थापित नहीं हुई कि वह तलवार के जोर से लोगों को विवश कर सकें कि वहां कहां रहें और कहां न रहें। आज यहां एक लोकतान्त्रिक शासन स्थापित है। उसे जनता की भावनाओं का सम्मान करना पड़ता है और जनता में केवल अकाली ही शामिल नहीं इसमें गैर-अकाली भी हैं। यह नहीं हो सकता कि जो कुछ अकाली कहें वही हो। सरकार ने उनकी एक बात मान ली और बड़ी भारी बात मानी है। १८ वर्ष तक वह अपनी जिस नीति पर अमल करती रही है उसे एक ओर रखकर उसने पंजाब का विभाजन करना स्वीकार कर लिया है। सन्त फतहसिंह ने कहा था कि यह भाषा के आधार पर होना चाहिए और अब वह भाषा के आधार पर ही हो रहा है। अकालियों की यह मांग अत्यन्त मूर्खता पूर्ण है कि आज से ३५ वर्ष पूर्व जो जनगणना कराई गई थी अब विभाजन भी उसी के आधार पर किया जावे। १९३१ में हिन्दी पंजाबी या उर्दू के लिए अलग २ आंकड़े जमा नहीं किये गए थे इसलिए यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि १९३१ में उन चार तहसीलों में हिन्दी भाषी लोग कितने थे और पंजाबी भाषी कितने थे। १९६१ में जो जनगणना की गई वह गलत थी या ठीक, अब तो वही माननी पड़ेगी। यदि हिन्दी के पक्ष में गलत आंकड़े दर्ज कराये गये तो पंजाबी के पक्ष में भी कम नहीं कराये गये। अकाली यह मांग तो कर सकते हैं कि जनगणना नये सिरे से कराई जावे परन्तु यह नहीं कह सकते कि १९६१ की जनगणना को केवल इस लिए दृष्टि विगत कर दिया जाये क्योंकि कुछ लोगों ने अपनी भाषा हिन्दी लिखवाई थी।

पंजाबी सूबा अब जो भी बनेगा और जैसा भी बनेगा उसका सारा दायित्व अकालियों पर होगा। उन्होंने स्वयं ही कहा था, आ बैल मुझे मार, अब वह चीखने चिल्लाने लगे हैं। परन्तु उन्होंने जो कुछ बोया था वह तो अब काटना ही पड़ेगा।

आर्यप्रतिनिधि सभा (आन्ध्र)

के प्रधान

माननीय श्री पं० नरेन्द्र जी

आपकी अध्यक्षता में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आर्य सम्मेलन हुआ जिसमें अनेक उपयोगी, प्रस्ताव पारित हुए।

आर्यसमाज परिचयांक

इस अद्भुत प्रयास के लिए बधाई। अभी तक इस हेतु किसी ने ध्यान नहीं दिया था। इसके द्वारा हम सभी आर्यों का परिचय बढ़ेगा। आपके इस संगठनात्मक कार्य से आर्यसमाज का प्रचार एवं विशेष गौरव बढ़ेगा।

ब्रह्मदेवनारायण सिन्हा आर्य सीतामढ़ी,

नये ब्रह्मचारियों का प्रवेश

व्यास-विद्या पीठ, ग्राम ततारपुर पो० बाबूगढ़ छावनी (मेरठ) में ता० २१ मई से नए ब्रह्मचारियों का प्रवेश होगा। ५ वीं कक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी लिए जावेंगे।

वेदवाद बनाम शान्ति

जीवन का वैदिक मार्ग

श्रीमती मायादेवी जी शर्मा, धर्मपत्नी डा० ओम्प्रकाश शर्मा
दुजाना (बुलन्दशहर)

गौरवशाली, शक्तिशाली समाज के लिए आवश्यक है—श्रेष्ठ चरित्रवान समाज के कार्यकर्त्ता। श्रेष्ठ कार्यकर्ता जब मिलें जब समाज का प्रत्येक घटक श्रेष्ठ हो, प्रत्येक घटक के लिए अनिवार्य है शिक्षा एव आश्रम व्यवस्था, वास्तव में मानव दो प्रकार के हैं —आर्य और अनार्य। आर्यों का विभाजन ४ वर्णों मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्रों मे होता है। सच्चा आर्य बनने से शान्ति, सुख, समृद्धि होगी इसलिए आर्य बनो, आर्य बनने के लिए वेद के आदेशानुसार कर्म करना आवश्यक है। वेद ने मानव की आयु न्यूनतम सौ वर्ष बतायी है हम भी 'शत जीवेम्' का नित्य पाठ करते हैं पर न तो हम १०० वर्ष जीते हैं न अदीना स्याम' हो पाए क्यों ? उत्तर में यही कहा जाएगा हम वेद को भूल गए अर्थात् विज्ञान की चकाचौंध मे भौतिकवाद के जाल में फस गए, विज्ञान से हमें (देश को) क्या शांति मिली या मिलेगी ?

आर्य बनने के लिए यदि अपनी आयु को ४ आश्रमों में व्यतीत करें तो स्वय तो सुख-शांति एवं समृद्धि प्राप्त करेंगे ही समाज और देश को धनधान्य से पूर्ण करेंगे। शरीर आयु के लिए यदि न्यूनतम १०० वर्ष भी मान लिया जाए तो ४ आश्रमों से २५-२५ वर्ष होते हैं। ये आश्रम हैं—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास इनमें प्रत्येक आश्रम महत्वपूर्ण है—

ब्रह्मचर्य—आरम्भ से अध्ययन-काल (जो कि न्यूनतम २५ वर्ष है) तक ब्रह्मचर्य के साथ नगरों से दूर जंगलों में स्थित गुरुकुलों मे रखकर अध्ययन करायें, माता-पिता इस अवस्थाकाल मे शिक्षार्थी से सम्बन्ध त्यागकर दें जिससे ब्रह्मचारी चिन्ताओं से मुक्त होकर आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन करें, यह ४ आश्रमों का मूल है जितना अधिक से अधिक अर्जित होगा उतना ही आगे के आश्रम सुखकारी होंगे, गुरु यहां ब्रह्मचारी की मनोवृत्ति के अनुकूल शिक्षा दें और शिक्षा के अन्त में उसके योग्य वर्ण (जाति) में प्रविष्ट कर वर्णानुसार नाम करण करें। जिससे वह समाज को जान सके और समाज उसको यथायोग्य आत्मसात् कर सके।

गृहस्थ—गुरुकुल से दीक्षा लेकर गृहस्थधर्म का पालन करता हुआ सत्य आदि में प्रमाद न कर उनकी पालना करके जीविका के निमित्त धर्म के साथ धन संग्रह करे, संग्रहित धन 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' त्याग के साथ अर्थात् भूखे, नगे, दुःखी रोगी, संन्यासी आदि को खिलाकर खाए। अन्याय का धन कभी न ग्रहण करे, असत्य, लोभ मोह, अनीति आदि दुर्गुणों से दूर रहकर ऋषि ऋण, देव ऋण, पितृ ऋण से मुक्त होने का प्रयत्न करे, सन्तान को योग्य बनाने के लिए सभी वैदिक ससार करें और अपने सन्तान गुरुकुलों में भेज दे।

गृहस्थ आश्रम सब आश्रमों मे मूर्धन्य है क्योंकि यह 'त्येन त्यक्तेन भुंजीथा' के साथ धनोपार्जित कर स्वय एवं समाज को खिलाता है यदि अनीति-असत्य से उत्पन्न कर स्वयं भक्षण करेगा, तब मन दूषित हो जायेगा क्योंकि एक लोकोक्ति है कि जैसा खाए अन्न वैसा बने मन, अभक्ष्य अन्न खाकर स्वयं तो अनार्य बनेगा ही साथ ही उसका अन्न ब्रह्मचारी और संन्यासी खाकर भी अनार्य बन जायेंगे तब ससार में अशान्ति होगी, वर्तमान मे भी यही अशान्ति का कारण है। हम क्यों बिगड़े दूषित अन्न खाकर, दूषित मनोवृत्ति से हमारी सन्तान भी इसीलिए अनार्य बन रही है, अतएव गृहस्थी को धर्मानुकूल आचरण करना ही चाहिए।

वानप्रस्थ—धर्मानुकूल गृहस्थाश्रम मे रहकर ५० वर्ष के पश्चात् मोहममता त्यागने के पथ पर चले, स्वजनों को त्याग कर (अन्यथा पत्नी मात्र के साथ) जगलों में जाकर स्वाध्याय एव प्रभु भजन कर योग्यता का संग्रह करे।

संन्यास—जब मोह ममता से मुक्ति मिल जाए तभी अपनी (पत्नी) को त्याग कर सभी को अपना समझे सत्य आदि गुणों के साथ भिक्षा द्वारा स्वशरीर की रक्षा कर प्रभु चिन्तन, आत्म चिंतन के साथ अन्य सभी का चिन्तन करे, ससार को धर्मोपदेश कर धर्म और सत्य का पथ दिखाए संन्यासी किसी देश, समाज, जाति, व्यक्ति का नहीं होता वह सबका होता है और सब उसके होते हैं, इसलिए सन्यासी किसी का मोह नहीं करता और न किसी से वैर ही, संन्यासी क्षमाशील है। अपने से द्वेष रखने वालों से भी कभी द्वेष नहीं करता, इसलिए सन्यासी सबका पूज्य है, समाज का मूर्धन्य भी।

ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रचुर शास्त्रों का अध्ययन से गृहस्थ आदि आश्रमो का नियमपूर्वक भोग कर विरक्त सन्यासी महान् बनेगा, संन्यासी सबका खाद्य ग्रहण करता है जिससे कोई यह न कहे मैं संन्यासी का पोषण करता हूं या सन्यासी किसी एक का खाद्य लेकर उसमें मोह न हो, इसलिए भिक्षा करने का नियम है, यदि भिक्षा में गृहस्थ दूषित अन्न देगा तो गृहस्थ तो पाप का भागी बनेगा ही, किन्तु दूषित अन्न सन्यासी में भी दुर्गुण करेगा, अच्छे समाज के संचालन के लिए गृहस्थ को चाहिए दूषित अन्न न दे।

सन्यासी को सभी में प्रेम और सभी में निस्पृहा करनी चाहिए—

पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्च व्युत्थायाथ: भिक्षाचर्यं चरन्ति (शत० का० १४ प्र० ५ ब्रा० २ कं० १)

इन्द्रियाणां निरोधेन रागद्वेष क्षयेण च, अहिंसया च भूतानां मृतत्वम कल्पते ॥

दूषितोऽपि चरेद्धर्म यत्र तत्रा श्रये रतदा। सम सर्वेषु भूतेषु न लिंगं धर्म कारणम्।

अहिंसेन्द्रया सर्गे वैदिकैश्चैव कर्म्मभिः,
तपश्च रश्चर्यौनैस्साधयन्तीहतत्पदम।

संन्यासी वेदोक्त कर्म करता हुआ एवं विषयों का त्याग करके संसार की और अपनी मोक्ष की चिन्तना करता है। अतएव,—

अनेन विधिना सर्वास्त्यक्त्वा,
संगा शनैः शनैः।
सर्व द्वन्द्व विनिर्मुक्तो,
ब्रह्मण्ये वा स्थिते ॥ (मनु)

वेदोक्त धर्म पर स्वयं चलना और गृहस्थी को चलाना ही संक्षेप में संन्यासी का धर्म है। गुरुकुलों में संन्यासी ही ब्रह्मचारियों को दीक्षा देकर पूर्ण पंडित बनाते हैं, संन्यासी ही गृहस्थियों को सद् गृहस्थ बनाते हैं, संन्यासी सत्य का निश्चय कर अधर्म व्यवहारों का सब प्रकार से संशय दूर कर सकता है क्योंकि वह ब्रह्मचर्य के तप त्याग से युक्त होता है सन्यासी सत्य धर्म युक्त व्यवहार कराने के लिये शिक्षा योग्यता अनिवार्य है यह विधिवत् ब्रह्मचर्य से होती है, अतएव संन्यासी वही बने जो योग्यहो, अयोग्य संन्यासी पर देश और समाज को कठोर नियन्त्रण करना चाहिये, अयोग्य सन्यासी छलने, उदर पूर्त्ति एवं विषय पूर्ति में रहेगा। वर्तमान में छद्मी-संन्यासी (स्वादु-साधु) अधिक हैं, जनता भी बाबा—साधु रूप को आदर करती है वह नित्य मौज मारता है कौन सी ऐसी वस्तु है जिसे वह न ग्रहण करता हो चेले-चेली से युक्त यह समाज प्रभु के चिन्तन के लिये समय भी नहीं निकाल पाता है। अस्तु। अनेक दुर्गुणों को छिपाने वाले, किसी की प्रेयसी अथवा पत्नी की मृत्यु के वैरागी, बचपन के चेले वैरागी, विद्या रहित अज्ञानी इस समुदाय से जो समाज का गलित कुष्ठ है उससे बचाने के लिए कोई कसौटी अनिवार्य है अन्यथा दो पैसे के गेरू से कपड़े रगकर कोई भी निरक्षर भट्टाचार्य समाज को तथा स्वय को पतन के गर्त में गिराने लगेगा। वर्तमान में अशांति का कारण भी यही है, अध्यात्म को वह स्वय नहीं जानते समाज को क्या उपदेश देंगे। समाज प्रभु को भूल कर भौतिकवाद विज्ञान (जिसे अज्ञान कहना उपयुक्त होगा) के पीछे दौड़ रहा है जहां धर्म सत्य नहीं है, वहां असत्य अधर्म अविवेक तो होगा ही—धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः, मारा हुआ (नष्ट हुआ धर्म) हमे भी मार रहा है हम अशान्त हैं, इसलिये 'तस्माद् धर्मो न हन्तव्य' धर्म को मत छोड़ो, धर्म नहीं छूटेगा तब धर्म रक्षा करेगा, वह धर्म सच्चे सन्यासी से रक्षित हो सकता है। अन्यथा अधर्म में अज्ञान बढ़ेगा, अज्ञान से अशिक्षा, अशिक्षा से चरित्र गिरेगा, जहा चरित्र गिरा, वहां सब नष्ट हुआ इसे भौतिक उन्नति बिजली व बांध नहीं रोक पाएंगी। अशांति बढ़ेगी, भ्रष्टता-रिश्वत, चोरी, आचारहीनता बढ़ेगी, बढ़ रही है।

इसलिए आवश्यकता है सच्चे सन्यासी की जो गुरुकुल में रहकर सच्चे ब्रह्मचारी की तथा गृहस्थियों में त्यागी कर्मकाण्डी त्यागी एव विरक्त वानप्रस्थियों का निर्माण कर देश में शांति स्थापित कर सके। इस प्रकार वैदिक जीवन पद्धति का मूलाधार आश्रम [illegible] है। अपने वर्तमान [illegible] पद्धति के विकास [illegible] चाहिये।

पंजाब की सीमाओं का आधार १९६१ की जनगणना हो

मान्यवर श्री गुलजारीलाल जी नन्दा
गृहमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
माननीय श्री नन्दा जी,

सेवा मे सम्मानपूर्वक नमस्ते।

पंजाबी सूबे के पुनर्गठन पर १८-४-६६ को लोकसभा मे दिया हुआ आप का वक्तव्य पढा जिसमे आपने १९६१ की जनगणना के आधार पर सीमाए निर्धारित करने की घोषणा की है। परन्तु १९६१ की जनगणना के साथ अन्य मामलो को विचार कोटि में रखने की घोषणा करके इसे सन्दिग्ध एव अस्पष्ट बना दिया गया है।

अब यह बात स्पष्ट होगई है कि पंजाबी सूबे की मांग स्पष्टत भाषा की आड मे साम्प्रदायिक एव स्वतन्त्र सिक्ख राज्य बनाने की चाल थी। अकालियो द्वा। १९६१ की जन गणना को आधार न मानना और १९६१ की जन गणना पर युक्ति विहीन ढग से बल देना इसका प्रबल प्रमाण है।

१९४१ और १९६१ में २० वर्ष का अन्तर है। राजनैतिक स्थिति भी बिलकुल बदल चुकी है। उस समय पंजाबी सूबे की माग नहीं उठी थी। यदि १९४१ को जन-गणना को आधार बनाने पर बल दिया जाता है तो पंजाबी सूबे की वर्तमान माग का आधार और औचित्य ही नहीं रहता है। १९६६ मे पंजाबी सूबे की माग करना और १९४१ को उसके साथ जोडना हास्यास्पद है।

अकालियों की सबसे बडी आपत्ति यह है कि १९६१ की जनगणना साम्प्रदायिक आधार पर अवलम्बित है। हिन्दू आन्दोलनकारियो के बहकावे मे आकर लोगों ने पंजाबी के स्थान मे अपनी मातृ भाषा हिन्दी लिखाई थी। परन्तु इस आरोप मे सच्चाई नहीं है। यह आरोप तो अकालियों पर ही लगा था जिन्होंने मुख्यत देहातों मे लोगो को पंजाबी लिखाने के लिए विवश किया। यदि यह मान भी लिया जाय कि १९६१ की जनगणना प्रमाणिक नहीं है और सन्दिग्ध है तो यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं को आधार बना लेना चाहिए। उन आकडों से स्पष्ट है कि हिन्दी को अपनी मातृ भाषा या देव नागरी को अपनी लिपि मानने वालों की सख्या पंजाबी को अपनी मातृभाषा या गुरमुखी को लिपि मानने वालो की सख्या से कहीं अधिक है। यदि यह युक्ति युक्त बात भी स्वीकार न की जाय जिसका साम्प्रदायिकता और साम्प्रदायिक आन्दोलन के साथ जरा भी सम्बन्ध नहीं है तो पुन नये सिरे से मत सग्रह कर लिया जाय। इसमे किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती और न होनी चाहिए। प्रत्येक को अपनी मातृ भाषा लिखाने का सवैधानिक अधिकार प्राप्त है। यदि हिन्दुओं ने अपनी मातृभाषा हिन्दी लिखाई हैं या वे लिखाए तो किसी भी विरोधी को इस पर आपत्ति करने का अधिकार क्योकर हो सकता है।

पंजाबी सूबे का निर्माण साम्प्रदायिक अकाली माग के आगे झुककर किया जा रहा है जिससे पंजाब के हिन्दुओ की स्थिति बडी विषम एव दयनीय बन जायगी।

आज पंजाब के हिन्दु मे आत्म विश्वास एव दृढता की कमी का होना स्वाभाविक ही है। वह यह सोचने पर विवश है कि अपनी सम्पत्ति उद्योगधधे और पूजी पंजाब में ही रखें या दूसरे प्रान्तों मे ले जाय। आज वह अपने को अनाथ समझ रहा है। गत मास सिख पुलीस के अत्याचारों से उसकी स्थिति गभीर बन गई है।

कांग्रेस कार्य कारिणी ने अपने आदर्शों स्व० प० नेहरू जी के आश्वासनों एव भारत सरकार की सुनिश्चित मान्यताओं के विपरीत पंजाब का विभाजन स्वीकार करके भयकर भूल की है जिसका दुष्परिणाम सिखों और हिन्दुओ दोनों को तथा आने वाली सन्तानों को भोगना पडेगा।

मेरी आप से विनम्र प्रार्थना है कि कृपा करके सन् १९६१ की जन गणना के आधार पर ही पंजाबी सूबे निर्माण की जो घोषणा आपने की है उस पर दृढ रहे और उसे असन्दिग्ध बना देवें। यदि इसमे कोई कमजोरी दिखाई गई तो देश मे इसकी भयकर प्रतिक्रिया होगी।

मुझे विश्वास है कि आर्यसमाज पंजाब एकता समिति और जन सघ को दिए गए आश्वासनो पर भी आप दृढ रहेंगे।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

आर्य बाल सम्मेलन

आर्य समाज करोल बाग दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर आर्य बाल सम्मेलन शनिवार ता० ७ मई को होगा।

जिसमें ग्यारहवीं तक के बड़े बालक बालिकाओं को "आर्य समाज" विषय पर तथा मिडिल तक के छोटे बालक बालिकाओं को "महर्षि दयानन्द" विषय पर भाषण प्रतियोगिताऐं होंगी। विजेता १६ छात्रों को पारितोषिक दिये जावेंगे।

बोलने के इच्छुक ता० ५ मई ६६ तक सम्मेलन के संयोजक श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु, आर्योपदेशक १६५४, कूचा दखिनीराय, दरियागंज, दिल्ली ६ के पते पर भेजें।

आर्य समाज ग्वालियर

नगर के निर्वाचन में श्री छगन लाल जी गुप्ता प्रधान और श्री भजन लाल जी शर्मा मन्त्री चुने गए।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा अमरोहा (मुरादाबाद)

का वार्षिक अधिवेशन एव प्रधान मन्त्री सम्मेलन आर्य माज मन्दिर बन्दोसी में दिनांक ८ मई रविवार को ११ बजे से होगा। प्रतिनिधी महानुभाव ठीक समय पर पधारें।

आर्य नगर पहाड़गंज

नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव ८ मई रविवार प्रातः ६ बजे होगा।

आर्य समाज, दीवानहाल

दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन २२ मई रविवार को प्रात १० बजे होगा।

आर्य समाज, कोसली

(रोहतक) के निर्वाचन मे श्री इन्द्रसिंह जी प्रधान और श्री अमृत लाल जी आर्य मन्त्री चुने गए।

आर्य समाज, गोहाटी

(आसाम) के निर्वाचन में श्री ज्वाला प्रसाद जी आर्य (एयर कैरिंग कारपोरेशन) प्रधान तथा श्री सुखदेव जी श्रीमान मन्त्री चुने गए। चुनाव से पूर्व श्री प० अमरनाथ जी शास्त्री (सार्वदेशिक सभा के मान्य उपदेशक) ने कर्तव्य पालन पर भाषण दिया।

आर्यसमाज जनकनगर

सहारनपुर के निर्वाचन में श्री डा. जी. डी आहूजा एम. बी.बी.एस मेडिकल, आफिसर प्रधान और श्री राजेन्द्रप्रसाद आर्य मन्त्री चुने गए।

सिटी आर्यसमाज स्टेशनरोड

मैसूर के निर्वाचन में श्री लक्ष्मीचन्द जी प्रधान, श्री ए० एम० आयगर मन्त्री तथा श्री के० रामकृष्ण जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

महिला आर्यसमाज, राजकोट

मे स्थापित हुई। जिसमें श्रीमती गगा मां प्रभुदास प्रधान तथा श्री विद्या बहन हरीराम मन्त्री निर्वाचित हुई।

पादरी स्काट को निकालो

आर्यसमाज बरिया कालौनी बड़ौदा के मन्त्री श्री ज्ञानचन्द हरदासमल जी ने भारत सरकार से तार देकर अनुरोध किया है कि पादरी स्काट को भारत से निकाला जाय।

आर्यसमाज दयानन्द नगर

गाजियाबाद के निर्वाचन में श्री बाबूराम जी सूद प्रधान और श्री जगबहादुर शास्त्री मन्त्री चुने गए।

दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय, हिसार की धार्मिक सेवाएं

यह विद्यालय देश के बटवारे से पहले लाहौर में था। अब दस वर्ष से दयानन्द कालिज प्रबन्धकर्त्री सभा चित्रगुप्त मार्ग नई देहली के अन्तर्गत हिसार में चल रहा है। इसके अनेक सुयोग्य स्नातक भारत के भिन्न प्रान्तों में बड़ी योग्यता कार्य कुशलता तथा कर्मठता के साथ वैदिक धर्म का प्रचार कार्य कर रहे हैं।

उसी तरह श्री पं० वेदव्रत जी धर्म सिद्धान्त भूषण स्नातक विद्यालय आसाम प्रान्त में वैदिक धर्म प्रचार कर जा रहे हैं। उनके सम्मान तथा अभिनन्दन के लिए विराट सार्वजनिक सभा माननीय नेत्र विशेषज्ञ श्री डा० गिरधर जी भिवानी वासी के सभापतित्व मे ७-५-६६ को दिन के ६ बजे आर्य समाज मन्दिर नागोरी गेट हिसार में होगी। अतः सब सज्जनों की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

स्वा० दिव्यानन्द प्राणनाथ नहीं है

जब मैं विदेशो मे प्रचार-कार्य पर था तो मुझे यह समाचार प्राप्त हुआ था कि श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले का लडका प्राणनाथ ६ वर्षों के अज्ञानवास के पश्चात् स्वा० दिव्यानन्द के रूप में प्रकट हो गये हैं। श्री प्राणनाथ के प्रति मेरा बडा प्रेम था इसलिये समाचार से प्रसन्नता व उनसे मिलने की उत्कण्ठा उत्पन्न होना स्वाभाविक था। सौभाग्य से जब मैं इंगलैण्ड से बम्बई पहुचा और वहां स्वा० दिव्यानन्द के दर्शन हुये तो मैंने तुरन्त अपने मित्र एव बम्बई केन्द्रीय आर्य प्रचार समिति के मन्त्री श्री भगवती प्रसाद जी को स्पष्ट रूप से कह दिया था कि स्वा०दिव्यानन्द ला० रामगोपाल जी का लड़का निश्चित रूप से नही है, और उन्हें धोखा दे रहा है।

दिल्ली पहुचते ही मैंने श्री ला० चतुरसैन गुप्त तथा स्वय ला० रामगोपाल जी से स्वा० दिव्यानन्द के बारे में तथ्य जानने का प्रयत्न किया तो ज्ञात हुआ कि वह स्वयं सशय में थे। अतः मैंने इस सम्बन्ध में खोज करना उचित समझा। खोज करना इसलिये मैंने उचित समझा कि कहीं श्री ला० रामगोपाल जी तथा स्वा० दिव्यानन्द के साथ अन्याय न हो जाय।

अब यथेष्ठ खोज व प्रमाणों के आधार पर मैं निश्चित रूप से घोषणा करने की स्थिति मे हूं कि स्वा० दिव्यानन्द श्री ला० रामगोपाल जी को धोखा दे रहा है। अत. मैं आर्य जनता को सचेत करता हूं कि उससे सावधान रहे और लाला जी के लड़का होने के नाते कोई विशेषता न दें।

- ओम्प्रकाश त्यागी

जहानाबाद (गया) आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज जहानाबाद (गया) का ३६ वां वार्षिकोत्सव आर्यसमाज मन्दिर में गत दिनांक ४,५ और ६ अप्रैल को बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रज्ञाचक्षु स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती, श्री रामानन्द शास्त्री, स्वामी ओंकारानन्दजी स्वामी कर्मानन्द जी, नन्दलाल जी भजनोपदेशक, ठा० यशपाल जी ठा० रणजीत सिंह आदि के विद्वतापूर्ण उपदेश और मनोहर भजन हुए।

गुरुकुल आर्य नगर (कुरकी)

हिसार में नवीन छात्रों का प्रवेश मई मास पर्यन्त होगा। इच्छुक सज्जन विलम्ब न करें। साथ ही मैट्रिक उत्तीर्ण शास्त्री और मैट्रिक उत्तीर्ण प्रभाकर अध्यापकों की आवश्यकता है।

आर्य समाज, नवादा (गया)

का वार्षिकोत्सव दिनाक २३ से २६ मई तक होगा। अनेक विद्वान् और नेता भाग लेंगे।

आर्य समाज, खंडवा

के प्रधान श्री बी० एस० भंडारी, श्री कन्हैयालाल जी खंडेलवाल तथा श्री अक्षयकुमार वर्मा आदि महानुभावों के प्रयत्नों से आनन्दपुर ग्राम में प्रभाव पूर्ण यज्ञ हुआ तथा यज्ञ की महिमा पर श्री बाबूलाल चौधरी, श्री रामकृष्ण पालीवाल आदि के भाषण हुए।

आर्य समाज, हिसार

के वार्षिक निर्वाचन में श्री चौ० रतनलाल जी प्रधान तथा श्री ला० नन्दलाल जी मन्त्री चुने गए।

आर्य समाज, हरदोई

के निर्वाचन में श्री डा० पूर्णदेव जी प्रधान तथा श्री रामेश्वरदयाल जी (शुद्धि) मन्त्री चुने गए।

वैदिक संस्कार

गया १५ अप्रैल ६६। श्री रामावतार प्रसाद पोद्दार मन्त्री, आर्य समाज बारो (मुंगेर) की सुपुत्री का विवाह संस्कार श्री लखनलाल आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के पुराने एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री ला० बालमुकन्द सहाय जी भी उपस्थित थे।

Suave
in
a
Suit

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता	१०)
अथर्ववेद संहिता	८)
यजुर्वेद संहिता	४)
सामवेद संहिता	३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	२)५०
सत्यार्थप्रकाश	२)
संस्कारविधि	१)२५
पंच महायज्ञ विधि	)२५
व्यवहार भानु	)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग	५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र	१) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७×४० इञ्च	२)५०
,, ,, ३६×५४ इञ्च	४)५०
,, ,, ४५×६७ इञ्च	६)५०
कर्त्तव्य दर्पण	)५०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश	३)२५
मराठी सत्यार्थप्रकाश	१)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश	३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति	७)
शिक्षण-तरङ्गिणी	५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी	७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी	५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र	)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से)	)५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्	)५०
कठोपनिषद् ५० प्रश्नोपनिषद्	)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्	)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद्	१)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य	१ २५
मृत्यु और परलोक	१)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य	)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला	३)
बृहद् विमान शास्त्र	१०)
वैदिक वन्दन	५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत)	३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी)	३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द)	२)५०
अभ्यास और वैराग्य	१)६५
निज जीवन वृत वनिका (सजिल्द)	)७५
बाल जीवन सोपान	१)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म	६२
उपनिषद् कथामाला	)२५
सन्तति निग्रह	१)२५
नया संसार	)२०
आदर्श गुरु शिष्य	)२५
कुल्लियात आर्य मुसाफिर	६)
पुरुष सूक्त	)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत)	१)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर	६२
स्वर्ग में हड़ताल	)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा	४)५०
भोज प्रबन्ध	२)२५
वैदिक तत्व मीमांसा	)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा	५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं	)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप	२)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द	)६२
वेद और विज्ञान	)७०
इञ्जील मे परस्पर विरोधी वचन	)३७
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द	)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा	)५०
इराक की यात्रा	२)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र	)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र	)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां	)७५
बाल संस्कृत सुधा	)५०
वैदिक ईश वन्दना	४०
वैदिक योगामृत	)६२
दयानन्द दिग्दर्शन	)७५
भ्रम निवारण	)३०
वैदिक राष्ट्रीयता	)२५
वेद की इयत्ता	१)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह	)७५
कर्म और भोग	१)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश	२)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श	)७५
वैदिक युग और आदि मानव	४)
वैदिक इतिहास विमर्श	७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम (पूर्वार्द्ध)	१)५०
,, ,, (उत्तरार्द्ध)	१)५०
वैदिक संस्कृति	)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति	)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज	)३७
आर्य समाज की नीति	)२५
सायण और दयानन्द	३)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू	५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश	)७५
वैदिक सूक्ति सुधा	)३०
ऋषि दयानन्द वचनामृत	)३०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र	)५०
संस्कार महत्व	)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व	)६२

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	)३१
चरित्र निर्माण	१)१५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण	)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	)२५
दौलत की मार	)२५
अनुशासन का विधान	)२५
धर्म और धन	)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार	१)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली	)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि	)५०

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय	२)
आर्य समाज के महाधन	२)५०
एशिया का वेनिस	)७५
स्वराज्य दर्शन	१)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर	१)५०
भजन भास्कर	१)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण	२)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी	१)२५

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

ARYA SAMAJ
ITS CULT AND CREED

A unique and elegantly printed Book of the Day

By—Acharya Vaidyanath Shastri.

Rs. 5/-

This is the most popular and widely read first English book of Acharya Vaidya Nath Shastri a well known Arya Samaj Scholar and author credited with writing books in Hindi of outstanding merit on religion and philosophy some of them winning prizes.

The book presents a scholarly and lucid exposition of the Cult and Creed of AryaSamaj ranking among the high-class rare English literature of Arya Samaj. It is a worth reading worth preserving & worth presenting book to the English reading persons especially to the intelligentsia.

Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha
Dayanand Bhawan,
Ramlila Ground, New Delhi-1

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली - १ से प्रकाशित

...सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख प[illegible]

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ फोन २७४७७१ ज्येष्ठ कृष्णा ३ सवत् २०२[illegible] [illegible] १९६६, दयानन्दाब्द १४[illegible], सृष्टि सम्वत् १९७२९४[illegible]

विश्व-शान्ति का मूल मन्त्र—वेद मार्ग

सभा प्रधान
सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास

वेद—आज्ञा

पुरुषार्थी

देवीऽउषासावश्विना सुत्रामेन्द्रे सरस्वती। बलं न वाचमास्यऽउषाभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥५०॥

(यजुर्वेद अध्याय २१ मन्त्र ५०)

संस्कृत भावार्थः—

अत्र वा॰चकलु॰—ये पुरुषार्थिनो मनुष्याः सूर्यचन्द्रसन्ध्यावन्नियमेन प्रयतन्ते सन्धिवेलायां शयनाऽऽलस्यादिकं विहायेश्वरस्य ध्यानं कुर्वन्ति ते पुष्कलां श्रियं प्राप्नुवन्ति ।५०॥

आर्य भाषा भावार्थ—

इस मन्त्र में वाचकलु॰—जो पुरुषार्थी मनुष्य सूर्य चन्द्रमा सायंकाल और प्रातःकाल की वेला के समान नियम के साथ यत्न २ करते हैं तथा सायंकाल और प्रातःकाल की वेला में सोने और आलस्य आदि को छोड़ ईश्वर का ध्यान करते हैं वे बहुत धन को पाते हैं ॥५०॥

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द समन्वयवादी नहीं—सत्यवादी थे

– बिहार के आर्य नेता श्री रामनारायण जी शास्त्री

राष्ट्र हित समाजवाद में नहीं—त्यागवाद में

– श्री ओम्प्रकाश त्यागी

आर्य सम्मेलन

सभा प्रधान
सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास

नई दिल्ली दिनांक १ मई को मध्याह्न २ बजे से आर्य समाज पटेल नगर नई दिल्ली की ओर से आयोजित आर्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए माननीय श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभ दास ने आर्य जनों को उद्बोधन करते हुए कहा कि अपने पूर्वजों के बनाये वेद धर्म मार्ग पर चलने से ही सुख और शान्ति प्राप्त हो सकती है। आर्य समाज को चाहिये कि वह वैदिक धर्म प्रचार करने के दायित्व को पूरा करने में पीछे न रहें।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सभा मन्त्री श्री ला॰ रामगोपाल जी शालवाले ने कहा कि इस समय देश में अनेक गम्भीर सकट हैं, आर्य जनों को सतत जागरूक रहकर अपने कर्तव्य का पालन करना होगा। सभा मन्त्री ने देश भर में आर्य वीर दलों की स्थापना पर विशेष बल दिया।

सम्मेलन में हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री बाल रेड्डी जी ने हैदराबाद में निजामशाही के क्रूर दमनचक्रों का वर्णन करते हुए देश भर के आर्य समाजों द्वारा त्याग और बलिदान की सराहना की।

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री प॰ शिवाधर जी ने आर्य जनों को सात्विक आर्य जीवन बनाने की प्रेरणा दी। मध्यभारत आर्य प्रतिनिधि सभा ग्वालियर के प्रधान श्री डा॰ महावीरसिंह जी (अवकाश प्राप्त सिविलसर्जन) ने आर्य परिवारों में वैदिक का वातावरण उत्पन्न करने की आर्य जनों से अपील की। डा॰महावीरसिंह जी ग्वालियर—

आर्य सम्मेलन

आर्य समाज [illegible] मुजफ्फरनगर-उत्तरप्रदेश) के वार्षिकोत्सव दक्षिण आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) के उपप्रधान प॰ बालरेड्डी के सभापतित्व में आयोजित किसान जनसभा को सं[illegible] करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री और [illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान, प्रसिद्ध व्याख्याता श्री प॰ [illegible] नारायण शास्त्री विद्यालंकार" ने स्वामी दयानन्द की भारत को [illegible] विषय पर बोलते हुए कहा 'महर्षि दयानन्द और महात्मा [illegible] दोनों उन्नीसवीं शताब्दी के म[illegible] थे। गांधी को भारत की ज[illegible] 'महात्मा' कहा और स्वामी द[illegible] को "महर्षि"। आपने कहा गा[illegible] सत और सुधारक थे। गांधी [illegible] राजनीति के बाद धर्म को अ[illegible] बताया और महर्षि दयानन्द ने धर्म तब राजनीति को [illegible] किया। आपने बताया कि गां[illegible] "अपने देश में अपना राज चा[illegible]

श्री रामनारायण शास्त्री

और महर्षि दयानन्द "अपने दे[illegible] अपना समाज चाहते थे।" गांधी जी पहले अपना राज बाद में समाज के पृष्ठपोषक थे किन्तु महर्षि "पहले अपना समाज पीछे राज के प्रेरक थे" दोनों में केवल इतना ही मौलिक अन्तर न[illegible] महात्मा गांधी ने देश की सामाजिक और साम्प्रदायिक एकता को आ[illegible] सम्प्रदायवाद पैगम्बरवाद और रूढ़ि [illegible] की बुनियाद रखना चाहा, किन्तु स्वामी जी ने समाज की रूढ़ियों को, [illegible] साम्प्रदायिक सामाजिक तथा विभिन्न जातिवादीय व्यवस्था को [illegible] कर और नये समाज के नये ढांचे के विकास के लिए वैदिक [illegible] सामाजिक व्यवस्था की बुनियाद पर नये समाज के विकास की [illegible] दी। स्वामी दयानन्द के अतिरिक्त भारत में जितने भी आचार्य, [illegible] नेता और सत आए, शंकराचार्य से लेकर आचार्य विनो[illegible] और शिवाजी से लेकर जवाहरलाल तक सभी समन्वयवादी थे। [illegible] समन्वयवादी होते हैं, वे समझौतावादी होते हैं। समझौता के बा[illegible] देश के सामाजिक अथवा राजनैतिक नीतिनिर्धारण में चूक करके [illegible] की प्रवृत्ति होती है। स्वामी दयानन्द ने भारत, भारतीयता, आर्य विचारधारा की स्थापना के लिए तथा वैदिक धर्म के पुन[illegible] के लिए किसी के साथ समन्वय या समझौता नहीं किया।

शास्त्र-चर्चा

भगवान् से दो प्रार्थनाएं

जीवत्सर्वदरिद्रोपि
धीदरिद्रो न जीवति।

मैं सबदरिद्र भले ही रहूं पर धीदरिद्र कभी न बनूं।

"धर्मे मे धीयतां बुद्धि,
मनो मे महदस्तु च—

मेरी बुद्धि धर्म में लगी रहे— और मेरा मन बड़ा हो विशाल हो उदार हो।

भाव शुद्ध हों

वेदास्त्यागाश्च, यज्ञाश्च,
नियमाश्च तपांसि च।
न विप्रदुष्टभावस्य,
सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित्॥
(मनु)

जिसके भाव शुद्ध नहीं होते उसके वेद, उसका त्याग उसके यज्ञ उसके यम-नियम उसका तप सब वृथा है।

प्रसन्न रखो तो-प्रसन्न रहो

चक्षुषा, मनसा
वाचा च कर्मणा।
प्रसादयति यो लोकं,
तं लोकोऽनुप्रसीदति॥

जो पुरुष (१) चक्षु (२) मन (३) वचन (४) और कर्म से लोगों को प्रसन्न रखेगा लोग भी उसको प्रसन्न रखेंगे।

नरम भी रहो गरम भी

मृदुमप्यवमन्यन्त
तीक्ष्णादुद्विजते जनः।
मा तीक्ष्णो मा मृदु भूस्त्वं
तीक्ष्णो भव मृदुर्भव॥
(शान्तिपर्व)

नरम रहोगे तो लोग तिरस्कार करेंगे गरम रहोगे तो लोग डरेंगे इसलिये न केवल नरम बनो न केवल गरम नरम गरम दोनों बने रहो।

उसके लिए क्या कठिन

शरीरनिरपेक्षस्य, दक्षस्य
व्यवसायिनः।
न्यायेनारब्धकार्यस्य,
नास्ति किंचन दुष्करम्॥
(नीति-पद्धति)

जो शरीर की परवाह नहीं करता जो दक्ष व्यवसायी है कार्यों को न्यायपूर्वक प्रारम्भ करता है भला उसके लिए संसार में कौनसा काम कठिन है?

सौ में से एक जानता है

उपकर्तुमप्रकाशं क्षन्तु
न्यूनेष्वयाचितं दातु
अभिसन्धातु गुणै
शतेषु केचिद्विजानन्ति॥
(सुभाषितावली)

चुपचाप उपकार करना कम जोरों पर क्षमा करना बिना मांगे देना गुणों के कारण मेल करना इत्यादि बातों को सौ में से कोई जानता है।

बड़ों की बड़ी बात

अयमुन्नतिसत्त्वशालिनाम्
महतां कापि कठोरचित्तता।
उपकृत्य भवन्ति दूरतः,
परत प्रत्युपकारशङ्कया॥

बड़ों की यही बड़ी बात है कि दूसरों पर उपकार करके दूर भाग जाते हैं इसलिये कि कहीं वह पुरुष फिर प्रत्युपकार न कर बैठे। कैसी कठोरचित्तता है।

ये सब नष्ट होते हैं

केचिदज्ञानतो नष्टा,
कचिन्नष्टा प्रमादतः।
केचिज्ज्ञानावलेपेन,
कचिन्नष्टैस्तु नाशिता॥
(महाभारत)

कोई अज्ञान से नष्ट होते हैं कोई प्रमाद से कोई ज्ञान के घमण्ड से कोई जो बचे उनको वे नष्ट कर देते हैं जो कि स्वयं नष्ट हुए रहते हैं।

ये भी

अनायका विनश्यन्ति,
नश्यन्ति बहुनायका।
स्त्रीनायका विनश्यन्ति।
नश्यन्ति बालनायका॥

जिनका कोई नायक नहीं वे नष्ट हो जाते हैं जिनके अनेक अथवा बहुनायक होते हैं वे भी नष्ट हो जाते हैं। स्त्रीनायक वाले भी और बालनायक वाले भी नष्ट हो जाते हैं—

बहवो यत्र नेतारः
सर्वपण्डितमानिनः।
सर्वे महत्त्वमिच्छन्ति
तद्वृन्दमवसीदति॥

जहां बहुत से नेता हों और हों सभी पण्डितमानी और सभी बड़प्पन चाहते हों वह समुदाय नष्ट हो जाता है।

भला यह सफेद है, काला है, हरा है इसका निर्णय करने का अधिकार अन्धे को कभी मिल सकता है? कभी नहीं

परिचय शीघ्र भेजें।

आर्य समाज-परिचयांक

भारत और भारत से बाहर चार हजार से अधिक आर्य समाजें हैं। लाखों सदस्य हैं। करोड़ों रुपया व्यय करते हैं।

किन्तु सर्व साधारण को पता नहीं!

इसमें आर्यसमाज की सदस्य संख्या, आय-व्यय, मन्त्री का चित्र और प्रधान का नाम हम अङ्क में देंगे

यह विशेषांक भी विशेष ही होगा

हजारों मन्त्रियों के चित्रों सहित यह विशेषांक आर्य जगत् का दर्शनीय अङ्क होगा।

इसका मूल्य केवल १)१० पैसा होगा

प्रत्येक आर्य समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री महोदय अपनी संस्था का परिचय और चित्र भेजने में शीघ्रता करें।

इस महान अंक पर २५-३० हजार रुपया व्यय होगा। सभा पर इतनी भारी धनराशि का भार न पड़े और सुगमता से अंक प्रकाशित हो जाय इसके लिए मन्त्री महोदयों से, कम से कम १० अंक लेने और उसके ११) अग्रिम भेजने की प्रार्थना की थी। हर्ष की बात है कि आर्यसमाजों के मन्त्री महानुभावों ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की और धन भेज रहे हैं।

आप जिस किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री हैं उसका परिचय अपना नाम और चित्र तथा प्रधान का नाम भेजने में देर न करें।

प्रबन्धक

आर्य जनों से निवेदन

१—आर्य समाज परिचयांक तो हम प्रकाशित करेंगे ही किन्तु आर्य शिक्षा प्रसारांक के प्रकाशित करने की पूरी भी तय्यारी है।

२ हमारे पास लगभग ४०० आर्य शिक्षा संस्थाओं के पते हैं इनसे विवरण मांगा था। हर्ष की बात है कि लगभग १५० शिक्षा संस्थाओं के परिचय और मुख्याचार्यों के चित्र अब तक आ गए हैं।

३ आर्य समाज अथवा आर्य जनों द्वारा सञ्चालित जो शिक्षा संस्थाएं हैं उनमें कुछ ऐसी संस्थाएं भी होंगी जिनका हमें ज्ञान न हो। अतः जितनी शिक्षा संस्थाएं आपकी जानकारी में हों उनका पता भेजें। फिर उन से परिचय प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे।

४—हमारी हार्दिक इच्छा है कि इस विशेषांक में छपने से कोई भी आर्य शिक्षा संस्था वंचित न रह जाय।

५—आर्य समाज परिचयांक के लिए अब तक लगभग ५०० चित्र और परिचय आ गए हैं। जिन मन्त्री महोदयों ने अपने चित्र परिचय नहीं भेजे वह अब भेजने में विलम्ब न करें।

६ सार्वदेशिक की ग्राहक संख्या दिनों दिन बढ़ रही है यह सब आपके पुरुषार्थ का फल है किन्तु अभी सन्तोषजनक नहीं है आप इतनी सहायता करें कि

आपकी आर्य समाज के अनेक सदस्य ग्राहक बनें इसका एक ही प्रकार है वह यह कि आप कम से कम ५ प्रति हर सप्ताह मंगा लें अपने सदस्यों को दें १५ पैसे लें। एक महीने के पश्चात् फीस काट कर मनिआर्डर भेजते रहें। यह बहुत ही सरल प्रकार है। कृपया इस पर आप ही ध्यान दें।

७—यदि आपके पास बलिदान अंक बोधांक और साप्ताहिक पत्र का कम शेष है तो वह भी भेजने में शीघ्रता करें।

८ सार्वदेशिक में विज्ञापन भी छिपवाने का ध्यान रखें।

९ हर बृहस्पतिवार को सार्वदेशिक डाक की भेंट करते हैं जो कभी बार तक आपको मिलना चाहिए किन्तु यदि देर में मिले तो हमें दोषी न समझते हुए भी सूचित करते रहें पुकारी भेज देंगे।

— प्रबन्धक

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

निकोबार या दूसरा नागालैण्ड

अब से लगभग पांच वर्ष पहले की बात है। अपनी नेपाल यात्रा के दौरान हमारी एक बौद्धभिक्षु से भेंट हुई जो जन्मना गुजराती थे और कभी थाईलैण्ड में प्रसिद्ध वस्त्र व्यवसायी रह चुके थे। परन्तु जीवन के अतर्कित घटनाचक्र से प्रभावित होकर उन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति त्याग दी थी और मानवता की सेवा के लिए उन्होंने बौद्ध भिक्षु का चोला धारण कर लिया था। तब से नेपाल को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र चुना और वहीं वे दीन-दुःखी, अशिक्षित तथा रोगार्त ग्रामीण जनता की निस्स्वार्थ भाव से सेवा कर रहे हैं।

परिचय होने पर दक्षिणपूर्वी एशियाई देशों की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति के सम्बन्ध में उनसे विस्तृत वार्तालाप हुआ। इस बातचीत के सिलसिले में उन्होंने हमें निकोबार के सम्बन्ध में एक रहस्यपूर्ण तथ्य बताया। वह तथ्य यह था कि निकोबार के एक बहुत बड़े मुसलमान उद्योगपति ने, जो सम्भवतः पाकिस्तान से आकर वहां बसा था, उस द्वीप की आदिवासी लड़कियों से शादी की और उन लड़कियों के द्वारा तथा अपने उद्योगों में जीविका के प्रलोभन द्वारा वह वहां के आदिवासियों को धड़ाधड़ मुसलमान बना रहा है। कुछ सालों के अन्दर ही उसने सैकड़ों आदिवासियों को मुसलमान बना लिया है।

लगता है कि इसी बीच ईसाई पादरियों का ध्यान भी निकोबार की तरफ गया और उन्होंने वहाँ अपना जाल गुप्त रूप से फैलाना प्रारम्भ कर दिया। आदिवासियों के धर्म-परिवर्तन के काम में ईसाई पादरी विशेष दक्ष हैं और इस प्रयोजन के लिए उन्हें विशेष प्रशिक्षण देकर उन इलाकों में भेजा जाता है। रांची, छोटा नागपुर, झारखण्ड, सरगुजा और छत्तीसगढ़ में जिस बड़े पैमाने पर उन्होंने भोली जनता को छल-बल से तथा साम-दान-दण्ड-भेद से ईसाई बनाया है वह किसी से छिपा नहीं है। ईसाई पादरियों के पास न धन की कमी है, न अन्य साधनों की, तथा न बनावटी सेवा-भावना की। पादरियों का परिश्रम जैसे भारत के अन्य आदिवासी प्रदेशों में रंग लाया है वैसे ही अब वह निकोबार में भी खूब रंग लाने लगा है और द्वीप की १५,००० की जनसंख्या में से १२,००० को ईसाई बना लिया गया है। सन् ४७ से पहले इस द्वीप में केवल एक गिरजाघर था और अब वहां १३ गिरजाघर हैं। अमरीका और इंगलैण्ड आदि देशों से प्रभूत धन आता है और ईसाई पादरी निर्द्वन्द्व होकर भारतीय धर्म और संस्कृति की जड़ काट रहे हैं।

आश्चर्य की बात तो यह है कि बाहर से हिन्दुओं के वहां जाकर बसने पर प्रतिबन्ध है और विधर्मियों को अपनी कुचालें चलने की पूरी छूट है। ऐसे समय भारत सरकार की धर्मनिरपेक्षता आड़े आती है। हमने अनेक बार लिखा है, और आज फिर दुहरा रहे हैं कि भारत सरकार धर्म-निरपेक्षता की नीति पर जिस ढंग से अमल करती है उसका परिणाम केवल एक ही होता है—हिन्दुत्व पर नियन्त्रण और विधर्मियों को छूट, अपनों से शत्रुता और परायों से मैत्री। धार्मिक दृष्टि के अलावा राजनैतिक दृष्टि से भी यह कितनी घातक मनोवृत्ति है और राष्ट्र को इसका कितना भयंकर कुफल भोगना पड़ रहा है, यह बताने की आवश्यकता नहीं।

निकोबार में अब स्थिति कितनी संकटापन्न हो गई है यह इसी से जाना जा सकता है कि हिन्दू आदिवासियों की रानी चंपा ने आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ को मार्मिक पत्र लिखकर इस सब स्थिति से अवगत कराया है और भारत सरकार को चेतावनी दी है कि यदि इस दिशा में कोई समुचित कदम नहीं उठाया गया तो वह दिन दूर नहीं जब निकोबार में एक भी हिन्दू नहीं रह जाएगा, सारी जनता धार्मिक और राजनीतिक रूप से विदेशियों के षड़यंत्रों का शिकार हो जाएगी और दूसरे नागालैण्ड की स्थिति पैदा हो जाएगी। क्या सरकार का एक नागालैण्ड से पेट नहीं भरा?

सरकार की दुर्बलता, निष्क्रियता और ऐसे मामलों में किंकर्तव्यविमूढ़ता हम से छिपी नहीं है। परन्तु सरकार कम से कम इतना तो कर सकती है कि इस स्थिति के निराकरण में समर्थ आर्यसमाज, रामकृष्ण मिशन और आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ जैसी सेवाभावी संस्थाओं को सहयोग दे और उनके कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन दे। जिस द्वीप को भारत की आजादी के दीवाने, बलिपन्थी, क्रान्तिकारियों ने अपने कारावास की तपस्या से पवित्र किया है और इसी लिए जिस द्वीप का नाम आजाद हिन्द फौज के नेता श्री सुभाषचन्द्र बोस ने 'शहीद द्वीप' रखा था, क्या शहीदों के उस स्मारक को ईसाई स्थान बनने दिया जाएगा? राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से यह कितने बड़े कलंक की बात होगी!

इस समय भारत के ईसाई केरल से लेकर असम तक एक ईसाई बहुल क्षेत्र बनाने की सुनिश्चित योजना में लगे हैं। देश के मध्यभाग पर, जिसमें खनिज पदार्थों, कल-कारखानों तथा पेट्रोल, कोयला आदि आधुनिक उद्योग के साधनों का बाहुल्य होगा, ईसाइयों का दांत है। दक्षिण-पश्चिम की सीमा से लेकर उत्तर-पूर्व की सीमा तक भारत के वक्ष को चीरती हुई इस डेढ़ सौ-दो सौ मील चौड़ी पट्टी में पहले ही ईसाइयों का काफी बोलबाला है। वही पट्टी अब निकोबार तक बढ़ाने की चाल है। जिस दिन इस सारे प्रदेश को ईसाई स्थान बनाने की मांग खुल्लम खुल्ला की जाएगी, शायद तब देशवासियों की आंखें खुलेंगी। लेकिन तब तक तो सारा खेल खत्म हो चुकेगा। इसलिए जो कुछ करना हो, उससे पहले ही किया जाना चाहिए।

आकाशवाणी से संस्कृत

फरवरी मास में पश्चिमी जर्मनी के रेडियो स्टेशन से संस्कृत भाषा में प्रथमबार समाचार प्रसारण हुआ था। वह एक अनोखी घटना थी, क्योंकि इससे पहले किसी देश ने संस्कृत में समाचार-प्रसारण की हिम्मत नहीं दिखाई थी। और तो और, भारत में भी यह बात कल्पनातीत थी। भारतीय आकाशवाणी से संस्कृत में मन्त्रों या श्लोकों का उच्चारण अथवा वर्ष में एकाध बार संस्कृत नाटकों का रेडियो रूपान्तर तो सुना गया है, परन्तु समाचार-प्रसारण की बात किसी के मस्तिष्क मे नहीं आई थी। विश्व की इस प्राचीनतम और प्रमुखतम भाषा के गौरव और गरिमा को अनुभव करके शिक्षा के क्षेत्र में प्रथम मान्यता देने का श्रेय जैसे जर्मनी को प्राप्त है, वैसे ही अब भी संस्कृत में समाचार-प्रसारण का प्रथम श्रेय जर्मनी को ही है।

विदेशों में संस्कृत का इतना अधिक आदर होते देख भारतीय आकाशवाणी को भी लज्जा आई और अब उसने भी १७ जुलाई से संस्कृत पाठ प्रसारित करने की योजना बनाई है। सौभाग्य से दिल्ली के वर्तमान चीफ कमिश्नर श्री आदित्यनाथ झा संस्कृत के बहुत अच्छे विद्वान् हैं। आखिर स्व० महामहोपाध्याय श्री गंगानाथझा का पितृत्व भी सार्थक होना चाहिए। यदि उस मनीषी का पुत्र ही संस्कृत का विद्वान् नहीं होगा तो कौन होगा? आकाशवाणी से संस्कृत पाठ प्रसारित करने की योजना में भी आदित्यनाथ झा का भी काफी हाथ है।

संसार का शायद ही कोई जन-मान्य विश्वविद्यालय होगा जिसमें संस्कृत पढ़ाने की व्यवस्था न हो। सदियों तक आर्यों ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जो कुछ चिन्तन किया उस सबका फल संस्कृत में ही सुरक्षित है। संस्कृत वाङ्मय की विविधता, विपुलता और गम्भीरता का मुकाबला संसार की किसी अन्य भाषा का साहित्य नहीं कर सकता। संस्कृत के अक्षय भण्डार में अब भी कितने ही ग्रन्थरत्न छिपे पड़े हैं जो आज तक प्रकाश में नहीं आ सके। 'पुराना' कह कर संस्कृत वाङ्मय की उपेक्षा कर देने से मानवजाति का अपना ही अहित होगा, अब भी जीवन के अनेक क्षेत्र ऐसे हैं जिनके निभृत और अन्धकाराच्छन्न कोनों को वैदिक आर्ष ग्रन्थों की अमर ज्योति ही देदीप्यमान कर सकती है। संस्कृत का पठन-पाठन जितना भी हो, थोड़ा है। भारतवासियों को संस्कृत दाय में मिली है। इस दाय की रक्षा का दायित्व भी सब से अधिक भारतवासियों का ही है।

सामयिक-चर्चा

ब्रिटेन और अमेरिका की दुरभि सन्धि

रूस के न्यूटाइम्स साप्ताहिक ने एक लेख मे कहा है कि ब्रिटेन और अमेरिका ने पारस्परिक षडयन्त्र से जिसका लक्ष्य काश्मीर को भारत से पृथक् करके उसे अपना कठपुतली राज्य बनाना था काश्मीर की स्थिति को उलझा दिया है।

३००० शब्दों के इस लेख में बताया गया है कि १९४७ के लुटेरों के आक्रमण के समय से ही जिसका नेतृत्व अमेरिका के गुप्तचर विभाग के हैट नामक एक एजेन्ट ने किया था अमेरिका काश्मीर को ओकीनावा की तरह सुदृढ सैनिक अड्डा बनाने का प्रयत्न करता रहताहै क्योंकि काश्मीर रूस, चीन. भारत, पाकिस्तान और और अफगानिस्तान की सीमाओं के संगम पर स्थितहै।

यद्यपि लेख मे पाकिस्तान का नाम नहीं है तथापि इसके समस्त संदर्भ से यह स्पष्ट हो जाता है कि सेन्टो और सीयटो की पाकिस्तान की सदस्यता और उसके अमेरिका के कक्षवर्ती होने से ऐंग्लो अमेरिकन शक्तियों के लिए काश्मीर में अपना कुचक्र चलाते रहना संभव हो गया था।

लेख में आगे बताया गया है कि १८ वर्षों के अनुभव से भारत और पाकिस्तान पर यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि उन्हे स्वयं बाहरी कुचक्र वा हस्तक्षेप मे ऊपर उठकर इस समस्या का हल करना चाहिए क्योंकि बाह्य शक्तियां अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए समस्या को उलझा रही हैं। प्रक्रिया इसी प्रकार बन्द हो सकती है।

शेख अब्दुल्ला के नाम का उल्लेख किए बिना लेख मे यह भी कहा गया है कि कुछ वर्ष हुए भारत सरकार को इस बात का संकेत मिला था कि काश्मीर के कुछ नेताओं ने जो अमेरिका के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध थे, काश्मीर को स्वतन्त्र करके और कठपुतली सरकार बनाकर उस पर शासन करने का षडयन्त्र रचा था।

इस लेख में ५ जुलाई १९५३ के न्यूयार्क टाइम्स के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित हुआ काश्मीर का नकशा भी छपा है जिसका शीर्षक है:—काश्मीर के प्रस्तावित विभाजन से उसका उत्तर पश्चिमी भाग पाकिस्तान को मिलेगा, जम्मू और लद्दाख का प्राय: सभी भाग भारत को दिया जायगा और काश्मीर की घाटी सहित शेष समस्त भाग स्वतन्त्र होगा।"

लेख में काश्मीर सम्बन्धी अमेरिका की दुरभि सन्धियों की क्रम वार सूची दी गई है।

नेत्र दान

दिल्ली के इर्विन हस्पताल में आंखें लगाने की व्यवस्था की जा रही है जिससे उनकी दृष्टि पुन आ जाय।

हिन्दुस्तान टाइम्स के संवाददाता के ११ अप्रैल की रिपोर्ट के अनुसार एक वयस्क लड़की जो १० वर्ष तक अंधकार के जगत् में रह चुकी थी अब पुन: देख सकेगी।

अल्मोड़ा जिले के एक गांव की १६वर्षीया इस लड़की को ४५ मिनिट के आपरेशन के बाद दृष्टि पुनः आ गई है।

जब उसकी पट्टी खोली गई तो वह खुशी से फूली न समा सकी। उसने कहा—"अब मैं देख सकतीहूं।"

उसके चाचा ने जो हस्पताल में चपरासी है खुश होकर कहा—"अरे, अब हम अपनी लाड़ी के लिए वर प्राप्त करने में समर्थ हो जायगे।"

दूसरों की आंख लगाने का यह एक सफल मामला है।

एक ड्राइवर की एक दुर्घटना में एक आंख जाती रही थी। वह पुनः गाड़ी चलाने में समर्थ हो जायगा।

५५ वर्षीय एक पुरुष ११ वर्ष के बाद पुन देखने मे समर्थ हो जायगा।

इर्विन हस्पताल की सूची में २०० व्यक्तियों के नाम दर्ज है जिनकी आंखों में दूसरों की आंखें लगा देने से रोशनी आ सकती है।

आजाद् मेडीकल कालेज के प्रो० ऐस० आर० के० मलिक ने अपने हस्पताल में यह कार्य प्रारम्भ किया हुआ है और उन्हें अमेरिका से कुछ आंखों का दान प्राप्त हुआ है।

उन्होंने कहा कि सदा इस प्रकार के विदेशों के दान पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। उन्होंने देश वासियों से नेत्र दान की अपील की है।

उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि जिन लोगोंने नेत्र दान करने का हस्पताल को वचन दिया था उनके नेत्रों का हस्पताल प्रयोग नहीं कर सका क्योंकि उनके रिश्तेदारों ने उनकी मृत्यु की खबर हस्पताल को देने की चिन्ता नहीं की।

नेत्र-दान और नेत्रों के लगाए जाने का कार्य बड़ा महत्व पूर्ण है। यदि किसी के नेत्र-दान से दूसरों की आंखों में ज्योति आ जाय तो इससे बढ़कर धर्म्म और उपकार का और क्या कार्य हो सकता है? इर्विन हस्पताल ने यह व्यवस्था करके बड़ा प्रशंसनीय कार्य किया है और इसके लिए उसे हर प्रकार का प्रोत्साहन मिलना चाहिए जिससे इसका विस्तार हो सके।

अधिकाधिक लोगों को नेत्र-दान करके यश और पुण्य के भागी बनना चाहिये और उनको मृत्यु के बाद उनके रिश्तेदारों को उनकी प्रतिज्ञा एव इच्छा की पूर्ति करके उनकी आत्मा की सन्तुष्टि का प्रबन्ध करना चाहिए। नेत्रों का दान गरीब व्यक्ति भी कर सकते हैं और वे रुपए पैसे एव सम्पत्ति का दान करने वालों से कम यशस्वी नहीं बन सकते। नेत्र दान करने वाले के नेत्रों को निकलवा देना धर्म्म कार्य है अधर्म नहीं है।

शेख का फतवा

संयुक्त अरब गणराज्य के मुफ्ती शेख अहमद हारिदी ने यह व्यवस्था दी है कि किसी व्यक्ति की जान बचाने के लिए अन्य कोई उपाय न होने पर उस व्यक्ति को सुअर का अंग लगा देना इस्लाम के विरुद्ध नहीं है।

'अल अखबार' द्वारा ब्रिटेन में एक व्यक्ति के हृदय मे सुअर का हृदय सफलता पूर्वक लगा दिए जाने पर उस व्यक्ति की जान बच जाने का समाचार दिए जाने पर श्रीहारिदी ने अपनी राय प्रकट की।

'अल अखबार' ने कहा कि इस समाचार से इस्लामी जगत् में सन्देह उत्पन्न हो सकता है क्योंकि मुसलमानों में सुअर के मांस का निषेध है। उक्त अखबार ने शेख हारिदी की राय छापी है जिसमें कहा गया है कि पवित्र कुरान में मानव-जीवन सम्बन्धी चिकित्सा शास्त्रों में जानवरों के किसी अङ्ग के उपयोग का निषेध कहीं नहीं है इसमें सुअर भी शामिल है। इस्लाम में केवल सुअर के मांस भक्षण का ही निषेध है।

वैज्ञानिक प्रगति से धार्मिक कट्टरता के बन्धन कितने ढीले हो रहे हैं इसका यह एक उदाहरण है।

अमरीकन महिला—

श्रीमती ऐनी एलीजेबेथ लेंग होग

एम० ए०

आप मिशीगेन यूनीवर्सिटी अमेरिका के इतिहास-विभाग में वह २ वर्ष से निम्न लिखित विषय पर रिसर्च कर रही हैं:—

"सन् १८८६ से १९२० तक पंजाब में राष्ट्रीयता के विकास में आर्यसमाज की शिक्षा पद्धति का योग दान।"

इस अनुसन्धान के लिए आप भारत पधारीं हैं। यहां अनेक नगरों की आर्य शिक्षा संस्थाओं का एवं आर्य समाज के पुराने व्यक्तियों का आपने अध्ययन किया है।

आपने लगातार सभा भवन में पधार कर अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आपको अनेक पुस्तकें भेंट की गईं। जिसमें मान्य श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री द्वारा नवनिर्मित पुस्तक Arya Samaj its Cult and Creed की आपने मनो-योग पूर्वक अध्ययन करते हुए बड़ी सराहना की।

ओषधि-पत्र

१ सर्पौषधी—जमालगोटे की मिंगि को नींबू के रस में एक दिन रात भिगोय, पुनः एक दिन रात सुखावे। इस रीति से २१ इक्कीस पुट अर्थात् बयालीस दिन रात में करके रख ले, जब किसी को सांप काटे तब पत्थर पर घिसके जिस जगह काटा हो लगावे, यदि मूछित हो गया हो तो सलाई से थोड़ा सा आंख के ऊपर लगावे और त्रिफला के जल को उपस्थित रक्खे, मूर्छा उतर जाने पर त्रिफला के जल से आंखें धोवे, वैसे कई दिन धोवें, त्रिफला को रात्रि के समय मट्टी के पात्र में भिगोवे और कण्ठ तक ठण्डा जल पिला के दो चार बार वम करावें, तो सर्प के विष से बच जाय।

२ द्वितीय औषधी—जिस किसी को सांप काटे, उसको तुरन्त ही एक रीठा कुछ पानी में घिस कर पिलाना चाहिये, तुरन्त ही विष जाता रहेगा।

३ तथा तृतीय—नीमगिलोय को बांट के पीवें, यदि मूर्छा आ गई हो तो जहां तक हो सके वहां तक पिचकारी से नीमगिलोय को पेट में पहुंचावें, तो वह बच जाय।

४ औषध गोहरे के विष की—होलामरवा पैसे भर पानी में पीस कर पिला दे, यदि मूछित होय गया हो तो पिचकारी से पेट में पहुंचावे, तो अच्छा हो जाय।

५ बाला की ओषधी—छः मासे आक का दूध और बारह मासे गुड़, दोनों को मिला कर टिकड़ी करके एक दो अथवा तीन बार बाले पर लगा दे तो बाला जाय।

६ हड़के कुत्ते की औषधी—सफेद तिल का तेल और आकरा दूध बराबर मिला के कुत्ता के काटे हुए घाव में लगा दे, इससे अच्छा हो जायगा।

७ तथा द्वितीय औषधी—पुराना गुड़ धतूरे के बीज और आक का दूध अथवा गुड़ आक का दूध और गुड़ इनको जल में पीस कर घाव में लगा देने से अच्छा हो जाता है।

८ वीर्य पुष्ट होने का साधन—उड़द के चावलों को कूट छान उसके बराबर मिश्री मिला कर घी के दूध के साथ प्रातः सायं १) तोले भर की फंकी लेवे तो प्रमेह आदि के रोग जायं।

९ पेट पीड़ा की औषधी—सोंठ, सुहागा, हींग इनको बराबर लेकर सहजने की छाल अर्क में घोट कर गोली बांध लेवें, एक गोली गर्म जल के साथ खिला देवें तो पेट पीड़ा जाय।

१० रुधिर शोधक औषधी—फिटकड़ी के फूल लेकर पीस के उसको १ मासे वा जितनी पचे अथवा जो रुचि होवे तो पाव भर छाछ अथवा जितनी छाछ की रुचि हो उतनी में मिलाय कर पीवें, तो सब प्रकार की रुधिर विकार व्याधी छूट जावें तथा खांसी बवासीर आदि में भी गुण करे।

रावराजा तेजसिंह जी को महर्षि ने मिति आश्विन बदी ११ सं० १९४० बृहस्पतिवार को एक पत्र में लिखा था कि :—

"यहां औषधि का एक पत्र जिसमें चौंतीस औषधियां हैं, जिसमें से कई परीक्षित हैं, सो भेजते हैं। आप संभाल लीजिये और जो किसी में शंका रहे तो पूछ लीजिये।"

इस औषधि-पत्र को पाठकों के लाभार्थ "ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन" पुस्तक से साभार उद्धृत कर रहे हैं। सम्पादक

११ मूत्रकृच्छ्र और पथरी की औषधी-अपरीक्षित—एक लाल मिरच मीठा छाछ में आठ पहर भिजो कर निकाल लेवे फिर उस छाछ को फेंक और दूसरी छाछ में पीस कर जितनी छाछ पीवें की इच्छा हो उतनी में छान कर पीवें, इसी प्रकार दूसरे दिन दो मिरची और तीसरे दिन तीन] ऐसे ही सात दिन तक बढ़ता उतरता जाय। इस समय खट्टा, गुड़, तेल और नोंन को न खाय तो मूत्रकृच्छ् और पथरी रोग छूट जाय।

१२ गर्भस्राव की सम्भावित औषधी—जड़ सहित दूब एक पैसे भर ११ काली मिरचों को पीस छान के ७ सात दिन गर्भाधान के पूर्व और सात दिन गर्भाधान के पश्चात् तथा चौथे महीने में भी ७ दिन पीवे तो गर्भस्रवित न हो।

१३ काली फुनसी का औषध—काली फुनसी पर सोने की सलाका का चारों ओर दाह देवे तो वह अच्छा होय।

१४ गर्भस्थिरौषधी—शंखावली को दूध में पका के जब दूध ठंडा हो जावे, तब स्त्री पीवे और गर्भ-स्थापन समय स्त्री को शंखावली पीस के सुंघावे तो गर्भस्थित होवे और बड़ वा पीपल की जटा को पांच दिन तक पीस के पिलावे तो भी गर्भस्थिति हो जाय।

१५ जो सुजाक से सुजाक हो जाता है उसकी परिक्षितऽयौषधी—सुदर्शन के पत्तों का अर्क निकाल उसकी पिचकारी भर लगावें और पत्तों को पीस कर घाव पर लगा देवे तो सात रोज में व्रण सूख जावे और उसी के पत्ते को ६ छः मासे मिश्री के साथ जो खा[वें] तो इक्कीस दिन के पश्चात् सुजाक फिर कभी नहीं होवें।

१६ तथा द्वितीय—नीबु को लेकर दो फांक बना उनमें चावल [भर] फिटकड़ी पीस के भर रात को ओस में रख दे और सात दिन तक चूसने में सुजाक जाता रहै।

१७ प्रमेह का औषध—बंबूल की फलीं पत्ती गोंद छाल और सूखा सब चीज बराबर ले पीस कर पूर्ण रख ले फिर बराबर की मिश्री के साथ मिला कर तोले १) तोले भर खा ऊपर से ऽ।। आध सेर दूध में ऽ।। आध सेर जल और सक्कर मिला पीवें तो अठारह प्रकार का प्रमेह जाय।

१८ पुनस्तथा—गुलखैर के फूल को पीस सहत मिलाय पानी में छान ठंडाई बना ४१ दिन तक पीवे तो वीर्य पुष्ट हो जाय।

१९ रक्तविकार की औषधी—दो पैसे भर महदी और मधु मिला पीस के खावैं और यत्नसे भोजन ऐसी चीजों [का] न करे कि जिनसे रुधिर न बढ़े, तथा चने की रोटी अरहर की दाल चावल आदि खावे और......सेवन करे तो रक्त विकार जाय।

२० उन्माद की औषधी—दो पैसे भर मुलहटी को सहत में मिला के ७ दिन खाय और लाल चावल कढ़ी आदि खावे तो उन्माद जाता रहै।

२१ उपदंश की औषधी—आंवले दूध वा सहत के साथ १) तोले भर खावे तो उपदंश जाय।

२२ जीर्ण ज्वर की औषधी—खूबकला १) तोला भर रात को पानी में भिगो दे प्रातःकाल मिश्री के साथ सर्वत बना कर पीवें और घी न खाय और घी की जगह बादाम का रोगन खावे तो २१ दिन में जीर्ण ज्वर जाय परन्तु बासा पानी में न्हाता रहै।

२३ पुष्टिकार औषध—ऽ१ सेर भर पियाज के छिलके उतार छोटे २ टुकड़े कर कोरे बर्तन में सहत के साथ भिगोवे फिर १५ दिन तक भूमि में गाड़ दे, निकाल कर पश्चात् तोले १) भर नित्य खावें तो पुष्टि प्राप्त हो जाय॥

२४ जमींकन्द बनाने की रीती—सेर भर जमींकन्द को शुद्ध करके ऽ=आध पाव अदरख के साथ उबाल मसाले डाल शाक बना ले।

२५ पेट के शूल की औषधी—एक २ तोले १ भर पीयाज का रस अदरख का रस और सहत इन तीनों को मिला कर दिन में तीन पीवें तो शूल रोग जाय।

२६ पसली के दरद की औषध—पुराना महुआ ऽ। पाव भर ले कूट कपड़े में बांध दो घड़ी के पश्चात् पुनः उसी की रोटी बना के ४ प्रहर बंधा रहने दे तो पसली की पीड़ा जाय।

२७ [तथा]—सांभर का सींग घिस कर पसली पर लगा के कंडे से सेक करें तो पसली का दर्द जाता रहै।

२८ आंखों का सुरमा—सुरमे की डली को नीब वृक्ष में २१ दिन तक रख दे, पुनः निकाल भंगरे के रस में छोटी इलाइची डाल खूब पीस के रख ले, उसको नेत्रों में लगाने से वर्षों तक की दूखती आंखे शुद्ध हो जाय।

२९ दांतों का मंजन—मौलसिरी की छाल पीस कर प्रातःकाल दन्तधावन करें और रोज अपामार्ग का भी दन्तधावन करे तो दांत न हिलें।

३० तथा—मांजूफल मुहलेटी सफेद कत्था रूमी मस्तकी नीला थोथा पांचों चीज बराबर ले और नीले थोथे को अंगारों पर खील कर लोहे की कड़ाही में थोड़ा सा जल डाल के बुझा लेवे, पुनः पांचों को पीस और इनके बराबर आक की जड़ की छाल लेकर वहीं चीज लोहे की कढ़ाई में लोहे के मूसल से पीसे, जब अंजन के बराबर [महीन] हो जाय तब सीसी में ले रखे। जब दातन करें तब अंगुली से मसोड़ पर लगा कर थोड़ी देर ठहर कर पश्चात् कुरला करें, दांत पीड़ा हिलने आदि छूट कर दांत दृढ़ हो जावें। (शेष ११ पर)

मौसम की दृष्टि से इंग्लैंड रहने योग्य नहीं

श्री ओमप्रकाश जी त्यागी

संसार के जितने देश मैंने अब तक देखे हैं उनमें सब से गंदा मौसम इंग्लैण्ड और सबसे अच्छा केनिया (पूर्व अफ्रीका) का है। यदि केनिया का मौसम इंग्लैण्ड में होता तो यह देश अति सुन्दर और रहने लायक होता। भारत से जो व्यक्ति इंग्लैण्ड आता है उसे सौभाग्यशाली और जो यहां आकर रहने लगता है उसे अतिमानस समझा जाता है। अन्यो की अपेक्षा उसका आदर व सम्मान भी अधिक होता है। यहां आने से पूर्व मेरा भी विचार कुछ ऐसा ही था, परन्तु यहां आकर मुझे अपनी अज्ञानता का भान हुआ और अब मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि यहां के मौसम का अनुभव हो जाने के पश्चात् दुबारा यहां विवश होने पर ही कोई आ सकता है सहर्ष नहीं।

वर्षा, बादल, धुन्ध और बरफ यहां के मौसम की मुख्य वस्तु हैं। वर्ष भर वर्षा और बादल का ही खेल होता रहता है। जिस दिन बादल व वर्षा न होकर सूर्य देवता दर्शन दे देते हैं वह दिन इंग्लैण्ड के लिये सौभाग्य का समझा जाता है। बस, ट्रेन, सड़क सर्वत्र उस दिन लोगों को यही कहते सुनेंगे — Very pretty day's to day"

अर्थात् आज बड़ा प्यारा दिन है। यदि सौभाग्य से शनिवार-रविवार को धूप निकल आवे तो समूचा इंग्लैण्ड नाच उठता है और घरोंसे बाहर निकल कर बागों, मैदानों, समुद्र तटों पर नर-नारी, पहुंच जाते हैं और खूब किलोल करते हैं। मुख्यतः बूढ़े-बूढ़ियों के लिये तो उस दिन स्वर्ग ही प्राप्त हो जाता है।

वर्षा और बादल इंगलैण्ड के मौसम के इतने अनिवार्य अङ्ग हैं कि लोग घर से बाहर निकलते समय छाता या बरसाती लेकर ही निकलते हैं। उदाहरणार्थ एक दिन मैं श्री भाई उषबुंध जी वैदिक मिशनरी के साथ बिना बरसाती लिये बाहर जा रहा था क्योंकि उस समय धूप निकली हुई थी और आकाश में बादल का चिह्न तक न था। उसी समय एक मित्र श्री नारायन जी शर्मा जो सन् १९५२ में श्री उषबुंध जी के साथ ही इंगलैण्ड गये थे और आज वह वहां कई मकानों के मालिक हैं—ने मुझे टोकते हुए कहा—"त्यागी जी, बरसाती अवश्य साथ ले जाइये, लन्दन के मौसम का कोई विश्वास नहीं है, धूप का खेल तो यहां क्षणिक ही होता हैं, बादल वर्षा ही यहा के मौसम के पक्के मित्र हैं। इसलिये दोनो मित्रों से किसी भी समय आप की भेंट हो सकती है।" उनकी यह बात सुनकर मैंने कहा-जब यहा के मौसम की यही अवस्था है तो लोग यहां क्यों भागकर आते हैं। उन्होंने हंसते हुये कहा—"विवशता, उत्सुकता व कामुकता।"

सब से गन्दा मौसम इंगलैण्ड का जाड़ों में होता है। इन दिनो बादल व वर्षा के अतिरिक्त धुन्ध कुहरा व बरफ पड़कर लोगों के जीवन को नरक मय बना देती है। कुहरा (Fog) यहां जब पड़ता है तो चारों तरफ अन्धकार हो जाता है। यहां तक कि एक गज के अन्तर पर खड़ा व्यक्ति भी दिखाई नहीं देता है। कभी-कभी कुहरा ऐसा पड़ता है कि व्यक्ति को अपना हाथ भी दिखाई नहीं देता है। ऐसी अवस्था मे समस्त यातायात ठप्प पड़ जाता है। मोटरें जहा की तहां खड़ी हो जाती है। कुहरा अर्थात् फाग में जब मोटरें चलती हैं तो बड़ी दुर्घटनायें होती हैं। जब दुर्घटना होती है तो अकेली एक मोटर के साथ नही होती अपितु बहुतों के साथ एक समय ही होती है, क्योंकि मोटरे यहां ७० और ८० मील प्रति घण्टा से कम चलती ही नहीं। कुहरा में अधिक दूर की वस्तु दिखलाई ही नहीं देती। सो एक मोटर के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने पर पिछली मोटरें स्वयं दुर्घटना-ग्रस्त हो जाती हैं। यह दृश्य मैंने स्वयं स्काटलैण्ड जाते समय देखा कि एक स्थान पर कम से कम २० मोटरें दुर्घटना-ग्रस्त देखने को मिली।

धुन्ध (Mist) कुहरा (Fog) से भी अधिक खतरनाक होती है। यह बड़े २ शहरों तक ही सीमित रहती है। बड़े शहरों व नगरों में जहां घरों या फैक्टरियों में कोयले का अधिक प्रयोग होता है वहां जाड़ों के दिनों में धूआं कुहरे के साथ मिल जाता है और ऊपर आकाश में न उड़कर नीचे गलियों व सड़कों पर आ जाता है। उस समय स्वांस लेना कठिन हो जाता है और धूआ आंखों में लगकर आंसूओं की धारा बहा देता है। बेचारे बूढ़े लोगों के लिये तो धुन्ध (Mist) मृत्यु का सन्देश ही लेकर आती है। धुन्ध के कारण इंगलैण्ड में प्रति वर्ष बुड्ढों की मृत्यु बहुत होती हैं। धुन्ध से बचाव के लिये कभी २ लोगों को मुंह-टोप पहिन कर सड़कों पर चलना पड़ता है और सरकार द्वारा धूआं वाले कोयले के स्थान पर धूआं रहित कोयला ही प्रयोग करने का जनता को कड़ा आदेश दिया जाता है।

परन्तु बरफ (Snow कुहरा (Fog) और धुन्ध (Mist) दोनों से अधिक घातक होती है। इसके पड़ते ही इंगलैण्ड की समस्त हरियाली समाप्त हो जाती है। समस्त पेड़-पत्ते रहित हो जाते है और इंगलैण्ड विधवा स्त्री की भांति सौन्दर्य रहित एव नीरस हो जाता है। बरफ जब पड़ती है तो सड़कों पर मोटरों का चलना तो अलग रहा उन पर पैदल चलना भी कठिन हो जाता है। नलों के अन्दर पानी जम जाता है, और कभी २ नलों को फाड़ भी देता है। इस तथ्य का ज्ञान मुझे तब हुआ जब मैं नल पर मुंह-हाथ धोकर आया तो मेरे बाद में मेरे छोटे भाई डा० जगराम जी वहां मुझे कड़ी चेतावनी देते हुये बोले कि नल के प्रयोग के पश्चात् उसे अच्छी प्रकार बन्द कर देना चाहिये। यदि ऐसा न हुआ और पानी टपकता रहा तो बूंदें बरफ बनकर नल को फाड़ देतीं हैं। बरफ के पड़ते ही ठण्ड अपनी चरम सीमा को पहुंच जाती है। इससे बचने के लिये लोग घरों को हर समय गरम रखने का प्रयत्न करते हैं, और बाहर विवश होने पर ही निकलते हैं। इस प्रकार कोयला और बिजली और गरम कपड़ों का खर्च और परिवारों के आर्थिक ढांचे को ही लड़खड़ा देते हैं। जिसके पास)र, कपड़ा और पैसा नहीं उसका एक दिन भी इंगलैण्ड में रहना कठिन है। ऐसे व्यक्ति को तो वहां का कब्रिस्तान ही शरण देता है।

बरफ बहुधा बड़े दिन अर्थात् क्रिसमस के बाद ही पड़नी शुरू होती है परन्तु इस वर्ष सौभाग्य से नवम्बर मास में ही बरफ पड़नी शुरू हो गई। मुझे इंगलैण्ड में बरफ पड़ते हुये देखने की बड़ी इच्छा थी परन्तु १० दि० को ही भारत चला जाऊंगा। इसलिये मैं बर्फ-पड़ना देखने की इच्छा का परित्याग ही कर चुका था, परन्तु बर्मिंघम मे १९ नवम्बर को जब मैं अपने भाई के घर बैठा था तो अचानक दोपहर के पश्चात् ३ बजे बरफ पड़ना शुरू हो गया। तूफानी हवा और बरफ दोनों साथ २ ही आये। मैं तुरन्त घर से बाहर घूमने चला गया और आधा घण्टे तक खूब आनन्द लिया। मैं जिस समय बरफ पड़ने के दृश्य का आनन्द ले रहा था उसी समय एक स्त्री अपने बच्चे को लिये कांपती जा रही थी। उसे देखकर मेरे हृदय में अचानक यह विचार आया कि जिस दृश्य को देखकर मेरे हृदय में आनन्द आ रहा है वह यहां के लोगों के लिये कष्ट और मृत्यु का कारण बना है।

इंगलैण्ड की कड़ी सर्दी और गन्दे मौसम का सामना करने के लिये लोग प्रत्येक समय बन्द गोभी की भांति ऐडी से चोटी तक कपड़ों से ढके रहते हैं। स्नान करने का विचार कभी मास में एक बार ही इनके मस्तिष्क में आता है। अरब में जहां पानी के अभाव मे स्नान करने की प्रथा का अभाव है तो यहां कड़ी ठण्ड के कारण स्नान करने का प्रश्न समाप्त हो गया है। स्नान करना यहां महंगा भी पड़ता है। गरम पानी के बिना स्नान होना कठिन है। गरम पानी के लिये यदि जेब में पैसा नहीं तो स्नान नहीं हो सकता है। स्नान घर भी यहां दुकान की भांति एक व्यापार है।

अतः मेरी दृष्टि में इंगलैण्ड कुछ दिन सैर-सपाटे, व वैज्ञानिक शिक्षा लेने के लिये उपयुक्त हो सकता है, परन्तु रहने के लिये वह कदापि अच्छा देश नहीं है। ऐसा होते हुये भी वहां लाखों भारतीय हैं, और अनेकों जाने के लिये लालायित हैं उसका एकमात्र कारण जीवन सम्बन्धी और काम-धन्धे की सुलभता ही है।

हमारा

चावल

बाजार में ऐसा चावल दुर्लभ है, जिस पर जरा भी पालिश या चिलका न हो। पालिश का बिना चावल पर नाम-निशान भी नहीं होता वह देखने में भी सुन्दर होता है। और पौष्टिक तथा स्वादिष्ठ भी होता है। इस चावल की बराबरी मिलें कभी नहीं कर सकतीं। चावल दलने का बड़ा सीधा-सादा तरीका है। ज्यादातर धान तो बिना किसी कठिनाई के हलकी सी चक्कियों में दले जा सकते हैं। हां कुछ ऐसे धान हैं जिनकी भूसी दलने से अलग नहीं होती। ऐसे धान की भूसी निकालने का सबसे अच्छा तरीका तो यह है कि पहले उसे हम थोड़ा उबाल लें और फिर उसकी भूसी को अलग कर दें। कहतेहैं कि यह अत्यधिक पौष्टिक होता है, और वह सस्ता तो होगा ही। गांव वाले अपना धान अगर खुद ही दलें, तो मिल के दले चावल से तो—फिर वह पालिशदार हो या बिना पालिश का—उसका चावल हर हालत में सस्ता पड़ेगा। बाजार में जो चावल बिकता है वह ज्यादातर न्यूनाधिक रूप में पालिशदार ही होता है—फिर चाहे वह हाथ चक्की का दला हुआ हो या मिलका। जिस पर जरा भी पालिश या चिलका न हो ऐसा चावल हाथ का ही दला हुआ होता है, और वह उसी जाति के मिल के दले चावल से काफी सस्ता पड़ता है।

(हरिजन सेवक, २५-१-,३५)

गेहूं

यह तो सभी डाक्टरों की राय है कि बिना चोकर का आटा उतना ही हानिकर है जितना पालिश किया हुआ चावल। बाजार में जो महीन आटा या मैदा बिकता है उसके मुकाबले में घर की चक्की का पिसा हुआ बिना छना गेहूं का आटा अच्छा होता है और सस्ता भी। सस्ता इस लिए होता है कि पिसाई का पैसा बच जाता है। फिर घरके पिसे हुये आटे का वजन कम नहीं होता। महीन आटे या मैदे में तौल कम ही जाता है। गेहूं का सबसे पौष्टिक अंश उसके चोकर में होता है। गेहूं की भूसी निकालकर फेंक देने से उसके पौष्टिक तत्व की बहुत बड़ी हानि होती है। गांववाले या दूसरे लोग, जो घर की चक्की का पिसा आटा बिना छना हुआ खाते हैं, वे पैसे के साथ-साथ अपना स्वास्थ्य भी नष्ट होने से बचा लेते हैं। आज आटे की मिलें जो लाखों रुपये कमा रही हैं उस रकम का काफी बड़ा हिस्सा गांवों में हाथ की चक्कियां फिर से चलने लगने से गांवों हीमें रहेगा और वह सत्पात्र गरीबों के बीच बंटता रहेगा।

(हरिजन सेवक, ८-२-३५)

दैनिक

अंकुरित अन्न

एक अन्य वैद्य ने अंकुरित दालों के उपयोग के खिलाफ आयुर्वेदिक ग्रन्थों से एक उद्धरण दिया है, लेकिन अपने इस उद्धरण का समर्थन करने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव भी होना चाहिये जो कि उन्हें नहीं है। मुझे आयुर्वेदिक चिकित्सों के खिलाफ यही मेरी शिकायतहै। मुझे इसमें बिलकुल सन्देह नहीं है कि संस्कृतके आयुर्वेदिक ग्रन्थों में प्रभूत प्राचीन ज्ञान छिपा पड़ा है। लेकिन हमारे वैद्य इस ज्ञान को सचमुच ढूंढ़ निकालने की और उसे वैज्ञानिक ढंगमें सिद्ध करने की मेहनत नहीं उठाना चाहते। वे छपे हुये सूत्रों को ही दुहराते हैं और उसी में संतोष मान लेते हैं। एक सामान्य जिज्ञासु की तरह मैं यह तो जानता हूं कि कई आयुर्वेदिक औषधियों के पक्ष में अनेक गुणों का दावा किया जाता है। लेकिन यदि उनके इन गुणों को प्रत्यक्ष प्रयोगों के आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता तो उनका क्या उपयोग है? मैं अनुरोध करता हूं कि हमारे वैद्य इस पुरानी विद्या के हित के लिये अपने में सच्ची वैज्ञानिक खोज की वृत्ति पैदा करें। पश्चिमी दवाओं की गुलामी से—जो एक तो महंगी इतनी हैं कि लोग बरबाद हो जाते हैं और दूसरे जिनके निर्माण में उच्चतर मानव-धर्म का कोई खयाल नहीं रखा जाता—अपने लोगों को छुड़ाने के लिए मैं भी उतना ही उत्सुक हूं जितने कि वैद्य-समाज के शीर्षस्थानीय सदस्य।

दूध

मेरा दृढ़ विश्वास है कि मनुष्य बालक के रूप में माता का जो दूध पीता है, उसके सिवा उसे दूसरे दूध की आवश्यकता नहीं। हरे और सूखे वनपक्व फलों के अतिरिक्त मनुष्य का और कोई आहार नहीं है। बादाम आदि बीजों में से और अंगूर आदि फलों में से उसे शरीर और बुद्धि के लिए आवश्यक पूरा पोषण मिल जाता है। जो ऐसे आहार पर रह सकता है, उसके लिये ब्रह्मचर्यादि आत्म-संयम बहुत सरल हो जाता है। जैसा आहार वैसी डकार, मनुष्य जैसा खाता है वैसा बनता है, इस कहावत में बहुत सार है। उसे मैंने और मेरे साथियों ने अनुभव कियाहै।

आत्मकथा, पृ० २३४ (१९५८)

भोजन

शहद

गरम पानी के साथ शहद लेने का मेरा अनुभव चार वर्ष से ज्यादा का है उससे मुझे कभी कोई नुकसान नहीं मालूम हुआ। शहद के उपयोग पर अहिंसा-धर्म की दृष्टि से भी आक्षेप किया गया है। मैं मानता हूं कि इस आक्षेप में काफी बल है, यद्यपि यह भी कहना होगा कि शहद संग्रह का पश्चिमी ढंग ज्यादा साफ-सुथराहै और यह आक्षेप उस ढंग को उतना लागू नहीं होता। मुझे डर है कि यदि मैं सिद्धान्तों से अपने व्यवहार का पूरा-पूरा मेल साधना चाहूं तो मुझे ऐसी अनेक चीजें छोड़ देनी पड़ें भी जिनका मैं उपयोग करता हूं। लेकिन मनुष्य का जीवन ऐसा है कि उसमें सिद्धान्तों और व्यवहार का पूरा-पूरा तर्कशुद्ध मेल साधना संभव नहीं है वह कोई कृत्रिम ढंग से नहीं किया जा सकता। उसके विकास के अपने अन्तर्हित नियम हैं और वह अपने विकास-क्रम में सीधी रेखा पर नहीं चलता।......पश्चिमी डाक्टरों ने शहद की बहुत प्रशंसा की है। उनमें से कई जो शक्कर को नुकसानदेह बताते हैं शहद की तारीफ करते हैं। उनका कहना है कि शहद किसी तरह का विकार उत्पन्न नहीं करता जब कि साफ की हुई शक्कर और गुड़ भी विकार उत्पन्न करते हैं।

(यंग इण्डिया, ८-८-'२६)

फल

शायद जितने फल मैंने खाये हैं, उतने और किसी ने खाये होंगे। ६ साल तक मैं सिर्फ फलों और मेवों पर ही रहा था। अपनी खुराक में मैं हमेशा फलों का काफी उपयोग करता रहता हूं। लेकिन उक्त लेख लिखते समय तो मेरी आंखों के सामने हिन्दुस्तान की विशिष्ट परिस्थिति ही थी। हिन्दुस्तान के जलवायु की विविधता की दृष्टि से यहां की जनता को फल, साग-सब्जी और दूध अच्छी मात्रा में मिलने चाहियें, लेकिन इस सम्बन्ध में यह एक दरिद्र से दरिद्र देश है। इसलिये मुझे जो सबक मालूम हुआ वही मैंने सुझाया। किन्तु मैं इस कथन का हृदय से समर्थन करता हूं कि हमारे आहार में मुख्य भाग ताजा फलों और ताजा साग-सब्जी का ही होना चाहिये। डाक्टरों का कामहै कि हिन्दुस्तान की विशिष्ट परिस्थिति का अध्ययन करके उन साग-सब्जियों और फलों की एक फेहरिस्त तैयार कर दें, जिन्हें देहात में लोग आसानी से और सस्ते में पा सकें या पैदा कर सकें। उदाहरण के लिये जंगलों में बेर, करौंदे वगैरा फल काफी पैदा होते हैं। वे बिक्री के लिये बाजार में न ले जाये जायें, बल्कि तोड़ने या बीनने की मेहनत के साथ खा लिये जायें। खोज के लिये यह एक विशाल क्षेत्र है। शायद इससे धन और यश नहीं मिलेगा, लेकिन करोड़ों मूक मानवों के आशीर्वाद जरूर मिलेंगे।

(हरिजन सेवक, २३-३-४२)

हरि भाजियां

मैंने अपने भोजन में सरसों, सोया शलजम, गाजर और मूली की पत्तियां लेना शुरू किया। यह कहने की जरूरत नहीं कि शलजम, गाजर और मूली की सिर्फ पत्तियां ही नहीं, उनके कंद भी कच्चे खाये जाते हैं। इनकी पत्तियों या कंदों को आग पर पकाकर खाना उनके कुदरती स्वाद को मारना और पैसे का दुर्व्यय करना है। आग पर पकाने से इन भाजियों के विटामिन बिलकुल या अधिकांश नष्ट हो जाते हैं। इन्हें पका कर खाना इनके स्वाद की हत्या करना है। ऐसा मैं इसलिये कहता हूं कि कच्ची भाजियों में एक प्राकृतिक स्वाद होता है, जो कि पकाने से नष्ट हो जाता है।

(हरिजन सेवक, १५-२-३५)

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में आयोजित

वेद सम्मेलन में

माननीय श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री

का

अध्यक्षीय भाषण

ओ३म् तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः।
(ऋग्वेद ९।९७।३४)

श्री स्वागताध्यक्ष महोदय,
विद्वज्जन, देवियो एवं सज्जनों !

प्रयाग की इस प्राचीन नगरी में कुंभ के अवसर पर वेद सम्मेलन का आयोजन कर आप की स्वागत कारिणी समिति ने अत्युत्तम कार्य किया है। इस सम्मेलन की अध्यक्षता के भार को स्वीकार करने के लिए आपकी समिति ने श्री दयास्वरूप जी स्वागत मन्त्री के माध्यम से जो आदेश मुझे दिया उसे स्वीकार कर मैं यहां उपस्थित हुआ हूं और तदर्थ आप सब का हृदय से आभारी हूं।

मेरी उपस्थिति एवं अध्यक्षता का क्या उपयोग है इसका निर्णय तो मैं स्वयं कर नहीं सकता हूं परन्तु अपनी इस धारणा को आप लोगों तक पहुंचा देने की चेष्टा करना चाहता हूं कि मैंने आप की इस भावना और प्रेम का अर्थान्तर ही लिया है। वह यह कि आपने इस सम्मेलन का स्वागताध्यक्ष एक ऐसे प्रसिद्ध लेखक, आर्य-दार्शनिक एवं आर्य समाज की पुरानी कड़ी के विद्वान को चुना है कि जिनके कार्य से समस्त आर्य जगत् सुतराम् परिचित है। आप लोगों के साथ ही मेरी भी उनमें बड़ी आस्था है। उन्हें स्वागताध्यक्ष बनाकर मुझे इस अवसर पर अध्यक्ष का स्थान देकर आप ने स्यात् यह अवसर प्रदान करना चाहा है कि वे अपनी इस वृद्धावस्था में यह देखलें कि उनकी पीढ़ी की परम्परा को आगे आने वाली पीढ़ी कहां तक पूर्ण कर सकेगी और इससे उन्हें कितना सन्तोष है। मैं इस दृष्टि से भी यहां उपस्थित हुआ हूं और उनसे एवं आप से मिल रहा हूं।

वेद प्रभु की वाणी है जो प्रत्येक कल्प के आदि में परम कारुणिक भगवान् मानव के कल्याणार्थ प्रदान करता है। समुचित

आचार्य श्री वैद्यनाथ जी शास्त्री

परिभाषा में, नहीं नहीं, भगवान् दयानन्द के दृष्टिकोण से यह ईश्वरीय ज्ञान है और है सब सत्यविद्याओं का पुस्तक। वेद की शब्दराशि ज्ञान बृंहित है और प्रलयकाल में पराबाक् के रूप में ब्रह्म में विद्यमान रहती है। वह नित्या और आकाशवद् व्यापिनी वाक् है। इसी दृष्टि को ऋग्वेद में प्रकट करते हुये कहा गया है कि 'यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्'-ऋ० १०।११४।८ अर्थात् जितना बड़ा ब्रह्म है उतनी वाणी भी है। ब्रह्म में स्थित यह पराबाक् सर्गकाल में पश्यन्ती होकर साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों द्वारा साक्षात् की हुई मध्यमा रूप से प्रकट होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि पराबाक् साक्षात् होने से पश्यन्ती बनती है और उसी का रूप मध्यमस्थानीय वायु आदि पदार्थों में होने से उसे मध्यमा कहा जाता है। मध्यमा वाणी को वैदिक साहित्य में सरस्वती नाम भी दिया गया है। यह मध्यमा वाणी ही आन्तरिक जगत् सुषुम्ना केन्द्र में स्थित होकर वैखरी को प्रकट करती है और दैवत जगत् में अन्तरिक्ष में अव्यक्त हुई मेघों द्वारा मनुष्य और प्राणियों की वाणी को प्रकट कराती है। इसी दृष्टि से ऋग्वेद में कहा गया है—'बृहद्वदन्ति अधि चेतयामि० ॥' देवीं वाचमजनयन्त देवास्ताम् विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। ऋ० ८।१००।१०-११। इस प्रकार वाक् परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी नामों से चार प्रकार की है। ये सब वस्तुतः परास्रोत से ही निकलती है। वैखरी वाणी ही व्यवहार की वाणी है। परा वाक् से जो ज्ञानमयी शब्दराशि पश्यन्ती बनती है वही वेद वाणी है। वह ऋषियों पर प्रकट होती है। परन्तु प्रकट होने मात्र से इसे अनित्य एवं अपूर्ण नहीं कहा जा सकता है। यह परा वाणी ही है अतः अनादि अनिधना, नित्या है। यह समस्त ज्ञान विज्ञानों का भण्डार है। साक्षात् कृतधर्मा भगवान् दयानन्द ने इसी दृष्टि से वेद को ईश्वरीय ज्ञान और सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा है। यह ज्ञान बड़ा विस्तृत है परन्तु विस्तार के लिए समय नहीं।

शाखायें और ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं है

चार वेदों की संहितायें मन्त्र भाग मात्र ही वेद हैं। वेद की शाखायें और ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं है अपितु वेदों के व्याख्यान हैं। संहिता, शाखाओं और ब्राह्मण ग्रन्थों की अन्तः साक्षियों से यही तथ्य सिद्ध होता है। कई लोग यह कहा करते हैं कि शाखायें जो उपलब्ध हैं उनके देखने से यह नहीं प्रकट होता है कि ये व्याख्यान हैं। उनमें पाठभेद, मन्त्र न्यूनता और मन्त्राधिक्य आदि तो पाया जाता है परन्तु व्याख्यान होने के कोई लक्षण नहीं पाये जाते हैं। इसका समाधान यह है कि व्याख्यान की परिभाषा करने पर शाखाओं में व्याख्यान के लक्षण सर्वथा ही घट जाते हैं। व्याख्या एवं व्याख्यान की परिभाषा केवल विस्तृत भाष्य ही नहीं है। निम्न प्रकार से भी मन्त्र की व्याख्या हो जाती है और भाव खुल जाते हैं—

१—मन्त्रों के पदों को पृथक्-पृथक् करने से।

२—अनादिष्ट देवता वाले मंत्रों के देवता निश्चित कर देने से।

३—मन्त्र से यज्ञ क्रिया का विनियोग कर देने से।

४—मन्त्रस्थ पद का पर्यायवाची पद रख देने और तदनुसार स्थिति बना देने से।

५—मन्त्र का कोई पद लेकर विनियोग आदि के आकार पर कल्पित व्याख्यान बना देने से।

६—मन्त्रस्थ किसी पद अथवा देवतापद की यौगिक व्याख्या अथवा निरुक्ति कर देने से।

७—मन्त्रों को किसी निश्चित अर्थ में क्रम बद्ध कर देने से।

इनमें से अनेक वस्तुयें शाखाओं में पायी जाती हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों और किन्हीं शाखाओं में तो प्रतीक देकर व्याख्यान किये गए हैं अतः ये मूल वेद नहीं—व्याख्यान हैं। इसके अतिरिक्त नीचे कुछ और प्रमाण दिये जाते हैं जो स्पष्ट करते हैं कि शाखायें और ब्राह्मण वेदों के व्याख्यान हैं—

१—स एतं (भूमिर्भूम्ना) कसर्णीरः काद्रवेयो मंत्रमपश्यत्।
(तैत्तिरीय शाखा १।५।४)

२—शुनः शेपमाजी गर्तिं वरुणोऽगृह्णात्—स एतां वारुणीमपश्यत्। (तै० शा० ५।२।१)

३—स (वामदेवः) एतं सूक्तमपश्यत् कृणुष्व पाजः प्रसृतिं न पृथ्वीमिति। (काण्व १०।५)

४ इतिहस्म आह भरद्वाज।
(मैत्रायणी ४।८।४।७)

५—मनुःपुत्रेभ्यो दायं व्यभजत्।
(तै० सं० ३।१।९।४)

६—अनमीवस्य शुष्मिण इत्याहायक्ष्मस्येति।
(तै० सं० ५।२।१।३)

७—ऋग्वेद १०।१२१।८ तथा १०।१२१।९ मन्त्र प्रयाजानुयाज के मन्त्र हैं। मैत्रायणि १।७।३।४ और काण्व ९।१ पर 'प्रयाज' की विभक्तियां आदि लगाने का विधान है। यह विधान इन शाखाओं को व्याख्यान सिद्ध करता है।

८—शतपथ ब्राह्मण १०।४।२।२३—२५ में सभी त्रिकाण्ड ऋचाओं का परिमाण १२००० बृहती छन्द परिमाण; यजुः का ८००० और ४००० बृहती छन्दः परिमाण साम का माना गया है। इस प्रकार चारों वेदों के २४००० बृहती छन्द परिमाण अक्षर होते हैं। बृहती छन्द ३६ अक्षरों का होता है अतः इससे गुणा करने पर ८६४००० अक्षर होते हैं। यह है चारों वेदों का अक्षर परिमाण। यदि शाखा और ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद माना जावे तो अक्षर परिमाण कई गुना हो जाता है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में ऊपर दिए गए व्याख्यान के लक्षण तो पाये जाते ही हैं उनमें मन्त्रों की व्याख्या स्पष्ट की गई है। यजुर्वेद के लगभग १५ अध्यायों के मन्त्रों की क्रमशः व्याख्या पाई जाती है। ऐतरेय ब्राह्मण में भी मन्त्रों के व्याख्यान पाये जाते हैं।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित आधारों से भी ये वेदव्याख्यान ही ठहरते हैं—वेद नहीं।

१—वेद मन्त्रों का स्वर वैस्वर्य है और ब्राह्मणों का आर्षिक स्वर होता है।

२—शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के कई अध्यायों के मन्त्रों का क्रमिक विनियोग और व्याख्यान आदि मिलता है।

३ शतपथ १,१।१।१ में व्रत-मुपैष्यन्; अग्नेव्रतपते०; १।१।४।८-९ में अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनम् तथा बृहद्ग्रावासि वानस्पत्यः; ६।५।१।२ में आपो हिष्ठा मयोभुव.० इत्यादि मन्त्रों की प्रतीकें देकर व्याख्यान पाये जाते हैं। लगभग उपलब्ध सभी ब्राह्मणों में यह प्रक्रिया पाई जाती है।

४ चारों वेदों की आनुपूर्व्येण 'ओं भूर्भुवः स्वः' आदि व्याहृतियें बतलाई गई हैं (गोपथ पूर्वार्ध १।१८)। यदि ब्राह्मण वेद होते तो उनकी भी कोई व्याहृति होती। परन्तु ऐसा नहीं है।

५—वेदों के ऋषि, देवता, छन्द आदि का वर्णन अनुक्रमणियों और बृहद्देवता आदि में पाया जाता है परन्तु ब्राह्मणों का यह क्रम नहीं पाया जाता।

६—वेद की वाणी नित्य है परन्तु ब्राह्मणों और शाखाओं की वाणी को नित्य नहीं माना गया है। व्याकरण महाभाष्य में स्पष्ट दो प्रकार के छन्द माने गए हैं—कृत छन्द और अकृत छन्द। शाखाओं आदि के छन्द कृत हैं और संहिताओं के नित्य एवं अकृत हैं। महाभाष्यकार के शब्द इस प्रकार हैं। तत्र कृते ग्रन्थे इत्येव सिद्धम्। ननु चोक्तं न हि छन्दांसि क्रियन्ते नित्यानि छन्दांसीति। छन्दांस्यपि क्रियन्ते। यद्यप्यर्थो नित्यः या त्वसौ वर्णानुपूर्वी साऽनित्या। तद्भेदाच्च भवति काण्ठकं, कालापकं, मौदकं, पैप्पलादकमिति। महाभाष्य ४।३।१०१—स्वरो नियत आम्नायेऽस्य वामशब्दस्य वर्णानुपूर्वी खल्वप्याम्नाये नियता। अ० ५।२।५९। पाणिनि की अष्टाध्यायी में 'छन्द' पद का प्रयोग इन्हीं अर्थों में है। यहां पर विस्तार से मैं वर्णन नहीं कर सकता हूं। विस्तार से वर्णन तो मेरी पुस्तक 'दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश' में है।

आजकल कुछ दिनों से सर्व वेद शाखा सम्मेलन किये जाने लगे हैं। इन सम्मेलनों में यदि शाखाओं के विषय पर विविक्त विचार होते तो अच्छा होता। परन्तु ऐसा न करके संहिताओं, शाखाओं और ब्राह्मणों को एक बनाने का प्रयत्न किया जाता है। कांच के मकान में बैठकर भी दूसरे पर ढेले फेंके जाते हैं। परन्तु इन सब बातों के करने के बाद भी इसके पक्ष पोषकों में इतनी हिम्मत नहीं है कि वे भगवान् दयानन्द के इस विचार को खण्डित कर सकें कि शाखायें और ब्राह्मण वेद के व्याख्यान हैं, वेद नहीं। ऐसे सम्मेलनों से वेद की रक्षा नहीं हो रही है बल्कि उसका उपहास किया जा रहा है। ऐसे सम्मेलनों में शास्त्रार्थ का प्रबन्ध कर वास्तविक रूप को दिखाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

याज्ञिकी परिभाषा और वेद

यद्यपि यह निश्चित सिद्धान्त है कि शाखायें और ब्राह्मण ग्रन्थ वेद के व्याख्यान हैं तथापि परिभाषा की दृष्टि के याज्ञिकों ने अपनी सुविधा के लिए मंत्र-ब्राह्मण की वेद-संज्ञा कल्पित की थी। यह एक परिभाषा है वास्तविक अर्थ नहीं। जिस प्रकार आज भी परिभाषायें बनाई जाती हैं परन्तु वे सार्वजनिक नियम नहीं होती। पाणिनि के गुण, वृद्धि, लिङ्ग आदि और न्याय के लिङ्ग, गुण आदि इसी प्रकार की परिभाषायें हैं। इसी प्रकार यज्ञार्थ यह परिभाषा के रहते हुए भी कर्मकाण्ड के ग्रन्थों और मीमांसा आदि में मन्त्र और ब्राह्मण को पृथक् एवं उनके वास्तविक अर्थों में भी माना गया है। गोपथ पूर्वार्ध २। १० इस विषय पर अच्छा प्रकाश डालता है। यथा: प्राच्यो नद्यो वहन्ति······समुद्रमभि पद्य मानानां छिद्यते नाम धेयं समुद्र इत्याचक्षते··· एवमेव सर्वे वेदा निर्मिताः सकल्पाः सरहस्याः सह ब्राह्मणः······यज्ञमभि पद्यमानानां छिद्यते नामधेय-यज्ञ इत्याचक्षते। अर्थात् जो पूर्व की नदियां बहती हैं, जो दक्षिण की और उत्तर तथा पश्चिम की—सभी का पृथक् नामधेय है। परन्तु जब समुद्र में मिल जाती हैं तब सब का समुद्र नाम पड़ जाता है। इसी प्रकार समस्त वेद, कल्प ब्राह्मण आदि का यज्ञ में नामधेय छिन्न हो जाता है और यज्ञ कहा जाता है। इसी प्रकार की प्रक्रिया का अवलम्बन कर याज्ञिकों ने 'मन्त्र ब्राह्मण' वेद है—यह परिभाषा बना ली वस्तुतः ब्राह्मण वेद नहीं, वेद के व्याख्यान ही हैं।

वेद ज्ञान-विज्ञान भण्डार हैं

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने हमें यह बताया कि वेद सब सत्यविद्याओं के पुस्तक हैं। प्राचीन वैदिक साहित्य इस सिद्धान्त का पोषक है। श्री शंकराचार्य ने भी वेदान्त १।१।३ सूत्र में वेद को सर्व-विद्योपबृंहित माना है। कुछ काल से यह धारणा कुछ नवीनों की बन गई है कि वेद केवल कर्मकाण्ड मात्र के लिये हैं। उनका कोई अर्थ नहीं है। परन्तु यास्क ने निरुक्त में और जैमिनि ने मीमांसा में समान पूर्वपक्षों को उठाकर समाधान किया है और दिखलाया है कि वेद मन्त्रों के अर्थ हैं—वे निरर्थक एवं केवल यज्ञार्थ नहीं हैं। वस्तुतः यज्ञार्थ भी एक प्रक्रिया वेदमन्त्रों के अर्थ की है। शेष दो प्रक्रियायें - आध्यात्मिक और आधिदैविक हैं और ज्ञान विज्ञान को दिखाने वाली हैं। कर्मकाण्ड भी वेदों को बिना सार्थक माने सिद्ध एवं सम्पन्न नहीं हो सकता है। शाखाओं और विशेष कर ब्राह्मण ग्रन्थों में वेदों के रहस्य का उद्घाटन करते हुये ऋषियों ने अनेक विज्ञानों का वर्णन किया है। सामवेद उपासना काण्ड कहा जाता है। उसका प्रथम मन्त्र 'अग्न आयाहि वीतये' आदि है। इस मन्त्र में आये 'वीतये' पद की बड़ी सुन्दर एवं वैज्ञानिक व्याख्या शाखा और ब्राह्मण ग्रन्थों में की गई है। पूर्व अवस्था में सूर्य और पृथिवी लोक पृथक् नहीं होते। अग्नि इन्हें पृथक् करता है। अतः तैत्तिरीय शाखा का कथन है कि यह 'अग्न आयाहि वीतये' जो कहा है वह इन दोनों लोकों को पृथक् करने के लिये कहा गया है—

> अग्न आयाहि वीतये—इति
> वा इमौ लोकौ व्यैताम्।
> अग्न आयाहि वीतय—इति
> यदाह—अनयोर्लोकयोर्वीत्यै ॥
> (तै० शा० ५।१।५।)

शतपथ ब्राह्मण इसी बात की इस प्रकार पुष्टि करता है। अर्थात् यह जो वीतये (वी+इति) ऐसा कहा गया है वह इसलिये यह व+इति होता है। देवों ने इच्छा की कि ये लोक किस प्रकार पृथक् होवें। उन्होंने इन (वीतये) तीन अक्षरों से पृथक् किया और ये लोक दूर हो गए। यहां पर 'वि' का अर्थ पृथक् और इति का अर्थ गमन है। शतपथ ब्राह्मण का वाक्य निम्न प्रकार है—

> अग्न आयाहि वीतये—इति।
> तद्वै ति भवति वीतये—इति।
> ते देवा अकामयन्त कथन्नु
> इमे लोका वितरां स्यु...।
> तानेतै रेव त्रिभिरक्षरैः व्यनयन्
> वीतय इति त इमे विदूरं लोकाः ॥
> (शतपथ १।४।१।२२-२३)

इसी प्रकार एक बहुत ही प्रसिद्ध मन्त्र है—

> या ओषधीः पूर्वा जाता
> देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
> मनै नु बभ्रूणामहम्
> शतं धामानि सप्त च ॥

यह ऋग्वेद १०।९७।१ पर पाया जाता है। इसका अर्थ यह है कि जो ओषधियां मनुष्यों से तीन चतुर्युगी पूर्व उत्पन्न होती हैं उनके १०७ नाम हैं, १०७ स्थान हैं। ऐसा मैं वैज्ञानिक जानता हूं। यहां १०७ नाम और प्रयोग के स्थानों का वर्णन है। उन १०७ नामों का परिज्ञान तो आजकल नहीं है परन्तु निरुक्त और ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रयोग के १०७ स्थानों का वर्णन मिलता है। ये मनुष्य के १०७ मर्मस्थान हैं। आयुर्वेद के ग्रन्थों में सप्तोत्तर मर्मशत भवति' का यही अभिप्राय है। अगर आज इन १०७ ओषधियों का परिज्ञान लोगों को होता तो संसार का महान् उपकार होता।

ऋग्वेद १।२४।८।१० मन्त्रों में यह दिखाया गया है कि राजा वरुण अर्थात् वायु ने सूर्य को अपनी कक्षा में घूमने का मार्ग दिया है, उसी ने पैररहित सूर्य को आकाश में चलने को पैर दिया है। अर्थात् वही उसकी किरणों को विस्तारित करता है और वही उसे अपनी कक्षा में घूमने का मार्ग देता है। दशम मन्त्र में कहा गया है कि ये नक्षत्र जो आकाश में स्थित हैं वे रात्रि में तो दीखते हैं परन्तु दिन में कहां चले जाते हैं कि नहीं दिखाई पड़ते। वायु (प्रवह वायु) का यह दृढ़ नियम है कि उसके जरिये चन्द्रमा निकलता हुआ रात्रि में दिखाई पड़ता है। यहां पर नक्षत्रों आदि की गति में सहायक वायु है अर्थात् प्रवह वायु है—इस बात का वर्णन है। मन्त्र निम्न प्रकार है—

> उरुं हि राजा वरुणश्चकार
> सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ।
> अपदे पादा प्रतिधातवेऽकरुता-
> पवक्ता हृदयाविधश्चित् ॥८॥
> अमी य ऋक्षा निहितास
> उच्चा नक्तं ददृशे कुहचिद्दिवेयुः।
> अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि
> विचाकशच्चन्द्रमा नक्तमेति ॥१०

वैदिक साहित्य में सृष्टि के पदार्थों की रचना को वैदिक शब्द-

पूर्वक और छन्दों से सम्बद्ध माना गया है। भूरिति प्रजा पतिः भुवमसृजत स्वरित्यन्तरिक्षम्= अर्थात् 'भू.' कहकर प्रजापति ने पृथिवी और 'स्वः' कहकर अन्तरिक्ष की रचना की। इसका तात्पर्य यह है कि वैदिक शब्दों का सृष्टि के पदार्थों के साथ औत्पत्तिक सम्बन्ध है। यही भाव जैमिनि ने मीमांसा में व्यक्त किया है कि 'औत्पत्तिस्तु शब्दस्यार्थेन सम्बन्धः।'

समस्त मूर्त्त पदार्थों की अपनी एक आकृति एवं परिधि उस परिधि को ही छन्द घेरता है। इसे ही लेकर शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि 'छन्दोभिरिदं वयुनं नद्धम्' अर्थात् यह सारा भुवन छन्दों से बंधा हुआ है। इस प्रकार महर्षि की यह धारणा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है सर्वथा ही सिद्ध है परन्तु इस सम्मेलन में मैं इतने समय में अधिक बातें तो कह नहीं सकता हूं और न ऐसा करना यहा पर ठीक ही होगा। 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' इसको पूर्ण करने का काम आर्य समाज का है। हमें चाहिए कि समाज की पूरी शक्ति लगाकर इस सूत्र को सिद्ध करें। विशेष विस्तार से इन विषयों पर मैंने अपनी पुस्तकों में विचार किया है।

कभी-कभी कुछ ऐतिहासिकविद्वान् वेद, में अमुक पशु का वर्णन नहीं, सिंह का वर्णन नहीं, यह नहीं, वह नहीं कहकर वेदों की रचना और आर्यों के स्थान की कल्पना करने लगते हैं। परन्तु यह मार्ग प्रशस्त नहीं। इन सामग्रियों के आधार पर कोई ऐतिहासिक तथ्य नहीं सिद्ध किया जा सकताहै। ऋग्वेद १।६४।७ में 'महिष, मृग, हस्ती और चित्र-भानु आदि का वर्णन है। ऋग्वेद १।१३८।२ में उष्ट्र का नाम आया है। यजु. १९।१० में व्याघ्र, वृक और सिंह का नाम आया है। इस प्रकार विविध पक्षियों आदि के भी नाम वेदों में मिलते है। परन्तु इनके बल पर किसी भौगोलिक स्थिति का ढूंढना प्रशस्त समीचीन नहीं है।

हमारा कर्त्तव्य

वेद का आर्य समाज के साथ समवाय सम्बन्ध है। अतः प्रत्येक आर्य एवं आर्य-समाज और उसकी सभाओं को चाहिये कि वेद के विज्ञान को संसार में फैलाने का पूर्ण प्रयत्न करें। आजकल वेद सम्मेलनों के नाम सम्मेलन और वेदभाष्य एवं वेदान्वेषण के नाम से वेदान्वेषण अपने अपने ढंग से दूसरे लोग भी करने लगे हैं। परन्तु इन सबका प्रयत्न वैदेशिक ढंग का होता है अथवा अपनी मन्यताओं को सिद्ध करने एवं आर्य-समाज का खण्डन करने के लिए होता है। यद्यपि समझदार विद्वानों का ऐसा भी वर्ग है जो महर्षि दयानन्द के भाष्य को स्वीकार कर रहा है और उसे सर्वोत्तम बता रहा है। परन्तु विदेशी सरणी के अनुगामी और एतद्देशीय पौराणिक सरणी के अनुयायी महर्षि दयानन्द के भाष्य और विचारों के खण्डन में ही अपनी कृत-कृत्यता समझते हैं। इसका भी हमें उपाय करना होगा।

पहले यह कहा जा चुका है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इसकी सिद्धि में अनुसंधान कार्य को ऊंचे पैमाने पर करने की आवश्यकता है। एक केन्द्रीय पुस्तकालय हो और अनेक विद्वान् वहां बैठकर वैदिक अनुसंधान करें और विविध विद्याओं के विषय में पुस्तकें लिखकर जनता एवं सुधी-वर्ग के समक्ष रखें। यह एक बहुत बड़ा कार्य है और इसे करना भी आवश्यक है। यह प्रसन्नता की बात है कि सार्वदेशिक सभा इस दिशा में कुछ कार्य अपनी सामर्थ्य के अनुसार अच्छे ढंग पर कर रही है। परन्तु इस कार्य को और भी विशालतम बनाने की आवश्यकता है। अन्यत्र भी कार्य हो रहे हैं परन्तु या तो वे उल्टी दिशा में चले गए हैं या वेद के नाम पर कुछ और ही करने लगे हैं। कहीं नया वेद बनाने की चेष्टा न होने लगे। साहित्य की कुछ संस्थायें अर्ध सरकारी या राजकीय स्तर पर कार्य करती हैं। परन्तु इनके कार्य-कलाप का ढंग अपना 'अलिप्त' है और इनके पुरस्कार आदि उन ग्रन्थों पर दिये जाते हैं जो अपनी आर्यसमाज की धारणा के प्रतिकूल हों। 'वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति' पुस्तक पुरस्कृत है। परन्तु पुस्तक में महर्षि दयानन्द की धारणा को मानकर वेद में विज्ञान तो माना गया फिर भी लिखा गया कि महर्षि दयानन्द के भाष्य में कोई वैज्ञानिक बात नहीं मिलती है : यह कितनी विचित्र बात है। पुस्तक देखने पर पता चला कि इसमें मृतक-श्राद्ध और रासलीला को भी एक वैदिक-विज्ञान सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है। ऐसे ही मूर्तिपूजा और अवतारवाद को भी वैज्ञानिक सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है। यह है एक पौराणिक विद्वान् का वेद सम्बन्धी वैज्ञानिक अनुसंधान। पुस्तक को देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। अतः मैंने इसके उत्तर में 'वैदिक विज्ञान-विमर्श' पुस्तक लिखी और निराकरण किया। यह तो १प्रयास है। ऐसे अनेकों प्रयत्न हो रहे हैं। इनका हमें सामना करना पड़ेगा आर्य समाज के वैदिक दृष्टिकोण को बताने का कार्य बहुत उच्च स्तर पर होना चाहिए। अनुसंधान विभाग और वह भी केन्द्रीय अनुसंधान विभाग हो, ऐसी संस्था चलाने की आवश्यकता है। हमारी सभायें इस विषय पर सोचें और शीघ्र कार्य कर पग उठावें।

वेद विषयक अनुसंधान पर अधिक बल संस्थायें नहीं देतीं। भारत में दो स्थानों पर अनुसंधान का कार्य अखिल भारतीय स्तर पर चल रहा है - एक पूना और दूसरा बड़ौदा में। परन्तु इन दोनों संस्थाओं में से एक ने महाभारत और एक ने वाल्मीकि रामायण पर ही अपनी शक्ति लगा रखी हैं। इससे निपटेंगे तो स्यात् पुराण और तन्त्रों पर जुट जावें। पुराण और तन्त्र भी अनुसंधान की सामग्री रखते हैं, यह एक ऐसी धारणा है जिसे समीचीन तो कहा नहीं जा सकता।

आर्य जगत् में व्यक्तिगत रूप से कुछ विद्वान् अपनी कठिनाइयों को साथ लिये हुये भी इस दिशा में अपनी शक्ति के अनुसार कार्य कर रहे हैं। वे धन्यवाद और हमारी श्रद्धा के पात्र हैं। परन्तु इनके कार्यों को केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

एक सत्यहै जो कहे बिना छोड़ना यद्यपि समुचित न होगा जब कि वह अधिक है। परन्तु मैं उसे यहां कहने लगा हूं। कई आर्य विद्वान् वेदानुसंधान के अथवा अनुसंधान के नाम पर ऐसा भी कार्य करते हैं जो वेद की धारणा, आर्य समाज एवं महर्षि के विचारों के सर्वथा प्रतिकूल है। ऐसे कार्यों में सहयोग देना वस्तुतः अपनी ही हानि करना है हमें अपने सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ रहने की आवश्यकता है।

वेद सम्मेलन होते हैं। उनमें घण्टे दो घण्टे में व्याख्यानों के साथ समाप्त हो जाते हैं। उनमें किसी विषय पर विचार नहीं हो पाता। आर्य समाज और उसकी सभाओं को चाहिये कि वह प्रत्येक वर्ष ओरियन्टल कान्फ्रेंस के ढंग पर वैदिक साहित्य सम्मेलन का आयोजन करें जो कि कम से कम तीन दिन का हो और उसमें विविध विषयों पर विचार हुआ करे। निबन्ध पढ़े जावें और वे प्रकाशित भी किये जावें।

इन सब कार्यों के करने के लिये आर्य समाज को अनिवार्य प्रयत्न करने चाहिये। आज तो वेद का स्वाध्याय भी कोई नहीं करता है। यदि कुछ लोग करते हैं तो उनकी संख्या नगण्य सी है। स्वाध्याय की इस प्रवृत्ति को बढ़ाना चाहिये। वैदिक विद्वानों की कमी होती जा रही है। नये विद्वान् बनते नहीं। फिर भविष्य कैसा बनेगा—यह आप सोच लें। इसके लिये भी कुछ करना ही पड़ेगा। सोचिये और कुछ कीजिये।

बातें तो बहुत हैं परन्तु सब कही नहीं जा सकतीं। आपका समय भी मैंने पर्याप्त लिया। अन्य व्याख्यान भी होंगे और सम्मेलन की कार्यवाही भी होनी ही होगी। अतः अधिक समय न लेकर यहीं पर विराम करता हूं।

आपको पुनः धन्यवाद करता हूं।

Bhagwan Dayanand Saraswati and the Upanishads

by Rai Bahadur Ratan Lal, B. A., LL. B.
Formerly Common Chief Justice of 14 Malwa State (Madhya Pradesh) High Courts.

More Testimony of the Upanishads themselves

25. Yoga Sikhopanishad

Thus this Upanishad on the subject: The prime cause of all created things is the Adhara In the Adhara (abide) all deities. In the Brahma (abide) also all the Vedas. – 29

सुषिराधारमाधारमाधीरे सर्वदेवता:,आधारे सर्वं वेदाश्च तस्माद्धारमाश्रयेत ।।२९।।

26. Sandilyopanishad

This Upanishad gives an interesting definition of prayer. Says it: "the practice of Mantras not running counter to the injunctions of the Veda, in accordance with the initiation of the guru and in keeping with the prescribed rule is what is known as prayer Constancy in the observance of the injunctions and prohibitions laid down in the Veda, is what is known as observance of vows". 10–11

जपो नाम विधिवद् गुरूपदिष्ट वेदाविरुद्ध-मंत्राभ्यासः ।१० व्रतं नाम वेदोक्तविधिनिषेधानुष्ठाननैयत्यम् ।।११।।

And again "Sincerity, in following the course of observances laid down by the Vedas is what is known as the proper frame of mind "—9

मतिर्नाम वेदविहितकर्ममार्गेषु श्रद्धा ।।९।।

27. Mahopanishad

This Upanishad believes in Apourusheya theory of the Vedas & says: He(Narayana was absorbed in deep meditation once (again). Facing the East he became the Vyahriti, Bhur, the Chhandas. Gayatri, the Rigveda and the deity Agni.Facing the West, he became the Vyahriti, Bhuvar, the Chhandas Tristubh, the Yajurveda and the deity. Vayu. Facing the North he became the Vyahriti, Suvar, the Chhandas Jagati, the Samveda and the deity, Surya. Facing the South he became Vyahriti, Mahar, the Chhandas Anustubh,the Atharvveda and the deity Soma. -9

सोऽध्यायत् । पूर्वाभिमुखो भूत्वा भूरिति व्याहृतिर्गायत्रं छन्द ऋग्वेदोऽग्निर्देवता । पश्चिमाभिमुखो भूत्वा भुव इति व्याहृतिस्त्रैष्टुभं छन्दो यजुर्वेदो वायुर्देवता । उत्तराभिमुखो भूत्वा स्वरिति व्याहृतिः जागतं छन्दः सामवेदः सूर्यो देवता ।

28. Pran–Agnihotropanishad

This Upanishad considers the Vedas as priests of Shariryagya. The Yajamana of this sacrifice of Saur Yagya, which is devoid of the sacrificial post and the rope is Atman. The wife of the sacrificer is the Intellect. The great priests are the Vedas.–22

अस्य शारीरयज्ञस्य यूपरशनाऽशोभितस्यात्मा यजमानः बुद्धिः पत्नी वेदा महऋत्विजः ।२२

29. Paingalopanishad

This Upanishad proclaims that : He who studies this Upanishad everyday becomes hallowed by fire. He becomes hallowed by air. He becomes hollowed by the sun." 4 29.

य एतदुपनिषदं नित्यमधीते सोऽग्निपूतो भवति स वायुपूतो भवति स आदित्यपूतो भवति ।।४-२

It says nothing specific about the Vedas but says in one place what is the use of milk to one satiated with nectar? Even so of what avail is the study of the Vedas to one who has perceived the Atman 4.13.

अमृतेन तृप्तस्य पयसा किं प्रयोजनम् ।। एवं स्वात्मानं ज्ञात्वा वेदैः प्रयोजनं किं भवति ।४-१३

It is clear therfore that it does not claim to the Veda.

30. Ekaksharopanishad

As regards the author of the Vedas this Upanishad says : "From thy mouth flow the Rig, the Yajur and the Sam hymns of the Vedas. 7.

ऋचो यजूंषि प्रसवन्ति वक्त्रात् सामानि सम्राड् वसुरन्तरिक्षम् त्वं यज्ञनेता हुतभुग्विभुश्च रुद्रास्तथा दैत्यगणा वसुश्च ।।७

31. Ayyaklopanishad

This Upanishad says thus about the Vedas : "Parmesthin brought into existence the Rigveda, from the first metrical foot of the selfsame Amistubh, the Yajvrveda from the second foot. the Samveda from the third foot and the Atharvaveda from the fourth (for the wellbeing in this life and supreme felicity in the life hereafter, of the multitudes of beings created by Him)–5·5.

ततो व्यैच्छत् । व्यैदात्मा इत्यहंति । अथो तम एवापहन्ते । ऋग्वेदमस्य आद्यात् पादादकल्पयत् यजुर्द्वितीयात् साम तृतीयात् । अथर्वाङ्गिरस-श्चतुर्थात् ।।५-५।।

32. Krishnopanishad

This Upanishad has a high opinion about itself. Says it: 'Whoever studies this Upanishad by day destroys all sins committed by him at night.Who ever studies it by night destroys all the sins committed by him during the day. This is verily the secret (underlying) all the Vedas. This again is the secret underlying all the Upanishads." 2

तदेतत् दिवा अधीयानः रात्रिकृतं पापं नाशयति नक्तमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। तदेतद् वेदानां रहस्यं तदेतदुपनिषदां रहस्यम् ।।२

It is obvious from this that Vedas and Upanishads are treated as different from each other.

33. Gopala–Tapini Upanishad

It is said in this Upanishad that Vedas are the basis of all sacred utterances and He (Gopal-Krishna) is realized through the, Vedas. —2–2

पापकर्षणो गोभूमि वेदविदितो गोपीजन विद्याकलापी प्रेरकः ।।२-२

At another place it gives out : "Krishna who of Yore(at the time of the creation), set Brahman about the task of creating the phenominal world) who imparted unto him the Vedas and again afforded protection unto theself same Vedas from being lost in in the great Deluge –22

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो विद्यास्तस्मै गोपायति स्म कृष्णः । तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुः शरणं व्रजेत ।।२२।।

34, Tripad-Vibhuti-Maha-Narayanopanishad

How the Vedas appeared in this world? The answer of this Upanishad to this question : "From Narayana alone are generated all the Adityas, twelve in number.all the Vasus, all the seers, all beings and all the Vedas From Him they derive their existence. In Narayana they meet with their dissolution. Hence the eternal. the imperishable & the transcendent is the Svarat. Brahma the creator is Narayan." 2.15 (क्रमशः)

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

सूचना

सार्वभौम आर्य परिव्राजक संघ बरसौदा के मन्त्री श्री स्वामी आत्मानन्द जी तीर्थ सूचित करते हैं कि संघ में असीमानन्द सरस्वती नाम का कोई संन्यासी प्रचार मन्त्री अथवा उपमन्त्री नहीं है। अतः कोई भी आर्य समाज अथवा आर्य जन इस नाम के संन्यासी को संघ के लिए धन न दें।

आर्य समाज खंडवा

आर्य समाज, खंडवा की ओर से दिनांक २२ अप्रैल को ग्राम कुंडिया में बलाही जाति के सुधारार्थ १२५ ग्रामों की सभा हुई। दिनांक २५ अप्रैल को बड़गांव गूजर में ५० ग्रामों की सभा में बलाही जाति के सुधारार्थ श्री सुखराम जी आर्य सिद्धान्त शास्त्री तथा श्री पूनमचन्द्र जी ने प्रभावशाली भाषण दिये। ग्रामीण जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज अम्बाजोगाई

आर्य समाज, अम्बाजोगाई (महाराष्ट्र) के निर्वाचन में प्रधान श्री द्वारकाप्रसाद जी चौधरी, मन्त्री श्री कृष्णकुमार जी चौधरी तथा श्री चन्द्रगुप्त जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

बछिया के साथ मुंह काला

ग्राम नंगलपत (मेरठ) में तीन मास की गाय की बछिया के साथ एक मुसलमान ने मुंह काला किया। इस जघन्य अपराध में मेरठ सेशन जज ने अपराधी को १ वर्ष का दण्ड दिया, मुसलमानों द्वारा हाई कोर्ट में अपील करने पर हाई कोर्ट से ३ मास की कैद की सजा हुई।

आर्य बाल सम्मेलन

१—आर्यसमाज महरौली दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर श्री प० देवव्रतजी धर्मेन्दु, आर्योपदेशक की अध्यक्षता में आर्य बाल सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें लगभग ३५ बालक बालिकाओं ने भाग लेकर पारितोषिक प्राप्त किये।

२—आर्य समाज पटेल नगर नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर सोमवार ता० २ मई ६६ को मध्याह्न ३ बजे से श्री ला० दीवानचन्द की अध्यक्षता में आर्य बाल सम्मेलन हुआ। जिसमें कालेज, हायर सेकण्डरी तथा मिडिल की ५० छात्र छात्राओं ने भाषण प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पारितोषिक प्राप्त किये। बहुत से छोटे बालक बालिकाओं ने मन्त्र, कविता, भजन आदि सुना कर पारितोषिक प्राप्त किये। यह सम्मेलन श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु के संयोजकत्व में बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज, सदर बाजार

आर्य समाज सदर बाजार दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन रविवार दिनांक १-५-१९६६ को वैद्य मूलचन्द्र आर्य के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रधान श्री वैद्य प्रहलाददत्त जी, उपप्रधान श्री किशोरी लाल गुप्त, श्री महावीर आयुर्वेदाचार्य, मन्त्री श्री होरीलाल गुप्त, उपमन्त्री श्री चन्द्रदेव एम० ए० प्रिन्सिपल, सहमन्त्री श्री धर्मसिंह, कोषाध्यक्ष श्री लम्भूराम, पुस्तकाध्यक्ष श्री दामोदर दास।

—आर्य समाज, धनदिया के निर्वाचन में श्री राधोप्रसादजी प्रधान, श्री सुन्दरलाल जी आजाद मन्त्री तथा श्री किशुनलाल जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा, प्रयाग के निर्वाचन में श्री राधारामजी गुप्त प्रधान, श्री राधेमोहन जी मन्त्री तथा श्री हरिश्चन्द्र जी साहू कोषाध्यक्ष चुने गये।

केवल गुरुमुखी मतदाता सूची क्यों ?

दिनांक २४ अप्रैल चण्डीगढ़, आर्य समाज सेक्टर ८ की सार्वजनिक सभा पंजाब निर्वाचनाध्यक्ष (चीफ एलैक्ट्रोरल आफिसर) के पंजाबी क्षेत्र में केवल गुरुमुखी लिपि में मतदाता सूचियों के विरुद्ध जोरदार प्रोटेस्ट किये हैं।

प्रस्ताव में कहा गया है कि ऐसा करके लाखों गुरुमुखी न जानने वालों को उनके मौलिक अधिकार से वंचित कर दिया है। पंजाब सरकार तथा भारत सरकार से अनुरोध है कि वह जनता की सुविधा के लिए देवनागरी और गुरुमुखी दोनों लिपियों में मतदाता सूचित प्रकाशित करे।

आर्य समाज अमेठी

विश्व में अशान्ति फैली हुई है। धर्म प्रधान देश जगद्गुरु भारत को स्वराज्य प्राप्त किये हुये १८ वर्ष से अधिक हो गये परन्तु अभी तक उद्घोषित राम राज्य का आभास नहीं हो रहा है।

दल पर दल और उनमें भी फूट पर फूट बनते चले जा रहे हैं। एकता के नाम पर अनेकता बढ़ती जा रही है। दिन दहाड़े लूट, हत्या आदि के रोमांचकारी भयंकर काण्ड, अधर्म, अनाचार, अत्याचार, दुराचार, और भ्रष्टाचार आदि का प्रसार हो रहा है। धर्म से विमुख होने से कभी कल्याण नहीं हो सकता।

वास्तविक सुख और शान्ति के लिये सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार, शिक्षा प्रसार एवं समाज सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है।

शारदाप्रसाद त्रिपाठी चन्द्रभान वकील
मन्त्री प्रधान

आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली

का उत्सव ता० ६-७-८ मई को हो रहा है।

सूचना

जो आर्यसमाजें उत्सवों पर प्रचार कराना चाहें वह आर्य समाज के सुप्रसिद्ध प्रभावशाली भजनोपदेशक श्री ओम्प्रकाश जी वर्मा द्वारा नेशनल फ्लू कम्पनी यमुनानगर (अम्बाला) से पत्र-व्यवहार करें।

आर्य समाज इटारसी

के निर्वाचन में श्री एम० बी० सीरिया जी वकील प्रधान, श्री राजपाल जी सिंधी मन्त्री एवं श्री डा० बी० पी० मालवीय कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज जामा मसजिद दरियागंज दिल्ली

के निर्वाचन में श्री डा० निरंकारी लाल जी कक्कड़ संरक्षक, श्री पं० प्रेमप्रकाश जी एम० ए० प्रधान, श्री रामूराम जी सपड़ा एम० ए० मन्त्री एवं श्री ओम्प्रकाश जी चांधी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य सम्मेलन

ग्राम जिवाना (मेरठ) में तहसील आर्य सभा बागपत के तत्त्वावधान में विराट आर्य सम्मेलन हुआ। अनेक विद्वान् संन्यासी और उपदेशकों ने भाग लिया।

आर्य समाज शामली

का उत्सव दिनांक ६-७-८ मई को बड़ी धूम-धाम से हो रहा है। अनेक विद्वान् नेता भाग लेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ

से निम्न ट्रैक्ट समालोचनार्थ प्राप्त हुए हैं: – धन्यवाद

पाप-पुण्य (म० नारायण स्वामी जी के प्रवचनों का संग्रह) ३५ पैसे, पाश्चात्य विद्वान् और ईसाइयत — लेखक श्री पं० शिवदयालु जी १० पैसे, राष्ट्र-सुरक्षा और वेद १५ पैसे, महान् दयानन्द ५० पैसे, धरती-माता की महिमा ३७ पैसे, हंसमत-दर्पण १० पैसे, मेहरे बाबा मत-दर्पण ६ पैसे, ब्रह्मकुमारी-दर्पण १२ पैसे, टामस पेन और ईसाइयत ५ पैसे, बहाई मत दर्पण १० पैसे,

श्री शिवदयालु जी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा सुलझे विचारों के प्रसिद्ध लेखक हैं। आर्यसमाज के प्रचार की उनके हृदय में लगन है और उसी दृष्टि से ये ट्रैक्ट खोज तथा परिश्रम के साथ लिखे गये हैं। इन के अध्ययन से पाठकों को पर्याप्त जानकारी और लाभ मिलेगा। हम इनका अधिक से अधिक प्रचार चाहते हैं। आर्यसमाजों को चाहिए कि छोटे-छोटे ट्रैक्टों को अधिक संख्या में मंगवाकर वितरित करें, जिससे कि आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार के लिए वातावरण हो सके।

(पृष्ठ ५ का शेष)

३१ श्याम केशकारक तेल — पलास के वृक्ष के नीचे जो बीच की जड़ हो उसको मूसला कहते हैं उसके नीचे खांडा खुदवा कर आधी जड़ काट नीचे खाली जगह में एक बर्तन कली कराया हुआ रख दे ऊपर से ढकना लगा इस प्रमाण छेद बीच में रखो दे कि जिससे मूसले की जड़ ठीक बैठ जाय, पुनः उसके चारों ओर मट्टी चुन कर और ऊपर से मट्टी डाल फिर वृक्षों के चारों ओर कण्डों की आंच लगा दे। जितना अर्क उस पात्र में निकल आवे, उतना ही सरसों का कडुआ तेल मिला के कढ़ाई में औटावे जब तेल आधा रह जाय तब कढाई को उतार कर उसमें माजूफल एक १ माशे भर, १ तोले भर लोहे का रेतन और १ माशे भर नीला थोथा, ये सब चीजें पीस कर तेल में मिलाय सीसे में भर के रख दे फिर उसको रात के समय बालों के लगा ऊपर से पान लपेट के सो जावें तो प्रातःकाल तक श्याम केश हो जांय।

३२ तृतीय [क] ज्वर की औषधी—६ माशे भर फटकड़ी गर्म जल में जब दो (दूसरी ?) पारी का समय आवे तब पीस कर पी जाय और पारी तक भोजन न करे तो तृतीय[क] ज्वर जाय।

३३ दाद की औषधी—गन्धक राई राल कत्था तेलिया सुहागा ये चारों चीज बराबर लेकर पृथक् २ पीस कर चारों को मिला खरल में प्रहर १२ खरल करके जब एकजी हो जाय तब बेर के समान गोली करके सुखा ले। फिर गोली को चिकने पत्थर पर पानी में घिस के दाद को खुजला कर लगा दे तो दाद बिलकुल जाता रहे।

३४ बीछू की औषधी—जब किसी को बीछू काटे तब लून को पीस १ पात्र में रख दे और दूसरे पात्र में जल रखे। अंगुली के अग्र भाग से जल स्पर्श करके उससे पीसा हुआ लून लगा के जहां बीछू ने काटा हो उस पर फोरे फोरे हाथ से मले। पुनः इसी प्रकार बार बार करने से थोड़ी ही देर में बीछू झट उतर जाता है। जब डंक पर कुछ जलता रहता है, उस पर दो पैसे भर लून को थोड़े से जल में घोल के उसमें रूई भिगो के डंक पर बांध देवे तो नींद आ जायेगी। और डंक पर से भी पीड़ा मिट जायेगी।

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २ ५०
सत्यार्थप्रकाश २)
संस्कारविधि १)२५
पञ्च महायज्ञ विधि)२५
व्यवहार भानु)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र १) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७ x ४० इञ्च २)५०
„ ३६ x ५४ इञ्च ४)५०
„ ४५ x ६७ इञ्च ६)५०
कर्त्तव्य दर्पण)४०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)०५
मराठी सत्यार्थप्रकाश १)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से))५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
कठोपनिषद् ५० प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १ २५
मृत्यु और परलोक १)
विद्यार्थी जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
अभ्यास और वैराग्य १)६५
निज जीवन वृत्त वनिका (सजिल्द))७५
बाल जीवन सोपान १)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म ६०

उपनिषद् कथामाला)७५
सन्तति निग्रह १)०५
नया संसार)०
आदर्श गुरु शिष्य)०५
कुल्लियात आर्य मुसाफिर ६)
पुरुष सूक्त)४
भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर ६२
स्वर्ग में हड़ताल)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)०५
वैदिक तत्व मीमांसा)०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६०
वेद और विज्ञान ७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३०
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
इराक की यात्रा २)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक ईश वन्दना ४०
वैदिक योगामृत)६२
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
भ्रम निवारण)३०
वैदिक राष्ट्रीयता)०५
वेद की इयत्ता १)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह)७५
कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
वैदिक युग और आदि मानव ४
वैदिक इतिहास विमर्श ७)०५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम् (पूर्वार्द्ध) १)५०
(उत्तरार्द्ध) १)५०
वैदिक संस्कृति)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
सायण और दयानन्द ३)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)५०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)५०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०

संस्कार महत्व)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
चरित्र निर्माण १)२५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)२५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
अनुशासन का विधान २५
धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १ २५
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय २)
आर्य समाज के महाधन २)५०
एशिया का वेनिस)७५
स्वराज्य दर्शन १)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
भजन भास्कर १)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली-१

ARYA SAMAJ
ITS CULT AND CREED

A unique and elegantly printed Book of the Day

By Acharya Vaidyanath Shastri

Rs 5/

This is the most popular and widely read first English book of Acharya Vaidya Nath Shastri a well known Arya Samaj Scholar and author credited with writing books in Hindi of outstanding merit on religion and philosophy some of them winning prizes

The book presents a scholarly and lucid exposition of the Cult and Creed of AryaSamaj ranking among the high-class rare English literature of Arya Samaj It is a worth reading worth preserving & worth presenting book to the English reading persons especially to the intelligent sia

Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha
Dayanand Bhawan,
Ramlila Ground, New Delhi 1

प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये ।

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ फोन २७४७७१ ज्येष्ठ कृष्णा १० सम्वत् २०२३, १५ मई १९६६ दयानन्दाब्द १४३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०

आर्यजगत के शतवर्षीय वेदज्ञ विद्वान् पं. सातवलेकर

पूना विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट्० की उपाधि से सम्मानित

भारत के राष्ट्रपति "भारत रत्न" से सम्मानित करें ।

सभा प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास के हार्दिक उद्गार

वेद—आज्ञा

मनुष्य

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम् । विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा ॥२१॥

यजुर्वेद अध्याय २२ मन्त्र २१

संस्कृत भावार्थ—

सर्वे मनुष्या विद्वद्भिः सह सुहृदो भूत्वा विद्या धनाय वृणीत्वा श्रीमन्तो भूत्वा सुपथ्येन पुष्टाः सन्तु ।

आर्य भाषा भावार्थ—

सब मनुष्य विद्वानों के साथ मित्र होकर विद्या और धन का ग्रहण कर यश और कान्तिमान् होकर उत्तम योग्य आहार वा अच्छे मार्ग से पुष्ट हों ।

— महर्षि दयानन्द सरस्वती

इस प्रकार के प्रकाण्ड विद्वान का पूना विद्यापीठ अथवा कोई दूसरा सम्मान करे इसकी अपेक्षा इनका सन्मान भारत के राष्ट्रपति के द्वारा होना चाहिए इन को तो भारतरत्न का सन्मान मिलना चाहिए था । ये हैं वे शब्द जिन्हें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान विद्वान् श्रेष्ठी श्री प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास ने स्वाध्याय मंडल के अधिष्ठाता एवं आराधक वेदज्ञ श्री प० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर को पूना विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट की प्रतिष्ठात्मक उपाधि दिये जाने के अवसर पर व्यक्त किये थे ।

पारडी-पारनेरा की पर्वतमाला के सानिध्य मे प्राचीन आश्रम जीवन को साकार करने वाले पण्डित सातवलेकर जी को इस प्रतिष्ठात्मक उपाधि को अर्पण करने के लिए यूनिवर्सिटी के विनयन विभाग के प्रधान माडणकर जी और डिप्टी रजिस्ट्रार विशेष रूप से उपस्थित हुवे थे । स्वागत करते हुए श्री वसन्त सातवलेकर ने ४८ वर्ष पूर्व स्थापित स्वाध्याय मण्डल का परिचय देते हुये विदेशी शासन के समय हुवे कड़वे-मीठे अनुभवों का संक्षेप में वर्णन किया । संस्था के प्रकाशन और संशोधन कार्य के विषय मे उन्होंने संक्षिप्त जानकारी दी ।

पूना विश्वविद्यालय के विनयन विभाग के अध्यक्ष डा० माडणकर ने प० सातवलेकर के काम का बखान करते हुये कहा कि इन्होंने जो संशोधन कार्य किया है वह अप्रतिम है । सारी भाषाओं का आदिमूल संस्कृत है । इसका साहित्य बेजोड़ है । पंडित सातवलेकर ने ऋषितुल्य जीवन जीकर बताया है । इनके जीवन में साहित्य, अध्ययन और संशोधन येन वर्धित और कला का त्रिवेणी संगम बन गया है ।

डाक्टर माडणकर ने यूनिवर्सिटी की ओर से सम्मानित उपाधिपत्र और वेष अर्पण किया । महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी की ओर से डा० भोगीलाल सांडसरा गुजरात विद्यापीठ की तरफ से श्री लालभाई नायक श्री प्रतापसिंह शूर जी श्री सर देसाई आदि विविध संस्था और व्यक्तियों ने पंडित जी को पुष्प हार अर्पण किए थे । और उन प्रशंसा मे विविध बात कही ।

श्री प्रतापसिंह शूर जी ने कहा आज का दिन केवल पारडी अथ गुजरात वा केवल महाराष्ट्र के लिए ही सुवर्ण दिन नही अपितु समस्त भारत के लिए गौरव रूप है । जिसने भारत की असीम सेवा है ऐसे सपूत का हम सम्मान कर रहे है । सौ वर्ष की अवस्था होने पर भी आज भी ये वेदो की सेवा मे संलग्न हैं । इन्होंने अपने स्वार्थ लिए नहीं बल्कि देश के लिए और लोक कल्याण के लिए समस्त जीवन अर्पण किया है । जिस भाषा मे संस्कृति तथा सभ्यता एवं रत्नों का भण्डार है उसके लिए जिसने पुरुषार्थ किया ऐसे व्यक्ति का सम्मान करके पूना विद्यापीठ ने अपने ही गौरव को बढ़ाया है । सच्ची बात तो यह है कि पूना अथवा दूसरी यूनिवर्सिटी सम्मान करे इसकी अपेक्षा इस प्रकार के विद्वान् का सम्मान भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारतरत्न की उपाधि देकर किया जाना चाहिए ।

वेदों के अमर राष्ट्रगीत आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो० के कहे अनुसार ब्रह्मवर्चस्वी ब्राह्मण पैदा करने का इन्होंने जो पुरुषार्थ किया है वह चिरस्मरणीय रहेगा इनके महत्व को हम पूरी तरह समझ नही सके हैं । आज ऐसा व्यक्ति विदेश में होता तो उसके पीछे लोग पागल बने फिरते ।

वेद मे तीन सौ वर्ष की आयु कही गई है । वह इन्हें जनार्दन की सेवा के लिए प्राप्त हो और वे समस्त देश को वेद निनाद से गुंजित कर भारत देश को उन्नति देवें-ऐसी शुभेच्छा प्रतापसिंह शूरजी ने व्यक्त की ।

आर्य वयं कृण्वन्तो
सम्पादक—रामगोपाल शालवाले मन्त्री
सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक
वर्धन लोकास्त्पष्ठात
वर्ष—१
अंक—२५

शास्त्र-चर्चा

जल का महत्व और दान

प्रश्नस्वस्यानुपानेन क्षुधुका च युधिष्ठिर। तृषितस्य न चान्नेन पिपासामिप्रशाम्यति ॥ तस्मात् तोय सदा देय तृषितेभ्यो विजानता ॥

युधिष्ठिर! जल पीने से भूख भी शान्त हो जाती है किन्तु प्यासे मनुष्य की प्यास अन्न से नहीं बुझती इसलिये समझदार मनुष्य को चाहिये कि वह प्यासे को सदा पानी पिलाया करे।

अद्भि सर्वाणि भूतानि जीवन्ति प्रभवन्ति च। तस्मात् सर्वेषु दानेषु तोयदान विशिष्यते ॥

सब प्राणी जल से पैदा होते हैं और जल से ही जीवन धारण करते हैं। इसलिये जलदान सब दानों से बढ कर माना गया है।

अन्न का महत्व

ये प्रयच्छन्ति विप्रेभ्यस्त्वन्न दान सुसस्कृतम्। तैस्तु दत्ता स्वय प्राणा भवन्ति भरतर्षभ ॥

भरतश्रेष्ठ! जो लोग विप्रो को सुपक्व अन्न दान करते हैं वे मानो साक्षात् प्राण-दान करते हैं।

अन्नाद् रक्त च शुक्र च अन्ने जीव प्रतिष्ठित। इन्द्रियाणि च बुद्धिश्च पुष्णन्त्यन्नेन नित्यश। अन्नहीनानि सीदन्ति सर्वभूतानि पाण्डव ॥

पाण्डुनन्दन अन्न से रक्त और वीर्य उत्पन्न होता है। अन्न मे ही जीव प्रतिष्ठित हैं। अन्न से ही इन्द्रियो का और बुद्धि का सदा पोषण होता है। बिना अन्न के समस्त प्राणी दुखित हो जाते हैं।

तेजो बल च रूप च सत्त्व वीर्यं धृतिर्द्युति। ज्ञान मेधा तथाऽऽयुश्च सर्वमन्ने प्रतिष्ठितम् ॥

तेज बल रूप सत्व वीर्य धृति द्युति ज्ञान मेधा और आयु—इन सबका आधार अन्न ही है।

देवमानवतिर्यक्षु सर्वलोकेषु सर्वदा। सर्वकाल हि सर्वेषाम् अन्ने प्राणा प्रतिष्ठिता ॥

समस्त लोकों में सदा रहने वाले देवता मनुष्य और तिर्यक योनि के प्राणियों में सब समय सबके प्राण अन्न मे ही प्रतिष्ठित हैं।

अन्न प्रजापते रूपमन्न प्रजनन स्मृतम्। सर्वभूतमय चान्न जीव श्चान्नमय स्मृत ॥

अन्न प्रजापति का रूप है। अन्न ही उत्पत्ति का कारण है। अन्न सर्वभूतमय है और समस्त जीव अन्नमय माने गये हैं।

अन्नेनाधिष्ठित प्राण अपानो व्यान एव च। उदानश्च समानश्च धारयन्ति शरीरिणम् ॥

प्राण अपान व्यान उदान और समान ये पांचों प्राण अन्न के ही आधार पर रहकर देहधारियो को धारण करते हैं।

शयनोत्थान गमन ग्रहणा कर्षणानि च। सर्वे सत्त्वकृत कर्म चान्नादेव प्रवर्तते ॥

सम्पूर्ण प्राणियो द्वारा किये जाने वाले सोना उठना चलना ग्रहण करना खींचना आदि कर्म अन्न से ही चलते हैं।

तस्मादन्नात प्रजा सर्वा कल्पेकल्पेऽसृजत् प्रभु। तस्मादन्नात् पर दान न भूत न भविष्यति ॥

प्रत्येक कल्प मे परमात्मा ने अन्न से ही प्रजा की सृष्टि की है इसलिये अन्न से बढकर न कोई दान हुआ है और न होगा।

शूद्रों का अपमान न करो

मद्भक्ताञ्शूद्रसामान्यादवमन्यन्ति ये नरा। नरकेष्वेव तिष्ठन्ति वर्षकोटिं नराधमा ॥

जो मनुष्य मेरे भक्तों का शूद्र जाति मे जन्म होने के कारण अपमान करते हैं वे नराधम करोडो वर्षों तक नरकों मे निवास करते हैं।

❀

[illegible]

आर्य समाज-परिचयांक

भारत और भारत से बाहर चार हजार से अधिक आर्य समाजें हैं। लाखों सदस्य हैं। करोडों रुपया व्यय करते हैं।

किन्तु सर्व साधारण को पता नहीं!

इसमें आर्यसमाज की सदस्य संख्या, आय-व्यय, मन्त्री का चित्र और प्रधान का नाम इस अङ्क में देंगे

यह विशेषांक भी विशेष ही होगा

हजारों मन्त्रियों के चित्रों सहित यह विशेषांक आर्य जगत् का दर्शनीय अङ्क होगा।

इसका मूल्य केवल १)१० पैसा होगा

प्रत्येक आर्य समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री महोदय अपनी संस्था का परिचय और चित्र भेजने में शीघ्रता करें।

इस महान् अंक पर २५-३० हजार रुपया व्यय होगा। सभा पर इतनी भारी धनराशि का भार न पड़े और सुगमता से अंक प्रकाशित हो जाय इसके लिए मन्त्री महोदयों से कम से कम १० अंक लेने और उसके ११) अग्रिम भेजने की प्रार्थना की थी। हर्ष की बात है कि आर्यसमाजों के मन्त्री महानुभावों ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की और धन भेज रहे हैं।

आप जिस किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री हैं उसका परिचय अपना नाम और चित्र तथा प्रधान का नाम भेजने मे देर न करें। — प्रबन्धक

आर्य जनो से निवेदन

१—आर्य समाज परिचयांक तो हम प्रकाशित करेंगे ही किन्तु आर्य शिक्षा प्रसारांक के प्रकाशित करने की पूरी भी तय्यारी है।

२ हमारे पास लगभग ४०० आर्य शिक्षा संस्थाओं के पते हैं इनसे विवरण मांगा था। हर्ष की बात है कि लगभग १५० शिक्षा संस्थाओं के परिचय और मुख्याचार्यों के चित्र अब तक आ गए हैं।

३ आर्य समाज अथवा आर्य जनों द्वारा सञ्चालित जो शिक्षा संस्थाएं हैं उनमें कुछ ऐसी संस्थाए भी होंगी जिनका हमें ज्ञान न हो। अत जितनी शिक्षा संस्थाए आपकी जानकारी मे हों उनका पता भेजें। फिर उन से परिचय प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे।

४—हमारी हार्दिक इच्छा है कि इस विशेषांक में छपने से कोई भी आर्य शिक्षा संस्था वंचित न रह जाय।

५—आर्य समाज परिचयांक के लिए अब तक लगभग ५०० चित्र और परिचय आ गए हैं। जिन मन्त्री महोदयों ने अपने चित्र परिचय नहीं भेजे-वह अब भेजने मे विलम्ब न करें।

६ सार्वदेशिक की ग्राहक संख्या दिनों दिन बढ रही है यह सब आपके पुरुषार्थ का फल है किन्तु अभी सन्तोषजनक नहीं है आप इतनी सहायता करें कि

आपकी आर्य समाज के अनेक सदस्य ग्राहक बनें इसका एक ही प्रकार है वह यह कि आप कम से कम ५ प्रति हर सप्ताह मगा लें अपने सदस्यो को दें १५ पैसे लें। एक महीने के पश्चात् फीस काट कर मनियार्डर भेजते रहें। यह बहुत ही सरल प्रकार है। कृपया इस पर आप ही ध्यान दें।

७—यदि आपके पास •निवाण अंक बोधांक और साप्ताहिक पत्र का धन शेष है तो वह भी भेजने मे शीघ्रता करें।

८ सार्वदेशिक में विज्ञापन भी भिजवाने का ध्यान रखें।

९ हर बृहस्पतिवार को सार्वदेशिक डाक की भेंट करते हैं जो शनीवार तक आपको मिलना चाहिए किन्तु यदि देर मे मिले तो हमें दोषी न समझते हुए भी सूचित करते रहें दुबारा भेज देंगे।

प्रबन्धक

आर्यसमाज परिचयांक जून में प्रकाशित होगा। ३१ मई तक आने वाले परिचय ही इस अङ्क में स्थान पा सकेंगे।

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

१९६१ की जनगणना पर आपत्ति क्यों ?

पंजाबी सूबा बनाने के निर्णय की घोषणा करते समय शायद सरकार ने समझा था उसने अपनी ओर से एक विषम गुत्थी सुलझा ली है परन्तु उसे यह कल्पना नहीं थी कि वह गुत्थी सुलझने के बजाय और उलझती ही चली जाएगी। यह असंदिग्ध बात है कि पंजाबी सूबे की स्वीकृति राष्ट्रीयता की पराजय और साम्प्रदायिकता की विजय थी अराष्ट्रीय एवं विघटनकारी तत्वों के सामने इस झुकते जाने की मनोवृत्ति ने देश को अब कहां लाकर खड़ा कर दिया है। हमारा तो यह दृढ़ मत है कि जैसे पाकिस्तान निर्माण से इस महादेश की कोई समस्या हल नहीं हुई वैसे ही पंजाबी सूबे के निर्माण से भी कोई समस्या हल नहीं होगी, क्योंकि उस मांग का आधार ही गलत है। है। परन्तु जैसे दिल पर पत्थर रख कर देश की जनता ने पाकिस्तान को स्वीकार कर लिया वैसे ही वह अब पंजाबी सूबे को भी स्वीकार कर लेगी। प्रयत्न करने पर भी जब आर्य समाज की सम्मिलित शक्ति भारत सरकार को पंजाबी सूबे के निर्माण की घोषणा से विरत नहीं कर सकी तब आर्यसमाज के पास इस विषय में मौन धारण करने के सिवाय और कोई चारा नहीं था।

इस समय पंजाब की स्थिति यह है कि वहां के समस्त सरकारी कर्मचारी दुविधा में हैं, अपने भविष्य के प्रति आशंकित हैं, इसलिए प्रशासन का सारा कार्य ठप्प हो गया है। विकास कार्य और उद्योग धन्धे बन्द पड़े हैं। उद्योगपति चिन्तित हैं और वे तथाकथित पंजाबी सूबे में अपनी पूंजी का विनियोग करने को तैयार नहीं हैं। विभाजन से तरबतर पंजाब का वर्तमान जैसे निर्जीव हो गया है। परन्तु एक दूसरे क्षेत्र में [illegible] और वह [illegible] है राजनीतिज्ञों का। इसी समय पंजाब के [illegible] में इस बात की होड़ है कि नए पंजाबी सूबे का या हरियाने का मुख्य मंत्री कौन बने। कांग्रेस के मुख्यमंत्री और [illegible] के गुट तो एक दूसरे के सामने अस्त्र-शस्त्र होकर खड़े ही हैं, बीच में श्री प्रबोधचन्द्र [illegible] अपनी खिचड़ी अलग पका रहे हैं। इसी प्रकार हरियाणा के नेतृत्व के लिए भी इन कांग्रेसी नेताओं में आपस की होड़ मची हुई है। हम हैरान हैं कि जो कांग्रेसी नेता, चाहे वे प्रदेश कांग्रेस के अंग हों या राज्य मन्त्रिमण्डल के, पहले पंजाबी सूबे का विरोध करते नहीं थकते थे अब वे कैसे गिरगिट की तरह रंग बदल रहे हैं। उनका न तो कोई सिद्धान्त है, न कोई दीन-ईमान, न उन्हें राष्ट्र की चिन्ता है, न जनता की। उनका केवल एक ही धर्म है—पदलोलुपता। "घटम् भित्वा पटम् छित्वा कृत्वा रासभरोहणम्" जिस भी किसी तरह हो, सत्ता और पदों के लिए सब सिद्धान्तों और आदर्शों को तिलांजलि दे देना ही इस समय उनका सबसे बड़ा धर्म बन गया है। 'राम नाम की लूट है लूटी जाय सो लूट।' अकाली भी अपने मन में डांवाडोल हैं कि उन्हें कांग्रेस में शामिल होने वाला हरियाने में अधिक आसानी होगी या कांग्रेस से बाहर रहकर। अकाली तो शुरू से मुस्लिम लीग की तरह आदर्शहीन सौदेबाजी की नीति पर चले हैं और जिधर उनको सत्ता हथियाने के चांस अधिक नजर आएंगे, वे उधर ही मुड़ जाएंगे।

जहां तक इस समय अकाली नेता संत फतहसिंह का सवाल है, वे तो अपने आपको राष्ट्र का कर्ता धर्ता ही समझने लगे हैं। 'हर्र लगे न फिटकरी रंग चोखा आए'—जिस तरह अनशन की केवल धमकी देकर ही बिना कुछ किये कराए उनका उद्देश्य पूरा हो गया उससे उनके मन में यह धारणा बनना अस्वाभाविक नहीं है कि इस समय भारत सरकार का असली संचालक 'मैं ही हूं'। अब उनकी आवाज में सेवादार का स्वर नहीं, बल्कि डिक्टेटर का स्वर बोलता है। जब तक हरियाने के नेता उनकी स्वार्थ पूर्ति में बाधक रहे तब तक वे उनकी हां में हां मिलाते रहे, परन्तु जब चंडीगढ़ का प्रश्न आया तब संत जी ने समस्त शिष्टाचार को तिलांजलि देकर तुरन्त चण्डीगढ़ पूर्ण अकाली क्षेत्र में न रहने नहीं होगी। इतना ही नहीं, इस परिकल्प डिक्टेटर ने भारत सरकार को भी यह आदेश दिया कि १९६१ की जनगणना के आधार पर किया गया वर्तमान पंजाब का विभाजन उन्हें स्वीकार नहीं, इसलिये यह विभाजन १९५१ की जनगणना के आधार पर किया जाना चाहिये। ऐसी बेतुकी बात कहने की हिमाकत कोई स्वयंभू डिक्टेटर ही कर सकता है। सन् १९६६ में १५ साल पहले की जनगणना के आधार पर निर्णय करना क्या युक्तियुक्त है ? दो दशक में एक पीढ़ी बदल जाती है, क्या तीन दशक से अधिक समय बीत जाने पर भी पंजाब की आबादी में कोई अन्तर नहीं आया है ? सत्य और औचित्य का यह कितना भयंकर अपलाप है। इसके बजाय तो अच्छा यह होता कि सन्त जी यह सुझाव देते कि फिलहाल पंजाबी सूबे का निर्माण रोक दिया जाए और सन् १९७१ में की जाने वाली जनगणना के आधार पर ही नया पंजाबी सूबा बनाया जाए। परन्तु डिक्टेटरों में धैर्य नहीं होता और स्वयं-भू डिक्टेटरों में तो उसकी और भी आशा नहीं की जा सकती।

यदि सन्तजी इतना भी धैर्य रखने को तैयार नहीं, तब उनको यह मांग करनी चाहिये थी कि वर्तमान पंजाब में जनगणना और जनमत ले लिया जाए और तब उन आंकड़ों के आधार पर पंजाब का विभाजन हो। परन्तु भाषा के नाम से राजनैतिक दुरभिसंधि को पूरा करने की योजना बनाने वाले और केवल साम्प्रदायिक स्वार्थों के लिए अपनी प्राणाहुति की धमकी देने वाले औचित्य की परवाह ही कब करते हैं ?

१९६१ की जनगणना का विरोध करने में सन्त जी की प्रमुख दलील यह है कि उस समय अपने घर में पंजाबी बोलने वाले हिन्दुओं ने साम्प्रदायिकता के वशीभूत होकर अपनी मातृभाषा पंजाबी के बजाय हिन्दी लिखवाई थी। परन्तु यह आक्षेप तो सिक्खों पर भी ज्यों का त्यों, बल्कि कहीं अधिक प्रबल रूप से, लगाया जा सकता है। किसी की मातृभाषा क्या है, इसका फैसला करना स्वयं उसी व्यक्ति के हाथ में है किसी अन्य व्यक्ति के हाथ में नहीं।

परन्तु हम एक मूल बात की ओर भी संकेत करना चाहते हैं। वह यह कि सन्त जी हिन्दी को साम्प्रदायिकता की द्योतक कहकर ही सबसे बड़ी गलती कर रहे हैं। हिन्दी न कभी साम्प्रदायिक थी, न है, न होगी। जिस तरह भारत को अपना राष्ट्र बताना साम्प्रदायिकता नहीं है, उसी प्रकार भारत की राष्ट्रभाषा (हिन्दी) को अपनी मातृभाषा बताना भी किसी भी दृष्टि से साम्प्रदायिक नहीं कहला सकता। यदि भारत सबका है तो हिन्दी भी सबकी है। हिन्दी के प्रति विशेष प्रेम प्रकट करना [illegible] से भारत राष्ट्र के प्रति ही विशेष प्रेम प्रकट करना है। चाहे तो इस बात को उलट भी सकते हैं और तब भी यह बात उतनी ही सही होगी। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि जहां-जहां हिन्दी के विरोध का स्वर सुनाई देता है वहां-वहां राष्ट्र-विरोध का स्वर भी प्रमुख है। आश्चर्य की बात तो यह है कि आज राष्ट्र की अखंडता के उपासक और हिन्दी को राष्ट्र की एकता का सबसे प्रबल साधन मानने वाले लोग तो 'साम्प्रदायिक' कहे जाते हैं और मत वचन कर्म से राष्ट्र को खंड-खंड होता हुए देखने के इच्छुक लोग अपने आपको 'राष्ट्रीय' कहते हैं। यह कितना बड़ा दम्भ, पाखंड और विपरीत-मति है। सन्त जी या उनके जैसे विचारों के लोग, जो हमेशा अपने धार्मिक सम्प्रदाय को राष्ट्र से बढ़कर मानने के आदी हैं, उनकी विचारधारा की मूल भूल यही है। जब तक वे इस भूल को नहीं सुधारेंगे तब तक उनसे सदा राष्ट्र का अहित ही होगा, हित नहीं।

चोरी आखिर चोरी है फिर भले ही उसको करने वाला कोई भी व्यक्ति हो। चोर साहूकार को पसन्द नहीं करते—यह तो समझ में आता है, परन्तु जब स्वयं चोर, साहूकार को चोर सिद्ध करने लगे और चोर को साहूकार तब यह विपरीत स्थिति अराजकता का ही दूसरा नाम है। हम समझते हैं कि अभी राष्ट्र की आत्मा इतनी पतित नहीं हो गई है कि वह चोर को चोर और साहूकार को साहूकार, वा सत्य को सत्य और असत्य को असत्य, न कह सके।

महामना गोखले

९ मई को कृतज्ञ देशवासी महामति गोखले की जन्म शती मनायेंगे जिन्होंने देश को गौरव प्रदान किया, देश सेवा में अपने जीवन की आहुति दी और राष्ट्रिय स्वतन्त्रता का पथ प्रशस्त किया था।

मान्य गोखले की सूझ-बूझ उनकी आयु की दृष्टि से बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। वे बहुत आगे की सोचने वाले थे। इसीलिए वे सच्चे अर्थों में राजनीतिज्ञ थे। उनके विरोधी गर्म दल वालों ने उनके सामाजिक उत्थान के विचारों का मजाक उड़ाया। विधवाओं की स्थिति अच्छी हो, विवाह की आयु नियत हो, माताओं का अज्ञान दूर हो, जातपांत के कारण उत्पन्न बाधाओं का निराकरण हो, जन-सेवा की भावना जाग्रत हो, गन्दगी और अन्ध-विश्वास का दमन हो, अनिवार्य प्राइमरी शिक्षा का सूत्रपात हो, उनकी इन बातों को शेख चिल्ली की बातें कहकर इन्हें अनावश्यक ठहराया गया परन्तु आज ये ही बातें हमारे निर्माणात्मक प्रोग्राम का अंग बनी हुई देख पड़ती हैं।

गोखले का निधन १९१५ में

(शेष ४ पर)

सामयिक-चर्चा

वैदिक संस्कृति का मूल मन्त्र

आज हम अर्थ युग में रहते हैं जिसने हमारे जीवन में लोभ और स्वार्थ-परता कूट २ कर भरदी है। यदि हम उन्नति और विकास के लिए लालायित हों, यदि हम जीवन के व्यापार में व्यस्त रहने पर भी दिव्यता की प्राप्ति करने के लिए उत्सुक हों तो हमें अनासक्ति के स्पष्ट दर्शन करने चाहिएं जो हमारे जीवन में निहित हैं और जिसकी आधुनिक जगत् में परमावश्यकता है।

वैदिक संस्कृति के मूल मन्त्रों में इसकी गणना होती है। पहला मूल मन्त्र है जीवन के प्रति प्रेम या शारीरिक एवं मानसिक योग-क्षेम। दूसरा मन्त्र है कर्मण्यता और आगे बढ़ना और तीसरा है आनन्द की प्राप्ति जो इस भौतिक चमत्कार के पीछे छुपा हुआ है। सब में महत्व-पूर्ण मूल मन्त्र है 'स्व' की 'पर' में परिणति।

हमारे सामाजिक जीवन की बुराइयों का मुख्यतम कारण स्वार्थ परता है। समाज का तानाबाना सेवा और त्याग के तन्तुओं से बुना जाता है। यदि समाज के बहुसंख्यक व्यक्ति 'स्व' को 'पर' में परिणत करने की चिन्ता नहीं करते तो समाज का संघटन नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

इसीलिए वेदों में यह शिक्षा दी गई है कि मनुष्य को अपना जीवन समाज और विश्व के अर्पण रखना चाहिए। सेवा और त्याग से ही जीवन में निखार आता और उसका गौरव बढ़ता है।

रवीन्द्र नाथ टागौर ने एक गीत में कहा है "हे कायर पुरुष ! संसार का बोझ तेरे ही कन्धों पर नहीं है। नाविक नाव को चला रहा है और वह तुझे पार ले जायगा।" इसका अभिप्राय यही है कि मनुष्य को प्रभु में विश्वास रखते हुए अपनी, अपने घर वालों की चिन्ता के साथ साथ दूसरों की भी चिन्ता रखनी चाहिए। हमें अपने जीवन को मूल्यवान् बनाते हुए दूसरों के जीवन को भी समृद्ध एवं उपयोगी बनाने में योगदान करना चाहिए।

हम समष्टि के अंग हैं और समष्टि हमारा अंग है। हमें अपने स्व का विस्तार करते २ सब प्राणियों में अपने को और सब प्राणियों को अपने में देखने का अभ्यास करना चाहिए। यही वैदिक शिक्षा का निचोड़ है।

'जियो और जीने दो,' भोगों का त्याग भाव से भोग करो। स्वार्थ-परता एवं लोभ को मन से बाहर फेंक दो। सब के साथ हिलमिल कर शान्तिपूर्वक चलो और प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त रखो।

वैदिक संस्कृति जिस दिव्यता का दिग्दर्शन कराती है वह नष्ट नहीं होती। इसी जीवन में बुराई का दमन करना और आनन्द की प्राप्ति करनी है क्योंकि हमारा अस्तित्व विद्यमान है।

मिशनरियों के विरुद्ध जिहाद

ब्रह्मदेश के अधिनायक जनरल नेविन ने विदेशी ईसाई मिशनरियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा हुआ है। उनका ताजा आदेश इन स्तम्भों में पूर्व प्रकाशित किया जा चुका है जिसके अनुसार अधिकांश मिशनरियों को मई ६६ के अन्त तक ब्रह्मदेश छोड़ना पड़ेगा। इस आदेश से बहुत कम मिशनरियों को आश्चर्य हुआ है क्योंकि उन्हें पहले से ही इस का आभास हो गया था। यह आदेश उन मिशनरियों पर प्रबल आघात समझा जा रहा है जो १५-२० वर्ष से वहां कार्यरत थे।

विदेशी मिशनरियों के प्रति नेविन महोदय की अप्रसन्नता के अनेक स्पष्ट संकेत मिले हैं। १९६१ के अन्त से बाहर गए हुए ईसाई कार्य-कर्ताओं के स्थानों की पूर्ति बंद की हुई है। जुलाई १९६५ में समस्त ईसाई हस्पतालों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया था। ब्रह्मदेश की सरकार ने गत मास में ६८२ प्राइवेट स्कूलों को अपने अधिकार में ले लिया था जिनमें से अधिकांश ईसाई मिशन द्वारा संचालित थे। जिस सम्पत्ति का राष्ट्रीय करण किया गया है उसकी न तो क्षति पूर्ति की गई है और न ऐसा करने का वचन ही दिया गया है।

इस कठोर कार्यवाही के कारणों का लन्दन के ओब्जर्वर पत्र के बैंकोक स्थित सम्वाददाता ने विवेचन करते हुए बताया है कि जनरल ने विन के कटु आलोचकों में गैर बर्मी जन जातियां हैं जिनमें बहुत से ईसाई हैं। मुख्यतः करेन लोग गत १ सदी से अमेरिका के बैपटिस्ट मिशन के प्रभाव में हैं। इस समय २॥ लाख ईसाई करेन हैं और काचिन तथा चान जातियों के हजारों लोग ईसाई बने हुए हैं।

ब्रह्मदेश के प्रेस पर सरकार का कठोर नियंत्रण है और विदेशी सम्वाददाताओं को बाहर निकाला जा चुका है तथापि जो खबरें येन केन प्रकारेण बाहर निकल जाती हैं उनसे इस बात का संकेत मिलता है कि गत वर्ष सशस्त्र जन जातियों की प्रगतियां बढ़ गई थी। यद्यपि करेन लोगों ने सरकार के प्रति निष्ठा का वचन दे दिया था जिनका नेतृत्व एक ईसाई कार्यकर्ता करते हैं फिर भी 'करेन पीपिल्स लिबरेशन सेना, काचिन इण्डीपेन्डेन्स सेना और शान स्टेट आर्मी' तथा अन्य गुरिल्ला गिरोहों के द्वारा सशस्त्र आक्रमण जारी हैं।

राष्ट्रीय सुव्यवस्था में इस प्रकार की बाधाओं की उपस्थिति में जनरल ने विन का अधिकाधिक अधीर हो जाना और विघटनकारी तत्वों पर कठोर प्रहार किया जाना आश्चर्य-जनक नहीं है। विदेशी ईसाई मिशन-रियों के बहिष्कार का अर्थ ईसाईमत की परिसमाप्ति भी नहीं है। देशी ईसाइयों को अपने मत के प्रचार की खुली छुट्टी है। जिस मत के प्रचार से राष्ट्र की जड़ पर कुठाराघात होता हो, लोग राष्ट्र द्रोही बन जायें, अपनी, संस्कृति और राष्ट्रीयता से घृणा करने लग जायें उसके पृष्ठ-पोषकों एवं प्रचारकों के साथ इस प्रकार का व्यवहार सुसंगत ही है।

विदेशी ईसाई मिशनरियों ने भारत में भी इसी प्रकार की स्थिति उत्पन्न की हुई है और वे सिरदर्द बने हुए हैं। परन्तु न जाने भारत सरकार ईसाई मिशनरियों के राष्ट्र-द्रोहिता से परिपूर्ण कार्यों को देखते सुनते हुए भी वर्षों से अंधी और बहरी बनी हुई है। उसकी ढिलमिल नीति को देखते हुए यदि यह कहा जाय कि यहां भी इस प्रकार के कठोर पग उठाने के लिए जनरल ने विन जैसे प्रभावशाली प्रशासक की आवश्यकता है तो इसमें अत्युक्ति न होगी। जनरल नेविन ने करेन जाति के देश-द्रोह को तथा उसके मूल कारण विदेशी ईसाई मिशन की प्रगतियों को भांप कर समय रहते ही कार्यवाही कर दी परन्तु हमारी सरकार विद्रोही नागाओं की अवांछनीय गतिविधियों को देख सुनकर भी ढिलमिल नीति अपनाए हुए है। उसे तो अराजकता को भड़काने वाले ईसाई तत्वों को बहुत पहले ही नष्ट करने के लिए कठोर पग उठा लेना चाहिए था परन्तु वह अब भी पादरी स्काट और उस जैसे पादरियों को देश से निकालने की दिशा में उग्र कार्यवाही करने में आगा पीछा देख रही है। इसे हम देश का दुर्भाग्य और शासकों की अपराधपूर्ण उपेक्षा ही कह सकते हैं।

(इन पंक्तियों को लिखते २ समाचार मिला है कि पादरी स्काट को देश से निकाल दिया गया है)

रघुनाथ प्रसाद पाठक

(पेज ३ का शेष)

हुआ था। उस समय उनकी आयु ४१ वर्ष की थी। आज ऐसा लगता है कि उन्हें गए हुए युग बीत गए। परन्तु उनके जीवन तथा कार्य के चिह्न हमारे राष्ट्रिय जीवन पर अंकित देख पड़ते हैं।

महात्मा गोखले ने भारत की उस राष्ट्रीयता का स्वप्न लिया था जो प्रादेशिक एवं क्षेत्रीय निष्ठाओं से ऊपर हो। हमें अभी भी इस लक्ष्य पर पहुंचना शेष है। उन्होंने सम्प्रदाय-निरपेक्ष भारत का स्वप्न देखा था जिसके लिए हम आज भी प्रयत्नशील हैं। उन्होंने इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल को बार-बार अनिवार्य प्राइमरी शिक्षा का बिल पास करने की प्रेरणा की। आज हम उस प्रोग्राम को क्रियान्वित कर रहे हैं। गांधी जी की प्रार्थना पर वे भारतीयों की दशा के सुधार के महान् कार्य पर दक्षिण अफ्रीका गए थे। यह समस्या अभी भी हल किए जाने के लिए मुंह बाए खड़ी है।

जन-सेवा के प्रति उनकी निष्ठा अनुकरणीय थी। १९०५ में जब उन्होंने सर्वेन्ट्स आफ इन्डिया सोसाइटी के विचार को मूर्त रूप दिया था तब कहा था "आज के भारतवासी इस

(शेष ... पर)

आर्यसमाज और जनसंघ

माननीय श्री वीरेन्द्र जी एम० ए०

मैं किसी दूसरे सूबे के विषय में नहीं कह सकता किन्तु पंजाब और दिल्ली के विषय में दावे से कह सकता हूँ कि इन दो सूबों में जनसंघ को जो शक्ति मिली है उसमें आर्य समाज का भी बड़ा हाथ है। आर्य समाज स्वयं कोई राजनैतिक संस्था नहीं इसलिए आर्य समाजियों की भारी संख्या ऐसी संस्था की खोज में रही है जो उसके आदर्शों के अनुकूल हो। जब भारतीय जनसंघ का जन्म हुआ जो उसने भारत की प्राचीन संस्कृति के पुनरुत्थान का बीड़ा उठाया। इस पर कई आर्य समाजी इसकी ओर झुक गए। आर्यसमाज व जनसंघ एक दूसरे के साथ २ चलने लगे।

ज्यों २ समय गुजरता गया जनसंघ के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आने लगा साथ ही आर्यसमाज और जनसंघ में मतभेद का पाठ भी बढ़ता गया। पंजाब में इन सम्बन्धों में मन मुटाव पहली बार तब आया जब १९५१ में जनगणना से पूर्व जनसंघ ने हिन्दुओं को यह कहना शुरू किया कि वह अपनी भाषा पंजाबी लिखवायें। आर्यसमाज उस समय इस प्रयत्न में था कि वह अधिकाधिक हिन्दी लिखवाएं। किन्तु जनसंघ ने इसके विरुद्ध प्रचार शुरू कर दिया। वह उसने केवल पंजाबी रिजन में ही नहीं हिन्दी रिजन में भी किया। आज यदि पंजाबी रिजन में हिन्दुओं की संख्या तो अधिक है किन्तु हिन्दी बोलने वालों की कम तो यह बहुत कुछ जनसंघ के उस समय के प्रचार का ही परिणाम है यदि उस समय जनसंघ ने यह प्रचार न किया होता कि हिन्दू अपनी भाषा पंजाबी लिखावें तो आज स्थिति कुछ और ही होती।

यह आर्य समाज और जनसंघ के सम्बन्धों में पहला वैमनस्य था। मेरे पूज्य पिता महाशय कृष्ण जी से बढ़कर जनसंघ का समर्थक पंजाब में और कोई नेता नहीं हुआ। जनसंघ के सदस्य न होते हुए भी वह [illegible] इस प्रकार से [illegible] करते थे किन्तु १९५१ से वह भी उसके व्यवहार से इतने उदासीन हो गये कि फिर अन्तिम समय तक संघ के निकट नहीं गये। उन्हें सब से अधिक शिकायत यही थी कि जनसंघ ने जनगणना के समय हिन्दुओं की पीठ पर छुरा घोंपा है। उनकी मृत्यु के पश्चात् जनसंघ एक पग और आगे चला गया जब इसने मा० तारासिंह के साथ समझौता कर लिया। जनसंघ के नेता अकाली दल के सम्मेलनों में शामिल होने और अकाली नेताओं को अपनी सभाओं में बुलाने। यह सब कुछ उस समय हो रहा था जब मा० तारासिंह पंजाबी सूबा के लिए प्रयत्नशील थे।

आर्यसमाज के विरुद्ध मा० तारा सिंह का जिहाद तो कभी भी समाप्त न हुआ। इसके बावजूद जनसंघ ने अकाली दल के साथ एक नया गठजोड़ कर लिया। वस्तुतः यह आर्य समाज के विरुद्ध एक नया मोर्चा था जो तैयार किया जा रहा था। मा० तारा सिंह अपनी पंजाबी सूबा की मांग छोड़ने को तैयार नहीं हुए। उनकी राजनीति उत्तरोत्तर तेज होती चली गई। अन्ततः दोनों के मार्ग अलग २ हो गये। किन्तु १९५९ में जनसंघ ने पंजाबी के पक्ष में जो प्रचार शुरू किया था वह केवल इसलिए था कि चुनाव में अकाली दल का समर्थन प्राप्त किया जा सके।

अब फिर नये चुनाव आने वाले हैं। १९६१ में जनसंघ मा० तारासिंह का समर्थन करने की चिन्ता में था और उसे वह मिला भी। अब वह सन्त फतहसिंह का समर्थन प्राप्त करना चाहता है। पंजाबी सूबा और पंजाब की भाषा के संदर्भ में जनसंघ के रवैया में जो अन्तर आ रहा है वह केवल इसलिए कि सन्त फतहसिंह के अकाली दल और जनसंघ के मध्य सहयोग के लिए मार्ग सफल हो सके।

जनसंघ प्रधान श्री मधोक ने अपने भाषण में इस बात पर तो बल दिया है कि हमें पंजाबी को अपना लेना चाहिए और वह भी गुरमुखी लिपि में। किन्तु उन्होंने अपने भाषण में हिन्दी के लिए एक शब्द भी कहना उचित नहीं समझा। यह तो कहा कि पंजाबी की दोनों लिपियां होनी चाहिए किन्तु साथ ही यह भी कह दिया कि पंजाब के गैर अकाली हिन्दुओं को देव नागरी पर बल न देते हुए गुरमुखी को अपना लेना चाहिए।

श्री बलराज मधोक अपने अध्यक्षीय भाषण में पंजाब की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं:—

"मैं सरकार पर बल दूंगा कि वह देखे कि पंजाब की भावी हल केवल भाषा के आधार पर की जाए। इसमें राजनैतिक या साम्प्रदायिक कारणों का कोई हस्तक्षेप न हो। यह इसलिए जरूरी है कि अकालियों और आर्य समाजियों के उत्तरोत्तर गूढ़ स्थिति को जो पहले ही खराब है और भी अधिक न बिगाड़ दे।'

जनसंघ प्रधान की दृष्टि में अकाली और आर्यसमाजी दोनों शरारत पैदा करते हैं। अकाली क्या करते हैं और क्या नहीं इसका उत्तर वह स्वयं देंगे जहां तक आर्यसमाजियों का सम्बन्ध है उनके विषय में कहना कि वह राज्य में गड़बड़ पैदा करते हैं आर्य समाजियों का घोर अपमान है। अन्ततः आर्यसमाज ने किया क्या है जिसपर जनसंघ प्रधान अपना बौद्धिक सन्तुलन खो बैठे हैं।

आर्यसमाज का अपराध यही है कि वह हिन्दी का पल्लू छोड़ने को तैयार नहीं। चूंकि जनसंघ सिखों की कुछ वोटें लेने के लिए पंजाबी का ढोल पीटने लगा है अतः उसे यह भी अधिकार मिल गया है कि वह आर्यसमाज पर कीचड़ उछालना शुरू कर दे। आर्यसमाज को अकाली दल के स्तर पर रखना अत्यन्त हीन मनोवृति का प्रदर्शन करना है।

जनसंघ यदि मा० तारासिंह या सन्त फतह सिंह से समझौता करना चाहता है तो सहर्ष करे। इस के लिए यह तो जरूरी नहीं कि उस के नेता लठ लेकर आर्यसमाज के पीछे फिरना शुरू कर दें। गत कुछ दिनों से इन में से कुछ ने स्थान २ पर जाकर सार्वजनिक सभाओं में भी आर्यसमाज के नेताओं पर कीचड़ उछाला है। मैं इन्हें एक चेतावनी देना चाहता हूं कि आर्यसमाज के विरुद्ध उनका यह अभियान उन्हें महंगा पड़ेगा। भाषा के प्रश्न पर उनके और आर्यसमाज के दृष्टिकोण में अवश्य अन्तर है, आर्यसमाज किसी भी स्थिति में हिन्दी का पक्ष छोड़ने को तैयार नहीं।

यदि अकालियों को खुश करने के लिए जनसंघ ने आर्यसमाज पर कीचड़ उछालना है तो इसका परिणाम उसके लिए भी अच्छा न होगा।

'वीर अर्जुन' जालन्धर के सौजन्य से

(पेज ४ का शेष)

सोसाइटी के माध्यम से जन-सेवा के लिए एक दूसरे के साथ ग्रथित होकर परम उत्साह एवं निष्ठा के साथ काम कर सकते हैं जो एक मात्र धार्मिक [illegible] में बैठ सकते हैं।"

महात्मा गोखले की मृत्यु के ५१ वर्ष बाद आज भी भारतीय राजनीति में भावना का स्थान बुद्धि एवं तर्क पूर्णतया ग्रहण नहीं कर पाए हैं।

रचनात्मक कार्य की अपेक्षा आन्दोलन एवं विनाश अधिक आकर्षक बने हुए हैं। महात्मा गांधी ने ही इन दोनों को एक सूत्र में बांधा था। आज की पार्लियामेन्ट की दशा को देखकर निश्चय ही उन्हें कष्ट हुआ होता। वे सबसे बड़े पार्लियामेन्टेरियनों में से थे। जो बोलने से पहले विषय पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेते थे। इसी रीति से वे पार्लियामेन्ट तथा देश वासियों का प्रशिक्षण कार्य करते थे। उनके बोलने का ढंग इतना बढ़िया होता था कि स्वयं गोरी सरकार भी उनकी बात सुनने के लिए विवश हो जाती थी।

गोखले जी ने कोई ग्रन्थ नहीं छोड़ा है। अवश्य गणित पाठ्य पुस्तक उन्होंने लिखी थी। परन्तु उनके भाषण बड़े मारके के हैं जिनका लक्ष्य पार्लियामेन्ट तथा प्रजा दोनों का प्रशिक्षण रहता था। वे प्रायः ब्रिटिश शासन की बड़ी संयत एवं युक्तियुक्त आलोचना से ओतप्रोत रहते थे।

उनके कार्यक्रम पर मान्य महादेव गोविन्द रानडे की छाप लगी होती थी। जो एक प्रकार से उनके दीक्षागुरु थे और जिन पर महर्षि दयानन्द की छाप थी एक बार जब वह ज्ञापनों और भाषणों की उपयोगिता से निराश हो गए थे तब रानडे जी ने उन्हें कहा था।

"हमारे देश के इतिहास में हमारा स्थान क्या होगा ? तुम इस बात को अनुभव नहीं करते हो। ये ज्ञापन नाम को तो सरकार के नाम लिखे जाते हैं परन्तु वस्तुतः जनता के लिए अभिप्रेत होते हैं जिससे वह इन मामलों में विचार करना सीख जाए।" आज के अ[illegible] भाव में महात्मा गोखले राष्ट्रीयता के प्रचारक थे।

यह ठीक है कि गोखले जी को महाराष्ट्र में तिलक जी जैसी प्रसिद्धि प्राप्त नहीं हुई जो गोखले जी की नर्म नीति के आलोचक थे परन्तु आज के रचनात्मक युग में गोखले अमूल्य सिद्ध हुए होते।

उन्होंने कोई सरकारी खिताब कभी स्वीकार नहीं किया। ३९ वर्ष की आयु में ही उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष पद प्राप्त हो गया था। मरने के दिन तक वे देश के उत्थान और देश वासियों के हित के कार्य में संलग्न रहे।

Bhagwan Dayanand Saraswati and the Upanishads

by Rai Bahadur Ratan Lal, B. A., LL. B.
Formerly Common Chief Justice of 14 Malwa States
(Madhya Pradesh) High Courts.

(गतांक से आगे)

नारायणाद् द्वादशादित्याः सर्वे वसवः सर्वे ऋषयः सर्वाणि भूतानि सर्वाणि छन्दांसि नारायणादेव समुत्पद्यन्ते। नारायणात् प्रवर्तन्ते। नारायणे प्रलीयन्ते। अथ नित्योऽक्षरः परमः स्वराट् ।२१५

35 Nrisingh-Tapini Upanishad

This Upanishad deals with the range of realization of Brahma, in the form of a discourse between the Gods and the four faced Brahma. It expounds a Anustubh mantra of its own in praise of Nrisingh and its utility to cross over death, sin and ocean of worldly existence. It says : The four Vedas, Rig, Yajur, Sam and Atharva, with their six sub-divisions and their one thousand one hundred and eithty branches form the four feet of the formulas". 4.

ऋग्यजुः सामाथर्वाणश्चत्वारो वेदाः साङ्गाः सशाखाश्चत्वारो भवन्ति ॥४॥

Then again it proclaims that, "All the four Vedas have the Pranav placed as their foremost part." 6.

सर्वे वेदाः प्रणवादिकास्तं प्रणवं तत्समस्तोऽङ्क वेद सः त्रीन् लोकान् जयति ॥६॥

Obviously this Upanishad deals with the Vedas as different from itself.

36. Chhandogya Upanishad

The Chhandogya Upanishad has dealt with the Vedas in various places and in various ways. For instance it says-2.23.2.

प्रजापतिर्लोकानभ्यतपत् तेभ्योऽभितप्तेभ्यस्त्रयी विद्या सम्प्रास्रवत्तामभ्यतपत्तस्या अभितप्ताया एतान्यक्षराणि सम्प्रास्रवन्त भूर्भुवः स्वरिति ॥ २।२३।२ ॥

God manifested all the regions. After their manifestation appeared three-fold knowledge (i. e. the four Vedas). These became manifest (in the heart of the Rishis) From them issued three syllables Bhuh, Bhuwah, Swah.-2. 23. 2.

Again it says that the Vedas are nectars.- 3.5.4.

ते वा एते रसानां रसा वेदा हि रसास्तेषामेते रसास्तानि वा एतान्यमृतानाममृतानि वेदा ह्यमृतास्तेषामेतान्यमृतानि ॥ ३।५।४॥

They are the essences of the essences, the Vedas are the essences, and thereof they are essences. Verily these are the nectars of the nectars; the Vedas are nectars and thereof are these the nectars.-3.5.4.

According to this Upanishad if a man covers himself with mantras, in other words, if he understands them and pronounces them properly, he need not fear death.

देवा वै मृत्योर्बिभ्यतस्त्रयीं विद्यां प्राविशंस्ते छन्दोभिरच्छादयन्यदेभिरच्छादयंस्तच्छन्दसां छन्दस्त्वम् ॥

Verily the learned, when they were afraid of death took refuge in the threefold knowledge, the Vedas They covered themselves with mantras. The mantras are called chhandas because the learned shielded themselves in them.-1.4 2.

In the first four sections of this Upanishad will be found an interesting view of the Vedas. Thus about the Rigveda: 3.3.

एतमृग्वेदमभ्यतपंस्तस्याभितप्तस्य यशस्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यं रसोऽजायत ॥ ३।१।३॥

Those meditated on the Rigveda From it thus meditated upon issued forth as its essence fame, splendour vigour of senses, virility, food and health. 3.3 I

Similarly about the Yajurveda:

तानि वा एतानि यजूंष्येतं यजुर्वेदमभ्यतपंस्तस्याभितप्तस्य यशस्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यं रसोऽजायत ॥ ३।२।२॥

These honey bees brooded on the Yajurveda. From it thus brooded upon issued forth its essence fame, splendour vigour of senses, virility, food and health-3.2 2

Next on the Sam Veda it says:

तानि वा एतानि सामान्येतं सामवेदमभ्यतपंस्तस्याभितप्तस्य यशस्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यं रसोऽजायत ॥ ३।३।२॥

Verily these meditated on the Sam Veda: from it, thus meditated upon, issued forth as its essence, fame, splendour, vigour of the senses, virility, food and health.-3.3.2

In the same strain it sings about the Atharva Veda:

ते वा एतेऽथर्वाङ्गिरस एतदितिहासपुराणमभ्यतपंस्तस्याभितप्तस्य यशस्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यं रसोऽजायत ॥ ३।४।२॥

Verily these hymns of the Atharvans, and Angirasas reflected upon that old history and ancient lore. From them, thus reflected upon issued forth as their essence, fame, splendour. vigour of the senses, virility, food and health.-3.4.2. Again—

प्रजापतिर्लोकानभ्यतपत्तेषां तप्यमानानां रसान् प्रावृहदग्निं पृथिव्या वायुमन्तरिक्षादादित्यं दिवः ॥

Prajapati unfolded all the worlds with conscious force. He produced three elegant sages Agni. Vayu and Aditya; Agni to reveal qualities of earth, Vayu to reveal qualities of objects in the atmosphere and Aditya to reveal qualities of objects in the sky.-4.17.1.

Further–

स एतास्तिस्रो देवता अभ्यतपत्तासां तप्यमानानां रसान् प्रावृहदग्नेरृचो वायोर्यजूंषि सामान्यादित्यात् ।

The Prajapati, after producing these sages i. e. Agni, Vayu and Aditya, brought to light Rik Yaju and Sama; Rik through Agni, Yaju through Vayu and Sama through Aditya Rishi - .17.2.

Again in 6.1 1. this Upanishad says;-

श्वेतकेतुर्हारुणेय आस तं ह पितोवाच श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यं न वै सोम्यास्मत्कुलीनोऽननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति ॥ ६।१।१॥

Of a truth there lived Shvetaketu grandson of Aruna Unto him said his father O Svetaketu abide as a Brahmachari in Gurukul for verily, child, none of our race has neglected the Vedas and thereby brought disgrace on himself.-6.1.1.

This Upanishad opens with a direction to chant AUM. It is in 1.1.1.—

ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत ओमिति ह्युद्गायति तस्योपव्याख्यानम् ॥ १।१।१॥

Om, This letter, the Udgitha, should be meditated upon, for one sings the loud chant beginning with

(शेष ११ पेज पर)

वंग-आसाम अष्टम आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष

पद्मभूषण डा० दुखनराम जी एम.एल.ए.

का

अभिभाषण

ओ३म् संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥

श्रीमान् स्वागताध्यक्ष महोदय, तथा आर्य भाइयो और बहनो;

आज आपने मेरे दुर्बल कन्धों पर जो अपनी अकृत्रिम दया का विशाल भार सौंप दिया, उससे मेरा हृदय आप के समक्ष स्वयं प्रणत है। मैं सम्पूर्ण बंग-असम प्रदेशस्थ आर्यों के इस महासम्मेलन के उन कर्मठ आयोजकों को अनेकानेक हार्दिक साधुवाद देता हूं; जिनके अथक एवं अनुकरणीय प्रयत्नों से आज मुझे यहां की धर्मबुभुक्षु आर्य जनता के सामने अध्यक्ष के गौरवमय पद से कुछ कहने सुनने तथा धन्यवाद देने का शुभ अवसर मिला है।

आर्य-समाज क्या है? इसकी परम्परा क्या है? और इसकी क्या आवश्यकता है? ये प्रश्न यद्यपि आज उत्तर की अपेक्षा नहीं रखते, तथापि आज इनकी संक्षिप्त व्याख्या की अनिवार्य आवश्यकता तो आ ही गई है। स्वामी दयानन्द के पूर्व भारत का मानचित्र और ही था। धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से देश का पराभव हो चुका था। छूआछूत, सामाजिक असमानता, विधवाओं के करुण मूक क्रन्दन, बाल-विधवा, सतीप्रथा, धार्मिक अंध-विश्वास एवं स्त्रीशिक्षा के सुप्त हो जाने एवं विधर्मियों के आक्रमण से हिन्दू-समाज जर्जर हो रहा था। ऐसे अवसर पर महर्षि दयानन्द का पावन प्रादुर्भाव हुआ। स्वामी दयानन्द ने आर्य-समाज का प्रवर्तन कर विश्व को दिव्यालोक प्रदान किया। ईश्वरीय ज्ञान वेद के पावन सदेश को सर्वसाधारण के लिये सुलभ कराया। काल और देश के अनुसार सभी शाश्वत मूल सिद्धान्तों और जीवन्त संस्थाओं के विवरण विवरित होते रहते हैं। कभी वेदों का पठन-पाठन सामान्य प्रक्रिया से होता रहता था। लेकिन पीछे अल्पश्रुत जनों के समझने के लिये साक्षात्कृत धर्माक्षियों को निघण्टु लिखना पड़ा और निघण्टु को भी समझने के लिये यास्क ऋषि को निरुक्त जैसा ग्रन्थ लिखना पड़ा था। यही हाल सामाजिक संस्थाओं का भी होता है। आज आर्यसमाज को जनता के सामने सही ढंग से वैदिक धर्म का मूल सिद्धान्त प्रस्तुत करना है।

आर्यसमाज कोई ऐसी सामयिक संस्था नहीं है, जो कुछ दिनों के लिए बनी और कार्य पूरा करके समाप्त हो गयी। यह सदा, शाश्वत वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करनेवाली संस्था है, समाज में जमी हुई काई और गन्दगी को दूर करना तथा बाह्य आक्रमण से इसकी सुरक्षा करना इसका मुख्य काम है। ये दोनों कार्य किसी भी समाज के लिए अनिवार्य अंग हैं। दूसरे शब्दों में एक डाक्टर की हैसियत से मैं यही कह सकता हूं कि शरीर के अन्दर धमनियों में बहनेवाले रक्त मे दो प्रकार के कण होते हैं। एक रक्तकण दूसरे श्वेतकण; इनमें श्वेत कणों की उपयोगिता यही है कि वे रक्त के अन्दर आने वाले बाहरी शत्रुओं का मुकाबला करके उन्हें बाहर निकाल दें और भीतरी गन्दगी को भी दूर कर दें। ठीक ऐसा ही आर्यसमाज वैदिक धर्म के लिए करता है।

आर्य-समाज एक ऐसी सामाजिक संस्था है, जो मुमूर्षु मानवसमाज को जगाने के लिए बनी थी। इसके अपने दस नियम ही इसकी अपनी संपूर्ण कहानी कह देते हैं। इस क्रान्तिकारी संस्था के अन्दर कहीं कोई दुराव-छिपाव नहीं है, कहीं गुरुडम नहीं है, कहीं ऊंचनीच का भाव नहीं है। पुण्य श्लोक महर्षि दयानन्द जी ने उन्नीसवीं सदी की परतन्त्रता, अन्धविश्वास, अशिक्षा, स्त्रियों के प्रति हीनविचार, तथा असत्य कर्तव्य में पड़े हुए वैदिक धर्मावलम्बियों आर्यों को जगाने के लिए, सही मार्ग प्रदर्शन के लिए इस संस्था की प्रतिष्ठापना की थी। महर्षि ने सम्पूर्ण आर्यावर्त में - गुजरात और कश्मीर से लेकर असम प्रदेशतक की भूमि में घूम-घूमकर अपना झंडा फहराया था और वैदिक धर्म का वास्तविक उपदेश दिया था। उन्होंने ईसाईयों, मुसलमानों आदि की ओर से हो रहे आक्रमण से हिन्दु-समाज को बचाया तथा भीतरी घुन, अन्धविश्वास आदि से जनता को आगाह किया था। उन्होंने शास्त्रार्थ करके, सभायें कराकर तथा उपदेश देकर गुमराह जनता को और शिक्षित समाज को वेदों का तत्त्व समझाया था। उसी काम को उनके बाद आर्यसमाज करता आ रहा है।
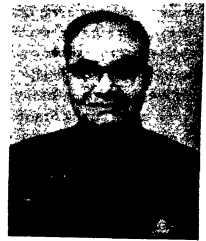
महर्षि ने ५९ वें वर्ष की उम्रतक वैदिक धर्म का प्रचार किया था। और १८८३ ई० के कार्तिकमास मे ठीक दीपमालिका के दिन, जब घर-घर में मिट्टी के दीये की लौ जगने को थी महर्षि के नश्वर शरीर की लौ महान् प्रकाश में विलीन हो गई थी लाखों बुझते दीपकों को जला कर। वह समय भारत की अंगड़ाई का था। इंगलैण्ड और फ्रांस में इससे पूर्व ही यान्त्रिक क्रान्ति हो चुकी थी। यहां राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन होने लगे थे। बंगाल में राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा स्वामी विवेकानन्द जैसी हस्ती ने समाज को ऊपर उठाने का कार्य प्रारम्भ किया था। इन सभी का निदान एक था कि हिन्दू समाज मुमूर्षा में है, उसे जगाना चाहिए। लेकिन, दुर्भाग्य से चिकित्सा सभी की भिन्न-भिन्न हो गई। फलतः, सभी एक दूसरे से दूर हो गए। यह तो मानना ही पड़ेगा कि इनमें से महर्षि दयानन्द ही ऐसे थे, जिन्होंने मानव समाज को अपनी पूर्व गरिमा की याद दिलाई और कहा कि उसके पास संसार को देने के लिए ही सब कुछ है, लेने के लिए कुछ नहीं। वह सचमुच बड़ा है, उसके वेद सर्व ज्ञानमय हैं, अनादि हैं, उसकी पवित्र भारत भूमि सर्वोत्तम है। यहां का प्रत्येक निवासी आर्य है, सर्व श्रेष्ठ है।

पद्मभूषण डा० दुखनराम जी

आज भी भारत ही नहीं, सम्पूर्ण-विश्व मुमूर्षा में पड़ा हुआ है। कहीं राजनीतिक मोह है तो कहीं आर्थिक और कहीं सैनिक मूर्च्छा है तो कहीं सामाजिक। सभी देश और प्रदेश, सभी महाद्वीप और द्वीप अन्तःसंघर्ष में तिलमिला रहे हैं। नित्य नवीन समस्यायें उठ खड़ी हो रही हैं। और समस्याओं का समाधान ढूंढ़े नहीं मिलता है। आज समय और दूरी का अन्तर इतना छोटा हो गया है कि संसार के किसी कोने में जरा सा स्पंदन हुआ कि दूसरे छोर तक उसका प्रभाव पहुंच जाता है। और अब तो चन्द्र और मंगल लोक की घटनाओं का भी आदान-प्रदान होने लगेगा। ऐसी स्थिति में, भारत उससे अप्रभावित रहेगा, यह कैसे कहा जा सकता है? यहां भी नित्य नवीन, पाश्चात्य और पौरस्त्य का, नवीनता-प्राचीनता का, सिद्धान्त और वाद का संघर्ष बढ़ता ही जा रहा है। कर्त्तव्याकर्तव्य गम्यागम्य, खाद्याखाद्य, सभी विवेच्य हैं। ऐसी स्थिति में कौन है, जो सही मार्ग प्रदर्शन कर सकता है?

जहा तक पुण्यश्लोक महर्षि दयानन्द जी और उनके द्वारा प्रतिष्ठापित आर्य-समाज का प्रश्न है, वह सतत जाग्रत हो कहते आये हैं कि जबतक सारा विश्व आर्य (विचारों

परिवार नियोजन का कुपरिणाम

"'और फिर इस प्रजातांत्रिक युग में, जहां बहुमत का आदर और अधिकार होता है, भारत में ही हिन्दुओं की क्या स्थिति होगी? बहुसंख्यक हिन्दु, अल्प-संख्यक रूप में परिणत हो जायेंगे और यह पूरा देश स्वयमेव ईसाइस्तान और मुसल्मानिस्तान बन जायगा। इसलिए समाज को इसके विपरीत पहले आवाज उठानी है और पुरजोर प्रयास खड़ा करना है तथा नैतिकता के विरुद्ध नियोजन कार्य का पर्दाफाश जनता के बीच करना है।

में श्रेष्ठ) नहीं हो जाता, तबतक समस्याओं का समाधान नहीं मिल सकेगा, इसलिए सभी विश्व को आर्य बनाने, विवेकशील श्रेष्ठ जन बनाने का निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए। यह काम छोटी इकाई से लेकर बड़े समाज, देश तथा विश्व तक की परिधि में कर सकते हैं, हमें करना चाहिए। आर्यसमाज को करना है। आज आर्य-समाज अपने ओ३म् के झंडे को आगे करके 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, का अमर सदेश देकर जनता में श्रद्धा, विश्वास और साहस का संचार करे। उसे आज स्वामी दयानन्दजी, प० लेखराम जी तथा स्वामी श्रद्धानन्दजी की नितांत आवश्यकता है। उसे आज नया दर्शनानन्द, स्वतंत्रानन्द, अभेदानन्द और ध्रुवानन्द चाहिए, जो वैदिक सिद्धान्त को घूमघूम कर सारे भारत के कोने-कोने में तथा विश्व के बड़े छोटे नगरों में फैला दे। आर्य-समाज के प्रतिपादित सिद्धान्त को सुनने के लिए उत्सुक जनता को अपने पीछे लगा ले।

जनता की समस्यायें अनेक हो सकती हैं, समस्यायें राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक हो सकती हैं, भ्रष्टाचार, खाद्याभाव, दुर्भिक्ष, शोषण, आबादी की घनता और उसके रोकने का उपाय के रूप में आ सकती हैं, तथा ये सीमा के पार से आक्रमण के रूप में तथा उसके समाधान-जनित कठिनाइयों के रूप में उपस्थित हो सकती हैं। अथवा औपपातिक आग, बाढ़, भूकम्प आदि का रूप धर कर भी समस्याएं आती हैं और जनता को तबाह करती हैं।

आर्य-समाज इन सभी समस्याओं का समाधान तथा मार्गदर्शन आदर्श विचारों एवं वेदप्रतिपादित उत्तम सिद्धान्तों के माध्यम से कर सकता है, किन्तु सही मार्ग-प्रदर्शन ही कर सकता है। समाधान तो वस्तुतः शासन के हाथ में है। हां, आर्य समाज वास्तविक मार्ग दिखला कर समस्याओं के परिणाम की कठोरता को कम कर सकने में सहायक अवश्य हो सकता है, उसे होना चाहिए। आज आर्य-समाज को धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए जनता के नैतिक बल को उन्नत करना होगा। उनके अन्दर की स्वार्थ भावना को निर्मूल करना होगा। समाज में फिर से वैदिक युगीन पांच धर्मों के प्रति आस्था, पांच नियमों के प्रति निष्ठा जमानी होगी। प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना पड़ेगा कि आवश्यकता से अधिक लेकर या नाजायज ढंग से उपार्जन कर वह न केवल समाज अथवा देश का अहित करता है, बल्कि मानवता की हत्या करता है और जब बेचारी मानवता मारी जायगी, तब प्रत्येक व्यक्ति असुरक्षित हो जायगा, क्योंकि तभी 'मात्स्यन्याय' चल पड़ता है—बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है। यह हाल नहीं होने पावे, उसके लिए अभी से सतर्क होना चाहिए। इसी मार्ग से भ्रष्टाचार, खाद्याभाव, दुर्भिक्ष, शोषण जैसी कृत्रिम समस्यायें कभी नहीं उभरने पायेंगी।

चूंकि मैं एक डाक्टर हूं और वह भी औषध चिकित्सक नहीं, शल्य चिकित्सक। इसलिए जरा आबादी की घनता और उसके उपाय पर बोलना भी मेरे लिए अनुचित नहीं होगा। आज भारत जैसे तथाकथित 'डेफिसिट' देश के लिए आबादी का बढ़ना अच्छा नहीं माना जाता है। इसलिए उसके रोकने के उपायों में भारत सरकार ने परिवार-नियोजन का नुस्खा निकाला है। आबादी की बढ़ती या घटती उस देश की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। यदि देश सुशिक्षित, जागरूक तथा प्रकृति-प्रदत्त साधन-सम्पन्नता के साथ-साथ उसको उपयोग में आधुनिकतम भौतिक वैज्ञानिक साधना से सन्नद्ध है, तो बढ़ती आबादी वरदान बनेगी, अभिशाप नहीं। भारत जैसे देश का प्रकृति भंडार अभी तक ७५ फीसदी नहीं तो पचास फीसदी अवश्य ही अस्पष्ट है, उसका कोई उपयोग-प्रयोग नहीं हो रहा है। और न उधर ध्यान ही दिया जा रहा है। क्या वे साधन हमारे लिये सहायक नहीं होंगे ? इसलिए जनता को सर्वप्रथम शिक्षित, जागरूक और अपने आपको संयमी इन्द्रियजित्, परिश्रमी, कर्मठ बनना पड़ेगा। तभी हमारी सारी समस्याओं का समाधान हो सकेगा। जहां तक परिवार नियोजन का प्रश्न है, उसे यदि कृत्रिम ढग का या आजकल की औषध नली प्रणाली का परिवार-नियोजन न तो हमारे देश या समाज के अनुकूल पड़ता है और न इसे नैतिकता का सहारा ही मिलता है। यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि इस प्रणाली के बाद निकट भविष्य में ही, इसके अभ्यर्थ न सिद्ध होने तथा कठिनाई बढ़ जाने के कारण इसका प्रयोग सफल न हो सकेगा और फिर गर्भस्राव तथा भ्रूण-हत्याओं को वैधानिक करने की मांग सामने आयेगी। फिर यह तो भारत जैसे नीतिवादी देश के लिए असम्भव-सा होगा। अतः, प्राचीनता की ओर चलकर हम जनता को शिक्षित करें कि वह आत्म-संयम करके ही कम सन्तान पैदा करे। जैसा कि गांधीजी ने भी कहा है:—

'Both man and woman should know that abstention from satisfaction the sexual appitite results not in diseases, but in health and vigour provided that mind co-operates with the body.

परिवार-नियोजन में एक राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण भी है और इस नियोजन की प्रक्रिया के पर्यवेक्षण से इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि देश में शनैः शनैः योग्य व्यक्तियों और श्रेष्ठ सपूतों का अभाव हो जायगा और वह भी केवल हिन्दू समाज में ही। क्योंकि इस योजना को पूर्ण रूपेण केवल हिन्दुओं का ही बुद्धिजीवी वर्ग अपना रहा है, और श्रेष्ठ अवदान देने का एक मात्र क्षेत्र किसी समाज का बुद्धिजीवी वर्ग ही होता है। इसके विपरीत अशिक्षित तथा पिछड़ी हुई जनता में इस नियोजन का कोई प्रभाव नहीं है। साथ ही, एक दूसरे खतरे की ओर भी हम निर्देश कर देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। इस नियोजन को ईसाई या मुसलमान अपने धर्म और शरीयत के विरुद्ध समझते हैं। उनके यहां कृत्रिम गर्भ-निरोध या परिवार अथवा गर्भपात धर्म विरुद्ध माना जाता है। यही कारण है,ईसाई या मुस्लिम परिवार कदापि नियोजन के लिए तैयार नहीं होता और उन धर्मों के डाक्टर भी इस कार्य को करने के लिए सन्नद्ध नहीं दीखते हैं। फलत. उनकी संख्या तो दिनोंदिन बढ़ती जायगी और हिन्दुओं की घटती जायगी। ऐसी स्थिति में आप पचास वर्ष आगे की कल्पना कीजिए कि संख्या का उतार-चढ़ाव कैसे हो जायगा ? और फिर इस प्रजातांत्रिक युग में, जहां बहुमत का आदर और अधिकार होता है, भारत में ही हिन्दुओं की क्या स्थिति होगी ? बहुसंख्यक हिन्दू, अल्पसंख्यक रूप में परिणत हो जायेंगे और यह पूरा देश स्वयमेव ईसाईस्तान और मुसल्मानिस्तान बन जायगा। इसलिए समाज को इसके विपरीत पहले आवाज उठानी है और पुरजोर प्रयास खड़ा करना है तथा नैतिकता के विरुद्ध नियोजन कार्य का पर्दाफाश जनता के बीच करना है।

आप सभी उपस्थित लोगों को मालूम है कि जब कभी जहां कहीं भारत भर में कोई दैवी या प्राकृतिक उत्पात होता है, वहां आर्य-समाज अपनी सम्पूर्ण या आंशिक शक्ति लेकर जनता की सहायता के लिए उपस्थित हो जाता है। बंगाल का अकाल हो या पंजाब का विभाजन, बिहार का भूकम्प हो या आसाम की बाढ़। सर्वत्र आर्यसमाज ने उचित रीति से यथाशक्ति समस्या का समाधान किया है। और भविष्य में भी देश की इन स्थितियों में वह सहायता के लिए अगली पांत में खड़ा रहेगा।

राजनीतिक समस्याओं के प्रति आर्यसमाज का दृष्टिकोण सदा प्रगतिशील रहा है। स्वयं महर्षि ने सर्वप्रथम स्वराज्य को आर्यों का जन्मसिद्ध अधिकार माना था और वे चाहते थे कि सभी भारतीय राजे मिलकर ब्रिटिश सल्तनत को धूलिसात् कर दें। महर्षि के 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखने के बाद ही १८८५ ई० में कांग्रेस का जन्म हुआ था। कांग्रेस में भी बीसवीं सदी के शुरू से ही आर्य समाज के नेता ही वस्तुतः देश के नेता होते थे। इसके उदाहरण युगपुरुष लाला लाजपत राय, वीर सावरकर, भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द जी प्रभृति नेता हैं। अनुवर्ती समय में आर्यसमाज का सामान्य कार्यकर्ता भी स्वभावतः खादी का परिधान पहनने वाला तथा एक बार अवश्य जेल हो आने वाला होता था। आज भी बहुत से कांग्रेसी तथा दूसरे राजनीतिक दल के नेता कभी आर्यसमाजी ही रहे। लेकिन आर्यसमाज कभी भी हिन्दुस्तान में दो तीन प्रकार की राष्ट्रीयता का समर्थन नहीं करता एक राष्ट्र का सिद्धान्त मानता है और मानता रहेगा। यदि आर्यसमाज का सिद्धान्त माना जाता तो फिर आज पाक-भारत का प्रश्न ही क्यों खड़ा होता और क्यों भारत भूमि की सहस्रों वर्षों की सीमा तोड़कर नई सीमा बताई जाती। फिर आज सीमा के ये विवाद और झगड़े भी नहीं उठते।

आज से पूर्व १९६२ ई० में चीन ने आक्रमण करके भारत को नीचा दिखाना चाहा था और १९६५ में उससे शह पाकर चीन समर्थित पाक-

सेना ने पश्चिमी सीमा पर आक्रमण कर दिया तथा कश्मीर को अव्यवस्थित करना चाहा । इन परिस्थितियों में आर्यसमाज सदा से राष्ट्रीय दृष्टिकोण से सोचता है और वैसा ही कार्य करता है वह सदा भारतीय शासन को नैतिक समर्थन करता है और साथ ही आवश्यकता पड़ने पर अपने हजारों स्वयसेवकों द्वारा राष्ट्र की प्रतिष्ठा बचाये रखने के लिए कृत संकल्प रहता है । हमारे स्वयसेवकों ने गत सीमा संघर्ष में अनुकरणीय कार्य किये हैं । मुझे विश्वास है, आर्यसमाज तथा आर्य वीर दल सदा अपनी मातृभूमि की रक्षा इसी प्रकार करता रहेगा । हमारा मन्त्र है—'राष्ट्रे वय जागृयाम पुरोहिताः ।' राष्ट्र मे हम आगे बढ़कर जाग्रत रहें ।

आज खाद्य समस्या का एक प्रश्न दावाग्नि की भांति उठ खड़ा हुआ है । इसके कारण प्रत्येक प्रदेश में गड़बड़ी हो रही है । अभी-अभी बिहार में, केरल तथा यहीं बगाल में भी अशान्त वातावरण उपस्थित हो चुका है । सैकड़ों गिरफ्तारियां हुईं, लोग आहत हुए । लेकिन समस्या जहां की तहां रह गई ।

यह समस्या अशान्त प्रदर्शन तथा गिरफ्तारी से नहीं सुलझने की है । समस्या का मूल समाधान तो यहा की खेती और अन्नोत्पादन है । उसके लिए अधिकतर कागजी काम होता है । समस्या का निदान और समाधान दोनों कागजी हैं । इसका समाधान अमेरिकी या कनाडियन गेहूं भी नहीं है । वस्तुतः सरकार यदि उचित ढग से खेती पर ध्यान देगी, उन्नत वैज्ञानिक तरीकों को अपनायेगी तथा नियन्त्रण का भार हटायेगी और किसानों को उचित मात्रा में कृषि का सरक्षण,—जैसा कि मिलों को प्राप्त है, अनाज का उचित मूल्य और कृषि सामग्री की प्राप्ति तथा सिंचाई का साधन मिलेंगे—तभी सुधार संभव है । साथ ही, भारतीय किसान अधिकतर पशु-शक्ति पर निर्भर करता है । और यहां के पशु मारे जाते हैं । आज इसी कारण गोवंश का ह्रास हो गया । उसका प्रत्यक्ष प्रभाव तो यह हुआ कि आज हमारे बच्चों तक को एक छटांक दूध तक दुर्लभ हो गया । जबकि हमारे बच्चे दूध की पौष्टिकता से बढ़ते है । सरकार को इसी प्रसंग में भी इधर ध्यान देना चाहिए । आर्यसमाज को गोवंश की वृद्धि के लिए पूर्ण प्रयास करता है ।

गोहत्या को रोकने के लिए सभी संभव प्रयास करता है । आर्यसमाज ऊपर कही गई सभी समस्याओं को समाहित करने में योगदान करेगा, करता आया है । लेकिन इसका एक दूसरा पक्ष भी है । वह है, आध्यात्मिक समाज धर्मप्रधान सस्थान है, इसके लिए भौतिकता की अपेक्षा आध्यात्मिकता और नैतिकता प्राथमिक वस्तु हैं । यदि कहीं वह भौतिकता की लपेट में संध्याहवन, वेदों का स्वाध्याय मनन आदि भुला बैठे तो यह फल छोड़ टहनी की ओर दौड़ना होगा । इसलिए हमे जरा फिर एक बार महर्षि के बतलाये धर्मपथ को देखना होगा । हमारा धर्म, आत्मा का अभिन्न धर्म है । इसकी व्याख्या-मीमांसाकार ने इन शब्दों में की है - 'यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः' जहां से अभ्युदय ऐहिक और निःश्रेयस पार-लौकिक फल की सिद्धि होती है, वही धर्म है । उपनिषदों ने इन्हीं दोनों को प्रेयस् और श्रेयस कहा है—विद्वानों के लिए श्रेय और प्राकृतों के लिए प्रेय ग्राह्य होता है अर्थात् समझदार शाश्वत फल को देने वाली वस्तु ग्रहण करते हैं जबकि प्राकृत जन प्रिय लगने वाली वस्तु को स्वीकार करते हैं ।

"श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत—
स्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः ।
श्रेयोहि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते
प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते ।।

कठोपनिषद्, द्वितीयवल्ली, २

इसलिए हमें अपनी आत्मिक उन्नति के लिए दोनों वस्तुओं का परिज्ञान करके अपने श्रेय को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए और यह श्रेय हमें महर्षि के शास्त्र-समुद्र के मथन से प्राप्त 'सत्यार्थ प्रकाश' से ही मिल सकता है । यह मुझे इसलिए कहना पड़ रहा है कि आजकल प्रायः अब बहुत कम लोग इस ग्रन्थरत्न को सांगोपाग पढ़ते है । 'मूले नष्टे नैव पत्रं न शाखा ।' मेरा इतना ही कहना है कि आप अपने धर्म को समझें । आपका धर्म 'वैदिक' है । आप किसी सम्प्रदाय के अनुगामी नहीं है । वह वेद सभी सत्य विद्याओं की निधि है । और जब तक उन निधियों का स्वाध्याय और मनन न होगा तो धर्मरत्न कहां मिलेगा । बौद्धों ने अपने धर्मरत्न धर्म त्रिपिटक (तीन पेटारियों) में बन्द कर दिये थे, लेकिन वैदिक धर्म सदा खुले पन्नों में खुला पड़ा है । आर्य-समाज के प्रत्येक सदस्य का यह दैनिक नियम होना चाहिए कि ब्राह्ममुहूर्त में वह थोड़ा बहुत ही सही, वेदों का स्वाध्याय अवश्य करे ।

आत्मनिरीक्षण

आर्य-समाज के सदस्यों का कर्तव्य है कि वे जब सभी समस्याओं पर विचार करते हैं, तो उसके पहले वे अपने आपका भी निरीक्षण कर लें । कार्य की प्रगति में आत्मनिरीक्षण बहुत अधिक साधक होता है । यहां के प्रत्येक सदस्य को यह देखना है कि वे समाज के उद्देश्यों के प्रति कितना जागरूक हैं । क्या वे अपने घर, दैनिक धार्मिक विधान पूरा करते हैं ? क्या अपने बच्चों को नैतिकता की शिक्षा देते हैं ? क्या वे ऐसा कोई कार्य तो नहीं करते, जिससे उनके शिशुओं और पास-पड़ोस के लोगों पर उलटा प्रभाव पड़ता हो ? यदि वे ऐसा ध्यान नहीं रखते हैं, तो उन्हें अवश्य रखना चाहिए । समाज में गृहस्थों का अपना गार्हस्थ्य धर्म, संन्यासियों को अपना उपदेश कर्म तथा अपने आचरण-मनसा, वाचा, कर्मणा करना चाहिए । उपदेशकों-भजनीकों तथा दूसरे कार्यकर्ताओं को ऐसा ही करना चाहिए । आर्य-समाज के सदस्यों को अपने मिशन के प्रति सतत जागरूक रहना है और आत्मनिरीक्षण करके, आत्मालोचन करके अपनी कमियों को पूरा करना है ।

आर्य-समाज के कर्तव्य

वर्तमान काल में आर्य-समाज को निम्नलिखित अनिवार्य कार्यों को समस्याओं के समाधान के लिए अपने हाथ में लेना चाहिए और इनके लिए एक योजनाबद्ध कार्यक्रम प्रस्तुत कर कार्य को आगे बढाना चाहिए ।

१—महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्त्री-शिक्षा की प्राथमिक आवश्यकता बतायी । उनके चलाये गये स्त्री-शिक्षा-आन्दोलन के फलस्वरूप आज भारतीय स्त्रियां लगभग एक सौ वर्ष के अन्दर शिक्षा की पाँत में काफी प्रगति कर रही हैं । किन्तु, भारतीय संस्कृति एवं भारतीय आदर्शों की दृष्टि से वर्तमान ढंग की स्त्री-शिक्षा से भारत का कल्याण असंभव है । हमें कन्याओं के लिये कन्या गुरुकुलों की पद्धति के अनुरूप शिक्षा चाहिये । सहशिक्षा से हो रहे अवांछनीय परिणाम से हम और आप अनभिज्ञ नहीं है । स्त्रियां जननी हैं, इनके विचार यदि सौम्य आदर्श तथा वैदिक मर्यादा से सन्नद्ध हुए तभी हमारा कल्याण हो सकता है । तभी हम आदर्श सन्तान की कामना करने के अधिकारी हो सकते हैं । सरकार को भारतीय संस्कृति के अनुरूप स्त्री-शिक्षा को मोड़ना चाहिए ।

२—गोवश की वृद्धि के लिए तथा गोहत्या के निरोध के लिए एक संघटित प्रयास अपेक्षित है । इसमें गोहत्या के निरोध के लिए सरकार से मांग करना तथा जनता में गोवश की वृद्धिकेलिए प्रचार करना आवश्यक है । ऐसा करके हम जनता को दूध और अन्नोत्पादन के लिए सस्ती खाद देकर अनाज बढ़ा सकेंगे ।

३—महात्मा गांधी का प्रधान कार्य था मद्यनिषेध । लेकिन इस विषय में आज सरकार की नीति अत्यन्त हानिकर है । आज अठारह वर्षों के शासन में कहीं भी पूर्ण रूप से मद्यनिषेध कानून नहीं लागू किया गया है । अब आर्य-समाज को, यह कार्य अपने हाथ में लेना चाहिए और इसके लिए भी एक पंचवर्षीय योजना बनाकर जनता में प्रचार करना चाहिए ।

४—आज भाषा की समस्या कठिन हो गई है । लेकिन, आर्यसमाज को राष्ट्रभाषा के समर्थन के साथ-साथ संस्कृत की अनिवार्य शिक्षा के लिए आन्दोलन करना चाहिए । जब तक सस्कृत का पढ़ना-पढ़ाना अनिवार्य नहीं होगा, तब तक कोई भी वैदिक धर्मावलबी अपने शास्त्रों और वेदों का अध्ययन-मनन कैसे कर सकता है ? फिर यह तो, न केवल प्राचीनतम भाषा है, पर इसका साहित्य भी समृद्धतम है और सभी भारतीय भाषाएं या तो इसी से निकली हैं या इससे बहुत अधिक प्रभावित हैं । इसके लिए समाज को बड़ा आन्दोलन करना चाहिए ।

५—आज छात्रों में अनुशासन की कमी को अनुभव किया जा रहा है, लेकिन उसके मूल कारणों का निदान ही नहीं किया जाता । अनुशासनहीनता तो उन्हें जन्म से मिलती नहीं है । यदि गुरु और शिक्षक उनके साथ अपना अधिक समय देंगे, अपनापा दिखलायेंगे और उनके दैनिक व्यवहार में सदाचार की सीख देंगे, तभी उनमें अनुशासन आयेगा । इसके लिए आवश्यक है कि गुरुकुल की

शिक्षा-प्रणाली चलाई जाय। इसके लिए प्राचीन शिक्षा-प्रणाली में नवीन शिक्षा का समावेश करके और सर्वत्र गुरुकुलों की स्थापना करके यह कार्य किया जा सकता है, किया जाना चाहिए। यद्यपि यह 'पीछे मुड़ो' (Back to the Vedas) की नीति है लेकिन इसके बिना समस्या का कोई दूसरा समाधान नहीं हो सकता है। मैं तो अपने जीवन के अनुभव से कह रहा हूं कि शिक्षकों, प्राचार्यों और उपकुलपतियों-सभी को विद्यार्थियों के निकट सम्पर्क में रहना चाहिए। छात्र, शिक्षण-संस्थाओं में अपने परिवार की भांति रहेंगे तो उनमें स्वतः अनुशासन आयेगा। साथ ही उन्हें नैतिक और धार्मिक शिक्षा भी देनी चाहिए। यह भी पढ़ाई का एक आवश्यक अंग है। इस पर तो बहुत अधिक दबाव देना चाहिए कि प्रत्येक शिक्षा में नैतिकता का भी स्थान हो और फिर एक 'वेलफेयर स्टेट' के लिए तो यह अनिवार्य है। धार्मिक और नैतिक आचरण से दैनिक क्रियाओं मे अनुशासन की भावना जागरित होती है। कार्य को फिर से अपने हाथ में ले और कार्य को आगे बढ़ावे। शिक्षा क्षेत्र में अनुशासनहीनता एक अहम् सवाल हो गया है और इसका उचित समाधान नहीं हो पा रहा है साथ ही, पढ़ाई के बाद भी तो वे ही छात्र अधिकारारूढ होंगे अथवा होते हैं और यदि वे अनुशासन हीन रहे, तो वे अच्छे नागरिक नहीं बन सकेंगे और न अच्छे अधिकारी ही। इसलिए शिक्षा को गुरुकुल प्रणाली में बदलकर नैतिक पाठ को अनिवार्य करके अच्छे नागरिक, समाजसेवी-वर्ग को हम प्रस्तुत कर सकते हैं। यदि आज, शिक्षा-प्रणाली में भी पंचवर्षीय योजना बनाकर कार्य किया जाता तो पच्चीसवें वर्ष में एक शिक्षित नागरिक नया रूप लेकर हमारे सामने आता और हम तब विश्वास करते कि देश से भ्रष्टाचार आदि दोष समूल नष्ट हो जायेंगे। क्या अब भी उसका समय नहीं है? अब भी चेतें तो कार्य पूरा हो सकता है।

उपर्युक्त सभी कार्मों के लिए समाज को एक योजनाबद्ध कार्यक्रम तैयार करना चाहिए और इन योजनाओं के लिए सुशिक्षित कार्यकर्ता वर्ग तैयार करना चाहिए। कार्यकर्त्ता गण को संक्षिप्त प्रशिक्षण देकर यथा स्थान नियुक्त करना चाहिए, ये कार्य इतना आवश्यक है कि यदि आज आर्य-समाज इतना ही कार्यक्रम लेकर चले तो भी देश में उसका मिशन पूरा हो सकेगा। इसके लिए अपने अंदर एक ऐसा उत्साह जगाना होगा जैसा कि अशोक के समय बौद्ध भिक्षुओं में था। यदि उनमें वह 'स्पिरिट' नहीं होता तो क्या सम्पूर्ण विश्व में बौद्ध धर्म का प्रचार होता? मैं तो चाहता हूं समाज का एक केन्द्र-स्थान हो, जहां, उपदेशकों, कार्यकर्त्ताओं और सम्बद्ध अधिकारियों को उचित प्रशिक्षण दिया जाय तथा जहां से देश भर में फैले हुए कार्यों का संचालन हो। इसके लिए मैं अवकाश प्राप्त इंजिनीयरों, डाक्टरों, अध्यापकों प्राध्यापकों तथा ऊंचे सरकारी अधिकारियों तथा प्रशिक्षित अनुभवी व्यक्तियों से भी अनुरोध करूंगा कि वे सभी मिलकर एक ऐसी संस्था का निर्माण करें, जिसके द्वारा आर्य-समाज का काम पूरा हो और संघटित रूप से कार्य की प्रगति की जाय।

अपने वक्तव्य का उपसंहार करते हुए मैं उन महापुरुषों के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जली अर्पित करता हूं, जिनका जन्म और विकास इस ऐतिहासिक पवित्र भूमि में हुआ था। इन महापुरुषों के जीवन से भारतीय संस्कृति का पुनः उन्नयन हुआ एवं न केवल भारत वर्ष मे अपितु सारे संसार में भारतीय दर्शन, भारतीय साहित्य एवं विज्ञान का आलोक जगमगाने लगा असम और बंग के आर्यों बीच मैं गौरव का अनुभव कर रहा हूं जहां सुप्रसिद्ध योगी और विद्वान् श्री अरविन्द घोष ने महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की शैली का समर्थन किया है। इसका प्रभाव समस्त भारत के शिक्षित व्यक्तियों पर विशेष रूप से पड़ा है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संग्राम के वीर सेनानी सुभाषचन्द्र बोस, संस्कृति के महान् प्रहरी डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी, महान् समाज-सुधारक राजा राम मोहन राय वांग्मय के उपासक एवं सरस्वती माता के वरदपुत्र विश्व कवि रविन्द्र नाथ टैगौर निष्पक्ष विचारक महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर, शिक्षा-विशेषज्ञ श्री आशुतोष मुखर्जी, भारतीय दर्शन के उन्नायक स्वामी विवेकानन्द, अध्यात्म विचार के महान् साधक महात्मा राम कृष्ण परमहंस एवं भारत के गौरव प्रसिद्ध विज्ञान वेत्ता श्री जगदीश चन्द्र वसु, प्रभृति महापुरुषों को जन्म देने का श्रेय इसी भूमि को प्राप्त है।

अन्त में मैं अपने स्वागताध्यक्ष महोदय को, उनके सहयोगियों को तथा आर्यों के महान् गुणोंपते निर्भयता और निविघ्नता से सुनने वाले आप सभी प्रेमी आर्य श्रोताओं को हार्दिक साधुवाद देता हूं और आरम्भ के मन्त्र के अनुसार संगति (मिलकर बैठना;) संवदन (मिलकर संलाप करना), तथा संज्ञान (मिलकर ज्ञान प्राप्त करना) की कामना करते हुए अन्तिम प्रार्थना करता हूं—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्।
ओ३म् शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।

हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश"

(डा० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार एम. ए. डी. लिट्, अजमेर)

(१)

हमारे गुरु का आशीर्वाद, हमारे ऋषि का अमर विधान।
मिटाकर जग का विषम विवाद, करेगा वही विश्व कल्याण॥
इष्ट फल देगा नित्य नवीन, कल्प पादप का पुष्पाभास।
कौन सकता है हमसे छीन, हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश?

(२)

निगम का, आगम का अवतार, भव्य भावों का भुवि भंडार।
प्रेम के पथ का पारावार, ज्ञान का गुण का गम्यागार॥
चमकते जिसमें रत्न अनेक, नित्य प्रति पाते विविध विकास।
सत्य का सागर बस वह एक, हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश॥

(३)

वही है दिव्य तेज-तिग्मांशु, तोड़ता तमस्-तोम-प्रातान।
वही है सीधा सौम्य सुधांशु, कराता अमृत पय का पान॥
वही है पावस पुण्य पयोद, हटाता, अघ-निदाघ संत्रास।
वही बुधजन का बुद्धि-विनोद, हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश।

(४)

विविध पर्थों का तामस तोम, भरा था भू पर भ्रम भरपूर।
अखिल आच्छादित था भुवि व्योम, न कर सकता था कोई दूर॥
गगन में हुआ ज्ञान विस्फोट, किया अज्ञान अन्ध का ह्रास।
असत् पर मारी भारी चोट, हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश॥

(५)

अनिल का अमित अजस्र प्रवाह, बांध सकता है जग में कौन?
अनल का प्रबल प्रचंड प्रदाह, साध सकता है जग में कौन?
"सूर्य" का नभ में प्रखर प्रताप, रोक सकता है कौन प्रकाश?
पढ़े जो उसे मिटे सन्ताप, हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश?

(६)

"सूर्य" में रहें रश्मियां सात, यहां चौदह पूरे उल्लास।
"सूर्य" करता न प्रकाशित रात, सतत यह देता हमें प्रकाश॥
'सूर्य' पर आती है बरसात, 'ग्रहण' में होता विलय विकास।
किन्तु यह हैं सदैव अभिजात, हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश॥

(शेष ५ का शेष)

Om. Its explanation follows. It is thus apparent that this Upanishad considers the Vedas to be utterances of God and therefore to be highly revered as source of all sorts of blessings.-1.1.1.

37. Brihadaranyaka Upanishad.

This Upanishad suffers from repetitions but the following may give a fair idea of its view on the Vedas —

(a) त्रयो वेदा एतएव वागेवर्ग्वेदो मनो यजुर्वेद प्राण सामवेद । १. ५. ५

(b) तमेत वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति यज्ञेन दानेन तपसाऽनाशकेनैतमेव विदित्वा मुनिर्भवति ॥

(c) वेदोऽयं ब्राह्मणा विदुर्वेदैनेन यद्वेदितव्यम् ।

(d) स यथाऽऽर्द्रैधाग्नेरभ्याहितात्पृथग्धूमा विनिश्चरन्त्येवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतदृग्वेदो यजुर्वेद सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस इतिहास पुराणा विद्या उपनिषद श्लोका सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्यानान्यस्यैवैतानि सर्वाणि निश्वसितानि ॥

२. ४. १० १. २

(e) स तया वाचा तेनाऽऽत्मनेद सर्वमसृजत यदिद किञ्चर्चो यजूंषि सामानि छन्दांसि यज्ञान् प्रजा पशून् स यद्यदेवासृजत ॥ a part of 1.2 5.

These may be translated as follows:—

(a) These same are the three Vedas Speech verily the Rig-veda mind the Yajur veda and breath the Sam veda: 1 5 5 Shatpath Brahman-14 4 3 12

(b) He (God) is sought to be known through study of the Vedas On knowing Him by Yagya, by charity, by penance, by fasting one becomes an ascetic -4.4.22

(c) This AUM is veda' The Brahamanas have known that through known AUM one knows all that is to be known.-5 1.1

(d) As from a fire kindled with damp fuel issue forth smokes of various kind, so verily from this Great Being has been breathed forth the Rig veda, the Yajur veda, the Atharva veda, the Sam veda the mantras dealing with the eternal laws of cosmos. of the mantras dealing with the condition, of earth prior to present creation, the mantras dealing with spiritual knowledge, the mantras dealing with mysteries of God, the mantras dealing as memorial verses, the mantras dealing with subjects, as aphorisms, the mantras explaining some tenents. the mantras in praise of Deity From Him verily are all these breathed forth.-2. 4.10. See also 4.1.2.

(e With that resounding speech, with that self, He brought forth all this whatsover exists here, the Rig-veda, the Yajurveda, the Samveda, the Atharva-veda (Chhandas), the Yajyas, mankind and animals -1 2 5.

It is thus clear that according to this Upanishad the four Vedas were breathed by God and they are from Him. But the interpretation of the mantra at 2 4. 10 above, which is practically repeated at 4 1 2. again, demands some explanation It has naturally attracted notice of not a few commentators In his 'Principal Upanishads. Dr Radha Krishanan remarks it is interesting to know that Brihadaranyaka Upanishad tells us that not only the Vedas but history, sciences and other studies are also breathed forth by the great God, (p 23). In his Constructive Survey of Upanishadic Philosophy, Ranade has noticed that passage in detail on pp. 8 to 12 and he attempts to undo the gordian knot created by this passage of the Brihadaranyaka Upanishad by defining the word Revelation. According to him the real meaning of Revelation seems to be not any external message delivered to man from without, but a divine afflatus springing from within, the result of inspiration through God intoxication." (vide p. 9) But it is obvious that this is not the sense in which the Vedic Samhitas are regarded as 'revelation'. These are regarded as revealed by God to the consciousness of four persons Agni, Vayu, Aditya and Angiras in the beginning of Creation

Hence Upanishads can not be treated as Revelation in the Vedic sense of the term. The Upanishads may say that what they preach was from time to time inspired in them by God but they can not be allowed to assume the position of the revelation of the Vedas The Upanishads were not in existence in beginning of creation. Hence they can not be part of the Vedas. Edwing Montagu has well said in defining faith "to believe in something which your reason tells you can not be true for if your reason approved of it there could be no question of faith." We have no intention here to quarrel with those who under the influence of blind faith treat the Upanishads as so many mandals of Vedic-Samhitas but the Vedas themselves repudiate such idea. With the exception of Ishopanishad which is part of Yajurveda all the rest have been preached by human beings from time to time and not by God in the beginning of creation. Everyone so advised is at liberty to hold that Upanishads are superior to the Vedas and better entitled to be called revelation but it is an untenable proposition to suggest that the Upanishads are part of Vedic revelation Nor can any thing in any Upanishad be permitted to drag down or if it so pleases any one, to pull up the Vedic revelation to its own level, specially when we have shown from many quotations from the Upanishads, that they hold the Vedas to be words of God given to mankind for their benefit in the beginning of intrinsic authority The Vedas, as will be shown later on, discountenance the idea of any other work being a part of themselves. What then is the meaning of the verse in question? This depends upon the interpretation put on the words Itihas, Puran, Vidya, Upanishad Shloka, Sutra, Vyakhyan and Anuvyakhyan. These are kinds or classifications of Vedic Mantras with reference to their subject matter and not external books by human authors dealing with these subjects Ubbat has in his commentary of Yajurveda classified Vedic mantras into 12, i e.

> सर्वेषाय, साध्य, भावी स्तुति, ईष, स्वतिकृत्य, वचन, व्याकरण, अर्थ, पूर्वपृच्छानुकीर्तन, अवधारणा, and Upnishad

Similarly in Shavar Bhashya on Jaimini Sutras Vedic mantras are classified into thirteen. (क्रमशः)

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

"अखिल भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा"

श्री रामनाथ सहगल मन्त्री सभा का वक्तव्य

कुछ समाचार पत्रों में अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा की कार्यकारिणी सभा के नाम से पंजाबी सूबे का समर्थन और हरिजनों के नाम से सराय फूंस में श्री कन्हैयालाल वाल्मीकि की अध्यक्षता में कोई मांग प्रकाशित की गई है। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि हमारी सभा की कार्यकारिणी ने न ही पंजाबी सूबे का समर्थन किया है और न ही कोई मांग या मीटिंग की है और न ही यह सभा दलितों की सभा है, बल्कि यह सभा दलितों का उद्धार करने वाली सभा है और इसी उद्देश्य से आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने १९२१ में इसकी स्थापना की थी। यह सभा आज तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (Inter-National Aryan League) का अंग है। श्री कन्हैयालाल वाल्मीकि का इस सभा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सारी कारस्तानी कुछ स्वार्थी तत्वों की करतूत है और दलितों की आड़ में आर्य समाज की इस सभा के साथ मजाक करना चाहते हैं। जिसका अभिप्राय इस सभा के प्रति मिथ्या भ्रम फैलाना है। अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के वर्तमान प्रधान श्री हरवंसलाल जी चोपड़ा हैं। और इस सभा का अपना दफ्तर, सभा की अपनी जायदाद आर्य नगर पहाड़गंज, न्यू देहली में है। इसके विधिवत् चुनाव हर साल होते हैं। सराय फूंस में कोई कार्यालय नहीं है, इसलिए जनता को इस मिथ्या प्रचार से सावधान रहना चाहिये।

देशद्रोही भावना

अपनों व बेगानों की देशद्रोही भावनाओं ने आज विजय पाई। विघटन व विनाश की बिजलियां राष्ट्र का सर्वनाश करने के लिए कड़क कर बरस रही हैं।

राजेन्द्र जिज्ञासु शोलापुर

आर्य समाज स्थापना दिवस

— आर्य समाज (कुंवर मिल) सदौली की ओर से उत्साह से मनाया गया। प्रभात फेरी, यज्ञ, भजन और भाषण हुए।

—आर्य समाज, औराद (महाराष्ट्र) में होली पर्व और आर्य समाज स्थापना दिवस सोत्साह मनाया गया। आर्य वीर दल की ओर से प्रभात फेरी निकाली गई।

— आर्य समाज, वेद मन्दिर गोरखपुर की ओर से स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। दीपमाला की गई। यज्ञ और भाषण हुए।

—आर्यसमाज पीपाड़ में स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। श्री पं० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री, कविरत्न प्रकाशचन्द्र जी तथा पं० ज्ञानेन्द्र जी सूफी के प्रभावशाली भाषण हुए।

वानप्रस्थ-प्रवेश

श्री पं० डा० डी० आर० राव जी आतुर का वानप्रस्थ प्रवेश श्री आचार्य कृष्ण जी के पौरोहित्य में हुआ, और सत्यमुनि नाम रखा गया।

शुद्धि

आर्य समाज झोसी के मन्त्री श्री सीताराम जी आर्य के उद्योग से एक महिला को शुद्ध कर उम्मादेवी नामकरण किया गया।

आर्य समाज राजनीति में भाग ले

पंजाबी सूबे विरोधी आन्दोलन ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है कि आर्य समाज का राजनीति में भाग न लेने का निर्णय दुर्भाग्यपूर्ण तथा आत्मघाती है। आर्य समाज ने स्वतन्त्रता संग्राम में तथा बाद में अनेकों तपे तपाये राष्ट्र-निष्ठ नेता देश को दिये परन्तु अब भी आर्य समाज ने कोई आन्दोलन चलाया उसके अपने अवयवी एक मत न हो सके क्योंकि ये सब भिन्न २ राजनैतिक दलों में बंटे हुए हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने आर्यों को राजार्य-सभा बनाने का निर्देश भी दिया है फिर आर्यजन राजनीति में भाग भी लेते हैं तो आर्य समाज ही क्यों न एक समान विचार वालों के लिए एक संस्था बनाकर राजनीति में भाग ले। फिर आजकल धर्म को राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता है।

ऐसी अवस्था में मेरी राय है कि आर्य समाज की सार्वदेशिक सभा तुरन्त एक दल संगठित करे और पूरे उत्साह से आगामी चुनाव में भाग ले जिससे धर्म और राजनीति का ठीक प्रकार संचालन हो सके।

रघुलाल गुप्ता शामली

आर्य समाज शक्ति नगर

का १४वां वार्षिक उत्सव बहुत समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस उत्सव की मुख्य विशेषता ११ दिन तक निरंतर वेद के विद्वानों और आर्य संन्यासियों की अमृत वर्षा थी। प्रारम्भ में श्री जगदीश चन्द्र जी विद्यार्थी ने आर्यनास्तुतिमन्त्रोंकी विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की, उसके बाद श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने ३ दिन तक तीन अनादि तत्वों पर विस्तार से प्रवचन किये। श्री स्वामी ब्रह्मानन्दजी दण्डी एटा वालों ने ५ दिन तक निरंतर षट् दर्शनों की पृष्ठभूमि में दार्शनिक और वैदिक सिद्धान्तों का विद्वत्तापूर्ण विवेचन किया। तत्पश्चात् श्री स्वा० सुधानन्द जी ने प्राचीन शास्त्रों और ग्रन्थों के आधार पर जीवन की आधुनिक समस्याओं पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए सामाजिक चरित्र के निर्माण पर बहुत अमूल्य सुझाव दिये।

२६ अप्रैल को मेरठ की विदुषी श्रीमती शकुन्तला गोयल की अध्यक्षता में स्त्री आर्य समाज का उत्सव हुआ।

इस उत्सव का तीसरा मुख्य कार्यक्रम यजुर्वेद पारायण यज्ञ था। जो आर्यसमाज के पुरोहित श्री सत्यव्रत जी स्नातक की अध्यक्षता में हुआ।

श्री अमरनाथ जी प्रेमी और श्री मेहरचन्द जी के मनोहर संगीत से जनता ने बहुत लाभ उठाया।

कृष्णचन्द्र विद्यालंकार
प्रचार मन्त्री

आर्यसमाज, फिरोजाबाद

का वार्षिकोत्सव २१ से २४ मई तक समारोह मनाया जायेगा।

नामकरण संस्कार

कोटा के श्री पं० रामलाल जी के पौत्र का नामकरण संस्कार श्री पं० शालिग्राम जी शास्त्री एम० ए० पुरोहित आर्य समाज कोटा के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ।

आर्य बाल गृह-आर्य कन्या सदन का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली, पिछले दिनों दिल्ली की प्रसिद्ध आर्य संस्था आर्य बालगृह-व आर्य कन्या सदन दरियागंज दिल्ली का वार्षिक महोत्सव श्री सरदार रौनकसिंह जी की अध्यक्षता में समारोह सम्पन्न हुआ।

संस्था के अध्यक्ष, दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य नेता व नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री देसराज चौधरी ने संस्था का परिचय देते हुए कहा कि इस संस्था की स्थापना स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने की थी। और तब से लेकर आज तक यह संस्था दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रही है। जनता व उदार दानी महानुभावों के सहयोग से आज संस्था में ५०० से ऊपर लड़के व लड़कियां अच्छे परिवारों की तरह शिक्षा-भोजन आदि प्राप्त कर रहे हैं।

आपने कहा कि वर्तमान आर्थिक मंहगायी ने हमारे सामने जटिल समस्या उत्पन्न कर दी है किन्तु हमें विश्वास है कि देश की उदार दानी जनता दान देते समय इन ५०० बच्चों को नहीं भूलेगी।

आपने बताया कि हम शीघ्र ही संस्था को आत्म-निर्भर बनाने की दृष्टि से औद्योगिक विभाग भी आरंभ कर रहे हैं।

श्री लाला हंसराज जी ने आशा प्रकट की कि हमें विश्वास है कि संस्था उदार-दानी महानुभावों के सहयोग से और भी उन्नति करेगी।

संस्था के अधिष्ठाता श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री ने बताया कि यहां के बालक शिक्षा प्राप्त करने के बाद पूर्ण स्वस्थ नागरिक बनते हैं। इस प्रकार इस संस्था द्वारा राष्ट्र की महान् सेवा हो रही है।

इस अवसर पर श्री डा० धर्म प्रकाश एम० पी०, श्री शिवकुमार वेदालंकार ने भी अपने भाषणों में जहां संस्था की सराहना की, वहां संस्था के अधिकारियों को विश्वास दिलाया कि जनता प्रत्येक प्रकार से संस्था के लिए यत्नशील रहेगी।

आर्यसमाज, मोती नगर

का वार्षिक उत्सव १३, १४, १५, मई को होगा जिसमें श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री के० नरेन्द्रजी, डा० रामगोपालजी शालवाले तथा आचार्य प्रणव शास्त्री के भाषण होंगे।

दान-सूची

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दान आर्य समाज स्थापना दिवस

१०) आर्यसमाज दाल मंडी मुरादाबाद
५) आर्यसमाज झालावाड़
२१) आर्यसमाज नैनीताल
८) आर्यसमाज मंडी
२)०६ श्री सेवाराम जी आर्य
ग्राम दिवालहेड़ी
२०) आर्यसमाज लुधियाना रोड
फीरोजपुर छावनी
४)६५ आर्य समाज मगोह
१०) आ० स० टमकौर
१०) आ० स० डिहुरी ग्राम सान
१०) आ० स० ३९१ बेगमबाग मेरठ
२१) आ० स० धारूर जि० बीड
२५) आ० स० सन्तनगर, नई दिल्ली
१५) आ० स० सक्कर (म०प्र०)
१) श्री जगदीश प्रसाद जी सिन्हा
कोओपरेटिव इन्सपेक्टर नूर सराय
जि० पटना
१०) आ० स० रेनाबाड़ी श्रीनगर
१५) आ० स० कोसीकलां
६) आ० स० बेवर (मैनपुरी)
१०) आ० स० इटारसी (म०प्र०)
१०) श्री बल्देव सूद जी
१ फीरोजपुर
११) आ० स० सतौली

२९२) १

दान वेद प्रचार

१-३-६६ से ३०-४-६६ तक

१०) श्री दयारूप सोमाराम जी
(सभा मन्त्री ला० रामगोपालजी द्वारा)
१०००) श्री सेठ बिहारीलाल सुखदेव
बल्देवाजी चाटी गली सोलापुर

१०१०)

दान अराष्ट्रिय प्रचार निरोध प्रचार

१-३-६६ से ३०-४-६६ तक

५) श्री गुमानसिंह जी C/O रूबी
जनरल इन्श्योरेन्स क०
दरियागंज, दिल्ली
११) आ० स० बाजना (मथुरा) द्वारा
श्री डा० रघुवीर शरण जी
अलीगढ़ द्वारा
२) श्री प० रामचरन जी शर्मा
ग्राम बामौली
२१) आर्य समाज हापुड़ (मेरठ)
५) श्री गुमानसिंह जी C O रूबी
जनरल इन्श्योरेंस क०,
दरियागंज दिल्ली

४४)

दान शुद्धि प्रचार

१०) श्री रामशरनदास जी एकाउन्टेन्ट
पंजाब नेशनल बैंक लि० हिसार
द्वारा श्रीनन्दलाल जी मन्त्री
आ० स० नगोरी गेट हिसार

दान-दाताओं को अनेक धन्यवाद

कृपया, सभी अवसरों पर सभा को वेदप्रचारार्थ दान देना न भूलें। आर्य समाज स्थापना दिवस का संगृहीत धन भी भेजने में शीघ्रता करें।

विभाजन नहीं !

आर्य युवक संघ, झामसी ने अपनी एक विशेष बैठक में कुछ तथाकथित नेताओं द्वारा "पश्चिमी उत्तर प्रदेश" एक अलग राज्य बनाने की मांग पर गम्भीर चिन्ता प्रकट की।

संघ ने केन्द्रीय सरकार से अपने एक प्रस्ताव द्वारा इस सरकार से राष्ट्र विरोधी मांगों के प्रति अत्यन्त कड़ा रुख अपनाने की मांग की।

आर्य बाल सम्मेलन

आर्यसमाज करोल बाग नई दिल्ली के उत्सव पर "बालक बालिकाओं" की भाषण प्रतियोगिता में ग्यारहवीं तक के छात्र छात्राओं ने 'आर्यसमाज" पर तथा मिडल तक के बच्चों ने महर्षि दयानन्द विषय पर भाषण दिये। लगभग ५० से ऊपर बच्चों ने पारितोषिक प्राप्त किये। सम्मेलन के संयोजक श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक थे।

आर्यसमाज, रायचूर (मैसूर)

का वार्षिक समारोह बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। समारोह में मध्य-दक्षिण आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० नरेन्द्र जी, श्री वेदप्रकाश जी एम० ए० श्री [illegible] शर्मा एम० ए० एल० एल० बी० तथा ओम्प्रकाश जी भजनोपदेशक के प्रभावपूर्ण भाषण हुए।

Suave
in
a
Suit

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सा म वे द

(मूल मंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित)

भाष्यकार श्री पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार
(स्नातक गुरुकुल कांगड़ी)

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार (४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थीं। तबसे इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है।

यह २८ पौंड सफेद कागज पर कपड़े की जिल्द और मूल्य ४ रुपये है भारी संख्या में मगवाइये। पोस्टेज पृथक।

●

हिन्दू राष्ट्र को सच्चा मार्ग दिखाने वाली
सर्वश्रेष्ठ धर्म पुस्तक

वैदिक-मनुस्मृति श्री सत्यकामजी

हिन्दी टीका सहित— हिन्दू धर्म ग्रन्थों में चारों वेदों के पश्चात् एक मात्र प्रमाणिक पुस्तक यही है। यद्यपि वेदों का समझना साधारण जनों के बस में नहीं, पर मनुस्मृति को नागरी पढ़ा हुआ व्यक्ति भी समझ सकता है। ४९८, पृष्ठ मूल्य ४॥) साढ़े चार

[illegible] सम्पूर्ण दोनों भाग

पं० हनुमान प्रसाद शर्मा

इस ग्रन्थ में वैदिक, लौकिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य आदि सभी विषयों के अच्छे से अच्छे दृष्टान्तों का संकलन किया है। संसार के अनेक महापुरुषों, सन्तों, राजाओं, विद्वानों एवं सिद्धों के अनुभूत तथ्यों का अनोखा समावेश है। सच तो यह है कि यह अकेला ग्रन्थ अभी श्रेणी के लोगों के सभी प्रकार की मानसिक पीड़ाओं को मार भगाने के लिए पर्याप्त है। कथावाचक कथा में, उपदेशक अपने प्रतिपाद्य विषय में और अध्यापक इसके प्रयोग से छात्रों पर मोहिनी डालते हैं। बालक कहानी के रूप में इसे पढ़कर मनोरंजन का आनन्द ले सकते हैं। वृद्ध इस ग्रन्थ के पन्ने-पन्ने में अपने भगवान् और उनके भक्तों की झांकी पा सकते हैं। माताये इसे पढ़कर अपने मतलब का ज्ञान प्राप्तकर सकती हैं। इस प्रकार सबका ज्ञान इस पुस्तक से बढ़ सकता है। पृष्ठ संख्या ८९८

सजिल्द, मूल्य केवल १०॥) साढ़े दस रुपया, डाक व्यय २) अलग।

उपदेश-मंजरी—स्वामी दयानन्द जी के उपदेश हर आर्य समाजों को अवश्य अध्ययन करने चाहिए। पूना नगर में दिए गये सम्पूर्ण व्याख्यान इसमे दिए गए हैं। मूल्य २॥) ढाई रुपये।

संस्कार विधि— इस पुस्तक में गर्भाधान से लेकर १५ संस्कार कहे हैं जो, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास इन चारों आश्रमों में क्रमानुसार करने होते हैं। मूल्य १॥) डेढ रुपये डाक खर्च अलग।

आर्यसमाज के नेता— आर्य समाज के उन आठ महान् नेताओं, जिन्होंने आर्य समाज की नींव रखकर हिन्दू जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मूल्य ३) तीन रु० डाक खर्च १॥, डेढ़ रुपये।

महर्षि दयानन्द—जिस समय हिन्दू धर्म अन्धकार में था, लोगों में अपोलपंथ बहुत बढ़ गया था उस समय स्वामी दयानन्दजी का जन्म हुआ और शिवरात्रि को महर्षि जी को सच्चा ज्ञान मिला। मूल्य ३)

कथा पच्चीसी—सतराम संत

जिसमें मनुष्य जाति का उद्धार करने के हेतु ही अनेक शास्त्रों में से भारत-भूषण स्वामी दर्शनानन्द जी ने उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद पच्चीस कथाओं का संग्रह किया है। हमने उनको और भी संशोधित एवं सरल बनाकर छापा है। मूल्य केवल १॥) डेढ रुपया डाक व्यय १।

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

१—अब तक सत्यार्थप्रकाश के कई संस्करण प्रकाशित हुए हैं।

२—इसकी दूसरी बड़ी विशेषता पेराग्राफों पर क्रमांक दिया जाना है।

३—अकारादिक्रम से प्रमाण सूची। पुस्तक का आकार १०×१३ इंच है। पृष्ठ संख्या ५८०, बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई क्लाथ बाइंडिंग - मूल्य लागत मात्र १५) पन्द्रह रुपये, एक साथ पांच कापी मंगाने पर ५०) पचास रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१—सांख्य दर्शन— मू० २.००
२—न्याय दर्शन— मू० ३ २५
३—वैशेषिक दर्शन—मू० ३.५०
४—योग दर्शन— मू० ६ ००
५—वेदान्त दर्शन— मू० ४ ५०
६—मीमांसादर्शन— मू० ६ ००

उपनिषद्प्रकाश-स्वामी दर्शनानन्दजी

इनमें लौकिक व पारलौकिक उन्नति की महत्वपूर्ण शिक्षाएं भरी पड़ी हैं। मूल्य ६.०० रु रुपया।

हितोपदेश भाषा श्री रामेश्वर 'अशान्त'

'उस पुत्र से क्या लाभ जिसने अपने कुल का नाम कलंकित किया है ऐसे पुत्र की माता यदि बांझ ही जाय तो उत्तम है' यही भावना पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन को सदा सताती थी। विद्वान् प० विष्णुशर्मा ने राजकुमारों को जो शिक्षा एवं नीति की आख्यायिकायें सुनाईं उनको ही विद्वान् प० श्री रामेश्वर 'अशान्त' जी ने सरल भाषा में लिखा है। मूल्य ३) तीन रुपया।

अन्य आर्य साहित्य

(१) विद्यार्थी शिष्टाचार	१.५०
(२) पंचतंत्र	३.५०
(३) आग ऐ मानव	१.००
(४) कौटिल्य अर्थशास्त्र	१०.००
(५) चाणक्य नीति	१ ००
(६) भर्तृहरि शतक	१.५०
(७) कर्तव्य दर्पण	१.५०
(८) वैदिक सन्ध्या	४.०० सैकड़ा
(९) वैदिक हवन मन्त्र	१०.०० सैकड़ा
(१०) वैदिक सत्संग गुटका	१५ ०० सैकड़ा
(११) ऋग्वेद ७ जिल्दों में	५६.००
(१२) यजुर्वेद २ जिल्दों में	१६.००
(१३) सामवेद १ जिल्द में	८.००
(१४) अथर्ववेद ४ जिल्दों में	३२.००
(१५) वाल्मीकि रामायण	१२ ००
(१६) महाभारत भाषा	१२.००
(१७) हनुमान जीवन चरित्र	४.५०
(१८) आर्य संगीत रामायण	५.००

हिन्दी के हर विषय की ५००० पुस्तकों की विस्तृत जानकारी वास्ते ४०० पृष्ठों की 'ज्ञान की कुन्जी' केवल १.२१ रुपया मनीआर्डर या डाक टिकट भेजकर प्राप्त करें।

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद, कृषि, बिजली, मोटर, पशुपालन, टेक्नीकल, डेरीफार्म, रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन [illegible]

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

शास्त्र-चर्चा

पूर्वजन्म का स्मरण

उमोवाच—

भगवन् मानुषाः केचिज्जाति स्मरण संयुताः। किमर्थममि ज्ञायन्ते जानन्तः पौर्वदैहिकम् ॥

उमा ने पूछा—भगवन्! कुछ मनुष्यों को पूर्वजन्म की बातों का स्मरण होता है। वे किस लिये पूर्व शरीर के वृत्तान्त को जानते हुए जन्म लेते हैं॥

श्री महेश्वर ने कहा —

तदहं ते प्रवक्ष्यामि शृणु तत्त्वं समाहिता। ये मृताः सहसा मर्त्या जायन्ते सहसा पुनः। तेषां पौराणिकोऽभ्यासः केचित् कालंहि तिष्ठति॥

देवि! मैं तुम्हें तत्त्व की बात बता रहा हूं, एकाग्रचित्त होकर सुनो। जो मनुष्य सहसा मृत्यु को प्राप्त होकर फिर कहीं सहसा जन्म ले लेते हैं, उनका पुराना अभ्यास या संस्कार कुछ काल तक बना रहता है।

तस्माज्जातिस्मरा लोके जायन्ते बोध संयुताः। तेषां विवर्धतां संज्ञा स्वप्नवत् सा प्रणश्यति॥ परलोकस्य चास्तित्वे मूढानां कारणं त्विदम्।

इसलिये वे लोक में पूर्वजन्म की बातों के ज्ञान से युक्त होकर जन्म लेते हैं और जाति स्मरण (पूर्वजन्म का स्मरण करने वाले) कहलाते हैं। फिर ज्यों ज्यों वे बढ़ने लगते हैं, त्यों-त्यों उनकी स्वप्न-जैसी वह पुरानी स्मृति नष्ट होने लगती है। ऐसी घटनाएं मूर्ख मनुष्यों को परलोक की सत्ता पर विश्वास कराने में कारण बनती है।

वैदिक सन्ध्या

(स्वतन्त्र भावानुवाद)

कवि—वीरेन्द्र 'शलभ', अमरोहा जिला—मुरादाबाद

आचमन मन्त्र—

ओं शंनो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः॥

सब मे व्यापक हे प्रभो मुझे यह वर दो,
आनन्द और सुख से निज जीवन भर दो,
नित ही हम पर कल्याण करो हे प्रभुवर,
सुख की वर्षा बहुदिशि मे करिए हम पर।

इन्द्रिय स्पर्श—

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः।
ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कंठः।
ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतलकरपृष्ठे॥

है यही प्रार्थना तुमसे अन्तर्यामी,
ज्ञान, कर्म इन्द्रिय यह बनें न पापी,
भटक न सास वाणी औ दृष्टि हमारी,
मन, बुद्धि, कान, बाहे होवे न कुराही।

मार्जन मन्त्र—

ओं भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः।
ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये।
ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः।
ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र॥

हे दयानिधे पावन इन्द्रियां बनाओ,
मन और बुद्धि म शुभ सकल्प उगाओ,
मेर यह हाथ पैर होवें बल शाली,
वाणी औ दृष्टि रहे मेरी यश वाली।

अघमर्षण मन्त्र

ओं ऋतं च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥१॥

ईश्वर के सामर्थ्य स हुआ वेद का ज्ञान,
काय रूप ससार की रचना हुई महान,
उस ईश्वर की शक्ति ये सागर की जलधार,
कर देना पल मे वही जगती का सहार।

(क्रमश)

परिचय शीघ्र भेजें।

आर्य समाज-परिचयांक

भारत और भारत से बाहर चार हजार से अधिक आर्य समाजें हैं। लाखों सदस्य हैं। करोड़ों रुपया व्यय करते हैं।

किन्तु सर्व साधारण को पता नहीं!

इसमें आर्यसमाज की सदस्य संख्या, आय-व्यय, मन्त्री का चित्र और प्रधान का नाम इस अङ्क में देंगे

यह विशेषांक भी विशेष ही होगा

हजारों मन्त्रियों के चित्रों सहित यह विशेषांक आर्य जगत् का दर्शनीय अङ्क होगा।

इसका मूल्य केवल १)१० पैसा होगा

प्रत्येक आर्य समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री महोदय अपनी संस्था का परिचय और चित्र भेजने में शीघ्रता करें।

इस महान अंक पर २५-३० हजार रुपया व्यय होगा। सभा पर इतनी भारी धनराशि का भार न पड़े और सुगमता से अंक प्रकाशित हो जाय इसके लिए मन्त्री महोदयों से, कम से कम १० अंक लेने और उसके ११) अग्रिम भेजने की प्रार्थना की थी। हर्ष की बात है कि आर्यसमाजों के मन्त्री महानुभावों ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की और धन भेज रहे हैं।

आप जिस किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री हैं उसका परिचय, अपना नाम और चित्र तथा प्रधान का नाम भेजने मे देर न करें। प्रबन्धक

आर्यसमाज परिचयांक जून में प्रकाशित होगा। ३१ मई तक आने वाले परिचय ही इस अङ्क में स्थान पा सकेंगे।

आर्य जनों से निवेदन

१—आर्य समाज परिचयांक तो हम प्रकाशित करेंगे ही किन्तु आर्य शिक्षा प्रसारांक के प्रकाशित करने की पूरी भी तय्यारी है।

२ हमारे पास लगभग ४०० आर्य शिक्षा संस्थाओं के पते हैं इनसे विवरण मांगा था। हर्ष की बात है कि लगभग १५० शिक्षा संस्थाओं के परिचय और मुख्याचार्यों के चित्र अब तक आ गए हैं।

३ आर्य समाज अथवा आर्य जनों द्वारा सञ्चालित जो शिक्षा संस्थाएं हैं उनमें कुछ ऐसी संस्थाएं भी होंगी जिनका हमे ज्ञान न हो। अत जितनी शिक्षा संस्थाएं आपकी जानकारी मे हो उनका पता भेजें। फिर उन से परिचय प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे।

४—हमारी हार्दिक इच्छा है कि इस विशेषांक मे छपने से कोई भी आर्य शिक्षा संस्था वंचित न रह जाय।

५—आर्य समाज परिचयांक के लिए अब तक लगभग ५०० चित्र और परिचय आ गए हैं। जिन मन्त्री महोदयों ने अपने चित्र परिचय नहीं भेजे-वह अब भेजने मे विलम्ब न करे।

६ सार्वदेशिक की ग्राहक संख्या दिनों-दिन बढ़ रही है यह सब आपके पुरुषार्थ का फल है किन्तु अभी सन्तोषजनक नहीं हैं आप इतनी सहायता करें कि

– आपकी आर्य समाज के अनेक सदस्य ग्राहक बनें, इसका एक ही प्रकार है वह यह कि आप कम से कम ५ प्रति हर सप्ताह मगा लें, अपने सदस्यों को दें १५ पैसे लें। एक महीने के पश्चात् फीस काट कर मनियार्डर भेजते रहें। यह बहुत ही सरल प्रकार है। कृपया इस पर आज ही ध्यान दें।

७—यदि आपके पास बलिदान अंक, बोधांक और साप्ताहिक पत्र का धन शेष है तो वह भी भेजने मे शीघ्रता करे।

८ सार्वदेशिक मे विज्ञापन भी भिजवाने का ध्यान रखें।

९ हर बृहस्पतिवार को सार्वदेशिक डाक की भेंट करते हैं जो शनीवार तक आपको मिलना चाहिए किन्तु यदि देर मे मिले तो हमे दोषी न समझते हुए भी सूचित करते रहें दुबारा भेज देंगे।

— प्रबन्धक

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

गो रक्षा की मांग साम्प्रदायिक नहीं

सरकार का सबसे पहला कर्त्तव्य होता है संविधान की रक्षा करना। परन्तु भारत सरकार अपने इस कर्त्तव्य के प्रति कितनी उदासीन है, यह देखकर आश्चर्य होता है। अपने मन्तव्य की पुष्टि के लिए हम दो उदाहरण देंगे।

पहला उदाहरण है गो-रक्षा का और दूसरा उदाहरण है हिन्दी को राजभाषा के पद पर पूर्णरूप से प्रतिष्ठित करने का। इन दोनों विषयों में सरकार ने सदा शोचनीय उपेक्षा का ही परिचय दिया है।

जहां तक गो-रक्षा और गो-वध-निषेध का प्रश्न है, चिरकाल से भारत की जनता इसकी मांग करती आ रही है और भारतीय संविधान द्वारा जनता की यह मांग सर्वथा परिपुष्ट भी है। किन्तु सरकार ने इस मांग की ओर आज तक कभी कान नहीं दिया। सन्त फतहसिंह द्वारा अनशन की धमकी दिए जाने पर पंजाबी सूबे को स्वीकार कर लेने वाली सरकार यदि गो-रक्षा सम्बन्धी व्यापक आन्दोलन से भी विचलित नहीं होती तो उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सरकार के सोचने की दिशा क्या है।

निस्संदेह गाय हिन्दुओं के लिए धर्म का प्रतीक बन गई है, परन्तु यदि इसी कारण गोवध-निषेध की मांग को साम्प्रदायिक कहा जाए तो यह बहुत बड़ी भूल होगी। हम यहां इस प्रश्न पर धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं, प्रत्युत राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार कर रहे हैं। और कांग्रेस सरकार इसके राष्ट्रीय स्वरूप को न समझती हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। यदि कांग्रेस गाय को साम्प्रदायिकता का अंग मानती होती तो दो बैलों की जोड़ी को अपना चुनाव-चिह्न कभी स्वीकार न करती! यह भी कैसा विपर्यास है कि चुनाव तो लड़ा जाता है बैलों के नाम पर और गो-रक्षा या गो-वध निषेध के प्रति सरकार की संचेष्टता कहीं नजर नहीं आती क्या यह जनता को धोखा देना नहीं है।

धार्मिक प्रसंग की बात छोड़िए, वेदादि शास्त्रों में गौ की महिमा का कैसा वर्णन किया गया है और गो-वध करने वालों के लिए कैसे दण्ड की व्यवस्था की गई है, इसको भी भूल जाइए। हम पूछते हैं कि भारत जैसे कृषि-प्रधान देश की खाद्य समस्या को हल करने के लिए गो-रक्षा के सिवाय और चारा क्या है? गो-माता जहां अपने दूध से जनता का पालन करती है, वहां गो-जाये बछड़े और बैल खेतों में हल चला कर अन्न पैदा करते हैं। देश के पश्चिमाभिमुखी अर्थ-शास्त्री, विदेशों से सहायता मांग कर अपनी पंचवर्षीय योजनाओं को पूरा करने के स्वप्न देखने वाले योजना शास्त्री और दूसरों के आगे अपना भिक्षा-पात्र फैलाते हुए तनिक भी लज्जा अनुभव न करनेवाले राजनीति के पण्डित कुछ भी क्यों न कहें, किन्तु सच्ची बात यह है कि इस समय देश में जो अन्न-संकट उपस्थित है और विभिन्न राज्योंमें अकालकी जो छाया गहरी होती जा रही है उसका एक मात्र कारण गो-धन की उपेक्षा ही है। अब तक सरकार ने गो-धन की जो भयंकर उपेक्षा की है, दैव ने अन्न-संकट के रूप मे उसी उपेक्षा का दण्ड देश को दिया है।

सरकार ट्रैक्टरों से और विदेशों से आयातित रासायनिक खाद से अनाज की पैदावार बढ़ाने की बात करती है, परन्तु उपस्थित को छोड़कर अनुपस्थित के पीछे भागने वालों के लिए नीतिकारों के शब्दकोष में केवल एक ही शब्द है और वह शब्द है 'मूर्ख'।

इसके अलावा भारत मे खेतों की जैसी स्थिति है उसको ध्यान में रखते हुए ट्रैक्टर और रसायनिक खाद पर अधिक जोर देना निरी अदूरदर्शिता है। मूल समस्या है सिंचाई की। करोड़ों रुपए की लागत से बनने वाले बड़े बड़े बांधों की योजनाओं के चक्कर में सरकार छोटी योजनाओं को भूल गई, इसने कूओं और तालाबों पर ध्यान नहीं दिया और बेचारे देहाती लोग सिंचाई के पानी को तरसते रहे हमारे योजना-शास्त्री विदेशी वातावरण, विदेशी परिवेश, विदेशी समस्याओं और उनके विदेशी समाधान से जितने परिचित हैं, उतने भारत के इतिहास और भूगोल से नहीं। अपने वातानुकूलित कमरों में बैठकर विदेशी विशेषज्ञों द्वारा मुख्यतः अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए लिखी गई अंग्रेजी की किताबों के आधारपर हमारे योजना-शास्त्री अपनी कागजी योजनाएं बनाते हैं किन्तु जब अमल के मैदान से उन का वास्ता पड़ता है तब वे योजनाएं सदा गलत, भ्रामक और अयथार्थ सिद्ध होती हैं। हम नहीं जानते कि हमारे खाद्यमंत्री और कृषि मन्त्रालय में काम करने वाले सरकारी कर्मचारी भारतीय कृषिकी अवस्थाओं से कहां तक परिचित हैं। किन्तु देश को इस समय जिस अन्न-संकट की दुःखद विभीषिका का सामना करना पड़ रहा है वह तार स्वर से उनके अज्ञान की घोषणा करती है।

विदेशी मुद्रा के संकट की भी अक्सर चर्चा की जाती है किन्तु गो-धन के स्थान पर ट्रैक्टरोंको इस्तेमाल करने से और गोबर जैसी उपयोगी देसी खाद के स्थान पर रासायनिक खाद के इस्तेमाल से हमें कितनी बहु-मूल्य विदेशी मुद्रा का अपव्यय करना पड़ेगा—यह बात हमारे राजनीतिक नेताओं की समझ में नहीं आती। हमें लगता है कि उनके मस्तिष्क का कोई पेच अवश्य ढीला है जो उन्हें सदा गलत दिशा से ही सोचने को मजबूर करता है। देश को आत्म-निर्भर बनाने के लिए जितने नारे लगाए गए हैं वे सब थोथे नारे मात्र रह जाते हैं जब हम देखते हैं कि सरकार के अधिकांश काम देश को आत्मनिर्भरता से विपरीत दिशा में ले जाने वाले हैं।

इससमय अनेक गण्य-मान्य साधु-महात्मा गो-रक्षा और गो-वध निषेध की मांग की पूर्ति के लिए दिल्ली जेल में अनशन कर रहे हैं। कइयों को अनशन करते हुए पांच सप्ताह से अधिक गुजर चुके हैं और उनकी दशा चिन्तनीय हो गई है, किन्तु सरकार के कान पर जूं नहीं रेंग रही। सन्त-फतह सिंह द्वारा अनशन की केवल धमकी दिए जाने पर ही जो सरकार पंजाबी सूबे की अनुचित मांग को मान सकती है वही सरकार अनशन करने पर भी इन साधुओं की सर्वथा उचित मांग को भी मानने को तैयार नहीं होती यह देखकर सरकार के लिए केवल एक ही विशेषण सूझता है और वह विशेषण है 'कूड़मग्ज'। अनुचित को मानना और उचित को न मानना—कूड़मग्ज की यही सबसे बड़ी निशानी है।

हिन्दी की उपेक्षा

भारतीय संविधान की जैसी उपेक्षा गो-धन के सम्बन्ध में हुई है वैसी ही उपेक्षा हिन्दी के संबन्ध में भी हुई है। जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ था तब संविधान सभा ने राष्ट्रीयता की भावना से अनुप्राणित होकर राष्ट्र की एकता के लिए सबसे बड़े आधार के रूप में हिन्दी को सर्व-सम्मतिसे राजभाषा के पद पर अभिषिक्त करने का फैसला किया था। अहिन्दी-भाषियों की असुविधा को ध्यान में रखते हुए इस निश्चय को तुरन्त क्रियान्वित करने के बजाए उस समय पन्द्रह वर्ष की अवधि नय की गई थी ताकि इस बीच हिन्दी से अनभिज्ञ लोग अच्छी तरह हिंदी सीख लें और २६ जनवरी १९६५ से हिन्दी बाकायदा राजभाषा बन जाए।

कैकेयी और मन्थरा की मन्त्रणा से मर्यादा पुरुषोत्तम राम को १४ वर्ष का बनवास मिला था और इस अवधि में रावण की लंका की ईंट से ईंट बजाकर और सीता को उसकी कैद से छुड़ा कर जब राम अयोध्या लौटे तब खूब ठाठ-बाट के साथ उन का राज्याभिषेक हुआ। सन् १९६५ तक की यह १५ वर्ष की अवधि भी हिन्दी के बनवास की अवधि मानी जा सकती है। परन्तु १४ वर्ष के बनवास केपश्चात् राम का तो राज्याभिषेक हो गया था और वे राजा बन गए थे किन्तु हिन्दी आज भी राज-सिंहासन से उतनी ही दूर है जितनी अब से १५ साल पहले थी।

क्या हिन्दी का यह बनवास स्थायी बनगया है। इस विषय में सरकार की शिथिलता को देखते हुए तो ऐसा ही प्रतीत होता है। इस समय जितने भी व्यक्ति सरकार के उच्च पदों पर आसीन हैं वे मनसा वाचा-कर्मणा-ब्रिटिश साम्राज्य की उपज हैं और अंग्रेजों से कहीं अधिक अंग्रेजी के भक्त हैं। अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य को चिरस्थायी बनाने के लिए जो एक विशिष्ट अंग्रेजी-भक्त वर्ग तैयार किया था इस समय शासन-संचालन के समस्त सूत्र उसी वर्ग के हाथ में हैं। यह वर्ग नहीं चाहता कि किसी भी तरह उसको प्राप्त सुख-सुविधाओं में कुछ भी अन्तर आवे, भले ही इससे राष्ट्र की आत्मा की हत्या क्यों न होती हो। संसार का कोई ऐसा देश नहीं है जहां की राजभाषा कोई विदेशी भाषा हो। भारत ही वह अभागा देश है जहां विदेशी शासन समाप्त हो जाने पर भी विदेशी भाषा अभी तक दनदनाती है।

अंग्रेज लोग अपने २०० साल

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सामयिक-चर्चा

अनुकरणीय उदाहरण

आर्य समाज हरदोई के मंत्री महोदय अपने ३-५-६६ के पत्र में जो उन्होंने सार्वदेशिक सभा को भेजा है, लिखते हैं:—

"हम लोग समय २ पर पढ़ते सुनते रहते हैं कि राजस्थान व मध्य प्रदेश में ईसाई लोग योजनाबद्ध ढंग से ईसाई-प्रदेश के निर्माण के लिए प्रयत्नशील हैं।"

हरदोई आर्य समाज ने अपनी केन्द्रीय सार्वदेशिक सभा को इस कार्य में सहयोग देने का निर्णय किया है। निर्देश प्राप्त होने पर एक कार्यकर्ता पर आने वाले व्यय को यह समाज वहन करेगा। सब समाजों के सहयोग से ईसाइयों की गतिविधियों का सम्यक रूपेण निराकरण हो सकता है।

आर्य समाज हरदोई का यह निर्णय बड़ा महत्वपूर्ण और देश के समाजों के लिए अनुकरणीय है। यदि सम्पन्न आर्य समाजें एक २, दो दो प्रचारकों का व्यय भार उठा लें तो ईसाई-प्रचार निरोध का कार्य बहुत बढ़ सकता है। क्या हम आशा करें कि अन्य आर्यसमाजें शीघ्र ही इस दिशा में कदम उठायेंगी और सार्वदेशिक सभा को अपने व्यय पर एक-एक दो-दो उपदेशक देने का निर्णय करेंगी। कम सम्पन्न समाजें आपस में मिल कर अपने यहां सार्वदेशिक सभान्तर्गत अराष्ट्रिय प्रचार निरोध समिति के मार्ग प्रदर्शन में आवश्यकतानुसार प्रचार का प्रबन्ध कर सकती हैं या मिलकर उपदेशकों के व्यय का प्रबन्ध करके धन सभा के निर्णय पर रख सकती हैं। अनेक आर्यसमाजें ऐसी हैं जिनके किराए या सम्पत्ति की आय इतनी है कि वे आसानी से ३-३, चार-चार प्रचारकों के व्यय का प्रबन्ध कर सकती हैं। ऐसी समाजों को विशेष रूप से इस दिशा में अपने कर्तव्य का पालन करना है।

प्रजातन्त्र

गत अप्रैल मास में नई दिल्ली में भारत में प्रजातन्त्र की गति विधि पर विचार करने के लिए तीन दिन का एक सेमीनार हुआ जिसका आयोजन बार एसोसियेशन आव इंडिया के द्वारा हुआ था।

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्रीयुत ए० के० सरकार ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि यद्यपि हमारे अधिकांश लोग साक्षर नहीं हैं तथापि उनमें सूझ-बूझ और बुद्धिमत्ता की कमी नहीं है। यदि राजनैतिक दल अपने निजी स्वार्थों की पूर्त्यर्थ प्रचार करके उनमें मति-भ्रम पैदा न करें तो वे अपने निर्णयों में भूल नहीं कर सकते। भारत जैसे देश में जो आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है, जहां जात-पात, सम्प्रदाय और मजहब की भावना प्रबल है वहां यदि हमारा शिक्षित वर्ग मुख्यत. राजनैतिक दल सही मार्ग प्रदर्शन करें तो निश्चय ही हमारी प्रजातन्त्र की पद्धति बड़ी महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।

राजनैतिक दलों के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए माननीय न्यायाधीश महोदय ने प्रकट किया कि उनकी संख्या कम होनी चाहिए। वे सुसंगठित एवं अनुशासन बद्ध होने चाहिएं। इसके साथ ही उनका पुरोगम सुस्पष्ट होना चाहिए और वह आकर्षक नारों के स्थान में व्यावहारिकता से ओत-प्रोत होना चाहिए। उनमें आगे देखने की क्षमता होनी चाहिए और देश-हित को प्रमुखता प्राप्त रहनी चाहिए।

श्री० एम० सी० सीतलवाड ने अपने निबन्ध में चुनावों को सस्ता बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। ऐसा करने से व्यापारिक संगठनों पर पार्टियों के धन देने पर अंकुश लगने में सहायता मिलेगी और राजनीति पर छाए हुए धन का प्रभाव भी कम हो जायगा। उन्होंने चुनाव की समस्त पद्धति को सुगम बनाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया जिससे कि उसमें व्याप्त भ्रष्ट-तत्त्व निर्मूल हो जायं। उनके मतानुसार मत-दान प्रणाली में भी सुधार करना होगा जिससे कि पार्टी के लिए प्राप्त मतों और जीती हुई सीटों में व्याप्त घोर विषमता दूर हो जाय। यदि कोई पार्टी कुल मतों की दृष्टि से अल्प मत में रहे और पार्लियामेन्ट तथा राज्य विधान मण्डलों में उसका प्रबल बहुमत हो तो ऐसा होना अप्रजातांत्रिक है। इस देश में प्रजातन्त्र पद्धति के सुसंचालन में सबसे बड़ी बाधा यह है कि लोग राष्ट्र-हित की बात बहुत कम सोचते हैं और देश-हित को अपने निजी हितों से ऊपर बहुत कम रखते हैं।

श्री० सी० के० दफ्तरी ने अपने भाषण में बताया कि प्रजा में राष्ट्रियता की भावना का खेद जनक अभाव है और उनमें क्षेत्रीय निष्ठाएं स्थिररूप ग्रहण करती जा रही हैं। कुछ लोगों की धारणा है कि केन्द्र दुर्बल और प्रदेश सबल होते जा रहे हैं। केन्द्र को राष्ट्र की सुरक्षा और जन-सामान्य की सुख-सुविधा के लिए अधिक प्रभावशाली नेतृत्व करना होगा तभी राष्ट्रियता की भावना प्रबल हो सकती है। केन्द्र कभी भी ऐसी राजनैतिक व्यवस्था स्वीका' नहीं कर सकता जिससे देश की प्रभुसत्ता और प्रादेशिक अखण्डता विकृत होती हो। यह बात केन्द्र से पृथक् होने वालों पर स्पष्ट रहनी चाहिए। केन्द्र उसी सीमा तक शक्तिशाली होगा और राष्ट्रहित में कार्यरत रहेगा जिस सीमा तक प्रशासक दल क्षेत्रीय हितों एवं निष्ठाओं के गठबन्धन से पृथक् रहकर सच्चा राष्ट्रिय सस्थान बनेगा, विरोधीदल क्षेत्रीय एव साम्प्रदायिक भावनाओं का दोहन करने से अलग रहेंगे और देश का बुद्धिजीवी वर्ग राष्ट्रिय एकता की वृद्धि में अपना योग देगा। तोड़-फोड़ एवं हिंसा में विश्वास रखने तथा उसको भड़काने वाले साम्प्रदायिक दल, पृथक्तावादी संगठन एव क्रान्तिकारी संगठन कानून द्वारा भग किए जा सकते हैं परन्तु राष्ट्रिय एकता की लड़ाई लोगों के दिमागों में लड़ी और जीती जानी है जिसके लिए अपेक्षित प्रयास नहीं हुआ है।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

(पृष्ठ ३ का शेष)

के दमनकारी शासन में भारत के दो प्रतिशत से अधिक लोगों को अंग्रेजी नहीं सिखा सके। इस समय ये दो प्रतिशत लोग ही भारत को अपने स्वार्थों के पंजे मे जकड़े हुए हैं और ९८ प्रतिशत भारतीय जनता निरीह होकर पिस रही है। यदि इन दो प्रतिशत लोगों का बस चलता तो ये अंग्रेजों को भारत से जाने भी न देते इनके मानसिक धरातल पर अंग्रेज और अंग्रेजी का मोह इस कदर छाया हुआ है कि ये उन दिनों से विलग होने की बात स्वप्न में भी सोच नहीं सकते।

हमें अंग्रेजी से शत्रुता नहीं है। अंग्रेजी ही क्यों, हमें ससार की किसी भी भाषा से वैर नहीं है। और भाषा ही क्यों, मानवता के नाते हम अंग्रेजों को भी अपना दुश्मन मानने को तैयार नहीं। परन्तु जैसे हम अपने देश में विदेशियों का शासन बर्दाश्त नहीं कर सकते वैसे ही विदेशी भाषा का शासन भी हमारी बर्दाश्त के बाहर है। भारत में तो भारतीय भाषाओं का ही शासन चलना चाहिए, किसी विदेशी भाषा का नहीं। परन्तु आज उचित पोषण के अभाव में ९८ प्रतिशत जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली भारतीय भाषाएं पद-दलित हैं और शोषित हैं। उनका समस्त जीवन-रस चूसकर अंग्रेजी दिन-प्रतिदिन परिपुष्ट होती जा रही है।

स्वतन्त्रता प्राप्त करने से पहले अंग्रेजी जैसी अराष्ट्रीयता की द्योतक थी वैसी अराष्ट्रीयता के तत्व उसमें आज भी विद्यमान हैं और देश में जब तक अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है तब तक केवल हिन्दी ही नहीं, कोई भी भारतीय-भाषा पनप नहीं सकती। इस समय समस्त भारतीय भाषाओं का एक ही सांझा मोर्चा होना चाहिए और वह मोर्चा है अंग्रेजी को हटाना। जिस दिन बाल खींच कर श्री-अंग्रेजी को राज-सिंहासन से गिरा दिया जाएगा, उसी दिन भारतीय भाषाओं को उस रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए आगे आने का अवसर मिलेगा। जब तक अंग्रेजी इस पद से हटाई नहीं जाती तब तक समस्त भारतीय भाषाऐं उसकी चेरी ही बनी रहेंगी। और जिस दिन भारतीय भाषाएं अपना उचित अधिकार प्राप्त करेंगी उस दिन हिन्दी भी अन्त:प्रान्तीय व्यवहार की भाषा के रूप में संविधान द्वारा प्रदत्त अपना राजभाषा का उचित पद प्राप्त करके रहेगी। वह दिन कबतक और कितनी जल्दी आता है, यह सरकार के हाथ में है; और सरकार इस तथ्य को कितनी जल्दी समझती है, यह जनता के हाथ में है।

कुरान और हजरत मूसा

(आचार्य डा० श्रीराम आर्य, कासगंज उ० प्र०)

हजरत मूसा यहूदी व इस्लाम के एक प्रभावशाली पैगम्बर माने जाते हैं। ईसाइयों की बाइबिल में भी उनके बारे में यथेष्ट वर्णन मिलता है। वर्तमान लेख में हमें कुरान शरीफ में जो उनका वर्णन मिलता है वह उपस्थित करते हैं। इससे पाठकों को उनकी स्थिति का परिचय मिल सकेगा।

मूसा ने कहा कि ए फिरऔन ! मैं दुनियां के परवरदिगार का भेजा हूं। १०४।...... मैं तुम्हारे परवरदिगार से करामात लेकर आया हूं... १०५। (फिरऔन बोला) कि अगर तू कोई करामात ले कर आया है, सच्चा है तो वह दिखाकर दिखा। १०६। इस पर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी, तो क्या देखते हैं कि वह जाहिरा एक अजगर हो गई। १०७। और अपना हाथ निकाला तो वह सफेद दिखाई देने लगा। १०८। फिर औन के लोगों में से जो दरबारी थे कहने लगे कि यह तो बड़ा होशियार जादूगर है। १०९। चाहता है कि तुम को तुम्हारे देश से निकाल बाहर करे तो क्या राय देते हो। ११०। सब ने मिल कर कहा कि मूसा और उसके भाई हारून को इस वक्त ढील दे और गांवों में कुछ हरकारे भेजिये। १११। कि तमाम जादूगरों को आप के सामने ला हाजिर करें। ११२। निदान जादूगर फिरऔन के पास हाजिर हुए और कहने लगे कि अगर हम जीत जाय, तो हम को इनाम मिलना चाहिये। ११३। जादूगरों ने कहा ऐ मूसा ! या तो तुम अपना डण्डा डालो और या हम ही डालें। ११५। मूसा ने कहा तुम ही डालो। जब उन्होंने अपनी (लाठियां और रस्सियां) डाल दीं कि चारों तरफ सांप ही सांप दिखाई पड़ने लगे और उन को भय में डाल दिया और बड़ा जादू लाये। ११६। और हमने मूसा की तरफ खुदाई पैगाम भेजा कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो। (मूसा ने) लाठी डाल दी और क्या देखते हैं कि जादूगरों ने जो झूठ मूठ बाना खड़ा किया था उसको वह निगलने लगा। ११७। पास फिरऔन और उसके लोग अखाड़े में हारे और जलील हो गये। ११९।—(कुरान पारा ९ सूरे आराफ)।

(खुदाने कहा) मूसा तुम्हारे हाथ में क्या है। १७। मूसा ने कहा, यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लगाता हूं, और इसी से अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूं, और इसमें मेरे और भी मतलब है। १८। फर्माया, ए मूसा, उसको जमीन पर डाल दे। १९। चुनांचे मूसा ने लाठी डाल दी तो देखते क्या हैं कि वह एक भागता हुआ सांप बन गई। २०। फर्माया, इसे पकड़ लो और डरो मत, हम इसको वही पहिली हालत कर देंगे। २१। और अपने हाथ को सिकोड़ कर अपनी बगल में रक्खो और फिर निकालो तो वह बिना किसी बुराई के सफेद निकलेगा, यह दूसरा चमत्कार है। २२। (कुरान सूरे ताहा पा० १६)।

"मूसा ने (फिर औन बादशाह से) कहा, अगर मैं तुमको एक खुला चमत्कार दिखाऊं। ३०। (फिर औन ने) कहा अगर तू सच्चा है तो ला दिखा। ३१। इस पर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह जाहिरा एक सांप है। ३२। और अपना हाथ बाहर निकाला तो निकलने के साथ सब देखने वालों की नजर में बड़ा चमकरहा था। ३३। (नोट-इसमें औन जादूगरों वाली ऊपर की कहानी पुनः दी है) और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि हमारे बन्दों (इस्राईल की सन्तानों को रातों रात निकाल ले जा, क्योंकि तुम्हारा पीछा किया जावेगा। ५२। तो दिन निकलते २ फिर औन के लोगों ने इस्राइल के बेटों का पीछा किया। ६०। फिर हमने मूसा को हुक्म दिया कि अपनी लाठी दरिया पर दे मारो। चुनांचे (मूसा ने दे मारी) दरियाफ्ट गया, और हर एक टुकड़ा गोया एक बड़ा पहाड़ था। ६३। और हमने मूसा और जो लोग उसके पास थे बचा लिया (यानी वे दरिया के पार चले गये) ६५। फिर दूसरों (फिर औन वालों) को डुबो दिया। ६६। इसमें एक चमत्कार है और फिर औन के लोगों में अकसर ईमान लाने वाले न थे। ६६। (कुरान सूरे सुअरा पा० १९)।

(खुदा ने कहा ऐ मूसा) मैं जोरावर हिकमत वाला हूं। ९। और अपनी लाठी डाल। तो जब (मूसा) ने देखा कि लाठी चल रही है मानिन्द जिन्दा सांप के तो पीठ फेर कर भागे और पीछे न देखा। (हमने फर्माया) मूसा डरो मत, हमारे पैगम्बर डरा नहीं करते। १०: और अपना हाथ अपनी छाती पर रख, फिर निकालो, तो वह बेरोग सफेद निकलेगा, और फिरऔन और उसकी कौम के लोगों की तरफ यह नये चमत्कार हैं कि वे अन्यायी हैं। ११। (कु० सूरे नम्ल पा० १९)।

(फिर फिरऔन बादशाह) इस्राइल के वंश में लड़कों को मरवा देता था और लड़कियों को जिन्दा रखता था।४। हमने मूसा की मां को हुक्म दिया कि उसको (बच्चे को) दूध पिलाओ कि जब उसकी बाबत डर हो तो उसको नदी में डाल दे, और डर न करना, और न रंज करना हम इनको फिर तुम्हारे पास पहुंचा देंगे, और इनको पैगम्बरों में से बनावेंगे। ७। तो फिरऔन के लोगों ने उस बहते को उठा लिया।८। और फिरऔन ने उसकी परवरिश को धाय तलाश की तो मूसा की माता को ही धाय बनाया गया और मूसा की परवरिश होने लगी (आयत ९ से १३ तक का सारांश)। मूसा ने लड़ाई में एक वैरी को घूंसे से मार दिया और पकड़े जाने की खबर पा कर डरके मारे वहां से भाग निकला। (आयत १५ से २८ तक का सारांश) मूसा जब भागते २ मदीयन गांव के कुए पर पहुंचा तो वहां दो औरतें मिलीं। वे उसे अपने घर ले गईं। उनमें से एक के साथ मूसा की शादी हो गई। (आयत २२ से २८ तक का सारांश) मूसा वहां कुछ काल रह कर बीवी लेकर चल दिये। 'तूर' पहाड़ की तरफ से उसे आग दिखाई दी। मूसा ने अपने घर के लोगों से कहा कि तुम (इसी जगह) ठहरो। मुझे आग दिखाई दी है। शायद वहां से तुम्हारे पास कुछ खबर लाऊं, या आग की एक चिंगारी लेता आऊं ताकि तुम तापो। २९। फिर जब मूसा आग के पास पहुंचा तो उस पाक जगह मैदान के दाहिने किनारे के दरख्त से उसे आवाज सुनाई दी कि मूसा, हम संसार के पालन करने वाले अल्लाह हैं। ३०। और यह कि तुम अपनी लाठी जमीन पर डाल दो जब लाठी को डालो और इसको इस तरह चलते हुए देखा कि गोया वह सांप है तो पीठ फेर भागा और पीछे को न देखा। (हमने फर्माया) मूसा आगे आओ और डर न करो। तू बे खटके है। ३१। अपना हाथ अपने गिरह-बान के अन्दर रखो (और फिर निकालो) तो वह बिना किसी बुराई के सफेद निकलेगा...। सारांश लाठी और सफेद हाथ दोनों चमत्कार खुदा की तरफ से दिये हुए हैं...... ३२। (कुरान सूरे कसस पा २०)

(सारांश) फिरऔन बादशाह इस्राइल के खानदान में हर लड़के को पैदा होते ही मरवा देता था। खुदा ने मूसा के पैदा होने पर उसकी मां से मूसा को नदी में डलवा दिया था। जब बच्चा बहने लगा तो फिरऔन के लोग उसे उठा कर ले गये और राजा को दिया। रानी ने धाय की खोज की तो मूसा ने किसी धाय का दूध न पिया। फिर जब मूसा की मां धाय बन कर आई तो मूसा ने उसी एक का दूध पिया। बड़े होने पर मूसा का आदमी से झगड़ा हो गया। मूसा ने उसे मार डाला। जब लोगों ने मूसा को पकड़ना चाहा तो मूसा खबर मिलने पर भाग गया। रास्ते में एक कुएं पर दो औरतें उसे मिलीं वह उसे घर ले गईं। मूसा की शादी एक से हो गई। कुछ दिन बाद मूसा वहां से चल दिया। उसे मार्ग में आग दिखाई दी। मूसा वहां गया तो उसे खुदा मिल गया। खुदा ने उसे दो चमत्कार दिये। उसे बताया कि तेरी लाठी जमीन पर डालते ही सर्प बन जावेगी, उठा लेने पर लाठी बन जावेगी। हाथ बगल में से निकालने पर सफेद दीखेगा। इन दोनों चमत्कारों को दिखा कर मूसा ने फिरऔन बादशाह के जादूगरों को जीत लिया। केवल इतनी सी कहानी को कुरान में बार २ लिखा गया है जो ऊपर दिया है।

(शेष ६ पेज पर)

परिवार-नियोजन : एक मीठा विष है

राष्ट्र की और भी महान् समस्या बड़े वेग के साथ जो देश मे इस समय फैलती जा रही है, वह परिवार-नियोजन की है। परिवार-नियोजन के विषय मे प्रारम्भ से ही आर्य समाज इस मत का है कि इससे दो हानिया स्वाभाविक होगी। पहली हानि तो व्यभिचार वृद्धि की होगी क्योंकि जो लोग गर्भ-स्थापन और सन्तानोत्पत्ति क भय से व्यभिचार से दूर रहते थे उन्हे इसके लिए खुली छूट और प्रोत्साहन मिलेगा। इस मनोवैज्ञानिक रहस्य से इन्कार नही किया जा सकता कि मनुष्य बुराइयो से अधिकाश रूपेण समाज के भय से बचता है। अत्यन्त उच्चकोटि के मनुष्यो की बात छोडिए वह अपवाद होते हैं नियम सब साधारण के लिए होते है, महामानवो के लिए नही। और सर्वसाधारण सिद्धातो की गहराई मे नही जाया करता। उसे अच्छाई और बुराई के विवेचन की न योग्यता होती है न रुचि, वह तो परिस्थितियो के साथ बहना मात्र जानता है। यौन सबन्ध के लिए परिवार-नियोजन के परिणाम स्वरूप परिस्थितिया उसके अधिक अनुकूल होगी। परिणामत वह व्यभिचार के पक मे फस जायगा। जिससे लज्जा का ह्रास और निर्लज्जता की वृद्धि होगी। यह परिवार-नियोजन का प्रकार है भी कृत्रिम जिससे आगे चल कर राष्ट्रीय सतति को स्वास्थ्य सम्बन्धी हानि होने की प्रबल आशका है। जो मानव समाज के लिए बडी घिनौनी बात है। स्वाभाविक और प्राकृतिक परिवार-नियोजन की सही प्राप्ति तो स्वाभाविक तथा प्राकृतिक रूपेण जीवन यापन के द्वारा ही सभव है।

दूसरी हानि हमारे विचार स होगी आर्यों (हिन्दुओ) की सख्या घटने की। क्योंकि मुसलमानो पर परिवार-नियोजन का कोई प्रभाव नही होगा। प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि हिन्दुओ की ही चिन्ता क्यों है? तथ्य यह है कि आज के राष्ट्रो की शासन प्रणाली बहुसख्यकता पर आधारित है। जो वर्ग या जाति अधिक सख्या मे होगी शासन मे भी उसका बाहुल्य होगा। और वह अपनी सस्कृति, सभ्यता एव धार्मिक विचारधारा का बाहुल्यता से प्रचार कर सकेगा। इस लिए भी आवश्यक है कि जिस प्रयोग से जनसख्या पर आघात पहुचे उसके प्रति सावधानी से विचार किया जाए। हिन्दू प्रत्येक नवीन किसी भी विचार-धारा के ग्रहण करनेको उद्यत रहता है। और आज परिवार नियोजन की [illegible] ही हिन्दू ही [illegible] मुसलमान नहीं। यदि इस सबन्ध मे आज जैसी ही स्थिति रही तो आगामी २५ वर्षों मे भारत वर्ष में हिन्दू-मुसलमान की जनसख्या का कुछ और ही अनुपात होगा। परिणाम-स्वरूप भारत भारत रहेगा भी क्या? एक प्रश्न है। आदिकाल से ससार को महान् सास्कृतिक देन देने वाली आर्य जाति का इतिहास पृष्ठो की सामग्री-मात्र बनकर रह जायगा।

भारत सरकार के सर पर जब से परिवार-नियोजन का भूत सवार हुआ है तभी से आर्य जगत् इस सम्बन्ध मे तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रसारित करत चला आया है। आर्य समाज क उपर्युक्त विचारो की सम्पुष्टि उस समय हुई जब नवम्बर १९५९ के दूसरे सप्ताह मे दिल्ली लालकिले के सामने परेड ग्राउण्ड की जमाअत-ए-इस्लामी के अखिल भारतीय सम्मेलन मे श्री जवाहरलाल जी नेहरू के निकटतम प्रेमी और तथा-कथित राष्ट्र भक्त मुसलमान मौ० हिफजुल-रहमान साहब ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया था कि "मुसलमान कदापि भारत सरकार के परिवार नियोजन में भाग न लें क्योंकि यह इस्लाम की शरह और मुसलमान के ईमान के खिलाफ है। मुसलमान का ईमान है कि अल्लाह मिया इन्सान की रोजी का खुद इन्तजाम करता है। और हर आदमी जो एक मुह लाता है दो हाथ भी साथ लाता है।" हम इस सम्बन्ध मे अधिक कुछ न लिख कर महात्मा गाधी जी के विचार परिवार नियोजन के सबन्ध मे ज्यो के त्यो उद्धृत करेंगे। जो निम्न प्रकार है —

'अगर कृत्रिम उपायो का उपयोग आम तौर पर होने लगे तो वह समूचे राष्ट्र को पतन की ओर ले जायेगा।

मेरा यह विश्वास है कि किसी कृत्रिम रीति से या पश्चिम मे प्रचलित मौजूद रीतियो स सन्तति निग्रह करना आत्मघात है।

[शेष पेज ११ पर]

(पेज ५ का शेष)

[illegible] मूसा को पकडना चाहा तो वह [illegible] भाग निकला। पीछे शाही लश्कर चला आ रहा था मार्ग मे नदी पडी। मूसा ने लाठी पानी मे मारी तो पानी फट गया और मूसा पार निकल गया। पर जब शाही लश्कर नदी मे घुसा तो नदी बह निकली और सब लोग बह गये।

समीक्षा—यह बेतुकी गप्प अरब के जंगली लोगो मे प्रचलित थी। मुहम्मद साहब ने अपनी शायरी मे कुरान मे उसे लिख दिया और इसी गप्प से मूसा को पैगम्बर साबित कर दिया। लाठी का साप बन जावे, हाथ सफेद दीखने लगे, पानी रुका नजर आवे यह सब मेस्मरेजम के निगाह बाधने के हथकण्डे हैं। सैकडो लोगो ने देखे होगे। इन मामूली सी बातो से किसी को पैगम्बर साबित करना बच्चो को बहलाने जैसी बातें हैं। मूसा ने बुद्धि या योग विद्या का कोई चमत्कार नही दिखाया था जिससे उसकी विकसित आध्यात्मिक या बौद्धिक शक्ति का पता लग सकता और न कोई बडा काम ही किया जिससे उसके बड़प्पन की धाक जम सकती। इस्लाम मजहब मे भोले लोगों को जादूगरी के हथकण्डे दिखाने वाले लोग ही पैगम्बर माने जा सकते हैं जो कि ससार के बुद्धि-मान् लोगो की निगाह मे मनोरजन का साधन मात्र होते हैं।

एक उपदेशक जी ने मूसा को महान उपदेशक व अग्नि ऋषि के आश्रम पर शिक्षा प्राप्त्यर्थ जाने की बेतुकी कल्पना टकारा पत्रिका व परोपकारी मे प्रकाशित कराई है जो कि निराधार है। मूसा बकरियां चराने वाला बे पढा लिखा यवन था। वह वकील कुरान के जादूगर-पहलवान व साधारण व्यक्ति था, विद्वान् व उपदेशक नहीं था। आर्य विद्वानों को भ्रमात्मक कल्पनायें करना शोभा नहीं देता है।

सार्वदेशिक योजना

आर्य जगत् के लिए यह बडा ही हर्ष का विषय है कि "सार्वदेशिक" साप्ताहिक का प्रकाशन कुछ मास से चल रहा है। ऐसी अवस्था मे इसके पाठकों और प्रबन्धकों के समक्ष एक योजना विचारार्थ प्रस्तुत करना चाहता हू। इस पत्र के सम्यक् और सतत सचालन के लिए एक स्थायी कोष का निर्माण किया जाय। इस कोष मे धन सग्रह का यह नियम बनाया जाय कि जो सज्जन एक मुश्त १००) एक सौ रुपये दें उन्हें "सार्वदेशिक" पत्र की सम्मानित सदस्यता का प्रमाण पत्र दिया जाय। फलस्वरूप यह पत्र सदा उनको मिलता रहे। तात्पर्य यह कि वे तब तक ग्राहक बने रहेंगे जब तक यह पत्र चलता रहेगा। स्थायी कोष के ब्याज के पैसे खर्च किये जायें और कोष का रुपया सुरक्षित रखा जाय। इस प्रकार पत्र के प्रकाशन में स्थायित्व आ जायगा। इसकी रूपरेखा मे अभिवृद्धि भी हो सकती है। इसके सौष्ठव को भी बढाया जा सकता है। समाज या संस्थायें भी सम्मानित सदस्यता ग्रहण कर सकती हैं। उक्त रकम ग्राहक को किसी शर्त पर लौटाई जाय या नहीं, यह विवादास्पद विषय है। मेरी राय मे जो अपना रुपया लौटाना चाहें उन्हें कम से कम पाच वर्ष के पश्चात् लौटा लेने का अधिकार रहे। परन्तु रुपया लौटाने पर उनको पत्र मिलना बन्द हो जाय। ऐसी शर्त भी रखी जा सकती है कि स्थायी कोष का रुपया लौटाया न जाय फलस्वरूप सदस्य को तथा उसके उत्तराधिकारी को पत्र मिलता रहे।

इस योजना पर कुछ विशिष्ट सज्जनों से सम्मति मागी जाय और अन्त में निष्कर्ष पर आया जाय कि किन किन शर्तों पर यह योजना किस भांति लागू की जाय जिसमें पत्र प्रकाशन में चार चाद लगे। सभा का यह पत्र अमर हो, इस पर गम्भीरता-पूर्वक विचार होना चाहिए।

—हरिदास "ज्वाल"

वेद सम्मेलन, गुरुकुल चित्तौड़गढ़

स्वागताध्यक्ष श्री प्रतापसिंह शूरजीवल्लभदास का दि० १४-५-६६ को स्वागत भाषण

ओ३म् विश्वानिदेव सवितर दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव ॥

श्रद्धेय संन्यासिगण, आदरणीय विद्वद्वृन्द, वैदिक संस्कृति प्रचारोद्धार धौरेयार्य सज्जन समूह एवं देवियो,

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अद्यापि यावत् समस्त प्रसारित एवं प्रचारित विविध संस्कृतियों का मूल स्रोत वेद है।

आदिम ज्ञान ज्योति एव आध्यात्मिक, भौतिक प्रकाश की उज्ज्वल रश्मियों का उदय भी सृष्टि के समुन्मेष काल में समद्भूत भगवान वेद विवस्वन से निखिल ब्रह्माण्ड में विस्तारोन्मुख हुआ है। श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने परम प्रमाण श्रुति के आधार पर ही वैदिक संस्कृति तथा वैदिक आदर्शों की स्थापना की हैं। इसीलिये आर्यसमाज के दस नियमों में समस्त आर्यों के लिये यह प्रधान नियम बना दिया कि वेदों का पढना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। अपने सारे ग्रन्थों में प्रतिपादित सिद्धान्तों का आधार भी वेदों को ही बनाया। वेदों की सुदृढ शिला पर ही आर्य समाज की स्थापना की। उनका विश्वास था कि वेदों के ज्ञान से संसार का समुद्धार हो सकता है, अन्यथा नहीं। ऋग्वेद में एक मंत्र है।

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नाम धेयं दधानाः। यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्, प्रेणा तदेषां नीहितं गुहाविः॥

ऋग्वेद म० १० सू० ७२ मन्त्र १

सृष्टि के प्रारम्भ मे पवित्रात्मा ऋषियों के हृदयों में प्रथम जो ज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ, प्रथम जो शब्द निकले वही वैदिक भाषा थी जिसे समस्त भाषाओं की जननी बनने का गौरव प्राप्त हुआ है। यदि ये शब्द न होते, यदि वेदवाणी के रूप में यह सरस्वती न होती, तो विश्व की समस्त भाषाएं मूक हो जातीं। उनसे प्रेरणाओं की प्राप्ति का होना दुष्कर हो जाता। इसी दिव्य भाषा से समुपलब्ध प्रेरणाओं से प्रेरित होकर ही महर्षियों ने मानव समाज की रचना की। सुराष्ट्रों को स्थापित किया। वर्णाश्रमों की मर्यादाओं का निर्माण हुआ। सारे ससार में वैदिक ज्योति का प्रकाश फैला। समस्त ब्रह्माण्ड इस दिव्य ज्योति से आलोकित हो गया। इसीलिये मनु महाराज ने बड़े प्रबल शब्दों में लिखा।

एतद्देश प्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वे मानवाः।

अ० २। श्लोक २०

विश्व की समस्त मानव जाति ने इसी देश के विद्वानों के श्रीचरणों में बैठकर शिक्षा दीक्षा, आचार-विचार रीति नीति, समुदाचार उत्तमोत्तम दिव्य शिक्षाओं की प्राप्ति की। मनुष्य का समस्त ज्ञान नैमित्तिक है। वह बिना सिखाये कुछ सीख नहीं सकता। सर्वेश्वर परमेश्वर ही वेदों के ज्ञान विज्ञान द्वारा उसे प्रगति पथ में अग्रणी बनने की प्रेरणाएं देता रहता है। महर्षि पतञ्जलि ने अपने योगदर्शन में लिखा है कि।

सः पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।

अपौरुषेय वेदों का गान एवं स्तवन करते हुए परम वेदभक्त मनु महाराज कहते हैं कि।

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्। स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥

अर्थात् जो द्विज उपनीत होकर भी वेदों का पठन-पाठन छोड़कर दूसरे शास्त्रों या कार्यों मे परिश्रम करता है, वह अपने वंश के साथ ही शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है। द्विज के लिए वेदाध्ययन परमावश्यक था। नैत्यिक स्वाध्याय में अनध्याय हो सकता था। यह नैत्यिक कर्म था। स्नातक को आचार्य समस्त जनता के समक्ष उपदेश देता था। सत्यंवद। धर्मंचर। स्वाध्यायात् न प्रमदितव्यम्। अब तू स्नातक हो चुका है। गुरुकुल-वास को छोड़कर अपने कुल में जा रहा है। पर इस बात को मत भूलना कि तेरे जीवन के लिए वेदों का अध्ययन परम वाञ्छनीय है। इसी से तू सर्वेश परमेश्वर का प्रिय बन सकेगा इस वेदज्ञान द्वारा ही तू प्रभु का साक्षात्कार कर सकेगा। जीवन के उद्धार एव दुःखों से निस्तार का अन्य कोई मार्ग नहीं है।

तमेव विदित्वातिमृत्यु मेति नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय।

वेदों द्वारा प्रभु का ज्ञान हो सकता है। प्रभु को साक्षात् करके ही मनुष्य मृत्यु मे मुक्ति पा सकता है। अन्य कोई मार्ग नहीं है। इन सब प्रमाणों से सिद्ध होता है कि आर्यावर्त का जीवन इसके आदर्श इसकी संस्कृति तथा इसके सिद्धांत वेदों पर आधारित थे। हमारे पूर्व पुरुषों का मन्तव्य था कि : जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते वेदाभ्यास के बिना मानव जीवन सुसंस्कृत परिमार्जित एव परिष्कृत नहीं बन सकता। कोई भी व्यक्ति समाज राष्ट्र तथा संघ में वेदों के अध्ययन अध्यापन से दूर रहकर सुसंस्कार सम्पन्न नहीं हो सकता। जो व्यक्ति ब्राह्मण अर्थात् इसी जीवन में सच्चिदानन्द ब्रह्म का दर्शन करना चाहता है, उसे निस्वार्थ होकर वेदाभ्यास में रत हो जाना चाहिए। इसी कारण महाभाष्यकार मुनि पतञ्जलि ने पस्पशाह्निक में लिखा है। ब्राह्मणेन निष्कारणो वेद षडंगश्चाध्येयः भगद्गीता में भी इसी सिद्धांत का समर्थन किया है।

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति, न सुखं न च परांगतिम्॥

अर्थात् जो मानव स्वार्थवश प्रभुप्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान वेदों की अवहेलना करता है वह अपने कार्यों मे सिद्धि नहीं प्राप्त कर सकता है। उसका प्रत्येक कार्य अपूर्ण ही रह जाता है। सफलता उससे कोसों दूर रहती है। सौख्य एव शान्ति भी उसके निकट पहुंचने का प्रयास नहीं करती। मोक्ष, अपवर्ग और निःश्रेयस तो केवल शब्दज्ञान तक सीमित हो जाते हैं।

मेरी सम्मति में वेदों की गरिमा महिमा का परिज्ञान देने के लिए ही इस वीरभूमि चित्तौड में इस वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया है। यहां पर रणधीर एवम् प्रणवीर महाराणा प्रताप ने भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिये अपने प्राणों की आहुति दी। जहां चित्तौड को वीर प्रसविनी होने का गौरव प्राप्त है वहां महाराणी मीराबाई जैसी भक्तिरस में लीन देवियों को जन्म देने का भी सौभाग्य एवम् श्रेय प्राप्त है।

गुरुकुल प्रबन्धकारिणी समिति के

श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी बल्लभदास

अध्यक्ष होने के कारण आप लोगों ने मुझे स्वागताध्यक्ष के पद पर आरूढ किया है यहां पर आये हुए समस्त महानुभावों का सविनय सम्मान करता हूं, और समुपस्थित अखिल अभ्यागतगण एव नरनारिवृन्द का भी हृदय से स्वागत करता हूं। विशेष रूप से मैं इस सम्मेलन में समुपस्थित माननीय श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया, मुख्य मंत्री, राजस्थान को हार्दिक धन्यवाद देता हूं। उन्होंने अपने व्यस्त जीवन के कार्यक्रम में से समय निकालकर मनुग्रहित करने के साथ भारतीय संस्कृति के प्रति विशिष्ट अनुराग व्यक्त किया है। सविनय एव सप्रश्रय निवेदन है कि:--

विष्टरो विष्टरो विष्टरः प्रतिगृह्यताम्।

आप सब महानुभाव अपने परमावश्यक कार्यों को छोड़कर इस पवित्र यज्ञ मे अपने पुनीत विचारों की मंगलमयी आहुति देने के लिए यहां समुपस्थित हुए हैं। एतदर्थ मैं आप सबका अत्यन्त आभारी हूं।

मैंने इस वेद सम्मेलन के महायज्ञ की योजना के उद्देश्य का उल्लेख पहले ही कर दिया है। आप सब विद्वद्जनों के सौहार्द, सौजन्य और सौमनस्य भाव के कारण ही यह सम्मेलन साफल्य को प्राप्त होगा।

परस्परं भावयन्त' श्रेयः परम् अवाप्स्यथ।

अन्योऽन्य साहाय्य मे सिद्धियां मिलती हैं। शुभ कामनाएं पूर्ण होती हैं। अन्त मे मेरी हार्दिक कामना है कि परमपिता परमात्मा हमे इस कार्य में पूर्ण सफलता प्रदान करें।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु।

अर्थात् जिस जिस पदार्थ की कामनावाले हम लोग आपकी भक्ति करें, आपका आश्रय लेवें। वे सब कामनाएं सिद्ध हों। प्रभो, हम वेदों का अध्ययन करके अनित्य से नित्य, अविद्या से विद्या, मृत्यु मे अमृत,

(शेष पृष्ठ १३ पर)

आर्य समाज का उत्थान कैसे हो ?

थोड़ा सा स्वाध्याय करने और आर्य समाज के उद्देश्यों एव नियमों पर विचार करते हुए वर्तमान आर्य समाज की दशा को देखकर बड़ा दुख होता है। निसन्देह आज की आर्य समाजें महर्षि स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्य समाज की शाखायें कहलाने का अधिकार खो रही मालूम देती हैं। यदि आर्य बन्धु इस ओर विचार करें तो उन्हें वस्तु स्थिति का आभास होगा और यदि वे आर्य (श्रेष्ठ) हैं तो उन्हें निश्चय ही एक विशेष वेदना होगी। फिर प्रश्न यह उठता है कि यह स्थिति उत्पन्न क्यों हो गई है ? प्रस्तुत लेख मे इसके कारणों एव उनके समाधान पर पाठक विचार करेंगे।

आर्य समाजो की दयनीय स्थिति का पहला और बहुत महत्त्वपूर्ण कारण आर्य समाज के सदस्यों का खोखला, दिखावा पूर्ण और केवल नाम का आर्य जीवन है। उनका कोई आदर्श नहीं, उनके कार्य आर्योचित नहीं। समाज के अन्य वर्गों और सदस्यों में वे इस प्रकार घुले मिले हैं कि उनके जीवन को आर्य सामाजिक जीवन कहना नितान्त भूल होगी। वे असत्य भाषण मे नही हिचकते, संध्या, यज्ञ आदि उनके घरो मे नहीं होते, दहेज वे खुलकर नहीं तो छिपकर लेते हैं, धूम्रपान का व्यसन उनमे है, त्याग की भावना से बहुत दूर हैं वे केवल नाम के आर्य हैं कार्यों से आर्य नहीं। यही कारण है कि समाज के अन्य सदस्य इनकी हसी बनाते हैं तथा इनका किसी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। परिवारों में महिलायें आर्य समाज के क्षेत्र से बहुत परे हैं। पति यदि किसी और समाज का सदस्य है तो पत्नी पौराणिक पडितों की चेली, ऐसी स्थिति में उनका क्या प्रभाव हो सकता है। जब तक महिलाओं को इस ओर अधिक प्रभावित एव आकृष्ट नहीं किया जायगा भावी सन्तति कैसे आर्य बनेगी यह समझ में नही आता। अत आवश्यकता इस बात की है कि घर घर मे नित्य प्रति सध्या, यज्ञादि शुभ कर्म हों, आर्य सदस्य सत्य भाषी बनें, उनके जीवन सादगी और आदर्श को लिये हुए हों, दहेज को बिलकुल ठुकरा दें तभी एक ऐसी स्थिति होगी कि उनका अपना व्यक्तित्व होगा तथा उसका दूसरों पर प्रभाव भी पड़ेगा।

दूसरा कारण सामाजिक जीवन और सामाजिक कार्य कर्ताओं का अभाव है। मनुष्य को सामाजिक प्राणी होते हुए भी समाज का भय नहीं है वह जैसा चाहें एकाकी जीवन के रूप में उचित और अनुचित कार्य करता रहता है। सभी व्यक्ति अपने स्वार्थ में इस प्रकार लगे हुए हैं कि उन्हें समाज से मानो सब कुछ मतलब होते हुए भी कुछ मतलब नहीं है। कोई भी व्यक्ति कोई समाज सेवी कार्य नहीं करना चाहता। उसे वही कार्य करना पसन्द है जिससे कुछ अर्थ की प्राप्ति हो, जिस कार्य में मूल्य द्रव्य (Money) मे न मिले उसे आज कोई करना ही नहीं चाहता। अत: ऐसे आर्यों की आवश्यकता है जो अपने जीविकोपार्जन के कार्य से भी प्रतिदिन १-२ घण्टा निकाल कर समाज के रचनात्मक और संगठनात्मक कार्य में लगावें। यदि आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य १-१ दिन करके इस प्रकार से समय दे तो समाज का कार्य वर्ष भर इस उत्तम प्रभावोत्पादक ढग से चल सकेगा कि फिर इस ओर विचार करने की भी आवश्यकता न रहेगी कि आर्य समाज का उत्थान किस प्रकार हो।

तीसरा कारण आर्य सदस्यो का राजनैतिक गतिविधियों को अधिक महत्व देना है। भले ही उनकी साप्ताहिक अधिवेशनों में उपस्थिति न हो, उनका नित्य कर्म न हो, यहां तक कि भोजनादि भी अव्यवस्थित और अनियमित क्यों न हो जाय उन्हें पार्टीबाजी और चुनाव अभियानों में जो आनन्द आता है वह कहीं नहीं आता। आर्य समाजों के रजिस्टरों को उठाकर देखिये बोगस सदस्यों की सूची भरी पड़ी हैं जिनमें उल्लिखित व्यक्ति वर्ष भर समाज मन्दिर में पैर नहीं रखते, उनके विचार वैदिक सिद्धान्तों से मेल नहीं खाते, वार्षिक सदस्यता चन्दा भी नहीं देते, न मालूम कौन जमा कर देता है और चुनावों के समय खड़े हो जाते हैं अधिकारी बनने या बनाने के लालच में। इससे एक ओर तो अन्य आवश्यक सामाजिक कार्य गौण हो जाते हैं दूसरी ओर उपयुक्त व्यक्ति अधिकारी निर्वाचित नहीं हो पाते। अत: जब तक आर्य समाजों की यह पदलोलुपता समाप्त न होगी आर्य समाज का उत्थान न हो सकेगा। अच्छे योग्य कार्य कर्ताओं को जो समय दे सकें अधिकारी बनाना चाहिये, किन्तु हो इसके विपरीत रहा है। जिनके पास समय है, जिनके आर्य विचार हैं जो कुछ करना चाहते हैं उन्हें कोई कार्य करने का अवसर देता नहीं, कहीं कहीं तो पौराणिक विचार धारा वाले व्यक्तियों को आर्यसमाज का मन्त्री या प्रधान जैसा उत्तरदायित्व पूर्ण पद दे दिया जाता है। अत. इस ओर विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है।

चौथा कारण कुछ आर्य समाजों से शिक्षण आदि संस्थाओं का जुड़ा होना है। ठीक है जहां ऐसी सस्थाए हैं वहां आर्य समाज की कुछ चहल पहल अवश्य दिखाई देती है, किन्तु इन सस्थाओ में अधिकारी प्रबन्धक आदि बनने के लिये चुनावी अखाड़ेबाजी को प्रोत्साहन मिलता है। इनकी प्रबन्ध समिति में स्थायित्व नही आता और जल्दी जल्दी परिवर्तन होने से सस्थाओं की स्थिति प्रभावित होती है तथा उनका विकास रुक जाता है। डी० ए० वी० स्कूलों की व्यवस्था कही कहीं इतनी दूषित देखने में आ रही है कि अन्य साधारण स्कूल इनसे अच्छे मालूम हो रहे हैं। अत: यदि आर्य समाज की शिक्षण सस्थाओं के ट्रस्ट बना दिये जावें तो उक्त चुनाव समस्या बहुत कुछ सीमा तक हल हो जाय। ट्रस्टी आर्य सदस्यों के प्रबन्ध में शिक्षा सस्थाओं की नीतियां शीघ्र परिवर्तित नहीं होगी तथा वातावरण भी शान्तिपूर्ण और विकास करने योग्य बन जायगा।

पांचवा कारण आर्यसमाज के कार्य के लिये भवनों की दिखावट है। जहां कुछ आर्य समाजें हैं वहां इमारतें खड़ी हुई हैं उनका पूर्ण उपयोग नहीं उठाया जाता है। वास्तविक रचनात्मक कार्य, प्रचार कार्य साप्ताहिक अधिवेशन आदि की ओर कोई नहीं देखता। अधिकारियों में व्यक्तिगत लालसा की भांति सम्पत्ति, इमारत की इच्छायें बढ़ी हुई हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हमें किसी भी प्रकार ऐसा भवन बना लेना चाहिये जहां पर समाज के सदस्य सामूहिक रूप से बैठकर यज्ञादि कर सकें, पुस्तकालय आदि का कार्य चल सके। ठोस वैदिक प्रचार की ओर अधिक व्यय करने की आवश्यकता है जिससे पथ-भ्रष्ट जनता पर प्रभाव पड़े और आर्य समाज ऋषि का कार्य पूर्ण कर सके। इस समय समाज में हस सम्प्रदाय, ब्रह्माकुमारी समाज, ईसाईयत का खूब जोर है, ये पनप रहे हैं अत. वैदिक प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता है। आर्य समाजियों को भवनों का मोह छोड़कर रचनात्मक

श्री महेशचन्द्र, एम० ए० बी० काम०
आर्य समाज, सासनी

कार्यों पर बल देना चाहिये। एक कमरे का समाज मन्दिर यदि उसके सदस्य उसमें आकर बैठें और उसका पूर्ण उपयोग ही अधिक अच्छा है उस भवन से जिसमे बन तो चार कमरे जायं किन्तु ताला लगा रहे उपयोग उनमें से एक का भी न हो। आर्य समाजी समाज मन्दिर में आना सीखें और समाज के कार्य को प्रगति दें जिससे दूसरे भी कुछ समझें तभी समाज का उत्थान होगा तथा आर्य समाज अपने पांचवे नियम के अनुसार ससार का उपकार कर सकेगा।

प्रतिनिधि सभाओं की स्थिति भी अच्छी नही कही जा सकती। उन्हें समाजों से दशांश प्राप्त करने और वार्षिक निर्वाचन आदि से अधिक दूसरा कोई महत्वपूर्ण कार्य सामने दिखाई नहीं देता। उनके पास समाजों की वास्तविक स्थिति का कोई विवरण नहीं है और न उनके निरीक्षण की ही कोई सुगठित योजना है। सभाओं के अधिकारियों में पारस्परिक वैमनस्य बना रहता है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रतिनिधि सभाओं में पारस्परिक सहयोग और समन्वय की भावना जागृत की जाय। चुनाव के आधार पर केवल राजनैतिक नेताओं के हाथों उनका संचालन न छोड़ा जाय। इससे आर्य समाज का बड़ा अनिष्ट होता है।

आर्य सन्यासियों की दिन पर

हिन्दुत्व को पांच शत्रुओं से बचाओ !

लेखक—
श्री प० रामगोपाल जी शास्त्री वैद्य
करौल बाग दिल्ली

(१) आपस की फूट :—

आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है, न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्य्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दु:ख सागर में डुबा मारेगा ? उस दुष्ट दुर्योधन गोत्र हत्यारे, स्वदेश विनाशक नीच के दुष्टमार्ग पर आर्य्य लोग अब तक भी चलकर दु:ख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह राज रोग हम आर्य्यों में से नष्ट हो जाय।

(सत्यार्थ-प्रकाश)

(२) पश्चिम की सभ्यता

(३) ईसाईयत

(४) इसलाम

(५) साम्यवाद (कम्युनिजम)

ऋग्वेद मण्डल ९ सूक्त ६३ मंत्र ५ में एक वाक्य आया है "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् हे लोगो, सब विश्व को आर्य बनाओ। इस काम में जितनी भी विघ्न बाधायें आएं उन सबको दूर करके आर्यत्व का प्रसार करना चाहिए। सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती, सर्वोपरि, एक मात्र राज्य था। सार्वभौम राजाओं में जिनका एक मात्र सारे भूमण्डल पर राज्य था, स्वायम्भव मनु, सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न कुवलयाश्व, यौवनाश्व, वध्र्यश्व, अश्वपति, शशबिन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, ननक्तु शर्याति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत्त, भरत आदि चक्रवर्ती राजाओं के नाम ग्रन्थों में आते हैं। यह मनुस्मृति, महाभारत, रामायण, पुराण तथा मैत्र्युपनिषद् आदि ग्रन्थों के प्रमाणों से सिद्ध है। इस प्रकार सृष्टि के आरम्भ से लेकर पांच सहस्र वर्ष पूर्व पर्यन्त अर्थात् महाभारत काल तक सारे भूमण्डल में प्रायः आर्यों का ही बोलबाला था।

महाराज युधिष्ठिर के अभिषेक पर अफगानिस्तान, कंधार, पारस, चीन, लंका, तिब्बत, अफ्रीका आदि देशों के राजा अपने-अपने हिस्से का कर (भेंट) लेकर इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) आए थे। वे सब आर्य थे और सब का खानपान, सहभोज होता था, ऐसा महाभारत के सभापर्व के पढ़ने से स्पष्ट प्रतीत होता है।

कौरव और पाण्डवों के आपसी युद्ध से संसार में आर्यत्व को बड़ा भारी धक्का लगा। कई सौ वर्ष से परस्पर एक दूसरे से सम्पर्क न रहने के कारण विदेशों में आर्य संस्कृति का क्षय होना आरम्भ हो गया। मनुस्मृति में लिखा है कि—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्वे मानवाः।

'सब भूमण्डल के विद्वान् भारत में आकर कलाकौशल, आचार विचार की शिक्षा लें।' वह भी प्रथा नष्ट हो गई। इस प्रकार बहुत सा काल अन्धकार में व्यतीत हुआ। यद्यपि भारत में आर्य संस्कृति बनी रही, परन्तु विदेशों में कई अनार्य संस्कृति उत्पन्न हुईं। २७६ ई० पूर्व में फिर हमें इतिहास का उज्ज्वल काल मिलता है। यह काल महाराज अशोक का था, अशोक ने अपने ४० वर्ष के शासन काल में राज्य का बहुत विस्तार किया, उनका राज्य उत्तर हिन्दूकुश पर्वत से दक्षिण मे पवार नदी तक, पश्चिम सीस्तान (शकस्तान) मकरान, मध्य एशिया में गजनी, खोतान, काबुल और कंधार तक फैला हुआ था। इस मध्य एशिया में विस्तृत राज्य के प्रबन्ध के लिए उसने रावलपिण्डी के पास तक्षशिला (Taxila–वर्तमान सराय ढेरी, पाकिस्तान) में राजधानी बनाई थी। उसका पुत्र कुणाल महाराज के प्रतिनिधि के रूप में वहां का शासन चलाता था। इन सारे देशों में आर्य लोग ही रहा करते थे।

दूसरी शताब्दी से लेकर पांचवीं शताब्दी पर्यन्त जो इतिहास मिलता है उनमें मलाया, कम्बोडिया, अनाम, स्याम, जावा, बाली और बोर्नियो में हिन्दू लोग रहते थे। वहा शैव संप्रदाय का प्रचार बहुत था। ऐसा चीन देश की पुस्तकों तथा संस्कृत के सिक्कों से सिद्ध हो चुका। (इसके तथा नीचे के वृत्त के लिए देखों An Advanced History of India dy-R. B. Majum dar)। उन देशों में जय, परमेश्वर वर्मदेव, छत्रवर्मा, हरिवर्मा, जयसिंहवर्मा आदि राजाओं के नाम आते हैं। सन् १२८७ पर्यन्त वहां हिन्दुओं का ही शासन रहा। इन सब प्रमाणों से सिद्ध है कि इन देशों में हिन्दुओं का वास था और ये देश मुसलमानों के भयकर आक्रमणों के कारण इस्लाम धर्म में प्रविष्ट हो गये। अब भी मलेशिया में ८ लाख हिन्दू हैं, थोड़े से हिन्दू अब भी कम्बोडिया में है।

भारतवर्ष में जिसमें काबुल और कंधार भी शामिल था, साईरस (Cyrus) जो कि पर्शिया का राजा था उसने ईसा से ५५८ वर्ष पूर्व काबुल के उत्तर पश्चिम भाग पर आक्रमण किया उसके पीछे डेरियस (Deresu) राजा ने दूसरा आक्रमण करके सिन्ध घाटी और राजपूताना के जंगलों तक अधिकार कर लिया। तीसरा आक्रमण ईसा से ३२७ वर्ष पूर्व सिकन्दर (Alexander) ने किया था। इस प्रकार यूनानी ग्रीक, पारथियन, सीदियन, यूची, शक, पल्लव कुषाण, कनिष्क तथा हविष्क राजवंशों ने समय-समय पर भारत पर आक्रमण किये। ५ वीं शताब्दी में हूणों ने जिन्होंने रोमन राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया था, मध्य एशिया से आकर आक्रमण किया। समय-समय पर भारत के योद्धाओं ने इन विदेशी आक्रमणों को परास्त करके अपनी जातियों में मिला लिया था जिनके उदाहरण नीचे दिए जाते हैं।

शक हूण और यूनानियों का मिलाना

(१) आज से लगभग २३०० ईस्वी वर्ष पूर्व एलेग्जेंडर का प्रधान सेनापति सेल्यूकस जब चन्द्रगुप्त मौर्य से हार गया तो उसने सन्धि में अपनी लड़की हेलन का चन्द्रगुप्त से विवाह कर दिया।

(२) लंका के शिलालेख और सिक्के जो पाली भाषा में हैं उन से सिद्ध हुआ है कि यूनानी मिनेंडर जिसका नाम हमारे यहां मिलिन्द्र मिलता है उसने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया।

(३) सेतफरण का पुत्र हरफरण जिसका नाम यूनानी में बहाले फर्न ' है उसने हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया।

(४) जुन्नर के शिलालेख अनुसार चिटस और चन्दान नामक यूनानी हिन्दू धर्म में प्रविष्ट हुए और उनका नाम चित्र और चन्द्र रक्खा गया।

(५) नासिक के शिलालेख से सिद्ध है कि हिन्दू लोग शक जाति की स्त्रियों से खुले तौर पर विवाह कर लेते थे।

(६) हिन्दुस्तान की उत्तर की ओर तुर्क लोगों का राज्य था। जिस को राजतरंगणी नामक पुस्तक में तुरुष्क लिखा है। इसी वंश का हिमकाडफिस हिन्दू होकर शैव बन गया था।

(७) हूण जाति ने, जिन्होंने अपने आक्रमणों से रोमन राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया था, भारतवर्ष पर भी आक्रमण किया। शिलालेखों में तोरमाण तथा मिहरकुल राजाओं का वर्णन मिलता है। ईसा की ५ वीं शताब्दी में इन्होंने भारतवर्ष के कुछ भाग पर राज्य भी कर लिया था। ये हूण परास्त हुए और हिन्दू जाति में मिल गये। अभी तक क्षत्रियों की हूण जाति प्रसिद्ध है।

अरबों का आक्रमण

सन् ६६७ में थाना (बम्बई) तथा कलात पर अरबों ने पहला आक्रमण किया। ७ वीं शताब्दी के मध्य में दक्षिण अफगानिस्तान और मकरान को अरबों ने हस्तगत कर लिया और तलवार के बल से वहां की सब प्रजा को मुसलमान बना लिया। सन् ७१२ में मुहम्मदबिन कासिम ने सिंध पर आक्रमण किया। शनैः २ सिंध का सब भाग लेकर मुलतान तक पहुंच गया। विजयी अरबों ने हिन्दू और बौद्धों का वध कर दिया और बलपूर्वक उनकी बहू बेटियों को मुसलमान बनाकर अपने घरों में डाल लिया।

सन् १००१ से लेकर १०२६ तक गजनी के महमूद ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया और कई बार लूटा। मुहम्मद गोरी ने भारत पर आक्रमण किया और उसी के राज्य से इस्लामी राज्य की नींव आरम्भ हुई। वैसे तो सब मुसलमान बादशाहों ने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने में कई प्रकार के उपायों का प्रयोग किया परन्तु धर्मान्ध औरंगजेब ने हिन्दू मन्दिरों का ध्वस किया और सहस्रों हिन्दुओं का बलपूर्वक इस्लाम धर्म में प्रवेश कराया। इस प्रकार मुसलमानों के कई सौ साल के निरन्तर राज्य के कारण लाखों हिन्दू विधर्मी बन गये।

भारतवर्ष में छत्रपति शिवाजी तथा महाराणा प्रताप, छत्रसाल आदि वीर राजपूतो, गुरुगोविन्दसिंह जी महाराज और अनेक पंजाबी हिन्दुओं ने अपनी वीरता और साहस से मुगल राज्य को छिन्न-भिन्न करके इनकी ईंट ईंट बजा दी।

पंजाब का विभाजन अदूरदर्शिता और दुर्भाग्यपूर्ण

नई दिल्ली—लोक सभा १२-५-६६

उपाध्यक्ष जी,

पंजाब का दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन भारत सरकारकी अदूरदर्शिता और एक ऐसी घुटने टेक नीति का परिणाम है जिसे इतिहास कभी क्षमा नहीं करेगा।

पाकिस्तान बनने के बाद पंजाब वैसे ही दोआब रह गया था। रावी, झेलम और चिनाब तो पाकिस्तान मे चली गई। इधर तो केवल सतलज और ब्यास ही रह गई थीं। पर अभागे पंजाब को अभी और एक बंटवारे का घाव लगना बाकी था। यह वहां किसी को पता नहीं था। भारत सरकार ने पंजाबी सूबा मान कर जहां दिल्ली की नाक के नीचे एक दूसरा नागालैंड खड़ा कर लिया वहां अकालियों के चक्कर में आकर हिन्दुओं सिखों के बीच कड़वाहट का एक ऐसा बीज बो दिया है जिसे अभी यदि सावधानी से न संभाला गया तो पता नहीं आगे इस वृक्ष में से कैसी शाखाएं प्रशाखाएं फूटें।

मैं प्रारम्भ से ही सिखों को हिन्दुओं से प्रथक नहीं मानता। दोनों एक बाप दादों की औलाद हैं और दोनों की नसों में एक ही खून है। अकाली जो सिखों से पृथक् हिन्दुओं को कहते हैं उनके साथ सब सिक्ख नहीं हैं और न ही पंजाब के इस विभाजन का दोष सारे सिखों पर रखा जा सकता है। नामधारी सिख, मजहबी, रैंदासिये और जो अब कामराज के डर से बदल गये कल तक वह कांग्रेसी भी पंजाब के विभाजन के विरुद्ध थे। पंजाबी सूबे की यह मांग सबसे पहले १९४२ में उठी जब क्रिप्स मिशन भारत में आया था। उस समय के कुछ अकाली नेताओं ने सोचा कि जब मुसलमान नाम पर पाकिस्तान हो सकता है तब सिख नाम पर सिखिस्तान क्यों नहीं हो सकता? उसके बाद १९४५ की शिमला कान्फ्रेंस में मास्टर तारासिंह ने कहा कि यदि जिन्ना सिख राज्य मान लें तो हम पाकिस्तान मान लेंगे। हम लोग भी पाकिस्तान की उनकी मांग को स्वीकार कर लेंगे। ब्रिटिश केबिनेट मिशन के सामने १९४६ में इस तरहकी मांग उनकी ओरसे आई। इस तरह से यह साम्प्रदायिक मांग कभी सिखिस्तान, खालिस्तान, आजाद पंजाब के रूप में और अब पंजाबी सूबा के नाम से समय समय पर उठती रही है। सन् १९४७ में जब देश का बंटवारा हो गया तो फिर मास्टर तारासिंह ने एक नया नारा लगाया कि हिन्दुओं को हिन्दुस्तान मिल गया और मुसलमानों को पाकिस्तान मिल गया पर हमें क्या मिला? देश के बटवारे का घाव इतना गहरा था जो किसी का ध्यान उस समय उधर नहीं गया। लेकिन बाद में फिर जब पानी सिर को लांघने लगा तो सरदार पटेल ने मास्टर तारासिंह को जेल में भेजा। अम्बाला में जब पंजाब विश्वविद्यालय का लाहौर से उजड़ कर पंजाब यूनिवर्सिटी का आफिस आया तो पहला दीक्षान्त भाषण देने के लिए सरदार पटेल वहां पर आये और जिस

इतिहास कभी क्षमा नहीं करेगा

भाषण को भारत सरकार ने पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित किया है। उसमें सरदार पटेल ने अपने भाषण में कहा कि मैंने मास्टर तारासिंह को क्यों जेल में डाला? सरदार कहने लगे कि देश के विभाजन का सबसे गहरा घाव पंजाब को लगा है। मैं उस घाव को मरहम लगा कर भरना चाहता हूं लेकिन मास्टर तारासिंह और उनके साथी बार-बार ठोकर मार कर उस घाव से खून निकाल रहे हैं इसीलिए मजबूर होकर मुझे मास्टर तारासिंह को जेल में भेजना पड़ा। लेकिन सरदार पटेल ने अपने भाषण में यह भी कहा कि मेरी गद्दी पर जो भी आकर बैठेगा उसको इसी प्रकार के कदम इस तरह के लोगों के सम्बन्ध में उठाने पड़ेंगे। दुःख है कि सरदार पटेल के बाद जिस गद्दी पर श्री गोविन्द वल्लभ पंत, श्री लालबहादुर शास्त्री जैसे व्यक्ति बैठे थे आज उस गद्दी पर श्री गुलजारीलाल नन्दा बैठे हैं जिनकी कि नाक इतनी मोम की है जो कांग्रेस के अन्दर और बाहर बैठे अकालियों ने मोड़ दी। भाषा की आड़ में मजहबी राज्य मान बैठे। भाषा की आड़ से मजहबी राज्य श्री गुलजारीलाल नन्दा के श्रीमुख से कहलवा लिया। स्वतन्त्रता से पूर्व के सिखिस्तान या खालिस्तान की बात छोड़ भी दें, स्वतन्त्र होने के बाद यह मांग केवल भाषा की न रह कर एक पंथ की मांग थी। उसके लिए भी मैं कुछ प्रमाण उपस्थित करना चाहता हूं।

मेरे हाथ मे संत फतेहसिंह और प. जवाहरलाल नेहरू की जो पीछे तीन मुलाकातें हुई थीं उनका यह विवरण है जो इसी सदन के पटल पर रखा गया था। इसमें पहली मार्च की जो उनकी मुलाकात है एक मार्च १९६१ की उसके पृष्ठ ६ पर एक बात लिखी हुई है कि संत फतेहसिंह ने पंडित जवाहरलाल नेहरू को यह कहा कि श्री मुरार जी देसाई स्थान स्थान पर यह कहते हैं कि यह मांग भाषा की नहीं है बल्कि मजहब की है तो उसमें श्री जवाहरलाल नेहरू ने उत्तर देते हुए कहा कि अकाली जो चाहते हैं वह भाषा पर आधारित प्रदेश नहीं वरन् पंथ प्रदेश चाहते हैं। यह श्री मुरारजी देसाई कहते हैं प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा। मास्टर तारासिंह जब उनसे भावनगर में मिले थे तब उन्होंने यह भी बताया था कि वह अपने पंथ के लिए यह प्रदेश बनाना चाहते हैं। भाषा तो केवल एक गौण विषय है। श्री जवाहरलाल नेहरू को मास्टर तारा सिंह ने १९६१ के अन्दर यह बात कही जिसका कि उन्होंने उसके अन्दर उल्लेख किया है।

दूसरी चीज जो मास्टर तारासिंह स्थान स्थान पर इस बात को कहते रहे, अभी पिछले साल २४ अगस्त १९६५ को पाकिस्तान के साथ संघर्ष शुरू होने से कुछ दिन पूर्व मास्टर तारासिंह लाहौर गये जहां करांची से प्रकाशित डान अखबार के मुख्य पेज पर उनका जो स्वागत वहां के मुसलमानों ने किया उसका एक फोटो दिया हुआ है। उसमें भी उन्होंने वहां लाहौर में जाकर यही कहा कि हम इस तरह का राज्य बनाना चाहते हैं जिसमें हिन्दुओं का प्रभुत्व न हो और हमारी एक बहुत बड़ी संख्या हो। कुछ बातें उसमें उन्होंने और भी कहीं। लाहौर में जाकर उन्होंने यहां तक कहा और हमारे लोकसभा के अध्यक्ष तक के ऊपर उन्होंने कीचड़ उछाली और यह कहा कि संविधान सभा में जो हमारे सिक्खों के रिप्रेजेन्टेटिव्स थे सरदार हुक्मसिंह और भूपेन्द्रसिंह मान उन्होंने भारतीय संविधान के ऊपर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया। वह उससे सहमत नहीं थे। भला मास्टर तारासिंह को इतना भी सामान्य ज्ञान नहीं था कि जो व्यक्ति भारतीय संविधान में विश्वास न रखता हो या भारतीय संविधान की शपथ न ले भला वह इस देश की लोकसभा का अध्यक्ष किस प्रकार बन सकता है लेकिन यह बात उन्होंने वहां जाकर कही। पर इससे भी एक बड़ी बात जिससे कि उनके मन का पता लगता है वह मैं आपके सामने कहना चाहता हूं······

श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री

श्री कपूरसिंह—[illegible]

भारतीय लोक सभा में—

ओजस्वी आर्य नेता श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री की

गम्भीर चेतावनी

मैं आपकी इजाजत से कुछ कहना चाहूंगा।

सभापति महोदय—अभी नहीं जब आपकी बारी आयेगी तब आप कह दीजियेगा।

श्री कपूरसिंह—मेरी बारी नहीं आयेगी इसलिए मैं आपकी इजाजत से कहना चाहता हूं कि यह जो कह रहे हैं कि अकाली सिक्खों ने संविधान पर दस्तखत नहीं किये थे यह बात गलत है तो मैं उनको बतलाना चाहूंगा कि वह गलत कह रहे हैं। अकाली सिक्खों ने संविधान के ऊपर दस्तखत नहीं किये थे यह बात ठीक है। यह बात मैंने इसलिए कही कि जो वाकयात हैं उन्हें वह ठीक बतलायें बाकी जो उनके मन में आये वह कहें।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री-सभापति जी, अगर श्री कपूरसिंह मेरी बात को पूरा सुन लेते तो शायद मुझसे सहमत होते। मैं तो कह ही रहा हूं कि मास्टर तारासिंह का यह वक्तव्य है जो कि सही नहीं हो सकता क्योंकि संविधान पर हस्ताक्षर······

श्री कपूरसिंह—यह सही है मैं यही कह रहा हूं।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री—अगर सही है तो मैं समझता हूं कि इससे बड़ी देश के लिए दुर्भाग्य की बात और कोई नहीं हो सकती जोकि आप कह रहे हैं। इसलिए जो बात आप कह रहे हैं यह मांग भाषा की न होकर पंथ की है इसका मैं एक और प्रमाण उपस्थित करना चाहता हूं। मास्टर तारासिंह का प्रभात अखबार जो जालन्धर से निकलता है उसमें छपा हुआ लेख इस बात का प्रमाण है। उसका एक उद्धरण है। जब भारत और पाकिस्तान का संकट समाप्त हो गया तो पहली अक्तूबर ६५ को उसके अंक में उन्होंने एक लेख लिखा और उनके अपने शब्द पढ़ कर सुनाना चाहता हूं :—

"जब कश्मीर का युद्ध चल रहा था तब मैं सोच रहा था कि उसका परिणाम क्या होगा? मैंने यह कहा भी था कि यदि पाकिस्तान जीत जाय उसकी सेनाएं हमारे इलाके में से गुजर भी जायं तो हमें कुचला समझो यदि हिन्दुस्तान जीत जाय तो हिन्दू अहंकार और हिन्दू शक्ति इतनी बढ़ जायगी कि हमें थोड़े ही दिनों में हड़प कर लेगी और हम यही चाहते थे कि किसी की जीत के बिना ही बीच में संधि हो जाय फिर हम सोचेंगे और अपना स्वतन्त्र पैंतरा बनाने का समय हमें मिल जायगा। वाह गुरु की कृपासे अब यह अवसर हमें मिला है और अब हमें तत्काल सोचना होगा कि हम किसी और तरीके से अपनी कोई स्वतन्त्र स्थिति बना लें जिससे पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों की तुष्टीकरण की इच्छा बनी रहे।"

यह है वह दृष्टिकोण जिसके कि आधार पर पंजाबी सूबे की डिमांड अकालियों की ओर से उठी और यही कारण थे आखिरकार श्री नेहरू, सरदार पटेल, गोविन्द वल्लभ पंत और लालबहादुर शास्त्री क्यों इससे सहमत नहीं थे क्योंकि वह अच्छे तरीके से जानते थे कि यह मांग भाषा की नहीं है यह भाषा के पीछे एक साम्प्रदायिक मांग है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने पंजाबी सूबे की मांग स्वीकार की उसकी बात तो मुझे समझ में आ सकती है क्योंकि कांग्रेस संगठन का सबसे बड़ा अध्यक्ष ही वह है जो उत्तर और दक्षिण को दो आंखों से भारत को देखता है। राज्य सभा में श्री कामराज के भाषण की चर्चा करते हुए मद्रास के सदस्य ने उसके चुनाव अभियान के एक भाषणकी चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि दक्षिण के ऊपर हमेशा से उत्तर के लोग अपना आधिपत्य जमानेका प्रयास करते हैं।" पर एक बात मेरी समझ में नहीं आई। श्री कामराज पंजाबी सूबे को मानें यह बात तो समझ में आ सकती है। उत्तर के किसी तरह से टुकड़े हों इससे तो शायद उनको संतोष हो सकता है पर श्री जवाहर लाल नेहरू की पुत्री जो इस देश की प्रधानमन्त्री है और जिन्होंने इस बात की प्रधानमन्त्री बनते ही घोषणा की थी कि हमारे पिता जो काम अधूरा छोड़ कर गये हैं मैं उस काम को पूरा करूंगी मैं पूछना चाहता हूं कि उनके मन्त्रिमंडल में जिस समय पंजाब के विभाजन का प्रस्ताव पास हो रहा था तो उन्होंने मन्त्रिपरिषद् में कैसे वह प्रस्ताव पास हो जाने दिया? क्या पटेल, नेहरू, पन्त और शास्त्रीके उत्तराधिकारियों में कोई वहां ऐसा नहीं था जो लाजपतराय और भगतसिंह के पंजाब को टुकड़े टुकड़े होने से बचा लेता? क्या कोई भी ऐसा उस समय मौजूद नहीं था जो हिम्मत के साथ खड़ा होकर कहता कि मैं लाला लाजपतराय और शहीद भगतसिंह के पंजाब का विभाजन स्वीकार नहीं करूंगा।

तीसरी बात यह कि पंजाब के और देश के इतिहास में ६ सितम्बर ६५ का वह काला दिन माना जायगा जब नन्दा जी ने पाकिस्तान के साथ लड़ाई बन्द हुए १२ घण्टे भी नहीं हुए थे, संसदीय समिति और कैबिनेट सब कमेटी बनाने की घोषणा की थी।

संसदीय समिति की घोषणा इतनी दृढ़ता से गुलजारी लाल नन्दा जी ने की, लेकिन उसके अधिकार और कर्तव्य क्या होंगे, इसकी पूरी व्याख्या श्री गुलजारी लाल नन्दा नहीं कर सकें। संसदीय समिति के सदस्यों का जिस रहस्यात्मक ढंग से चुनाव हुआ, वह इस संसद के इतिहास में एक नई घटना रहेगी, जिसका इतिहास आगे चल कर लिखा जायगा कि किस प्रकार से वह समिति बनी थी। इस से जो हानि हो रही है, उसके परिणाम पंजाब नहीं पूरे देश को भुगतने पड़ेंगे।

सभापति जी, मैं आप के माध्यम से कहना चाहता हूं कि अभी जब कि विभाजन की घोषणा हुई है और शाह कमीशन ने रेखा नहीं खींची हैं, इसका परिणाम यह हो रहा है कि पंजाब के बड़े-बड़े व्यापारी वर्ग ने गाजियाबाद, सोनीपत और फरीदाबाद में इधर आकर जमीनें खरीदनी शुरू कर दी हैं। जब से पंजाब के विभाजन की घोषणा हुई, है पंजाब में जमीनों का भाव गिर गया है और दिल्ली में १० से ३० प्रतिशत तक जमीनों के भाव ऊंचे चले गये हैं। आप रिजर्व बैंक से पूछिये कि इस प्रस्ताव की घोषणा के बाद पंजाब के कितने बैंकों से लोगों ने अपना हिसाब इधर ट्रांस्फर कराया है, दूसरी ओर भेजा है।

जहां तक व्यापार की स्थिति है, जो लोग अपने कारखानों को बढ़ाना चाहते थे उन्होंने अपने कार्यक्रम को बीच में ही रोक दिया है, जिन्होंने अपने कारखानों के लिये मशीनों को मंगवा लिया था, उन्होंने उसको पोर्ट पर ही रोक कर पंजाब भिजवाने की बजाय गाजियाबाद पहुंचवा लिया है। यह स्थिति केवल हिन्दू व्यापारियों की नहीं है, बल्कि सिख व्यापारियों की भी है, वे भी इस से परेशान हैं और अपने कारखानों को वहां पर नहीं बढ़ाना चाहते हैं। तीन जिलों में गुरुदासपुर, अमृतसर और फीरोजपुर में एक तरह से व्यापार वैसे ही ठप्प हो गया है, बाकी के जिलों में भी व्यापार की स्थिति ऐसी ही हो गई है। आप पूछेंगे कि आखिर इन इण्डस्ट्री चलाने वालों को डर क्या है? उनका एक मात्र डर यह है कि आपकी इस नीति और दुर्बल प्रोग्राम से आज पंजाब के लोगों में केन्द्रीय सरकार पर से विश्वास उठ गया है और वह नहीं समझते कि यह केन्द्रीय सरकार आपत्ति के समय हमारी रक्षा कर सकेगी।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि पंजाब के विभाजन का आधार भाषा न हो कर मजहब रहा है। १९६१ की जनगणना के आंकड़ों को आज मानने से मास्टर तारासिंह, संत फतहसिंह और अकाली लोग इन्कार करने लगे हैं और कहते हैं कि ये भाषाई आंकड़े साम्प्रदायिक हैं। यदि इन आंकड़ों के पीछे तथ्य नहीं है तो मैं इन लोगों से एक प्रश्न पूछना चाहता हूं, क्या पंजाब यूनिवर्सिटी के आंकड़े झूठे हैं? क्या एस० आर० कमीशन की रिपोर्ट झूठी है। अगर जनगणना के आंकड़े झूठे हैं तो इन दोनों प्रमाणों के बारे में वे क्या कहेंगे। एस० आर० कमीशन की रिपोर्ट में, जो सीमा निर्धारण आयोग था, पैरा ५३२ के शब्द आपको सुनाना चाहता हूं। उन्होंने लिखा है कि जालन्धर डिवीजन के छः जिलों में १९५० से १९५५ तक जो छात्र पंजाब विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में बैठे उन में ६२.२ प्रतिशत छात्रों ने हिन्दी ली और ३७.८ छात्रों ने पंजाबी ली। एस० आर० कमीशन ने उसी में लिखा है कि १९५१ से १९५५ तक पंजाब विश्वविद्यालय की मैट्रीकुलेशन परीक्षाओं में १,३७,५८८

बच्चे बैठे, इन्हें इतिहास और भूगोल के पर्चों के हिन्दी या पंजाबी के माध्यम से उत्तर देने की छूट थी। कमीशन लिखता है कि इन में से ७३ ३ प्रतिशत छात्रों ने हिन्दी में उत्तर दिये और २६.५ छात्रों ने पंजाबी में उत्तर दिये अब मैं पूछना चाहता हूं—संत फतहसिंह, मास्टर तारासिंह और उनके समर्थकों से कि क्या विश्वविद्यालय के आंकड़े भी झूठे माने जायेंगे। अब रह जाती है सन् १९६१ की जन गणना, इस के लिये कहते हैं कि लोगों ने दबाव में आकर, साम्प्रदायिक बहाव में आकर अपने को भाषाई लिखाया है। इस के भी आप दो उदाहरण सुनिये। मैं जालन्धर और गुरुदासपुर के आंकड़े देना चाहता हूं।

Shri Kapur Singh: He is confusing—

(Interruption)

Mr. Chairman: I will allow him to speak in this turn. Please sit down.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : इनको बोलने का अवसर मिलेगा, फिर पता नहीं क्यों इनको मिर्चें लग रही हैं।

Shri Kapur Singh: He is confusing the House by what he says. Elective language and mother—tongue are two different things. Whv is he confusing ?

Mr Chairman; Order, order, please resume your seat.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री: सभापति महोदय, १९६१ के आंकड़ों के सम्बन्ध में मैं कह रहा था, जिसके लिये संतफतहसिंह, मास्टर तारासिंह और उन के समर्थकों को आपत्ति है।

जालन्धर जिले में हिन्दुओं की संख्या ६,६२, ६३१ है और इस जिले में जिन लोगों ने अपनी मातृ-भाषा हिन्दी लिखाई है, उनकी संख्या ४,६६,१५८ है यानी हिन्दुओं में से १,६३,४७३ हिन्दू वे हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा पंजाबी लिखवाई है, जिसके लिये कि वे कहते हैं कि भाषा के खाने में गलत लिखवाया है।

गुरदासपुर जिले में कुल जन-संख्या में हिन्दुओं की आबादी ४,९४,६७५ है, इन में से जिन लोगों ने हिन्दी लिखवाई है, उनकी संख्या ४,८३,७९१ है, यहां भी दस हजार वे आदमी हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा पंजाबी लिखाई है। इस के बाद भी वह किस तरह से कह सकते हैं कि वहां पर लोगों ने बहाव में आकर अपनी भाषा को लिखवाया है। इस से भी आगे चल कर मैं कहता हूं कि किसी की मातृभाषा क्या है, सभापति जी, इस का निर्णय वह खुद करेगा या मातृभाषा के चुनाव का अधिकार वह किसी दूसरे व्यक्ति को दे देगा। अगर इस पर भी अकालियों को, मास्टर तारासिंह और संत फतहसिंह को आपत्ति है तो मैं भारत सरकार से कहूंगा कि यदि १९६१ के भाषा के आंकड़ों को वे प्रमाणित नहीं मानते तो श्री गुलजारी लाल नन्दा एक और हिम्मतवाला कदम उठायें और हिम्मतवाला कदम उठाकर यह कहें कि अगर १९६१ के भाषा के आंकड़े प्रमाणित नहीं है तो भाषा के नये आंकड़े पंजाब के अन्दर एकत्रित किये जाय और उसके आधार पर पंजाब का विभाजन किया जाय। अगर यह भी वे स्वीकार नहीं करते तो एक तीसरा विकल्प यह है कि जहां १८-१९ साल से पंजाब का विभाजन न होने से सब आराम से रहते आये हैं, वहां चार साल के बाद १९७१ में आंकड़े ले लिये जाय और उसके बाद पंजाब का विभाजन कर दिया जाय। आखिर कोई नीति तो मानी जाय, न्याय तो माना जाय। चित भी मेरी और पट भी मेरी, अगर इसी तरह से अकालियों को सन्तुष्ट करने के लिये भारत सरकार लगी रहे तो यह बात भला किस प्रकार से चल सकती है।

एक और बात कहना चाहता हू कि आखिर इस में इनको खतरा क्या है ? खतरा सब से बड़ा यह है है कि भाषा के आधार पर पंजाबी सूबा बनाने की बात को कह बैठे, अब खतरा यह है कि उनके साथियों ने कपड़े खींचने शुरू कर दिये हैं। पंजाबी सूबा लेने के बाद तुमको मिलेगा क्या ? जिस पंजाबी सूबे के लिये लड़ाई लड़ी, तुम्हारे हाथ में आया क्या ? भाषा के आधार पर अब पंजाब का विभाजन होगा तो खरड़ तहसील न होने से चंडीगढ़ तुम्हारे पास नहीं रहेगा, ऊना के न रहने से भाखड़ा तुम्हारे पास नहीं रहेगा और भी कई चीजें इस प्रकार की होंगी। अब वह कहते हैं कि अकालियों ने भाषा के आधार पर पंजाबी सूबा माना तो पंजाबी भाषा के साथ न्याय नहीं किया। पहले पंजाबी ११ जिलों में पढ़ाई जाती थी, अब सिर्फ ९ जिलों में चलेगी, हिमाचल और हरियाणा को इस से मुक्ति मिल गई, पंजाब को इन्होंने क्या दिया ? अब अगर पंथ की हिफाजत के लिये यह किया, जैसाकि मास्टर तारासिंह और उनके समर्थकों का कहना है, तो उन्होंने पंथ के लिये क्या किया, हिन्दुओं और सिखों में भेद डाल दिया। जहां गुरुगोबिन्दसिंह जी महाराज ने कहा था कि —

जगे धर्म हिन्दू सकल भंड भागे।

लेकिन मास्टर तारासिंह और उनके समर्थकों का कहना है कि सिख हिन्दुओं से अलग हैं। आज इसी नीति के परिणामस्वरूप जो सिख पंथ को हिन्दू धर्म की शाखा मानते थे, मास्टर तारासिंह की इस नीति से सिख पंथ के विस्तार को बहुत हानि पहुंची है। आखिर उन्होंने पंजाबी सूबा बनाकर ले क्या लिया ?

एक चीज और रह जाती है और वह यह कि पंजाबी भाषा की लिपि को गुरुमुखी रखा जाय,। मैं पूछता हूं उन लोगों से कि अगर लिपि गुरुमुखी रखने से उनको कोई बड़ी भारी सुविधा है या इस में पंथ की सुरक्षा देखते हैं, तो लाहौर में जो पंजाबी चलती है, वह क्या गुरु-मुखी लिपि में चलती है ? या सन् १९४७ से पहले जो पंजाब में लिपि चलती थी क्या वह गुरुमुखी लिपि मे चलती थी ? देवनागरी लिपि को अगर गुरुमुखी लिपि के साथ साथ पंजाब की लिपि मान लिया जाय तो क्या पंजाबी भाषा समाप्त हो जायेगी ? आज मराठी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि होने से क्या उसका अस्तित्व समाप्त हो गया, पंजाबी भी उर्दू लिपि में लिखी जाती है...

श्री गुरुमुखसिंह मुसाफिर: क्या प्रकाशवीर शास्त्री जी मानेंगे कि हिन्दी को देवनागरी में छोड़कर उर्दू में लिखा जाय।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री: मुझे कोई आपत्ति नहीं है। हिन्दी की अपनी निजी लिपि सुरक्षित रहते हुए, अगर दूसरी लिपि में हिन्दी कुछ लिखी जा सकती है तो मुझे वैकल्पिक लिपि स्वीकार है। लिपि के लिये मैं कठोर नहीं हूं। मैं आप से यह भी कहना चाहता हूं कि पंजाबी की लिपि गुरुमुखी रहते हुए आप देव-नागरी को पंजाबी की वैकल्पिक लिपि मानिये। जिस आधार पर आज पंजाबी सूबा बना है और जो वहां पर आज देवनागरी लिपि के माध्यम से काम करते हैं, उनको किसी प्रकार से कोई कठिनाई न हो। जहां तक भाषा का प्रश्न है, मैं बड़े अदब से नन्दा जी से कहना चाहता हूं कि जिस तरह से आसाम के सम्बन्ध में बंगाली भाषा के लिये आपने कानून बनाया है, पंजाब के लिये भी वही नीति अपनाइये।

तीसरी चीज में चण्डीगढ़ के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं। राज-धानी का प्रश्न ऐसा है, जिस पर पंजाब के मस्तिष्क में आज विक्षोभ पैदा हुआ है। मुझे पंजाब के विभाजन का दुख तो जरूर है, क्योंकि पंजाब के विभाजन का न मैं पहले समर्थक था और न अब समर्थन करता हूं, लेकिन सभापति महोदय, समुद्र मन्थन से जहां विष निकला था, वहां अमृत भी निकला था, हरियाणावाले जो १८५७ से अंग्रेजों के अभिशाप से दबे हुए थे, इनको अब सांस लेने का मौका मिला है।

लेकिन अब उनकी राजधानियों का प्रश्न रह जाता है। जहां तक राजधानी का प्रश्न है क्या श्री गुल-जारीलाल नन्दा इस बात को पसन्द करेंगे कि आज के अर्थ संकट के इस युग में जब एकएक पैसे की मांग करने के लिये श्री अशोक मेहता झोली ले कर विदेशों में घूमते फिर रहे हैं, देश में करोड़ों रुपये खर्च करके नई राजधानी खड़ी की जाये। बुद्धिमत्ता तो इसी में होगी कि पंजाब के अन्दर जो राजधानियां रह चुकी हैं उनको ही राजधानी बनाया जाये और नई राज-धानी बनाकर इस गरीब देश का पैसा खराब न किया जाये। और इसका तरीका यह है कि अगर खरड तह-सील हरियाना में आती है तो चंडीगढ़ को हरियाना की राजधानी बनाया जाये। पटियाला में पैप्सू की राजधानी रह भी चुकी है। वहां सैक्रेटेरियट बनी बनाई है, इसलिये कोई दिक्कत नहीं होगी।

रह जाती है भाखरा बांध की बात, जिसके ऊपर किसी को आपत्ति हो सकती है। भाखरा बांध के सम्बन्ध में मुझे यह कहना है कि चूंकि ऊना तहसील में हिन्दी भाषा भाषियों की संख्या ज्यादा है इसलिये ऊना तहसील

दिन कमी होती जा रही है। इसके कारण भी आर्य समाज का पतन हो रहा है। किसी भी समाज के लिये त्यागी, तपस्वी, उपदेशकों की नितान्त आवश्यकता होती है। गृहस्थी को सन्मार्ग प्रदर्शन का कार्य आर्य सन्यासी का ही है। आजकल नई पीढ़ी में से सन्यासी नहीं बन रहे जो कुछ हैं वे पुराने ही हैं और वे देश की सेवा कर रहे हैं। सन्यासी न बनने का एक बहुत बड़ा कारण यह है कि समाज इतना स्वार्थी हो गया है कि उसकी दृष्टि में सन्यासी की आवश्यकता नहीं अत: उसके लिये उचित व्यवस्था बनाने को समाज एक अनावश्यक बोझा समझता है। यदि प्रत्येक समाज मन्दिर के लिये एक एक वानप्रस्थी की व्यवस्था कर दी जाय तो निश्चय ही आर्य समाज का प्रचार बहुत कुछ आगे बढ़ सकेगा। आर्य विद्वानों को वह आदर नहीं मिलता जो एक एम० एल० ए० या अन्य राज्य पदाधिकारी को। इसलिये सब सत्ता की ओर दौड़ रहे हैं विद्वत्ता की ओर नहीं और यही समाज उत्थान में रुकावट का एक कारण है।

आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों के कार्यों पर यदि विचार किया जाय तो मालूम होता है कि अनेक समाजों में साप्ताहिक सत्संग नहीं होता। अनेक में जहां होता है वहां २-४ पदाधिकारी सदस्य १५-२० मिनट में सन्ध्या यज्ञ कर खाना पूरी कर चले जाते हैं। बहुत कम समाज ऐसे होंगे जहां नियमित, प्रभावशाली और सुनियोजित तथा व्यवस्थित रूप से साप्ताहिक सत्संग लगते हैं। साप्ताहिक सत्संग ही आर्य समाज की आधार शिला है उसके द्वारा आर्य समाज और वैदिक धर्म का प्रसार सम्भव है अत. उन्हें प्रभावशाली बनाने के लिये हर आर्य को अपना पूर्ण सहयोग देने के तैयार रहना चाहिये। समाज के सब सदस्य सत्संग में उपस्थित होंगे तो उनके विवेक में वृद्धि होगी, सदविचार उत्पन्न होंगे जिससे वे अपने परिवारों को आदर्शपरिवार बना सकेंगे और समष्टि का लाभ होगा। सदस्य परस्पर मिलेंगे, उनमें परस्पर प्रीति बढ़ेगी और तभी सब मिल कर समाज के उत्थान की बात सोचेंगे। अत: साप्ताहिक सत्संगों को नियमित, व्यवस्थित एवं प्रभावपूर्ण ढंग से लगाने जाने की प्रबल आवश्यकता है।

साथ ही साथ समाज मन्दिरों में पुस्तकालय की व्यवस्था में भी सुधार आवश्यक है जिससे स्वाध्याय करने का साधन उपलब्ध रहे। अनेक समाजों के पुस्तकालय अलमारियों में पुस्तकें बन्द रखने तक ही सीमित हैं। निसन्देह पुस्तकालयों की प्रगति से आर्य समाज की गति बढ़ेगी, नये सदस्य बनेंगे। समाजों के वार्षिक जलसों का भी रूप बदलना होगा। अधिकतर जलसे राजनैतिक रंग मंचों की भांति होने लगे हैं। राजनैतिक नेताओं के भाषणों द्वारा उत्सवों की शोभावृद्धि मानी जाती है। उत्सवों में स्कूली पद्धति के प्रोग्राम भी होने लगे हैं। इस सबके परिणाम स्वरूप वैदिक धर्म प्रचार की गति धीमी पड़ गई है। आर्य समाज केवल नाम के रह गये हैं वे अपने उद्देश्यों को भली प्रकार पूर्ण नहीं कर पा रहे।

अत: आर्य लिखने से पूर्व अथवा आर्य समाज का सदस्य बनने से पूर्व स्वयं की कमियों को देख कर उन्हें दूर कर आदर्श चरित्र बनाना होगा तभी कुछ हो सकेगा। साथ ही सामाजिक कार्य के लिये कुछ समय देना होगा। जब तक आर्य समाज का रचनात्मक कार्य उच्च कोटि का न होगा अन्य व्यक्ति प्रभावित न होंगे। अत आर्य समाज के उत्थान के लिये व्यक्तिगत एवं सामाजिक संगठन की आतरिक और बाहरी कमियों को दूर कर कुछ करने की आवश्यकता है।

आर्य समाज और राजनीति

श्री प्रो० उत्तमचन्द् जी 'शरर'

आर्य समाज के नेताओं ने समाज को राजनीति के क्षेत्र से दूर रख कर अच्छा किया या बुरा, यह तो तत्कालीन आर्य जान सकते थे, परन्तु इतना स्पष्ट है कि आज उस डगर पर चलने में कोई औचित्य नहीं दीखता। राजनीति आज के जीवन में एक विशेष महत्व का पहलु है जिस से आंख मूंदना, स्वयं को मिटाने के तुल्य होगा। अब यह उपदेश, कि हमारा कार्य तो केवल वेद मन्त्रों की व्याख्या करना ही है, धार्मिक सस्कार प्रदान करना मात्र ही है किसी कर्मठ आर्य के मानसिक सन्तोष का कारण नहीं बन सकते। ऋषि दयानन्द जी ने निष्प्राण देश में वास्तविक दिशा को और पग बढ़ा कर तथा कर्मण्यता सिखा कर नवजीवन फूंका, परन्तु यदि आज हम निष्क्रियता के गर्त में गिरे रहे, तो विभिन्न जातियों की दौड़ में हम पछड़ जावेंगे, इस में सन्देह नहीं।

हम देखते हैं कि आर्यों के इस आलस्य का परिणाम है, कि आज आर्यसमाज में समाज विरोधी तत्वों की प्रधानता हो रही है, जिन का लक्ष्य देश-सेवा नहीं अपितु समाज के मंच से अपनी २ पार्टी का प्रचार कर अपने सियासी लीडरों को प्रसन्न करना और उसके द्वारा अपने निजी स्वार्थों की पूर्तिमात्र रह गया। जिस समाज में जनसंघी अधिकारी सत्तारूढ़ हैं वहां कांग्रेस को गाली गलोच देना ही समाज का प्रचार रह गया है और जहा कांग्रेसी अधिकारी हैं वहां राज्य मन्त्रियों के जलूस तथा ऋषि दयानन्द के स्थान पर गांधी जी, तथा नेहरू जी की प्रशस्तियां गाने में कर्तव्य की इतिश्री समझी जाती है। जनता में कुछ लोग एक मत के होते हैं कुछ दूसरे विचार के और जिसके गीत गाये जा रहे होते हैं, वह समाज को अच्छा कहते हैं दूसरे गाली देते हैं। समाजों में धड़े बाजी प्रारम्भ हो जाती है, और बेचारा ऋषि दयानन्द का अनुयायी किंकर्तव्य-विमूढ हो कर सोचता है कि वह कहां जाये क्योंकि ऋषि के मिशन का प्रसार तो किसी का लक्ष्य नहीं होता है।

आज तो परिस्थिति और भी गम्भीर है। आर्य समाजी भाई जिन सियासी तथाकथित नेताओं को अपने उत्सवों में सम्मान प्रदान करने में पूरी उदारता दिखाते हैं वे भी आर्य समाज को गाली देने से नहीं झिझकते। शायद उन्हें विश्वास है कि समाज तो मृतप्राय हो चुका, हम न जावें तो उन्हें पूछता कौन है।

दिल्ली की समाजों में मैंने मघोक साहब के भाषण कई बार होते देखे। समाजें उन के भाषण के प्रबन्ध में उत्सुकता भी वेद प्रचार के कार्य से अधिक दिखाती हैं, परन्तु उन्हीं मधोक साहब ने जन संघ का प्रधान बनते ही साम्प्रदायिक तत्वों की तुष्टि के लिये अपने भाषण में सब से बड़ा वार आर्य समाज पर ही किया और अकाली दल के साथ आर्य समाज को पंजाब की शान्ति-भंग में जिम्मेवार बता कर समाज के प्रति पूरी कृतघ्नता का परिचय दिया। मेरा विचार है कि अब समाजों में घुसे सघी दोस्त इस की व्याख्या से ही सीधे साधे आर्यों को सन्तुष्ट करने का प्रयास करेंगे।

कुछ यही अवस्था कांग्रेसी मित्रों की है। वस्तुतः आज उन को आर्य समाज की आवश्यकता नहीं, आर्य समाज को उनके बिना उत्सव अधूरे नजर आते हैं और समाजों में घुसे उन के चेले समाज मे फूट पैदा कर उन तथाकथित नेताओं के सम्मान की राह बना लेते हैं।

आज के युग मे सब समाजें संगठित हैं। सिक्खों का अकाली दल कार्य कर रहा है, कहीं मुसलिमलीग और कहीं ईसाई गुप्त-रूप से भारत की राजनीति में मोड पैदा कर रहे हैं, हरिजन तक संगठित हैं और यदि कोई समाज संगठित नहीं तो वह है केवल आर्यसमाज।

आर्यो ! विरोधियों के इन षड्-यन्त्रों से क्या समाज को नहीं बचाया जा सकेगा ? क्या हमारे नेताओं में सूझ की कमी है जो उन्हें मार्ग नहीं दीखता ? और क्या आर्यों में कर्मठता का सर्वथा अभाव हो गया है ?

मेरा विचार है कि इन में से कोई बात ठीक नहीं। आवश्यकता है सिर जोड़ कर एक तड़पते दिल के साथ मार्ग पर अग्रसर होने की। और यदि कुछ लोग अपने त्याग को आदर्श मानकर समाज की इस कमी को दूर करने पर तुल गये तो देश तथा समाज मे नया मोड़ आयेगा। आर्यो ! सोचो हम कब तक अपने स्वार्थों मे फसे एक कठोर सत्य से आंखें मूंदे रहेंगे ?

प्राप्ति स्वीकार

मधुर प्रकाशन बाजार सीताराम दिल्ली द्वारा प्रकाशित निम्न पुस्तकें प्राप्त हुई हैं। पुस्तकों की भाषा, भाव, छपाई आदि सुन्दर हैं।

१—वैदिक प्रवचन	२)२५
२—वैदिक प्रार्थना	१)२०
३—यम-नियम प्रदीप	१)५०
४—ईश्वर दर्शन	१)५०
५—मातृ मन्दिर	)५०
६—दृष्टान्त-मंजरी	२)
७—महर्षि दयानन्द (कविता)	)५०
८—शिवाबावनी	)७५
९—श्रुति सुधा	)२०
१०—उर्मिल मंगल	)५०

पुनर्जन्म

श्री एस० बी० माथुर मेरठ

क्या पुनर्जन्म का कोई बौद्धिक आधार है ? या वर्तमान भारत की पीढ़ी को केवल पूर्वजों के धार्मिक सिद्धान्तों से यह वाद प्राप्त हुआ ? इस प्रश्न का उत्तर प्राचीन और वर्तमान लेखकों और विचारकों की लेखनी में मिलता है। उदाहरण के लिये मुगल सम्राट् औरंगजेब ने 'शाहनामा" में कई ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख किया है, जिनकी उक्त सम्राट ने पुनंजन्म सम्बन्धित बातों की जांच करा ली थी। उसके अतिरिक्त मुस्लमान सन्त मौलाना रोम ने निम्नलिखित शब्दों में पुनंजन्म की पुष्टि की है —

"हफ्त सद हफताद कालिब दीय-मा-श्रम मिस्ल मबजा बारहां रोई या-श्रम"

जिसका तात्पर्य यह है कि मैंने सात सौ सत्तर योनियों का अनुभव किया है और घास की तरह बार-बार जन्म लिया है।

वर्तमान युग मे भी ऐसे बालकों के हालात समाचार पत्रों मे प्रकाशित होते रहे हैं जिनको अपने पिछले जन्म की बातोंकी स्मृति रही है यह बालक भारत वर्ष के अतिरिक्त टर्की, वर्मा, सीलोन, थाइलैंड, जापान, फिजी, कनेडा, सोवियत-यूनियन, पूर्वी बर्लिन, फ्रांस आदि के हैं। इन बालकों के विषय में महान् मनोवैज्ञानिक छान-बीन कर रहे हैं, परन्तु पुनर्जन्म के सम्बन्ध में धार्मिक दृष्टिकोण आत्मा की सत्ता पर आधारित है। मनोवैज्ञानिक आत्मा को नहीं मानते हैं इस कारण वह पिछले जन्म की स्मृतिया रखने वाले बालकों को स्मृति विशेष की श्रेणी में रखते हैं। परन्तु मनोवैज्ञानिकों के निर्णय अभी तक पूर्णता को प्राप्त नहीं हुए हैं। और यह भी स्वीकार करते हैं कि मस्तिष्क का क्षेत्र बहुत विशाल है। और इन्होंने इस विशाल क्षेत्र की अल्प झांकी ली है। परन्तु कुछ धार्मिक प्रवृति वाले सज्जनों का विचार है कि पुनर्जन्म की स्मृति से आवागमन की सिद्धि होती है।

जिन धार्मिक सज्जनो का पुनर्जन्म में विश्वास नहीं है वह केवल एक ही जन्म को मानते हैं और उनके मतानुसार इस जन्म के कर्मों का निर्णय प्रलय के दिन होगा, परन्तु गहराई से सोचने वालों को इस विषय में यह शका होती है कि असाधारण और ईश्वर भक्ति या निष्काम लोक सेवा को करने वालों को छोड़ कर एक साधारण व्यक्ति एक ही जन्म के थोड़े अच्छे बुरे कर्मो के फल से कैसे मुक्ति या स्वर्ग प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त यह न्याय समत नहीं है कि मरने के बाद कर्मों का न्याय हजारों लाखों वर्षों तक न किया जाये और प्रलय के दिन की प्रतीक्षा में इतना लम्बा काल व्यतीत हो जाये। कारण यह कि न्याय का विलम्ब से होना न्याय से वंचित होने के तुल्य है। फिर यह भी निश्चित नहीं है कि प्रलय का दिन कब आयेगा। ईसा मसीह से जब इस सम्बन्ध मे प्रश्न किया गया तो उन्होंने स्पष्ट जवाब दिया कि भगवान् के पुत्र को भी इसका ज्ञान नही है। आश्चर्य की बात यह है कि प्रलय के दिन न्याय होगा अर्थात् सदा केलिये स्वर्ग या नरक यह भी न्याय के विरुद्ध है। इस सम्बन्ध में एक और विचार के मानने वाले हैं कि भगवान् अपनी कृपा से मनुष्यों के पाप क्षमा कर देंगे और मुक्ति या स्वर्ग प्राप्तहोजायेगा। परन्तु इसविचार के फलस्वरूप ही जनता मे पाप-पुण्य रहा है। क्योंकि पाप के क्षमा होने के सिद्धांत से पापके प्रति डर उत्पन्न नहीं हो रहा है। पुनर्जन्म से प्रत्येक व्यक्ति को पुन. पुनः उन्नति करने का अवसर प्राप्त होता है और एक समय ऐसा आ जाता है कि हम अपने ही पुरुषार्थ से मुक्त अवस्था को पहुंच जाते हैं।

अब भौतिकवाद को लीजिये जिन का सिद्धांत यह है कि मृत्यु के साथ मनुष्य का सब कुछ नष्ट हो जाता है परन्तु बहुत मे विचारकों को यह तो मान्य है कि प्रत्येक व्यक्ति में प्रगति करने के अकुर विद्यमान हैं। यदि मृत्यु के साथ हमारे सब विचारों और प्रगति करने के अकुर का अन्त होता है तो जीवन बहुत ही निराशा जनक माना जायेगा। यदि हमको यह निश्चय है कि मृत्यु के बाद मनुष्य को प्रगति करने का फिर अवसर मिलेगा तो मृत्यु का हस कर स्वागत किया जायेगा और जिन त्रुटियों के कारण एक जीवन मे प्रगति नहींहोपाई थी उनको दूर करने का प्रयत्न दूसरा अवसर मिलने पर करेंगे।

इस सम्बन्ध में आचार्य विनोबा जी के विचार प्रस्तुत करना आवश्यक है। आचार्य विनोबा जी ने अपनी पुस्तक Science and Sele Knowledge के पृष्ठ १८-४१ पर इस प्रकार विचार प्रकट किये हैं। "हम में से अधिकतर व्यक्ति कर्मों के फलों के अनुसार पुनर्जन्म लेते हैं। इसमें कोई विशेषता नहीं है। परन्तु एक व्यक्ति जिसने पूरी तरह से आत्मसाक्षात्कार कर लिया है और मानस लोक से ऊपर उठ गया है वह फिर जन्म लेता है। उसको श्री अरविन्द घोष ने "नीचे उतरना" माना है। मुक्ति अन्तिम ध्येय नहीं हैं। इसके बाद कर्मों का नया प्रोग्राम आरम्भ होता है जिसको श्री अरविन्द घोष की भाषा में अति मानस लोक कहते हैं। श्री अरविन्द के मतानुसार मुक्त जीवों को ही सुधार करने का अधिकार प्राप्त होता है। कोई व्यक्ति जिसको मोक्ष प्राप्त नहीं हुआ है सच्चे अर्थ मे लोक सेवा या सुधार नही कर सकता क्योंकि गलती करने की सम्भावना रहती है। एक व्यक्ति को आत्म साक्षात्कार करना आवश्यक है जिसके द्वारा यह अति मानस लोक पहुंचे परन्तु उस ऊंचाई से संसार में पैदा हो और अपने विचारों मे दूसरों की सहायता करें। यह कैसा ऊंचा दार्शनिक तथ्य है।"

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के अनुसार मुक्ति की अवधि बहुत लम्बी-परन्तु निश्चित काल के लिये है और मुक्त जीवों को भी लोक कल्याण के लिये पुन जन्म लेना होता है।

यह बड़े हर्ष की बात है कि निष्पक्ष और विशाल हृदय वाले ईसाई भी पुनर्जन्म के सिद्धात की सत्यता को मानने लगे हैं। इस सम्बन्ध में आस्ट्रेलिया के Mr-Bethwyn-Tylor का Rishikesh के मुख्य अंग्रेजी पत्र "Divine life Journal के अकों में दो लेख द्वारा पुनर्जन्म पर अपने विचार प्रकट किये हैं। ये लेख उक्त Journal के जौलाई-अगस्त १९६५के अकोंमें प्रकाशित हुए हैं। जिनका तात्पर्य नीचे दिये जाता हैं।

"निस्सन्देह ससार मे इसको न्याय नहीं कहा जायगा यदि मनुष्यकी जीवन ज्योति का निर्माण (Nature) का आकस्मिक कार्य ही हो। नहीं, इसके लिये अवश्य कोई नियम होना चाहिये। यदि मनुष्य को उसकी अभी तक जानकारी नहीं हुई है। ऐसा नियम जिससे भगवान् की अच्छाई और न्याय के प्रति विश्वास जम सके। मैंने इस विषय पर एक ईसाई पादरी से पूछताछ की और उसके उत्तर से मुझे आश्चर्य हुआ। ईसाई पादरी ने कहा कि वह इसका उत्तर नहीं दे सकता। मगर आप चाहें तो पूर्व में जाकर इस शंका का समाधान करें। मैंने ऐसा ही किया और पूर्व मे जो मुझे उत्तर मिला वह यह है कि मनुष्य एक अनादि आत्मा निःसदेह भगवान् का एक अंशहै जो सदा पूर्णता और भगवद् दर्शन प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील रहता है। परन्तु इसके लिये बहुत समय की आवश्यकता है। कारण यह है कि ससार में ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने की सीमा बहुत विस्तृत है। ईसाई सिद्धांत के अनुसार इस पूर्णता प्राप्त करने का कार्य मरने के बाद आत्मिक लोक में ही होता है। क्योंकि पश्चिम मे अभी तक पुनर्जन्म के सिद्धान्त को बहुधा स्वीकार नहीं किया गया है। परन्तु पूर्व में इसके विपरीत माना जाता है। उनका यह विश्वास है कि मनुष्य को इस धरती पर ही पूर्णता प्राप्त करनी है। जो एक जीवन में असम्भव है और इसीलिये उनका विश्वास है कि मनुष्य को बहुत से जीवनों में से गुजरना पड़ता है जो हार के मोतियों के समान जुड़ा रहता है। और यहां पर ही हमको मनुष्य की जीवन ज्योति के निर्माण के रहस्य का उत्तर मिलता है। जैसे-जैसे आत्मा बहुत से जीवनों के मार्ग मे सफर करती है उस पर कारण व परिणाम(Causes Effect) का नियम लागू होता है। जैसा कि Bible मे कहा गया है और पश्चिम वाले मानते हैं "जो बोयेंगे वही काटेंगे ? यही वह नियम है। परन्तु बहुत से मनुष्य इस पर गम्भीरता से विचार नहीं करते। यदि वे ऐसा करें तो उनको अपने कथन व कर्म पर बहुत तत्पर रहना होगा। ठीक इसी नियम के अनुसार हम अपने आगामी जीवन को बनाते हैं। जैसे कर्म करेंगे वैसे ही भोगेंगे। बहुत से मनुष्य इस सिद्धात को इसलिये नहीं मानते कि इससे उन पर बड़ा उत्तरदायित्व आता है। जिस को वे पसन्द नहीं करते। परन्तु कुछ ही पूर्व वालों को यह माननीय है कि मनुष्य के जीवन में कारण व परिणाम का नियम लागू होता है। इस तरह इसमें बढ़ोतरी करते रहते हैं। जिससे कोई पुरुषार्थ बेकार नहीं जाता जो इस जीवन मे पूरा न कर सके वह अगले जीवन में करेंगे, यदि इच्छा प्रबल है।

सारांश यह है कि जो कुछ अच्छा बुरा हमने सीखा था उसके अनुसार ही हमारे अगले शरीर और स्वभाव का निर्माण होता है।"

गौहत्या भारत के माथे पर कलंक है

भारत सरकार तत्काल गोवध बन्द करे

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ला० रामगोपाल शालवाले का प्रेस वक्तव्य

गौहत्या भारत के माथे पर घोर कलंक है। इस कलंक को मिटाने के लिए महर्षि दयानन्द ने पहल की थी। महात्मा गाधी ने जिस स्वतन्त्र भारत के निर्माण के लिए यत्न किया था उसमे गोवध के लिए कोई स्थान न था।

परन्तु दुःख है कि स्वतन्त्र भारत मे न केवल यह कलक मिटा ही नही अपितु गोवध मे बहुत वृद्धि हो गई है जिसके लिए हमारी सरकार ही जिम्मेदार है। गोवध की निरन्तर वृद्धि और सरकार की उपेक्षा से जनता का असन्तोष बहुत बढ गया है। सरकार को उचित है कि वह गोवध बन्द करने में अब और अधिक विलम्ब न करे, अन्यथा देश मे भयकर क्रान्ति होने का भय है जिसको सभालना सरकार के लिए कठिन होगा।

आर्थिक दृष्टि से भी गौवध घाटे का सौदा है। देश मे शुद्ध घी दूध की कमी को दूर करने और खाद्य समस्या का सन्तोषजनक समाधान करने के लिए गोवध का बन्द होना अत्यन्त आवश्यक है।

जो साधु महात्मा गोवध निषेध के लिए आन्दोलन कर रहे हैं उनके प्रयत्नो के साथ आर्य समाज की पूर्ण सहानुभूति है। यही नहीं, यह एक प्रकार से आर्य समाज का ही आन्दोलन है। अत देश की समस्त आर्य समाजो को आदेश दिया जाता है कि पूर्ण तैयारी और सफलता के साथ आन्दोलन चलायें। और इसमें [illegible] धर्मावलम्बियों तथा सभी गोप्रेमियों का सहयोग प्राप्त किया जाय। सार्वजनिक सभाएं की जाएं और प्रस्ताव पास करके सरकार को गोवध बन्द करने की प्रेरणा की जाय।

दिल्ली की तिहाड जेल मे गौरक्षा के निमित्त जिन साधु महात्माओ ने अनशन किया हुआ है उनके साथ हमारी सहानुभूति है। उनके प्रति जो अत्याचार पूर्ण व्यवहार किया जा रहा है वह घोर निन्दनीय है।

सरकार को तत्काल गोवध बन्द करके उनकी प्राण रक्षा करनी चाहिए। यदि उनके शरीरों का अन्त हो गया तो उससे बडी विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

गोरक्षा

सहयोगी 'हिन्दुस्तान' २३-५-६६ के अक मे उपर्युक्त शीर्षक से लिखता है

गोवध-निषेध आन्दोलन के सबध मे कतिपय साधुओ की धरपकड अथवा उनकी भूख हडताल के कारण सरकार के सामने यदि एक समस्या उत्पन्न हुई है तो इसके लिए सरकार अपनी ही ढिलमिल मनोवृत्ति को दोष दे सकती है। वास्तव में गोवध निषेध के लिए किसी को आन्दोलन करने की आवश्यकता ही न होनी चाहिए थी। सविधान गाय की रक्षा का स्पष्ट आदेश देता है। उसके ४८ वें अनुच्छेद का मनन करने के बाद शका तथा अनिश्चय के लिए कोई स्थान न रहना चाहिए। सरकार यदि उच्चतम न्यायालय के निर्णय को ध्यान मे रखे तब भी उसे स्पष्ट हो जाएगा कि गाय की रक्षा के लिए वह कानून बना सकती है।

यह भी स्मरण रहे कि महात्मा गाधी गो-रक्षा को राष्ट्रोन्नति का एक आवश्यक अग मानते थे। स्वाधीन भारत मे जिन बातो को वे जरूरी समझते थे उनमे गो रक्षा की बात भी थी। अपने रचनात्मक कार्यक्रम मे उन्होने गो रक्षा तथा गोपालन को भी सम्मिलित किया था। तब क्या स्वतन्त्र भारत की सरकार को गोरक्षा के प्रति भी उसी प्रकार उदासीन हो जाना चाहिए जिस तरह वह शराबबन्दी के प्रति बन पडती है? गाय की रक्षा के साथ करोडों लोगों की भावना सन्निहित है इसके अतिरिक्त आर्थिक दृष्टि से देखें तो तब भी गाय भारतीय जीवन का अग है। आज बच्चो तक के लिए दूध दुलभ हो गया है। उनके लिए जहा दूध जरूरी है, वहा दूध-दही के प्राचुर्य से खाद्य समस्या के हल मे भी योग मिलेगा। और अभी तो भारत में कृषि की भी तब तक कल्पना करना कठिन है जब तक कि हल खींचने के लिए बैल न हों। यदि गोवध पर प्रतिबध लगाने के बारे में केन्द्रीय सरकार यह कह कर जिम्मेदारी से छूटना चाहे कि यह तो राज्य सरकारो का काम है तो यह उसकी कर्तव्य च्युति ही होगी।

वह सब को मार्ग दिखाता है

ओ३म्। आ त्ये नर [illegible] चित्तान्त्सद्यो अध्वनो जगम्यात्।
देवासो मन्यु दासस्य [illegible] आ वक्षन्त्सुविताय वर्णम् ॥

ऋ १। १०४। २

(ओ) अरे! [illegible] मनुष्य (ऊतये) रक्षा के लिये (इन्द्रम्) इन्द्र के पास (गु) गये। (नू [illegible]) ताकि वह (तान्) उन को (सद्य) तत्काल (अध्वन) मार्गों द्वारा (जगम्यात) पहुचादे (देवास) निष्काम ज्ञानी (दासस्य) दुबल के क्षीण के (मन्युम्) क्रोध को (श्चम्नन्ते) पी जाते हैं। और (सुविताय) कल्याणोपदेश करने के लिये (वणम) क्रोध के रग को (न) नही (आ-वक्षन्) धारण करते हैं। अथवा हमारे कल्याण के लिये चुने पदार्थ लाते हैं।

मनुष्य भटक रहे हैं उन्हे सत्य मार्ग सुझाई नहीं देता। प्रत्येक अपने अपने मार्ग की प्रशंसा कर रहा है। नवागन्तुक मनुष्य भ्रम मे पड जाता है किसका अनुसरण करे और किस का न करे। साधक के सामने विभिन्न कर्तव्य आते हैं जो परस्पर विरुद्ध हैं किस कर्तव्य को पूरा करे और किस को छोडे। गृहस्थ को वैराग्य हुआ है। सकीर्ण गृह से निकल कर विशाल ससार मे आना चाहता है निकलने की तैयारी की है कि पुत्र कलत्र का मोह आ पडता है माता पिता की ममता और प्यार भी सवार हो जाते हैं। नया वैरागी सोच मे पड जाता है। क्या करे और क्या न करे? ऐसी विषम परिस्थिति अबोधो को तो क्या कभी कभी सुबोधों को महाबोधो को भी बुद्धू बना देती है। विवेकी जन ऐसे अवसर पर इन्द्रमूतये गु=रक्षा के लिये प्रयोजन सिद्धि के लिये इन्द्र के पास सर्वाज्ञाननिवारक मार्गप्रदर्शक भगवान् के पास जाते हैं।

उन्हे विश्वास है कि वह

नूचित्ता-सद्यो अध्वनो जगम्यात्=तत्काल उन्हे मार्ग पर पहुचा देगा।

इन्द्र देव की शरण मे जाकर ये भी देव हो जाये हैं। और देवासो मन्यु दासस्य श्चम्नन्ते=दास के क्रोध को देव पी जाते हैं।

देखते हैं प्रतिदिन अनुभव करते हैं कि महान् भगवान् पापियो के अपराध पी रहा है सहन कर रहा है। वह तो है ही 'स'सहि=बार बार सहन करने वाला भगवान् जीव का कल्याण करते हुए उसके पुराने अपराधो के कारण कभी भी अपना रग नही बदलते वरन् उसके कल्याण के लिये चुन चुन कर उसे साधन देता है अत उसके सग से बने देव भी।

न आवक्षन्त्सुविताय वर्णम्=कल्याण प्रेरणा के लिये रग नही बदलते, अथवा कल्याणोपदेश के लिये हमारे लिये उत्तम चुने हुए पदार्थ लाते हैं।

ब्राह्मण और क्षत्रिय के सुधार प्रकार का सुन्दर भेद है। क्षत्रिय दण्ड देता है ब्राह्मण प्यार करता है। प्यार और मार मे जो सार है उसे ग्रहण करना चाहिये। प्यार मे ही सार है अत भगवन्!

श्रद्धित ते महते इन्द्रियाय।

ऋ १। १०४। ६

तेरे महान् सामर्थ्य पर भरोसा किया है। तू ही मार्ग दिखा और उस पर चला।

(पेज ६ का शेष)

मेरी राय मे तो कृत्रिम साधनो के द्वारा सन्तति नियमन की पुष्टि के लिए नारी जाति को सामने खड़ा करना, उसका अपमान करना है।

मैं कृत्रिम साधनो के हामियो से आग्रह करता हू कि वे इसके नतीजो पर गौर करें। इन साधनो के ज्यादा उपयोग का फल होगा विवाह बन्धन का नाश और मनमाने प्रेम बन्धन की बढती।

अत आर्य समाज उचित यही अनुभव करते हुए अनुरोध करता है कि कोई भी आर्य (हिन्दू) परिवार नियोजन के कृत्रिम केन्द्रो केन्द्रों पर न जाए। जहा स्वय इस कृत्रिम प्रयोग से होने वाली हानि से देश को बचाए वही अपने इष्ट-मित्रों को भी प्रेरणा करें कि वह इस घातक प्रणाली से दूर रहे। प्राचीन आचार्यों की जो इस दिशा मे प्रणाली 'ब्रह्मचर्य' की रही है यथा योग्य उसका पालन किया जाए जिससे इच्छानुसार सन्तति लाभ और स्वास्थ्य लाभ भी बना रहे।

Suave in a Suit

आर्य समाज के तेजस्वी नेता श्री पं. नरेन्द्र जी के जीवन की एक झांकी

निजामशाही आर्यत्व के समक्ष नतमस्तक हुई।

लेखक—श्री वेदप्रकाश आर्य एम० ए०,
प्राध्यापक, डी० ए० वी० कालेज, आजमगढ़

जब जी० टी० एक्सप्रेस दो घंटे से अधिक हैदराबाद स्टेशन पर खड़ी रही ?

हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह अपनी तरुणाई पर था। देश के कोने-कोने से आये हुये सहस्रशः आर्य वीरों के पद चाप से हैदराबाद की धरती और उनके जय घोषों से आकाश मण्डल प्रकम्पमान था। निजाम के कारगारों में इंच भर भी स्थान शेष नहीं था। ऐसे रोष और क्षोभ भरे वातावरण में एक दिन हैदराबाद से दिल्ली आने वाली डाक-गाड़ी नामपल्ली स्टेशन पर खड़ी थी। छूटने का निर्धारित समय हो चुका था पर ट्रेन आगे बढ़ने का नाम भी न लेती थी। यात्रीगण अपने-अपने डिब्बों से झांक रहे थे, कुछ बेचैनी में बाहर निकलकर पता लगा रहे थे कि ट्रेन क्यों नहीं छूट रही है और आखिर कब छूटेगी ? पर निश्चित उत्तर भी रेलवे-अधिकारी नहीं दे पा रहे थे। आज निजाम सरकार के आकस्मिक आदेश से यह ट्रेन रुकी हुई थी ? पर यह आदेश हैदरी को क्यों देना पड़ा ? इसे जानने के लिये निम्न पंक्तियां पढ़िये।

"मन्नानूर की कालकोठरी":-

इस घटना के ठीक १४ महीना पूर्व। सन्ध्या का समय था। हैदराबाद का बत्तीस वर्षीय आर्य युवक नरेन्द्र, जिसकी रग-रग से फूट पड़ने वाली जवानी देश और समाज को अर्पण थी—अपनी धुन में मस्त आ रहा था, कहां जा रहा है यह युवक-कौनसा आकर्षण इसे खींचे आ रहा है ? यह उस धूल पेट मुहल्ला की ओर जा रहा है जहां १० हजार लोध हिन्दुओं की बस्ती है जो आर्य समाज के रंग में रंग गये हैं पर यह निजामशाही को भला कैसे सहन होता, उसने वहां मुसलमानों को भड़काकर भीषण दंगा करवा दिया। यह कोई नयी बात नहीं थी। निजाम सरकार के द्वारा आये दिन ऐसे ही अत्याचार होते रहते थे। उलटे हिन्दुओं पर मुकदमा चला। २२ व्यक्ति कारागार की कालकोठरियों में डाल दिये गये जिनमें से श्री सोहनलाल व ठाकुर उमरावसिंह मुख्य थे। न्यायालय में न्याय का नाटक आरम्भ हुआ। आर्य समाज की ओर से मुकदमा लड़ने की व्यवस्था की गई।

उस समय के भारत प्रसिद्ध अधिवक्ता (वकील) श्री भूला भाई देसाई और मि० नरीमान को पैरवी के लिये जब बुलाया गया तो सरकार सहम गयी। प्रपंच का भंडाफोड़ न हो इस लिये सरकार के आदेशानुसार इन दोनों अधिवक्ताओं के पैरवी करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। तब आर्य समाज को विवश होकर दिल्ली के प्रसिद्ध वकील मि० तवक्कली को बुलाना पड़ा। मुकदमा चल रहा था। सफाई गवाह की हैसियत से युवक नरेन्द्र को भी बयान देना था। इसी हेतु वह श्री विनायकराव जी विद्यालंकार बैरिस्टर से मिलने जा ही रहा था कि राघवेन्द्रराव पुलिस-अधीक्षक सामने आ गये। "कहां जा रहे हैं पण्डित जी ? चलिये भोजन कर लीजिये।" कई बार अस्वीकार करने पर भी वह न माना और आग्रह करके ले ही गया। घर पर बड़े प्रेम से भोजन कराया। हाथ मुंह धोकर युवक नरेन्द्र बाहर निकला। सामने क्या सुन्दर दृश्य है ? पुलिस के बीस, पच्चीस, सशस्त्र जवान खड़े हैं। जिनके हाथों में हथकड़ी है। पुलिस की हथकड़ियां अग्रसर हुई युवक के हाथों ने उसका स्वागत किया। और विशेष प्रेम के साथ भोजन कराने वाले पुलिस अधीक्षक श्री राघवेन्द्रराव जी को भी धन्यवाद दिया। पुलिस युवक को गाड़ी में बिठाकर सदरे आजम अकबर हैदरी के यहां ले गयी। अकबर हैदरी ने देखते ही कहा "आपका ही नाम नरेन्द्र है।"

माननीय श्री प० नरेन्द्र जी

"जी हां" युवक ने गम्भीरता से उत्तर दिया।

"आपके लिये यह शाही फरमान है ? पढ़ लीजिये।" सदरे आजम ने सीलबंद लिफाफा आगे बढ़ा दिया।

युवक ने फरमान पढ़ा—लिखा था—"नरेन्द्र तुम्हें हुकूमते निजाम का तख्ता पलट देने के खतरनाक इरादों के पादाश में तीन साल के लिये "मन्नानूर" में नजर बन्द किया जाता है।"

"मन्नानूर" कितना भयानक नाम। जहां निर्जन में शेर, चीते दहाड़ते हैं। पर यह नाम सुनकर नरेन्द्र के ललाट पर चिन्ता की एक भी रेखा नहीं। हृदय की धड़कन तेज नहीं हुई, देह में कम्पन नहीं, आंखों में आशंका की गर्दिश नहीं।

व्यग्यपूर्ण स्वर में अकबर हैदरी ने कहा :—"मंजूर है"

"खुशी से मंजूर है।" अधरों से मुसकान बिखेरते हुये युवक नरेन्द्र ने कहा।

"पर एक दरखास्त भी आप से है।"

"फरमाइये,"

"मेरे पास दो हजार रुपया है जो मुझे श्री विनायकराव जी को देना है, क्या आप इसे किसी प्रकार वहां तक पहुंचाने की व्यवस्था करेंगे।"

अकबर हैदरी ने तुरन्त ही राघवेन्द्रराव को रुपया श्री विनायकराव जी तक पहुंचाने तथा उनसे रसीद लाकर नरेन्द्र जी को देने का आदेश दिया। लगभग १५ मिनटों में ही रुपये प्राप्त होने की रसीद आ गई। तदनन्तर नरेन्द्र को लेकर "मनानूर" की ओर पुलिस-वैगन दौड़ पड़ी। रात्रि के १२ बजे एक निर्जन, नीरव सांय-सांय करते हुये स्थान पर पुलिस-वैगन रुकी। एक कोठरी जिसके सामने थोड़ा सा बरामदा। पुलिस अधीक्षक ने नरेन्द्र से कहा "बस यही आपका घर है। इसके—बाहर आप नहीं आ सकेंगे। भोजन की व्यवस्था के लिये यह पुलिस के सैनिक हैं। न लिखने पढ़ने की व्यवस्था, न समाचार पत्र, न किसी से मिलना-जुलना। मास में एक बार केवल एक पत्र जिसमें केवल इतना समाचार आप लिख सकेंगे "हम अच्छे हैं और आपकी कुशलता के आकांक्षी हैं।"

"मनानूर" का नाम ही हृदय में कम्पन उत्पन्न करता है। मीलों जंगल ही जंगल। शेर-चीतों की दहाड़ रह रह कर नीरवता भंग करती है। नृशंस निजाम-शाही ने जनता के लोकतांत्रिक मानवीय अधिकारों की हत्या करने की जिस कुचक्र रचना की उसके अनुसार ही नरेन्द्र को "मनानूर" में बन्द कर दिया गया। पर कहीं स्वाधीनता की लहर कारागारों मे दबाई जा सकी है ? सागर की उत्ताल-तरगों और झंझा के झोंको को कोई प्रतिबन्धित कर सका है ?

जिस समय पुलिस-अधीक्षक नरेन्द्र को उस काले पानी में छोड़कर वापस चला, उसने अनुभव किया कि जिस "मनानूर" के वातावरण में उस नीरव निशीथिनी मे अभी तक सिंहों की हुंकार सुनाई देती रही थी, झींगुरों की झनकार रह रहकर कानों से टकराती थी—एक तीसरी आवाज भी सुनाई दे रही थी—

सद्धर्म का प्रचार कभी रुक न सकेगा।
बादल में अधिक देर सूर्य छुप न सकेगा।

और यह आवाज "मनानूर" की कालकोठरी से निकलकर सम्पूर्ण

(शेष ११ पेज पर)

क्या आर्य समाज चुनौती को स्वीकार करेगा ?

श्री पं० कृष्णदत्त जी एम०ए०, प्रिंसीपल,
हिन्दी आर्ट कालिज, हैदराबाद

विजयवाडा मे अप्रैल १९६६ के दूसरे सप्ताह मे आन्ध्र प्रदेश के ईसाईयों का नवम सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में डा० स्टैन्ली जौन्स ने भाषण दिया। डा स्टैन्ली जौन्स बहुत ही अनुभवी, सुलझे हुए मन मस्तिष्क वाले और मधुर भाषी व्यक्ति हैं। जीवन भर उन्होंने सेवा कार्य किया है। उन्होंने अपने भाषण में जो विचार प्रकट किये, वह एक तरह से सेवाकार्य में रत देश की सभी सस्थाओं को एक चुनौती है। "दक्कन क्रानिकल" हैदराबाद के १८ अप्रैल १९६६ के अंक में उनके भाषण की सक्षिप्त रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। उस विवरण के निम्न भाग पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

He said that the christian church had the best service organisation and as such one should be thankful to the Almighty that there were only critics and no competitors.

इसका आशय यह है कि ईसाई चर्च सेवा का सर्वोत्तम सगठन है। भगवान का धन्यवाद है कि हमारे आलोचक बहुत से हैं, हमारा कोई प्रतिस्पर्धी नहीं है। आगे चलकर उन्होंने जो कहा वह उनके लक्ष्य और विश्वास की बात रहकर भी आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्य करने वाली सस्थाओं के लिए एक चुनौती है।

One should consider it as privlege to serve the destitute and the sick. It was in christianity alone that man sought for God in the material world.

तात्पर्य यह कि निराश्रय और रोगियों की सेवा करना यह किसी के लिए भी सौभाग्य की बात है। इस भौतिक ससार में केवल ईसाइयत के द्वारा ही मनुष्य को भगवान की प्राप्ति की इच्छा हो रही है।

डा० जौन्स ने सेवा और भक्ति दोनों क्षेत्रों में ईसाई चर्च को सर्वोत्तम बतलाया है। इस समय भारत में बहुत से सगठन है, जो जन-सेवा और आध्यात्मिक प्रचार में लगे हुए हैं। रामकृष्ण मठ, सनातन धर्म सभा, आर्यसमाज आदि अनेक ऐसी सस्थाएं हैं जो धार्मिक प्रचार के साथ-साथ शिक्षा और सार्वजनिक सेवा के अन्य कार्यों में लगी हुई हैं। ऐसी भी सस्थाएं हैं, जो केवल आध्यात्मिक प्रचार करती हैं और कुछ ऐसी सस्थाएं हैं, जो केवल सेवा-रिलीफ का कार्य कर रही हैं। किन्तु डा० जौन्स ने यह दावा किया है कि सेवा-कार्य में ईसाई संगठन सर्वोपरि है। औषधालयों द्वारा रोगियों की चिकित्सा निराश्रय बालकों के लिए अनाथालय, अशिक्षितों के लिए शिक्षण संस्थाओं को चलाना इत्यादि स्थायी सेवा कार्य के अन्तंगत आते हैं। बाढ़, अकाल, भूचाल आदि अवसरों पर सामयिक या अस्थायी सेवाकार्य होता है।

इस दृष्टि से आर्यसमाज ने शिक्षा क्षेत्र में जो कार्य किया है, वह प्रशसनीय है। यद्यपि देश विभाजन के कारण आर्य समाज के शिक्षा कार्य का प्रसार देश के सभी भागों में समान रूप से नहीं हुआ है। अन्य प्रदेशों मे, पर्वतों और आबादी से दूर रहने वाले लोगों में, समुद्र तट पर बसे हुए समूहों में आर्य समाज के शिक्षा-केन्द्र या तो चलते नहीं और चलते हैं, तो अपेक्षाकृत बहुत कम सख्या में। ईसाइयों के शिक्षणालय सम्पूर्ण देश में जाल की तरह फैले हुए हैं। इन शिक्षणालयों के साथ-साथ प्राय अनाथालय और छात्रावास भी होते हैं।

शिक्षणालयों के सम्बन्ध मे एक विचारणीय बात यह है कि ईसाइयों के स्कूल और कालेजों की पढ़ाई का स्तर इतना ऊंचा है या इतना ऊंचा माना जाता है कि समाज के उच्च श्रेणी के हिन्दू-मुसलमान अपने बच्चे ईसाई शिक्षण सस्थाओं में ही भेजते हैं। कुछ स्थानों पर आर्य समाज ने इस परम्परा को तोड़ा है। उसने अपनी सस्था में शिक्षा के स्तर को ऊंचा करके उच्च श्रेणी के बच्चों को भी आकर्षित किया है। किन्तु सम्पूर्ण देश मे आर्य समाज की ऐसी शिक्षा सस्थाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम है।

औषधालयो और अनाथालयों की दृष्टि से सम्भवत. कोई सस्था ईसाई सस्थाओं के मुकाबले मे ठहर नहीं सकती। कुछ रोगों के इलाज के लिए तो ईसाई अस्पतालों की देश व्यापी ख्याति है। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बड़े-बड़े डाक्टर केवल सेवा की भावना से प्रेरित होकर अस्पतालों मे अपना जीवन लगा देते हैं। बीहड़ जगलों मे, पर्वतीय प्रदेशो मे, नगरों मे दूर गांवों में सैकड़ों विदेशी डाक्टर विद्वान्, धर्म प्रचारक बस जाते हैं। वहां की भाषा सीखते हैं, उसी को माध्यम बनाकर प्रचार करते हैं और धीरे-धीरे भारतीयों के मन-मस्तिष्क को विदेशियों का गुलाम बनाते हैं। भारतीयों को विचारों, भावनाओं, रहन-सहन और निष्ठा मे अभारतीय बनाते हैं।

सेवा और आध्यात्मिकता के प्रसार और प्रचार की आड़ मे ईसाई चर्च ईसाई और गैर ईसाई लोगों की एक ऐसी सेना तैयार कर रहा है, जो भारतीय धर्म, संस्कृति, सभ्यता, भाषा आदि से घृणा करता है या उसे तुच्छ समझता है। इस समूह की सहानुभूति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विदेशों के प्रति अधिक है। विदेशी शक्तियों के हाथों मे ये लोग राजनैतिक दृष्टि से भी हथियार बन जाते हैं। इनमें अपवाद हो सकते हैं। इस दिशा मे नागा और मिजो प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। भारत के तटवर्ती, सीमावर्ती, वन्य और पर्वतीय प्रदेशों मे ईसाई चर्च का प्रचार बहुत प्रबल है।

इन क्षेत्रों मे इनकी सख्या भी बहुत तेजी से बढ़ रही है। जनसख्या में यह वृद्धि जन्म के कारण नहीं हो रही है, मुख्यरूप से धर्म परिवर्तन के परिणाम स्वरूप हो रही है। धार्मिक सांस्कृतिक और राष्ट्रीय दृष्टि से इसके भयानक परिणाम होंगे। उन परिणामों की कल्पना हमारे राजनैतिक नेताओं और संस्थाओं को नहीं हो सकती क्योंकि भारत मे आज सभी राजनैनिक सस्थाओं का नेतृत्व प्रमुख रूप से हिन्दुओं के हाथों में है। इस पृथ्वी तल पर हिन्दुओं के समान इस दिशा मे गाफिल, अनुभूति शून्य, अदूरदर्शी प्राणी अन्य कहीं पाये नहीं जाते। इसीलिए हमारी राजनैतिक सस्थाए धर्मपारवर्तन की गम्भीरता राष्ट्रीय दुष्परिणामो और सांस्कृतिक ह्रास को अनुभव नहीं कर सकती। आर्य समाज आदि अन्य संस्थाएं अनेक कारणों से चाहकर भी कुछ नहीं कर सकतीं।

आर्य समाज आर्थिक दृष्टि से ईसाई-सगठन के मुकाबले में साधन-हीन है। ईसाईयों को विदेशों से और देश में स्वय हिन्दुओं की जेबों से तथा अप्रत्यक्ष रूप से राज्य सरकारों से बहुत सहायता मिलती है। किन्तु यह आर्थिक सहायता ईसाई सगठनों को उनके कार्यों के कारण और उनके नेताओं के वैयक्तिक प्रभाव के कारण मिलती है। आर्यसमाज अपने ठोस कार्य द्वारा अपने मिशन को चलाने के लिए देश मे धन प्राप्त कर सकता है। आर्य समाज में एक युग ऐसा था, जब उसने ईसाई और इस्लाम के प्रचार और तबलीग का दुहेरा हमला सहन ही नहीं किया था,प्रत्युत उन आक्रमणों का मुंह मोड़कर देश मे प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आज आर्य समाज सम्भवत गृहकलह में अधिक फस गया है।

आर्यसमाज का नेतृत्व आज आर्य समाज से अधिक राजनैतिक क्षेत्र में फसा हुआ है। फलस्वरूप आर्यसमाज का नेतृत्व शिथिल पड़ गया है। इसमें भी अपवाद है। किन्तु अपवाद से ध्येय सिद्धि प्राप्त नहीं होती, वैयक्तिक प्रशसा प्राप्त हो सकती है। आर्यसमाज के अच्छे-अच्छे मस्तिष्क आर्यसमाज से हटकर अन्य समस्याओं को हल करने में व्यस्त हैं। यह उचित हुआ या अनुचित यह प्रश्न इससे हटकर है।

कारण जो भी हों, किन्तु डा० जौन्स के इस कथन में सत्यता है कि ईसाई चर्च के आलोचक बहुत हैं, उसके साथ स्पर्धा करने वाला कोई नहीं। डा० जौन्स का उपर्युक्त कथन आर्यसमाज सहित देश की अन्य समाज सेवी सस्थाओं के लिए एक चुनौती है। जौन्स का कथन भारत में ही नहीं उन सभी देशों में सत्य सिद्ध हुआ है जहां-जहां ईसाई धर्म का प्रचार हुआ है। अफ्रीका दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश, आस्ट्रेलिया, सिलोन, इत्यादि सभी देशों में उसका प्रतिद्वन्दी कोई नहीं रहा। भारत में क्षमता रहकर भी ईसाइयत के प्रचार को रोकने की सफलता किसी ने प्राप्त नहीं की है।

डा० जौन्स की चुनौती को स्वी-

(शेष पेज १२ पर)

हरियाना में आयेगी अवश्य। भाखरा बांध से पंजाब वालों को खतरा है कि अगर वह हरियाना में आ गया तो पता नहीं बाद में हरियाना वाले पूरी बिजली और पानी पंजाब को दें या न दें। इसके लिये पहली चीज तो मैं यह कहना चाहता हूं कि मेनली भाखरा बांध बनाया गया था हरियाना के लिये। पंजाब के इस हिस्से का विकास करने के लिये कि किसी तरह से नहरें या बिजली वहां जावें और हरियाना भी दूसरे हिस्से की तरह से विकसित हो – बनाया गया था। फिर भी मैं कहता हूं कि अगर इसमें कोई आपत्ति हो तो चूंकि सेंट्रल गवर्नमेंट का करोड़ों रुपया भाखरा बांध में लगा हुआ है, केन्द्रीय सरकार एक काम करे कि केन्द्र की देख-रेख में भाखरा बांध के लिये एक संयुक्त बोर्ड बनाया जाये ताकि किसी एरिया के साथ किसी प्रकार का कोई पक्षपात न हो और सब को बराबर पानी और बिजली मिलती रहे।

अब मैं अपने वक्तव्य को उपसंहार की ओर ले जाते हुए दो बातें कहना चाहूंगा। एक तो यह कि मेरे विचारों से, मेरी विचार धारा से यह सदन परिचित है। मैं एक विधेयक भी लाकर अपनी विचार धारा को इस सदन में व्यक्त कर चुका हूं कि मैं भाषावार राज्यों के निर्माण से कभी सहमत नहीं हूं। सरकार ने भाषावार प्रान्तों का निर्माण कर के इस देश को खण्ड खण्ड करने का बीज बोया है। अगर इस देश को खंड खंड होने से बचाना है तो उसका एक ही तरीका है कि भाषावार राज्यों की सीमायें समाप्त कर के सारे देश को पांच भागों में विभक्त कर के एक मजबूत केन्द्रीय शासन की स्थापना की जाये। यूनिटरी फार्म आफ गवर्नमेंट इस देश में होना चाहिये। पहले से मैं इस विचार का समर्थक रहा हूं। भारत सरकार की इस नीति का परिणाम यह हुआ है कि उसने आज पंजाब के सम्बन्ध में घुटने टेके। इस का फल यह हुआ है कि पंजाब की बात समाप्त भी नहीं हुई थी कि नाग और विदर्भ के आन्दोलन में फिर से जान आ गई। डा० अणे यहां बैठे हुए हैं, वे इस बात को जानते हैं। काश्मीर के एक जिम्मेदार आदमी ने कहना शुरू कर दिया कि एक डोगरा राज्य की स्थापना कर दी जाये और महा हिमाचल का निर्माण करना चाहिये। क्या इन सब मांगों के उठाने का अर्थ यह है कि हम पाकिस्तान को फिर एक बार बल दें और आज काश्मीर राज्य के अन्दर जो पाकिस्तानी तत्व घूमते फिर रहे हैं और जिनको वहां प्रश्रय मिल रहा है उन को बढ़ने का मौका दें और यह सारी चीजें वहां होती रहें। आज समय है कि अब भारत सरकार चेते और अपनी भूलें सुधार कर इस देश को छोटे छोटे टुकड़ों में बंटने से बचाये।

पंजाब के सम्बन्ध में एक बात कह कर मैं अपने भाषण को समाप्त कर दूंगा, और वह यह कि पंजाब के अन्दर आज जिस तरीके से विभाजन हुआ है वह क्या है कांग्रेस, भारत सरकार, पंजाब के चीफ मिनिस्टर और वहां के होम मिनिस्टर बराबर यह कहते रहे कि पंजाब का विभाजन नहीं होगा, पंजाब का विभाजन नहीं होगा। पंजाब के हिन्दू और सिख निश्चिंत होकर बैठे रहे, दोनों एक होकर पाकिस्तान संघर्ष में शत्रुओं का मुकाबला करते रहे, लेकिन कांग्रेस वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव के आ जाने से अचानक पंजाब के लोगों के कानों में जाकर पहली बार यह खबर पड़ी है, और एक दम उन की भावनाओं और विचारों के प्रतिकूल जाकर पड़ी है, जिसके कारण पंजाब के अन्दर एक रोष फैल गया और उस रोष के बाद जो घटना हुई उससे यह सदन और यह देश परिचित है। मैं कहना चाहता हूं कि पंजाबी सूबा बनाने की जो गलती सरकार ने की है उसको सम्भालने का अब एक ही तरीका है और वह यह है कि जब तक अकालियों द्वारा पैदा किया हुआ यह विष पंजाब के वातावरण से धुल नहीं जाता, जब तक पंजाब की यह गन्दगी नीचे नहीं बैठ जाती, अब तक पंजाब में वातावरण स्वच्छ नहीं हो जाता, तब तक केन्द्रीय सरकार पंजाब के अन्दर मजबूती के साथ राष्ट्रपति का शासन रक्खे और जब दोनों के हृदयों में सद्भावना का वातावरण बन जाये तभी पंजाब के अन्दर नई सरकारों का निर्माण किया जाये।

इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव को प्रस्तुत करता हूं और आशा करता हू कि जिन भावनाओं के साथ मैंने इस प्रस्ताव को रक्खा है उसकी पवित्रता और गम्भीरता का ध्यान रखते हुए और उन्हीं विचारों से सदन इस प्रस्ताव का अनुमोदन करे।

❀

(पेज ५ का शेष)

हैदराबाद में गूंज गई और हैदराबाद की सीमाओं को लांघती हुई—सारे देश के वातावरण में फैल गई—

"बरसा ले कोई कितने गोले
गोलियां या तीर
चाहे चला ले लाठियां भाले छुरी समशीर
डालो गले में फांसी हाथ-पांव में जंजीर
पर याद रहे धर्म का मर्दाना आर्यवीर
अन्यायियों के आगे कभी झुक न सकेगा।
सद्धर्म का प्रचार कभी रुक न सकेगा।"

निजाम को झुकना पड़ा

देश के कोने-कोने में हलचल मच गई। आर्य सत्याग्रह का डंका बज गया। वैदिक धर्म की जय-जयकार से सारा हैदराबाद गूंज उठा। जिस आवाज को निजाम "नरेन्द्र" को कारागार में डालकर कुचल देना चाहता था, वह और बुलन्द होती गई और सारे आकाश में गूंज गई। भाई० श्यामलाल, वेदप्रकाश, धर्मप्रकाश सरीखे अगणित शहीदों का रक्त अपना रंग दिखाने लगा। पूज्यपाद महात्मा नारायणस्वामी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, घनश्यामसिंह गुप्त के नेतृत्व में २०, हजार सत्याग्रहियों से निजाम की जेलें भर गयीं। प्रति दिन हैदराबाद की धरती पर आने वाले सत्याग्रही वीरों की हुंकारों ने निजाम को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। आर्यवीरों के गगनभेदी नारो से दिशायें अनुगुंजित हो उठीं। घबड़ाकर निजाम ने कहा—समझौता होना चाहिये। समझौते की वार्ता के निमित्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री देशबन्धु गुप्त वार्ता करने आये। वार्ता ७ घण्टे तक चलती रही। जिस ट्रेन से देशबन्धु जी दिल्ली जाने वाले थे वह जी० टी० एक्सप्रेस हैदराबाद के नामपल्ली स्टेशन पर खड़ी हुई थी और इधर वार्ता चल रही थी। इस वार्ता में सदरे आजम अकबर हैदरी, वजीरेसियासत मेहदी नवाजजंग, मि० कैफटन डायरेक्टर जनरल पुलिस और श्री देशबन्धु जी गुप्त थे। अन्ततोगत्वा निजाम सरकार ने सत्याग्रह की सभी मांगें स्वीकार कर लीं। उसने स्वीकार किया कि (१) आर्य समाज के मन्दिर, यज्ञशाला बनाने में निजाम सरकार से आदेश पाना आवश्यक नही होगा। (२) आर्य समाज के बाहर से इस राज्य में आने वाले प्रचारकों पर कोई प्रतिबन्ध न होगा। (३) आर्य समाज का साहित्य जब्त न किया जायगा। (४) आर्य समाज के विद्वानों पर से सारे अभियोग व प्रतिबन्ध उठा लिये जायेंगे। (५) आर्य समाज के कार्यकर्ताओं पर से सारे अभियोग, उठा लिये जायेंगे, जब्त की गई सम्पत्तियां वापस कर दी जायेंगी—नजरबन्दों को ससम्मान रिहा कर दिया जायगा। (६) आर्य समाज के विद्यालयों में धार्मिक शिक्षण की पूरी-पूरी स्वतन्त्रता रहेगी। (७) हिन्दी के प्रचार पर कोई प्रतिबन्ध नहीं रहेगा। सारी मांगे स्वीकार करते हुये भी निजाम सरकार के सदरे आजम ने कहा -

किन्तु पंडित नरेन्द्र को रिहा करने को हम तैयार नहीं। सारी मांगे एक ओर नरेन्द्र की मुक्ति एक ओर। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि निजाम सरकार नरेन्द्र जी को अपना सबसे भारी शत्रु समझती थी। देशबन्धु जी ने नागपुर मे श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त को टेलीफोन पर परिस्थिति से अवगत कराया। इधर जिस ट्रेन से श्री देशबन्धु जी जाने वाले थे उसके छूटने का समय हो रहा था। हैदरी का आदेश हुआ कि ट्रेन अभी रुकी रहे। गाड़ी स्टेशन पर खड़ी थी, वार्ता चलती रही। नागपुर से श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त ने श्री देशबन्धु जी से कहा—

यदि निजाम सरकार नरेन्द्र जी को छोड़ने को तैयार नहीं है तो वार्ता टूट जाने दो। अभी सत्याग्रह और चलता रहेगा। नरेन्द्र जी को खोकर हम सत्याग्रह को समाप्त नहीं कर सकते।

"श्री देशबन्धु जी ने सर अकबर हैदरी को इस निर्णय से अवगत करा दिया। वह भी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। सत्याग्रह चलता तो भी संकट और यदि नरेन्द्र जी को छोड़ता है तो भी संकट। निजाम को दोनों ओर ही खाई दिखाई दे रही थी। निजाम एक ऐसी नौका पर सवार था जिसके चारों ओर भवरें थी। विवश होकर उसकी ओर से अकबर हैदरी ने कहा अच्छा तीन महीने का आप हमें अवसर दें। तीन महीने बाद हम नरेन्द्र जी को भी छोड़ने का वचन देते हैं पर अब आप कृपा करके सत्याग्रह समाप्त होने की घोषणा करें। हम सभी सत्याग्रहियों को उनके घरों

तक का मार्ग व्यय दे रहे हैं और आप राज्य की सीमा पर जो साढ़े तीन हजार सत्याग्रही प्रतीक्षा में बैठे हैं, उन्हें भी वापस जाने का आदेश दें।"

यह प्रार्थना स्वीकार कर ली गई, समझौता हो गया। जी० टी० एक्सप्रेस निजाम के इतिहास में पहली बार सरकारी आदेश से अपने निर्धारित समय के दो घण्टे बाद तक रुकी रही। समझौता होने पर श्री देशबन्धु जी गुप्त को लेकर ही ट्रेन आगे बढ़ी। लोगों पर आर्य समाज की धाक बैठ गई।

सत्याग्रह सफलता पूर्वक समाप्त हो गया। विजय दुन्दुभी बजाते हुये आर्यजन अपने-अपने घरों को लौट गये। ओ३म्पताका अभिमान के साथ आसमान में लहराने लगी तीन महीने बीत गये पर निजाम सरकार ने नरेन्द्र जी को मुक्त नहीं किया। आर्य-नेता श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त ने महात्मा गाधी को निजाम की इस नीचता और दुराग्रह की सूचना दी। कहीं आग फिर न भड़क उठे। सोये हुये नाग फिर न फुंकार उठें। गांधी जी ने हस्तक्षेप करना उचित समझा। गांधी जी ने अकबर हैदरी को पत्र लिखा कि नरेन्द्र जी को आप अविलम्ब मुक्त करें। इधर हैदरी साहब अरविन्दाश्रम पांडिचेरी की माता जी के भी भक्त थे।

माता जी ने भी आचार्य अभयदेव जी के द्वारा अपना पत्र हैदरी साहब के पास भेजा कि पं० नरेन्द्र जी को आप अविलम्ब मुक्त करें। हैदरी ने जब निजाम के सामने नरेन्द्र जी को छोड़ने का प्रस्ताव रखा तो वह बौखला उठा। उसने अपने पत्र में सदरे आजम हैदरी को लिखा—हुकूमत नरेन्द्र को खतरनाक समझती है। उनकी रिहाई की अभी जरूरत नहीं।"

निजाम रूपी रस्सी की जलने के बाद भी ऐंठन नहीं गई। हैदरी ने निजाम को समझाया कि आप जमाने की रफ्तार समझें और मान जायें। कहीं फिर आर्य समाजियों ने सत्याग्रह छेड़ दिया तो रियासत का बेड़ा गर्क हो जायगा। फिर मैं भी जबान दे चुका हू। आप नरेन्द्र जी को अब रिहा करने में विलम्ब न करें। "निजाम को झुकना पड़ा। सत्याग्रह समाप्त होने के ४ महीना २१ दिन बाद और कुल मिलाकर १७ महीना २१ दिन का कालापानी भुगतने के बाद नरेन्द्र जी को एक दिन पुलिस अधीक्षक रात के सन्नाटे मे आर्य समाज मन्दिर सुलतान बाजार पर छोड़ गया और कहा—यही आपका पुराना घर है।' जनता में बिजली की तरह सूचना फैल गई। हर्ष और उत्साह की उमंगों से सारा नगर भर गया। अपने नेता को पाकर जनता फूली न समाई। और नगर में विशाल स्वागत-समारोह हुआ। जिसमे ५०००० नर-नारियों ने भाग लिया। इतना ही नहीं स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद दो अक्तूबर १९४९ को निजाम के उस्मानिया विश्वविद्यालय के विशाल गुम्बद के नीचे—स्वयं विश्वविद्यालय के वाइसचान्सलर— ने पण्डित जी का अपार जन समूह के समक्ष स्वागत किया और माला पहनाई। मानो-निजाम शाही आर्यत्व के सामने नतमस्तक हो गई।

(पेज ६ का शेष)

कार करने के लिए हमे नकारात्मक अथवा निषेधात्मक (Negative) दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए। ईसाई पोप भारत आया है अतः हम उसका विरोध करें, ईसाई प्रात सायं नगरकीर्तन द्वारा, नगर के किसी चौराहे पर ठहर कर प्रचार करते हैं अतः हमें भी उसके प्रत्युत्तर में वैसा ही करना चाहिए। किसी स्थान पर ईसाइयों ने सामूहिक धर्म परिवर्तन किया है इसलिए उसका विरोध करें और धर्मपरिवर्तन करने वालों को वापस लाने का प्रयत्न,यह नकारात्मक दृष्टिकोण है। इसका उत्साह अल्प-कालिक होता है। इससे हम अपने कार्य को बढ़ा नहीं सकते। दूसरे के कार्य में किंचित् अवरोध पैदा करके उन्हें अपने कार्य को अधिक जोर से प्रारम्भ करने की प्रेरणा देने का हमारा यह प्रयत्न किसी भी दशा मे वाछनीय नहीं। हमारा कार्य नकारात्मक न होकर प्रकारात्मक या विध्यात्मक (Positive) होना चाहिए। क्या आर्यसमाज डा० स्टैन्ली जोन्स की चुनौती को स्वीकार करेगा ?

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

आर्य बाल सम्मेलन

शनिवार १४ जून ६६ की मध्याह्न ३।। बजे आर्य समाज मोती नगर के वार्षिकोत्सव पर आर्य बाल सम्मेलन श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक के संयोजकत्व में हुआ जिसमें ३५ बालक-बालिकाओं ने महर्षि दयानन्द, आर्य समाज, और राष्ट्र भक्ति पर भाषण, कविता गायनादि की प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पारितोषिकादि प्राप्त किये। श्रोताओं ने भी बच्चों के उत्साह वर्धनार्थ ग्यारह २ रुपयों के कई पारितोषिक दिये।

छिन्दवाड़ा नगर

में पंजाब नेशनल बैंक की शाखा का उद्घाटन आर्य समाज द्वारा वैदिक यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ। समारोह में नगर के अनेक प्रतिष्ठित महानुभावों ने भाग लिया।

आर्य समाज, छिन्दवाड़ा

का वार्षिकोत्सव तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ का वृहदधिवेशन दिनांक २७-२८-२९ मई को हो रहा है।

आर्य समाज, फिरोजपुर झिरका

में श्री पं० आसाराम जी मैजिक लेन्टन द्वारा बड़ा प्रभावशाली प्रचार हुआ। मैजिक लेन्टेनसे गौवधके करुणा जनक दृश्य देख कर तो जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी। भारत-पाक युद्ध और शास्त्री जी की शव यात्रा के दृश्य देखने योग्य थे।

आर्य समाज, जमालपुर

के निर्वाचन मे श्री शुकदेव, चौधरी जी प्रधान श्री आनन्द स्वरूप जी गुप्त मन्त्री एव श्री बनारसी लाल जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज, बाड़मेर

के निर्वाचन में श्री धनराजमल जी सोनी प्रधान तथा श्री पुनमचन्द जी शारदा मन्त्री चुने गए।

आर्य समाज, आर्यनगर पहाड़गंज

नई दिल्ली के निर्वाचन में श्री गोविन्दराम जी वर्मा प्रधान, श्री डा० बलराम जी राणा मन्त्री, तथा श्री चमनलाल जी चावला कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य अनाथालय दिल्ली

दिनांक १० मई को भारत सरकार के मन्त्री श्री मेहरचन्द खन्ना ने दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य अनाथालय का निरीक्षण किया। बालक-बालिका विभाग की सफाई, रहन-सहन, खान-पान आदि की उत्तम व्यवस्था को अवलोकन कर मन्त्री महोदय बड़े प्रसन्न हुए।

संस्था के प्रधान श्री ला० देशराज जी चौधरी ने आश्रम की विभिन्न आवश्यकताओं की ओर मन्त्री महोदय का ध्यान आकर्षित किया। इस अवसर पर नगर निगम के कमिश्नर श्री के० एस० राठी भी उपस्थित थे।

महिला समाज, शिक्षा निकेतन

अम्बाला नगर की ओर से श्रीमती सुवीरादेवी जी उपदेशिका ने दस दिन तक परिवारो में यज्ञ हवन सत्संग और संस्कारों द्वारा प्रभावशाली प्रचार किया।

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

सुचारु रूप से चल रहा है। उसके उपदेशक विभाग मे इस वर्ष नवीन २० ब्रह्मचारी प्रविष्ट करने हैं। जो कि वैदिक मिशनरी बनकर आर्य समाज की ओर से भारत के भिन्न २ प्रान्तों में वैदिक धर्म का प्रचार कार्य कर सकें। छात्रों की शारीरिक अवस्था सुन्दर, आयु १६ वर्ष से लेकर २० वर्ष तक योग्यता संस्कृत हिन्दी लेकर X पास हो। यदि बुद्धि प्रखर योग्यता कम भी हो तो उस पर विशेष विचार किया जा सकता है। परन्तु उसको एक वर्ष और अधिक प्रवेशिका में पढ़ना होगा। प्रवेश जोलाई मास से प्रारम्भ होगा। खान, पान, पठन, पाठन, वस्त्र आदि जीवन निर्वाह की समस्त सामग्री विद्यालय का ओर से निःशुल्क है। प्रवेशार्थी १५ जून तक अपने निवेदन-पत्र भेज सकते हैं। कोर्स चार वर्ष का है।

बरबीघा (मुंगेर)

८ मई श्री पं० विष्णुदयाल जी की अध्यक्षता में आर्य समाज के मन्त्री डा० दामोदरराम शर्मा ने भाषण करते हुए भारत में विदेशी ईसाई पादरियों के कुचक्र की घोर निन्दा करते हुए इसे अराष्ट्रीय तत्व बताया और नागा लैंड की समस्या की चर्चा करते हुए चेतावनी देते हुए कहा कि सरकार देर से आर्य समाज की बात मानती है। यही वजह है कि इस बीच कुछ भयानक परिणाम हो जाया करते हैं। इन्होंने भारत से विदेशी माइकल स्काट के निष्कासन पर हर्ष प्रकट करते हुए सरकार की सराहना की।

मन्त्री महोदय ने आर्य समाज के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए इसके संगठन और एकता को मजबूत करने पर बल दिया। एवं उपस्थित जन समुदाय से "सार्वदेशिक सभा के आदेशों का पालन कर केन्द्रीय सभा को मजबूत बनाने में योगदान देने की अपील की।

अध्यक्षीय भाषण में श्री प० विष्णु दयाल जी ने देश में आर्य समाज की आवश्यकता पर जोर देते हुए इसके प्रचार और प्रसार में सहयोग देने की महत्ता पर प्रकाश डाला।

दामोदरराम शर्मा

आर्य समाज, नैरोबी (अफ्रीका) ६३वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नैरोबी (ई० आ०) का ६३ वां वार्षिकोत्सव आर्य गर्ल्स स्कूल के प्रागण में ता० १७-७-६६ से २-८-६६ तक बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। इसमें १० दिन तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। प्रसिद्ध आर्य विद्वानों और उपदेशकों के उपदेश होंगे। वेद कथा प्रतिदिन होगी। इस अवसर पर धर्म सम्मेलन, अन्तर स्कूल वाद विवाद सम्मेलन, स्वास्थ्य सम्मेलन आदि। आर्य समाज की ओर से चलाये जाने वाले तीनों स्कूलों की तरफ से भाषण आदि का मनोरञ्जक, शिक्षाप्रद प्रोग्राम भी रखा जायेगा। इसके अतिरिक्त इस उत्सव के अवसर पर विभिन्न आर्य संस्थाऐं भी अपना रुचिकर कार्यक्रम रखने का विचार कर रही हैं।

बालकों का प्रवेश

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय (स्कूल) विभाग में छोटे बालकों का प्रवेश जुलाई मास में होगा। सात-आठ वर्ष तक की आयु के बालक प्रविष्ट हो सकते हैं। छात्रावास की उत्तम व्यवस्था, संस्कृत के साथ अंग्रेजी विज्ञान आदि आधुनिक विषयों की शिक्षाका अनुपम समन्वय। भोजन तथा निवास का उत्तम प्रबंध। गुरुकुल की उपाधियां सरकार तथा अन्य विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत हैं। विस्तृत जानकारी के लिए लिखें आचार्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, जि० सहारनपुर।

नगरपालिकाध्यक्ष के चुनाव में आर्य समाज के मन्त्री विजयी

आपको यह जान कर बड़ा ही हर्ष होगा कि अभी दिनांक ९-५-६६ को पीपाड़ शहर, नगरपालिका के अध्यक्ष के महत्वपूर्ण चुनाव में आर्य-समाज, पीपाड़ के कर्मठ युवक मन्त्री श्री मोहनलाल जी आर्य, भारी बहुमत से विजयी हुए हैं।

आपकी शानदार सफलता पर आर्य समाज, पीपाड़ व सारे नगर में उत्साह व हर्ष का वातावरण बन गया। आपने नगर के प्रतिक्रियावादियों और समाजद्रोही तत्वों से हमेशा लोहा लिया है। आपकी विजय से उन तत्वों को करारा जवाब मिला।

आर्य वीर दल केन्द्रीय शिविर

१२ जून १९६६ से २६ जून १९६६ तक दिल्ली में श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल की अध्यक्षता में आयोजित किया गया है। इस शिविर में प्रान्तीय अधिकारियों के अतिरिक्त आर्य वीर दल का सेवा कार्य करने के इच्छुक शिक्षित व्यक्ति भी भाग ले सकेंगे। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् ऐसे व्यक्तियों की नियुक्ति केन्द्र की ओर से विभिन्न प्रान्तों में की जायगी। शिविर में भोजन का प्रबन्ध निःशुल्क होगा। जो आर्य वीर इसमें भाग लेना चाहें, वे अपना प्रार्थना पत्र यथा-सम्भव अपने प्रान्तीय संचालकों के द्वारा मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल, दयानन्द भवन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली के पते पर ३१-५-६६ तक भेजें।

शिविरार्थियों को ११जून १९६६ की शाम तक दिल्ली पहुंच जाना चाहिए।

आर्य वीर दल फरीदाबाद

का चुनाव श्री श्यामलाल जी 'अमर' की देख-रेख में हुआ।

१. संरक्षक—श्री चन्दूलाल आर्य
२. नगर नायक—श्री रमेशचन्द दुरेजा
३. प्रधान मन्त्री—श्री ओम्प्रकाश कपिल
४. शिक्षक—श्री सतीशचन्द्र अमर
५. कोषाध्यक्ष—श्री सुरेशचन्द गुप्ता
६. बौद्धिकाध्यक्ष—श्री चिन्तन वैद्य

चुने गये।

Suave
in
a
Suit

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २)५०
सत्यार्थप्रकाश २)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
व्यवहार भानु)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र १) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७×४० इन्च २)५०
" " ३६×५४ इन्च ४)५०
" " ४५×६७ इन्च ६)५०
कर्तव्य दर्पण)५०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
मराठी सत्यार्थप्रकाश १)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से))५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
कठोपनिषद्)५० प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १)२५
मृत्यु और परलोक १)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
अभ्यास और वैराग्य १)६५
निज जीवन वृत्त वनिका (सजिल्द))७५
बाल जीवन सोपान १)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म)६२
उपनिषद् कथामाला)२५
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार)२०
आदर्श गुरु शिष्य)२५
कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
पुरुष सूक्त)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर)६२
स्वर्ग में हड़ताल)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)२५
वैदिक तत्व मीमांसा)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
वेद और विज्ञान)७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३०
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
इराक की यात्रा २)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक ईश वन्दना)४०
वैदिक योगामृत)६२
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
भ्रम निवारण)३०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
वेद की इयत्ता १)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह)७५
कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम् (पूर्वार्द्ध) १)५०
" " (उत्तरार्द्ध) १)५०
वैदिक संस्कृति)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
सायण और दयानन्द १)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)३०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०
संस्कार महत्व)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
चरित्र निर्माण १)१५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
अनुशासन का विधान)२५
धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय २)
आर्य समाज के महाधन २)५०
एशिया का वेनिस)७५
स्वराज्य दर्शन १)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
भजन भास्कर १)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५

दुबारा छप गई । आर्य जगत में सबसे सस्ती

सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत

पृ० २००—नेट मूल्य ४० पैसे

ARYA SAMAJ
ITS CULT AND CREED

A unique and elegantly printed Book of the Day

By—Acharya Vaidyanath Shastri.

Rs. 5/-

This is the most popular and widely read first English book of Acharya Vaidya Nath Shastri a well known Arya Samaj Scholar and author credited with writing books in Hindi of outstanding merit on religion and philosophy some of them winning prizes.

The book presents a scholarly and lucid exposition of the Cult and Creed of AryaSamaj ranking among the high-class rare English literature of Arya Samaj. It is a worth reading worth preserving & worth presenting book to the English reading persons especially to the intelligentsia.

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली १ से प्रकाशित

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख प

दयानन्द भवन नई दिल्ली-१ | फोन २७४७७१ | ज्येष्ठ शुक्ला १० सवत् २०२३ | ३१ मई १९६६ | दयानन्दाब्द १४२ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९

दंडी स्वामी गुरुवर विरजानन्द जी महाराज

वेद-आज्ञा

पशु-वृद्धि से लाभ

होता यक्षदश्विनौ छागस्य वपाया मेदसो जुषेतां हविर्होतर्यज। होता यक्षत्सरस्वतीं मेषस्य वपाया मेदसो जुषतां हविर्होतर्यज। होता यक्षदिन्द्रमृषभस्य वपाया मेदसो जुषतां हविर्होतर्यज ॥४१॥ यजुर्वेद

संस्कृत भावार्थ—

अत्र वाचकलु०—ये मनुष्याः पशुसंख्यां बलं च वर्धयन्ति ते स्वयमपि बलिष्ठा जायन्ते। ये पशुजं दुग्धं तज्जमाज्यं च स्निग्धं सेवन्ते ते कोमलप्रकृतयो भवन्ति। ये कृषिकरणायैतान्वृषभान्युञ्जन्ति ते धनधान्ययुक्ता जायन्ते।

आर्य भाषा भावार्थ—

इस मन्त्र में वाचकलु०—जो मनुष्य पशुओं की संख्या और बल को बढ़ाते हैं वे आप भी बलवान् होते और जो पशुओं से उत्पन्न हुए दूध और उससे उत्पन्न हुए घी का सेवन करते वे कोमल स्वभाव वाले होते हैं और जो खेती करने आदि के लिये इन बैलों को नियुक्त करते हैं वे धन धान्ययुक्त होते हैं।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

जिनकी मथुरा स्थित कुटिया के निर्माण की

व्यवस्था

सभा प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास के सात्विक दान से की जा रही है।

सत्यार्थप्रकाश

मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है। अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहाता है।

जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।

इसीलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

वार्षिक ७) रु० | विदेश १ पौंड | एक प्रति १६ पैसे

धर्मं बहु कुर्यात्

सम्पादक—रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री
सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

बलेन लोकस्तिष्ठति

वर्ष—१ | अंक—२

शास्त्र-चर्चा

दैव और पुरुषार्थ

उमोवाच—

भगवन् सर्वभूतेश लोके कर्मक्रियापथे। दैवात् प्रवर्तते सर्वमिति केचिद् व्यवस्थिताः ॥

भगवन् ! जगत में दैव की प्रेरणा से ही सबकी कर्ममार्ग में प्रवृत्ति होती है। ऐसी कुछ लोगों की मान्यता है।

अपरे चेष्टया चेति दृष्ट्वा प्रत्यक्षतः क्रियाम्। पक्षभेदे द्विधा चास्मिन् संशयस्थं मनो मम ॥ तत्त्वं वद महादेव श्रोतुं कौतूहलं हि मे ॥

दूसरे लोग क्रिया को प्रत्यक्ष देख कर ऐसा मानते हैं कि चेष्टा से ही सबकी प्रवृत्ति होती है, दैव से नहीं। ये दो पक्ष हैं। इनमें मेरा मन संशय में पड़ जाता है; अतः महादेव ! यथार्थ बात बताईये। इसे सुनने के लिये मेरे मन में बड़ा कौतूहल हो रहा है।

श्रीमहेश्वर उवाच—

लक्ष्यते द्विविधं कर्म मानुषेष्वेव तच्छृणु। पुराकृतं तयोरेकमैहिकं त्वितरत् तथा ॥

मनुष्यों में दो प्रकार का कर्म देखा जाता है, उसे सुनो। इनमें एक तो पूर्वकृत कर्म है और दूसरा इहलोक में किया गया है।

लौकिकं तु प्रवक्ष्यामि दैव मानुष निर्मितम्। कृषौ तु दृश्यते कर्म कर्षणं वपने तथा ॥ रोपणं चैव लवनं यच्चान्यत् पौरुषं स्मृतम्। दैवादसिद्धिश्च भवेत् दुष्कृतं चास्ति पौरुषे ॥

अब मैं दैव और मनुष्य दोनों से सम्पादित होने वाले लौकिक कर्म का वर्णन करता हूं। कृषि में जो जुताई, बोवाई, रोपनी, कटना तथा ऐसे ही और भी जो कार्य देखे जाते हैं वे सब मानुष कहे गये हैं। दैव से उस कर्म में सफलता और असफलता होती है। मानुष कर्म मे बुराई भी सम्भव है।

रोपणं चैव लवनं यच्चान्यत् पौरुषं स्मृतम् काले वृष्टिः सुवापं च प्ररोहः पांक्तरेव च। एवमादि तु यच्चान्यत् तद् दैवतमिति स्मृतम् ॥

बीज का रोपना और काटना आदि मनुष्यका काम है; परन्तु समय पर वर्षा होना, बोवाई का सुन्दर परिणाम निकलना, बीज में अंकुर उत्पन्न होना और सस्य का अंकुरित होकर प्रकट होना इत्यादि कार्य दैव सम्बन्धी हैं। दैव की अनुकूलता से ही इन कार्यों का सम्पादन होता है।

पंच भूत स्थितिश्चैव ज्योतिषमयनं तथा। अबुद्धिगम्यं यन्मर्त्यैर्हेतुभिर्वा न विद्यते। यादृशं चात्मना शक्यं तत् पौरुषमिति स्मृतम् ॥

पञ्चभूतों की स्थिति, ग्रहनक्षत्रो का चलना फिरना, तथा जहां मनुष्यों की बुद्धि न पहुंच सके अथवा किन्हीं कारणों या युक्तियों से भी समझ में न आ सके ऐसा कर्म शुभ हो या अशुभ दैव माना जाता है और जिस बात को मनुष्य स्वयं कर सके, उसे पौरुष कहा गया है।

केवलं फलनिष्पत्तिरेकेन तु न शक्यते। पौरुषेणैव दैवेन युगपद् ग्रथितं प्रिये ॥

(शेष पेज १३ पर)

तीन बात

१—जितनी प्रति आपकी सेवामें जा रही हैं उनका धन, प्रति सप्ताह या प्रति मास मनियार्डर फीस काट कर भेजते रहें। देर से धन भेजने में आपको और हमें कष्ट होता है।

२—प्रत्येक आर्य समाज को कम से कम १० प्रति-प्रति सप्ताह मंगा कर अपने १० सदस्यों को देनी चाहिए। और १० प्रति का मूल्य केवल १)१० होता है। मनियार्डर फीस काट कर भेजते रहें।

३—भारत की चार हजार आर्य समाजें यदि १०-१० प्रति मंगायें तो आपका यह पत्र प्रति सप्ताह चालीस हजार छपने लगे।

कृपया तीन बातों पर ध्यान दें।

—प्रबन्धक

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास की माता जी का देहान्त

आर्य जगत में शोक

दिल्ली, मई २३। आर्य जगत में यह समाचार बड़े दुःख के साथ सुना जायगा कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रीयुत सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास की पूज्या माता श्रीमती जयलक्ष्मी जी का हृदय की गति बन्द हो जाने से २१ मई ६६ को बम्बई में देहान्त हो गया।

माता जी न केवल अपने घर की ही वरन् आर्य समाज की एक बड़ी विभूति थीं। समस्त परिवार को धर्मनिष्ठ एवं आर्य समाज का भक्त बनाने में उनका बड़ा हाथ था मातुश्री को श्री सेठ प्रतापसिंह जी जैसा रत्न आर्य-समाज को प्रदान करने का गौरव प्राप्त है। वे अपने पीछे धन सम्पदा और सुयोग्य सन्तानों से परिपूर्ण घर छोड़ गई हैं। वस्तुतः वे बड़ी सौभाग्य शालिनी थीं।

मैं अपनी तथा समस्त आर्य जगत की ओर से श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी तथा परिजनों के प्रति हार्दिक समवेदना का प्रकाश करता हुआ दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

रामगोपाल, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

शोक प्रस्ताव

सार्वदेशिक सभा की ओर से समवेदना का तार भेजा गया है और कार्यालय के स्टाफ ने शोक सभा करके शोक प्रस्ताव पारित किया जो श्री सेठ जी को भेजा है। आर्य समाज दीवान हाल और आर्य केन्द्रीय सभा ने भी समवेदना के तार भेजे हैं।

अंग्रेजी तार का पता: - "शूर" बम्बई तथा

घर का पता:—कच्छ केसल, सरदार पटेल रोड, बम्बई—१

परिचय शीघ्र भेजें।

आर्य समाज-परिचयांक

भारत और भारत से बाहर चार हजार से अधिक आर्य समाजें हैं। लाखों सदस्य हैं। करोड़ों रुपया व्यय करते हैं।

किन्तु सर्व साधारण को पता नहीं !

इसमें आर्यसमाज की सदस्य संख्या, आय-व्यय, मन्त्री का चित्र और प्रधान का नाम इस अङ्क में देंगे

यह विशेषांक भी विशेष ही होगा

हजारों मन्त्रियों के चित्रों सहित यह विशेषांक आर्य जगत् का दर्शनीय अङ्क होगा।

इसका मूल्य केवल १)१० पैसा होगा

प्रत्येक आर्य समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री महोदय अपनी संस्था का परिचय और चित्र भेजने में शीघ्रता करें।

इस महान् अंक पर २५-३० हजार रुपया व्यय होगा। सभा पर इतनी भारी धनराशि का भार न पड़े और सुगमता से अंक प्रकाशित हो जाय इसके लिए मन्त्री महोदयों से, कम से कम १० अंक लेने और उसके ११) अग्रिम भेजने की प्रार्थना की थी। हर्ष की बात है कि आर्यसमाजों के मन्त्री महानुभावों ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की और धन भेज रहे हैं।

आप जिस किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री हैं उसका परिचय, अपना नाम और चित्र तथा प्रधान का नाम भेजने में देर न करें। प्रबन्धक

आर्यसमाज परिचयांक जून में प्रकाशित होगा। १ सप्ताह तक आने वाले परिचय ही इस अङ्क में स्थान पा सकेंगे।

अध्यापिकाओं की आवश्यकता

आवश्यकता है (१) एक प्राध्यापिका एम० ए० (शिक्षाशास्त्र) (२) एक अध्यापिका बी०ए० (संस्कृत, भूगोल, साहित्यिक अंग्रेजी) (३) एक अध्यापिका बी० ए० (संस्कृत, गृह विज्ञान, साहित्यिक अंग्रेजी) (४) चार अध्यापिकाएं एच० टी० सी० की। वेतन शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित वेतन क्रमानुसार दिया जायेगा। प्रशिक्षित एवं अनुभवी अध्यापिकाएं साक्षात्कार हेतु निजी व्यय पर १० जून ६६ को आवेदन-पत्र सहित सायं ६ बजे विद्यालय भवन में उपस्थित हो। आर्य समाजी विचार धारा की अध्यापिकाओं को प्राथमिकता।

प्रबन्धक, आर्य कन्या इन्टर कालिज, सदर, मेरठ।

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

नागालैंड और आर्यसमाज

पिछले दिनों नागालैंड में जैसी विद्रोहात्मक कारंवाईयां होती रही हैं उनमें अभी तक कोई कमी आने के आसार नहीं दिखाई देते। इन उपद्रवों ने देश के राजनीतिक नेताओं को और आम जनता को कैसा चिन्तातुर बनाए रखा, यह किसी से छिपा नहीं है। नागा विद्रोहियों के साथ भारत सरकार ने जो ढील दिखाई उसी का परिणाम यह हुआ कि मिजो लोगों में भी विद्रोह भड़क उठा। भारतीय सेना की तत्परता से मिजो लोगों के उपद्रवों पर अब काफी हद तक नियंत्रण पा लिया गया है किन्तु अब मिजो और नागा-विद्रोही दोनों मिलकर भारत सरकार से मोर्चा लेने की सोच रहे हैं। ताजा समाचार यह है कि एक हजार सशस्त्र नागा-विद्रोही मिजोलैंड के विद्रोहियों का साथ देने के लिए अपने प्रदेश से चल भी पड़े हैं।

इन दोनों की सम्मिलित शक्ति का मुकाबला करने में भारत सरकार की कठिनाई तो बढ़ेगी ही परन्तु मिजो हों या नागा, इन दोनों के विद्रोह की समस्या पर जब हम विचार करते हैं तो हमे उसका मूल कारण एक ही नजर आता है और वह कारण यह कि अभी तक भारत सरकार ने वहां ईसाई पादरियों को तो जाने की खुली छूट दे रखी थी किन्तु अन्य भारतवासियों को नहीं। इन सरल प्रकृति के लोगों को विदेशी पादरियों ने ही विद्रोह के लिए भड़काया। ब्रिटिश शासन के समय वे पहाड़ी सीमान्त प्रदेश इन विदेशी पादरियों के लिए जैसे अभयारण्य बने हुए थे वे वैसे ही अब भी बने हुए है। भारत पर से विदेशी साम्राज्य भले ही समाप्त हो गया किन्तु इन जगली जातियों पर विदेशी पादरियों का प्रभाव अभी तक अक्षुण्ण है। शांति मिशन की आड़ में विदेशी पादरी माइकेल स्काट ने नागालैंड के प्रश्न को जिस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय रूप देने का प्रयास किया उससे अन्त में खिन्न होकर भारत सरकार को उन्हें भारत से चले जाने को कहना पड़ा। परन्तु नीतिकार कहते हैं।

प्रक्षालनाद्धि पंकस्य
दूरादस्पर्शनं वरम्।

अर्थात् कीचड़ को धोने के बजाय अच्छा यह है कि पहले से ही उसका स्पर्श न किया जाए। किन्तु भारत सरकार पहले जानती-बूझती भी खुद कीचड़ का आह्वान करती है और जब उसके ससर्ग से वस्त्र मैले होने लगते हैं तब उसको धोने की सोचती है। फिर भी 'देर आयद दुरुस्त आयद'। विलम्ब से ही सही, पादरी स्काट को भारत से निकाल कर सरकार ने अच्छा ही किया।

विधर्मियों का मुकाबला करने की जैसी सामर्थ्य आर्यसमाज में है वैसी किसी अन्य सस्था में नहीं है। हालांकि, विदेशी पादरियों जैसी साधन-सम्पन्नता आर्यसमाज के पास नहीं है, फिर भी जहां एक भी आर्यसमाज का प्रचारक पहुंच जाता है वहां विधर्मियों के झुण्ड में भगदड़ मच जाती है। इसका कारण न धन-बल है न राजबल केवल तर्कबल है। आर्यसमाज के तर्क प्रधान प्रचार के सामने अंधविश्वास व्यक्ति-पूजा पाखण्ड और प्रलोभनों पर आधारित विधर्मी टिक नहीं पाते। अभी तक कभी भारत सरकार ने आर्यसमाज के उपदेशकों और साधु सन्यासियों को मिजो या नागाओं के प्रदेश में जाने की सुविधा नहीं दी इसी कारण विदेशी पादरी निर्भय और निर्द्वन्द्व होकर इन जगली जातियों को अपनी स्वार्थपूर्ण दुरभिसधि का साधन बनाते रहे। आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब नागालैंड में आर्य समाज की स्थापना हो गई है और जुलाई के अन्तिम सप्ताह में वहां एक विशाल आर्य सम्मेलन हो रहा है। इस सम्मेलन की सफलता के लिए आर्य जनता को अपनी ओर से भरपूर सहयोग देना चाहिये।

नागालैंड में केवल भारत-विरोधी विदेशी पादरियों से प्रभावित विद्रोही नागा ही नही है बल्कि वहां हिन्दू नागाओं की सख्या कहीं अधिक है और वे हिन्दू नागा पृथक् नागालैंड की माग के विरुद्ध तो हैं ही, बल्कि सब तरह से भारत-सरकार से सहयोग के इच्छुक हैं, किन्तु अदूरदर्शी कांग्रेसी नेता जैसे पहले मुस्लिम लीग को प्रश्रय देते आए और अब ईसाइयों को प्रश्रय दे रहे हैं वैसे ही इन विद्रोही नागाओं को समस्त नागाओं का प्रतिनिधि मानकर उनसे बात करते रहे। नागालैंड की कुल जनसंख्या ३,६९,०००है जिसमें १,२५,००० ईसाई-नागा हैं और दो लाख पिचासी २,८४,००० हिन्दू नागा हैं। यदि यह भी मान लिया जाए कि समस्त ईसाई नागा भारत-विरोधी हैं, तब भी उनसे दुगने से अधिक हिन्दू नागा ऐसे हैं जो भारत के सहयोगी है। परन्तु भारत सरकार न तो उन सबके एकीकरण के लिए कोई प्रयत्न करती है और न ही उन्हें उचित महत्व देती है। इसको कहते हैं अपने पाव पर कुल्हाड़ी मारना। इन हिन्दू नागाओं की नेता रानी गदायलू ने अग्रेजों के समय उनके विरुद्ध शेष भारत में किये गए कांग्रेस के स्वातन्त्र्य आन्दोलन से प्रभावित हो कर नागा-प्रदेशमें ब्रिटिश शासन के विद्रोह का झंडा बुलन्द किया था। चाहिये तो यह था कि भारत सरकार आज रानी गदायलू जैसे इन हिन्दू नागा-नेताओं के हाथ में नागालैंड का नेतृत्व सौंपती परन्तु अब भी भारत सरकार की अनुमति से जो वहां सघ-सरकार स्थापित हुई है उसमें भी सबके सब मंत्री तथा अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी ईसाई नागा ही हैं।

वहां के हिन्दू नागाओं को एक सूत्र में बांधना ही आर्यसमाज का ध्येय है और हमें विश्वास है कि अपने तर्क-संगत प्रचार, अपनी निःस्वार्थ सेवा तथा अपने सदाचार-युक्त जीवन के द्वारा आर्य समाज के सेवक अपने उद्देश्य में सफल होंगे। भारत सरकार को भी चाहिये कि नागालैंड में आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार के लिए और हिन्दू नागाओं के एकीकरण के लिए सब प्रकार की सुविधाएं दे। क्योंकि वास्तव में तो यह भारत सरकार का ही काम है जिसे पूरा करने की जिम्मेवारी आर्यसमाज अपने ऊपर ले रहा है।

सन्त जी और हिन्दू-सिख एकता

जब से भारत सरकार ने पजाबी सूबे की मांग स्वीकार की है तब से इस अनायास विजय के कारण अकाली नेता सन्त फतहसिंह के दिमाग में विचित्र अहंभाव का समावेश हो गया है। वे समझते हैं कि जब मैंने अनशन की धमकी मात्र से भारत सरकार को अपनी अयुक्तियुक्त मांग मानने पर विवश कर दिया तो आगे भी भारत सरकार मेरी बांदी ही रहेगी और जिस तरह नचाऊंगा उस तरह नाचेगी। भारत सरकार सन्त जी के इशारों पर नाचने को कहां तक तैयार है यह तो हम नहीं कह सकते, परन्तु जहां तक राष्ट्र की जनता का प्रश्न है वह यह समझती है कि सन्त जी के साथ बहुत रियायत हो चुकी अब और अधिक रियायत नहीं होनी चाहिये।

सन्त जी कभी कहते हैं कि मैं १९६१ की जनगणना के आधार पर पजाब का विभाजन स्वीकार नहीं करूंगा, कभी कहते हैं कि पजाबी सूबे के निर्माण के बाद मैं सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लूंगा, किन्तु यदि पजाबी सूबे की सीमाओं का निर्धारण मेरी इच्छा के अनुसार नहीं हुआ तो मैं जरूर हस्तक्षेप करूंगा। सन्त जी अपने आपको हिन्दू-सिख एकता का पैगम्बर बनने से भी नहीं चूकते और राष्ट्र प्रेमी होने का तो वे कदम-कदम पर दम भरते हैं।

परन्तु उनका राष्ट्र-प्रेम कैसा है और हिन्दू-सिख एकता की उनकी प्रतिज्ञा का अर्थ क्या है, यह उनके हाल के वक्तव्यों से स्पष्ट हो जाता है। पंजाबीसूबे की मांग माने जाने से पहले जिस तरह उन्होंने हरियाणा के समर्थकों को झांसे में रखा, वैसे ही झांसे में रखा कांग्रेसियों को भी। परन्तु सन्त जी के वर्तमान रवैये से हरियाणा के समर्थकों का, और कांग्रेसियों का भी, भ्रम-निवारण हो गया होगा — ऐसा हमें विश्वास है। अब सन्त जी यह कहते हैं कि "मैं चंडीगढ़ का किसी भी प्रकार पजाबी सूबेसे बाहर रहना बर्दाश्त नहीं करूंगा तब हरियाणा के समर्थक समझ गए होंगे कि इनकी भावनाओं का सन्त जी के हृदय में कितना आदर है और वे कहा तक उनके साथ न्याय करने को तैयार होंगे।

जहा तक कांग्रेसियों का सम्बन्ध है, इनको सन्त जी ने झांसा दिया था कि पजाबी सूबा बन जाने के पश्चात् अकाली दल कांग्रेस मे मिल जाएगा और सब अकाली सब तरह से कांग्रेस का समर्थन करेंगे। आगामी चुनावों को ध्यान में रखते हुए शायद कांग्रेस सरकार के सामने यही तो सबसे बड़ा प्रलोभन था जिस के कारण उसने पजाबी की माग

(शेष ४ पेज पर)

सामयिक-चर्चा

दयनीय निद्रा

'मानव समाज का इतिहास' नामक यूनेस्को के ताजा प्रकाशन में भारत को बदनाम करने की विदेशी ग्रन्थकारों की सुनिश्चित नीति का एक बार पुन. खेद जनक दिग्दर्शन हुआ है। इस ग्रन्थ के सम्बन्ध मे शिक्षा मंत्री श्री छागला को लोक-सभा में यह कहने और स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा है कि यह हमारे इतिहास का घोर अपमान है।

इस ग्रन्थ में जहा असत्य बातों की भरमार है वहा इस कपोल-कल्पना को सपुष्ट करने का प्रयत्न किया गया है कि भारतीय संस्कृति विदेशी प्रभाव से प्रभावित है मानों उसमें अपनी कोई अच्छाई नहीं है। यह भी कहा गया है कि रांची के स्तूपों में चीनी भवन-निर्माण विद्या का प्रभाव मुख्यत ओत-प्रोत है। और ऋग्वेद १२०० वर्ष से अधिक काल का नहीं है। हरप्पा की रक्षा दीवारें विदेशी शासकों द्वारा बनवाई गई थी।

ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा लिखित एक अध्याय में, जिसका शीर्षक 'पाकिस्तान के ५००० वर्ष' है, झूठ बोलने मे पराकाष्ठा करदी गई है। इस पुस्तक मे यह दिखाने की धूर्तत' पूर्ण कुचेष्टा की गई है कि पाकिस्तान की आयु ऋग्वेद की आयु से चौगुनी है जबकि पाकिस्तान की आयु अभी केवल १९ वर्ष की है। इस समय से पूर्व घोर पक्षपाती इतिहासज्ञों को भी उसके मूल में भारतीयता तथा भारतीय पूर्वज देख पड़ेंगे। इस प्रकार के प्रकाशनों के विषय में भारत सरकार सोई हुई देख पड़ती है जबकि पाकिस्तान का प्रकाशन एव प्रचार कार्य बढ़ा हुआ है और वह उन विवादो मे जिनमें भारत को ग्रसित होना पड़ता है, इससे अमित लाभ उठा लेता है। भारत सरकार को इस प्रकार के प्रकाशनों को प्रभावहीन बनाने के लिए व्यवस्थित पग उठाना चाहिए अन्यथा भावी इतिहासकार जो वास्तविक तथ्यों को प्रस्तुत करने का सत्प्रयास करेगी। भारत सरकार की उपेक्षा का कड़ा नोटिस लिए बिना न रह सकेगा और इसे दयनीय निद्रा की संज्ञा देगा। आनन्द तो यह है कि उस कमीशन में जिसने यह ग्रन्थ प्रकाशित किया है तीन अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के भारतीय विद्वान भी हैं कई बातों में उनके मत भेद को प्रबल शब्दों मे प्रकट भी नहीं किया गया है अपितु वह फुटनोट के रूप मे जोड दिया गया है। उन्हें अपनी स्थिति स्पष्ट करदेनी चाहिए।

संस्कृत की महान् परम्परा

श्रीयुत के० एम० मुन्शी

(२)

हमारे देशवासियों के जीवन में उथल-पुथल मचाने वाले एक दूसरे काल का उल्लेख कर देना आवश्यक प्रतीत होता है। १२वीं शती से १९वीं शती का काल तूफानी काल समझा जाता है। उत्तर भारत में प्रायः सभी राज्य समाप्त, बहुत से धर्म मन्दिर नष्ट भ्रष्ट कर दिये गये थे। हजारों स्त्री पुरुष या तो दास बना लिए गये थे या उन्हें निरुपाय होकर विदेशी आततायियों का धर्म स्वीकार करना पड़ा था। उत्तर भारत के अनेक स्थानों पर स्थित देशी विश्व विद्यालय भी नष्ट कर दिये गये या संरक्षण प्राप्त न होने से वे मृतप्राय हो गये थे। इस भीषण काल में एकमात्र संस्कृत प्रेरणा स्रोत बनी रही और उसने संस्कृति की रक्षा करने में योग दान दिया। इसके साथ ही लोक भाषाओं को उर्वरा बना कर मनुष्यों की आशाओं को संबल प्रदान किया।

जन सामान्य की भाषाएं विविध क्षेत्रों और कालों में विभिन्न रही हैं। परन्तु उनमें संस्कृत से गृहीत एकता बनी रही है। संस्कृत ने न केवल लोक-साहित्य को सजीव बनाया है अपितु लोगों को जीवन भी प्रदान किया है। विदेशी शासन में कुचलीहुई आत्मा समस्त भाषाओं की जननी और उसके साहित्य के माध्यम, से उसकी प्रेरणा से अपनी शक्ति किस प्रकार स्थिर रख सकी इसके स्पष्टीकरण के लिए अनेक महात्माओं, सन्तों, कवियों एवं साहित्यकारों के नाम उद्धृत किये जा सकते हैं।

जब १९वीं शती के उत्तरार्ध के अन्तिम चरण में ब्रिटिश शासकों के द्वारा विश्वविद्यालयों की संस्थापना हुई तो दूसरी मुख्य-तम भाषा के रूप में संस्कृत देश के नए विशिष्ट जनों में प्रकाश का कारण बनी। इसके फल-स्वरूप संस्कृत की संस्कृति का शक्तिशाली पुनरुज्जीवन हुआ जिसने पाश्चात्य संस्कृति के सम्पर्क में आकर वर्तमान भारतीय जागृति को जन्म दिया।

स्वाधीनता से पूर्व की शती में ब्रिटिश सैनिकों एवं अंग्रेजी भाषा ने भारत को एकता प्रदान की और विश्वविद्यालयों से निकले हुए लोगों की सम्पर्क भाषा का स्थान अंग्रेजी ने लिया जिसके ऊपर संस्कृत की संस्कृति की मौलिक एकता छाई रही।

अंग्रेजी हथियार तिरोहित हुए। भारत का विभाजन हुआ। आज भारतीयों की सामूहिक अवचेतना पर संस्कृत की सभ्यता का प्राधान्य है। (क्रमशः)

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

*

(पृष्ठ ३ का शेष)

मानी थी। कांग्रेस-अध्यक्ष कामराज सोचते थे कि भले ही पजाब का विभाजन हो, जाए किन्तु कांग्रेस का शासन बना रहे। सत्ता के इसी मोह ने कांग्रेस की कुर्सी को अक्षुण्ण रखने की इतनी बडी कीमत चुकाई। पजाब का कांग्रेसी मन्त्रिमडल और प्रदेश-कांग्रेस भी जो पजाबी सूबे की मांग माने जाने से पन्द्रह मिनट पहले तक उसका घोर विरोध करते रहे, देखते ही देखते गिरगिट की तरह रग बदल कर पजाबी सूबे के समर्थक इसलिए बन गए कि पजाबी सूबा बन जाने के बाद उनको अपना ऐश्वर्य और पद ज्यों का त्यों दिखाई देता था। हाय रे, सत्ता का मोह ! जैसे सिद्धा-न्त-हीन, अतरात्मा से विरहित मेरुदण्ड से शून्य पंजाब के मुख्य मत्री श्री रामकिशन और प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष श्री भगवत दयाल शर्मा निकले वह सत्ता के मोह का और मानवीय चरित्र के पतन का अनुपम उदाहरण है। यदि ये दोनों व्यक्ति भी कांग्रेस अध्यक्ष कामराज के सामने दृढ़ता-पूर्वक एक बार यह कह देते। "हम आपके निर्णय से सहमत नहीं हैं इस लिए हम अपने-अपने पदों से इस्तीफा देते हैं। अपना टडीरा आप सभालिये" तो कामराज को अपने अदूर-दर्शिता पूर्ण निर्णय पर पुनर्विचार करने को बाध्य होना पड़ता। परन्तु कामराज शायद कांग्रेसियों की इस कमजोरी को जानते थे कि एक बार जो जिस कुर्सी से चिपक जाता है वह उस कुर्सी को अपने ही पास बनाए रखने के लिए संसार का कोई ऐसा कर्म (भले ही उसे कुकर्म कह लीजिये !) नहीं, जिसे न कर सके। परन्तु सत्ता के मोह से अधे हुए इन कांग्रेसियों के नीचे से जमीन निकल गई होगी जब उन्होंने सन्त जी की यह घोषणा सुनी होगी "अकाली कांग्रेस में विलीन नहीं होगा, अपना अलग अस्तित्व बनाए रखेगा। पजाबी सूबे में कांग्रेस बनी रह सकती है, मैं उसके पक्ष में हूं, किन्तु अकाली पथ की एकता को मैं छिन्न-भिन्न नहीं होने दे सकता क्यों-कि वह मेरे जीवन का ध्रुव-तारा है।"

लीजिए सन्त जी के राष्ट्र-प्रेम और कांग्रेस-भक्ति दोनों की पोल एक साथ ही खुल गई। जो 'सिख पहले हैं और भारतीय पीछे' उसे पथ की एकता की चिन्ता राष्ट्र की एकता की चिन्ता मे अधिक हो, तो इसमें आश्चर्य ही क्या ? आश्चर्य तो ऐसे लोगों की बुद्धि पर होता है जो ऐसे व्यक्ति को राष्ट्रीय कहते हैं। यदि इसी का नाम राष्ट्री-यता है तो साम्प्रदायिकता किसे कहेंगे ?

जहां तक सन्त जी के हिन्दू-सिख एकता के देवदूत होने का प्रश्न है उसके बारे में भी किसीको भ्रममें नहीं रहना चाहिये। अभी तक अकालियों के सिवाय केवल कम्युनिस्टों का दल ही ऐसा है जिसने 'हिन्दू सिख एकता' के पैगम्बर' के रूप में सन्त की प्रशस्ति गाई है। कम्युनिस्टों के ऐसा करने के पीछे क्या प्रयोजन है यह भी जानकार लोगों से छिपा नहीं है।

हाल में ही सन्त जी ने अपने स्वागतार्थ आयोजित एक विशाल सभा मे हिन्दुओं से अपील की है कि पजाब में प्रत्येक हिन्दू को पजाबी को अपनी मातृभाषा मानना चाहिए और

शेष पेज १३ पर

गृहस्थ में पत्नी का स्थान

श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी०,
डी० वी० कालेज, गोरखपुर

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में मनुस्मृति का उद्धरण देते हुए लिखा है :—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः॥ शोचन्ति यत्र जामयो विनश्यत्याशु तत्कुलम्। न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा॥ तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः। भूति कामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च॥ पितृभि र्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा। पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः॥

अर्थात् जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उसमें विद्यायुक्त पुरुष होके देवसंज्ञा धरा के आनन्द से क्रीड़ा किया करते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहां सब क्रिया निष्फल हो जाती है। जिस कुल या घर में स्त्री लोग शोकातुर होकर दुःख पाती हैं वह कुल शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है और जिस घर या कुल में स्त्री लोग आनन्द से उत्साह और प्रसन्नता से भरी हुई रहती हैं वह कुल सर्वदा बढ़ता है। इसलिए ऐश्वर्य की कामना करने वाले पुरुषों को चाहिए कि सत्कार और उत्सव के समयों में भूषण, वस्त्र और भोजनादि में स्त्रियों का प्रतिदिन सत्कार करें। पिता, भाई, पति और देवर इनको सत्कार पूर्वक भूषणादि से प्रसन्न रखें। जिनको बहुत अधिक कल्याण की इच्छा हो उनको वैसा करना चाहिए।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में पत्नी को बहुत अधिक महत्व दिया गया है और इस महत्व का कारण उसका मातृ रूप है। उपनिषद् में आचार्य ऐहिक देवताओं का नाम बताते हुए, प्रत्यक्ष संसार के नाम बताते हुए। 'मातृदेवो भव' कहते हैं। पहले माता और फिर पिता। 'पति-पत्नी' में पहले 'पति' है, लेकिन माता पिता में पहले मां है 'पति' को पिता होना है। पत्नी को 'माता' होना है और इन दोनों में माता का स्वरूप अधिक उदात्त और अधिक श्रेष्ठ है। इसीलिए अन्त में भारतीय संस्कृति मातृ प्रधान है। माता की तीन प्रदक्षिणा करना मानो सारी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करना है। 'न मातुः पर दैवतम्' माता से श्रेष्ठ और कोई देवता नहीं। मां के ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकते। ईश्वर मां है, भारत मां है, गाय मां है। हमारे देश में सर्वत्र माता की महिमा गाई जाती है। पति के अपराधों को हजम करके उसे क्षमा करने वाली, अपने बच्चों को सम्भालने वाली और भारतीय ध्येय की रक्षा करने वाली माता है। पत्नी को माता बनना है।

सचमुच भारतीय स्त्रियां त्याग मूर्ति हैं। भारतीय स्त्रियां मूर्तिमान् तपस्या हैं, मूक सेवा हैं। भारतीय स्त्रियां अपार श्रद्धा व अमर आशावाद हैं। प्रकृति जिस प्रकार बिना शोर मचाये अपना काम कर रही है, फूल खिला रही है, फल पका रही है, पौधे उगा रही है उसी प्रकार भारतीय स्त्रियां या पत्नियां परिवार में सतत कष्ट सहन करके चुपचाप परिश्रम करके आनन्द का निर्माण करती हैं। प्रत्येक परिवार में प्रातः से लेकर सायम् तक काम करने वाली परिश्रम की मूर्ति आपको दिखाई देगी उसे क्षण भर के लिए भी विश्राम नहीं—यह भारतीय गृहस्थ की आदर्श पत्नी - आदर्श माता। भारतीय संस्कृति में स्त्री का जीवन मानो प्रज्वलित होमकुण्ड है। विवाह-यज्ञ है। पति के जीवन से सम्पर्क होने के बाद स्त्री के जीवन यज्ञ का प्रारम्भ होता और माता के रूप में उसकी पूर्णाहुति होती है। इसीलिए मनु महाराज ने कहा है "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।" वेद में पत्नी का स्थान निर्धारित करते हुए लिखा है :—

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा। एवा त्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य॥

अ० १४। १। ४३।

जिस प्रकार (वृषा सिन्धुः) बलवान् समुद्र ने (नदीनां साम्राज्यं) नदियों का साम्राज्य (सुषुवे) उत्पन्न किया है। (एव) इसी प्रकार तू (पत्युः अस्त परा इत्य) पति के घर आकर (त्व सम्राज्ञी एधि) महारानी बनकर रह।

पुरुष घर का सम्राट् है, और स्त्री की सम्राज्ञी अर्थात् महारानी है।

सम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु सम्राज्ञ्युत देवृषु। ननान्दुः सम्राज्ञ्येधि सम्राज्ञ्युत श्वश्र्वाः॥ अ० १४। १। ४४

अपने ससुर आदि के बीच, देवरों के मध्य में, ननद के साथ, सास के साथ, भी महारानी होकर रह।

एक मन्त्र में कहा है:—

प्रबुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना दीर्घायुत्वाय शतशारदाय। गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु।

अ० १४। २। ७५

(शतशारदाय दीर्घायुत्वाय) सौ वर्ष की दीर्घ आयु के लिए (सुबुधा बुध्यमाना) उत्तम ज्ञान प्राप्त करके (प्रबुध्यस्व) ज्ञानी बन (गृहान् गच्छ) अपने घर जा यथा (गृहपत्नी) जिस प्रकार घर की स्वामिनी होती है उस प्रकार (असः) रह (सविता) सबका उत्पादक देव (ते आयुः दीर्घं (कृणोतु) तेरी आयु दीर्घ करे।

स्त्री ज्ञान संपन्न होकर घर की व्यवस्था उत्तम करे और दीर्घायु बनने का यत्न करे।

एक दूसरे मन्त्र में जिससे आजकल विवाह में सिन्दूर दान का कार्य किया जाता है, वह मन्त्र है:—

सुमङ्गलीरियम् वधूरिमां समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्त्वा दौर्भाग्यैर्विपरेतन।

अ० १४। २। २८

यह वधू मंगल करने वाली है मिलकर इसे देखो, इसे सौभाग्य देकर दुर्भागियनों से पृथक् रखो।

एक मन्त्र में स्त्री का महान् उद्देश्य उत्तम संतान उत्पन्न करना है, इस ओर आकर्षित करते हुए कहा गया है.—

आरोह तल्पं सुमनस्यमानेह प्रजां जनय पत्ये अस्मै। इन्द्राणीव सुबुधा बुध्यमाना ज्योतिरग्रा उषसः प्रति जागरासि।

अ० १४। २। ३१

अर्थात् (सुमनस्यमाना तल्प आरोह) प्रसन्न मन के साथ शय्या पर चढ़ और (इह) यहां (अस्मै पत्ये प्रजां जनय) इस पति के लिए संतान उत्पन्न कर। (इन्द्राणीव सुबुध्यमाना) इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी की तरह (सुबुधा बुध्यमानाः) ज्ञान से युक्त होकर (ज्योतिरग्रा) ज्योति को देने वाले (उषसः) उषःकाल में (प्रति जागरासि) जागती रह।

वि या जानाति जसुरिं वि तृष्यन्तं वि कामिनम्। देवत्रा कृणुते मनः।

जो पतिव्रता स्त्री दरिद्रता से व्यथित को अच्छे प्रकार जानती है उसकी आवश्यकता को जान उसके मनोरथ को पूर्ण करती है (तृष्यन्तं वि) तृषार्त को विशेष जानती है। (कामिनम् धनाभिलाषी जन को (वि) जानती है और (देवत्रा) पिता, माता गुरु, आचार्य तथा अन्यान्य माननीय जनों तथा देवादि यज्ञ में (मनः कृणुते) मन लगाती है ऐसी स्त्री पुरुष से श्रेष्ठा है।

इस प्रकार वेद में प्रतिपादित स्त्रियों के महत्व को देखते हुए स्वामी दयानन्द ने स्त्रियों की पूजा की चर्चा की है। 'पूजा' शब्द का अर्थ सत्कार है और दिन रात में जब जब प्रथम मिलें वा पृथक् हों तब तब प्रीतिपूर्वक 'नमस्ते' एक दूसरे से करें।

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृह कार्येषु दक्षया। सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्त हस्तया।

मनु० ५। १५

स्त्री को योग्य है कि अति प्रसन्नता से घर के कामों में चतुराई युक्त सब पदार्थों के उत्तम संस्कार तथा घर की शुद्धि रखे और व्यय में अत्यन्त उदार न रहे अर्थात् यथा योग्य खर्च करे और सब चीजें पवित्र और पाक इस प्रकार बनावे जो औषधि रूप होकर शरीर व आत्मा में रोग को न आने देवे। जो जो व्यय हो उसका हिसाब यथावत् रख के पति आदि को सुना दिया करे, घर के किसी काम को बिगड़ने न देवे।

अथर्ववेद में ११। १। १७ मन्त्र में गृह पत्नियों के लिए कहा गया है:—

शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा आपश्चरुमव सर्पन्तु शुभ्राः। अदुः प्रजाम् बहुलाम् पशून् नः पक्तौदनस्य सुकृतामेतु लोकम्।

(शुद्धाः) शुद्ध (पूता.) पवित्र (शुभ्रा) गौरवर्ण वाली (यज्ञियाः) पूजनीय (इमाः योषितः) ये स्त्रियां (न.) हमें (प्रजां) सन्तान (अदु) देती रहती हैं। तथा बहुलान् (पशून्) बहुत पशुओं को हम प्राप्त होते हैं। (ओदनस्य पक्ता) चावल आदि पाक का पकाने वाला (सुकृतां) उत्तम कर्म करने वालों के (लोक) स्थान को (एतु) प्राप्त हो।

अर्थात् स्त्रियों को शुद्ध, पवित्र और निर्मल बनकर अपने गृहकृत्य

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हमारी ऐतिहासिक भूलें

डा० सूर्यदेव जी शर्मा, एम. ए. डी-लिट्., अजमेर

(१)

संसार के इतिहास मे वह भी एक समय था जब हमारा भारतवर्ष विद्या, बल, बुद्धि, शिक्षा, कला-कौशल, ज्योतिष, राजनीति, धन, सम्पति और राज्य के विस्तार मे भूमण्डल के समस्त देशों का सिरमौर था। तभी तो महाराजा मनु ने स्पष्ट शब्दों में लिखा था:—

एतद्देशप्रसूतस्य
सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रंशिक्षे रन
पृथिव्यां सर्वे मानवाः।

अर्थात्.—इस देश के द्विज अग्र जन्मा, विप्रवर विद्वान् थे। विज्ञान, दर्शन शास्त्र मे वे अद्वितीय महान् थे। ससार के गुरु थे, इन्हीं के पास सब आते रहे। चारित्र्य-शिक्षा विश्व के मानव यहीं पाते रहें।

इसी प्रकार जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० मैक्समूलर ने भी अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "India-what can it teach us?" (भारत हमें क्या सिखा सकता है ?) में प्रारम्भ में ही लिखा है कि अगर कोई मुझसे यह प्रश्न करे कि भूमण्डल पर वह देश कौनसा है जिसमे सर्वप्रथम मानव सभ्यता, कला-कौशल, विद्या और शिक्षा का विकास हुआ, तो मैं भारतवर्ष की ओर ही अंगुली उठाऊंगा।

भारतवर्ष के आर्यजन न केवल विद्या, बुद्धि, कला-कौशल और सभ्यता मे ही बढ़े चढ़े थे, किन्तु संसार के समस्त देशों पर उनकी विजय पताका फहरा रही थी। विद्या, बल, धन और वैभव में उनकी तुलना करने वाला विश्व में कोई नहीं था, किन्तु आज उसी विशाल आर्य जाति के वंशज जिस दीन हीन दशा को प्राप्त हो रहे हैं, वह भी अवर्णनीय है। ससार के चक्रवर्ति सम्राट कहे जाने वालों के वंशज सैंकड़ों वर्षों तक परतन्त्रता की बेड़ियों मे जकड़े रहें, अतुल वैभव के स्वामी दाने-दाने के भिखारी बनकर अन्य देशों से अन्न की भिक्षा मागते फिरे, विश्व—विजेता और शक्ति के पुंज केवल हड्डियों के ढांचे मात्र रह जावें, ससार के गुरु कहे जाने वाले विदेशों में शिक्षा के लिए विदेशियों के चरण चूमते फिरें, "वीर-भोग्या वसुन्धरा में विश्वास करने वाले विलासिता में पड़े अन्यों का मुंह ताकते रहें, अपनी, जगती में श्रेष्ठ संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य सस्कृति के पीछे थिरकते फिरें, इससे बढ़कर दुर्भाग्य की बात हमारे लिये क्या हो सकती है।

किन्तु हमारे इस घोर पतन का, दुर्भाग्य का और विनाश का कारण क्या था ? हमें लज्जा के साथ यह स्वीकार करना पड़ेगा कि हमारे इस घोर पतन के कारण बाहर के शत्रु उतने अधिक नहीं थे जितने कि हमारे देश के अन्दर के शत्रु और हम स्वय ही थे। हमें कहना पड़ेगा:-

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग से।
इस घरको आग लग गई घर के चिराग से।।

अथवा यों कहिये :—

राष्ट्र का घर हाय, यह,
हमने जलाया आप ही।
भूल का फल आज तक,
हम भोगते सताप ही।।

हमारी पारस्परिक फूट, आपस का द्वेष, हममें से कुछ गद्दारों का देश-द्रोह, अपने राष्ट्र और राजा के साथ विश्वासघात, जांति-पांति का भेदभाव, हमारा जातीय मिथ्या—अभिमान तथा विलास प्रियता आदि ऐसे कारण थे जिनसे हमारे राष्ट्र की जड़ खोखली हो गई। अहिंसा के भ्रामक अर्थ में फसकर हम सच्चे क्षात्र धर्म को तिलांञ्जलि दे बैठे, और कुछ ऐसी ऐतिहासिक भूलें कर बैठे जिनका फल हमारे देश और जाति के लिये अत्यन्त घातक सिद्ध हुआ। उन्हीं ऐतिहासिक भूलों में से कुछ का दिग्दर्शन इस लेखमाला में कराया जायेगा जिससे हमारे राष्ट्र के कर्णधारों की आंखें खुल सकें और भविष्य में वे ऐसे भूलें न करे जैसी कि अब भी पाकिस्तान और चीन के साथ सघर्षों में कर चुके हैं और आगे भी करने की सम्भावना है। जो जाति अपनी पिछली भूलों से शिक्षा नहीं लेती और भविष्य के लिये सावधान नहीं हो जाती, ससार में उसका उत्थान तो असम्भव है ही, उसका विनाश ही अवश्यभावी है।

राष्ट्र रक्षा के लिये हम,
हों सदा ही सावधान।
ऐतिहासिक हों न भूलें,
हो विजय का प्रावधान,

(क्रमश:)

❋

मेरे प्रिय आर्यसमाज, तेरे लिये क्या काम रहेगा ? यदि तुझमें बुद्धि हो तो आंखें उठा कर देख। तेरे लिए पाश्चात्य समाजवाद का कड़ा मुकाबला करके, उसको भारत में हाथ-पैर फैलाने देने मे रोकना, यह क्या कम काम है।

—आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

(पृष्ठ ५ का शेष)

करने चाहिए। उन्हें अपने घर में पानी तथा अन्न का सुप्रबन्ध रखना चाहिए। गौ आदि गृहोपयोगी पशुओं की रक्षा तथा पुष्टि करें। भोजन इत्यादि बनाने का कार्य भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसका ध्यान रखें।

इन सब बातों को देखते हुए और स्त्री के महत्व को समझते हुए वेद स्त्री को उपदेश देते हुए कहता है:-

अघोरचक्षुरपतिघ्नी स्योना शग्मा सुशेवा सुयमा गृहेभ्यः। वीर सू देवृकामा सं त्वयैधिषीमहि सुमनस्यमानाः।

अ० १४-२-१७

हे स्त्री तू क्रूर दृष्टि न रखने वाली, पति का घात न करने वाली, कार्यकुशल, सेवा योग्य, घर के लिए उत्तम नियमों का पालन करने वाली वीर पुत्र उत्पन्न करने वाली, उत्तम मन वाली तू हो। तेरे साथ हम मिल कर बढ़ें।

सुमंगली प्रतरणी गृहाणां सुशेवा पत्ये श्वशुराय शंभूः। स्योना श्वश्र्वै प्रगृहान विशेमान्।

अथ० १४।२।२६

हे वधू उत्तम मंगल करने वाली, पति के लिए उत्तम सेवा करने वाली, ससुर के लिए शांति देने वाली, सास के लिए आनन्द देने वाली इन घरों में बनकर प्रविष्ट होओ।

स्योना भव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः। स्योनाऽस्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव।

अ० १४-२-२७

ससुरों के लिए, पति के लिए सुखदायिनी हो। इन सब प्रजाओं के लिए सुखदायिनी हो, इन सब प्रजाओं के लिए सुखदायिनी हो तथा इनका मंगल करती हुई इनकी पुष्टि करने वाली हो।

इस प्रकार सत्यार्थप्रकाश में स्त्री का सामाजिक दृष्टि से अत्यधिक महत्व स्थापित किया गया है। इसका कारण उसका मातृत्व है। माता के रूप में वह घर का सार संभाल करने वाली है बच्चों को संभालने वाली, पति को संभालने वाली ध्येय को सभालने वाली वाली वही है। वह सबकी रक्षक है वह सबको प्रेम देती है, आशीर्वाद देती है और सेवा करती है। अपने पति की सम्पूर्ण क्रियाओं और कर्तव्यों की रक्षक वहीहै। समाज की निर्मात्री वही है। उस गृहपत्नी को यह देखना है कि उसका व्यापारी पति कहीं गरीबों को परेशान तो नहीं करता है, उसे यह देखना है कि सरकारी नौकर उसका पति किसी से रिश्वत तो नहीं लेता है, मेरा पति अन्याय तो नहीं करता है। वह जनता का ठीक हित साधन तो कर रहा है न ? इस प्रकार यदि स्त्री घर में अपने महत्व को और अपने स्थानको समझ ले तो वह समाज का मार्ग दर्शन कर सकेगी और उस समय हम कह सकेंगे

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:

वैदिक विवाह

श्री त्रिलोकीनाथ जी पत्थर वाले मुजफ्फर नगर के सुपुत्र श्री रविन्द्र नाथ जी का शुभ विवाह कुमारी वृजराणी सुपुत्री श्री मोती राम गोयल के साथ २२ मई रविवार को पूर्ण वैदिक रीति से श्री प० देवप्रकाश धर्मेन्दु के पौरोहित्य में सपन्न हुआ।

जनसंघ और आर्य समाज

श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार, एम० ए०
प्रो० कन्या महाविद्यालय,
जालन्धर

जनसंघ भारत की, राजनीति के क्षेत्र में एक उन्नति करती हुई पार्टी है। अखिल भारतीय स्तर की राजनीतिक पार्टियों में उसका स्थान कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी के बाद है। विशेष बात यह है कि यह स्थान उसने पिछले १७-१८ वर्षों में प्राप्त किया है। उसके पास राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अथक और नौजवान कार्यकर्त्ताओं का बड़ा भारी दल है और यही उसकी शक्ति का मुख्य आधार है।

जनसंघ प्रारम्भ से भारतीय संस्कृति और सभ्यता का आधार मान कर अपना कार्य चला रहा है, इसलिये स्वभावतः आर्य संस्थाएं और समाजें उसे आदर और सहानुभूति की दृष्टि से देखती रहीं और जहां तक बन सका सहयोग भी देती रहीं हैं। मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि प्रारम्भ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में प्रशिक्षण लेने के लिये पंजाब की आर्य समाजों के अनेक युवक कार्यकर्त्ता नागपुर गये थे। उस समय हिन्दु मात्र की सहानुभूति इस संस्था से थी, विशेष कर हिन्दू विचार के लोगों की।

इस वर्ष जनसंघ का वार्षिक अखिल भारतीय अधिवेशन जालन्धर में हुआ। जलूस और अधिवेशन दोनों ही उपस्थिति और उत्साह की दृष्टि से शानदार रहे। इस वर्ष पंजाबी सूबे की मांग के कारण पंजाब का विभाजन जनसंघ की कार्यवाही पर इस नई महत्वपूर्ण घटना की छाप पड़ी। इस घटना ने तथा इससे मिलती जुलती दूसरी घटनाओं ने जनसंघ के दृष्टिकोण में परिवर्तन कर दिया। जनसंघ के नेता अब आधुनिक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहते हैं कि वे अब हिन्दु रूप में न रहकर भारतीय रूप धारण करना चाहते हैं। पर इसके लिये उन्हें दो बातें करनी पड़ेंगी। एक उसके नेताओं में मुसलमान ईसाई तथा सिख सज्जनों के नाम भी आने चाहिए और पर्याप्त मात्रा में आने चाहिए। इसकेलिए उन्हें राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ का आधार छोडना पड़ेगा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को कोई भी व्यक्ति आधुनिक अर्थ में राष्ट्रवादी संस्था नहीं कह सकता।

हमारा विचार है कि जनसंघ यह दोनों बातें ही नहीं कर सकता।

इस नये दृष्टिकोण को अपनाकर जनसंघ के नेताओं ने तीन ऐसी बातें की जिससे आर्यसमाज के हितों की हानि होती है।

पहली बात यह कि पंजाब के हिन्दुओं को हिन्दी-देवनागरी त्याग कर पंजाबी गुरुमुखी अपनी भाषा माननी चाहिये।

दूसरी बात यह कि जनसंघ के वर्तमान प्रधान श्री बलराज मधोक ने आर्यसमाज और अकाली पार्टी को एक स्तर पर लाकर इन दोनों को पंजाब की आजकल की गड़बड़ का दोषी ठहराया।

तीसरे श्री यज्ञदत्त जी ने अपने भाषण में नाम न लेकर श्री वीरेन्द्र, श्री जगतनारायण तथा श्री यश को भला बुरा कहा।

आर्यसमाज की ओर से इन तीनों ही बातों का निराकरण आवश्यक है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पंजाब के हिन्दु विशेषकर आर्यसमाजी हिन्दी-देवनागरी से प्यार करते हैं। जनसंघ क्या किसी भी पार्टी के कहने से वे इस प्यार को छोड नहीं सकते। पंजाब के हिन्दू हिन्दी-देवनागरी से आज सिक्खों या पंजाबी के द्वेष के कारण प्यार नहीं करने लगे। तब से करते हैं जबकि अकाली पार्टी और जनसंघ का जन्म भी नहीं हुआ था। ऋषि दयानन्द ने जब सन् १८८२ में अपने सत्यार्थ प्रकाश में यह लिख दिया था कि जब बालक या बालिका पांच वर्ष के हों तो उन्हें देवनागरी अक्षरों का अभ्यास कराया जाय तो पंजाबी-गुरुमुखी के नाम लेवा अभी पैदा भी न हुए थे। जब महात्मा हंसराज और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने स्कूल-कालिज और गुरुकुलों से हिन्दी देवनागरी को शिक्षा का माध्यम बनाया था तब तक पंजाब में उर्दू का बोलबाला था, पंजाबी का नहीं।

आर्यसमाजी को चाहे वह किसी प्रान्त का भी क्यों न हो हिन्दी-देवनागरी वैसी ही प्यारी है, जैसे कनाडा और अमरीका में पैदा हुए सिक्खों को भी पंजाबी-गुरुमुखी प्यारी लगती है, जैसे भारत में पैदा हुए मुसलमानों को भी अरबी-फारसी प्यारी लगती है। हिन्दुओं को हिन्दी प्यारी इसलिये नहीं कि उन्हें पंजाबी से द्वेष है बल्कि इसलिये कि उनका सारा साहित्य हिन्दी-संस्कृत में है। वे इसे छोड़ नहीं सकते।

रही जनसंघ की बात। वह एक राजनीतिक पार्टी है। राजनीति में कलाबाजियां खाना स्वाभाविक है। सिक्खों के वोटों की आवश्यकता हो तो पंजाबी-गुरुमुखी ठीक है और हिन्दुओं के वोटों की आवश्यकता हो तो हिन्दी-देवनागरी ठीक है।

हिन्दी आन्दोलन में जनसंघ और आर्यसमाज दोनो साथ थे। हजारों लोग जेल गये, बीसियों अंगभंग करा बैठे। पोलीस ने भी जी भरकर पीटा और जेल मे वार्डरों से भी लाठियां चलवाई गई। सरदार प्रतापसिंह कैरों ने छल-बल से इस आंदोलन को कुचल दिया। यदि बलिदान में आर्यसमाज और जनसंघ दोनों का भाग था तो असफलता में भी दोनों का भाग था एक बच नहीं सकता।

इसी तरह कांग्रेस में श्री नेहरू जी से लेकर कांग्रेस दफ्तर साफ करने वाले जमादार तक सबने-अर्थात् कांग्रेस के छोटे बड़े सबने एक स्वर से कहा कि पंजाबी सूबा नहीं बन सकता। लोगों को विश्वास हो गया कि पंजाबी सूबा नही बनेगा। जब सन्त फतहसिंह ने जल मरने की धमकी देकर पंजाबी सूबा की मांग की तो सेना के सिख सेनापतियों से लेकर कांग्रेस-कम्युनिस्ट पार्टी सोशलिस्ट पार्टी तथा अकाली दल के सब सिखों ने उस मांग का खुले या दबे शब्दों में समर्थन किया। कांग्रेस के नेता सिखों की इस मांग के आगे झुक गये। पिछले १८ वर्ष के वायदे भूल गये और पंजाबी सूबे को बनाना मान लिया। पंजाब के हिन्दू लोगों पर उसकी भयंकर प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। श्री यज्ञदत्त जी तथा श्री सत्यानन्द जी ने आमरण अनशन का व्रत रखा। अभिप्राय यह कि इस आन्दोलन में भी जनसंघ और आर्य-समाज साथ-साथ थे।

इसमें सन्देह नहीं कि इस आन्दोलन का परिणाम कुछ अच्छा नहीं हुआ। बिना किसी निश्चित आश्वासन के आन्दोलन शिथिल हो गया। पर यदि श्रेय है तो जनसंघ और आर्य-समाज दोनों को और यदि असफलता की बदनामी है तो दोनों को। जनसंघ के नेता इस मामले में आर्यसमाज को बुरा भला कैसे कह सकते हैं।

आर्यसमाज को अकालियों के साथ जोड़कर जनसंघ राष्ट्रपति नहीं बना सकता। यह राजनीति की पुरानी घिसी पिटी चाल है। कांग्रेस जनसंघ और अकाली पार्टी को साम्प्रदायिक कहकर अपने को राष्ट्र-वादी कहती है। कम्युनिस्ट कांग्रेस को अमरीका के पिछलगुआ कहकर अपने को किसानों और मजदूरों के हितैषी कहते हैं। सोशलिस्ट पार्टी कम्युनिस्टों को रूस और चीन का एजेन्ट कहती है। राजनीति में झूठ बोलना और गाली देना धर्म है। जनसंघ तो भारतीय संस्कृति का नाम लेता है उसे कुछ ऊँची बात करनी चाहिये।

तीसरी बात श्री वीरेन्द्र, श्री यश और श्री जगतनारायण को बुरा भला कहने की है। ये तीनों सज्जन आर्य समाजी हैं, देशभक्त हैं, कसौटी पर कसे जा चुके हैं, राजनीति के चतुर खिलाड़ी हैं। चोट सहना भी जानते हैं, चोट लगाना भी। इन्हें आर्यसमाज की ढाल की आवश्यकता नहीं। आर्य-समाज में कांग्रेसी भी हैं, प्रजासोश-लिस्ट भी और जनसंघी भी। पर आर्यसमाज इनसे अलग भी कुछ है। आर्य समाज ने स्वतन्त्रता के आंदोलन में कांग्रेस का पूरा साथ दिया। लाला लाजपतराय स्वामी श्रद्धानन्द तथा अन्य लाखों आर्यसमाजी जेल गए और हर तरह का नुकसान भी उठाया। पर जब कांग्रेस को मुसल-मानों का पक्षपात कर देश का नाश करते देखा, वही ला० लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस के विरोध में खड़े हो गये। जब आर्य समाज गांधी जी और जवाहरलाल के आगे नहीं झुका तो श्री अटल-बिहारी वाजपेयी, श्री बलराज मधोक तथा श्री यज्ञदत्त के आगे क्या झुकेगा। आर्यसमाज को अपने सिद्धांत प्रिय हैं, उसके सिये किसी और के विचार का हमारे सामने कोई मूल्य नही।

इसका यह अभिप्राय नही कि हमारे मन मे श्री यज्ञदत्त तथा अन्य नेताओं का मान नही। हम उन सबका सम्मान करते हैं। विशेष कर श्री यज्ञदत्त का तो पंजाब के सब

(शेष १२ पेज पर)

तीन गन्दे व्यसन

महात्मा गांधी की दृष्टि में

मैंने शराब के नशे में मस्त बैरिस्टरों को नालियों में लोटते और पुलिस द्वारा घर ले जाते हुए देखा है। दो अवसरों पर मैंने जहाज के कप्तान को शराब के नशे में ऐसा गर्क देखा है कि उनकी हालत, जब तक उन्हें होश वापिस नहीं आया, अपने जहाजों का नियन्त्रण करने योग्य नहीं रह गयी थी। मांसाहार और शराब दोनों के बारे में उत्तम नियम तो यह है कि खाने पीने और आमोद प्रमोद के लिए नहीं जीना चाहिए बल्कि इसलिए खाना और पीना चाहिए कि हमारे शरीर ईश्वर के मन्दिर बन जायें और हम उनका

शराब

उपयोग मनुष्य की सेवा में कर सकें। औषधि के रूप में कभी-कभी शराब की आवश्यकता हो सकती है, और मुमकिन है जब आदमी मरने के करीब हो तो शराब का घूंट उसकी जिन्दगी को थोड़ा और सहारा दे दे। लेकिन शराब के पक्ष में इससे अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता।

मजदूरों के साथ अपनी आत्मीयता के फलस्वरूप मैं जानता हूं कि शराब की लत में फंसे हुए मजदूरों के घरों का शराब ने कैसा नाश किया है। मैं जानता हूं शराब आसानी से न मिल सकती होती तो वे शराब को छूते भी नहीं। इसके सिवाय हमारे पास हाल के प्रमाण ऐसे मौजूद हैं कि शराबियों में से ही कई खुद शराबबन्दी की मांग कर रहे हैं।

शराब की आदत मनुष्य की आत्मा का नाश कर देती है और उसे धीरे-धीरे पशु बना डालती है जो पत्नी, मां, और बहन में भेद करना भूल जाता है। शराब के नशे में यह भूल जाने वालों को मैंने खुद देखा है।

शराब और अन्य मादक द्रव्यों से होने वाली हानि कई अंशों में मलेरिया आदि बीमारियों से होने वाली हानि की अपेक्षा असंख्य गुनी ज्यादा है. कारण बीमारियों से केवल शरीर को हानि पहुंचती है जबकि शराब आदि से शरीर और आत्मा दोनों का नाश होता है।

एक ऐसा पक्ष है जो निश्चित

मात्रा में शराब पीने का समर्थन करता है और कहता है कि इससे फायदा होता है। मुझे इस दलील में कोई सार नहीं लगता। पर घड़ी भर के लिए इस दलील को मान लें तो भी अनेक ऐसे लोगों की खातिर जो कि मर्यादा में नहीं रह सकते, इस चीज का त्याग करना चाहिए।

ताड़ी

पारसी भाइयों ने ताड़ी का बहुत समर्थन किया है वे कहते हैं कि ताड़ी में मादकता तो है पर ताड़ी एक खुराक है और दूसरी खुराक को हजम करने में मदद पहुंचाती है। इस दलील पर मैंने खूब विचार किया है इसके बारे मैंने काफी पढ़ा भी है। मगर ताड़ी पीने वाले बहुत से गरीबों की मैंने जो दुर्दशा देखी है उस पर मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि ताड़ी को मनुष्य की खुराक में स्थान देने की कोई आवश्यकता नहीं है।

बीड़ी सिगरेट और

बीड़ी और सिगरेट

शराब की तरह बीड़ी और सिगरेट के लिए भी मेरे मन में गहरा तिरस्कार है। बीड़ी और सिगरेट को मैं कुटेव ही मानता हूं। वह मनुष्य की विवेक बुद्धि को जड़ बना देती है और अक्सर शराब से ज्यादा बुरी सिद्ध होती है क्योंकि इसका परिणाम अप्रत्यक्ष रीति से होता है। यह आदमी को एक बार लग जाय फिर उससे पीछा छुड़ाना बहुत कठिन होता है। इसके सिवाय वह खर्चीली भी है वह मुंह को दुर्गन्ध युक्त बना

देती है दांतों का रंग बिगाड़ती है और कभी-कभी कैंसर जैसी भयकर बीमारी को जन्म देती है।

एक दृष्टि से बीड़ी और सिगरेट पीना शराब से भी ज्यादा बुरा साबित होता है, क्योंकि इस व्यसन का शिकार उससे होने वाली हानि को समय रहते अनुभव नहीं करता। वह जंगलीपन का चिन्ह नहीं मानी जाती बल्कि सभ्य लोग तो उसका गुणगान करते हैं। मैं इतना कहूंगा कि जो लोग छोड़ सकते हैं वे उसे छोड़ दें। और दूसरों के लिए उदाहरण पेश करें।

जुआ शराब शिकार आदि महादुष्ट व्यसन

मदकारक द्रव्यों का सेवन, पासा आदि से जुआ खेलना, स्त्रियों का विशेष संग और मृगया खेलना ये चार महादुष्ट व्यसन हैं।

यह निश्चय है कि दुष्ट व्यसन में फंसने से मर जाना अच्छा है, क्योंकि जो दुष्टाचारी पुरुष है वह अधिक जियेगा तो अधिक अधिक पाप करके नीच नीच गति अर्थात् अधिक अधिक दुःख को प्राप्त होता जावेगा और जो किसी व्यसन में नहीं फंसा वह मर भी जायगा तो भी सुख को प्राप्त होता जायगा।

इसलिये विशेष राजा और सब मनुष्यों को उचित है कि कभी मृगया और मद्यपान आदि दुष्ट कामों में न फंसे और दुष्ट व्यसनों से पृथक् होकर धर्मयुक्त गुण कर्म स्वभावों में सदा वर्त्त के अच्छे अच्छे काम किया करें। —सत्यार्थ प्रकाश

३० वर्ष पहले जिस शराब की लानत से देश वासियों को बचाने के लिए महात्मा गांधी ने लाखों नर-नारी जेल के सींखचों में बन्द कराये थे वह शराब की लानत तब से अब तक सरकार की देख-रेख में १०० गुणा और तम्बाकू-सिगरेट हजार गुणा बढ़ रहा है। क्या देशवासी इस पर गम्भीरता से विचार करेंगे।

— सम्पादक

तम्बाकू

तम्बाकू ने तो गजब ही ढाया है। इसके पंजे से भाग्य से ही छूटता है। टालस्टाय ने इसे व्यसनों में सबसे खराब व्यसन माना है। हिन्दुस्तान में हम लोग तम्बाकू केवल पीते ही नहीं सूंघते भी हैं और जरदे के रूप में खाते भी हैं। आरोग्य का पुजारी दृढ़ निश्चय करके सब व्यसनों की गुलामी से छूट जायेगा। बहुतों को जिसमें से एक या दो या तीनों व्यसन लगे होते हैं इसलिए उन्हें इससे घृणा नहीं होती। मगर शान्त

तम्बाकू

चित्त से विचार किया जावे तो तम्बाकू फूंकने की क्रिया में या लगभग सारा दिन जरदे के पान के बीड़े से गाल भर रखने में या नसवार की डिबिया खोलकर सूंघते रहने में कोई शोभा अथवा मान नहीं। ये तीनों व्यसन गन्दे हैं।

(नशा बन्दी सन्देश से साभार)

आचार्य चाणक्य के मूल सूत्र

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु, आर्योपदेशक,
मन्त्री आचार्य चाणक्य परिषद्, दिल्ली

भारत में विशाल मौर्य साम्राज्य की स्थापना, राज्य में सुख समृद्धि की बहुलता की व्यवस्था करना तथा "शत्रुओं से उसकी रक्षा करना" आचार्य चाणक्य की नीति से ही सम्भव हुआ था। उस समय नन्द और उसके साथियों के उपद्रव तो थे ही इसके साथ २ विश्व विजय का स्वप्न लेने वाले सिकन्दर की असंख्य सेनाएं तथा उसके कुशल सेनापतियों का भी कोई अन्त नहीं था उस भीषण सकट काल में वर्षों तक साम्राज्य को निर्विघ्न चलाना, राज्य नियमों के पालन की व्यवस्था करना और आक्रमणकारी यूनानी शत्रुओं को पीछे धकेल कर सन्धि के लिये विवश करने का श्रेय आचार्य चाणक्य को ही है उन्हीं के कुछ मूल सूत्र पथ-भ्रष्ट और त्रस्त राजनीतिज्ञों के लिए नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं। आशा है इनके पाठ से वे लोग अपने कर्त्तव्यों का पालन कर श्रेय और यश के भागी बनेंगे।

"राज्यमूलमिन्द्रिय जयः।

इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने से "राज्य" स्थिर रहता है। नम्रता और सदाचरण से ही इन्द्रियों को वश में किया जा सकता है।

जितात्मा सर्वार्थैस्संयुज्यते।

जो जितात्मा होता है वह सकल मनोरथों को प्राप्त करने मे सफल हो सकता है।

श्रुतवन्तमुपधाशुद्धम् मन्त्रिणं कुर्वीत।

शास्त्रों का अध्ययन किये हुए और शुद्धाचारी ही मन्त्री बनने चाहियें।

अलब्ध-लाभादि-चतुष्टयं राज्य तन्त्रम्।

(१) नहीं मिली वस्तु का लाभ करना (२) मिली हुई की रक्षा करना (३) रक्षित वस्तु को बढ़ाना (४) और बढ़ी वस्तु को उपभोग मे लाना ही ये चार बातें "राज्य तन्त्र" कहाती हैं और राज्य तन्त्र का आधार लेकर ही नीति शास्त्र चलता है।

नीतिशास्त्रानुगो राजा।

नीति शास्त्र के अनुसार चलने वाला ही सच्चा राजा होता है।

न व्यसनपरस्य कार्यावाप्तिः।

विषयों में लिप्त पुरुष के कार्य पूर्ण नहीं होते। जो इन्द्रियों के आधीन है वह चतुरंगिणी सेना रखते हुए भी नष्ट हो जाता है।

अमित्रो दण्डनीत्यामायत्तः।

शत्रु, सेना की प्रबलता के आधीन होता है।

कालवित् कार्यं साधयेत्।

जो काल (समय) की गति को जानकर चलता है वही अपने कार्यों में सफल होता है।

कदाचिदपि चारित्रं न लंघयेत्।

सदाचार का कभी भी उल्लंघन नहीं करना चाहिये। भूखा भी सिंह घास नहीं खाता।

मर्य्यादातीतं न कदाचिदपि विश्वसेत्।

मर्यादा से अधिक किसी का विश्वास न करे।

सतां मतं नाति क्रमेत।

विद्वानों की सम्मति का अतिक्रमण न करे।

उत्साहवतां शत्रवोऽपि वशीभवन्ति।

उत्साही पुरुषों के शत्रु भी वशमें हो जाते हैं। आलसी पुरुष का यह लोक और परलोक दोनों नहीं बनते।

अविश्वस्तेषु विश्वासो न कर्तव्यः।

जो व्यक्ति विश्वास के योग्य नहीं है उसका विश्वास कभी न करे।

यावच्छत्रोश्छिद्रं पश्यति तावद्धस्तेन वा स्कन्धेन वा वाह्यः।

जब तक शत्रु की कमी हाथ आवे तब तक उसे हाथ या कन्धे पर उठावे रहे। जब उसका छिद्र हाथ आ जावे तब उसे छोड़ देवे।

अपने छिद्र को कभी प्रकट न होने देवे क्योंकि शत्रु लोग छिद्र पर प्रहार कर बैठते हैं।

शत्रुं जयति सुवृत्तता।

सदाचरण ही शत्रु पर विजय करता है।

मितभोजनं स्वास्थ्यम्।

थोड़ा भोजन करना ही स्वास्थ्य की जड़ है। जीर्ण होने पर ही भोजन करना चाहिये तभी व्याधियों से बचा जा सकता है।

स्वयमेवावस्कन्नं कार्यं निरीक्षेत्।

शत्रु पर की गई चढ़ाई आदि के कार्य का राजा स्वय निरीक्षण करे।

धर्मेण धार्यते लोकः।

संसार की धारणा धर्म से होती है।

धर्मेण जयति लोकान्।

धर्म से ही सारे लोकों को जीता जा सकता है अधर्म बुद्धि अपने विनाश की सूचना देती ही है।

व्यसनं मनागपि बाधते।

व्यसन तो थोड़ा भी बाधा ही पहुंचाता है।

नास्त्यमानभयमनार्यस्य।

अनार्य पुरुष को अपमान का भय नहीं होता।

न कृतार्थानां मरणभयम्।

जो अपने कर्तव्य काम को कर चुके उन्हें फिर मृत्यु का भय नहीं होता वे निर्भय रहते हैं।

परविभवेष्वादारो हि नाश मूलम्।

दूसरे की सम्पत्ति को निगलने (हड़पने) की इच्छा तो अपने नाश का ही कारण होती है।

नीचस्य विद्याः पापकर्मणि योजयन्ति।

नीच पुरुष की विद्याएं उसे पाप कर्म में प्रवृत्त कर देती हैं। जैसे सर्प को दूध पिलाना भी विष बढ़ाने का ही हेतु होता है न कि अमृत का।

इन्द्रियाणि जरावशं कुर्वन्ति।

विषय भोग वासना ही पुरुष को वृद्धावस्था में फेंक देती है।

नास्त्यहङ्कारसमशत्रुः।

अहंकार के समान कोई शत्रु नहीं है।

विद्या धनमधनानाम्।

निर्धनों का तो विद्या ही धन है। इसे चोर भी नहीं चुरा सकते। इससे मनुष्य की बहुत शीघ्र प्रसिद्धि हो जाती है।

इन्द्रियाणां प्रशमं शास्त्रम्।

शास्त्र ज्ञान ही इन्द्रियों के वेग को रोकने में समर्थ हो सकता है। शास्त्र का अंकुश ही मनुष्यकी उच्छृंखलता को रोक सकता है।

म्लेच्छभाषणं न शिक्षेत।

म्लेच्छों का सा बोल चाल का ढंग नहीं सीखना चाहिये।

आर्यवृत्तमनुतिष्ठेत्।

मनुष्य सदा आर्य (श्रेष्ठ)आचरण करता रहे।

अयशो भयं भयेषु।

सारे भयों में अपकीर्ति बड़ा भय का स्थान है।

न महाजनहासः कर्त्तव्यः।

बड़े व्यक्तियों की हसी (मजाक) नहीं करनी चाहिये।

मतिमत्सु मूर्ख, मित्र, गुरु वल्लभेषु विवादो न कर्तव्यः।

बुद्धिमान्, मूर्ख, मित्र, गुरु और वल्लभ(प्रिय, पति, स्वामी, अधिकारी) पुरुषों के साथ व्यर्थ विवाद नहीं करना चाहिये।

यो यस्मिन कुशलस्स तस्मिन् योक्तव्यः।

जो जिस काम में कुशल है उसी को उस काम में नियुक्त करना चाहिये।

विप्राणां भूषणं वेदः।

ब्राह्मणों को आभूषण "वेद" है।

प्रजा विद्यानां पारं गमयितव्याः।

जहां तक सम्भव हो सके माता पिता को अपनी सन्तानों को समस्त विद्याओं का पारदर्शी बना देना चाहिये उन्हें स्वय चाहे कितना ही क्लेश उठाना पड़े।

उपस्थितविनाशः पथ्यवाक्यं न शृणोति।

जिसका विनाश समीप में है वह हितकारी वचन नहीं सुनता।

न कदापि देवताऽव मन्यता।

देवताओं (विद्वानों) का कभी भी तिरस्कार नहीं करना चाहिये।

तपस्विनः पूजनीयाः।

तपस्वी (परमार्थी) लोग सदा पूजनीय होते हैं।

न वेदबाह्यो धर्मः।

वेद बाह्य धर्म (वेद विपरीत) धर्म नहीं माना जा सकता। सदा धर्म का, जो वेदानुकूल हो, सेवन करना चाहिये।

न मीमांस्या गुरवः।

गुरुजनों (पूज्य लोगों) की आलोचना नहीं करनी चाहिए।

गुरुदेवब्राह्मणेषु भक्तिः भूषणम्।

गुरु, देवता(विद्वान्) और ब्राह्मणों में भक्ति रखना मनुष्य का भूषण है।

आचारादायुर्वर्धते कीर्तिश्च।

सदाचार से आयु, और कीर्ति (यश) की वृद्धि होती है।

ऋणशत्रुव्याधिष्वशेषः कर्तव्यः।

ऋण (कर्ज), शत्रु और व्याधि को सदा निःशेष (समाप्त) कर देना चाहिये।

जिह्वायत्तौ वृद्धि-विनाशौ।

उन्नति और अवनति जिह्वा के ही आधीन है। अमृत और विष की खान जिह्वा ही है।

शास्त्रप्रधाना लोकवृत्तिः।

शास्त्र के अनुसार ही लोक वृत्ति होनी चाहिये। शास्त्र ज्ञान के अभाव में श्रेष्ठ पुरुषों के आचरण का अनुकरण करना चाहिये।

आत्म-विस्मृति आत्म-घात है

श्री पिण्डीदास जी 'ज्ञानी', प्रधान, आर्य समाज, अमृतसर

परमात्मा जाने, वह कैसा दिन था जब कि पदलोलुप कुछ एक पंजाबी युवकों ने इण्डियन नैशनल कांग्रेस का अक्षरशः अनुवाद करके भारतीय जनसंघ के नाम से कांग्रेस जैसी ही एक धर्म्म निरपेक्ष संस्था की नींव रखी। भारत गौरव श्री डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी पूर्व प्रधान हिन्दु-महासभा को जो कि किन्हीं कारणों से विलग हो चुके थे, अपने जाल में फांस लिया गया। प्रारम्भ मे कुछ भ्रम ग्रस्त आर्य नेताओं का आशीर्वाद भी इस नवनिर्मित संस्था को प्राप्त था। यह संस्था एक ओर तो एक हिन्दु संगठन होने का दम भरती थी और दूसरी ओर धर्म-निरपेक्षता की दुहाई देती थी।

प्रथम दिवस से ही भारतीय जनसंघ की कोई 'सोची समझी नीति' निर्धारित नहीं हो सकी, जिस पर यह 'मजबूती से खड़ा' हो सकता।

१. प्रातःकाल निक्कर-लाठी-धारी नवयुवक हिन्दुत्व का दम भरते, "नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे, त्वया हिन्दु भूमे सुखं वर्धितोऽहम्" गाते हुए 'हिन्दुभूमि' का स्तवन् करते, परन्तु जनसंघ में आते ही सम्मिलित भारतीय कल्चर का गुणानुवाद करने लगते यह देख जनता विस्मित हो दांतों तले अंगुली दबा लेती।

२—प्रारम्भ से ही हिन्दी की दुहाई देने वाले, देवनागरी लिपि के समर्थक, हिंदी आंदोलन में सहस्रों हिंदी प्रेमियों के साथ कारागारों को भरने वाले लोग जब प्रो० मधोक का जालंधर वाला 'आधा तीतर आधा बटेर' अध्यक्षीय भाषण पढ़ते हैं तो 'कुछ न समझे खुदा करे कोई' कहकर अचम्भे में आ जाते हैं।

३—गो हत्या निरोध के लिये लाखों लोगों से हस्ताक्षर करा कर राष्ट्र भवन के द्वार पर कई टन कागज, मेमोरैण्डम के रूप में ढेर कर दिया जाता है और दूसरी ओर 'बकर ईद' (बकर अर्थात् गौ) के अवसर पर जिस दिन गौ की कुर्बानी देना मुसलमानों का धार्मिक कर्त्तव्य समझा जाता है, जनसंघ के देहलवी नेता 'ईद मिलन' का ढौंग रच कर जुमा मस्जिद की छाया में प्रीतिभोजन में सम्मिलित होते नजर आते हैं।

(४) वर्त्तमान् पंजाब में कभी गुरुमुखी में पंजाबी का विरोध, कभी समर्थन, देहली में इसकी हिमायत् और साथ ही उर्दू की तरफदारी। तेरहवें जालन्धर सम्मेलन के अध्यक्ष प्रो० मधोक ने नम्रस्रूप में पंजाबी हिन्दुओं को उपदेश देने की कृपा कर डाली है कि वे पंजाबी भाषा (गुरुमुखी लिपि) को अपनी मातृभाषा स्वीकार कर लें अर्थात् वे लोग उस हिन्दी को (जो राष्ट्र भाषा होने के अतिरिक्त उनकी धार्मिक, सामाजिक, साहित्यक और सांस्कृतिक भाषा है, जिसके बगैर भारतीय संस्कृति, जिस का ढंढोरा भारतीय जनसंघ प्रायः पीटता रहता है, की जड़-बुन्याद ही कायम नहीं हो सकती) विस्मृत करके गुरुमुखी लिपि में पंजाबी को ही अपना ओढ़ना-बिछौना बना लें जिसे न महाराजा रणजीत सिंह राजभाषा होने का दर्जा दे सके, न अंग्रेज ने इसे इस योग्य समझा।

(५) अब तो आर्य समाज और आर्य नेता भी इन स्वयम्भू 'देशभक्तों' को अखरने लगे हैं, जिन्होंने जनसंघ की भूल-भुलैय्यां से बहुत बड़ी-बड़ी आशायें लगा रखी थीं, जो इस भ्रम में थे कि हिन्दु, हिन्दी, हिन्दुस्थान का बेड़ा पार होगा तो इन ही महा पुरुषों की कृपा से होगा।

चुनांचि अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो० मधोक के ये शब्द कि—पंजाब की स्थिति को फिर से सामान्य बनाने और अकाली अथवा आर्यसमाज के उग्रवादी तत्त्वों द्वारा स्थिति को और खराब करने से बचाने के लिये ये (अर्थात् सरकार की ओर से जनसंघ को दिये गये तथा-कथित आश्वासनों को कार्यान्वित करना) अत्यावश्यक है यह भ्रम डालने के लिये पर्याप्त है कि पंजाब की स्थिति को असमान बनाने का उत्तरदायित्व आर्य समाज पर ही है। इसका तात्पर्य यह भी हुआ कि बात बात में साम्प्रदायिकता का अड़ङ्गा लगाने वाले अकाली और महर्षि दयानन्द के निस्वार्थ निष्काम तथा निष्पेक्ष भाव से राष्ट्र की सेवा करने वाले आर्यसमाजी जिन्होंने अपने लिये कभी कोई मांग की ही नहीं, प्रो० मधोक की कृपा दृष्टि के एक समान पात्र बन गये।

आखिर इस नई पैंतराबाजी का सिवाय अकालियों के साथ अभिसंधि गठ-जोड़ और प्रो० मधोक (जनसंघी नेताओं के सदा बने रहने हेतु) देहली के अकालियों की कतिपय वोटों की प्राप्ति की आशा के और क्या अर्थ हो सकता है?

वास्तव में सत्य बात यह है कि जब तक हिन्दु अपने समस्त धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक अधिकारों के सम्बन्ध में वीर पुरुषों की भांति बतौर हिन्दु के नहीं सोचेंगे और सैक्यूलरिज्म के तिलस्म को तोड़कर डट कर कार्य क्षेत्र में नहीं उतरेंगे, तब तक निरन्तर छोटी छोटी (लाखों की संख्या वाली) जातियां उभरती रहेंगी, लगातार सफलता प्राप्त करती रहेंगी और चालीस करोड़ की यह जनसंख्या और राष्ट्र इन धर्म निरपेक्षता की दुहाई देने वाले बाजीगरों की कृपा से पिटता रहेगा विफल प्रयत्न होता रहेगा, चाहे वह महा पंजाब आन्दोलन चलाये, हिन्दी ऐजीटेशन आरम्भ करे अथवा पंजाबी सूबा विरोधी तहरीक। चूंकि हिन्दु अपने आपको अपने धर्म-संस्कृति-सभ्यता को भूल चुका है और आत्म-विस्मृति आत्मघात के सदृश होती है अतः जितनी जल्दी यह भूल सुधार ले, उतना ही श्रेयस्कर है।

*

आर्य बन्धुओं की सेवा में निवेदन

श्री प्रो० कृष्णदत्त जी एम० ए० हैदराबाद

स्व० स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के जीवन-चरित्र "दयानन्द प्रकाश" की भूमिका में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य दिया है। महर्षि ने अपने स्वर्गवास से २-३ वर्ष पहले जर्मनी के किसी उद्योगपति मि० बीस महोदय से पत्र-व्यवहार किया था और इस बात का प्रयत्न किया था कि भारतीय युवकों को वहां भेज कर उन्हें औद्योगिक शिक्षा दिलाई जाए। उल्लिखित ग्रन्थ की भूमिका में इस बात का भी उल्लेख हुआ है कि स्वामी जी महाराज कुछ निर्धन युवकों को भेजना चाहते थे। उसके लिए उन्होंने मि० बीस महोदय से यह इच्छा प्रकट की थी कि उनके द्वारा भेजे गये छात्रों को निःशुल्क शिक्षा देने का प्रबन्ध किया जाए। मि० बीस के दिवंगत होने पर ऐसा जान पड़ता है कि स्वामी जी महाराज ने इस कार्य के लिए धन इकट्ठा करने का कार्य प्रारम्भ भी किया था। किन्तु इन सभी तथ्यों की जानकारी मि० बीस द्वारा भेजे गये पत्रों से होती है। ये तथ्य एक प्रकार से संकेत मात्र हैं। स्वामी जी महाराज की क्या योजना थी, वे भारतीय युवकों को जर्मनी ही क्यों भेजना चाहते थे, निर्धन छात्रों को ही शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजने का क्या रहस्य था, किस प्रकार की औद्योगिक शिक्षा को स्वामी जी महाराज महत्त्व दे रहे थे, ऐसी अनेक बातें हैं जिनका उद्घाटन उन पत्रों से हो सकता है, जिन्हें स्वामी जी महाराज ने मि० बीस को भेजे थे मैं नहीं जानता कि उन पत्रों को प्राप्त करने का कोई प्रयत्न हुआ है या नहीं। यदि वे पत्र प्राप्त हो जाते तो बहुत उपयोगी होते। उस पत्र-व्यवहार के पश्चात् यूरोप की भूमि पर दो विश्वयुद्ध लड़े गये, जिनका केन्द्र-बिन्दु जर्मनी ही रहा। वहां इतना अधिक विध्वंस और विनाश हुआ है कि अब उन पत्रों की प्राप्ति करने की कल्पना बहुत क्षीण हो गई है तथापि मैं ऐसे आर्य बन्धुओं से प्रार्थना करूंगा, जो सदैव विदेशों का भ्रमण किया करते हैं, कि वे महर्षि के लिखे हुए उन पत्रों को खोजें। खोज करने से पूर्व ऐसे महोदय मि० बीस के महर्षि के नाम आये हुए पत्रों का भी अध्ययन करें। ऐसा करने में उन्हें महर्षि के द्वारा लिखे गये पत्रों का पता लगाने में सहायता मिलेगी।

इस दिशा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली बहुत कुछ कर सकती है। अभी पिछले दिनों सभा के प्रधान-मन्त्री श्री रामगोपाल जी हैदराबाद पधारे थे, तो मैंने उनसे प्रार्थना की थी कि सभा की ओर से इस दिशा में कोई खोज या छान-बीन की जाए। उन्होंने इस सम्बन्ध में उन्हें पत्र लिखने का आदेश दिया था।

स्वामी जी महाराज ने स्व० श्यामजीकृष्ण वर्मा को राजनैतिक दृष्टि से यूरोप भेजा था। जर्मनी को औद्योगिक शिक्षा के उद्देश्य से भारतीय छात्रों को भेजने की स्वामी जी की योजना व्यापक राष्ट्रीयता पर आधारित उनकी दूरदर्शिता की परिचायक है। महर्षि के मूल पत्रों को प्राप्त करने का यदि उन्नीसवीं शती के अन्तिम चरण मे ही प्रयत्न किया जाता तो निश्चित ही अधिक कठिनाई नहीं होती, किन्तु ८३ वर्ष के उपरान्त यह कार्य कठिन हो गया है, और दो विश्वयुद्धों तथा जर्मनी के विभाजन से तो यह कार्य कठिनतम बन गया है। तथापि प्रयत्न किया जाना चाहिए।

Bhagwan Dayanand Saraswati and the Upanishads

by Rai Bahadur Ratan Lal, B. A., LL. B.
Formerly Common Chief Justice of 14 Malwa States
(Madhya Pradesh) High Courts.

(गतांक से आगे)

आख्यी, स्तुति, प्रलाप परिवेदन, ग्रंथ, अन्वेषण, प्रश्न, प्रतिवचन, अनुषङ्ग, प्रयोग, सामर्थ्य, आख्यान and मख्या ॥

The eight words in the Shlokas of Briahadaranyaka Upanishad under discussion give classification of Vedic mantras as per below :—

(1) Itihas–The Vedic mantras which give laws of the Cosmos are called Itihas :—

इतिहासा ब्राह्मणादि नियमा ।

For instance the mantra which says that ' Moon envelopes the Sun with darkness (Rigveda 5 4 9) or Earth is rotating round the Sun (Rig veda 10.12 14)

(2) Purana: The Atharva Veda has once for all defined the word Purana in its Vedic sense. Says it:

येतु आसीद भुमिः पूर्वायामघतय इद विदु । यो व ता विद्यान्नामथा स मन्येत पुराणवित ॥ ८ ७

It means that he who knows the condition of the earth prior to what it is now is called a knower of purana It follows that Purana is the condition of the earth prior to creation This is a logical con clusion from the theory that the Vedas were breathed before creation. Hence those mantras which tell this are Puranas. For instance Rig. X.129.7,3 tells us "Darkness was at first covered in darkness. All this was then water in its indiscriminated state. The all pervading subtle matter was then covered with chaos all around; that one then made Himself manifest with gran deur of His (all knowing) conscious force." (Adapted from 'Germs of Vedic wisdom' by Ajodhya Prased)

(3) Vidya:- The mantras which deal with Upasana and spirituality are termed Vidya.

(4) Upanishad :—The mantras which point out the secrets of Ador ble God are called Upanishad.

(5) Shloka :—Those mantras which are read as shlokas are called Shlokas.

(6) Sutra :—The mantras which explain meanings in brief are called sutras

(7) Vyakhayan : The mantras which explain meaning at length are called vyakhyan.

(8) Anuvyakhyan: Those mantras which explain Vyakhyan mantras are called Anuvyakhyan.

It is therefore clear that Upani shads themselves hold the Vedas to be word of God given to mankind in the beginning of creation and of final authority; they do not claim to be revealed like the Vedas In fact, as has been said by Narhari in his instructive book on 'Atman in Pre-upanishadic Vedic Literature, 'The Rigveda and the philosophical portions of the Atharva-veda contain the germs of almost all the conceptions that form the basis of Upanishadic thought The Yajurveda which is purely liturgical in character, gives unprecedented importance to Prajapati whose description in this Samhita points him out as the clear precursor of the later Upanishadic Brahman."(p 164) And again "The Up anishads themselves contain the tradition of the Upanishadic ideas being only a continuation and expansion of the philosophical speculations found recorded in the Samhitas Many of the philosophical hymns and stanzas in the Rigveda are found incorporated into some Upanishads (Ishavasyopanishad 18, Kath-Upanishad II .2-5; Mundakopanishad III .1) This intimate relation between the texts of the Upanishads and the texts of the Samhitas is enough evidence to show that just as the Brahmanas explain the liturgical portion of the Samhitas so do the Upanishads undertake an interpretation of the philosophical portions of the Samhitas (ibid p 231) Edgerton has truly said that "every idea contained in at least the older Upanishads. with almost no exceptions is not new to the Upanishads but can be found set forth, or at least very clearly foreshadowed, in the older Vedic texts (ibid. 33). Edgerton seeks to demonstrate the veracity of this claim by the preparation of a card -index of the philosophic ideas and expressions in the Vedic Samhitas. Brahmanas and Upanishads. an examination of which should prove the close dependence of the Upanishads on the older Vedic Philosophy (for the scheme of this index see Journal of the American Oriental Society. 1916, xxxVI.p 503 ibid p. 233) The scholar C. Kunahn Raja rightly says in his foreword to Narhari's Thesis that the whole atmosphere of the Upanishads is that the Rishis, participating in the debates recorded in the Upanishads, looked upon the Rigveda as a literature of a very high order (p XV). . "And the Upanishads are decidedly much later in point of time than the texts of the Rigveda. But I have always asserted that what we find in the Upanishads is an attempt at understading the philosophy of the rig vedic period and not an attempt at evolving a new philosophy" p XIX)We would add that the Upanishads make serious attempt to understand not only Rigvedic philosophy but the philosophy and rahasya (secrets)of all the four Vedas . (to be continued)

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

परीक्षा परिणाम

आर्य समाज अबोहर द्वारा चल रही श्री बनवारीलाल वैदिक मिडिल पाठशाला का परिणाम ५४। ५६ रहा। १८ कन्याओं ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की। एक कन्या ने ५१२ अंक प्राप्त किए। इस वर्ष से नवम कक्षा प्रारम्भ हो रही है।

आर्य समाज, नासरीगंज

का उत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। अनेक विद्वानों के प्रभावपूर्ण भाषण हुए।

लाला लाजपतराय लाईब्रेरी

(आर्य समाज जोगेन्द्र नगर) के चुनाव में श्री गिरधारीलाल जी भवन प्रधान तथा श्री राजकुमारजी सलवान मन्त्री चुने गए।

आर्यसमाज, खंडवा

की ओर से ग्राम जसवाड़ी में बलाही जाति के सुधारार्थ १७५ ग्राम के पचों की सभा हुई। जिसमें आर्य समाज खंडवा के अधिकारी श्री बी० एस० भंडारी, श्री रामकृष्णजी पालीवाल, श्री पं० हरिश्चन्द्र जी तिवारी श्री डा० बी० डी० जौहरी, श्री पूनम चन्द जी आर्य तथा श्री पं० सुखराम जी आर्य सिद्धान्त शास्त्री के आदर्श मानव जीवन, मांस निषेध आदि विषयों पर भाषण हुए।

आर्यसमाज, सदर बाजार, झांसी

का ३४वां महोत्सव दिनांक १३ से १५ मई को धूम-धाम से हुआ अनेक आर्य विद्वान् और नेता पधारे।

विशेष यज्ञ

आर्य समाज नैनीताल के वार्षिकोत्सव पर कई दिन तक विशेष यज्ञ श्री महात्मा आनन्दभिक्षु जी महाराज द्वारा सम्पन्न होगा। यज्ञ के यजमान होंगे—उत्तरप्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री विश्वनाथदास जी, कुमाऊं कमिश्नर श्री आर० एम० बोहरा जी, जिलाधीश श्री माधवानी जी, जिला जज श्री आर०एम० मेहरा जी, अध्यक्ष जिला परिषद श्री श्याम लाल जी वर्मा आदि महानुभाव।

प्रान्तीय आर्य वीर दल सम्मेलन लुधियाना में

११, १२, जून को मान्य श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी की अध्यक्षता में बड़े समारोह से हो रहा है। सम्मेलन में पंजाब भर की आर्य जनता अपने नेताओं के विचार सुनने एकत्रित हो रही है। स्वा० सुरेन्द्रानन्द जी तथा स्वा० वेदानन्द जी पंजाब का दौरा कर रहे हैं। सम्मेलन का भव्य जलूस ११, १२, जून को दो बजे प्रारम्भ होगा।

उत्तमचन्द शरर, संचालक
आर्य वीर दल पंजाब

आर्यसमाज, गाजीपुर

के निर्वाचन में श्री देवकीनन्दन प्रसाद जी प्रधान, श्री दयाशंकर वर्मा जी मन्त्री एवं श्री रामजीप्रसाद जी कोषाध्यक्ष चुने गए

आर्यसमाज, कोसली

के अधिकारियों ने आर्यसमाज मन्दिर निर्माण के लिए आर्य दानी महानुभावों से धन की अपील की है। आर्य समाज ने दो हजार गज भूमि और उस पर चार दिवारी, प्रमुख द्वार तथा यज्ञ शाला का निर्माण कर लिया है। अब तीन कमरे, और एक कुआं निर्माण करना है।

आर्य समाज, उदयपुर

के वार्षिक निर्वाचन में श्री ठा० बलवन्तसिंह जी प्रधान, श्री मदनलाल जी मेहता मन्त्री एवं श्री भीमशंकरजी दुर्गावत कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज, आर्य नगर

के वार्षिक निर्वाचन में श्री प० नेकीरामजी आर्य प्रधान, श्री हीरासिंह जी आर्य सिद्धान्त शास्त्री मन्त्री तथा श्री दयानन्द जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज, बेवर (मैनपुरी)

के निर्वाचन में श्री कान्तीस्वरूप जी प्रधान श्री बैरागीलालजी गुप्तार्य मन्त्री एवं श्री मोहनलाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज, विनयनगर

नई दिल्ली के निर्वाचन में श्री प्रो० बी० पी० भास्कर प्रधान, श्री गणदेव शर्मा मन्त्री तथा श्री ब्रह्मकुमार जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज, भोजपुर खेड़ी

(बिजनौर) का हीरक जयन्ती महोत्सव दि० ३ से ५ जून को धूम-धाम से मनाया जावेगा।

आर्यसमाज, मुलतान देवनगर

नई दिल्ली के निर्वाचन में श्री मेलाराम जी बेदी प्रधान श्री धर्मचन्द जी मन्त्री तथा श्री चमन लाल जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज, खंडवा

द्वारा ग्राम भोजाखेड़ी बलाही जाति के सुधारार्थ एक सभा में श्री पं० हरिश्चन्द्र जी तिवारी, श्री पूनम चन्दजी आर्य श्री बालाराम आर्य तथा श्री सुखराम आर्य सि० शास्त्री ने ईसाई कुचक्रों से सावधान रहने की अपील की। श्री प० हरिश्चन्द्र जी तिवारी ने अपने स्वर्गीय पिता श्री प० रामचन्द्र जी तिवारी द्वारा स्थापित बलाही जाति सुधार समिति को तन, मन, धन से पूर्ण सहयोग का वचन दिया।

आर्यसमाज, रामकृष्णपुरम

नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया।

आर्य समाज बेवर

के निर्वाचन में श्री कान्तिस्वरूप जी वर्मा प्रधान, श्री बैरागीलाल जी मन्त्री तथा श्री मोहनलाल जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य जिलोपसभा मैनपुरी

के निर्वाचन में श्री श्यामगोपाल प्रधान, श्री सूबेदार जी आर्य मन्त्री तथा श्री सोमदत्त जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज, लोधीरोड़

नई दिल्ली में श्री सत्यपाल शास्त्री वेदशिरोमणी द्वारा वैदिक गीता पर १० दिन तक प्रवचन हुए।

महात्मा श्री प्रभु आश्रित जी श्री स्वामी विज्ञानानन्दजी एक सप्ताह तक योग साधना कराते रहे।

आर्य कुमार सभा हापुड़

के निर्वाचन में श्री कृष्णचन्द्र जी ओबराय प्रधान और श्री मूलचन्द जी आर्य मन्त्री चुने गए।

आर्यसमाज, हनुमान रोड

नई दिल्ली के निर्वाचन में श्री ला० देसराज जी प्रधान श्री सरदारी लाला जी वर्मा, श्री देसराज जी खन्ना श्री मती प्रकाशवती लुम्बा उप प्रधान श्री हरबंस लाल जी सहगल मन्त्री तथा हरिश्चन्द्र जी सूद कोषाध्यक्ष चुने गए

आर्य समाज, सिकन्द्राबाद

के निर्वाचन में श्री महाशय सुन्दरलाल जी आर्य प्रधान, श्री नारायणसिंहजी (नगरपालिका सदस्य) मन्त्री तथा श्री छेदालाल जी वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

५०१) दान

श्री गोतम गुप्ता (जि० जिष्कंयाम क०)के चि० पुत्रका नामकरण संस्कार सार्वदेशिक सभा के उपदेशक श्री प० अमरनाथ जी शास्त्री ने गणमान्य सज्जनों की उपस्थिति में कराया, वैदिक संस्कारों की महत्ता पर प्रभाव पूर्ण भाषण दिया। इस अवसर पर श्री गोतम गुप्ता जी ने ५०१) आर्य समाज गोहाटी को दान दिये।

(पेज ७ का शेष)

हिन्दू हृदय से मान करते हैं। पर आर्यसमाज का नेतृत्व और सिद्धांत स्वतन्त्र ही रहने चाहिये, पराश्रित नहीं।

एक सबसे प्रबल और विशेष बात यह है कि आर्य समाज वैदिक धर्म के प्रचार के लिये स्थापित एक संस्था है। वैदिक धर्म संसार के इस्लाम, क्रिश्चियनटी तथा बुद्ध धर्म आदि धर्मों में मूर्धन्य एक धर्म है. राजनीतिक पार्टियां कांग्रेस, जनसंघ आदि अस्थाई दल हैं जिन्होंने कुछ देर बाद नष्ट होना है। पर वैदिक धर्म और सृष्टि के प्रारम्भ से अब तक चला आ रहा यावच्चन्द्र दिवाकरौ, रहेगा यह एक स्थायी वस्तु है।

धर्म और राजनीतिक पार्टियों की कोई तुलना नहीं। राजनीतिक पार्टियां सदा धर्मके प्रभावसे प्रभावित रही हैं और रहेंगी।

इस प्रकार यदि वस्तु स्थिति स्पष्ट समझ ली जाये तो आर्यसमाज की स्थिति और महत्व सन्देह रहित रूप में सामने आ जाएंगे।

सावधान

सतर्क रहना होगा सबको, दुश्मन का विश्वास नहीं !
आने वाली बड़ी परीक्षा, भूलेंगे हम ताज नहीं !!
प्राणों की फिर भेंट होगी, आहुती युद्ध-वेदी पर !
आजादी की शान चमकती, रहें आज फिर विश्वे भर !!

कवि कस्तूरचन्द

(पृष्ठ २ का शेष)

केवल दैव या पुरुषार्थ से कर्म की सिद्धि नहीं होती। प्रिये! प्रत्येक वस्तु या कार्य एक ही साथ पुरुषार्थ और दैव दोनों से ही गुंथा हुआ है।

तयोः समाहितं कर्म शीतोष्णं युगपत् तथा। पौरुषं तु तयोः पूर्व-मारब्धव्यं विजानता। आत्मना तु न शक्यं हि तथा कीर्तिमवाप्नुयात्॥

दैव और पुरुषार्थ दोनों के समान कालिक सहयोग से कर्म सम्पन्न होता है। जैसे एक ही काल में सर्दी और गर्मी दोनों होती हैं, उसी प्रकार एक ही समय दैव और पुरुषार्थ दोनो काम करते हैं। इन दोनों में जो पुरुषार्थ है, उसका आरम्भ विज्ञ पुरुष को पहले करना चाहिये। जो अपने आप होना सम्भव नहीं है, उसको आरम्भ करने से मनुष्य कीर्ति का भागी होता है।

खननान्मथनाल्लोके जलाग्नि प्रापणं तथा। तथा पुरुषकारे तु दैव सम्पत् समाहिता॥

जैसे लोक में भूमि खोदने से जल तथा काष्ठ मन्थन करने से अग्नि की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार पुरुषार्थ करने पर दैव का सहयोग स्वतः प्राप्त हो जाता है।

नरस्याकुर्वतः कर्म दैव सम्पन्न लभ्यते। तस्मात् सर्व समारम्भो दैव मानुष निर्मितः॥

अर्थ – जो मनुष्य कर्म नही करता, उसको दैवी सहायता नहीं प्राप्त होती; अत. समस्त कार्यों का आरम्भ दैव और पुरुषार्थ दोनों पर निर्भर है।

(महाभारत)

पेज ४ का शेष

गुरुमुखी लिपि सीखनी चाहिये। साथ ही उन्होंने यह भी अपील की है कि प्रत्येक हिन्दू परिवार से एक व्यक्ति सिख अवश्य होना चाहिये। क्या सन्त जी के मन में हिन्दू सिख एकता का यही सबसे बड़ा उपाय है? एक ओर वे कहते हैं कि "मेरी नजर में हिन्दू और सिख बराबर हैं, दोनों में कोई भेद नहीं करता और दोनों को ही अपनी सन्तान समझकर समान रूप से प्यार करता हू।" यदि उनकी दृष्टि मे हिन्दू और सिख दोनो समान हैं तो हिन्दुओं का सिख बनने का आग्रह क्यों? सन्त जी की उदारता या हिन्दू सिख एकता के लिए दृढ प्रतिज्ञता हम तब स्वीकार करते जब हिन्दुओं से अपील करने के साथ-साथ वे सिखों से भी अपील करते कि प्रत्येक सिख परिवार को चाहिये कि वह अपने परिवार में किसी एक सदस्य को 'मोना' करके हिन्दू बनने की अनुमति दे। हमें इसमें भी शक है कि सन्त जी ने जैसी अपील हिन्दुओं से की है वैसी ही अपील यदि कोई हिन्दू नेता सिखों से करे तो सन्तजी उसे बर्दाश्त कर सकेंगे और मात्र उस अपील से पंथ की एकता को खतरे में अनुभव नही करेंगे। जब तक मन के अन्दर कट्टर साम्प्रदायिकता का विष भरा हुआ है तब तक बाहर राष्ट्रीयता का चोगा पहनने से क्या लाभ?

Nothing in the realm of fashion looks more elegant. The crease stays in, the wrinkles stay out, with the new wonder fabric Te-relax, a rich blend of terylene and cotton. A texture that is luxuriously different Shoorji's Te-relax is available in a variety of bold shades and designs.

SHOORJI
SUITINGS

WESTERN INDIA MILLS

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २)५०
सत्यार्थप्रकाश २)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
व्यवहार भानु)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र १) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७×४० इन्च २)५०
,, ,, ३६×५४ इन्च ४)५०
,, ,, ४५×६७ इन्च ६)५०
कर्त्तव्य दर्पण)४०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)७५
मराठी सत्यार्थप्रकाश १)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से))५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
कठोपनिषद्)५० प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १ २५
मृत्यु और परलोक १)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
अभ्यास और वैराग्य १)६५
निज जीवन वृत्त वनिका (सजिल्द))७५
ब्रह्म जीवन सोपान १)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म ६२

उपनिषद् कथामाला)७५
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार)२०
आदर्श गुरु शिष्य)७५
कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
पुरुष सूक्त)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर)६२
स्वर्ग में हड़ताल)३७
डाक्टर बर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)२५
वैदिक तत्व मीमांसा)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
वेद और विज्ञान)७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३७
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
इराक की यात्रा २)५०
महर्षि दयानन्द की यात्रा चित्र)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक ईश वन्दना)४०
वैदिक योगामृत)६२
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
भ्रम निवारण)३०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
वेद की इयत्ता १)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह)७५
कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम (पूर्वार्द्ध) १)५०
,, ,, (उत्तरार्द्ध) १)५०
वैदिक संस्कृति)७५
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
सायण और दयानन्द १)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)५०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०

संस्कार महत्व)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
चरित्र निर्माण १)२५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
अनुशासन का विधान)२५
धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय २)
आर्य समाज के महाधन २)५०
एशिया का वेनिस)७५
स्वराज्य दर्शन १)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
भजन भास्कर १)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५

दुबारा छप गई। आर्य जगत में सबसे सस्ती
सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत
पृ० २००—नेट मूल्य ४० पैसे

ARYA SAMAJ
ITS CULT AND CREED

A unique and elegantly printed Book of the Day

By—Acharya Vaidyanath Shastri.

Rs. 5/-

This is the most popular and widely read first English book of Acharya Vaidya Nath Shastri a well known Arya Samaj Scholar and author credited with writing books in Hindi of outstanding merit on religion and philosophy some of them winning prizes.

The book presents a scholarly and lucid exposition of the Cult and Creed of AryaSamaj ranking among the high-class rare English literature of Arya Samaj. It is a worth reading worth preserving & worth presenting book to the English reading persons especially to the intelligentsia.

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

कला-कौशल टैक्नीकल) और वैदिक साहित्य का महान् भंडार

सार्वदेशिक प्रेस. दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ फोन २७४७७१ आषाढ़ कृष्णा ४ संवत् २०२३, ७ जून १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टि सम्वत् १९७०८

गोहत्या बंद न की गई तो लाखों लोग बलिदान दे

वेद—आज्ञा

पशु-रक्षा

होता यक्षदश्विनौ छागस्य वपाया मेदसो जुषेतार्थ हविर्होतर्यज। होता यक्षत्सरस्वतीं मेषस्य वपाया मेदसो जुषतार्थ हविर्होतर्यज। होता यक्षदिन्द्रमृषभस्य वपाया मेदसो जुषतां हविर्होतर्यज।

२१। ४१

संस्कृत भावार्थ—

अत्र वाचकलु०—ये मनुष्याः पशुसंख्यां बलं च वर्धयन्ति ते स्वयमपि प्रतिष्ठा जायन्ते। ये पशुजं दुग्धं तज्जमाज्यं च स्निग्धं सेवन्ते ते कोमलप्रकृतयो भवन्ति। ये कृषिकरणाय [illegible] वृषभान्युञ्जन्ति ते धनधान्ययुक्ता जायन्ते।

आर्य भाषा भावार्थ—

इस मन्त्र में वाचकलु०—जो मनुष्य पशुओं की संख्या और बल को बढ़ाते हैं वे आप भी बलवान् होते और जो पशुओं से उत्पन्न हुए दूध और उससे उत्पन्न हुए घी का सेवन करते वे कोमल स्वभाव वाले होते हैं और जो खेती करने आदि के लिये इन बैलों को नियुक्त करते हैं वे धन-धान्ययुक्त होते हैं।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर देश भर में गोरक्षा के लिए सभाएँ

आर्य नेताओं की चेतावनी

सरकार के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाने की अपील

गोरक्षा आन्दोलन के समर्थन में आज आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल में एक विराट सभा हुई जिसमें आर्य नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि देश में गोवध को कानून द्वारा बन्द न किया गया तो लाखों लोग बलिदान कर सरकार का चलना कठिन कर देंगे।

सभा की अध्यक्षता श्री डा० गिरधारीलाल जी दत्ता ने की।

सभा में पारित एक प्रस्ताव में सरकारी नीति की कड़ी निंदा करते हुए उन २४ सन्यासियों की सराहना की जिन्होंने गोरक्षा के लिए तिहाड़ जेल में भूख हड़ताल कर रखी है।

सरकार से कहा गया है कि उन सन्यासियों से सद्व्यवहार किया जाय और जो यातनाएं उन्हें दी जा रही हैं, वे शीघ्र दूर की जावें।

श्री बी०पी० जोशी, श्री प्रेमचन्द गुप्त, प० रघुनाथ प्रसाद तर्क भास्कर, स्वामी चेतनानन्द और श्री रिछपालसिंह जैन आदि ने भाषण करते हुए कहा कि जब तक भारत में गोहत्या बन्द नहीं की जाएगी देश में अनाज की समस्या और आर्थिक दशा नहीं सुधर सकती। सभा में योगिराज सूर्यदेव जी ने भी भाषण किया।

जापानी विद्वान्-सभा-भवन में

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री से धार्मिक वार्तालाप

दि० ३१ मई मंगलवार सायं ५ बजे परमाणुबम विरोधी जापानी शान्ति समिति एवं रिक्को विश्वविद्यालय के अध्यक्ष श्री डा० मासातोशी [illegible] अपनी दो साथियों श्री [illegible] मुके, तथा मिसी [illegible] माता सहित सार्वदेशिक सभा भवन में पधारे। [illegible] वैदिक अनुसन्धान विभागाध्यक्ष श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री, सभा के कानूनी परामर्शदाता श्री बा० सोमनाथ जी मरवाहा एडवोकेट, प्रधान संचालक आर्यवीरदल श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी, सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री रघुनाथप्रसाद जी पाठक आदि ने माननीय अतिथियों का स्वागत किया।

जापानी विद्वान् महोदय लगभग डेढ़ घण्टे तक वैदिकधर्म, वैदिक दर्शन, षड्दर्शन एवं आर्यसमाज के कार्य और उसके संगठन पर श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री से वार्तालाप कर बड़े प्रभावित हुए। अन्त में आपने आचार्य जी से कहा कि टोकियो (जापान) में आर्यसमाज की शाखा नहीं है।

सभा की ओर से आप को अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ भेंट किये और जल-पान के पश्चात् अतिथि महोदयों को हार्दिक विदाई दी।

गो-रक्षा

"गाय दूध में अधिक उपका[रक] होती है और जैसे बैल उपकारक [होते] हैं वैसे भैंसे भी हैं। परन्तु दूध घी से जितने बुद्धि वृद्धि से ल[ाभ] होते हैं उतने भैंस के दूध से न[हीं] इससे मुख्योपकारक आर्यों ने [गाय] को गिना है। और जो कोई [अन्य] विद्वान् होगा वह भी इसी प्र[कार] समझेगा।"

देखो! जब आर्यों का रा[ज्य] था तब ये महोपकारक गाय [आदि] पशु नहीं मारे जाते थे तभी आ[र्या]वर्त्त वा अन्य भूगोल देशों में [बड़े] आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्त्तते [थे] क्योंकि दूध घी, बैल आदि पशु[ओं] की बहुताई होने से अन्न रस पुष्[कल] प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मां[साहा]री इस देश में आके गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्या[धि]कारी हुए हैं। तब से क्रमशः आ[र्यों] के दुःख की बढ़ती होती जाती है।

(प्रश्न) जो सभी अहिंसक [हो] जायें तो व्याघ्रादि पशु इतने बढ़ [जायें] कि सब गाय आदि पशुओं को [मार] खायें, तुम्हारा पुरुषार्थ ही व्यर्थ [हो] जाय?

(उत्तर) यह राजपुरुषों का [काम] है कि जो हानिकारक पशु वा म[नुष्य] हों उनको दण्ड देवें और प्राण से [भी] वियुक्त कर दें।

—महर्षि दयानन्द सरस्[वती]

[illegible]

अपने बहु कुर्यात्

सम्पादक—रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री
सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

बलेन लोकस्तिष्ठति

वर्ष
अंक

शास्त्र-चर्चा

सत्य क्या है

सत्यस्य वचनं श्रेयः,
सत्यादपि हितं वदेत्।
यद्भूतहितमत्यन्त -
मेतत्सत्यं मतं मम ॥
(शान्ति पर्व)

सत्य बोलना कल्याण के लिये है, पर केवल सत्य बोलने से हित की बात कहने में अधिक कल्याण है। मेरा तो मत यह है कि जिसमें भूतों का, प्राणियों का अत्यन्त हित होता हो वही सत्य है — (सनत्कुमार)

मन पहिले ही बता देता है

मन एव मनुष्यस्य,
पूर्वरूपाणि शंसति ।
भविष्यतश्च भद्रं ते,
तथैव न भविष्यतः ॥
(शान्ति पर्व)

कार्य सिद्ध होगा या नहीं, इस बात को तो मन ही पहिले बतला देता है।

मूर्खों से छेड़ छाड़ न करें

आक्रोशन-विमानाभ्यां
नाबुधान् बोधयेद् बुधः।
तस्मान्न वर्द्धयेदन्यं
न चात्मानं विहिंसयेत् ॥
(शान्तिपर्व)

बुद्धिमान् को चाहिये कि वृथा कोसकर अथवा अपमान करके मूर्ख पुरुष को न जगावे। इससे तो उसका जोर बढ़ता और अपना घटता है।

तू अकेला नहीं है ?

एकोहमस्मीत्यात्मानं
यत्त्वं कल्याण मन्यसे ।
नित्यं स्थितस्ते हृद्येष
पुण्यपापेक्षिता मुनिः ॥
(मनु)

प्यारे, यह जो तू समझ बैठा है कि मैं अकेला ही हूं, मेरे ऊपर अथवा मुझे देखने-भालने वाला और कोई नहीं, सो यह तेरी भूल है। तेरे ही भीतर तेरे पुण्य-पापों का, तेरी भलाई-बुराई का, देखने वाला मुनि (भगवान) सदैव रहता है

तीन बातें

१—जिनकी प्रति मास की जितनी आ रही हैं उनका धन, प्रति सप्ताह या प्रति मास मनिआर्डर फीस काट कर भेजते रहें। देर से धन भेजने में आपको और हमें कष्ट होता है।

२—प्रत्येक आर्य समाज को कम से कम १० प्रति-प्रति सप्ताह मंगा कर अपने १० सदस्यों को देनी चाहिए। और १० प्रति का मूल्य केवल १)१० होता है। मनिआर्डर फीस काट कर भेजते रहें।

३—भारत की चार हजार आर्य समाजें यदि १०-१० प्रति मंगावें, तो आपका यह पत्र प्रति सप्ताह चालीस हजार छपने लगे।

कृपया तीन बातों पर ध्यान दें।
—प्रबन्धक

उसके लिए क्या कठिन ?

शरीरनिरपेक्षस्य,
दक्षस्य व्यवसायिनः ।
न्यायेनारब्धकार्यस्य,
नास्ति किंचन दुष्करम् ॥
(नीति-पद्धति)

जो शरीरकी परवाह नहीं करता, जो दक्ष, व्यवसायी है, कार्यों को न्यायपूर्वक प्रारम्भ करता है भला उसके लिए संसार में कौनसा कार्य कठिन है।

यथा काष्ठं च काष्ठं च,
समेयातां महोदधौ ।
समेत्य च व्यपेयातां,
तद्वत् भूतसमागमः ॥
(मनु)

ससार मे सयोग-वियोग लगे ही रहते हैं—जैसे नदी की धाराओं में, लकड़िया बह-बह कर आती हैं, एक धारा में मिल जाती हैं, फिर कुछ काल तक साथ बह कर, फिर जल के धक्के के साथ पृथक होकर भिन्न दिशाओं मे बहने लगती है, ऐसे ही होते हैं ससार मे प्राणियों के सयोग और वियोग।

सुखं वा दि वा दुःखं
प्रियं वा यदि वाऽप्रियं ।
प्राप्तं प्राप्तमुपासीत,
हृदयेनापराजिता ॥

सुख आवे, दुःख आवे, प्रिय हो, अप्रिय हो, अपराजित हृदय से काम करते रहना चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाएं

आर्य युवक परिषद् दिल्ली (रजिस्टर्ड) के प्रधान श्री के० देवदत्त जी धर्मेन्दु ने आर्य जनता से अपील की है कि आर्य युवक परिषद् प्रतिवर्ष वेद सप्ताह के अवसर पर देश भर में सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाओं का आयोजन करता है इन परीक्षाओं में आप स्वयं सम्मिलित हों और दूसरों को भी प्रेरणा कर परीक्षाएं दिलावें।

इस वर्ष ये परीक्षाएं रविवार ४ सितम्बर ६६ को सारे भारत में होंगी। परीक्षाओं में बैठने के इच्छुक अर्थ-सहित इस पाठ विधि तथा आवेदन पत्र आदि परीक्षासंबंधी आर्यसमाज मंदिर दिल्ली ६ से पत्र द्वारा प्राप्त करें।

दो शब्द

सार्वदेशिक सभा के इस सुन्दर निश्चय का कि आगामी दिनों में आर्य-समाज परिचयांक, प्रकाशित हो रहा है, हृदय में प्रसन्नता हुई। सचमुच ही यह एक महान कार्य है और इसकी सफलता पर हमें अति गर्व होगा।

भारत और भारत से बाहर ४००० आर्यसमाजें हैं, और उसके करोड़ों सदस्य है, तथा करोड़ों रुपये व्यय करते हैं, किन्तु सर्व साधारण को कोई पता नहीं। सचमुच ही इस महान् कार्य की पूर्ति के पश्चात् एक बड़े कार्य की पूर्ति होगी।

सभा के इस सुन्दर निश्चय का हम सभी पीपाड़ के आर्य बन्धु हृदय से स्वागत करते हैं, और उपरोक्त आर्यसमाज परिचयांक को प्रकाशित करने वाले निर्णायक धन्यवाद के पात्र हैं। ५० प्रतियों के लिए ५०) भेज रहे हैं।

मोहनलाल
मन्त्री आर्य समाज, पीपाड़शहर

हिन्दू नागा शांति मिशन का गठन

पटना का २४ मई का समाचार है कि 'असम नेहरू सेवक सघ' के अध्यक्ष श्री एम० पी० शास्त्री ने एक ५ सदस्यीय हिन्दु नागा शान्ति मिशन की घोषणा की है। आयोजकी अध्यक्ष रानी गिडालो होंगी।

श्री शास्त्री ने कहा कि मिशन को सार्वदेशिक सभा का समर्थन प्राप्त है। इस मिशन के सदस्य हैं सर्व श्री प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य श्री ओ३म् प्रकाश त्यागी तथा श्री वेंकट तिवारी।

मिशन ने केन्द्रीय सरकार से अपील की है कि वह भूमिगत नागाओं विदेशी मिशनरियों तथा पाकिस्तानी घुस पैठियों की विघटनकारी गति विधियों के प्रतिरोध में सहायता दें।

वक्तव्य में यह भी कहा गया है कि नागालैंड की ३-६६ लाख की जन संख्या में केवल १-२५ लाख ईसाई हैं शेष-नागा हिन्दु हैं।

इस सघ की गतिविधियों की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा की जायगी।

पंजाबी सूबा तथा आर्यसमाज

प्रिंसीपल भगवानदास जी, डी० ए० वी० कालेज,
अम्बाला नगर

१९४७ में जब हम हिन्दु सिख पाकिस्तान से मार पीट कर निकाले गये तो इधर आते ही कुछ साम्प्रदायिक अकाली नेताओं ने खालिस्तान का नारा लगाया था पर पाकिस्तान का कड़वा स्वाद सबको बराबर मिला था। इसलिये पंजाब की जनता ने उनकी न सुनी कहीं कहीं ग्रामों में साम्प्रदायिकता की अग्नि भड़की पर जनता की सूझ-बूझ से शांत हो गई। उसके पश्चात् भी कुछ नेता अपनी डफली बजाते ही रहे तथा जनता को चैन से बैठने न दिया। शायद केन्द्रीय सरकार भी थोड़ा बहुत झुकती गई। पर खालिस्तान के नारे पर उन नेताओं को पंजाब में बहुधा सहयोग न मिला। लाभ यही रहा कि सिक्खों को कुछ न कुछ सरकार देती ही रही। जिससे हिन्दु सिक्खों में कुछ खाड़ी बनती चली गई और यहां तक हुआ कि धार्मिक स्थानों में विशेषकर कभी-कभी दोनों भाई एक दूसरे पर कीचड़ उछालते रहे। सब से अधिक खाड़ी तब पैदा हुई तब सिखों की धार्मिक लिपि गुरमुखी को पंजाबी भाषा की लिपि ठोंस दिया गया। १९५६ के क्षेत्रीय योजना ने तो गुरमुखी लागू करके ७० प्रतिशत हिन्दुओं को तीसरे दर्जे के नागरिक बना दिया। अकाली मनोवृत्ति के सरकारी अफसरों ने जनता पर जो गुरमुखी नहीं जानती थी-अत्याचार करने आरम्भ कर दिये। कई ग्रामों में तो क्या-बड़े बड़े नगरों से भी ऐसी शिकायतें मिली हैं कि काले दिल के अफसरों ने उर्दू हिन्दी तथा अंग्रेजी के प्रार्थना पत्रों तथा पुस्तकों को फाड़ा तथा जनता का अपमान किया। इससे लोगों का स्वाभिमान जागृत हुआ। जब समूह हिन्दी रक्षा के नाम पर अपना जोश लेकर उठे तथा भारत के इतिहास में प्रथम बार भाषा के नाम पर किए जा रहे अत्याचारों का विरोध किया जो कष्ट सत्याग्रहियों को दिये गए वह कभी भूल नहीं सकते पर सरकार ने यह मान लिया कि रोष सत्य था तथा कोई कोई रूप दिया गया पर साम्प्रदायिक अफसरों के ठिक ठिकाने आ गए तथा गुरमुखी अत्याचार बन्द हुए। दूसरा लाभ इस आन्दोलन का यह हुआ कि अकाली भाइयों ने समझ लिया कि खालिस्तान की दाल न गलेगी तथा उन्होंने सिख सूबा के नारे को छोड़ कर पंजाबी सूबे का नारा आरम्भ किया। भाषा अत्याचार के बाद अभी इतने ताजा थे कि हिन्दुओं को उनके कहने पर विश्वास न आया तथा उनका नारा व्यर्थ में रह गया।

हिन्दी आन्दोलन में कुछ नेताओं के स्वार्थभाव तथा दुर्बलता के कारण एक दुखदायी बात हुई और वह यह है कि गुरमुखी की अनिवार्यता हरियाणा पर बनी रही। गत दस वर्षों के मिडल परीक्षा परिणाम तथा प्राईमरी के छात्रवृत्ति परीक्षा परिणाम यह बताएंगे कि गुरमुखी की अनिवार्यता के कारण हरियाणा के बच्चे बहुत पिछड़ गए। क्योंकि पंजाबी क्षेत्र के हिन्दुओं को तो एक लिपि ही सीखनी पड़ी पर हिन्दी क्षेत्र के विद्यार्थियों को लिपि तथा भाषा दोनों सीखनी पड़ी जो कि बहुत कठिन कार्य है। भारत के किसी प्रदेश में द्वितीय भाषा अनिवार्य नहीं पर हरियाणा को इस कठिनाई में जबर से डाला गया। परिणामत:—पंजाब में तीन प्रकार के नागरिक बन गए :—

(क) वह जो लिपि तथा भाषा को धार्मिक क्षेत्र में वर्षों से जानते थे तथा बोली भी वहीं बोलते थे।

(ख) वह जो बोली तो बोलते थे पर लिपि नहीं जानते थे।

(ग) जो न लिपि जानते थे तथा न बोली बोलते थे।

आर्यसमाज के नेता यह भूल गए कि गुरमुखी की अनिवार्यता से तो पंजाब के टुकड़े हो जाने का अंकुर बोया था। संसार के इतिहास में मजहब के नाम पर तो लोगों को बदला भी गया और पृथक् भी किया गया पर भाषा के आधार पर तो भेदभाव कहीं सुने नहीं। पंजाब को एक रखने का यह निराला ढंग था। जिसका प्रमाण इतिहास में नहीं। इसका परिणाम यह हुआ कि पंजाबी सूबा की नींव रखी गई। जब मैंने १९५७ में यह कहा तो कुछ अंग्रेजी नेता आर्यसमाजी नेताओं ने मेरा मखौल उड़ाया। मैं यह स्वयं नहीं जानता था कि मेरा अनुमान नौ वर्ष में हो सत्य निकलेगा। अब वह स्वार्थी नेता क्या उत्तर दे सकते हैं। हरियाणा हमने स्वयं काट दिया। क्योंकि अगर वह अमल न हो तो भाषा का जबर कैसे आवे। पंजाबी क्षेत्र के हिन्दु भी इसमें उत्तरदायी हैं।

दूसरी बात जो पंजाबी सूबा के निर्माण में सहायक हुई वह था आर्यसमाज का घरेलू युद्ध। इस युद्ध में यह बहुत कष्टदायक बात हुई कि युद्ध बिना कहे क्षेत्रीय ढंग पकड़ गया। इसपर अभी मैं चुप रहना चाहूंगा केवल इतना कहूंगा कि आर्य-समाज जो सर्वसम्मति से भाषाई-प्रान्तों के विरोध में था आज घरेलू युद्ध के कारण इसका एक बड़ा अग्रदल पंजाबी सूबे के पक्ष में है। अगस्त १९५७ से पूर्व मैंने कई मित्रों को कहा कि आर्यसमाजी भाई पजाबी सूबा बनाकर रहेंगे। अगस्त में जब कुछ आर्य नेताओं ने मुझे लिखा अथवा पंजाबी सूबा के विरोध के लिये तो मैंने स्पष्ट कहा तथा लिखा था कि पजाबी सूबा बनेगा। पंजाब के कांग्रेसी नेता जो पंजाबी सूबा के घोर विरोध में थे वह भी मानेंगे कि पंजाबी सूबे का क्षेत्र आर्यसमाज की फूट के कारण तय्यार था। हरि-याणा को पीछे रखना गुरमुखी की अनिवार्यता तथा आर्यसमाज की फूट वह बड़े भारी चिह्न थे। पजाब के विभाजन के विरोध में दो बड़े नेता जिन्होंने भिन्न-भिन्न समय पर आत्म बलिदान की घोषणा की थी जब कहीं मिले तो मैंने सानुरोध कहा था कि कोई लाभ नहीं आराम से चलने दें।

तीसरी बात जिसने पजाबी सूबे के लिये बहुत सहायता की-वह थी पंजाब कांग्रेस के घर में कुछ थोड़ा नहीं बहुत बाहर से कार्य चलता दिखता था और शायद अब भी चल रहा होगा पर अन्दर से सम्पूर्ण विभाजन टूट चुका है। स्वार्थभाव तथा कुटुम्बवाद के गंदे भाव ने पंजाब की जनता के दिलों के ही टुकड़े कर दिये अथवा पंजाब के भी। अच्छी बात इस झगड़े में यह रही की पंजाब की कांग्रेस के अन्दर यह झगड़े साम्प्रदायिक जोड़ तोड़ के आधार पर जैसे कि पहले हुआ करते थे न होकर केवल स्वार्थ वाद पर हुए इससे पंजाब मे साम्प्रदायिक रंग न आया तथा भाई को भाई से प्रेम रहा। हानि यह हुई कि सत गुट के अकालियों ने अपनी बुद्धिमत्ता से इस कांग्रेस के झगड़े का, आर्य समाज में फूट का तथा हरियाणा के रोष का पूर्ण लाभ उठाया। मास्टर गुट के अकाली तो देखते ही रह गए पर संत फतेहसिंह ने लोहा गर्म देख कर ठीक समय पर चोट की। अगर यह अवसर निकल जाता अथवा हरियाणा की शिकायतों पर सरकार ध्यान दे देती तो शायद सत जी को सफलता न होती। यह अवसर तो प्रत्येक समय न आ सकता था और तो और अगर आर्यसमाज की फूट दूर हो जाती तो संत जी की सारी शक्ति पजाबी सूबा बनाने में सफल न हो सकती। पंजाब कांग्रेस की सुदृढ़ता के सामने थोड़े ही वर्ष हुए थे कि जब संत जी की तथा मास्टर जी की मिली जुली शान्ति भी निसफल हो गई थी। अगर संत गुट अवसर का लाभ न उठाता तो शायद फिर उनका वास्तविक जलमरना भी पजाबी सूबा न बना सकता।

पंजाबी सूबे के निर्माण मे सत जी ने एक बात और भी बड़ी सूझ बूझ से की है वह यह कि जब पाकि-स्तान बम वर्षा कर रहा था तो वह भारत सरकार की खिल्ली उड़ा रहे थे पर किसी के कहने पर अथवा अन्दर की आवाज पर उन्होंने अपने ढंग को बदलकर अपना जल मरना स्थगित कर दिया था अगर वह उस समय मास्टर तारासिंह जी की मनोवृत्ति अपनाते और व्रत रखते और जल मरते तो उनकी हत्या पर कोई भी पंजाबी आंसू भी न बहाता। पंजाब की जनता में कोई दोष हो पर वह दोष के शत्रु को क्षमा नहीं करते। इसलिये उन दिनों में अपना जल कर मरना स्थगित करके सत जी ने देश प्रेम का प्रमाण दिया तथा अपने मिशन की सफलता की ओर पग रखा।

पंजाबी सूबे सम्बन्धी कांग्रेस महामण्डल की घोषणा पर जो रोष देखा गया वह दुखदायी था। उसमें किसी भी दल का दोष न था जनता बिना नेतृत्व के गलत रास्ते पर चल पड़ी। केन्द्रीय नेताओं का निश्चय,

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य कुमारों के कर्तव्य

लेखक—
श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्य्योपदेशक

किसी भी देश और जाति के उत्थान तथा गौरव प्राप्ति के लिये उसके "कुमार" ही कार्य कर सकते हैं। कुमारों में अथाह शक्ति, असीम उत्साह और महान् साहस होता है। कुमारों में नया रक्त नया जीवन और नई स्फूर्ति विकसित होती है। यही वे गुण हैं, जिनसे देश और समाज की उन्नति होती है।

कुमार अवस्था को प्राप्त होते ही बालक कुछ गम्भीर हो जाते हैं और वे अपने उत्तरदायित्व को भली भांति समझने लगते हैं। यदि उन्हें इसी अवस्था में ही उनके कर्तव्यों और अधिकारों का ज्ञान करा दिया जावे तो वे अपने भले-बुरे, हानि-लाभ का विचार कर अपना, अपने देश और अपनी जाति का कुछ हित कर सकते हैं और वे संसार में पदार्पण कर पथ-भ्रष्ट नहीं होते हैं। इसी भावना से प्रेरित होकर अपने कुमारों के कर्तव्यों के सम्बन्ध में निम्नलिखित कुछ पंक्तियां लिखी जाती हैं। कुमारों को इन्हें बड़े ध्यान से पढ़ना चाहिये और इन कर्तव्यों को सदा अपने सामने रख कर इन्हें पूरा करने के लिये सर्वभावेन प्रयत्नशील रहना चाहिये। ताकि उनका आगामी जीवन उत्तम तथा आदर्श जीवन बन सके।

(१) कुमारों को अपने जीवन का "आदर्श" ऊंचा रखना चाहिये और उसे अभी से निश्चित कर साधनानुकूल उसकी प्राप्ति के लिये बड़े साहस और उत्साह से उद्यत रहना चाहिए।

(२) कुमारों को अपने धर्म और ईश्वर में श्रद्धा, प्रेम तथा विश्वास के भाव सदा बनाये रखने चाहिये और ईश्वराराधना के लिये नियमित रूप से प्रतिदिन दोनों समय सन्ध्या, प्रार्थना और भजनादि विचार पूर्वक करते हुए ईश्वरीय गुणों को अपने जीवन में धारण करना चाहिए।

(३) कुमारों को अपने देश, अपनी जाति, अपनी भाषा, अपनी सभ्यता, शिष्टाचार और संस्कृति का सदा सम्मान करना चाहिये और उनकी रक्षा तथा सेवा के लिये प्राणपण से उद्यत रहना चाहिए।

(४) कुमारों को ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्णतया मनसा, वाचा और कर्मणा पालन करते हुये दैनिक तथा नियमित व्यायाम आदि द्वारा अपनी शारीरिक शक्ति सदा बढ़ानी चाहिये जिससे उनके शरीर सुदृढ़, सुडौल, हृष्टपुष्ट और स्वस्थ बन सकें। स्वस्थ तथा बलवान बच्चे ही देश और जाति और समाज की उन्नति, रक्षा और सेवा कर सकते हैं।

(५) कुमारों को अपना खान-पान और रहन-सहन सदा सादा, कम खर्चीला और स्वच्छ पवित्र रखना चाहिए। उत्तेजना पैदा करने वाले, बुद्धि-शक्ति का ह्रास करने वाले पदार्थों का सेवन न कर सदा सात्विक और पौष्टिक पदार्थों का ही सेवन करना चाहिए।

(६) कुमारों को अपनी बुद्धि के विकास और ज्ञान की वृद्धि के लिये अपनी पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त "पुस्तकालयों" आदि से भी सदा अच्छी अच्छी धार्मिक पुस्तकें लेकर स्वाध्याय करते रहना चाहिये। विचारशक्ति के जागृत और उत्तम होने पर "अच्छे अच्छे विचार" लिखकर लेखनकला की भी वृद्धि करनी चाहिए।

(७) कुमारों को अपनी सम्पूर्ण शक्तियों को विकसित करने का प्रयत्न करना चाहिए। विशेषतः कुमार सभाओं के सत्सङ्गों, उत्सवों और सम्मेलनों आदि में निस्संकोच होकर भाग लेते हुए बोलने की शक्ति को बढ़ाना चाहिए तथा विचार-शक्ति के जागृत होने पर समाचार पत्रों में लेख आदि लिखकर "लेखन शक्ति" को बढ़ाना चाहिए।

(८) कुमारों को अपने आचार, विचार और व्यवहार को सदा शुद्ध ही रखना चाहिए जिससे उनके सदाचार की रक्षा हो सके। इसके लिये उन्हें समाज और कुमार सभा के सत्संगों आदि में बैठने का अभ्यास कर अपना जीवन सत्संगमय बनाना चाहिए।

(९) कुमारों को अपने समय को मूल्यवान समझकर उसका सदा सदुपयोग करना चाहिए और अपनी दिनचर्या निश्चित कर सब काम नियमपूर्वक करते रहना चाहिए जिससे समय नष्ट न हो। सिनेमा, थियेटर और अन्य कुव्यसनों का परित्याग करके अपने मन को परोपकार, सेवा आदि सत्कार्यों में ही लगाए रखना चाहिए और जहां तक बन सके। प्रत्येक काम को निष्काम और निःस्वार्थ भाव से करना चाहिए।

(१०) कुमारों को अपना जीवन उत्साह,पुरुषार्थ और साहसमय बनाना चाहिए। आलस्य, प्रमाद, भीरु और कायरता आदि जीवन की उन्नति के बाधक दुर्गुणों को त्याग कर निर्भयता, आत्म-विश्वास, स्वावलम्बन और आत्म-सम्मान की भावना मन में उत्पन्न करनी चाहिए।

(११) कुमारों को सदा सत्य, सरल और मधुर भाषण ही करना चाहिये। उन्हें वचन का पक्का, (दृढ़-प्रतिज्ञ) और सच्चा रहना चाहिए और यथा सम्भव मन, वचन तथा कर्म से एक ही रहना चाहिए।

(१२) कुमारों को परस्पर भ्रातृ-भावना तथा प्रेम बढ़ाना चाहिए। सबको अपने सदृश जानकर, इनके सम्बन्धियों जैसा व्यवहार करना चाहिए। अपने मनों को ईर्षा, द्वेष और दाह आदि दुर्गुणों से बचाकर शुद्ध, पवित्र और सहानुभूतिपूर्ण रखना चाहिए और यथा सम्भव किसी का अनहित चिन्तन नहीं करना चाहिए।

(१३) कुमारों को अपने से बड़ों की सेवा आदर और सम्मान करना चाहिए। उनकी आज्ञा माननी, उन्हें प्रसन्न तथा सुखी रखना चाहिए। इससे कुमारों की विद्या, आयु, यश और बल बढ़ेंगे।

(१४) कुमारों को असंयम, विलासिता अनियमता, उच्छृंखलता का त्याग कर देना चाहिए और अपने को सदा देश, जाति और समाज के रचनात्मक कार्यों में लगा सेवा, परोपकार और लोकहित के काम को करते रहना चाहिए।

(१५) कुमारों को सच्चा नागरिक बनने के लिए आवश्यक है कि कुमार अपनी शिक्षा समाप्त कर 'केवल नौकरी' के पीछे ही मारे मारे न फिरें, प्रत्युत ग्रामों में जा जाकर ग्रामीण जनता की सेवा कर उनकी स्थिति सुधारें।

(१६) कुमारों को ऊंचे दरजे की शिक्षा पाकर "दहेज" में विपुल राशि या दूसरे के धन द्वारा विलासिता का जीवन व्यतीत करना अपना ध्येय नहीं बनाना चाहिए।

(१७) कुमारों को अपने जीवन में "वित्त" की अपेक्षा "वृत्त" की जैसे भी हो सके सदा रक्षा करनी चाहिए। एक चरित्रवान व्यक्ति लाखों चरित्रहीन लखपतियों से भी अच्छा होता है। अतः कुमारों को अपने बड़ों के जीवन का सदा पाठ करते हुए सदा उनके पदचिह्नों पर आचरण करना चाहिए। तथा पुराने शिष्टाचार संस्कृति और शील को भुलाना नहीं प्रत्युत अपनाना चाहिए।

मुझे आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि कुमार उपरोक्त कर्तव्यों को अपनाकर उनका पालन कर अपने जीवनों को सर्वांगपूर्ण और सुन्दर बना, अपना, अपने देश का और अपनी जाति का यश बढ़ा कर, कल्याण करेंगे।

विवाह का काल और आदर्श

श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार,
एम. ए., एल. टी.
डी. वी. कालेज, गोरखपुर

विवाह का उद्देश्य उत्तम पुत्र या सन्तान उत्पन्न करना है। उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिए स्वास्थ्य, बल और ज्ञान तीनों की आवश्यकता है। विवाह के वैदिक आदर्श बतलाने के लिए ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त ८५ मन्त्र ४५ में बतलाया है :—

इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु। दशास्यां पुत्राना-धेहि पतिमेकादशं कृधि।

यह मन्त्र बतलाता है कि 'इन्द्र, मीढ्व' अर्थात् वीर्यसिंचनमें समर्थ अर्थात् ब्रह्मचारी तथा परिवार के पोषणार्थ धन का स्वामी ही विवाह करे और 'सुपुत्र' उत्पन्न करे। संसार में अनेक कुपुत्रों की उत्पत्ति करने से कोई लाभ नहीं। सब पूर्वीय और पश्चिमी चिकित्सक इस विषय में बहुत मतभेद नही रखते कि साधारणतया पुरुष पच्चीस वर्ष की आयु में सन्तान उत्पन्न करने की योग्यता प्राप्त कर लेता है और इस दशा में पचास वर्ष की आयु तक अपने स्वास्थ्य को न बिगाड़ता हुआ सन्तान उत्पन्न कर सकता है। इसी प्रकार स्त्री सोलह वर्ष में सन्तान उत्पन्न करने की योग्यता प्राप्त कर लेती है। जब तक स्त्री बालक को दुग्ध पान कराती है तब तक पुरुषों को ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहिए अन्यथा स्त्री का स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा और पुष्ट तथा स्वस्थ्य सन्तान न उत्पन्न होगी और नहीं सन्तानों की संख्या नियमित होगी। अब यह बात विचारिए कि एक हृष्ट-पुष्ट पुरुष एक स्त्रीसे विवाह करता है और उस समय उसकी अवस्था पच्चीस वर्ष की है। उसकी स्त्री गर्भवती होकर एक सन्तान को जन्म देती है और दसवें मास एक पुत्र को जन्म देती है, दस मास तक वह स्त्री बालक को दूध पिलाती है, दूध छुड़ाने के बाद दस मास तक वह अपना स्वास्थ्य और बल स्थिर करने के लिए व्यतीत करती है और द्वितीय गर्भाधान ढाई वर्ष बाद होता है और इस प्रकार २५ वर्ष में अधिक से अधिक दस बालक उत्तमता से उत्पन्न हो सकते हैं। परन्तु यह आदर्श बिना संयम के सम्भव नहीं। मनु महाराज ने गृहस्थाश्रम में रहने वाले व्यक्तियों को भी संयमी होने का उपदेश देते हुए कहा है—

ऋतु कालाभिगामी स्यात्स्वदार-निरतः सदा। पर्ववर्जं व्रजेच्चैनां तद्व्रतो रतिकाम्यया।

मनु० ३-४५

निन्द्यास्वष्टासु चान्यासु स्त्रियो रात्रिषु वर्जयन्। ब्रह्मचार्येव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन्।

मनु० अ० ३ श्लोक ५०

यद्यपि यहां पर दस सन्तान तक उत्पन्न करने का वेद में आदेश दिया गया है परन्तु वास्तव में माता-पिता को यह देख लेना चाहिए कि वे कितने बालकों का पालन पोषण कर सकेंगे, कितने बच्चों का विकास कर सकेंगे, क्योंकि इसके आगे वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम ही है। मृत्यु तक बच्चों को पालने में खिलाते रहना ही नही है और वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करते ही बच्चे इस योग्य होने चाहिए कि वे घर की जिम्मेदारी संभाल सकें। मान लीजिए कि ५०वें या ६०वें वर्ष आपको वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करना है तो इसका क्या अर्थ हुआ? इसका अर्थ यह है कि ६० वर्ष की आयु में हमारा सबसे छोटा लड़का २०-२५ वर्ष का होगा। उसकी शिक्षा हो जानी चाहिए। उसका पूरा पूरा शारीरिक विकास हो हो जाना चाहिए। अब उसे माता पिता के धन की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार सब कार्य होने चाहिए। अर्थात् ४०-५० की आयु तक माता पिता को निवृत्तकाम हो जाना चाहिए। ४०-५० वर्ष तक भी प्रमाण से ही सन्तान उत्पन्न करनी चाहिए। ८-१० बच्चे होना कोई बुरा नहीं। लेकिन केवल बच्चे पैदा करना ही एक काम नहीं। हमें उन बच्चों की सम्पूर्ण व्यवस्था करने में भी समर्थ होना चाहिए। इस प्रकार गृहस्थाश्रम में संयम, त्याग, और वासना विकार को सीमित करने तथा प्रेम और सहयोग आदि गुणों की शिक्षा मिलती है।

अब प्रश्न होता है कि विवाह कब होना चाहिए? साधारणतया विवाह की आयु २५ वर्ष लड़के तथा १६ वर्ष लड़की की आयु मानी गई है। परन्तु आयु का यह विधान उचित होते हुए भी विवाह कब हो इस विषय में वेदों में आया है:—

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्। अनड्वान् ब्रह्मचर्येणाश्वो घासं जिगीर्षति।

अ० ११-५-१८

ब्रह्मचारिणी कन्या ब्रह्मचर्य संपन्न युवा पति को प्राप्त करती है। ब्रह्मचर्य बल से सपन्न होने पर ही वृषभ और अश्वसदृश पुरुष भोग्य पदार्थों का भोग कर सकते है। आगे ऋग्वेद मंडल १० सूक्त १८३ में वर को संबोधित करते हुए कहा गया है:—

अपश्यत्वा मनसा चेकितान तपसो जातम् तपसो विभूतम्। इह प्रजां इह रयिरराणः प्रजायस्व प्रजया पुत्रकाम्।।१

हे वर, ज्ञानयुक्त ब्रह्मचर्यरूपी तप से उत्पन्न अर्थात् ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्यव्रत द्वारा शरीर सौन्दर्यादि विभूतिमान् तुझको मैंने अपने मन से देख लिया है। तुझे प्राप्त करने की मेरी इच्छा है। हे सन्तान चाहने वाले वर! इस लोक में सन्तान और धन का आनन्द लेता हुआ सन्तान रूप में पैदा हो अर्थात् सन्तानोत्पत्ति कर।

वधू को संबोधित कर कहा गया है:—

अपश्यत्वा मनसा दीध्यानां स्वायां तनू ऋत्व्ये नाधमानाम्। उपमामुच्चा युवतिर्बभूयाः। प्रजायस्व प्रजया पुत्रकामे!

अर्थात् हे वधू! सौन्दर्य युक्त अपने शरीर का ऋतु कालीन संयोग चाहती हुई तुझको मैं मन से चाहता हूं। हे सन्तान चाहने वाली वधू! अत्यन्त तरुणावस्था सम्पन्न तू मुझे विवाह द्वारा प्राप्त कर और सन्तानोत्पत्ति कर।

अथर्ववेद ११-१-१४ मन्त्र में कहा गया है:—

एमा अगुर्योषितः शुम्भमाना उत्तिष्ठ नारि तवसं रभस्व सुपत्नी पत्या प्रजया, प्रजावत्या त्वागन् यज्ञः प्रतिकुम्भं गृभाय।

अर्थात् ये सब शुभ गुणों से युक्त स्त्रियां आ गई हैं। हे नारि! तू उठ कर खड़ी हो बल प्राप्त कर, पति के साथ रह कर उत्तम पत्नी बन कर शुभ सन्तान से उत्तम सन्तान वाली होकर रह। यह शुद्ध यज्ञ-गृहस्थ व्यवहार का शुभ कर्म तेरे पास आ गया है, इसलिए घड़ा ले और शुद्ध का कार्य कर।

विवाह से पूर्व स्त्री को आलस्य छोड़ कर शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक बल प्राप्त करना चाहिए। इसके बाद पातिव्रत्य धर्म का पालन करते हुए उत्तम सन्तान उत्पन्न करे उनके शरीर मन बुद्धि और आत्मा का बल बढ़ाने योग्य उत्तम शिक्षा द्वारा उनको उत्तम शिक्षित करके उत्तम सन्तान वाली बने। अपने घर को आदर्श गृह बनावे और स्त्रियों की उन्नति में सहायक हों।

विवाह का आदर्श वेद के एक मन्त्र में बड़े सुन्दर शब्दों में बताया गया है। मन्त्र है:—

इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्। क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ।

अर्थात् तुम दोनों यहां ही रहो। अलग विभक्त मत होओ। पुत्रों और नातियों के साथ खेलते हुए, अपने उत्तम घर में आनन्दित होते हुए सब आयु प्राप्त करो। स्त्री और पुरुष एकत्र रहें। कभी विभक्त अर्थात् विवाह सम्बन्ध तोड़ कर एक दूसरे को त्याग न दें। अपने घर में सुख अनुभव करने योग्य परिस्थिति बना कर अपने बाल बच्चों के साथ आनन्द से रहते हुए ही सम्पूर्ण आयु प्राप्त करके दीर्घ आयु तक जीवित रहें।

एक दूसरे मन्त्र में पति-पत्नी के सम्बन्ध और आदर्श को उपमाओं से बताते हुए कहा गया है:—

अमोहमस्मि सा त्वं सामाहमस्म्यृक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्। ताविह संभवाव प्रजामा जनयावहै।।

अथर्व० १४।२।७१।।

अर्थात् वर कहता है "मैं ज्ञानी हूं तू भी वैसी ही ज्ञानी है। मैं साम मन्त्र हूं और तू ऋग्वेद मन्त्र है, मैं द्युलोक और तू पृथ्वी लोक है। ऐसे हम दोनों यहां मिलें और प्रजा उत्पन्न करें।

कितना उच्च है गृहस्थाश्रम का आदर्श। आज तो हमारा जीवन वासनामय हो रहा है। विषयों का रस लेनें की शक्ति हो, न हो, चारों

(शेष पृष्ठ १० पर)

(पृष्ठ १ का शेष)

तरफ विषयों की बाढ़ देख कर मन नहीं मानता। गृहस्थाश्रम वासना का आश्रम बन गया है। पुरुष बूढ़े हो जाते हैं तो कुश्ते खाने लगते हैं, बाल सफेद हो जाते हैं तो खिजाब मलने लगते हैं। अपने सफेद बालों को देखकर कविवर केशव की भांति चिन्ता होने लगती है और वे कहने लगते हैं:—

'केशव' केसन अस करि
अरिहु न अस कराहि।
चन्द्रवदनि मृगलोचनी
बाबा कहि कहि जाहि॥

इसी प्रकार स्त्रियों के झुर्रियां पड़ जाती हैं तो भी पाउडर मला करती हैं, चालीस की हों तो तीस की बताती हैं शक्ति नहीं रहती, वासना रह जाती है। परिणाम यह होता है कि बहुत समय तक और जल्दी जल्दी सन्तानें होने लगती हैं। विवाह का आदर्श वासना होने से और वासना की पूर्ति को ध्यान मे रख कर गर्भ-नाशक औषधियां, लूप और नसबन्दी की प्रथा प्रचलित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। यूरोप और अमेरिका के आदर्श भारत में पनपाए जा रहे हैं। ऐसे समय में हमारे राष्ट्र की सरकार जनता को अन्न न देने पर उसके मुख को गलत दिशा पर मोड़ कर परिवार नियोजन का प्रचार कर रही है। सम्भव है इसका उद्देश्य अत्यन्त पवित्र, कल्याणकारी हो पर अब यह तथ्य स्पष्ट हो चुका है कि इस योजना का प्रचार जिस रूप में किया जा रहा है, उससे भारतीय समाज की समस्त मान्यतायें, परम्परायें और नैतिकता उद्ध्वस्त दिखाई देने लगी हैं। विचारशील व्यक्तियों के आगे यह बहुत बड़ा 'प्रश्न चिह्न' उपस्थित हो गया है कि यह योजना सर्वनाश का कारण तो नहीं हो जायगी? इससे भारतीय संस्कृति मटियामेट तो नहीं हो जायगी? परिवार नियोजन का प्रचार केवल विवाहितों तक सीमित रहता तो भी कोई बात थी। आज तो अविवाहित और अपरिपक्व के तरुण और तरुणियों के हाथ भी यह सरकारी प्रचार साहित्य पहुंचता है। केवल साहित्य नहीं, जेली टेबलेट और कण्डोम, लूप आदि के साधन भी वितरित किये जाते हैं।

फलतः केवल उत्सुकतावश तरुण और तरुणी इसका व्यवहार करने को लालायित हो उठते हैं। कठोर सामाजिक बन्धन और वैदिक तथा भारतीय आदर्शों के कारण जो पवित्रता बनी रहती थी, वह गर्भ धारण का भय दूर हो जाने से समाप्त हो रही है। एक ओर जहां गृहस्थों में सर्वेक्षण से पता चला है कि इन उपायो से रोगों की वृद्धि हुई है वहां सर्वेक्षण से यह भी पता चला है कि यूरोप अमेरिका में इन साधनों के ग्राहक १० प्रतिशतक लड़कियां हैं जो कालेजों की छात्राएं हैं। इसे यदि मैं यह कहूं कि इन उपायों का प्रयोग 'बन्दर के हाथ में उस्तुरा' देने जैसी बात हो रही है तो अनुचित न होगा। इसलिए स्वामी दयानन्द जी महाराज के शब्दों में सत्यार्थप्रकाश के आधार पर हम कहेंगे कि आज की सब से बड़ी आवश्यकता है 'संयम' का प्रचार। अर्थात् आज भोग विलास के साधनों और सामग्रियों पर रोक लगा कर 'संयम' का वातावरण विद्यालयों और कालेजों में लाना होगा और गृहस्थाश्रम में आने वालों को हमें यह कह देना पड़ेगा कि:—

वेदानधीत्य वेदौ वा
वेदं वापि यथाक्रमम्।
'अविलुप्त ब्रह्मचर्यो'
गृहस्थाश्रममाविशेत्॥

अर्थात् जब यथावत् ब्रह्मचर्य आश्रम मे आचार्यानुकूल वर्तकर, धर्म से चारों वेद, वा दो अथवा एक वेद को सांगोपांग पढ कर, जिसका ब्रह्मचर्य खण्डित न हो वह पुरुष या स्त्री गृहस्थाश्रम में प्रवेश करे।

स्वामी जी महाराज ने जगह-जगह सत्यार्थप्रकाश में गृहस्थादि सब के लिए ब्रह्मचर्य का महत्व बतलाया। मनुस्मृति के आधार पर उसकी महत्ता का प्रतिपादन किया है। याज्ञवल्क्य ऋषि ने भी गृहस्थ भी ब्रह्मचारी हो सकता है, इसका प्रतिपादन किया है। उन्होंने लिखा है:—

ऋतावती स्वदारेषु
संगतिर्या विधानतः।
ब्रह्मचर्यं तदेवोक्तं
गृहस्थाश्रमवासिनाम्॥

अर्थात् ऋतुकाल में अपनी धर्मपत्नी से शास्त्र आदेशानुसार केवल सन्तानार्थ समागम करने वाला पुरुष गृहस्थ में रहता हुआ भी ब्रह्मचारी है।

गृहस्थी को ब्रह्मचारी होना चाहिये इसके विषय में सुकरात और उसके एक शिष्य का संवाद कितना महत्वपूर्ण है, देखिये:—

शिष्य—पुरुष को स्त्री प्रसंग कितनी बार करना ठीक है?

सुकरात—जीवन भर में केवल एक बार।

शिष्य—यदि इससे तृप्ति न हो सके?

सुकरात—तो प्रतिवर्ष एक बार।

शिष्य—यदि इससे भी सन्तुष्टि न हो तो?

सुकरात- फिर महीने में एक बार।

शिष्य—इससे भी मन न भरे तो?

सुकरात—तो महीने में दो बार कर ले परन्तु पहले कफन लाकर घर में रख ले।

इसीलिये स्वामी जी ने भी गृहस्थाश्रम में भी संयम और ब्रह्मचर्य की आवश्यकता अनुभव करते हुए मनु महाराज के उद्धरण देते हुए लिखा है:—

ऋतुकालाभिगामी स्या-
त्स्वदारनिरतः सदा।
ब्रह्मचार्य्येव भवति
यत्र तत्राश्रमे वसन्॥

अर्थात् मर्यादा का पालन करते हुए यदि हम गृहस्थाश्रम में रहेंगे तो हम ब्रह्मचारी ही बनकर रहेंगे।

(पृष्ठ ७ का शेष)

बहुत वेदम से तथा शीघ्रता से घोषित किया गया तथा रोष के दिनों में कोई नेता पंजाब न पधारे। सब से दुखदायी बात यह रही कि संत जी ने पीड़ित जनता या पकड़ धकड़ के विरोध में १ शब्द भी न कहा तथा बहुत से निर्दोषी होते हुए भी कष्ट के भागी बने। कई नगरों से सूचना मिली कि कई साम्प्रदायिक लोगों ने हलवा, लड्डू तथा पलाओं बांट कर जलती पर तेल का कार्य किया एवं भड़काने वालों को सरकार ने कुछ नहीं कहा। संत जी अपने को हिन्दु सिख एकता का पुजारी कहते हैं अवश्य किंतु इन बातोंपर रोष प्रकट करना चाहिए था। सरकार इस पकड़ धकड़ में न केवल विद्यार्थियों को ही पकड़ बैठी अपितु जनता पर काबू रखने वाले नेताओं को भी जेल में डाल दिया।

आर्यसमाज का भला इसी में है कि अब एक हो जायें, जो लोग पंजाबी सूबा में सिखों की बहुत संख्या का विरोध करते हैं वह गलती करते हैं। पंजाबी सूबा वर्तमान पंजाबी क्षेत्र में नरड़, होशियारपुर पठानकोट, अबोहर फाजिलका आदि तहसीलें निकल कर बनना चाहिये। जितनी हिन्दुओं की संख्या कम होगी उतना ही सुसंगठित होकर वह साम्प्रदायिक वृति प्रगट कर सकेंगे। जो सुविधाएं सिखों को पंजाब में ३२ प्रतिशत पर मिल रही हैं वह सुविधाएं हिन्दुओं को पंजाबी सूबा में तभी मिलेंगी अगर हिन्दु अल्प संख्या में होंगे इसका दूसरा लाभ यह होगा कि अकालियों को साम्प्रदायिकता की ऐनक छोड़ कर सबकोसाथ लेकर चलना पड़ेगा। अधिक से अधिक क्षेत्र हरियाणा के साथ होने से राष्ट्रीय तत्वों को बढ़ौतरी मिलेगी। अकाली यह याद रखेंगे कि भाषाई प्रान्तों में जो स्तर हिन्दी को है उसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि महाराष्ट्र में तो लिपि देवनागरी है पर गुजरात तथा दूसरे प्रदेशों में देवनागरी लिपि की मांग दिनो दिन बढ़ रही है। जिन गुजरातियों ने लड़ लड़ कर गुजरात प्रदेश बनाया था वही अब जान गए हैं कि गुजराती लिपि में कार्य नहीं चल सकता तथा खुल्लमखुल्ला देवनागरी की ओर बढ़ रहे हैं। हैं। दूर दक्षिण में भी ऐसा वातावरण देखा जा सकता है। लोग जब एक दूसरे की भाषा नहीं समझ सकते तो अंग्रेजी की बजाय हिन्दी का प्रयोग करते हैं। महा विश्वविद्यालयों में लिपि को देवनागरी बनाने के लिये प्रयत्न चलते ही रहते हैं। लाखों व्यक्ति प्रति वर्ष हिन्दी की परीक्षाओं में अपनी इच्छा से बैठते हैं। पंजाबी सूबा का निराला ढंग अगर छोटे से छोटे प्रदेश में चलेगा तो कुछ वर्षों में कूप मण्डूक को होश आने लगेगी। उनका भारत से दूर जाने का तर्क मैंने कभी नहीं माना। तथा नहीं यह होगा आर्य समाज का नाद होना चाहिये कि पंजाबी सूबे को छोटे से छोटा करो।

जो तीनों प्रदेशों में सांझे तत्वों की बात है वह भी कुछ नहीं। सांझे तत्वों का लाभ तभी हो सकता है अगर अकाली पंजाबी की लिपि में स्वतन्त्रता दें। अगर ऐसा अकाली करते हैं कि उनको हिन्दी गुरमुखी लिपि में लिखने की छूट हो तो देनी चाहिये। कौन उन पर लिपि ठोंस सकता है। सांझे तत्वों से अलावे बहुत खर्च तथा भ्रष्टाचार के सिवाय हाई कोर्ट के कोई बात बन न सकेगी। पंजाबी सूबा बनाना है तो सिक्खों की बहु संख्या से छोटा सूबा बनाना ही ठीक रहेगा तथा आर्य समाज को एक होकर यही मांग देना चाहिये।

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

खाद्य-समस्या

इस समय देश को जैसी विकट खाद्य-समस्या का सामना करना पड़ रहा है वह कई दृष्टियों से अद्भुत है। उड़ीसा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि कई राज्यों के कुछ हिस्सों में लगभग भुखमरी की सी स्थिति पैदा हो गई है। कोई व्यक्ति भूख से मरा है या कुपोषण से मरा है, यह राजनीतिज्ञों की शाब्दिक कलाबाजी मात्र है, उससे तथ्य में अन्तर नहीं आता। अमेरिका से काफी मात्रा में अनाज आ रहा है, लेकिन फिर भी अकाल की विभीषिका कम होती नजर नहीं आती। कई विदेशी अखबार तो यहां तक कहने लगे हैं कि भारत में जैसा भयंकर अकाल इस बार पड़ रहा है वैसा इतिहास में आज तक कभी नहीं पड़ा था। हम सन् ४०-४१ के उस भयंकर अकाल को भूले नहीं हैं जिसमें अकेले बंगाल में ही ३५ लाख व्यक्ति अन्न के अभाव में एड़ियां-रगड़-रगड़ कर मर गए थे। शायद ब्रिटिश-अखबार नवीन ब्रिटिश-साम्राज्य को कलंकित करने वाली उस घटना को कम करके दिखाने के लिए ही इस समय के अकाल को बढ़ा चढ़ा कर बताने का प्रयत्न कर रहे हैं। यों इस समय चावल का अभाव सारे संसार में ही है और जितनी उसकी मांग है, वर्तमान पैदावार के द्वारा उसकी पूर्ति नहीं हो पाती। इसीलिए भारत सरकार जनता से बार-बार यह अपील करती है कि जो लोग केवल चावल खाने के आदी हैं वे चावल के साथ-साथ गेहूं भी खाने का अभ्यास डालें। इस समय विश्व के बाजार में चावल जितना दुर्लभ है उतना गेहूं नहीं।

विदेशी अखबारों के भारत में अकाल सम्बन्धी वर्णन भले ही अतिरंजित हों, परन्तु हमारी यह निश्चित धारणा है कि आज का यह खाद्य-संकट मनुष्य-कृत है, प्रकृति-कृत नहीं। बंगाल का अकाल भी ऐसे मनुष्य-कृत ही था। उस समय अंग्रेजों को डर था कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में यदि आजाद-हिन्द फौज बर्मा से असम के बीहड़ जंगलों को पार करती हुई बंगाल तक पहुंच गई तो नेताजी के प्रति प्रेम के कारण सारा बंगाल आजाद-हिन्द सेना का साथ देगा और तब अंग्रेजों का वहां टिकना मुश्किल हो जायगा। आजाद-हिन्दी फौज को किसी भी तरह अन्न-धन-जन आदि की सहायता न मिल सके इसलिए अंग्रेजों ने बंगाल-स्थित अपने समस्त अन्न-भण्डार नष्ट कर दिए थे, या स्थानान्तरित कर दिए थे। स्वतन्त्र भारत की सरकार पर इस प्रकार की हृदय-हीनता का आरोप तो हम नहीं लगाते, किन्तु यह हम अवश्य समझते हैं कि वर्तमान अन्न संकट का मूल-कारण भारत सरकार की दुर्बुद्धि ही है। इसलिए यह अकाल भी मनुष्य-कृत ही है, प्राकृतिक नहीं।

खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए सरकार को क्या-क्या करना चाहिए था और क्या-क्या उसने नहीं किया, इसके विस्तार में जाने का यहां प्रसंग नहीं है। हम तो एक बड़ी मोटी बात कहते हैं कि इस समय देश में यदि एक करोड़ एकड़ अतिरिक्त जमीन पर खेती की व्यवस्था हो जाए तो उससे लगभग सात करोड़ टन अन्न पैदा होगा और उतने से ही मांग और पूर्ति के बीच की रिक्तता भर जाएगी। हम पूछते हैं कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद से क्या नई जमीनें बिल्कुल नहीं तोड़ी गईं? क्या जंगल बिल्कुल साफ नहीं हुए। क्या बीहड़-इलाकों में भी खेती नहीं की जाने लगी? और यह अतिरिक्त जमीन क्या लाखों एकड़ तक नहीं पहुंचती? परन्तु इस अतिरिक्त जमीन में अनाज कहां पैदा हुआ उसमें तो बोया गया गन्ना, कपास, तम्बाकू, चाय, काफी और अफीम। कुछ मन्त्रियों तक ने बड़े परिमाण में जमीनें खरीद कर उनमें अंगूरों की खेती प्रारम्भ की है। अंगूरों की खेती से एक विशिष्ट वर्ग की मद्य-पान की आवश्यकता तो शायद पूरी हो जाए परन्तु जनता की अनाज की आवश्यकता पूरी नहीं हो सकती।

कहा जा सकता है कि चीनी, कपड़ा, चाय और तम्बाकू ये सब विदेशी-मुद्रा की प्राप्ति के साधन हैं और विदेशी-मुद्रा का भी देश में उतना ही बड़ा संकट है। परन्तु एक ओर तम्बाकू, चीनी और चाय का निर्यात करके विदेशी-मुद्रा कमाना और फिर उसे अपनी विदेश-यात्राओं में या बाहर से अनाज के आयात में खर्च कर देना-यह कौन सी बुद्धिमत्ता हुई! स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद से इन चीजों की पैदावार में जिस अनुपात से वृद्धि हुई, अनाज की पैदावार में इस अनुपात से वृद्धि क्यों नहीं हुई? इसका उत्तर क्या है? सरकार ने जितना प्रोत्साहन और ध्यान इन नकद फसलों (Cash crops) को बढ़ाने पर दिया है उतना अनाज की पैदावार बढाने पर नहीं दिया। हम इसी को दुर्बुद्धि कहते हैं।

उदाहरण के रूप में उत्तर-प्रदेश को ही ले लो। आजादी से पहले जितनी चीनी मिलें वहां थीं अब उससे लगभग चौगुनी हैं। क्या जब देश में चीनी का इतना उत्पादन नहीं था तब देशवासी कुछ अधिक दुखी थे? चीनी का इतना उत्पादन बढ़ने से क्या जनता को चीनी कुछ सस्ती मिलने लग गई? तम्बाकू, चाय, काफी, अफीम और कपास की भी वही कहानी है। दिन-प्रतिदिन मादक-द्रव्यों का सेवन बढ़ता जाता है, जिससे जनता का नैतिक पतन होता है, किन्तु सरकार विदेशी-मुद्रा और आबकारी-कर प्रलोभन में इन चीजों की पैदावार को प्रोत्साहन देने से विरत नहीं होती। यदि इन चीजों के स्थान पर अनाज पैदा किया जाए तो तीहरा लाभ होगा, जनता मादक-द्रव्यों के सेवन से बचेगी, देश का खाद्य-संकट भी दूर होगा और लाखों पशुओं के लिए चारा भी उपलब्ध होगा।

मुख्य-प्रयोजन होना चाहिए देश को आत्म-निर्भरता की ओर ले जाना, न कि विलासिता की ओर। चाय, तम्बाकू और चीनी-ये आधुनिक जीवन के अंग बना दिए गए हैं जिनसे जनता का स्वास्थ्य भी खराब होता है और अनावश्यक विलासिता भी बढ़ती है। महात्मा गांधी चीनी को 'सफेद विष (Whlte paison) यों ही नहीं कहा करते थे, उसके पीछे उनका सूक्ष्म चिन्तन था।

अब भी स्थिति बहुत अधिक नहीं बिगड़ी है। यदि सरकार सिर्फ यह घोषणा करदे कि गन्ना, कपास, तम्बाकू और चाय के स्थान पर जो कोई किसान अनाज बोएगा, उसको सिंचाई के लिए पानी मुफ्त मिलेगा, तो हम समझते हैं कि अनेक किसान उक्त नकद फसलों के प्रलोभन को छोड़कर अनाज बोने की ओर प्रवृत्त होजाएंगे। इस समय तो स्थिति ऐसी बना दी गई है कि कोई भी समर्थ किसान गेहूं बोना पसन्द नहीं करता, उसके बदले गन्ना बोता है, क्योंकि उसे उसमें प्रत्यक्ष-लाभ नजर आता है। यदि मादक द्रव्यों के स्थान पर भी अनाज बोने वालों के लिए निःशुल्क पानी की व्यवस्था कर दी जाए तो सरल-प्रकृति के भारतीय किसान उतने मात्र से सन्तुष्ट हो जाएंगे, फिर उनको सरकारी ऋणों की या अन्य सुविधाओं की जरूरत भी महसूस नहीं होगी।

खाद्य समस्या का असली मूल यही दुर्बुद्धि या उल्टी विचारधारा है, जिसके कारण मादक द्रव्यों की पैदावार बढ़ाने के लिए तो खूब प्रोत्साहन दिया जाता है और बाकी किसानों से उनको बिना कोई प्रोत्साहन दिये अनाज की पैदावार बढ़ाकर अपनी देश-भक्ति का प्रमाण देने को कहा जाता है। अनाज बोने वाले तो पहले से ही देशभक्त हैं, जबकि अनाज से भिन्न नकद फसलों को बोने वाले किसानों की नजर देश पर उतनी नहीं जितनी नकद लाभ पर है। यदि देश में अनाज की पैदावार बढानी है और खाद्य समस्या को हल करना है तो इस नकद लाभ वाली मनोवृत्ति पर अंकुश लगाना होगा। यदि अनाज बोने वाले किसान भी आज यह फैसला करलें कि आगे से हम गेहूं या चावल के बजाय गन्ने या मादक द्रव्यों की ही खेती करेंगे तो उन्हें उससे रोकने का उचित तर्क क्या है! ऐसी हालत में निश्चय ही देश को कल के बजाय आज ही भूखा मरना पड़ेगा सही दिशा में प्रोत्साहन का अभाव और गलत दिशा मे प्रोत्साहन का नाम ही दुर्बुद्धि है आज अंगूर की खेती करने वाले मन्त्री नहीं, अनाज की खेती करने वाले मन्त्री चाहिएं।

आर्यसमाज परिचयांक

पिछले कई अंकों से आर्यसमाज परिचयांक के सम्बन्ध में हम लगातार विज्ञापन देते आ रहे हैं। भारत और भारत के बाहर समस्त आर्य समाजों की संख्या कुल मिलाकर लगभग चार हजार है। सब आर्यसमाजों के सदस्यों की संख्या और आर्य समाज के कार्य के लिए किए जाने वाले व्यय की राशि लाखों तक पहुंचती है। इन सब आर्यसमाजों के सचित्र परिचय की योजना हमने उपस्थित की तो आर्य जगत् ने इसका अभूतपूर्व स्वागत किया। यह अपने आप मे एक विशाल-योजना थी और इस अंक के प्रकाशन पर भी लगभग तीस हजार रुपया व्यय होना था। हमने समाजों के मन्त्रियों से प्रार्थना की थी

(शेष १४ पृष्ठ पर)

सामयिक-चर्चा

आणविक युद्ध भूमि

ऐटम बम से प्रायः यह समझा जाता है कि वह उस प्रकार का होना चाहिए जिस प्रकार के बम ने हिरोशिमा और नागासाकी का विध्वंस किया था या वह लाखों मन भारी बमों में से होगा जिनमें से यदि ६ बम गिरा दिए जांय तो वे मार्ग में पड़ने वाली प्रत्येक चीज को विषैले बादलों से ढककर समस्त देश या महाद्वीप के वर्तमान तथा आगे आने वाले मानवों को नष्ट-भ्रष्ट कर सकते हैं।

हमारे पूर्व रक्षा मंत्री को इस प्रकार के बमों से इतनी बड़ी चिढ़ है वे बहुधा यह कहते रहते हैं कि एटम बम रक्षा या आक्रमण का हथियार नहीं अपितु विनाश की विभीषिका है अतः युद्ध के लिए आणविक शक्ति का प्रयोग करने की बात को हम कभी भी स्वीकार नहीं कर सकते।

इस अस्त्र के विकास से परिचित व्यक्ति यह मानेंगे कि यह विकास नितान्त चामत्कारिक रहा है। १ से १०० किलोटन (१००० टन से १लाख टन तक) तक के अणु बम बनाए जा चुके हैं। वे न केवल हवाई जहाजों से ही अपितु आणविक तोपों, राकेटों और अन्यान्य अस्त्रों से गिराये जा सकते हैं। जापान में अणु बम का प्रयोग मोर्चेबन्दी से सम्बद्ध था और इसका लक्ष्य औद्योगिक ठिकाने था। परन्तु अब सावधानतापूर्वक इसका प्रयोग युद्ध भूमि मे किया जा सकता है।

जिस प्रकार द्वितीय महा समर मे कम घातक आणविक अस्त्रों का प्रयोग युद्ध रत विरोधी सैनिको पर किया गया था उसी प्रकार अब किया जा सकता है। इसका अर्थ होगा कुछ अवस्थाओं में आणविक आयुधो का सीमित प्रयोग, दूसरे शब्दों में प्रयोग मे आने वाले आयुधों की संख्या तो बड़ी हो सकती है परन्तु उनका प्रकार एव प्रभाव परिमित होगा।

इस प्रकार नियंत्रित आणविक आयुधों के युद्ध से कस्बों और नगरों का विनाश न हो सकेगा और वे अस्त्र रण भूमि तक सीमित रहेंगे। इन अस्त्रों से नियमित सेनाए अन्य अस्त्रों की तरह सज्जित की जा सकती हैं।

इन आयुधों के प्रयोग का क्या प्रभाव होगा इसका दिग्दर्शन विशेषज्ञों ने पूर्व से ही कराने की चेष्टा की है। ये अस्त्र भयंकर सिद्ध न होंगे। हा इनके विनाश की लीला रण भूमि तक ही सीमित रहेगी। इनसे मरने वालों की संख्या तो बहुत बड़ी बड़ी हो सकती है परन्तु इन आयुधों के पूरे वेग वा शक्ति से बचने के उपाय भी किए जा सकते हैं। यदि ये उपाय तत्काल काम में ले लिए जायगे तो धमाके और त्रास व्यापक रूप धारण न कर पायेंगे। यदि अच्छी चिकित्सा कर ली गई तो प्रभाव बहुत कम हो जायगा।

सामान्यतः कम मारके अणु बमों के विस्फोट की चमक से अधता पैदा होगी। सैनिकों को अभेद्य तत्वों से लैस किया जाना सभव होगा जिसके कारण आणविक चमक आंखों की ज्योति पर प्रभाव डाले बिना सहज ही गुजर जायगी। आग से न जलने वाला मुंह पर लगाने का नकाब भी दिया जा सकता है। गर्म आणविक रश्मियों के प्रभाव से बचाने के लिए शरीर को पूर्णतया ढक लेने की युद्ध की पोशाक की व्यवस्था भी की जा सकती है। आणविक आयुधों का निर्माण करने वाले प्रत्येक देश मे सैनिकों की रक्षा के लिए बड़े-बड़े अनुसंधान किए जा रहे हैं। कुछ देश भूमि में बहुत गहरी खाइयों के खोदे जाने पर विचार कर रहे हैं क्योंकि खाइयों मे शरण ले लेने से गर्मी और चमक से रक्षा हो सकती है। यह ठीक है युद्ध के समय सभी सैनिक भूमि गत नही हो सकते अतएव ऐसी बख्तरबन्द कारें भूमि पर चलेंगी जो परीक्षणों के पश्चात् चमक और गर्मी से बचाने वाली सिद्ध हो चुकी हैं।

सिद्धान्त रूप में ये बातें ठीक हो सकती हैं। प्रत्येक देश का यह मुख्य कर्त्तव्य है कि वह अपनी सशस्त्र सेवाओं को आणविक युद्ध का अभ्यास कराएं जिससे कि जब आणविक युद्ध उनके सिर पर आ जाय तो वे भौंचक्के न रह जायें।

इस प्रकार का प्रशिक्षण अधिक से अधिक वास्तविक होना चाहिए। युद्ध का टीका लगा कर उन पर आणविक आयुधों के प्रभाव का परीक्षण होना चाहिए। अणु बम के घोर विरोधियों से पूछना चाहिए कि यदि हम आणविक शक्ति का एक मात्र शान्ती के लिए प्रयोग करने की सौगन्द खालें तो हम अपने सैनिकों को किस प्रकार प्रशिक्षित कर सकते हैं।

अणु बमों के प्रभाव मे आणविक विस्फोटों का परीक्षण करना चाहिए और ऐसा करते हुए यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि जिन सैनिकों ने रक्षा के आवश्यक उपाय न किए हों उन पर उल्टियों और अधेपन का कम से कम प्रभाव हो।

जब यह ज्ञात हो जाय कि सीमित आणविक युद्ध की संभावना है भले ही वह सुदूर भविष्य में हो तो उत्तरदायित्व रखने वाले लोगों का कर्त्तव्य है कि वे सशस्त्र सेना को उनका प्रशिक्षण दें जिससे विषम स्थिति के उत्पन्न हो जाने पर वह प्रशिक्षण सहायक हो सके। अन्य देशों के द्वारा दिए हुए या घर पर बने हुए अस्त्रों का ढेर लगा लेना ही पर्याप्त नहीं है। युद्ध का प्रशिक्षण वास्तविकता को लक्ष्य में रखकर होना ही चाहिए।

राष्ट्र का कर्त्तव्य है कि वह यह देखे कि यदि हम पर आणविक युद्ध थोप दिया जाय तो हमारे सैनिक किंकर्त्तव्यविमूढ न बने रहे।

वातावरण की शुद्धि आवश्यक है

आर्यसमाज ने समाज के वातावरण को स्वस्थ और शुद्ध बनाने मे मूल्यवान योग दिया है। कर्मकांड से उसमें सात्विकता एव विशुद्ध धार्मिकता का पुट दिया गया। स्वाध्याय, मनन, चिंतन के द्वारा बौद्धिक स्तर ऊंचा किया गया। चरित्र की उच्चता से उसे पवित्र बनाया गया। निस्वार्थ सेवा एवं सार्वजनिक जीवन की उच्चता एव विशुद्धता से उसमे भव्य आकर्षण उत्पन्न किया गया। परन्तु आज स्थिति शोचनीय जान पड़ती और वातावरण दूषित देख पड़ता है। विद्या तथा चरित्र के मुकाबले में, धन को वरीयता मिल जाने तथा आत्म-प्रचार एवं आत्म स्वार्थ की सिद्धि के लिए शोषण करने वालों का बाहुल्य हो जाने से खराबी उत्पन्न हुई और वह झगड़ों एव टंटों का अखाड़ा बन गया। जिधर देखो उधर ही वातावरण में विकृति व्याप्त देख पड़ रही है। और उसकी शक्ति का अनावश्यक कार्यों में अपव्यय हो रहा है।

आवश्यकता इस बात की है कि वातावरण को स्वस्थ बनाया जाय। इसके लिए सबसे पहला कदम आर्य समाज के नाम पर आत्म संवर्द्धन करने वालों को निरुत्साहित किया जाय। और समाज को आगे और अपने को पीछे रखने वाले निष्ठावान कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहित किया जाय। अपने व्यक्तिगत जीवन को उच्च बनाने और स्वाध्याय के द्वारा बौद्धिक स्तर को ऊंचा रखने का प्राचीन युग के आर्यों ने जो सत प्रयास किया था वही हम सबको करना चाहिए। आर्य समाज की शक्ति का रचनात्मक कार्योंमेंअधिकाधिक लगाना आवश्यक है। आन्दोलनों का महत्व है परन्तु वे रचनात्मक कार्य के बलिदान पर न होने चाहिएं।

आर्यसमाज के लिए अनेक आवश्यक कार्य करनेहैं और जनता का मार्ग प्रदर्शन करना है। धर्म के नाम पर अधर्म की प्रतिष्ठा का क्रम अब द्रुत गति से जारी है। इस गति को बद कराना है। राजनीति ने और भोगवाद की संस्कृति ने समाज के वातावरण को बहुत ही खराब कर दिया है। इसमें भी सुधार लाना है परन्तु इसमें सुधार वही ला सकते हैं जो इसके योग्य हों अर्थात् जिनके जीवन और कार्य के कारण जिनकी वाणी में बल हो और कार्य के प्रति आकर्षण हो। कोरे उपदेश को लोग नहीं सुनते वे उपदेष्टा में क्रियात्मकता देखने के अभ्यस्त हो गए हैं।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

विधवा की रक्षा

आर्य समाज, जोगबनी ने एक २५ वर्षीय हिन्दू विधवा-कौशल्या देवी का मुसलिम गुण्डों के चंगुल से उद्धार किया। तथा नारायण साहू युवक के साथ विवाह संस्कार करा दिया।

आर्य समाज, खरड़ (अम्बाला)

के निर्वाचन मे श्री ला० सोहन लाल जी भाटी प्रधान, श्री निरंजन दास जी स्वतन्त्र मन्त्री एव श्री ला० सोहनलाल जी वर्मा चुने गए।

आर्य समाज, गोंडा

का ६४वां उत्सव बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्रीमती यशोदादेवी जी ठठेर ने ५०१) स्थानीय आर्य विद्यालय को दान दिया।

गोरक्षा आन्दोलन

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

गोवध बन्द हो

दीवानहाल दिल्ली की विराटसभा मे श्री स्वामी गवानन्द हरि जी महामण्डलेश्वर श्री स्वामी प्रकाशानन्द जी श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी के गो रक्षा के सम्बन्ध में ओजस्वी भाषण हुए। तदन्तर श्री वी० पी० जोशी एडवोकेट ने सरकार को गम्भीर चेतावनी देते हुए निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत किया :-

आर्य समाज दीवानहाल के तत्वावधान में दिल्ली के नागरिको की यह सभा सरकार से आग्रह करती है कि भारत विधान के लक्ष्यों के अनुसार तुरन्त ही गौवध सारे भारत मे कानूनन बन्द करे। यह सभा भारत के साधु वर्ग की आत्म समर्पण की प्रतिज्ञा की सराहना करती है और साधुवर्ग को आश्वासन दिलाती है कि जनता उनके साथ है और गो हत्या को भारत में बन्द कराने के लिए एक नहीं अगणित आहूति देने के लिए प्रस्तुत है। भारत सरकार को यह सभा चेतावनी देती है कि सन्यासी वर्ग की जीवन आहूति का दायित्व उन पर होगा और जनता सरकार को क्षमा नहीं करेगी।

गो-रक्षा

अखिल भारतीय आर्य सभा के सभापति श्री यशः पाल जी शास्त्री की अध्यक्षता में श्री धर्म चन्द जी श्रीवास्तव B. A. L L B. द्वारा निम्न लिखित प्रस्ताव पारित हुआ।

सर्वसम्मति से यह सभा प्रस्ताव पारित करती है कि सरकार को अखिल भारत वर्षीय स्तर पर गोरक्षा विधेयक को केन्द्रीय रूप देकर राष्ट्र को भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सबल करेगी, देश में स्वतंत्रता के पश्चात् १८ वर्ष से हो रही गोहत्या एक प्रकार से राष्ट्र के साथ विश्वास-घात और अपमान तो है ही साथ ही साथ देश की भुखमरी इसी पाप का दुष्परिणाम है। यह सभा स्वामी गावानन्द जी हरि तथा मुनि सुशील कुमार जैन की देखरेख में साधुओं के गोरक्षार्थ अनशन को मान्यता देती है तथा साथ ही साथ सरकार के द्वारा उनको अहिंसात्मक सत्याग्रह के बावजूद तिहाड़ जेल में बन्द करना समस्त राष्ट्र का अपमान समझती है। अत: आज तपोमूर्ति ब्रह्मचारी श्री यशःपाल जी की अध्यक्षता में यह प्रस्ताव पारित करते हुये सरकार को परामर्श देती है कि सरकार के कान अब भी बन्द रहते हैं तो ऐसी सरकार में हमे अविश्वास है। नम्र निवेदन है कि सरकार शीघ्र ही भारतीय संविधान का आदर करते हुये गोरक्षा विषयक केन्द्रीय कानून बना कर राष्ट्र को भुखमरी तथा उसके संस्कृति के साथ हो रहे अपमान को तत्काल मिटा दे।

भारत में गोहत्या बन्द करने की मांग

नई दिल्ली ७ मई

गत दिवस आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की एक बैठक में जिसमें राजधानी की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। एक प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुआ जिसमें तिहाड़ जेल में गोहत्या के विरोध मे अनशन कर रहे साधु महात्माओं से सरकार के दुर्व्यवहार पर घोर रोष प्रकट किया गया और शासन से प्रबल मांग की गई कि ब्रिटिश नौकर शाही के ये ढग छोड़े और साथही महात्माओं की उचित माग पर शीघ्र ध्यान दे।

प्रस्ताव में भारत सरकार से यह अनुरोध भी किया कि देश की कृषि प्रधान स्थिति तथा गौ माता के प्रति देश की सामान्य जनता की श्रद्धा को ध्यान में रखते हुए शीघ्रातिशीघ्र भारत से गौहत्या वैधानिक तौर पर बन्द करे।

अराष्ट्रीय प्रचार निरोध समिति हापुड़

के अधिकारी श्री ला० गगाशरण जी आलू वाले प्रधान संरक्षक, श्री अमोलकचन्द जी प्रधान, श्री डा० ओम्प्रकाश जी आर्य मन्त्री एवं श्री रघुबीरशरण जी भट्टेवाले कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज, पटना, सिटी

के निर्वाचन में श्री डा० किशोरी लाल जी प्रधान, श्री राजेन्द्रप्रसाद जी बी० ए० विशारद मन्त्री, तथा श्री बलूलाल जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज मलाही (चम्पारण)

विवाह

—ग्राम बबहरवा (चम्पारण) में श्री विश्व नाथ प्रसाद जी का विवाह वैदिक रित्यानुसार, प० रामदेव शर्मा विद्या वाचस्पति चम्पारण जिला आर्य सभा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

—मलाही निवासी श्री विष्णु-देव प्रसाद के सुपुत्र चि० गौरीशंकर प्रसाद का शुभ विवाह वीरगज (नेपाल) मे वैदिक रित्यानुसार श्रीपं० हरिप्रसाद शास्त्री, पं० वी० के० शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

—श्री शिवशकर प्रसाद जी भूत पूर्व प्रधान आर्यसमाज मलाही, की पुत्री गीता कुमारी का शुभ विवाह चि० राजेन्द्र प्रसाद के साथ, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान आचार्य पं० रामानन्दजी शास्त्री, प० वी के० शास्त्री एवं प० रामदेव शर्मा विद्यावाचस्पति के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

—श्री कमला प्रसाद जी की सुपुत्री का शुभ विवाह श्री अशर्फी प्रसाद से वैदिक रित्यानुसार श्री प० रामदेव जी शर्मा आचार्य भजनोप-देशक चम्पारण जिला आर्य सभा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

उपनयन

—श्री अवध प्रसाद जी एव श्री वासुदेव प्रसाद साइकिल स्टोर्स मोतिहारी के पांच बालकों का (श्री मोहन प्रसाद, श्री सोहन प्रसाद, रमेश प्रसाद, दिनेश प्रसाद एवं श्री बिनोद प्रसाद) उपनयन संस्कार वैदिक रित्यानुसार प० रामदेव शर्मा विद्यावाचस्पति उपदेशक चम्पारण जिला आर्य सभा के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ जिसका प्रभाव बहुत ही अच्छा रहा।

महत्वपूर्ण प्रस्ताव

मध्य-भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गुना में होने वाला यह बृहदधिवेशन इन्डियन स्कूल आफ इन्टर नेशनल स्टडीज में शोध कर रहे आर्य तथा मेधावी युवक श्री वेद प्रताप वैदिक, जो कि मध्य-भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा इन्दौर सम्भाग के उप प्रधान—श्री जगदीशप्रसाद जी वैदिक के सुपुत्र हैं, उनके राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्ष में उठाये गये दृढ़ एव साहस पूर्ण पग के प्रति हार्दिक-बधाई देती है।

१. सभा केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय से अनुरोध करती है कि वह गृह-मन्त्रालय द्वारा घोषित राष्ट्र-भाषा सम्बन्धी नीति का उल्लंघन न होने दे। इतना ही नहीं वरन् वह इस युवक की इस भावना का यथोचित सम्मान करे जो कि राष्ट्र-भाषा का गौरव पूर्ण आस्था हेतु प्रकट की गई है।

२. यह सभा सार्वदेशिक सभा देहली से भी इस सम्बन्ध में उचित कार्यवाही हेतु विनम्र निवेदन करती है।

३. यह सभा केन्द्रीय हिन्दी परिषद से भी इस सम्बन्ध में सक्रिय होने का निवेदन करती है।

४. यह सभा साप्ताहिक हिन्दुस्तान २२ मई १९६६ के सम्पादकीय लेख हेतु योग्य तथा निर्भीक सम्पादक का जिन्होंने इसी प्रकरण पर अपने प्रेरणाप्रद विचार प्रस्तुत किये हैं, हार्दिक बधाई देती है।

विश्वम्भर
वरिष्ठ-उप मन्त्री,
मध्य-भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, गुना

आर्य समाज, सान्ताक्रुज बम्बई

के निर्वाचन में श्री अर्जुन भाई कुवर जी पटेल प्रधान, स्नातक नवीन चन्द्रपाल जी एम० ए० मन्त्री तथा श्री जगदीशचन्द्र जी मलहोत्रा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज नांगल टाउन शिप

के निर्वाचन में श्री जगदीशलाल जी चोपड़ा प्रधान, श्री आनन्द प्रकाश जी मन्त्री एवं श्री धर्मवीर जी खन्ना कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज, मादरा (श्रीगंगानगर)

में आर्य समाज की स्थापना हुई। श्री लालमन आर्य प्रधान, श्री चौ० धन्नाराम जी मन्त्री एव श्री सूणकरण महिपाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

*

(पृष्ठ ३ का शेष)

कि वे अपनी-अपनी समाजों के प्रधान का नाम और मंत्री का चित्र, सदस्य-संख्या और आय-व्यय की राशि (विस्तृत विवरण नहीं) हमें भेज दें और कम से कम इस अंक की दस प्रतियां लेने के लिए ११) भी अग्रिम भेज दें ताकि इस अंक के प्रकाशन का एक मुश्त भार सभा पर न पड़े। हमारे पास अब तक लगभग पांच सौ चित्र और लगभग उतने ही मनीआर्डर आ चुके हैं। यह संख्या थोड़ी नहीं है परन्तु अपेक्षित से बहुत कम है।

हम इस अंक को अपनी ओर से अधिक से अधिक व्यापक रूप देना चाहते हैं। प्रकाशित होने के बाद इस अंक का ऐतिहासिक एव स्थायी महत्व होगा। परन्तु कुछ समाजें ऐसी हैं जिन्होंने न अपने यहां के प्रधान और मत्री का चित्र भेजा है, न अभी तक मनीआर्डर और न ही वे कितनी प्रतिया लेंगे इसकी सूचना दी। यह देखकर दुःख होता है कि ऐसी उपेक्षा-वृत्ति धारण करने वाली समाजों में कई प्रमुख और प्रतिष्ठित समाजें भी हैं। कुछ समाजें शायद सोचती हैं कि ऐसी क्या जल्दी है, अंक प्रकाशित हो जाने दो, उसके बाद सौ, दो सौ या पाच सौ जितनी प्रतियों की जरूरत होगी, मंगा लेंगे। हमें भय है कि कहीं ऐसी समाजों को निराश न होना पड़े। 'कल्याण मार्ग का पथिक' और 'महर्षि बोधांक' जिस तरह हमें दुबारा छापने पड़े वह पाठकों को विदित ही है। आर्यसमाज परिचांक को दुबारा छापना संभव नहीं होगा, इसलिए कृपालु पाठकों से हमारा निवेदन है कि वे शीघ्र से शीघ्र अपनी-अपनी समाज के प्रधान और मंत्री का चित्र तथा अत्यन्त संक्षिप्त विवरण शीघ्राति-शीघ्र भेज दें। अधिक प्रतीक्षा का अवसर नहीं है।

हो सकता है कि किन्हीं समाजों के पास हमारी यह सूचना न पहुंचीहो तो जिन तक यह सूचना पहुंच गई है उन्हीं का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे अपनी परिचित निकटवर्ती समाजों का परिचय भी भिजवायें। आश्चर्य की बात तो यह है कि दिल्ली की भी कुछ समाजों ने अभी तक हमारे निवेदन पर ध्यान नहीं दिया है। 'हम तो दिल्ली में हैं ही, चाहे जब भेज देंगे।' यों सोचते सोचते ही समय निकलता जाता है। लगभग आठ-दस दिन और प्रतीक्षा करने के बाद हम इस अंक को छापना शुरू कर देंगे। तब तक यदि आपकी समाज का परिचय न आने के कारण वह इस विशेषांक में न छप सके तो हमें दोष न दें। आखिर जिन समाजों का परिचय हमें प्राप्त हो गया है उनको आपके आलस्य का दण्ड है उनको देर तक नहीं दिया जा सकता।

हमें आशा है कि हमारे इस निवेदन के बाद, जिन समाजों का परिचय हमें अभी तक नहीं मिला है, वह शीघ्र ही प्राप्त हो जाएगा।

(पृष्ठ ७ का शेष)

अध्रुव से ध्रुव, प्रेय से श्रेय और भोग से अपवर्ग की ओर प्रगति करने का पूर्ण प्रयास करें।

वेदों का पाठ भी आवश्यक है, पर इन वेदों का अर्थज्ञान परम आवश्यक है। ज्ञान से जीवन पवित्र तथा निर्मल बनता है। क्योंकि भाष्यकार महामुनि पतञ्जलि लिखते हैं कि :—

यद्धीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते। अनग्नाविव शुष्कैधो न तज्ज्वलति कर्हिचित्॥

अर्थ सहित वेदों के अध्ययन से राष्ट्र एव समाज का जीवन उत्कृष्ट बन सकेगा।

आओ, हम सब वैदिक सिद्धान्तों के अनुयायी तथा अनुगामी बनें। जिससे देश का कल्याण एवं अभ्युदय हो।

हम यजमान हैं आप ऋत्विज हैं। हमारी कामना पूर्ण हो। यह वेद सम्मेलन सफल हो। आप हमारे सहायक बनें। जिससे पुनः प्रत्येक घर में वैदिक संस्कृति का प्रचार हो। प्रत्येक दिशा वैदिक उद्घोष से प्रतिध्वनित एवं निनादित हो उठे।

अन्त में परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यं-दिनं परि। श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि, श्रद्धे श्रद्धापयेह नः॥

छुट्टी रहेगी

सार्वदेशिक साप्ताहिक के सदस्य महानुभाव यह पढ़ कर प्रसन्न होंगे कि सार्वदेशिक प्रेस के फोरमेन श्री पं० बाबूराम शर्मा की सुपुत्री का विवाह तथा कतिपय अन्य कम्पोजीटरों के परिवारो मे विवाह के कारण प्रेस में उनकी अनुपस्थितिसे १५ जूनके अंक की छुट्टी रहेगी और २३ जून का अंक प्रकाशित होगा।

—प्रबन्धक

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

- ऋग्वेद संहिता १०)
- अथर्ववेद संहिता ८)
- यजुर्वेद संहिता ४)
- सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ४)५०
- सत्यार्थप्रकाश २)
- संस्कारविधि १)२५
- पञ्च महायज्ञ विधि)२५
- व्यवहार भानु)२५
- आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
- आर्यसमाज प्रवेश पत्र १) सैकड़ा
- ओ३म् ध्वज २७ × ४० इञ्च २)५०
- ,, ६ × ५४ इञ्च ४)५०
- ,, ४५ × ६७ इञ्च ६)५०
- कर्तव्य दर्पण)४०

२० प्रतिशत कमीशन

- कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
- मराठी सत्यार्थप्रकाश १)३७
- उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

- वैदिक ज्योति ७)
- शिक्षण-तरङ्गिणी ५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

- वैदिक साहित्य में नारी ७)
- जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

- ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र)५०
- राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से))५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

- ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
- कठोपनिषद् ५० प्रश्नोपनिषद्)३७
- मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
- ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
- बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १)२५
- मृत्यु और परलोक १)
- विद्यार्थी जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

- छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
- बृहद् विमान शास्त्र १०)
- वैदिक वन्दन ५)
- वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
- वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
- वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
- अभ्यास और वैराग्य १)६५
- निज जीवन वृत्त वनिका (सजिल्द))७५
- बाल जीवन सोपान [illegible])२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

- आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म)६२

- उपनिषद् कथामाला)२५
- सन्तति निग्रह १)२५
- नया संसार)२०
- आदर्श गुरु शिष्य)२५
- कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
- पुरुष सूक्त)४०
- भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०
- वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर)६२
- स्वर्ग में हड़ताल)३७
- डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
- भोज प्रबन्ध २)२५
- वैदिक तत्व मीमांसा)२०
- सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
- इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०
- भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
- उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
- वेद और विज्ञान)७०
- इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३७
- कुरान में कुछ अति कठोर शब्द)५०
- मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
- इराक की यात्रा २)५०
- महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र)५०
- स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
- दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
- वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
- बाल संस्कृत सुधा)५०
- वैदिक ईश वन्दना)४०
- वैदिक योगामृत)६२
- दयानन्द दिग्दर्शन)७५
- भ्रम निवारण)३०
- वैदिक राष्ट्रीयता)२५
- वेद की इयत्ता १)५०
- दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह)७५
- कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

- दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
- वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
- वैदिक युग और आदि मानव ४)
- वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

- आर्योदय काव्यम् (पूर्वार्द्ध) १)५०
- ,, (उत्तरार्द्ध) १)५०
- वैदिक संस्कृति)२५
- मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
- सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
- आर्य समाज की नीति)२५
- सायण और दयानन्द ३)
- मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

- वेद सन्देश)७५
- वैदिक सूक्ति सुधा)३०
- ऋषि दयानन्द [illegible]

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

- जन कल्याण का मूल मन्त्र —)५०

- संस्कार महत्व)७५
- वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

- दयानन्द दीक्षा शताब्दी के सन्देश)३१
- चरित्र निर्माण १)१५
- ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)१५
- वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
- दौलत की मार)२५
- अनुशासन का विधान)२५
- धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

- स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)१५
- भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
- हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

- यमपित्र परिचय २)
- आर्य समाज के महाधन २)५०
- एशिया का वेनिस)७५
- स्वराज्य दर्शन १)
- दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
- भजन भास्कर १)७५
- सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
- आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५

दुबारा छप गई। आर्य जगत में सबसे सस्ती

सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत

पृ० २००—नेट मूल्य ४० पैसे

ARYA SAMAJ
ITS CULT AND CREED

A unique and elegantly printed Book of the Day

By—Acharya Vaidyanath Shastri

Rs 5/

This is the most popular and widely read first English book of Acharya Vaidya Nath Shastri a well known Arya Samaj Scholar and author credited with writing books in Hindi of outstanding merit on religion and philosophy some of them winning prizes

The book presents a scholarly and lucid exposition of the Cult and Creed of AryaSamaj ranking among the high class rare English literature of Arya Samaj It is a worth reading worth preserving & worth presenting book to the English reading persons especially to the intelligentsia

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान

नई दिल्ली १

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली १ से प्रकाशित

शास्त्र-चर्चा

वेद प्रचारक महान् है

न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न च बन्धुभिः । ऋषयश्चक्रिरे धर्मं योऽनूचानः स नो महान् ।

अधिक आयु होने से, बाल पक जाने से, अधिक धन से तथा भाई बन्धुओं की संख्या बढ़ जाने से कोई बड़ा नहीं होता । ऋषि कहते हैं कि जो वेदों का व्याख्याता हो वही महान् होता है ।

धर्म-धन

धनमस्य यस्य राजतो भयं न चास्ति चोरतः । मृतं च यन्न मुञ्चति समर्जयस्व तद् धनम् ॥

म० मोक्ष धर्म पर्व

जिस धन को न तो राजा से भय है और चोर से ही तथा जो मर जाने पर भी जीव का साथ नहीं छोड़ता उस धर्म रूपी धन का उपार्जन करो ।

उससे क्या लाभ

धनेन किं यन्न ददाति नाश्नुते बलेन किं येन रिपुं न बाधते ।
श्रुतेन किं येन न धर्ममाचरेत् किमात्मना यो न जितेन्द्रियोवशी ॥

उस धन से क्या लाभ जिसे मनुष्य न तो किसी को दे सकता और न अपने उपभोग में ही ला सकता है ? उस बल से क्या लाभ, जिससे शत्रुओं को बाधित न किया जा सके ? उस शास्त्र ज्ञान से क्या लाभ जिसके द्वारा मनुष्य धर्माचरण न कर सके ? और उस जीवात्मा से क्या लाभ, जो न तो जितेन्द्रिय है और न मन को ही वश में रखता है ।

युधिष्ठिर ने पूछा—

यदिदं तप इत्याहुरुपवासं पृथग्जना । एतत् तपो महाराज उताहो किं तपो भवेत् ॥

हे महाराज ! संसार के साधारण लोग उपवास को ही तप कहते हैं क्या वास्तव में यही तप है या दूसरा । यदि कोई दूसरा तप है तो बताईये ।

भीष्म जी ने कहा—

मासपक्षोपवासेन मन्यन्ते यत् तपो जना । आत्मतन्त्रोपघातस्तु न तपस्तत्सतां मतम् ॥

राजन् ! जो जन महीने पन्द्रह दिन उपवास को तप मानते हैं उनका यह कार्य शरीर सुखाने वाला है । श्रेष्ठ पुरुषों के मत में यह तप नहीं ।

त्यागश्च संनतिश्चैव शिष्यते तप उत्तमम् । सदोपवासी च भवेद् ब्रह्मचारी सदा भवेत् ॥

श्रेष्ठ पुरुष तो त्याग और विनय को ही उत्तम तप मानते हैं । जो ऐसा करते हैं वह ही सदा उपवासी और ब्रह्मचारी हैं ।

म० मोक्ष ध० २२१ । ३ ४

शोक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के मुख्तार श्री मास्टर पोखरमल जी की धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया ।

सार्वदेशिक परिवार की ओर से श्री मास्टर जी तथा उनके परिवार के प्रति समवेदना प्रकटकरते हुये दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रभु से प्रार्थना करते हैं ।

दिल्ली के सुप्रसिद्ध नेता श्री वैद्य मूलचन्द्र जी जाम के ज्येष्ठ जामाता श्री डा० विश्वावत जी शास्त्री का दिल्ली हस्पताल में स्वर्गवास हो गया । श्री शास्त्री जी महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक थे । आर्यसमाज के विभिन्न क्षेत्रों में आपका महत्वपूर्ण योग दान रहा ।

कूट-नीति

आगामी सप्ताह के सार्वदेशिक में महाभारत कालीन-कणिक की कूट-नीति मूलश्लोक और हिन्दी अनुवाद सहित आपके स्वाध्याय के लिये प्रस्तुत करेंगे । आज की राजनीति में कणिक की कूटनीति कहां तक उपयोगी है—इसका निर्णय आप ही करेंगे । हम नहीं । हम तो आपके लिये एक पुरातन कूटनीति ही दे रहे हैं ।

— सम्पादक

ऋषिग्राम-जीवापुर (टंकारा) में सामवेदी आर्य पाठशाला

महर्षि दयानन्द सामवेदी थे । इसलिये सामवेद के ज्ञान का प्रचार करने के लिये ऋषिग्राम-जीवापुर (टंकारा) में २ जुलाई गुरुपूर्णिमा से सामवेदी आर्य पाठशाला की स्थापना 'सामवेद सूर्य' पूज्य प० रेवाशंकर जी शास्त्री ज्योतिषाचार्य के कर कमलों से होगी । अभी केवल दो मास का पाठ्यक्रम है । जिसमें सामवेद का पूर्वार्चिक सस्वर निःशुल्क सिखाया जायगा । ठहरने और भोजन की व्यवस्था होगी । [illegible] वेद स्वामी [illegible] जी पूज्य पू० सामवेदमार्तण्ड को दिया गया है । विद्यार्थी अपने साथ वैदिक प्रेस की छपी संस्कार विधि और पंचमहायज्ञ-विधि अवश्य लावें । ताकि सामवेद-गायन और पंचशिखा गायत्री कीर्तन भी सिखाया जा सके । श्रावणी पर 'पूर्वार्चिक' महानाम्नी आर्चिक से पूर्णाहुति होगी । आर्यजन लाभ उठावें ।

कुबलाल आर्य 'वानप्रस्थ'
उपमन्त्री आर्यसमाज जीवापुर

आर्य सम्मेलन बीड़ (महाराष्ट्र) के अध्यक्ष

आचार्य श्री प०कृष्णदत्त जी एम०ए० जिनका महत्वपूर्ण अध्यक्षीय भाषण सार्वदेशिक के इसी अंक मे आपने पढ़ा है ।

परिचय शीघ्र भेजें ।

आर्य समाज-परिचयांक

भारत और भारत से बाहर चार हजार से अधिक आर्य समाजें हैं । लाखों सदस्य हैं । करोड़ों रुपया व्यय करते हैं ।

किन्तु सर्व साधारण को पता नहीं !

इसमें आर्यसमाज की सदस्य संख्या, आय-व्यय, मन्त्री का चित्र और प्रधान का नाम इस अङ्क में देंगे

यह विशेषांक भी विशेष ही होगा

हजारों मन्त्रियों के चित्रों सहित यह विशेषांक आर्य जगत् का दर्शनीय अङ्क होगा ।

इसका मूल्य केवल १)१० पैसा होगा

प्रत्येक आर्य समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री महोदय अपनी संस्था का परिचय और चित्र भेजने में शीघ्रता करें ।

इस महान् अंक पर २५-३० हजार रुपया व्यय होगा । सभा पर इतनी भारी धनराशि का भार न पड़े और सुगमता से अंक प्रकाशित होजाय इसके लिए मन्त्री महोदयों से, कम से कम १० अंक लेने और उसके ११) अग्रिम भेजने की प्रार्थना की थी । हर्ष की बात है कि आर्यसमाजों के मन्त्री महानुभावों ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की और धन भेज रहे हैं ।

आप जिस किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री हैं— उसका परिचय, अपना नाम और चित्र तथा प्रधान का नाम भेजने मे देर न करें ।

प्रकाशक

[illegible]

सम्पादकीय

आर्यसमाज और संगठन

संसार में ऐसी शायद ही कोई राजनैतिक या धार्मिक संस्था हो जिसका संगठन आर्य समाज से अधिक उत्कृष्ट हो। आर्य समाज से अधिक विस्तृत, व्यापक और साधन-सम्पन्न संस्थाएं अनेक हो सकती हैं, किन्तु जहां तक संगठन का प्रश्न है आर्य समाज की तुलना में कोई और संस्था नहीं ठहर सकती। गत अस्सी वर्षों में अपने जन्मकाल से लेकर अब तक आर्य समाज का जितना विस्तार हुआ है वह भी इतिहास में अभूतपूर्व है। आर्य समाज के निस्वार्थ सेवक देश के अन्दर और देश के बाहर, जिस लगन के साथ अपने मिशन का प्रचार करने में जुटे रहे हैं, उसकी मुक्तमुख से प्रशंसा की जा सकती है। अब भी जैसे उज्ज्वल चरित्र के देश-भक्त, निष्कलंक समाज सेवक और मानव-मात्र को समान समझ कर मानव जाति की सेवा में अहर्निश जुटे रहने वाले व्यक्ति आर्य समाज में मिलेंगे, वैसे अन्यत्र दुर्लभ हैं।

परन्तु यह केवल चित्र का एक पहलू है। यह पहलू जितना रोशन है, दूसरा पहलू उतना ही स्याह है। जब हम आत्म निरीक्षण करने बैठते हैं तब सहसा हमारे मन में 'मुझसा बुरा न कोय' का भाव गूंज उठता है। हो सकता है, कि 'दूरतो भूधरा रम्या:' की उक्ति के अनुसार हमें दूसरी संस्थाओं की दुर्बलताओं के बारे में उतनी अच्छी जानकारी न हो, जितनी अपनी संस्था के बारे में है। इसे 'अति परिचय का दोष' भी कहा जा सकता है। किन्तु जो यथार्थ स्थिति है उससे आंखें मोड़ना शुतुर-मुर्गी-मनोवृत्ति का द्योतक है। यथार्थ से आंखें मोड़ लेने का परिणाम हमेशा भयावह होता है। स्थिति की विषमता को न समझना स्वयं एक असाध्य रोग की निशानी है और जो रोगी रोग की उपस्थिति से इंकार करता है, उसके रोग का उपचार नहीं हो सकता।

व्यक्तिगत आर्य समाजों या आर्य समाजियों की वर्तमान स्थिति क्या है हम इस बात पर विचार नहीं करना चाहते। आर्यों में किस प्रकार स्वाध्याय का अभाव, सिद्धान्तों के प्रति विरक्ति, शास्त्रार्थों से पलायन की वृत्ति, स्वार्थपरता, निरी-सांसारिकता और राजनैतिक अवसर-वादिता घर कर गई है, हम उसकी भी चर्चा नहीं करना चाहते। पाश्चात्य संस्कृति के जैसे भीषण-प्रवाह से सारा देश आलोड़ित है और अब आर्य समाजी भी उस प्रवाह में बहने से नहीं बचे, इस पर पश्चात्ताप करना व्यर्थ है। पाश्चात्य वेश-भूषा, पाश्चात्य रहन-सहन, पाश्चात्य शिक्षा-दीक्षा और पाश्चात्य विचार-प्रणाली की विद्यमानता की जो शिकायत हम अन्य संस्थाओं से करते हैं, आर्य समाज भी उससे अलिप्त नहीं हैं। कभी अन्य संस्थाओं की नावें पाश्चात्य संस्कृति के तीव्र तूफान में घिर कर आर्य समाज के प्रकाश-स्तम्भ की ओर आशा भरी दृष्टि से देखती थीं, अब उस प्रकाश स्तम्भ की ज्योति भी मन्द पड़ती जा रही है, इस सत्य से इंकार नहीं किया जा सकता।

आर्यसमाज पर दुहरी जिम्मेवारी थी। इसे न केवल स्वयं डूबने से बचना था किन्तु औरों को भी डूबने से बचाना था। आज जवानी जमा-खर्च चाहे कितना ही बढ़ गया हो किन्तु स्थिति की विडम्बना यह है कि आर्य समाज में दूसरों को डूबने से बचाने का उत्साह तो है ही नहीं, प्रत्युत अपने डूबने की चिन्ता भी नहीं है। जीवन की उत्कृष्टता के जो उदाहरण प्रारम्भिक युग के आर्य समाजियों में मिलते थे वे अब दिन प्रतिदिन दुर्लभ और न्यूनतर होते जाते हैं। वह समय कहां चला गया जब न्यायाधीश लोग भी यह समझा करते थे कि आर्य समाजी कभी झूठ नहीं बोलता इसलिये किसी आर्य समाजी ने जो गवाही दे दी उसी के अनुसार अपना फैसला दे दिया करते थे।

परन्तु आज यह सब चर्चा न करके हम केवल आर्य समाज के संगठन की ही चर्चा करना चाहते हैं जिसकी अभी तक सर्वत्र धाक है। आर्य समाज का संगठन अपने मूल रूप में किसी भी आदर्श प्रशासन तक को मात कर सकता है। ऋषि ने जब आर्य समाज की स्थापना की थी तब हो सकता है कि उनके मन में भी समानान्तर सरकार की स्थापना का विचार रहा हो, जिसमें किसी भी बाहरी सरकार के हस्तक्षेप की कहीं कोई गुंजाइश नहीं थी।

आर्यसमाज के दस नियमों और पचास मन्तव्यों पर आस्था रखने वाले सदाचारी, वैदिक धर्मावलम्बीजन स्थानीय आर्य समाजों के सदस्य बनते और ये सदस्य लोकतन्त्रीय पद्धति से स्थानीय समाज के पदाधिकारियों का चुनाव करते। फिर ये स्थानीय समाजें प्रान्तीय सभाओं में आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजती और प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं में भी लोकतन्त्रीय पद्धति के अनुसार पदाधिकारियों का चुनाव होता। ये प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाएं अपने-अपने प्रदेश में प्रचार की व्यवस्था करतीं और आर्यसमाज की गतिविधि का विकास तथा निरीक्षण करतीं। फिर ये प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाएं अपने प्रतिनिधि चुनकर सार्वदेशिक सभा में भेजतीं। धीरे धीरे सार्वदेशिक सभाके रूप का ऐसा विस्तार हो गया कि भारत से बाहर के देशों की प्रतिनिधि सभाएं भी अपने प्रतिनिधि चुनकर सार्वदेशिक सभा में भेजने लगीं। इस प्रकार सार्वदेशिक सभा ने अन्तर्राष्ट्रीय रूप ग्रहण कर लिया। वर्तमान समय में और अपने वर्तमान रूप में सार्वदेशिक सभा न केवल देश की, प्रत्युत् संसार भर की, आर्यसमाज की सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था है।

यदि इकाई से लेकर दहाई और फिर सैकड़े तक की मनोवृत्ति का पालन किया जाए तो व्यक्ति से समाज समाज से सभा और सभाओं से सार्वदेशिक सभा—यह आर्यसमाज के विकास का क्रम है। सार्वदेशिक सभा आर्यसमाज के विकास की अन्तिम सीढ़ी है। यह ठीक है कि आर्यसमाज के उच्च मीनार का आधार समग्र आर्य जनता ही है और जब तक बुनियाद पक्की है तब तक इस मीनार के ऊंचे से ऊंचे शिखर को भी कोई खतरा नहीं होना चाहिए। अब भी यह कहने की हिमाकत तो हम नहीं कर सकते कि इस मीनार की नींव-रूप जनता कमजोर पड़ गई है, परन्तु यह अवश्य दृष्टिगत होता है कि जिन प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के आधार पर सार्वदेशिक सभा का निर्माण होता है उनमें बहुत कुछ असम्बद्धता आ गई है। हो सकता है कि प्रांतीय प्रतिनिधि सभाओं की दुर्बलता का कारण भी व्यक्तिगत समाजें हों और उन्हीं की अराजकता क्रमशः संक्रमित होती हुई सार्वदेशिक सभा तक पहुंचती हो। किन्तु जहां तक सार्वदेशिक सभा का सम्बन्ध है उसे उतनी दूर तक सोचने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि व्यक्तिगत समाजें सार्वदेशिक सभा का कार्यक्षेत्र या विचार क्षेत्र (Juris diction) नहीं है। उसे तो केवल प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं की अराजकता पर ही दृष्टि रखनी चाहिए।

जहां तक प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं का प्रश्न है उनमें कहीं-कहीं अराजकता के चिह्न स्पष्ट दृष्टि गोचर हो रहे हैं। कई प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं में ऐसे स्वेच्छाचारीतत्व उभर रहे हैं जो सर्व-शिरोमणि सभा की भी अवहेलना करते हैं। जैसे विद्रोही तत्व ज्यों-ज्यों मुखर होते जाते है त्यों-त्यों सार्वदेशिक सभा का संगठन दुर्बलता की ओर अग्रसर होता जाता है। जिस प्रकार मुगल-काल में कुछ नवाब और सामन्त लोग केन्द्र की अवहेलना करके अपने-अपने राज्यों में छल-बल-कल से सर्व प्रभुत्व सम्पन्न-अधीश्वर बनने का प्रयत्न किया करते थे और इस प्रवृत्ति ने मुगल साम्राज्य का क्षय कर दिया, कुछ-कुछ वही अराजकता और सामन्त शाही की प्रवृत्ति कभी-कभी कुछ प्रान्तों में भी दृष्टिगोचर होने लगती हैं। सार्वदेशिक सभा के संगठन की सबसे कमजोर कड़ी यही है। जिस प्रकार राजनीति में केन्द्र के दुर्बल होने पर देश को अराजकता से नहीं बचाया जा सकता इसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भी शिरोमणि सभा को कमजोर करके आर्य समाज को स्वेच्छाचारिता और अराजकता से नहीं बचाया जा सकता।

"संगच्छध्वं संवदध्वम्" का पाठ करने वाले और देश को एकता के सूत्र में बांधने का, तथा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा लगाकर सारे संसार में सार्वभौम चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य की स्थापना का स्वप्न देखने वाले लोग भी यदि कलह-पिशाचिनी के वशीभूत होकर घर में ही फूट फैलाने लगेंगे तो घर बहेगा नहीं तो क्या बचेगा ?

(शेष ४ पेज पर)

सामयिक-चर्चा

भाषायी विवाद का अन्त कैसे हो ?

क्या पंजाब के विभाजन से भाषायी विवाद का अन्त हो जायगा ? इस प्रश्न पर विचार करते हुए हिन्दुस्तान टाइम्स के विशेष संवाददाता ने लिखा है, (हिन्दुस्तान टाइम्स १४ जून पृ० ७) कि तथ्यों से इस प्रश्न का सन्तोषजनक समाधान नहीं होता।

सीमा आयोग १९६१ की जनगणना के भाषायी रिकार्ड पर पूर्णतया निर्भर रहा है। जनगणना के रजिस्ट्रार जनरल ने इससे पूर्व ही आंकड़ों की प्रामाणिकता की सम्पुष्टि कर दी थी।

इस रिकार्ड के अनुसार पंजाबी सूबे में अधिक से अधिक ६९ प्रतिशत लोगों की भाषा पंजाबी होगी और कुल आबादी के ३० प्रतिशतक से अधिक लोगों की मातृ भाषा हिन्दी होगी।

अकालियों ने एक भाषाभाषी अर्थात् पंजाबी राज्य की मांग की थी। भाषायी अल्प संख्यकों के संरक्षणों से सम्बद्ध और १९ सितम्बर १९५६ को लोक सभा द्वारा सम्पुष्ट केन्द्रीय गृह मन्त्रालय की घोषणा के अनुसार वही राज्य एक भाषा भाषी राज्य स्वीकार किया जायगा जिसकी कुल आबादी के ७० प्रतिशतक या इससे अधिक व्यक्ति एक ही भाषायी वर्ग के हों और जहां ३० प्रतिशतक या इससे अधिक भाषायी अल्पसंख्यक हों तो वह राज्य प्रशासनिक दृष्टि से द्विभाषी राज्य माना जायगा।

यतः राज्य के हिन्दी भाषा भाषी लोग कुल आबादी के ३० प्रतिशतक या इससे अधिक हैं अतः हिन्दी-पंजाबी की जटिल समस्या बिना समाधान के रह जायगी। यदि केन्द्रीय गृह-मन्त्रालय उन अधिकारों में जिनकी गारन्टी उसने दी है कोई मौलिक परिवर्तन करदे तो बात दूसरी है।

पंजाबी सूबे को एक मात्र पंजाबी भाषा-भाषी राज्य उद्घोषित कर देना उन संरक्षणों के विरुद्ध होगा।

नये पंजाबी राज्य में समस्त शहरी क्षेत्रों में कुल आबादी के ३० प्रतिशतक से अधिक जन हिन्दी भाषा भाषी होंगे। १० जिलों में से ६ जिलों में ३० प्रतिशतक से अधिक हिन्दी भाषा भाषी जन हैं। साधारणतः तहसीलों में और मुख्यतः शहरी क्षेत्रों में केन्द्रीय गृह मन्त्रालय के संरक्षण को व्यवहार में लाना होगा। जो इस प्रकार हैं :—

"जिलों में या म्युनिसिपैल्टियों एवं तहसीलों जैसे छोटे क्षेत्रों में जहां भाषायी अल्पसंख्यक १५ से २० प्रतिशतक हों, वहां उस भाषा के अतिरिक्त जिनमें सामान्यतः प्रमुख सरकारी नोटिस और नियमादि छपते हों अल्पसंख्यकों की भाषा में उनका प्रकाशन होगा।

भाषायी अल्प संख्यको की समस्या अखिल भारतीय समस्या है अतः केन्द्र के लिए इन संरक्षणो को बदल देना सरल न होगा।

इस परिस्थिति में इस जटिल समस्या के समाधान का एक ही व्यावहारिक उपाय है और वह यह कि अकाली लोग पंजाबी को गुरुमुखी लिपि में बद्ध रखने की हठ छोड़ दें और आर्य समाज पंजाबी के प्रति व्यावहारिक रवैया अपनाएं।

विशेषज्ञों के मतानुसार पंजाबी रीजन की बोलचाल की पंजाबी भाषा यदि गुरुमुखी लिपि में लिखी जाय तो वह पंजाबी है और यदि देवनागरी लिपि में लिखी जाय तो वह हिन्दी है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी पंजाबी किसी लिपि विशेष से बद्ध नहीं है। वागा रेखा के इस ओर के भारतीय क्षेत्र में वह गुरुमुखी लिपि में और दूसरी ओर के पाकिस्तानी क्षेत्र में वह फारसी लिपि में लिखी जाती है।

पंजाबी के लिए देवनागरी लिपि के प्रयोग की छूट दिये जाने से एक बड़ी जटिल समस्या का समाधान हो जाता है तब पंजाबी के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग क्यों निषिद्ध किया जाता है ?

इस प्रकार पंजाबी सूबे के निर्माण से अनेक जटिल समस्याओं की उत्पत्ति होगी।

स्वामी ध्रुवानन्द जी

पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती को दिवंगत हुए १ वर्ष हो गया। २९ जून ६५ को बम्बई में उनके पार्थिव शरीर का अवसान हुआ था।

उनका समस्त जीवन आर्य समाज की सेवा पर अर्पित रहा और आर्य समाज ही उनके ममत्व और कर्त्तव्य का केन्द्र रहा। आर्य समाज को अपना जीवन दान करने वालों की भव्य परम्परा का अनुकरण करके उन्होंने उसे प्रशस्त किया।

आर्य समाज के सन्देश को देश-देशान्तर और दिग् दिगान्तर में प्रसारित करके और उसे उन्नत बनाने के लिए उन जैसे दयानन्द के अनेक भिक्षुओं की परमावश्यकता है। परन्तु वे आज चिराग जला कर ही देखे जा सकते हैं। यह खेद की बात है परन्तु निराश होने की आवश्यकता नहीं है। महर्षि की भावना निर्मूल नहीं हुई है और न हो सकती है। उससे स्वामी ध्रुवानन्द जी जैसे महानुभाव प्रादुर्भूत होते ही रहेंगे।

प्रजा सत्तात्मक प्रणाली की यह सबसे बड़ी देन है कि इसमें उन्नति के सोपान पर चढ़ने का साधारण से साधारण व्यक्ति को अवसर प्राप्त रहता है। स्वामी जी को यह अवसर मिला और वे एक समय में आर्य समाज के आध्यात्मिक ही नहीं अपितु सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद तक पहुंच कर उसके वैधानिक प्रमुख भी बन गये। इस तथ्य का विश्लेषण करते समय यह न भुलाया जाना चाहिये कि उन्होंने आर्य समाज की सेवा और उसके वर्चस्व को बढ़ाने के प्रयत्न को एक क्षण के लिए भी आंखों से ओझल न होने दिया।

चरित्र एवं अर्थ शुद्धि, कर्मठता और अध्यवसाय से उनका जीवन ओत-प्रोत रहा। उनका स्मरण नव-स्फूर्ति उत्पन्न करने वाला है। उनके स्मरण से एक ऐसे महानुभाव का चित्र मानस-चक्षुओं के समक्ष आ जाता है जिसने कभी हार माननी न सीखी थी, जो अपने समय में परम शक्तिशाली और साधन सम्पन्न था और आर्य समाज के लिए जिया और मरा।

इन शब्दों के साथ हम उनका पुण्य स्मरण करते हैं।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

—:o:—

(पृष्ठ ३ का शेष)

हम समझते हैं कि सार्वदेशिक सभा आर्य समाज की संगठन शक्ति का समुज्ज्वल प्रतीक है। व्यक्तिगत राग-द्वेष को छोड़ कर सर्व शिरोमणि सभा के संगठन को अक्षुण्ण रखना प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है। इसलिए हमें प्राणपन से यह प्रयत्न करना चाहिए कि प्रान्तीय सभाओं की अराजकता का विष सार्वदेशिक सभा पर हावी न होने पाए और यह सभा अपने नाम के अनुरूप आर्य समाज के संसार-व्यापी कार्य का नेतृत्व करने में समर्थ बनी रहे। यदि इस केन्द्रीभूत संगठन में कुछ भी कमजोरी आई तो उसका प्रभाव समस्त आर्य जगत् पर पड़ेगा। हमारी आर्य जनता से यह अपील है कि वह सार्वदेशिक सभा के संगठन को सबल बनाए और 'सब की उन्नति में अपनी उन्नति' समझने के आदर्श का पालन करे। इसी में आर्य समाज का कल्याण है। संगठन ही आर्य समाज का बल है। यदि इस संगठन में कहीं भी दरार पड़ गई तो आर्य समाज की शक्ति क्षीण हो जायगी। तब न आर्य समाज अपने लक्ष्यों को पूरा कर सकेगा, न हिन्दू जाति की विधर्मियों से रक्षा कर सकेगा और न स्वयं विरोधियों के सामने टिक सकेगा।

—:o:—

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी विदेश में

मैं १९ मई, १९६६ सायं ८ बजे सिंगापुर से बी० ओ ऐ सी के वायुयान द्वारा फिजी की ओर उड़ा-सारी रात वायुयान में बैठें २ बीत गई, अब २० की सायं के ६ बज चुके हैं और मैं अभी न्यूजीलैंड के नगर आकलैंड के 'एयर पोर्ट पर बैठा हूं—अभी चार घण्टे और प्रतीक्षा करूंगा। तब नन्दी (फिजी) की ओर आने वाला वायुयान मिलेगा, यहां मुझे ७ घण्टे प्रतीक्षा करनी पड़ी। दिन के दो बजे यहां पहुंचा था, १८ घण्टे की वायु यात्रा के पश्चात् भी अभी बीच ही में हूं। रात को सोना नहीं मिला प्रातः को नहाना नहीं मिला, दोपहर को खाना नही मिला, दिन को आराम नहीं मिला, अब रात को फिर सोना नहीं हो सकेगा, सुना था २० मई को सूर्य ग्रहण लगा या नहीं लगा, मुझे तो लग गया, यहां विचार कर रहा हूं कि दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में आज से दो हजार वर्ष पूर्व बुद्धमत का प्रचार करने जो भिक्षु आये थे, उन्होंने कितने कष्ट उठाये होंगे जब समुद्र यात्रा भी बहुत कठिन थी, महीनों समुद्र ही में रहकर प्रचारकों ने वर्षा धूप-सर्दी गर्मी, भूख प्यास सहन की होगी। भाषा की भिन्नता ने तो कितनी ही उलझनें डाल दी होंगी और इतने तप के पश्चात् बुद्ध मत के प्रचार से वर्मा, चीन, जापान, कम्बोडिया, स्याम, मलाया इत्यादि कितने ही देश बुद्ध भगवान् के भक्त बन गये, वस्तुतः अब तो इन देशों में सिवाये थाईलैंड के और कहीं भी बुद्ध मत नहीं रहा। इतना तप, इतना प्रयत्न बहुत स्थाई प्रभाव डाल न सका। तब मन में यह विचार आ घुसा कि तू जो ८३ वर्ष की आयु के शरीर को कष्ट दे रहा है, इससे होगा क्या? महाराजा अशोक ने बौद्ध मत के प्रचारार्थ अपनी पुत्री तथा पुत्र को लंका भेजा था, वहीं से बौद्ध प्रचारक फिर एशिया के इन देशों में पहुंचे थे, तत्पश्चात पश्चिमी एशिया को पार करके बौद्ध प्रचारक उत्तर अफ्रीका के नगर साईरोज तक फैल गये थे, इराक में भी बौद्ध तथा जैन मत के तपस्वी महानुभाव निवास करते थे, इन्डोनेशिया सुमात्रा, जावा, बोर्नियो, बाली आदि द्वीपों में हिन्दुत्व का बोलबाला था। आज इन स्थानों में हिन्दुत्व तथा बौद्ध मत के खण्डरात तो हैं, और कोई भी चिह्न नहीं।

आज से २१०० वर्ष पूर्व पूर्व उत्तरी अरब पर एक राजा बैकुण्ठनाथ राज्य करता था तुर्की के एक गांव की खुदाई से ३५०० वर्ष पुरानी हिन्दु मूर्तियां निकली हैं, परन्तु अब न तुर्की में न अरब में कहीं भी हिन्दुत्व नहीं रहा। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि भारत से प्रचारक इन देशों में फिर नहीं पहुंचे आलस्य ने घेर लिया होगा, यदि प्रचारक पहुंचते रहते तो आज सारा एशिया अवश्य आर्य हिन्दू होता, और अब जिन देशों में हिन्दू आबाद हैं, इनको भारतीय सभ्यता का भक्त बनाये रखने के लिये आवश्यक है कि भारत के सन्यासी कष्ट उठाकर भी यहां पहुंचे।

आर्य जगत् के महान् तपोधन संन्यासी श्रद्धेय श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती आजकल वैदिक धर्म प्रचारार्थ विदेश यात्रा पर हैं।

फिजी से आपने अपनी यात्रा के अनुभव अपने प्यारे पुत्र श्री रणवीर जी प्रधान सपादक दैनिक मिलाप को सार्वदेशिक में प्रकाशनार्थ इन शब्दों के साथ भेजे हैं—'मेरे शरीर की गाड़ी चल रही है, जब तक चलेगी काम लूंगा, फिर छोड़ दूंगा।" आर्य जनता के लाभार्थ प्रकाशित कर रहे हैं।

—सम्पादक

फिजी की बात

फिजी की बात पहले लीजिये—इस समय इसकी आबादी लगभग पांच लाख है, इनमे से आधे भारतीय हैं, इन भारतीयों के पूर्वजों को गन्ने की काश्त के लिये भारत से १८७९ मे ५-५ वर्ष के Agreement पर लाया गया था, जब मैं २१ वर्ष मई प्रातः सूवा (फिजी) पहुंचा और इन भारतीयों को हिन्दी बोलते-नमस्ते, जय हिन्द तथा रामराम कहते सुना तो हृदय गद्गद हो गया। लगभग एक सौ वर्ष इनको फिजी में रहते हो गये, प्रारम्भ में भारतीयों ने अकथनीय कष्ट सहन किये। यहां के 'कैवती' लोगों को पादरियों ने ईसाई बना लिया। भारतीयों पर भी कुछ समय के बाद पादरियों ने डोरे डालने शुरू किये। परन्तु आर्य समाज का विचार रखने वाले जो लोग यहां आ चुके थे, उन्होंने इस खतरे को भांप लिया और आर्य समाज का आन्दोलन प्रारम्भ किया। वैदिकधर्म तथा हिन्दुत्व की खूबियों का वर्णन होने लगा, भारत से प्रचारक पहुंचने लगे, और १९०४ में विधि पूर्वक आर्यसमाज की स्थापना हो गई। फिजी के माननीय सरदार बख्शीशसिंह मल ने मुझे स्पष्ट कहा कि यदि आर्यसमाज यहां न होता तो जिस प्रकार फिजी के सारे कैवती लोग ईसाई बन चुके हैं, भारत के यह सारे हिन्दु भाई ईसाई बन चुके होते।

आर्यसमाज की गतिविधि

आर्यसमाज ने प्रारम्भ में बड़ा काम किया। आर्यसमाज की स्थापना में बाबू मंगलसिंह जी का बड़ा हाथ है। १९१२ में एक सज्जन राम मनोहरानन्द वर्मा से फिजी पहुंचे और बा० रणधीरसिंह, बा० राम गरीब सिंह, सेठ हीरालाल, पं० बद्री महाराज, पं० हरदयाल शर्मा, प० राम नारायण मिश्र, प० शिवनन्दन इत्यादि के सहयोग से गुरुकुल की स्थापना की, बड़ा सुन्दर कार्य होने लगा। १९१८ मे आर्य प्रतिनिधि सभा की भी स्थापना हो गई कितने ही ग्रामों में आर्य समाज स्थापित हो गये। १९२० में एक ऐसी घटना घटी जिसने आर्यसमाज में फूट पैदा कर दी। राम मनोहरानन्द ने जो भगवे वस्त्र पहनते थे विवाह कर लिया। इस पर दो पार्टियां बन गई, राम मनोहरानन्द के स्थान पर गुरुकुल का आचार्य प० शिवदत्त शर्मा बनाये गये, १९५२ में गुरुकुल वृन्दावन से पं० गोपेन्द्र नारायण फिजी पधारे और दोनों पार्टियों का मिलाप करा दिया। गुरुकुल सर्वप्रिय बनने लगा, फिजी द्वीप के असली वासी 'कैवती' बालक भी गुरुकुल में पढ़ने लगे, वेद मन्त्र गाते, गायत्री मंत्र का जप करते, जब यह तीस कैवती ब्रह्मचारी वेद गायन करते तो समय बन्ध जाता। तब ७० लड़के और २५ लड़कियां भारत पढ़ने के लिये भेजे गये। लड़के गुरुकुल वृन्दावन में और लड़कियां कन्या महाविद्यालय जालन्धर में कैवती लड़कों को गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ाने का निश्चय हुआ परन्तु फिजी की अंग्रेजी सरकार ने रोक दिया। गुरुकुल को हानि पहुंचाने के लिये सरकार ने ग्राम में स्कूल खोल दिया, कैवती लड़के गुरुकुल में पढ़ना चाहते थे, उन्हें बल पूर्वक रोका गया। उन्हीं दिनों भारत से प० श्री कृष्णजी फिजी पधारे समुद्री जहाज में यह आये, उसे एक मास क्वारनटीन में रखा गया। कितने लोगों की जहाज में मृत्यु हो गई, पं० श्री कृष्ण जी ने फिजी पहुंच कर वेद प्रचार प्रारम्भ कर दिया १९२६ से १९३१ तक प्रचार खूब हुआ। अंग्रेजी सरकार पं० श्री कृष्ण को देश बदर करने पर तैय्यार हो गई। १९२७ में पं० अमीचन्दजी स्नातक गुरुकुल कांगडी फिजी आये, गुरुकुल की बाग डोर सम्भाली। १९२८में डा०कुन्दनसिंह टीचर बनकर आये। ईसाई तथा मुसलमानों का कुछ उपद्रव देखकर 'हिन्दु संगठन' स्थापित किया। तीन सौ मुसलमानों की शुद्धि की गई, तब सरकार ने कुछ हिन्दुओं को साथ मिलाकर हिन्दुओं में फूट डलवा दी। आर्यसमाज ने स्कूल कालेज, कन्या कालेज जारी करने शुरू किये। सिख भाईयों तथा सनातन धर्मी भाइयों ने भी स्कूल कालेज जारी किये। इस समय फिजी में ८० प्रतिशत छात्र-छात्रायें दयानन्द स्कूल कालेज तथा सनातन धर्म कालेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी

फिजी में तीन सौ टापू हैं, जिन का व्यास एक लाख मुरब्बा मील है, जन संख्या आजकल लगभग ५ लाख है, जिनमें से आधे भारतीय लोग हैं। १८७९ में भारत से साठ हजार से अधिक लोगों को नाना प्रकार के प्रलोभन दिखा कर फिजी लाया गया यहां इन्हें कुली पुकारा जाने लगा फिर

(शेष १४ पृष्ठ पर)

ईसाईयों का खूनी इतिहास

ईसाईयत भारत के लिए भयंकर खतरा

श्री मिहिरचन्द जी धीमान, प्रधान बंग प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

ईसाइयों का इतिहास रक्तपात और असहिष्णुता से भरा पड़ा है। भूतपूर्व प्रधान मन्त्री स्व० जवाहरलाल जी नेहरू ने 'विश्व इतिहास की झलक' में लिखा है—"कैथलिकों और प्रोटेस्टेन्टों के सख्त मजहबी युद्ध, कैथलिकों कैलविन के अनुयायियों का मजहबी वैर-भाव और इनक्विजिशन, ये सब इस घोर मजहबी और सम्प्रदायी नजरिये के ही नतीजे थे। जरा इसका विचार तो करो। कहा जाता है कि यूरोप में ज्यादा करके प्यूरिटनों ने लाखों स्त्रियों को डायनें बतला कर जिन्दा जला डाला। विज्ञान के नये विचारों को दबाया जाता था। क्योंकि ये ईसाई-संघ के नजरिये से टक्कर खाने वाले समझे जाते थे। जिन्दगी के बारे में यह मत स्थिर और जड़ था, प्रगति का कोई सवाल ही न था।"

विश्व के सबसे महान् जीवित दार्शनिक सर बरटैण्ड रसेल ने Why I am not a Christian ? नामक अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक में यह उल्लेख किया है कि ईसाइयत इन्सानियत का सबसे बड़ा शत्रु है। उनका कथन निम्नलिखित रूप में है - In the so called ages of faith, when men really did believe the Christian religion in all its comple-tedess, there was the inquisition with its tortures there were millions of unfortunate women bu.nt as witches and there was every kind of cruelty practised upon all sorts of people in the name of religion.'

(Why I am not a christian, पृष्ठ १५)

अर्थात् "तथाकथित धार्मिक युग में जब लोग वस्तुतः पूर्णतया ईसाई धर्म में विश्वास रखते थे, अत्याचार से पूर्ण इनक्विजिशन जारी था जिसके फलस्वरूप लाखों की संख्या में अभागिनी स्त्रियां डायन के रूप में जीवित जला दी गयीं और धर्म के नाम पर सभी प्रकार के लोगों पर हर प्रकार की निष्ठुरता बरती गयी।" आगे सर बरटैण्ड रसेल यह उल्लेख करते है—'I say quite deliberately that the christian religion, as organized in its churches has been and still is the principal enemy of moral progress in the world. अर्थात् "मैं मुक्तकण्ठ से यह कहता हूं कि ईसाई धर्म, जैसा वह चर्चों मे व्यवस्थित है, विश्व की नैतिक प्रगति का मुख्य शत्रु रहा है और अब भी है।

श्री मिहिरचन्द जी धीमान

ईसाई मत में चोरी करने, झूठ बोलने, युद्ध करने, मांस खाने, व्यभिचार करने आदि शिक्षाओं का उल्लेख मिलता है। मांस खाने की आज्ञा इस प्रकार दी गई है – 'सब जीते चलते जानवर तुम्हारे खाने के वास्ते हैं। (पैदाइश ९-३ पृष्ठ १३)। जो कुछ कसायवों की दुकान पर बिकता है वह खाओ। (१ कुरन्थियों १०-२५, पृष्ठ २४)।

युद्ध करने की आज्ञा इस प्रकार दी गई—'सो अब तू जा और अमालिक को मार और सब जो कुछ कि उनका हरण कर और उन पर रहम मत कर बल्कि मर्द और औरत, नन्हें बच्चे क्षीरख्वार और बैल, भेड़ और ऊंट और गधे तक सबको कत्ल कर। (१ सेमुअल १५-३ पृष्ठ ३६४)।

इन उदाहरणों से हमें यह स्पष्ट विदित होता है कि ईसाई मत भारत अथवा संसार को सुख-शान्ति प्रदान नहीं कर सकता अपितु यह शान्ति आर्य (वैदिक) धर्म ही [illegible] है जिसका उद्देश्य —'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि' अर्थात् हम संसार के समस्त प्राणी को मित्रवत् देखें, उनसे मित्रवत् व्यवहार करें, किसी को कष्ट न दें।'

महर्षि स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के दशम समुल्लास में लिखा है -"इन पशुओं की हत्या करने वाले सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा। देखो! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तभी आर्यावर्त्त वा अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्त्तते थे, क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश मे आये गौ आदि पशुओं को मारने वाले मद्यपायी राज्याधिकारी हुए तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है।"

आर्य समाज का सिद्धान्त श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा आचारित सर्वतन्त्र सिद्धान्त आर्य (मानव) धर्म को प्रसारित कर संसार के लोगों को सुख शांति प्रदान करना है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' हमारा लक्ष्य है, यह तभी सम्भव है जब महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित आर्योद्देश्य रत्नमाला में वर्णित मानव धर्म का भारत एवं विश्व में प्रसार हो। इसके निमित्त हमें कमर कस कर तैयार रहना है और बाधाओं से कभी भी विचलित नहीं होना है। हमें उस उद्देश्य की पूर्ति में आजपन से लग जाना चाहिए जैसा कि आज से ७० वर्ष पहले अमेरिका के सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो० [illegible] समाज वह वैदिक अग्नि (Promethean Fire) है जो तब तक शांत नहीं हो सकती जब तक कि वह संसार से पाप, अत्याचार, अनाचार, अविद्या और अन्धविश्वास को जला कर भस्म न कर दे।"

ईसाइयों द्वारा पहाड़ी इलाकों के वनजातियों एवं हरिजनों के धर्म-परिवर्तन का कार्य चल रहा है, वह बड़ा आपत्तिजनक है। इससे भारतीय संस्कृति पर आघात पहुंच रहा है। इसलिए हमें आदिवासियों एवं हरिजनों में जा कर तथा उनके बीच सेवा कार्य कर एवं वैदिक धर्म का प्रचार कर उन्हें विधर्मी तथा भारतीयता का शत्रु होने से बचाना है। हमारा वेद महान् है, हमारा धर्म महान् है हमारी संस्कृति महान् है। अवश्य ही हम अपने उद्देश्य में कृतकार्य होंगे। महाकवि इकबाल के शब्दों में मैं यह कहना चाहता हूं :—

यूनान, मिस्र, रोमा सब
मिट गए जहां से।
लेकिन है बाकी अब
तक नामोनिशां हमारा॥
कुछ बात है कि हस्ती
मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन
दौरे जमां हमारा॥

भारत प्रजातन्त्र देश है। यहां की बहुसंख्यक जनता के विचारों के अनुसार भारत सरकार के लिए कार्य करना अपेक्षित है। बहुसंख्यक जनता की भावना को कुचलना प्रजातन्त्र के साथ घोर अन्याय करना है। धर्म-निरपेक्ष राज्य (Secular state) का यह कर्त्तव्य नहीं कि वह अल्पसंख्यक मतावलम्बियों के अत्याचार-अनाचारों को प्रोत्साहन दे और हिन्दुओं को संकुचित विचारयुक्त कह कर उनकी उपेक्षा करें।

भारत की बहुसंख्यक जनता गौ हत्या को देखना नहीं चाहती, पर भारत सरकार धर्म-निरपेक्षता की दुहाई दे कर इस ओर दृष्टिपात भी नहीं करना चाहती। बहुसंख्यक जनता ईसाइयों की खुराफातों को बन्द करना चाहती है, पर भारत सरकार ईसाइयों को प्रश्रय दे रही है। नागालैण्ड में वहां की जनता से समझौता करने के लिए पादरी माइकल स्काट को आमंत्रित कर उनको सबसे अधिक महत्व दिया गया जबकि ईसाई मतावलम्बी होने के कारण वह भारतीयता का शत्रु है और नागालैण्ड की भारत से पृथक् ईसाई राष्ट्र बनाने का स्वप्न देखता रहा है।

पाश्चात्य संस्कृति में आत्मा नहीं

श्रीयुत ओम्प्रकाश जी त्यागी

यूरोपीय [illegible] की सुन्दर [illegible] सड़कों, विशाल [illegible] चका-चौंध पैदा करने वाले आवासों, सुहावने बगीचों, तालाबों, समुद्री-किनारों इन सबके मध्य भागती हुई कारों की लम्बी कतारों और मूल्य-वान वस्त्रों में और वर्ण सुन्दर नर-नारियों को देखकर मेरे मुंह से हठात् निकल गया—'यह वह स्वर्ग है जिसकी कल्पना भिन्न २ धर्मा-वलम्बियों ने अपने २ धर्म-ग्रन्थों में की है।" अपना निर्धन भारत और यहां के मैले-कुचैले, वस्त्रहीन, काले-कलूटे नरक और नरकवासी के रूप में प्रतीत होने लगे और भारतवासी होने के लिये अपने भाग्य पर दया का मन में संचार होने लगा। पुरुष की तुलना में अपने देश की दयनीय अवस्था पर रुक रुककर क्रोध, रोष एवं विवश लौटते ही क्रान्ति करने की भावनाओं का उदय होता था, परन्तु ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया और मैं इंगलैण्ड यूरुप के बाह्य आक-र्षक आडम्बर के पीछे झांककर वहां के जन-जीवन को देखने में समर्थ हो सका तो मेरी आन्तरिक दयनीय अवस्था ने स्वाभिमान, देशाभिमान और आत्मगौरव का रूप धारण कर लिया। फिर मुझे यूरुप के चाक्चिक्य नर-नारियों पर दया व घृणा का भाव आने लगा और अपने देश के निर्धन व नंगे लोगों की हड्डियों के पीछे देवत्व का गुण दिखाई देने लगा।

मेरी आन्तरिक भावनाओं में इतना आकाश-पाताल जैसा अन्तर कैसे हुआ? और वह कौन घटनाये थीं जिन्होंने मुझे कुछ का कुछ बना दिया? इन प्रश्नों का इस छोटे से लेख में उत्तर देना कठिन है, परन्तु फिर भी कुछ घटनायें अपनी मान्यता की पुष्टि में देना उचित समझता हूं। यूरुप और विशेषकर इंगलैण्ड में आपको वहां की बसों व रेलगाड़ियों में देखने को मिलेगी कि नर-नारियों से खचाखच भरी होने पर भी वहां एक शब्द सुनाई नहीं देगा। सभी या तो समाचार-पत्र या किताब पढ़ने का बहाना कर रहे होंगे या मिट्टी की मूरत की भांति गुम-सुम बैठे होंगे। उनकी चुप्पी को देखकर बाहर का अनजान व्यक्ति तो यही समझेगा कि वह बड़े अनु-शासन प्रिय हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि वहां का व्यक्ति अपने [illegible] बच्चों को छोड़ अन्यों के साथ [illegible] [illegible] करता या [illegible] परिचय प्राप्त करना [illegible] नहीं [illegible] है कि अंग्रेज सौ-दो-सौ मील तक आपके साथ [illegible] [illegible] [illegible], परन्तु वह आप से बात नहीं करेगा। यदि आप भी बोलना चाहेंगे तो प्रश्न का उत्तर देकर चुप हो जायगा। बहुत ही घनिष्ठता होने पर वह बात करता है।

जान-पहिचान व घनिष्ठता हो जाने पर भी एक अंग्रेज जब कुछ वस्तु खाने बैठेगा तो निःसंकोच भैंस-भाव की भांति खाने बैठ जायगा। आप से पूछने या आप को खिलाने की बात उसके मस्तिष्क में आवेगी ही नहीं।

एक दिन की घटना है कि मैं एक अंग्रेज परिवार में मिलने गया था। वहां अचानक उस अंग्रेज महिला के माता-पिता भाई आ गये। अपने माता-पिता के आ जाने पर महिला भारत की भांति प्रसन्न हो कर उनकी सेवा करेगी और चाय ही नहीं अपितु जब तक भोजन न करावेगी तब तक चैन न लेगी, ऐसी आशा थी, परन्तु वह बैठी हंस-हंसकर बातें करती रहीं, और उसने चाय तक को उनसे नहीं पूछा। उसके माता-पिता-भाई से चाय को क्यों नहीं पूछा? उसने कहा कि चाय को पूछने का प्रश्न ही नहीं उठता है, क्योंकि उनको न तो मैंने बुलाया था, और न वे ही मुझे खबर करके आये थे।" जब मैंने यह कहा कि उन्होंने बुरा माना होगा तो उसने हसते हुये कहा—मिस्टर त्यागी यह भारत नहीं इंगलैण्ड है। ऐसी बातों पर यहां कोई बुरा नहीं मानता है क्योंकि यहां सब जानते हैं कि किसी के यहां बिना-बुलाये जाने पर चाय या खाना नहीं मिलेगा।

बिना स्वार्थ दूसरों को खिलाना इंगलैण्ड यूरुप के लोग जानते ही नहीं हैं। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि इंगलैंड में कोई किसी को खिलाता-पिलाता ही नहीं है। खिलाते-पिलाते हैं, परन्तु खिलाने-पिलाने पर बदले में खाने और पीने की आशा रखकर ही दूसरों को खिलाते-पिलाते हैं। यदि आप किसी के घर खा आये और बदले में उसे [illegible] भूल गये तो फिर निश्चित रूप से वह आप को किसी दिन टोकते हुये अपमानित कर देगा। [illegible] [illegible] [illegible] हैं तो [illegible] दूर रहते हैं कि बदले में आप खिलाने में असमर्थ हैं तो फिर खाने से पूर्व ही आप को भेंट के रूप में कोई वस्तु ले जाना होगा जो उस खाने-पीने की क्षति-पूर्ति कर सकें। तात्पर्य यह है मुफ्त में खाने-खिलाने का वहां रिवाज ही नहीं है। भारत की भांति वहां ऐसा भी नहीं है कि अपनी धर्मपत्नी से बिना पूछे किसी को घर पर खाने को ले आवे। यदि ऐसा करने का किसी पति ने साहस किया तो फिर पति-पत्नी के बीच सप्ताह भर तक झगड़ा चलता रहेगा। अतिथि को खाना तो मिलेगा ही नहीं।

रेल-बसों में चलने वाले यात्री ही आत्महीन हो सो बात नहीं है—वहां भारत की भांति पड़ोसियों के साथ सुख-दुःख एक होकर चलने या पड़ोसी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने की भी आदत नहीं है। वर्षों से पड़ोस में रहने वाला व्यक्ति अपने पड़ोसी का नाम व परिचय जानता हो ऐसा व्यक्ति इंगलैंड में ढूंढने पर ही मिल सकेंगे। इंगलैंड में ऐसी घटनायें बहुधा होती रहती हैं कि पड़ोसी मर गया परन्तु उसके पड़ोसी को उसका ज्ञान तब तक नहीं हुआ जब तक दूध वाले ने यह शिका-यत नहीं की कि कई दिनों से उसका पड़ोसी अपने दूध की बोतल अपने दरवाजे पर से नहीं उठा रहा है। दूध वाले की शिकायत पर पुलिस को फोन किया गया और पुलिस ने आ कर दर्वाजा खोलकर पता लगाया देखा कि पड़ोसी मरा पड़ा है।

पाश्चात्य संस्कृति की आत्म-हीनता के दर्शन वहां के अस्पतालों व बूढ़ा-घरों में होते हैं जहां शिक्षित धनी लड़के-लड़कियों के माता-पिता होते भी बूढ़ा-बूढ़ी अनाथों की भांति अपनी मृत्यु की बाट जोहते रहते हैं।

एक दिन की बात है कि मैं लन्दन के एक बगीचे में घूमने चला गया तो वहां एक तालाब के किनारे बैंचों पर अधिकांश बूढ़े-बूढ़ी ही बैठे थे मैं भी एक बैंच पर जा बैठा। उस बैंच पर ७० वर्षीय एक बूढ़ा और ६० वर्षीय उसकी धर्मपत्नी बैठी थी। पूछने पर ज्ञात हुआ कि उनके दो लड़के अपनी २ जगह काम करते हैं और दोनों पांच-पांच हजार शिलिंग प्रतिमास वेतन पाते हैं, परन्तु वह अकेले ही रहते हैं और लड़के उनकी सहायता नहीं करते जब मैंने उन्हें यह बतलाया कि भारत में अपने बूढ़े माता-पिता की सेवा करना बच्चे अपना सौभाग्य मानते हैं तो उनकी आंखों में आंसू आ गये। और वह आश्चर्य के साथ भारत की समाज व्यवस्था की जानकारी करने लगे।

इंगलैंड यूरुप में बच्चे माता-पिता के साथ रहते हों यह बड़े सौ-भाग्य की बात समझी जाती है, परन्तु साथ रहते हुये भी, रहते स्वतन्त्र ही हैं। और उन्हीं माता-पिता के बच्चे बहुधा साथ रहते हैं जिनके पास धन-सम्पत्ति होती है, तथा वह अपने मन में यही भगवान से प्रार्थना करते रहते होंगे कि भगवान् शीघ्र उन्हें मृत्यु की गोद में भेज दे ताकि वह उनके धन-सम्पत्ति के शीघ्र मालिक बन सकें।

इंगलैंड यूरुप में माता-पिता और बच्चों या पड़ोसियों के मध्य ही आत्महीनता का व्यवहार होता हो सो बात नहीं अपितु स्त्री-पुरुष के मध्य भी आत्मीयता के स्थान पर स्वार्थ ही प्रधान होता है। यूरुप में विवाह-संस्कार दो शरीर मिलन का नाम है आत्म मिलन का नहीं है। इसका सही ज्ञान मुझे उस दिन हुआ जब एक भारतीय की अंग्रेज पत्नी से मैंने यह पूछा कि उसने एक काले भारतीय को पति के रूप में क्यों चुना है। उसने उत्तर देते हुए कहा कि—

भारतीयों मे अंग्रेजों की अपेक्षा यह गुण सराहनीय है कि वह जिस लड़की का हाथ एक बार पत्नी के रूप में पकड़ लेते हैं तो फिर जीवन पर्यन्त उसे नहीं छोड़ते हैं, परन्तु इंगलैंड में गाजर-मूली की भांति पति-पत्नी चुने और छोड़े जाते हैं।

२—भारतीय जो कमाता है अपनी पत्नी को दे देता है और अपना अलग हिसाब न रखकर पत्नी को ही घर का मालिक बना देता है।

३ भारतीय अपनी पत्नियों से नौकरी कराना अच्छा नहीं समझते।

४—भारतीय पति-पत्नी इंगलैंड की भांति या मित्रों की भांति नहीं रहते अपितु एक रूप होकर रहते हैं।

यह है पाश्चात्य संस्कृति का स्वरूप, परन्तु दुर्भाग्यवश इसी आत्म-हीन संस्कृति को भारत के नेताओं और शिक्षित वर्ग ने अपना आदर्श माना हुआ है और समूचे देश को इसी संस्कृति के रंग में रंगने का साधन बना लिया है। वह आत्मीयता से पूर्ण भारतीय संस्कृति की लाश पर पाश्चात्य संस्कृति का झण्डा लहराने के दिन रात स्वप्न देखते हैं। मेरी दृष्टि में यह भारत का दुर्भाग्य ही है और अमूल्य हीरों को फेंक कर चम-कते हुये शीशे के टुकड़ों को अपनाने के समान है।

शूद्र का कार्य भी महान् है

श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम०ए०एल०टी०

डी० वी० कालेज, गोरखपुर

शूद्र का क्या कार्य और धर्म है। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में लिखा है "शूद्र को योग्य है कि निन्दा, ईर्ष्या, अभिमान आदि दोषों को छोड़ के ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की सेवा यथावत् करना और उसी से अपना जीवन करना यही एक शूद्र का गुण कर्म है।"

वास्तव में स्वामी दयानन्द का वर्ण व्यवस्था के विषय में यह विचार था कि ब्राह्मणादि वर्ण गुणकर्म स्वभावानुसार होने चाहिए जन्म के अनुसार नहीं। इसी लिए उन्होंने मनुस्मृति १०।६५ का प्रमाण देते हुए कहा :—

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्। क्षत्रियाज्जात मेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।

जो शूद्र कुल में उत्पन्न हो के ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य के समान गुण कर्म स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाय, वैसे ही जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ हो और उसके गुण, कर्म, स्वभाव शूद्र के सदृश हो तो वह शूद्र हो जाय, वैसे क्षत्रिय वा वैश्य के कुल में उत्पन्न हो के ब्राह्मण ब्राह्मणी वा शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र हो जाता है। अर्थात् चारों वर्णों में जिस २ वर्ण के सदृश जो-जो पुरुष वा स्त्री हो वह वह उसी वर्ण में गिनी जावे। आपस्तम्ब के सूत्र निम्नरूप में स्वामी दयानन्द ने लिखे हैं:—

धर्म चर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ, अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णः जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जाति परिवृत्तौ ॥

धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तम २ वर्णों को प्राप्त होता है और वह उसी वर्ण में गिना जावे जिसके योग्य हो। वैसे अधर्माचरण से पूर्व २ अर्थात् उत्तम २ वर्ण वाला मनुष्य अपने से नीचे वाले वर्णों को प्राप्त होता है। और उसी वर्ण में गिना जावे। पुरुषों के समान स्त्रियों की भी व्यवस्था समझनी चाहिए। अर्थात् गुण कर्म और स्वभाव से ही वर्ण व्यवस्था का व्यवहार होना चाहिए। इससे किसी प्रकार की हानि या वर्ण संकरता आदि नहीं हो सकती है। स्वामी जी ने आगे लिखा है कि "यह गुण कर्मों से वर्णों की व्यवस्था कन्याओं की सोलहवें वर्ष और पुरुष की पच्चीसवें वर्ष की परीक्षा में नियत करनी चाहिए और इसी क्रम से अर्थात् ब्राह्मण वर्ण का ब्राह्मणी, क्षत्रिय वर्ण का क्षत्रिया, वैश्य वर्ण का वैश्या, शूद्र वर्ण का शूद्रों के साथ विवाह होना चाहिए, तभी अपने अपने वर्णों के कर्म और परस्पर प्रीति भी यथायोग्य रहेगी।"

इस प्रकार शूद्रों के प्रति स्वाभाविक जो हीन समझने की भावना प्रचलित थी उस पर गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की आवाज उठाकर जो क्रान्ति स्वामी दयानन्द ने की वह अत्यन्त महत्वपूर्ण थी और उससे शूद्रों को जन्मजात हीन समझने की भावना को गहरा धक्का लगा।

शतपथ ब्राह्मण १३-६-२-१० में शूद्र को श्रम का रूप बताया गया है। स्वामी दयानन्द का विचार यह था कि मनुष्य को अपनी रुचि, गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार समाज की सेवा का भार अपने ऊपर लेना चाहिए। सेवा का काम तुच्छ नहीं, हीन नहीं है। वर्ण में श्रेष्ठ और कनिष्ठ का भाव जिस रूप में लोग मानते थे वह नहीं है। अर्थात् सेवा के सारे कर्मों की कीमत अपने-अपने स्थान पर समान है।

समाज को समयानुकूल विचार देने वाला मनुष्य जितना बड़ा है समाज को अनाज देने वाला किसान भी उतना ही महत्वपूर्ण है। समाज की रक्षा करने वाला योद्धा क्षत्रिय जितना बड़ा है, उतना ही बड़ा समाज को वस्त्र देने वाला जुलाहा, और जूते देने वाला चमार, पाखाना सड़क साफ करने वाला मेहतर भी उपयोगी है। पाठशाला का शिक्षक जितना महत्वपूर्ण है, भोजन पकाने वाला रसोइया, बर्तन मांजने वाली दाई, कपड़ा धोने वाला धोबी भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इस संसार के सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए ईश्वर सैकड़ों रंग और गन्ध के फूल खिलाता है। इस संसार में सैकड़ों गुणकर्म के व्यक्ति भी भेजता है। बगीचे में सैकड़ों फूल होते हैं, लेकिन कौन से फूल अधिक महत्वपूर्ण और योग्यता वाले हैं यह कहना कठिन है। वैसे ही समाज में कौन किस समय अधिक महत्वपूर्ण है, यह हमें अवसर को देखकर निर्णय करना होगा। जिस प्रकार एक बगीचा गुलाब, मोगरा, जूही आदि के साथ-साथ गेंदा आदि के फूल भी होने चाहिए तभी बगीचा अधिक शोभित होगा उसी प्रकार मानव समाज में यदि सभी एक गुण कर्म स्वभाववाले हों तो वहां जीवन बिताना कितना नीरस और कितना कठिन हो जायेगा। इसलिए शूद्र के प्रति तुच्छता की भावना समाज को और उनको अपने हृदय से निकाल फेंकनी चाहिए। शूद्रों के कार्य करके अनेक व्यक्तियों ने सन्त की उपाधि प्राप्त की है। कबीर तथा उनके अनुयायी कपड़ा बुनते थे, गोरा कुम्हार मटके बनाता सांवता माली सब्जी बोता था, सेना नाई हजामत बनाता था, जनाबाई अनाज पीसती थी, तुलाधार वैश्य भी ऐसा ही कुछ करता था। अतः शूद्र के प्रति घृणा की भावना मन से हटा देनी होगी। यह स्वामी दयानन्द का विचार था और यही कारण था कि गोहाटी की कांग्रेस में जब अछूतोद्धार की चर्चा चली तो महर्षि के अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द ने प्रस्ताव रखा कि प्रत्येक उपस्थित नेता अपने-अपने घरों में जाने के बाद एक शूद्र या दूसरे शब्दों में अछूत नौकर रखे। अछूतोद्धार के समर्थक बगलें झांकने लगे और स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी तथा अपने घर में इसे व्यवहृत कर दिखाया।

वेद में भी शूद्रों के महत्व को माना गया है और उनके कर्मों की ओर भी संकेत किया गया है। यजुर्वेद के ३१। ११ मन्त्र में कहा है:—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याम् शूद्रोऽजायत।

(ब्राह्मणः) ब्राह्मण (अस्य) इस विराट् [समाज] का (मुखम्) मुख स्थानीय है, (राजन्यः) क्षत्रिय (बाहूकृतः) बाहु समान है (यत्) जो (वैश्यः) वैश्य है (तद् अस्य ऊरू) वह इसके मध्य देह के तुल्य है और (शूद्रः) शूद्र (पद्भ्यां अजायत) पैरों के समान प्रसिद्ध है।

इस मन्त्र में चारों वर्णों के कर्मों का आलंकारिक रूप में उल्लेख किया गया है और शूद्र को इस मन्त्र में बहुत महत्वपूर्ण और ऊंचा स्थान दिया गया है। जिस प्रकार हमारा शरीर पैरों के आश्रित रहता है, उसी प्रकार यह समाज शूद्र के आश्रित है। अर्थात् प्रकारान्तर से हमें वेद बताता है कि यह समाज शूद्रों के आधार से है। वेद में एक दूसरे स्थान पर कहा गया है:—

'पद्भ्यां भूमिः' यजु० ३१।१३

अर्थात् यह भूमि विराट् महापुरुष का मानो चरण है। भूमि क्योंकि सब का धारण पोषण करती है इसलिए उसे धरित्री या धरणी भी कहा जाता है फिर यजुर्वेद ३०। ५ मन्त्र में कहा गया है 'तपसे शूद्रम्' अर्थात् तप-कठोर कर्म करने में समर्थ शूद्र कहलाता है। 'तप' को कोई भी हीन कर्म नहीं कह सकता तो जो तपस्वी है, वह हीन कैसे? इन शूद्र लोगों को वेदों में नाना प्रकार के कार्यों को करने का संकेत किया गया है और उनकी प्रशंसा भी की गई है। ऋग्वेद ४। ३६।१ में आया है :—

अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्यो रथस्त्रिचक्रः परिवर्तते रजः। महत्तद्वो देव्यस्य प्रवाचनं द्यामृभव पृथिवीं यच्च पुष्यथ।

अर्थात् हे रथकारो, आपका बनाया घोड़ों के बिना चलने वाला अत. लगाम रहित, प्रशंसनीय तीन पहियों वाला रथयान पृथिवी और आकाश में सर्वत्र भ्रमण करता है जिससे आप द्युलोक और पृथ्वीलोक दोनों को पुष्ट करते हैं, अतः आपका यह दिव्य आश्चर्य करने वाले कर्म (महत्) महान् स्तुति करने योग्य है।

ऐसा रथ बनाने का आदेश है, जो भूमि और अन्तरिक्ष दोनों स्थानों में चल सके।

इसी प्रकार ऋग्वेद ५। ६। ५ लोहम् अथर्ववेद ८। २। १७ में नापित (नाई) अथर्ववेद १०। ७ आदि मन्त्रों में जुलाहा तथा बुनकरों की प्रशंसा और उनके कार्यों का उल्लेख किया गया है। इस प्रकार वर्णव्यवस्था का जो रूप वैदिक समाज में वर्णित है वह कितना आदर्श है और कितना महान् है।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द ने जिस प्रकार की वर्ण व्यवस्था का उल्लेख किया है, वह वर्तमान समाज के लिए भी उतनी आदर्श स्वरूप है जितनी प्राचीन काल में थी। प्लैटो ने उसे निम्नलिखित विभागों में बांटा है :—गार्डियन्स या फिलाफर्स सोल्जर्स तथा आर्टिजन्स इन भागों में बांटा है। हमें नाम से मतलब नहीं परन्तु इनके कर्मों के अनुरूप ही समाज का निर्माण होना चाहिए। जो वर्ण व्यवस्था आजकल समाज में प्रचलित है वह ठीक नहीं, वह अन्य नहीं जिसका निर्माण वैदिक संस्कृति ने किया था, जिसका समर्थन स्वामी दयानन्द ने किया था, हमें स्वामीजी के आदर्शों के अनुरूप वर्ण व्यवस्था का निर्माण करना चाहिए। तब न कोई छोटा और न कोई बड़ा होगा।

आर्यवीरदलसम्मेलन लुधियाना के अध्यक्ष

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी का अध्यक्षीय भाषण

आदरणीय मातृशक्ति, व आर्य बन्धुओ !

भारत और विशेषतया पंजाब की संकटापूर्ण वर्तमान परिस्थितियों में किये जा रहे इस महत्वपूर्ण सम्मेलन में जो आदर व सम्मान मुझे दिया गया है उसके लिये मैं आप सब का हार्दिक आभारी हूं। इस महत्वपूर्ण पद के उत्तरदायित्व को मैं अच्छी भांति निभा सकूंगा इसमें मुझे सन्देह है।

श्रद्धाञ्जलि

आज के इस पुनीत अवसर पर मैं अपना सर्व प्रथम कर्तव्य उन वीर हुतात्माओं के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं जिन्होंने पंजाबी सूबे की साम्प्रदायिक एवं अराष्ट्रिय मांग का विरोध करते हुए अपनी आत्म आहुति देदी।

संसार का कल्याण

समूचे मानव जाति के कल्याण की कल्पना महर्षि ने किस रूप में की यह उन्हीं के शब्दों में सुनना अच्छा रहेगा। अपने क्रान्तिकारी घोषणा-पत्र "सत्यार्थ प्रकाश" की भूमिका में ऋषि कहते हैं—

'आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं। यदि वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो जो बातें सबके अनुकूल सब मतों में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे।' ऋषि चाहते थे —

१. भारत प्रत्येक दृष्टि से स्वतन्त्र एवं प्रजातन्त्र प्रणाली को मानने वाला हो।

२ भारत का धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक ढांचा वैदिक धर्म व संस्कृति पर आधारित हो।

३. संस्कृत, भाषा व वैदिक साहित्य, शिक्षा का अनिवार्य अंग हो।

४. समूचे भारत की हिन्दी ही राष्ट्र-भाषा हो।

५. स्वदेशी व स्वदेशाभिमान यहां के प्रत्येक नागरिक के भीतर कूट २ कर भरा हो।

६. भारत में अच्छे धार्मिक, सदाचारी व देश-भक्त नागरिक तैयार करने के लिये यहां की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली हो।

७. जन्म, जाति, देश एवं वर्ण के आधार पर किसी को छोटा-बड़ा, ऊंच-नीच, छूत-अछूत न माना जाकर केवल गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर समाज की व्यवस्था हो।

८. भारत भौतिक व आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से समान रूप में समुन्नत हो।

९. भारत का प्रत्येक निवासी केवल अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझे।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

राज्य और सामाजिक क्रान्ति

महर्षि का दृढ़ मत था कि विदेशी दासता के विरुद्ध राज्य-क्रान्ति के साथ सामाजिक क्रान्ति का होना नितान्त अनिवार्य है। सामाजिक क्रान्ति अर्थात् मानसिक दासता को समाप्त किये बिना स्वतन्त्रता स्थाई व कल्याणकारी नहीं होगी ऐसा उनका दृढ़ विश्वास था। यही कारण था कि जहां महर्षि दयानन्द ने भारत के राजाओं और जनता में राज्य क्रान्ति की चिन्गारियां उत्पन्न की तो वहां उन्होंने सामाजिक क्रान्ति का भी शंख नाद बजा कर अन्धविश्वास, रूढ़िवाद, गुरु डम व मत मतान्तरों की जड़ों को भी खोदने का प्रयास किया।

आर्य समाज के पश्चात जिन लोगों के हाथों में स्वतन्त्रता आन्दोलन की बागडोर आई उनकी दृष्टि में राज्य क्रान्ति ही प्रमुख थी। सामाजिक क्रान्ति का महत्व उनकी दृष्टि में न था। वैदिक धर्म व संस्कृति उनकी दृष्टि में नगण्य थे, और उनकी मान्यता थी कि भारत की अपनी संस्कृति कोई न थी और न है। विभिन्न संस्कृतियों का मेल ही भारत की संस्कृति है ऐसी धारणा उनकी थी और आज भी है।

विदेशी षड्यन्त्र

'एक तो कड़वी फिर नीम चढ़ाई गई' वाली कहावत भारत में आज चरितार्थ हो रही है। एक ओर तो आदर्श व लक्ष्य-भ्रष्ट भारत स्वतः ही अपनी आत्मा का हनन कर रहा है, और यहां भाषा, धर्म, संस्कृति सभी की दुर्गति हो रही है, दूसरी ओर भारत की इस दयनीय अवस्था का लाभ उठाकर अमरीका, रूस, चीन, पाकिस्तान आदि देश इसकी बची खुची आत्म-शक्ति को समाप्त कर इसकी लाश पर अपने धार्मिक व सांस्कृतिक झण्डे खड़े करने के निमित्त नाना प्रकार के षड्यन्त्र रच रहे हैं, और इन षडयन्त्रों पर करोड़ों रुपया प्रति मास व्यय किया जा रहा है।

विदेशी ईसाई मिशनरी

विदेशी ईसाई मिशनरी इन्हीं राजनीतिक षड्यन्त्रों का एक अंग हैं और विदेशों से प्राप्त अपार धनराशि के बल पर वह यहां के निर्धन, अपढ़ व भोले लोगों का धर्म परिवर्तन कर उन्हें देश-द्रोह का पाठ पढ़ा रहे हैं। नागा-मिजो विद्रोह इन्हीं विदेशी ईसाई-मिशनरियों के राजनीतिक षड्यन्त्रों के स्पष्ट कुपरिणाम हैं।

अमरीका भारत फोर्ड फाउण्डेशन

भारत के धार्मिक व सांस्कृतिक ढांचे को नष्ट करने के लिये यों तो पहिले से ही कई फोर्ड फाउण्डेशन चल रहे हैं, परन्तु अब एक नई योजना अमरीका ने भारत पर थोपी है जिसके अनुसार अमरीका भारत को संस्कृति व सभ्यता का शिक्षण देगा। इसी प्रकार की योजना लेकर अब शीघ्र ही रूस भारत सरकार के सम्मुख उपस्थित होने वाला है। वही भारत जो किसी दिन संसार को धर्म, संस्कृति व सभ्यता का पाठ पढ़ाता था, आज रूस व अमरीका के स्कूल में अबोध अज्ञानी विद्यार्थी के रूप में संस्कृति व सभ्यता का पाठ सीखेगा। इस प्रकार बूढ़े भारत को अपने ही लोगों के हाथों किस प्रकार खिलवाड़ व अपमानित किया जा रहा है यह कल्पनातीत है।

भारत का भविष्य अन्धकार में

किसी देश का भविष्य उसके बच्चे ही हुआ करते हैं। इस आधार पर भारत का भविष्य कितना अन्धकारमय, भयावह व विनाशक है इसकी कल्पना साधारण मस्तिष्क करने में असमर्थ है। अधार्मिकता, नास्तिकता, चरित्रहीनता अनुशासनहीनता आदि दुर्गुण आज तीव्र गति के साथ हमारे बच्चों को ग्रसित कर रहे हैं। यही बच्चे जब कल का भारत बनायेंगे तो सरलता से अनुमान लगाया जा सकता है कि कल का भारत क्या होगा। इसमें बच्चों का दोष नहीं अपितु दोष भारत की धर्म व सदाचार हीन शिक्षा पद्धति का ही है।

भारत भयंकर संकट व खतरे में

भारत के समूचे इतिहास में इतना खतरा व संकट कभी नहीं आया जितना आज है। भारत के बाह्य एवं आन्तरिक शत्रुओं की संख्या भी इतनी कभी नहीं रही जितनी आज है।

परन्तु दुर्भाग्य इस बात का है कि भारत का समूचा ध्यान व शक्ति इसके बाह्य शत्रुओं पर केन्द्रित है और इसके आन्तरिक शत्रु निर्भय होकर भारत की जड़ों पर मट्ठा डाल रहे हैं। कौन नहीं जानता कि अकेले जयचन्द व मीर जाफर ने भारत की पीठ में छुरा भोंककर शताब्दियों के लिए भारत को दासता की बेड़ियों में जकड़ दिया था, परन्तु आज भारत में एक नहीं अपितु लाखों ऐसे जयचन्द व मीर जाफर भरे पड़े हैं जो प्रत्येक समय भारत की नौका को डुबोने का प्रयास करते रहते हैं।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य समाज का अन्तिम लक्ष्य कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात् संसार भर को आर्य अथवा वैदिक धर्मी बनाना है। संसार के कल्याणार्थ यही एक नारा हमें वेद भगवान् ने दिया है। मानव को मानव बना देने मात्र से संसार के समस्त अन्याय अत्याचार, शोषण व संघर्ष स्वतः समाप्त हो जायेंगे ऐसी वैदिक धर्म की दृढ़ धारणा है।

आर्य नवयुवकों को चुनौती

आज भारत में विदेशों से हजारों शिक्षित ईसाई अपने घर-बार व सुखों को लात मार कर वैदिक धर्म की लाश पर अपने झण्डे खड़े करने आये हैं और यहां जंगलों में अनेकों कष्टों को सहन करते हुए अपने लक्ष्य की पूर्ति कर रहे हैं। इस प्रकार वह आर्य जाति के धर्म-प्रेम, स्वाभिमान

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अन्न की भीषण समस्या का समाधान

आर्य जनों के हाथ में

—चतुरसेन गुप्त

सबसे पहले आप उत्तर प्रदेश सरकार के एक सूचना पंचांग की ओर ध्यान दें, यह पंचांग गतवर्ष प्रकाशित हुआ था। इसमें से कतिपय तथ्य आपके सामने प्रस्तुत हैं :—

१—पैंतीस करोड़ एकड़ भूमि में कृषि उत्पादन करते हैं।

२—गतवर्षों में देश में खेती की पैदावार बढ़ी है। पहली योजना में १७ प्रतिशत और दूसरे में २० प्रतिशत और तीसरी योजना में ३० प्रतिशत पैदावार बढ़ाने का लक्ष्य है।

३—एक एकड़ भूमि में अच्छी खेती द्वारा आप २५-३० मन गेहूं पैदा कर सकते हैं।

४—उसी एक एकड़ में आप ३००—४०० मन आलू या २५०-३०० मन गोभी टमाटर इत्यादि उगा सकते हैं।

यदि सरकारी पंचांग में लिखित उक्त आंकड़े ठीक हैं तो इसी आधार पर इस लेख में कुछ विचार प्रस्तुत हैं। कृपया ध्यान दें :—

अन्न की आवश्यकता और पूर्ति

१—दिल्ली में एक व्यक्ति को एक मास के राशन में ८ किलो आटा अर्थात् एक वर्ष में २॥ मन आटा मिलता है। किन्तु मैं इसे एक व्यक्ति के लिए अपर्याप्त मानते हुए इसे बढ़ा कर ४ मन मान कर हिसाब प्रस्तुत करता हूं।

जब एक एकड़ अच्छी भूमि २५-३०मन गेहूं उगलती है तो यह अन्न कम से कम ७ व्यक्तियों के लिये वर्ष भर को पर्याप्त है।

हमारे राष्ट्र की जन-संख्या ४५ करोड़ बताई जाती है किन्तु ४५ करोड़ के स्थान में ५६ करोड़ भी हों तो इतनी जन संख्या के भोजन के लिए ८ करोड़ एकड़ अच्छी भूमि पर्याप्त है जिसमे गेहूं, चना, चावल आदि उत्पन्न हों। यह आठ करोड़ एकड़ भूमि जहां ५६ करोड़ मानवों के लिये अन्न प्रदान कर सकती है वहां करोड़ों गायें आदि पशुओं के लिये चारा भी।

जैसा कि ऊपर बताया है कि हमारे देश में ३५ करोड़ एकड़ भूमि में कृषि होती है यदि यह ठीक है तो फिर देश मे अन्न संकट क्यों, भुखमरी क्यों और मंहगाई क्यों है—इस पर देशवासियों को विचार करना होगा।

आठ करोड़ एकड़ अच्छी भूमि से ५६ करोड़ व्यक्तियों के लिये अन्न और करोड़ों पशुओं के लिये चारा पैदा करने के पश्चात् २७ करोड़ एकड़ भूमि बचती है। इसमें आप देश के लिये प्रथम आवश्यक वस्तुऐं-गन्ना, कपास दालें जूट सब्जी और पशुओं के लिये दाना-चारा पैदा करें किन्तु सबसे पहले प्राथमिकता ८ करोड़ एकड़ अच्छी भूमि में अन्न पैदा कराने को ही दी जानी चाहिये।

किन्तु आज हो क्या रहा है जरा इस पर भी गम्भीरता से ध्यान देना होगा :—

अन्न पैदा करने की ओर उतना ध्यान नहीं दिया जाता, जितना गन्ना तम्बाकू, सब्जी और शराब के लिये अंगूर के उत्पादन की ओर दिया जा रहा है। स्मरण रहे – गन्ना, तम्बाकू, सब्जी, सिगरेट और शराब के बिना हम जीवित रह सकते हैं किन्तु अन्न के बिना नहीं।

२—अन्न का वितरण भी दोष पूर्ण है। किसी राज्य में अन्न सड़ रहा है और किसी में भुखमरी। अत. अन्न के लिये सारे देश को एक कर देना चाहिये।

३—गन्ने की पैदावार अत्यन्त कम करके अन्न की पैदावार बढ़ा देनी चाहिये। गन्ने की पैदावार में कृषक को अधिक लाभ है इसी लाभ के लोभ में कृषकों का अन्न की ओर उतना ध्यान नहीं जितना गन्ने की ओर। यदि सरकार कृषक को अन्न उत्पन्न करने पर सिंचाई के साधनों में पर्याप्त छूट देकर प्रोत्साहित करें तो किसान अन्न उत्पन्न करने में उत्साहित हो सकता है।

४—इसमें क्या औचित्य है कि हमारा देश चीनी पैदा करे और उसे विदेशों में बेचता फिरे, फिर विदेशों से अन्न के लिये भीख मांगता फिरे। अपनी इस दयनीय दशा पर हमें स्वयं विचार करना ही चाहिये।

५—हमारे देश में किसान हुक्का पीने के लिये यदा-कदा मामूली से खेत में तम्बाकू पैदा कर लेता था किन्तु अब अरबों रुपये के सिगरेट के व्यापार के लिये तम्बाकू की उत्पत्ति में लाखों करोड़ों एकड़ भूमि लगाई जा रही है। इतने पर भी विदेशों से तम्बाकू मंगाया जा रहा है।

मैं समझता हूं कि जब हम अन्न के लिये भीखमंगे बने हुये हों, मुट्ठी भर गेहूं और चावलके लिये विदेशियों के आगे हाथ पसारते हों तब हमें अपने मन में ग्लानि होनी चाहिये। हमारे देश को तम्बाकू जैसा मादक द्रव्यनहीं चाहिए जिसके विरोधी महर्षि दयानन्द और महात्मागांधी थे। इसे तो बिल्कुल ही बन्द कर देना चाहिये। यदि चीन अपने राष्ट्र की भलाई के लिये अफीम की उत्पत्ति पर अंकुश लगा सकता है तो हमारे देश को तम्बाकू पर अंकुश लगाने में क्या परेशानी है।

इसके दो लाभ होंगे। एक तो अन्न उत्पन्न करनेके लिये भूमि बचेगी और दूसरे मादक द्रव्य सेवन से जनता को छुटकारा मिलेगा। अब अकेली बम्बई नगर में ही पांच करोड़ की सिगरेट फूंक दी जाती है तब सारे देश का हिसाब अरबों पर पहुंचेगा।

यह गौरव की बात है कि राष्ट्र भर के आर्य समाज के सदस्य हुक्का, सिगरेट, बीड़ी आदि से सर्वथा दूर हैं। एक भी ऐसा उदाहरण नहीं कि किसी आर्यसमाज के सदस्य या अधिकारी हुक्केबाज हों या सिगरेट का धुंआ उड़ाते हों। जब ऐसा है तो देश भर के आर्य जन ही आज की खाद्य समस्या के समाधानार्थ तम्बाकू से भूमि छीनकर उसमें अन्न पैदा करायें चीनी से भूमि छीन कर उसमें चावल पैदा करायें। मुर्गियों से भूमि छीन कर उसमें गोदुग्ध उत्पादन केन्द्र स्थापित करें।

यह तभी सम्भव है जब आर्य जनता और आर्यनेता केवल इसी समस्या के समाधानार्थ अपनी शक्ति को संगठितकर एक देश व्यापी आन्दोलन छेड़ दें। सरकार को सुझाव दें, किसान को सहायता दिलावें, सिगरेट के उत्पादन केन्द्रों को समाप्त कराने में जो भी उपाय सम्भव हो करें। मुर्गी, मछली, अण्डे का हर प्रकार से विरोध करके गो आदि दुधारु पशुओं की राष्ट्र में भारी वृद्धि करें तभी खाद्य समस्या का समाधान सम्भव है।

यदि ऐसा हुआ तो फिर राष्ट्र में परिवार नियोजन योजना का स्वयं कचूमर निकल जावेगा। आर्य जनसंख्या घटने से बचेगी। अनैतिकता समाप्त होगी। फिर इस पर सरकार को भी करोड़ों रुपया बरबाद करने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

शुभ-विवाह

आदर्श आर्य दम्पति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य श्री बाबू सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट की सुपुत्री कु० सविता देवी का शुभ विवाह चि० नरेन्द्र कुमार के साथ पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के गण-मान्य व्यक्तियों एवं आर्य नेताओं ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया। सार्वदेशिक परिवार की ओर से हार्दिक मंगल कामना।

(पृष्ठ ९ का शेष)

व सम्मान को चुनौती दे रहे हैं। यदि आर्य जाति में अपने पूर्वजों के खून का एक बिन्दु भी शेष है, यदि उनमें अपने देश धर्म की महानता व रक्षा का भाव जाग्रत है तो उन्हें तुरन्त इस विदेशी चुनौती को स्वीकार करना चाहिए, और तब तक आराम से न बैठना चाहिए जब तक वह भारत से विदेशी धर्मों व विदेशी मिशनरियों का पलायन न कर दें।

भारत मां की मांग

एक ओर जहां भारत की सीमाओं की रक्षार्थ भारत मां को महाराणा प्रताप, शिवा, वीर बन्दा वैरागी की भावना वाले बलिदानी वीरों की आवश्यकता है तो वहां भारत की आत्मा वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा व प्रसार के लिये गुरु रामदास, महर्षि दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द व लेखराम जैसे मिशनरी भावना वाले प्रचारकों की आवश्यकता है।

आर्य समाज भारत में वैदिक राष्ट्र व राज्य की स्थापना के लिए प्रयत्न कर रहा है, और उसके लिए देश का वातावरण तैयार कर राजनीति को प्रभावित करने का प्रयास कर रहा है, और वैदिक धर्म व संस्कृति के समर्थक राजनीतिज्ञों व राजनीतिक संस्थाओं का समर्थन कर रहा है, परन्तु यदि दुर्भाग्यवश कभी ऐसी स्थिति आ गई कि अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज को स्वयं राजनीति में उतरना आवश्यक हो गया तो आर्य समाज निश्चित रूप से राजनीतिक क्षेत्र में उतरेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

समझौता वाद नहीं चाहिये

आर्य समाज की विशेषता यह है कि वह असत्य, अन्याय व पाखण्ड के साथ समझौता करने को विनाश का मार्ग मानता है। लोग इनको प्रसन्न करने के लिये सरल मार्ग समन्वयवाद व समझौतावाद की नीति को अपनाना चाहते हैं। परन्तु महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज को यह उपदेश दिया है कि अन्याय व असत्य के साथ समझौता करने के बजाय इनसे लड़ते हुये मृत्यु का आलिंगन करना ही श्रेयस्कर है।

मैं यहां यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि आर्य समाज भारत की आत्मा आर्य भाषा, वैदिक धर्म व संस्कृति के प्रश्न पर झुककर भी किसी के साथ समझौता नहीं करेगा। भारत का जो व्यक्ति व संस्था वैदिक धर्म व संस्कृति की मान्यता देगा आर्य समाज का उसे ही पूर्ण समर्थन प्राप्त होगा, और जो इनका विरोध करेगा उनका यह हर प्रकार से डट कर विरोध करेगा फिर चाहे इसका कुछ भी परिणाम क्यों न हो।

जीवन मरण का प्रश्न

भाषा किसी भी जाति के धर्म, संस्कृति, इतिहास व साहित्य का आधार होती है। भाषा के छिन जाने से धर्म, संस्कृति, इतिहास व साहित्य स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं।

कुछ लोगों को भ्रान्ति है कि पंजाबी सूबा के बनजाने पर आर्य समाज का संघर्ष समाप्त हो गया है। परन्तु वास्तविकता यह है कि आर्य समाज का संघर्ष तब तक समाप्त नहीं हो सकता जब तक पंजाब में रहने वाले हिन्दुओं की भाषा धर्म व संस्कृति पूर्णतः सुरक्षित नहीं हो जाते हैं।

देश-भक्ति का अपमान

दुर्भाग्यवश सत्य, अहिंसा का नारा लगाने वाली कांग्रेस सरकार के हाथ ही सत्य व अहिंसा का गला घोटा जा रहा है। कांग्रेस सरकार की दुर्बल व तोषक नीति के कारण देश भर में साम्प्रदायिक देश-द्रोही तत्व पनप रहे हैं और वह देश की एकता व सुरक्षा को छिन्न-भिन्न कर रहे हैं। भारत विभाजन व पंजाब विभाजन इसी कमजोर नीति के कुपरिणाम हैं। इसी के कारण नागालैंड, फिजो द्राविड़ स्थान के नाम पर देश-विभाजन की मांग उपस्थित हो रही है।

आर्य धर्मार्थ औषधालय

पानीपत गत आठ वर्षों से जनता की सेवा कर रहा है। गतवर्ष १९६५ में २११९१ रोगियों ने लाभ उठाया। औषधालय के प्रधान चिकित्सक कविराज हरवंश जी दीक्षित आयुर्वेदाचार्य सेवा भाव से रोगियों की चिकित्सा करते हैं। औषधालय के मैनेजर श्री सुमेरचन्द्र जी आर्य तथा अन्य अधिकारी गण उन्नति के लिए प्रयत्नशील हैं।

Suave
in
a
Suit

आर्य परिवार सम्मेलन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद ने गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी गंगा के रमणीय तट-ब्रजघाट पर एक द्विदिवसीय आर्य परिवार सम्मेलन मनाने का निश्चय किया है। इस सम्मेलन में जहां साप्ताहिक-यज्ञ-सन्ध्या-सत्संग परिचय एवं विचार गोष्ठी का कार्य-क्रम रहताहै वहां आर्य परिवारों का पारस्परिक परिचय इस शिविर की प्रमुख विशेषता रहती है।

इस पुनीत अवसर के लिए हम सभी आर्य परिवारों को सादर सप्रेम निमन्त्रित करते हैं।

प्रचार

आर्य समाज अहमदाबाद (हैदराबाद) दक्षिण की ओर से वैदिक धर्म प्रचार की विराट योजना चल रही है। अनेक स्थानों पर श्री ओम्प्रकाश जी भजनोपदेशक के मनोहर भजनों को जनता तनमय होकर सुन रही है।

—आर्य समाज ओखा मढ़ल का वार्षिकोत्सव भी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ।

स्थापना

आर्य समाज मालेगांव (नासिक) की स्थापना श्री स्वामी विशुद्धानन्दजी, श्री पं० यज्ञदत्त जी शर्मा आदि विद्वानों के सहयोग से हुई।

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी गढ़वाल

२५ मई १९६६ को आ० स० मंदिर पंचपुरी (गढ़वाल) में समाज की २५ वर्षीय सेवाओं के उपलक्ष में उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर श्री हरिशर्मा जी साहित्य रत्न की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन हुआ और समाज का प्रकाशित पच्चीस वर्ष का वृत्तान्त वितरण किया गया। श्री शान्ति प्रकाश जी 'प्रेम' मन्त्री, श्री सन्तनसिंह जी आर्य, श्री धर्मचन्द आर्य, श्री रघुनाथसिंह जी, श्री शर्मा जी और श्री फतेहसिंह जी आर्य के आर्य संगठन को सुदृढ़ बनाने तथा पिछड़े हुए इन पर्वतीय क्षेत्रों में आर्य समाज के प्रचार कार्य को प्रगति देने के लिये सार गर्भित भाषण हुये। समाज के सामने क्षेत्र के प्रसिद्ध स्थान स्युंसी बजार में एक भव्य आर्य समाज मन्दिर बनाने की योजना भी है। इन कार्यों के लिये शिरोमणि आर्य संस्थाओं का सहयोग लिया जायगा, समाज के पदाधिकारियों ने आमन्त्रित आर्यजनों का जल-पान से सत्कार किया।

आर्य युवक सम्मेलन

अखिल भारतीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में श्री दयानन्द जी आर्य एडवोकेट आगरा की अध्यक्षता में आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली में ता० २५-६-६६ को रात्रि के ८ बजे आर्य युवक सम्मेलन होगा। उद्घाटन भाषण युवक हृदय सम्राट श्रीपं०नरेन्द्र जी हैदराबाद का होगा। विशेष वक्ता श्री प्रतापसिंह शूरजीबल्लभदास प्रधान सार्वदेशिक, श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसत्सदस्य, श्री रामनारायण जी शास्त्री बिहार और श्री के० नरेन्द्र होंगे।

आर्य समाज खंडवा

ग्राम कोरगलाव में बलाही जाति सुधार समिति की ओर से आयोजित सभा में, आर्य समाज खंडवा की ओर से श्री बी० एस० भंडारी प्रधान, श्री रामचन्द्र जी आर्य उ० प्र० श्री पं० हरिश्चन्द्र जी तिवारी कोषाध्यक्ष, डा० अक्षय कुमार वर्मा मन्त्री आदि के (ईश्वर भक्ति, उत्तम शिक्षा द्वारा ही मनुष्य उन्नति कर सकता है, छूआ-छूत, जाति-पाति, ऊंच-नीच के मतभेदों से हिन्दू जाति का पतन हुआ) इन विषयों पर भाषण हुए। अन्त में आर्यसमाज खंडवा के प्रचारक सुखराम आर्य सिद्धान्त शास्त्री ने (ईश्वर भक्ति के नाम पर। अजगर करे न चाकरी पछी करे न काम। इन थोथे सिद्धान्तों ने ही मनुष्य को अकर्मण्य बना दिया, मनुष्य श्रेष्ठ कर्मों द्वारा महान् बन कर मोक्ष तक को प्राप्त कर सकता है।)इन विषयों पर सारगर्भित भाषण दिया उपरोक्त भाषणों का ग्रामीण जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

धन्यवाद

श्री ज्ञानदेव राव जी स्वर्णकार आर्य नारी ने ५ प्रति सार्वदेशिक तथा श्री मन्त्री जी आर्य समाज जोगबनी ने १० प्रति प्रति सप्ताह के लिए आर्डर भेजे हैं। —धन्यवाद

आशा है कि प्रत्येक आर्य बन्धु इसी प्रकार सार्वदेशिक की उन्नति में योग देंगे।

—प्रबन्धक

चुनाव

— आर्य समाज राजौरी गार्डन, नई दिल्ली के निर्वाचन में श्री सरदारी लाल जी मधोक प्रधान, श्री नन्दकिशोर जी भाटिया मन्त्री एवं श्री हरिबाबू जी गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज, लाजपतनगर के निर्वाचन में श्री सोमदत्त जी प्रधान, श्री प्राणनाथ जी नई मन्त्री तथा श्री गुरुदत्त जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज, रांची के निर्वाचन में श्री सूरजमल जी जालान प्रधान, श्री चिरंजीलाल जी बागला उपप्रधान, श्री दयाराम जी मन्त्री, श्री रामस्वरूप जी आर्य उपमन्त्री एवं श्री टेकचन्द जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज, कलम के निर्वाचन में श्री देवदत्त जी मोहीते प्रधान, श्री अच्युतरावजी वेदपाठक उपप्रधान, श्री डा० एन० एस० गायकवाड़ मन्त्री तथा श्री मनमथ अप्पा भंडगे कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज के प्रचारार्थ कलम तालुका प्रचार समिति की स्थापना की गई जिसमें प्रधान और मन्त्री के साथ श्री विश्वनाथ राव चह्वाण और आर० महामुनि जी सम्मिलित किये हैं।

— आर्यसमाज, नया बांस दिल्ली के वार्षिक निर्वाचन में निम्न पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—श्री देवकीनन्दन जी, उपप्रधान—१ श्री मनोहर जी विद्यालंकार, २ श्री प्रेमचन्द जी। मन्त्री—श्री धर्मपाल जी सहगल, उपमन्त्री—१ श्री नन्दकिशोर जी, २ श्री ओमप्रकाश जी, कोषाध्यक्ष—श्री पूर्णचन्द्र जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्राणनाथ जी।

श्री शर्मा पुनः प्रधान चुने गये

छिन्दवाड़ा में २९ मई ६६ को आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश-विदर्भ का वृहद् अधिवेशन भी हुआ। सभा ने छत्तीसगढ़ के अकाल पीड़ित क्षेत्रों में अन्न वितरण की योजना बनाई जिसके अनुसार अभावग्रस्त ग्रामों के असहाय लोगों को एक समय भोजन दिया जायगा। वृहदधिवेशन में सभा के पदाधिकारियों का निर्वाचन भी हुआ। पं० विश्वम्भर प्रसाद शर्मा तीसरी बार पुनः सर्व सम्मति से सभा के प्रधान निर्वाचित किये गये। स्वामी दिव्यानन्द जी, श्री शिवरामजी बक्शी, श्री जयदेव बिरमानी भिलाई तथा श्री शान्तिकुमार जी अकोला सभा के उपप्रधान एवं श्रीकृष्णजी गुप्त प्रधान मन्त्री चुने गये। श्री नरदेव जी आर्य पुस्तकाध्यक्ष, श्री जयसिंह राव गायकवाड़ कोषाध्यक्ष, इसी प्रकार श्री सत्यव्रत जी शास्त्री तथा श्रीमती यशोदा देवी पाराशर उपमन्त्री चुने गये। इस अवसर पर मध्यप्रदेश विदर्भ की अनेक समाजों के प्रतिनिधि पधारे थे और आर्य विद्वानों के भाषण सुनने के लिए बड़ी सख्या में श्रोता प्रतिदिन उपस्थित रहते थे।

राजस्थान के यशस्वी आर्य विद्वान्

श्री डा० मथुरालाल जी शर्मा
एम० ए० डी० लिट्
प्रधान

श्री पं० भगवानस्वरूप जी
न्यायभूषण
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

रेलबाजार कानपुर

"यह सभा गोवध बन्दी के नाम पर जो आन्दोलन चल रहा है उसका समर्थन ही नहीं करता अपितु उसे अपना आन्दोलन समझता है गोरक्षकों के साथ सरकार जो दुर्व्यवहार कर रही है, हम उसकी निन्दा करते हैं और गोरक्षा समर्थकों के साथ उचित एवं उदार पूर्ण व्यवहार हो और पूर्ण रूपेण गोवध बन्द किया जाय।"

आर्यसमाज सुभाषनगर प्रयाग

"आर्यसमाज सुभाषनगर प्रयाग की यह सभा सर्व सम्मति से भारत सरकार से अनुरोध करती है कि वह शीघ्रातिशीघ्र देश में गोवध बन्द करके जनता की इस उचित मांग को पूरा करे जिससे देश की जटिल खाद्य समस्या का भी समाधान होगा।"

आर्यसमाज, जोगबनी (पूर्णिया)

दि० २९ मई को आर्यसमाज जोगबनी में गोरक्षा दिवस बड़े ही समारोह के साथ मनाया गया।

प्रातः काल ६ बजे प्रभात फेरी के लिये जुलूस निकला जिसमें सैकड़ों आर्य जनता—गो वध बन्द करो। गो-वध राष्ट्र के लिए कलंक है। आर्य समाज अमर रहे इत्यादि नारे लगाते हुये नगर का परिक्रमा किया।

जुलूसोपरान्त सभा मंत्री श्री विश्वम्भरसिंह ने कहा कि गोवध बन्दी के लिये अठारह वर्षों से जनता चिल्लाती हुई आ रही है फिर गो-वध आज तक नहीं बन्द हो सका है।

आज स्वतन्त्र देशमें गोवध हमारे लिये लज्जा एवं कलंक की बात है।

अगर शीघ्र ही भारत सरकार गोवध बन्द नहीं करती है तो विवश होकर जनता आन्दोलन करेगी जिसे सम्भालना सरकार के लिए कठिन होगा।

आर्यसमाज फिरोजपुर

फिरोजपुर छावनी के नागरिकों की यह सभा सरकार से आग्रह करती है कि भारत में गोवध कानूनन बन्द हो। देश में स्वतन्त्रता के पश्चात् १८ वर्ष से हो रही गोहत्या एक प्रकार से राष्ट्र के साथ विश्वासघात है। भुखमरी इसी पाप का दुष्परिणाम है सारे राष्ट्र में चारों ओर अकाल की सी विभीषिका मुंह फाड़े दौड़ती हुई आगे बढ़ रही है—गोरक्षार्थ तिहाड़ जेल में २४ साधुओं का अनशन और अहिंसात्मक सत्याग्रहियों को जेल में बन्द रखने पर।

आर्य वीर दल गुड़गांवा

इस सभा के सदस्य दुखित तथा क्रोधित हृदय से भारत सरकार के प्रति रोष प्रकट करते हैं कि गौ जैसे गूंगे पशुओं का भी खुले आम वध होता है। यह हिन्दू धर्म प्रेमियों के हृदयों पर कुठाराघात हो रहा है।

गाय और बैलों की रक्षा करने से कृषि मे वृद्धि होगी। दूध के अधिक होने से लोगों के स्वास्थ्य में वृद्धि होगी और खाद्यान्न समस्या भी हल होगी।

अतः यह सभा संसद से सानुरोध प्रार्थना करती है कि इन गोवध हत्यारों के प्रति कठोर नियम बनाकर भारत के प्रत्येक प्रांत में इसे क्रियात्मक रूप दिया जाए।

आर्यसमाज जानसठ

आर्य समाज जानसठ की यह सार्वजनिक सभा भारत सरकार से सानुरोध प्रार्थना करती है कि वह गौ जैसे सर्वोपयोगी पशु के वध रूपी पाप कर्म को अविलम्ब बन्द करादे और वह गोरक्षा आन्दोलन के उपलक्ष में दिल्ली की तिहाड़ जेल में अनशन करने वाले साधुओं के जीवन से खिलवाड़ न करें साथ ही यह चेतावनी भी देती है कि यदि उसने इस सम्बन्ध में उपेक्षा बरती अथवा समय रहते न चेती तो देश में ऐसी भयंकर अग्नि होगी कि जिसे सम्भाला न जा सकेगा।

आर्य समाज चौक प्रयाग

"आर्यसमाज चौक प्रयाग में श्री दयास्वरूप जी आजीवन सदस्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में गौरक्षा दिवस मनाया गया। एक प्रस्ताव द्वारा सरकार से मांग की गई कि वह गोवध का निषेध सारे देश में अविलम्ब करे। इस हेतु जो साधु दिल्ली में अनशन कर रहे है उनके त्याग और समर्पण की सराहना की गई।

परिवार नियोजन से राष्ट्र को खतरा

संसद सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री की सरकार को चेतावनी

आर्यसमाज नई मंडी के वार्षिकोत्सव पर संसद सदस्य श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री ने कहा कि रुपये के अवमूल्यन से देश में ४५ प्रतिशत महंगाई बढ़ जावेगी। आपने कहा देश में खाद्यान्न का अभाव नहीं है। दोष केवल एक मात्र वितरण प्रणाली का है। क्षेत्रीय फार्मूले के आधार पर जहां एक प्रांत के लोग भूखे मर रहे हैं वहां दूसरे प्रान्त में खाद्यान्न सड़ रहा है।

गोल्ड कन्ट्रोल का उल्लेख करते हुए श्री शास्त्रीजी ने कहा कि सरकार ने स्वर्णकारों को १७ करोड़ रुपये सब सीडी के रूप में दिये। अब पुनः सरकार गोल्ड कन्ट्रोल वापिस लेने पर विचार कर रही है सरकार को इस प्रकार के निर्णय देखकर ही लेने चाहिए।

परिवार नियोजन का उल्लेख करते हुए आपने कहा कि कृत्रिम परिवार नियोजन शहरों मे तीव्रता से बढ़ता जा रहा है। पढ़ा लिखा वर्ग सीमित परिवार की ओर तेजी से बढ़ रहा है। यदि इसी प्रकार अनुपात से मुसलिम जनसख्या बढ़ती चली गई तो आगामी ५० वर्षों में देश के सामने विभाजन की एक नई मांग पुनः खड़ी हो जायेगी।

ससद सदस्य एव आर्य नेता ने कहा कि हमारी सीमाओं पर पाकिस्तान और चीन हमारी स्वतन्त्रता को चुनोती दे रहा है। उनकी चुनोती से हमारी राष्ट्रीयता को जबरदस्त खतरा बना हुआ है। सबसे बडा खतरा हमें उनसे है जो इस देश में खाते और कमाते हैं लेकिन करांची और लाहौर के स्वप्न देखते हैं। देश की जनता को उस चुनौती के लिये, राष्ट्रीय एकता तथा अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिये तैयार रहना चाहिये।

अन्त में आपने कहा कि आज दुनिया में अणुबम शक्ति का देवता बन गया है। दुनिया में जिस देश के पास अणुशक्ति होगी उसी के साथ शान्ति होगी। जो जातियां संघर्ष करेगी वही निखरेगी। यदि राष्ट्र को बचाना है, फिर शांति स्थापित करनी है तो हमें संघर्षों से होकर निकलना ही पड़ेगा। तभी देश का सौभाग्य निखरेगा और भारत में स्थाई शान्ति हो सकेगी।

सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की माताजी के स्वर्गवास पर एक शोक प्रस्ताव पारित हुआ जिसमें दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोकाकुल परिवार के सदस्यों को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई।"

(शेष पृष्ठ ५ का)

१८९१ से इन्डियन कहा जाने लगा, इन भारतीय लोगों ने प्रारम्भ में भारी अपमान तथा कष्ट सहन किये, परन्तु सहन शीलता तथा बुद्धिमत्ता से ७५ वर्षों में भारतीय ऊंचे स्थान पर पहुंच गये, गुजरात से पर्याप्त व्यापारी भी यहां पहुंच गये और आज व्यापार ८० प्रतिशत भारतीयों के हाथ में हैं। श्री ए० डी० पटेल बार एट ला० यहां सरकारी कौंसिल में मिनिस्टर हैं। फिजी की सारी बस सर्विस हिन्दुस्तानियों के हाथ में हैं। ५०-६० वकील भारतीय है बीस से अधिक डाक्टर है। इंजीनियर भी हैं। फिजी में जितनी मोटर कारे हैं इनमें ७५ प्रतिशत भारतीयों की हैं, इनके मकान बहुत सुन्दर तथा सुख देने वाले हैं हिन्दी का प्रचार बहुत अच्छा है, आर्यसमाज तथा सनातन धर्म की सारी संस्थाओं मे हिन्दी पढ़ाई जाती है. फिजी सन्देश हिन्दी पत्र निकलता है। यह प्रसन्नता की बात है कि आर्य समाज तथा सनातन धर्म सभा ने फिजी में हिन्दुत्व को जीवित रखा है, यद्यपि नई सन्तान पश्चिमी सभ्यता की ओर झुक रही है, फिर भी Divine life Socie राम कृष्ण मिशन आर्य समाज, सनातन धर्म सभा के यत्नों से युवक मंडल अभी कुछ संभाला हुआ है। यदि यहां प्रचारक सन्यासी न पहूंचें तो हिन्दुत्व को भारी धक्का लगने का भय है। साथ ही भारत के लिये आज जो प्यार यहां दिखाई देता है, वह भी जाता रहेगा। मैं थाईलैंड, मलेशिया सिंगापुर में वेद सन्देश सुनाकर अब फिजी में वेद की बातें सुना रहा हूं। यहां से न्यूजीलैंड द्वारा आस्ट्रेलिया जाकर सेवा करनी है, फिर हांगकांग तथा जापान जाना है। अभी दो तीन महीने और इधर सेवा करनी होगी।

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २)५०
सत्यार्थप्रकाश ७)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
व्यवहार भानु)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र १) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७ × ४० इन्च ७)५०
" " ३६ × ५४ इन्च ४)५०
" " ४५ × ६० इन्च ६)५०
कर्त्तव्य दर्पण)५०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)७५
मराठी सत्यार्थप्रकाश १)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से))५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
कठोपनिषद्)५० प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १ २५
मृत्यु और परलोक १)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
वृहद् विमान शास्त्र १०)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
अभ्यास और वैराग्य १)६५
निज जीवन वृत्त मनिका (सजिल्द))७५
बाल जीवन सोपान १)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म)६२

उपनिषद् कथामाला)२५
सन्तति निग्रह १)७५
नया संसार)२०
आदर्श गुरु शिष्य)७५
कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
पुरुष सूक्त)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर)६२
स्वर्ग में हड़ताल)३७
डाक्टर बर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)७५
वैदिक तत्व मीमांसा)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
वेद और विज्ञान)७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३७
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
इराक की यात्रा २)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक ईश वन्दना ४०
वैदिक योगामृत)६२
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
भ्रम निवारण)३०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
वेद की इयत्ता १)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह)७५
कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम (पूर्वार्द्ध) १)५०
" " (उत्तरार्द्ध) १)५०
वैदिक संस्कृति)७५
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
सायण और दयानन्द १)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)५०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)५०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०
संस्कार महत्व)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
चरित्र निर्माण १)२५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)१२
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
अनुशासन का विधान)२५
धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १ २५
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय २)
आर्य समाज के महाधन २)५०
एशिया का वेनिस)७५
स्वराज्य दर्शन १)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
भजन भास्कर १)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५

दुबारा छप गई! आर्य जगत में सबसे सस्ती
सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत
पृ० २००—नेट मूल्य ४० पैसे

ARYA SAMAJ
ITS CULT AND CREED

A unique and elegantly printed Book of the Day

By—Acharya Vaidyanath Shastri.

Rs. 5/-

This is the most popular and widely read first English book of Acharya Vaidya Nath Shastri a well known Arya Samaj Scholar and author credited with writing books in Hindi of outstanding merit on religion and philosophy some of them winning prizes.

The book presents a scholarly and lucid exposition of the Cult and Creed of AryaSamaj ranking among the high-class rare English literature of Arya Samaj. It is a worth reading worth preserving & worth presenting book to the English reading persons especially to the intelligentsia.

मिलने का पता—
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

कला-कौशल (टैक्नीकल) और वैदिक साहित्य का महान भंडार

पुस्तक	मूल्य
इलैक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग बुक	१६)
इलै० गाइड पृ० ८००हिं ई गु	१२)
इलैक्टिक वायरिंग	६)
मोटरकार वायरिंग	६)
इलैक्ट्रिक बैट्रीज	४)५०
इलैक्ट्रिक लाईटिंग	८)२५
इलै० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्ज	१२)
सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर	४)५०
इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज ५ भाग	[illegible]
आयल व गैस इंजन गाइड	१५)
आयल इंजन गाइड	८)२५
क्रूड आयल इंजन गाइड	६)
वायरलैस रेडियो गाइड	८)२५
रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक)	८)२५
घरेलू बिजली रेडियो मास्टर	४)५०
इलैक्ट्रिक मीटर्ज	८)२५
टांका लगाने का ज्ञान	४)५०
छोटे डायनेमो इलैक्टिक मोटर	४)५०
आर्मेचर वाइंडिंग (A C D C)	८)२५
रैफरीजरेटर गाइड	८)२५
बृहत रेडियो विज्ञान	१५)
ट्रांसफार्मर गाइड	६)
इलैक्ट्रिक मोटर्स	८)२५
रेलवे ट्रेन लाइटिंग	[illegible])
इलैक्टिक सुपरवाइजरी शिक्षा	६)
इलैक्टिक वैल्डिंग	६)
रेडियो शब्द कोष	३)
ए० सी० जनरेटर्स	८)२५
इलैक्ट्रिक मोटर्स आल्टरनेटर्स	१६)५०
आर्मेचर वाइंडिंग गाइड	१५)
इलैक्टिसिटी रूल्ज १९५६	२)५०
स्माल स्केल इंडस्ट्रीज (हिन्दी)	१४)
स्माल स्केल इंडस्ट्रीज (इंगलिश)	१४)
खराद शिक्षा (टर्नर गाइड)	४)५०
वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग)	४)५०
खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	६)
भवन-निर्माण कला	१२)
रेडियो मास्टर	४)५०
विश्वकर्मा प्रकाश	७)५०
सर्वे इंजीनियरिंग बुक	१२)
इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग	१२)
फाउन्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई)	८)२५
इलैक्ट्रोप्लेटिंग	६)
वीविंग गाइड	४)५०
हैंडलूम गाइड	१५)
फिटिंगशाप प्रैक्टिस	७)५०
पावरलूम गाइड	५)२५
ट्यूबवैल गाइड	३)७५
लोकास्ट हाउसिंग टैक्निक	५)२५
जल्दी पैमायश कोष	२)
लोकोशैड फिटर गाइड	१५)
मोटर मैकेनिक टीचर	८)२५
मोटर मैकेनिक टीचर गुरुमुखी	८)२५
मोटर ड्राइविंग हिन्दी व गुरुमुखी	६)
मोटरकार इंस्ट्रक्टर	१५)
मोटर साईकिल गाइड	४)५०
खेती और ट्रैक्टर	८)२५
जनरल मैकेनिक गाइड	१०)
आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	१२)
मोटरकार ओवरहालिंग	६)
प्लम्बिंग और सेनीटेशन	६)
सर्किट डायग्राम्स आफ रेडियो	३)७५
फर्नीचर बुक	१२)
फर्नीचर डिजायन बुक	१२)
वर्कशाप प्रैक्टिस	१२)
स्टीम ब्वायलर्स और इंजन	८)२५
स्टीम इंजीनियर्स गाइड	१२)
आइस प्लांट (बर्फ मशीन)	४)५०
सीमेंट की जालियों के डिजाइन	६)
कारपेंट्री मास्टर	६)७५
बिजली मास्टर	४)५०
ट्रांजिस्टर डाटा सर्किट	१०)५०
बैंच वैल्डिंग	६)
ब्लैकस्मिथी (लोहार)	४)५०
हैंडबुक आफ बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन	२४)५०
हैंडबुक स्टीम इंजीनियर	२०)२५
मोटरकार इन्जीनियर	८)२५
मोटरकार इंजन (पावर यूनिट)	८)२५
मोटरकार सर्विसिंग	८)२५
कम्पलीट मोटर ट्रेनिंग मैनुअल	२४)७५
कारपेंट्री मैनुअल	४)५०
मोटर प्रश्नोत्तर	६)
स्कूटर आटो साईकिल गाइड	४)५०
मशीनशाप प्रैक्टिस	१५)
आयरन फर्नीचर	१२)
मारबल चिप्स के डिजाइन	१६)५०
मिस्त्री डिजाइन बुक	२४)५०
फाउन्ड्री वर्क धातुओं की ढलाई	४)५०
ट्रांजिस्टर रेडियो	४)५०
आधुनिक टिपिकल मोटर गाइड	४)५०
नक्काशी आर्ट शिक्षा	६)
बढ़ई का काम	६)
राजगिरी शिक्षा	[illegible])
सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो	७)५०
प्रिन्ट ट्रांजिस्टर गाइड	२२)५०
मशीनिस्ट गाइड	[illegible]
आल्टरनेटिंग करेंट	१६)५०
हाई लाइनमैन वायरमैन गाइड	१६)५०
रेडियो फिजिक्स	[illegible]
फिटर मैकेनिक	[illegible]
मशीन वुड वर्किंग	[illegible]
लेथ वर्क	[illegible]
मिलिंग मशीन	[illegible]
मशीन शाप ट्रेनिंग	[illegible]
एयर कन्डीशनिंग गाइड	१५)
सिनेमा मशीन आपरेटर	१२)
स्क्रीन प्रिंटिंग	१२)
पोटीज गाइड	४)५०
ट्रांजिस्टर रिसीवर्स	६)७५
लोकल ट्रांजिस्टर रिसीवर्स	८)२५
प्रैक्टीकल ट्रांजिस्टर सर्किट्स	७)५०
बैच वर्क एन्ड डाईफिटर	८)२५
माडर्न ब्लैकस्मिथी मनुअल	८)२५
खराद आपरेटर गाइड	८)२५
रिसर्च आफ टॉयलेट सोप्स	१५)
आयल इंडस्ट्री	१०)५०
शीट मेटल वर्क	८)२५
करिज एंड वैगन गाइड	८)२५
इलैक्ट्रिक फिजिक्स	२१)५०
इलैक्ट्रिक टैक्नालोजी	२१)५०
रेडियो पाकिट बुक	६)
डिजाइन सेल्फ प्रिन्ट स्टूडी	[illegible]
कमीकल इन्डस्ट्रीज	२१)५०
डीजल इंजन गाइड	१५)

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई, क्लाथ बाइंडिंग मूल्य १५) एक साथ पांच प्रति मंगाने पर ५०) रु० मे दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१	सांख्य दर्शन	मूल्य २)
२	न्याय दर्शन	मू० ३।)
३	वैशेषिक दर्शन	मू० ३।।)
४	योग दर्शन	मू० ६)
५	वेदान्त दर्शन	मू० ५।।)
६	मीमांसा दर्शन	मू० ६)

सामवेद

मूलमंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित
श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार ४००० पुस्तक हाथों हाथ बिक गई थी। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है। मूल्य ४)

वैदिक-मनुस्मृति मूल्य ४।।)

बृहत् दृष्टान्त सागर

सम्पूर्ण पांचों भाग

पृष्ठ संख्या ८६८
सजिल्द मूल्य केवल १०।)

उपदेश मंजरी	मूल्य ।।)
संस्कार विधि	मूल्य ।।)
आर्य समाज के नेता	मूल्य ३)
महर्षि दयानन्द	मूल्य ३)
कथा पच्चीसी	मूल्य १।)
उपनिषद् प्रकाश	मू० ६)
हितोपदेश भाषा	मू० ३)
सत्यार्थप्रकाश [छोटे अक्षरों में]	२)५०

अन्य आर्य साहित्य

१	विद्यार्थी शिष्टाचार	१।)
२	पंचतन्त्र	३।)
३	जाग ऐ मानव	१)
४	कौटिल्य अर्थशास्त्र	१०)
५	चाणक्य नीति	१)
६	भर्तृहरि शतक	१।।)
७	कर्तव्य दर्पण	१।।)
८	वैदिक संध्या	४) सै०
९	हवन मंत्र	१०) सै०
१०	वैदिक सत्संग गुटका	१५) सै०
११	ऋग्वेद ७ जिल्दों में	५६)
१२	यजुर्वेद २ जिल्दों में	१६)
१३	सामवेद १ जिल्द में	८)
१४	अथर्ववेद ४ जिल्दों में	[illegible])
१५	बाल्मीकि रामायण	१२)
१६	महाभारत भाषा	१२)
१७	हनुमान जीवन चरित्र	[illegible])
१८	आर्य संगीत रामायण	५)

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद कृषि, बिजली, मोटर, पशुपालन, टेक्नीकल डरीफार्म, रेडियो, आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन [illegible] २६४१९१

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख प

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ फोन २७४७७१ श्रावण कृष्ण ४ संवत् २०२३ ७ जुलाई १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टि सम्वत् १९७२९१

सार्वदेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

वेद—आज्ञा

अच्छी शिक्षा

प्र नो यच्छत्वर्यमा प्र पूषा प्र बृहस्पतिः। प्र वाग्देवी ददातु नः स्वाहा ॥

यजुर्वेद अध्याय ९। २९

—

संस्कृत भावार्थ—

अत्राऽऽह जगदीश्वरः—राजादयः सर्वे पुरुषा मात्रादयः स्त्रियश्च सर्वदा प्रजाः पुत्रादीन् प्रति सत्यमुपदेशं कुर्युर्विद्यां सुशिक्षां च सततं ग्राहयेयुर्यतः प्रजाः सदाऽऽनन्दिताः स्युः ॥

—:०:—

आर्य भाषा भावार्थ—

यहां जगदीश्वर उपदेश करता है कि राजा आदि सब पुरुष और माता आदि स्त्री सदा प्रजा और पुत्रादिकों को सत्य सत्य उपदेश कर विद्या और अच्छी शिक्षा को निरन्तर ग्रहण करावें, जिससे प्रजा और पुत्र पुत्री आदि सदा आनन्द में रहें।

—महर्षि दयानन्द

पांच लाख का बजट स्वीकार

सभा प्रधान, उपप्रधान, मन्त्री और कोषाध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित

आर्य जगत् की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन शान्त वातावरण में सम्पन्न हुआ। सभा के सभी सदस्यों ने गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी चुनाव में आर्य जगत् के लिये—अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया।

श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास (बम्बई) सभा प्रधान

श्री पं० नरेन्द्र जी हैदराबाद उपप्रधा

श्री ला० बालमुकन्द जी आहूजा सभा कोषाध्यक्ष

श्री मिहरचन्द जी धीमान कलकत्ता उ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सम्पादक— रामगोपाल शालवाले सभा मन्त्री
सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

वर्ष ।
अंक ११

शास्त्र-चर्चा

भारद्वाज कणिक की

कूटनीति

युधिष्ठिर उवाच

युगक्षयात् परिक्षीणे धर्मे लोके च भारत। दस्युभिः पीड्यमाने च कथं स्थेयं पितामह ॥ १ ॥

युधिष्ठिर ने पूछा भरतनन्दन! पितामह! सत्ययुग त्रेता और द्वापर—के तीनों युग प्रायः समाप्त हो रहे हैं इसलिये जगत् में धर्म का क्षय हो चला है। डाकू और लुटेरे इस धर्म में और भी बाधा डाल रहे हैं ऐसे समय में किस तरह रहना चाहिये।

भीष्म उवाच

अत्र ते वर्तयिष्यामि नीतिमापत्सु भारत। उत्सृज्यापि घृणां काले यथा वर्तेत भूमिपः ॥ २ ॥

भीष्म जी ने कहा भरतनन्दन! ऐसे समय में मैं तुम्हें आपत्तिकाल की वह नीति बता रहा हूं जिसके अनुसार भूमिपाल को दया का परित्याग करके भी समयोचित बर्ताव करना चाहिये।

अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्। भारद्वाजस्य संवादं राज्ञः शत्रुंजयस्य च ॥ ३ ॥

इस विषय में भारद्वाज कणिक तथा राजा शत्रुञ्जय के संवादरूप एक प्राचीन इतिहास का उदाहरण दिया जाता है।

राजा शत्रुंजयो नाम सौवीरेषु महारथः। भारद्वाजमुपागम्य पप्रच्छार्थविनिश्चयम् ॥ ४ ॥

सौवीर देश में शत्रुञ्जय नाम से प्रसिद्ध एक महारथी राजा थे। उन्होंने भारद्वाज कणिक के पास जाकर अपने कर्तव्य का निश्चय करने के लिये उनसे इस प्रकार प्रश्न किया।

अलब्धस्य कथं लिप्सा लब्धं केन विवर्धते। वर्धितं पाल्यते केन पालितं प्रणयेत् कथम् ॥ ५ ॥

अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति कैसे होती है? प्राप्त द्रव्य की वृद्धि किस तरह हो सकती है? बढ़े हुये द्रव्य की रक्षा किससे की जाती है? और उस सुरक्षित द्रव्य का सदुपयोग कैसे किया जाना चाहिये।

तस्मै विनिश्चितार्थाय परिपृष्टोऽर्थनिश्चयम्। उवाच ब्राह्मणो वाक्यमिदं हेतुमदुत्तमम् ॥ ६ ॥

राजा शत्रुञ्जय को शास्त्र का तात्पर्य निश्चित रूप से ज्ञात था। उन्होंने जब कर्तव्य निश्चय के लिए प्रश्न उपस्थित किया तब ब्राह्मण भारद्वाज कणिक ने यह युक्तियुक्त उत्तम वचन बोलना आरम्भ किया।

नित्यमुद्यतदण्डः स्यान्नित्यं विवृतपौरुषः। अच्छिद्रश्छिद्रदर्शी च परेषां विवरानुगः ॥ ७ ॥

राजा को सर्वदा दण्ड देने के लिये उद्यत रहना चाहिये और सदा ही पुरुषार्थ प्रकट करना चाहिये। राजा अपने में छिद्र अर्थात् दुर्बलता न रहने दे। शत्रु पक्ष के छिद्र या दुर्बलता पर सदा ही दृष्टि रखे और यदि शत्रुओं की दुर्बलता का पता चल जाय तो उन पर आक्रमण कर दे।

नित्यमुद्यतदण्डस्य भृशमुद्विजते नरः। तस्मात् सर्वाणि भूतानि दण्डेनैव प्रसाधयेत् ॥ ८ ॥

जो सदा दण्ड देने के लिये उद्यत रहता है उससे प्रजा जन बहुत डरते हैं इसलिये समस्त प्राणियो को दण्ड के द्वारा ही काबू में करे।

एवं दण्डं प्रशंसन्ति पण्डितास्तत्त्वदर्शिनः। तस्माच्चतुष्टये तस्मिन् प्रधानो दण्ड उच्यते ॥ ९ ॥

इस प्रकार तत्त्वदर्शी विद्वान् दण्ड की प्रशंसा करते हैं अतः साम दान आदि चारों उपायो में दण्ड को ही प्रधान बताया जाता है।

छिन्नमूले त्वधिष्ठाने सर्वेषां जीवनं हतम्। कथं हि शाखास्तिष्ठेरंश्छिन्नमूले वनस्पतौ ॥१० ॥

यदि मूल आधार नष्ट हो जाय तो उसके आश्रय से जीवन-निर्वाह करने वाले सभी शत्रुओं का जीवन नष्ट हो जाता है। यदि वृक्ष की जड़ काट दी जाय तो उसकी शाखाएं कैसे रह सकती है?

मूलमेवादितश्छिन्द्यात् परपक्षस्य पण्डितः। ततः सहायान् पक्षं च मूलमेवानुसारयेत् ॥ ११ ॥

विद्वान् पुरुष पहले शत्रु पक्ष के मूल का ही उच्छेद कर डाले। तत्पश्चात् उसके सहायकों और पक्षपातियों को भी उस मूल के पथ का ही अनुसरण करावे।

सुमन्त्रितं सुविक्रान्तं सुयुद्धं सुपलायितम्। आपदास्पदकाले तु कुर्वीत न विचारयेत् ॥ १२ ॥

संकटकाल उपस्थित होने पर राजा [illegible] उत्तम पराक्रम एवं उत्साहपूर्वक युद्ध करे [illegible] अवसर आ जाय तो सुन्दर ढंग से पलायन भी करे। आपत्कालके समय आवश्यक कर्म ही करना चाहिये इस पर सोच विचार नहीं करना चाहिये।

वाङ्मात्रेण विनीतः स्याद्धृदयेन यथा क्षुरः। श्लक्ष्णपूर्वाभिभाषी च कामक्रोधौ विवर्जयेत् ॥ १३ ॥

राजा केवल बातचीत मे ही अत्यन्त विनयशील हो, हृदय को छूरे के समान तीखा बनाये रहे पहले मुसकराकर मीठे वचन बोले तथा काम-क्रोध को त्याग दे।

[illegible] न विश्वसेत्। [illegible] ॥ १४ ॥

शत्रु के साथ मिल जाने वाले समझौते आदि कार्य में संधि करके भी उस पर विश्वास न करे। अपना काम बना लिए बुद्धिमान् पुरुष शीघ्र ही वहां से हट जाय।

शत्रुं च मित्ररूपेण सान्त्वेनैवाभिसान्त्वयेत्। नित्यशश्चोद्विजेत् तस्मात् सर्पाद् वेश्मगतादिव ॥ १५ ॥

शत्रु को उसका मित्र बनकर मीठे वचनों से ही सान्त्वना देता रहे, परन्तु जैसे सर्पयुक्त गृहसे मनुष्य डरता है उसी प्रकार उस शत्रु से भी सदा उद्विग्न रहे।

यस्य बुद्धिः [illegible] सान्त्वयेत्। [illegible]न दुष्प्रज्ञं प्र[illegible] ॥ १६ ॥

जिसकी बुद्धि संकट में पड़कर शोकाभिभूत हो जाय उसे भूतकाल की बातें (राजा नल तथा श्रीराम आदि के वृत्तान्त) सुनाकर सान्त्वना दे जिसकी बुद्धि अच्छी नहीं है उसे भविष्य में लाभ की आशा दिलाकर तथा विद्वान् को तत्काल ही धन आदि देकर शान्त करे। —क्रमश

परिचय शीघ्र भेजें।

आर्य समाज-परिचयांक

भारत और भारत से बाहर चार हजार से अधिक आर्य समाजें हैं। लाखों सदस्य हैं। करोड़ों रुपया व्यय करते हैं।

किन्तु सर्व साधारण को पता नहीं।

इसमे आर्यसमाज की सदस्य संख्या, आय व्यय,

मन्त्री का चित्र और प्रधान का नाम इस अङ्क में देंगे

यह विशेषांक भी विशेष ही होगा

हजारों मन्त्रियों के चित्रों सहित यह विशेषांक आर्य जगत् का दर्शनीय अङ्क होगा।

इसका मूल्य केवल १)१० पैसा होगा

प्रत्येक आर्य समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री महोदय अपनी संस्था का परिचय और चित्र भेजने में शीघ्रता करें।

इस महान् अंक पर २५-३० हजार रुपया व्यय होगा। सभा पर इतनी भारी धनराशि का भार न पड़े और सुगमता से अंक प्रकाशित होजाय इसके लिए मन्त्री महोदयों से, कम से कम १० अंक लेने और उसके ११) अग्रिम भेजने की प्रार्थना की थी। हर्ष की बात है कि आर्यसमाजों के मन्त्री महानुभावों ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की और धन भेज रहे हैं।

आप जिस किसी भी आर्य संस्था के मन्त्री हैं उसका परिचय अवश्य भेजें और चित्र तथा प्रधान का नाम भेजने में देर न करें।

—[illegible]

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

शिक्षा का उद्देश्य क्या है

शिक्षा का उद्देश्य क्या है ;

इस सम्बन्ध में शिक्षाविदों और मनीषियों का विचार-भेद हो सकता है, किन्तु जहां तक भारतीय तत्व-वेत्ताओं का प्रश्न है, उनकी दृष्टि इस विषय में धूमिल नहीं है। उपनिषद् का मन्त्र है।

सह ना ववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवाव है। तेजस्विना-वधीतमस्तु, मा विद्विषा वहै ॥

प्रायः अल्पशिक्षित लोग भोजन के प्रारम्भ में इस मन्त्र का उच्चारण करते देखे जाते हैं और 'सह' तथा 'भुनक्तु' शब्दों के समावेश से वे समझते हैं कि मिलकर भोजन करने के सम्बन्ध में इस मन्त्र का विनियोग करना उचित है। परन्तु यह मन्त्र भोजन-परक न होकर शिक्षा-परक है और संक्षेप में शिक्षा के उद्देश्य का इसमें वर्णन है। प्रकरण के अनुसार पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व गुरु और शिष्य दोनों मिलकर इस मन्त्र का उच्चारण करते हैं। मन्त्र का अर्थ है- (नौ अधीतम्) हमारा अध्ययन (सह नौ अवतु) हम दोनो की साथ-साथ रक्षा करे, (सह नौ भुनक्तु) हम दोनों की साथ-साथ भोजन की समस्या हल करो। सह वीर्यं करवा वहै) हम दोनों साथ-साथ पुरुषार्थी, पराक्रमी और साहसी बनें, (तेजस्विअस्तु) हमारा अध्ययन तेजस्वी हो, और (मा विद्विषा वहै) हम आपस में—या संसार के प्राणि मात्र से—द्वेष न करें।

इस प्रकार उक्त मन्त्र में शिक्षा के पांच उद्देश्य वर्णित हैं—१ वह व्यक्ति को आत्मरक्षा में समर्थ बनावे, २ वह रोटी और रोजी की समस्या हल करे, ३ व्यक्ति को पुरुषार्थी और पराक्रमी बनावे, ४ मन को तेजस्वी और ज्ञान-विज्ञान को ग्रहण करने में समर्थ बनावे, एवं ५ विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावे। हम समझते हैं कि इन पांचों उद्देश्यों को पूरा करने वाली शिक्षा-प्रणाली ही सच्ची शिक्षा प्रणाली है। और जो शिक्षा-प्रणाली ऐसा नहीं करती उसे अधूरी ही कहा जाएगा। शिक्षा के उक्त पांचों उद्देश्यों में व्यक्ति की शारीरिक मानसिक और सामाजिक उन्नति का बीज निहित है।

भारत में वर्तमान समय में जो शिक्षा-प्रणाली चालू है उसके कारण यह प्रवाद प्रचलित हो गया है कि 'विद्या अर्थकरी' होनी चाहिये, भले ही उससे शारीरिक और मानसिक शक्तियों का तथा सामाजिक सद्भावना का विकास हो या न हो। उपनिषद् के मन्त्र में शिक्षा के जो उद्देश्य बताए गए हैं उनमें विद्या के अर्थकरी होने वाले अंग की उपेक्षा नहीं है, बल्कि 'सह नौ भुनक्तु' कहकर उस अंग की ओर पर्याप्त संकेत कर दिया गया है। परन्तु इस अंश को छोड़कर शेष चार उद्देश्य आधुनिक शिक्षा-प्रणाली में से बहिष्कृत हैं। न वह व्यक्ति को आत्म-रक्षा में समर्थ बनाती है, न पुरुषार्थी और पराक्रमी बनाती है, न मन को स्वाभिमानी तेजस्वी और अदीन बनाती है और न ही मानवमात्र को समान समझने की भावना पैदा करती है।

सच तो यह है कि आधुनिक शिक्षा-प्रणाली रोजी और रोटी की समस्या भी पूरी तरह हल नहीं करती। यदि यही समस्या हल हो पाती तो देश में आज शिक्षित बेकारों की संख्या क्यों बढ़ती, क्यों वह दिन-प्रतिदिन भयावह रूप धारण करती जाती? आधुनिक विश्वविद्यालयों से स्नातक बन कर निकले छात्रों का न व्यापार या वाणिज्य की ओर रुझान होता है, न कृषि और पशुपालन के प्रति, न ही कला-कौशल, दस्तकारी या हस्त-उद्योगों के प्रति। बल्कि हाथ से काम करने के प्रति उनके मन में एक बार विचित्र वितृष्णा का सा भाव होता है। उसके मन में केवल एक ही स्वप्न अहर्निश विराजमान रहता है कि ग्रेजुएट होते ही कहीं कोई अच्छी सी सरकारी नौकरी मिल जाए जिसमें उसे कुर्सी पर बैठकर थोड़ी-बहुत कलम-घिसाई करने के अतिरिक्त और कुछ न करना पड़े। क्लर्की ही जैसे उसके जीवन की सबसे बड़ी साधना रहगई है। बाह्य आडंबर की प्रधानता और आंतरिक सत्व-शून्यता आधुनिक शिक्षा के प्रतीक बन गए हैं। आधुनिक शिक्षित युवक नौकरी करने के लिए ही पैदा होता और नौकरी करते-करते ही जाता है। वर्तमान प्रशासन में नौकरशाही आधुनिक शिक्षा की सबसे बड़ी देन है। चारों तरफ फैले भ्रष्टाचार की जड़ भी यह नौकरशाही ही है। जब तक यह नष्ट नहीं होगी तब तक भ्रष्टाचार भी समाप्त नहीं होगा।

नौकरी को एकमात्र उद्देश्य बनाने वाली यह शिक्षा अंग्रेजों की देन है। इस विशाल देश के प्रशासन को चलाने के कलम-घिस्सू पुर्जे तैयार करने के लिए ही उन्होंने यह शिक्षा प्रणाली प्रचलित की थी और निस्संदेह अपने उद्देश्य में वे इस हद तक सफल हुए कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद आज भी हमारे विश्वविद्यालय रूपी कारखाने नौकरशाही के वैसे ही पुर्जे ढालने में बदस्तूर लगे हुए हैं। अंग्रेज गए, परन्तु अंग्रेजी नहीं गई। नौकर शाही के प्रवर्तक गये, पर नौकरशाही नहीं गई। स्वराज्य आया, किन्तु स्वदेश-प्रेम नहीं आया। स्वाधीनता आई, किन्तु स्वाभिमान नहीं आया। गुलामी की बेड़ियां कटीं, लेकिन गुलामी की मनोवृत्ति नहीं हटी। आज भी गुलाम पैदा करने के सब से बड़े कारखाने हैं हमारे विश्वविद्यालय जिनमें अभी तक भारतीय भाषाओं के बजाय अंग्रेजी का बोलबाला है, भारत के इतिहास के बजाय इंगलैण्ड के इतिहास के पठन-पाठन की परम्परा है और भारतीय संस्कृति के स्थान पर पाश्चात्य-संस्कृति का अक्षुण्ण साम्राज्य है। हमारे विश्वविद्यालयों में स्वतन्त्र चिन्तन और बौद्धिक नेतृत्व का अभाव है और यही देश का सब से बड़ा अभिशाप है। किसी देश के बुद्धिजीवी ही उस देश को स्वतन्त्र नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं परन्तु भारत के बुद्धिजीवी आज परतन्त्रता के सबसे अधिक शिकार हैं और उसका कारण हैं हमारी शिक्षा-संस्थाएं—जिन खानों से ये बुद्धिजीवी निकलते हैं।

चाहिये तो यह था कि स्वराज्य प्राप्त होते ही अंग्रेजों द्वारा प्रचलित, नौकर शाही की जनक, शिक्षा-प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन करके देश में ऐसी शिक्षा-प्रणाली प्रचलित की जाती जिसमें इतिहास, भूगोल दर्शन, गणित समाज-शास्त्र, मानव शास्त्र आदि समस्त विज्ञानेतर विषयों (humanities) का और भौतिकी, रसायन, जीव-विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि सम्बन्धी विषयों का भारतीय दृष्टि कोण से अध्ययन किया जाता। आज भी विश्वविद्यालयों में विज्ञान और विज्ञानेतर विषयों का अध्ययन तो किया जाता है, किन्तु इस अध्ययन में भारतीय दृष्टिकोण का सर्वथा अभाव है। आज के ग्रेजुएट को भारतीय संस्कृति और भारतीय-परम्पराओं का उतना ज्ञान नहीं जितना पाश्चात्य संस्कृति और पाश्चात्य परम्पराओं का ज्ञान है। ब्रिटेन के साम्राज्य का सूर्यास्त हो जाने के पश्चात् बौद्धिक क्षेत्र में भी अब ब्रिटेन का एकाधिपत्य समाप्त होता जा रहा है और उस रिक्तता को भरने के लिए अमरीका बड़ी तेजी से आगे आता जा रहा है। अंग्रेजी भाषा उसके माध्यम के रूप में पहले से मौजूद है ही। हाल में ही जो भारत अमरीकी शिक्षा फाउंडेशन स्थापित किया गया है, कहने को उसका उद्देश्य है—कृषि तथा उद्योगों के लिए नए तकनीकों का विकास करना तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में सुविधाएं उपलब्ध करना, किन्तु यह स्पष्टतः शिक्षा के क्षेत्र में 'अमरीकी घुसपैठ' की शुरूआत है। पहले हमारे बुद्धिजीवी इंगलैंड के गुलाम थे अब वे अमरीका के गुलाम बनेंगे। कहने का अभिप्राय यह है कि उनमें स्वतन्त्र चिन्तन का और देश के बौद्धिक नेतृत्व का जैसे पहले अभाव था वैसे ही अब भी बना रहेगा और उनकी गुलामी की मनोवृत्ति में कोई अन्तर नहीं आएगा। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कभी लिखा था :—

परदीप माला नगरे नगरे,
तुमि जे आंधार तुमि से आंधार।

"दूसरों की दीपमाला नगर नगर में जगमगा रही है, तुम जिस अंधेरे में थे उसी अंधेरे में पड़े हो।"

शिक्षा का उद्देश्य इस 'पर' के अन्धकार को दूर कर 'स्व' के ज्ञान से अन्तःकरण को आलोकित करना ही है।

देवनागरी लिपि के प्रयोग पर कुठाराघात क्यों

देव नागरी और रोमन लिपियाँ एक दूसरे से इतनी भिन्न हैं कि दोनों ही एक दूसरे का स्थान कभी नहीं ले सकती। हिन्दी लिखने के लिए रोमन लिपि के प्रयोग का सुझाव नितान्त अव्यावहारिक है।

देवनागरी का प्रयोग पहले से ही कई राज्यों में प्रचलित है। नेपाल, सिक्किम और भूटान के सीमावर्ती राज्यों में इसी लिपि का प्रयोग होता है। प्रस्तावित पंजाबी सूबे में देव नागरी लिपि में पंजाबी के लिखे जाने की माँग ४७ प्रतिशत के जनता ने की है। इस माँग को दबाया जाना अत्याचार होगा।

यह कहना कि 'पंजाबी को विकृत करने और अन्त में उसको मिटा देने का अप्रत्यक्ष ढंग है। जान बूझ कर तथ्यों को तोड़ मरोड़ देना है। यह ठीक है कि पंजाबी को लिखने में देवनागरी के प्रयोग से गुरुमुखी को धक्का लगेगा परन्तु पंजाबी की उन्नति की गति भी तो बढ़ जायगी। संस्कृति और भाषा के प्रेम को लिपि के प्रेम के साथ सम्बद्ध नहीं करना चाहिए।

यतः बंगला और तमिल देव नागरी में नहीं लिखी जाती हैं अतः पंजाबी भी देवनागरी में नहीं लिखी जानी चाहिए, इस तर्क में सार नहीं है। बंगला या तामिल या कन्नड या तेलगु का मामला जुदा है। इन क्षेत्रीय भाषाओं के लिए देवनागरी कभी प्रयुक्त नहीं हुई। और वहाँ जन साधारण की इस प्रकार की व्यापक माँग भी नहीं हुई। यदि सभी लोक भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि अपना ली जाये तो बड़ा लाभ हो। पंजाब में साम्प्रदायिक आधार पर व्यापक माँग की उपेक्षा की जा रही है और उसे दबाया जा रहा है। अन्य सब राज्यों में भाषा के प्रति लगाव क्षेत्रीय एवं भाषायी है परन्तु पंजाब में यह धार्मिक है। और वह भी भाषा के प्रति नहीं अपितु लिपि के प्रति है।

पंजाबी भाषा की यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं में पाकिस्तान ने गुरुमुखी लिपि के प्रयोग की अनुमति देदी है परन्तु उसने पंजाबी को फारसी लिपि में लिखे जाने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया है। फिर भारत में पंजाबी के लिये देवनागरी के प्रयोग पर क्यों कुठाराघात किया जाय।

सामयिक-चर्चा

केन्द्र सबल हो

२१ जून को बम्बई रोटरी क्लब की सभा में भाषण देते हुए श्री के० ऐम० मुंशी ने कहा कि देश के समक्ष जो भाषायी खतरा मुंह बाए खड़ा है उसे दृष्टि में रखते हुए सबल एवं प्रबल केन्द्रीय प्रशासन की परमावश्यकता है। आज के लिए वह दिन बड़ा मनहूस होगा जबकि भाषावाद केन्द्र को उस की शक्ति से वंचित कर देगा। जब २ देश का केन्द्रीय शासन दुर्बल हुआ और सूबों ने केन्द्र को दुर्बल बनाने में सफलता प्राप्त की तब २ ही देश विदेशियों का दास बना। आवश्यकता इस बात की है कि हमारी पालियामेंट सजीव और शक्ति शाली हो, हमारा प्रधान मन्त्री सक्षम हो, और राष्ट्रपति कठिन परिस्थितियों का दृढ़ता पूर्वक सामना करते हुए पालियामेंट के वैधानिक अधिकारों की रक्षा करने में समर्थ हो। देश में स्थानीय एवं प्रदेशीय निष्ठाएं बढ़ रही हैं। पं० जवाहरलाल नेहरू भी अपने शासन के अन्तिम दिनों में संसदीय दल की सहायता की अपेक्षा भाषायी राज्यों के मुख्य मन्त्रियों की सहायता पर निर्भर करने लगे थे। श्रीमती इन्दिरा गांधी का वर्तमान निर्वाचन भी वस्तुत. मुख्य मन्त्रियों द्वारा ही हुआ था जिनकी सहायता हाईकमान ने प्राप्त की थी। यदि इस प्रवृति का दमन न हुआ और यदि कुछ प्रदेशों में कांग्रेस मन्त्री मण्डलों को विरोधी दलों ने अपदस्थ कर दिया तो वह समय आ सकता है जबकि मुख्य मन्त्री केन्द्रीय प्रशासन की कोई परवाह न करेंगे।

गुणों को वरीयता दी

कांग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज ने प्रदेश के मुख्य मन्त्रियों एवं प्रादेशिक कांग्रेस कमेटियों के अध्यक्षों को एक परिपत्र भेज कर लिखा है कि वे अपने क्षेत्रों से १७ ऐसे सदस्य लोक सभा में भिजवाएं जो विधि विधान के कार्यों में पारंगत हों, प्रशासन कार्य में दक्ष हों और जो सदाचारी एवं चरित्रवान हों। इस अनुरोध में इस बात को अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकार कर लिया गया है कि १८ वर्ष के निरन्तर प्रशासन काल में कांग्रेस संसद सदस्यों के बौद्धिक एवं आचारिक स्तर को ऊँचा उठाने में असफल रही है और जिस चीज की उन्होंने मांग की है वह उनकी दृष्टि में पर्याप्त मात्रा में विद्यमान नहीं है।

देश में अब तक ३ आम चुनाव हो चुके हैं और कांग्रेस को प्रदेशीय विधान सभाओं और लोक सभा में बहुमत प्राप्त रहा है फिर भी कामराज महोदय यह अनुभव करने के लिए बाध्य हुए हैं कि संख्या के अनुपात में गुण विद्यमान नहीं हैं। विधायक दलों तथा कांग्रेस दल की करतूतों से वे इतने परेशान प्रतीत होते है कि उन्हें १७ से अधिक सुयोग्य विधायकों की मांग करने का भी साहस नहीं हुआ है।

दूसरे शब्दों में यदि आने वाले आम चुनाव में लगभग १५० ऐसे संसद सदस्य निर्वाचित हो जायें जो गुणवान और बुद्धिमान् हों और जिनमें संसदीय वाद-विवाद में सफलता पूर्वक भाग लेने की योग्यता, क्षमता और अनुभव हो।

यदि अन्य प्रमुख राजनैतिक दल भी कांग्रेस अध्यक्ष के उदाहरण का अनुसरण करते हुए आने वाले चुनाव में अपने प्रत्याशियों की संख्या के स्थान में उनकी बौद्धिक एवं आचारिक विशेषताओं आदि पर विशेष ध्यान दें तो संसद के कार्य की कुशलता में निश्चय ही सुधार हो जायगा। परन्तु मुख्यतम उत्तरदायिता कांग्रेस दल पर ही है क्योंकि वही प्रदेशों एवं केन्द्र में प्रशासक दल है और उसी की सफलता के आधार देश पकड़ते हैं भले ही सर्व साधारण जनता की इच्छा के विरुद्ध ही ऐसा हो। परन्तु अनुभव यह बतलाता है कि चुनाव के लिए जो प्रत्याशी चुने जाते हैं वे प्रायः बड़े वर्गों और साधन सम्पन्नता के आधार पर चुने जाते हैं उनकी बौद्धिक, शैक्षणिक आचारिक एवं प्रशासकीय योग्यता को आधार नहीं बनाया जाता।

क्योंकि पिछले से दल के अधिकारी इस बात पर दृष्टि रखते हैं कि वे कहां तक उनका साथ देंगे और विरोधी दलों से लड़ने में समर्थ हो सकेंगे। जब इस प्रकार का दृष्टिकोण हो तो सुयोग्य व्यक्तियों का चुनाव क्यों कर सम्भव हो सकता है। फिर भी अन्तिम चुनाव संसदीय बोर्ड के हाथ में होता है। यदि यह कांग्रेस अध्यक्ष और जन साधारण की भावना का सम्मान करते हुए प्रत्याशियों के चयन में गुणों एवं योग्यता को वरीयता दें तो स्थिति में बहुत कुछ सुधार सम्भव हो सकता है।

संस्कृत की महान परम्परा

श्री के० ऐम० मुंशी

जिन लोगों की यह मान्यता है कि हमारे भाषायी, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास में संस्कृत को महत्त्व पूर्ण स्थान है वे त्रिभाषा सूत्र को भाषायों की दृष्टि से देखे बिना नहीं रह सकते जिसमें अंग्रेजी, हिन्दी और एक क्षेत्रीय भाषा की व्यवस्था की गई है। और जिससे निश्चय ही संस्कृत को आघात पहुंचेगा।

कुछ समय के बाद ऐसी नई पीढ़ी का उद्भव होगा जिन्हें इस बात की प्रायः अनुभूति न होगी कि संस्कृत का हमारे जीवन में क्या स्थान या क्या महत्त्व है। संस्कृत की पृष्ठ भूमि के बिना भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देने से हमारी सांस्कृतिक एकता की जड़ कट जाने का भी भय है। ऐसा होने से हम संस्कृत के प्रसादों से वंचित हो जायेंगे और भारत की आत्मा विलुप्त हो जायगी।

अतः यह आवश्यक है कि हमारा शासन हमारे सार्वजनिक संस्थान और हमारे जन-सामान्य हमारी संस्कृति की महान् परम्परा के रक्षण के कार्य में रुचि लें। इसका उपाय यह हो सकता है कि तीन भाषाओं के अतिरिक्त माध्यमिक शिक्षा की योजना में किसी स्टेज पर संस्कृत का विषय अनिवार्य विषय रहे। यदि तीन भाषाओं में से किसी एक भाषा के स्थान में संस्कृत को अनिवार्य विषय का स्थान न दिया जा सके तो उसे अतिरिक्त अनिवार्य भाषा का रूप तो मिलना ही चाहिए।

भूल

हमारी शिक्षा की योजना में संस्कृत की उपेक्षा करने वाले लोग उस कार्य की उपेक्षा करते हैं जो समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत ने हमारे जीवन के विकास में किया है।

हमें यह अनुभव करना चाहिए कि संस्कृत और उसके साहित्य ने

(शेष पेज १४ पर)

गोरक्षा आन्दोलन

की सहायता करो

श्री पं० विश्वम्भर प्रसाद जी शर्मा

(प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश) की

आर्य विद्वानों से अपील

प्रिय महोदय,

सादर नमस्ते ! आप को विदित ही है कि दिल्ली में इस समय साधु महात्माओं ने गोहत्या बन्द कराने के लिये सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ कर रखा है। २४ महात्मा अनशन करते हुये तिहाड़ जेल में बन्द हैं। जेल से छूटने पर ये साधु सम्भवत पुन सत्याग्रह करेंगे। अन्य साधुओं के भी इस आन्दोलन में योग देने की आशा है। अनेक साधु नेता इस आन्दोलन की सफलता के लिये प्रयत्नशील हैं।

प्रयत्न यह किया जा रहा है कि समस्त हिन्दू समाज सगठित रूप से इस आन्दोलन में भाग लें और गोहत्या के कलङ्क का निवारण कराने में उत्सर्ग करें। इस के लिए सभी प्रसिद्ध सस्थाओं, दलों और नेताओं से सम्पर्क स्थापित किया जा रहा है। और सब के सहयोग से आन्दोलन को प्रभावशाली तथा यशस्वी बनाने की इच्छा है। यह सुनिश्चित है कि वर्तमान सरकार गोहत्या को जारी रखना चाहती है और वह आसानी से गोहत्या बन्दी कानून न बनने देगी। इस सम्बन्ध में आज तक जितने आन्दोलन हुये वे सफल न हो सके। इस में सरकार अपनी गोहत्या समर्थक नीति में और दृढ़ बन गई। उस ने गोहत्या बन्दी आन्दोलन को साम्प्रदायिक तथा कुछ हिन्दुओं का आन्दोलन कह कर बद-नाम करने की कोशिश की। लेकिन इन आन्दोलनों के विफलता का सब से बड़ा कारण हमारी दृष्टि में यह रहा कि हिन्दू समाज ने एक सूत्र में सगठित हो कर कभी इस आन्दोलन को न चलाया। पृथक-पृथक् दलों द्वारा यह आन्दोलन चलता रहा। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती गोरक्षा आन्दोलन के प्रणेता थे। उन्हों ने गोरक्षा के सम्बन्ध में सगठित आन्दोलन का सूत्रपात किया था और "गोकरुणा निधि" पुस्तक लिख कर सारे देश में एक नये जीवन का सचार किया परन्तु आर्य समाज महर्षि जी के पश्चात इस सम्बन्ध में कोई ठोस कदम न उठा सका।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात अन्य लोगों के आन्दोलन से प्रभावित हो कर २२ फरवरी १९५३ को गोहत्या बन्दी का प्रस्ताव पास करके इस आन्दोलन को चलाने के लिये ११ सज्जनों की एक उप समिति गठित की थी। आर्य जगत की शिरोमणि सस्था के इस निश्चय का जबरदस्त स्वागत हुआ और आर्य समाजियों में बड़ा भारी उत्साह पैदा हुआ। गोरक्षा आन्दोलन का सचालन करने के लिये पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को सचालक बनाया गया। लेकिन थोड़े प्रचार के अतिरिक्त इस दिशा में कोई वास्तविक कार्य न हो सका।

इस समय साधुओं ने गोरक्षा के लिये जो आन्दोलन छेड़ा है वह आगे चल कर एक व्यापक रूप धारण करेगा क्योंकि गोरक्षा आन्दोलन से सम्बन्धित सभी दलों और नेताओं की यह धारणा है कि वे सगठित हो कर इस उद्देश्य की पूर्ति करावें। आर्य समाज को भी इस सम्बन्ध में सक्रिय कदम उठाना चाहिये और सार्वदेशिक सभा की यह जिम्मेदारी है कि वह इस आन्दोलन का पथ प्रदर्शन करे। आर्य समाज एक अराजनीतिक सस्था है। उस का कोई राजनीतिक स्वार्थ नहीं है अत उस का इस आन्दोलन के लिये नेतृत्व एक वरदान सिद्ध होगा। आर्य समाज इस आन्दोलन का नेतृत्व करके जहा राष्ट्र की एक महान और जटिल समस्या को सुलझाने में सफल होगा वहा देश में उस का बल और प्रभाव बढ़ेगा। सघर्ष से ही जीवन उत्पन्न होता है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने इस सम्बन्ध में जिस आन्दोलन का सूत्रपात किया था उसे पूरा करने का उत्तरदायित्व आर्य समाज पर है और आर्य समाज को इस कर्तव्य से पीछे नहीं हटना चाहिये।

मेरा निवेदन है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करे और अपने सक्रिय योगदान से इस समस्या को हल कराने में कृतसकल्प हो

१० हजार रुपये का महान सहयोग

स्व० श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

चित्रकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती तिलको देवी भवानी लाल शर्मा अनु-हास की पुण्य स्मृति में श्री भवानी लाल शर्मा (कानपुर वाले) अमरावती (विदर्भ) निवासी ने 'सार्वदेशिक' पत्र के हितार्थ बी० बी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्न लिखित नियमानुसार कार्तिक स० २०१३ विक्रमी तदनुसार नवम्बर १९५६ ई० को स्थापित की।

नियम—

१—इस मूलधन से प्राप्त वार्षिक ब्याज का आधा भाग सार्वदेशिक पत्र को सहायता रूप में मिलता रहेगा। शेष आधा भाग इसी निधि में सम्मिलित होता रहेगा।

२—यदि किसी कारण वश पत्र बन्द हो जाय तो उक्त सहायता का मिलना भी बन्द हो जायगा और वार्षिक ब्याज की सम्पूर्ण रकम मूलधन में मिलती रहेगी।

३—पत्र यदि पुन चालू होजाय तो उक्त सहायता प्राप्ति के लिये वह पुन अधिकारी होगा।

४—पत्र के चालू न होने की पूर्ण निराशा में सार्वदेशिक सभा उक्त योजना का सर्वाधिकार अपने ही किसी अन्य योग्य पत्र को दे सकती है।

५—सभा के निश्चयानुसार उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना सार्वदेशिक पत्र में उत्सा-हार्थ प्रति तीसरे मास प्रकाशित होती रहेगी।

सार्वदेशिक सभा की ७-१०-५६ की अन्तरंग का तत्सम्बन्धी निश्चय

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि यह ५०००) का दान सधन्यवाद स्वीकार किया जाय और उक्त योजना भी स्वीकार की जाय। यह सभा श्री भवानी लाल शर्मा को यह आश्वासन देती है कि उपरोक्त योजना सदैव चलती रहेगी।

इसी प्रकार स्व० श्री भवानी लाल शर्मा ने एक और ५०००) की राशि प्रदान करके सत्यार्थप्रकाश के निरन्तर प्रकाशन के लिये सभा में एक स्थिर निधि स्थापित की थी जिससे सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन होता रहता है।

—मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

गलती को स्वीकारोक्ति करो

श्री यश जी, प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, जालन्धर

अकालियों को खुश करने के लिए जनसंघ ने आर्यसमाज पर हमला तो कर दिया लेकिन अब स्वयं ही घबरा रहा है। पंजाब जनसंघ के भूतपूर्व प्रधान कैप्टन केशव चन्द्र ने उस बहस को बन्द करने की अपील की है जो इस प्रश्न पर हो रही है।

लेकिन यह बहस शुरू किसने की ?

और फिर इस बहस को व्यक्तिगत स्तर पर कौन ले आया ? अखिल भारतीय जनसंघ के प्रधान ने सारे आर्यसमाज पर लांछन लगा दिया कि यह पंजाब के वातावरण को खराब कर रहा है, और उसके बाद हर छोटे-मोटे जनसंघी ने आर्यसमाज और उसके नेताओं पर बरसना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं, लाला जगतनारायण व श्री वीरेन्द्र के विरुद्ध घटिया भाषा में ऐसे लेख लिखे गए जिनका किसी भी युग की सभ्यता से कोई सम्बन्ध नहीं। बहस सिद्धांत की हो, दलील में वजन हो और सभ्यता की सीमा में रहकर एक दूसरे का केस काटने की कोशिश की जाए तो मैं इसे बुरा नहीं समझता। लेकिन जब लड़ाई व्यक्तिगत स्तर पर पहुंच जाए और उसमें मतभेदों का उल्लेख न होकर गालियां निकाली जाएं तो स्वाभाविक रूप से हर किसी को अफसोस होगा। लेकिन जनसंघ ने यही क्यों समझ लिया कि केवल वही हमला कर सकता है ? जब प्रत्युत्तर मिलने लगा तो वह परेशान हो उठा। हर संस्था में जहां उत्तरदायित्व हीन व्यक्ति होते हैं, वहां एक समझदार वर्ग भी होता है। जनसंघ का दुर्भाग्य यह है कि इसके प्रधान और कई दूसरे नेता उत्तरदायित्व हीन हैं। इसलिए वे यह सोचते ही नहीं कि जो पग वे उठाने जा रहे है, उसका परिणाम क्या निकल सकता है। जनसंघ यदि अपने आपको राजनीतिक संस्था मानता है तो उसे राजनीतिक संस्थाओं से ही लड़ना चाहिए धार्मिक या सामाजिक संस्थाओं से उलझकर वह अपने आप को कमजोर ही कर सकता है, सत्ता प्राप्त नहीं कर सकता। आर्यसमाज कोई राजनीतिक पार्टी नहीं है। इसके विरुद्ध दिल की भड़ास निकालने के दो ही मतलब हो सकते हैं, एक यह कि जनसंघ अपने आपको राजनीतिक और असाम्प्रदायिक पार्टी कहता अवश्य है लेकिन दिल से नहीं मानता उसके दिल में वही बात है जो मास्टर तारासिंह और सन्त फतेहसिंह के दिल में है। इन दोनों नेताओं का विश्वास है कि धर्म और राजनीतिक अलग-अलग नहीं हो सकते। इन दोनों नेताओं ने धर्म का प्रयोग राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए किया है। जनसंघ का आर्यसमाज से उलझना यह सिद्ध करता है कि वह भी धर्म की आड़ में राजनीतिक शिकार खेलना चाहता है दूसरे यह कि जनसंघ भी भारत की राजनीति में वही भूमिका निभाना चाहता है जो किसी समय मुस्लिम लीग ने निभाई थी। मुस्लिम लीग वालों का विश्वास था कि जो व्यक्ति मुस्लिम लीग में शामिल नहीं होता, वह मुसलमान नहीं है। इसलिए वे किसी मुसलमान को सहन नहीं करते थे जो मुस्लिम लीग के अलावा किसी और पार्टी में हो। मौ० अबुलकलाम आजाद को संसार भर के मुसलमान तो मुसलमान मानते थे लेकिन मुस्लिम लीग उन्हें 'काफिर' समझती थी, कांग्रेस अंजुमन अहरार, यहां तक कि कम्यूनिस्ट पार्टी में भी जितने मुसलमान थे, वे चाहे पाँच वक्त नमाज पढ़ने के पाबन्द हों तो भी मुस्लिमलीगकी निगाह में वे मुसलमान नहीं थे। यह फासस्ट रवैया मुस्लिमलीग ने इसलिए अपनाया क्योंकि वह मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था बनना चाहती थी। वह कांग्रेस या किसी दूसरी राजनीतिक पार्टी के गैर-मुस्लिम नेताओं को तो सहन कर लेती किन्तु किसी मुस्लिम नेता का नाम तक सुनना गवारा न करती। इसी प्रकार अब जनसंघ यह कोशिश कर रहा है कि हिन्दू पर उसका एकाधिकार हो जाए। उसे यह सहन नहीं कि किसी और पार्टी के झंडे तले काम करने वाला कोई हिन्दू विशिष्ट स्थान प्राप्त करे। मुस्लिमलीग की तरह वह एक हिन्दू लीग की भूमिका निभाना चाहता है और उन लोगों को हिन्दू मानने से इन्कार करने लगा है जो जनसंघ में नहीं है। दूसरी सभी पार्टियों में काम करने वाले गैर हिन्दुओं को तो वह सहन करता है किन्तु कोई हिन्दू उसे गवारा नहीं।

आर्यसमाज या उसके नेताओं से

लेखक

उलझने का इसके सिवा और कोई अर्थ हो ही नहीं सकता। आर्यसमाज न तो कभी चुनाव में भाग लेता है और न इस पर किसी एक राजनीतिक पार्टी का अधिकार है। असंख्य आर्य समाजें ऐसे हैं, जिनके पदाधिकारी जनसंघी हैं। ऐसे भी हैं, जिनके पदाधिकारी सोशलिस्ट हैं। आर्यसमाज में कांग्रेसी भी हैं और ऐसे लोग भी हैं जिनका सम्बन्ध किसी राजनैतिक पार्टी से नहीं। आर्यसमाज ने न कभी किसी पर आपत्ति की न किसी पर प्रतिबन्ध लगाया। जनसंघ वालों ने कई जगह आर्यसमाज के मंच और संगठन का दुरुपयोग करने का यह प्रयत्न अवश्य किया। इस पर उन्हें रोका जरूर गया, किन्तु निकाला नहीं गया। अलबत्ता जनसंघ का यह प्रयत्न अवश्य असफल हुआ है कि वह इससे आर्यसमाज पर पूर्णरूप से आधिपत्य जमा ले। संभवतः इस प्रयत्न की असफलता ही उस क्रोध का कारण है, जो अब आर्यसमाज पर निकाला जा रहा है। लेकिन जनसंघ वालों ने कभी सोचा नहीं कि यदि आर्यसमाजी जनसंघ को छोड़ जाएं, तो बाकी क्या रह जाता है।
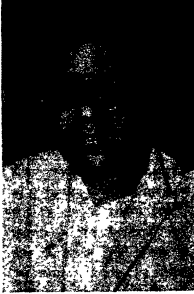
मैं कैप्टन केशवचन्द्रजी से सहमत हूं कि यह बहस बन्द होनी चाहिए। किन्तु इसे आर्य समाज ने नहीं छेड़ा, स्वयं जनसंघ के नेताओं ने छेड़ा है। आर्यसमाज किसी भी राजनीतिक पार्टी से उलझना नहीं चाहता और न किसी राजनीतिक पार्टी के लिए अपने दरवाजे बन्द करना चाहता है। किन्तु यह सम्भव नहीं कि जनसंघ अकालियों को प्रसन्न करने के लिए आर्यसमाज पर लांछन भी लगाए और यह आशा भी रखे कि उसे प्रत्युत्तर नहीं मिलेगा। अभी तो आर्य समाज खामोश है। आर्यसमाज के कुछ नेताओं ने ही जनसंघ को उत्तर दिया है। संस्था के रूप में अभी कुछ कहा नहीं गया। आर्यसमाज में सहन शक्ति बहुत है: यदि यह अकालियों का हमला सहन कर सकता है, तो जनसंघ का भी। किन्तु हर बात की एक सीमा होती है यदि जनसंघ का यही रवैया रहा तो फिर उसे भी हरकत में आना पड़ेगा। बेहतर हो कि जनसंघ अपनी गलती को स्वीकार करते हुए आर्य समाज से क्षमा मांग ले। आर्यसमाज को इस बात से कोई सरोकार नहीं कि जनसंघ अकालियों से गठजोड़ करता है या स्वतन्त्र पार्टी से, यह उसका अपना दृष्टिकोण है। आर्यसमाज चुनाव के पचड़े में नहीं पड़ता। लोग जनसंघ को अच्छा समझेंगे तो उसे वोट देंगे, कांग्रेस को अच्छा समझेंगे तो उसे सफल करा देंगे। इससे आर्यसमाज का कोई सम्बन्ध नहीं। लेकिन आर्यसमाज जनसंघ को यह अनुमति नहीं देगा कि वह चुनाव जीतने के लिए धार्मिक संस्था पर कीचड़ उछाले।

शुद्धि

आर्यसमाज, जालना के पूर्व मंत्री श्री मदनलाल जी के पुरुषार्थ से ईसाई युवती पद्मनि बाई की शुद्धि करके लीलादेवी नाम रखा गया। श्री पं० गोपालदेव शास्त्री द्वारा कार्य सम्पन्न हुआ।

चुनाव

आर्यसमाज लोहारु के निर्वाचन में श्री भरतसिंह जी आर्य प्रधान, श्री भरतसिंह जी शास्त्री मन्त्री एवं श्री सूरजभान जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज, अड़िंग-मथुरा के निर्वाचन में श्री डा० रामस्वरूप जी गुप्त प्रधान, श्री डा० चन्दलाल शर्मा जी मन्त्री, तथा श्री डा० देवकीनन्दन जी गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गए।

क्या वेद अनेकेश्वर वादी हैं ?

श्री पिण्डीदास जी ज्ञानी
प्रधान, आर्य समाज लोहगढ़,
अमृतसर

ईसाई लोग स्वयं तो एकेश्वरवादी होने का दम भरते हैं और वेद को अनेकेश्वरवादी बतलाते हैं। (उनके एकेश्वरवादिता के सिद्धान्त की वास्तविकता क्या है, यह एक पृथक् विषय है) आज तो हम वेद के अनेकेश्वरवाद के सम्बन्ध में कुछ विचार करेंगे।

अंग्रेजों ने अपने शासन की नींव सुदृढ़ और स्थाई बनाने का एक मात्र साधन ईसाई मत के प्रचार को समझा। अतः उसके बड़े बड़े प्राध्यापक और अन्य विद्वान् अहर्निश इसी कार्य्य में जुट गये कि येन-केन-प्रकारेण आर्य धर्म के मूल स्रोत-वेद-को निकृष्टतम पुस्तक सिद्ध किया जाय, ताकि आर्यों की वेद पर श्रद्धा को समाप्त करके उनके मस्तिष्कों पर बाईबल और उसमें वर्णित ईसाईयत की उत्कृष्टता स्थापित की जा सके। क्योंकि उक्त विद्वानों ने वेदों को जंगली गडरियों के गीत, लकड़हारों तथा पानी ढोने वालों के प्रलाप, सुरा-मद-मत्त विकृत मस्तिष्कों की बकवाद, असभ्य मानव के हृदयोद्गार और जाने क्या क्या अण्ड-बण्ड उद्घोषित किया। उन लोगों ने बीसियों पुस्तकें लिखकर यह सिद्ध करने का दुःसाहस किया कि वेद बहुदेव पूजा अर्थात् अनेकेश्वरार्चन की शिक्षा देते हैं, कि इनमें गण्डे-तावीज, झाड़-फूंक, जादू टोना, मारण-मोहन-उच्चाटन तथा वशीकरण जैसे क्रूर कर्मों एवं अनर्गल अभिचारों का विधान है और विवाहोत्सवों पर वैदिक काल में गौओं का घात करके उनके मांस से अतिथियों को तृप्त किया जाता था; यज्ञों के अवसर पर गौ पशु-वध और तदनन्तर पशु-बलि यहां तक कि नर-बलि-प्रचलित थी इत्यादि।

उन ईसाई प्रचारकों की पद्धति का अनुसरण करने वाले कतिपय भारतीय विद्वान् नामधारी सज्जनों ने अपने पाश्चात्य गुरुओं से भी चार कदम आगे बढ़ने का प्रयास किया है।

पाश्चात्य ईसाई विद्वानों के भारतीय चेले-चाँटों में से कुछ एक ने मिलकर वैदिक (Vedic age, नाम की एक पुस्तक का सम्पादन किया और इसे श्री कन्हैयालाल मौणिकलाल (के॰एम॰) मुन्शी के भारतीय विद्या भवन बम्बई द्वारा प्रकाशित किया गया। इन सम्पादक सज्जनों ने वेद के विरुद्ध बहुत कुछ लिखकर 'नमक हलाल' बनने का भरसक प्रयत्न किया है। परन्तु वेद पर अनेकेश्वरवाद का लाञ्छन लगाकर तो मानो आकाश-पुष्प प्राप्त करने की चेष्टा की गई है। अतः आज हम उसी के सम्बन्ध में कुछ चर्चा करते हुए स्वयं वेद में से कुछ एक मन्त्र उद्धृत करके 'Vedic Age' के प्रशस्त लेखकों, प्रकाशकों तथा उनके प्रशंसक संगी-साथियों से प्रार्थना करेंगे कि निष्पक्षपात विवेचन करके अपने विघटनकारी, अराष्ट्रीय विचारों को शुद्ध और हृदयों को निर्मल बनाते हुए पुण्य एवं यश के भागी बनें।

'Vedic Age' (वैदिक राज) के विद्वान् लेखकों ने अपना आशय निम्न शब्दों में प्रकट किया है —

It has been generally held that the Rigvedic Religion is essentially Poly theistic one, taking on a Pan theistic colouring only in a few of its latest hymns."

अर्थात्—"प्रायः सब लोग स्वीकार करते हैं कि ऋग्वेदीयमत प्रधानतः बहुदेववादी अथवा अनेकेश्वरवादी है। हां, अन्त में कुछ सूक्त ऐसे भी हैं जिनसे अद्वैतवाद की झलक दिखाई देने लगती है।"

यह विचार कितना भ्रमोत्पादक, पक्ष-पातपूर्ण, विवेक शून्य एवं धृष्टता प्रदर्शक है, यह सिद्ध करने के लिये हम थोड़े से वेद मन्त्र सहित भावार्थमय निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत करके निर्णय विज्ञ पाठकों पर छोड़ते हैं—

१. य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति। इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥ ऋ॰ १-७-९

अर्थात्—सर्वैश्वर्य सम्पन्न प्रभु, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, तथा अतिशूद्र आदि पांच विभागों में विभक्त मनुष्यमात्र तथा सब प्रकार के ऐश्वर्यों का एक ही स्वामी है।

२. न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः। नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक् ॥

ऋ॰ १ ५२-१४

अर्थात्—परमेश्वर सब में ओत-प्रोत है। आकाश, भूमि और सागर उसका अन्त नहीं पा सकते। गर्जते, बरसते मेघ और चमकती बिजली उसकी महिमा का गान करते हैं, परन्तु उसके पार तक नहीं पहुंच पाते। वह एक ही सर्वत्र व्याप्त है। उसी ने अपने से भिन्न इस संसार की रचना की है।

३. त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वंगाः। त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वितमो ववर्थ ॥ ऋ॰ १-९१-२२

अर्थात्—हे शान्ति के पुञ्ज सोम ओषधियों वनस्पतियों, जलधाराओं एवं गवादि पशुओं के उत्पन्न करने वाले आप ही हैं। आप ही समस्त अन्तरिक्ष में व्याप्त हैं और अपने प्रकाश से तमाम अन्धकारों का नाश कर रहे हैं।

४. इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।

ऋ॰ १-१६४-४६

अर्थात्—एक ही निर्विकार परमात्मा को ज्ञानवान् महापुरुष अनेक नामों से स्मरण करते हैं। उसी को इन्द्र (ऐश्वर्य सम्पन्न), मित्र (सर्वहितैषी), वरुण (सर्वश्रेष्ठ), अग्नि (अग्रणी), दिव्य (विचित्र गुणागार), सुपर्ण (उत्तम कर्म कर्त्ता), गरुत्मान् (महान्), यम (सर्व नियन्ता), और मातरिश्वा (अन्तर्यामी) कहकर पुकारते हैं।

५. य एक इत् तमुष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः ॥

अर्थात्—जो परमेश्वर एक ही है। हे मानव! तू उसी की स्तुति कर, वह सब मनुष्यों का सर्वद्रष्टा-सर्वज्ञ है। सुख वर्धक तथा ज्ञान और कर्म वाला समस्त संसार का एकमात्र अधिपति है।

५. य एक इद्धव्यश्चर्षणीनामिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः। यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान्त्सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान् ॥

ऋ॰ ६-२२-१

अर्थात्—जो परमात्मा समस्त मानव संसार का एक ही उपास्य देव है। उसी का इन (वेद) वाणियों द्वारा भली प्रकार अर्चन करो। वही सुख की वृष्टि करने वाला, सर्वशक्तिमान्, सत्यस्वरूप, सर्वज्ञ और तमाम बलों का अधिपति है।

६. ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा। इन्द्र चोष्कूयसे वसु ॥ ऋ॰ ८-६ ४१

अर्थात्—हे सर्वैश्वर्य सम्पन्न परमात्मन्! निश्चित रूप से आप ही सर्वज्ञ,सबसे पूर्व विद्यमान,अपने बल से अकेले ही सब के शासक हैं और समग्र धनों को अपने आधीनस्थ रखते हैं।

७. अयमेक इत्था पुरूरु चष्टे विविश्पतिः। तस्य व्रतान्यनु वश्चरामसि ॥ ऋ॰ ८-२५-१६

अर्थात्—यह एक ही प्रभु सारी प्रजाओं का स्वामी है। वही सब का भली प्रकार निरीक्षण करता है अपने कल्याणार्थ हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।

८. विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो, विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥

ऋ॰ १०-८१-३

अर्थात्-परमाणुओं द्वारा द्युलोक एवं पृथिवी की सृष्टि करने वाला एक ही देव है, जिसके आंख, मुंह, बाहु और पैर मानो चारों ओर व्याप्त हैं।

यजु॰ १०-१९ में भी यही मन्त्र है।

९. यो विश्व चर्षणिरुत विश्वतो मुखो यः विश्वतस्पाणिरुत विश्वतस्पृथः। सं बाहुभ्यां भरति संपतत्रै, र्द्यावा पृथिवि जनयन् देव एकः ॥ अथर्व १२-२-२६

नोट.—इस मन्त्र में और इससे पहले वाले मन्त्र में कुछ एक शब्दों का ही भेद है।

१०. यो नः पिता जनिता यो विधाता, धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यो देवानां नामधा एक एव, तं संप्रश्नं भुवना यन्त्यन्या ॥

ऋ॰ १०-८२-३ यजु॰ १७-२७ तथा अथर्व २-१-३

अर्थात्—जो प्रभु हमारा पिता, उत्पादक और धारण करने वाला है। जो समस्त स्थानों और भुवनों को जानता है। जो समस्त दिव्य गुण-कर्म-स्वभाव युक्त, देवों (इन्द्र, अग्नि, वरुण, यम आदि) के नामों को धारण करने वाला एक ही है। उस अच्छी प्रकार जानने योग्य परमात्मा की ओर ही अन्य सब लोक-लोकान्तर

[शेष पृष्ठ १० पर]

देशभक्ति और मर्हाष दयानन्द

[श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी०
डी० वी० कालेज, गोरखपुर]

आज भारत संक्रांतिकाल या दूसरे शब्दों में विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। आज हम राष्ट्र के भविष्य की दृष्टि से जो कदम उठायेंगे या जिस मार्ग पर चलेंगे आगे आने वाली संततियां उसी रूप में हमें याद करेंगी। पाकिस्तान से यद्यपि ताशकन्द समझौता हो चुका है। पर अभी उसकी स्याही सूखने भी नहीं पाई थी कि पाकिस्तान के दुर्विनीत और धृष्ट परराष्ट्रमन्त्री भुट्टो ने उस अयुद्ध समझौते को काश्मीर पर जो भारत का अभिन्न अंग है लागू मानने से इन्कार कर दिया। चीन का आक्रमण हमारे सिर पर सदा विद्यमान् है। अर्थात् आज भारत राष्ट्र पर युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। युद्ध अच्छी वस्तु नहीं। परन्तु युद्ध से संसार को कभी मुक्ति भी नहीं मिल सकती। यह युद्ध सदा रहा है और सदा रहेगा यह एक निर्विवाद और अटल सत्य है। युद्ध के द्वारा कुटिल और बर्बर राष्ट्र सभ्य और स्वतंत्रता प्रिय राष्ट्रों को अपने अधिकार में किया करते हैं। स्वामी दयानन्द के समय भारत वर्ष गुलाम था। इस पर उन अंग्रेजों का शासन था जिन्होंने हमारा खून, चूसा, जिन्होंने भारत माता के अंग-भंग किए और जो आज भी हमारी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता को देख नही पा रहे हैं और अपनी कुटिल नीति से भारत को और भी टुकड़ों में बांटने के सपने ले रहे हैं। इन अंग्रेजों की कुटिलताओं को इस देश में जिसने सबसे पहले समझा और उन्हें भारत से निकालने का सबसे प्रथम प्रयत्न प्रारम्भ किया वह थे स्वामी दयानन्द सरस्वती उन्होंनें गंगा के किनारे अपने पुत्र का शव बहाकर आती हुई माता को पुत्र के कफन के कपड़े को धोकर ले जाते हुए देखा तो उन्होंने चिन्तन किया कि इस शस्य श्यामला भारत वसुन्धरा के पुत्र और पुत्रियों की इतनी निर्धनता का क्या कारण है। उन्होंने चिन्तन किया कि रत्नगर्भा यह भूमि इतनी निर्धन क्यों? उन्होंने चिन्तन किया कि जिस देश के निवासी शतायु होते थे आज वहां काल मृत्युयें क्यों हो रही हैं? उन्होंने चिन्तन किया कि आज देश में इतनी अनैतिकता और भ्रष्टाचार क्यों हो रहा है? वे इस परिणाम पर पहुंचे कि इन सब का मूल कारण विदेशी शासन का समूलोच्छेदन ही राष्ट्रीय विकास का प्रमुख साधन है। उन्होंने उसी दिन स्वदेशी वस्तुओं के अपनाने की सलाह भारतवासियों को दी। उन्होंने उसी दिन अंग्रेजी के स्थान पर आर्यभाषा नाम से हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का आग्रह किया। उन्होंने उसी दिन अंग्रेजी शिक्षा के स्थान पर राष्ट्रीय शिक्षा की आवाज उठाई। उन्होंने उसी दिन राजपूताने के राजाओं के दरवाजे पर जा जा कर उन्हें सच्चे आर्य धर्म की देनी प्रारम्भ की, उन्होंने उसी दिन लिखा कि गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से कहीं अच्छा है।

महर्षि दयानन्द ब्रह्मशक्ति संपन्न विभूति थे। अपने लिए उन्होंने अहिंसा धर्म को स्वीकार कर रखा था। परन्तु राष्ट्र के लिए, देश के लिए सत्यार्थ-प्रकाश के छठे समुल्लास में शत्रुओं से कैसा व्यवहार करना चाहिए सिखाया है? उन्होंने मानव कल्याण और शत्रुओं के नाश के लिए ब्रह्म शक्ति और क्षात्रशक्ति का विकास समान् रूप से करने का आदेश दिया है। आज स्वतन्त्र होने के बाद भी हमने इन दोनों शक्तियों के विकास के लिए कोई प्रयत्न नही किया। ब्रह्मशक्ति तप और त्याग, ज्ञान और आध्यात्मिकता का प्रतीक है। परन्तु हमारे राष्ट्र में तपस्या का स्थान भोगविलास, शृंगार और सांस्कृतिक नृत्यों ने ले लिया, ज्ञान-मन्दिरों, विद्यालयों एव कालेजों के ऊपर के अधिकारियों एव मन्त्रियों को प्रसन्न करने के लिए बालिकाओं और बालकों को स्टेज पर लाया गया, स्त्रियां तक शराब अड्डों में जाने लगी हैं। शान्ति की नीति का मतलब भी हमने सांस्कृतिक विकास के स्थान पर नृत्य गान समझा। परिणामतः भोग-विलास की वृद्धि हुई। राष्ट्र में नपुंसकत्व आया। हमने समझौते की और उन समझौतों में दबने की नीति अपनाई। स्वामी दयानन्द इस बात को समझते थे अतः उन्होंने ब्रह्मचर्य और इन्द्रिय संयम के रूप में राष्ट्र को इसके पालन का आदेश दिया और यदि सोचा जाय तो ज्ञान, ब्रह्मचर्य और इन्द्रिय संयम यही राष्ट्र की ब्रह्मशक्ति है। इसके विकास की ओर हमें आज ध्यान देने की कितनी अधिक आवश्यकता है।

परन्तु यह ब्रह्मशक्ति स्वनिर्माण की प्रेरणा देती हैं यह अपने निर्माण में बाधा डालने वाले तत्वों को दूर नहीं कर सकती है। उसके लिए तो विश्वामित्र को वशिष्ठ के यहां जाना ही होगा। उसके लिए तो कृष्ण को अर्जुन के लिए गीता सुनानी ही होगी। इसीलिए अपने हत्यारों को धन देकर प्राण बचाने की प्रेरणा देने वाले ऋषि ने यद्यपि अहिंसा को अपना मूल धर्म माना था किन्तु आपद्धर्म के रूप में उन्होंने हिंसा की उपेक्षा नहीं की। उन्होंने स्पष्ट रूप में मनु के शब्दों को दुहराते हुए कहा :—

आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्।

आततायी को बिना विचारे मार डाले। क्योंकि वे जानते थे कि जो व्यक्ति या राष्ट्र आपद्धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता उसका परमधर्म स्वयं नष्ट हो जाता है। 'दिनकर' ने 'परशुराम की प्रतीक्षा' शीर्षक कविता में कहा है कि बुद्ध, अशोक, शंकर दयानन्द और गांधी भारत के रक्षक नहीं स्वयं भारत है। उसकी रक्षा के लिए परशुराम, गुरुगोविंदसिंह, राणाप्रताप और शिवाजी का आह्वान आवश्यक है। पाकिस्तान और चीन भारत से लोकतन्त्र स्वतन्त्रता और अहिंसा को मिटाना चाहते हैं। ऐसे समय स्वामी दयानन्द ने षष्ठ समुल्लास में क्षात्र शक्ति को जागृत करने का उपदेश दिया है। आज तक हमने शान्ति की चर्चा की, ऐटमबम न बनाने की घोषणा की, हमने विश्व-शान्ति का नारा लगाया और शायद धोखे से हमने सोचा भी कि हमसे ही विश्वशान्ति कायम है। परन्तु कमजोर राष्ट्र, शस्त्र शक्ति में क्षीण-राष्ट्र कभी शांति नहीं कायम कर सकता यह हम भूल गए। इसलिए स्वामी जी के उपदेश के अनुसार सत्य और न्याय, स्वतन्त्रता और लोक तन्त्र की रक्षा के लिए, भारत वर्ष को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाना, शस्त्रशक्ति से मजबूत करना यही हमारी सब से बड़ी आवश्यकता है। चीन के आक्रमण के बाद हमने निस्संदेह इस दिशा में प्रगति की है और हमने पाकिस्तान के दांत खट्टे किए है परन्तु अभी बहुत से शत्रु विद्यमान् हैं। इसलिए हमें अपनी सामरिक शक्ति विकसित करनी होगी। यह याद रखना होगा कि भारत शक्तिबल से ही सुरक्षित रह सकेगा।

श्रद्धा-सुमन

[पद्मश्री डा० हरिशंकर शर्मा जी डी० लिट्]

वज्र गिरे तारागण टूटें, धरा-धाम फट जाने दो,
बरसे आग, रसातल डूबें, सिंधु घटे घट जाने दो।
दारुण कोप सहो कष्टों का शीश कटे कट जाने दो,
पर अन्याय-असुर के आगे शुभ्र मुख छुट जाने दो।
जिनकी सिंह-गर्जना से हम प्रबल प्रेरणा पाते हैं,
उन वीरों की बलि-वेदी पर श्रद्धा-सुमन चढ़ाते हैं।

मर कर अमर करें जीवन को ऐसे वीर बढ़ो आओ,
कर्म्म-क्षेत्र में असि-धारा की निर्भय भेंट चढ़ो आओ।
अटल प्रतिज्ञाधारी योधा, बन चट्टान अड़ो आओ,
कर्म्म-योग की यज्ञ-वन्हि में आहुति रूप पड़ो आओ।
ऐसे वीर वचन जिनके सबको सन्मार्ग सुझाते हैं,
उन वीरों की बलि-वेदी पर श्रद्धा-सुमन चढ़ाते हैं।

वही वीर जीवित रहते हैं जो कटु कष्ट उठाते हैं,
बलि प्रदान करने के कारण वेदी पर चढ़ जाते हैं।
प्राण त्यागते हंसते-हंसते मोह न मन में लाते हैं,
उपजाने को निर्भय नेता बीज-रूप गल जाते हैं।
उनके चरण-चिन्ह पर चल जो कर्म्म वीर बन जाते हैं,
उन वीरों की बलि-वेदी पर श्रद्धा-सुमन चढ़ाते हैं।

आर्य समाज सावधान!

श्री पं० राजेन्द्र जी आर्य, अतरौली, (अलीगढ़)

आज भारत के समक्ष राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी अनेक समस्याएँ हैं। इन सबको दृष्टि में रखते हुए आर्यसमाज क्या करे और क्या न करे? यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर आर्यसमाज के नेता, विद्वान् तथा कार्यकर्ताओं में गहरा मतभेद है, जो आर्यसमाज की नीति निर्धारण में एक बड़ी बाधा बना हुआ है। इसी पर यहां इस लेख में विचार करना है।

१—कुछ का मत है कि आर्यसमाज एक विशुद्ध सार्वभौम धार्मिक संस्था है, अतः उसे उसी के अनुरूप वैदिक धर्म का विश्वव्यापी प्रचार और प्रसार करना चाहिये। समय-समय पर उठने वाली भारतीय समस्याओं में उसे अग्रणी बनकर उलझना चाहिये। उनका विश्वास है कि देशीय, विदेशीय समस्त समस्याएं धर्म के वास्तविक स्वरूप को बिना समझे और उन पर आचरण किये नहीं सुलझ सकतीं। इसलिये हमें सांसारिक अशान्ति के मूलकारण को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये। किसी कवि के शब्दों में हम कह सकते हैं—"एकहि साधे सब सधे, सब साधे सब जाय। जो तू सींचे मूल को फूले फले अघाय॥"

२—एक अन्य मत यह है कि आर्यसमाज को अपनी पुरानी खडन-मडनात्मक नीति का परित्याग करके समन्वयात्मक नीति को अपनाना चाहिये और हिन्दुओं के साथ मिलकर देश में फैली हुई बुराइयों को दूर करना चाहिये। खडनात्मक पुरानी नीति जिसे प्रारम्भ में ऋषि दयानन्द ने अपनाया था वह उस समय के लिये उपयुक्त थी। उससे लाभ के स्थान में आर्यसमाज को हानि पहुंचती है। हिन्दुओं की संघ शक्ति क्षीण होती है।

३—एक तीसरा समुदाय आर्य समाज को सामूहिक रूप से भारत की राजनीति में सक्रिय भाग लेने के पक्ष में है। उसका कहना है कि बिना राजसत्ता को प्रभावित किये धार्मिक एवं सामाजिक सुधार होना असम्भव है। अपने पक्ष में वह ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से अनेक प्रमाण, उनकी विदेशी राज्य को हटाने और चक्रवर्ती अन्यत्र स्थापित करने की आकांक्षा सूचक देते हैं।

४—एक चौथा दल ऐसा भी है जो वैदिक धर्म प्रचार के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं सामाजिक आन्दोलनों, उदाहरणार्थ हिन्दी भाषा प्रसार, गोरक्षा, ईसाई-मुस्लिम प्रचार निरोध, भाषावार प्रान्तीय विभाजन विरोध आदि में न केवल सक्रिय भाग लेने, अपितु नेतृत्व करने का सुझाव देता है।

आइये अब यहां शांत भाव से इनके व्यवहारिक रूपों पर विचार करें। क्रमानुसार पहले पक्ष—अर्थात् आर्यसमाज को अपनी सीमित गतिविधि से ऊपर उठकर वैदिक धर्म का विश्वव्यापी प्रचार करना चाहिये, को लेते हैं। जिन लोगों ने आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के स्वलिखित वैदिक साहित्य का अवलोकन किया है उनको यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उनका लक्ष्य संसार को आर्य बनाना था।

वह उसे किसी देश अथवा जाति विशेष तक सीमित रखना नहीं चाहते थे। वह स्वयं विदेशों में जाकर वैदिक धर्म प्रचार के आकांक्षी थे। इसके लिये उन्होंने एक शिक्षक को अंग्रेजी पढ़ने के लिये नियुक्त भी किया था। कर्नल अल्काट, मैडम ब्लेवटस्की से सम्पर्क स्थापित करने का भी यही उद्देश्य था। पं० श्याम जी कृष्णवर्मा को विदेश भेजना भी इसी लक्ष्यपूर्ति के लिये था।

परन्तु दुर्भाग्यवश पौराणिक विरोधियों द्वारा बारबार विष दिये जाने के फलस्वरूप उनकी शारीरिक अवस्था निरन्तर बिगड़ती गई और अन्त में रामायण काल के पश्चात् उत्पन्न हुए इस वैदिक कालीन ऋषि को केवल ५९ वर्ष की अल्पायु में पौराणिक साम्प्रदायिकता की बलिवेदी पर अपने भौतिक शरीर को परित्याग करना पड़ा। उन्होंने इस १५-१६ वर्ष के अल्प काल में जो कुछ वैदिक धर्म प्रचार और लेखबद्ध वैदिक साहित्य सृजन कार्य किया वह संसार के महापुरुषों के कार्यों में सर्वोपरि स्थान रखता है। उनको अपनी दिव्य दृष्टि से अल्पायु का आभास हो गया था, जिसे उन्होंने अपने भक्तों पर प्रकट भी किया था। अतएव अपने अन्तिम दिनों में प्रचार कार्य में संलग्न रहते हुए भी दिन रात एक करके सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, यजुर्वेद, ऋग्वेद भाष्य तथा संस्कार विधि आदि बहुमूल्य वैदिक साहित्य निधि, न केवल हमारे अपितु संसार के पथप्रदर्शनार्थ प्रकाशित करके अपने पीछे छोड़ी। यदि यह कहा जाय कि ऋषि दयानन्द का जन्म भूले वेदमार्ग को ससार में पुनः प्रशस्त करने के लिये हुआ था तो यह एक निर्भ्रान्त सत्य होगा।

अतएव जिन विद्वानों का यह मत है कि आर्यसमाज का मौलिक उद्देश्य वैदिक धर्म प्रचार को सार्वभौम बनाना है, कोई असाधारण बात नहीं है अपितु एक निर्विवाद तथ्य है। आज हजारों वर्षों से विभिन्न मत-मतान्तरों के मायाजाल में फंसा हुआ विश्व वैदिक मार्ग से भटककर भौतिक अनीश्वरवाद की ओर द्रुतगति से अग्रसर है। जिन-जिन मतों को लोग आज अपना अपना धर्म बताते हैं, वह उनका केवल एक बाह्य आडम्बर है, जिसे उन्होंने अपने सांसारिक तथा राजनीतिक स्वार्थों को छुपाने के लिये एक तथा कथित आध्यात्मिक आड़ बना रखा है, अन्यथा उनको ईश्वर एवं धर्म से कोई लगाव नहीं है यह बात मैं संसार के सभी मतमतान्तरों और उनके अनुयाइयों के लिये कह रहा हूं।

इसलिये आर्यसमाज यदि अपनी समग्रशक्ति को सगठित करके अपने इस महान् उत्तरदायीत्व को नहीं निभाता तब इसे कौन और कब पूरा करेगा? यह एक ज्वलन्त प्रश्न जिस पर आर्य विद्वानों, उसकी अग्रणी सभाओं और नेताओं द्वारा विचार करना है। राजनीतिक उत्थान-पतन, एवं राष्ट्रीय समस्याएं अधिक परिवर्तन शील हैं, इनसे संसार की समस्याएं न कभी स्थाई रूप से सुलझी और न सुलझ सकेंगी। न जाने कितने चक्रवर्ती राज्य अथवा राष्ट्र संघ बने और बिगड़े किन्तु बिना धर्म और ईश्वर विश्वास के वे सुख और शान्ति के कारण न बन सके। अतएव राजनीतिक, राष्ट्रीय अथवा भौतिक दृष्टि से संसार की सुख-समृद्धि और शांति का यही एकमात्र साधन है और हो सकता है।

क्रमशः

(स्व० श्री ला० दीवानचन्द्र जी मेहता)

आर्यसमाज दीवानहाल के माननीय सदस्य श्री सहदेवचन्द्र जी मेहता ने अपने पिता श्री ला० दीवानचन्द जी मेहता के निधन पर १०००) विविध आर्य संस्थाओं को दान दिया। जिसमें १००) सार्वदेशिक साप्ताहिक को १० विश्वविद्यालयों को एक वर्ष तक निःशुल्क भेजने के लिए प्रदान किया।

[पृष्ठ ७ का शेष]

और समस्त प्राणी वर्ग गति कर रहा है।

११. हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे,
भूतस्यजातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

अर्थात् – सूर्य्यादि प्रकाशक पदार्थ जिसके गर्भ में विद्यमान हैं। जो सृष्टि की उत्पत्ति से पहले भी मौजूद था। जो समग्र प्राणिवर्ग का एक ही स्वामी था और है भी, जो पृथिवि द्युलोक को भी धारण करने वाला है, ऐसे सुखस्वरूप देव का हम श्रद्धापूर्वक पूजन करते हैं।

१२. यः प्राणतो निमिषितो महित्वैक, इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
ऋ० १०-१२०-३

अर्थात्—जो प्राण वाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान् राजा है; जो दो पग वाले (मानवों) और चार पग वाले (गो आदि पशुओं) का अधिपति है, ऐसे सुखस्वरूप स्वामी का हम श्रद्धा भक्ति से पूजन-अर्चन करते हैं।

१३. आपोह यद् बृहतीर्विश्वमायन्,
गर्भं दधाना: जनयन्तीरग्निम्।
ततो देवानां समवर्त्ततासुरेकः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
ऋ० १०-१२१-७

अर्थात् जब यह विशाल अग्निरूपा विस्तृत प्रकृति अपने गर्भ मे अव्यक्त विश्व को धारण करती हुई, मूर्त्त रूप में व्यक्त हुई, उस समय वह परमदेव परमात्मा समस्त प्रकाशक पदार्थों (यथा सूर्याग्नि आदिका) एकमात्र प्राणस्वरूप विद्यमान था।

१४. [illegible]
यो देवानामधिदेव एक आसीत्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
ऋ० १०-१२१-८

अर्थात् जो परात्पर परब्रह्म परमेश्वर अपनी अनन्त सामर्थ्य से बलशालिनी तथा संसार रूपी महान् यज्ञ का सृजन करने वाली प्रकृति का साक्षी तथा अधिष्ठाता रूप से निरीक्षण करता है, जो तमाम प्रकाशक पदार्थों तथा ज्ञानवान् महानुभावों का एक ही अधिपति है, उस सुख स्वरूप प्रभु की हम श्रद्धा पूर्वक भक्ति करते हैं।

१५. प्रजापते नत्वदेता न्यन्यो
विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु
वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥
ऋ० १०-१२१-१०

अर्थात्—हे प्रजाओं के स्वामी देवाधिदेव परमात्मन्! आपसे भिन्न इन तमाम उत्पन्न पदार्थों का कोई स्रष्टा, इनमें व्यापक और इनका अधिपति नहीं है। अतः कृपा करो कि जिस कामना की पूर्ति के लिये हम आपका चिन्तन करें, आपकी दयालुता से वह हमारी शुभ कामना पूर्ण हो और हम उक्त ऐश्वर्यों के स्वामी बनें।

१६. सुपर्णं विप्राःकवयो वचोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति ॥ ऋ० १०-११४-५

अर्थात्—विद्वान् और बुद्धिमान् उस एक प्रभु को अनेक नामो तथा रूपों से वर्णन करते हैं।

१७. तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु
चन्द्रमाः। तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म
ता आपः स प्रजापतिः ॥
यजु० ३२-१

अर्थात्—वह नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्तस्वभाव परमात्मदेव ही अग्निः, आदित्यः, वायुः, चन्द्रमाः, शुक्र, ब्रह्म, आप. और प्रजापतिः आदि नामों को धारण करने वाला है।

१८. दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य
यस्पतिरेक एव नमस्यो
विक्ष्वीड्यः। तं त्वा यौमि
ब्रह्मणा दिव्य देव नमस्ते
अस्तु दिवि ते सधस्थम् ॥
अथर्व० २-२-१

अर्थात्—हे अद्भुत स्वभाव वाले गन्धर्व! आप समस्त ब्रह्माण्ड के एक ही स्वामी हैं। सब प्रजाओं द्वारा नमस्कार तथा स्तुति योग्य हैं। उस आपको मैं वेद द्वारा प्राप्त होता हूं, सदा, सर्वत्र ओत-प्रोत-व्यापक हैं।

१९. समेत विश्वे वचसा पतिं
दिव एको विभूरतिथिर्जनानाम्। स पूर्व्यो नूतनमाविवासत् तं वर्तनिरनु वावृत एकमित् पुरु ॥ अथर्व ७-२१-१

अर्थात्—हे लोगो! आप सब सरल स्वभाव और ओज के साथ आवें। वह परमात्मा अकेला (एक ही) मनुष्यों में अतिथिवत् पूज्य अथवा सर्वव्यापक है। वह पुरातन-नूतन सब में विराजमान् है। ज्ञान-कर्म-उपासना के सभी मार्ग उसी ओर अग्रसर हो रहे हैं। निश्चित रूप से वह एक ही है।

२०. न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो
नाप्युच्यते ॥ अथर्व १३-४-१६

२१. न पञ्चमो न षष्ठः सप्तमो
नाप्युच्यते ॥ अथर्व १३-४-१७

२२. नाष्टमो न नवमो दशमो
नाप्युच्यते ॥ अथर्व १३-४-१८

२३. स सर्वस्मै विपश्यति यच्च
प्राणति यच्च न ॥
अथर्व १३-४-१९

२४. तमिदं निगतं सहः स एष
एक एक वृदेक एव ॥
अथर्व १३-४-२०

२५. सर्वे अस्मिन् देवा एकवृतो
भवन्ति ॥ अथर्व १३-४-२१

अर्थात्—वह परमात्मा न दूसरा है न तीसरा और न चौथा कहा जाता है; वह पांचवा, छटा और सातवां भी नही कहा जाता है; वह आठवां, नववां और दसवां भी नहीं कहा जाता है; वह प्रभु [illegible] प्रकार से देखता है। उसे सब सामर्थ्य प्राप्त है। वह अकेला ही वर्तमान् है; उसी में पृथिवी आदि समस्त देव वर्तमान् हैं।

पाठक वृन्द! यद्यपि इसी विषय पर और भी अनेक मन्त्र प्रस्तुत किये जा सकते हैं; परन्तु लेख पहले ही पर्याप्त दीर्घकाय हो गया है, अतः इसे यहीं विश्राम देते हैं; क्योंकि हमें विश्वास है कि इतने उद्धरण ही ईसाई प्रचारकों और उनके अनुयायी 'वैदिक एज' के लेखकों जैसे वेद निन्दकों के कृत्रिम माया-जाल को छिन्न-भिन्न करने के लिये काफी होंगे। प्रभु करे कि भ्रमोत्पादक महानुभावों की बुद्धि निर्मल हो जाय और वे वास्तविकता का दर्शन करने की क्षमता प्राप्त करते हुए इस मानव जीवन को सफल बना सकें।

आर्य समाज और वेद

सार्वदेशिक के गत किसी अंक में श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक प्रधान आर्य कुमार परिषद् की ओर से आर्य समाज के सम्बन्ध में एक निबन्ध प्रतियोगिता की सूचना छपी थी।

मोरिशस (अफीका) निवासी शोभना दशरथ नामक देवी ने सार्वदेशिक में यह सूचना पढ़ कर यह लेख भेजा है जहां परिषद् ने इस लेख को पसंद किया है वहां इस लेख को उक्त विदेशी महिला के उत्साह वर्धनार्थ सार्वदेशिक में प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" इस वाक्य से हमें वेद की महत्ता का ज्ञान हो जाता है। सत्य का दूसरा रूप ईश्वर है। सत्य का सुसंस्कृत रूप "सत्यम्" है। स+ति+यम्। स का अर्थ "जीव" है ति का अर्थ "ब्रह्मांड" और यम् का अर्थ शासक है। इस प्रकार इस का असली रूप 'परमेश्वर" हुआ।

वेद अनमोल रत्नों से पूर्ण है। आज यदि इस नश्वर-संसार में अमर ग्रन्थ वेद न होता तो न एक आर्य रहता और न भव्य भारत का नामो-निशान ही रहता। वेद के न होने [illegible] अछूत और अनेक कुरीति को दूर कर एक लड़ी में पिरो देता है। मानव जीवन के हर क्षेत्र के लिए वेद में अच्छी शिक्षा दी गई है। वेद के महत्व का वर्णन करना मुझसे अबोध विद्यार्थियों के लिए तो छोटी-मुंह बड़ी बात है पर इतना अवश्य कहूंगी, भले ही लोग इसे अतिश्योक्ति ही समझें, कि यदि संसार के सभी ग्रन्थ नष्ट हो जांय और वेद सुरक्षित रह जाय तो उस की पूर्ति हो जायगी पर यदि वेद नष्ट हो जाय तो संसार ही नष्ट हो जायगा।

जब वेद आदि ग्रन्थ सभी का अध्ययन सिर्फ आर्य लोग ही नहीं करते हैं, संसार के सभी सभ्य जातियां इस का अध्ययन करती हैं। संसार की विभिन्न भाषाओं में इस का अनुवाद हो चुका है। सैकड़ों लोग रोज इसे खरीद कर इस का अध्ययन करते हैं।

वेद वह ग्रन्थ है जिसे सभी लोग पढ़ सकते हैं। स्त्री पुरुष, बालक-बालिका, युवक-युवती, वृद्ध सभी के लिए इस महान् ग्रन्थ में अपार ज्ञान है। वेद सभी को एकता का पाठ पढ़ाता है। लोगों में फूट अधर्म, आदि पैदा होने नहीं देता है। वेद सभी को सच्चा सबक सिखलाता है, छोटे-बड़े जाति-पांति ऊंच-नीच [illegible] बात आवश्यक है। इसके पढ़ने से बहुत लाभ होगा। हमारा मानव-जन्म सार्थक होगा। वेद में हमें अपने सभी भाई-बहनों को सही राह पर लाने की शिक्षा दी गई है तो क्यों न हम उस को पढ़ें और अपने साथियों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें और उन्हें पढ़ावें भी। इस के श्रवण से हमें स्वर्गीय आनन्द मिलता है। और मिलता रहेगा। इस के सुनने के बाद इस अमृत विद्या का रसास्वादन दूसरों को भी कराना चाहिए। वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना-सुनाना हम आर्य युवक-युवतियों का परम धर्म है।

धर्म निरपेक्ष नीति राष्ट्र घातक

बार बार शंकराचार्य धर्म परिवर्तन रोकने में असमर्थ क्यों

हाथरस आर्यसमाज मुरसान द्वार के वार्षिक समारोह में दैनिक वीर अर्जुन दिल्ली के सहायक सम्पादक आर्य नेता श्री बनारसी सिंह एम० ए० ने कहा हिन्दू जाति की रक्षा से देश की रक्षा हो सकती है। सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति ही हिन्दू जाति के लिये घातक है। हम धर्म क्षेत्र में पिछड़े हैं, और यही कारण है कि दिन प्रतिदिन हमारी संख्या घट रही है।

आपने कहा हिन्दू अपनी मर्यादा की रक्षा करते हुये तीर और तलवार से भले ही हारा हो लेकिन अपने धर्म मर्यादा और संस्कृति को नहीं छोड़ा। हम पर हूण शक यवन, आदि के आक्रमण हुये लेकिन वे हमें समाप्त नहीं कर सके उल्टे हममें आत्मसात हो गये।

औरंगजेब की तलवार हमें समाप्त नहीं कर सकी, जोरावरसिंह वीर हकीकतराय आदि आर्य पुत्रों ने राज गद्दियों पर ठोकर लगाई किन्तु अपना धर्म नहीं छोड़ा। महर्षि दयानन्द ने भी सत्यता व निर्भीकता को अपनाया वह समझौतावादी प्रवृत्ति के घोर विरोधी थे। आज के लीडर सत्य और असत्य दोनों को ठीक कहते हैं।

आज आर्यत्व का सौदा वोटों के नाम पर होता है, देश के राजनैतिक दल यह सोचकर नीति निर्धारित करते हैं कि उन्हें वोट किस प्रकार अधिक मिलेंगे, कुर्सी बनाये रखने के लिये राजनैतिक नेता समन्वयवादी बनता है और सत्य कहने से डरता है कि कहीं वोट कम न हो जावें, ऐसे लोग आर्य जाति के मित्र नहीं हैं। धर्म निरपेक्षता का विष हिन्दु जाति को खाये जा रहा है।

श्री सिंह ने आगे कहा कि पाकिस्तानमें मुस्लिम बहुसंख्यामें है इसलिये उसे मुस्लिम राष्ट्र कहते हैं, ब्रिटेन, अमेरिका आदिमें ईसाइयों की बहुसंख्या है इसलिये ईसाई राष्ट्र कहे जाते हैं,तो हिन्दुस्तान में हिन्दू बहुसंख्या होने पर हिन्दू राष्ट्र क्यों नहीं कहा जाता।

महात्मा नारायण आर्य ने ओजस्वी शब्दों में कहा:—

एक बार शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म का खण्डन कर वैदिक धर्म की पुनः स्थापित किया था, किन्तु आज बार-बार शंकराचार्य भी लाखों की तादाद में होने वाले धर्म परिवर्तनों को नहीं रोक पाते।

स्वामी जी ने कहा—आर्यसमाज राष्ट्र और धर्म का जागरुक प्रहरी है, स्वार्थी लोग आर्यसमाज के सम्बन्ध में भ्रान्ति फैलाते हैं, आर्य समाज उन श्रेष्ठ पुरुषों का संगठन है जो वेदों द्वारा प्रतिपादित सत्य सनातन् वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करके देश का नैतिक उत्थान करना चाहता है, किन्तु स्वार्थी तत्वों ने अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैलाई हैं। जिससे उनके पाखण्ड जाल में फंसे लोगों को वह मनमाने ढंग से लूटते रहे।

आगे आपने कहा—महर्षि दयानन्द ने स्वाधीनता का शंखनाद कर,गौरक्षा का संदेश दिया, स्थान २ पर गौशालाऐं खुलवाईं, उस महर्षि ने विधवा तथा अनाथों की आर्त्त पुकार सुनी और नारी जाति का खोया सम्मान वापस दिलाया।

क्रान्तिकारी संन्यासी ने बड़े मार्मिक शब्दों में कहा कि यदि आर्य समाज न होता तो पता नहीं हिन्दु-जाति की क्या दशा होती। आज लाखों हिन्दु मुसलमान और ईसाई बन विधर्मी हो रहे हैं। स्वामी दयानन्द ने अपनी तर्क शक्ति से विधर्मियों को परास्त किया और शुद्धि आन्दोलन चलाकर उन्हें स्वधर्मी बनाया तथा इसी के लिये स्वामी श्रद्धानन्द महाशय राजपाल पं० लेखराम जैसे वीर बलिदान हुवे।

आपने आह्वान किया कि सनातन धर्मी कहलाने वाले भाई आर्य समाज के निकट आकर समझें व देश तथा धर्म की रक्षा में आर्य समाज का हाथ बढ़ावें।

—आर्यनगर (महेन्द्रगढ़) के श्री चौ० भरतसिंह जी आर्य (प्रधान आर्य समाज मुहाल) की सुपुत्री कुमारी सुमित्रा देवी का विवाह श्री देवव्रत जी शास्त्री (सुपुत्र श्री चौ० हरफूल सिंह जी ग्राम बारहड़ा) के साथ पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

Suave
in
a
Suit

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नगर बाजार झांसी का वार्षिक समारोह बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। श्री सुशीलकुमार जी एडवोकेट एवं श्री० सुरेन्द्रनाथ जी शर्मा एम० ए० ने तीन दिन तक वेद प्रवचन किए।

आर्यजगत् के महान् संन्यासी पूज्य श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज पधारे जिनके त्याग, तप और बलिदान से जनता बड़ी प्रभावित हुई। इसी अवसर पर यहां के प्रतिष्ठित आर्य श्री ला० गंगाराम जी को पूज्य श्री स्वामी जी ने वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा देते हुए महात्मा की उपाधि प्रदान की।

इस समारोह में नगर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति विभिन्न संस्थाओं के नेता एवं भारी जन समूह ने श्री ला० गंगाराम जी को हार्दिक श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत की।

—आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली का वार्षिक समारोह बड़े धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। पांच दिन तक श्री पं० राजकिशोर जी वैद्य द्वारा वेद कथा हुई। उत्सव में सर्वश्री पं० जगतकिशोर जी वैदिक रिसर्च स्कालर श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले, आचार्य श्री वैद्यनाथ जी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के भाषण हुए।

—आर्यसमाज पहासू का उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ माननीय श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी० श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले तथा श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी के प्रभावपूर्ण भाषण हुए।

—गुरुकुल महाविद्यालय वैरागियों और आर्यसमाज का उत्सव धूम-धाम से हो रहा है। सम्पूर्ण यजुर्वेद से ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ होगा।

—गुरुकुल में ब्रह्मचारियों को प्रविष्ट कराइये। यहां पर वेद-वेदांग की पढ़ाई के साथ ब्रह्मचारियों को आसन, व्यायाम, लाठी, भाला आदि की शिक्षा भी दी जाती है।

संस्कार

आर्यसमाज बघहा (मिर्जापुर) के मन्त्री श्री देवव्रतसिंह ने १० विवाह संस्कार कराये जिनमें २०७) प्राप्त हुए। श्री शीतलप्रसादसिंह जी इन्जीनियर ने अपने विवाह के अवसर पर आर्यसमाज में एक कमरा बनवाने का और श्री रामकुमारसिंह जी ने विवाह के अवसर पर १०१) मन्दिर निर्माण के लिए वचन दिया है।

—श्री चौ० भरतसिंह जी आर्य की दोहित्री राजकुमारी दीपावती और शकुन्तला का यज्ञोपवीत संस्कार श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज कांकेर (द० कन्नड़) में श्री जगन्नाथ जी शास्त्री का उपदेश हुआ, शान्तिपाठ के पश्चात् जलपाहार हुआ।

—उदुपि नगर के प्रसिद्ध आर्य श्री संजीव कामत के पुत्र का उपनयन संस्कार वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। अनेक प्रतिष्ठित महानुभाव सम्मिलित हुए।

- कन्नड़ जिले के प्रतिष्ठित आर्य श्री जयराम जी के पुत्र श्री धर्मप्रकाश जी का विवाह श्रीमती प्रेमादेवी के साथ वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अजमेर के आचार्य श्री पं० मंजुनाथ जी शास्त्री एम० ए० के पौरोहित्य में।

—श्री सत्यप्रकाश जी कश्यप मेरठ के लघु भ्राता श्री अनिलकुमार की वर्षगांठ समारोह से मनाया गया। श्री विश्वनाथ जी आर्यवीर का प्रभावशाली भाषण हुआ।

—आर्यसमाज, खडवा के सदस्य श्री मुरलीधर जी गुप्ता का विवाह श्री मांगीलाल जी महाजन की सुपुत्री रमाबाई के साथ वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

शोक

आर्यसमाज कोडा जहानाबाद के उत्साही मन्त्री जी का कानपुर में स्वर्गवास हो जाने पर आर्यसमाज मन्दिर में एक शोक सभा में भाव भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

— आर्यसमाज भरतपुर ने अपने उत्साही कार्यकर्ता श्री मुरलीधर जी मलिक के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए शोक सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट की है।

—वीर दयानन्द मोहल्ला की साप्ताहिक सत्संग दिनांक ५-६-६९ का यह अधिवेशन अपने सार्वदेशिक सभा के सुयोग्य प्रधान श्री सेठ प्रताप सिंह शूरजी वल्लभदास की पूजनीय माता जी के आकस्मिक स्वर्गवास हो जाने पर आर्यसमाज की गहरी क्षति समझता है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—आर्य प्रचार समिति आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई प्रदेश तथा प्रान्त भर की एवं स्थानीय सभी आर्य समाजों की सम्मिलित सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाज बम्बई के प्रधान श्री प्रतापसिंह जी की पूज्य माता श्रीमती बेगबाई जी के आकस्मिक देहावसान पर अपना हार्दिक शोक प्रकट करती है। पूज्य माताजी जी का जैसा धार्मिक एवं उदार तथा कर्मकांडी जीवन था वैसे ही उनकी सरलता एवं सादगी तथा उदारता भी अनुकरणीय थी।

ऐसे महान् आत्मा की एकाएक मृत्यु हम लोगों को शोक मग्न कर देती है। उनसे हमारे प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंहजी को अनेक पवित्र प्रेरणाएं मिलती रहती थी। आज यह परिवार उनसे वियुक्त होकर बड़ी अधीरता का अनुभव कर रहा है। परमपिता परमात्मा इस विस्तृत परिवार को पूर्ण धैर्य दें। तथा उस पवित्र एवं तेजस्वी आत्मा को चिरशान्ति प्रदान करें। सभा की अध्यक्षता—

श्रीमान् राजाबहादुर गोविन्दलाल जी ने की तथा अनेक महानुभावों ने स्वर्गीय आत्मा को श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत की।

आर्य युवक परिषद्

आर्य युवक परिषद् दिल्ली (रजिस्टर्ड) की मासिक मीटिंग श्री पं० देवव्रत धर्मेन्दु की अध्यक्षता में माडल स्कूल, दरियागंज में हुई। जिसमें ४ सितम्बर ६९ को होने वाली सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाओं की व्यवस्था तथा सफलता सम्बन्धी निश्चय किये गये। २७ जुलाई ६९ को दिल्ली के युवकों का वन विहार व फल भोज करने का निश्चय किया गया। निश्चय पत्र नाम २० जुलाई तक परिषद् कार्यालय १६५४ कूचा दखनीराय, दरियागंज, दिल्ली में पहुंचने चाहिए।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर ने १७, लाला पन्नालाल जी सराफ ११ तथा ला० गोवर्धनदास जी पुस्तक विक्रेता ने १५ सत्यार्थ प्रकाश परीक्षार्थियों के लिये दान दी।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के लिए श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु तथा ला० केदारनाथ जी दो प्रतिनिधि आगामी वर्ष के लिए चुने गए।

— ओम्प्रकाश मन्त्री

आर्यवीर दल का शिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के तत्वावधान में १३ जून से २६ जून तक अखिल भारतीय आर्य वीर दल के कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ।

इसमें शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण किया गया। शारीरिक प्रशिक्षण श्री काशीनाथ जी शास्त्री तथा बौद्धिक प्रशिक्षण श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने दिया।

२६ जून को दीक्षान्त समारोह श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

प्रथम यज्ञ तथा बाद में उपनयन संस्कार एवं दीक्षा आर्य वीरों को दी गई। शिवमित्रनाथ मित्र मेधावी, जगदीशचन्द्र वसु, शंकरसिंह जी, श्री परमानन्द जी, श्री सुदेव जी, श्री मंगलदेव जी आदि आर्य वीरों ने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य वीर दल के प्रचार के लिये दिया।

समारोह में श्री लाला रामगोपाल जी शाल वाले, मन्त्री सार्वदेशिक सभा, श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री, श्री आचार्य रामानन्द जी शास्त्री, श्री रामनारायण जी शास्त्री, श्री बृहस्पति जी शास्त्री, श्री वासुदेव जी शर्मा, प्रो० रतनसिंह जी तथा श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ने आर्य वीरों को सही मार्ग दर्शन और आशीर्वाद देकर कर्तव्य क्षेत्र में बढ़ने के लिये क्रान्तिकारी आन्दोलन का बिगुल बजाने का आह्वान किया।

अन्त में शिविराध्यक्ष श्री गौरीशंकर जी कौशल ने श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी की हार्दिक इच्छा १०० आर्य वीर हमें अपना जीवन दान दें—के प्रत्युत्तर में कहा कि निकट भविष्य में १०० आर्य वीर अपना जीवन दे इसकी हम पृष्ठभूमि तैयार कर रहे हैं। शिविर पूर्ण रूप से अत्यन्त सफल रहा। जिसकी प्रशंसा सभी प्रान्तों के आर्यों ने मुक्त कण्ठ से की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन

२५-६-६६ को दिल्ली में सम्पन्न

दिल्ली, २६ जून ६६,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन २६ जून १९६६ को श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभ दास जे० पी० बम्बई के सभापतित्व में आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

आगामी वर्ष के लिए अधिकारियों और अन्तरंग सदस्यों का निर्वाचन हुआ और लगभग ५ लाख रुपये का बजट स्वीकार हुआ।

श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभ दास प्रधान और श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले मन्त्री निर्वाचित हुए।

उप प्रधानों में श्री डा० डी० राम जी एम० एल० ए० भूतपूर्व वाइस चान्सलर पटना विश्वविद्यालय तथा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार तथा श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी० के नाम भी सम्मिलित हैं।

सभा ने आर्य समाज स्थापना शताब्दी के कार्य-क्रम को प्रगति देने का निश्चय किया है जो १९७५ में समस्त आर्य जगत में समारोह पूर्वक मनाया जायगा।

सभा ने उच्च कोटि के आर्य विद्वानों के दो सांस्कृतिक मण्डल आर्य समाज का सन्देश प्रसारित करने के लिए भारत से बाहर भेजनेका निश्चय किया है। इसके अतिरिक्त एक अग्रेंजी मासिक पत्र निकालने का भी निर्णय किया गया है।

सभा ने एक विशेष प्रस्ताव के द्वारा भारत सरकार से गौवध निषेध कानून बनवाने का निश्चय किया है और गोवध निवारण के लिए साधु महात्माओं ने त्याग और बलिदान का जो मार्ग अपनाया है उसके प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रकट की गई और साथ ही देश की समस्त आर्य समाजों को आदेश दिया गया है कि इस महान कार्य की सफलता के लिए क्रियात्मक सहयोग दें।

नागालैण्ड की समस्या के समाधान और ईसाइयोंके अराष्ट्रीय प्रचार के निवारण के लिए भी सभा ने योजना बनाई है और सभा का एक प्रतिनिधि मण्डल शीघ्र ही नागालैण्ड आदि का भ्रमण करेगा।

१९६६-६७ के लिए पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों का निर्वाचन इस प्रकार हुआ :—

१—श्रीयुत प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास प्रधान
२— „ डा० डी० राम जी उपप्रधान
३— „ मिहिरचन्द्रजी धीमान उपप्रधान
४— „ पं० नरेन्द्र जी उपप्रधान
५— „ प० प्रकाशवीरजी शास्त्री उपप्रधान
६— „ ला० रामगोपाल जी मन्त्री
७— „ नरदेवजी स्नातक एम० पी० उपमन्त्री
८— „ उमेशचन्द्रजी स्नातक उपमन्त्री
९— „ शिवचन्द्र जी उपमन्त्री
१०—„ बालमुकन्दजी आहूजा कोषाध्यक्ष
११— „ आचार्य विश्वश्रवाःजी पुस्तकाध्यक्ष

अन्तरंग सदस्य

१२—श्रीयुत महात्मा आनन्द स्वामीजी (जनरल)
१३— „ ए० बाल रेड्डी जी (मध्य दक्षिण)
१४— „ हरिगोविन्द जी परमसी (बम्बई)
१५— „ पं० वासुदेव जी शर्मा (बिहार)
१६— „ प्रेमचन्द जी शर्मा (उत्तर प्रदेश)
१७— „ महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री (उत्तर प्रदेश)
१८— „ विष्णुदेव जी भेघराज (मौरीशस)
१९— „ बट कृष्ण जी बर्म्मन (बंगाल)
२०— „ डा० महावीरसिंह जी (मध्य भारत)
२१— „ विश्वम्भरप्रसाद जी (मध्य प्रदेश)
२२— „ छोटूसिंह जी (राजस्थान)
२३— „ महेन्द्रपाल जी (पूर्वी अफ्रीका)
२४— „ चतुरसेन जी गुप्त (आजीवन)
२५— „ सोमनाथ जी मरवाहा एडवोकेट (जनरल)
२६— „ डा० हरिशंकर जी शर्मा (जनरल)
२७—श्रीमती शकुन्तला जी गोयल (जनरल)

श्री नारायण दास जी कपूर आडीटर नियुक्त हुए।

(पेज ४ का शेष)

हमारे लोगों को वह अटूट कड़ी प्रदान की है जो सरदार पन्निकर के, शब्दों में इतिहास का एक चमत्कार है। पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि प्रभृति एकता के निर्माताओं ने इस देश को संस्कृत का राष्ट्रिय माध्यम प्रदान किया है जो हजारों वर्षों से उन परिवर्तनों से ऊपर रहा है जो समय २ पर लोक भाषाओं में होते रहे हैं और जिसमें सामग्री की दृष्टि से विस्तार की असीम क्षमता है।

इसके फल स्वरूप हमारी पीढ़ियों की विद्वत्ता, भावना, विचार शैली और आकांक्षाएं संस्कृत साहित्य के सम्मिलित जलकुंड में तिरोहित तथा राष्ट्रिय विभूति के रूप में देश भर में छितराए हुए हैं और जो लाखों करोड़ों वर्षों से मनुष्य के मस्तिष्क को ज्ञान और प्रकाश प्रदान करते आ रहे हैं।

संस्कृत, [illegible] प्रायः सभी लोगों को प्रेरणा तथा संस्कृति की एक रूपता प्रदान करने में समर्थ रहा है।

मनुस्मृति और गृह्य सूत्रों ने समाज-कल्याण की अमूल्य निधियां दी हैं और इनके द्वारा न केवल भारत में ही अपितु भारत से बाहर लंका, ब्रह्मदेश, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, आदि २ में सामाजिक संस्थानों का गठन भी हुआ है। रामायण ने सदाचार का नमूना प्रदान किया और महाभारत ने वीर परम्परा स्थापित और नैतिक एवं आध्यात्मिक संदेश प्रसारित करने के अतिरिक्त चक्रवर्ती साम्राज्य अर्थात् भारत एवं विश्व की राजनैतिक एकता की भावना प्रस्तुत की है।

(क्रमशः)

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

आवश्यकता

जिला वेद प्रचारिणी सभा, होशियारपुर को एक योग्य आर्य सिद्धान्तों से पूर्णतः परिचित भजनोपदेशक की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। प्रचार कार्य ग्रामों में करना होगा।

—बूटाराम मन्त्री

कृतज्ञता प्रकाशन

हमारी मातुश्री जयलक्ष्मी जी के निधन पर मित्रों, शुभचिन्तकों, आर्य बन्धुओं, बहनों, आर्य समाजों एव आर्य संस्थाओं के हमें अनेक समवेदना सूचक सन्देश प्राप्त हुए हैं और प्रतिदिन भारी संख्या में प्राप्त हो रहे हैं।

मातुश्री के वियोग जनित दुःख में हाथ बटाने और इस प्रकार उसे हल्का बनाने वाले सभी लोगों के प्रति मैं और मेरा परिवार कृतज्ञ है।

यतः प्रत्येक सन्देश की पृथक्-पृथक् प्राप्ति करना मेरे लिए सम्भव नहीं हो रहा है अतः इस कार्य के लिए मैं समाचार पत्रों का आश्रय ले रहा हूं।

प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास
कच्छ कैसल सरदार पटेल रोड, बम्बई-४

हार्दिक बधाई

नई दिल्ली २८ जून। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान संसद सदस्य श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री की बहन कुमारी रेखा का विवाह संस्कार चि० महेन्द्रसिंह जी एम० एस० सी० के साथ सम्पन्न हुआ। वर महोदय दिल्ली इण्डियन आयल कारपोरेशन में वैज्ञानिक अनुसन्धान अधिकारी हैं।

इस अवसर पर रक्षामन्त्री श्री बलवन्तराव यशवन्तराव चह्वाण, पुनर्वास मन्त्री मेहरचन्द जी खन्ना, निर्माण मन्त्री श्री जयसुखलाल जी हाथी, श्री डा० रामधारी सिंह जी दिनकर, श्री महावीर त्यागी श्री आदि अनेक ससद सदस्य, आर्य जगत् के अनेक गणमान्य विद्वान् और नेता एवं दिल्ली और बाहर से पधारे हुए अनेक प्रतिष्ठित महानुभाव सम्मिलित थे। विवाह संस्कार आचार्य श्री वाचस्पति जी शास्त्री के पौरोहित्य में पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

आगन्तुक महानुभावों के स्वागत सत्कार में—कोका कोला नहीं—मीठे शर्बत का प्रयोग किया गया।

सार्वदेशिक परिवार की ओर से नव-दम्पति की सुख-समृद्धि, श्रीवृद्धि तथा स्वस्थ आयु के लिये शुभ कामना करते हुए दोनों कुलों को बधाई देते हैं।

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नेट मूल्य

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
(४)
सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २)५०
सत्यार्थप्रकाश २)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
व्यवहार भानु)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र १) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७×४० इन्च २)५०
,, ,, ३६×५४ इन्च ४)५०
,, ,, ४५×६७ इन्च ६)५०
कर्त्तव्य दर्पण)५०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
मराठी सत्यार्थप्रकाश १)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
[illegible] ५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द सरस्वती [illegible] कथित जन्म चरित्र)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से))५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
कठोपनिषद्)५० प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १)२५
मृत्यु और परलोक २)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) १)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
अभ्यास और वैराग्य १)६२
निज जीवन वृत्त वनिका (अजिल्द))७५
आर्य जीवन सोपान १)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म [illegible]

उपनिषद् कथामाला)५
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार).०
आदर्श गुरु शिष्य)२५
कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
पुरुष सूक्त)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर)६२
स्वर्ग में हड़ताल)३७
डाक्टर बर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)२५
वैदिक तत्व मीमांसा)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
वेद और विज्ञान)७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३०
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
इराक की यात्रा २)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक ईश वन्दना ५०
वैदिक योगामृत)६२
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
भ्रम निवारण)३०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
वेद की इयत्ता १)५०
दयानन्द [illegible])७५
कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम् (पूर्वार्द्ध) १)५०
,, (उत्तरार्द्ध) १)५०
वैदिक संस्कृति)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
सायण और दयानन्द १)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)५०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)५०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

[illegible])५०

[illegible] [illegible])६२
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
चरित्र निर्माण १)२५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)२५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
अनुशासन का विधान २५
धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)२५
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय २)
आर्य समाज के महाधन २)५०
एशिया का वैनिस)७५
स्वराज्य दर्शन १)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
भजन भास्कर १)७५
सार्वदेशिक सभा का
२७ वर्षीय कार्य विवरण २)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५

दुबारा छप गई। आर्य जगत में सबसे सस्ती
सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत
पृ० २००—नेट मूल्य ४० पैसे

ARYA SAMAJ
ITS CULT AND CREED

A unique and elegantly printed Book of the Day

By—Acharya Vaidyanath Shastri.

Rs. 5/-

This is the most popular and widely read first English book of Acharya Vaidya Nath Shastri a well known Arya Samaj Scholar and author credited with writing books in Hindi of outstanding merit on religion and philosophy some of them winning prizes.

The book presents a scholarly and lucid exposition of the Cult and Creed of Arya Samaj ranking among the high-class rare English literature of Arya Samaj. It is a worth reading worth preserving & worth presenting book to the English reading persons especially to the intelligentsia.

मिलने का पता—
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

कला-कौशल (टैक्नीकल) और वैदिक साहित्य का महान् भंडार

इलैक्ट्रिकल इजीनियरिंग बुक १५)
इले० गाइड पृ० ८००हि इ गु १२)
इलैक्ट्रिक वायरिंग ६)
मोटरकार वायरिंग ६)
इलैक्ट्रिक बैट्रीज ४)५०
इलैक्ट्रिक लाइटिंग ८)२५
इलै० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्ज १२)
सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर ४)५०
इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज २ भाग १६)५०
आयल व गैस इजन गाइड १५)
आयल इंजन गाइड ८)२५
क्रूड आयल इजन गाइड ६)
वायरलैस रेडियो गाइड ८)२५
रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक) ८)२५
घरेलू बिजली रेडियो मास्टर ४)५०
इलैक्ट्रिक मीटज ८)२५
टांका लगाने का ज्ञान ४)५०
छोटे डायनेमो इलैक्ट्रिक मोटर ४)५०
आर्मेचरवाइडिंग(AC DC)८)२५
रैफरीजरेटर गाइड ८)२५
बृहत रेडियो विज्ञान १५)
ट्रांसफामर गाइड ६)
इलैक्ट्रिक मोटस ८)२५
रेलवे ट्रेन लाइटिंग ६)
इलैक्ट्रिक सुपरवाइजरी शिक्षा ६)
इलैक्ट्रिक वैल्डिंग ६)
रेडियो शब्द कोष ३)
ए० सी० जनरेटर्स ८)२५
इलैक्ट्रिक मोटर्स आल्टरनेटर्स १६)५०
आर्मेचर वाइडस गाइड १५)
इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १९५६ १)५०

स्माल स्केल इडस्ट्रीज (हिन्दी) १४)
स्माल स्केल इडस्ट्रीज(इगलिश) १४)
खराद शिक्षा (टर्नर गाइड) ४)५०
वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग) ४)५०
खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
भवन-निर्माण कला १२)
रेडियो मास्टर ४)५०
विश्वकर्मा प्रकाश ७)५०
सर्वे इजीनियरिंग बुक १२)
इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग १२)
फाउन्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई) ८)२५
इलैक्ट्रोप्लेटिंग ६)
वीविंग गाइड ४)५०
हैंडलूम गाइड १५)
फिटिंगशाप प्रैक्टिस ७)५०
पावरलूम गाइड ५)२५
ट्यूबवैल गाइड ३)७५
लोकास्ट हाउसिंग टैक्निक ५)२५
अन्नी पैमायश चौब २)
लोकोशैड फिटर गाइड १५)
मोटर मैकेनिक टीचर ८)२५
मोटर मैकेनिक टीचर गुरुमुखी ८)२५
मोटर ड्राइविंग हिन्दी व गुरुमुखी ६)
मोटरकार इस्ट्रक्टर १५)
मोटर साइकिल गाइड ४)५०
खेती और ट्रैक्टर ८)२५
जनरल मैकेनिक गाइड १२)
आटोमोबाइल इजीनियरिंग १२)
मोटरकार ओवरहालिंग ६)
प्लम्बिंग और सेनीटेशन ६)
सर्किट डायग्राम्स आफ रेडियो ३)७५

फर्नीचर बुक १२)
फर्नीचर डिजायन बुक १२)
वर्कशाप प्रैक्टिस १२)
स्टीम ब्वायलर्स और इजन ८)२५
स्टीम इजीनियर्स गाइड १२)
आइस प्लाट (बर्फ मशीन) ४)५०
सीमेंट की जालियों के डिजाइन ६)
कारपेंट्री मास्टर ६)७५
बिजली मास्टर ४)५०
ट्रांजिस्टर डेटा सर्किट १०)५०
गैस वैल्डिंग ६)
ब्लैकस्मिथी (लोहार) ४)५०
हैंडबुक आफ बिल्डिंग कस्ट्रक्शन ३४)५०
हैंडबुक स्टीम इन्जीनियर २०)२५
मोटरकार इन्जीनियर ८)२५
मोटरकार इन्जन (पावर यूनिट) ८)२५
मोटरकार सर्विसिंग ८)२५
कम्पलीट मोटर ट्रेनिंग मैनुअल २४)०५
कारपेंट्री मैनुअल ४,५०
मोटर प्रश्नोत्तर ६)
स्कूटर आटो साइकिल गाइड ४)५०
मशीनशाप प्रैक्टिस १५)
आयरन फर्नीचर १२)
मारबल चिप्स के डिजाइन १६)५०
मिस्त्री डिजाइन बुक ३४)५०
फाउण्ड्री बुक-धातुओं की ढलाई ४)५०
ट्रांजिस्टर रेडियो ४)५०
आधुनिक टिपिकल मोटर गाइड ४,५०
नक्काशी आर्ट शिक्षा ६)
बढ़ई का काम ६)
राजगिरी शिक्षा ६)

सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो ७)५०
[illegible] ट्रांजिस्टर गाइड [illegible]
मशीनिस्ट गाइड १६)५०
आल्टरनेटिंग करैन्ट १६)५०
इले. लाइनमैन वायरमैन गाइड १६)५०
रेडियो फिजिक्स २५)५०
फिटर मैकेनिक ६)
मशीन वुड वर्किंग ६)
लेथ वर्क ६)७५
मिलिंग मशीन ८)२५
मशीन शाप ट्रेनिंग १५)
एयर कन्डीशनिंग गाइड १२)
सिनेमा मशीन आपरेटर १२)
स्प्रे पेंटिंग १२)
पोट्रीज गाइड ४)५०
ट्रांजिस्टर रिसीवर्स ६)०५
लोकल ट्रांजिस्टर रिसीवर ८)२५
प्रैक्टीकल ट्रांजिस्टर सर्किट्स ७)५०
बैंच वर्क एन्ड आइफिटर ८)२५
माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुअल ८)२५
खराद आपरेटर गाइड ८)२५
रिसर्च आफ टायलेट सोप्स १५)
आयल इडस्ट्री १०)५०
शीट मैटल वर्क ८)२५
कैरिज एन्ड वैगन गाइड ८)२५
इलैक्ट्रिक फिजिक्स २५ ५०
इलैक्ट्रिक टैक्नोलोजी २५/५०
रेडियो पाकिट बुक ६)
डिजाइन सैट ग्रिल जाली ६)
कैमीकल इण्डस्ट्रीज २५)५०
डीजल इन्जन गाइड १५)

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

पृष्ठ संख्या ५८० बढिया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई, क्लाथ बाइंडिंग-मूल्य १५) एक साथ पांच प्रति मंगाने पर ५०) रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१ सांख्य दर्शन मूल्य २)
२ न्याय दर्शन मू० ३।)
३ वैशेषिक दर्शन मू० ३।।)
४ योग दर्शन मू० ६)
५ वेदान्त दर्शन मू० ५।।)
६ मीमांसा दर्शन मू० ६)

सामवेद

मूलमन्त्र और आर्य भाषानुवाद सहित
श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार ४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थी। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस में छपवाया है। मूल्य ४)

वैदिक-मनुस्मृति मूल्य ४।।)

बृहत् दृष्टान्त सागर

सम्पूर्ण पांचों भाग

पृष्ठ संख्या ८६८

सजिल्द मूल्य केवल १०।।)

उपदेश-मंजरी मूल्य २।।)
संस्कार विधि मूल्य १।।)
आर्य समाज के नेता मूल्य ३)
महर्षि दयानन्द मूल्य ३)
कथा पच्चीसी मूल्य १।।)
उपनिषद् प्रकाश मू० ६)
हितोपदेश भाषा मू० ३)
सत्यार्थप्रकाश २)५०
[छोटे अक्षरों में]

अन्य आर्य साहित्य

१ विद्यार्थी शिष्टाचार १।।)
२ पंचतन्त्र ३।।)
३ [illegible] १)
४ कौटिल्य अर्थशास्त्र १०)
५ चाणक्य नीति १)
६ भर्तृहरि शतक १।।)
७ कर्तव्य दर्पण १।।)

८ वैदिक सन्ध्या ४) सै०
९ हवन मन्त्र १०) सै०
१० वैदिक सत्संग गुटका १५) सै०
११ ऋग्वेद ७ जिल्दों में ५६)
१२ यजुर्वेद २ जिल्दों में १६)
१३ सामवेद १ जिल्द में ८)
१४ अथर्ववेद ४ जिल्दों में ३२)
१५ बाल्मीकि रामायण १२)
१६ महाभारत भाषा १२)
१७ हनुमान जीवन चरित्र ४।।)
१८ आर्य संगीत रामायण ५)

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद कृषि बिजली मोटर पशुपालन टेकनीकल, डरीफाम रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६७१६१

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली - से प्रकाशित

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये।

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ ... २७४७७१ श्रावण कृष्ण ११ संवत् २०२३, १५ जुलाई १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६

क्या पंजाब में हिन्दुओं को सिक्ख बनकर रहना होगा

वेद-आज्ञा

धर्म से प्रजा पालन

अग्नेऽअच्छावदेह नः प्रति नः सुमना भव। प्र नो यच्छ सहस्रजित् त्वँ हि धनदाऽअसि स्वाहा॥

यजुर्वेद अध्याय ९।२८

संस्कृत भावार्थ—

ईश्वर आह-राजा प्रजा सेना जनान् प्रति सदा सत्यं प्रियं च वदेत, तेभ्यो धनं च दद्यात् गृह्णीयाच्च, शरीरात्मबलं वर्धित्वा नित्यं शत्रून् जित्वा धर्मेण प्रजाः पालयेदिति॥

—:०:—

आर्य भाषा भावार्थ—

ईश्वर उपदेश करता है कि राजा प्रजा और सेना के मनुष्यों से सदा सत्य प्रिय वचन कहे, उनको धन दे, उनसे धन लें, शरीर और आत्मा का बल बढ़ा और नित्य शत्रुओं को जीत कर धर्म से प्रजा की पाले।

—महर्षि दयानन्द

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री लाला रामगोपाल शालवाले का केन्द्रीय गृह-मन्त्री श्री गुलजारीलाल जी नन्दा को पत्र

पिछले दिनों सन्त फतहसिंह ने जालन्धर में प्रेस प्रतिनिधियों को कहा था कि प्रस्तावित पंजाबी सूबे में हिन्दी दूसरी भाषा न होगी और अल्प संख्यक वर्ग न होगा। इसी के सदर्भ में लाला रामगोपाल जी ने निम्न लिखित पत्र केन्द्रीय गृह-मन्त्री को भेजा है —

आपका ध्यान सन्त फतहसिंह के २७ जून ६६ को जालन्धर में प्रेस प्रतिनिधियों के साथ हुए वार्त्तालाप की प्रेस रिपोर्ट की ओर आकृष्ट करता हूं जिसमें उन्होंने कहा है कि पंजाबी सूबे में हिन्दी दूसरी भाषा न होगी और वहां कोई भाषायी अल्प संख्यक वर्ग भी न होगा। इसका अर्थ यह हुआ कि पंजाबी सूबे में हिन्दू एवं हिन्दी के लिए कोई स्थान न होगा और ये अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत से वंचित रह कर अपना धार्मिक एवं सांस्कृतिक विकास न कर पायेंगे। यह है हिन्दी और हिन्दुओं के प्रति अकाली नेता की प्रवृत्ति। आप इस बात को अनुभव करेंगे कि पंजाब का अन्याय पीड़ित हिन्दू अन्याय को और अधिक सहन न कर सकेगा।

सन्त का उपर्युक्त स्पष्टीकरण जहां मनमाना है वहां सरकारी विधान और व्यवस्थाओं के भी विपरीत है। उनके अनुसार पंजाबी सूबा द्विभाषी रहा है और नई व्यवस्था में भी हिन्दुओं को उनकी संख्या के अनुसार संवैधानिक अधिकार प्राप्त रहने चाहिए। इस प्रसंग में राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट का ७०वां पैरा उल्लेखनीय है जिसमें कहा गया है कि जिस राज्य में समस्त आबादी का ७० प्रतिशत व उससे अधिक भाग एक भाषा समुदाय वाला हो केवल वही राज्य एक भाषा भाषी राज्य स्वीकार किया जाना चाहिए। जहां भी अल्पसंख्यक आबादी पर्याप्त अर्थात् ३० प्रतिशत वा उससे अधिक हो वह नहीं बन सकता। वह द्विभाषी रहेगा। आपने विभाजित पंजाब के विभाजन के सम्बन्ध में संसद में जो वक्तव्य दिया था उसमें और बाद में समय समय पर दिए गए आपके सार्वजनिक वक्तव्यों में ये आश्वासन दिए जाते रहे हैं कि विधान एवं सरकारी व्यवस्थाओं के अनुसार अल्पसंख्यकों को भाषायी, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संरक्षण प्राप्त रहेंगे। ऐसा ही आश्वासन आपने इस सभा के शिष्ट मण्डलों को जब आपसे उनकी भेंट हुई थी दिया था। क्या सन्त का स्पष्टीकरण उन आश्वासनों के प्रति खुला विद्रोह नहीं है? क्या भारत सरकार इस स्थिति को बर्दाश्त करेगी?

सन्त महोदय की महत्वाकांक्षा हिन्दी को सर्वथा बहिष्कृत एवं गुरुमुखी को प्रतिष्ठित देखने की है। आप देखेंगे कि अपनी इस आकांक्षा के प्रबल बहाव में वे इतनी दूर बह गए प्रतीत होते हैं कि उन्हें सरकारी विधि-विधान एवं आश्वासनों की ओर ध्यान देने की भी सुधबुध नहीं रही।

वे हिन्दू-सिक्ख एकता के लिए क्रियाशील होने की रट भी लगाए रहते हैं। हिन्दुओं के धर्म और संस्कृति की रक्षा और उनके विकास की व्यवस्थाओं को नष्ट कर देना ही यदि उनकी हिन्दू-सिक्ख एकता की भावना है जो उनके उपर्युक्त तानाशाही बयान में प्रतिबिम्बित हो रही है तो उन्हें हिन्दू-सिक्ख एकता के ढोंग को शीघ्र ही छोड़ देना चाहिए। हिन्दुओं को मिटा कर सबको सिक्ख बना देना ही उनकी हिन्दू सिक्ख एकता की भावना दीख पड़ती है।

सभा की मांग है कि आप पंजाब के हिन्दुओं को पुनः आश्वासन दें कि पंजाब की नई राजनैतिक व्यवस्था में हिन्दुओं का धर्म, संस्कृति और उनकी हिन्दी भाषा सुरक्षित रहेगी और तत्सम्बन्धी अधिकारों की रक्षा की जायगी।

राज्य व्यवस्था

राजा और प्रजा के पुरुष मिलके सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धि कारक राजा प्रजा के सम्बन्ध रूप व्यवहार में तीन सभा अर्थात् विद्यार्य सभा धर्मार्य सभा, राजार्य सभा नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजा सम्बन्धी प्राणियों को सब ओर से विद्या स्वातन्त्र्य धर्म सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करें।

एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिये किन्तु राजा जो सभापति तदाधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे।

जैसे सिंह वा मांसाहारी हृष्ट पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है अर्थात् किसी को अपने से न होने देना, श्रीमान् को लूट खूट अन्याय से दण्ड देके अपना प्रयोजन पूरा करेगा।

जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं तब नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

—महर्षि दयानन्द

वार्षिक ७) रु० विदेश १ पौंड एक प्रति ० १५ पैसे

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ... कृण्वं बहु कुर्वीत

फोन ... — रामगोपाल शालवाले सभा मन्त्री
सहायक सम्पादक — रघुनाथ प्रसाद पाठक

बलेन लोकस्तिष्ठति

वर्ष १ अंक ३२

शास्त्र-चर्चा

भारद्वाज कणिक की कूटनीति

(गताक से आगे)

अञ्जलिं शपथं सान्त्वं प्रणम्य शिरसा वदेत् ।
अश्रुप्रमार्जनं चैव कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥१७॥

'ऐश्वर्य चाहने वाले राजा को चाहिये कि वह अवसर देखकर शत्रु के सामने हाथ जोड़े, शपथ खाय, आश्वासन दे और चरणों में सिर झुकाकर बातचीत करे। इतना ही नहीं, वह धीरज देकर उसके आंसू तक पोंछे ॥१७।

वहेदमित्रं स्कन्धेन यावत्कालस्य पर्ययः ।
प्राप्तकालं तु विज्ञाय भिन्द्याद् घटमिवाश्मनि ॥

जब तक समय बदल कर अपने अनुकूल न हो जाय, तब तक शत्रु को कन्धे पर बिठा कर ढोना पड़े तो वह भी करे, परन्तु जब अनुकूल समय आय, तब उसे उसी प्रकार नष्ट कर दे, जैसे घड़े को पत्थर पर पटक कर फोड़ दिया जाता है ॥१८॥

मुहूर्तमपि राजेन्द्र तिन्दुकालातवज्ज्वलेत ।
न तुषाग्निरिवानर्चिर्धूमायेत चिरं नरः ॥१९॥

राजेन्द्र ! दो ही घड़ी सही, मनुष्य तिन्दुक की लकड़ी की मशाल के समान जोर-जोर से प्रज्वलित हो उठे (शत्रु के सामने घोर पराक्रम करे), दीर्घ काल तक भूसी की आग के समान बिना ज्वाला के ही धूआं न उठावे (मन्द पराक्रम का परिचय न दे) ॥१९॥

नानार्थिकोऽर्थसम्बन्धं कृतघ्नेन समाचरेत् ।
अर्थी तु शक्यते भोक्तुं कृतकार्योऽवमन्यते ॥
तस्मात् सर्वाणि कार्याणि सावशेषाणि कारयेत् ॥

अनेक प्रकार के प्रयोजन रखने वाला मनुष्य कृतघ्न के साथ आर्थिक सम्बन्ध न जोड़े, किसी का भी काम पूरा न करे क्योंकि जो अर्थी (प्रयोजन-सिद्धि की इच्छा वाला) होता है, उससे तो बारम्बार काम लिया जा सकता है, परन्तु जिसका प्रयोजन सिद्ध हो जाता है, वह अपने उपकारी पुरुष की उपेक्षा कर देता है, इसलिए दूसरों के सारे कार्य (जो अपने द्वारा होने वाले हों) अधूरे ही रखने चाहिये ॥२० ॥

कोकिलस्य वराहस्य मेरोः शून्यस्य वेश्मनः ।
नटस्य भक्तिमित्रस्य यच्छ्रेयस्तत् समाचरेत् ॥२१॥

कोयल, सूअर, सुमेरु पर्वत, शून्यगृह, नट तथा अनुरक्त सुहृद्—इनमें जो श्रेष्ठ गुण या विशेषताएं हैं, उन्हें राजा काम में लावे ॥२१॥

उत्थायोत्थाय गच्छेत नित्ययुक्तो रिपोर्गृहान् ।
कुशलं चास्य पृच्छेत यद्यप्यकुशलं भवेत् ॥२२॥

राजा को चाहिये कि वह प्रतिदिन उठ-उठ कर पूर्ण सावधान हो शत्रु के घर जाय और उसका अमंगल ही क्यों न हो रहा हो, सदा उसकी कुशल पूछे और मंगल कामना करे ।२२॥

नालसाः प्राप्नुवन्त्यर्थान् नाक्लीबा नाभिमानिनः ।
न च लोकरवाद् भीता न वै शश्वत् प्रतीक्षिणः ॥

जो आलसी है, कायर हैं, अभिमानी हैं, लोकचर्चा से डरने वाले और सदा समय की प्रतीक्षा में बैठे रहने वाले हैं, ऐसे लोग अपने अभीष्ट अर्थ को नहीं पा सकते ॥२३।

नास्यच्छिद्रं रिपुर्विद्याद् विद्याच्छिद्रं परस्य तु ।
गूहेत् कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद् विवरमात्मनः ॥२४॥

राजा इस तरह सतर्क रहे कि उसके छिद्र का शत्रु को पता न चले, परन्तु वह शत्रु के छिद्र को जान ले। जैसे कछुआ अपने सब अंगों को समेट कर छिपा लेता है, उसी प्रकार राजा अपने छिद्रों को छिपाये रखे ॥२४॥

बकवच्चिन्तयेदर्थान् सिंहवच्च पराक्रमेत् ।
वृकवच्चावलुम्पेत शरवच्च विनिष्पतेत् ॥२५॥

राजा बगुले के समान एकाग्र चित्त होकर कर्तव्य-का चिन्तन करे। सिंह के समान पराक्रम प्रकट करे। भेड़िये की भांति सहसा आक्रमण करके शत्रु का धन लूट ले तथा बाण की भांति शत्रुओं पर टूट पड़े ॥२५॥

पानमक्षास्तथा नार्यो मृगया गीतवादितम् ।
एतानि युक्त्या सेवेत प्रसंगो ह्यत्र दोषवान् ॥२६॥

पान, जुआ, स्त्री, शिकार तथा गाना-बजाना इन सब का संयमपूर्वक अनासक्त भाव से सेवन करे, क्योंकि इनमें आसक्ति होना अनिष्टकारक है ॥२६॥

कुर्यात् तृणमयं चापं शयीत मृगशायिकाम् ।
अन्धः स्यादन्धवेलायां बाधिर्यमपि संश्रयेत् ॥२७॥

राजा बांस का धनुष बनावे, हिरन के समान चौकन्ना होकर सोवे, अंधा बने रहने योग्य समय हो तो अन्धे का भाव किये रहे और अवसर के अनुसार बहरे का भाव भी स्वीकार कर ले ॥२७॥

देशकालौ समासाद्य विक्रमेत विचक्षणः ।
देशकालव्यतीतो हि विक्रमो निष्फलो भवेत् ॥२८॥

बुद्धिमान् पुरुष देश और काल को अपने अनुकूल पाकर पराक्रम प्रकट करे। देश काल की अनुकूलता न होने पर किया गया पराक्रम निष्फल होता है ॥२८॥

कालाकालौ सम्प्रधार्य बलाबलमथात्मनः ।
परस्य च बलं ज्ञात्वा तत्रात्मानं नियोजयेत् ॥२९॥

अपने लिए समय अच्छा है या खराब ? अपना पक्ष प्रबल है या निर्बल ? इन सब बातों का निश्चय करके तथा शत्रु के भी बल को समझ कर युद्ध या सन्धि के कार्य में अपने आपको लगावे ॥२९॥

दण्डेनोपनतं शत्रुं यो राजा न नियच्छति ।
स मृत्युमुपगृह्णाति गर्भमश्वतरी यथा ॥३०॥

जो राजा दण्ड से नतमस्तक हुए शत्रु को पाकर भी उसे नष्ट नहीं कर देता, वह अपनी मृत्यु को आमन्त्रित करता है। ठीक उसी तरह, जैसे खच्चरी मौत के लिये ही गर्भ धारण करती है ॥३०॥

सुपुष्पितः स्यादफलः फलवान् स्याद् दुरारुहः ।
आमः स्यात् पक्वसंकाशो न च शीर्येत कस्यचित् ॥

नीतिज्ञ राजा ऐसे वृक्ष के समान रहे, जिसमें फूल तो खूब लगे हों, परन्तु फल न हो। फल लगने पर भी उस पर चढ़ना अत्यन्त कठिन हो, वह रहे तो कच्चा, पर दीखे पके के समान तथा स्वयं कभी जीर्ण-शीर्ण न हो ॥३१।

आशां कालवतीं कुर्यात् तां च विघ्नेन योजयेत् ।
विघ्नं निमित्ततो ब्रूयान्निमित्तं चापि हेतुतः ॥३२॥

राजा शत्रु की आशा पूर्ण होने में विलम्ब पैदा करे, उसमें विघ्न डाल दे। उस विघ्न का कुछ कारण बता दे और उस कारण को युक्तिसंगत सिद्ध कर दे ॥

भीतवत् संविधातव्यं यावद् भयमनागतम् ।
आगतं तु भयं दृष्ट्वा प्रहर्तव्यमभीतवत् ॥३३॥

जब तक अपने ऊपर भय न आया हो, तब तक डरे हुए की भांति उसे टालने का प्रयत्न करना चाहिये, परन्तु जब भय को सामने आया हुआ देखे तो निडर होकर शत्रु पर प्रहार करना चाहिये ॥३३॥

न संशयमनारुह्य नरो भद्राणि पश्यति ।
संशयं पुनरारुह्य यदि जीवति पश्यति ॥३४॥

जहां प्राणों का संशय हो, ऐसे कष्ट को स्वीकार किये बिना मनुष्य कल्याण का दर्शन नहीं कर पाता। प्राण-संकट में पड़ कर यदि वह पुनः जीवित रह जाता है तो अपना भला देखता है ॥३४॥

अनागतं विजानीयाद् यच्छेद् भयमुपस्थितम् ।
पुनर्वृद्धिभयात् किंचिदनिवृत्तं निशामयेत् ॥३५॥

भविष्य में जो संकट आने वाले हों, उन्हें पहले से ही जानने का प्रयत्न करे और जो भय सामने उपस्थित हो जाय, उसे दबाने की चेष्टा करे। दबा हुआ भय भी पुनः बढ़ सकता है, इस डर से यही समझे कि अभी वह निवृत्त ही नहीं हुआ है (और ऐसा समझकर सतत सावधान रहे) ॥३५।

प्रत्युपस्थितकालस्य सुखस्य परिवर्जनम् ।
अनागतसुखाशा च नैव बुद्धिमतां नयः ॥३६॥

जिसके सुलभ होने का समय आ गया हो, उस सुख को त्याग देना और भविष्य मे मिलने वाले सुख की आशा करना—यह बुद्धिमानो की नीति नही है ॥

योऽरिणा सह संधाय सुखं स्वपिति विश्वसन् ।
स वृक्षाग्रे प्रसुप्तो वा पतितः प्रतिबुध्यते ॥३७॥

जो शत्रु के साथ सन्धि करके विश्वासपूर्वक सुख से सोता है, वह उसी मनुष्य के समान है, जो वृक्ष की शाखा पर गाढ़ी नीद में सो गया हो। ऐसा पुरुष नीचे गिरने (शत्रु द्वारा संकट में पड़ने) पर ही सजग या सचेत होता है ॥३७॥

कर्मणा येन तेनैव मृदुना दारुणेन च ।
उद्धरेद् दीनमात्मानं समर्थो धर्ममाचरेत् ॥३८॥

मनुष्य कोमल या कठोर, जिस किसी भी उपाय से सम्भव हो, दीन दशा से अपना उद्धार करे। इसके बाद शक्तिशाली हो पुनः धर्माचरण करे ॥३८॥

ये सपत्नाः सपत्नानां सर्वांस्तानुपसेवयेत् ।
आत्मनश्चापि बोद्धव्याश्चारा विनिहिताः परैः ॥३९॥

जो लोग शत्रु के शत्रु हों, उन सबका सेवन करना चाहिये। अपने ऊपर शत्रुओं द्वारा जो गुप्तचर नियुक्त किये गये हों, उनको पहचानने का प्रयत्न करे ॥३९॥

चारस्त्वविदितः कार्य आत्मनोऽथ परस्य च ।
पाषण्डांस्तापसादींश्च परराष्ट्रे प्रवेशयेत् ॥४०॥

अपने तथा शत्रु के राज्य में ऐसे गुप्तचर नियुक्त करे, जिनको कोई जानता पहचानता न हो। शत्रु के राज्यों में पाखण्डवेषधारी और तपस्वी आदि को ही गुप्तचर बनाकर भेजना चाहिये ॥४०॥

उद्यानेषु विहारेषु प्रपास्वावसथेषु च ।
पानागारे प्रवेशेषु तीर्थेषु च सभासु च ॥४१॥

ये गुप्तचर बगीचा, घूमने फिरने के स्थान, पौंसला धर्मशाला, मद्य बिक्री के स्थान, नगर के प्रवेश द्वार, तीर्थस्थान और सभाभवन—इन सब स्थलों में विचरें ॥

धर्माभिचारिणः पापाश्चौरा लोकस्य कण्टकाः ।
समागच्छन्ति तान् बुद्ध्वा नियच्छेच्छमयीत च ॥

कपटपूर्ण धर्म का आचरण करने वाले पापात्मा, चोर तथा जगत् के लिए कण्टक रूप मनुष्य वहां छद्म-वेष धारण करके आते रहते हैं, उन सबका पता लगा कर उन्हें कैद कर ले अथवा भय दिखाकर उनकी पाप-वृत्ति शान्त कर दे ॥४२॥

न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत् ।
विश्वासाद् भयमभ्येति नापरीक्ष्य च विश्वसेत् ॥

जो विश्वासपात्र नहीं है, उस पर कभी विश्वास

(शेष १० पेज पर)

आर्य समाज और हिन्दी

आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी संस्था है। इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वयं एक साहसी क्रान्तिकारी थे और उन्होंने महाभारत काल से उत्तरोत्तर पतनोन्मुख चलती हुई संस्कृति की धारा को बदलने के लिए क्या धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में अपितु शिक्षा और समाज-व्यवस्था के क्षेत्र में भी एक महान् क्रान्ति को क्रियारूप दिया। आज उसी महान् आत्मा की महान् शक्ति का ही परिणाम है कि भारत में समाज अपनी परम्परा की दिशा में एक दम पलट कर एक नई दिशा की ओर चल पड़ा। यह बात अवश्य है कि जिस तेजी से वह प्राचीन एवं वास्तविक दिशा की ओर मुड़ा उतनी तेजी से वह चल नहीं पाया और यद्यपि उसकी क्रान्ति के परिणाम उसके चारों ओर के वातावरण में स्पष्टतया लक्षित हो रहे हैं परन्तु वह स्वयं कथा थका सा मन्द-मन्द घिसट रहा है और इसका परिणाम क्या हो सकता है यह बताने की आवश्यकता नहीं है।

आज स्थान-स्थान पर सनातन धर्म सभाओं की ओर से "पुत्री पाठ शालाएं" जो खुली हुई हैं यह इसी क्रान्ति का ही तो परिणाम है। आज पौराणिक पण्डितों के मुख से आर्य समाज के प्रति अपशब्द नहीं सुनने को मिलते। इतना ही नहीं बहुत से पौराणिक पण्डित अपने वस्तों में संस्कार विधि भी लेकर चलते हैं। आप कह सकते हैं। कि उसे तो धन प्राप्ति की लालसा है इसलिए किसी भी विधि से संस्कार कराने में संकोच नहीं करता। यही बताता है कि अब पौराणिक पण्डित भी अपनी कट्टरवादिता से अलग हो चुके हैं। यही नहीं, अब तो बहुत से सनातन धर्मी नेताओं ने भी महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा किए गए "यथेमां वाचं कल्याणीम्" के अर्थ को स्वीकार कर लिया है और वे भी शूद्रों तक को वेद पढ़ने के अधिकार का वेद में होना स्वीकार करते हैं। इसी तरह से शुद्धि का क्षेत्र भी अब शायद ही कोई ऐसा होगा जो आर्यसमाज के इस क्षेत्र में किए गए कार्यों की सराहना न करता हो या उसके मार्ग में बाधक बनना चाहता हो। माइकेल-स्काट जैसे ईसाई मिशनरियों की काली करतूतों ने अब और भी आंखें खोल दी हैं।

पर आजकल का आर्य समाज अपने पूर्वजों के बलिदानों के फलोपभोग में ही आनन्द से तल्लीन है। उसके क्रान्ति के वे कदम रुक तो गए ही हैं, जिस प्रकार बहता पानी कहीं इकट्ठा हो जाता है तो उसमें बहुत से बाह्य तत्व मिलने लगते हैं इसी प्रकार इस आर्यसमाज की धारा में भी जो अब या तो बह ही नहीं रही या अगर बह भी रही है तो इतने धीमे से कि प्रवाह लक्षित ही नहीं होता, बहुत से कलुषित बाह्य तत्व मिलने शुरू हो गए हैं। राजनैतिक अखाड़ों की कूट-नीतियां पारस्परिक विद्वेष, आदि स्वतन्त्र भारत की राजनीति के कलुषित तत्व तो इसमें घुस ही गए हैं तेजी से बदलती हुई संस्कृति और सभ्यता के भौतिकवादी तत्व भी जो वस्तुत अस्थिर हैं और जो आर्य समाज की लक्ष्य प्राप्ति में बहुत बड़े बाधक है, इसमें घुसते चले जा रहे हैं। अतः आर्यसमाज के सभी नेताओं और इस क्रान्ति कारिणी संस्था के क्रान्ति स्वरूप को जो जीवित और जागृत रखना चाहते हैं उनके समक्ष मैं एक क्षेत्र ऐसा रखना चाहता हूं जिसमें आर्यसमाज एक बहुत बड़ी क्रान्ति ला सकता है। वह है हिन्दी का क्षेत्र। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं हिन्दी में सत्यार्थ प्रकाश लिख कर इस क्रान्ति का प्रारम्भ किया परन्तु जिस दूरदर्शी महर्षि ने आर्य समाज को यह एकता का सूत्र दिया उसने इसे आगे बढ़ाया नहीं। यह निश्चित है कि यदि बहुत से अन्य आन्दोलनों के साथ हिन्दी आन्दोलन शुरू में ही आर्य समाज अपनाता तो सारे दक्षिण भारत में आज हर क्षेत्र में आर्य समाज ही आर्य समाज होता। यह सोचने की बात है कि कोई भी धार्मिक आन्दोलन शुद्ध धार्मिक आधार पर कभी भी तेजी से बढ़ नहीं सकता। उसको बढ़ने के लिए कुछ और भी सहारा चाहिए। उत्तर भारत में इसके इतने प्रचार का कारण है शुद्धि आंदोलन और शिक्षा-आंदोलन दक्षिण भारत में उस समय यदि हिंदी आन्दोलन को अपना लिया जाता तो आज दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की जो स्थिति है इससे बढ़िया स्थिति आर्य समाज की होती और हिन्दी आन्दोलन का रूप भी ऐसा क्रान्तिकारी होता कि दक्षिण भारत में कोई भी हिंदी विरोधी द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम पैदा न होता। जिस प्रकार आर्यसमाज ने संस्कृत का क्षेत्र बिल्कुल अछूता छोड़ दिया है और उसमें पुराण पन्थी पण्डितों को काम करने के लिए "संस्कृत विश्व परिषद्" आदि के रूप में अनेकों संस्थाएं मिल गई हैं—और इनसे निश्चित रूप में संस्कृत के क्षेत्र में अज्ञान का ऐसा सुदृढ़ किला तैयार हो रहा है कि फिर उसे भेदने के लिए किसी महान् आचार्य की आवश्यकता पड़ेगी—उसी प्रकार हिन्दी शिक्षा का क्षेत्र भी आर्यसमाज ने अछूता ही छोड़ रखा है।

अब भी समय है कि वह इस क्षेत्र में कुछ रचनात्मक कार्य करें। पंजाब के विभाजन से यह अब पूर्णतः निश्चित हो गया है कि राष्ट्र भाषा की समस्या का समाधान कभी भी राजनैतिक आन्दोलनो की सहायता से नहीं किया जा सकता इसके लिए जन-जन के मानस में बैठना पड़ेगा। जन-जन तक पहुंचना होगा। अब हमको यह जान लेना चाहिए कि ८-१० दिनों का सत्याग्रह भूख हड़ताल या अन्य कोई आन्दोलन करके हम भाषा को जन-सामान्य के गले नहीं उतार सकते उसके लिए वर्षों की तपस्या करनी पड़ेगी। इसमें १० वर्ष भी लग सकते हैं २० और तीस भी। परन्तु "दीर्घकाल नैरन्तर्यसत्कारासेवितो दृढभूमिः" योग दर्शन के इस सूत्र के अनुसार हम लोग दीर्घकाल तक निरन्तर तथा श्रद्धा एवं तत्परता से यह काम करेंगे तो भारत में भाषायी एकता लाने का सेहरा आर्य समाज के सिर बंधेगा। यह काम आर्यसमाज ही कर सकता है। इसके लिए हमें अभी से काम करना पड़ेगा। कुछ सुझाव ये हैं.—

१—आर्यसमाज की अन्तरंग सभा में एक सदस्य इसी के लिए नियुक्त हो कि वह हिन्दी-विकास तथा उसमें आर्यसमाज के प्रयत्नों की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले।

२—आर्य समाजों के सभी अभिलेख आदि हिन्दी में ही रखे जाएं।

३—जिस जिस ग्राम या शहर में आर्य समाजें हैं वहां वहां के व्यापारी तथा कम्पनियों या फर्मों से मिलकर उन्हें हिन्दी में लेखा पत्र रखने के लिए प्रेरित करें।

४—जो व्यापारी वर्ग के व्यक्ति आर्यसमाज के सदस्य हों वे इस बात का दृढ़ संकल्प करें कि देश हित के लिए वे सारा काम हिन्दी में ही करेंगे।

५—जो आर्यसमाज के सदस्य सरकारी कर्मचारी हैं वे स्वयं इसका पूर्ण व्रत लें तथा अपने साथियों को भी प्रोत्साहित करे।

६—हिन्दी विकास को ही लेकर के आर्यसमाजें अपने मन्दिरों में साप्ताहिक या मासिक कार्यक्रम रखे।

श्री सत्यपाल जी शर्मा एम० ए० वेद-शिरोमणि, डी० १८ न्यू दिल्ली साउथ एक्स्टेंशन-१ नई दिल्ली-३

७—उत्सवों में एक "हिन्दी सम्मेलन" अवश्य करें और उनमें केवल कविताओं आदि तक सीमित न रह कर हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में जनता में प्रतिष्ठित करने के लिए क्रियात्मक उपाय ढूंढे जाएं।

८—अपने अपने शहर और ग्राम में हिन्दी का अधिक से अधिक विकास करने की जिम्मेवारी वहां की आर्य समाज अपने ऊपर लें।

अन्त में मैं एक बात और कहना चाहता हूं। दिल्ली में हिन्दी का आन्दोलन जनता और सरकारी कर्मचारियों में चुपके-चुपके करने वाली एक संस्था है "केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्"। इसके कार्य कर्ताओं में भी वही भाव है जो आर्य समाज के आन्दोलन के नेताओं में थी। इस परिषद् ने सरकारी कर्मचारियों की सहायता के लिए बहुत सी उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित की हुई हैं। उदाहरणार्थः—जनता अंग्रेजी में तार देने की प्रवृत्ति को बदल कर हिन्दी में ही तार दिया करें इस आन्दोलन को चलाने के लिए उसकी ओर से एक पुस्तक प्रकाशित की गई है—"हिन्दी में तार।" अब भारत में २६०० ऐसे केन्द्र हैं जहां हिन्दी में भी तार लिए दिए जाते हैं। इसका सदुपयोग हम क्यों नहीं कर सकते? आर्यसमाज इसके लिए क्या नहीं कर सकता? हिन्दी परिषद् के कार्यकर्ता आर्यसमाज के किसी भी रचनात्मक आन्दोलन में

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पुनर्जन्म

श्री एस० बी० माथुर, मेरठ

पुनर्जन्म एक ऐसा सिद्धान्त है, जिसने स्वतन्त्र विचारकों जैसे श्री जवाहरलाल नेहरू आदि को भी प्रभावित किया है। श्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'Discovery of India' के पृष्ठ ११, १२, १३ में पुनर्जन्म के विषय में इस प्रकार विचार प्रगट किये हैं।

"धर्म जैसा मैं देखता हूं व्यावहारिक है और विचारशील मनुष्यों ने भी स्वीकार किया है। चाहे वह हिन्दू धर्म के हों या इस्लाम, बौद्ध या ईसाई धर्म के मुझे इससे कोई आकर्षण नहीं है।············मूल रूप से मुझे यह संसार ही प्रिय है, न कि दूसरा संसार (परलोक) या भविष्य जीवन। मैं यह नहीं जानता कि आत्मा जैसी कोई वस्तु है या नहीं अथवा मृत्यु के पश्चात् जीवन है या नहीं। यद्यपि यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है परन्तु ये कदापि मुझे चिन्तित नहीं करते। वातावरण जिसमें मेरे जीवन का विकास हुआ है आत्मा और अमरता जीवन मुझे मान्य है। कार्य, कारण और परिणाम के क्रम सिद्धान्त में मेरा विचार इन विषयों के अनुकूल है। आत्मा हो सकती है जो शारीरिक मृत्यु के बाद भी जीवित रहती हो और कारण और परिणाम का सिद्धान्त जीवन की क्रियाओं को कार्यान्वित करता है उचित प्रतीत होता है यद्यपि यह एक कठिनाई प्रस्तुत करता है कि जब मनुष्य अन्तिम कारण के विषय में विचारता है। अगर आत्मा है तो पुनर्जन्म के विषय में कुछ तर्क अवश्य है।"

अब यह देखना है कि महामनोवैज्ञानिक (Para Psychologist) इस विषय पर क्या विचार रखते हैं। महा मनोवैज्ञानिक शास्त्र (Para-Psychologiy) में पुनर्जन्म के लिये स्मृति विशेष (Extra cerebral memory) शब्द से व्याख्या की गई है। जयपुर विश्वविद्यालय राजस्थान, द्वारा तिमाही पत्रिका (Para Psychology) प्रकाशित होती है जो मानव के मस्तिष्क सम्बन्धित क्रियाओं की वैज्ञानिक खोजों पर प्रकाश डालती है। Vol. V No 2 1965 की पत्रिका में कन्डा (लंका) के Mr. Amarasiri Wee atne ने पृष्ठ १, २ पर इस प्रकार लिखा है:—

"मृत्यु के पश्चात् जीवन के सम्बन्ध में हम दो बातों में से किसी एक को स्वीकार करें प्रथम किसी प्रकार का नया जीवन, और दूसरा पूर्णतः नष्ट होना। सामान्यतः धार्मिक स्वभाव के व्यक्ति पुनः जीवन के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं। जब कि स्वतन्त्र विचारक यह विश्वास नहीं करते कि मृत्यु के पश्चात् भी कोई पुनः जीवन है। वे मृत्यु के पश्चात् पूर्ण नष्ट होने (complete-annihilaition) के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं। पुनर्जन्म के विश्वासकों में भी दो विभिन्न मत हैं। प्रथम आत्मा शरीर की समाप्ति पर नहीं रहती, इस कारण पुनर्जन्म में विश्वास करना बुद्धिमत्ता नहीं। दूसरे विश्वासकों का मत है कि आत्मा न केवल शरीर के बाद जीवित रहती है वरन् यह बार बार जन्म भी लेती है। इस्लाम व ईसाई धर्म प्रथम विचार को स्वीकार करते हैं कि यद्यपि आत्मा अमर है और नाशवान नहीं है यह पुनर्जन्म नहीं लेती। इससे यह तात्पर्य निकलता है कि या तो आत्मा नरक में सदा दबी रहती है और या स्वर्ग में सदा उज्ज्वल रहती है। परन्तु ईसाई और मुस्लिम धर्मों में ऐसे छोटे-छोटे मत हैं जो उपरोक्त वाद का विरोध करते हैं और पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। जैसे ईसाई धर्म में Priocillians, Simonists, Manicheans, Harcioniles आदि उदाहरण। Judisism के भी महत्वपूर्ण वर्ग पुनर्जन्म के प्रचारक रहे हैं। अधिक महत्व व रुचि का तथ्य यह है कि स्वयं ईसा तो पुनर्जन्म के वाद को न स्वीकार करते हैं और न अस्वीकार वरन् दूसरी ओर उनका यह कहना 'john, the Baptiot-is Eliah come back' कि John the Baptist वह Elijah लौट कर आया है पुनर्जन्म के वाद का संकेत है।

ईसाई व इस्लाम के आत्मा सम्बन्धित सिद्धान्त तीन आधारों पर अन्यायपूर्ण हैं। प्रथमतः संसार में थोड़े समय के जीवन पर भविष्य जीवन कैसे निर्भर है। अर्थात् किसी जीव की अनन्त अवस्था पाना। दैवी नियम व कानून पूर्णतः न्याय रहित होंगे यदि इस तथ्य को स्वीकार किया जाय। एक प्राणी अधिक जीवन काल के कार्यों के कारण अनन्त काल तक भुगते यह नहीं हो सकता। द्वितीय जैसा कि सर्व विख्यात है कि प्रत्येक प्राणी संसार में अच्छे व बुरे कर्मों से बँधा हुआ है। यदि एक प्राणी अपने बुरे कर्मों के लिये नरक में डाल दिया जाय तो उसके अच्छे कार्य अपुरस्कृत (लाभहीन) रह जायेंगे। तीसरा आधार यह है कि चूंकि विभिन्न व्यक्तियों के संसारी जीवन काल में कोई एकरूपता नहीं है तो यह प्रतीत होता है कि दैवी कानून भेद भाव पूर्ण व पक्षपाती हैं। एक प्राणी जो संसार में कुछ दिन व समय जीवित रहता है उसको आत्मिक पूर्णता प्राप्त करने के लिये कम समय मिलता है या विभिन्न प्रकार के दुर्व्यसनों में फंस कर सदा के लिये उसे नरक में धकेल दिया जाता है जो जीव अधिक काल तक संसार में जीवित रहता है उसे स्वर्ग में प्रवेश करने की योग्यता प्राप्त करने के अधिक अवसर मिलते हैं या नरक में फिसलने का। प्रश्न यह होता है कि दैवी कानून इतना भेद पूर्ण कैसे है जो विभिन्न व्यक्तियों को असमान अवसर प्रदान करता है।

परन्तु इस अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय यह है कि यद्यपि पुनर्जन्म वादी अपने वाद के पक्ष में विभिन्न पद्धतियों द्वारा कुछ तर्क प्रस्तुत करते हैं पूर्ण नष्ट वादी (Annihilationist) का मत निर्मल है।

समय-समय पर ऐसे बालकों के विवरण समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं जिनको अपने पिछले जन्म की बातों की याद है। उन सब को विस्तारपूर्वक लिखना यहां इस लेख को बहुत लम्बा करना होगा। संक्षेप में दो बालकों के विवरण आवश्यक प्रतीत होते हैं। एक अलीगढ़ जिले के ग्राम चन्डौगढ़ का दस साल का बच्चा सुनील पुत्र वीरेन्द्रपालसिंह है जो अपने को पिछले जन्म का भजनसिंह पुत्र छम्मनसिंह ग्राम अटरनी का निवासी बतलाता है। इस बच्चे के विषय में डा० बेनर्जी ने जो राजस्थान विश्वविद्यालय के Parapsychology विभाग के Head हैं पूरी २ जाँच की थी और उसकी बतलाई हुई सारी बातों को ठीक बतलाया। इसका पूरा समाचार Sunday Standard, New Delhi दिनांक २० जोलाई १९६४ में प्रकाशित हो चुका है। एक और उदाहरण Turkey टर्की देश के ऐसे ही [illegible] का है जिसका नाम इस्माइल है जो अपने को पिछले जन्म का आबिद बतलाता है। प्रो० बेनर्जी इस केस का अध्ययन करने टर्की पहुंचे और इस्माइल की बतलाई हुई पिछले जन्म की बातों की पुष्टि हुई जिसका पूरा हाल Hindustan Times, New Delhi दिनांक २५ दिसम्बर १९६२ को प्रकाशित हो चुका है।

(पृष्ठ ५ का शेष)

उनका हाथ बटाने के लिए तैयार हैं। अब यदि प्रत्येक आर्यसमाज में परिषद् की ये पुस्तकें हों और उन्हें जनता तक पहुंचाया जाए तो कितनी तेजी से यह आन्दोलन फैल सकता है। यही नहीं यदि किसी शहर या ग्राम में कोई कम्पनी या फर्म और कोई संस्था अपना अंग्रेजी साहित्य हिन्दी में करवाना चाहें तो उसके लिए भी पूरी व्यवस्था की जा सकती है। ऐसा साहित्य आर्य समाजें मेरे पते पर भिजवा दें, इस साहित्य को हिन्दी में भेज दिया जाएगा। प्रत्येक बड़ी-बड़ी आर्य समाजें स्वयं अपना हिन्दी विभाग इन कामों के लिए खोल सकती हैं। केवल संकेत रूप में मैं यह सब बातें लिख रहा हूं। यदि आर्यसमाजें इस ओर प्रवृत्त हुईं और उनकी इस ओर कुछ प्रगति देखी गई तो दिल्ली में एक प्रामाणिक हिन्दी विभाग खोला जा सकता है जिसमें इस प्रकार का अधिक से अधिक हिन्दी साहित्य तैयार हो। तथा यह सब काम बिना कोई शुल्क लिए ही किया जा सकेगा।

मुझे आशा है कि आर्यसमाज के प्रेमी इन मेरे विचारों तथा सुझावों की ओर ध्यान देंगे तथा इस दिशा में कुछ ठोस कदम अभी से उठायेंगे ताकि आर्य समाज हिन्दी आन्दोलन में भी अपनी जगह बना सके।

मराठवाड़ा आर्य सम्मेलन का बीड़ में आयोजन

उत्तर भारत के आर्य नेताओं का आगमन

आर्य जाति और देश की विभिन्न समस्याओं पर महत्वपूर्ण प्रस्तावों की स्वीकृति

हैदराबाद १७ जून ६६, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद के तत्वावधान में मराठवाड़ा आर्यसम्मेलन का आयोजन महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी बीड में श्री पं० कृष्णदत्त जी एम० ए० आचार्य, हिन्दी महाविद्यालय हैदराबाद की अध्यक्षता में ५ से ७ जून ६६ को किया गया था। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश आर्यजगत् सुविख्यात् नेता श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री, सदस्य लोक सभा, आचार्य कृष्ण जी दिल्ली पं० ओ३म्प्रकाश जी पंजाब आदि पधारे। मराठवाड़ा के पांचों जिलों से लगभग १,०० से अधिक प्रतिनिधि गण ने सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन के लिए एक विशाल पंडाल की रचना की गई थी। जिसमें प्रातः और मध्याह्न की कार्यवाहिएं सम्पन्न होती रहीं। इस पंडाल को विभिन्न प्रकार की झंडियों आदि से सुसज्जित किया गया था। मंच पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक बहुत बड़ा चित्र रखा गया था। ५ जून ६६ को सम्मेलन की कार्यवाही का प्रारम्भ श्री पं० रुद्रदेव जी पं० मंगलदेव जी पं० नरदेव जी स्नेही प० देवबन्धु जी पं० ज्ञानेन्द्र जी शर्मा तथा कर्मवीर जी आदि पौरोहित्य में बृहद् यज्ञ द्वारा हुआ।

शोभा यात्रा और (जुलूस)

साय ५ बजे सम्मेलन के सभापति श्री प० कृष्णदत्त जी एम० ए० आर्य नेता पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री तथा आचार्य कृष्ण जी एवं पं० ओ३म्प्रकाश जी और श्री श्रीपतिराव जी कदम एम० एल० ए० स्वागताध्यक्ष का भव्य जुलूस बड़े ही आकर्षक ढंग से सजी हुई जीप गाड़ी पर महाराजा छत्रपति-शिवाजी की प्रतिमा के पास से निकाला गया। जो लगभग एक मील लम्बा था। यह जुलूस नगर के प्रमुख-प्रमुख मार्गों से भ्रमण करता हुआ पंडाल पहुंचा जुलूस मध्य मार्ग में विभिन्न स्थलों पर अनेक कमानें भी बनाई गई थीं।

जुलूस के आगे आगे में बैंड और और पश्चात् हाथी, ऊंट तथा घोड़ों पर आर्य वीर दल के स्वयं सेवक ओ३म् पताका लिए आरूढ़ थे। इनके पीछे समाजों के दल भजन गाते हुए चल रहे थे। भजनों के बीच-बीच "वैदिक धर्म की जय" महर्षि दयानन्द की जय" "आर्य समाज अमर है" और "भारत माता की जय" आदि गगन भेदी नारे गुंजायमान हो रहे थे। इनके पीछे आर्य नेतागण जिसमें प० शेषराव जी वाघमारे एडवोकेट, श्री बालरेड्डी जी, श्री छमनलाल विजय वर्गीय जी, श्री देवदत्त जी एडवोकेट श्री उत्तममुनिजी लातूर, श्री वेदकुमार जी वेदालंकार व श्री मास्टर बापूराव जी, श्री सग्रामसिंह जी चौहाण, श्री शिवराम जी जिन्दल, नान्देड़, श्री पं० प्रह्लाद जी, श्री शंकरराव जी टोपे, श्री दिगम्बर राव जी पत्तेवार श्री पुरुषोत्तमराव जी चप्पल गांवकर, प० गोपालदेव जी श्री ओ३म्प्रकाश जालना आदि चल रहे थे। अन्त में सभापति जी की गाड़ी थी। विभिन्न स्थानों पर नागरिकों द्वारा जुलूस का पुष्पमालाओं से स्वागत् किया गया। इस जुलूस में लगभग १० हजार से अधिक नर-नारियों ने भाग लिया।

ध्वजारोहण:—

जुलूस के पंडाल पहुंचने पर श्री पं० नरेन्द्र जी प्रधान आर्य, प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर आर्य वीर दल द्वारा सैनिक अभिवादन भी समर्पित किया गया।

उद्घाटन और सन्देश

सम्मेलन के खुले अधिवेशन की कार्यवाही का प्रारम्भ श्री पं० रुद्रदेव जी उपदेशक सभा में वेद मन्त्रों के पाठ द्वारा किया। तत्पश्चात् श्रीपतिराव जी कदम एम० एल० ए० स्वागताध्यक्ष ने अपने स्वागत भाषण द्वारा आमन्त्रित जनों का स्वागत् करते हुए आर्यसमाज द्वारा की गई राष्ट्रीय सेवाओं पर प्रकाश डाला। और कहा कि आर्यसमाज कोई साम्प्रदायिक संस्था नहीं है। अपितु वह एक विशुद्ध सार्वभौम धार्मिक-सिद्धांतों का प्रचार करने वाली संस्था है।

अन्त में आपने सभापतित्व के लिए श्री पं० कृष्णदत्त जी एम० ए० का नाम प्रस्तुत किया जो करतल ध्वनि में स्वीकृत हुआ। और सभापति जी ने आसन ग्रहण किया। बीड़ की विभिन्न २१ सार्वजनिक संस्थाओं की ओर से श्री पं० कृष्णदत्त जी एम० ए० तथा प० प्रकाशवीर जी शास्त्री आदि को पुष्पमालाएं पहिना कर स्वागत किया गया। तत्पश्चात् श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री सदस्य लोक सभा ने अपने भाषण द्वारा इस सम्मेलन का उद्घाटन किया। बाद में श्री पं० नरेन्द्र जी ने भारत के विभिन्न नेताओं द्वारा प्राप्त सन्देश पढ़कर सुनाए। जिन महानुभावों के सन्देश इस अवसर पर प्राप्त हुए उनमें श्री महामहिम सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन जी राष्ट्रपति भारत सरकार, श्री के० एम० मुन्शी जी, श्री प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास प्रधान सार्वदेशिक सभा देहली श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त दुर्ग श्री कुम्भाराम जी आर्य मन्त्री, राजस्थान सरकार, श्री बी० डी० जट्टी खाद्य मन्त्री मैसूर, श्री चौधरी जी, शिक्षा मन्त्री महाराष्ट्र, श्री केशवराव जी सोनवन सहकार मन्त्री महाराष्ट्र एवं पं० देवबन्धु जी शास्त्री होशियारपुर आदि के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। सन्देश वाचन के उपरांत सभापतिजी ने अपना अध्यक्षीय भाषण पढ़ा। इस भाषण में आपने आर्य समाज की प्रस्तुत गतिविधि और आर्य समाज के भावी दायित्व की ओर संकेत करते हुए प्रेरणा की। खुले अधिवेशन में लगभग २० हजार से ज्यादा जनसमूह उपस्थित होता रहा। अधिवेशन के दूसरे और तीसरे दिन ७ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए।

प्रस्ताव संख्या १

(अ) मराठवाड़ा आर्य सम्मेलन, बीड़ महाराष्ट्र सरकार से यह मांग करता है कि धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक परम्परा को देखते हुए महाराष्ट्र राज्य में सम्पूर्ण गौवध बंदी को वैज्ञानिक दृष्टि से कठोरता के साथ लागू किया जाय। भारतीय संस्कृति और समाज में गौ सदा ही पूज्य मानी जाती रही है। गौ और गौ सन्तान भारतीय कृषि तथा व्यापार का मुख्य साधन और आधार रहा है और आज भी है। भारत के सभी कार्यक्षेत्रों के नेताओं ने गौवध बन्दी का प्रयत्न किया है। गौवध स्वतन्त्र भारत के मस्तिष्क पर एक राष्ट्रीय कलंक है। आर्य समाज अपने आरम्भ काल से ही गौवध बन्दी के लिये प्रयत्न करता आया है। आज यह सम्मेलन उसी मांग को दुहराता हुआ महाराष्ट्र सरकार से इस दिशा में तुरन्त ही सक्रिय कदम उठाने की प्रार्थना करता है।

(आ) यह सम्मेलन भारत सरकार का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता है कि चूंकि केन्द्रीय सरकार ने गौवध बन्दी का प्रश्न निर्णयार्थ राज्य सरकारों पर छोड़ दिया है। इसका दुष्परिणाम यह सामने आया है कि कुछ राज्य सरकारों ने स्वराज्य के १८ वर्षों बाद तक भी इस दिशा में न तो कोई सक्रिय कदम ही उठाया है और न ही कोई निश्चित निर्णय ही किया है। जनमत की यह घोर उपेक्षा और धार्मिक, सामाजिक भावना के प्रति यह शिथिलता निःसन्देह निन्दनीय है। अतएव यह सम्मेलन भारत सरकार से दृढ़तापूर्वक यह मांग करता है कि वह संविधान की भावना का आदर करने के लिये इस विषय में राज्य सरकारों को शीघ्रातिशीघ्र प्ररणा दे और अपने प्रभाव काम में लाए।

(इ) साथ ही यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली से यह प्रार्थना करता है कि बम्बई के साधारण अधिवेशन में किये गये अपने निश्चय को क्रियान्वित करने के लिये जिन-जिन राज्यों में गोवधबन्दी अभी तक नहीं हो पाई है, सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व में उन राज्यों में गोवध बन्दी के लिये ६६ की समाप्ति तक आवश्यक कार्यवाही अथवा तीव्र आंदोलन भी किये जायें।

प्रस्तावक:—श्री उत्तममुनि जी,
अनुमोदक:— ,, छमनलालविजयवर्गीय
समर्थक:— ,, श्रीपतराव जी कदम

प्रस्ताव संख्या २

यह मराठवाड़ा आर्य सम्मेलन, महाराष्ट्र सरकार से यह मांग करता

है कि महाराष्ट्र राज्य में मद्यनिषेध को अधिक कठोरता से लागू किया जाये। आज कुछ राज्य सरकारें इस दिशा में अपनाई गई राष्ट्रीय नीति में कुछ शिथिलता लाती हुई प्रतीत होती है। यह सम्मेलन मांग करता है कि इस विषय में जन-जन की इच्छा तथा हित का आदर किया जाये। मद्यपान भारतीय संस्कृति एवं भारतीय परम्परा के विरुद्ध है। अनेक धार्मिक एवं राष्ट्रीय नेताओं ने मद्यपान का कठोर विरोध किया है अत. एव यह सम्मेलन महाराष्ट्र सरकार से यह मांग करता है कि वह नैतिकता और सदाचार की वृद्धि के लिये मद्यनिषेध को अधिक कठोरता से लागू करे और सारे राज्य में मद्यपान वैधानिक दृष्टि से सम्पूर्णतया निषिद्ध घोषित किया जाये।

(आ) यह सम्मेलन भारत सरकार से भी यह मांग करता है कि सारे देश में मद्यनिषेध की नीति एक समान लागू की जाय।

प्रस्तावक:—श्री लक्ष्मणराव जी गोजे
अनुमोदक:—,, प० प्रह्लाद जी
समर्थक :— ,, नरदेव जी स्नेही

प्रस्ताव संख्या (३)

(अ) आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण को अनुभव करके अत्यन्त खेद होता हैं कि आर्य समाज के कतिपय सदस्य अपने घरों में अवैदिक सस्कार करते हैं और अन्य आर्यसमाजी सदस्य उनको निरुत्साहित करने के स्थान पर उलटे ऐसे अवैदिक सस्कार में सम्मिलित होते है। जिसका परिणाम यह हो रहा है कि वैदिक संस्कारों का लोप होता जा रहा है। अत: यह सम्मेलन आर्यसमाजी सभासदों से अनुरोध करता हैं कि इस नियम का यदि किसी सभासद द्वारा उलघन करने की धृष्टता हो तो आर्यसमाजी सभासद ऐसे अवैदिक संस्कारों में कदापि सम्मिलित न हों।

(आ) आर्यसमाजी जन अपने घरों मे विशुद्ध वैदिक संस्कार करावें एवं पर्व पद्धति के अनुसार पर्वों का आयोजन करें।

सस्कार के सम्बन्ध में यह सम्मेलन निम्न बातों की ओर आर्य सदस्यों का ध्यान आकर्षित करता है।

(१) आर्यों के संस्कारों में यथासंभव आर्यसमाजी सदस्य सपरिवार सम्मिलित होवें।

(२) सस्कारों को यथा सभव कम खर्चीला बनाया जाए।

(३) प्रमुख समाज अपने यहां १ पुरोहित को नियुक्त करें जिससे कि सदस्यों के यहां संस्कार सुगमता पूर्वक संपन्न हो सके।

प्रस्तावक—श्री पं० ज्ञानेन्द्र जी शर्मा
अनुमोदक—,, डा० हरिश्चन्द्र जी
समर्थक—,, वेदकुमार जी वेदालंकार

प्रस्ताव संख्या (४)

मराठवाड़ा आर्य सम्मेलन बीड़ आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण से प्रार्थना करता है कि आर्यसमाज के कार्य को सुचारुरूप से और प्रभावशाली रूप से प्रचारित करने के लिये निम्नलिखित प्रस्ताव पर विचार करें।

जिले के हर तालुका में प्रतिनिधि मडल होना चाहिये जो कि संपूर्ण तालुके के आर्य जगत की असुविधा वा त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न करे।

इसी प्रकार जिले के स्तर पर भी आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से तथा संगठनात्मक सुगठितता लाने के लिए एक जिला प्रतिनिधि मंडल की स्थापना की जाये। इस मडल के भी कर्तव्य और उद्देश्यों के शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक सभी कार्य सम्मिलित हैं।

प्रस्तावक—श्री शेषराव जी वाघमारे
अनुमोदक=,, वेदकुमार जी, वेदालंकार

प्रस्ताव संख्या (५)

यह सम्मेलन महाराष्ट्र सरकार के १५ अगस्त १९६५ के स्वातन्त्र्य सैनिकों के बारे में जो घोषणा की है, उसका स्वागत करता है। स्वातन्त्र्य आंदोलन में आर्यों ने भाग लिया था लेकिन इसमें जिन आर्य समाजी व्यक्तियों ने भाग लिया था इसमें नाम बदल कर लिखवाये गये थे इस लिये उनके नाम बदलने की बाबत उसको स्वीकार नहीं किया जा रहा है सभा जो प्रमाण पत्र देगी उसको प्रमाणित मानकर उसको स्वातन्त्र्य सैनिक करार दिये जाये।

प्रस्तावक—श्री शेषराव जी वाघमारे
अनुमोदक—,, पं० प्रह्लाद जी

प्रस्ताव संख्या (६)

बदलती हुई परिस्थिति और जनता की आज की आवश्यकताओं को लक्ष में रख कर यह सम्मेलन आर्य समाज के कार्य को गतिशील बनाने के उद्देश से निम्नांकित कार्यक्रम प्रस्तुत करता है।

(१) प्रौढ़ शिक्षण के प्रसार के लिए उसकी आवश्यकता अनुभव करते हुए आर्य समाजों को अनुरोध करता है कि वे अपने यहां रात्री पाठशालाओं का संचालन करें। इन पाठशालाओं में, किसान-मजदूर नर-नारियों को शिक्षित बनाकर देश की शैक्षणिक स्थिति को सुधारने का कर्तव्य आर्यसमाज अपने ऊपर अवश्य लें।

(२) आर्य समाज सदैव ही जनता के कष्टों को दूर करने का प्रयत्न करता रहा है। आज अनेक कारणों से जनता को कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। जिन्हें आर्यसमाज जैसी समाजसेवी-संस्था देखकर चुप नहीं बैठ सकती। अत: यह सम्मेलन आर्य समाजियों से अनुरोध करता है कि जन सम्पर्क क्षेत्र को बढ़ाकर जनता के कष्टों को दूर करने का प्रयत्न करें।

(३) भ्रष्टाचार विरोधी भावनाओं को जाग्रत किया जाए।

(४) राज्य द्वारा संचालित परिवार-नियोजन आन्दोलन को असफल बनाने की दिशा में प्रत्येक समाज द्वारा व्यापक रूप में प्रचार किया जाए। जिससे कि हिन्दुओं की संख्या घटकर जो राजनीतिक परिणाम निकल सकते हैं, उनकी रोक-थाम हो सके।

(५) जन्म-मूलक जाति-पांति बन्धनों से मुक्त अन्तर वर्णीय विवाह-सम्बन्धों को सक्रिय प्रोत्साहन दिया जाए।

(६) प्रत्येक आर्यसमाज द्वारा व्यायामशाला का सचालन सुचारु रूपेण किया जाए।

(७) नवयुवकों के स्वास्थ्य पालन और और नैतिक उत्थान के लिए आर्य समाजों में आर्य वीर दल की स्थापना को जाकर इस रचनात्मक कार्यक्रम को सुचारुता पूर्वक चलाया जाए।

(८) यह सम्मेलन देश में बढ़ती हुई अनैतिकता और उसके प्रभाव को नष्ट करने के लिये आवश्यक अनुभव करता है कि प्रत्येक आर्य समाज द्वारा अपने यहां धार्मिक परीक्षाओं की पाठविधि की व्यवस्था करे। और अधिकाधिक लोगों को इसमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

(९) ईसाई निरोध प्रचार पर विशेष ध्यान दिया जाय।

(१०) शुद्धि के कार्य में प्रत्येक समाज विशेष भाग लें।

प्रस्ताव.—श्री [illegible]राम जी वाघमारे
अनुमोदक: श्री पं० मंगलदेव जी शास्त्री
समर्थक:—श्री पं० कर्मवीर जी
डा० इन्द्रदेव जी

प्रस्ताव संख्या (७)

बहु विवाह पर प्रतिबन्ध लगाकर भारत सरकारने नि:सन्देह एक प्रशसनीय कार्य किया है। किन्तु यह खेद की बात है कि संपूर्ण देश में इसका पालन सभी के लिये समान रूप से नहीं है। मुसलमानों पर इस बहु-विवाह प्रतिबन्ध का कोई प्रभाव नहीं है। एक राष्ट्र में सामाजिक उत्थान के इस कानून पर आचरण की दो भिन्न नीतियां सर्वथा अनुचित हैं। मुस्लिम महिलाओंके प्रति इस अन्याय पूर्ण नीति के विरुद्ध बम्बई में मुस्लिम महिलाओं के अभी-अभी प्रदर्शन का यह सम्मेलन समर्थन करता है। यह सम्मेलन भारत सरकार से प्रार्थना करता है कि वह राष्ट्र के निवासियों में भेद करने वाली इस नीति को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त कर दें तथा भारत के सभी नागरिकों को समान व्यवहार की इस न्यायपूर्ण मांग को स्वीकार करें।

प्रस्तावक:—श्री उत्तममुनि जी,
अनुमोदक – श्री डी० एल० होलीकर जी,
समर्थक:—श्री करण्डेकर जी, बाढ़वाणा

ईसाई धर्मवालों की कुकृति

मुजफ्फरपुर १७ जून। खबर है कि स्थानीय लंगट सिंह कालेज के लक्ष्मी भवन छात्रावास से दिनांक २८-४-६६ की रात में एक १७ वर्षीय बालिका को एक ईसाई एन्थोनी सोलोमन दीपक तथा उनके संबंधियों एवं शागिर्दों ने रहस्यमय ढंग से और छात्रावास के अधिकारियों के सहयोग से लापता कर दिया। इस षड़यन्त्र में अभी तक दस व्यक्ति शामिल बतलाये जाते हैं।

ज्ञात रहे कि उक्त छात्रा एक प्रतिष्ठित हिन्दू परिवार की है और उसका आज तक कोई भी पता नहीं मिल सका है। ईसाइयत के प्रचार एक प्रकार का ऐसा घृणित रूप अपनाने से स्थानीय जनता में रोष फैला हुआ है। उक्त एन्थोनी दीपक को बुद्धिमान एस. डी. ओ. तथा माननीय जिला सत्र न्यायाधीश महोदय ने जमानत देना अस्वीकार कर दिया है, लेकिन जानकार सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि कतिपय राजनैतिक व्यक्ति उसकी मदद के लिये जी तोड़ प्रयत्न कर रहे हैं।

सबसे दुःख की बात यह है कि सरकारी और पुलिस विभाग स्वयं इस मुकदमे में पूर्ण रूप से निष्क्रिय है जबकि बालिका के अभिभावकों ने मुजफ्फरपुर नगर थाने में दिनांक २२-५-६६ को इसका मुकदमा दिया है और बालिका को किसी प्रकार खोज निकालने की प्रार्थना की है।

मत चूके चौहान

श्री प्रो० उत्तमचन्द्र जी शरर

पृथिवीराज रासों में पृथिवीराज के सखा, कवि चन्द्रबरदायी की उक्ति मुझे सहसा याद आ गई, जब मैंने एक भाई से आर्यसमाज की विफलता के कारणों में एक बड़ा कारण आर्यसमाज का Political न होना भी सुना ! आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है इसका प्रवर्तक एक क्रान्तदर्शी ऋषि था, जिसने आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक जगत् में क्रान्तिकारी दृष्टिकोण उपस्थित किये । जिसकी दूरदर्शिता का प्रमाण यह है कि उसकी जिन बातों का विरोध आज से सौ वर्ष पूर्व यहां का समाज करता था, आज उन मान्यताओं को मानने पर विवश हो गया है । अन्तर समय का रहा है स्त्री शिक्षा, स्वदेशी, स्वराज्य, अछूतोद्धार, इत्यादि कोई भी मान्यता जो कल तक समाज को ऋषि के विरोध में खड़ा किए हुए थी आज समाज को न केवल अप्रिय नहीं अपितु अनिवार्य भी लगती है । आध्यात्मिक क्षेत्र में लो गुरुडम हो चाहे जड़ पूजन, सब कुप्रथाओं के दोष आज के समाज के सम्मुख स्पष्ट हो चुके हैं ।

प्रश्न यह है कि क्या ऋषि का राजनैतिक दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं था जो आर्यों ने उसके लिये अपनी कोई सभा नहीं बनाई ? ऐसी बात तो नहीं है ऋषि दयानन्द न केवल सत्यार्थप्रकाश में छठा समुल्लास ही इस विषय को अर्पित कर पाते हैं, अपितु स्थान-स्थान पर ईश्वर प्रार्थना में भी चक्रवर्ती-राज्य की प्रार्थना करते है, उनकी आयु का अन्तिम भाग भारत का राजाओं को सन्मार्ग दिखाने में ही लगा है ऐसी परिस्थिति में उस विचार धारा को क्रियात्मक रूप देने के लिये कोई सभा ही नहीं होनी चाहिये ? इससे बढ़कर ऋषि के राजनैतिक विचारों से उदासीनता और क्या हो सकती है ।

आर्यसमाज ने विद्यालयों का आरम्भकर जनता को सन्मार्ग दिखाया और उसमें उसे भय नहीं हुआ कि आर्यों के स्कूलों में लोग लड़के नहीं भेजेंगे परन्तु राजनैतिक सभा के लिये उसे भय रहा कि शायद लोग उसके खण्डनात्मक रूप को ध्यान में रखकर वोट न देंगे । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जिस प्रकार हमारे स्कूलों के परीक्षा परिणाम लोगों को अपने बच्चे हमारे स्कूलों में प्रविष्ट करने पर बाधित करते हैं उसी प्रकार राजनैतिक चरित्र लोगों को आर्यों को ही वोट देने पर विवश कर दे, परन्तु कमी आत्म विश्वास की रही । भला प० प्रकाशवीर जी शास्त्री, स्वतन्त्ररूप से खड़ा होकर भी क्यों विपक्षियों को पछाड़ देता है ? क्या वह आर्यसमाजी नहीं और क्या लोगों को पता नहीं कि यह खण्डन करने वाले समाज का एक अंग है और फिर क्या जनसंघ इत्यादि दलों ने उसके विरोध में अपना Candidate खड़ा नहीं किया या गलत प्रचार मे कमी रखी? परन्तु फिर भी प्रकाशवीर सफल होते हैं कारण अपना मनोबल तथा कार्य कुशलता है । आज जो आर्यभाई इन राजनैतिक पार्टियों की ओर देख रहे हैं, मेरी नम्र प्रार्थना है कि वे उस घोड़े पर, सवार होने की गलती न करें जिसकी लगाम ही किसी दूसरे के हाथ में हो ।

एक विचार यह भी रहता है कि क्या हम अलग पार्टी बनाकर सबके विरोध का पात्र न बन जायेंगे ? मैं पूछता हूं अब आर्यों का विरोध कौन नहीं करता ? और सत्य तो यह है कि इस विरोध के सम्मुख खड़ा होना ही जीवन है । यदि आर्य भाई आज के युग में अपने जीवन का परिचय देना चाहते हैं तो उन्हें राजनैतिक क्षेत्र में अपनी उदासीनता दूर करनी होगी । भला यह भी कोई बात है कि एक व्यक्ति आर्यसमाज का दिया अन्न खाता है और जालंधर में जाकर अकालियों जैसी गद्दार सोसाइटी से आर्यों की समता करता है । जो आर्य भाई दिल्ली में ऐसे "सियासी खातिर" के भावकों का प्रबन्ध करने में अपने जीवन की सार्थकता समझते आये हैं वह विचार करें कि ऐसा क्यों होता है ? कारण स्पष्ट है कि आर्यसमाज के वोटों को तो वह अपनी जेब में ही समझते है क्योंकि इनकी अपनी कोई सभा नहीं, और संस्कृति के पुनरुद्धार का नारा उन लोगों ने आर्यसमाज से छीन लिया है । आज उनके सामने स्थिति स्पष्ट है कि यदि वे अपनी सियासी पार्टी से जुदा हों तो वह पार्टी उनका डट कर विरोध करती है परन्तु यदि वे उस पार्टी में रह जावें तो चाहे वे पंजाब निवासियों को "पंजाबी मातृभाषा का उपदेश दे तो भी आर्यसमाजी का वोट उनके सिवाय किसी और को नहीं मिलेगा । फिर वह आर्यसमाज की क्यों सुनें ? क्यों मुआफी मांगें ?

अतः मैं सार्वदेशिक सभा, प्रतिनिधि सभाओं से प्रार्थना करूंगा कि अब अपना कोई स्वरूप निश्चित कीजिये, १९६७ का चुनाव आ रहा है यदि आप समझते हैं कि आर्यों की विचार धारा ही देश का कल्याण कर सकती है तो उसके लिये स्थिर रूप से सभा का निर्माण कीजिये । परिणाम ईश्वर पर छोड़ना होगा, प्रयत्न में आर्य भाई कम नहीं हैं सच तो यह है कि इनके प्रयत्नों से दूसरी सभाएं जीवित हैं । अतः आर्य भाई शीघ्रता करें, लोहा गर्म है चोट लगावें । यदि अब भी आलस्य किया तो फिर शायद हम उठने के योग्य भी न रहे, अतः उठो विजय श्री आपकी प्रतीक्षा में हैं ।

एक पुरानी वार्ता

श्री प्रो० ताराचन्द जी गाजरा एम०ए०

यह उस समय की बात है जब मैं अभी स्कूल में ही पढ़ता था । ताऊजी की बैठक के बाहर एक बड़ा भारी नीम का वृक्ष लगा हुआ था और उस वृक्ष के नीचे नित्य प्रति पानी छिड़का जाता था । इस वृक्ष की ठंडक से आकर्षित होकर बहुत सारे मित्र आकर कुर्सियों पर बैठ जाते थे । इनमें हिन्दु मुसलमान और ईसाई आदि सभी होते थे । एक दिन डिप्टी कलक्टर सादिक अलीजी वहां आ गए बातों बातों में उन्होंने कहा कि वेद के एक मन्त्र को लेकर ऋषि दयानन्द कई पृष्ठ कैसे भर देते हैं । ताऊजी ने उनसे पूछा कि आप कृपा कर विदित करें कि आपका आगमन किस प्रयोजन से हुआ है । उन्होंने कहा इस वृक्ष के ठंडे साये के नीचे बैठकर आप से वार्तालाप करने के लिए आ गया । वहां पर डा० नबीबख्श जी आंखों की चिकित्सा करते थे, वे भी विद्यमान थे । ताऊजी ने उनसे पूछा कि आपके विचारानुसार इस नीम के वृक्ष का क्या उपयोग है ? उन्होंने उत्तर दिया । इस वृक्ष के नीचे अंजन रखा जाता है और वह दृष्टि को ठीक रखने के लिए बड़ा लाभकारी होता है ।

फिर ताऊजी ने हकीम ठाकुरदास की ओर मुंहकर पूछा कि आपके ख्याल में इस नीम का क्या उपयोग है । उन्होंने उत्तर दिया कि आप जानते है कि मैं फोड़े-फुंसी का इलाज करता रहता हूं और इस वृक्ष के पत्तों आदि से मरहम बनाता हूं ।

फिर रूपचन्द पंसार से ताऊजी ने पूछा कि आपके लिए इस नीम का क्या उपयोग है ? उन्होंने उत्तर दिया जब इसमें फूल आ जाते हैं तब इनको संग्रह कर मैं उनसे सुगंधित इत्र बनाता हूं । और इस प्रकार अपना निर्वाह करता हूं ।

यह वार्तालाप हो रही थी कि मकानों का ठेकेदार अल्लाबख्श आ पहुंचा । उससे पूछा गया कि इस नीम का क्या उपयोग है ? तो उसने उत्तर दिया इसकी लकड़ी के बीच का भाग बड़ा अच्छा होता है और उसको दीमक नहीं लगती । इसलिए यह वृक्ष लोगों के लिए बड़ा कारामद है ।

अब सारे वार्तालाप को समाप्त करते हुए ताऊजी ने कहा कि यह वृक्ष तो एक है किन्तु उपयोग अनेक और भिन्न-भिन्न व्यवसायी उनको भिन्न-भिन्न दृष्टि से देखते हैं । यदि यहां पर कोई कवि आ जाए तो सारे वार्तालाप के सबन्ध में एक ऐसी सुन्दर कविता बना देगा जो लोगों को बहुत प्रिय लगेगी ।

इसी प्रकार वेद के हर एक मंत्र के हर एक शब्द अर्थ से भरे हैं उनके हर एक मात्रा में भी कुछ गम्भीर विचार विद्यमान है जितना जितना पाठक चित्त को एकाग्र कर उन पर विचार करेगा उतना-उतना ही उसको अधिक ज्ञान और लाभ होगा । ऋषि दयानन्द ने तो इस बात का संकेत मात्र ही किया है और ऋषि के पश्चात् कई विद्वानों ने वेद का अन्वेषण किया है तथा कई विचारों को प्रकाशित किया है ।

(पृष्ठ २ का शेष)

न करे, परन्तु जो विश्वासपात्र है, उस पर भी अधिक विश्वास न करे, क्योंकि अधिक विश्वास से भय उत्पन्न होता है, अतः बिना जांचे-बूझे किसी पर भी विश्वास न करे ॥४३॥

विश्वासयित्वा तु परं तत्त्वभूतेन हेतुना।
अथास्य प्रहरेत् काले किञ्चिद् विचलिते पदे ॥४४

किसी यथार्थ कारण से शत्रु के मन में विश्वास उत्पन्न करके जब कभी उसका पैर लड़खड़ाता देखे अर्थात् उसे कमजोर समझे तभी उसपर प्रहार कर दे ॥

अशङ्क्यमपि शंकेत नित्यं शंकेत शङ्कितात्।
भयं ह्यशङ्किताज्जातं समूलमपि कृन्तति ॥४५॥

जो सन्देह करने योग्य न हो, ऐसे व्यक्ति पर भी सन्देह करे—उसकी ओर से चौकन्ना रहे और जिससे भय की आशंका हो, उसकी ओर से तो सदा सब प्रकार से सावधान रहे ही, क्योंकि जिसकी ओर से भय की आशंका नहीं है, उसकी ओर से यदि भय उत्पन्न होता है तो वह जड़मूलसहित नष्ट कर देता है ॥

अवधानेन मौनेन काषायेण जटाजिनैः।
विश्वासयित्वा द्वेष्टारमवलुम्पेद् यथा वृकः ॥४६॥

शत्रु के हित के प्रति मनोयोग दिखाकर, मौनव्रत लेकर, गेरुआ वस्त्र पहनकर तथा जटा और मृगचर्म धारण करके अपने प्रति विश्वास उत्पन्न करे और जब विश्वास हो जाय तो मौका देखकर भूखे भेड़िये की तरह शत्रु पर टूट पड़े ॥४६॥

पुत्रो वा यदि वा भ्राता पिता वा यदि वा सुहृत्।
अर्थस्य विघ्नं कुर्वाणा हन्तव्या भूतिमिच्छता ॥

पुत्र, भाई, पिता अथवा मित्र जो भी अर्थप्राप्ति में विघ्न डालने वाले हों, उन्हें ऐश्वर्य चाहने वाला राजा अवश्य मार डाले ॥४७॥

गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः।
उत्पथं प्रतिपन्नस्य दण्डो भवति शासनम् ॥४८॥

यदि गुरु भी घमण्ड में भर कर कर्तव्य और अकर्तव्य को नहीं समझ रहा हो और बुरे मार्ग पर चलता हो तो उसके लिये भी दण्ड देना उचित है, दण्ड उसे राह पर लाता है ॥४८॥

अभ्युत्थानाभिवादाभ्यां सम्प्रदानेन केनचित्।
प्रतिपुष्पफलाघाती तीक्ष्णतुण्ड इव द्विजः ॥४९॥

शत्रु के आने पर उठकर उसका स्वागत करे, उसे प्रणाम करे और कोई अपूर्व उपहार दे, इन सब बर्तावों के द्वारा पहले उसे वश में करे। इसके बाद ठीक वैसे ही जैसे तीखी चोंच वाला पक्षी वृक्ष के प्रत्येक फूल और फल पर चोंच मारता है, उसी प्रकार उसके साधन और साध्य पर आघात करे ॥४९॥

नाच्छित्त्वा परमर्माणि नाकृत्वा कर्म दारुणम्।
नाहत्वा मत्स्यघातीव प्राप्नोति महतीं श्रियम् ॥५०

राजा मछलीमारों की भांति दूसरों के मर्म विदीर्ण किये बिना, अत्यन्त क्रूर कर्म किये बिना तथा बहुतों के प्राण लिये बिना बड़ी भारी सम्पत्ति नहीं पा सकता है ॥५०॥

नास्ति जात्या रिपुर्नाम मित्रं वापि न विद्यते।
सामर्थ्ययोगाज्जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा ॥५१॥

कोई जन्म से ही मित्र अथवा शत्रु नहीं होता है। सामर्थ्य योग से ही शत्रु और मित्र उत्पन्न होते रहते ॥५१॥

नैव मुञ्चेत वदन्तं करुणान्यपि।
कर्तव्यं हन्यात् पूर्वापकारिणम् ॥५२॥

शत्रु करुणाजनक वचन बोल रहा हो तो भी उसे मारे बिना न छोड़े। जिसने पहले अपना अपकार किया हो, उसको अवश्य मार डाले और उसमें दुःख न माने ॥५२॥

संग्रहानुग्रहे यत्नः सदा कार्योऽनसूयता।
निग्रहश्चापि यत्नेन कर्तव्यो भूतिमिच्छता ॥५३॥

ऐश्वर्य की इच्छा रखने वाला राजा दोषदृष्टि का परित्याग करके सदा लोगों को अपने पक्ष में मिलाये रखने तथा दूसरों पर अनुग्रह करने के लिये यत्नशील बना रहे और शत्रुओं का दमन भी प्रयत्नपूर्वक करे ॥

प्रहरिष्यन् प्रियं ब्रूयात् प्रहृत्यैव प्रियोत्तरम्।
असिनापि शिरश्छित्त्वा शोचेत च रुदेत च ॥५४॥

प्रहार करने के लिये उद्यत होकर भी प्रिय वचन बोले, प्रहार करने के पश्चात् भी प्रिय वाणी ही बोले, तलवार से शत्रु का मस्तक काट कर भी उसके लिये शोक करे और रोये ॥५४॥

निमन्त्रयीत सान्त्वेन सम्मानेन तितिक्षया।
लोकाराधनमित्येतत् कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥५५॥

ऐश्वर्य की इच्छा रखने वाले राजा को मधुर वचन बोल कर, दूसरों का सम्मान करके और सहनशील होकर लोगों को अपने पास आने के लिये निमन्त्रित करना चाहिये, यही लोक की आराधना अथवा साधारण जनता का सम्मान है। इसे अवश्य करना चाहिये ॥५५॥

न शुष्कवैरं कुर्वीत बाहुभ्यां न नदीं तरेत्।
अनर्थकमनायुष्यं गोविषाणस्य भक्षणम्।
दन्ताश्च परिमृज्यन्ते रसश्चापि न लभ्यते ॥५६॥

सूखा वैर न करे तथा दोनों बांहों से तैर कर नदी के पार न जाय। यह निरर्थक और आयु नाशक कर्म है। यह कुत्ते के द्वारा गाय का सींग चबाने-जैसा कार्य है, जिससे उसके दांत भी रगड़ उठते हैं और रस भी नहीं मिलता है ॥५६॥

त्रिवर्गे त्रिविधा पीडानुबन्धास्त्रय एव च।
अनुबन्धाः शुभा ज्ञेयाः पीडाश्च परिवर्जयेत् ॥५७

धर्म, अर्थ और काम—इन त्रिविध पुरुषार्थों के सेवन में लोभ, मूर्खता और दुर्बलता – यह तीन प्रकार की बाधा—अड़चन उपस्थित होती है। उसी प्रकार उनके शान्ति, सर्वहितकारी कर्म और उपभोग—ये तीन ही प्रकार के फल होते हैं। इन (तीनों प्रकार के) फलों को शुभ जानना चाहिये, परन्तु (उक्त तीनों प्रकार की) बाधाओं से यत्नपूर्वक बचना चाहिये ॥५७॥

ऋणशेषमग्निशेषं शत्रुशेषं तथैव च।
पुनः पुनः प्रवर्त्तन्ते तस्माच्छेषं न धारयेत् ॥५८॥

ऋण, अग्नि और शत्रु में से कुछ बाकी रह जाय तो वह बारम्बार बढ़ता रहता है, इसलिये इनमें से किसी को शेष नहीं छोड़ना चाहिये ॥५८॥

वर्धमानमृणं तिष्ठेत् परिभूताश्च शत्रवः।
जनयन्ति भयं तीव्रं व्याधयश्चाप्युपेक्षिताः ॥५९॥

यदि बढ़ता हुआ ऋण रह जाय, तिरस्कृत शत्रु जीवित रहें और उपेक्षित रोग शेष रह जाय तो ये सब तीव्र भय उत्पन्न करते हैं ॥५९॥

नासम्यक् कृतकारी स्यादप्रमत्तः सदा भवेत्।
कण्टकोऽपि हि दुश्छिन्नो विकारं कुरुते चिरम् ॥

किसी कार्य को अच्छी तरह सम्पन्न किये बिना न छोड़े और सदा सावधान रहे। शरीर में गड़ा हुआ कांटा भी यदि पूर्ण रूप से निकाल न दिया जाय—उसका कुछ भाग शरीर में ही टूट कर रह जाय तो वह चिरकाल तक विकार उत्पन्न करता है ॥६०॥

वधेन च मनुष्याणां मार्गाणां दूषणेन च।
आगाराणां विनाशैश्च परराष्ट्रं विनाशयेत् ॥६१॥

मनुष्यों का वध करके, सड़के तोड़-फोड़कर और घरों को नष्ट-भ्रष्ट करके शत्रु के राष्ट्र का विध्वंस करना चाहिये ॥६१॥

गृध्रदृष्टिर्बकालीनः श्वचेष्टः सिंहविक्रमः।
अनुद्विग्नः काकशङ्की भुजङ्गचरितं चरेत् ॥६२॥

राजा गीध के समान दूर तक दृष्टि डाले, बगुले के समान लक्ष्य पर दृष्टि जमाये, कुत्ते के समान चौकन्ना रहे और सिंह के समान पराक्रम प्रकट करे, मन में उद्वेग को स्थान न दे, कौए की भांति सशंक रह कर दूसरों की चेष्टा पर ध्यान रक्खे और दूसरे के बिल में प्रवेश करने वाले सर्प के समान शत्रु का छिद्र देख कर उस पर आक्रमण करे ॥६२॥

शूरमञ्जलिपातेन भीरुं भेदेन भेदयेत्।
लुब्धमर्थप्रदानेन समं तुल्येन विग्रहः ॥६३॥

जो अपने से शूरवीर हो, उसे हाथ जोड़ कर वश में करे, जो डरपोक हो, उसे भय दिखाकर फोड़ ले, लोभी को धन देकर काबू मे कर ले तथा जो बराबर हो उसके साथ युद्ध छेड़ दे ॥६३॥

श्रेणीमुख्यापजापेषु वल्लभानुनयेषु च।
अमात्यान् परिरक्षेत भेदसंघातयोरपि ॥६४॥

(अनेक जाति के लोग जो एक कार्य के लिये संगठित होकर अपना दल बना लेते हैं, उस दल को श्रेणी कहते हैं।) ऐसी श्रेणियों के जो प्रधान हैं, उनमें जब भेद डाला जा रहा हो और अपने मित्रों को अनुनय-विनय द्वारा जब दूसरे लोग अपनी ओर खींच रहे हों तथा जब सब ओर भेदनीति और दलबन्दी के जाल बिछाये जा रहे हों, ऐसे अवसरों पर अपने मन्त्रियों की पूर्ण रूप से रक्षा करनी चाहिये (न तो वे फूटने पावें और न स्वय ही कोई दल बनाकर अपने विरुद्ध कार्य करने पावें। इसके लिए सतत सावधान रहना चाहिये) ॥६४॥

मृदुरित्यवजानन्ति तीक्ष्ण इत्युद्विजन्ति च।
तीक्ष्णकाले भवेत् तीक्ष्णो मृदुकाले मृदुर्भवेत् ॥

राजा सदा कोमल रहे तो लोग उसकी अवहेलना करते हैं और सदा कठोर बना रहे तो उससे उद्विग्न हो उठते हैं, अतः जब वह कठोरता दिखाने का समय हो तो कठोर बने और जब कोमलता पूर्ण बर्ताव करने का अवसर हो तो कोमल बन जाय ॥६५॥

मृदुनैव मृदुं हन्ति मृदुना हन्ति दारुणम्।
नासाध्यं मृदुना किंचित् तस्मात् तीक्ष्णतरो मृदुः ॥

बुद्धिमान् राजा कोमल उपाय से कोमल शत्रु का नाश करता है और कोमल उपाय से ही दारुण शत्रु का भी संहार कर डालता है। कोमल उपाय से कुछ भी असाध्य नहीं है, अतः कोमल ही अत्यन्त तीक्ष्ण है ॥

काले मृदुर्यो भवति काले भवति दारुणः।
प्रसाधयति कृत्यानि शत्रुं चाप्यधितिष्ठति ॥६७॥

जो समय पर कोमल होता है और समय पर कठोर बन जाता है, वह अपने सारे कार्य सिद्ध कर लेता है और शत्रु पर भी उसका अधिकार हो जाता है ॥६७॥

पण्डितेन विरुद्धः सन् दूरस्थोऽस्मीति नाश्वसेत्।
दीर्घौ बुद्धिमतो बाहू याभ्यां हिंसति हिंसितः ॥६८

(शेष पृष्ठ ११ पर)

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

निर्वाचन

आर्यसमाज, आरा के चुनाव में श्री इन्द्रदेव नारायण जी एडवोकेट प्रधान, श्री पन्नालाल जी गुप्तार्य मंत्री एव श्री महावीर प्रसाद जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य कुमार सभा, किंग्जवे दिल्ली के निर्वाचन में श्री सुरेन्द्रकुमार जी प्रधान श्री श्रवणकुमार जी मन्त्री तथा श्री मत्थूराम जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज,पानीपत के निर्वाचन में श्री दलीपसिंह जी प्रधान, श्री योगेश्वरचन्द्र जी मन्त्री, श्री कन्हैयालाल जी आर्य प्रचार मन्त्री एवं श्री रामेश्वरचन्द जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज, कपूरथला के वार्षिक निर्वाचन में श्री बिहारीलाल जी प्रधान, श्री कृष्णकुमार जी आर्य मन्त्री एव श्री पं० मोहनलाल जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज शाहपुरा के नव-निर्वाचन में श्री राजाधिराज श्री सुदर्शनदेव जी प्रधान, श्रीमती आर्य महाराणी सुश्री इन्दुमतकुमारी जी उपप्रधान, श्री चांदकरण जी मूंदड़ा एम० ए० मन्त्री एवं श्री रामजीवन जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज अबोहर के निर्वाचन में श्री लालचन्द जी नारंग प्रधान श्री शंकरदास जी, मोतीराम जी उप-प्रधान श्री घनश्यामदास जी मन्त्री श्री बनवारी लाल जी प्रबन्धक वैदिक कन्या हाई पाठशाला श्री मुकन्दलाल जी सेतिया प्रबन्धक आर्य पुत्री पाठशाला एवं श्री जमनादास जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर का निर्वाचन श्री प्रेमदत्त जी मोदी (कानूनी परामर्शदाता नगर-पालिका अमृतसर) की अध्यक्षता में हुआ। श्री अमृतलाल जी बधवा प्रधान श्री पं० कृपालसिंह जी शास्त्री, श्री विश्वनाथ जी डीवर श्री पं० द्वारकानाथ जी सिद्धान्तालंकार उपप्रधान श्री मदनमोहन सेठ जी मंत्री श्री योगराज जी भाटिया कोषाध्यक्ष तथा श्री सत्यपाल जी शास्त्री पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

स्वर्गवास

—आर्य समाज भभुआ (बिहार) के मन्त्री श्री विश्वनाथ सिंह जी की पूज्यमाता जी का ९५ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वैदिक विधि से अन्त्येष्टि सस्कार हुआ। आर्यसमाज के सभी सदस्य तथा अनेक सनातन धर्मी बन्धु सम्मिलित हुए।

—आर्यसमाज पानीपत ने कर्मठ सन्यासी श्री वेदानन्द जी सरस्वती के निधन पर शोक प्रकट किया है।

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार व स्वाध्याय करें

श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु, आर्योपदेशक तथा मनोहरलाल जी गुप्त ने देश वासियों से अपील की है कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वेद सप्ताह में ता० ४ सितम्बर १९६६ को सारे भारतवर्ष में होने वाली सत्यार्थ प्रकाश की चारों परीक्षाओं में सभी आबाल वृद्ध बहिन भाई स्वयं बैठें और दूसरे को भी भारी संख्या में परीक्षा दिलावे।

उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को सुन्दर चित्ताकर्षक प्रमाण पत्र, प्रथम, द्वितीय और तृतीय को पारितोषिक तथा परीक्षा दिलाने वाले बहिन भाइयों को सुन्दर प्रशस्ति पत्र भी दिये जाते हैं।

परीक्षा पाठ विधि, आवेदन पत्र तथा अन्य सभी प्रकार की जानकारी के लिये परीक्षा मन्त्री आर्ययुवक परिषद् द्वारा आर्य समाज मोडल बस्ती दिल्ली ५ से पत्र व्यवहार करें।

शराब की दुकानें शासनाधिकारियों के बंगलों पर खोली जाएं

देहरादून की सभा में मांग

आर्यसमाज देहरादून के साप्ताहिक अधिवेशन में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ है:

प्रस्ताव —"सभी धर्मों के आचार्य इस बात पर एकमत हैं कि मद्य का सेवन मनुष्यों के लिए हानिकारक है। महात्मा गांधी जी के भी मद्य-निषेध को अपने कार्यक्रम का एक प्रमुख अंग माना था। परन्तु देखने में आ रहा है कि गांधी जी के अनुयायी कहलाने वालों की सरकार किन्हीं निहित स्वार्थों के कारण, न केवल मद्य-निषेध की ओर ध्यान नहीं दे रही है बल्कि शराब का प्रचार अधिकाधिक बढ़ाने के लिए जगह जगह नई नई दुकानें खुलवाती जा रही है जिससे चरित्र-भ्रष्टता के साथ २ अपराध-स्थिति भी भयंकर होती जाती है। इसके विरोध में समय २ पर नागरिकों की ओर से अधिकारियों के पास अपना क्षोभ व्यक्त किया जाता रहा है।

यह सभा सरकार से जोरदार मांग करती है कि न्याय-व्यवस्था की सहायता के लिए तथा नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए पूर्ण मद्य-निषेध सारे देश में अविलम्ब लागू करे। इस सभा का यह भी अनुरोध है कि यदि सरकार किसी नगर में शराब की नई दुकान खोलना अनिवार्य समझे तो इसके लिए प्रधान मन्त्री के निवास मुख्य मन्त्रियों के बंगलों तथा जिलाधीशों के बंगलों के आस-पास स्थान चुना जाए ताकि शराबियों के असभ्य आचरण और अनर्गल कोलाहल से जन साधारण बचे रहें।"

उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों नगर के चक्खू मुहल्ला में देसी शराब की एक नई दुकान खोली जाने वाली थी जिसके विरोध में मोहल्लावासियों ने आन्दोलन किया। अब यह दुकान न्यू मारकिट में खोल दी गई है जिससे उस क्षेत्र के लोग क्षुब्ध हैं।

पुनर्विवाह

जालना (महाराष्ट्र) आर्य समाज मन्दिर में श्री सत्यनारायण जी आर्य का विवाह श्रीमती अनुसुयादेवी के साथ श्री प० गोपालदेव शास्त्री के पौरोहित्य में हुआ। तेलगू भाषी, जनता में यह पहला विवाह हुआ। तेलगू जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

सत्संग

जालना के प्रसिद्ध व्यापारी श्री एकनाथ राव जी उबाले के घर पर पारिवारिक सत्संग में श्री गोपालदेव जी शास्त्री का प्रभावोत्पादक उपदेश हुआ।

वेद-प्रचार

गाजीपुर आर्यसमाज के मन्त्री के निवास पर श्री [illegible] कथा होती रही। श्री प० सत्यदेव जी शास्त्री, श्री रामावतार जी आर्य श्री अमरनाथ जी वर्मा के व्याख्यान व भजन हुए।

श्री प्रभुदयाल चैरिटेबल ट्रस्ट

श्री प्रभुदयाल चैरिटेबल ट्रस्ट मौडलबस्ती दिल्ली की ओर से आर्य शिक्षण संस्थाओं के निर्धन, योग्य, निपुण तथा परिश्रमी छात्र-छात्राओं से छात्र-वृत्ति के लिये आवेदन-पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं। आवेदन-पत्र आचार्य के प्रमाण-पत्र के साथ शीघ्र ही मन्त्री श्री प्रभुदयाल चैरिटेबल ट्रस्ट ६५६२।६ चमेलियान रोड, मौडल बस्ती दिल्ली-६ के पास शीघ्र पहुंच जाने चाहिये।

आर्यसमाज की स्थापना

आर्यसमाज अशोका रोड मैसूर का उद्घाटन श्री डा० राधाकृष्णन एम० बी० बी० एस की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्री लक्ष्मीचन्द जी, श्रीराम कृष्णाप्पाजी तथा श्री कृष्ण शास्त्रीजी के आर्यसमाज की आवश्यकता पर ओजस्वी भाषण हुए।

मैसूर नगर में यह तीसरी आर्य समाज स्थापित हुई है।

ईसाईयों की शुद्धि

ग्राम अजराड़ा (मेरठ) में ११३ ईसाईयों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। इस अवसर पर आर्य (हिन्दु) धर्म सेवा संघ दिल्ली, हिन्दु शुद्धि सभा दिल्ली तथा दलित वर्ग संघ मेरठ के कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए। श्री दीपचन्द के मधुर भजन हुए। श्री हरिदत्त शर्मा ने वैदिक धर्म में दीक्षित जनों का स्वागत तथा ग्रामवासियों का धन्यवाद किया।

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज पटियाला के लिए एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। संगीत जानने वाले को महत्व दिया जावेगा।

—इन्द्रदेव खोसला मन्त्री

आर्ययुवक सम्मेलन

श्री दयानन्द जी आर्य एडवोकेट की अध्यक्षता में २५ जून को आर्य युवक सम्मेलन आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली में हुआ। उद्घाटन भाषण में ओजस्वी आर्य नेता श्री प० नरेन्द्र जी ने युवकों को आर्यसमाज के प्रचार के क्षेत्र में आगे बढ़ने की अपील करते हुए कहा कि इस समय अपने राष्ट्र पर ईसाईयों के प्रबल आक्रमण हो रहे हैं। आर्ययुवकों को तन मन धन से आर्य जाति की रक्षा में तत्पर होना चाहिए।

श्री रामनारायण जी शास्त्री के स्वागत भाषण के पश्चात् आगरा निवासी श्री दयानन्द जी आर्य एडवोकेट ने अपना महत्वपूर्ण मुद्रित भाषण पढ़ा।

Bhagwan Dayanand Saraswati and the Upanishads

by Rai Bahadur Ratan Lal, B. A., LL. B.
Formerly Common Chief Justice of 14 Malwa States
(Madhya Pradesh) High Courts.

(गतांक से आगे)

Argument of Language

Language of the Upanishads

The language of the Upanishads is, as remarked by M. A. Mehendale in ' The Vedic Age. (p. 478), more akin to the Classical, than to Vedic Sanskrit, and this differentiates them from the Vedas and their language shows the human authorship of these treatises. The Upanishadic language is characterized by a few features which further clearly distinguishes them from the Vedas. " A peculiar practice of employing the Dative in place of Gen-Abla of some Fem. Nouns ending in " a " or " i " as also of the pronouns " tat ", " etat " and " yat " is noticed in the Upanishads. Thus we get " tesham samkliptyai " - (Abla). " Varshan Samkalpate " (Chhand. VII. 4.2.)', bhutyai na pramaditavyain " (Tait. 1. II. 1.) (ibid p. 479). Some of the features of Upanishadic language are " (1) Abundant use of simple homely similies and metaphors, (2) repetition of an idea almost in the same words and expressions to ensure firm grasp and recollection ; (3) use of riddle-like expressions which a man loves to master and reproduce with a feeling of superiority ; (4) description of minute details to create and sustain interest; (5) short stories to attract attention before introducing a dry philosophical concept by means of popular beliefs and facts to excite curiosity and create faith" (ibid pp. 479-480). The enormous power which this philosophical poetry exercised over the minds of Indians for centuries is not due to the fiction of their being divine revelation, which, as Aurobindo Ghosh has indicated in his foreword to " The Hymns to The Mystic Fire " is a later idea of Hindu savants, but because these old thinkers wrestle so earnestly for the truth, because in their philosophical poems the eternally unsatisfied human yearning for knowledge has been expressed so fervently". The Upanishads do not contain " superhuman conception ", but human, absolutely human attempts to come nearer to the truth and it is thiswhich makes them so valuable to us. As to the influence of the Upanishads on humanity at large we may do no better than quote the views of a distinguished European scholar -" For the historian, however, who pursues the history of human thought, the Upanishads have a yet far greater significance. From the mystical doctrine of the Upanishads one current of thought be may traced to the mysticism of the Persian Sufism, to the mystic-theosophical logos-doctrine of the Neo-Platonics and the Alexandrian Christians down to the teachings of the Christian mystics Eckhart and Taular, and finally to the philosophy of the great German mystic of the nineteenth century-Schopenhauer " (Winternitg History of Indian Literature I. p 266 quoted in the Vedic Age Vol. 1, pp. 471-472). (Continued)

(पृष्ठ १० का शेष)

विद्वान् पुरुष से विरोध करके 'मैं दूर हूं' ऐसा समझ कर निश्चिन्त नहीं होना चाहिए, क्योंकि बुद्धिमान् की बाहें बहुत बड़ी होती हैं (उसके द्वारा किये गये प्रतीकार के उपाय दूर तक प्रभाव डालते हैं), अतः यदि बुद्धिमान् पुरुष पर चोट की गई तो वह अपनी उन विशाल भुजाओं द्वारा दूर से भी शत्रु का विनाश कर सकता है ॥६८॥

न तत् तरेद् यस्य न पारमुत्तरे-
न तद्धरेद् यत् पुनराहरेत् परः ।
न तत् खनेद् यस्य न मूलमुद्धरे-
न तं हन्याद् यस्य शिरो न पातयेत् ॥

जिसके पार न उतर सके, उस नदी को तैरने का साहस न करे। जिसको शत्रु पुनः बलपूर्वक वापस ले सके ऐसे धन का अपहरण ही न करे। ऐसे वृक्ष या शत्रु को खोदने या नष्ट करने की चेष्टा न करे जिसकी जड़ को उखाड़ फेंकना सम्भव न हो सके तथा उस वीर पर आघात न करे, जिसका मस्तक काट कर धरती पर गिरा न सके ॥६९॥

इतीदमुक्तं वृजिनाभिसंहितं
न चैतदेवं पुरुषः समाचरेत् ।
परप्रयुक्ते न कथं विभावये-
दतो मयोक्तं भवतो हितार्थिना ॥

यह जो मैंने शत्रु के प्रति पापपूर्ण बर्ताव का उपदेश किया है, इसे समर्थ पुरुष सम्पत्ति के समय कदापि आचरण में न लावे। परन्तु जब शत्रु ऐसे ही बर्तावों द्वारा अपने ऊपर संकट उपस्थित कर दे, तब उसके प्रतीकार के लिये वह इन्हीं उपायों को काम में लाने का विचार क्यों न करे, इसलिये तुम्हारे हित की इच्छा से मैंने यह सब कुछ बताया है ॥७०॥

यथावदुक्तं वचनं हितार्थिना
निशम्य विप्रेण सुवीरराष्ट्रपः ।
तथाकरोद् वाक्यमदीनचेतनः
श्रियं च दीप्तां बुभुजे सबान्धवः ॥

हितार्थी ब्राह्मण भारद्वाज कणिक की कही हुई उन यथार्थ बातों को सुनकर सौवीर देश के राजा ने उनका यथोचित रूप से पालन किया, जिससे वे बन्धु-बांधवों सहित समुज्ज्वल राजलक्ष्मी का उपभोग करने लगे।

महाभारत आपद्धर्म पर्व अ० १४० । १-७१ ।

श्रद्धेय श्री महात्मा आनन्द स्वामीजी महाराज का

प्रि० भगवानदास जी डी. ए. वी कालेज अम्बाला नगर के

नाम पत्र

मेरे प्यारे श्री प्रि० भगवान दास जी,

सप्रेम नमस्ते !

लगभग तीन महीने हो गये मुझे विदेश मे भ्रमण करते हुए, थाईलैंड-मलेशिया सिंगापुर-फीजी न्यूजीलैंड-आस्ट्रेलिया- होंग काग फारमूसा मे वेद सन्देश सुनाकर आजकल जापान मे वेद कथा सुना रहा हू। सिंगापुर मे आर्यसमाज का विशाल भवन है। कार्य भी ठीक हो रहा है, फीजी मे आर्य समाज के १५ स्कूल तथा कालेज हैं। आर्य समाजे ११ हैं परन्तु फूट·· बैंकाक (थाईलैंड) मे एक आर्यसमाज है। लोगो मे श्रद्धा है, यह वेद की बात सुनना चाहते हैं परन्तु सुनाने वाला कोई नहीं, यदि दयानन्द कालेजो मे से ५-६ प्रचारक आ जायें, तो प्रचार आगे बढ सकता है, आपके हृदय मे अग्नि जलती है इसीलिए आप से निवेदन किया है।

सेवक

आनन्द स्वामी सरस्वती

अब गण-राज्य

सार्वदेशिक के ३१-३२ अक मे महाभारतकालीन कूटनीतिज्ञ भारद्वाज कणिक का नीति शास्त्र आपके स्वाध्याय के लिए प्रस्तुत किया है। इससे आप आज के कूटनीति के युग में बहुत कुछ प्राप्त करेंगे।

अगले अक मे गणराज्यो की स्थापना और उसके हानि लाभ पर धर्मराज युधिष्ठिर का प्रश्न और भीष्मपितामह का मनन करने योग्य उत्तर पढ़ेंगे।

—सम्पादक

धन्यवाद

बम्बई के सेठ बद्रीप्रसाद जी अग्रवाल ने आर्य समाज परिचयाक के लिए १००) भेजें हैं। हार्दिक धन्यवाद

—प्रबन्धक

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

ईसाइयत खतरे में?

जिस तरह कभी मुस्लिम लीग ने 'इस्लाम खतरे में' का नारा लगाकर देश में पारस्परिक कटुता का बह विष बीज बोया था जो अन्त में पाकिस्तान के विष-वृक्ष के रूप में 'पुष्पित' पल्लवित और फलित हुआ, ठीक, उसी प्रकार 'ईसाइयत खतरे में' का नारा लगाकर एक नए पाकिस्तान के निर्माण की तैयारी हो रही है।

चालाकी के आधुनिक साधनों के विकास के साथ-साथ आजकल के चोर भी इतने चतुर हो गए हैं कि वे स्वयं ही 'चोर आया, चोर आया' का शोर मचा देते हैं और जब लोगों का ध्यान इस कल्पित चोर को पकड़ने में लगा रहता है तब असली चोर पीछे से घरों का सफाया कर जाते हैं। आधुनिक चोरों का यही मनोविज्ञान इस समय राजनीति पर हावी हो गया है और अपनी राजनीतिक दुरभिसन्धियों की पूर्ति के लिए कभी 'पन्थ खतरे में', कभी 'इस्लाम खतरे में, और कभी 'ईसाईयत खतरे में' के नारों का आश्रय लिया जाता है। इस प्रकार के नारे लगाने वालों को 'चोर-चोर मौसेरे भाई' की संज्ञा दी जा सकती है। जैसे 'इस्लाम खतरे में' के नारे से पाकिस्तान बना और 'पंथ खतरे में' के नारे से पंजाबी सूबा, वैसे ही अब ईसाइयत खतरे में के नारे से पृथक् ईसाइस्तान बनाने की दिशा में प्रयत्न चालू हैं।

नागालैंड की समस्या अभी हल नहीं हुई और मिजोलैंड के विद्रोहियों ने अभी तक पूरी तरह हथियार नहीं डाले हैं कि अब सन्थाल लैंड की मांग भी की जाने लगी है। नागालैंड मिजोलैंड और संथालसैंड उस विशाल ईसाइस्तान के छोटे भूभाग मात्र हैं जिसके बनाने की दिशा में अब समस्त ईसाई जगत् सचेष्ट है। जिस अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति ने और भारतीय राजनीतिज्ञों की अदूरदर्शिता ने भारत को विदेशों के द्वार पर भिखारी बनाकर खड़ा कर दिया है वही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और अदूरदर्शिता इस समय ईसाइयत के प्रचार में सबसे बड़ी सहायक है।

पहले अनेक देशी रियासतों में किसी विदेशी ईसाई पादरी के घुसने पर प्रतिबन्ध था। यदि कोई ईसाई मिशनरी छल-बल से किसी रियासत में घुस जाता तो उसे हन्टरों से मार-मार कर वहा से निकाल दिया जाता था। परन्तु यह बात तो आजादी से और रियासतों के विलीनीकरण से पहले की है। जब से स्वराज्य प्राप्त हुआ है और रियासतों का भारतीय संघ में विलय हुआ है तब से ईसाई पादरी उन रियासतों में, जिनमें आदिवासी जातियां अधिक संख्या में रहती हैं भूखे भेड़ियों की तरह टूट पड़े हैं। ऐसी रियासतों के उदाहरण के रूप में सरगुजा और बस्तर का नाम लिया जा सकता है। यहा के राजाओं ने हरचन्द यह कोशिश की थी कि कोई ईसाई पादरी उनकी रियासत में न जाने पाए, परन्तु धर्मनिरपेक्षता का दम्भ करने वाली आधुनिक भारत सरकार के शासन में वे रियासतें भी ईसाई पादरियों की शिकारगाह बन गई हैं।

इन ईसाई पादरियो को विदेशों से प्रभूत धन, कुमुक और अनाज मिलता है और वे उस सबका प्रयोग गरीब, अशिक्षित, भोलेभाले लोगों को ईसाई बनाने मे ही करतेहैं। अमेरिका से आने वाले दुग्ध चूर्ण और विटामिन की गोलियों और वैटिकन पोप से उपहार स्वरूप प्राप्त होने वाले अनाज का यही उपयोग होता है। अशिक्षित ग्रामीणों में जो भी ईसाइयत को स्वीकार कर लेता है उसको ये चीजें मुफ्त मिल जाती हैं। रोम के पोप ने अनाज के वितरण के लिए ट्रक भी साथ ही भेजे हैं। पादरी लोग देहात में प्रचार करते हैं कि हिन्दू धर्म केवल अमीरों के लिए हैं, जहा अनाज राशन से और एक ६० किलो के भाव से मिलता है। गरीबों को पालने मे केवल ईसाइयत ही समर्थ है जो मुफ्त मे उन्हें राशन तथा अन्य सामान मुहय्या करती है, इसलिए दुनियाभर के सब गरीबों को ईसाई बन जाना चाहिये।

ईसाई लोग प्रचार करते हैं कि सारी मानव जाति दो भागों में विभक्त है—संसारी और समाजी। संसारी वे हैं जो गैर-ईसाई हैं। इन पर ईसामसीह का ऐसा कोप बरसता है कि ऐसे ग्रामीण ससारियों के खेत बैल आदि सारे समान महाजनों के हत्थे चढ़ जाते हैं, कर्जे के बोझ से वे बुरी तरह लद जाते हैं, मद्य-निषेध के प्रचार के कारण उन्हें शराब पीने को नहीं मिलती और अन्त में परिवार नियोजन के नारे के कारण नस बन्दी कराके उन्हें सन्तान सुख से भी वञ्चित होना पड़ता है। परन्तु ईसाई बनते ही ये सब बन्धन कट जाते हैं, न कर्जा रहता है, न शराब पीने पर पाबन्दी और न परिवार नियोजन या नसबन्दी का खतरा। अशिक्षित आदिवासियों द्वारा इस प्रकार के प्रचार का शिकार हो जाना अस्वाभाविक नहीं है।

अभी पिछले दिनों अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह के सम्बन्ध में, ईसाइयों और मुसलमानों के साजिश भरे हथकण्डों की बात प्रकाश में आई है। निकोबार द्वीपों में व्यापार में परिवहन में, उद्योगों में और रोजगार में एकाधिकार स्थापित करने वाली आकोजी कम्पनी ने जिसके सब कर्मचारी मुसलमान हैं और जिसका संचालक भी गुजराती मुसलमान है और ईसाई पादरियों ने मिलकर इस प्रदेश को भारत सरकार से 'ट्राइबल रिस्ट्रिक्टेड एरिया' (वर्जित आदिवासी प्रदेश) घोषित करा रखा है। इस नियमके रहते वहां किसी भी भारतीय का प्रवेश निषिद्ध है। आकोजी कम्पनी और वहां के बिशप निकोबार द्वीप समूह के उन्तीस द्वीपों को भारत से अलग करने की धुन में लगे हुए हैं। ये लोग ऊपर से भारत सरकार के बड़े खैरख्वाह हैं किन्तु अन्दर ही अन्दर भारतीयता की जड़ पर कुठाराघात करने में लगे हुए हैं। क्या जब तक इस द्वीप-समूह के समस्त निवासी ईसाई या मुसलमान नहीं बन जाएं वे तबतक वहां अन्य भारतीयों का प्रवेश वर्जित ही रहेगा?

ईसाइयों की स्पष्ट योजना यह है कि अण्डमान-निकोबार द्वीप-समूह से लेकर असम के मिजो और नागा प्रदेश, बिहार के छोटा नागपुर, उड़ीसा के सम्बलपुर और कालाहांडी मध्य-प्रदेश के छत्तीस गढ़, बस्तर और सरगुजा, आन्ध्रप्रदेश के सिमारेणी और बल्हारशाह तथा मैसूर के बेल्लारी तक के प्रदेश को मिलाकर एक पृथक् ईसाइस्तान बनाया जाए। भारत के बीचों-बीच सैकड़ों मील लम्बी यह पट्टी ऐसा भू-भाग है जिसमें खनिज पदार्थों, लोहे और कोयले की खानों तथा प्राकृतिक सम्पदा का अक्षय भण्डार है। और दुर्भाग्य की बात यह है कि इस समस्त भूभाग में रहने वाले लोगों में ईसाइयत का काफी प्रचार है। गोंड, भील, कोल, संथाल उरांव आदि जंगली जातियां इस भू-भाग में रहती हैं।

अपनी उक्त दुरभिसंधिपूर्ण योजना की पूर्ति के लिए ही ईसाइयों ने 'ईसाइयत खतरे में' का नारा लगाया है। इसी नारे के द्वारा वे भारत सरकार, भारतीयता और हिन्दू धर्म के विरुद्ध जोर-शोर से आन्दोलन करने में जुटे हुए हैं।

खतरे मे ईसाइयत नहीं, बल्कि भारत और भारतीयता है। प्रत्येक भारतवासी को इस खतरे को पहचानना है। भारत सरकार की तरह अगर देश की जनता भी आंखों पर पट्टी बांधकर इस खतरे को अनदेखा कर देगी तो वह देश के सर्वनाश को निमन्त्रण देगी। समय रहते सावधान होना ही इस समय एकमात्र कर्त्तव्य है। सरकार भले ही सोवे, जनता तो न सोवे।

सामयिक-चर्चा

योग को विकृत न होने दिया जाय

पिछले दिनों समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ था कि श्रीयुत राव नामक एक हठयोगी के पानी पर चलने के चमत्कार के प्रदर्शन का आयोजन किया गया था और उसका बहुत ढोल पीटा गया था परन्तु वह असफल रहा। प्रवेश टिकटों द्वारा था। उत्सुक जनता ने सैकड़ों रुपयों के टिकिट क्रय किए थे। इस असफलता से जहां आयोजक लांछित हुए वहां योग भी तिरस्कृत हुआ।

योग बड़ी उच्च एवं प्रशस्त साधना है जो मनुष्य के शारीरिक और आध्यात्मिक विकास की साधिका है। इसे प्रदर्शन की वस्तु बनाना हेय और योग की वास्तविक भावना के विरुद्ध है, बड़े २ योगी हो गए हैं और अब भी हैं परन्तु उन्होंने योग जनित शक्तियों को प्रदर्शन की वस्तु न बनाया और न बनने दिया। हठयोग की सिद्धियां योगी की साधना में विघ्न कारिणी और बहुधा शारीरिक विकृतिक्षय और मृत्यु में भी परिणत होती देखी और सुनी गई हैं।

आजकल स्वदेश में मुख्यतः विदेश में योग की बड़ी चर्चा है और लोगों को इसकी ओर आकर्षण भी वृद्धिगत है। शौकीन एवं विलासी लोग तो इसे शरीर की सुडौलता सुघड़ता और कमनीयता बढ़ाने का साधन समझकर इसकी ओर आकृष्ट होते हैं और भोगवाद से सन्तप्त जन इसे शान्ति का साधक मानकर इसकी ओर प्रेरित होते हैं। परन्तु सच्चे योगी की दृष्टि में ये वाह्य चीजें नगण्य होती हैं। उसकी दृष्टि में योग का अर्थ होता है—चरित्र का निर्माण, कर्म में कुशलता, इच्छा शक्ति का संयम, व्यक्ति का विकास और प्रभु के साक्षात्कार की योग्यता की उपलब्धि, चमत्कारों व तमाशों से उसका कोई सरोकार नहीं होता।

कहा जाता है कि नास्तिकता और भोगवाद के इस युग में यदि इस प्रकार के प्रदर्शनों का आश्रय लिया जाकर अध्यात्म प्रक्रियाओं के प्रति आस्था उत्पन्न की जाय तो इसमें हर्ज ही क्या है! इसका उत्तर बम्बई में आयोजित उपर्युक्त प्रदर्शन की असफलता में निहित है? योग की सबसे ऊंची स्थिति चरित्र के चरम विकास और जनता की निष्काम सेवा और हित साधना में परिलक्षित होती है जो तप, त्याग और सत्य की पूजा से उपलब्ध होती है। इस प्रकार के कर्म योगी की वाणी से निकला हुआ एक ही शब्द लाखों लोगों को हिला देता है।

स्वदेशी भावना

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने एक बार पुनः देश वासियो को 'स्वदेशी' भावना अपनाने का आवाहन किया है। वारंगल की एक विराट सभा में भाषण देते हुए उन्होंने कहा कि स्वदेशी आन्दोलन के कारण ही भारत ने राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त की थी। इसी के माध्यम से भारत आर्थिक स्वतंत्रता की प्राप्ति कर सकेगा। परन्तु वे यह बताना भूल गईं कि राजनैतिकस्वतंत्रता के आंदोलन मे जनता का लक्ष्य एक ही था उसकी निष्ठा अनुपम थी और त्याग एवं उत्साह अपरिमित था, और सबसे बढ़कर उसे महर्षि दयानन्द एवं महात्मा गांधी का नेतृत्व प्राप्त था जिन्होंने देश में अपनी कथनी से नहीं अपितु करनी से नैतिकता का वातावरण व्याप्त कर दिया था। आज हमारे राजनैतिक नेता तोता रटत की भांति नारो पर निर्भर हैं। वे इस बात की उपेक्षा करते प्रतीत होते हैं कि भाषण से कुछ बनता बनाता नहीं जब तक की अमल न हो।

महात्मा गांधी ने राजनैतिक सग्राम के दिनों में स्वराज्य के आदर्श की व्याख्या करते हुए लिखा था—

"मेरे लिए स्वराज्य का अर्थ है क्षुद्र से क्षुद्र देश वासी के लिए स्वतंत्रता की प्राप्ति। एक मात्र अंग्रेजी जुए से मुक्ति में मेरी दिल चस्पी नहीं है। मैं तो भारत को प्रत्येक जुए से मुक्त कराने के लिए यत्नशील हूं।

मेरी यह कदापि इच्छा नहीं है कि एक राजा के स्थान में दूसरा राजा सिंहासनारूढ़ हो जाय। 'स्वराज्य' शब्द है जिसका अर्थ है स्वशासन, आत्मनियन्त्रण। इसका अर्थ नियन्त्रण से मुक्ति नहीं है जैसा कि स्वतत्रता का प्रायः अर्थ किया जाता है।"

आज जनता मे ही नहीं अपितु नेताओं में भी स्वदेशी भावना की व्याप्ति की आवश्यकता है। आर्थिक स्वतत्रता के युद्ध मे ऐसे नियमों से काम न चलेगा जो प्रजा और नेताओं के लिए भिन्न २ हों।

चीन में मुसलमानों की दुर्गति

बर्लिन का २७ जून (ना) का समाचार है कि—

चीन में वर्तमान शासन के खिलाफ किसी भी कारंवाई को कुचलने के उद्देश्य से एक नया अभियान शुरू किया गया है। इस तरह की खबरें फैली हुई है कि यह अभियान चीन के मुसलमानों के विरुद्ध शुरू किया है। विभिन्न सूत्रो से पूर्वी बर्लिन पहुंच रही खबरों के अनुसार पेकिंग सरकार ने तमाम मस्जिदों और धार्मिक स्कूलों को बंद कर देने का हुक्म जारी कर दिया है। अरबी भाषा के पढ़ाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है और कुरान की प्रतियां जब्त कर ली गयी है।

चीन में दो करोड़ मुसलमान हैं। यह सर्वविदित है कि चीन मे जब से कम्युनिस्टोंने शासन संभाला है तब से मुसलमान समुदाय के विभिन्न भागों में तीन बार विद्रोह हो चुके हैं।

इस तरह का पहला विद्रोह १९५२ में हुआ था। दो अन्य विद्रोह सीमावर्ती क्षेत्र बाह्य मंगोलिया में हुए थे। अंतिम विद्रोह सिंकियांग में हुआ था। सिंकियांग बाह्य मंगोलिया सोवियत रूस, कश्मीर और तिब्बत के सीमावर्ती इलाके में अवस्थित है। यह चीन का सबसे बड़ा राज्य है। यहां की आबादी ७० लाख के करीब है। इनमें ३० लाख वे हान चीनी भी शामिल हैं जिनको बाद में चीनी अधिकारियों ने यहां बसा दिया था।

चीन में मुसलमानों को बहुत कम महत्व दिया जाता है। अधिकांश मुसलमान सोवियत रूस और बाह्य मगोलिया के साथ लगने वाले सीमावर्ती क्षेत्रों में ४००० मील के दायरे में बसे हुए हैं। जहां-जहां मुसलमान बसे हुए हैं वे स्थान सामरिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है इसके साथ ही वहां पर खनिजों का अपार भंडार है।

एक समय था जब कि मुसलमान पेकिंग, शंघाई और अन्य बड़े-बड़े नगरों में बसे हुए थे। पेकिंग में २६ मस्जिदे थीं। अब वे बन्द कर दी गयीं हैं।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

★

वेद व्यास विद्यापीठ ततारपुर (हापुड़)

दिनांक १-७-६६ को मैं सायंकाल दिल्ली से हापुड़ पहुंचा और वहां से ४ मील दूर जाकर जहां वेद व्यास विद्य पीठ की स्थापना हो चुकी है गया और पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी महाराज के दर्शन किए।

यह विद्यापीठ हापुड़ से गढ़मुक्तेश्वर जाने वाली सड़क पर स्थित है। स्थान बड़ा रमणीक है। अभी आश्रम का एक कक्ष पक्का बनकर तय्यार हो गया है और ३ बड़े कमरों का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। उनके बन जाने पर विद्यार्थियों के रहने का समुचित प्रबन्ध हो जायगा। इस समय आश्रम में ८ विद्याऽध्ययन कर रहे हैं। स्थान बन जाने पर और अधिक विद्यार्थी भी प्रवेश कर सकेंगे।

स्वामी मुनीश्वरानन्द जी की इच्छा है कि इस व्यास विद्यापीठ में आर्य समाज के प्रचार के लिए विद्वान तय्यार किए जायें।

मुझे आशा है कि स्वामी जी की देख-रेख में यह आश्रम आर्य समाज की भावी पीढ़ी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

रामगोपाल शाल वाले
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

उत्सव

आर्यसमाज नकुड़ा (शाहजहांपुर) का ३४ वां वार्षिक उत्सव बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ। श्री आर्यभिक्षु जी वानप्रस्थी श्री पं० सत्यमित्र जी शास्त्री, श्री पं० सत्यदेव जी शास्त्री आदि के महत्वपूर्ण भाषण हुए।

कला-कौशल (टैक्नीकल) और वैदिकसाहित्य का महान् भंडार

इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक १५)
इलै० गाइड पृ० ८००हि इ गु १२)
इलैक्ट्रिक वायरिंग ६)
मोटरकार वायरिंग ६)
इलैक्ट्रिक बैट्रीज ४)५०
इलैक्ट्रिक लाइटिंग ८)२५
इलै० सुपरवाइजर परीक्षा पेपज १२)
सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर ८)५०
इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपज २ भाग १६)५०
आयल व गैस इंजन गाइड १५)
आयल इंजन गाइड ८)२५
क्रूड आयल इंजन गाइड ६)
वायरलैस रेडियो गाइड ८)२५
रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक) ८)२५
घरेलू बिजली रेडियो मास्टर ४)५०
इलैक्ट्रिक मीटज ८)२५
टांका लगाने का ज्ञान ४)५०
छोटे डायनमो इलैक्ट्रिक मोटर ४)५०
आर्मेचरवाइंडिंग (AC DC) ८)२५
रैफरीजरेटर गाइड ८)२५
वृहत रेडियो विज्ञान १५)
ट्रासफार्मर गाइड ६)
इलैक्ट्रिक मोटस ८)२५
रेलवे ट्रेन लाइटिंग ६)
इलैक्ट्रिक सुपरवाइजरी शिक्षा ६)
इलैक्ट्रिक वैल्डिंग ६)
रेडियो शब्द कोष ३)
ए० सी० जनरेटस ८)२५
इलैक्ट्रिक मोटस आल्टरनेटर्स १६)५०
आमचर वाइन्डिंग गाइड १५)
इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १९५६ १)५०

स्माल स्केल इंडस्ट्रीज (हिन्दी) १४)
स्माल स्केल इंडस्ट्रीज (इंगलिश) १४)
खराद शिक्षा (टर्नर गाइड) ४)५०
वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग) ४)५०
खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
भवन निर्माण कला १२)
रेडियो मास्टर ४)५०
विश्वकर्मा प्रकाश ७)५०
सर्वे इंजीनियरिंग बुक १२)
इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग १२)
फाउन्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई) ८)२५
इलैक्ट्रोप्लेटिंग ६)
वीविंग गाइड ४)५०
हैंडलूम गाइड १५)
फिटिंगशाप प्रैक्टिस ७)५०
पावरलूम गाइड ५)२५
ट्यूबवैल गाइड ३)७५
लोकास्ट हाउसिंग टैक्निक ५)२५
जन्त्री पैमायश जमीन २)
लोकोशैड फिटर गाइड १५)
मोटर मैकेनिक टीचर ८)२५
मोटर मैकेनिक टीचर गुरुमुखी ८)२५
मोटर ड्राइविंग हिन्दी व गुरुमुखी ६)
मोटरकार इन्स्ट्रक्टर १५)
मोटर साइकिल गाइड ४)५०
खेती और ट्रैक्टर ८)२५
जनरल मैकेनिक गाइड १२)
आटोमोबाइल इंजीनियरिंग १)
मोटरकार ओवरहालिंग ८)
प्लम्बिंग और सैनीटेशन ६)
सर्किट डायग्राम्स आफ रेडियो ७)७५

फर्नीचर बुक १२)
फर्नीचर डिजायन बुक १२)
वर्कशाप प्रैक्टिस १२)
स्टीम ब्वायलर्स और इंजन ८)२५
स्टीम इंजीनियर्स गाइड १२)
आइस प्लांट (बर्फ मशीन) ४)५०
सीमेंट की जालियों के डिजाइन ६)
कारपेंट्री मास्टर ६)७५
बिजली मास्टर ४)५०
ट्रांजिस्टर डाटा सर्किट १०)५०
गैस वैल्डिंग ६)
ब्लैकस्मिथी (लोहार) ४)५०
हैंडबुक आफ बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन २४)५०
हैंडबुक स्टीम इन्जीनियर २०)२५
मोटरकार इन्जीनियर ८)२५
मोटरकार इन्जन (पावर यूनिट) ८)२५
मोटरकार सर्विसिंग ८)२५
कम्पलीट मोटर ट्रेनिंग मैनुअल २४)७५
कारपेंट्री मैनुअल ४,५०
मोटर प्रश्नोत्तर ८)
स्कूटर आटो साइकिल गाइड ८)५०
मशीनशाप प्रैक्टिस १५)
आयरन फर्नीचर १२)
मारबल चिप्स के डिजाइन १६)५०
मिस्त्री डिजाइन बुक ३६)५०
फाउन्ड्री वर्क-धातुओं की ढलाई ४)५०
ट्रांजिस्टर रेडियो ४)५०
आधुनिक टिपिकल मोटर गाइड ८,५०
नक्काशी आर्ट शिक्षा ६)
बढ़ई का काम ८)
राजगिरी शिक्षा ८)

सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो ७)५०
विशद ट्रांजिस्टर गाइड २३)५०
मशीनिस्ट गाइड १६)५०
आल्टरनेटिंग करैन्ट १६)५०
इलै० लाइनमैन वायरमैन गाइड १६)५०
रेडियो फिजिक्स २५)५०
फिटर मैकेनिक ६)
मशीन वुड वर्किंग ६)
लेथ वर्क ६)७५
मिलिंग मशीन ८)२५
मशीन शाप ट्रेनिंग १०)
एअर कन्डीशनिंग गाइड १५)
सिनेमा मशीन आपरेटर १२)
स्प्रे पेंटिंग १२)
पोटीज गाइड ४)५०
ट्रांजिस्टर रिसीवर्स ६)७५
लाकल ट्रांजिस्टर रिसीवर ८)२५
प्रैक्टीकल ट्रांजिस्टर सरकिट्स ७)५०
बैंच वर्क एण्ड ड्राइफिटर ८)२५
माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुअल ८)२५
खराद आपरेटर गाइड ८)२५
रिसर्च आफ टायलेट सोप्स १५)
आयल इंडस्ट्री १०)५०
शीट मैटल वर्क ८)२५
कैरिज एण्ड वैगन गाइड ८)२५
इलैक्ट्रिक फिजिक्स २५)५०
इलैक्ट्रिक टैक्नोलोजी २५)५०
रेडियो पाकिट बुक ६)
डिजाइन सेट शिल्प कारी ६)
कैमीकल इण्डस्ट्रीज २५)५०
डीजल इन्जन गाइड १५)

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज पर छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई, क्लाथ बाइंडिंग-मूल्य १५) एक साथ पांच प्रति मंगाने पर ५०) रु० में दी जायगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१ सांख्य दर्शन मूल्य २)
२ न्याय दर्शन मू० ४)
३ वैशेषिक दर्शन मू० ३।।)
४ योग दर्शन मू० ६)
५ वेदान्त दर्शन मू० ५।।)
६ मीमांसा दर्शन मू० ६)

सामवेद

मूलमन्त्र और आर्य भाषानुवाद सहित
श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार ४००० पुस्तक हाथों हाथ बिक गई थी। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है। मूल्य ४)

वैदिक-मनुस्मृति मूल्य ४।।)

बृहत् दृष्टान्त सागर

सम्पूर्ण पांचों भाग
पृष्ठ संख्या ८६८
सजिल्द मूल्य केवल १०।।)

उपदेश मंजरी मूल्य २।।)
संस्कार विधि मूल्य १।।)
आर्य समाज के नेता मूल्य ३)
महर्षि दयानन्द मूल्य ३)
कथा पच्चीसी मूल्य १।।)
उपनिषद् प्रकाश मू० ६)
हितोपदेश भाषा मू० ३)
सत्यार्थप्रकाश २)५०
[छोटे अक्षरों में]

अन्य आर्य साहित्य

१ विद्यार्थी शिष्टाचार १।।)
२ पंचतन्त्र ३।।)
३ आग ए मानव १)
४ कौटिल्य अर्थशास्त्र १०)
५ चाणक्य नीति १)
६ भर्तृहरि शतक १।।)
७ कर्तव्य दर्पण १।।)
८ वैदिक संध्या ४) सै०
९ हवन मन्त्र १०) सै०
१० वैदिक सत्संग गुटका १५) सै०
११ ऋग्वेद ७ जिल्दों में ५६)
१२ यजुर्वेद २ जिल्दों में १६)
१३ सामवेद १ जिल्द में ८)
१४ अथर्ववेद ४ जिल्दों में ३२)
१५ वाल्मीकि रामायण १२)
१६ महाभारत भाषा १२)
१७ हनुमान जीवन चरित्र ४।)
१८ आर्य संगीत रामायण ५)

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद कृषि बिजली मोटर पशुपालन, टैक्नीकल डरीफार्म रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१६१

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली १ में प्रकाशित

प्रबस प्रातपूवक यथानुसार यथावा ...

ओ३म

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख पत्र

दयानन्द भवन नई दिल्ली–१ फोन २७४७७१ श्रावण शुक्ला २ सम्वत् २०२३ २ जुलाई १९६६ वर्ष ... मुद्रित सम्वत १९७०९४९०१

जापान में वेद प्रचार, जापानी जनता की योग में रुचि

वेद—आज्ञा

अविद्या-अधर्म दूर हो

अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय। वाचं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनं स्वाहा॥

यजुर्वेद अ० ९। २७

—०—

संस्कृत भावार्थ—

ईश्वराऽभिवदति राजा स्वयं धार्मिको विद्वान् भूत्वा सर्वान् न्यायाधीशान् मनुष्यान् विद्याधर्मवर्धनाय सततं प्रेरयेद्, यतो विद्याधर्मवृद्ध्याऽविद्याऽधर्मौ निवृत्तौ स्याताम्॥

——

आर्य भाषा भावार्थः—

ईश्वर सबसे कहता है कि राजा आप धर्मात्मा विद्वान् होकर सब न्याय के करने वाले मनुष्यों को विद्या धर्म बढ़ाने के लिये निरन्तर प्रेरणा करे, जिससे विद्या धर्म की बढ़ती से अविद्या और अधर्म दूर हो॥

— महर्षि दयानन्द

जापानी भाषा में योगदर्शन मुद्रित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्मानित नेता श्रद्धेय श्री महात्मा आनन्दस्वामी जी का जापान से आर्य जनता को सन्देश

ओ३म्

सिंगापुर
१ ७ ६६

मेरे प्यारे श्री रामगोपाल जी

सप्रेम नमस्ते!

मेरे हाथ में कम्पन है सख बड़ी कठिनाई से लिखा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से समुद्र पार के नौ देशों में वेद प्रचार का कार्य कर चुका हूँ अभी एक १॥ मास और लगेगा। जहां २ हो आया हूं। वहां के लोग पुन बुला रहे हैं। अब ५ जुलाई को मलेशिया जा रहा हूं, उधर के नगरों में तीन सप्ताह सेवा करनी होगी–इतने लम्बे भ्रमण में किसी समाज या संस्था पर कोई बोझ नहीं डाला गया। अभी मै

हांगकांग तथा जापान में १७ दिन लगा कर वेद की बात सुनाकर आया हूं। ओसाका (जापान) यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर टी॰ साहोदा T Sahoda de litt के द्वारा योगदर्शन का जापानी अनुवाद प्रकाशित हुआ है इनके योगाश्रम Kyoto में जाकर जापानी स्त्री पुरुषों को मैने प्राणायाम सिखाया और इन्हे बतलाया कि योग का आदि स्रोत वेद है उन्हे वेद-मन्त्र भी सुनाये तो उन्हे बड़ा आश्चर्य हुआ। योग विद्या के द्वारा जापानियों को वेद प्रेमी बनाया जा सकता है। इसी प्रकार न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया पहुंच कर वहां के योग प्रेमियों को मैंने साधना कराई तो वह बड़े प्रभावित हुए। वहां Yoga Institute of Newzealand मे १५ योरोपियन थे। उन्हे भी प्राणायाम तथा ध्यान विधि सिखलाई न्यूजीलैंड से एक योरोपियन Mr John Korbel मुझे आस्ट्रेलिया ले आये वहां भी साधना कराई और इन्हें बतलाया कि योग का स्रोत वेद है। योरोपियन को भी वेद के निकट लाने के लिये योग एक बड़ा अच्छा साधन है। —आनन्द स्वामी सरस्वती

शरीर और आत्मा

जो केवल आत्मा का बल अर्थात विद्या ज्ञान बढ़ाये जाय और शरीर का बल न बढ़ावे तो एक ही बलवान पुरुष सैंकड़ो ज्ञानी और विद्वानों को जीत सकता है। और जो केवल शरीर ही का बल बढ़ाया जाय आत्मा का नहीं तो भी राज्य पालन की उत्तम व्यवस्था बिना विद्या के कभी नहीं हो सकती। बिना व्यवस्था के सब आपस में ही फूट टूट विरोध लड़ाई झगड़ा करके नष्ट भ्रष्ट हो जाय। इसलिये सर्वदा शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाते रहना चाहिये।

जैसा बल और बुद्धि का नाशक व्यवहार व्यभिचार और अति विषयासक्ति है वैसा और कोई नहीं है। विशेषतः क्षत्रियों को दृढ़ाङ्ग और बलयुक्त होना चाहिये। क्योंकि जब वे ही विषयासक्त होंगे तो राज्यधर्म ही नष्ट हो जायगा।

यथा राजा तथा प्रजा

इस पर भी ध्यान रखना चाहिये कि यथा राजा तथा प्रजा जैसा राजा होता है वैसी ही उसकी प्रजा होती है। इसलिये राजा और राजपुरुषों को अति उचित है कि कभी दुष्टाचार न करें किन्तु सब दिन धर्म और न्याय में वर्त कर सबके सुधार का दृष्टान्त बनें।

—महर्षि दयानन्द

वार्षिक ७) विदेश १ पौंड एक प्रति १२ पैसे

अग्ने बहु कुर्वीत

सम्पादक—रामगोपाल शालवाले सभा मन्त्री
सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

ब्रह्मैव लोकास्तिष्ठान्त

वर्ष १
अंक २३

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

—आर्यसमाज का तीसरा नियम

वेद सप्ताह श्रावणी पर्व पर—लगातार सात दिन, आर्य जन वेद कथा, वेद श्रवण और वेद प्रचार का व्रत लें।

(दिनांक द्वितीय श्रावण शुक्ला १५, ता० ३० अगस्त से ६ सितम्बर तक)

वेद सप्ताह के पुनीत पर्व पर आर्य जगत् की शिरोमणि सभा

सार्वदेशिक साप्ताहिक का

—:(वेद कथा अंक):—

२० हजार की भारी संख्या में प्रकाशित किया जा रहा है

यह विशेषांक पुस्तक साइज के २५० पृष्ठों में होगा

बहुत बढ़िया कागज पर छपेगा। मोती-सी छपाई होगी।

इतने पर भी वेद कथा अंक का मूल्य नहीं—भेंट-मात्र

६० पैसा होगा।

स्थायी ग्राहक महोदय कृपया ध्यान दें

सात रुपया भेजकर आप ग्राहक बने है। आपको एक प्रति तो भेजेंगे ही किन्तु—

इस वेद कथा अंक

की कुछ प्रतियां अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार मंगाकर अपने मित्रो को भेंट स्वरूप प्रदान करें।

आर्य समाज-परिचयांक

कब प्रकाशित होगा

अभी तक हमारे पास लगभग ७०० आर्य संस्थाओं का वर्णन मन्त्रियो के चित्र और धन आ चुका है। इस अंक में हम आर्य जगत् का पूरा दिग्दर्शन कराना चाहते हैं यह तभी होगा जब सभी आर्य संस्थायें अपनी सामग्री भेज दें। हमारी हार्दिक इच्छा यह है कि चाहे देर हो जाय किन्तु होना चाहिये सर्वांग सम्पन्न। एक बार फिर हम सारे देश और विदेश की आर्य संस्थाओं को पत्र भेज रहे हैं। फिर उनके उत्तर की प्रतीक्षा के पश्चात प्रकाशित करेंगे। आशा है आप भी इसे पसन्द करेंगे। —प्रबन्धक

(१) आप चाहे १ प्रति लें, १० लें, २५ लें, ५० लें, १०० लें अथवा हजार ले, सब एक ही भाव, ६० पैसे मे प्राप्त करेंगे। किसी को कम या अधिक मे नहीं।

(२) आप अपनी शक्ति से भी अधिक इस वेद कथा अंक को मंगावें।

(३) धन पहले नहीं —बाद मे।

(४) जब आपके पास अंक पहुँचे, उससे १ सप्ताह तक अर्थात् वेद सप्ताह समाप्त होते ही मनीआर्डर से धन भेजें।

(५) अब प्रार्थना यह है कि आप भारी से भारी संख्या में आज ही आर्डर भेज दें। कहीं ऐसा न हो कि आप देर में आर्डर भेजे। फिर बलिदान अंक और बोधांक की तरह निराश हों।

वेद कथा विशेषांक में क्या होगा—इस पर ध्यान दें

ऋग्वेद के अनेक महत्वपूर्ण सूक्त और उन पर महर्षि दयानन्द भाष्य

यजुर्वेद के अनेक महत्वपूर्ण अध्याय और उनपर महर्षि दयानन्द भाष्य

सामवेद के अनेक महत्वपूर्ण मंत्र और पं० तुलसीराम स्वामी भाष्य

अथर्ववेद के अनेक महत्वपूर्ण सूक्त और पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी भाष्य

चारों वेदों के प्रथम और अन्तिम मन्त्र और उन पर महर्षि दयानन्द, पं० तुलसीराम स्वामी एवं पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी कृत भाष्य

एक विशेष ध्यान देने योग्य

भारत भर मे लगभग ५००० ऐसे महानुभाव हैं—जो राज सभा विधान सभा, लोक सभा के सदस्य और मन्त्रीगण हैं। वेद के पुण्य पर्व पर प्रसाद के रूप में

वेद कथा अंक

को आर्य जन अपनी ओर से इन्हें भेंट करने के लिए हमे आज्ञा दें। ५ हजार अंक तीन हजार रुपये के होंगे। यह पुण्य कार्य—

—एक ही आर्य कर सकता है।

— तीस आर्य कर सकते हैं।

एक सौ आर्य कर सकते हैं।

विचार करें और आज ही उदारतापूर्वक उत्तर दें। जो दानी महानुभाव इस कार्य मे अपना सहयोग देंगे, सार्वदेशिक में उनके प्रति आभार प्रदर्शन करेंगे।

बिना मूल्य

सात रुपया वार्षिक चन्दा भेज कर वेद कथा विशेषांक बिना मूल्य प्राप्त करें। —प्रबन्धक

आज ही अपना आदेश भेजें— सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

रामगोपाल शालवाले
मन्त्री

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

समस्या हल नहीं हुई

हम सदा पंजाबी सूबे की मांग को साम्प्रदायिकता की उपज बताते रहे हैं। हमारी आज भी यही धारणा है। आर्य समाज ने अपनी ओर से इस मांग का विरोध करने के लिये भरसक आन्दोलन भी किया, किन्तु तब सरकार ने यह घोषणा करके जनता को आश्वस्त करने का प्रयत्न किया कि पंजाबी सूबा केवल भाषा के आधार पर बनाया जा रहा है, किसी धर्म या सम्प्रदाय के आधार पर नहीं।

परन्तु हम पूछते हैं कि यदि धर्म के आधार पर विभाजन नहीं होना है तो आनन्दपुर साहब को पंजाबी सूबे में रखने की क्या तुक है? उस प्रदेश की अधिकांश जनता हिन्दी-भाषी है इसलिए आनन्दपुर साहब निश्चित रूप से हरियाणा में शामिल किया जाना चाहिये था। क्या सिक्खों का और कोई तीर्थ-स्थान पंजाबी सूबे के बाहर नहीं है? आनन्दपुर साहब के हरियाणा में शामिल कर दिये जाने पर यह तीर्थ-स्थान भारत के अन्दर ही रहता, भारत के बाहर तो नहीं जाता?

इसी प्रकार की असंगति पठानकोट के सम्बन्ध में भी है। पठानकोट हिमाचल का भी प्रवेश द्वार है और जम्मू कश्मीर का भी। ऐसे महत्वपूर्ण सामरिक स्थान को साम्प्रदायिक राजनीति से दिवान्ध लोगों की दया पर छोड़ देना दूरदर्शिता नहीं कही जा सकती। फिर पठानकोट की अस्सी फीसदी जनता हिन्दी भाषी है। यदि भाषा के आधार पर ही यह विभाजन होना था तो पठानकोट को किसी भी सूरत में पंजाबी सूबे में शामिल न करके हिमाचल या हरियाणा में शामिल करना चाहिये था।

इन असंगतियों के अलावा हम अपने पाठकों का ध्यान एक और धींगामुश्ती की ओर खींचना चाहते हैं। नए पंजाबी सूबे में पंजाबी भाषियों की संख्या ६७ प्रतिशत और हिन्दी-भाषियों की संख्या लगभग ३३ प्रतिशत रहेगी। राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट में यह सिद्धान्त तय किया गया था कि यदि किसी राज्य में किसी भाषा के बोलने वाले सत्तर प्रतिशत से अधिक हों तो वह एक भाषी राज्य बन सकता है, अन्यथा नहीं। अल्पसंख्यकों की आबादी तीस प्रतिशत हो तो वह राज्य एकभाषी न होकर द्विभाषी रहेगा। नए पंजाबी सूबे को वहां हिन्दी-भाषियों की संख्या तेंतीस प्रतिशत होने के कारण उसे एक-भाषी नहीं बनाया जा सकता। स्वयं सरकार संसद् मे दिये गये आश्वासनों की और संविधान में स्वीकृत सिद्धान्तों की अवहेलना नही कर सकती।

परन्तु सन्त फतहसिंह तो अपने आपको संविधान से और भारत सरकार से ऊपर समझते हैं। उन्होंने स्वयं श्रीमुख से घोषणा की है कि पंजाबी सूबे में कोई भाषायी अल्पसंख्यक वर्ग नहीं होगा, और न ही वहां पंजाबी के सिवाय किसी और भाषा को कोई स्थान दिया जायगा। यह सरासर सीनाजोरी है।

इसी से स्पष्ट है कि पंजाबी सूबे की अपनी मांग को भाषा की आड़ में बढ़ावा देने वालों का आन्दोलन कितना अवास्तविक और अयथार्थ था। नए पंजाबी सूबे में अल्पसंख्यक और उनकी भाषा अपने संविधान-प्रदत्त अधिकारों से वंचित न किए जाएं, इस बात का ध्यान रखना होगा। पंजाब के आर्य समाजियों और आर्य वीर दलों को अभी से जनता को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सचेत करने की तैयारी शुरु कर देनी चाहिए। नया पंजाबी सूबा भी द्विभाषी ही रह सकता है, एक-भाषी नहीं।

पंजाब में राष्ट्रपति का शासन

आखिर पंजाब मे राष्ट्रपति का शासन लागू हो गया। चिरकाल से उसकी मांग की जा रही थी किन्तु पंजाब का कांग्रेसी मन्त्रिमंडल अपनी गद्दी बनाए रखने के लिए इसका विरोध करता आ रहा था। आखिर मन्त्रिमण्डल को इस्तीफा देना पड़ा और फिर राष्ट्रपति की ओर से श्री धर्मवीर को—जो पहले दिल्ली के मुख्यायुक्त रह चुके हैं और अपनी ईमानदारी तथा कार्यकुशलता के लिए विख्यात हैं—वहां का राज्यपाल बना दिया गया। अब उन्हीं की अध्यक्षता में पंजाब का प्रशासन चल रहा है और उन्हीं के तत्वावधान में दो अक्तूबर से पहले पहले पंजाबी सूबे और हरियाणा की सम्पत्तियों का तथा कर्मचारियों का विभाजन किया जाएगा।

राष्ट्रपति का शासन लागू होने से पहले पंजाब भर में लाइसेंसों और परमिटों की धूम मच गई और हरेक मन्त्री ने अपने अपने कृपापात्र को अनुगृहीत करने का भरसक प्रयत्न किया। श्री धर्मवीर के कार्यभार संभालते ही सचिवालय मे जो सबसे मुख्य परिवर्तन आया वह यह कि फाइलें फटाफट निपटाई जाने लगीं, लालफीता शाही के कारण होने वाला विलम्ब समाप्त हो गया और मन्त्रियों की सिफारिश के द्वारा अपने अनुचित केसों को पूरा करवाने के इच्छुक दर्शनार्थियो की भीड़ एक दम बन्द हो गई। राष्ट्रपति शासन के लागू होने से ऐन पहले लाइसेंसों और परमिटों की जो धूम मच गई थी नए राज्यपाल ने उसी फाइल की जांच का भी आदेश दिया है।

श्री धर्मवीर की कार्यकुशलता की प्रशंसा करते हुए भी देश के अनेक समाचारपत्रों ने पंजाब में राष्ट्रपति का शासन लागू होने को 'लोकतन्त्र की हत्या' बताया है। ऐसे मनस्वियों से हमारा विनम्र मतभेद है। जहां तक आर्यसमाज का सम्बन्ध है, वह अपने जन्मकाल से ही लोकतन्त्र का प्रबल पक्षपाती रहा है। आर्यसमाज का सारा संगठन इस बात का साक्षी है। महर्षि दयानन्द द्वारा बारम्बार गुरुडम का विरोध करने के पीछे उनकी यही भावना काम कर रही थी। क्योंकि मनोविज्ञान की दृष्टि में गुरुडम और तानाशाही राजनैतिक अधिनायक वाद हैं, और गुरुडम आध्यात्मिक अधिनायकवाद है। अधिनायकवाद के खतरे दोनों जगह समान रूप से विद्यमान हैं।

परन्तु हम समझते हैं कि सरकार का काम प्रशासन करना है, राजनैतिक प्रणालियों की भूलभुलैंया मे पड़ना नहीं। जो सरकार अपनी जनता को चुस्त और निर्दोष प्रशासन नहीं दे सकती, वह चाहे लोकतन्त्रवादी सरकार हो, चाहे अधिनायकवादी—दोनों समान रूप से निन्दनीय हैं। जनता तो राजनैतिक शब्दावलि में उलझने के बजाय भ्रष्टाचार-शून्य और भाई-भतीजावाद-शून्य कुशल प्रशासन की अपेक्षा करती है। बीमार तो यह चाहता है कि जिस भी किसी तरह से हो, उसकी बीमारी जल्दी से जल्दी दूर होनी चाहिए। परन्तु यदि उस बीमार के हितैषी बीमारी का इलाज करने की बजाय, परस्पर इस विचार-विनिमय मे ही व्यर्थ समय गवाते रहें कि इलाज के लिए ऐलोपैथी अपनायी जाए या होम्योपैथी, आयुर्वेद का आश्रय लिया जाए या यूनानी चिकित्सा-पद्धति का, तो उन हितैषियों को हितैषी नही कहा जा सकता। इस समय देश जिस प्रकार भ्रष्टाचार, महंगाई अन्नाभाव और इन सबकी जड़ कुशासन के जुए के नीचे त्राहिमाम्-त्राहिमाम् कर रहा है, उस सबके प्रतीकार के लिए सुशासन ही एकमात्र उपाय है। स्वराज्य के समस्त वरदान केवल इसीलिए अभिशाप बनकर रह गए क्योंकि स्वराज्य के साथ सुराज्य नहीं आया।

पंजाबी सूबा और हरियाणा की मांग के पीछे और चाहे जो कारण रहे हों, किन्तु मुख्य कारण था राजनीतिज्ञों का न्यस्त स्वार्थ। जो राजनीतिज्ञम्मन्य लोग सम्मिलित पंजाब में विधायक या मंत्री नहीं बन सके या जबरदस्त भाग-दौड़ के बाद भी कोई लाइसेंस या परमिट प्राप्त करके अपनी स्वार्थ सिद्धि करने मे असमर्थ रहे, उन्होंने ही संकुचित साम्प्रदायिकता, भाषागत संकीर्णता या स्थानीयता के मोह के नाम पर अब अपना उल्लू सीधा करने का तरीका निकाला है। पंजाबी सूबे की मांग करने वालों के मन में जनहित की बात कभी भूलकर भी नहीं रही। वे तो सदा अपनी नेतागिरी राजनैतिक सत्ता-प्राप्ति और अर्थलाभ की बात ही सोचते रहे हैं। राजनीतिज्ञों की स्वार्थलिप्सा ही लोकतन्त्र का सबसे बड़ा अभिशाप है, यही इस समय देश में फैली अव्यवस्था का सबसे बड़ा कारण है।

जब पहले पंजाब मे राष्ट्रपति का शासन लागू हुआ था तब भी चोर-डाकू और तस्कर व्यापारी उस शासन से थर-थर कांपते थे क्योंकि तब स्वयं तस्कर व्यापार में लिप्त भ्रष्टाचारी मन्त्रियों का आशीर्वाद उन्हे प्राप्त नही हो सकता था। लोकतन्त्र के नाम पर चन्द व्यक्तियों को जनता को लूटने बेवकूफ बनाने और उसका शोषण करने के लिए खुली छूट दे देना कहा की बुद्धिमत्ता है? श्री धर्मवीर द्वारा शासन सूत्र संभालते ही पंजाब के प्रशासन मे जो क्षणिक परिवर्तन आया है, हम चाहते हैं कि वह परिवर्तन स्थायी हो हमारी तो यह भी कामना है कि यदि पंजाब मे राष्ट्रपति शासन का परीक्षण सफल सिद्ध हो तो देश के अन्य समस्याग्रस्त राज्यों में भी इसी परीक्षण को क्यों न अपनाया जाए।? भ्रष्टाचारी राजनीतिज्ञों के हाथों का खिलौना बनते-बनते जनता काफी ऊब चुकी है। जनता को सुशासन चाहिए। यदि सरकार वह नहीं दे सकती तो जनता की दृष्टि में सरकार का होना या न होना बराबर है।

पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की दुर्दशा

भारत सरकार ने पाकिस्तान से अल्प सख्यकों के निष्क्रमण की जांच-पड़ताल के लिये एक कमीशन की नियुक्ति की थी जिसकी रिपोर्ट भारत सरकार को प्राप्त हो गई है और उसका सारांश समाचार पत्रो मे छप चुका है। कमीशन जिन निष्कर्षों पर पहुचा है वे पाकिस्तानकी तद विषयक नीति वीभत्सता को पाठकों के समक्ष समुपस्थित करते हैं। विभाजन के समय पूर्वी पाकिस्तान मे लगभग १॥ करोड अल्प सख्यक थे। १९५८ तक लगभग ४० लाख व्यक्ति भारत में चले आये थे। तब से लाखों ही भारत में आ चुके हैं और १९६४ के प्रथम तीन महीनों मे कम से कम २ लाख अल्पसख्यक वर्ग के लोगों ने भारत मे आश्रय लिया था। तथ्य तो यह है कि बहिर्गमन कभी रुका नही और शरणार्थियों की लम्बी २ कतारों का पश्चिमी बगाल, आसाम और त्रिपुरा में प्रवेश जारी है। पाकिस्तान की राजनैतिक स्थिति के अनुसार कभी शरणार्थियों की संख्या कम हो जाती है और कभी डरावना रूप ग्रहण कर लेती है।

पाकिस्तान के सविधान मे हिन्दुओ तथा अन्य अल्प सख्यको के प्रति भेद-भाव की व्यवस्था विद्यमान हैं जिनसे वे दूसरे दर्जे के नागरिक रह जाते हैं। कमीशन के निष्कर्षों से इस बात की सम्पुष्टि हो जाती है कि वहां के अल्प-सख्यको की दशा बडी भयावह एव दयनीय है। वहां के अल्प सख्यक अपने को सदैव अरक्षित अनुभव करते हैं। उनकी जानो माल और इज्जत को खतरा उपस्थित रहता है। यही कारण है कि वे भारत आने के लिये उत्सुक रहते हैं। उन सबके मार्ग मे प्रवेश पत्रो की बाधा खडी हो जाती है जो भारत सरकार द्वारा परिमित सख्या मे दिये जाते हैं।

पूर्वी पाकिस्तान के लोगों का ध्यान घरेलू झगड़ों एव कठिनाइयो से हटाने के लिये साम्प्रदायिक भावनाओं को उत्तेजित करने और देश से यथा-सभव अधिक से अधिक हिन्दुओं को खदेड देने की पाकिस्तान की नीति रही है जिससे कि भारत की कठिनाइया बढें और वहां साम्प्रदायिक झगड़े हों जिन्हें बाद में भारत के विरुद्ध प्रचार करने में प्रयुक्त किया जा सके। पूर्वी पाकिस्तान में स्वशासन के लिए घोर आन्दोलन जारी है। इस को विफल करने के लिये ये ही हथकडे पुन अपनाये जा सकते हैं। कमीशन ने कहा है कि पूर्वी पाकिस्तान मे मुख्यत: पश्चिमी पाकिस्तान के मुसलमान साम्प्रदायिक दुर्भाव उत्पन्न करते हैं जिनका सेना और नागरिक शासन पर प्रभुत्व है। पूर्वी पाकिस्तान के अधिकाश मुसलमान अपने हिन्दू पड़ोसियों के साथ मेल मिलाप से रहना चाहते हैं। साम्प्रदायिक दगों मे मुसलमानो द्वारा अपने प्राणों को खतरे मे डालकर भी हिन्दुओं की रक्षा करने के उदाहरण मिले हैं। पाकिस्तान ने यह आक्षेप लगाया है कि पूर्वी पाकिस्तान का स्वशासन की माग का आदोलन भारत द्वारा प्रेरित है। यह आरोप अनर्गल एव निराधार है परन्तु आसाम से मुसलमान बलात भगाये जा रहे हैं यह कपोल कल्पित बात फैलाई जाकर साम्प्रदायिक भावनाओं को भडकाने का यत्न जारी है। परन्तु यह खेल बड़ा भयावह है। क्योकि निर्दोष लोगों के जान माल और इज्जत को राजनीति के दाव पर चढ़ाना मानवता के प्रति घोर पाप और अपराध है। जो पाकिस्तान के पतन का कारण बन सकता है।

सामयिक-चर्चा

आर्य समाज में मांस भक्षियों का कोई वर्ग नहीं

हिजहोलीनेस श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के प्राइवेट सेक्रेटरी श्री स्वर्ण सिंह स्नेही ने हमारा ध्यान टाइम्स आव् इंडिया में प्रकाशित एक लेख की ओर आकृष्ट करते हुए अपने पत्र मे लिखा है कि उस लेख मे लिखा है कि आर्यसमाज में मांस खोरों का एक ऐसा वर्ग है जो मांसाहार का प्रचार भी करता है। श्री स्नेही जी ने प्रकट किया है कि हिन्दुओं और सिखों के पवित्र ग्रन्थों मे मासाहार का निषेध है। फिर उस लेख के लेखक की बात सही क्योंकर माना जाय? हम श्री स्नेही जी के आभारी हैं कि उन्होंने एक आवश्यक प्रश्न की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया।

उक्त लेख की बात गलत और निराधार है। आर्य समाज मे ऐसा कोई वर्ग नहीं है जो मासाहार का प्रचारक हो। आर्यसमाज मांसाहारके नितान्त विरुद्ध है और इसके विरुद्ध प्रचार भी करता है। इतना ही नहीं आर्यसमाजके सदस्योंके लिये मांसाहार का निषेध सदाचार का अग निर्धारित किया हुआ है। हो सकता है कोई सदस्य अपनी दुर्बलतावश मांसाहार करता हो परन्तु वह भी इसका प्रचार न कर सकता है और न करता है। टाइम्स आव् इण्डिया के लेख को देख कर उसका विस्तृत उत्तर देने का यत्न किया जायगा।

असन्तोष व्याप्त है

अमृत बाजार पत्रिका (कलकत्ता) के सम्वाददाता के अनुसार चाइबासा जिले मे विदेशी ईसाई मिशनरी बड़े सक्रिय हैं और वे अकाल की परिस्थिति से लाभ उठा कर जिले के भीतरी क्षेत्रों में आदिवासी एव हरिजन कहे जाने वाले निर्धन एव अपढ़ लोगो को धड़ाधड़ ईसाई बना रहे हैं। इसके कारण जिले भर में असन्तोष व्याप्त हो रहा है।

गत २६ अप्रैल को एक प्रेस सम्मेलन मे डिपुटी कमिश्नर महोदय के ध्यान में यह बात लाई गई थी। उन्होने बताया कि ब्लाक डेवीलपमेन्ट के अफसरों को सचेत कर दिया गया है और अन्न भी भेज दिया गया है। जिससे कि आदिवासी जन इस कुचक्र के शिकार बनने से बच जाय।

प्रेस सम्मेलन में यह भी शिकायत की गई थी कि ईसाई पादरी ऐसे फिल्म भी दिखाते हैं जिनमें हिन्दू धर्म का अपमान किया जाता है। डिपुटी कमिश्नर महोदय ने कहा कि सुपरिन्टेन्डेन्टको मामलेकी जांच और शिकायत सही होने पर उपयुक्त कार्यवाही करने का आदेश दे दिया है।

आर्य समाज चाइबासा को विदेशी पादरियों की आपत्तिजनक प्रगतियों को कुंठित करने का अभियान शुरू कर देना चाहिये। उनके मार्ग में कोई कठिनाई उपस्थित हो तो आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार और सार्वदेशिक सभा के सहयोग से उनको दूर करने का प्रबन्ध करना चाहिये।

शिक्षा आयोग और त्रिभाषा सूत्र

श्री बबलूराम गुप्त (सोनीपत) लिखते हैं:—

"शिक्षा आयोग ने शिक्षा के समस्त स्तरों पर मातृभाषा के माध्यम को स्वीकार करके प्रशसनीय कार्य किया है जो सर्वोत्तम माध्यम होता है। श्रेष्ठ शिक्षा पद्धति का यह सर्व ग्राह्य सिद्धात है कि विद्यार्थी की मातृभाषा के द्वारा शिक्षण से शिक्षा के उद्देश्य की सर्वोत्तम रीति से पूर्ति होती है। आयोग ने अंग्रेजी के स्थान में क्षेत्रीय भाषाओं के अपनाये जानेके लिये १० वर्ष की अवधि नियत की है। परन्तु अखिल भारतीय सस्थानों मे शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी और हिन्दी दोनों होनी चाहिये एक मात्र अंग्रेजी नहीं जैसा कि आयोग ने सुझाव दिया है। देश इस समय द्विभाषाओं के स्टेज से गुजर रहा है और इस प्रकार के सस्थानों में हिन्दी को उचित स्थान प्राप्त करने से वचित नहीं किया जा सकता।

आयोग ने त्रिभाषा सूत्र के अधीन अंग्रेजी और हिन्दी के अध्ययन में किसी एक को चुनने की स्वतन्त्रता दी है। इसके व्यवहार में हिन्दी घाटे में और अंग्रेजी लाभ में रहेगी। आजकल उच्च प्रतियोगिता परीक्षाओं का माध्यम अंग्रेजी है अतः कोई भी विद्यार्थी इसे छोड़ने को उद्यत न होगा। यत. हिन्दी सघ की मुख्यतम राज भाषा है अत: इसमे दक्षता प्राप्त करना गौण बात नहीं है और वर्तमान में त्रिभाषा सूत्र के आधीन देश भर के विद्यार्थी दक्षता प्राप्त करने में लगे हैं। आयोग द्वारा प्रस्तावित परिवर्तन से प्रगति कुंठित हो जायगी। हिन्दी के सघ की राजभाषा बनने की आशा इसी बात में निहित है कि यह देश भर के स्कूलों में अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाय। परन्तु आयोग की रिपोर्ट में परिवर्तन का जो सुझाव दिया गया है उसके क्रियान्वित होने से हिन्दी के उस स्तर पर पहुंचने की संभावना जाती रहेगी। अत: वर्तमान व्यवस्था बनाये रखनी चाहिये।"

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

★

शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन में हिन्दी की उपेक्षा

संस्कृत का घोर अपमान

आर्य नेताओं के वक्तव्य

श्री प० नरेन्द्र जी, प्रधान, हिन्दी प्रचार सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण ने शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन के सम्बन्ध में एक वक्तव्य प्रसारित किया है जो इस प्रकार है—

शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन-प्रकाशित होकर अब जनता के सामने आ गया है। इसकी रूपरेखा इस प्रकार से रखी गई थी कि इसमें जापान, फ्रांस और रूस के विशेषज्ञों के साथ-साथ ऐसे कोटि के भारतीयों को भी सम्मिलित किया गया था जिनमें भारतीयता से बढ़कर पाश्चात्य सूझ-बूझ की प्रचुरता है इसका निश्चित परिणाम यह निकला कि आयोग ने जो सिफारिशें की हैं वे हमारी राष्ट्रीय भाषा और राष्ट्रीय परम्परा की मान्यता के प्रतिकूल और अपमानजनक है। इसे कोई बुद्धिमान राष्ट्रवादी स्वीकार नहीं कर सकता। विदेशी विशेषज्ञ उन देशों से भी अपना सम्बन्ध रखते हैं जहां शिक्षा के माध्यम के साथ-साथ उनको अपनी राजकीय भाषा का ही व्यवहार होता है परन्तु खेद है कि भारतवर्ष से सम्बन्धित इस राष्ट्रीय दृष्टिकोण को उन्होंने सर्वथा अपनी दृष्टि से ओझल कर दिया है, जो न्याय संगत नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रतिवेदन शिक्षा विभाग की प्रेरणा एवं इशारे पर तैयार किया गया है।

इस रिपोर्ट में सबसे अधिक आपत्तिजनक और हानिकारक बात यह है कि त्रिभाषी सूत्र को हटाकर हिन्दी अथवा अंग्रेजी इन दोनों में से किसी एक भाषा को अपनाने का परामर्श दिया गया है। यह केवल इसीलिए दिया गया है कि हिन्दी भाषा जिसे संविधान ने राष्ट्रीय भाषा का स्थान प्रदान किया है, उसकी प्रतिष्ठा और गौरव को आघात पहुंचा कर, हिन्दी के विकास के प्रति उपेक्षा अंग्रेजी को अनिश्चित काल तक के व्यवहार का बनाकर इसे पूरी तरह लागू कर दिया जाए। वस्तुतः इस मनोवृत्ति की जितनी भी निन्दा की जाए कम है।

प्रतिवेदन में हिन्दी की समवृद्धि के सम्बन्ध में जो दिल को चुभाने वाले परामर्श दिए गए हैं उन पर यदि सूक्ष्म रूप से विचार किया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि कमीशन की राय अदूरदर्शिता से पूर्ण होने के साथ-साथ हास्यास्पद भी है।

भारतीय भाषाओं के साहित्य के प्रकाशन के लिए देवनागरी और रोमन दोनों लिपियों को स्वीकार करने की आयोग ने सिफारिश की है। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह है कि जिन प्रान्तों में हिन्दी नहीं बोली जाती है वे रोमन लिपि को स्वीकार कर लें जिससे कि परीक्षा रूप में उन प्रान्तों हिन्दी को सदा के लिए समाप्त कर दिया जाए।

संस्कृत के बारे में दो बातें कही गयी है। एक तो यह है कि आठवीं कक्षा से संस्कृत के साथ-साथ अरबी के पढ़ाने का भी प्रबन्ध किया जाए। दूसरी यह कि संस्कृत का कोई विश्व-विद्यालय स्थापित न किया जाए। जबकि अंग्रेजी द्वारा और विश्व-विद्यालयों की स्थापना की सिफारिश की गई है।

संस्कृत के साथ अरबी जैसी विदेशी भाषा को शिक्षा के सम्बन्ध में जो विचार कमीशन ने प्रगट किए हैं, वे सर्वथा निरर्थक और सारहीन हैं। कारण यह है कि संस्कृत ही हमारी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक परम्पराओं का एक मात्र परिचायक है न कि अरबी। इसलिए इन दोनों की पारस्परिक तुलना करना सर्वथा असंगत है।

शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन उन समस्त राष्ट्रीय आशाओं और विश्वासों को धूमिल करता है जिसकी पूर्ति के लिए उससे आशा की जा रही थी। अब सरकार और जनता का यह कर्तव्य है कि राष्ट्रभाषा से सम्बन्धित इस प्रतिवेदन की सिफारिशों को वह अस्वीकार कर दें जिससे कि राष्ट्रीय आदर्श, उद्देश्य और चेतना को जो एक करारी चोट पहुंचने वाली है, उससे उसे बचाया जा सके।

❋

सभा-मन्त्री का वक्तव्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री लाला रामगोपाल शाल-वाले ने एक प्रेस वक्तव्य में शिक्षा आयोग की रिपोर्ट पर सभा की प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि यह रिपोर्ट हिन्दी और संस्कृत के हितों के लिए घातक है। पूरा वक्तव्य इस प्रकार है:—

शिक्षा मंत्री ने संसद में शिक्षा आयोग की नियुक्ति का विषय पेश किया था जिसका उद्देश्य शिक्षा का एक राष्ट्रीय आदर्श स्थापित करना बताया गया था उसी समय कई क्षेत्रों में यह आशंका प्रकट की गई थी कि इस आयोग द्वारा देश की परम्पराओं, संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता को नष्ट करने के लिए एक भयंकर भूल की जा रही है। उस समय भारत सरकार के उत्तरदायी मंत्रियों ने संसद में तथा संसद से बाहर उक्त शंका को निर्मूल बताया था। परन्तु आयोग की जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है उससे उक्त शंका बिलकुल सत्य सिद्ध हुई है।

कई वर्ष हुए भारत के समस्त राज्यों के मुख्य मंत्रियों ने अपने एक सम्मेलन में बड़ी गम्भीरता के साथ विचार करने के पश्चात् त्रिभाषा फार्मूला का निर्माण किया था जिसके द्वारा देश के समस्त राज्यों के शिक्षणालयों में हिन्दी को राज्य भाषा के रूप में एक अनिवार्य विषय स्वीकार किया गया था। परन्तु इस शिक्षा आयोग ने हिन्दी को जो देश के बहुमत की भाषा है उसे अंग्रेजी के साथ जिसे देश के दो प्रतिशत लोग ही जानते हैं, वैकल्पिक भाषा बना दिया है। ऐसी दशा में हिन्दी विरोधी तो हिन्दी कभी भी पसन्द नहीं करेंगे।

इसके साथ २ ही अखिल भारतीय विद्यालय, अखिल भारतीय स्तर की सेवाओं की परीक्षाओं तथा अखिल भारतीय स्तर के कार्यालयों में उस समय तक अनिश्चित काल के लिए अंग्रेजी को ही माध्यम स्वीकार किया है, जब तक कि समस्त देश हिन्दी स्वीकार न कर ले। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यदि देश [illegible] एक राज्य भी अपने [illegible] वश अथवा देश के शत्रुओं के हाथों में खेलकर हिन्दी का विरोध करता है तो हिन्दी कभी भी भारत संघ की राज्य भाषा नहीं बन सकती। देश में एक ऐसा विशेष वर्ग है, जिसमें अंग्रेजी संस्कृति में पले हुए शिक्षित लोग और विदेशी शक्तियां सम्मिलित हैं जो देश की एकता को नष्ट करने के लिए हिन्दी विरोधी कुचक्र को संगठित रूप में चला रही है और येन केन प्रकारेण अंग्रेजी को सदा के लिए बनाये रखना चाहती है इस आयोग की सिफारिशें भी उस महान् कुचक्र की कड़ी है। यह निश्चित बात है कि हिन्दी जब तक भारत संघ की व्यवहारिक रूप से राष्ट्र भाषा नहीं बनती देश में राष्ट्रीय एकता स्थापित नहीं हो सकती।

संसार के समस्त भाषाविद् इस बात को स्वीकार करते हैं कि संस्कृत केवल भारत की भाषाओं की ही जननी नहीं है किन्तु संसार की समस्त भाषाओं की जननी है। भारत की आत्मा, उसकी संस्कृति तथा उसकी परम्पराओं का आधार संस्कृत ही केवल मात्र एक ऐसी भाषा है जिससे भारत अपनी भारतीयता को अक्षुण्ण बनाये रख सकता है। आयोग ने संस्कृत को वैकल्पिक विषय के रूप में आरम्भ से न लेकर आठवीं श्रेणी से रखा है।

इस आयोग की सिफारिशें भारतीय आत्मा, भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता पर भारी कुठाराघात है। जिन्हें देश में सच्ची राष्ट्रीय भावना के लोग कभी भी स्वीकार नहीं करेंगे।

भारत सरकार को उचित है कि आयोग की सिफारिशों को स्वीकार करते समय अपने निर्णयों और आश्वासनों को पूरा करे जो उसने हिन्दी को एक मात्र राज्य भाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित करने और संस्कृत के पठन-पाठन को प्रोत्साहित करने के लिए किए हैं।

श्री के० नरेन्द्र का वक्तव्य

शिक्षा आयोग ने जो सिफारिशें की हैं उन पर किसी ऐसे व्यक्ति को हैरानी न होनी चाहिए जो यह जानता है कि आज जिन लोगों के हाथ में भारत की राजसत्ता है उनकी मनोवृत्ति क्या है? वास्तविकता यह

(शेष पृष्ठ ११ पर)

एक भेंट—

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

श्री शिवकुमार जी गोयल

तार्किक शिरोमणी, शास्त्रार्थ महारथी पूज्य श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी आर्यजगत् के श्रद्धास्पद वयोवृद्ध एवं सम्मानित विद्वान् हैं। आप आगामी रामनवमी के दिन ८७ वें वर्ष मे पदार्पण करेंगे। आपने अपने जीवन के लगभग ६० वर्ष वैदिक धर्म प्रचार, विरोधियों विधर्मियों और विपक्षियों के साथ शास्त्रार्थ करने में व्यतीत किए हैं। आपकी वाणी की मधुरता और तर्क शक्ति से विरोधी प्रभावित रहे हैं।

पिलखुवा निवासी सनातनधर्मी नेता श्री भक्त रामशरणदास जी तथा उनके सुपुत्र पत्रकार श्री शिवकुमार जी गोयल ने गत सप्ताह श्रद्धेय श्री पडित जी से एक भेंट का विवरण प्रकाशित किया है जिसे हम पाठकों के लाभार्थ दैनिक वीर अर्जुन से उद्धृत कर रहे हैं।

—सम्पादक

सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री प०रामचन्द्र देहलवी हिंदूराष्ट्र की उन महान् विभूतियों में से है, जिन्होंने वैदिक धर्म विरोधी मुल्ला-मौलवियों व ईसाई पादरियों के धर्मघातक प्रचार का उन्मूलन करने में भारी योग दिया है। श्रद्धेय देहलवी जी ने बड़े-बड़े मुल्ला-मौलवियों व पादरियों की शास्त्रार्थों में धज्जियां उड़ाकर वैदिक धर्म की पताका को शान से फहराया।

सन् १९१० की घटनाहै। दिल्ली के ऐतिहासिक फव्वारे पर एक मौलवी साहब ने एक सभा में वैदिक धर्म की खिल्ली उड़ाने का दुष्प्रयास किया, तो देहलवी जी का हृदय बेचैन हो उठा। वह रातभर सोचते रहे कि जब निराधार व झूठी बातें फैला कर वैदिक धर्म के विरुद्ध विषवमन किया जा रहा है, तो मेरे स्वाध्याय का क्या लाभ? उस रात्रि को देहलवी जी तनिक भी सो न सके। प्रातः उन्होंने घोषणा की "मैं भी फव्वारे पर व्याख्यान देकर निराधार बातों का खडन करूगा तथा जिसमें साहस हो, वह शास्त्रार्थ के लिए मैदान में आये।" उन्होंने फव्वारे पर व्याख्यान दिया तथा वैदिक धर्म के विरोधी सभी मतावलम्बियों को आमन्त्रित भी किया। पुलिस अधिकारियों को भी शास्त्रार्थ की सूचना दे दी गई। अनेक प्रसिद्ध मौलवी एव पादरी एकत्रित हुए। कई दिनों तक शास्त्रार्थ हुआ। सैकड़ों व्यक्ति आपके सारगर्भित एव अकाट्य तर्कों को सुनकर दग रह गये। मुल्ला-मौलवियों व पादरियों के आक्षेपों को नोट करके फिर उनका उत्तर आप इस युक्ति से देते थे कि मौलवी व पादरी मैदान से भागते ही नजर आते थे और सभा "वैदिक धर्म की जय" के नारों से गूंज उठती थी।

सन् १९१० से १९२५ तक देहलवी जी बराबर फव्वारा और घण्टाघर पर वैदिक धर्म की महानता व बनावटी मतों की निस्सारता पर ओजस्वी व तर्कपूर्ण व्याख्यान देते रहे इसी बीच पत्नी व पुत्र का देहावसान हो गया, किन्तु फिर भी देहलवी जी वैदिक धर्म की पताका फहराते ही रहे।

हैदराबाद आन्दोलन

जिस समय निजाम हैदराबाद ने

श्री प०रामचन्द्रजी देहलवी

हिन्दू जनता का दमन किया और हिन्दुओं के धार्मिक व सामाजिक कार्यों पर प्रतिबन्ध लगा दिया तो देहलवी जी ने तुरन्त हैदराबाद पहुंच कर निजाम के औरगजेबी रवैये की तीव्र भर्त्सना की। उन्होंने लगभग १२५ सभाओ मे अपने ओजस्वी व्याख्यान दिये। उन्होंने अत्यन्त तर्कपूर्ण ढग से निजाम की हिन्दू विरोधी

परिवार-नियोजन हिन्दुओं के लिए एक भीषण खतरा सिद्ध होगा

कार्रवाइयों की भर्त्सना की। निजाम के सभी अधिकारी देहलवी जी के व्याख्यान सुनने आते थे तथा मन ही मन मे उनकी विद्वता व कुरान के अध्ययन की प्रशंसा कर लौटते थे।

देहलवी जी ने हैदराबाद आंदोलन में न केवल वाणी द्वारा योग दिया, अपितु उन्होंने स्वय सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व करके जेल यातनाएं भी सहन कीं।

कुरान-फिसाद की जड़

देहलवी जी का मेरे पिता जी (भक्त रामशरण दास जी पिलखुवा) पर बहुत स्नेह है। यद्यपि पिताजी सनातनधर्मी विचारधारा के है, किन्तु फिर भी देहलवी जी उनसे प्रेम करते हैं और पिताजी की गांधी जी की विचित्र 'अहिंसा' पुस्तक की उन्होने अनेक बार प्रशसा की है। पिता जी के साथ मुझे भी अनेक बार हापुड़ जाकर देहलवी जी से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

अभी गत दिनों जब मैंने व पिता जी ने हापुड़ में देहलवी जी से भेंट की, तो पिताजी ने कहा - देहलवी जी! आजकल सर्वोदयी नेता विनोबा भावे के चेले स्वामी सत्यभक्त ने एक ऐसा मन्दिर बनाया है, जिसमे कुरान बाइबिल, गीता, वेद आदि सभी मतों व धर्मों की पुस्तकें रखी हुई हैं तथा सर्वोदयी नेता कहते हैं कि सभी मत-मजहब व धर्म समान हैं। कुरान व वेद में कोई अन्तर नहीं। आपका इस सम्बन्ध में क्या मत है?'

देहलवी जी प्रश्न सुनकर गम्भीर हो उठे। उन्होंने मौन तोड़ते हुए कहा—"भक्त जी जहां तक विनोबा भावे का प्रश्न है मैं तो कहा करता हू "विनोबा भावे दुनिया को भावे पर मुझे न भावे, जयप्रकाश नारायण आदि तो पूरी तरह से मुस्लिम परस्त व आर्य धर्म के विरोधी हैं। ये वर्तमान युग के मसीहा बनने के ख्वाब देख रहे हैं। कुरान व वेदो को समान बतना कोरी मूर्खता है। वेदों मे जहां वास्तविक ज्ञान का भण्डार है, वहा कुरान मे खुराफात के सिवा और कुछ नहीं। कुरान में गो हत्या का स्पष्ट उल्लेख है। देखिये:—

"वइजू काल मूसा लिकौमि ही याकौमि! इन्नकुम ज्वलन्तुम् अन्फुसकुन बितिखाजिकुमुलइजल फतूबू बारिइकुम फकुल अन्फुसकुम्, बालिकुम् खेरूल्लकुम ज्मिन्द बारिइकुम्।"

अर्थात् हजरत मूसा ने अपनी कौम से कहा कि भाइयो, तुमने बछड़े की पूजा इख्तार कर आपने बड़ा जुल्म किया। अब अपने खालिक की जनाब में तोबा करो और अपने हाथ से बछड़े को हलाक करो।

इसके अतिरिक्त कुरान में स्पष्ट लिखा है कि "ऐ पैगम्बर काफिरों के साथ (हाथ से) और मुनाफिको के साथ (जबान से) जिहाद करते रहो और उन पर सख्ती रखो। उनका ठिकाना दोजख है।"

जो लोग सभी मजहबों व वैदिक धर्म को एक समान मानते हैं, वे मूर्ख है, जब कि अन्य मत-मजहब बनावटी व मनुष्यों के बनाये हुए दिमागों के फितूर मात्र हैं।"

मैंने देहलवी जी से प्रश्न किया "आजकल जो सास्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर स्कूल, कालेजों एव सभा सोसायटियों में जवान लड़के-लड़कियों के एक साथ नाच कराये जाते हैं, क्या उनसे आर्य सभ्यता का ह्रास नहीं हो रहा है?

उन्होंने कहा—'यह सब खुराफात आर्य सस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए की जा रही है। लड़के-लड़कियों की सहशिक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की आड़ में नाच-यह सब सस्कृति के विपरीत हैं। एक प्रकार से सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सौन्दर्य प्रतियोगिताओं आदि द्वारा युवक-युवतियों को व्यभिचार, भ्रष्टाचार का इजेक्शन दिया जा रहा है। यह सब बन्द किया जाना चाहिए। आज देश का जितना नैतिक पतन इन सास्कृतिक कार्यक्रमों व

विनोवा भावे दुनिया को भावे पर मुझे न भावे

सिनेमाओं ने कर डाला है, उतना कभी हुआ ही नहीं।"

पिताजी ने कहा—'देहलवी जी, आजकल तो कांग्रेसी सरकार की ओर से मांस, अडे, मछली खाने का प्रचार किया जा रहा है। गांव-गांव में मछली पालन और मुर्गी पालन के केन्द्र खोले जा रहे हैं। हिन्दुओं को पूरी तरह से मांसाहारी बना डालने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है।"

देहलवी जी ने गम्भीर होकर कहा कि मांसाहार का प्रचार भी आर्य संस्कृति को समाप्त करने के लिए

(शेष पृष्ठ १३ पर)

कर्णधारो

श्री रुद्रदत्त जी शर्मा, प्रधान, आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर

मानो न मानो आपका यह अख्तयार है।
हम नेको बद जनाब को समझाए जाएंगे॥

हिन्दु जाति तथा इसके आधुनिक नेताओं की अवस्था देखकर मथुरा की एक घटना याद आती है। यमुना नदी में कुछ मुसाफिर रातों रात किसी दूसरे नगर को जाने के लिये नाव में सवार हुए। रात अंधेरी थी, निरन्तर चप्पू चलाते रहे। प्रातःकाल थोड़ा प्रकाश होने पर बड़ी बड़ी इमारतें दिखाई देने लगीं। ख्याल किया कि हम अपने ध्येय स्थान पर पहुंच गये हैं। चप्पू चलाने बन्द करके इमारतों को देखने लगे तो मालूम हुआ कि मथुरा के तट पर वहीं खड़े हैं जहां रात को किश्ती में सवार हुए थे। रात भर चप्पू चलाने के बावजूद अपने आपको वहीं देखकर बहुत हैरान हुए। कारण ढूंढने लगे तो मालूम हुआ कि किश्ती का रस्सा घाट पर लगे कुंडे से बन्धा रहा, इसलिये किश्ती एक कदम आगे नहीं बढ़ सकी। और सारी रात की मेहनत गई। समय व्यर्थ गया। यही हालत कोल्हू के बैल की होती है, जब दिन भर बन्धी हुई आंखों के साथ चलते और चलते जाने के पश्चात् सायंकाल उसकी आंखें खोली जाती हैं, तो वह अपने आपको वहीं कोल्हू के साथ बन्धा हुआ पाता है।

मैं अपनी जाति के पथ प्रदर्शकों, नेताओं और तन मन से इसके उत्थान के लिये दिन रात एक करने वाली संस्थाओं के सामने नम्रता पूर्वक एक प्रश्न रखना चाहता हूं, कि कभी उन्होंने यह देखने की तकलीफ उठाई है कि वर्षों की निष्काम सेवा और जाति की नैय्या को कितना आगे ले जा सके हैं या यह वहीं की वहीं खड़ी है अथवा आगे जाने के बजाये, (जैसा कि देखा जा रहा है) उलटी अपने उद्देश्य से और भी पीछे तो नहीं जा रही? अन्तिम दोनों अवस्थाओं में आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक भूगोल पर चक्रवर्ती राज्य करने वाली आर्य जाति उठने का नाम नहीं लेती। इसका हर कदम अपनी शानदार प्राचीनता की तरफ बढ़ने की बजाये यूरोप और अमरीका की विनाशकारी सभ्यता की तरफ जा रहा है। मांस, शराब, नाचे और नाच, सिनेमा, तथा रेडियो के भयानक दुरुपयोग और कलचरल प्रोग्रामों के नाम पर दुराचार, अश्लील खालिस आचारहीनता खुले प्रचार ने हमें कहां से कहां ला फेंका है? हमारे नवयुवक आज धर्म, ईश्वर और वेद का नाम सुनने को तैयार नहीं। उनकी दृष्टि में रामायण और महाभारत कल्पित कहानियां हैं। उनके विचार में राम और कृष्ण नाम के कोई महापुरुष इस संसार में नहीं हुए।

धर्म निरपेक्ष सरकार की तरफ से हमें बेदीन और धर्महीन बनाने का पूरा यत्न किया जा रहा है। ऐसी अवस्था से लाभ उठाने के लिये मुसलमान और ईसाई हर उचित और अनुचित ढंग से आगामी हिन्दू जाति के युवकों और युवतियों का धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं। अंग्रेजी राज्य की अपेक्षा कई गुणा अधिक संख्या में यूरोपियन मिशनरी भारत के कोने कोने में रुपया, कपड़ा, अनाज, घी और दूध के डिब्बे बांट बांट कर प्रायः गरीब हिन्दुओं और विशेषतः अछूत कहलाने वाले भाइयों को बेखटके धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं। परन्तु हमारी सरकार चीन, ब्रह्मा और लंका की तरह इनको देश से निकालने की बजाय उल्टा समय समय पर उनकी सहायता करती और उन्हें हर प्रकार की सुविधाएं देती है। आज इस जाति की अवस्था नदी किनारे खड़े उस वृक्ष की सी हो रही है, जिसकी जड़ें हर समय पानी के थपेड़ों से खोखली हो रही हैं। अकेला आर्य समाज वेद प्रचार और शिक्षा आदि के कार्य में लगा होने पर भी अपनी शक्ति के अनुसार ईसाइयत की बाढ़ का भी मुकाबला कर रहा है। परन्तु क्या जाति के प्रत्येक हितैषी को इसकी चिन्ता नहीं होनी चाहिए।

एक दुकानदार भी वर्ष भर के पीछे देखता है उसने क्या कमाया और क्या गवाया है? आखिर कोई समय तो ऐसा भी आना चाहिये, जब भारतीयता और प्राचीनता के संरक्षक अपने काम का निरीक्षण करें और देखें कि इतने परिश्रम के पश्चात् भी क्या वह कोल्हू के बैल की तरह अथवा खूंटे के साथ बन्धी हुई किश्ती की तरह वहीं के वहीं तो नहीं खड़े। गत चुनाव के समय चूक जाने के कारण कांग्रेस की ओर से हिन्दुओं तथा मातृ भाषा हिन्दी के साथ हो रहे घोर अत्याचारों के जो कटु अनुभव इन पांच वर्षों में हुए उन्हें सामने रखते हुए आने वाले चुनाव में अपनी समाज को अधिक से अधिक बलवती और प्रभावशाली बनाना इस समय आपके हाथ में है यदि तुम्हारे हृदय में वस्तुतः देश और जाति के लिये तड़प विद्यमान है तो प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के अनुकूल विचार धारा वाले नेताओं, समाजों और संस्थाओं को कुछ काल के लिये अपने मतभेदों और द्वेषों को भुलाकर तथा स्वार्थ की भावना को मिटा कर केवल जाति के उत्थान के महान् लक्ष्य को सामने रखते हुए एक संयुक्त मार्ग निर्धारित करना होगा। देश और जाति का हित चाहने वाली जनता ऐसे निश्चय का सच्चे हृदय से स्वागत करेगी। हां, इसके लिये उदारता और त्याग की आवश्यकता है। पृथक् पृथक् गुट बन्दियों से ऊपर उठना होगा और संगठित एवं सम्मिलित शक्ति के साथ उच्चतम योग्य महानुभावों को सफल करने के लिये कटिबद्ध होना होगा। ऐसे शुभ उद्देश्य के लिये मिलकर चलने से किसी को भी हानि नहीं होगी, अपितु अधिक शक्ति के जुट जाने से अधिक से अधिक सुलझे हुए उम्मीदवार सफल हो सकेंगे। यदि किसी संस्था को आरम्भ में किसी अंश में कुछ हानि प्रतीत भी होगी, तो वह उस निराशापूर्ण और अपमानजनक हानि से कहीं बेहतर होगी जो फूट की अवस्था में वोट बट जाने के कारण परिश्रम और धन व्यय करने के पश्चात् असफल होकर देखनी पड़ेगी और उसके साथ वर्षों तक फिर सारी जाति के विरोधियों और विधर्मियों द्वारा पद दलित होना पड़ेगा। सैकड़ों वर्षों की गुलामी के पश्चात् हमें पिछले इतिहास से कुछ तो शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये और अधो पतन के एक मात्र कारण फूट रूपी राक्षसी से बचना चाहिये।

जिन संस्थाओं में प्रभु कृपा से कुछ जागृति दिखाई देती है, वह देश और जाति का हित रखते हुए भी शक्ति के नशे में तथा तंगदिली का शिकार होकर अपनी संस्था को ही सब कुछ समझते हुए विशाल जातीय दृष्टिकोण से सोचने और एक दूसरे के साथ मिलकर चलने को तैयार नहीं होते जिसके परिणाम स्वरूप वह पूरी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते, जो मिलकर चलने की अवस्था में कर सकते हैं। दूसरी तरफ कई महानुभाव अपनी सफलता में विश्वास रखते हुये भी केवल इस लक्ष्य से खड़े हो जाते हैं कि व्यक्तिगत ईर्षा के कारण सम्मुख खड़े अच्छे से अच्छे उम्मीदवार को हानि पहुंचा सकें। वह जाति के सब से बड़े शत्रु हैं।

इस समय 'लोक सभा' और विधान सभाओं आदि में ऐसे अनुभवी, सदाचारी और आदर्श महानुभावों को भेजने की आवश्यकता है जो रूस और अमरीका आदि की तरफ आंखें लगाये रखनेकी बजाये भारत और भारतीयता के सच्चे पुजारी हों और जिनके हृदय में देश और जाति दोनों के लिए वास्तविक हित और अटूट श्रद्धा हो और किसी अवस्था में भी जाति के नाम पर देश को और देश के नाम पर जाति के हितों को न्योछावर करने के लिये तैयार न हो सकें। अन्त में वास्तविक हित का एक दृष्टांत देकर अपनी इस प्रार्थना को समाप्त करना चाहता हूं।

एक बार अदालत में एक बच्चे के सम्बन्ध में दो देवियों का झगड़ा पेश हुआ। दोनों ही माता होने का दावा करती थीं। मैजिस्ट्रेट जब किसी प्रकार भी वास्तविक (सच्ची) माता का निश्चय न कर सका तो उसे एक उपाय सूझा और आदेश दिया कि चूंकि दोनों देवियां बच्चे की माता होने का दावा करती हैं और उसे लेना चाहती हैं अतः इसका एक ही उपाय हो सकता है बच्चे के दो टुकड़े कर दिये जावें और दोनों को एक-एक टुकड़ा दे दिया जावे। उसके साथ ही जल्लाद ने तलवार उठाई तो असली माता झट कूद कर मध्य में आ खड़ी हुई और कहने लगी कि भगवान के लिये बच्चे के टुकड़े मत करो, इसे सही सलामत दूसरी देवी को दे दो। ठीक इसी तरह अब समय है कि देश और जाति का सच्चा हित चाहने वाले नेता और संस्थाएं व्यक्तिगत हानि सहन करके भी जाति और देश के टुकड़े होनेसे बचाने के लिये मैदान में निकलें परन्तु यह तभी हो सकता है यदि हम जाति के हित को अपने और अपनी संस्थाओं के अधिक महत्व दें।

बचोगे न तुम और न साथी तुम्हारे।
अगर नाव डूबी तो डूबेंगे सारे॥

गण–राज्य

धर्मराज युधिष्ठिर ने पूछा—

विजिगीषोस्तथा वृत्तमुक्तं चैव तथैव ते।
गणानां वृत्तिमिच्छामि श्रोतुं मतिमतां वर ॥६॥

बुद्धिमानों में श्रेष्ठ पितामह ! आपने विजयाभिलाषी राजा के बर्ताव का वर्णन कर दिया है। अब मैं गणों (गणतन्त्र राज्यों) का बर्ताव एवं वृत्तांत सुनना चाहता हूं ॥६॥

यथा गणाः प्रवर्धन्ते न भिद्यन्ते च भारत।
अरींश्च विजिगीषन्ते सुहृदः प्राप्नुवन्ति च ॥७॥

भारत ! गणतन्त्र राज्यों की जनता जिस प्रकार अपनी उन्नति करती है, जिस प्रकार आपस में मतभेद या फूट नहीं होने देती, जिस तरह शत्रुओं पर विजय पाना चाहती है और जिस उपाय से उसे सुहृदयों की प्राप्ति होती है - ये सारी बातें सुनने के लिये मेरी बड़ी इच्छा है ॥ ७ ॥

भेदमूलो विनाशो हि गणानामुपलक्षये।
मन्त्रसंवरणं दुःखं बहूनामिति मे मतिः ॥८॥

मैं देखता हूं, सघबद्ध राज्यों के विनाश का मूल कारण हैं आपस की फूट। मेरा विश्वास है कि बहुत से मनुष्यों के जो समुदाय हैं, उनके लिये किसी गुप्त मन्त्रणा या विचार को छिपाये रखना बहुत ही कठिन है ॥ ८ ॥

एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं निखिलेन परंतप।
यथा च ते न भिद्येरन्स्तच्च मे वद पार्थिव ॥९॥

परंतप राजन् ! इन सारी बातों को मैं पूर्णरूप से सुनना चाहता हूं। किस प्रकार सघ या गण आपस में फूटते नहीं है, यह मुझे बताइये ॥ ९ ॥

भीष्म उवाच

गणानां च कुलानां च राज्ञां भरतसत्तम।
वैरसंदीपनावेतौ लोभामर्षौ नराधिप ॥१०॥

भीष्म जी ने कहा—भरत श्रेष्ठ ! नरेश्वर ! गणो में, कुलों में तथा राजाओं में वैर की आग प्रज्वलित करने वाले ये दो ही दोष हैं—लोभ और अमर्ष ॥ १० ॥

लोभमेको हि वृणुते ततोऽमर्षमनन्तरम्।
तौ क्षयव्ययसंयुक्तावन्योन्यं च विनाशिनौ ॥११॥

पहले एक मनुष्य लोभ का वरण करता है (लोभवश दूसरे का धन लेना चाहता है), तदनन्तर दूसरे के मन मे अमर्ष पैदा होता है, फिर वे दोनों लोभ और अमर्ष से प्रभावित हुए व्यक्ति समुदाय, धन और जनकी बड़ी भारी हानि उठाकर एक दूसरे के विनाशक बन जाते हैं ॥ ११ ॥

चारमन्त्रबलादानैः सामदानविभेदनैः।
क्षयव्ययभयोपायैः प्रकर्षन्तीतरेतरम् ॥१२॥

वे भेद लेने के लिये गुप्तचरों को भेजते, गुप्त मन्त्रणाएं करते तथा सेना एकत्र करने में लग जाते हैं साम, दान और भेद नीति के प्रयोग करते हैं तथा जनसंहार, अपार धनराशि के व्यय एव अनेक प्रकार के भय उपस्थित करने वाले विविध उपायों द्वारा एक दूसरे को दुर्बल कर देते हैं ॥ १२ ॥

तत्रादानेन भिद्यन्ते गणाः संघातवृत्तयः।
भिन्ना विमनसः सर्वे गच्छन्त्यरिवशं भयात् ॥१३

संघबद्ध होकर जीवन-निर्वाह करने वाले गणराज्य के सैनिकों को भी यदि समय पर भोजन और वेतन न मिले तो भी वे फूट जाते हैं। फूट जाने पर सबके मन एक दूसरे के विपरीत हो जाते हैं और वे सबके सब भय के कारण शत्रुओं के अधीन हो जाते हैं ॥१३॥

भेदे गणा विनेशुर्हि भिन्नास्तु सुजयाः परैः।
तस्मात् संघातयोगेन प्रयतेरन् गणाः सदा ॥१४॥

आपस में फूट होने से ही सघ या गणराज्य नष्ट हुए हैं। फूट होने पर शत्रु उन्हें अनायास ही जीत लेते हैं; अतः गणों को चाहिये कि वे सदा संघबद्ध — एकमत होकर ही विजय के लिये प्रयत्न करें ॥१४॥

अर्थाश्चैवाधिगम्यन्ते संघातबलपौरुषैः।
बाह्याश्च मैत्रीं कुर्वन्ति तेषु संघातवृत्तिषु ॥१५॥

जो सामूहिक बल और पुरुषार्थ से सम्पन्न हैं, उन्हें अनायास ही सब प्रकार के अभीष्ट पदार्थों की प्राप्ति हो जाती है। सघबद्ध होकर जीवन-निर्वाह करने वाले लोगों के साथ सघ से बाहर के लोग भी मैत्री स्थापित करते हैं ॥१५॥

> सार्वदेशिक के दो, अंकों में महाभारत कालीन कूटनीतिज्ञ भारद्वाज कणिक की नीति प्रस्तुत की थी। इस अंकमे गण-राज्यके गुण-दोषों पर पितामह भीष्म का उत्तर पढने योग्य हैं। अगले अंक में सदाचार की व्याख्या महाभारत से प्रस्तुत करेंगे।
>
> —सम्पादक

ज्ञानवृद्धाः प्रशंसन्ति शुश्रूषन्तः परस्परम्।
विनिवृत्ताभिसंधानाः सुखमेधन्ति सर्वशः ॥१६॥

ज्ञानवृद्ध पुरुष गणराज्य के नागरिकों की प्रशंसा करते हैं। सघबद्ध लोगों के मन में आपस में एक दूसरे को ठगने की दुर्भावना नहीं होती। वे सभी एक दूसरे की सेवा करते हुए सुखपूर्वक उन्नति करते हैं ॥१६

धर्मिष्ठान् व्यवहारांश्च स्थापयन्तश्च शास्त्रतः।
यथावत् प्रतिपश्यन्तो विवर्धन्ते गणोत्तमाः ॥१७॥

गणराज्य के श्रेठ नागरिक शास्त्र के अनुसार धर्मानुकूल व्यवहारों की स्थापना करते हैं। वे यथोचित दृष्टि से सबको देखते हुए उन्नति की दिशा मे आगे बढते जाते हैं ॥ १७ ॥

पुत्रान् भ्रातॄन् निगृह्णन्तो विनयन्तश्च तान् सदा।
विनीतांश्च प्रगृह्णन्तो विवर्धन्ते गणोत्तमाः ॥१८॥

स्वराज्य के श्रेष्ठ पुरुष पुत्रों और भाइयों को भी यदि वे कुमार्ग पर चलें तो दण्ड देते हैं सदा उन्हें उत्तम शिक्षा प्रदान करते हैं और शिक्षित हो जाने पर उन सबको बड़े आदर से अपनाते हैं। इसलिये वे विशेष उन्नति करते हैं ॥१८॥

चारमन्त्रविधानेषु कोशसंनिचयेषु च।
नित्ययुक्ता महाबाहो वर्धन्ते सर्वतो गणाः ॥१९॥

महाबहु युधिष्ठिर ! गणराज्य के नागरिक गुप्तचर या दूत का काम करने, राज्य के हित के लिये गुप्त मन्त्रणा करने, विधान बनाने तथा राज्य के लिये कोश संग्रह करने आदि के लिये सदा उद्यत रहते हैं, इसीलिये सब ओर से उनकी उन्नति होती है ॥ १९ ॥

प्राज्ञाञ्शूरान् महोत्साहान् कर्मसुस्थिरपौरुषान्।
मानयन्तः सदा युक्ता विवर्धन्ते गणा नृप ॥२०॥

नरेश्वर ! संघराज्य के सदस्य सदा बुद्धिमान, शूरवीर, महान् उत्साही और सभी कार्यों में दृढ पुरुषार्थ का परिचय देने वाले लोगों का सदा सम्मान करते हुए राज्य की उन्नति के लिये उद्योगशील बने रहते हैं। इसीलिये वे शीघ्र आगे बढ़ जाते हैं ॥ २० ॥

द्रव्यवन्तश्च शूराश्च शस्त्रज्ञाः शास्त्रपारगाः।
कृच्छ्रास्वापत्सु सम्मूढान् गणाः संतारयन्ति ते ॥२१॥

गणराज्य के सभी नागरिक धनवान्, शूरवीर, अस्त्र-शस्त्रों के ज्ञाता तथा शास्त्रों के पारंगत विद्वान होते हैं। वे कठिन विपत्ति में पड़कर मोहित हुए लोगों का उद्धार करते रहते हैं ॥

क्रोधो भेदो भयं दण्डः कर्षणं निग्रहो वधः।
नयत्यरिवशं सद्यो गणान् भरतसत्तम ॥२२॥

भरतश्रेष्ठ ! सघराज्य के लोगों में यदि क्रोध, भेद (फूट), भय, दण्डप्रहार, दूसरों को दुर्बल बनाने, बन्धन में डालने या मार डालने की प्रवृत्ति पैदा हो जाय तो वह उन्हें तत्काल शत्रुओं के वश में डाल देती है ॥२२॥

तस्मान्मानयितव्यास्ते गणमुख्याः प्रधानतः।
लोकयात्रा समायत्ता भूयसी तेषु पार्थिव ॥२३॥

राजन् ! इसलिये तुम्हें गणराज्य के जो प्रधान-प्रधान अधिकारी हैं, उन सबका सम्मान करना चाहिये क्योंकि लोकयात्रा का महान् भार उनके ऊपर अवलम्बित है ॥ २३ ॥

मन्त्रगुप्तिः प्रधानेषु चारश्चामित्रकर्षण।
न गणाः कृत्स्नशो मन्त्रं श्रोतुमर्हन्ति भारत ॥२४॥

शत्रुसूदन ! भारत ! गण या सघ के लोग गुप्त-मन्त्रणा सुनने के अधिकारी नहीं है। मन्त्रणा को गुप्त रखने तथा गुप्तचरों की नियुक्ति का कार्य प्रधान-प्रधान व्यक्तियों के अधीन होता है ॥ २४ ॥

गणमुख्यैस्तु सम्भूय कार्यं गणहितं मिथः।
पृथग्गणस्य भिन्नस्य विततस्य ततोऽन्यथा ॥२५॥
अर्थाः प्रत्यवसीदन्ति तथानर्था भवन्ति च।

गण के मुख्य-मुख्य व्यक्तियों को परस्पर मिलकर समस्त गणराज्य के हित का साधन करना चाहिये यदि संघ में फूट होकर पृथक्-पृथक् कई दलों का विस्तार हो जाय तो उसके सभी कार्य बिगड जाते और बहुत से अनर्थ पैदा हो जाते हैं ॥ २५ ॥

तेषामन्योन्यभिन्नानां स्वशक्तिमनुतिष्ठताम् ॥२६॥
निग्रहः पण्डितैः कार्यः क्षिप्रमेव प्रधानतः।

परस्पर फूटकर पृथक्-पृथक् अपनी शक्ति का प्रयोग करने वाले लोगों में जो मुख्य-मुख्य नेता हो, उनका सघराज्य के विद्वान् अधिकारियों को शीघ्र ही दमन करना चाहिये ॥ २६ ॥

कुलेषु कलहा जाताः कुलवृद्धैरुपेक्षिताः ॥२७॥
गोत्रस्य नाशं कुर्वन्ति गणभेदस्य कारकम् ॥

कुलों में जो कलह होते हैं, उनकी यदि कुल के वृद्ध पुरुषों ने उपेक्षा कर दी तो वे कलह गणों में फूट डालकर समस्त कुल का नाश कर डालते हैं ॥ २७ ॥

आभ्यन्तरं भयं रक्ष्यमसारं बाह्यतो भयम् ॥२८॥
आभ्यन्तरं भयं राजन् सद्यो मूलानि कृन्तति।

भीतरी भय दूर करके सघ की रक्षा करनी चाहिये यदि संघ मे एकता बनी रहे तो बाहर का भय उसके लिये निःस्सार है। (वह उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता)। राजन् ! भीतर का भय तत्काल ही सघराज्य की जड़ काट डालता है ॥२८॥

अकस्मात् क्रोधमोहाभ्यां लोभाद् वापि स्वभावजात्
अन्योन्यं नाभिभाषन्ते तत्पराभवलक्षणम्।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

Bhagwan Dayanand Saraswati and the Upanishads

by Rai Bahadur Ratan Lal, B. A., LL. B.
Formerly Common Chief Justice of 14 Malwa States
(Madhya Pradesh) High Courts.

(गतांक से आगे)

1. The Brahmanas

Brahmanas also are not parts of the four Vedas

As some of the Upanishads form the component parts of the Brahmanas, it is sometimes argued that Brahmanas being part of the four Vedas, the Upanishads are also parts of the four Samhitas. But Brahmanas are not Vedas either.

It is generally believed that some of the Upanishadic texts in fact form the component part of the Brahmanas. John Dowsen in his Classical Dictionary of Hindu Mythology says that " In their fullest extent the Brahmanas embrace also the treatises called Aranyakas and Upanishads " (p 61 of 7th Edition). It is worthwhile, therefore, to see if the Brahmanas are divine revelation The first point to see in this connection is whether Brahmanas saw the light of the day prior to the Samhitas,simultaneously with them or at a much later date. In the Vedic Age (Vol 1) a general view of Vedic literature is noted. It is stated there that it consists of (1) The Samhitas, next to them (2) the Brahmanas, (3) Shrauta Sutras, Aranyakas and Upanishads and these were produced in this very order. And Dr. Radhakrishnan has well guessed that 'for the sacrificial system of the Brahmanas to become well established, for the philosophy of the Upanishads to be fully developed it would require a long period, (p 67 of his Indian Philosophy Vol 1). And in deviating from the interpretation of the Vedas according to the rational method propounded by Aurobindo Ghosh, without giving any satisfactory reason, Dr. Radha Krishnan admits that Brahmanas came into existence later than the Samhitas. Says he, "In interpreting the spirit of the Vedic hymns we propose to adopt the view of them excepted by the Brahmanas and the Upanishads which came immediately after. These later works are a continuation and a development of the views of the hymns." (ibid p. 70) The hymns form the foundation of Subsequent Indian thought. While the Brahmanas emphasise the sacrificial ritual shadowed forth in the hymns, the Upanishads carry out their philosophical suggestions' (ibid p. 116) " At the stage of life represented by Brahmanas, simple religion of the Vedic hymns was one of sacrifices. Men's relations with the Gods were mechanical. a question of give and take, profit & loss (ibid p 147)". One may not agree with all that Dr RadhaKrishnan says, it is beyond doubt however that he admits that Brahmanas were produced long after Sanhitas. Mr. Bal Gangadhar Tilak has also said that Sanhitas date about 4500 B.C. and the Brahmanas 2500 B. C. Whether these dates are correct or not it is obvious that according to Tilak the Brahmanas are a much later production than the Vedas. In his History of Vedic Literature Mr. Bhagvat Dutt has given reasons for holding that Brahmanas were written during the Mahabharat period. V. Chandra-Sekharan rightly says in the ' Sri Aurobindo Mandir Manual (Jayanti Number, p. 175) that " there is nothing before the Veda to throw its light upon it and between it and the earliest attempts at its interpretation in the Brahmanas there lies a wide and very deep gap in tradition. Already in the Bahmanas they are guessing and speculating about the meaning of the hymns, trying out various interpretations, suggestions fanciful and fictitious etymologies sometimes on sheer good faith and some times with the deliberate intention of grafting new significances into the text.' According to this opinion also the Brahmanas are much posterior to the Vedas and their authenticity can not obviously be accepted where they go against the Vedas in any sense. Now the Brahmanas being a much later production than the Vedas they could not possibly be the vedic divine revelation. Then again there is a world of difference between the language of the Brahmanas and the language of the Vedas. V. Chandra-Sekharan has truly said that " The language of the Veda is much nearer to its origins than any other that we know of and its words seem to preserve some special virtues of their nascent condition (p, 185). The Vedic Age on pp. 416, 418 and 420 says : "The Brahmana literature is vast and varied, but also dry and repulsive, excepting where, leaving their proper subject which is mystical and puerile speculation on ritual practices, the Brahmana authors cite illustrative examples from social life, invent aetiological myths to serve as the basic principle to all imaginable concrete facts, or simply narrate mythological or semi-historical stories, sometimes in the form of ballads ..But the language with its even rhythm is not without a beauty of its own strangely like that of the early canonical texts in Pali

(Continued)

(पृष्ठ ७ का शेष

अकस्मात् पैदा हुए क्रोध और मोह से अथवा स्वाभाविक लोभ से भी जब सब के लोग आपस में बात-चीत करना बन्द कर दें, तब यह उनकी पराजय का लक्षण है ॥२६॥

जात्या च सदृशाः सर्वे कुलेन सदृशास्तथा ॥३०॥
न चोद्योगेन बुद्ध्या वा रूपद्रव्येण वा पुनः ।
भेदाच्चैव प्रदानाच्च भिद्यन्ते रिपुभिर्गणाः ॥३१॥
तस्मात् संघातमेवाहुर्गणानां शरणं महत् ॥३२॥

जाति और कुल में सभी एक समान हो सकते हैं, परन्तु उद्योग, बुद्धि और रूप सम्पत्ति में सबका एक सा होना सम्भव नहीं है। शत्रु लोग गणराज्य के लोगों में भेद बुद्धि पैदा करके तथा उनमें से कुछ लोगों को धन देकर भी समूचे संघ में फूट डाल देते हैं अतः संघबद्ध रहना ही गणराज्य के नागरिकों का महान् आश्रय है ॥३०-३२॥

बहाई सम्पादक का

भ्रामक दृष्टिकोण

श्री भजनलाल जी शर्मा, सिद्धान्त शास्त्री

जिस प्रकार ईसाई धर्म प्रचारकों ने समस्त विश्व को कुछ भागो में प्रचार की दृष्टि से बांट रखा है उसी प्रकार बहाई सम्प्रदाय के प्रचारकों ने भी प्रत्येक महाद्वीप में अपने केन्द्र स्थापित कर रखे हैं। इन का मुख्य केन्द्र हेफा इजरायल में '-विश्वन्नाथ मन्दिर के नाम से स्थापित किया हुआ है। संसार भर में कोई देश ऐसा नहीं है जहां पर इन की "राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा" न हो। भारत में "भारतीय बहाई राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा" के नाम से नई दिल्ली मे इन का केन्द्र विद्यमान है जिस की शाखाए भारत वर्ष के मुख्य २ शहरों में कार्यरत हैं। मध्य प्रदेश के आदि वासी एव ग्रामीण क्षेत्रों में इन का प्रचार अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका है।

इस मत के संस्थापक श्री बहाउल्ला ने यह घोषणा की कि मेरे अन्दर अभी तक के समस्त ईश्वरावतारों एव पैगम्बरों की आत्माएं विद्यमान है तथा जिन के अवतरित होने की भविष्य वाणियां धार्मिक ग्रन्थों में लिखी है वह मैं ही हू और कोई नही। इसी आधार पर बौद्ध देशो में ये अपने गुरु को (श्री बहाउल्ला) को बुद्ध का अवतार, ईसाई देशों में ईसा का अवतार, मुस्लिम देशों में मुहम्मद का अवतार, एवं हिन्दु देशों में कृष्ण अथवा निष्कलंकी अवतार सिद्ध करने का असफल प्रयत्न करते रहते है।

इसी बहाई मत की एक पत्रिका ग्वालियर से निकलती है जिस का नाम है:—"आभा" इस के सम्पादक महोदय का शुभ नाम है श्री नाथूलाल जी जो बड़े गर्व के साथ अपने नाम के सामने वानप्रस्थी एव वैदिक धर्म तथा संस्कृत विशारद लिखते हैं। ऐसा सुनने में आया है कि आप ने कुछ लालच वश आर्य समाज को छोड़ कर बहाई सम्प्रदाय को अपना लिया है। इसी लिये उपरोक्त पत्रिका में सम्पादक महोदय कभी २ आर्य समाज के सिद्धान्तों स्वामी दयानन्द की विचार धाराओं एवं वैदिक धर्म के ग्रन्थों पर आक्षेपात्मक लेख लिखते रहते हैं।

उपरोक्त पत्रिका के दिसम्बर ६३ एवं जनवरी ६४ के अंकों में आर्य समाज की त्रैतवाद सम्बन्धी विचार धारा पर कुछ निम्न कोटि के आक्षेप किये गये थे। स्वामी जी के सम्बन्ध में ये सिद्ध करने का असफल प्रयत्न किया गया था कि प्रारम्भ में महर्षि अद्वैतवाद को मानते थे फिर त्रैतवाद को मानने लगे थे तथा अंत में बहाई सदेश मिलने के पश्चात सार्वजनिक सनातन नित्य धर्म को आजीवन मानते रहे थे। इस अतिरिक्त उक्त लेखक महोदय ने आगे चल कर लिखा था कि आर्य समाज का प्रथम नियम (अर्थात् सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।) ही त्रैतवाद का खण्डन एव अद्वैतवाद का मण्डन करता है।

बहाई पत्रिका के सम्पादक महोदय के इस भ्रम को दूर करने के लिये इन पक्तियों के लेखक का एक लेख मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक एव सामाजिक मासिक पत्र "आर्यावर्त" के फरवरी १९६४ के अक में "बहाई भ्रम निवारण" के नाम से प्रकाशित हुआ था। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि बहाई सम्पादक का भ्रम अभी भी पूर्ववत ही बना हुआ है। क्योंकि उन्होंने जौलाई १९६६ की "आभा" में पुनः उसी प्रकार का आक्षेप किया है। सम्पादक महोदय अपने "धर्म की कसोटी और बहाई धर्म" शीर्षक से सम्पादकीय लेख में लिखते हैं कि स्वामी दयानन्द का आदेश है कि "सबधर्मों के सज्जन विद्वान् मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि (द्वैतवाद-त्रैतवाद आदि) परस्पर विरुद्ध मतो को शीघ्र छोड कर एक अविरुद्ध मत का ग्रहण कर के परस्पर आनन्दित हो यही वेदादि शास्त्र, प्राचीन ऋषि मुनियों का और मेरा भी सिद्धान्त और निश्चय है। बुद्धिमानों के सामने अधिक लिखना आवश्यक नहीं क्योंकि थोडे ही लेख में सब कुछ जान लेते हैं" उपरोक्त प्रकरण का हवाला देते हुये सम्पादक महोदय ने स्वामी जी के एक विज्ञापन का हवाला भी प्रस्तुत किया है। तथा अन्त में लिखा है कि स्वामी जी सर्वतन्त्र सिद्धान्त सनातन नित्य धर्म (बहाई विश्व धर्म) की विचार धारा को ही मान्यता देते थे। त्रैतवाद सिद्धांत को नहीं।

पाठक-वृंद बहाई सम्पादक की खींचा-तानी को भली प्रकार से समझ सकते हैं कि जहां तक विज्ञापन की भाषा है वह तो ठीक ही है परन्तु (ब्रैकिट) के अन्दर जो शब्द (द्वैतवाद एव त्रैतवाद) लिखे गये हैं वह सम्पादक महोदय के दिमाग की करामात है। इस प्रकार के भ्रामक प्रचार करने का तात्पर्य यह है कि किसी प्रकार से आर्य समाज की विचार धाराओं एव स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों में अन्तर दर्शाया जावे। बहाई सम्पादक को त्रैतवाद एवं सार्वजनिक सनातन धर्म में परस्पर विरोधी विचार धाराएं प्रतीत हो रही है जब कि सार्वजनिक या सनातन वेदोक्त धर्म ही त्रैतवाद समर्थक है। स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित किसी भी ग्रन्थ में त्रैतवाद के सिद्धान्त का खण्डन नहीं है स्वामी जी तो आजीवन त्रैतवाद का प्रचार ही करते रहे थे।

बहाई मत के चेले भारत मे अपने धर्म को वेदोक्त लिखते हैं जब कि वेदों से उन का दूर का भी सम्बन्ध नहीं है ये इस्लाम की एक शाखा मात्र है। यदि बहाई सचमुच वेदो को मानने लग जावे तो इस से बढ़ कर ससार का और क्या उपकार हो सकता है। परन्तु इस प्रकार के जाल बिछाने का एक मात्र कारण यह है कि जिससे भारत की भोली जनता को पथ-भ्रष्ट करने में सुविधा हो सके। इस प्रकार के षड्यन्त्रों से सदैव सावधानता बरतना अत्यन्त आवश्यक है।

मोतीलाल की सिगरेट

संसद सदस्य माननीय श्री महावीर त्यागी जी ने अपने संस्मरणों के आधार पर "मेरी कौन सुनेगा", बड़ी ही मनोरंजक और तथ्यपूर्ण पुस्तक लिखी है जिसे राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली ने प्रकाशित की है। प्रस्तुत पुस्तक से एक ऐसी घटना दे रहे हैं जिसकेसम्बन्ध में लेखक के निम्न शब्द ध्यान देने योग्य हैं:—

मेरी किताब की सारी कीमत इसी छोटी सी घटना में है।

यह घटना सिगरेट से सम्बन्धित है। प्रतिदिन करोड़ों रुपया सिगरटों में फूकने वाले देशवासी इस घटना से कुछ शिक्षा प्राप्त करेंगे। इसी आशा के साथ यह घटना पाठकों की सेवा मे प्रस्तुत है। —सम्पादक

फिर उसी दिन शाम को हम बापू की प्रार्थना में गए। वहा जो कुछ हुआ वह तो अभी तक दुनिया को मालूम ही नहीं। मेरी किताब की सारी कीमत इसी छोटी-सी घटना में है। प्रार्थना के मच पर बापू के पास ही और नेताओ के साथ प० मोतीलाल नेहरू भी पश्चात्ताप की मुद्रा बनाये बैठे थे। अपनी पथरीली-सी आंखों को इधर-उधर घुमाते हुए भाईजी (मोतीलाल नेहरू) कुछ खोये-से दिखाई देते थे। मानो किसी खोये हुए विचार को ढूढ रहे हों। ऐसे ही असमजस को भुलाने और गहरे मानसिक घाव को दबाने के लिए लोग सिगरेट आदि का पान करते हैं। अनायास गीता के पाठ के ठीक बीच मोतीलाल नेहरू ने अपनी सिगरेट सुलगा ली और लम्बे-लम्बे दम खींचने लगे। बापू ने उनकी ओर देखा और आंख मींच ली। प्रार्थना समाप्त होने पर प्रवचन आरम्भ हुआ। बापू बोले: "आज तो मेरा मन पाप का वासा हो गया। मोतीलाल तो मेरे सगे भाई के समान हैं, इनसे तो मुझे कभी पर्दा नहीं हुआ। मैं तो इनसे सारी बात कह सकता। अपने जी का रहस्य भी खोल सकता। फिर भी इन्होंने जो अपनी सिगरेट जलाई तो मैंने देखा, पर मैं देखकर चुप हो गया। मेरा फर्ज था, इनसे बोलूं कि प्रार्थना में सिगरेट नहीं पीना। पर मैं अपने मन को दबाकर बैठ गया। पर मन तो पाप को हजम नहीं कर सकता फिर प्रार्थना में मन लगाना कैसे सम्भव हो सकता। मेरा मन साफ होता तो मैं इनको सिगरेट बुझाने को जरूर कहता। पर मेरे मन में तो आज खोट आ गया। मुझे ऐसा लगा कि मोतीलाल तो मुझसे रुष्ट हैं, वह प्रार्थना भी छोडकर न चले जाएं। ऐसा डर मुझे लगा। मोतीलाल तो मुझे प्यार करते हैं सो मैं जानता हूं फिर मुझे डर कैसा डर तो पाप की परछाई को कहतेहैं।" इतने में मोतीलाल जी की घिग्घी बंध गई। सिगरेट बिना बुझाये दूर फेंककर रुमाल से आंसू पोंछते हुए फफक-फफक कर रोने लगे। कहां तक सीखेगी हमारी सन्तति सच्चे दिलों की भाषा। दिल आंसुओं की भाषा जानता है। मोतीलाल के उन पवित्र मोतियों की झलक ने हमारी भी आंखें निखार दीं। मानो अपने मन के पाप भी धुल गये। आज हमें नाचने, गवाने और हंसाने वाले तो बहुत हैं, पर वे आत्मस्नान कराने वाले न रहे। अब आंखें रोना चाहती हैं। फिर से आ जाओ बापू!

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

चुनाव

—आर्य समाज राणाप्रताप बाग दिल्ली के निर्वाचन में श्री नारायणदास जी प्रधान, श्री विद्याधर वर्मा जी मन्त्री तथा श्री करमचन्दजी कपूर कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज (गु० वि०) राखी तालाब फिरोजपुर के निर्वाचन मे श्री डा० साधुचन्द जी प्रधान, श्री तुलसीराम जी, महाशय मदनजित् जी आर्य उपप्रधान, श्री हवनलाल जी महता मन्त्री तथा श्री बरकतराम जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज लोधी रोड (जोर बाग) नई दिल्ली के निर्वाचन में श्री चुन्नीलाल जी ढांडा प्रधान, श्री राजकुमार शर्मा जी मन्त्री एव श्री ओम्प्रकाश जी शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज, मुंगेर (बिहार) के निर्वाचन में श्री शिवदत्त प्रसाद जी प्रधान, श्री सहदेव मडल मन्त्री एव श्री डा० रामप्रसादराय कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज, लड्डूघाटी पहाड़गंज नई दिल्ली के निर्वाचन में श्री डालचन्द जी प्रधान, श्री ज्योति प्रसाद जी मन्त्री, तथा श्री पदमचन्द जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज, दीपनगर भागलपुर के निर्वाचन में श्री रामेश्वरप्रसाद जी आर्य प्रधान, श्री श्रीनिवास जी श्री रामेश्वरप्रसादसिंह जी उपप्रधान साहबदयाल जी आर्य, मन्त्री एव श्री राजेश्वरप्रसादजी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज आर्यपुरा सब्जी मंडी दिल्ली के चुनाव में श्री सोमदेव जी हस प्रधान, श्री हरिसिंहजी गुप्त मन्त्री तथा श्री जगदीशप्रसाद जी कौशल कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज गजनेर रोड बीकानेर के निर्वाचन में श्री रामदेव जी आचार्य एडवोकेट प्रधान, श्री मोहनलाल जी सारस्वत मन्त्री तथा श्री नारायणदास जी माली कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर के निर्वाचन में श्री ओमराजजी प्रधान, श्री डा० उदयभानु जी उपप्रधान, श्री रामप्रकाश जी बसल मन्त्री तथा श्री भैरवलाल जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

शोक

—आर्य समाज, सीतापुर ने अपने पूर्व प्रधान श्री म० रामानन्द जी के निधन पर शोक प्रकट किया है।

संस्कार

बनेड़ा (मेवाड़) निवासी कु० बृजेन्द्र कुमार जी नारद एम० ए० के सुपुत्र धीरेन्द्र कुमार का यज्ञोपवीत सस्कार वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

—देवरिया निवासी श्री बैजनाथ प्रसाद जी के सुपुत्र श्री विनयप्रताप जायसवाल का विवाह इलाहाबाद निवासी श्री रामहर्ष गुप्त की पुत्री कुमारी राधागुप्त के साथ वैदिक विधी से सम्पन्न हुआ।

—प्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री पं० पूर्णचन्द्र जी के सुपुत्र डा शिवरामजी का विवाह श्री चौ० अमरसिंह जी की सुपुत्री कुमारी उषा एम० ए० के साथ पूर्ण वैदिक विधिसे सम्पन्न हुआ। डा० महोदय गुरुकुल कागड़ी के स्नातक तथा आर्यसभा बागपत (मेरठ) के मन्त्री है।

—आर्य समाज कबीर चौक साबरमती अहमदाबाद में श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की पुण्यतिथी मनाई। अनेक विद्वानोंके भाषण हुए।

—डी० ए० वी० हाई स्कूल, टौणीदेवी के मैट्रिकुलेशन का परीक्षा परिणाम ९६ प्रतिशत रहा। ६४ परीक्षार्थियो मे से ६१ उत्तीर्ण हुए हैं। मिडिल का परीक्षा परिणाम भी ९० प्रतिशत रहा। ९८ में से ८७ उत्तीर्ण हुए। इसका श्रेय श्री गोविन्दराम जी हेड मास्टर और सहयोगी अध्यापक वर्ग पर है।

सत्यार्थ प्रकाश दान देवें

श्री पं० देवव्रतजी धर्मेन्दु आर्योपदेशक ने धनीमानी, दानी सज्जनों से अपील की है कि आर्य युवक परिषद् दिल्ली (रजि०) गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वेद सप्ताह मे ता० ४ सितम्बर १९६६ को सारे देश में परीक्षाओं का आयोजन कर रहा है। इन परीक्षाओं में बैठने वाले जिन परीक्षार्थियों के पास स्वाध्याय के लिये सत्यार्थ प्रकाश नहीं हैं उनकी सहायता के लिये अधिक से अधिक सत्यार्थ प्रकाश दान में देवें तथा दूसरों से भी दिलावें। सत्यार्थ प्रकाश का मूल्य २) रुपये है।

अतः दानी सज्जन रुपये या पुस्तकें परिषद् कार्यालय १६५४, कूंचा दखिनी राय, दरियागंज दिल्ली में शीघ्र से शीघ्र भेज कर पुण्य के भागी बनें।

धन्यवाद

इस सप्ताह में श्री शकरलाल जी आर्य अलीपुर कलकत्ता ने प्रति सप्ताह सार्वदेशिक की १० प्रतियों के और २५ प्रतियों के आर्डर श्री श्रीकृष्ण जी मैसूर ने भिजवाये है। हार्दिक धन्यवाद

—प्रबन्धक

आर्य समाज नैनीताल

आर्य समाज नैनीताल में आर्य-समाज के कर्मठ सेनानी एवं उत्तर-प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष श्री मदन मोहन वर्मा का अभिनन्दन किया गया तथा आर्यजगत् के प्रति उनकी रचनात्मक सेवाओं के लिए आर्य-समाज चौक लखनऊ के मन्त्री श्री छेदीलाल अग्रवाल ने उन्हें "आर्यरत्न" की उपाधिसे अलकृत किया श्री वर्माजी के सम्मान में बोलते हुए श्री छेदीलाल ने कहा "वर्मा जी ने आर्य समाज की जो अमूल्य सेवाए की है उनका मूल्य आंकना सम्भव नहीं। जीवन के मैदान मे हम सब खिलाडी हैं और खिलाड़ी की सफलता के लिए उसे पुरस्कार दिया जाता है तो प्रोत्साहन के लिए। इसीलिये यह उपाधि भी समाज द्वारा वर्मा जी की सेवाओं के प्रति आदर का प्रतीक है। आर्यसमाज को ऐसे कर्मयोगी पर गर्व है।

अपने सम्मान के लिये आर्यसमाज के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करते हुये श्री मदनमोहन वर्माजी ने अपने सक्षिप्त भाषण मे कहा "मनुष्य जीवन की सार्थकता ज्ञान और तप के साम-जस्य में है। माना कि कुम्हार को घड़ा बनाने का पूर्ण ज्ञान है किन्तु वह जब तक अपने ज्ञान को क्रियात्मक रूप देकर घड़े का निर्माण नहीं करता तब तक उसका ज्ञान अधूरा है। अतः ज्ञानी होने के साथ साथ तपस्वी होना भी आवश्यक है। वर्मा जी ने भावुक-तापूर्ण शब्दों में आर्यसमाज के सदस्यों से अनुरोध किया कि वे मौखिक बातें करने की अपेक्षा कर्मठ और तपस्वी बनने की प्रतिज्ञा करें। उपदेशकों का कार्य केवल उपदेश देना ही नहीं अपितु उसे अपने जीवन में ढालकर ससार के सम्मुख आदर्श रखना है।

इस अवसर पर इलाहाबाद के आर्यनेता श्री दयास्वरूप जी तथा योगेन्द्रपाल जी ने वर्मा जी की सेवाओं का उल्लेख करते हुये कहा "वर्मा जी आर्यजगत के महान् सेनानी और वयोवृद्ध नेता हैं जिन्होंने राजनीतिक मच पर भी आर्य समाज के कार्य को प्रोत्साहन दिया और सामाजिक क्षेत्र में भी।" श्री दयास्वरूप जी ने विश्व सस्कृतियों का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करते हुये आर्य समाज की श्रेष्ठता प्रतिपादित की। अन्त में श्री बांकेलाल जी के धन्यवाद के शब्दों के अनन्तर शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

—शिवप्रकाश शर्मा

डा० दुखनराम अभिनन्दन ग्रन्थ

एशिया के श्रेष्ठ नेत्र-चिकित्सकों में अन्यतम, समाज सेवी एव प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री पद्म भूषण डा० दुखन राम (भूतपूर्व उपकुलपति, बिहार विश्वविद्यालय) की अड़सठवीं वर्ष-गांठ पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जायगा। इस ग्रन्थ में डा० राम के जीवन, चरित्र और व्यक्तित्व से सम्बन्धित लेख एव संस्मरणों के अलावा चिकित्सा शास्त्र सम्बन्धी महत्वपूर्ण निबन्ध, आर्य समाज द्वारा प्रवर्तित समाजसुधार और वैदिक धर्म की प्रवृत्तियो का सर्वेक्षण तथा आधुनिक भारतीय जीवन की प्रबुद्ध प्रवृत्तियों का सिंहावलोकन भी किया जायगा।

हम आपके पत्र के पाठकों से आग्रह करेंगे कि वे ग्रन्थ के अनुरूप अपनी रचना भेजें। डा० राम के जीवन चरित्र और व्यक्तित्व से सम्बन्धित लेख एव सस्मरणों का भी स्वागत किया जायगा।

प्रधान मन्त्री,
डा० दुखनराम अभिनन्दन ग्रन्थ समिति
श्री शकर जी मिल्स,
मखनियां कुंआ रोड, पटना-४

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर को योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। पत्र-व्यवहार करें या स्वय मि[illegible]

Suave
in
a
Suit

(पृष्ठ ५ का शेष)

है कि उन्हें हिन्दी और सस्कृत मे वे विशेषताए दिखाई नहीं दे रही जो उनमें हैं और उसका कारण यह है कि उनके दिमागो पर यूरोपीय सभ्यता का इतना जबरदस्त प्रभाव है कि वे यह भी अनुभव नही कर रहे कि भारत किसी स्थिति मे भी अपनी मूल सभ्यता से दूर नही जा सकता और भाषा सभ्यता का एक मूल अग है। आज भारत की आर्य भाषाओं को नष्ट-भ्रष्ट करने का पहला कदम उठाया गया है और वह यह कि यह सिफारिश की गई है कि भारत की भाषाए देवनागरी लिपि मे लिखी जाने की बजाये रोमन लिपि मे लिखी जाएं। मैं समझता हू कि यह एक ऐसा कदम है जिसका परिणाम भारत के लिए घातक होगा। अधिक आश्चर्य इस बात पर है कि जो मामले आज से वर्षों पूर्व तय हो चुके थे उन्हें आज फिर से खोलने का प्रयत्न हो रहा है। कौन नही जानता कि हर एक ने यह स्वीकार किया है और भारत सरकार भी एक तरह से यह बात मानती है कि भारत की सब भाषाओं की लिपि देवनागरी होनी चाहिए। नि सदेह उसे दूसरो पर ठोंसने का कोई प्रयत्न न होना चाहिए परन्तु उसे तिलांजलि देकर अब यूरोप की रोमन लिपि के पीछे भागना दासत्व मनोवृत्ति तो है ही, इसके अतिरिक्त यह अपनी सस्कृति और भाषा को मिटा देने के एक कुटिल प्रयास से भी कुछ कम नहीं।

ऐसा क्यों किया जा रहा है, यह तो कहना कठिन है परन्तु इतना अवश्य कहा आएगा कि यदि ऐसा हो गया तो यह भारत की सस्कृति और सभ्यता पर एक ऐसा अनर्थ होगा, जिसका वर्णन करना कठिन है। रोमन लिपि के लाभ हैं परन्तु निश्चय ही ये लाभ उन लोगों के लिए हैं जिनकी न कोई भाषा है न लिपि। कुछ जगली कबीले भले ही इसे अपना लें, परन्तु जिन लोगो की भाषा विकसित है उनके लिए यह सुझाव देना भी एक ऐसा कृत्य है जिसकी जितनी निन्दा की जाये, कम है। कहना कठिन है कि लोकसभा के सदस्य इस सिफारिश के बारे मे क्या सोचते हैं क्योंकि बहुमत कांग्रेस दल का है और कांग्रेस हाईकमान और कांग्रेस के नेता भाषा के मामले में भी उतने ही योग्य हैं, जितने और मामलों मे हैं। इसलिये कोई नही कह सकता कि वे इस कदम के विनाशकारी परिणाम से परिचित भी हैं। जो भी हो, यह कहा जायेगा कि यदि ऐसा कर दिया गया तो भारत की उन्नति और उसके भविष्य को एक जबरदस्त खतरा पैदा हो जायेगा।

—वीर अर्जुन से

(शेष पृष्ठ ६ का)

किया जा रहा है। सन्त कहलाने वाले बिनोवा भावे तक ने 'गीता प्रवचन' पुस्तक में हिन्दू ऋषि-महर्षियों को गोमांस खाने वाला बताकर गो-मांस खाने तक का प्रचार कर डाला है फिर उनके ये चेले और क्या करेंगे ?"

मैंने प्रश्न किया—"आज जो देश में परिवार-नियोजन आन्दोलन चलाया जा रहा है, उसके सम्बन्ध मे आपका क्या मत है ?" देहलवी जी ने तपाक से उत्तर दिया —

परिवार-नियोजन हिन्दुओं के लिए एक भीषण खतरा सिद्ध होगा। परिवार-नियोजन के कुचक्र में मुसलमान-ईसाई तो फंसने वाले नहीं है, केवल हिन्दू मूर्खता वश इसमें फंस रहे हैं। कुछ ही दिनों में हिन्दुओं की संख्या घट जायेगी और मुसलमान ईसाइयों की बढ़ जायेगी। जब मुसलमान एक नए पाकिस्तान की मांग उठायेंगे, तब हमें "परिवार-नियोजन की भयंकरता का आभास होगा।"

इस प्रकार देहलवी जी से हम लगभग दो घटे तक वार्ता करते रहे और उन्हें विश्राम करने देने के उद्देश्य से विदा लेकर चले आये।

देव दयानन्द का चमत्कार

जादू वह जो सिर चढ़ बोले

श्री ज्ञानी पिण्डीदास जी, प्रधान, आर्यसमाज लोहगढ़, अमृतसर

पौराणिक वाममार्गियों तथा तान्त्रिक बौद्धों ने अपने दुष्कृत्यों की पुष्टि में शास्त्र प्रमाण उपलब्ध कराने की होड़ में प्राचीन आर्ष ग्रन्थों में अत्यधिक मात्रा में प्रक्षेप किये, जिसका परिणाम यह हुआ कि मन्त्र संहिता वेद के अतिरिक्त समस्त आर्ष-वाङ्मय में उनके घृणित सिद्धान्तों के पुष्टिकारक प्रमाण प्रभूत मात्रा मे प्राप्त हो जाते हैं, जिन को समक्ष रखकर विदेशी एव विधर्मी लोग आर्यों के मुंह आते और भोली-भाली जनता को अपनी भेड़ों के रेवड़ों में सम्मिलित करते रहते हैं।

महर्षि दयानन्द ने आर्य-धर्म, आर्य-जाति एव आर्यावर्त के सर्वतोमुखी समुत्थान तथा समुन्नति को दृष्टि गोचर रखते हुए 'स्वमन्तव्यामन्तव्य' में यह सिद्धान्त स्थिर किया कि—

चारों वेदों (विद्याधर्म युक्त ईश्वर प्रणीत संहिता मन्त्र भाग) को निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण मानता हूं और चारों वेदों के ब्राह्मण, छ. अंग, छः उपांग, चार उपवेद और ११२७ वेदों की शाखा जो कि वेदों के व्याख्यान रूप ब्रह्मादि महर्षियों के बनाए ग्रन्थ हैं, उन को परतः प्रमाण अर्थात् वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण और जो इनमें वेद विरुद्ध वचन हैं उनका अप्रमाण करता हूं।"

हमारे दुर्भाग्य से ऐसा भी समय आया जब पुराणों और तन्त्रों की रचना सुन्दर-सुललित सस्कृत में की गई और जनता के मस्तिष्क में यह बात अंकित कर दी गई कि जो कुछ भी देववाणी (सस्कृत) मे लिखा उपलब्ध होता वह (चाहे कितना भी बीभत्स, घृणास्पद, अप्राकृतिक, ऊल-जलूल, अनर्गल तथा अण्ड-बण्ड क्यों न हो) प्रमाण कोटि मे रखने योग्य है, माननीय है पठनीय है, मननीय है तथा अनुकरणीय है। परन्तु युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने उपदेश दिया कि इस प्रकार के साहित्य में कहीं-कहीं अच्छी बात भी हो तो भी 'विष कुम्भ पयोमुखम्' की लोकोक्ति के अनुसार अमान्य है, हेय है अत त्याज्य है! परन्तु 'तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति' के अनुयायी कूप मण्डूकों ने उक्त उपदेश पर कान नहीं धरा इस पर आचरण नहीं किया।

जब महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश के ११ वां, १२ वां, १३ वां और १४ वां समुल्लास लोगों के समक्ष प्रस्तुत हुए तो पुराणी, जैनी (बौद्धों) किरानी और कुरानी सम्प्रदायों में उथल-पुथल मच गई, हल-चल आने लगी। सबने यथा शक्ति, साहस पूर्ण ढंग से अपने अपने धर्म ग्रन्थों की उल्टी-सीधी ताबीलें (भाष्य-टीका-टिप्पणी) करना आरम्भ की और अपने विचार मे महाराज दयानन्द जी की यौक्तिक गोलाबारी से अपने सम्प्रदायों को बचाने का, सुरक्षित कर लेने का यत्न किया।

स्वाध्यायशील सज्जन जानते हैं कि हमारे प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थों—रामायण तथा महाभारत में भी स्थान-स्थान पर मद्य-मांसादि के व्यवहार का प्रक्षेप मिलता है। परोपकार प्रिय दयानन्द की दिव्य दया से उन लोगों पर भी जो कि उक्त ग्रन्थों को अक्षरशः प्रामाणिक मानने का दावा किया करते थे सत्य अर्थ का प्रकाश होने लगा है, दयानन्द का जादू अपना प्रभाव दिखाने लगा है और वे भी इन ग्रन्थों में आये कुत्सित शब्द-प्रयोगों, बीभत्स पद-वाक्य-व्यवहारों एवं घृणास्पद श्लोकों का अर्थ बदलने का प्रशसनीय प्रयत्न करने लगे हैं।

यह उल्लेखनीय है कि प्रात' स्मरणीय महामना श्री प० मदन-मोहन जी मालवीय ने अपने जीवन काल में भरसक प्रयत्न किया कि इन ग्रन्थों का सशोधन किया जाय, परन्तु शोक! महाशोक!! कि कतिपय कट्टर-पन्थी दुराग्रहियों की कुत्सित हठधर्मी के कारण उस सच्चे धर्म प्रेमी, वास्तविक देश हितैषी एव राष्ट्रभक्त महात्मा की बात भी किसी ने नहीं सुनी और वे अपने हृद्गत भावों को दिल में ही लेकर इस नश्वर शरीर की लीला समाप्त करके चले गये।

आज हम वाल्मीकीय रामायण में से कुछ श्लोक जिनमें प्रयुक्त बुरे शब्दों के अच्छे अर्थ करने का यत्न किया गया है, विज्ञ पाठकों के समक्ष उपस्थित करेंगे। यह परिवर्तन कट्टर पौराणिक पद्धति के प्रतिनिधि गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा अनूदित तथा प्रकाशित श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण की टीका में द्रष्टव्य है। पाठकवृन्द पढ़ें और अपने ज्ञान में वृद्धि करें—

सुरा घट सहस्रेण मांस-भूतौदनेन च। यक्ष्ये त्वां प्रीयतां देवि! पुरीं पुनरुपागता॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ५२ श्लो० ७९

अर्थात्—देवी! पुनः अयोध्यापुरी में लौटने पर मैं सहस्रों देव दुर्लभ पदार्थों से तथा राजकीय भाग से रहित पृथ्वी, वस्त्र और अन्न के द्वारा आपकी पूजा करूंगी। आप मुझ पर प्रसन्न हों।★

(जब भगवान् राम, लक्ष्मण और सीता वनवास के लिये जाते हुए भगवती भागीरथी को नाव द्वारा पार कर रहे थे, तब मध्यधारा में महारानी सीता ने गंगा की प्रार्थना करते हुए उक्त वाक्य कहे थे।

२–तौ तत्र हत्वा चतुरो महामृगान्, वराहमृश्यं पृषतं महारुरुम्।
आदाय मेध्यं त्वरितं बुभुक्षितौ, वासाय काले ययतुर्वनस्पतिम्॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ५२ श्लोक १०२

अर्थात्—वहां (वत्सदेश-प्रयाग पहुंचकर) उन दोनों भाइयों (राम-लक्ष्मण) ने मृगया विनोद के लिये वराह, ऋश्य, पृषत और महारुरु—इन चार महामृगों पर बाणों का प्रहार किया। तत्पश्चात् जब उन्हें भूख लगी, तब पवित्र कन्द-मूल आदि लेकर साय काल के समय ठहरने के लिये (वे सीता जी के साथ) एक वृक्ष के नीचे चले गये।

३–यक्ष्ये त्वां गोसहस्रेण सुराघट-शतेन च। स्वस्ति प्रत्यागते रामे पुरीमिक्ष्वाकुपालिताम्॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ५५ श्लोक ३२

अर्थात् 'इक्ष्वाकुवंशी वीरों द्वारा पालित अयोध्यापुरी में श्री रघुनाथजी के सकुशल लौट आने पर मैं आपके (गंगाजी के) किनारे एक सहस्र गौओं का दान करूंगी और (सुराघट शतेन च) सैंकड़ों देव दुर्लभ पदार्थ अर्पित करके आपकी पूजा सम्पन्न करूंगी।'

४–क्रोशमात्रं ततो गत्वा भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ। बहून् मेध्यान् मृगान् हत्वा चेरतुर्यमुनावने॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ५५ श्लोक २०

अर्थात्—इस तरह एक कोस की यात्रा करके दोनों भाई श्रीराम और लक्ष्मण (प्राणियों के हित के लिये) मार्ग में मिले हुए हिंसक पशुओं का वध करते हुए यमुना तटवर्ती वन में विचरने लगे।

५–ऐणेयं अपयस्वैतच्छालां यक्ष्यामहे वयम्। त्वर सौम्य मुहूर्तोऽयं ध्रुवश्च दिवसो ह्ययम्॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ५६ श्लोक २५

अर्थात्—(भगवान् राम ने लक्ष्मण से कहा) 'लक्ष्मण! इस (ऐणेय) गजकन्द को पकाओ। इस पर्णशाला के अधिष्ठाता देवताओं का पूजन करेंगे। यह सौम्य मुहूर्त है और यह दिन भी 'ध्रुव' सञ्ज्ञक है। अतः इसी मे यह शुभ कार्य करना चाहिये।'

६–★ऐणेयं मांसमाहृत्य शालां यक्ष्यामहे वयम्। कर्त्तव्यं वास्तु शमनं सौमित्रे चिरजीविभिः॥

अयोध्या काण्ड सर्ग २६ श्लोक २२

अर्थात्—भगवान् राम बोले—'सुमित्रा कुमार! हम (ऐणेय मांस) गजकन्द का गूदा लेकर उसी से पर्णशाला के अधिष्ठाता देवताओं का पूजन करेंगे; क्योंकि दीर्घ जीवन की इच्छा करने वाले पुरुषों को वास्तु-शान्ति अवश्य करनी चाहिये।

★

★उक्त सटीक रामायण में इस श्लोक के नीचे निम्न टिप्पणी देखने योग्य है—

इस श्लोक में आये हुए 'सुराघट-सहस्रेण' की व्युत्पत्ति इस प्रकार है—सुरेषु देवेषु न घटन्ते न सन्तीत्यर्थः, सहस्रं तेन सहस्रसख्याकसुरदुर्लभ पदार्थेनेत्यर्थः। 'मांस भूतौदनेन' की व्युत्पत्ति इस प्रकार समझनी चाहिये

मांसभूतौदनेन मा नास्ति असौ राजभागो यस्यां सा एव भूः पृथ्वी च उत वस्त्रं च ओदनं च एतेषां समाहारः, तेन च त्वां यक्ष्ये।

यहां 'ऐणेयं मांस' का अर्थ है—गजकन्द नामक कन्द विशेष का गूदा। इस प्रकरण में मांस परक अर्थ नहीं लेना चाहिये क्योंकि ऐसा अर्थ लेने पर 'हित्वा मुनिवदामिषम्'(२-२०-२९) 'फलानि मूलानि च भक्षयन् वने' (१-३४-५१) तथा 'धर्ममेवाचरिष्यामस्तत्र मूलफलाशना.' (२-५४-१६) इत्यादि रूप से की हुई श्री राम की प्रतिज्ञाओं से विरोध पड़ेगा। इन वचनों में निरामिष रहने और फल-मूल खाकर धर्माचरण करने की ही बात कही गई है। रामो 'द्विर्नाभिभाषते' (श्री राम दो तरह की बात नहीं करते हैं एक बार जो कह दिया, वह अटल है) इस कथन के अनुसार श्री राम की प्रतिज्ञा टलने वाली नहीं है।

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २ ५०
सत्यार्थप्रकाश २)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
व्यवहार भानु)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र १) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७×४० इञ्च २)५०
,, ३६×५४ इञ्च ४)५०
, , ४५×६७ इञ्च ६)५०
कर्त्तव्य दर्पण)५०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)०५
मराठी सत्यार्थप्रकाश १)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश १)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से))५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
कठोपनिषद्)५० प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १ २५
मृत्यु और परलोक १)
विद्यार्थी जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
अभ्यास और वैराग्य १)६५
निज जीवन वृत्त वनिका (सजिल्द))७५
ब्रह्म जीवन सोपान १)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म ६२

उपनिषद् कथामाला)२५
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार)२०
आदर्श गुरु शिष्य)२५
कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
पुरुष सूक्त)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर)६२
स्वर्ग में हड़ताल)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)२५
वैदिक तत्व मीमांसा)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६०
वेद और विज्ञान)७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३७
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
इराक की यात्रा २)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक ईश वन्दना ४०
वैदिक योगामृत)६२
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
भ्रम निवारण)३०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
वेद की इयत्ता १)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह)७५
कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम् (पूर्वार्द्ध) १)५०
,, , (उत्तरार्द्ध) १)५०
वैदिक संस्कृति)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
सायण और दयानन्द १)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)३०
ऋषि दयानन्द वचनामृत ,)५०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०

संस्कार महत्व)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
चरित्र निर्माण १)१५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
अनुशासन का विधान २५
धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय २)
आर्य समाज के महाधन २)५०
एशिया का वेनिस)७५
स्वराज्य दर्शन १)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
भजन भास्कर १)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५

दुबारा छप गई । आर्य जगत में सबसे सस्ती

सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत

पृ० २००—नेट मूल्य ४० पैसे

ARYA SAMAJ
ITS CULT AND CREED

A unique and elegantly printed Book of the Day

By—Acharya Vaidyanath Shastri

Rs 5/

This is the most popular and widely read first English book of Acharya Vaidya Nath Shastri a well known Arya Samaj Scholar and author credited with writing books in Hindi of outstanding merit on religion and philosophy some of them winning prizes

The book presents a scholarly and lucid exposition of the Cult and Creed of AryaSamaj ranking among the high-class rare English literature of Arya Samaj It is a worth reading worth preserving & worth presenting book to the English reading persons especially to the intelligentsia

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान

नई दिल्ली-१

कला-कौशल(टैक्नीकल)और वैदिकसाहित्य का महान् भंडार

इलैक्ट्रिकल इजीनियरिंग बुक १५)
इलै० गाइड पृ० ८००हि इ गु १२)
इलैक्ट्रिक वायरिंग ६)
मोटरकार वायरिंग ६)
इलैक्ट्रिक बैट्रीज ४)५०
इलैक्ट्रिक लाइटिंग ८)२५
इलै० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्ज १२)
सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर ८)५०
इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज २ भाग १६)५०
आयल व गैस इंजन गाइड १५)
आयल इंजन गाइड ८)२५
क्रूड आयल इंजन गाइड ६)
वायरलैस रेडियो गाइड ८)२५
रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक) ८)२५
घरेलू बिजली रेडियो मास्टर ८)५०
इलैक्ट्रिक मीटर्ज ८)२५
टांका लगाने का ज्ञान ४)५०
छोटे डायनमो इलैक्ट्रिक मोटर ८)५०
आर्मेचरवाइंडिंग(AC D C)८)२५
रैफ्रीजरेटर गाइड ८)७५
बृहत रेडियो विज्ञान १५)
ट्रांसफार्मर गाइड ६)
इलैक्ट्रिक मोटर्स ८)२५
रेलवे ट्रेन लाइटिंग ६)
इलैक्ट्रिक सुपरवाइजरी शिक्षा ६)
इलैक्ट्रिक वैल्डिंग ६)
रेडियो शब्द कोष ३)
ए० सी० जनरेटर्स ८)२५
इलैक्ट्रिक मोटर्स आल्टरनेटर्स १६)५०
आर्मेचर वाइन्डर्स गाइड १५)
इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १९५६ १)५०

स्माल स्केल इंडस्ट्रीज (हिन्दी) १४)
स्माल स्केल इंडस्ट्रीज(इंगलिश) १४)
खराद शिक्षा (टर्नर गाइड) ४)५०
वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग) ४)५०
खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
भवन-निर्माण कला १२)
रेडियो मास्टर ४)५०
विश्वकर्मा प्रकाश ७)५०
सर्वे इंजीनियरिंग बुक १२)
इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग १२)
फाउन्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई) ८)२५
इलैक्ट्रोप्लेटिंग ६)
वीविंग गाइड ४)५०
हैंडलूम गाइड १५)
फिटिंगशाप प्रैक्टिस ७)५०
पावरलूम गाइड ५)२५
ट्यूबवैल गाइड ३)७५
लोकास्ट हाउसिंग टैक्निक ५)२५
जन्त्री पैमायश चौब २)
लोकोशैड फिटर गाइड १५)
मोटर मैकेनिक टीचर ८)२५
मोटर मैकेनिक टीचर गुरमुखी ८)२५
मोटर ड्राइविंग हिन्दी व गुरमुखी ६)
मोटरकार इन्स्ट्रक्टर १५)
मोटर साइकिल गाइड ४)५०
खेती और ट्रैक्टर्ज ८)२५
जनरल मैकेनिक गाइड १२)
आटोमोबाइल इंजीनियरिंग १२)
मोटरकार ओवरहालिंग ६)
प्लम्बिंग और सेनीटेशन ६)
सर्किट डायग्राम्स आफ रेडियो ३)७५

फर्नीचर बुक १२)
फर्नीचर डिजाइन बुक १२)
वर्कशाप प्रैक्टिस १२)
स्टीम ब्वायलर्स और इंजन ८)२५
स्टीम इंजीनियर्स गाइड १२)
आइस प्लाट (बर्फ मशीन) ४)५०
सीमेंट की जालियो के डिजाइन ६)
कारपेंट्री मास्टर ६)७५
बिजली मास्टर ४)५०
ट्रांजिस्टर डेटा सर्किट १०)५०
गैस वैल्डिंग ६)
ब्लैकस्मिथी (लोहार) ४)५०
हैंडबुक आफ बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन ३८)५०
हैंडबुक स्टीम इन्जीनियर २०)२५
मोटरकार इन्जीनियर ८)२५
मोटरकार इन्जन (पावर यूनिट) ८)२५
मोटरकार सर्विसिंग ८)२५
कम्पलीट मोटर ट्रेनिंग मैनुअल २८)७५
कारपेंट्री मैनुअल ८,५०
मोटर प्रश्नोत्तर ६)
स्कूटर आटो साइकिल गाइड ८)५०
मशीनशाप प्रैक्टिस १५)
आयरन फर्नीचर १२)
मारबल चिप्स के डिजाइन १६)५०
मिस्त्री डिजाइन बुक ३४)५०
फाउण्ड्री वर्क- धातुओ की ढलाई ४)५०
ट्रांजिस्टर रेडियो ४)५०
आधुनिक टिपिकल मोटर गाइड ४,५०
नक्काशी आर्ट शिक्षा ६)
बढ़ई का काम ६)
राजगिरी शिक्षा ६)

सुपरहिट ट्रांजिस्टर रेडियो ७)५०
विजय ट्रांजिस्टर गाइड २२)५०
मशीनिस्ट गाइड १६)५०
आल्टरनेटिंग करैन्ट १६)५०
इलै. लाइनमैन वायरमैन गाइड १६)५०
रेडियो फिजिक्स २५)५०
फिटर मैकेनिक ६)
मशीन वुड वर्किंग ६)
लेथ वर्क ६)७५
मिलिंग मशीन ८)२५
मशीन शाप ट्रेनिंग १०)
एयर कन्डीशनिंग गाइड १५)
सिनेमा मशीन आपरेटर १२)
स्प्रे पेंटिंग १०)
पोट्रीज गाइड ४)५०
ट्रांजिस्टर रिसीवर्स ६)७५
लोकल ट्रांजिस्टर रिसीवर ८)२५
प्रैक्टीकल ट्रांजिस्टर सरकिट्स ७)५०
बैंच वर्क एण्ड डाईफिटर ८)२५
माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुअल ८)२५
खराद आपरेटर गाइड ८)२५
रिसर्च आफ टायलेट सोप्स १५)
आयल इन्डस्ट्री १०)५०
शीट मैटल वर्क ८)२५
कैरिज एन्ड वैगन गाइड ८)२५
इलैक्ट्रिक फिजिक्स २५)५०
इलैक्ट्रिक टैक्नोलोजी २५)५०
रेडियो पाकिट बुक ४)
डिजाइन गेट ग्रिल जाली ६)
कैमीकल इन्डस्ट्रीज २५)५०
डीजल इन्जन गाइड १५)

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई, क्लाथ बाइंडिंग-मूल्य १५) एक साथ पांच प्रति मंगाने पर ५०) रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१ सांख्य दर्शन मूल्य २)
२ न्याय दर्शन मू० ३।)
३ वैशेषिक दर्शन मू० ३॥)
४ योग दर्शन मू० ६)
५. वेदान्त दर्शन मू० ५॥)
६. मीमांसा दर्शन मू० ६)

सामवेद

मूलमंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित
श्री पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार ४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थी। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है। मूल्य ८)

वैदिक-मनुस्मृति मूल्य ४॥)

बृहत् दृष्टान्त सागर

सम्पूर्ण पांचों भाग

पृष्ठ संख्या ८६८
सजिल्द मूल्य केवल १०॥)

उपदेश-मंजरी मूल्य २॥)
संस्कार विधि मूल्य १॥)
आर्य समाज के नेता मूल्य ३)
महर्षि दयानन्द मूल्य ३।
कथा पच्चीसी मूल्य १॥)
उपनिषद् प्रकाश मू० ६)
हितोपदेश भाषा मू० ३)
सत्यार्थप्रकाश २)५०
[छोटे अक्षरो मे]

अन्य आर्य साहित्य

१ विद्यार्थी शिष्टाचार १॥)
२. पंचतंत्र ३॥)
३ जाग रे मानव १)
४. कौटिल्य अर्थशास्त्र १०)
५. चाणक्य नीति १)
६ भर्तृहरि शतक १॥)
७ कर्तव्य दर्पण १॥)
८ वैदिक संध्या ४) सै०
९ हवन मन्त्र १०) सै०
१०. वैदिक सत्संग गुटका १५) सै०
११ ऋग्वेद ७ जिल्दो मे ५६)
१२ यजुर्वेद २ जिल्दो मे १६)
१३ सामवेद १ जिल्द मे ८)
१४ अथर्ववेद ४ जिल्दो मे ३२)
१५ वाल्मीकि रामायण १२)
१६ महाभारत भाषा १२)
१७ हनुमान जीवन चरित्र ४॥)
१८ आर्य संगीत रामायण ५)

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद कृषि बिजली,मोटर,पशुपालन, टक्नीकल, डेरीफार्म, रेडियो आदि सभी विषयो पर हमने सैकड़ो पुस्तकें प्रकाशित की है।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१५१

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ में प्रकाशित

सबस प्रातपूवक धर्मानुसार यथायोग्य वत्तना चाहिय ।

ओ३म् उरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख प

महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-१ | फोन २७४७७१ | श्रावण शुक्ल १४ सवत् २० ३ | ३१ जलाई १९ ६ | दयानन्दाब्द १४ | सृष्टि सम्वत् ११९७२९४९

महाभारत के युद्ध ने वह सर्वनाश किया कि

वेद—आज्ञा

ईश्वरोपासना

ओ३म् सह नाववतु सह नौ भुनक्तु । सह वीर्य्यं करवावहै । तेजस्वि नावधीतमस्तु । मा विद्विषावहै । ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति ॥

तैत्तिरीय० प्रपा० ६ । अनु० १ ।

भावार्थ हे सर्वशक्तिमन् ईश्वर आपकी कृपा रक्षा और सहाय से हम लोग परस्पर एक दूसरे की रक्षा कर और हम सब लोग परमप्रीति से मिल के सब से उत्तम ऐश्वर्य अर्थात् चक्रवर्ति राज्य आदि सामग्री से आनन्द को आपके अनुग्रह से सदा भोग हे कृपानिधे ! आपके सहाय से हम लोग एक दूसरे के सामर्थ्य को पुरुषार्थ से सदा बढाते रह और हे प्रकाशमय सब विद्या के देने वाले परमेश्वर ! आपके सामर्थ्य से ही हम लोगो का पढा और पढाया सब ससार मे प्रकाश को प्राप्त हो और हमारी विद्या सदा बढती रहे हे प्रीति के उत्पादक ! आप ऐसी कृपा कीजिये कि जिससे हम लोग परस्पर विरोध कभी न कर किन्तु एक दूसरे के मित्र होके सदा वर्त्तें । —महर्षि दयानन्द

धर्म प्रचारक न रहे

श्रद्धेय श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी की हार्दिक वेदना

क्या आर्य जाति की आखे खुलेगी

सिंगापुर १ ७ ६६

श्रद्धेय श्री रामगोपाल जी

सप्रेम नमस्ते

गत तीन मास मे दक्षिण पूर्वी एशिया के नौ दस देशो का भ्रमण करके मैं पुन सिंगापुर आ गया जो एक प्रकार मे मेरा मुख्य काय स्थल बना रहा है यहा का आयसमाज मन्दिर इन सारे देशो म रहने वाले भारतियो का विशेष प्रेरणा केन्द्र है कई लाख डालर इसके निर्माण पर व्यय हुए है और अब इसका और अधिक विस्तार होने जा रहा है—इसके निर्माण मे श्री मूलामल सचदेव के परिवार का विशेष सहयोग है—यह एक आय समाज ऐसा है जहा सारे कायकर्त्ता युवक है । सब बडी लग्न से एक हृदय होकर काय करते है समाज के प्रधान डा० शिवनाथ कपूर उपप्रधान श्री हरीराम जी बडे पुरुषार्थी तथा विद्वान मन्त्री प श्रीधर त्रिपाठी और इनके सब साथी (श्री हरबस लाल जी श्री धमपाल जी कुमरा इत्यादि) समाजहित मे निरन्तर लगे रहते है । मुसलमानो तथा ईसाईयो के फन्दे मे फस कर पछताने वाले लोगो को पुन यह हिन्दु बनाने का काय भी करते हैं

सिंगापुर सारे एशिया मे एक ऐसा राज्य है जहा अनेक भाषाय बोली जाती है चीनी हिन्दी मलाई इगलिश तामिल पजाबी जापानी इत्यादि भाषाय बोलने वाले लाखो नर नारी भाषा के प्रश्न पर कभी यह माग नही करते कि उनके लिये अलग अलग सूबे बना दिये जाय सब लोग मिल जलकर रहते है । न लडते है न झगडते हैं जब सिंगापुर मलाया देश से अलग हुआ तो सिंगापुर राज्य की सरकारी भाषा पर विचार किया गया । राज्य भाषा मलाया ही होनी थी परन्तु फिर भी यहा रहने वाले भारतियो को कमीशन ने पूछा कि भारतीयो की कौन सी भाषा रखी जाये सिंगापुर मे अधिक सख्या तामिल भारतियो की है फिर भी उनमे से ५ प्रतिशत ने हिन्दी का नाम लिया परन्तु सिखो ने पजाबी की प्रबल माग की हिन्दी भाषा यहा का राज्य स्वीकार कर लेता परन्तु सिखों की कृपा म यह बात रह गई तब तामिल भाषा भाषी अधिक सख्या मे होने के कारण तामिल को राज्य ने स्वीकार कर लिया । सिंगापुर तारासिंही सिखो का गढ है यहा पाच गुरद्वारे है । कहा जाता है कि मास्टर तारासिंह को यहा से लखूखहा रुपया मिलता है ? जिससे वह अपना मिशन चलाते हैं । यहा की सरकार मे सिखों का बडा रसूख है कितने ही सिख सरकारी नौकर हैं । हिन्दुओं ने नौकरी की ओर ध्यान नही दिया । व्यापार ही मे लगे हुए है । सिखो प्रचार बडा प्रबल है सिख प्रचारक वष भर आते रहते है परन्तु आय प्रचारक बहुत कम आते हैं किस विचार का प्रचार नही करेंगे फैलेगा कम ? ईसाई तो घात मे लगे ही हुए है । इधर सिंगापुर तक और बात सुनने मे आई गई कि जब कोई हिन्दू सिखो के नौकरी या व्यापार काय के लिये जाता तो तारासिंही विचारधारा के सिख यह कहता है कि पहले सिख बनो फिर काम मिल सकेगा प नामधारी सिख सब हिन्दुओ के साथ पूर्ण प्यार और सहयोग रहते है अस्तु

सिंगापुर मे ० लाख की जनसख्या है चीनी भारी सख्या मे मलाया से स्वतन्त्र होकर यह अधिक उन्नत हो रहा है मकान तैयार करने म यहा के इजीनियरो ने कमाल किया है हर ४५ मिनट मे सुन्दर मकान खडा हो जाता है दस दस मजिल मकान (जिनमे १ फ्लैट होते है) हर चार दिन मे तय्यार हो रहे है दुनिया भर मकानो की तय्यारी यहा पहले नम्बर पर है सिंगापुर की बन्दरगाह एशिया मे दूसरे नम्बर पर है पिछले वष मे यहा २२ हजार से अधिक समुद्री जहाज आये और गये

आज मे सात सौ वर्ष पूर्व सिंगापुर श्री विजय राज्य की राजधानी थी जिस मलाया देश का यह सिंगापुर अग था मे तीन वष पूर्व एक था वह भी हिन्दू राज्य था और इतिहास बतलाता है कि आज से हजार वर्ष पहले लगभग सारा दक्षिण पूर्वी एशिया हिन्दू था कम्बोडिया स्याम (थाईलैंड) सुमात्रा जावा बाली बोर्नियो मलेशिया इण्डोनेशिया सिंगापुर हागकाग वीयतनाम इत्यादि विशाल भारत के भाग थे वायु पुराण तथा मारकण्डेय पुराण मे इन प्रदेशो का वर्णन आता है कम्बोडिया का पुराना नाम कम्बोज आज का कम्बोडिया हिन्द चीन प्रदेश मे वैसे ही बना जैसे भारत पाकिस्तान परन्तु अब हिन्द चीन के नाम से कोई देश नही कम्बोडिया लाओस दक्षिण वियतनाम उत्तर वियतनाम मे बट गया है और पृथक पृथक चार राज्य हो गये है । भारत की तकसीम का जो चक्र चल पडा है लका अलग बर्मा अलग तिब्बत अलग सीमा प्रान्त पजाब अलग आधा बगाल अलग सिंध अलग हो चुके नागालैंड तय्यारी हो रही है । कही भारत का नाम भी क्या उसी प्रकार समाप्त हो जायगा जैसे हिन्द चीन का हुआ है ?

दक्षिण पूर्वी एशिया के इन सुन्दर प्रदेशो मे अभी तक सस्कृत के पाये जाते है कम्बोडिया म तो हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तिया तक दिखाई देती हैं । यह सब देश कैसे भारत से अलग हो ग महाभारत के युद्ध ने वह सर्वनाश किया कि धर्म प्रचारक न रहे ही देश मे प्रचार बन्द हो गया तब समुद्र पार देशो की सुधि कौन भारत से प्रचारक आने रुक गये और दूसरी ओर से इस्लाम के प्रचारक सेनाओ के साथ आने लगे और एशिया के इन देशो मे छा गये

(शेष पृष्ठ १३ पर)

वार्षिक ७) रु० विदेश १ पौंड एक प्रति १५ पैसे

अन्नं बहु कुर्वीत

सम्पादक—रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री
सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

बलेन लोकस्तिष्ठति

वर्ष—१
अक—३४

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

—आर्यसमाज का तीसरा नियम

वेद सप्ताह श्रावणी पर्व पर—लगातार सात दिन, आर्य जन वेद कथा, वेद श्रवण और वेद प्रचार का व्रत लें।

वेद सप्ताह के पुनीत पर्व पर आर्य जगत् की शिरोमणि सभा के

सार्वदेशिक साप्ताहिक का

—:(वेद कथा अंक):—

२० हजार की भारी संख्या में प्रकाशित किया जा रहा है

यह विशेषांक पुस्तक साइज के २५० पृष्ठों में होगा

इतने पर भी वेद कथा अंक का मूल्य नहीं—भेंट-मात्र

६० पैसा होगा।

स्थायी ग्राहक महोदय कृपया ध्यान दें

सात रुपया भेजकर आप ग्राहक बने हैं। आपको एक प्रति तो भेजेंगे ही, किन्तु—

इस वेद कथा अंक

की कुछ प्रतियां अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार मंगाकर अपने मित्रों को भेंट स्वरूप प्रदान करें।

आर्य समाज-परिचयांक कब प्रकाशित होगा

अभी तक हमारे पास लगभग १०० आर्य संस्थाओं का वर्णन, मन्त्रियों के चित्र और धन आ चुका है। इस अंक में हम आर्य जगत् का पूरा दिग्दर्शन कराना चाहते हैं यह तभी होगा जब सभी आर्य संस्थायें अपनी सामग्री भेज दें। हमारी हार्दिक इच्छा यह है कि चाहे देर हो जाय किन्तु होना चाहिये सर्वांग सम्पन्न। एक बार फिर हम सारे देश और विदेश की आर्य संस्थाओं को पत्र भेज रहे हैं। फिर उनके उत्तर की प्रतीक्षा के पश्चात् प्रकाशित करेंगे। आशा है आप भी इसे पसन्द करेंगे। —प्रबन्धक

(१) आप चाहे १ प्रति लें, १० लें, २५ लें, ५० लें, १०० लें अथवा हजार लें, सब एक ही भाव, ६० पैसे में प्राप्त करेंगे। किसी को कम या अधिक में नहीं।

(२) आप अपनी शक्ति से भी अधिक इस वेद कथा अंक को मंगावें।

(३) धन पहले नहीं —बाद में।

(४) जब आपके पास अंक पहुँचे, उससे १ सप्ताह तक अर्थात् वेद सप्ताह समाप्त होते ही मनीआर्डर से धन भेजें।

(५) अब प्रार्थना यह है कि आप भारी से भारी संख्या में आज ही आर्डर भेज दें। कहीं ऐसा न हो कि आप देर में आर्डर भेजे। फिर बलिदान अंक और बोधांक की तरह निराश हों।

वेद कथा विशेषांक में क्या होगा—इस पर ध्यान दें

ऋग्वेद के अनेक महत्वपूर्ण सूक्त और उन पर महर्षि दयानन्द भाष्य

यजुर्वेद के अनेक महत्वपूर्ण अध्याय और उनपर महर्षि दयानन्द भाष्य

सामवेद के अनेक महत्वपूर्ण मंत्र और पं० तुलसीराम स्वामी भाष्य

अथर्ववेद के अनेक महत्वपूर्ण सूक्त और पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी भाष्य

अंग्रेजी पाठकों के लिए—

विभिन्न विषयों पर चुने हुए लगभग ७५ मन्त्रों का स्व० श्री पं० अयोध्या प्रसाद जी बी०ए० वैदिक रिसर्च स्कालर द्वारा अंग्रेजी अनुवाद छपेगा—

एक विशेष ध्यान देने योग्य

भारत भर में लगभग ५००० ऐसे महानुभाव हैं—जो राज सभा, विधान सभा, लोक सभा के सदस्य और मन्त्रीगण हैं। वेद के पुण्य पर्व पर प्रसाद के रूप में

वेद कथा अंक

को आर्य जन अपनी ओर से इन्हें भेंट करने के लिए हमें आज्ञा दें। ५ हजार अंक तीन हजार रुपये के होंगे। यह पुण्य कार्य—

—एक ही आर्य कर सकता है।

—तीस आर्य कर सकते हैं।

—एक सौ आर्य कर सकते हैं।

विचार करें और आज ही उदारता-पूर्वक उत्तर दें। जो दानी महानुभाव इस कार्य में अपना सहयोग देंगे, सार्वदेशिक में उनके प्रति आभार प्रदर्शन करेंगे।

बिना मूल्य

सात रुपया वार्षिक चन्दा भेज कर वेद कथा विशेषांक बिना मूल्य प्राप्त करें। —प्रबन्धक

वेद कथा अंक के लिए सात्विक प्रेरणा

एक आर्य सज्जन ने हमें सूचित किया है कि १००) के वेद कथा अंक की प्रतिएं विदेशी जनों को मेरी ओर से भेंट कर दें किन्तु मेरे नाम का प्रदर्शन न करें।

धन्यवाद—आपकी आज्ञा का यथावत् पालन करेंगे। — प्रबन्धक

वेद कथा अंक में

वैदिक साहित्य के अतिरिक्त अन्य कोई विज्ञापन नहीं छपेगा। कृपया विज्ञापनदाता महोदय ध्यान रखें। — प्रबन्धक

आज ही अपना आदेश भेजें—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

रामगोपाल शालवाले
मन्त्री

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

योग और आर्यसमाज

आजकल देश-विदेश में सर्वत्र योग की बहुत चर्चा है। देश की अपेक्षा भी विदेशों मे आजकल योग-विद्या के प्रति जिस प्रकार लोगों की रुचि बढ़ती जा रही है उसे देखकर सुखद आश्चर्य की अनुभूति हुए बिना नहीं रहती। इन दिनों अंग्रेजी में तथा अन्य विदेशी भाषाओं में योग के सम्बन्ध में साहित्य भी अधिकाधिक मात्रा में प्रकाशित होता जा रहा है। यूरोप का कदाचित् ही ऐसा कोई प्रमुख देश हो जहां योग के द्वारा शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्ति के विभिन्न केन्द्र न खुले हों। रूस में यौगिक आसनों का वैज्ञानिक अध्ययन करने के पश्चात् सोची जैसे स्वास्थ्यवर्धक स्थानों में विभिन्न रोगों के उपचार के लिए आने वाले मरीजों को बाकायदा उन आसनों का अभ्यास कराया जाता है। और जल चिकित्सा तथा मिट्टी द्वारा चिकित्सा करने की भी वहां विशेष व्यवस्था की गई है। अमरीका में स्वामी योगानन्द द्वारा अनेक योगाश्रमोंकी स्थापना हुई है जहां स्त्री और पुरुष साधक साधिका के रूप मे एकत्र होते हैं।

विदेशों में योग के प्रति इस वर्तमान रुचि को देखकर भारत में भी शिक्षित-वर्ग में जिसके लिए यह भी पश्चिम के अनुकरण की एक और नई दिशा का द्योतक है, योग की काफी चर्चा होने लगी है। परन्तु यह चर्चा फैशन की जितनी अधिक द्योतक है उतनी योग विद्या के गम्भीर अध्ययन और साधना की नहीं। फिलहाल तो यह सक्रामक रोग की तरह है। जब कुछ लोगों को इसमें अर्थलाभ के भी आसार दिखने लगे तो योग ने भी व्यावसायिक रूप धारण कर लिया और जब किसी चीज का रूप व्यावसायिक हो जाताहै तब उस में उचित अनुचित का ध्यान भुलादिया जाता है और वस्तु का शुद्ध स्वरूप आंखों से ओझल होने लगता है। यही बात योग के साथ भी हुई है। अब योग के साथ आडम्बर का प्राधान्यहो गया है। कुछ लोग कतिपय योगासनो का अभ्यास करके अपनेआपको योगिराज कहते घूमते हैं और नाना चमत्कारपूर्ण सिद्धियों का स्वामी होने का दावा करते हैं।

भारत योगियों का देश रहा है। आज भी ऋषियों और सन्तों की यह भूमि सर्वथा बांझ नहीं हुई है। परन्तु 'नीम हकीम खतरे-ए जान, वाली बात है। जैसे लालों और हीरों की बोरियां नहीं होती वैसे ही गली गली में योगी भी नहीं मिला करते। नीम-हकीम से जान को खतरा रहता है तो कनफटे गुरुओं और चेलों से ईमान को खतरा रहता है। धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र मे जैसी अराजकता इन अशिक्षित, योग के नाम-मात्र से परिचित,दम्भी पोंगापन्थियों ने फैलाई है वैसी और किसी ने नहीं।

योग का सीधा सम्बन्ध आत्म-साक्षात्कार से है, शरीर और मनको प्राणायाम द्वारा शुद्ध और स्वस्थ बना कर अखण्ड ज्योतिस्वरूप प्रभु की प्राप्ति के लिए साधना करना ही उसका लक्ष्य है। निस्सन्देह योगियों को अनेक सिद्धियों की प्राप्ति सम्भव है। योगदर्शन में अणिमा, लघिमा, गरिमा आदि अनेक सिद्धियों का वर्णन है। यों भी मन की शक्ति अपरम्पार है और अपनी मानसिक शक्तियों का विकास करके कोई भी मनुष्य अद्भुत कार्य करके दिखा सकता है। परन्तु उन सिद्धियों का प्रयोजन प्रदर्शन तो किसी भी हालत मे नहीं है। वे सब सिद्धियां शरीर और मनको अपने वशीभूत करके उन्हें आत्मोन्नतिमें सहायक बनाना मात्र है सिद्धियों का प्रदर्शन करके लोकप्रियता अर्जित करना या उससे पैसा बनाना सिद्धियों का दुरुपयोग है। जो व्यक्ति ऐसा करता है वह योगभ्रष्टता की ओर उन्मुख होता है। योग की उच्चतम भूमिकाओं तक वह नहीं पहुंच सकता। यौगिक सिद्धियों के चमत्कार दिखाने का विज्ञापन करने वाले सभी लोग इसी कोटि में आते हैं।

हाल में ही के० एल० राव नाम के एक तथाकथित योगी ने पानी पर चल कर दिखाने का दावा किया था। बाइबिल में तो हजरत ईसामसीह के अनेक चमत्कारो के साथ इस बात का भी वर्णन है कि ईसा पानी पर चले थे। सबके विज्ञापन का क्याठिकाना। ससार भर के पत्रकार कैमरामैन और टेलीवीजन वाले इस चमत्कार को देखने के लिए एकत्र हो गए। नेताओं और जनता के तो उत्साह का कहना ही क्या।

सुना था कि गालिब के उड़ेंगे पुर्जे पुर्जे। देखने हम भी गए पर तमाशा न हुआ॥

जब योगिराज महोदय समुद्र में डूबने लगे तो बड़ी मुश्किल से उन्हें डूबने से बचाया गया। इससे पहले ये योगिराज कीलें ब्लेड और कांच के टुकड़े चबाने और उन्हें निगलने का चमत्कार दिखा चुके थे। परन्तु जिस चमत्कार का सबसे अधिक विज्ञापन किया गया था, वही चमत्कार नहीं दिखा सके। सब को निराशा ही हाथ लगी। सारे ससार में भारतीय योगी के दम्भ की पोल खुली सो अलग। अब कहते हैं कि वे योगीराज इस समय कैंसर के शिकार है और उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में दाखिल किया गया है।

जहां तक आर्यसमाज का सम्बन्ध है, वह योगविद्या का परम समर्थक और प्रचारक है। उसके सस्थापक महर्षि दयानन्द भी स्वय योग में परमनिष्णात थे, ज्ञान की दृष्टि से भी और क्रिया की दृष्टि से भी। परन्तु उन्होंने अपनी योगविद्या को कभी प्रदर्शन की वस्तु नहीं बनाया। आर्यसमाज के अनेक संन्यासी और महात्मा योगविद्या के अच्छे ज्ञाता हैं, किन्तु वे कभी इसका दम्भ नहीं करते। पिछले अक में ही पाठकों ने पढा होगा कि महात्मा आनन्द स्वामी जी किस प्रकार न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, जापान फिलिपाइन आदि में इस समय वेद प्रचार करने घूम रहे हैं और किस प्रकार वे वहां के जिज्ञासुओं को ध्यान और योग की विधि सिखा रहे हैं वे लोगों को जब बताते हैं कि योग का मूल भी वेद ही है और साथ में वेद मन्त्रों का उच्चारण करके उपदेश करते हैं तो लोग चकित अभिभूत हो जाते हैं। उनका यह निष्कर्ष ठीकहै कि पाश्चात्य देशों में योग के माध्यम से जनता को वेदों के निकट लाया जा सकता है। परन्तु जो पौराणिक अधकचरे लोग विदेशों में योग विद्या के प्रचार के नाम से जाते हैं वे प्रायः स्वय वेद से अनभिज्ञ होते हैं, इसलिए वे वेद का प्रचार क्या करेंगे। इसलिए आर्यसमाज को अपने ऐसे विद्वान् प्रचारक तैयार करने चाहिएं जो वैदिक मन्त्रों की व्याख्या के साथ साथ योगविद्या के अभ्यासी हों और चमत्कार प्रिय विदेशियों का धर्म तथा अध्यात्म दोनों दृष्टिकोण से पथ-प्रदर्शन कर सके।

बहुत से आर्यसमाजी भी योग को प्रदर्शन की वस्तु बनाने में संकोच नहीं करते। वे किसी को शृंगी ऋषि का अवतार मानने लगते हैं और किसी को लोमश ऋषि का। हमारी तो यह निश्चित धारणा है कि योग में जहां प्रदर्शन, व्यावसायिकता और दम्भ आया कि उसका उद्देश्य ही तिरोहित हो गया। योग आत्मोत्कर्ष का साधन है, प्रदर्शन का नहीं? यदि किसी मे वैसी यौगिक शक्ति है तो उसे उस शक्ति का अपने तथा समाज के उत्कर्ष मे उपयोग करना चाहिए। पहले से ही अन्ध विश्वास के गर्त में गिरे लोगों को और अन्ध-विश्वासी बनाने के लिए नहीं।

वेद कथा अंक

वेद कथा अक की सूचना पाठकों ने पिछले अंक में पढी होगी। इस बार श्रावणी के अवसर पर हम यह अक पाठकों की भेंट कर रहे हैं। पुस्तक के आकार में २५० पृष्ठो का मूल्य केवल ६० पैसे रखा गया है। स्वाध्याय के लिए यह अत्युत्तम साधन होगा। परन्तु एक विशेष बात की ओर हम अपने पाठकों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाहते हैं। वह यह कि देश के राजनीतिक नेताओं मंत्रियों,संसत्सदस्यों,विद्यार्थियों तथा अन्य क्षेत्रों के प्रतिष्ठित जनों को यह पुस्तिका मुफ्त भेट की जाए। जहा इन लोगों का आर्यसमाज से थोड़ा-बहुत परिचय होगा वहाँ वेद के प्रति इनकी धारणा बदलने मे भी सहायता मिलेगी। इस प्रकार के पाच हजार व्यक्तियों को वेद कथा अक की ५००० प्रतियां भेजी जाए तो तीन हजार ६० इन प्रतियों की लागत आएगी।

यदि कतिपय दानी महानुभाव इस खर्च की जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ले तो सभा को इसका भार दुरूह प्रतीत न हो। चाहे तो कोई एक व्यक्ति ही इस पुण्य यज्ञ का यजमान बन सकता है। अन्यथा अनेक व्यक्ति मिलकर तो यह बोझ उठा ही सकते हैं। उपयोगिता को देखते हुए इतनी राशि खर्च करना 'भस्म मे-आहुति' के समान नहीं होगा, ऐसा हमें विश्वास है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्यसमाज छात्रावास खोले जायें

अलीगढ से एक सुप्रसिद्ध आर्य कार्यकर्त्ता लिखते हैं—

"अलीगढ़ जिले के विभिन्न स्कूलों से उत्तीर्ण हुए हरिजन कहे जाने वाले विद्यार्थी अलीगढ आकर विभिन्न स्कूलो, व मुस्लिम यूनिवर्सिटी में प्रवेश पातेहैं निर्धनता के कारण बोडिंग मे रह नहीं सकते। शहर मे इनको किराए पर कोई मकान नही देता। अत विवश होकर ये ईसाई मिशनों मुसलमानों या गुरुद्वारे में पहुंचते हैं। इस प्रकार अब तक न जाने कितने हिन्दू जाति के लाल विधर्मी बन गए होंगे।

एक मेरा परिचित विद्यार्थी जिसके परिवार को (ईसाई परिवार को) मैंने शुद्ध किया था इन्टर पास करके डिग्री कालेज मे प्रविष्ट होने के लिए आया है। शहर मे कोई स्थान देने के लिए उद्यत नहीं होता। निर्धन होने के कारण बोडिंग मे रह नहीं सकता। उक्त विद्यार्थी ने मुझे बताया कि निवास स्थान की खोज करते हुए उसकी ईसाई मिशनरी से भेंट हो गई। मिशनरी ने कहा 'हमारे यहां चलो। निःशुल्क निवास व भोजन मिलेगा। आर्यसमाजियों के धोखे में न आओ। तुम्हारा जीवन बिगड़ जायगा।" यह लड़का उनके प्रभाव मे नही आया। परन्तु विचारणीय यह है कि इसप्रकार से ईसाइयोंके फंदे मे फसने वाले हिन्दू बालकों मुख्यतः हरिजन बालकों को कैसे बचाया जाय? यह तभी हो सकेगा जब कि ऐसे विद्यार्थियों के लिए छात्रावास का प्रबन्ध हमारी ओर से किया जावे।"

पत्र मे उल्लिखित कार्य बडा महत्त्व पूर्ण है। अच्छा तो यह हो कि जिन आर्यों को ऐसे हरिजन बालकों को अपने यहा फ्री-स्थान देने की सुविधा हो, वे अपने यहां स्थान देवें और उनकी सहायता का श्रेय प्राप्त करें। परन्तु यदि ऐसा सम्भव न हो तो अलीगढ का समाज स्वय या नगर और जिले की समाजों के सहयोग से छात्रावास की व्यवस्था करदे और यथा सम्भव उनके निःशुल्क भोजन का प्रबन्ध कर दिया जाय। इसका एक लाभ यह भी होगा कि इन बालकों की रहन-सहन दिनचर्या आदि की व्यवस्था सामने होगी और उनमें आर्य शिक्षाए और आर्य जीवन की पद्धति बद्ध मूल की जा सकेगी। यदि हरिजन एव सवर्ण छात्रों के लिए भारतभर मे इस प्रकार के आर्य विद्यार्थी आश्रमो वा छात्रावासों का प्रबन्ध हो जाय तो आर्य समाज का बड़ा ठोस कार्य हो परन्तु खेदहै कि इस प्रकार के कार्यों पर बहुत कम ध्यान जाता है।

सामयिक-चर्चा

आनन्द मार्ग

कुछ वर्षों से बिहार में एक नया पथ फैल रहा है जिसका नाम है 'आनन्द मार्ग।' इसके प्रवर्तक प्रभात रजन सरकार एक बगाली है जो जमालपुर (मुंगेर) के रेल्वे आफिस में किरानी का काम करते हैं और आनन्द मूर्ति के नाम से ही उसका प्रकाशन होता है अत उनके पन्थ का नाम उन्हीं के नाम से आनन्द मार्ग प्रचलित है।

आनन्द मूर्ति जी अपने को ईश्वर का अवतार घोषित करते हैं। वे शिखा और जनेऊ के कट्टर विरोधी हैं। उनका कहना है इनसे विषमता फैलती है तथा मिथ्या अभिमान उत्पन्न होता है। आनन्द मार्ग की एक छोटी सी पुस्तिका है जिसका नाम आनन्द मार्ग चर्याचर्य' उसमें 'खतना' का समर्थन किया गया है। आनन्द मार्ग मे ब्रह्मचर्य का अर्थ ईश्वर के पास पहुंचना है अतः मास में साधक को कम से कम एक बार वीर्यपात अवश्य कर लेना चाहिए। बाल ब्रह्मचारियों के लिए आनन्द मार्ग में कोई स्थान नही है। जो ब्रह्मचर्य का अर्थ वीर्य रक्षा करते हैं वे आनन्द मार्ग की दृष्टि में ढोंगी है इस पंथ में सन्यास का कोई महत्त्व नहीं। आनन्द मूर्ति जी का कहना है कि आश्रम व्यवस्था ढोंग है। यह पन्थ अग्निहोत्र के भी विरुद्ध है। उसके मत मे ऋण तथा ४ महा यज्ञ हैं:—

(१) माता-पिता की सेवा प्रथम यज्ञ
(२) साधना दूसरा यज्ञ
(३) गुरु की पूजा तीसरा यज्ञ
(४) गुरु को सर्वस्व अर्पण

आनन्द मार्ग मे गुरुको सर्वस्व अर्पित करने का आदेश है। एक साधक या साधिका जब दीक्षा ग्रहण करता है या करती है तो उसे शरीर के प्रत्येक अग पर हाथ रखकर कहना होता है कि यह सब मेरा नही अपितु गुरुजी का है। इस पन्थ में आनन्द मूर्ति जी के बिना कोई सिद्धि को प्राप्त नहीं कर सकता। भक्तों का कहना है कि हमारे गुरुदेव अन्तर्यामी है। उन्होंने पूर्व मे अनेक अवतार धारण किए हैं किन्तु कल्कि का अवतार शेष था इसलिए अब इस रूप मे आए हैं, इसके बाद जीवन मुक्त हो जायेंगे। साधक और साधिकाए प्रत्येक सप्ताह मे एक स्थान पर एकत्र होते हैं। वहां दूसरे का प्रवेश निषिद्ध है। दीपक बुझा समाधि में लीन हो जाते हैं। जो बिल्कुल समाधिस्थ हो जाता है वह विभिन्न पशुओं की बोली बोलता है। इनकी समाधि काक, बटेर, कोयल, कुत्ता, बिल्ली आदि की बोलियो से परिपूर्ण होती है। इनकी एक दूसरी पुस्तक का नाम है 'जीवन-वेद' जो दो भागों में छपी है किन्तु सबको यह प्राप्त नही है। ये लोग वाम मार्गियों के समान भग की पूजा को अपना प्रतीक मानते है। इसमे दीक्षा देने वाले आचार्य कहलाते हैं। आचार्य के माध्यम से ही गुरु के पास पहुच होती है।

आनन्द मूर्ति जी गृहस्थी हैं। उन्होने अभी एक दूसरी शादी की है। भक्तों का कहना है कि नवबाला ने अपने को गुरुजी की सेवा मे अर्पित कर दिया था अत गुरु जी को उसे ग्रहण करना पड़ा।

इन्होंने बिहार के २-३ स्थानों में शिशु विद्यालय भी खोले हैं। बगला भाषा मे इनका एक समाचार पत्र भी निकलता है जिसका नाम 'नूतन पृथ्वी' है। आनन्द मार्ग राष्ट्रभाषा हिन्दी का विरोधी है। उनकी दृष्टि मे एक ही नेता है और वे सुभाषचन्द्र बोस हैं।

यह विवरण श्री आचार्यरामानन्द जी शास्त्री के 'आनन्द मार्ग' शीर्षक लेख के आधार पर दिया गया है।

धर्म्म के नाम पर होने वाले इस अधर्म्म और पाखण्ड का डटकर मुकाबला होना चाहिए। आर्यसमाज के रहते हुए इस प्रकार कीमहामारियों की व्याप्ति आश्चर्य जनक प्रतीत होती है। इस प्रकार के ढोंग और पाखड धर्म्म को विकृत करते और धार्मिक भावना को उपहासास्पद बनाते हैं। यह बात इस प्रकार के पाखडों से प्रभावित होने वालों पर अकित की जानी चाहिए। प्रत्येक आर्य को इस प्रकार के अधर्म्म प्रसार को रोकना अपना दायित्व समझकर सक्रिय होना चाहिए। भारत वर्ष इस प्रकार के पाखडों के प्रसार के लिए उर्वरा भूमि के लिए बदनाम है। आर्यसमाज ने अपने सतत् प्रयत्न से इस बदनामी को कम करने का भी श्रेय प्राप्त किया है। इसे निशेष करने का भी श्रेय प्राप्त करना है। हमे अपनी कार्य प्रणाली और कार्य प्रवृत्ति को बदलकर इसे एक महत्त्वपूर्ण ध्येय बनाना होगा। तभी सफलता की आशा की जा सकेगी।

लूप

इन दिनो परिवार नियोजन के लिए लूप के प्रयोग का सरकार द्वारा संगठित एव व्यापक प्रचार किया जा रहा है। इस आन्दोलन के दुष्परिणामों की उपेक्षा की जा रही है। राज्य का कार्य विलासिता की प्रवृत्तियो को नियन्त्रित करना होता है न कि प्रोत्साहित। नैतिकता की दृष्टि से, शारीरिक ह्रास की दृष्टि से तथा अन्य किसी भी दृष्टि मे क्यों न देखा जाय, कृत्रिम साधनो से सन्तति निरोध हेय और त्याज्य रहा है परन्तु खेद है कि हमारी सरकार भोग प्रधान समाज व्यवस्था को मिटा देने के बजाय उसको बनाए रखने मे हिस्सेदार बन रही है।

मुसलमानों की सबसे बडी सोसाइटी जमैयतुल उल्माए हिन्द ने अभी हाल में मुस्लिम प्रजा मे परिवार नियोजन के इस अभियान का घोर विरोध किया है। इस विरोध का राजनैतिक पहलू भी है। यदि हिन्दू-स्त्रिया इसका व्यापक आश्रय लेती हैं और मुस्लिम देवियां इससे पृथक् रखी जाती है या रहती है तो निश्चय ही हिन्दुओं की सख्या घटेगी और मुसलमानों की बढेगी। यह बात हिन्दू जाति की वृद्धि और हिन्दू हितों के लिए घातक सिद्ध होगी। इसके अतिरिक्त समाज सुयोग्य सन्तानों से भी वंचित हो जायगा।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

(१) ओ३म् ! योजागार तमृचः कामयँते । योजागार तमु सामानियँति । यो जागार तमयँ सोम आह । तवाह मस्मि सख्ये नियोक ॥ साम २१-२-५

जो पुरुष अज्ञानरूपी निद्रा को त्याग कर सचेत हो जाता है, उसी को स्तुति मन्त्रों का सही बोध होता है, ऐसे ही पुरुष को साम का ज्ञान भी होता है और उसे ही परमानन्दरस, "मैं तेरा मित्र हूं" इन शब्दों में ससार स्वागत करता है ।

ओ३म् ! अग्निर्जागार तमृ चः कामयँतेऽग्निर्जागार तमु सामानि यँति । यो अग्निर्जागार तमयँ सोम आह, तवाह मस्मि सख्ये नियोकः॥ साम २१-२-६

संकल्परूप अग्नि मनुष्य में सदा जाग्रत रहती है । और जो पुरुष सचेत होने पर अग्निवान तेजस्वी होकर आगे बढ़ता है, उसी को स्तुति मन्त्रों का बोध होता है और साम का सच्चे स्वरूप में ज्ञान भी उसी को प्राप्त होता है । ऐसे ही अग्निवान्, तेजस्वी जागरूक पुरुष को परमानन्द रस "मैं तेरा मित्र हूं" इन शब्दों में ससार स्वागत करता है और उसकी कीर्ति फैलती है ।

हमें उपरोक्त दो वेद मन्त्रों द्वारा सचेत रहने के लिये कितना सुन्दर उपदेश मिलता है इस ससार में अधिकार जमाकर, उसकी रक्षा तथा उपलब्ध भोग सामग्री का सदुपयोग ऐसे ही पुरुष कर सकते हैं जो सदा जागरूक रहकर उचित कार्य करने के लिये हर समय तय्यार तथा चौकन्ने रहते हैं । अज्ञानरूपी निद्रा से जागकर अग्निवान, तेजस्वी पुरुष को ससार भी अपना मित्र मानता है और चारों ओर ऐसे ही पुरुष की कीर्ति संसार भर में गाई जाती है ।

(२) असख्य बलिदानों के पश्चात् हमने स्वतन्त्रता प्राप्त की । लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल ने सारे भारतवर्ष में फैली हुई सैकड़ों रियासतों को एक राष्ट्र के रूप में बड़ी सावधानी तथा सतर्कता से बांधा । यद्यपि हमें अभी बहुत कुछ करना था, फिर भी हमारी कीर्ति संसार भर में फैली और उस समय बहुत से देश हमारी मित्रता पाकर विदेशी शासन से मुक्त हो गए । फिर चीन ने हमारी आंखें खोलीं, उसने हमारे ऊपर हमला करके दिखा दिया कि हमें शक्तिशाली राष्ट के रूप में आने के लिये, कठिन परिश्रम करना है । हमारे योग्य तथा जागरूक प्रधानमंत्री माननीय प० जवाहरलाल नेहरू ने तुरन्त काम करना आरम्भ कर दिया । देशको महान् शक्तिशाली बनाने मे वे तुरन्त जुट गए । बड़े २ कल कारखाने खोले जिनमे रातोंदिन काम होने लगा और जब पाकिस्तान ने फिर हमला किया तो ससार ने देख लिया कि हमारे प्रधानमन्त्री मान्यवर श्री लालबहादुर शास्त्री ने कितने धैर्य और साहस के साथ काम लिया और हमारी देशभक्त फौजें लाहौर के निकट तक पहुच गईं । फिर ताशकन्द समझौता हुआ । जो अब कुछ ढीला सा होता प्रतीत होता है क्योंकि पाकिस्तान-चीन गठबन्धन से इसका बड़ा अनहित हो रहा है ।

चेतावनी

श्री जगजीवन लाल जी
१३६ पन्नालाल' झांसी (सिटी)

(३) इस समय हमारा भारतवर्ष बड़ी कठिन हालत से गुजर रहा है । कुछ तो बाहरी खतरे हैं और कुछ भीतरी ।

(१) बाहरी खतरा चीन-पाकिस्तान गठबन्धन अभी बना हुआ है । किसी भी समय आग भड़क सकती है । इसके लिये हमें सदा सचेत रहना है । पूरब, पश्चिम तथा उत्तर तीनों ओर से सावधान रहना है । केवल फौजी शक्ति ही काम नहीं देती, वरन्, राष्ट्र एकता, मनोबल तथा आत्मविश्वास की सबसे बड़ी आवश्यकता होती है ।

(२) देश के अन्दर अब कई समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं । भाषाई विवाद पैदा करके कुछ राजनैतिक पार्टियां अपने २ स्वार्थ सिद्धि के लिये भारत को टुकड़े २ में बाटना चाहती हैं । पजाबी सूबा बन ही रहा है, आगे चलकर न जाने कितने और सूबे बनेंगे कोई नहीं कह सकता । नित्य नये आन्दोलन खड़े किये जाते हैं । कहीं सीमा विवाद है तो कहीं अंग्रेजी परस्त हिन्दी विरोधी जाल फैलाकर देश की एकता मे कठिनाइयां पैदा करके, अपनी २ ढपली अपना २ राग अलापने में लगे हैं । जिस देश की भाषा एक न हो वह देश ही क्या ? अमरीका में भी सैकड़ों अलग २ जाति और मुल्कों के लोग रहते हैं परन्तु राष्ट्रभाषा अग्रेजी है । रूस में अनेकों भाषाएं लोग बोलते हैं परन्तु राष्ट्र-भाषा वहां की एक ही रूसी है जिसे सभी देशवासी बडी चाव से पढ़ते हैं । रूस मे वहां के निवासी बड़ी सख्या में सभी जगह, हिन्दी से प्रेम करते हैं । कितनी सरल और आनन्दमई भाषा है हिन्दी-जिसे रसखान, रहीम, सूरदास, मीरा, कबीर, सत तुलसीदास, महर्षि दयानन्द सरस्वती,और महात्मा गांधी को आत्म शान्ति प्रदान करती रही है । अन्य देश के लोग भी इसे अपना कर आनन्दित होते हैं, रूस तो जैसे हिन्दी को एक अपनी भाषा के रूप में ही देखना चाहता है । सभी इससे प्यार करते हैं, परन्तु दुर्भाग्य हैं हमारे देश के कि यहां के कुछ लोगों को हिन्दी का राष्ट्र-भाषा के रूप में आदर देना अखरता है । यह बात नहीं है कि वे उसे सीखना नहीं चाहते, वे जानते हैं कि हिन्दी बहुत ही सरल और आनन्दमई भाषा है, वे जानते, हुए भी अनजान बनते हैं केवल एक जिद्द की वजह से । जनता तो अपने लीडरों के इशारों पर चलती है, जब लीडर तथा राष्ट्र निर्माता ही देश को अलग २ टुकड़ों में देखना चाहते हैं तो फिर क्या कहा जाय ऐसी बुद्धि को ? वेद माता तो आज्ञा देती है—

संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ॥
समानि व आकूति समाना हृदयानि वः । समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहा सति ॥

प्रेम से मिलकर चलें,
बोलें सभी ज्ञानी बनें।
पूर्वजों की भांति हम,
कर्तव्य के मानी बनें ॥
हों सभी के मन तथा,
सकल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हों प्रेम से,
जिससे बढ़े सुख-संपदा ॥

ईश्वर हमें शक्ति प्रदान करता है और बराबर हमारी सहायता भी करता है । आओ आज हम एक शक्तिशाली राष्ट्रके रूपमें एक राष्ट्रीय हित चिंतक बनें और ससार मे फिर एक बार सूर्य सम चमकें जिससे अंधकार दूर होकर प्रकाश की किरणें व्यापकता से फैलें जो यह साबित करें कि भारत निवासी आपस मे एक होकर सारे संसार को प्रभावित कर सकते हैं ।

(३) उपरोक्त सभी समस्याओं के अतिरिक्त एक और समस्या है जिसकी ओर हमारे नेताओं का ध्यान ही नहीं जा रहा । वह है भारत में विदेशी मिशनरियों का जाल । विदेशी ईसाई मिशनरी समस्त भारत में चारों तरफ से अपना कार्य बड़ी तेजी से कर रहे हैं । पहाड़ी इलाकों तथा दुर्गम जंगली जातियों में अपने अड्डे जमाते चले जा रहे हैं । वहां की दरिद्रता, निर्धनता, मूर्खता, अशिक्षा और बीमारी का अनुचित लाभ उठा कर वे करोड़ों रुपया पानी की तरह बहाकर, हमारे देशके करोड़ों व्यक्तियों को, धर्म निरपेक्षिता की आड़ में, अराष्ट्रीय तत्वों को उभार कर, ईसाई बनाते चले जा रहे हैं । कहने को तो वे कहते हैं "हम तो भारत के दरिद्र और असहाय व्यक्तियों की सहायता करते हैं, उन्हे दवा देकर बीमारी से बचाते हैं, मूर्खों को सभ्य बनाते हैं, स्कूल कालिज और अस्पताल खोलते हैं और सभी की सेवा करते हैं" परन्तु एक देशभक्त अंग्रेज पादरी डाक्टर वैरियर एलविन हमें चेतावनी देते हैं, "मैं यह बात जोर देकर कहता हूं कि विदेशी मिशनरियों को आदिवासी क्षेत्रों से तुरन्त हट जाना चाहिये । इस क्षेत्रकी सभी प्रकार की शिक्षाओं का काम, भारत सरकार द्वारा ही सचालित होना चाहिये । हमारी मांग है कि सरकार जो कुछ भी यहां कर रही है, उससे कहीं अधिक किया जाना चाहिये...... ...अन्त में विशाल हिंदू समाज से यही प्रार्थना है कि अब सोने का समय नहीं है ...... आप स्वयं भी जागें । यह आपके ही करोड़ों भाई आपसे छीने जा रहे हैं । आगे वाले सैकड़ों वर्षों तक यही आपके बगल के कांटे बने रहेंगे, यदि आपने उनकी रक्षा का तुरन्त उपाय नहीं किया ॥"

उपरोक्त थोड़े से शब्दों में ही डाक्टर एलविन ने विदेशी मिशनरियों (विशेष कर अमरीकी मिशनरी) की गति विधियों का साफ २ चित्र खींच दिया है भारतके अन्दर ही नहीं वरन ऐसा प्रतीत होता है कि अंडमन तथा नीकोबार टापुओं में भी इनका जाल फैल गया है और वहा के अधिकांश निवासी ईसाई बनाए जा चुके हैं । थोड़े से जो बचे हैं वे भी कब तक बचे रह सकेंगे ? फिर यह टापू तो बंगाल की खाड़ी मे हैं और उनकी रक्षा का भार कितना कठिन हो जायगा, यह बात नागालैंड से जानी जा सकती है । एक कवि की वाणी पुकारती है:—

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज सावधान !

श्री प० राजेन्द्र जी आर्य, अतरौली (अलीगढ)

(२)

अब दूसरे पक्ष को लीजिये, जिसे पौराणिक हिन्दुओं के साथ समन्वयात्मक नीति कह सकते हैं। जहां तक मैंने समझा है, इस मनोवृत्ति का कारण आज के आर्य समाज में पौराणिक साहित्य के अध्ययन और उसके प्रकाशन का अभाव है। यही कारण है कि वह ऋषि दयानन्द द्वारा अपनाई गई पौराणिक मतमतांतर की खण्डनात्मक नीति को नहीं समझ पाता और न उसे इसका पूर्ण ज्ञान है कि वैदिक धर्म और पौराणिक मतों में कितना और क्या भेद है ?

पुराणों के अध्ययन के पश्चात् ऋषि दयानन्द इस निष्कर्ष पर पहुचे कि वैदिकधर्म के उन्मूलन मे पौराणिक साहित्य का विशेष हाथ रहा है और इसी कारण उन्होंने पुराणों के प्रति समन्वयात्मक नीति अपनाना सदा और सर्वथा अस्वीकार किया। सत्यार्थप्रकाश में जितनी समालोचना उन्होंने पुराण और पौराणिक मतमतांतर की, की है उतनी अन्य सम्प्रदायों की नहीं की। ऋषि दयानन्द की आलोचना कठोर है अथवा समुचित, इसका पता तो हमें तभी लग सकता है कि हम स्वय पढ़ अथवा उनपर लिखे गये पहले आर्य विद्वानों के साहित्य को देखें। आज भी पुराणों पर कुछ साहित्य लिखा गया है किन्तु हमारी समन्वयात्मक नीति उस के प्रचार और प्रसार में बाधक है।

आज हिन्दू मतो का जो ढांचा हम देख रहे हैं, उसका समस्त आधार यही पुराण है। अत. यदि हम वैदिक धर्म को इस देश में प्रतिष्ठित करना चाहतेहैं तो हमे पुराण और उनके द्वारा उत्पन्न की गई वेद विरोधी धारणाओं को निर्ममता के साथ हटानाही पड़ेगा। आज हमारा यह रोना कि हमारा परिवार आर्य नहीं बनता अथवा आज आर्यसमाज की प्रगति अवरुद्ध हो गई है इसका मूल और एकमात्र कारण हिन्दुओं के साथ हमारी यही समन्वयात्मक मनोवृत्ति अथवा भाई भतीजे बाद हैं। हमे यह भली प्रकार समझ लेना चाहिये कि धर्म प्रचार फूलमालाओं के द्वारा न होकर काटो पर चलकर ही होता है।

ऋषि दयानन्द के पश्चात प्रारम्भ के आर्य विद्वानों और उस समय के नेताओं ने इसे समझा था। यही कारण है कि थोड़े से काल में आर्यसमाज की प्रचण्ड ज्योति न केवल भारत अपितु विदेशों तक जगमगाने लगी। किन्तु आज "हमी सोगये दास्तां कहते-कहते।" हमारी इस दुर्बल नीति का यह परिणाम हुआ है कि देश विदेशके सभी शिक्षित लोग आर्यसमाज को एक सुधारवादी हिन्दू सम्प्रदाय समझते हैं, और उसके सार्वभौम गौरव को हमने ही अपने हाथों नष्ट कर दिया है।

जिस उदारता का हम आज ईसाई और इस्लाम मत की आलोचना करते समय परिचय देते हैं, उसका अभाव पौराणिक हिन्दूमतों के सम्बन्ध मे मुख्यत: और अन्य भारतीय सम्प्रदायो के प्रति साधारणत: देखते हैं। किन्तु यदि हम निष्पक्ष होकर विचारें तो जो विरोध आर्यसमाज का उसके जन्मकाल से लेकर आजतक सम्प्रदायों द्वारा हुआ है, और आज भी अप्रत्यक्ष रूप से हो रहा है उतना किसी भी अन्य सम्प्रदाय द्वारा नहीं हुआ और न हो रहा है। यद्यपि यह एक कड़वा सत्य है, जो आज के वातावरण में पाठकों को कुछ अखरेगा—किन्तु चाहे कड़वा हो या मीठा, सत्य—सत्य ही है। यह मनोवृत्ति वैदिक धर्म जैसी सार्वभौम विचारधारा के न अनुकूल और न उसके प्रचार मे सहायक हो सकती है।

इस मनोवृत्ति के एक अन्य परिणाम पर भी दृष्टिपात कीजिए। एक हिन्दू, ईसाई, मुसलमान अथवा सिख हो जाने पर पक्का ईसाई, मुसलमान और सिख बन जाता है, यही बात उसके पारिवारिक जनों के सम्बन्ध में है। किन्तु एक हिन्दू आर्य बनने पर न वह दृढ आर्य बनता है और न उसका परिवार। कारण वही है कि वह वैदिक धर्म और पौराणिक हिन्दुत्व में विशेष अन्तर नही समझता। उसका एक पैर आर्य समाज की रकेब मे रहता है और दूसरा हिन्दुत्व की मे—दो रकाबों में पैर रखने वाले की जो गति होती है—वही आज हमारी है।

एक हिन्दू आर्य समाज की ओर इसलिये आकर्षित नहीं होता कि वह एक हिन्दू और आर्य में व्यावहारिक रूप में कोई अन्तर नहीं देखता। उधर एक अहिन्दू आर्य बनने से इस लिये कतराता है कि वह देखता है कि आर्य बनने पर हिन्दुओं की भांति उसके साथ अछूतों जैसा ही व्यवहार होगा। संसार में अपना मत परिवर्तन करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति केवल आध्यात्मिकता को ही नहीं देखता, वह लौकिक व्यवहार और सामाजिक स्थिति पर भी दृष्टिपात करता है।

आर्यसमाज पर, विशेषत: पौराणिक हिन्दुओं द्वारा, यह आरोप लगाया जाता है कि वह दूसरे मतों का खण्डन करता है। परन्तु यदि आप पुराणों को देखे तो वैष्णव, शैव और शाक्तों द्वारा एक दूसरे का जिस प्रकार और जिन शब्दों में खण्डन किया है वे न केवल इन मतों के अनुयायियों अपितु उनके उपास्य देवों के लिये गाली-गलौच की सीमा तक पहुंच जाते हैं। व्यावहारिक रूप से यदि हम देखें तो तर्क-वितर्क, आलोचना प्रत्यालोचना कहां नहीं होती और कौन नहीं करता ? न्यायालयों में क्या होता है जहां सैकड़ों रुपये व्यय करके अपने पक्ष का समर्थन और दूसरे पक्ष का खण्डन वकीलो द्वारा कराते हैं। शिक्षणालय में न्याय दर्शन की शिक्षा किसलिये दी जाती है ? विधान सभा और ससदों मे क्या होता है ? सत्य तो यह है कि ससार का कोई भी कार्य बिना तर्क-वितर्क अथवा खण्डन-मण्डन के नहीं चलता। धर्म और सम्प्रदाय का यही भेद है कि धर्म, तर्क और बुद्धि प्रधान है जब कि सम्प्रदाय 'विश्वास' जो कि उसकी परिभाषा मे अन्ध विश्वास का पर्यायवाचक है, का आश्रय लेता है। झगड़े का आधार कभी धर्म नहीं रहा और न है, अपितु उसके पीछे हमारे सांसारिक स्वार्थ हैं।

अतएव जो लोग आर्य समाज को हिन्दुत्व के साथ समन्वय की बात करते हैं, वे पहले वेद और पुराणों की शिक्षा के परस्पर भेद को समझ लें। बिना विचारे वैदिक धर्म के सार्वभौम सिद्धान्तों का पौराणिक मतवाद से गठ बन्धन न करें। इस सम्बन्ध में उन्हे सिखों की वर्तमान सघ शक्ति से शिक्षा लेनी चाहिये। सिख सम्प्रदाय जब तक हिन्दुत्व का एक अग बना रहा वह अपग बना रहा, किन्तु जैसे ही उसने अपना सम्बन्ध उससे विच्छेद करके एक पृथक सगठन बना लिया, वह इस देश का एक जीता-जागता समुदाय बन गया। सिख सूबे की मांग और उसमें सफलता आर्य समाज के लिए एक उदाहरण है, जिससे समय रहते हुए उसे शिक्षा लेनी चाहिये।

(नोट - लेख के पिछले भाग की १७वीं पंक्ति, कालम १ में 'उलझना चाहिये" के स्थान पर 'उलझना नहीं चाहिये' होना चाहिये—पाठक सुधार लें।)

—(क्रमश)

(पृष्ठ ५ का शेष)

सावधान हो ! सावधान हो !
ऋषियों की सन्तान।
अराष्ट्रीय गति-विधियो से है,
देश को हानि महान ॥
सेवा और सुश्रूषा का आडम्बर
खूब दिखाते हैं। ले मजहब की आड
यह भारत भर मे धूम मचाते हैं ॥
और करोड़ो भोले-भाले लोगो को
बहकाते हैं। कपट प्रलोभन देकर यह
ईसाई उन्हे बनाते हैं।
किंतु सो रहे गहरी निद्रा में,
क्यों चादर तान।
सावधान हो ! सावधान हो !
ऋषियो की सन्तान ॥
(२) सोचो तो किसलिये यहां,
आश्रम सुविशाल बनाए हैं ?
नर्सिंग होम, अस्पताल किसलिये,
जगह जगह बनवाए हैं ?
और किसलिये विविध भांति के,
कालिज भी खुलवाए हैं ?
लाईब्रेरी, सेनीटोरियम,
भली प्रकार चलाये हैं ?
सुनो ! सभ्यता भारत की है,
चले यह सभी मिटाने को।
अराष्ट्रीय तत्वों को जमकर,
भारत में फैलाने को ॥
स्थापित फिर से करने को,
विदेशियो का राज्य महान।
सावधान हो ! सावधान हो !
ऋषियों की सन्तान ॥
(३) होना था जो हुआ बन्धुओ,
अच्छा है अब भी चेतो।
धर्म राष्ट्र के सच्चे सेवक,
बनकर अब घर से निकलो ॥
कहदो यह ललकार,
विदेशी चालों से मुख मोड़ो।
नारा है बस यही
अराष्ट्रीय गति-विधियों को छोड़ो ॥
युग युग से है मानवता का,
भारत केन्द्र महान।
सावधान हो ! सावधान !
ऋषियों की सन्तान ॥
बड़े हर्ष का विषय है हमारे

(शेष पृष्ठ १२ पर)

पाप से बचो

पाप, पाप ही है

श्री स्वामी विज्ञानभिक्षु जी सरस्वती

[illegible]ारे आत्मा को इतना [illegible] बनाया है कि जब भी हम पापकर्म करने लगते हैं तभी आत्मा से ध्वनि निकलती है कि यह पापकर्म है इसे न कर। पर मनुष्य आत्म हत्या करके पापकर्म करता है जिसका फल उसे एक दिन अवश्य भोगना पड़ेगा।

जो चालाक लोग पाप करके भी अपनी मनघड़न्त युक्तियों से यह सन्तोष कर लेते हैं कि हमने इसमें क्या पाप किया है? ग्राहक लोग ही आकर हमसे पाप कराते हैं—वे सस्ती वस्तुएं मांगते हैं फिर हमारा क्या दोष रहा?' भाइयो! याद रक्खो, इन युक्तियों और दलीलों से आप बच नहीं सकते! आपका सच्चा आत्मा तो तब भी अन्दर से आपको कोस रहा होता है कि 'अरे चालाक! क्यों तू दूसरों को धोखा देता है?' यह मार्ग ठीक नहीं है पाप, पाप ही है—

कुछ लोग यह समझ कर भी पाप करते है कि पाप का फल तत्काल नहीं मिलता, बल्कि पापात्मा को सुखी होता और पुण्यात्मा को—दुःखी होता और भूखों मरता देखकर कुछ ऐसा भी निर्णय कर लेते हैं कि 'पाप पुण्य कुछ नहीं सिर्फ मूर्खों की बहकावट है और कुछ नहीं।'

पर ऐसा मानना ठीक नहीं है। हम छोटे से दिमाग वाले होकर बड़ी शक्ति वाले प्रभु के प्रबन्ध में भूलें निकालते हैं—मानो चौथी श्रेणी के होकर बारहवी श्रेणी की ज्यामिति (जुमैट्री) को खाली लकीरें मानकर उन पर हंसी करते हैं। जब हम वहां तक स्वयं पहुंचते हैं तो एक एक रेखा को सार्थक देखते है। हम जरा वेदों का स्वाध्याय करें, उपनिषदों का पाठ कर विद्वानों की संगति में बैठें, अपने हृदय रूपी शीशे की मैल हटायें तब हमें साफ ज्ञान हो जायगा कि उसके प्रबन्ध में तो तिल-तिल का हिसाब तुल-तुल कर मिल रहा है।

भला आप यह तो देखें कि यदि कोई चालाक तुम्हें धोखा देकर रुपया लूट ले जाय तब आप उसे कोसेंगे या नहीं? तब क्या यह न कहेंगे कि जैसे तूने मुझे बरबाद किया है ऐसे तू भी बरबाद हो।'

अपने को दुःख मिलता हुआ देख कर तो हम उसे अभिशाप देने को उद्यत हो जायें पर जब हम किसी को लूटें उसे धोखा दें तब वह हमें अभिशाप नहीं देगा? यदि बुरा या भला फल तत्काल नहीं मिलता तो इसमें प्रभु की दया ही समझनी चाहिए। प्रभु हमें सावधान करता है कि बचना।

यदि अब भी किसी को इस नियम की पवित्रता पर सन्देह हो तो उसे हस्पतालों में जाकर रोगियों से पूछना चाहिए कि तुम्हें यह रोग कैसे हुआ? उनमें कुछ तो कहेंगे कि मेरे भोजन में रेत अन्दर जाती जाती आज 'पथरी' के रूप मे आ गयी हैं, कुछ कहेगे कि परस्त्री गमन करने से मुझे 'आतशक' हुआ है कुछ रोगी ऐसे भी होंगे जो यह कहेंगे कि हमने कोई प्रत्यक्ष भूल तो नहीं की, पर न जाने किस पाप का फल हमें आज मिला है। जब दुनियां का कैदी भी जेल अफसर की मनोवृत्ति को नहीं जान सकता कि वह कब कौन सा आदेश (आर्डर) दे दे तब हम उस महा प्रबन्धक के प्रबन्ध को कैसे जान सकते हैं? हमारा उसके विषय में निर्णय करना कि कोई प्रबन्धक नहीं है बिलकुल नादानी है।

कुछ लोग इसलिए भी पाप करते हैं जब बहुतों को पाप करता हुआ देखते हैं तब उनके मन में यह विचार आ जाता है यदि पाप बुरा होता तो सौ में ९९ पाप करते हैं तब क्या हानि हो जाती है? सब कुछ वैसा चल रहा है, न कोई अंधेरा आता है न कोई मकान के नीचे आता है। वैसे सूर्य निकलता है जल मिलता है धरती भी वैसे फल दे रही है, पर कुछ बदला नही, कोई काम रुका नहीं?

ऐसे व्यक्तियों को यह समझना चाहिये कि यदि बहुत लोग झूठ बोलने लगजावें, बहुत दूकानदार लोग दूध की मलाई अलग छिपा-छिपा कर निकालते चले जायें, दूधिये दूध में पानी मिलाकर उन बढ़ते हुए रुपयों पर हर्ष मनाते चले जायें तो सबके या बहुतों के ऐसा करने पर वह पाप कर्म, पुण्य तो नहीं बन जाता, वह पापकर्म क्षमा योग्य भी नहीं हो जाता। पाप सदा पाप ही रहता है और पुण्य सदा पुण्य।

भाइयो! बचत के इन रुपयों पर गर्व मत करो, इस बात की आमदनी से मन में फूलो नही, उस प्रभु के नियम को भूलो नहीं, क्या पता कि ये पाप के रुपये किस काम में खर्च होंगे, चोरी में चले जायेंगे या आग की भेंट हो जाएंगे अथवा हमें किसी मुसीबत में फंसाने का कारण बनेंगे।

मैं तो ऐसा समझता हूं कि पाप की कमाई के ये रुपये आग के अंगारे हैं यदि जेब में जायेंगे तो जेब को फाड़ कर निकल जाएंगे, यदि पेट में जायेंगे तो पेट को फाड़कर हमें रोगी बनाकर निकल जायेंगे।

एक लुटेरा जो बहुतों को लूट चुका था, 'लूटना' उसने अपनी जीविका बना ली थी एक दिन अपने पुत्र से बोला कि पुत्र! अब तुम सबल हो गये हो, लूट पाट के कामों में तुम सहायता करने आज मेरे साथ चलो। घर में पैसे समाप्त हो गये, दीये का तेल तक नहीं रहा। पुत्र साथ चला, एक धनी के घर के पास पहुंचे। पुत्र ने पूछा क्या देर है लूटने में। पिता बोला अभी सेठ के घर में दिया जल रहा है। वह बुझेगा तो हम अपना काम आरम्भ करेंगे। पुत्र बोला इसको कितनी बार लूटा है? पिता बोला दस बार! तब पुत्र बोला पिताजी! आपने जिसको दस बार लूटा है उसके घर में तो अब भी दिया जल रहा है, पर हम लूटने वालों के घर में तो अन्धेरा है, वहां तो दिया जलाने को तेल तक नहीं रहा, यह क्या बात? पुत्र की बात सुनकर पिता की आंख खुली, बोला, पुत्र! तूने एक शब्द कहकर मेरी आंख खोल दीं, अब मेरे विचार बदल गये हैं। हम लूट पाट का काम बन्द करते हैं मेहनत मजदूरी करके रोटी कमायेंगे।" सचमुच लूटने वालों के घर में सदा अन्धेरा रहता है वस्तुओं का अभाव खटकता रहता है।

कुछ लोग इसलिए भी पाप करते हैं कि उनका खर्च पूरा नहीं होता। यह भी एक भूल है। आर्य्य संस्कृति या भारतीय संस्कृति तो त्यागमय थी कम से कम खर्च से हमारे भाई गृहस्थी चला चुके हैं कुछ अब भी चला रहे हैं। खर्च अधिक बढ़ाकर उसे जैसे तैसे पूरा करने के लिए पाप करना-रिश्वत लेना या कम तोलना या अधिक मूल्य लेना या घटिया वस्तु देना हमारी मूर्खता है हम ऐसा करके अपने ऋषियों की संस्कृति को कलंकित करते हैं।

पाप की कमाई जैसे व्यक्तियों को निस्तेज बेरौनक और दीन दुखिया बना देती है वैसे सभाओं को और समाजों को भी और राष्ट्रों को भी बरबाद ही कर देती है। हमने देखा है कि अंग्रेजों ने भारतवासियों को मीठे ढग से व्यापार के द्वारा टैक्स के द्वारा अथवा और किसी चालाकी से जितना लूटा है करोड़ों रुपये यहां से लेजाकर अपना कोष भरा है, अब वह कोष कहाँ है जिसके राज्य मे सूर्य अस्त न होता था अब उनका वह तेज कहां है इसका उत्तर मुझसे तो यही दिया जाता है—जैसे आया वैसे गया।

एक गूजरी दूध में पानी मिलाती थी। वह पानी का हिसाब अलग रखती थी और दूध का अलग। एक दिन वह दोनों गठरियों को अलग-अलग गिनने बैठीं कि एक बन्दर आया पानी वाले पैसों की गठरी उठाकर पेड़ पर चढ़ बैठा उसे खोलकर एक-एक रुपया करके अथाह पानी में डालता जाता था। उसकी इस क्रिया को देखकर गुजरी बोली 'दूध का दूध पानी का पानी गुजरी बेच पीछे पछतानी।' पानी की जो कमाई आयी थी वह तो वैसे पानी में ही मिल गयी। व्यर्थ का पाप गूजरी के सिर पर चढ़ा। ठीक यही हिसाब व्यक्तियों समाजों और राष्ट्रों का हो रहा है। पर तत्काल फल न मिलने से मनुष्य इस रहस्य को समझ नहीं पाता।

अतः हम सबको अपना खर्च कम करना चाहिये। पर ऋण लेना ठीक नहीं। ईश्वर को सदा न्यायकर्त्ता मानना चाहिये, अपनी आत्मा की आवाज सुननी चाहिये, ऋषियों की सस्कृति को सामने रखना चाहिए। जैसे भी हो हमें पापकर्म से बचना चाहिये। एक दिन मे न सही, शनैः २ तो पापकर्म से हटते चले जाना चाहिए।

आप सुन्दर बनेंगे तो आपका समाज सुन्दर बनेगा। समाज की सुन्दरता से राष्ट्र सुन्दर बनेगा। राष्ट्र की दृढ़ता भी राष्ट्रवासियों की सच्चाई पर ही निर्भर है।

इंगलैंड की अनुकरणीय बातें

श्री ओ३मप्रकाश जी त्यागी

इंगलैण्ड यूरुप में एक छोटा सा द्वीप है परन्तु यह द्वीप शताब्दियों तक संसार की गतिविधियों का केन्द्र रहा और अनेकों देशों के भाग्य का निर्णय लन्दन १० डाउनिंग स्ट्रीट में होता रहा है। ससार भर पर साम्राज्य करने वाले इस द्वीप के निवासियों में कौनसी वह विशेषतायें हैं जिनके बल पर उन्होंने ससार पर शासन किया? यह प्रश्न था जिसका उत्तर जानने की उत्सुकता लेकर मैं इंगलैण्ड पहुंचा था। भारत की भावी सन्तान इगलैण्ड निवासियों से क्या शिक्षा ले सकती हैं या इंगलैण्ड से लौटते समय मैं अपने देशवासियों के लिये इंगलैण्ड से क्या उपयोगी भेंट ले जाऊं इसी दृष्टिकोण को सन्मुख रखकर मैं इंगलैण्ड व यूरुप के निवासियों के जीवन को समीप जाकर बड़े ध्यान से देखा।

अफरीका के नैरोबी नगर से ज्यों ही हवाई जहाज ने इंगलैण्ड की तरफ उड़ान की तभी से इगलैण्ड व यूरुप का काल्पनिक चित्र मेरे मस्तिष्क में चक्कर काटने लगा। रोम (इटली), फ्रीकफर्ट (जर्मनी) एवं पैरिस (फ्रांस) नगरों के वैभवों की क्षणिक झांकियां लेता हुआ मैं ज्यों ही लन्दन हवाई अड्डे पर पहुंचा तो मेरे मन में हवाई अड्डे पर कस्टम आफिसरों का ध्यान करके रौंगटे खड़े होने लगे। देश से बाहर जाने या आने वाले को सबसे बड़ा भय कस्टम आफिसरों का होता है। इनसे छुटकारा मिलते ही यात्री का चेहरा खिल उठता है और वह आनन्द की गहरी स्वास लेता हैं। जिनका पाला केवल भारत के कस्टम आफीसरों से पड़ा है उसकी अवस्था ही दर्शनीय होती है।

भारत का कस्टम आफिस या आफीसर यमदूतों का अखाड़ा जैसा है। वहां यात्रियों की इसी प्रकार दुर्दशा होनी है जैसे शिकारी कुत्ते खरगोश की छीछालेदर करते हैं। पांच-छ घण्टे में भी यदि इनसे छुट्टी मिल जाय तो बड़ी गनीमत समझो। उपेक्षा, प्रतीक्षा, अपशब्द, अपमान, और रिश्वत भारतीय कस्टम आफिस में मधुर उपहार हैं जो थोड़ी बहुत मात्रा में सभी यात्रियों को प्राप्त होते हैं। हां यदि आप रिश्वत या घूस देने में दक्ष हैं तो फिर मिनटों में आपको छुटकारा मिल जायेगा और आपके सामान को कोई छुयेगा तक नहीं चाहें उनमें सोना ही क्यों न भरा पड़ा हो।

भारत की कस्टम आफिस से भयभीत मैं लन्दन के हवाई अड्डे के कस्टम आफिस पर ज्यों ही पहुंचा तो तुरन्त एक अधिकारी मेरे सामान के पास आकर खड़ा हो गया। उसने मुझे देखते ही Good morning कहकर मेरा अभिवादन किया और बड़े ही मधुर, धीमे एव विनम्र शब्दों में मुझसे पूछा—"क्या आपके पास सिगरेट का बक्स है?" मैंने उत्तर देते हुये कहा—"नहीं! सिगरेट नहीं पीता हूं। उसने मुस्कराते हुये मेरे समान पर स्वीकृति का चिह्न लगाते हुये कहा—Thank you very much प्रति धन्यवाद। मैंने उससे कहा कि मेरे पास कैमरा, ट्रान्जिस्टर आदि कुछ कस्टम का सामान है और यह कहते हुये मैंने अपना सूटकेस खोलने का प्रयत्न किया, परन्तु उसने तुरन्त मुझे सूटकेस खोलने से रोकते हुये कहा—"No, alright you look to be a gentleman।" नहीं, ठीक है आप भले व्यक्ति प्रतीत होते हो।

इंगलैण्ड में घुसते ही वहां के कस्टम आफीसर का मधुर व सभ्यतापूर्ण व्यवहार देखकर मुझे महान् आश्चर्य हुआ और अपने देश के कस्टम आफीसरों पर दया का उदय हुआ। इस एक घटना ने मेरे हृदय मे इगलैंड के लिये आदर व सम्मान उत्पन्न कर दिया।

इगलैण्ड और भारत के निवासियों के शिष्टाचार मे कितना बड़ा अन्तर है इसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे इंगलैण्ड में ही हुआ। मुझे यूरुप जाना था। इसलिये मैं भारतीय हाई कमिश्नर के आफिस से आज्ञा प्राप्त करने गया। वहां १५ मिनट तो मुझे सम्बन्धित अधिकारी तक पहुचने में ही लग गये। वहां भी ऐसा व्यवहार मिला जैसे नवाब के दरबार में साधारण व्यक्तियों के साथ होता है। भारतीय कमिश्नर के आफिस का प्रत्येक कर्मचारी अपने को नवाब से कम नहीं समझता और भारतीयों के साथ सभ्यता के साथ बात करना वह अपना अपमान समझता है।

फार्म भरकर देने पर बड़ी उपेक्षा व असभ्यता के साथ मुझे उक्त आफीसर से यही उत्तर मिला—"अच्छा कल आकर अपना पासपोर्ट ले जाइयेगा। मैंने जब यह कहा कि—"मुझे आज ही शाम को हालैण्ड जाना है—सीट बुक हो चुकी है।" उन्होंने कड़क कर रौब झाड़ते हुये कहा—'क्या हमारे पास केवल आपका ही काम है।" इस प्रकार बड़ी प्रार्थना व कहा—सुनी के पश्चात् उसने दोपहर के पश्चात् मेरा पासपोर्ट वापिस देने का वचन दिया।

भारतीय हाई कमिश्नर से अपना पासपोर्ट लेकर मैं ज्यों ही हालैण्ड के दूतावास में पहुचा कि एक अधिकारी तुरन्त मेरे पास आया और बोला—"How can I help you Sir" अर्थात् श्रीमन्! मैं आप की किस प्रकार सेवा कर सकता हूं? मेरा उद्देश्य जानते हुये ही वह फार्म लेकर आया और उसके भरनेमेमेरी सहायता की और पाँच मिनिट के भीतर ही मुझे हालैण्ड के लिये स्वीकृत-पत्र देते हुये कहा—Any thing more sir? कोई और सेवा श्रीमन्! उसके इस व्यवहार को देखकर मैंने माननीय भाई उषर्बुध जी से, जो कि दोनों स्थानों पर मेरे साथ थे, कहा कि शिष्टाचार में भारत कितना पीछे है।

मुझे इंगलैण्ड के लगभग सभी भागों मे जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ शहर, नगर, गांव सर्वत्र ही मुझे एक आदर्श शिष्टाचार के दर्शन हुये। पढ़े-लिखे या ऊंचे घराने के व्यक्तियों में शिष्टाचार की भावना का मिलना आश्चर्य की बात नही। भारत को छोड़ संसार का कोई देश ऐसा नहीं जहां पठित लोगों मे शिष्टाचार का अभाव हो। स्कूल कालेज विद्यार्थी कहीं हों तो शिष्टता व सभ्यता उनके आने से पूर्व ही कूच कर जाती है। परन्तु इंगलैण्ड की विशेषता यह है कि वहां बच्चा, नवयुवक, प्रौढ़, बूढ़ा, पठित-अपठित सभी शिष्टाचार व सभ्यता में दक्ष होते हैं। शिष्टाचार व सभ्यता का पाठ वह अपनी मां की गोद में ही प्राप्त करते हैं। एक साधारण कुली या बस का कंडक्टर भी पग २ पर Thank you sir! धन्यवाद कहता हुआ मिलेगा।

शिष्टाचार व सभ्यता का सुन्दर दृश्य इंगलैण्ड मे उस समय देखने को मिलता है जब प्रातः साय वहां कार्यालय व दुकानोंसे निकलकर नर-नारियों का समुद्र रेल गाड़ियों व बसों की ओर चलता है। वह दृश्य सचमुच देखने लायक होता है। रेल व बस के पहुंचने से पूर्व ही सब लोग स्वतः ही लाईन में खड़े हो जाते हैं और प्रयत्न करते हैं कि रेल या बस में चढ़ते समय अपना शरीर दूसरे से टकराने न पावे। यदि भूल से टकरा गया तो तुरन्त मुंह से यह वाक्य निकल पड़ता है-Excuse me अर्थात् please कृपया क्षमा कीजियेगा।

रेल, बस, बाजार कहीं भी आप जांय हजारों की भीड़ होते हुये भी आपको शान्त वातावरण मिलेगा। सभी पत्थर की मूर्ति की भांति खड़े होंगे। समाचार पत्र या कोई पुस्तक पढ रहे होंगे कभी २ तो उनकी चुप्पी श्मशान भूमि जैसी शान्ति उत्पन्न कर देती है। इंगलैण्ड के लोग दूसरों की स्वतन्त्रता व अधिकार में हस्ताक्षेप करने के आदि नहीं हैं। वह अपने घर में रेडियो भी इस प्रकार बजाते हैं कि उसकी आवाज पड़ौसियों के कानों तक न पहुंच जाय। भारत की भांति वह रेडियो मौहल्ले भरको नहीं सुनाते हैं।

इंगलैण्ड का शिष्टाचार इतना प्रिय है कि वहां के लोगों में विचारने और उनके साथ बात करने में आनन्द आता है। यह बात भी सत्य है कि वह आपके साथ ट्रेन मे सैकडों मील तक बैठे चले जायेंगे, परन्तु जब तक आप उनसे बात नहीं करेंगे तो वह आप से नहीं बोलेंगे। बोलने पर वह खुलकर बोलते हैं। मार्ग मे यदि आप को किसी से रास्ता या किसी घर का पता पूछना है तो आपको पूछने से पहिले—Exeuse me Please अर्थात् क्षमा कीजियेगा कहकर ही पूछना होगा। पूछने पर वहां का व्यक्ति जब तक आपको पूरी तरह समझा नही देगा तब तक संतुष्ट नहीं होगा।

इंगलैण्ड में शिष्टाचार कैसा है? और वहां के बच्चे कहां इसकी शिक्षा पाते हैं इसका एक उदाहरण ही देना उपयुक्त होगा—एक दिन

(शेष पृष्ठ १३पर)

देव दयानन्द का चमत्कार

जादू वह जो सिर चढ़ बोले

श्री ज्ञानी पिण्डीदास जी, प्रधान, आर्यसमाज लोहगढ़, अमृतसर

(२)

७-*मृगं हत्वाऽऽनयक्षिप्रं लक्ष्मणेह शुभेक्षण। कर्तव्यः शास्त्रदृष्टो हि विधिधर्ममनुस्मर ॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ५६ श्लोक २३

अर्थात्—भगवान् राम ने कहा—'कल्याणदर्शी लक्ष्मण ! (मृग हत्वा) 'गजकन्द' नामक कन्द को उखाड़ कर या खोद कर शीघ्र यहां ले आओ; क्योंकि शास्त्रोक्त विधि का अनुष्ठान हमारे लिये अवश्य कर्तव्य है। तुम धर्म का ही सदा चिन्तन किया करो।'

८-लक्ष्मणः कृष्णमृगं हत्वा मेध्यं प्रतापवान्। अथ चिक्षेप सौमित्रिः समिद्धे जातवेदसि ॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ५६ श्लोक २६

अर्थात्—प्रतापी सुमित्रा कुमार लक्ष्मण ने पवित्र और काले छिलके वाले गजकन्द (कृष्ण मृगं, मेध्य) को उखाड़ कर (हत्वा) प्रज्वलित आग में डाल दिया।

९-तत् तु पक्वं समाज्ञाय निष्टप्तं छिन्नशोणितम्। लक्ष्मणः पुरुषव्याघ्रमथ राघवमब्रवीत् ॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ५६ श्लोक २७

अर्थात्—(छिन्न शोणितम्) रक्त विकार का नाश करने वाले उस गजकन्द को भली भान्ति पका हुआ जान कर लक्ष्मण ने पुरुषसिंह श्री रघुवीरजी से कहा—

१०-अयं सर्वः समस्ताङ्गः शृतः कृष्णमृगो मया। देवता देवसंकाश यजस्व कुशलो ह्यसि ॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ५६ श्लोक २८

अर्थात्—'देवोपम तेजस्वी श्री रघुनाथ जी ! यह काले छिलके वाला गजकन्द (कृष्णमृग) जो बिगड़े हुए समस्त अंगों को ठीक करने वाला (समस्ताङ्ग) है, मेरे द्वारा सम्पूर्णत पका दिया गया है (शृतः) अब आप वास्तु देवताओं का यजन कीजिये क्योंकि आप इस कार्य में कुशल हैं।

११-तिष्ठन्तु सर्वदाशाश्च गङ्गामन्वाश्रिता नदीम्। बलयुक्ता नदीरक्षा मांस मूलफलाशिनः ॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ८४ श्लोक ७

अर्थात्—जब महाराज भरत श्रीराम को वापस लौटाने वन में जाते हुए निषादराज गुह की नगरी मे पहुंचे, तब उसने अपने मल्लाहों को आज्ञा दी कि—'सभी मल्लाह सेना के साथ नदी की रक्षा करते हुए, गङ्गा के तट पर खड़े रहें और नाव पर रखे हुए फल-मूल (मांस मूल फल) आदि का आहार करके ही आज की रात बितावें।

१२-इत्युक्त्वोपायनं गृह्य मत्स्यमांस मधूनि च। अभिचक्राम भरतं निषादधिपतिर्गुहः ॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ५८ श्लो० १०

अर्थात्—यों कहकर निषादराज गुह मत्स्यण्डी (मिश्री), फल के गूदे और मधु आदि *(मत्स्य मांस मधूनि) भेंट की सामग्री लेकर भरत के पास गये।

१३-सुरां सुरापाः पिबत पायसं च बुभुक्षिताः। मांसानि च सुमेध्यानि भक्ष्यन्तां यो यदिच्छति ॥

अयोध्या काण्ड सर्ग ९१ श्लो० ५२

अर्थात्—(वे भरत के सैनिकों को पुकार पुकार कर कहती थीं—) मधु का पान करने वाले लोगो (सुरापाः) लो, यह मधु का पान करो (सुरां पिबत), तुममे से जिन्हें भूख लगी हो वह खीर (पायस) खाओ और परम पवित्र फलों के गूदे (मांसानि च सुमेध्यानि) भी प्रस्तुत हैं, इनका आस्वादन करो। जिसकी जो इच्छा हो, भोजन करो।'

१४-वाप्यो मैरेय पूर्णाश्च मृष्टमांसचयैर्वृताः। प्रतप्तपिठरैश्चापि मार्गमायूरकोक्कुटैः ॥

अर्थात्—भरत की सेना में आये हुए निषाद आदि निम्न वर्ग के लोगों की तृप्ति के लिये वहां मधु से भरी बावडियां (वाप्यो मैरेयपूर्णाश्च) प्रकट हो गई थी तथा उनके तटों पर तपे हुए पिठर (कुण्ड) में पकाये गये मृग, मोर और मुर्गों के स्वच्छ मास भी ढेर-के-ढेर रख दिये गये थे।

पाठक वृन्द ! देखा आपने कि देव दयानन्द का दिव्य जादू कैसे काम कर गया है।

यह उसी जादू का ही चमत्कार है जिसने 'सुराघटसहस्रण' = सहस्रों देव दुर्लभ पदार्थ; 'मांसभूतौदन' = राजकीय भाग से रहित पृथ्वी, वस्त्र और अन्न, 'ऐणेय मांस' = गजकन्द का गूदा; 'मृग' = गजकन्द; कृष्णमृगं = काले छिलके वाला गजकन्द; 'छिन्न शोणित' = रक्तविकार दूर करने वाला, 'मांस मूल' = फलों का गूदा, 'मत्स्यमास-मधूनि = मिश्री, फल के गूदे तथा शहद; और 'मांसानि सुमेध्यानि = परम पवित्र फलों के गूदे बन गये हैं; मगर प्रमाण संख्या १४ में जहां बस नहीं चल सका वहां 'भरत की सेना में आये हुए निषादादि निम्न वर्ग के लोगों की तृप्ति के लिये' इतने शब्द बढ़ा कर 'मृग' मोर और मुर्गे के मांस तथा शराब से भरी हुई बावड़ियों से छुटकारा प्राप्त करने का यत्न किया गया है।

प्रभु करे हमारे भाइयों को इसी प्रकार की प्रखर बुद्धि प्राप्त हो और वह हमारे साथ मिलकर कह सकें—'बोलो वेदोद्धारक, यज्ञ प्रचारक, भ्रम-भूल निवारक, जगत् निस्तारक महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की जय !

---

* मदनपाल निघण्टु के अनुसार 'मृग' का अर्थ गजकन्द है।

*'छिन्नशोणितम्' की व्युत्पत्ति इस प्रकार है—'छिन्न शोणित रक्तविकाररूप रोगजात येन सः तम्।' 'गजकन्द' रोग विकार का नाशक है, यह वैद्यक में प्रसिद्ध है। मदनपाल-निघण्टु के 'वद्दोषादिकुष्ठहन्ता' आदि वचन से यह चर्मदोष तथा कुष्ठादि-रक्तविकार का नाशक सिद्ध होता है।

*'समस्ताङ्ग की व्युत्पत्ति यों समझनी चाहिये 'सम्यग् भवन्ति अस्तानि अङ्गानि येन स।

*यहां मूल में 'मत्स्य' शब्द 'मत्स्यण्डी' अर्थात् मिश्री का वाचक है। 'मत्स्यण्डी' इस नाम का एक अंश 'मत्स्य' है, अतः नाम के एक अंश के ग्रहण से सम्पूर्ण नाम का ग्रहण किया गया है।

आर्य समाज-परिचयांक

कब प्रकाशित होगा

भारत और भारत से बाहर चार हजार से अधिक आर्य समाजें हैं। लाखों सदस्य हैं। करोड़ों रुपया व्यय करते हैं।

किन्तु सर्व साधारण को पता नहीं ! इसमें आर्यसमाज की सदस्य संख्या, आय-व्यय, मन्त्री का चित्र और प्रधान का नाम इस अङ्क में देंगे

हजारों मन्त्रियों के चित्रों सहित यह विशेषांक आर्य जगत् का दर्शनीय अङ्क होगा।

इसका मूल्य केवल १)१० पैसा होगा

अभी तक हमारे पास लगभग ७०० आर्य संस्थाओं का वर्णन, मन्त्रियों के चित्र और धन आ चुका है। इस अंक में हम आर्य जगत् का पूरा दिग्दर्शन कराना चाहते हैं वह तभी होगा जब सभी आर्य संस्थाएं अपनी सामग्री भेज देंगी। हमारी हार्दिक इच्छा है कि चाहे देर हो जाय किन्तु होना चाहिए सर्वांग सम्पन्न। एक बार फिर हम सारे देश और विदेश की आर्य संस्थाओं को पत्र भेज रहे हैं। फिर उनके उत्तर की प्रतीक्षा के पश्चात् प्रकाशित करेंगे। आशा है आप भी इसे पसंद करेंगे।

—प्रबन्धक

Bhagwan Dayanand Saraswati and the Upanishads

by Rai Bahadur Ratan Lal, B. A., LL. B.
Formerly Common Chief Justice of 14 Malwa States
(Madhya Pradesh) High Courts.

(गतांक से आगे)

At the risk of a little exaggeration it may perhaps be maintained that all that is noble and beautiful in Hinduism was foreshadowed already by the Rigveda, and all that is filthy and repulsive in it, by the Brahmanas thus in connection with the Mahavrat sacrifice most immoral and obscene acts are enjoined to be performed in the presence of pious spectators. If treatment of women is criterion of civilization, then the civilization of the Brahmana texts can expect only an adverse verdict from posterity. In the Rigvedic age the newly married wife used to be greeted with the words, 'You should address the assembly as commander (Rig. X. 85, 26 -Vashini tvam Vidatham avadasi)', but] the Brahmana authors, after identifying the woman with Nirriti i. e. evil (Maitrayani Sanhita 1. 10. 11) declare that "the woman, the sudra, the dog. and the crow are falsehood-anrita (Shatpatha Brahman XIV. 1.1.31)". We may not agree with the view of the learned author and with all that he says about doctrines enunciated in the Brahmanas but there can be no doubt that the Vedas and Brahmanas sometimes express themselves in widely different language and do not perhaps see eye to eye in some matters Martin Haug, therefore, rightly says in his Aitareya Brahman that "The Brahmanas always presuppose the Mantra; for without the latter it would have no meaning, nay, *its very existence would be impossible* (The italics are mine.) And Julius Eggeling says in the Seventh Brahmana of his Shatapatha Brahmana:

"Now, then, the praise of the study (of the scriptures). The study and teaching (of the Veda) are a source of pleasure to him, he becomes ready-minded, and independent of others, and day by day he acquires wealth. He sleeps peacefully ; he is the best physician for himself, and (peculiar) to him are restraint of the senses, delight in the one thing, growth of intelligence, fame, and the (task of) perfecting the people. The growing intelligence gives rise to four duties attaching to the Brahmana-Brahmanical descent, a befitting deportment, fame, and the perfected guard the Brahmana by four duties-by (showing him) respect, and liberality, (and by granting him) security against oppression, and security against capital punishment"

" Verily, the Rik-texts are milk-offerings to the gods ; and whosoever, knowing this, studies day by day the Rik-texts for his lesson. thereby satisfies the gods with milk offerings ; and, being satisfied, they satisfy him by (granting him) security of possession by life-breath by seed, by his whole self, and by all auspicious blessings; and rivers of ghee and rivers of honey flow for his (departed Fathers. as their accustomed draghts. And, verily. the Yajus-texts are ghee-offerings to the gods; and whosoever, knowing this, studies day by day the Yajus-texts for his lesson, thereby satisfies the gods with ghee offerings; and being satisfied, they satisfy him by security of possession, by life-breath, by seed, by his whole self, and by all auspicious blessings; and rivers of ghee and rivers of honey flow for his Fathers, as their accustomed draghts. And, verily, the Saman-texts are Soma-offerings to the gods; and whosoever, knowing this, studies day by day the Saman-texts for his lesson thereby satisfies the gods with Soma-offerings; and, being satisfied, they satisfy him by security of possession, by life-breath, by seed, by his whole self, and by all auspicious blessings; and rivers of ghee and rivers of honey flow for his Fathers, as their accustomed draughts. And, verily, the (texts of the) Atharvangiras are fat-offerings to the gods; and whosoever, knowing this. studies day by day the (texts of the) Atharvangiras for his lesson, satisfies the gods with fat-offerings; and, being satisfied, they satisfy him by security of possession, by life-breath, by seed, by his whole self,and by all auspicious blessings; and rivers of ghee and rivers of honey flow for his Fathers, as their accustomed draughts ".

One may not agree with Eggeling's translation here and there but it is clear that the Brahmanas themselves praise the four Vedas in their own way and treat them as different scriptures Not only that but Shat path Brahman says (14 5. Brah. 4.10) · Evam va aresya mahto '

' As the breath comes out of the body and is again taken into it. so the Vedas are revealed by God and are again withdrawn (at the time of dissolution)'. And again XI.5.8. 3. it says: ' From them, when they meditated, were produced the three Vedas viz. from Agni was produced the Rig-Veda, from Vayu, the Yajurveda, and from Surva, the Samveda. God inspired their consciousness and produced the Vedas through them '. Therefore Narhari rightly says on page 230 of his thesis-'Atman' that 'there is not a single hymn in any of the Samhitas which can be said to belong to the period of the Brahmanas ". The Brahmanas can not therefore be part of the divine revelation-the Vedas.

(to be continued)

(पृष्ठ ६ का शेष)

बुन्देलखण्ड के प्रमुख आर्य नेता श्री गयाराम आर्य ने हाल ही में वानप्रस्थ आश्रम मे पदार्पण किया है। अब वे महात्मा गयाराम के रूप में बुन्देलखण्ड में वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे। परन्तु क्या इतने से काम चल जायगा। आर्य समाज तो अपने जन्म से ही बराबर त्याग और सेवा से देश की सेवा करता रहा है। वास्तव में समस्त अमरीकी राष्ट्र जब इन विदेशी ईसाई मिशनरियो को सहयोग दे रहा है तो थोड़े आर्यसमाजी ही नहीं, सारा का सारा हिन्दू (आर्य) राष्ट्र को आगे आना है और अपना सहयोग प्रदान करना है। यह समय बड़ा संकट का है। एक बार १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में लगभग ५००० सन्यासियों ने, सशस्त्र होकर बमाल पर धावा बोला था। केप्टेन एडवर्ड ने उनका भरपूर मुकाबला किया। सम्पूर्ण सन्यासी सेना को उन्होंने अपने घेरे में ले लिया। परन्तु शास्त्रार्थों पर विजय पाने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती की सेना यहां भी हटने वाली नहीं थी। घमासान युद्ध के पश्चात भारी विजय प्राप्त करके ही रही। सारजेंट मेजर डगलस की लाश तक का कही पता न चला। उनका हैट अवश्य एक नाले में पड़ा पाया गया। यद्यपि इतिहासकारो ने इसका उल्लेख कही भी नही किया, फिर भी इसका महत्व कम नहीं है। आगे चलकर जब हम पूरी तौर से अनुसन्धान कर लेंगे तो पूरा विवरण सामने आएगा। यह विषय दूसरा है। थोड़ा सा हाल इसलिये दे दिया है कि हमें आज भी एक होकर काम करने की आवश्यकता है। जहां करोड़ों रुपया अमरीका अपने मिशनरियों को दे सकता है वहां हम भी अपनी आर्य-सामाजिक संस्थाओं को सहायता क्या नहीं दे सकते ? आज भी लाखो हिंदू सन्यासी हैं। क्या साधु समाज विदेशी मिशनरियों की अराष्ट्रीय गति-विधियों के खिलाफ आवाज भी नहीं उठा सकता ? हमारे डाक्टर, क्या सेवा का व्रत लेकर जगली प्रदेशों में, पहाड़ी इलाको में पहुंचकर, अपने भाइयों की सहायता नहीं कर सकते ? यह सभी बातें हमें गम्भीरता से सोचनी है और अपने पुरुषोत्तम राम और कृष्ण की वैदिक संस्कृति को बचाना है।

भारतीय ईसाई तथा एग्लोइंडियन समाज भी हमारी ओर बड़ी आशा भरी दृष्टि से देख रहा है। हमें केवल सच्चे दिल से उनकी ओर प्रेम का हाथ बढ़ाना है। केवल आर्य समाज को ही नहीं, पूरे के पूरे हिंदू (आर्य) राष्ट्र को। फिर हमें सफलता अवश्य मिलेगी। परमात्मा भी हमारी सहायता अवश्य करेगा। ऐसे ही एक जागरूक कवि वेद माता के कहे हुए वचनों को ३ प्रकार गाता है —

जाग प्यारे जाग, जाग प्यारे जाग।
जागरूकों के लिये है भूमिका भू-भाग॥
जाग प्यारे जाग॥
जागता है जो उसे,
सारी ऋचायें चाहती हैं।
सोमकी यश गीतिकायें,
भी उधर ही भागती हैं॥
जागता है जो उसे,
यों सोमभोग्य पदार्थ कहते।
हम तुम्हारे हैं तुम्हारी,
मित्रता में नित्य रहते॥
छोड़दो आलस्य गाओ जागरणके राग।
जाग प्यारे जाग ! जाग प्यारे जाग !!

(शेष पृष्ठ ३ का)

दूसरी बात—

श्रावणी पर वेद कथा अंक निकालने के लिए ही फिलहाल हमने 'आर्यसमाज परिचयांक' का प्रकाशन कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया है—यह ख्याल रखें कि कुछ काल के लिए स्थगित ही किया हैं, सर्वथा रोका नहीं है। इसका एक लाभ यह भी होगा कि अब तक जिन समाजों ने हमारे बारम्बार आग्रह करने पर भी अपनी समाज का परिचय अभी तक नहीं भेजा है, उनको कुछ समय और मिल जाएगा और वे अपनी समाज का परिचय भेज सकेंगे। अब तक हमारे पास लगभग ७०० समाजों का सचित्र परिचय आ चुका है। हम चाहते हैं कि आर्यसमाज परिचयांक को अधिक सुगठित और परिपूर्ण रूप देने के लिए यह विलम्ब उपादेय है। जितनी जल्दी आर्यसमाजों का परिचय हमारे पास पहुंच जाएगा, उतनी ही जल्दी हम उसे प्रेस में दे देंगे।

वेद कथा अक वाली विशेष बात के लिए पुनः आपको स्मरण कराते हैं।

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

आर्य वीर दल शिक्षण शिविर

आर्य समाज मन्दिर फरीदाबाद शहर मे २४-७-६६ स ३१-७-६६ तक आर्य वीर दल शिक्षण शिविर लग रहा है। अत सब सज्जनो से प्रार्थना है कि अपने बच्चो को अधिक से अधिक सख्या मे भेजकर लाभ उठावे। बच्चे २८-७-६६ प्रात १० बजे तक पहुच जावे।

आर्य वीर दल शिक्षण शिविर (गुड़गांव, मण्डल)

नगीना (गुडगाव) दिनाक १५ जुलाई—आर्य वीर दल के शिक्षण शिविर मे एक सप्ताह मे ७५ आर्य वीरो ने दीक्षा ली।

आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी तथा सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले के महत्वपूर्ण भाषण हुए। हजारो नरनारियो ने भाग लिया।

गायत्री महायज्ञ

आर्य समाज मन्दिर, जालना (महाराष्ट्र) मे दिनाक १ स १० जुलाई तक गायत्री महायज्ञ हुआ। यज्ञ मे सैकडो नर नारियो न भाग लिया। श्री प० गोपालदेव जी शास्त्री ने यज्ञ के महत्व पर मारगभित भाषण दिया। आर्य समाज के उपप्रधान श्री कचलूलाल जी सेठ ने श्री शास्त्री जी का और श्री रामचन्द्रजी मन्त्री ने सब का आभार प्रकट किया।

निर्वाचन

—आर्य समाज नन्दानगर इन्दौर के प्रधान श्री वैद्य चेलाराम जी आर्य, श्री रतनलाल जी तिवारी, मन्त्री श्री जयन्ति शकर जी शर्मा, श्री रामकरण जी (राठौर) कोषाध्यक्ष, श्री शकरलाल जी मालवीय, पुस्तकाध्यक्ष श्री गोपाल प्रसाद जी आर्य और निरीक्षक श्री देवप्रकाश जी शर्मा।

—आर्य समाज जालोन के पदाधिकारी श्री कन्हैयालाल जी प्रधान, श्री महावीर प्रसाद जी गुप्त एम० ए० मन्त्री श्री रमेशचन्द जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—नवर आर्य समाज शाहदरा (दिल्ली) के निर्वाचन मे श्री ला० गोविन्दराम जी प्रधान, श्री रामफल जी, ला० काशीनाथ जी सभा प्रधान, श्री रघुनन्दन शरण जी मन्त्री, श्री मगलराम जी उपमन्त्री, श्री सुमतप्रकाश जी कोषाध्यक्ष और श्री रामकृष्ण नरुला पुस्तकाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज मधुपुर (बिहार) के निर्वाचन मे श्री लाजपतराय जी गुटगुटिया प्रधान, श्री हरिहर प्रसाद चावल वाले, श्री कन्हाईलाल जी उपप्रधान, श्री रामचन्द्र जी शास्त्री, श्री सीखीलाल पण्डित उपमन्त्री, श्री पुरुषोत्तम मोदी मन्त्री सस्कृत पुस्तकालय, श्री बालगोविन्द जी आर्य पुस्तकाध्यक्ष तथा श्री घनश्याम दास जी सिंहानियाँ कोषाध्यक्ष चुने गये।

मेला-प्रचार

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द पथ राची की ओर से छोटा नागपुर के सब से बडे मेले जगन्नाथपुरी मे रथयात्रा के अवसर पर वैदिक धर्म प्रचार शिविर लगा। श्रीप० गोविन्दप्रसाद जी आर्य, श्री ब्र० देसपाल जी दीक्षित ने विदेशी मिशनरियोकी राष्ट्र विरोधी कार्यवाहियो के प्रति जनता को सावधान किया। इस अवसर पर आर्य समाज राची ने ६००० और डोरण्डा आर्यसमाज ने ३००० ट्रैक्ट वितरण किये।

मेले मे १ लाख से अधिक वनवासी बन्धु सम्मिलित हुए।

अपील

श्री प० रामचन्द्र जी शास्त्री मन्त्री सथाल परगना जिला आर्य सभा मधुपुर ने वन जातियो की सहायतार्थ आर्य हिन्दू दानवीरो से धन की अपील की है।

आवश्यकता है

दयानन्द वैदिक जूनियर हाईस्कूल शामली (मुजफ्फर नगर) के लिए सस्कृत हिन्दी अध्यापक की आवश्यकता है, आर्य विचारो के अध्यापक को प्राथमिकता दी जावेगी। ता० २५ जुलाई तक प्रतिवेदन करे अथवा आकर मिले।

शोक प्रस्ताव

सभा क उपदेशक श्री प० हरिशरण जी आर्य जो राची (बिहार) मे ईसाई पादरियो को शास्त्र समर मे परास्त करते थे, जो वनवासी आर्य बन्धुओ के धर्म रक्षार्थ अथक परिश्रम से कार्य कर रहे थे, अचानक सर्प दश के कारण दिवगत हो गये।

परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति और परिवार को धैर्य प्रदान करे।

(शेष पृष्ठ ८ का)

एक बच्चे मे हमने एक रास्ता पूछा। उसने पूरी तरह समझाया और चल दिया। थोडी देर पश्चात् वह बच्चा तेजी के साथ चलता हुआ हमारे पास आया और बोला Thank you sir ! हम लोग उसके इस व्यवहार पर चकित रह गये और कारण पूछने पर उसने बतलाया कि—'हमारे अध्यापक ने हमे बतलाया था कि सेवा के द्वारा एक मनुष्य भगवान् के राज्य 'स्वर्ग' को प्राप्त कर सकता है। अत सेवा करने का जो व्यक्ति दूसरो को अवसर देता है वह धन्यवाद का पात्र होता है। अत आप लोगो ने रास्ता पूछकर मुझे सेवा का अवसर दिया है इसके लिये मुझे आप लोगो को धन्यवाद देना चाहिये था, परन्तु मैं धन्यवाद देना भूल गया था। इसलिये भागकर आया हू केवल धन्यवाद देने के लिये'

यह घटना भारत के अध्यापको एव विद्यार्थियो की आखे खोलने के लिये यथेष्ट है।

शिष्टाचार मे भारत भीएक दिन ससार का सिरमौर था, परन्तु आज उसका स्थान कही नही है। शिष्टाचार मे हम इगलैण्ड-यूरुप आदि देशों से बहुत पीछे हैं, परन्तु खेद इस बात का है कि इगलैण्ड-यूरुप आदि देशो मे जाने के पश्चात् भी भारत के लोग शिष्टाचार की शिक्षा नही प्राप्त करतेहै और नाही देश के नेता इस ओर अपने अध्यापको का ध्यान आकर्षित करते है। हमारी शिक्षा केवल पाठ्य पुस्तको तक सीमित है। शिष्टाचार व सदाचार मे इसका कोई सम्बन्ध नही है। जब शिक्षण ही नही तो आचार कहा से उत्पन्न हो सकता है।

(टाइटिल पृष्ठ १ का शेष)

मलाया आज से साढे पाच सौ वर्ष पूर्व हिन्दू था। यहा के राजा परमेश्वरम को १४१४ मे मुसलमान बनाया गया और एक मुसलमान लडकी से विवाह कर लिया। तब मुसलमान सौदागर आने लगे, यही सौदागर इस्लाम का प्रचार करने लगे, मुजफर शाह तथा मसूर शाह के काल मे राजघरानो की मुस्लिम लडकियो ने पेहाग (Gahang) केदाब Kedab सियाक Siak कामपार Kampar इन्द्रगिरी इत्यादि। हिन्दू राजाओ को अपने प्रेम पाश मे बाध कर उन्हे मुसलमान बनाया। तब तो इस्लाम अधिक जोर से फैला। परन्तु इतना समय व्यतीत हो जाने के पश्चात भी अभी हिन्दू नाम विद्यमान है। इस्लाम के मार्ग मे रुकावट तब पडी जब मलाया में पुर्तगाल की सेन यें आ पहुची। फिर डच आ गये, अग्रेज भी कब पीछे रहने वाला था, इगलिश राज्य मे United Malaya National Organisation ने आन्दोलन प्रारम्भ किया। इस सस्था ने मुसलिम, चीनी, हिन्दू सब को एक वदी पर ला खडा किया, और सब ने मिल कर स्वराज्य प्राप्त कर लिया। मलेशिया के प्रधानमन्त्री को "प्रदानमेन्त्री" कहा जाता है। अब सिंगापुर मलेशिया से अलग स्वतन्त्र राज्य बन गया है। इन सारे दक्षिण पूर्वी एशिया के देशो को चीन हडप कर लेने की तय्यारी मे है यदि वीयतनाम मे साम्यवादी जीत गये तो यह सारे देश भी चीन का लोहा मान लेंगे। तब भारत भी चीन की चोट से बच न सकेगा। उत्तरीय वीयतनाम के तेल के अड्डो पर अमरीका की बमबारी से बाहर के सारे देश दु खी है। परन्तु दक्षिण पूर्वी एशिया के यह सारे देश अमरीका के गुण गा रहे है।

सिंगापुर पहुचने पर पता लगा कि मलेशिया के तीन, चार नगरों से पत्र आये है और वह चाहते है कि मैं पुनः वहा पहुच कर वेद की बाते सुनाऊ। अत ५ जुलाई को मैं मलेशिया की राजधानी कोलालम्पुर जा रहा हू फिर 'इपोह' और द्व "पीनाग" जाना होगा, यह भ्रमण-चक्र मास मे पूर्ण हो सकेगा, और मैं ३० जुलाई को फिर सिंगापुर आकर बैंकाक (सयाम) पहुचकर पुन वेद कथा करूगा। आशा है अगस्त मे भारत लौट सकू गा। इस भ्रमण मे ३५ हजार मीलो से अधिक यात्रा हो जायगी। प्रभु कृपा—

—आनन्द स्वामी सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

वेद कथा विशेषांक

श्रीमन्नमस्ते ।

श्रावणी के पुण्य पर्व पर वेद सप्ताह की योजना आप करते ही हैं—करेंगे भी। कृपया इस अवसर पर वेद प्रचार की इस महान् योजना पर भी अवश्य ध्यान दें :—

१—वेद सप्ताह में वेद कथा विशेषांक का भारी संख्या में प्रचार करें।

२—२५० पृष्ठ और ६० पैसे के इस अंक को आर्य जन अपने मित्रों को भेंट में दें।

३—देश भर के राज्याधिकारियों को अपनी ओर से भेंट करावें।

४—२५० या अधिक मंगाने पर विशेषांक के टाइटिल पर आपका नाम छापेंगे।

५—यदि आप अपनी ओर से राज्याधिकारियों को २५० प्रति भेंट कराना चाहेंगे तो कवर के अच्छे स्थान में आपकी ओर से भेंट छापेंगे।

कृपया-

भारी संख्या में आर्डर भेजें।

रामगोपाल शालवाले

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-१

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २)५०
सत्यार्थप्रकाश २)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
व्यवहार भानु)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र १) सैकड़ा
ओ३म् ध्वज २७×४० इञ्च २)५०
,, ,, ३६×५४ इञ्च ४)५०
,, ,, ४५×६७ इञ्च ६)५०
कर्त्तव्य दर्पण)५०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
मराठी सत्यार्थप्रकाश १)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)

प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से) ५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
कठोपनिषद्)५० प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
वृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १ २५
मृत्यु और परलोक १)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
अभ्यास और वैराग्य १)६५
निज जीवन वृत वनिका (सजिल्द))७५
बाल जीवन सोपान १)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन औरगृहस्थ धर्म)६२

उपनिषद् कथामाला)७५
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार)२०
आदर्श गुरु शिष्य)२५
कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
पुरुष सूक्त)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर)६२
स्वर्ग में हड़ताल)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)२५
वैदिक तत्व मीमांसा)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६५
वेद और विज्ञान)७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३७
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
इराक की यात्रा २)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक ईश वन्दना)४०
वैदिक योगामृत)६२
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
भ्रम निवारण)३०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
वेद की इयत्ता १)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह)७५
कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम् (पूर्वार्द्ध) १)५०
,, ,, (उत्तरार्द्ध) १)५०
वैदिक संस्कृति)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
सायण और दयानन्द १)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)३०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०
संस्कार महत्व)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
चरित्र निर्माण १)१५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
अनुशासन का विधान)२५
धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय २)
आर्य समाज के महाधन २)५०
एशिया का वेनिस)७५
स्वराज्य दर्शन १)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
भजन भास्कर १)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५

दुबारा छप गई। आर्य जगत में सबसे सस्ती
सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत
पृ० २००—नेट मूल्य ४० पैसे

ARYA SAMAJ ITS CULT AND CREED

A unique and elegantly printed Book of the Day

By—Acharya Vaidyanath Shastri.

Rs. 5/-

This is the most popular and widely read first English book of Acharya Vaidya Nath Shastri a well known Arya Samaj Scholar and author credited with writing books in Hindi of outstanding merit on religion and philosophy some of them winning prizes.

The book presents a scholarly and lucid exposition of the Cult and Creed of AryaSamaj ranking among the high-class rare English literature of Arya Samaj. It is a worth reading worth preserving & worth presenting book to the English reading persons especially to the intelligentsia.

मिलने का पता—
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

कला-कौशल (टैक्नीकल) और वैदिक साहित्य का महान् भंडार

- इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक १५)
- इलै० गाइड पृ० ८००हि.इं गु १२)
- इलैक्ट्रिक वायरिंग ६)
- मोटरकार वायरिंग ६)
- इलैक्ट्रिक बैट्रीज ४)५०
- इलैक्ट्रिक लाइटिंग ८)२५
- इलै० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्ज १२)
- सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर ४)५०
- इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज २ भाग १६)५०
- आयल व गैस इन्जन गाइड १५)
- आयल इजन गाइड ८)२५
- क्रूड आयल इंजन गाइड ६)
- वायरलैस रेडियो गाइड ८)२५
- रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक) ८)२५
- घरेलू बिजली रेडियो मास्टर ४)५०
- इलैक्ट्रिक मीटर्ज ८)२५
- टांका लगाने का ज्ञान ४)५०
- छोटे डायनेमो इलैक्ट्रिक मोटर ४)५०
- ए.आर्मेचरवाइंडिंग(AC D.C.)८)२५
- रैफरीजरेटर गाइड ८)२५
- वृहत रेडियो विज्ञान १५)
- ट्रांसफार्मर गाइड ६)
- इलैक्ट्रिक मोटर्स ८)२५
- रेलवे ट्रेन लाइटिंग ६)
- इलैक्ट्रिक सुपरवाइजरी शिक्षा ६)
- इलैक्ट्रिक वैल्डिंग ६)
- रेडियो शब्द कोष ३)
- ए० सी० जनरेटर्स ८)२५
- इलैक्ट्रिक मोटर्स आल्टरनेटर्स १६)५०
- आर्मेचर वाइडर्स गाइड १५)
- इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १९५६ १)५०
- स्माल स्केल इंडस्ट्रीज (हिन्दी) १४)
- स्माल स्केल इंडस्ट्रीज(इंगलिश) १४)
- खराद शिक्षा (टर्नर गाइड) ४)५०
- वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग) ४)५०
- खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
- भवन-निर्माण कला १२)
- रेडियो मास्टर ४)५०
- विश्वकर्मा प्रकाश ७)५०
- सर्वे इंजीनियरिंग बुक १२)
- इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग १२)
- फाउन्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई) ८)२५
- इलैक्ट्रोप्लेटिंग ६)
- वीविंग गाइड ४)५०
- हैंडलूम गाइड १५)
- फिटिंगशाप प्रैक्टिस ७)५०
- पावरलूम गाइड ५)२५
- ट्यूबवैल गाइड ३)७५
- लोकास्ट हाउसिंग टैक्निक ५)२५
- जन्त्री पैमायश चोब २)
- लोकोशैड फिटर गाइड १५)
- मोटर मैकेनिक टीचर ८)२५
- मोटर मैकेनिक टीचर गुरुमुखी ८)२५
- मोटर ड्राइविंग हिन्दी व गुरुमुखी ६)
- मोटरकार इन्स्ट्रक्टर १५)
- मोटर साइकिल गाइड ४)५०
- खेती और ट्रैक्टर ८)२५
- जनरल मैकेनिक गाइड १२)
- आटोमोबाइल इंजीनियरिंग १२)
- मोटरकार ओवरहालिंग ६)
- प्लम्बिंग और सैनीटेशन ६)
- सर्किट डायग्राम्स आफ रेडियो ३)७५
- फर्नीचर बुक १२)
- फर्नीचर डिजायन बुक १२)
- वर्कशाप प्रैक्टिस १२)
- स्टीम ब्वायलर्स और इंजन ८)२५
- स्टीम इंजीनियर्स गाइड १२)
- आइस प्लांट (बर्फ मशीन) ४)५०
- सीमेंट की जालियों के डिजाइन ६)
- कारपेंट्री मास्टर ६)७५
- बिजली मास्टर ४)५०
- ट्रांजिस्टर डेटा सर्किट १०)५०
- गैस वैल्डिंग ६)
- ब्लैकस्मिथी (लोहार) ४)५०
- हैंडबुक आफ बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन ३४)५०
- हैंडबुक स्टीम इन्जीनियर २०)२५
- मोटरकार इन्जीनियर ८)२५
- मोटरकार इन्जन (पावर यूनिट) ८)२५
- मोटरकार सर्विसिंग ८)२५
- कम्पलीट मोटर ट्रेनिंग मैनुअल २८)७५
- कारपेंट्री मैनुअल ४,५०
- मोटर प्रश्नोत्तर ६)
- स्कूटर आटो साइकिल गाइड ४)५०
- मशीनशाप प्रैक्टिस १५)
- आयरन फर्नीचर १२)
- मारबल चिप्स के डिजाइन १६)५०
- मिस्त्री डिजाइन बुक २४)५०
- फाउण्ड्री वर्क-धातुओं की ढलाई ८)५०
- ट्रांजिस्टर रेडियो ४)५०
- आधुनिक टिपिकल मोटर गाइड ४ ५०
- नक्काशी आर्ट शिक्षा ६)
- बढ़ई का काम ६)
- राजगिरी शिक्षा ६)
- सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो ७)५०
- विजय ट्रांजिस्टर गाइड २२)५०
- मशीनिस्ट गाइड १६)५०
- आल्टरनेटिंग करैन्ट १६)५०
- इलै. लाइनमैन वायरमैन गाइड १६)५०
- रेडियो फिजिक्स २५)५०
- फिटर मैकेनिक ६)
- मशीन वुड वर्किंग ५)
- लेथ वर्क ६)७५
- मिलिंग मशीन ८)२५
- मशीन शाप ट्रेनिंग १०)
- एयर कन्डीशनिंग गाइड १५)
- सिनेमा मशीन आपरेटर १२)
- स्प्रे पेंटिंग १२)
- गोद्रीज गाइड ४)५०
- ट्रांजिस्टर रिसीवर्स ६)७५
- लोकल ट्रांजिस्टर रिसीवर ८)२५
- प्रैक्टीकल ट्रांजिस्टर सरकिट्स ७)५०
- बेंच वर्क एन्ड डाईफिटर ८)२५
- माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुअल ८)२५
- खराद आपरेटर गाइड ८)२५
- रिसर्च आफ टायलेट सोप्स १५)
- आयल इन्डस्ट्री १०)५०
- शीट मैटल वर्क ८)२५
- कैरिज एन्ड वैगन गाइड ८)२५
- इलैक्ट्रिक फिजिक्स २५)५०
- इलैक्ट्रिक टैक्नोलोजी २५)५०
- रेडियो पाकिट बुक ६)
- डिजाइन गेट ग्रिल जाली ६)
- कैमीकल इण्डस्ट्रीज २५)५०
- डीजल इन्जन गाइड १५)

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई, क्लाथ बाइंडिंग-मूल्य १५) एक साथ पांच प्रति मंगाने पर ५०) रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

1. सांख्य दर्शन मूल्य २)
2. न्याय दर्शन मू० ३॥)
3. वैशेषिक दर्शन मू० ३॥)
4. योग दर्शन मू० ६)
5. वेदान्त दर्शन मू० ५॥)
6. मीमांसा दर्शन मू० ६)

सामवेद

मूलमंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार ४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थीं। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है। मूल्य ४)

वैदिक-मनुस्मृति मूल्य ४॥)

बृहत् दृष्टान्त सागर

सम्पूर्ण पांचों भाग

पृष्ठ संख्या ८६८

सजिल्द मूल्य केवल १०॥)

- उपदेश-मंजरी मूल्य २॥)
- संस्कार विधि मूल्य १॥)
- आर्य समाज के नेता मूल्य ३)
- महर्षि दयानन्द मूल्य ३)
- कथा पच्चीसी मूल्य १॥)
- उपनिषद् प्रकाश मू० ६)
- हितोपदेश भाषा मू० ३)
- सत्यार्थप्रकाश [छोटे अक्षरों मे] २)५०

अन्य आर्य साहित्य

1. विद्यार्थी शिष्टाचार १॥)
2. पञ्चतन्त्र ३॥)
3. जाग रे मानव १)
4. कौटिल्य अर्थशास्त्र १०)
5. चाणक्य नीति १)
6. भर्तृहरि शतक १॥)
7. कर्तव्य दर्पण १॥)

8. वैदिक सध्या ४) सै०
9. हवन मन्त्र १०) सै०
10. वैदिक सत्संग गुटका १५) सै०
11. ऋग्वेद ७ जिल्दों में ५६)
12. यजुर्वेद २ जिल्दों में १६)
13. सामवेद १ जिल्द में ८)
14. अथर्ववेद ४ जिल्दों में ३२)
15. वाल्मीकि रामायण १२)
16. महाभारत भाषा १२)
17. हनुमान जीवन चरित्र ४॥)
18. आर्य संगीत रामायण ५)

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद कृषि, बिजली, मोटर, पशुपालन, टेक्नीकल, डेरीफार्म, रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१६१

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये ।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली–१ फोन २७४७७१ अ श्रावण कृष्ण ६ सम्वत् २०२३, ७ अगस्त १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०

श्रावणी का पुण्य पर्व और वेद प्रचार सप्ताह आ रहा

वेद–आज्ञा

सुख की प्राप्ति

यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्यो-ऽभयं नः पशुभ्यः ॥

यजु० अ० ३६ । मं० १७ ॥

हे परमेश्वर ! आप जिस-जिस देश से जगत् के रचन और पालन के अर्थ चेष्टा करते हैं उस उस देश से भय रहित करिये, अर्थात् किसी देश से हम को किञ्चित् भी भय न हो, वैसे ही सब दिशाओं में जो आपकी प्रजा और पशु हैं उनसे भी हमको भयरहित करें, तथा हमसे उनको सुख हो, और उनको भी हमसे भय न हो, तथा आपकी प्रजा में जो मनुष्य और पशु आदि हैं, उन सब से धर्म अर्थ, काम और मोक्ष पदार्थ हैं, उनको आपके अनुग्रह से हम लोग शीघ्र प्राप्त हों, जिससे मनुष्य जन्म के धर्मादि जो फल हैं, वे सुख से सिद्ध हों।

—महर्षि दयानन्द

धर्मप्रचार, राष्ट्ररक्षा, जातिउत्थान

और गोपालन का सभी आर्य जन व्रत लें

आर्य परिवारों और मंदिरों में यज्ञोपवीत व यज्ञ हों

सभा मन्त्री श्री रामगोपाल शालवाले की अपील

वेद के लिए महर्षि ने कहा था:—

जैसे माता पिता अपने सन्तानों पर कृपा दृष्टि कर उन्नति चाहते हैं वैसे ही परमात्मा ने सब मनुष्यों पर कृपा करके वेदों को प्रकाशित किया है, जिससे मनुष्य अविद्यान्धकार भ्रम जाल से छूटकर विद्या विज्ञान रूप सूर्य को प्राप्त होकर अत्यानन्द में रहें और विद्या तथा सुखों की वृद्धि करते जायें। —सत्यार्थ प्रकाश

वेद सप्ताह के अवसर पर वेद कथा विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। २५० पृष्ठ कुल ६० पैसे में

महर्षि कहते हैं—

यज्ञोपवीत संस्कार

द्विज अपने घर में लड़कों का यज्ञोपवीत और कन्याओं का भी यथायोग्य संस्कार करके यथोक्त आचार्यकुल अर्थात् अपनी अपनी पाठशाला में भेज दें।

—•—

शिखा और यज्ञोपवीत

जो विद्या का चिह्न यज्ञोपवीत और शिखा को छोड़ मुसलमान ईसाइयों के सदृश बन बैठना व्यर्थ है। जब पतलून आदि वस्त्र पहिरते हो और "तमगों" की इच्छा करते हो तो क्या यज्ञोपवीत आदि का कुछ बड़ा भार हो गया था ?

—•—

विदेशियों की खुशामद

ब्रह्मा से लेके पीछे पीछे आर्यावर्त्त में बहुत से विद्वान् हो गये हैं, उनकी प्रशंसा न करके यूरोपियनों ही की स्तुति में उतर पड़ना पक्षपात और खुशामद के बिना क्या कहा जाय ?

—महर्षि दयानन्द

—•—

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

—आर्यसमाज का तीसरा नियम

वेद सप्ताह श्रावणी पर्व पर—लगातार सात दिन, आर्य जन वेद कथा, वेद श्रवण और वेद प्रचार का व्रत लें।

वेद सप्ताह के पुनीत पर्व पर आर्य जगत् की शिरोमणि सभा के

सार्वदेशिक साप्ताहिक का

—:(वेद कथा अंक):—

२० हजार की भारी संख्या में प्रकाशित किया जा रहा है

यह विशेषांक पुस्तक साइज के २५० पृष्ठों में होगा

इतने पर भी वेद कथा अंक का मूल्य नहीं—भेंट-मात्र

६० पैसा होगा।

स्थायी ग्राहक महोदय कृपया ध्यान दें

सात रुपया भेजकर आप ग्राहक बने हैं। आपको एक प्रति तो भेजेंगे ही, किन्तु—

इस वेद कथा अंक

की कुछ प्रतियां अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार मंगाकर अपने मित्रों को भेंट स्वरूप प्रदान करें।

आर्य समाज-परिचयांक

कब प्रकाशित होगा

अभी तक हमारे पास लगभग आर्य संस्थाओं का वर्णन, मन्त्रियों के चित्र और धन आ चुका है। इस अंक में हम आर्य जगत् का पूरा दिग्दर्शन कराना चाहते हैं वह तभी होगा जब सभी आर्य सस्थायें अपनी सामग्री भेज दें। हमारी हार्दिक इच्छा यह है कि चाहे देर हो जाय किन्तु होना चाहिये सर्वांग सम्पन्न। एक बार फिर हम सारे देश और विदेश की आर्य संस्थाओं को पत्र भेज रहे हैं। फिर उनके उत्तर की प्रतीक्षा के पश्चात् प्रकाशित करेंगे। आशा है आप भी इसे पसन्द करेंगे। —प्रबन्धक

(१) आप चाहे १ प्रति लें, १० लें, २५ लें, ५० लें, १०० लें अथवा हजार लें, सब एक ही भाव, ६० पैसे में प्राप्त करेंगे। किसी को कम या अधिक में नहीं।

(२) आप अपनी शक्ति से भी अधिक इस वेद कथा अंक को मंगावें।

(३) धन पहले नहीं —बाद में।

(४) जब आपके पास अंक पहुँचे, उससे १ सप्ताह तक अर्थात् वेद सप्ताह समाप्त होते ही मनीआर्डर से धन भेजें।

(५) अब प्रार्थना यह है कि आप भारी से भारी संख्या में आज ही आर्डर भेज दें। कहीं ऐसा न हो कि आप देर में आर्डर भेजे। फिर बलिदान अंक और बोधांक की तरह निराश हों।

वेद कथा विशेषांक में क्या होगा—इस पर ध्यान दें

ऋग्वेद के अनेक महत्वपूर्ण सूक्त और उन पर महर्षि दयानन्द भाष्य

यजुर्वेद के अनेक महत्वपूर्ण अध्याय और उनपर महर्षि दयानन्द भाष्य

सामवेद के अनेक महत्वपूर्ण मंत्र और पं० तुलसीराम स्वामी भाष्य

अथर्ववेद के अनेक महत्वपूर्ण सूक्त और पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी भाष्य

अंग्रेजी पाठकों के लिए—

विभिन्न विषयों पर चुने हुए लगभग ७५ मन्त्रों का स्व० श्री पं० अयोध्या प्रसाद जी बी०ए० वैदिक रिसर्च स्कालर द्वारा अंग्रेजी अनुवाद

एक विशेष ध्यान देने योग्य

भारत भर में लगभग ५००० ऐसे महानुभाव हैं—जो राज सभा, विधान सभा, लोक सभा के सदस्य और मन्त्रीगण हैं। वेद के पुण्य पर्व पर प्रसाद के रूप में

वेद कथा अंक

को आर्य जन अपनी ओर से इन्हें भेंट करने के लिए हमें आज्ञा दें। ५ हजार अंक तीन हजार रुपये के होंगे। यह पुण्य कार्य—

—एक ही आर्य कर सकता है।

—तीस आर्य कर सकते हैं।

एक सौ आर्य कर सकते हैं।

विचार करें और आज ही उदारतापूर्वक उत्तर दें। जो दानी महानुभाव इस कार्य में अपना सहयोग देंगे, सार्वदेशिक में उनके प्रति आभार प्रदर्शन करेंगे।

बिना मूल्य

सात रुपया वार्षिक चन्दा भेज कर वेद कथा विशेषांक बिना मूल्य प्राप्त करें। —प्रबन्धक

छपते-छपते—

वेद कथा अंक के लिए सात्विक प्रेरणा

एक आर्य सज्जन ने हमें सूचित किया है कि (१००) के वेद कथा अंक की प्रतिएं विदेशी जनों को मेरी ओर से भेंट कर दें किन्तु मेरे नाम का प्रदर्शन न करें।

धन्यवाद—आपकी आज्ञा का यथावत् पालन करेंगे। —प्रबन्धक

वेद कथा अंक में

वैदिक साहित्य के अतिरिक्त अन्य कोई विज्ञापन नहीं छपेगा। कृपया विज्ञापनदाता महोदय ध्यान रखें। —प्रबन्धक

आज ही अपना आदेश भेजे— सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

रामगोपाल शालवाले
मन्त्री

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

चार्वाक के चेले

आजकल चारों ओर महगाई का जितना जोर है उसके कारण जनता त्राहि-त्राहि कर उठी है। कदाचित् नगरों मे रहने वाले सम्पन्न लोगों को इस महगाई का दश उतना न चुभता हो जितना गरीब देहातियों को। बड़े-बड़े शहरों को छोड़कर अन्यत्र सभी जगह जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं प्राप्त करना भी इस युग में खाला जी का घर नहीं रहा। दिन प्रतिदिन अनाज की कीमत चढ़ती जाती है। घी-दूध की तो बात ही छोड़िये, इन दिनों तेल और वनस्पति घी भी इस कदर महगे हो गये हैं वे सामान्य मनुष्य की पहुंच से बाहर हो उठे हैं।

महगाई की इस विभीषिका के विरुद्ध जनता के तीव्रतर होते आक्रोश को दबाने के लिए सरकार की ओर से भी तरह-तरह की घोषणाएं की जाती हैं। परन्तु उन घोषणाओं के पीछे कोई सुनिश्चित योजना और दृढ़-सकल्प न होने के कारण अभीष्ट फल की प्राप्ति नहीं होती। अवमूल्यन के बाद से महगाई के इस मनो विज्ञान में और भी व्यापकता और गति आई है।

अब सरकार ने दिल्ली के सुपर बाजार जैसे अनेक स्टोर विभिन्न शहरों में खोलने और वहा जीवनोपयोगी वस्तुएं उचित मूल्य पर देकर भावों को नियन्त्रित करने का प्रयत्न प्रारम्भ किया है। यद्यपि यह अभी शुरुआत ही है इसलिए अभी से इसके विषय में भविष्यवाणी करना उचित नहीं—और हमारी यह भी धारणा है कि इस प्रयत्न के विफल होने पर सरकार देश को अराजकता या अस्तव्यस्तता से नहीं बचा सकेगी—परन्तु फिर भी हम दुःख के साथ यह कहने को विवश हैं कि सरकार के इस प्रयत्न के भी सफल होने के आसार नही हैं।

निराशावादी न होते हुए भी यदि हमारी वाणी से निराशा का ऐसा स्वर मुखरित होता है तो वह अकारण नहीं है। सरकार जिस नीति पर चल रही है उससे मंहगाई कमी कम हो ही नही सकती। यों तो विकास मान देशों मे मंहगाई बहुत कुछ स्वाभाविक होती है, परन्तु जिस तेजी से हमारे देश में चीजों के भाव बढे हैं वह स्पष्टत. सरकारी नीतियों का परिणाम है। व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में लगाए गए नाना करों के कारण चीजों का उत्पादन व्यय ही इतना बढ जाता है वे उपभोक्ताओं को सस्ते मूल्य पर मिल ही नही सकतीं। सरकार ने जो विशाल योजनाएं बनाई हैं उन पर भी अरबों रुपए की राशि खर्च होती हैं। घाटे की वित्त-व्यवस्था स्वीकार करके और व्यापारियों पर ८५ प्रतिशत तक कर लगा कर भी जब सरकार योजनाओं पर व्यय होने वाली आवश्यक राशि नही जुटा पाती तब उसे सहायता के लिए विदेशों के आगे भिक्षा-पात्र फैलाना पड़ता है। अवमूल्यन का रहस्य भी यही है। नेतागण चाहे कुछ भी कहते रहे, किन्तु जानकार लोगों से यह बात छिपी नहीं है कि अधिकाधिक डालर प्राप्ति के प्रलोभन ने ही सरकार को अवमूल्यन करने के लिए विवश किया है।

इस स्थिति को भी हम किसी हद तक विकास शील अर्थव्यवस्था का स्वाभाविक तकाजा मान सकते हैं परन्तु सार्वजनिक क्षेत्र मे और सरकारी प्रशासन मे अहर्निश जो अन्धाधुन्ध खर्च बढता चला जाता है, वह स्वाभाविक नहीं, बल्कि विलासिता पूर्ण विशिष्ट मनोवृत्ति का द्योतक है। सरकारी अफसरों पर और मन्त्रियों पर जितना पैसा खर्च होता है आखिर वह सब भी तो कहीं न कहीं से निकलना चाहिए।

सरकार द्वारा किये गए एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन से ही यह पता लगता है कि जितनी भी परियोजनाएं प्रारम्भ होती हैं उन सबमें काफी बड़ी राशि प्रारम्भिक ठाठ-बाठ पर ही खर्च हो जाती है। सबसे पहले बड़े-बड़े अफसरों के लिए आरामदेह मकान बनाए जाते हैं, उनमें वातानुकूल (एयर कन्डीशन) की व्यवस्था की जाती है, मकानों के लिए आलीशान फर्नीचर खरीदा जाता है, अफसरों के लिए कारें खरीदी जाती हैं और उनके मनोरंजन के लिए क्लब, नाचघर तथा सिनेमाघर बनाए जाते हैं। शानदार गेस्ट-हाऊस और डाक बंगलों का निर्माण भी योजनाओं के प्रारम्भिक व्यय का अनिवार्य अग है। अभी तक पिछली तीन योजनाओं की अवधि मे सरकारी परियोजनाओं के इस प्रारम्भिक ठाठवाठ पर ही २२ अरब रुपया व्यय हो चुका है।

जहां तक मन्त्रियों के रहन-सहन और शानो-शौकत का सवाल है वह भी मुगल काल के किसी नवाब से कम नहीं होते। आए दिन इस प्रकार के आकड़े अखबारों में आते रहते हैं। उदाहरण के लिए हम यहा केवल आन्ध्रप्रदेश के मन्त्रियो का उल्लेख कर रहे हैं। आन्ध्रप्रदेश के अधिकांश मन्त्री अपने निजी घरों में ही रहते हैं, परन्तु सरकार से घर के किराए के रूप में २५० रु० प्रतिमास वसूल करते हैं। इतना ही नहीं, आए दिन अपने निजी घरों की ही मरम्मत और साज-सज्जा के नाम पर ये मन्त्री सरकार से जो राशि वसूल करते हैं, वह भी नगण्य नही होती। राज्य की विधानसभाओं मे जो हिसाब पेश किया गया है उसके अनुसार सन् १९६२ से लेकर १९६५ तक कुछ मन्त्रियों ने अपने घरों की मरम्मत के नाम पर निम्नलिखित राशियां वसूल की हैं।

वित्तमन्त्री	३०,३३२ रु०
गृहमन्त्री	२६,६८३ रु०
स्वास्थ्य मन्त्री	२१,४६० रु०
पंचायतराज्य मन्त्री	२६,७६३ रु०
राजस्व मन्त्री	३०,७३० रु०

इसके अलावा मन्त्रियों के दौरों का भत्ता, उनके अनुचर-परिचरों का व्यय तथा अन्य लवाजमात का व्यय भी इतना अधिक है कि वह किसी भी प्रकार गांधीवाद के या कांग्रेस के त्याग-तपस्या वाले आदर्श के अनुकूल नहीं बैठता।

शास्त्रकारों ने कहा था:—

महाजनो येन गतः स पन्थाः।

अथवा

यद् यदाचरति श्रेष्ठः
तत् तदेवेतरो जनः।

—बड़े लोग जैसा आचरण करते हैं, आम जनता भी उसी का अनुकरण करती है। मन्त्री लोग इतना विलासिता पूर्ण महगा जीवन बिता कर जनता को त्याग और तपस्या का उपदेश किस मुंह से दे सकते हैं? गांधी जी ने अमीरों को भी गरीबों की तरह जीवन बिताने का उपदेश दिया था, परन्तु नेहरू जी ने जीवन-स्तर उन्नत करने का नारा लगा कर गरीबों को अमीरों की तरह रहने की सीख सिखाई। गांधी और नेहरू का यही सब से बड़ा अन्तर है। महात्मा गांधी एक पैसे के दुरुपयोग को भी राष्ट्र की सम्पत्ति का अपव्यय समझते थे, परन्तु आजकल के कांग्रेसी नेता खुद अपने ऊपर लाखों रुपया खर्च करके भी उसे राष्ट्र की सम्पत्ति का दुरुपयोग नही, प्रत्युत सदुपयोग ही समझते हैं। यही सबसे बड़ी विडम्बना है। जब तक इस मनोवृत्ति में परिवर्तन नहीं होगा तब तक नेतागण न महगाई को रोक सकेंगे और न देश को अर्थ संकट से बचा सकेंगे।

हमारे नेता विदेशों से कर्ज लेकर देश की बड़ी बड़ी योजनाएं पूरी करने के जिस चक्कर में पड़े हैं उसे चार्वाक दर्शन के शब्दों में "ऋणं कृत्वा घृतम् पिबेत्"—की नीति के सिवाय और कुछ नहीं कह सकते। चार्वाक भौतिकवादी और नास्तिक था। हमारे नेता चार्वाक के ही वशज या दीक्षा प्राप्त चेले प्रतीत होते हैं।

वेद कथा विशेषांक

के लिए

महत्वपूर्ण सात्विक दान

बम्बई से श्री सेठ बद्रीप्रसाद भोरूका जी ने २१००) के ३५०० वेद कथा अक, लोक सभा, राज सभा, विधान सभा के सदस्यों, मन्त्री गणों एवं राज्यपालों को भेजने के लिए आज्ञा प्रदान की है। इस सात्विक-पुण्य कार्य के लिए श्रद्धेय श्री सेठ जी को हार्दिक बधाई।

रामगोपाल, सभा मन्त्री

वेद-प्रचारार्थ दान

शोलापुर निवासी श्री सेठ बिहारीलाल सुखदेव बलदेवा जी ने एक हजार रुपये वेद प्रचारार्थ प्रदान किये हैं। हार्दिक धन्यवाद

रामगोपाल, सभा मन्त्री

सामयिक-चर्चा

अल्प संख्यकों की सुरक्षा गवर्नर के समक्ष कार्य पंजाब का पत्र

चंडीगढ़ जुलाई १६

राज्यपाल धर्मवीर के दो कार्यों की बड़ी प्रशंसा हो रही है। बढ़ते हुए मूल्यों को रोकना और भाषायी अल्प संख्यकों को संरक्षण प्रदान करना। इन दोनों कार्यों ने बड़ा महत्व धारण किया हुआ है। परन्तु जनता मे आवश्यक उत्साह उत्पन्न नही हुआ है। इसका मुख्यकारण यह है कि जनता को यह निश्चय नहीं है कि इस दुरूह कार्य में उन्हें केन्द्र का समर्थन प्राप्त है या नहीं। यदि है तो कितना।

अल्प संख्यक

जिस समस्या से केन्द्र को मुख्यत: राज्यपाल को वास्ता पड़ने वालाहै वह भाषायी अल्प सख्यक वर्ग के अधिकारों की सुरक्षा और इस विवाद के साम्प्रदायिक रूप ग्रहण कर लेने से यह समस्या जटिल बनने वाली है। अकालियों की धमकी पूर्ण घोषणाओं और आर्य समाजियों के संघर्ष रत वर्षों में हुई नवीन संधि या एकता के कारण इस समस्या पर तत्काल ध्यान दिया जाना अनिवार्य हो गया है।

बहुत से राजनयिक यह अनुभव करते हैं कि वह समय आ गया है जब कि कांग्रेस उच्चसत्ता और केन्द्रीय नेतृत्व को इस समस्या का भलीभांति अध्ययन करके अपना मत बना लेना चाहिए। नए राज्यों के अस्तित्व मे आने के तत्काल बाद इस विवाद के उग्र एवं भयकर बन जाने की सम्भावना है।

पंजाबी सूबा और हरियाना प्रान्त के समर्थकों को सबसे बड़ी निराशा यह होने वाली है कि दोनो राज्यों के द्विभाषी बन जाने की प्रत्येक सम्भावना है।

सूबा में पहले से ही सविधान उन लोगों के पक्ष में है जो इस बात पर अड़े हुए हैं कि हिन्दी उनकी मातृभाषा है। हरियाना में दूसरी भाषा के रूप में पजाबी से कोई छुटकारा न पा सकेगा। बहुत से त्रिभाषा सूत्र से अनभिज्ञ है जिसके अनुसार पजाबी के स्थान में सस्कृत का रखा जाना सम्भव नहीं है जिसकी आजकल बड़ी चर्चा हो रही है।

भेद भाव नहीं

सविधान की ३० वीं कडिका में यह व्यवस्था विद्यमान है कि समस्त अल्प सख्यक वर्गों को चाहे वे धर्म पर आधारित हों या भाषा पर, अपनी पसन्द की शिक्षा, सस्थाओं की स्थापना और सचालन करने का अधिकार प्राप्त होगा। और राज्य उन्हें अनुदान देते हुए इस आधार पर भेद भाव न करेगा।

बहुत से अकालिए यह सुख स्वप्न ले रहे हैं कि राज्य के बल पर प्रत्येक पजाबी को गुरुमुखी लिपि मे पजाबी पढने के लिए विवश कर देंगे। वे यह भूल जाते प्रतीत होते हैं कि पजाब में आर्यसमाज के सैकड़ों स्कूल और कालेज हैं जहां वे पजाबी की वाध्यता को रोकने के लिए कोई भी यत्न उठा न रखेंगे।

आर्य समाज के दो वर्गों की एकता सम्भवत: कृत्रिम है। परन्तु यदि सूबे की सरकार ने अकालियों के प्रभाव में आकर मनमानी करने का यत्न किया तो यह एकता वास्तविक रूप धारण कर सकती है। डी० ए० वी० आन्दोलन ने ब्रिटिश काल में उर्दू को शिक्षा का माध्यम बनाने से इन्कार करके बड़ा त्याग और बलिदान किया था। वह हिन्दी के माध्यम पर उस समय भी दृढ रहा था जब कि हिन्दी का पढना विद्यार्थी के लिए लाभप्रद न समझा जाता था।

राज भाषा

सविधान की अन्य कडिकाएं जिनसे राज्य के जन्म के समय से ही विवाद के खडन होने की आशका है जिला स्तर तथा उससे नीचे, सचिवालय स्तर तथा केन्द्र एव राज्य स्तर पर व्यवहार मे आने वाली राजभाषा से सम्बद्ध हैं।

सन् १९६० में क्षेत्रीय भाषा पंजाबी नियत की गई थी परन्तु यह अभी तक राज-भाषा नहीं बनाई गई। इसके लिए कानून बनना शेष है। जब कानून बनने लगेगा तो आर्यसमाज सम्भवत: हिन्दी को दूसरी राज-भाषा बनाए जाने पर जोर देगा क्योंकि १९६१ की जनगणना मे ३० प्रतिशतक से अधिक लोगों ने इसे अगीकार किया था। यह निश्चित नहीं है कि अकाली लोग केन्द्र के साथ सरकारी पत्र-व्यवहार में हिन्दी को अपनाने के लिए अन्य हिन्दी भाषा-भाषी राज्यों का साथ देने के लिए राजी हो जायेंगे।

हिन्दी को पजाब की दूसरी राजभाषा बनाये जाने की मांग करते समय आर्यसमाजी अपनी मांग का आधार सम्भवत. कडिका ३४७ को बनायेंगे जिसमें कहा गया है—

"इस सम्बन्ध मे मांग उठने पर राष्ट्रपति महोदय यदि उन्हें इस बात का सन्तोष हो जाय कि किसी राज्य की आबादी का पर्याप्त भाग उस राज्य द्वारा उस भाषा के प्रयोग को स्वीकृत किए जाने की इच्छा व्यक्त करता है जो वह बोलता है तो सम्पूर्ण राज्य या उसके किसी भाग के लिए इस प्रकार की भाषा के कार्यों के लिए जिनका वे लिखित निर्देश देंगे सरकारी प्रयोग का आदेश दे सकते हैं।"

शिकायतों का निराकरण

दूसरी कडिका जिसको गले से उतारना अकालियों के लिए कठिन होगा ३५० और ३५० ए है। पहले भाग में प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार दिया गया है कि वह राज्य या केन्द्र मे जैसी अवस्था हो व्यवहार में आने वाली भाषा मे राज्य के किसी भी अफसर या अधिकार पूर्ण व्यक्ति से अपनी शिकायत का निराकरण कराए। धारा ३५० ए० में कहा गया है कि प्रत्येक राज्य या राज्यके भीतर प्रत्येक स्थानीय निकाय का यह यत्न होगा कि वह भाषा अल्प सख्यक वर्गों के बालकों की प्राइमरी स्तर पर मातृ-भाषा के माध्यम से शिक्षा की समुचित व्यवस्था करे और सुविधाएं प्रदान करे और राष्ट्रपति किसी भी राज्य को ऐसे आदेश दे सकते हैं।

इसके साथ ही १९५८-५९ के हिन्दी आन्दोलन के समय दिए गए पं० जवाहरलाल जी नेहरू के आश्वासन भी विद्यमान हैं ये सब भयकर वास्तविकताएं हैं जिनके साथ अकालियों को अपनी पटरी बिछानी है। अनिश्चितता और अपर्याप्तता के कारण ही सीमा आयोग के समक्ष वे बाजी हार गए थे। वे अब भी मोर्चों के जगत मे रह रहे हैं। यह देखना है कि वे स्थिति की वास्तविकता को देखकर धमकियों के बजाय प्रेम और सौहार्द से अपना केस जीतने का यत्न करते हैं या नहीं ?

आर्य समाजियो को भी अपनी आन्दोलनात्मक योजनाएं बनानी है।

केन्द्र द्वारा कार्यवाही में पहल किया जाना

इस स्थिति में केन्द्रीय नेता जरा सी दूरदर्शिता और पूर्व योजना के द्वारा पहल अपने हाथ में रख सकते हैं। अब भी सन्त को यह बताया जा सकता है कि क्या सम्भव है और क्या असम्भव, यदि सन्त के साथ ठीक ढग से बातचीत की जाय और उन्हें समझा दिया जाय तो बात का बन जाना असम्भव नहीं है। ऐसा ही वे आर्य समाजियों के साथ कर सकते हैं जिनमें से अधिकांश जनसंघ की अपेक्षा कांग्रेस को पसन्द करते हैं, राज्यपाल के प्रशासन में ऐसा करना सुगम होगा।

पजाब के पुनर्गठन बिल में अल्प सख्यकों के सरक्षणों का स्पष्टीकरण किया जा सकताहै अन्यथा नए राज्यो में भाषायी अल्प सख्यक बधकों की स्थिति में आ जायेंगे और उनके साथ होने वाले इस प्रकार के व्यवहार को रोकना शक्य न हो सकेगा। इससे राज्यपाल की स्थिति भी खराब हो जायेगी।

—ऐस० वी० बेदी

(इन्डियन एक्सप्रेस दिनांक १९ जुलाई १९६६)

सत्याग्रह बलिदान-स्मारक दिवस

मंगलवार ३० अगस्त १९६६ को मनाइये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली के दिनांक १२-१०-४० के स्थायी निश्चयानुसार सत्याग्रह में अपने प्राणों की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य स्मृति में श्रावण शुक्ला पूर्णिमा तदनुसार मंगलवार ३० अगस्त १९६६ को आर्यसमाज मन्दिरों में सत्याग्रह बलिदान स्मारक दिवस मनाया जायगा। इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व है। इसका कार्यक्रम आर्य पर्व-पद्धति के अनुसार श्रावणी उपाकर्म के साथ मिलाकर निम्न प्रकार किया जाय :—

प्रातः ८॥ बजे आर्यसमाज मन्दिरों में सभाएं की जायें जिनमें उपाकर्म की कार्यवाही के पश्चात् सब उपस्थित भद्र पुरुष तथा देवियां मिलकर निम्न पाठ करें —

१—ओ३म् ऋतावान् ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः।
तेषां व सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम ये च सूरयः ॥ ऋग्वेद ७। ६६। १३॥

२—ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥ यजुर्वेद १। ५॥

३—ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः ॥ ऋ० ९। ६३। ५॥

४—ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूता।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ॥ अथर्ववेद १२। १। ६२॥

आर्य समाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् उपर्युक्त मन्त्रों का तात्पर्य इन शब्दों में पढ़ कर प्रार्थना करायें :—

१—जो विद्वान् सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य की निरन्तर वृद्धि और असत्य के विरोध में तत्पर रहते हैं, उनके सुखदायक उत्तम आश्रय में हम सब सदा रहें तथा हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें।

२—हे ज्ञानस्वरूप! सब उत्तम सकल्पों और कर्मों के स्वामी परमेश्वर! हम भी आज से एक उत्तम व्रत ग्रहण करते हैं जिसके पूर्ण करने की शक्ति आप हमें प्रदान करें ताकि उस व्रत के ग्रहण से हमारी सब तरह से उन्नति हो! वह व्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य की ही शरण में आते हैं। आप हमें शक्ति दें कि हम अपने जीवन को पूर्ण सत्यमय बना सकें।

३—हे मनुष्यो! तुम सब आत्मिक शक्ति तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए श्रमशील बन कर उन्नति में बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी, धर्मात्मा बनाओ।

४—हे प्रिय मातृभूमे! हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियां तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं। सर्वथा नीरोग, स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए हम दीर्घायु को प्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों की बलि देने को भी तैयार रहें।

इसके पश्चात् मिल कर निम्नलिखित कविता का गान किया जावे —

धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि अर्पण करते हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान॥
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने।
कष्ट अनेकों सहन किये पर, धर्म न छोड़ा वीरो ने॥
ऐसे सभी धर्म वीरों के, आगे शीश झुकाते हैं।
उनके उत्तम गुण गण को हम, निज जीवन में लाते हैं॥
अमर रहेगा नाम जगत् में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनायेगा फिर, वीर जाति को निश्चय से॥
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि कोटि हों वीर।
धर्म देश हित जो कि खुशी से, प्राणों की आहुति दें वीर॥
जगदीश को साक्षी जानकर, यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिह्न पर, चलने का व्रत करते हैं॥
सर्वशक्ति दे बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बनें।
पर उपकार परायण निशिदिन, शुभ गुणधारी आर्य बनें॥

(ध० दे०)

अनुकरणीय दान

३० जुलाई के सार्वदेशिक साप्ताहिक मे श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्य्योपदेशक प्रधान 'आर्य्य युवक-परिषद्' की अपील प्रकाशित हुई थी कि "सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाओं में बैठने वाले जिन परीक्षार्थियों के पास सत्यार्थ प्रकाश नहीं है उनके लिये "सत्यार्थ प्रकाश" दान देवे। हर्ष की बात है कि बम्बई निवासी श्री सेठ बद्रीप्रसाद मोदका जी ने १०० सत्यार्थ प्रकाश इस पुण्य कार्य के लिए देने की कृपा की है। अतः परिषद् की ओर से सेठ जी का बहुत २ हार्दिक धन्यवाद है।

सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय का व्रत लें

श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु, आर्य्योपदेशक तथा श्री मनोहर लाल जी गुप्त ने जनता से अपील की है कि सभी बहन-भाई सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय का व्रत लें और आर्य युवक परिषद् की ओर से इस वेद सप्ताह में रविवार ४ सितम्बर ६६ को सारे देश में होने वाली "सत्यार्थ प्रकाश" की परीक्षाओं में सम्मिलित होकर पारितोषिक तथा प्रमाण पत्रादि प्राप्त करें। परीक्षाओं के बहाने स्वाध्याय हो जावेगा। परीक्षा में बैठने के इच्छुक परीक्षा मन्त्री, आर्यसमाज मोडल बस्ती दिल्ली-५ से सम्पर्क स्थापित करें।

धर्मवीर नामावली

श्यामलाल जी महादेव जी राम जी श्री परमानन्द।
माधव राव विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द॥
स्वामी सत्यानन्द महाशय मलखाना श्री वेद प्रकाश।
धर्म प्रकाश रामनाथ जी पाण्डुरंग श्री शान्ति प्रकाश॥
पुरुषोत्तम जी ज्ञानी लक्ष्मण राव सुनहरा वेंकट राव।
भक्त-अरुड़ा मातुराम जी नन्हूसिंह जी श्री गोविन्दराव॥
बदनसिंह जी रतीराम जी मान्य सदाशिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटेलाल अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द॥
माणिकराव श्री भीमराव जी महादेव श्री अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण बैजनाथ ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह॥
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन, सब ही वीरों धीरों का॥

रामगोपाल
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

पाखण्ड एवं गुरुडम की दीवारें गिरा दो

अलवर में श्री रामगोपाल शालवाले का भाषण

अलवर १८ जुलाई

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री और सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्रीयुत लाला रामगोपाल शालवाले ने १८ जुलाई की रात में एक विशाल सभा में भाषण देते हुए घोषणा की "आज का दिन बड़ा शुभ है जब कि आर्य समाज और सनातन धर्म सभा ने पाखण्ड और ढोंग के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा खड़ा किया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि वैदिक धर्म के प्रचार और विविध बुराइयों एव अभिशापों से युक्त पाखण्ड और ढोंग के निराकरण के लिए यह मोर्चा बना रहेगा।"

अलवर के आर्य समाज ने सनातन धर्मावलम्बियों के सहयोग से हंसा महाराज के पाखंड से जन-सामान्य को अवगत करने और उसके जाल से बचाने के उद्देश्य से जो वहां पहुंच कर लोगों को पथ-भ्रष्ट कर रहा था वह संयुक्त मोर्चा कायम किया था। इस विशाल सभा के मुख्य वक्ता लाला रामगोपाल थे जो विशेष निमन्त्रण पर दिल्ली से पधारे थे। उन्होंने कहा धर्म का मूल वेद है। वेद विरोधी पाखण्ड, दम्भ तथा गुरुडम की दीवार गिरा दो।

आर्य समाज और सनातन धर्म सभा की सयुक्त सार्वजनिक सभा में सनातन धर्म के सुप्रसिद्ध विद्वान वक्ता प्रो० वशिष्ठ एम० ए० तथा सनातन धर्म सभा के उपदेशक श्री प० देवदत्त शर्मा के भाषण हुए। उन्होंने भी हंसा महाराज का खण्डन किया जो धर्म के नाम पर अधर्म एव बुराई का प्रसार कर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहा है और हिन्दू धर्म को बदनाम करने का कारण बना हुआ है। दोनों महानुभावों ने इस प्रकार के पाखण्ड के उन्मूलन में आर्य समाज को अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

लाला रामगोपाल जी ने हर्ष प्रकट किया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्डों के निवारण के लिए जो पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी उसके नीचे जनता आई और आ रही है। उन्होंने कहा, हम न विद्वान हैं और न आचार्य। सब का गुरु एक परमात्मा है। हम जैसे ढोंगी गुरुओं से जनता सावधान रहे जिनका वैयक्तिक जीवन बड़ा घिनौना होता है और जो भोले-भाले लोगों को अपने जाल में फंसा कर उनका सर्वनाश कर देते हैं इस प्रकार के लोग धर्म भीरु जनता को झूठे एवं कपोल कल्पित अवतार स्वर्ग और मोक्ष का सब्ज-बाग दिखाकर गुमराह करते हैं।

अपने भाषण को जारी रखते हुए उन्होंने हिन्दू जाति पर छाये हुए विपत्ति के बादलों को आपस में मिलकर छिन्न-भिन्न करने की अपील की। उन्होंने ईसाइयों एवं बहाइयों की आपत्तिजनक प्रगतियों, परिवार नियोजन के दुष्प्रभावों एवं हस सम्प्रदाय, ब्रह्मकुमारी सम्प्रदाय, आनन्दपुर मठ, आनन्द मार्ग आदि २ की चर्चा करते हुए बताया कि ये सब हिन्दू जाति के ह्रास और हिन्दू धर्म के पतन का सामान एकत्र कर रहे हैं। इनसे डट कर लोहा लेने के लिए हिन्दू समाज के प्रत्येक बच्चे को तैयार होना है।

अन्त में विद्वान् वक्ता ने गोरक्षा आन्दोलन को सबल बनाने की प्रेरणा की।

भाषण बहुत प्रभावशाली था जिसे लोग मन्त्रमुग्ध हुए सुन रहे थे।

नागा-मिजो विद्रोह

सरकार की अदूरदर्शिता का परिणाम

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी

भारत मे अपने साम्राज्य को दीर्घायु व स्थायित्व प्रदान करने के लिए विदेशी अंग्रेज सरकार ने ईसाई धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए एक विशेष योजना बनाई थी जिसके अनुसार विदेशों से हजारों पादरियों को बुला कर उन्हें सरकार की ओर से विशेष संरक्षण व सहायता देने के लिए नीति निर्धारित की गई थी। विदेशी ईसाई मिशनरियों को अपने मिशनों के लिए नि शुल्क भूमि दी गई और प्रत्येक सरकारी कर्मचारी उन्हें सरकार का प्रतिनिधि मानकर ही उनकी इच्छाओं को सरकारी आदेश समझ कर पूर्ण करने का प्रयत्न करता था।

विदेशी ईसाई मिशनरियों को जब आर्य समाज की ओर से खतरा उत्पन्न हुआ तो उन्होंने शहरों के स्थान पर पहाड़ो के जगलों की भोली भाली, अपढ व निर्धन जनता में प्रचार करना अच्छा समझा और अंगरेज सरकार ने उन्हे पूर्णत: सुरक्षित करने के लिए भारत के अधिकांश पहाड़ी क्षेत्रों को सुरक्षित क्षेत्र घोषित कर विदेशी ईसाई मिशनरियों के अतिरिक्त अन्य प्रचारकों का वहां जाना निषेध कर दिया। इस प्रकार भारत की पहाड़ी बनवासी जातियों को बलात् ईसाई बनाने के लिए अंगरेज सरकार ने उन्हे पादरियों के हवाले कर दिया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत के प्रत्येक देश भक्त को यह आशा थी कि भारत सरकार विदेशी अंगरेजी सरकार के उक्त काले अराष्ट्रीय कानून को समाप्त कर पर्वतीय क्षेत्रों व जातियोंमें जाने या वहां प्रचार करने की प्रत्येक भारतवासी को अनुमति दे देगी परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि भारत सरकार ने उस काले कानून को आज तक ज्यों का त्यों सुरक्षित रखा है और निर्धन भोले बनवासियों को विदेशी ईसाई मिशनरियों की दया पर छोड़ा हुआ है।

महान् आश्चर्य व खेद की बात तो यह है कि इस रहस्योद्घाटन हो जाने के पश्चात् भी, कि विदेशी ईसाई मिशनरी ही नागा व मिजो प्रदेश मे वहां के ईसाई नागाओ से विद्रोह करा रहे हैं और उनका गुप्त रूप से नेतृत्व कर रहे हैं भारत सरकार मौन है और उस काले कानून को हटाने के लिए तैयार नहीं है। आज नागा व मिजो प्रदेश में जाने वाले भारतीय को सरकार की आज्ञा लेनी पड़ती है जब कि विदेशी ईसाई मिशनरी वहां मकड़ी के जाले की भांति छाये हुए हैं।

आसाम के नागालैण्ड आदि प्रदेशों की भूमि उपजाऊ है और वहा की जन संख्या नहीं के बराबर है। इस प्रकार लाखों एकड़ उपजाऊ भूमि बेकार पड़ी हैं यदि भारत सरकार वहां लोगों को जाने और बसने की अनुमति व विशेष सुविधा प्रदान करे तो देखते देखते वहा भारत के जाट आदि किसान बस कर जहां उस भूमि से लाखों मन अन्न उत्पन्न करेंगे वहा नागों में देश भक्ति का भाव भर कर वहा स्थाई शान्ति की स्थापना करेंगे। परन्तु दुर्भाग्य वश भारत सरकार की अदूरदर्शिता ही उसमें बाधक बन रही है और नागा-विद्रोह का अप्रत्यक्ष रूप में सरक्षण कर रही है। यदि सरकार में लेशमात्र भी दूरदर्शिता होती तो उसका प्रथम कर्तव्य यही होता कि समस्त पर्वतीय क्षेत्र सब के लिये खोल दिये जाते वहां विद्रोह कराने वाले विदेशी मिशनरियों का निष्कासन कर दिया जाता। परन्तु दुर्भाग्य वश दूरदर्शिता और भारत सरकार में वैर है और यही वैर भारत के विनाश का कारण बन रहा है।

ओंकारनाथ दुबे से आर्यसमाजें सावधान रहें

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी का आदेश

ओंकारनाथ दुबे नाम का कोई व्यक्ति आर्य समाजों में घूम रहा है। वह अपने को कई विषयों में पी० एच० डी० और गुरुकुल कांगड़ी का प्रोफेसर बताता है तो कहीं यह कहता फिरता है कि वह ताशकन्द वार्त्ता के समय प्रधान मन्त्री स्व० श्री लालबहादुर जी शास्त्री के साथ दुभाषिये के रूप में गया था। कहीं वह कहता है कि वह सार्वदेशिक सभा का प्रतिनिधि तथा श्री स्वामी समर्पणानन्द जी का भांजा है इत्यादि २। गुरुकुल कांगड़ी तथा भारत सरकार के पराराष्ट्र विभाग से ज्ञात करने पर विदित हुआ कि न तो यह गुरुकुल कांगड़ी में प्रोफेसर है और न श्री स्व० लालबहादुर जी शास्त्री के साथ ताशकन्द गया था और न स्वामी समर्पणानन्द जी का भाजा है। आर्यों तथा आर्य समाजों को ऐसे धूर्त व्यक्ति से सावधान रहना चाहिए। उसे न तो आर्य समाज में या उसकी संस्थाओं में ही ठहरने देना चाहिए और न किसी प्रकार की उसे सहायता देनी चाहिए। २० मार्च के आर्य मित्र मे इसी प्रकार की सूचना प्रकाशित की गई थी जब कि वह व्यक्ति मध्य प्रदेश की समाजों में घूम रहा था। अब वह नैनीताल मुरादाबाद आदि मे घूम रहा है। सार्वदेशिक सभा के साथ भी इस व्यक्ति का कोई सम्बन्ध नहीं है। अच्छा तो यह होगा कि इसे पुलिस के हवाले करा दिया जाय।

*

श्रावणी पर्व

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री

आर्यों के सामाजिक और वैयक्तिक जीवन में पर्वों का सदा से स्थान रहा है। धरा पर सभी मानव जातियां किसी न किसी प्रकार का पर्व मनाती ही हैं। पर्व शब्द का अर्थ पूरक भी है और सन्धि भी है। यह जहां आनन्द से पूरित करता है वहां ग्रन्थि होने से धारक भी है। ईख के रस को ईख की ग्रन्थि सुरक्षित रखती है और बास की दृढ़ता को उनकी गांठें स्थिर रखती हैं। इसी प्रकार शरीर की स्थिति स्थापकता शरीर की ग्रन्थियों द्वारा सुरक्षित है।

श्रावणी आर्यों के प्रसिद्ध पर्वों में से एक महान् पर्व है। यह पर्व वैदिक पर्व है। इसका सीधा सम्बन्ध वेद के अध्यापन और अध्ययन करने वालों से है। गृह्यसूत्रों के अनुसार इस पर्व का सीधा सम्बन्ध वेद और वैदिकों से दिखलाया गया है। यह पर्व जहां पर्व है वहां यह एक गृह्य कर्म भी है। गृह्यसूत्रों के अनुसार श्रावणीकर्म भी इसी अवसर पर होता है और उपाकर्म-वेदाध्ययन का प्रारम्भ होता है। चार मास वर्षा के होते हैं। इनमें बराबर वेदाध्ययन चलता था और पौष में जाकर उत्सर्ग किया जाता है। इसी आधार को लेकर आर्य समाज ने वेद सप्ताह का इस अवसर पर आयोजन किया। वेद के अध्ययन के मार्ग को आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रशस्त किया अतः उनके द्वारा स्थापित वेद प्रचारक आर्यसमाज का यह कर्तव्य ही है कि वह वेद के प्रचार को बढ़ावे। श्रावणी नाम इस पर्व का क्यों है? इसका उत्तर यह है कि श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को यह पर्व होता है अत यह श्रावणी है। इसी श्रावणी पूर्णिमा के आधार पर ही इस मास का नाम भी श्रावणमास है। इस श्रावणी की भी विधि है और वह गृह्यसूत्रों और हमारी पर्व पद्धति में लिखी है—जो प्रत्येक आर्य और आर्य समाज को करनी चाहिए।

यह सब होने पर भी कुप्रथाओं और सुप्रथाओं के बीच में चलने वाले आर्यों में भी श्रावणी के वास्तविक स्वरूप के विषय में कहीं कहीं पर अनभिज्ञता ही दिखाई पड़ती है। हमारे पत्र-पत्रिकाओं में भी ऐसी बातें कभी-कभी निकल आती हैं। दीपावली के विषय में राम की लंका विजय के बाद की दीपावली कारण बताई जाती है और होली के विषय में प्रह्लाद का सम्बन्ध जोड़ा जाता है। ये दोनों ही कल्पनायें भ्रान्त और गलत हैं। वस्तुतः ये दोनों ही गृह्य कर्म हैं इसी प्रकार रक्षा बांधने की प्रथा को लेकर श्रावणी को रक्षा बन्धन पर्व के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझा जाता है। रक्षा बांधने की प्रथा बीच में किसी समय प्रारम्भ हुई। परन्तु श्रावणी तो वैदिक गृह्य कर्म है। वह बहुत पहले भी था और अब भी है।

एक दिन एक आर्य सज्जन कहने लगे कि श्रावणी के दिन ही चारो वेदो का ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में मिला था इसलिए यह श्रावणी पर्व मनाया जाता है। मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। क्योंकि जहां तक मेरा ज्ञान है मैंने ऐसी बातें कहीं नहीं पढ़ी हैं। यह सम्भव भी नहीं। ऐसी ऐसी अनेक कल्पनायें लोग बना लेते हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि श्रावणी के विषय में ऐसी कल्पनाओं को आधार नहीं बनाना चाहिए। उसके शुद्ध स्वरूप को समझना चाहिए। रक्षा बन्धन का लौकिक और सामाजिक कृत्य भी इसी दिन पड़ता है—यह ठीक है। परन्तु यह प्रथा इस पर्व का कारण नहीं।

श्रावणी और स्वाध्याय

जैसा ऊपर कहा गया है वेदाध्ययन का इस पर्व से सीधा सम्बन्ध है। श्रावणी मनाने का एक उत्तम तरीका यह है कि वेदादि सच्छास्त्रों का स्वाध्याय इस पर्व से अवश्य चालू किया जावे। स्वाध्याय जीवन का अंग होना चाहिए। परन्तु ऐसे पर्वों के अवसरों से प्रेरणा लेकर ही यदि हम इस प्रवृत्ति को बढ़ावें तो अच्छा हो। आर्यों के जीवन का स्वाध्याय एक अंग है। स्वाध्याय में प्रमाद का हमारे शास्त्रों में निषेध है। स्वाध्याय (Self Study) का ज्ञान के परिवर्धन में बहुत बड़ा महत्व है। शतपथ ब्राह्मण ११।५।७।१ में स्वाध्याय की प्रशंसा करते हुए लिखा गया है कि स्वाध्याय करने वाला सुख की नींद सोता है, युक्तमना होता है, अपना परम चिकित्सक होता है, उसमें इन्द्रियों का संयम और एकाग्रता आती है और प्रज्ञा की अभिवृद्धि होती है। यहां पर ब्राह्मण ग्रन्थ का प्रत्येक शब्द महत्व से भरा हुआ है। पुनः उसी ब्राह्मण में ११।५।७।१० में कहा है कि स्वाध्याय न करने वाला अ ब्राह्मण हो जाता है अतः प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए और ऋक्, यजु, साम,

लेखक

अथर्व आदि को पढ़ना चाहिए जिससे व्रत का भंग न होवे। ब्राह्मण ग्रन्थ स्वाध्याय को अन्य व्रतों की भांति एक व्रत बतला रहा है। शतपथ ११।५।६।२ में इस स्वाध्याय को ब्राह्मण कहा गया है और आगे चलकर बताया गया है कि इस यज्ञ की वाणी जुहू है, मन उपभृत् है, चक्षु ध्रुवा है और मेधा स्रुवा है और सत्य इसका अवभृथ है। इस प्रकार स्वाध्याय की शास्त्रों में महती महिमा गाई गई है। ऋग्वेद मे स्वय इसका सुन्दर वर्णन है। वर्षाकाल मे मेंढक बोलते हैं। एक की बोली को दूसरा दुहराता है। यह उपमा ऋग्वेद में वेदपाठी ब्राह्मणों को दी गई है। क्योंकि इस चातुर्मास्य के समय में वेद को पढ़ते हैं। वस्तुत. वेद का मण्डूक शब्द और यह उपमा निदर्शन का महत्व लिए हैं। इससे सुन्दर समिश्रण वेदवाणी, मण्डूक की वाणी और मानसून-मेघस्थ वाणी का और कब हो सकता है। इस वर्षा की ऋतु में वेदज्ञ के मुख से निकली वेदवाणी, मानसून की गड़गड़ाहट से निकली मध्यमा वाणी और मेढकों की अनिरुक्त अव्यक्त वाणी—परा, पश्यन्ती मध्यमा, और वैखरी के अनिरुक्त रूप की प्रतीक हैं और इस वर्षा की ऋतु मे इन सबका समन्वय हो जाता है। अत. स्वाध्याय की प्रवृत्ति को प्रत्येक आर्य को बढ़ाना चाहिए—यहीं यहां पर मेरा निवेदन है।

यज्ञोपवीत और श्रावणी

श्रावणी के साथ नये यज्ञोपवीत के धारण और पुराने के छोड़ने की भी प्रथा जुड़ी हुई है। इसका भी एक प्रधान कारण है। गृह्यसूत्रों में विभिन्न कर्मों के समय विभिन्न प्रकार से यज्ञोपवीत के धारण करने का विधान है। निवीति, उपवीति, प्राचीनावीति आदि संज्ञायें इसी आधार पर हैं। यह भी एक गृह्यसूत्रों के आधार पर परिपाटी है कि प्रत्येक प्रधान उत्तम यज्ञ याग आदि कर्मों के समय नया यज्ञोपवीत धारण किया जाये। उसी आधार की पोषिका यह श्रावणी पर यज्ञोपवीत बदलने की प्रथा भी है। यज्ञोपवीत का आर्यों के संस्कार और कर्म-काण्ड में बड़ा ही महत्व है। यज्ञोपवीत के तीन धागे गले में पड़ते ही वह पितृ-ऋण, देवऋण और ऋषि ऋण आदि कर्तव्यों से अपने को बधा हुआ समझने लगता है। यहां उपनयन, यज्ञोपवीत, व्रत बन्ध आदि पद इस सम्बन्ध में विशेष महत्व के हैं। आचार्य कुल में विद्यार्थी लाया जाता है—इस कर्म पूर्वक अतः यह उपनयन है। यज्ञ आदि उत्तम कर्मों के लिए विद्यार्थी इससे प्रतिज्ञात और अधिकृत होता है अतः यज्ञोपवीत है। इससे अनुशासन और व्रतों में पालन की प्रतिज्ञा में बद्ध होता है अतः यह व्रतबन्ध है। वेदों में भी इस यज्ञोपवीत धारण का वर्णन है। उसी को लेकर अन्यत्र शास्त्रों में इसका पल्लवन किया गया है। ऋग्वेद १०।५७।२ मन्त्र में कहा गया है कि "जो तन्तु यज्ञोपवीत-तन्तु यज्ञों का प्रसाधक है और विद्वानों में आतत है उसको हम धारण करें। यद्यपि इस मन्त्र में बहुत से तथ्य छिपे हैं परन्तु विस्तार भय से यहां पर उनका वर्णन नहीं किया जा रहा है।

आन्ध्र में मुस्लिम साम्प्रदायिकता के उभरते हुए चरण

श्री रामचन्द्र राव देशपांडे एम० एल० ए०

स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व, निजाम हैदराबाद के शासन-काल में हैदराबाद नगर मुस्लिम साम्प्रदायिकता का केन्द्र बिन्दु बना हुआ था। सम्पूर्ण हैदराबाद राज्य में मुसलमानों को हिन्दुओं के प्रति घृणा करना तथा उन्हें एक पराजित जन समूह की भान्ति देखना सिखाया जाता था। सम्पूर्ण भारत मे मुस्लिम साम्प्रदायिकता को यहा से खुल्लम-खुल्ला आर्थिक सहायता और प्रोत्साहन मिलता रहता था। हैदराबाद को एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में देखने तथा अन्ततः निजाम को मुगलों के उत्तराधिकारी के रूप में देहली का का सम्राट बनाने और लाल किले पर 'आसफिया' झण्डा लहराने का स्वप्न देखा जाता था। स्व० सरदार पटेल की दूर दर्शिता और दृढ़ता ने इस स्वप्न को वस्तुतः स्वप्न ही बना दिया। पुलिस कार्यवाही ने हैदराबाद की मुस्लिम साम्प्रदायिकता की कमर तोड़ दी थी, किन्तु मुस्लिम साम्प्रदायिकता को भड़काने वाली प्रेरक शक्तियां सुरक्षित रहीं। उन्होने चतुर राजनीतिज्ञों की भान्ति अपनी टोपियां बदलीं, खादीके आवरण में अपने आपको ढक लिया, अपनी लच्छेदार भाषा में राष्ट्रीयता की लम्बी और जोशीली तकरीरें प्रारम्भ कर दी। कल के कट्टर मुस्लिम-लीगी आज के उग्र राष्ट्रवादी बन गये। कुटिल व्यवहारिक राजनीति में पले हुए तथा शिष्टाचार और आदाब मजलिस के रंग में सिर से पांव तक रंगे हुए शिक्षित एवं उच्च घरानोंके मुसलमान स्त्री-पुरुष १९५६ की प्रान्त-पुनर्रचना के बाद आन्ध्र से आये हुए प्लेट फार्म के वीर हिन्दू राजनीतिज्ञों के स्वागत में पलक-पांवड़े बिछा दिये। इनके ऊपरी शिष्ट व्यवहार और भव्य मेहमान-नवाजी से देहली के बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता तक प्रभावित होकर जब हैदराबाद के मुस्लिम नेताओं को शिष्टता और सभ्यता के प्रशस्ति-पत्र देने लगे, तो गुन्टूर, कर्नूल और विजयवाडा से आये हुए बड़े बड़े जमीदार तथा राजा टाइप के राजनीतिज्ञों ने, जो केवल सत्याग्रही या आन्दोलनकारी सगठक-मात्र थे, हैदराबाद के मुसलमानों की भड़कीली और जर्क-बर्क मेहमानदारी तथा मजलिसी शिष्टता के ऐसे शिकार हुए कि उन्हें अपनी नाक का बाल बना लिया। हैदराबाद नगर में मुसलमानों को अन्य प्रकार की जो सुविधा प्राप्त है, वह है उनकी संख्या—यह संख्या जहां वास्तव मे अधिक है वहां जनगणना के समय लगभग हर मुस्लिम घर से एक-दो बढ़ाकर लिखाई गयी सख्या के कारण भी इतनी अधिक बढ़ी हुई लगती है कि यहा के कांग्रेसी उससे सदैव आतंकित रहते हैं। इन मुसलमान नेताओं ने कांचन, कादिम्बिनी और कामिनी के भी खूब जाल फैलाए। मानव दुर्बलताओं से प्रभावित कुछ राजनीतिज्ञ इस जाल मे फस गये। कुछ सेक्युलिरिज्म और उदार अन्त.-करण की धूर्व से चली आनेवाली कांग्रेसी घातक नीति के घोर अनुयायी बन गये। फलस्वरूप हैदराबाद में मुस्लिम साम्प्रदायिकता फलती-फूलती रही और उसकी जड़ें मजबूत हो गयी।

हर मोर्चा मजबूत

मुसलमानों ने अनेक मोर्चे सभाल लिये। उर्दू की आड में अन्जुमन तर्की-ए-उर्दू, उर्दू मजलिस और अन्जुमन तहफुज उर्दू ने आसमान गुंजा दिया। इनके पोषकों को राष्ट्र और देश की कठिन से कठिन परिस्थिति मे भी उर्दू के सिवा कुछ नही दिखाई देता। चीन पाकिस्तान का भारत पर आक्रमण हो या अन्न का सकट हो, मुद्रा का अवमूल्यन हो या देश का कोई भाग अकाल ग्रस्त हो जाय, इन्हे केवल एकही चीज नजर आती रही और वह है उर्दू। इन लोगों के सौभाग्य से कुछ उदारमना हिन्दू परिवार भी ऐसे मिल गये जो निजाम के समय की नमक हलाली को अदा करने के लिए मैदान मे आ गये। एक सक्सेना परिवार और कीर्ति के भूखे एक रेड्डी एम०एल०ए० तथा एक बेरोजगार श्रीवास्तव रात-दिन अपनी ऊंट पटांग बयानबाजी से उर्दू को इस रूप में प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया कि वह एक पद दलित और अन्याय से पीड़ित भाषा है, उसे कांग्रेसी हुकूमत कुचल रही है। इस मोर्चे ने अन्ततः अपना रंग जमाया और उर्दू को, जो विधानानुसार कभी भी अल्पसंख्यकों की भाषा नहीं बन सकती, आन्ध्र मे तेलुगु के बाद महत्वपूर्ण भाषा बना दिया। आन्ध्र में मुसलमान केवल ७.८ प्रतिशत हैं। मुगलकाल के सैयद बन्धुओ की भान्ति आन्ध्र के दो वर्तमान मुस्लिम सज्जनो ने यहां ऐसा प्रभाव जमाया और मुख्यमन्त्री के स्वागत-समारोह का ऐसा जादू चलाया कि आन्ध्र और कांग्रेस के भाग्य निर्माता अपने आपको धन्य समझ बैठे।

मजलिस मुशावरत और मजलिस जमियतुल-उलमा यद्यपि दोनो पृथक दीखते हैं, पर दोनों राष्ट्रीय मोर्चे से केवल मुस्लिम हित को सुरक्षित करने तथा मुसलमानो को पीडित सिद्ध करके उन्हे सदैव 'न्याय' दिलाने की चिन्ता मे रहते हैं। मजलिस मुशावरत के सम्मानित (आनरेरी) प्रचारक प० सुन्दरलाल (जिन्हें हैदराबाद में मौलवी खूबसूरत लाल के नाम से याद करते हैं) जब मजलिस मुशावरत के मच से खड़े रहकर मुसलमानों के दुःख-दर्द का रो-रोकर आखों से आसू बहाते हैं, (भाषणों मे आसू बहाने मे पडित जी बहुत माहिर हैं) तो उसकी निरन्तर प्रतिध्वनि पाकिस्तान रेडियो से होती रहती है। मजलिस इत्तेहादुलमुसलमीन और मुस्लिम लीग तो रात-दिन विष-वमन करते रहते हैं। इन सभी मोर्चों का परिणाम अब प्रकट होने लग गया है।

मुसलमानों को विभिन्न पृथक संरक्षण

जिस कांग्रेस ने पृथक चुनावों और पृथक सुरक्षित मुस्लिम सीटों का अंग्रेजों के काल में विरोध किया, उसी कांग्रेस के राज में मुसलमानों को पृथक स्कालरशिप, पृथक छुट्टिया और पृथक सुविधाएं दी जा रही हैं। आन्ध्र प्रदेश एज्युकेशनल रूल्स (प्रकाशित १९६६) पृ० ७९ आर्टिकल १३४ मे 'Holidays and Vacations' शीर्षक से घोषित किया गया है कि 'उर्दू माध्यम के स्कूलों में साप्ताहिक छुट्टी रविवार के स्थान पर शुक्रवार को दी जा सकती है।' (In all Urdu Schools Friday may be a whole holiday instead of Sunday.) इसी प्रकार मोहर्रम और बकरीद की सामान्य रूप से सरकारी स्कूलों और कार्यालयों को एक-एक दिन की छुट्टी दी जाती थी। किन्तु उपर्युक्त धारा १३४ में घोषणा की गयी है कि उर्दू माध्यम के स्कूलों को मोहर्रम की दस दिन और बकरीद की चार दिन छुट्टियां दी जाएं। इसके अतिरिक्त उर्दू स्कूलों कौर अन्य स्कूलों की छुट्टिया सर्वथा पृथक की गयी हैं। निजाम हैदराबाद के राज्य मे इन छुट्टियों का पहले यही क्रम था, किन्तु बाद में उन्होंने भी मोहर्रम की छुट्टिया कम कर दी थीं। किन्तु आन्ध्र की यह कांग्रेसी हुकूमत श्री के० ब्रह्मानन्द रेड्डी के मुख्यमन्त्री काल में निजाम से भी अधिक मुस्लिम-पोषक बन गयी है। शायद भावनात्मक एकता के लिए यह पृथक करण आन्ध्र सरकार की दृष्टि में आवश्यक है।

शहर में साम्प्रदायिक संघर्षों का सिलसिला

आन्ध्र के गृहमन्त्री एक मुसलमान हैं। उनकी ख्याति उनकी राष्ट्रीय विचारधारा के कारण बहुत हैं। किन्तु उनके काल मे तीन बातें स्पष्ट रूप से दीख रही हैं। शहर में नयी-नयी दरगाहें कबरें और भग्न प्राय मस्जिदें तेजी से उभर रही हैं। शहरके बीचों-बीच स्थित नोबत पहाड़ पर जहां बिडला प्रतिष्ठान की ओर से एक मन्दिर बनाने के लिए भूमि ले ली गई है वहीं रातोरात एक कबर फफोले की तरह उभर गयी। उपर्युक्त मुस्लिम गृहमन्त्री के कार्यकाल का दूसरा कारनामा जो स्पष्ट रूप से दीख रहा है, वह है पुलिस के जवानों में मुसलमानों की बे-हिसाब भरती। इसका परिणाम यह होता है कि शहर के किस प्रकार के प्रदर्शन में अनिवार्य रूप से पुलिस के सामने सरकारी बिजली के गोलों की तोड़-फोड़ और बाजार में हिन्दुओं की दूकानों के शीशों की तोड़-फोड़ होती है। अगस्त १९६५ में विद्यार्थियों की एक हड़ताल में आबिद रोड के प्रमुख बाजार में हिन्दुओं की सभी दुकानों के शीशे तोड़े गये, किन्तु किसी भी

मुस्लिम दुकान को धक्का नहीं लगा। तीसरी बात साम्प्रदायिक संघर्ष। इन समय पिछले एकमास में हैदराबाद शहर में लगभग एक दर्जन साम्प्रदायिक झगड़े हो चुकी हैं। आये दिन मुहल्लों में छुरे बाजी होती रहती है और प्राय: सभी घटनाओं में आक्रमक मुसलमान और आहत हिन्दू होता है। सड़कों चौराहों पर गाइयों को मारकर फेंकने की भी एक से अधिक घटनाएं हो चुकी हैं। शहरके अंग्रेजी और तेलगु पत्र इस ओर से मौन रहते हैं और उर्दू पत्र ऐसी घटनाओं को रगकर ऐसे ढग से प्रकाशित करते हैं कि जिनमे मुस्लिम ही दलित नजर आयें। किन्तु एक विशेष संयोग ऐसा भी होता है कि स्थानीय अखबारों से पूर्व पाकिस्तानी रेडियो से ऐसी घटनाओं का मुस्लिम हित के अनुरूप प्रसारण हो जाता है। इन संघर्षों के बाद जो पकड़-धकड़ होती है उसका अभिनय बड़ा दिलचस्प होता है। कुछ हिन्दू और कुछ मुस्लिम पकड़े जाते हैं। फिर दोनों ओर के राजनैतिक नेता मैदान में आते हैं और सुलह-समझौते की भाषा करके आक्रमक मुसलमानों और घायल हिन्दुओं को छुड़ा देते हैं।

मुसलमानों को पृथक स्कालरशिप

शिक्षा विभाग के एक बड़े अधिकारी श्री एम० एम० बेग के हस्ताक्षर से एक सर्क्यूलर जारी हुआ। जिसमें छात्रों को कुछ मेरिट स्कालरशिप दिये जाने की घोषणा थी। उनमें दो स्कालशिप विशेष रूप से मुसलमानो के लिए सुरक्षित रखे गये हैं। डी० पी० आई० की प्रोसिडिंग स० ३७८/Jii-३/६५ दिनाक १३-९-६५ के ये शब्द ध्यान देने योग्य हैं।

"To award the general merit scholarships twenty-seven in number and the reserved scholarships for Muslim students three in number ... ."

अभी स्थानीय उर्दू अखबार 'मिलाप' दैनिक के ९ जुलाई ६६ के अंक में एक मांग की गयी है कि मुसलमानों के (३०) 'तबकों' (वर्गों) को मुस्लिम बैकवर्ड समझा जाये और बैकवर्ड क्लास की सूची में उन्हे सम्मिलित कर लिया जाये तथा बैकवर्ड की सभी सुविधायें उन्हें दी जायें। सरकार की ओर से इससे पूर्व यह घोषणा निकल चुकी है कि यदि कोई हरिजन ईसाई बन जाये तो उसको शेड्यूल्डकास्ट की सभी सुविधायें और स्कालरशिप दिये जायेंगे। जब मुसलमानों के (३०) वर्गों को बैंकवर्ड मान लिया जायगा तो उन (३०) वर्गों में सभी मुस्लिम जनता आ जाएगी। इसके लिये एक आल इण्डिया मुस्लिम बैकवर्ड क्लासेस फिडरेशन बन गयी है। उसकी आन्ध्र शाखा ने ब्रह्मानन्द रेड्डी की हुकूमत को एक मेमोरेण्डम दिया है। हमारी समझ मे यह नहीं आ रहा है कि अब मुसलमानों को किस चीज की कमी है। आबादी के अनुपात से अधिक चुनाव टिकिट मिल रहे हैं, सरकारी नौकरियां दी जारही हैं, सरकारी स्कालरशिप मिल रहे हैं। शिक्षा विभाग ने ६५-६६ के शैक्षणिक वर्ष मे हैदराबाद और सिकन्दराबाद के हाईस्कूल और कालेजों में स्वीकृत सरकारी स्कालरशिप की श्री गियासोद्दिन अहमद डी०ई०ओ० के हस्ताक्षर से एक सूची प्रकाशित की है। डी०पी०आई० की प्रोसीडिंग स० ४५।L।६५ दिनांक ४-१-६६ की इस सूची के अनुसार दोनो शहरों में ३६३ छात्र-छात्राओं को ये मेरिट स्कालरशिप मिले हैं। इनमें से १८६ स्कालरशिप मुसलमानों को मिले हैं। शेष में कुछ ईसाई हैं और बाकी स्कालरशिप हिन्दू छात्रो को मिले हैं। बहुसंख्यक हिन्दू स्कालरशिप लेने में अल्प सख्यक बन गये है। और ७८ प्रतिशत मुसलमान स्कालरशिप लेने मे ५९ प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त आन्ध्र प्रदेश एज्यूकेशनल रूल्स (प्रकाशित १९६६) की धारा २१९ के पृष्ठ १२२ पर बी १११ में भी ऐसे सभी मुसलमान लड़को को आधी फीस की सुविधा दी गयी है, जिनके माता-पिता या पालको की वार्षिक आय रु० ३०००) से अधिक न हो। इस आय वाले हिन्दू छात्र भी हो सकते हैं, किन्तु वे इससे लाभान्वित नहीं हो सकते।

हैदराबाद शहर में ईरानी होटलों का जाल

इधर कुछ वर्षों से शहर के हर छोटे-बड़े चौराहे पर ईरानी होटलों का जाल सा बिछता जा रहा है। ये केवल होटल नहीं, प्रातः ६ से रात के १२-१ बजने तक मुस्लिम क्लब बने रहते है, जहा शहर के हर वर्ग के मुसलमानो का जमघट रहता हैं। अभी विद्या नगर में जो साम्प्रदायिक झड़प हुई उसमें ऐसी ही एक ईरानी होटल से सोड़े की बोतलो का खुला प्रयोग किया गया। ये ईरानी होटलें किसी भी दिन शहर में भीषण स्थिति पैदा कर सकती हैं।

इस प्रकार आन्ध्र की इस राजधानी में बहुत भयंकर मुस्लिम साम्प्रदायिकता सिर उठा रही है। इसमें बहुत अधिक जिम्मेदार यहां की हुकूमत है, और जिसको मुख्यमन्त्री (जो सयोग से ईसाई हैं) बहुत हवा दे रहे हैं। भावात्मक एकता पैदा करने के इस युग में मुसलमानों में पृथकवादिता को बड़े जोर से उभारा जा रहा है।

आर्य नेताओं का स्वागत

नई दिल्ली १२ जुलाई। आज सायकाल ४ बजे सभा के कार्यालय महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली में आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफीका के मन्त्री श्रीयुत चन्द्रप्रकाश जी गुप्त, आर्यसमाज के अनन्य भक्त सुप्रसिद्ध व्यवसायी एव दानी श्री सेठ रुलियाराम जी (कलकत्ता) पुराने हैदराबाद राज्य तथा महाराष्ट्र मे आर्यसमाज की प्रगतियों के प्राण वयोवृद्ध श्री डा० डी० आर० दास वानप्रस्थी जी का भव्य स्वागत किया गया। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपालजी शालवाले ने अतिथि महानुभावों का संक्षेप में परिचय दिया और सभा के कोषाध्यक्ष श्री बालमुकन्द जी आहूजा ने फूल मालाएं भेंट कीं। सभा मन्त्री जी ने उपस्थित महानुभावों का भी परिचय दिया।

इस अवसर पर सभा मन्त्री ने सार्वदेशिक सभा की प्रगतियों का संक्षिप्त परिचय देकर ईसाइयों की अराष्ट्रीय गतिविधियों को रोकने के लिए सभा के प्रयासो का वर्णन किया।

श्री चन्द्रप्रकाश जी ने ईस्ट अफीका विशेषत: अफीकनों में हो रहे सुधार एव प्रचार कार्य पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला और सार्वदेशिक सभा को अपनी प्रगतियों के प्रसार में आर्थिक सहयोग का भी वचन दिया। उन्होंने सार्वदेशिक सभा की ओर से निकलने वाले अंग्रेजी मासिक पत्र की १००० प्रतियां प्रतिमास मंगाने का आश्वासन दिया।

स्वागत समारोह में दिल्ली के चुने हुए आर्य महानुभावों ने भाग लिया जिसमे सर्वश्री मेधानन्द जी सरस्वती, आचार्य कृष्ण जी, आचार्य विश्वश्रवा: जी, ओम्प्रकाश जी त्यागी, शिवचन्द्र जी, लाला मेलाराम जी ठेकेदार, मनोहरलाल बगई ऐडवोकेट, सोमनाथ जी मरवाहा ऐडवोकेट, नवनीतलाल जी ऐडवोकेट सुप्रीम कोर्ट, वी० पी० जोशी ऐडवोकेट, पं० क्षितीशकुमार जी वेदालकार, मनोहर जी विद्यालकार वेदव्रत जी स्नातक सत्यदेव जी शर्मा, श्रीमती पुष्पापुरी श्री डा० जी० यल० दत्ता, वैद्य प्रहलाद दत्त जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

वियतनाम में आत्माहुतियां क्यों?

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक

दक्षिणी वियतनाम में बौद्ध भिक्षुओं ने वहां की वर्तमान सरकार को अपदस्थ करने के लिए संघर्ष छेड़ा हुआ है जिसका नेतृत्व थिचट्रीकांग करते हैं। सन् १९६३ में भी इसी प्रकार का आन्दोलन किया गया था कई बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों ने अपने को अग्नि की भेंट करके आन्दोलन को प्रबल एवं व्यापक रूप दिया था जिसके फलस्वरूप डिन्ह डीम्स की सरकार अपदस्थ हो गई थी। इस बार भी आत्माहुतियों का आश्रय लिया गया है। बौद्ध नेता ने हयूनगर मे आमरण अनशन भी किया। परन्तु १३ दिन के अनशन के बाद वे गिरफ्तार कर लिये गए। सुलह समझौते की बात चली और आन्दोलन कुछ समय के लिए स्थगित हो गया है। यदि ऐसा न होता तो आन्दोलन के एक भयकर मोड़ ले लेने की आशंका थी।

वास्तविक कारण

वियतनाम में बौद्धों की संख्या ८० प्रतिशतक और ईसाइयों की १० प्रतिशतक है फिर भी शासन पर ईसाइयों का प्रभुत्व है। पहले ईसाइयों की पीठ पर फ्रांस था अब अमेरिका है जिसके प्रति बौद्धों को इस समय रोष है। अमेरिका को सन्देह है कि बौद्ध नेता भीतर से कम्यूनिस्टों से मिले हुए हैं। बौद्ध लोग वर्तमान ईसाई सरकार को अवैधानिक एवं भ्रष्ट बताकर उसको भग कराने के लिए सक्रिय है। उन्हें अल्प संख्यक ईसाइयों का प्रभुत्व असह्य प्रतीत होता है और यही संघर्ष का आन्तरिक कारण है। वियतनाम में ईसाई साम्राज्य की स्थापना के लिए ईसाई मिशन ने उन्हीं गर्हित हथकडों से काम लिया जिनको वे अन्यत्र प्रयुक्त करते रहे हैं अर्थात् पहले बाइबिल भेजा जाता है इसके बाद व्यवसाय और अन्त में युद्ध द्वारा औपनिवेशिक राज्य की स्थापना कर दी जाती है।

ईसाई पादरियों का १७वीं शती में वियतनाम में प्रवेश हुआ और इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक लगभग ३ लाख व्यक्ति ईसाई बना दिए गए थे। उन्होंने चीनी वर्णमाला के स्थान मे रोमन वर्णमाला प्रचलित की। इसीमें ग्रन्थों का प्रकाशन आरम्भ हुआ। स्थानीय शासकों ने प्रारम्भ में ईसाई पादरियों को सहन किया और व्यापारियों को प्रोत्साहित भी किया जो बदले में बन्दूकें घड़ियां और पश्चिम की अन्य अद्भुत वस्तुएं उन्हें प्रदान करते थे। ईसाइयत की प्रवृत्तियों के व्यापक और आपत्तिजनक हो जाने पर बाद के शासकों की नींद टूटी और उन्होंने ईसाई पादरियों के विरुद्ध कठोर रुख अपनाया। उन्होंने ईसाइयत को ग्रहण करना मृत्युदण्ड योग्य अपराध ठहराया। इसके कारण १९ वीं शती के पूर्वार्द्ध में लगभग ५० हजार ईसाई मौत के घाट उतारे गए। यही समय था जबकि तलवारें वियतनाम में पहुंच गईं और फ्रांस ने रक्तपात करके अपना औपनिवेशिक प्रभुत्व स्थापित कर दिया। कहा यह गया कि यह सब कुछ धर्म्म रक्षार्थ किया गया है। इस विजय और प्रभुत्व के फलस्वरूप ईसाइयत का डूबा हुआ सितारा पुनः चमक गया। ईसाई चर्च ने चाय के सस्थान हथिया लिए। रबड़के उत्पादन पर एकाधिकार कर लिया, लकड़ी के व्यापार में अनेक रिआयतें प्राप्त कर लीं तथा ईसाई लोग अन्य अनेक जायदादोंके मालिक बन बैठे। सिविल सर्विस मे उनका बाहुल्य हुआ। गांव २ और कस्बे २ में चर्च खड़े किए गए और राज्य के तीन चौथाई प्राइमरी स्कूल अपने अधिकार में ले लिए गए।

बौद्धों की प्रगतिया कुंठित एवं नियन्त्रित की गईं। मन्दिरों का निर्माण रोका गया और बौद्ध भिक्षुओं की संख्या सीमित कर दी गई। इस सबके फलस्वरूप वियतनाम में बौद्धमत प्रभावहीन हो गया।

पुनरुज्जीवन

१९३० में चीन में बौद्धमत के सुधार का आन्दोलन चला। उससे प्रभावित होकर बौद्ध भिक्षुओं ने वियतनाम में बौद्धमत के पुनरुज्जीवन का बीड़ा उठाया। उन्होंने प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए, बौद्ध साहित्य तय्यार किया और प्रचार का विधिवत प्रबन्ध किया। उन्होंने सबसे महत्व पूर्ण कार्य यह किया कि बौद्धमत मे व्याप्त अन्ध विश्वासों एव तर्क विहीन बातों को हटाकर उसे विशुद्ध रूप प्रदान किया।

ब्रह्मदेश और लंका के आन्दोलनों से प्रकाश ग्रहण करके वियतनाम के जन सामान्य ने शिक्षा और जन-कल्याण के कार्यों पर विशेष ध्यान दिया। विद्यार्थियो के क्लब स्थापित किए गए। बाय स्काउटों की टोलियां बनाई गईं, वीरागना दल संगठित किए गए, पारिवारिक संस्थानों का निर्माण किया गया और धर्म्म मन्दिर उपासना गृहों के साथ २ सामाजिक प्रगतियों के केन्द्र-स्थल बनाए गए। बौद्ध भिक्षुओ ने ग्रामों मे जा जाकर प्रचार किया। ग्रामों और कस्बों के सगठनों को जिलों के, जिलों के सगठनों को प्रान्तों के और प्रान्तों के सगठनों को केन्द्रीय राष्ट्रीय सगठन के साथ सम्बद्ध किया।

दमन चक्र

वियतनाम की ईसाई सरकार बौद्धों की इस जागृति को सशक दृष्टि से देखती रही। उसे इसमें राजनैतिकता की गन्ध आई। मई १९६३ में बौद्धों के ऊपर जब कि वे बुद्ध-जयन्ती मना रहे थे, गोली वर्षा करके सरकार ने अपने सन्देह की अभिव्यक्ति कर दी। यह गोली वर्षा और दमनचक्र डीम बन्धुओं की सरकार के पतन का कारण बना। उस समय बौद्धों के पक्ष मे सेना थी, बौद्ध आन्दोलन अधिक प्रबल था और अमेरिका की सहानुभूति आन्दोलन कारियों के साथ थी। परन्तु अब यह बात नहीं है। शहरी जनता वर्तमान सरकार को अयोग्य तो समझती है परन्तु तानाशाही नहीं समझती।

समझौते का प्रयास

सरकार और बौद्ध आन्दोलन कारियों के मध्य समझौते का प्रयास हो रहा है जिसमें अमेरिका को मुख्य पार्ट अदा करना है। परन्तु ह्यू के आर्क विशप की इस घोषणा से कि वियतनाम में कथोलिक मत को विशिष्ट स्थान प्राप्त रहाहै और रहेगा जले पर नमक का काम किया है। हो सकता है समझौते के यत्न सफल न हो। एक और ईसाई चर्च के प्रभुत्व को बनाए रखने की योजना है और दूसरी ओर उसे समाप्त करने का संगठित प्रयास है। इन दोनों का सघर्ष ही वियतनाम मे बौद्धों एव ईसाइयों का मुख्य सघर्ष है।

आर्य समाज-परिचयांक

कब प्रकाशित होगा

भारत और भारत से बाहर चार हजार से अधिक आर्य समाजें हैं। लाखों सदस्य हैं। करोड़ों रुपया व्यय करते हैं।

किन्तु सर्व साधारण को पता नहीं! इसमें आर्यसमाज की सदस्य संख्या, आय-व्यय, मन्त्री का चित्र और प्रधान का नाम इस अङ्क में देंगे

हजारों मन्त्रियों के चित्रों सहित यह विशेषांक आर्य जगत् का दर्शनीय अङ्क होगा।

इसका मूल्य केवल १)१० पैसा होगा

अभी तक हमारे पास लगभग ७०० आर्य संस्थाओं का वर्णन, मन्त्रियों के चित्र और धन आ चुका है। इस अंक में हम आर्य जगत् का पूरा दिग्दर्शन कराना चाहते हैं वह तभी होगा जब सभी आर्य संस्थाएं अपनी सामग्री भेज देंगी। हमारी हार्दिक इच्छा है कि चाहे देर हो जाय किन्तु होना चाहिए सर्वांग सम्पन्न। एक बार फिर हम सारे देश और विदेश की आर्य संस्थाओं को पत्र भेज रहे हैं। फिर उनके उत्तर की प्रतीक्षा के पश्चात् प्रकाशित करेंगे। आशा है आप भी इसे पसंद करेंगे।

—प्रबन्धक

क्या आर्यसमाज का मन्त्री गैर आर्यसमाजी हो सकता है ?

महोदय,

मैं आपके सम्मानित और लोकप्रिय पत्र द्वारा आर्य जगत का ध्यान निम्नलिखित ज्वलन्त समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूं।

१९ वीं शताब्दी में आर्य समाज पहला सामाजिक सगठन है जिसे प्रजातान्त्रिक प्रणाली पर किया गया इसमें वयस्क मताधिकार प्रणाली को प्रोत्साहित किया गया। यह सर्व विदित है कि आर्य समाज एक विशुद्ध धार्मिक सस्था है, जिसकी मान्यताए वेद और वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित है। यह उन सस्थाओं के समान नहीं है, जिनका कोई तात्कालिक उद्देश्य होता है। ऐसी तात्कालिक उद्देश्य पूर्ण संस्थाएं अपने उद्देश्य की पूर्ति के पश्चात् मृतप्रायः हो जाती हैं। यद्यपि इन तात्कालिक सस्थाओं का विधान एवं गठन भी प्रजातन्त्रात्मक पद्धति पर होता है। परन्तु आर्य समाज को देश और काल की परिधि में नहीं बांधा जा सकता। आर्य समाज एक आन्दोलन है, जो चित्र पूजा के स्थान पर चरित्र पूजा और हाड़ मांस के मनुष्य को श्रेष्ठ मानव बनाने तथा उसे ससार मे सभ्यता पूर्वक रहने का ज्ञान सिखाता हैं। इस प्रकार आर्य समाज निरन्तर आगे बढने वाली सस्था और आन्दोलन है।

हमें अभी अभी एक दुःखद और आश्चर्य से भरा एक समाचार मिला है। एक आर्य समाज का वार्षिक निर्वाचन हुआ हैं और उसमे वयस्क मतदान प्रणा-ी तथा निर्धारित अवधि तक का चन्दा जमा कर देने वालों ने मतदान किया। इस मतदान और निर्वाचन का यह कुपरिणाम निकला कि आर्य समाज के मन्त्रिपद पर एक गैर आर्य समाजी महाशय निर्वाचित हो गये। यह निर्वाचन देखकर आर्य समाजी अचम्भित हो गये और वे मन ही मन क्लान्त से हो रहे हैं।

सविधान की दृष्टि से उसकी पवित्रता में सन्देह नहीं किया जा सकता। मतदाताओं के आधार पर निर्वाचित व्यक्ति के निर्वाचन पर सन्देह नहीं किया जा सकता। परन्तु आर्यसमाज के समान सार्वभौमिक धार्मिक संस्था के पद पर एक ऐसे व्यक्ति का निर्वाचित होना, जिसे न तो वैदिक सिद्धान्तों का ही ज्ञान है और न उसके कार्यक्रमों का ही। वर्ष दो वर्ष निरन्तर चन्दा देने पर या वर्ष के कुछ साप्ताहिक अधिवेशनों में उपस्थित हो जाने मात्र से क्या कोई व्यक्ति आर्यसमाज के मन्त्री पद के योग्य हो जाता है? यदि नहीं, तो क्या हमने आर्य समाजी की कुछ निश्चित परिभाषा की है?

कोई व्यक्ति आर्य समाजी है। यह उसकी प्रकृति (नेचर), व्यवहार स्वभाव और क्रिया कलापों से अनुभव होता है। आर्यसमाजी एक भावात्मक गुण है, इसे अनुभव किया जाता है, इसे हाथ में न तो पकड़ा जा सकता है और न दिखाया ही जा सकता है।

ऐसी स्थिति में आर्य समाज के व्यक्तियों के सम्मुख यह प्रश्न उपस्थित होता है कि निर्वाचन के नाम पर क्या कोई गैर आर्य समाजी केवल वर्ष-दो-वर्ष का चन्दा मात्र दे देने से आर्य समाज के मन्त्री पद के निर्वाचन के लिए सक्षम हो सकता है? हमारी सम्मति से यह कदापि सम्भव नही है। परन्तु यदि केवल अपने विरोधियों को पछाड़ने तथा उन्हें अपनी तिकड़म बाजी की कला बताने के लिए यह सब कुछ किया जाता है तो फिर आर्य समाज और तात्कालिक संस्थाओं में कोई अन्तर नही रह जाता।

परन्तु जो लोग ऋषि दयानन्द के मिशन को बढ़ाना चाहते हैं, जिन्हें ईश्वर, वेद और वैदिक धर्म में अटूट श्रद्धा है, वे इस घटना को बड़ी भारी दुर्घटना मानते हैं। आर्य समाज का प्रत्येक शुभचिन्तक ऐसे निर्वाचनो को आर्य समाज के उद्देश्य को पूर्ण करने में सब से बड़ी बाधा मानता है। यह एक अस्वस्थ लक्षण है।

क्या आर्य जगत के विद्वान् इस समस्या के हल के लिए कोई वैधानिक उपाय बतायेंगे, ताकि भविष्य में ऐसी दुर्घटना पुन जन्म न लेने पावे?

इन्दौर —मनुदेव "अभय"

सेंसर बोर्ड के अधिकारियों द्वारा भारत की ४६ करोड़ जनता के साथ खिलवाड़

भारत में बढ़ती हुई चरित्र-हीनता गुण्डागर्दी, एव बलातकार, अपहरण, आदि की गाथाएं आजकल चर्चा का विषय बनी हुई हैं, परन्तु इसके कारण की तरफ कभी किसी ने ध्यान नहीं दिया है, इसका एक मात्र कारण है, "अश्लील चल चित्र" बिनोबा के सिद्धान्तों का जनाजा निकालने वाला सैंसरबोर्ड के अधिकारी देश के करोड़ों लोगों के जन जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

अभी-अभी मेरी निगाह फिल्म "बदतमीज" के पोस्टरों की तरफ पड़ी मेरे दिल में यही ख्याल आया कि ऐसे अश्लील चित्रों को पास कराने वाला सेंसर बोर्ड भी किसी बदतमीज से कम नहीं हैं।

सेंसर बोर्ड द्वारा पास किये गये चित्र में जितनी अश्लीलता पाई जाती हैं, वह तो फिल्म के अन्दर ही रह जाती है। परन्तु बाहर के आकर्षक अश्लील चित्रों के द्वारा जो पब्लिसिटी की जाती है। वह मनुष्य को पतन के मार्ग पर ले आने के लिए काफी हैं। इसके पूर्व भी इन्दौर में अश्लील चित्रों के विरुद्ध आन्दोलन चलाया गयाथा वहां की महिलाओं व बच्चों ने भी साथ दिया था। परन्तु बिनोबा भावे भी अपने स्थान पर है, और महिलाएं और बच्चे उनके स्थान पर हैं।

अब हम यह जानना चाहेंगे कि बिनोबा भावे का आन्दोलन सिर्फ एक ही अश्लील चित्र लम्बे हाथ के पोस्टरों मे था। क्या उनके इस आन्दोलन में समाप्त होने के पश्चात् देश में अश्लील चित्रों के साथ "अश्लीलता" का जनाजा निकल गया यदि नहीं तो विनोबा भावे की वाणी को लकवा क्यों मार गया है। नगर के चौराहों पर लगने वाले अश्लील बोर्ड, जिन्हें स्कूल में जाने वाली छात्राएं देखती हैं, तो उनकी गर्दन शर्म से नीचे झुक जाती है। वे अश्लील चलचित्र —

लाखों मनुष्यों के हृदय में वासना रूपी जहर घोलने के लिए काफी है!

विदेशों मे बनने वाली फिल्म "आदम और हुवा" जो कि अग्रेजी में बनने वाली है जिसमें आदमी और औरतों को पूर्णतः नग्न दिखाया जायेगा। वह यदि भारत मे प्रदर्शित हुई तो लोगों पर असर क्या होगा। और उसके पोस्टर किस प्रकार होंगे, आप स्वयं ही कल्पना कर सकते हैं। क्या वह नौनिहालों, तरुण, युवक-युवतियों को चारित्रिक पतन की ओर अग्रसर नहीं करेंगी?

फिल्मों की बदोलत ही देश-चरित्र हीनता के पथ पर अग्रसर है।

जब कि पाश्चात्य लोग भारतीय सभ्यता को—सस्कृति को अपनाने मे अपना गौरव समझते हैं। वहीं भारत में पश्चात्य सभ्यता का जोर बढता जा रहा है। आजकल तो इन्हीं फिल्मों की बदोलत महिलाओं के वस्त्र गले से आकर सीने तक उतर आये हैं, तथा वस्त्रों का पहनावा इस प्रकार का हो गया है कि उसमें से शरीर के अवयव तक झांकने लगते हैं। मानो कि यह उन्होंने अपने शरीर को ढककर या ढकने के, लिए ही नहीं बल्कि शरीर के प्रदर्शन के लिए हैं। इन्हीं वस्त्रों को पहनकर जब नारिया सड़कों पर चलती हैं, तब वह चारों ओर यही देखती जाती हैं कि हमारी तरफ कोई देख रहा है या नहीं? मानो कि वह ड्रेस नहीं पहने अपने शरीर का, प्रदर्शन कर रही हैं।

देश में बढ़ते हुए रोमांस,अपहरण बलात्कार, व लड़कियों के भागने के समाचार इन्हीं की देन हैं।

सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने के लिये बिनोबा भावे का इन्दौर में अश्लील चित्रों के विरुद्ध आन्दोलन भी आंधी की तरह आया और तूफान की तरह चला गया। फिल्म में बढती हुई अश्लीलता का अनुमान आप ही कर सकते हैं यदि सेंसर बोर्ड का बस चले तो वह एक दिन भारतीय फिल्मों में भी अभिनेत्रियों के नग्न पौज पास करके भारत मे महिलाओं को नग्न करायेंगे। क्योंकि यहकटु सत्य है कि फिल्मों मे जिस प्रकार के वस्त्र पहन कर अभिनेता व अभिनेत्रिया प्रदर्शित की जाती हैं।

उसी प्रकार की महिलाएं वस्त्र पहनती हैं। बड़े-बड़े शहरों में तो महिलाएं अपने साथ दर्जियों को इसी उद्देश्य से सिनेमा दिखाने ले जाती हैं, कि वह अभिनेत्रियों के वस्त्रों के डिजाइन देखें व इस प्रकार के वस्त्र सी करदें। —ओम्प्रकाश आर्य विकल उज्जैन

Suave
in
a
Suit

मेवात (गुड़गावां) में मुस्लिम गुण्डों के उत्पात पंजाब सरकार ध्यान दें

ता० २-७-६६ को ग्राम साकरस त० फिरोजपुर झिरका के गवर्नमेंट स्कूल मे स्कूल टीचरों ने स्कूल टाईम में विद्यार्थी त्रिलोकचन्द तथा ओमचन्द की हिन्दू धर्म की मजाक उड़ाते हुये दोनों बच्चों की चोटीयां काट डाली और जब ग्राम निवासी शिकायतन मास्टरों पर गये तो वे बदतमीजी से पेश आये। इसकी सूचना हमने D. E. O. गुड़गांवा B E. O. फिरोजपुर झिरका तथा गवर्नर पंजाब को भेज दी है।

ता० १८-७-६६ को ग्राम नुह (गुड़गांवा) मे एक हिन्दू श्री ग्यासीराम S:O श्री ननूराम को छ: मुस्लिम गुण्डो ने दिन दहाड़े सरे बाजार लाठीयों से मार-पीटकर मारने में सफल हो गये ग्यासी की हालत बड़ी गम्भीर चल रही है गुड़गांवा हस्पताल मे दाखिल है। मारपीट करने का कारण यह था कि कुछ दिन पहले यही छ मुस्लिम गुण्डे जो कि ग्राम सालाहेड़ी थाना नूह के रहने वाले थे नूह ग्राम में चोरी करने आये थे जिनको इसी ग्यासी राम ने पहिचान लिया तथा थाने मे उनका नाम बतला दिया उसी रंजिश को निकालने के लिये उन गुण्डों ने अचानक उक्त केस कर डाला मुकामी पुलिस तथा जिला अधिकारी की कार्यवाही सन्तोषजनक न होने के कारण ता० २०-७-६६ को नूह में मुकम्मल हड़ताल रही। ग्राम निवासियों ने अपनी भावनाओं का प्रदर्शन पड़ताल करके किया इस कार्यवाही से हिन्दूओं मे बड़ा आतंक फैला हुआ है।

शुद्धि

१७-७-६६ को शिवाजी आर्यसमाज मन्दिर में १ मुसलमान लड़की डौरिसा खां और नागा लड़की लूसी को (जो सैनिक हस्पताल में कार्य करती हैं) शुद्ध कर वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। इस दीक्षा समारोह पर व नगर के गणमान्य प्रतिष्ठित व्यक्ति लगभग ७००-८०० उपस्थित थे। लाऊडस्पीकर का प्रबन्ध था। मुस्लिम महिला डौरिसा खां (सैकिण्ड लैफ्टीनैंट) की कर्नल चौधरी से तत्काल शादी की गई नाग लड़की की शादी अभी करना है।

अमरनाथ शास्त्री

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

उत्तम पुस्तक

महात्मा हंसराज ए-ट्रिब्यूट (अंग्रेजी में) लेखक और प्रकाशक प्रो० हीरालाल जी औसक एम० ए० (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दयानन्द कालेज शोलापुर) १६५।१२ मित्रनगर, बुधवार पेठ, शोलापुर मूल्य ३० पैसा।

प्रस्तुत पुस्तिका में त्यागमूर्ति श्री महात्मा हंसराजजी के जीवन की महान् झलक है। ऐसी उपादेय पुस्तिका का प्रचार होना ही चाहिए।

निर्वाचन

आर्यसमाज कलकत्ता (१९ विधान सरणी) के निर्वाचन में प्रधान श्री सुखदेव शर्मा, उपप्रधान श्री छबीलदास सैनी श्री रलियाराम गुप्त, मन्त्री श्री पूनमचन्द्र आर्य, उपमन्त्री श्रीश्यामकुमार राव, श्री अमरसिंह सैनी पुस्तकाध्यक्ष श्री दूधनाथ लाल, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द्र पोद्दार हिसाब परीक्षक श्री विष्णुदत्त जी, तथा अन्य अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए।

वेद कथा विशेषांक
१० प्रति केवल ६) रुपये में

भारी सख्या में आर्य समाजों के आर्डर आ रहे हैं। आर्य समाजें अधिक से अधिक प्रति मगावें। वेद सप्ताह समाप्त होने पर धन भेजें। आर्य जनों को भी श्रावणी के पुण्य पर्व पर स्वसामर्थ्यानुसार अथवा ६) रुपये के १० अंक ही मगा कर अपने मित्रों, और संस्थाओं को भेंट करने चाहिये।

—सम्पादक

आर्यवीरदल शिक्षण शिविर हिन्डौन

आर्यसमाज हिन्डौन के तत्वावधान में सप्त दिवसीय जिला स्तरीय आर्य वीरदल शिक्षण शिविर का दिव्य आयोजन दि० १३-६-६६ तक पू० स्वामी नित्यानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

शिविरमें हिन्डौन बयाना, मासलपुर बयुरा के आठ वर्ष से १७ वर्ष तक की आयु के ४२ आर्य युवकों ने भाग लिया। शिविर का प्रारम्भ ता० १३ को यज्ञ तथा ध्वजारोहण के साथ बड़ी धूमधाम से हुआ इस शिविर में आर्य कुमारों को शारिरिक बौद्धिक नैतिक एव समाज सेवा सम्बन्धी शिक्षण दिया गया। जिसके मुख्य कार्यक्रम प्रार्थना हवन सध्या यज्ञ भजन प्रवचन व विचार गोष्ठी तथा विभिन्न विषयों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन आदि थे।

समस्त बालकों का उपनयन सस्कार कराया गया और उन्हें विभिन्न विषयों जैसे ब्रह्मचर्य का महत्व यज्ञोपवीत धर्म और सस्कारों का महत्व, विद्या प्राप्ति के साधन आर्य वीरदल के सगठन की आवश्यकता आदि विषयों पर भाषण और विचार गोष्ठी रखकर बौद्धिक शिक्षण दिया गया।

शिविर की मुख्य विशेषता यह रही कि स्वय सेवको को प्रातः जलपान मे दूध व मुनक्का व दोपहर को फलाहार का कार्यक्रम रखा गया। सभी को नि:शुल्क भोजन की व्यवस्था रखी गयी।

शिविर के अन्तिम दिवस ता० १९-६-६६ को आर्य वीरों ने लिखित में जीवन निर्माण सम्बन्धी व्रत लिये। जैसे २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन, सिनेमा न देखना, ताश न खेलना, माता-पिता के चरण स्पर्श करना, सन्ध्या करना, स्वाध्याय करना दैनिक व साप्ताहिक सत्संगों में भाग लेना, व्यायाम करना, दिनचर्या लिखना आत्म निरीक्षण आदि। सायकाल दो बजे से नगर कार्तन निकाला गया जिसमें सैकड़ों नर-नारियों ने भाग लिया।

नगर कीर्तन का दृश्य दर्शनीय था। मधुर जोशीले भजनों व वैदिक नारों से आकाश गूंज रहा था। सायकाल शिविर का समापन समारोह परम श्रद्धेय माननीय श्री इन्द्रमीढ जी आर्य वकील उप प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता में आयोजित किया गया जिससे स्वयंसेवकों को व्यायाम प्रदर्शन कविता भजन भाषण सकल्पगीत व शिविर का संक्षिप्त विवरण सुनाने का कार्य क्रम रखा गया। पुनः प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय जीतने वालों को पुरुस्कार दिये गये। श्रद्धेय अध्यक्ष महोदय ने अपने ओजपूर्ण शब्दों मे कहा कि आर्य वीर दल शिक्षण शिविर का महत्व उद्देश्य देश के भावी नागरिकों का निर्माण करना है ताकि वे आगे चलकर देश का कल्याण कर सकें। जनता का कर्त्तव्य है कि वे अपने बालको को आर्यवीर दल की शाखा में जाने की प्रेरणा करे।

अन्त मे श्री भाई प्रह्लाद कुमार जी ने सभी महात्माओं व विद्वानों व सहयोगी नर-नारियों को धन्यवाद करते हुए ध्वजावतरण व जय घोष के साथ कार्यक्रम समाप्त किया।

वृष्टि—यज्ञ

आर्य समाज खडवा की ओर से वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में श्री प० वीरसेन जी वेदश्रमी, श्री प० इन्द्रदेव जी शास्त्री श्री प० मदनमोहनजी शास्त्री तथा श्री स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती ने भाग लिया।

पूर्णाहुति के साथ ही बादलों की घोर गर्जना के साथ जोरदार वर्षा हुई। सभी विद्वानों के वैदिक यज्ञों के सम्बन्ध में प्रभाव पूर्ण भाषण हुए।

प्रमाण पत्र समारोह

आर्य समाज, जालना, में, स्वाध्याय मण्डल पारडी की संस्कृत परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों को श्री ओम्प्रकाशजी (प्रधान आर्यसमाज) ने प्रमाण पत्र प्रदान किये। केन्द्र व्यवस्थापक श्री गोपालदेव शास्त्री ने केन्द्र का कार्य विवरण प्रस्तुत किया।

श्री रामचन्द्र जी मन्त्री आर्यसमाज ने सबको धन्यवाद दिया।

आसाम में शुद्धि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के साहसी एव उत्साही कार्यकर्त्ता पंडित अमरनाथ जी शास्त्री ने ६-६-६६ को शिलांग में १०१ खसिया जाति के परिवारों की और ११ नागा नवयुवकों व ३ नागा युवतियों को जो ईसाई बन चुके थे उनको पुन: वैदिक धर्म मे दीक्षित् किया।

पहले वैदिक रीति से यज्ञ किया गया। यज्ञ पर उनको ११ बार गायत्री मन्त्र का जाप करवाया गया। शुद्धि संस्कार के पश्चात् खसिया जाति के शुद्ध लोगों ने १०१) रु० खासी जन्तिया हा० सै० स्कूल शिलांग के लिये ईसाइयों के दिये हुए पैसो में से दान दिया। २५) रु० श्री शास्त्री जी को दक्षिणा दी। श्री शास्त्री जी ने १०) रु० अपनी ओर से डाल कर मिठाई मगवा कर शुद्ध हुए परिवारों के बच्चों मे बांटी। वैदिक धर्म और भारत राष्ट्रीयता पर ३० मिन्ट का महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। बाद में भूतपूर्व Trivel Minister श्री महानसिंह जी ने खसिया जाति के इतिहास पर प्रकाश डाला। सभी शुद्ध होने वालों को धन्यवाद दिया। शान्ति पाठ के बाद प्रसाद वितरण हुआ।

वर्षा

आर्य समाज कायमगंज के तत्वावधान में नाज मंडी में महान यज्ञ हुआ। ईश्वर की कृपा से ऐसी वर्षा हुई कि जनता आनन्दित हो उठी।

अन्त्येष्टि संस्कार

आर्य समाज गया के पुरोहित श्री लखनलाल आर्य के पित: जी का अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। सभी आर्य समाजों के सदस्यो ने शोक प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की।

उत्सव

आर्य समाज जितौरा का वार्षिक उत्सव ससमारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पांच यज्ञोपवीत संस्कार हुए। प्रति दिन यज्ञ होता रहा।

चुनाव

आर्य समाज, कांधला (मुजफ्फर नगर) के निर्वाचनमें श्री हरीशचन्द्रजी सचदेव प्रधान, श्री मन्साराम चौधरी उपप्रधान, श्री त्रिलोकचन्द मन्त्री, श्री जादोराम गुप्त मन्त्री तथा श्री रामचन्द्र जी वैद्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज, मुरसान द्वार हाथरस के चुनाव में श्री श्रीराम पचौरी प्रधान, श्री ज्ञानेन्द्रकुमार आर्य मन्त्री श्री हरीओम्प्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष श्री फूलसिंह आर्य पुस्तकाध्यक्ष और श्री गिरिराज किशोर निरीक्षक चुने गए।

आसाम प्रचारार्थ

श्री स्वामी प्रकाशानन्द जी (स्वामी आनन्दगिरी) ने सार्वदेशिक सभा को अक्टूबर ६६ से आसाम में प्रचारार्थ समय देने की कृपा की है।

धन्यवाद।

विश्व कल्याण यज्ञ

वेद प्रचारक मंडल आगरा द्वारा श्री स्वामी आनन्दभिक्षु जी की अध्यक्षता मे विश्व कल्याण यज्ञ समारोह सम्पन्न हुआ। यज्ञ मे हजारों नर-नारियों ने भाग लिया।

शुद्धि

—आर्य समाज दार्जिलिंग के तत्वावधान मे श्री० बीणामणि राई नामक ईसाई महिला की शुद्धि श्री तिलकसिंह राई के प्रयत्न से उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुई।

कृपया ध्यान दें

१—ऐसे महानुभावों से प्रार्थना है—जिनकी सेवा में सार्वदेशिक पत्र बराबर भेजा जा रहा है कृपया वे अपना चन्दा भेजने में देर न करें।

२—कुछ ऐसे भी महानुभाव हैं जिनकी सेवा मे कई-कई प्रति जा रही हैं किन्तु अब तक उन्होंने धन नहीं भेजा और न कोई उत्तर ही देते हैं इससे व्यर्थ में सभा को आर्थिक हानि होती है। कृपया वे महानुभाव ध्यान दें।

३—कुछ सज्जनों ने अभी तक बलिदान अंक और बोधांक का धन नहीं भेजा। कृपया भेजें तथा सार्वदेशिक के साथ पूर्ण सहयोग करें।

—प्रबन्धक

देशवासी

७) रुपए भेजकर।

और विदेशी १ पौंड भेजकर

सार्वदेशिक के

ग्राहक बनें

सभा के तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

तीन मास तक भारी रियायत

नैट मूल्य

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २)५०
सत्यार्थप्रकाश २)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
व्यवहार भानु)२५
आर्यसमाज का इतिहास दो भाग ५)
आर्यसमाज प्रवेश पत्र १) सैकड़ा
ओ३म ध्वज २७×४० इन्च २)५०
" " ३६×५४ इन्च ४)५०
" " ४५×६७ इन्च ६)५०
कर्त्तव्य दर्पण)४०

२० प्रतिशत कमीशन

कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
मराठी सत्यार्थप्रकाश १)३७
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)
जीवन संघर्ष महाशय कृष्ण की जीवनी ५)

३३ प्रतिशत कमीशन

ऋषि दयानन्द स्वरचित लिखित वा कथित जन्म चरित्र)५०
राजधर्म (सत्यार्थप्रकाश से))५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७ केनोपनिषद्)५०
कठोपनिषद्)५० प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५ माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५ तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३) योग रहस्य १ २५
मृत्यु और परलोक १)
विद्यार्थी-जीवन रहस्य)६२

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
वदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
अभ्यास और वैराग्य १)६५
निज जीवन वृत्त वनिका (सजिल्द))७५
बाल जीवन सोपान १)२५

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म ६२

उपनिषद् कथामाला)२५
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार)२०
आदर्श गुरु शिष्य)२५
कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
पुरुष सूक्त)४०
भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १ ५०
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७ हमारे घर)६२
स्वर्ग में हड़ताल)३७
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)२५
वैदिक तत्व मीमांसा)२०
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
उत्तराखण्ड के वन-पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
वेद और विज्ञान)७०
इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)३५
कुरान में कुछ अति कठोर शब्द)५०
मेरी अबीसीनिया यात्रा)५०
इराक की यात्रा २)५०
महर्षि दयानन्द जी यात्रा चित्र)५०
स्वामी दयानन्द जी के चित्र)५०
दार्शनिक अध्यात्म तत्व १)५०
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक ईश वन्दना ४०
वैदिक योगामृत)६२
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
भ्रम निवारण)३०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
वेद की इयत्ता १)५०
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह)७५
कर्म और भोग १)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम् (पूर्वार्द्ध) १)५०
" " (उत्तरार्द्ध) १)५०
वैदिक संस्कृति)२५
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
सायण और दयानन्द १)
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)३०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०

संस्कार महत्व)७५
वेदों में अन्त साक्षी का महत्व)६२

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
चरित्र निर्माण १)१५
ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)१५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
अनुशासन का विधान २५
धर्म और धन)२५

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)१५
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०

इन पर ५० प्रतिशत कमीशन

यमपित्र परिचय २)
आर्य समाज के महाधन २)५०
एशिया का वेनिस)७५
स्वराज्य दर्शन १)
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
भजन भास्कर १)७५
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५

दुबारा छप गई। आर्य जगत में सबसे सस्ती

सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत

पृ० २००—नेट मूल्य ४० पैसे

ARYA SAMAJ
ITS CULT AND CREED

A unique and elegantly printed Book of the Day

By—Acharya Vaidyanath Shastri.

Rs. 5/-

This is the most popular and widely read first English book of Acharya Vaidya Nath Shastri a well known Arya Samaj Scholar and author credited with writing books in Hindi of outstanding merit on religion and philosophy some of them winning prizes.

The book presents a scholarly and lucid exposition of the Cult and Creed of AryaSamaj ranking among the high-class rare English literature of Arya Samaj. It is a worth reading worth preserving & worth presenting book to the English reading persons especially to the intelligent sia.

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

कला-कौशल(टैक्नीकल)और वैदिकसाहित्यका महान् भंडार

पुस्तक	मूल्य
इलैक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग बुक	१५)
इलै० गाइड पृ० ८००हि इ गु	१२)
इलैक्ट्रिक वायरिंग	६)
मोटरकार वायरिंग	६)
इलैक्ट्रिक बैट्रीज	४)५०
इलैक्ट्रिक लाइटिंग	८)२५
इलै० सुपरवाइजरपरीक्षा पेपर्ज	१२)
सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर	४)५०
इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज २ भाग	१६)५०
आयल व गैस इंजन गाइड	१५)
आयल इंजन गाइड	८)२५
क्रूड आयल इंजन गाइड	६)
वायरलैस रेडियो गाइड	८)२५
रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक)	८)२५
घरेलू बिजली रेडियो मास्टर	४)५०
इलैक्ट्रिक मीटर्ज	८)२५
टांका लगाने का ज्ञान	४)५०
छोटे डायनेमो इलैक्ट्रिक मोटर	४)५०
ग्रे.आर्मेचरवाइंडिंग(AC.D.C.)	८)२५
रैफरीजरेटर गाइड	८)२५
बृहत रेडियो विज्ञान	१५)
ट्रांसफार्मर गाइड	६)
इलैक्ट्रिक मोटर्स	८)२५
रेलवे ट्रेन लाइटिंग	६)
इलैक्ट्रिक सुपरवाइजरी शिक्षा	६)
इलैक्ट्रिक वैल्डिंग	६)
रेडियो शब्द कोष	३)
९० ीo अनरेटर्स	८)२५
इलैक्ट्रिक मोटर्स आल्टरनेटर्स	१६)५०
आर्मेचर वाइंडर्स गाइड	१५)
इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १९५६	१)५०

पुस्तक	मूल्य
स्माल स्केल इडस्ट्रीज (हिन्दी)	१४)
स्माल स्केल इडस्ट्रीज(इगलिश)	१४)
खराद शिक्षा (टर्नर गाइड)	४)५०
वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग)	४)५०
खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	६)
भवन-निर्माण कला	१२)
रेडियो मास्टर	४)५०
विश्वकर्मा प्रकाश	७)५०
सर्वे इंजीनियरिंग बुक	१२)
इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग	१२)
फाउन्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई)	८)२५
इलैक्ट्रोप्लेटिंग	६)
वीविंग गाइड	४)५०
हैंडलूम गाइड	१५)
फिटिंगशाप प्रैक्टिस	७)५०
पावरलूम गाइड	५)२५
ट्यूबवैल गाइड	३)७५
लोकास्ट हाउसिंग टैक्निक	५)२५
जन्त्री पैमायश चोब	२)
लोकोशैड फिटर गाइड	१५)
मोटर मैकेनिक टीचर	८)२५
मोटर मैकेनिक टीचर गुरुमुखी	८)२५
मोटर ड्राइविंग हिन्दी व गुरुमुखी	६)
मोटरकार इन्स्ट्रक्टर	१५)
मोटर साइकिल गाइड	४)५०
खेती और ट्रैक्टर	८)२५
जनरल मैकेनिक गाइड	१२)
आटोमोबाइल इजीनियरिंग	१२)
मोटरकार ओवरहालिंग	६)
प्लम्बिंग और सेनीटेशन	६)
सर्किट डायग्राम्स आफ रेडियो	३)७५

पुस्तक	मूल्य
फर्नीचर बुक	१२)
फर्नीचर डिजायन बुक	१२)
वर्कशाप प्रैक्टिस	१२)
स्टीम ब्वायलर्स और इंजन	८)२५
स्टीम इंजीनियर्स गाइड	१२)
आइस प्लांट (बर्फ मशीन)	४)५०
सीमेंट की जालियों के डिजाइन	६)
कारपेंट्री मास्टर	६)७५
बिजली मास्टर	४)५०
ट्रांजिस्टर डेटा सर्किट	१०)५०
गैस वेल्डिंग	६)
ब्लैकस्मिथी (लोहार)	४)५०
हैंडबुक आफ बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन	३४)५०
हैंडबुक स्टीम इन्जीनियर	२०)२५
मोटरकार इन्जीनियर	८)२५
मोटरकार इन्जन (पावर यूनिट)	८)२५
मोटरकार सर्विसिंग	८)२५
कम्पलीट मोटर ट्रेनिंग मैनुअल	२४)७५
कारपेंट्री मैनुअल	४)५०
मोटर प्रश्नोत्तर	६)
स्कूटर आटो साइकिल गाइड	४)५०
मशीनशाप प्रैक्टिस	१५)
आयरन फर्नीचर	१२)
मारबल चिप्स के डिजाइन	१६)५०
मिस्त्री डिजाइन बुक	३४)५०
फाउण्ड्री वर्क—धातुओं की ढलाई	४)५०
ट्रांजिस्टर रेडियो	४)५०
आधुनिक टिपिकल मोटर गाइड	४)५०
नक्काशी आर्ट शिक्षा	६)
बढ़ई का काम	६)
राजगिरी शिक्षा	६)

पुस्तक	मूल्य
सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो	७)५०
विजय ट्रांजिस्टर गाइड	२२)५०
मशीनिस्ट गाइड	१६)५०
आल्टरनेटिंग करेन्ट	१६)५०
इले. लाइनमैन वायरमैन गाइड	१६)५०
रेडियो फिजिक्स	२५)५०
फिटर मैकेनिक	६)
मशीन वुड वर्किंग	६)
लेथ वर्क	६)७५
मिलिंग मशीन	८)२५
मशीन शाप ट्रेनिंग	१०)
एयर कन्डीशनिंग गाइड	१५)
सिनेमा मशीन आपरेटर	१२)
स्प्रे पेंटिंग	१२)
पोट्री गाइड	४)५०
ट्रांजिस्टर रिसीवर्स	६)७५
लोकल ट्रांजिस्टर रिसीवर	८)२५
प्रैक्टीकल ट्रांजिस्टर सरकिट्स	७)५०
बैंच वर्क एन्ड फाइफिटर	८)२५
माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुअल	८)२५
खराद आपरेटर गाइड	८)२५
रिसर्च आफ टायलेट सोप्स	१५)
आयल इन्डस्ट्री	१०)५०
शीट मैटल वर्क	८)२५
कैरिज एन्ड वैगन गाइड	८)२५
इलैक्ट्रिक फिजिक्स	२५)५०
इलैक्ट्रिक टैक्नोलोजी	२५)५०
रेडियो पाकिट बुक	६)
डिजाइन गेट ग्रिल जाली	६)
कैमीकल इण्डस्ट्रीज	२५)५०
डीजल इन्जन गाइड	१५)

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई, क्लाथ बाइंडिंग-मूल्य १५) एक साथ पांच प्रति मंगाने पर ५०) रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१. सांख्य दर्शन	मूल्य	२)
२. न्याय दर्शन	मू०	३।)
३. वैशेषिक दर्शन	मू०	३॥)
४. योग दर्शन	मू०	६)
५. वेदान्त दर्शन	मू०	५॥)
६. मीमांसा दर्शन	मू०	६)

सामवेद

मूलमंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित
श्री पं० हरिचन्द्र जी विद्यालंकार

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार ४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थीं। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है। मूल्य ४)

वैदिक-मनुस्मृति मूल्य ४॥)

बृहत् दृष्टान्त सागर

सम्पूर्ण पांचों भाग

पृष्ठ संख्या ८६८

सजिल्द मूल्य केवल १०॥)

उपदेश-मंजरी	मूल्य २॥)
संस्कार विधि	मूल्य १॥)
आर्य समाज के नेता	मूल्य ३)
महर्षि दयानन्द	मूल्य ३)
कथा पच्चीसी	मूल्य १॥)
उपनिषद् प्रकाश	मू० ६)
हितोपदेश भाषा	मू० ३)
सत्यार्थप्रकाश [छोटे अक्षरों में]	२)५०

अन्य आर्य साहित्य

१. विद्यार्थी शिष्टाचार	१॥)
२. पंचतन्त्र	३॥)
३. आग ऐ मानव	१)
४. कौटिल्य अर्थशास्त्र	१०)
५. चाणक्य नीति	१)
६. भर्तृहरि शतक	१॥)
७. कर्तव्य दर्पण	१॥)
८. वैदिक संध्या	४) सैं०
९. हवन मन्त्र	१०) सैं०
१०. वैदिक सत्सग गुटका	१५) सैं०
११ ऋग्वेद ७ जिल्दों में	५६)
१२ यजुर्वेद २ जिल्दों में	१६)
१३ सामवेद १ जिल्द में	८)
१४. अथर्ववेद ४ जिल्दों में	३२)
१५. बाल्मीकि रामायण	१२)
१६ महाभारत भाषा	१२)
१७ हनुमान जीवन चरित्र	४॥)
१८ आर्य संगीत रामायण	५)

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद,कृषि,बिजली,मोटर,पशुपालन, टेक्नीकल, डेरीफार्म, रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैंकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१२१

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

सबस प्रीतिपूर्वक ध र्मानुसार र यथायोग्य वर्त्तना चाहिये ।

ओ३म्
उरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख प

महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-१ फोन २७४७७१ अ श्रावण कृष्ण १४ संवत् २०२३ १५ अगस्त १९६६ दयानन्दाब्द १४२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९

गो हत्या बन्द कराने में आर्यसमाज सक्रिय योग दे

वेद—आज्ञा

मनुष्यो का इष्टदेव

यस्य वात प्राणापानौ चक्षुरङ्गिरसोऽभवन् । दिशो यश्चक्रे प्रज्ञान स्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम ।

अथर्ववेद

भावार्थ

जिसने ब्रह्माण्ड के वायु को प्राण और अपान की नाई किया है तथा जो प्रकाश करने वाली किरण है वे चक्षु की नाई जिसने की हैं अर्थात् उनसे ही रूप ग्रहण होता है और जिसने दशो दिशाओ को सब व्यवहारो को सिद्ध करनेवाली बनाई हैं ऐसा जो अनन्त विद्यायुक्त परमात्मा सब मनुष्यो का इष्टदेव है उस ब्रह्म को निर तर हम रा नमस्कार हो ।।४।।

— महर्षि दयानन्द

साधुओं को सभामंत्री का आश्वासन

सभा की आपत्कालीन बैठक बुलाई जा रही है

श्रद्धेय श्री महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज
इपो (Ipoh मलेशिया मे) आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री रघनाथ जी तथा श्री प० रामायण चौबे जी (सफेद टोपी मे) पुरोहित के मध्य मे विराजमान प्रसन्न मुद्रा मे ।

इपोह (मलेशिया)

श्रद्धेय श्री राम गोपाल जी

सप्रेम नमस्ते

आपका ८ ७ ६६ का कृपा पत्र मुझ आज यहा मिला मलेशिया के लोगो ने मुझ दोबारा यहा आने पर बाधित किया यहा आर्य समाज का विशाल भवन है जिसके साथ कितने ही एकड़ भूमि है यह भवन लगभग २५ हजार डालर से खरीदा गया था अब तो इसकी कीमत दो लाख से कम नही होगी परन्तु एक नन्हे से स्कूल के अतिरिक्त यह भवन और किसी काम नही आ रहा सत्सग नही होते उत्सव भी नही होता मैंने प्रेरणा दी कि साप्ताहिक सत्सग अवश्य होना चाहिये प्रधान जी ने स्वीकार कर लिया। समाज के अधिक सदस्य मद्रासी सज्जन हैं सदस्य सख्या ९८ है परन्तु मेरी कथा म कोई तामिल नही आता मैं यहा केवल तीन दिन के लिये आया था इन लोगो ने दस दिन कथा के लिये रोक लिया यहा से २४ को पीनाग जा रहा हू ।

आनन्द स्वामी सरस्वती

चार प्रकार के द्रव्यो का होम

एक सुगन्ध गुणयुक्त जो कस्तूरी केशरादि हैं दूसरा मिष्टगुणयुक्त जो कि गुड और सहत आदि कहाते हैं तीसरा पुष्टिकारकगुणयुक्त जो कि घृत दुग्ध और अन्न आदि और चौथा रोगनाशकगुणयुक्त जो कि सोमलतादि ओषधि आदि हैं इन चारो का परस्पर शोधन संस्कार और यथायोग्य मिला कर अग्नि मे युक्तिपूर्वक जो होम किया जाता है वह वायु और वृष्टि जल की शुद्धि करने वाला होता है। इससे सब जगत् को सुख होता है। और जिसको भोजन छादन विमानादि यान कलाकुशलता यन्त्र और सामाजिक नियम होने के लिये करते हैं वह अधिकाश से कर्त्ता को ही सुख देने वाला होता है

परोपकार के लिये यज्ञ

जैसे दाल और शाक आदि मे सुगन्ध और घी इन दोनो को चमचे मे अग्नि पर तपा के उनमे छौंक देने से वे सुगन्धित हो जाते हे क्योकि उस सुगन्ध द्रव्य और घी के अणु उनको सुगन्धित करके दाल आदि पदार्थो को पुष्टि और रुचि बढ़ाने वाले कर देते हैं वैसे ही यज्ञ से जो भाप उठता है वह भी वायु और वृष्टि के जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत् को सुख करता है। इससे वह यज्ञ परोपकार के लिये ही होता है।

—महर्षि दयानन्द

वार्षिक ७) रु०
विदेश १ पौंड
एक प्रति १२ पैसे

अन्नं बहु कुर्वीत

सम्पादक—रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री
सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

ज्वलेन लोकस्तिष्ठति

वर्ष १
अंक ३६

शास्त्र-चर्चा

मधुर वचन

बृहस्पतिरुवाच

सान्त्वमेकपदं शक्र पुरुषः सम्यगाचरन्। प्रमाणं सर्वभूतानां यशश्चैवाप्नुयान्महत् ।।

बृहस्पति जी ने कहा इन्द्र ! जिसका नाम एक ही पद का हैं, वह एकमात्र वस्तु है सान्त्वना (मधुर वचन बोलना)। उसका भली भांति आचरण करने वाला पुरुष समस्त प्राणियो का प्रिय होकर महान् यश प्राप्त कर लेता है।

एतदेकपदं शक्र सर्वलोकसुखावहम्। आचरन् सर्वभूतेपु प्रियो भवति सर्वदा ।।

शक्र ! यही एक वस्तु सम्पूण जगत् के लिये सुखदायक है। इसको आचरण मे लाने वाला मनुष्य सदा समस्त प्राणियो का प्रिय होता है।

यो हि नाभाषते किंचित् सर्वदा भ्रुकुटीमुखः। द्वेष्यो भवति भूतानां स सान्त्वमिह नाचरन् ।।

जो मनुष्य सदा भौंहे टेढी किये रहता है, किसी से कुछ बातचीत नही करता, वह शान्त भाव (मृदुभाषी हीने के गुण) को न अपनाने के कारण सब लोगो के द्वेष का पात्र हो जाता है।

यस्तु सर्वमभिप्रेद्य पूर्वमेवाभिभाषते। स्मितपूर्वाभिभाषी च तस्य लोकः प्रसीदति ।।

जो सभी को देखकर पहले ही बात करता है और सबसे मुसकरा कर ही बोलता है, उस पर सब लोग प्रसन्न रहते हैं।

दानमेव हि सर्वत्र सान्त्वेनानभिजल्पितम्। न प्रीणयति भूतानि निर्व्यञ्जनमिवाशनम् ।।

जैसे बिना व्यञ्जन (साग-दाल आदि) का भोजन मनुष्य को सन्तुष्ट नही कर सकता, उसी प्रकार मधुर वचन बोले बिना दिया हुआ दान भी प्राणियो को प्रसन्न नही कर पाता है।

आदानादपि भूतानां मधुरामीरयन् गिरम्। सर्वलोकमिमं शक्र सान्त्वेन कुरुते वशे ।।

शक्र ! मधुर वचन बोलने वाला मनुष्य लोगो की कोई वस्तु लेकर भी अपनी मधुर वाणी द्वारा इस सम्पूर्ण जगत् को वश मे कर लेता है।

तस्मात् सान्त्वं प्रयोक्तव्यं दण्डमाधित्सतोऽहि हि। फल च जनयत्येवं न चास्योद्विजते जनः ।।

अत किसी को दण्ड देने की इच्छा रखने वाले राजा को भी उससे सान्त्वना पूर्ण मधुर वचन ही बोलना चाहिये। ऐसा करके वह अपना प्रयोजन तो सिद्ध कर ही लेता है और उससे कोई मनुष्य उद्विग्न भी नही होता है।

सुकृतस्य सान्त्वस्य श्लक्ष्णस्य मधुरस्य च। सम्यगासेव्यमानस्य तुल्यं जात न विद्यते ।।

यदि अच्छी तरह से सान्त्वनापूर्ण, मधुर एव स्नेहयुक्त वचन बोला जाय और सदा सब प्रकार से उसी का सेवन किया जाय तो उसके समान वशीकरण का साधन इस जगत् मे निःसन्देह दूसरा कोई नही है।

.चं वदत भद्रया

सम्पादकीय

पन्द्रह अगस्त

पन्द्रह अगस्त हमारा स्वतन्त्रता-दिवस है। आत्म चेतना के इस पर्व पर मन में जहां अपनी दासता के प्रति क्षोभ और आक्रोश उत्पन्न होता है, वहां साथ ही अपने उस कर्तृत्व के प्रति यत्किंचित् गौरव की भी अनुभूति होती है जिसके कारण डेढ़ शताब्दी (वास्तव में कहना चाहिए—सात शताब्दी) की अधियारी कालरात्रि के पश्चात् यह स्वातन्त्र्य-सूर्य का सुखद-सुन्दर उदय देखने का अवसर मिला।

इस प्रसग में स्मृति-पथ पर उभरती है उन क्रान्तिकारियों और बलिदानियों की जीवन-रेखाए जिन्होंने स्वतन्त्रता-देवी की आराधना के लिये अपना तन, मन, धन सब न्यौछावर कर दिया, सुखों के राजपथ को लात मार कर स्वेच्छया दुःखों की कण्टकाकीर्ण जेल नही, कृष्ण मन्दिर को अपना आवास-स्थान बनाया और फांसी की रेशमी डोरी को अपनी नई-नवेली दुलहिन की तरह प्यार किया। जिन नेताओं ने स्वतन्त्रता की तड़प जन-जन मे जगा कर उसे देशव्यापी आन्दोलन का रूप दिया, उनका कृतित्व भी विस्मरण के योग्य नहीं है।

दुःख इसी बात का है कि भारत स्वतन्त्र तो हुआ, पर वह खण्डित हो गया बगाल और पजाब उसकी दो सबल भुजाएं कट गई और पाकिस्तान के रूप में उसकी गर्दन पर सदा के लिए ऐसी तलवार लटक गई जिस पर सान चढ़ाना साम्राज्यवादियों का पुश्तैनी पेशा है।

१५ अगस्त—सन् १९४७। दिल्ली के लालकिले पर पहली बार तिरगा झण्डा। उछाह से उमड़ता जन-समुद्र। दृष्टि के विस्तार की सीमा तक नरमुण्ड ही नरमुण्ड। जैसे सारा भारत लाल किले के मैदान में उतर आया हो। इस विशाल जन-मेदिनी के सम्मुख भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री (उनके शब्दों में प्रथम सेवक) प० जवाहरलाल नेहरू का लालकिले की प्राचीर से शान्त-गम्भीर ओजस्वी भाषण:—"हमने आजादी हासिल कर ली। परन्तु यह आजादी अभी अधूरी है। असली आजादी तब आएगी जब हमारा देश खुशहाल होगा - जब लोगों को खाने को रोटी मिलेगी, पहनने को कपड़ा और सिर ढकने को छत। अब हमें उसी आजादी के लिए कोशिश करनी है। देश की गरीबी मिटानी है, अशिक्षा मिटानी है, बेकारी मिटानी है। हमारे सामने बड़े-बड़े नक्शे हैं और बड़े-बड़े सपने हैं। हम बड़े-बड़े कारखाने खड़े करके देश को औद्योगिक दृष्टि से खुशहाल बनाएंगे और बड़े-बड़े बाध बना कर देश की जमीन मे सिचाई की व्यवस्था करेंगे ताकि सब को भर पेट खाना मिल सके। अब हमारे सामने एक ही रास्ता है—कड़ी मेहनत। हमारा एक ही नारा है - आराम हराम है। हम अपनी तदबीर से अपनी तकदीर को बदल कर छोड़ेंगे।"

श्री नेहरू के उस भाषण के उक्त शब्द हमने अपनी स्मृति से ही लिखे हैं। शब्दों का यत्किंचित् हेर फेर हो सकता है, परन्तु अर्थ का नहीं। सचमुच नेहरू ने जनता को स्वप्नाविष्ट कर दिया। लोग नए सकल्प और नई उमगें लेकर घर लौटे। और तब से ये शब्द और उनके अन्दर छिपे भाव लगातार जनता के मन में गूजते रहे। हर पन्द्रह अगस्त को श्री नेहरू के उक्त शब्द स्मरण आ जाते हैं। नेहरू जी भी प्रायः प्रतिवर्ष लाल किले की प्राचीर पर खड़े हो कर हर पन्द्रह अगस्त को इन्हीं शब्दों को तरह तरह से दुहराते रहे।

१८ वर्ष बाद जब उन शब्दों को स्मरण करते हैं और देश की यथार्थ स्थिति का सिंहावलोकन करते हैं तब स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि जनता का स्वप्न भग हो गया, सब उमगें धराशायी हो गईं। क्या सरकार किसी भी क्षेत्र मे देश को आत्म-निर्भर बना पाई? सब से मूलभूत आवश्यकता थी अनाज की। निस्सन्देह बड़े-बड़े बांध बने, सैकड़ों-हजारों एकड़ नई जमीन मे खेती भी हुई, पर अनाज कहा गया? क्या धरती माता स्वय अपना अनाज खा गई? क्या किसान खेती करना भूल गए? क्या देसी बीज की उर्वरा शक्ति समाप्त हो गई?

मुख्य बात यह है कि विशाल योजनाओं पर लाखों-करोड़ों-अरबों रुपया खर्च तो हुआ, परन्तु जनता को उसका यथेष्ट लाभ नहीं मिला। उस सब राशि को और उस लाभ को भ्रष्टाचार खा गया। जब अपने देश के समस्त आय के साधनों से भ्रष्टाचार की सुरसा का पेट नहीं भरा तो विदेशों से कर्ज लेने का सिलसिला शुरू हुआ। धीरे-धीरे हमारा भिक्षा पात्र लगातार बड़ा और बड़ा होता चला गया और बड़े बड़े सपनों की बात करने वाली सरकार ने इस 'सोने की चिड़िया' को 'भिखारियों का देश' बना कर रख दिया। इस समय देश पर करीब बीस अरब रुपये का ऋण है। वर्तमान पीढ़ी अपनी भावी सन्तान को यही कर्ज विरासत मे देकर जाएगी।

१५ अगस्त के इस पुण्य पर्व पर हमें आत्मावलोकन करना चाहिये—प्रजा को भी और राजा को भी। दोष कहां है, भूल कहां है? क्या हमारी नीतियां ही तो गलत नहीं हैं? हमारी पचवर्षीय योजनाएं गलत बुनियाद पर तो नहीं खड़ी है? हमारे मन में देशहित के बजाय स्वार्थपरता का जहरीला कीड़ा तो नहीं घुस गया है? सत्ता अपने हाथ में बनाए रखने के लिये हम जनता को तो दांव पर नहीं लगा रहे हैं? हमारे मुंह मे भ्रष्टाचार का खून तो नहीं लगा है? क्या हम दल को या व्यक्ति के हित को महत्व देने के बजाय राष्ट्र के हित को सर्वोपरि समझते हैं।

यह १५ अगस्त इन्हीं प्रश्नों का उत्तर मागने आया है।

—:०—

आपका उत्साह हमारा संकल्प

वेद कथा अक के सम्बन्ध में हमने पाठकों का विशेष बात की ओर ध्यान आकर्षित किया था, हमें प्रसन्नता है कि उस बात ने पाठकों का ध्यान सचमुच आकर्षित किया है। हमारा इरादा यह था कि देश के विधायकों, ससत्सदस्यों, मन्त्रियों, राजनेताओं तथा होनहार विद्यार्थियों को वेद कथा अक की एक एक प्रति सार्वदेशिक सभा की ओर से उपहार के रूप मे निःशुल्क भेंट की जाए। इसके लिए हम ५,००० प्रतियां अलग छपवाना चाहते थे। आर्यसमाज और वेद के सत्य स्वरूप से अपरिचित लोगों तक पहुंचने का यह हमारा स्वल्प प्रयास है। पाठकों के उत्साह से हमारे उक्त सकल्प को बल मिला है और हम अपनी योजना के अनुसार उक्त संकल्प को सहज ही पूरा कर सकेंगे, ऐसा हमें विश्वास है।

बम्बई के सेठ श्री बद्रीप्रसाद मोरुका ने हमें ३,५०० प्रतियों के लिए २,१००रु०का आज्ञा-पत्रभेज दिया है। अन्य भी कई सज्जन सौ सौ रु० की राशि भेज रहे हैं। अगला अक वेद कथा अक ही होगा। हमने वेद कथा अक की सामग्री प्रेस में छपने के लिए दे दी है। हम २५ अगस्त तक उस अक को पाठकों के हाथ में पहुचा देना चाहते हैं, ताकि श्रावणी के उपलक्ष्य मे आयोजित वेद सप्ताह के पुनीत पर्व पर वह अंक उन स्थानों पर, जहां उपदेशक या कोई वेदज्ञ विद्वान् नहीं पहुच सकता, वेद कथा की कमी पूरी कर सके हमें निश्चय है कि अन्य उत्साही दानी महानुभाव हमारे इस सत्संकल्प की पूर्ति के लिए अपनी सात्त्विक कमाई की राशि तब तक अवश्य भेज देंगे। हम तो केवल निमित्तमात्र हैं, इस संकल्प की पूर्ति का श्रेय तो इन दानी महानुभावों को ही होगा।

यों भी हम वेद कथा अक की बीस हजार प्रतियां छाप रहे हैं। इसलिए राजनीतिज्ञों और विशिष्ट व्यक्तियों के अतिरिक्त आप अपने पास-पड़ोस में सुशिक्षित लोगों तक भी इस अक की एक एक प्रति अवश्य पहुचाइए और अधिक से अधिक सख्या मे अक मगाइए। २५० पृष्ठों की पुस्तिका का मूल्य सिर्फ ६० पैसा—यह तथ्य स्वय इस बात का द्योतक है कि यह आयोजन व्यापारिक लाभ के लिए नहीं, केवल वेद प्रचार के लिए है। प्रत्येक आर्य को इस पुनीत आयोजन में सहायक होना चाहिए।

आर्य समाज परिचर्याक

एक प्रश्न का उत्तर

कई सज्जनों ने पूछा है कि यदि किसी आर्य समाज के मन्त्री ने अपना चित्र और ११) रुपये भेज दिये थे। तत्पश्चात् चुनाव में वह मन्त्री नहीं रहे तब उनका चित्र छपेगा या नहीं।

ऐसे जिन मन्त्रियों का चित्र और धन आ चुका है उनका अवश्य छपेगा किन्तु नाम के साथ भूतपूर्व मन्त्री छपेगा। इसमें कोई हानि नहीं। नव निर्वाचित मन्त्री का चित्र भी छपेगा।

प्रबन्धक

सामयिक-चर्चा

दहेज को वेदी पर

पिछले दिनों दिल्ली के निकटवर्ती एक ग्राम में दो मदरासी बहनो ने जिनकी आयु २० और १५ वर्ष की थी। कुएं मे डूबकर अपनी जानें दे दीं इसलिए कि उनके माता-पिता विवाह के लिए दहेज की व्यवस्था करने में असमर्थ थे। दहेज की खूनी वेदी पर आत्मोत्सर्ग की इन घटनाओं से समाज के समझदार व्यक्तियों का लज्जा से सिर झुके बिना नहीं रह सकता। आज के उन्नत कहे जाने वाले समाज मे यदि यह लानत घोर अभिशाप बन जाय तो ऐसी उन्नति से क्या लाभ ? यह ठीक है कि इसे चुनौती देने वाले नवयुवक, नव युवतिया और अभिभावक विद्यमान हैं परन्तु उनकी सख्या अगुलियों पर गिने जाने योग्य ही है। जब तक सामूहिक और व्यापक रूप से इस लानत को लानत समझने की अवस्थाएं उत्पन्न नही होती तब तक निर्दोष बहिनो और उनके अरमानो की बलि चढ़ती ही रहेगी। गुप्त या प्रकाश रूप मे दहेज को प्रश्रय दिए जाते रहने से तो इसकी विभीषिका का अन्त न होगा। इस लानत को समाप्त करने का सर्वप्रथम उपाय है दहेज को प्रदर्शन की वस्तु न बनाया जाना। इससे बड़ा प्रोत्साहन मिलता है। दूसरा उपाय दहेज की मांग करने वालों को समाज मे तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाना है। तीसरा उपाय है दहेज की शादियों का नव युवको और नवयुवतियो द्वारा बहिष्कार। इसके लिए दृढता की परमावश्यकता है। यदि पढ़े लिखें नवयुवक और नवयुवतिया इस बुराई का अन्त करने के लिए आगे नहीं आते और इस बुराई का भागीदार न बनने का साहस नहीं दिखाते तो उनकी पढ़ाई-लिखाई का क्या अर्थ ? वर्तमान अर्थ और भोग प्रधान समाज-व्यवस्था के अभिशापो के निराकरण में निश्चय ही उनका योग बड़ा मूल्यवान सिद्ध हो सकता है। लड़के के जन्म के समय से लेकर विवाह होने तक के व्यय की पूर्ति दहेज द्वारा करने का स्वप्न लेना बड़ा हेय और समाज-विरोधी कार्य है। इस प्रकार के अमर्यादित दहेज मांगने वालों की दुर्गति के समाचार यदा कदा प्रकाश में आते रहते हैं। यह दुर्गति दिन प्रतिदिन की घटना बननी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति समाज सुधार और समाज की सेवा मे कोई सक्रिय पार्ट अदा नही कर सकता और यदि वह दहेज की लानत की परिसमाप्ति में योग दे सकता है तो वस्तुत वह भी समाज की बहुत बड़ी सेवा करने का श्रेय प्राप्त करता है।

अश्लील विज्ञापन

सिनेमा के अश्लील चित्रों का नगरों और कस्बों के चौराहों इत्यादि पर सार्वजनिक प्रदर्शन बड़ा दूषित एव आपत्तिजनक है। लूप के चित्रों के प्रदर्शनो ने रही सही कमी पूरी कर दी है।

सिनेमा गृहों में इस प्रकार के चित्रों को देखने से दर्शको पर जितना बुरा प्रभाव पडता है, उससे कहीं अधिक बाहर के प्रदर्शन से पडता है।

कुछ समय पूर्व आचार्य विनोबा भावे ने इस प्रकार के चित्रों को उतरवाने का प्रशसनीय अभियान छेड़ा था जिसमे उन्हें सफलता प्राप्त हुई थी अब पुन ये चित्र प्रदर्शित किए जाने लगे हैं।

इस बुराई के प्रसार के लिए जहा सिनेमाओं के सचालक जिम्मेदार हैं वहा हमारे नगरनिगम और नगर पालिकाएं भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। ये चित्र अपरिपक्व लोगों की वासनाओं को उत्तेजित करने का कारण बनते और समझदार लोगों की शिष्ट भावना पर गहरा आघात करते हैं। इन चित्रों के प्रदर्शनों से अनैतिकता एव अपराध प्रवृत्ति का इतना अधिक प्रसार हुआ है और अब भी हो रहा है कि विविध राष्ट्रों के समक्ष इनकी रोक थाम एक जटिल समस्या बन कर खडी हो गई है। जिन घरो के व्यक्ति या बच्चे बर्बाद हुए हैं और उनके सुधार की आशाएं धूमिल हो गई हैं यदि उनकी करुण कथाएं सुनी जाय तो आत्मा कांपे बिना न रह सकेगी।

यदि हमें समाज मे सदाचार और नैतिकता का स्तर ऊंचा करना अभीष्ट हो और अभिष्ट होना भी चाहिए तो प्रथम पग के रूप में इस बुराई के उन्मूलन और राज्य को विवश करने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए।

दिल्ली नगर-निगम ने अभी हाल में सार्वजनिक स्थानों पर लगे हुए अश्लील चित्रों को हटवाने या उन्हें काला कर देने का निश्चय करके स्वागत योग्य कार्य किया है। निश्चय ही उसका उदाहरण अन्य नगरों के लिए भी मार्ग-दर्शक का कार्य करेगा।

एक भव्य झांकी

आठवें एडवर्ड (ड्यूक आफ विन्डसर) ने १९३६ में ब्रिटेन की राजगद्दी का परित्याग कर दिया था। राजगद्दी और अपनी पसन्द की देवी मे से एक के चुनाव का जब अन्तिम अवसर उपस्थित हुआ तो उन्होंने देवी के चुनाव पर अटल रहकर राजगद्दी पर लात मार दी थी। उस समय उन्होने ब्रिटेन को गृह-कलह से बचाने के लिए मन की शान्ति का जो भव्य उदाहरण प्रस्तुत किया था वह इतिहास की अनूठी वस्तु बनी हुई है यद्यपि उनका चुनाव उपयुक्त न था। उनका यह व्यवहार उनकी देश निष्ठा, स्वार्थ त्याग और राजोचित महत्ता का द्योतक बताया जाकर उसकी सर्वत्र प्रशसा हुई थी। सिंहासन परित्याग के बाद समाचार पत्रों मे प्रकाशित उनके सस्मरणो में इसके कारणों का विश्लेषण किया गया था।

उन्होंने अभी हाल में न्यूयार्क (अमेरिका) में एक पत्र प्रतिनिधि के साथ हुई भेंट मे उन कारणो पर प्रकाश डालते हुए कहा (देखें ट्रिब्यून अम्बाला २२-७-६६) कि यदि 'मैं पाखंडी बनना पसन्द करता तो राजगद्दी बनाए रखता और अपनी प्रेयसी सिम्पसन (डचेज़ आव विन्डसर) से विवाह भी कर लेता।"

पाखंडी बनने का एक अर्थ यह भी है कि वे राजनीतिक जोड़-तोड़ और दाव-पेंच से एक पृथक् शाही पार्टी बना लेते। इसका स्पष्टीकरण उनके इन शब्दों से हो जाता है—"यदि मैं राजनयिकों को अपना साथ देने की अनुमति देता अथवा उन्हें प्रोत्साहित करता तो मैं अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए एक राजनैतिक दल बना लेता। स्व० चर्चिल और लार्ड बीवर ब्रूक ने मुझ से अनुरोध किया था मैं सिंहासन का परित्याग न करूं वरन् उस पर जमा रहूं और उचित समय पर विवाह कर लूं।"

निश्चय ही यह दम्भ एव पाखड राजकीय मर्यादा के विरुद्ध होता। इस बात की पुष्टि करते हुए उन्होंने बताया—"ऐसा करना सम्राट एवं पार्लियामेन्ट के मध्य होने वाले राजनीतिक संघर्ष में अपनी प्रजा से मूल्य मांगने के समान हेय कार्य होता। मैंने स्वयं ही मूल्य चुकाने का निर्णय कर डाला जिसका स्पष्ट अर्थ था सिंहासन का परित्याग। उस समय मेरे और ब्रिटेन के हित में यही किया जाना उचित था। मैं ब्रिटेन के लोगों को अपने विरोधियों को चुप करने की अपील कर सकता था अथवा राज्याभिषेक होने तक मैं सिम्पसन के प्रति अपने प्रेम के विषय में चुप रह सकता था।"

इस दम्भ और पाखड से बचने का एक और भी कारण था और वह था अपने ईसाई मत को कलुषित होने से बचाने की शुभ भावना। ड्यूक का कथन है:—

"राजा न केवल राज्य का ही अपितु चर्च का भी प्रमुख होता है। कैन्टरबरी के आर्क बिशप धर्म्म के रक्षक के रूप में मेरा राज्याभिषेक करते। देर-सवेर मैं श्रीमती सिम्पसन से विवाह करने का मेरा इरादा था। मेरे मन में जो कुछ था उसे हृदय में संजोए हुए यदि मैं धर्म्म के संरक्षक के रूप में अपना राज्याभिषेक होने देता तो मैं पाखंडी बनकर चर्च को लांछित करने वाला बन जाता।

यह है आठवें एडवर्ड के चरित्र की एक भव्य झांकी।

श्री वासुदेव शरण अग्रवाल

श्री वासुदेव शरण अग्रवाल के निधन से देश एक उदीयमान विद्वान् से वंचित हो गया। वे अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के विद्वान् थे। उन्होंने दर्शन कला और इन्डोलाजी पर लगभग १०० ग्रन्थ लिखे जिनमें से कईपर उन्हें पुरस्कार मिला और कई ग्रन्थ देश और विदेश की भाषाओं में अनुदित हुए। ऐसे विद्वान् का हमारे मध्य में इतनी जल्दी उठ जाना वस्तुतः देश और साहित्यिक जगत् की बहुत बड़ी

(शेष पृष्ठ १३ पर)

१५ अगस्त के सूत्रधार

महर्षि दयानन्द

क्रान्ति-पथ के अग्रणी आर्य

मान्य श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति

(आर्यसमाज का इतिहास से)

लेखक

यदि हम यह कहें कि १९४७ ई० के अगस्त मास की १५ तारीख को जिस स्वाधीनता यज्ञ की पूर्ति हुई उसका प्रारम्भ महर्षि दयानन्द ने किया था और अन्तिम आहुति महात्मा गाधी ने दी तो कोई अत्युक्ति न होगी। इसमे सन्देह नहीं कि गण-तन्त्र राज्य की प्राप्ति में समाप्त होने वाली राज्य-क्रान्ति का बीजारोपण महर्षि ने ही किया था।

महर्षि ने तीन उपायों से भारत-वासियों के हृदयों में पराधीनता से छूटने और राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त करने की अभिलाषा को जन्म दिया। सबसे पहला उपाय था—भारतवासियों के हृदयों मे अपने देश और धर्म के लिए स्वाभिमान उत्पन्न करना। जिस समय वह कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण हुए उस समय देश का शिक्षित समाज पाश्चात्य सभ्यता और इंगलैण्ड की भक्ति के प्रवाह में बहा चला जा रहा था। यों सुधार की आवाज तो उससे पहले भी उठ चुकी थी परन्तु वह आवाज देशवासियों को अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी विचारों को भक्त बना कर आत्म सम्मान को घटाने वाली थी। महर्षि ने बाहर की ओर भागती हुई देशवासियों की दृष्टियों को स्वदेशाभिमान सिखाने वाले अपने उपदेशों द्वारा मानों खींच कर अन्दर की ओर कर लिया। महर्षि ने लिखा—

यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है कि जिसके सदृश भूगोल में दूसरे देश नहीं हैं। आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणी है कि जिसको लोहे रूपी दरिद्र विदेशी छूते ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।"

दूसरे स्थान पर वह लिखते हैं —

जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है और आगे भी होगा उसकी उन्नति तन मन धन से सब जनें मिलकर प्रीति से करें।"

मैंने यह दो उद्धरण केवल दृष्टान्त रूप में दिये हैं। महर्षि के ग्रन्थों में स्वदेशाभिमान कूट कूट कर भरा है। महर्षि भारतवासियों के हृदयों में स्वदेशाभिमान की जो भावना उत्पन्न करना चाहते थे उसका सार "सत्यार्थ प्रकाश" के एकादश समुल्लास की निम्नलिखित चार प्रस्ताविक पंक्तियों में आ जाता है।

"सृष्टि से लेके पाच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्व-भौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था, अन्य देश में माण्डलिक अर्थात् छोटे २ राजा रहते थे क्योंकि कौरव पाण्डव पर्यन्त यहां के राज्य और राज्य शासन में सब भूगोल के सब राजा रहते थे।"

राष्ट्र को यह अनुभव कराना कि वह एक दिन शक्ति सम्पन्न और स्वाधीन था, और यदि वह ठीक प्रकार से यत्न करे तो फिर भी स्वाधीन हो सकता है, स्वाधीनता के शिखर पर पहुचने का पहला कदम है। दूसरा कदम यह है कि राष्ट्र उन कारणों को दूर करे जिन्होने उसे पराधीन बना कर पुराने गौरव से गिराया और गम्भीरता से विचार किया तो देखा कि उसकी मानसिक दासता ही राष्ट्र की राजनैतिक तथा आर्थिक दासता का ही मूल कारण है। रोग के असली रूप को पहचान कर महर्षि ने कुशल वैद्य की भांति पहले रोग के मूल कारणों को दूर करने का उपक्रम किया और इसमें शायद किसी को ही सन्देह हो कि वह बहुत दूर तक उसमें सफल हुए। महर्षि के प्रत्येक विचार से सहमत न होने वाले व्यक्तियों को भी यह मानना पड़ता है कि उन्होंने अपनी शास्त्रीय आलोचना और ओजस्विनी वाणी से आर्य जाति के सदियों से बन्द पड़े विचार-सागर का ऐसे जोर से मन्थन किया कि उसमें से अनायास विचारों की स्वाधीनता और कर्म करने की ओर प्रवृत्ति जैसे बहुमूल्य उपहारों का प्रादुर्भाव हो गया। यह माना हुआ सिद्धान्त है कि मानसिक स्वाधीनता के बिना सामाजिक स्वाधीनता और सामाजिक स्वाधीनता के बिना राजनैतिक स्वाधीनता सम्भव नहीं। महर्षि ने जहां भारतवासियों को स्वदेश के प्रति भक्ति भावना का अमृत पिलाया वहां साथ ही मानसिक स्वाधीनता की शृंखलाओं को काट कर राष्ट्र को स्वाधीनता के मार्ग पर डाल दिया।

परन्तु वह इतने से ही सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने देश के सम्मुख सच्चे स्वराज्य का रूप भी रखा, यह देख कर आश्चर्य होता है कि महर्षि ने स्वराज्य प्राप्ति से लगभग ७० वर्ष पहले स्वराज्य का जो आदर्श "सत्यार्थप्रकाश" में प्रदर्शित किया था, भारत का शिक्षित समाज उस समय उस आदर्श से कोसों पीछे था। "सत्यार्थप्रकाश" के अष्टम समुल्लास में महर्षि ने लिखा था—

"आर्यावर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देश-वासियों को अनेक प्रकार के दुःख भोगना पड़ता है कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

पूर्ण स्वराज्य की इससे अच्छी व्याख्या क्या हो सकती है? "इण्डि-यन नेशनल कांग्रेस" की स्थापना "सत्यार्थप्रकाश" के ऊपर उद्धृत किये वाक्यों के कई वर्ष पीछे हुई। उसमें पहले केवल विदेशी राज्य में नौकरियों की मांग की गई, फिर कई वर्षों तक इंगलैण्ड की छत्रछाया में थोड़े बहुत प्रतिनिधित्व के अधिकार मांगे गये। आगे चलकर औपनिवेशिक स्वराज्य को अपना ध्येय बनाया गया। पूर्ण स्वराज्य की मांग १९२९ के अन्त में रावी के तट पर की गई। जिस आदर्श पर राजनीतिज्ञ कहलाने वाले लोग २०वीं शताब्दी का प्रथम चरण समाप्त होने पर पहुचे वहां महर्षि दयानन्द १९वीं शताब्दी के अन्तिम चरण के आरम्भ में पहुच चुके थे। महर्षि ने स्वराज्य के जिस स्वरूप का वर्णन किया उसे हम गणराज्य का नाम देते हैं। राजा, प्रजा द्वारा निर्वाचित हो, शासन मन्त्रियों की सभा द्वारा हो, पुरुषों और स्त्रियों के अधिकार समान हों, ये सब मूल सिद्धान्त जिन्हें देश ने गणराज्य की स्थापना के साथ स्वीकार किया महर्षि ने अपने ग्रन्थों में प्रति-पादित कर दिये थे। ऐसी दशा में हमारा यह कहना सर्वथा उचित है कि जिस स्वाधीनता यज्ञ की पूर्ति १५ अगस्त सन् १९४७ ई० के दिन हुई उसका प्रारम्भ महर्षि दयानन्द ने किया था।

क्रान्ति के जन्मदाता श्यामजी कृष्णवर्मा
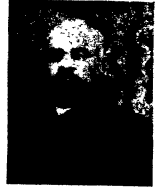
श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी दयानन्द जी के प्रमुख शिष्यों मे से थे। वह काठियावाड़ के निवासी थे। उन्होंने इंगलैण्ड जाकर बैरिस्टरी पास की थी। महर्षि का उन पर बड़ा भरोसा था। जब उन्होंने परोपका-रिणी सभा की स्थापना की, तब उसके सदस्यों में श्याम जी कृष्ण वर्मा

का नाम भी रखा। यद्यपि महर्षि स्वयं अंग्रेज़ी भाषा से सर्वथा अनभिज्ञ थे तो भी वह भारतवासियों के लिए विदेशी भाषा का पढ़ना तथा विदेश जाकर आधुनिक विज्ञान, शिल्प आदि का अध्ययन करना आवश्यक समझते थे। इस विषय मे उन्होंने यूरोप के कुछ विद्वानों से पत्र-व्यवहार भी किया था। स्वामी जी ने श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को विलायत भेज कर देश के लिए अधिक उपयोगी बनाने का विचार कई बार प्रकट किया था। स्वामी जी की मृत्यु के कुछ वर्ष पश्चात् वर्मा जी इंगलैण्ड जाकर बस गये। वहां रह कर उन्होंने भारत के स्वाधीनता संग्राम मे जो बहुमूल्य सहयोग दिया वह राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास जानने वालों को भली प्रकार विदित है। उन्होंने १९०५ मे लन्दन में "इण्डिया हाउस" नाम का एक केन्द्र खोला था और उसमें 'इण्डियन होम रूल सोसायटी' की स्थापना की थी। सोसायटी के प्रधान वे स्वयं थे। सोसायटी की ओर से 'इण्डियन सोशयोलोजिस्ट' नाम का एक मासिक पत्र प्रकाशित होता था। उसके सम्पादक भी श्री वर्मा जी थे। पत्र का मूल्य केवल एक आना था। यह पत्र खूब गरम राजनीति का प्रचार करता था। इंगलैण्ड में रहने वाले भारतीय नौजवानों के लिए 'इण्डियन सोशयोलोजिस्ट' मानो राजनीति का धर्मशास्त्र बना हुआ था। बीसों भारतीय विद्यार्थी वर्माजी की दी हुई छात्रवृत्ति से इंगलैण्ड मे शिक्षा पा रहे थे। मदनलाल धींगड़ा द्वारा कर्जन वायली की लन्दन में हत्या हो जाने पर अंग्रेजी सरकार ने श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे क्रान्ति के नेताओं का इंगलैण्ड में रहना कठिन बना दिया। तब वर्मा जी पेरिस चले गये और वहीं से राष्ट्रीय आन्दोलन चलाने लगे। ला० हरदयाल एम० ए०, भाई परमानन्द आदि प्रमुख क्रान्तिकारी भारतवासी जब विलायत में रहते थे तब उन्हें वर्मा जी से हर प्रकार का सहारा मिलता रहता था।

मदनलाल धींगड़ा

आर्यसमाजी विचार रखने वाले क्रान्तिकारियों में से पहला नाम मदनलाल धींगड़ा का है जिसने लन्दन में कर्जन वायली की हत्या की थी। अदालत मे बयान देते हुए युवक मदनलाल ने कहा था—

"मुझ जैसे निर्धन और मूर्ख युवक-पुत्र के पास माता की भेंट के लिए अपने रक्त के अतिरिक्त और हो ही क्या सकता है। और इसी से मैं अपने रक्त की श्रद्धांजलि माता के चरणों में चढ़ा रहा हूं। भारत में इस समय केवल एक ही शिक्षा की आवश्यकता है और वह है मरना सीखना, और उसके सीखने का एक मात्र ढंग स्वयं मरना है। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि मैं बार बार भारत की गोद में जन्म लूं और उसी के कार्य में प्राण देता रहूं।

वन्दे मातरम्।"

लाला लाजपतराय

लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन करके भारत की राजनीति में मानो जान डालदी। बंग-भंगसे बंगाल के निवासियों के हृदयों को जो पीड़ा पहुंची उसे उन्होंने ऐसे ऊंचे आर्त्तनाद से प्रकट किया कि सारे देश की आंखें खुल गईं। देशवासियो को यह अनुभव होने लगा कि दासता सचमुच एक अभिशाप है। बंग-भंग का आंदोलन देश भर में फैल गया। जिन प्रान्तों में उसने बहुत उग्र रूप धारण किया उनमें से एक पंजाब भी था। उस समय तक पंजाब का राजनैतिक नेतृत्व पूरी तरह लाला लाजपतराय के हाथो में आ चुका था। उनके प्रभावशाली शब्द ने सारे प्रान्त को आवेश की पराकाष्ठा को पहुंचा दिया था। उनकी उस गर्जना के कारण ही उनका "पंजाब केसरी" नाम पड़ा। वे ऋषि दयानन्द के पक्के शिष्य थे। स्वभावतः उनकी गर्जना का आर्य समाजियों पर विशेष प्रभाव पड़ा।

भाई परमानन्द

भाई परमानन्द उन आर्य विद्वानों में से थे जो अपने आरम्भिक जीवन में अनेक विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार करने गये थे। वह पंजाब मे क्रान्तिवाद के मुखिया बन कर सरकार के कोपभाजन बने और काले पानी में जन्म भर की कैद भोगने के लिए भेजे गए। भाई बालमुकुन्द, भाई परमानन्द के चचेरे भाई थे। आपने डी० ए० वी कालेज से बी० ए० की परीक्षा पास की। १९१०-११ ईस्वी में पंजाब में राजनैतिक अशान्ति का जो बवंडर उठा उसने बहुत से नवयुवकों को क्रान्तिकारी बना दिया। भाई बालमुकन्द भी उन नवयुवकों में थे। वह लाहौर-षडयन्त्र केस के सिलसिले में पकड़े गए। दीनानाथ नाम के मुखबिर के बयानों पर जिन अनेक नवयुवकों को फांसी का आदेश

देवतास्वरूप भाई परमानन्द

दिया गया उनमें भाई बालमुकन्द भी थे। भाई बालमुकन्द के बलिदान के साथ लगी हुई एक और सुन्दर बलिदान की सच्ची गाथा भी है।

जब उनकी नवविवाहिता पत्नी को विदित हुआ कि पतिदेव को फांसी मिल गई तो वह उठी, स्नान किया और कपड़े और गहने पहन कर एक चबूतरे पर जा बैठी और वहीं बैठे २ प्राण त्याग दिये। यह भी मातृभूमि की वेदी पर एक बहुमूल्य बलिदान ही था।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

१९१९ के अन्त में अमृतसर में कांग्रेस का जो अधिवेशन हुआ उसकी स्वागत-योजना के चलाने वाले यदि सौ प्रतिशत नही तो पचहत्तर प्रतिशत आर्यसमाजी अवश्य थे। स्वागताध्यक्ष श्री स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तिगत प्रभाव और परिश्रम के बिना अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन शायद ही हो सकता। स्वभावतः उनके चारों ओर जो कार्यकर्ता एकत्र हुए वह आर्य समाजी थे। कांग्रेस के इतिहास में वह पहला ही अवसर था कि स्वागताध्यक्ष ने अपना भाषण राष्ट्र भाषा हिन्दी में पढ़ा। वह भी कांग्रेस को आर्य समाज की एक देन ही थी।

श्री रामप्रसाद बिस्मिल

१९२४-२५ ई० में उत्तर प्रदेश में क्रान्तिकारी दल का विस्तृत संगठन तैयार हो गया। उस दल के अनेक कारनामों में से काकोरी की डकैती सबसे अधिक प्रसिद्ध है। उस दल के प्रमुख नेता श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' कट्टर आर्य समाजी थे। आपके दूसरे साथी श्री गेंदालाल भी आर्य समाजी विचार रखते थे। 'बिस्मिल' बहुत छोटी आयु से ही क्रान्तिकारी विचारों से प्रभावित हो गये थे। उन्होंने सरकारी अड्डों या खजानों पर किये गये कई आक्रमणों में भाग लिया। अन्त मे लखनऊ के समीप काकोरी के स्थान पर जो सनसनीदार डाका डाला गया उसके नेता के रूप मे ही रामप्रसाद भी पकड़े गये। 'बिस्मिल' कवि भी थे। यह उनका कविता का ही उपनाम था। जेल में वह प्रायः जो अपना गीत गाया करते थे उसके अन्तिम पदों में एक देशभक्त की सच्ची तड़पन पाई जाती है। पद यह था—

"अब न पिछले वलवले हैं
और न अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत
बस दिले बिस्मिल में है।"

फांसी पर चढ़ते हुए 'बिस्मिल' ने यह गीत गाया था—

"मालिक तेरी रजा रहे
और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूं
न मेरी आरजू रहे॥"

पुनर्जन्म

श्री एस. बी. माथुर मेरठ

श्री रूसी दारू वाला ने नई दिल्ली के समाचार पत्र Sunday Standerd के ५ अगस्त १९६९ के अंक में पुनर्जीवन पर एक लेख लिखा था! जिसमें बड़ी सुन्दर युक्तियों से पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर प्रकाश डाला है। वह लिखते हैं कि मनुष्य का जीवन अपनी उन्नततम अवस्था में भी एक अल्प बिन्दु के समान है। एक नगण्य परिस्थिति भी मनुष्य जीवन के कोमल सतुलन को नष्ट कर सकती है! मनुष्य आत्मा का शरीर धारण कर लेना मात्र ही नहीं है। शरीर तो आत्मा के लिये कारागार के समान है। चेतन जीवन के लिये भार स्वरूप है, और मानसिक क्रिया के लिये बाधक है।

मनुष्य अपने वातावरण से भौतिक सम्पर्क, सूक्ष्म भावात्मक तथा मानसिक प्रेरणाओं के द्वारा अगणित आघात प्राप्त करता है। वह पदार्थ जीवन, मन और आत्मा के विशाल स्फूर्ति सागर में घिरा हुआ है। इन अनन्त शक्तियों में से जितना वह ग्रहण कर सकता है, उतना ग्रहण कर लेता है। और साथ ही इनका प्रत्युत्तर वह अपने बाहर प्रेषित करता है। शरीर इन शक्तियों को अपनी वृद्धि के लिये उपयोग करता है, और स्वय उनके द्वारा उपयोग में आता है। जब इन पारिस्पारिक क्रियाओं में असतुलन उत्पन्न हो जाता है, तब रोग तथा क्षय उत्पन्न हो जाते हैं, और अन्त में इस शरीर का अन्त हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसे समय आते हैं, जब मनुष्यों के दुःखों को देखकर उसे व्यथा होती है, और वह सोचने लगता है कि भगवान् ने ससार में इतनी व्यथा प्राप्त कराने में क्या बुद्धिमत्ता दिखाई है। जीवन संघर्ष में असमानता पाई जाती है। कुछ लोगों में शारीरिक और मानसिक कमी पाई जाती है। कुछ लोग समृद्धि के मध्य में पैदा होते हैं, जबकि अनेकों को जीवन के सामान्य सुख भी उपलब्ध नहीं होते हैं। साधारण मनुष्यों का यह विश्वास है कि सुखी लोगों ने अपने सुकर्मों द्वारा इस दशा को प्राप्त किया है। और दुखी लोग दैविक नियमों के उल्लघंन के कारण इस अवस्था में है। इस महान् प्रश्न का एक उत्तर पुनर्जन्म की सत्यता को प्रमाणित करता है। यह निष्कर्ष तर्क पूर्ण है कि आत्म सिद्धि के केवल आर्थिक विकास के लिये भी एक सांसारिक जीवन नितान्त अपर्याप्त है।

पुनर्जन्म का विचार नया नहीं है प्लेटो, पाइथोगोरिस, प्लोटिनस आयमबिलोकस, बुद्ध सभी यह मानते थे कि आत्माऐं ससार में बार २ आती हैं और परीक्षण तथा त्रुटियों के द्वारा वह आगे अनुभव प्राप्त कर सकें। ओरीगेन, सन्त आगस्टीन तथा महान् सन्त तमस एक्वीनीस पुनर्जन्म को अस्वीकार नहीं करते थे। A. D. 533 में कुस्तुनतुनिया की द्वितीय सभा ने ईसाई धर्म में कुछ अपने कारणों से पुनर्जन्म के विचारों को ईसाई धर्म से निकाल दिया था, तथा इसे धर्म विरुद्ध माना था। पुनर्जन्म के विरुद्ध कई आपत्तियां की जाती है जिसमें सब से तीव्र यह है कि यदि आत्मा का जन्म कई बार होता है तो इसे अपने पूर्व जन्मों का स्मरण क्यों नही रहता है। कर्म आधार का सिद्धान्त यह नहीं है। कि आत्मा को त्रुटियो का दण्ड ही भोगना पड़े। सच तो यह है कि इस सिद्धान्त की मूल भावना आत्म-सुधार है। प्रकृति माता वर्तमान जीवन में पूर्व कर्मों को बीज रूप में रखती हैं, जिसके द्वारा कुछ प्रभाव उत्पन्न होते हैं। याज्ञवलक्य स्मृति में बताया गया है कि "कार्य की सफलता, भाग्य तथा प्रयत्नों पर समान रूप से निर्भर है, इसमें भाग्य पूर्व जन्म में किये गये प्रयत्नों को सूचित करता है।" इस प्रकार कर्म-सिद्धान्त शुद्ध रूप से कार्य करता रहता है और आत्मा पूर्व जन्म के कार्यों के भार से दबने से बच जाती है। आत्मा अपनी विश्व-यात्रा में समय २ पर या रूक कर नवीन शक्ति तथा स्फूर्ति ग्रहण करके पुनः उठती रहती है। और आगे के कार्यों के लिये तैयार होती रहती है। उदाहरण के लिये हम विस्मरण रोग के व्यक्ति को ले सकते हैं, यद्यपि ऐसा व्यक्ति नाम, स्थान कार्यों को भूल जाता है। परन्तु आधारिक मनोवैज्ञानिक प्रेरणायें जो उसमें पहले थी, वे बिना प्रभावित हुये अब भी कार्यान्वित होती है।

इसी प्रकार मनुष्य पूर्व जन्म की स्मृति से विहीन होते हुये भी पूर्व जन्म की बीज रूपी प्रवृतियों से प्रभावित होता है। पुनर्जन्म के विरोध में दूसरा तर्क यह प्रस्तुत किया जाता है कि हिन्दू धर्म के अतिरिक्त किसी अन्य धार्मिक ग्रन्थ में पुनर्जीवन के मत का प्रतिपादन नहीं किया गया है। यही कारण है कि एक साधारण ईसाई पुनर्जन्म के सिद्धान्त को पूर्वीय देशों के लोगों की मनगढत ही मानता है। इस विश्वास की पुष्टि के लिये यह आवश्यक है कि यह माना जावे कि ईसाई धर्म ग्रन्थों में बाद में सुविधानुसार संशोधन नहीं किये गये। अर्ध-आत्म-विद्या सम्बन्धी साहित्य को छोड़ कर जिसमें मीसीपी मत के लोगों ने कुछ निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं, पुनर्जीवन सम्बन्धी वास्तविक साहित्य का अभाव ही है। इनमें से एक ऐसी पुस्तक है "मेन्सन्स आफ दि सोल, दा, कासिक कन्सेपशन" जिसके लेखक डा० स्पेन्सर लेविस है।

डा० लेविस ने अपनी पुस्तक में पुनर्जीवन मत की पुष्टिमें रोचक तथा निर्णयात्मक ढंग से तथ्य प्रस्तुत किये हैं—

न्यु टैस्टामेन्ट के नवें अध्याय "गास्पेल आफ सेन्ट जान" में वर्णित एक घटना का डा० लेविस ने उल्लेख किया है। ईसू अपने कुछ अनुयायियों के साथ एक मार्ग पर आ रहे थे। उन्हें एक ऐसा अन्धा व्यक्ति मिला जो जन्म से अन्धा था। अनुयायियों ने पूछा, "प्रभु इसमें किसका पाप है। इसका या इसके माता-पिता का जो यह अन्धा पैदा हुआ है। ईसू ने उत्तर दिया, न तो इस मनुष्य ने पाप किया है और न इसके माता-पिता ने वरन् भगवान् के कार्यों को इसके द्वारा दर्शाया गया है। इस घटना से यह बात प्रतीत होती है कि ईसू के अनुयायियों का पुनर्जन्म में विश्वास था। इसी प्रकार का एक अन्य तथ्य सेन्ट जान के तीसरे अध्याय के आठवें पद में मिलता है, इस पद में कहा गया है कि मनुष्य की आत्मा पवन के समान आती जाती है, यह कोई नहीं जानता है कि कितनी बार किस दिशा में तथा किस ढंग से यह भ्रमण करेगी।

डा० लेविस ने पुनर्जन्म के बारे में सेन्ट मार्कों के नवें अध्याय, "सेन्ट मैथ्यू के सौलहवें अध्याय तथा ल्यूक के नवे अध्याय में पाये जाने वाले तथ्यों की ओर भी संकेत किया है। डा० लेविस ने कुछ गहन तथ्यों पर भी अपने विचार प्रगट किये हैं, एक आत्मा कितने बार जन्म लेती है! दो जन्मों के मध्य में यदि कोई अवकाश होता है तो कितना। क्या एक आत्मा का एक ही लिंग में पुनर्जन्म होता है। रोजी क्रूशव ने आत्म-विद्या सम्बन्धी गूढ़ अध्ययन के पश्चात् यह मोटा औसत निकाला था कि आत्मा के प्रत्येक जन्म में १४४ वर्ष का समय लगता है। मनुष्य जीवन की अवधि ७० वर्ष की मान कर यह कहा गया है कि आत्मा शेष वर्ष दूसरे संसारों में जिनका वर्णन कुछ धार्मिक ग्रन्थों में पाया जाता है, व्यतीत करती है। इस बात की कोई निश्चित गणना नहीं की जा सकती है कि आत्मा का जन्म-कितनी बार होता है। क्योंकि यह विषय मानुषी दृष्टि से परे है। उक्त सम्प्रदाय के अनुसार एक आत्मा साधारणतः एक ही लिंग में जन्म लेती है, यद्यपि कभी-२ इस नियम में परिवर्तन भी हो जाता है।

सत्य तो यह है कि पुनर्जन्म का विश्वास केवल कोई दार्शनिक विचार नहीं है अथवा न वह किसी धर्म का कोई अटल नियम है। यह तो एक आन्तरिक मनोवैज्ञानिक अनुभव है। आत्म विद्या का अन्वेषक ज्यों २ अपने मार्ग पर बढ़ता जाता है, वह अपने आन्तरिक चेतन में अपने पूर्व जन्म का ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होता जाता है, और अपनी पवित्र भावनाओं द्वारा वह पिछले पाप पुण्य की गणना कर लेता है।

नोट—वैदिक धर्म के अनुसार जीवात्मा पुनर्जन्म के चक्कर में उस समय तक रहता है जब तक उसके सारे संचित कर्म योग या साधना द्वारा पूर्णतया समाप्त नहीं हो जाते।

यह एक षड़यन्त्र है....?

श्री जगलाल चौधरी एम.एल.ए.,
भूतपूर्व आबकारी मंत्री,
बिहार सरकार

एक दिन एक अखबार में पढ़ा, एक स्त्री ने भूख से लाचार होकर अपने बच्चे को बेच कर कुछ रुपये प्राप्त किये। मनमें बड़ा आश्चर्य हुआ। कैसी स्त्री थी जिसने अपने बच्चे को दूसरे के हाथ सौंप दिया? फिर सोचा कि उस बेचारी का बच्चा उसी की गोद में मरता अथवा पहले स्वय वहीं मर जाती तो उस बच्चे को कोई दूसरा पालता-पोसता अथवा अनाथ बच्चा भूखों मर जाता। अच्छाहुआकि उसीमा ने अपने जीवन काल मे ही बच्चे को एक सम्पन्न व्यक्ति के हाथ सौंप दिया। इसमे भी उसकी ममता और वात्सल्य दीख पड़ता है। एक दिन फिर समाचार मिला कि एक स्त्री भूख की ज्वाला सहने और बच्चे को भूख से तड़पते देखने में अपने को असमर्थ पाकर बच्चे को गोद मे लेकर नदी में डूब मरी। अर्थात् भूख से तिलतिल मरने के बदले थोड़ी ही देर मे दोनों का प्राणान्त हो गया।

एक दिन एक व्यभिचारिणी अपने नवजात शिशु को किसी एकान्त स्थान में त्याग कर निकट ही छिपी उसे देखती रही कि कुत्ते-बिल्ली उसके बच्चे पर आक्रमण न करें। एक पथिक बच्चे की रुलाई सुनकर उस ओर गया और परिस्थिति भाप कर उसने बच्चे को लेकर पुलिस के हवाले कर दिया। बच्चा अस्पताल मे पहुंचाया गया और बाद मे उसे एक सन्तानहीन सज्जन के घर मे शरण मिल गयी। बहुत ही अच्छा हुआ। व्यभिचारिणी बदनामी से बची और सन्तान हीन को सन्तान मिली। एक अन्य व्यभिचारिणी ने बदनामीसे बचने के लिये, एक डाक्टर की सहायता से अपना गर्भपात करा लिया। मैं तो सुनते ही उस स्त्री और डाक्टर के प्रति क्रोध से उबल उठा। दोनों ने ही महापाप किया, नृशंस हत्या की। कैसे क्रूर व अमानुष थे वे? कानून में भी यह काम अपराध माना जाता है।

आज सुन रहा हूं, हमारे देश में भोज्य द्रव्य की बहुत कमी हो गयी है। नेतागण बड़ी चिन्ता में पड़ गये हैं कि अकाल की स्थिति कैसे टाली जाय। उनका कहना है कि वर्षा मंत्र द्वारा नहीं लायी जा सकती और न बाढ़ ही रोकने की क्षमता वे अपने में पाते हैं। लोगों को भूखों मरने से बचाना ही है। अतः वह विदेशों से अनाज खरीद कर (नकद दाम देकर या उधार ही सही) या भिक्षाटन (एक स्वतन्त्र राष्ट्र के लिये अति हीन लज्जास्पद कृत्य) कर अनाज मंगा रहे हैं। फिर देखते हैं कि इससे भी काम नहीं चल रहा है तो जनसंख्या ही घटाने के उपाय सोच रहे हैं। संयम की शिक्षा देना वे अव्यवहारिक और सिनेमा के अश्लील गीतों का प्रचार व्यावहारिक मानते हैं। कुछ औषधियों और गर्भ निरोधक यन्त्र आजमाये गये। सफलता न मिलने पर बध्याकरण के लिये शल्य चिकित्सा की शरण ली गयी। अब लूप नामक यन्त्र का प्रयोग हो रहा है। फिर भी सफलता की आशा नहीं देख भ्रूण हत्या को कानूनन छूट की बात सोची जा रही है।

सुनता हूं हमारे देश में चूहों की संख्या इतनी बढ़ गयी है कि वे मनुष्य के बराबर अनाज खा जाते हैं। मनुष्य के बच्चे तो साल भर तक अनाज खाते ही नहीं, पर चूहे के बच्चे एक सप्ताह के बाद ही खाने और चुगने लगते हैं। चूहियां तीन-तीन महीने पर दर्जनों बच्चे देती हैं।

हमारी सरकार शराब बनाने में भी बहुत अनाज खर्च करती है। यह अनाज भी बचाकर मनुष्यों को खिलाया जा सकता है बहुत सी कृषि में तम्बाकू आदि हानिकारक वस्तुएं उपजायी जाती हैं उनमें भी अनाज उपजा कर मनुष्य खा सकते हैं। यदि हम ये कार्य करें तो अनुत्पन्न मानव को मारने सदृश घृणित पाप करने की आवश्यकता न पड़े।

अभी अभी एक सज्जन ने एक बढ़िया सुझाव दिया है। उनका कहना है कि बच्चे तो लगभग एक वर्ष की उम्र तक अनाज खाते ही नहीं चार-पांच वर्षों तक बहुत थोड़ा ही खाते हैं और इसके बाद कुछ उत्पादन करने लगते हैं। इसके विपरीत बूढ़े बिल्कुल बेकार रहकर खाते और पहनते रहते हैं। क्यों न बूढ़ों को फांसी देने की योजना बनायी जाय? इस पर तो मेरे आनन्द की सीमा नहीं रही। मैं तो आनन्द के मारे उछल पड़ा। मैं स्वय ७२ वर्षों का हो चुका, चलने फिरने मे कष्ट पाता हूं। मनीषियो ने कहा है बिना परिश्रम किये खाना चोरी है। पर मुझे चोर कहलाना पसन्द नहीं। अतः कुछ समाज सग करते रहने का ढोंग कर रहा हूं। शराब बन्दी का आन्दोलन कर रहा हूं, सवारी पर चलता हूं व्याख्यान देता हूं चोर कहलाना पसन्द भले ही नहीं है पर चोरी तो कर ही रहा हूं। मित्र ने अच्छा सुझाव दिया है। सबसे पहले मैं अपनी गर्दन झुकाता हूं और सरकार से प्रार्थना करता हू—कर कुठार आय यह सीसा।

यदि निम्नांकित तथ्यों पर ठंडे दिमाग से सोचा जाय तो अनाज की कमी और तज्जनित भुखमरी और नेताओं की असह्य चिंता अबोध बालकों की तोतली बोली सी दीख पड़ेगी—

१ हमारी सरकार द्वारा प्रकाशित आकड़ों के अनुसार—सन् १९६४-६५ में उत्पादित अनाज २१२.१२ करोड़ मन। सन् १९६५ की जनसंख्या (६१ की गणना से हिसाब जोड़ कर) ......४५ करोड़

अतः प्रतिदिन प्रति व्यक्ति अनाज की उपलब्धि—८२८ छटांक।

मैं सरकार से पूछना चाहता हूं कि हमारे देश में किस परिवार को इस दर से अनाज मिल सका है? किसी भी एक परिवार को इस दर से अनाज पन्द्रह बीस दिन व एक महीना भी खिला कर देखा तो जाय कि वह परिवार इसे पचा सकता है? याद रहे यह केवल अनाज की बात है। साग, फल, तरकारी, मास मछली दूध दही, अडे आदि इतने अनाज के अतिरिक्त पैदा हुए ये और वे भी तो उपलब्ध हुए।

२. १९३०-३८ मे भारत में अनाज की फसल लगी भूमि १८,९७ ६१,५१४ एकड़।

इस भूमि में उत्पादित्त अनाज १, ७८,४४,४०,०५७ मन।

अत. भूमि की उर्बर शक्ति प्रति एकड़—९.५६ मन।

सन् १९६४ मे अनाज की फसल मे लगी भूमि—२८,७६,२४,४००० एकड़।

इस भूमि में उत्पादित अनाज-२,१२,४६,०६, ७०१ मन।

अतः भूमि की उर्बर शक्ति प्रति एकड़—७.३९ मन।

इससे दीख पड़ता है कि सन् १९३७-३८ के बाद के २८ वर्षों में हमारी भूमि की उर्बर शक्ति प्रति एकड़ २.१७ मन घट गयी।

अब मैं पूछना चाहता हू कि इन २८ वर्षों मे अन्दर की सिंचाई योजनाओं, बाढ़ नियन्त्रण योजनाओं और खाद कारखानों के उत्पादन और वितरण का फल यदि उर्बरा शक्ति को घटाना ही था तो इन योजनाओं की आवश्यकता ही क्या थी?

निष्कर्ष यह है कि अनाज की कमी नहीं है, झूठे प्रचार द्वारा आतंक फैला कर अनाज का दाम बढा देने का षडयन्त्र है और इस षड़यन्त्र में बड़े भूमिधर, बड़े बड़े व्यापारी और बड़े बड़े सरकारी अफसरों का हाथ है और अधी सरकार की बेवकूफी है। परिवार नियोजन का आन्दोलन इस षडयन्त्र पर पर्दा डालने का दूसरा ही षडयन्त्र है।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

—आर्यसमाज का तीसरा नियम

वेद सप्ताह श्रावणी पर्व पर—लगातार सात दिन, आर्य जन वेद कथा, वेद श्रवण और वेद प्रचार का व्रत लें।

साम्प्रदायिक कौन है?

श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार, नई दिल्ली १

१९६१ की जनगणना को अमान्य घोषित किया जा रहा है। क्योंकि पंजाब के कुछ हिन्दुओं ने राष्ट्रीयता का परिचय दिया था। भारतीय होने का दावा किया था। अतः उन्होंने अपनी भाषा हिन्दी लिखाई थी। पंजाबी रोग से मुक्त, संकीर्ण प्रान्तीयता से मुक्त और शून्य लोगों के कार्य की सराहना करने के बदले उनको साम्प्रदायिक कहा जाता है और भारतीयता विरोधी पंजाबी पन को प्रान्तीय अभिशाप और राष्ट्रीय पाप न कह कर उसकी सराहना की जा रही है।

जो लोग इस देश की ८४ प्रतिशत बहुसंख्यक समाज का बल घटाना ही उसको खण्ड-खण्ड करना ही राष्ट्रीयता मानते हैं और अपने जन्म की सार्थकता मानते हैं, उनकी शिकायत करने से कोई लाभ नहीं है। परन्तु जो लोग भारतीय संस्कृति का अपने को रक्षक कहते हैं, वह लोग जब पंजाब के हिन्दुओं को गुरुमुखी सीखने की सलाह देते हैं, तब आश्चर्य होता है।

शास्त्रीय दृष्टि से पंजाबी बोली है, भाषा नहीं है। जिन लोगों ने पंजाबी को भाषा माना है, उन्होंने शास्त्र को ताक पर रख दिया है। ग्रियसेन को वेद वाक्य मानने वाले यह क्यों भूल जाते हैं कि उसने रोहतक की बांगरू और पंजाबी को एक समान माना है। यदि बांगरू भाषा नहीं है, तो पंजाबी कैसे भाषा हो सकती है।

ठीक है, कोई भी बोली भाषा बनाई जा सकती है। पंजाबी को भाषा बनाने का वही लोग उद्योग करेंगे, जो भारत को एक राष्ट्र नहीं मानते। जो भारत को एक राष्ट्र मानने वाले एक राष्ट्र भाषा स्वीकार करेंगे। उनका जय घोष होगा:—

"एक देश एक राष्ट्र एक राष्ट्र भाषा"

जो लोग भारत को एक राष्ट्र नहीं बनाना चाहते वह लोग ही पंजाबी और गुरुमुखी पढ़ने की सलाह दे सकते हैं। सच्चा भारतीय कभी भी, स्वप्न में भी गुरुमुखी सीखने की सलाह नहीं दे सकता।

पंजाब भारतीयता की और भारतीय राष्ट्रीय धारा से सदा पृथक् रहा है। ब्रिटिश शासन की यह नीति हो, या पंजाब के लोगों की प्रान्तिक मनोवृत्ति हो, कारण कुछ भी हो, पंजाब भारतीयता की धारा से सदा पृथक् रहा। आक्रान्ताओं ने भी इसमें सहायता दी। यही कारण है कि उर्दू को इसी प्रान्त ने पूर्णरूप से अपनाया और आज भी अपनाए हुए है। उर्दू को जिन लोगों ने अपनाया, वह लोग यदि आज अराष्ट्रीय मनोवृत्ति का परिचय दें तो क्या आश्चर्य? जो लोग उर्दू पढ़ने से अपने व्यवसाय की, अपनी सम्पत्ति की रक्षा कहते रहे, यदि उनको यह सलाह दी जाय कि मन्त्री पद पाने के लिये गुरुमुखी सीखो तो क्या कोई विस्मय की बात है?

हिन्दी किसी की भाषा नहीं है। पूर्णिया से बाडमेर तक, यह बोली और समझी जाने वाली भाषा है। अमरनाथ से रामेश्वर तक यह बोली और समझी जाती है। राउर केला के इस्पात के कारखाने में काम करने वाला श्री कामराज के देश का तमिल मजदूर अपना काम किसमें चलाता है हिन्दी में—उड़िया में नहीं। हिन्दी की यह शक्ति है। श्री डा० ग्रियसेन के मत में हिन्दी का निर्माण ७७ बोलियों से हुआ है। किन्तु श्री अशोक मित्र जनगणना आयुक्त—का मत है कि हिन्दी ९९९ बोलियों का मिश्रण है।

आज की हिन्दी मे सरहिन्द तक की बोलियों का मिश्रण है। पंजाबी ने इसमें विलीन होने से इन्कार किया। अपनी पृथकता का परिचय दिया। पंजाबी की यह अराष्ट्रीय प्रवृत्ति ही पंजाबी सूबा बनाने का मूल कारण हुई। हिन्दी-रूपी गंगा मे पंजाबी विलीन होने को तैयार नहीं, वह नागरी लिपि का परिधान पहनने को भी उद्यत नहीं है। यह भारत-प्रेम नहीं है? यह पंथ-प्रेम है। भारत के प्रति जो निष्ठा रखते हैं, भक्ति रखते हैं, वह लोग मगधी, भोजपुरी, मैथिली अवधी, ब्रज, छत्तीसगढ़ी, बुन्देलखण्डी, रुहेलखण्डी, मालवी के समान पंजाबी को हिन्दी में विलीन करने में पुण्य मानेंगे। जनगणना के समय हिन्दी मातृभाषा लिखाने वालों ने अपनी भारत-भक्ति का परिचय दिया है। यह भारत-भक्ति दण्डित न की जानी चाहिये।

नमस्ते जब ऋषि ने चलाई, तब उसका उपहास किया गया। परन्तु जब सोवियत रूस के प्रधान मन्त्री म० ख्रुश्चेव ने डा० राधाकृष्णन का स्वागत "गुरुदेव! नमस्ते" कहकर किया, तो नमस्ते भारत-सोवियत रूस का सम्मिलित सेतु हो गया। नमस्ते अब अन्तर्राष्ट्रीय है। नमस्ते कहने वाले को क्या हम साम्प्रदायिक कहेंगे?

ठीक इसीप्रकार छिन्न-भिन्न भारत को एक सूत्र में बांधने के विचार से संस्कृत के महा पण्डित ने—ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका संस्कृत में लिखने के बाद - (पहला संस्करण विशुद्ध संस्कृत में है) हिन्दी में सत्यार्थप्रकाश अपना महान् ग्रन्थ लिखा, पृष्ठों की संख्या और आकार की दृष्टि से इस ग्रन्थ का मुकाबला आज का शायद ही कोई एक हिन्दी ग्रन्थ कर सके। यह एक गुजराती ने हिन्दी में लिखा था क्या वह साम्प्रदायिक था? यदि महात्मा गांधी यंग इण्डिया या हरिजन को हिन्दी में निकालते, अंग्रेजी में न निकालते तो आज गांधी स्मारक निधि अपना कार्य अंग्रेजी में नहीं करती। इस देश की शासक पार्टी अंग्रेजी का प्रभुत्व टिकाये रखने में अपना सौभाग्य नहीं मानती। म० गांधी बैरिस्टर थे, अंग्रेजी के प्रति भक्ति रखते थे। क्या उनको लन्दन के विनाश से दुःख होता था। उनका जीवन-दर्शन भारतीय नहीं था। गांधी जी राम-कृष्ण में विश्वास नहीं करते थे। अतः उनकी कांग्रेस भी राम कृष्ण में विश्वास नहीं करती। इसी कारण से पंजाब के जिन लोगों ने भारत भक्ति का परिचय दिया है, राष्ट्र के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की है, उनको वह साम्प्रदायिक मानता और कहता है। क्योंकि वह स्वयं साम्प्रदायिक मनोवृत्ति की है।

भारतकी रक्षा करनी है,भारतका विस्तार करना है, तो गुरुमुखी छोड़नी होगी। यह गरीब देश १४ लिपियां नहीं सिखा सकता। इस देश को एक भाषा और एक लिपि चाहिए। हमको जीवित रहना है, जीवन को विनाश करने वाले तत्वों के साथ समझौता नहीं किया जा सकता। जो आज भी पंजाबीयत को जीवित रखना चाहते जो भारतीय होने को तैयार नहीं हैं. उनकी बात सुनी नहीं जा सकती। हिन्दी को जिन लोगों ने अपनी भाषा लिखाया है उनके सत्साहस की, उनकी प्रशासन के प्रति दिखाई दृढ़ता का अभिनन्दन होना चाहिये। उन्होंने राष्ट्र को सच्चा मार्ग दिखाया है। राष्ट्र की सेवा की है।

हमारा चिन्तन और हमारे विचार की धारा मगध, अवध, बुन्देलखण्ड, मालवा से विकृत नहीं होनी चाहिए, दूषित न होनी चाहिए। वह विशुद्ध भारतीय होनी चाहिए। आज के ही सम्पूर्ण भारत की दृष्टि से ही नहीं, भावी भारत की दृष्टि से होनी चाहिए। बृहत्तर भारतीय मनोवृत्ति से हमें सोचना और विचारना चाहिये। उसमे प्रान्तीयता का कोई स्थान नहीं है। प्रान्तिक भावना का अन्त होना चाहिए। यह तब होगा, जब हम बोलियों का मोह छोड़ेंगे। बोलियों को भाषा बनाने का प्रयास न करेंगे। हम जो कुछ करेंगे वह महान् भारत के लिए करेंगे। पंजाबी सूबे के लिए, जिन लोगों की दृष्टि इतनी विस्तृत नहीं हैं, इतनी उदात्त नहीं है, वे ही संकीर्ण मनोवृत्ति के लोग पदलोलुप मन्त्री बनने के इच्छुक लोग गुरुमुखी को सीखने की सलाह दे सकते हैं और हिन्दी को मातृभाषा मानने वालों का अभिनन्दन करने के बदले उनको साम्प्रदायिक कह सकते हैं।

पंजाबी सूबा बनाना मानने वाले हिन्दी के समर्थकों को साम्प्रदायिक कहें, यह एक विधि विडम्बना नहीं है, तो और क्या है?

८४ प्रतिशत बहुसंख्यक के समाज की शक्ति घटाना ही जो लोग परम पुरुषार्थ मानते हैं, फिर इसके लिए जो लोग इस देश में अल्पसंख्यक वर्गों का निर्णय करना अपना कर्त्तव्य मानते हैं, उनसे शिकायत करना व्यर्थ है। शासक पार्टी को भारतीय होने का अभिमान नहीं है। भारत के प्रति उसको कोई अभिमान नहीं है। यदि होता तो क्या वह अब तक अंग्रेजी को इस देश में जीवित रखती? और भारत-विभाजन हंसते-हंसते स्वीकार करती? भारत-विभाजन को जो पार्टी पाप नहीं मानती और उसका प्रायश्चित करने को तैयार नहीं हैं, और आज भी अमरीका से वाहवाही पाने, डालर पाने, शान्ति प्रेमी की प्रशस्ति पत्र पाने के लिए ७६ एकड़ जमीन चुपचाप पाकिस्तान को दे सकती है, वह भारत भक्त नहीं हो सकती। जो भारत भक्त नहीं वह यदि हिन्दी-प्रेम को राष्ट्र प्रेम न मान कर साम्प्रदायिक कहे, तो उस विकृत मस्तिष्क का काम क्या श्रद्धा-योग्य माना जायगा?

साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के वह लोग हैं, जो आज भी अंग्रेजी के प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं, उसको दृढ़ करने में सहायक हैं, और दासता की इस जंजीर को बढ़ा रहे हैं। हिन्दी-भक्त, हिन्दी प्रेमी कभी साम्प्रदायिक नहीं हो सकता। वह उदार है, भारतीय है, महान् भारत पर गर्व करने वाला है। महान् भारत का गर्वी क्या कभी स्वप्न में भी साम्प्रदायिक हो सकता है।

इंगलैंड-यूरुप में भोगवाद के विभिन्न चमत्कार

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी

इंगलैण्ड-यूरोप भोगवादियों के देश हैं। खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ ही वहां के लोगों के जीवन का मुख्य उद्देश्य हैं। वहां जन-जीवन की प्रत्येक गति-विधि भोगवाद से प्रभावित रहती है। भारत की भांति संसार को दुःख सागर मानकर वैराग्य लेना; और मोक्ष की खोज में पहाड़ों की कन्दराओं व गुफाओं में बैठकर तपस्या करने के वह आदी नहीं हैं। नाचते, कूदते, खाते, पीते हुये ही वह मोक्ष में जाना चाहते हैं; और वहां पहुंच कर भी वह ईश्वर के साथ बालडांस (नाच) करने की अभिलाषा रखते हैं। स्वर्ग की कल्पना भी भोगवाद की दृष्टि से ही वह करते हैं; और वहां शराब, की नदियों और सुन्दर परियों व भोगवाद की खुली छूट के स्वप्न देखते हैं।

फैशन व परिवर्तन के पुजारी

भोगवाद की सबसे बड़ी देन उन्हें फैशन या परिवर्तन के रूप में मिली है। किसी भी क्षेत्र में एक वस्तु को एक ही रूप में प्रयोग करते रहने के वह आदी नहीं हैं। उन्हें प्रत्येक दिशा में नित्य परिवर्तन ही प्रिय है। घर, कपड़ा, मोटर, आदि सभी भोग सामग्रियों में वह परिवर्तन चाहते हैं। यही कारण है कि बाजार में एक वस्तु एक वर्ष के पश्चात् अपना मूल्य खो बैठती है, और वह नया स्वरूप धारण करने पर ही चल पाती है। जो व्यक्ति यहां के समाज में एक ही प्रकार का कपड़ा, मोटर आदि का प्रयोग करते हैं उन्हें पिछड़ा हुआ समझा जाता है। दिनमें कई बार सूट बदलने और प्रतिवर्ष नये नये मोडल की मोटर का प्रयोग करने वाला व्यक्ति ही वहां बड़ा समझा जाता है। व्यक्ति का मूल्य वहां उसके धन व ठाट-बाट में ही है। निर्धन व्यक्तियों के लिये तो यूरुप नरक के समान ही है।

परिवर्तन की भावना यूरोप में इतनी चरम सीमा को पहुंच चुकी है कि लोग एक स्त्री के साथ ही बन्धे रहना पसन्द नहीं करते हैं। पति-पत्नी का एक-दूसरे को तलाक देना वहां एक साधारण घटना समझी जाती है। यही कारण है कि इंगलैंड-यूरुप में अधिकांश गृहस्थ जीवन बिना पतवार की नौका के समान है। वहां ऐसे सौभाग्यशाली परिवार बहुत कम हैं जहां पति-पत्नी के बीच सन्देह, संघर्ष व तनाव न हो। कब कौन किस को छोड़ दे - इस डर से पति-पत्नी बहुधा अपना २ हिसाब बैंक में अलग २ रखते हैं। एक दूसरे के व्यक्तिगत जीवन पर कड़ी दृष्टि रखते हैं। इस प्रकार भारत की भांति वहां का गृहस्थ जीवन सुख, शान्ति, प्रेम व सेवा का स्थान न होकर एक अशान्ति व कलह का जीवन होता है।

भौतिक उन्नति

भोगवाद द्वारा उत्पन्न भोग-सामग्रियो में नित्य परिवर्तन की तीव्र अभिलाषा ही वास्तव में वहां की भौतिक उन्नति का मूल कारण है। इसी के कारण वहां की झोपड़ी गगन चुम्बी महल, हल टैक्टर और बैलगाड़ी राकेट का रूप धारण कर गई है। भारत और यूरुप में सबसे बड़ा अन्तर यही है कि यहां हजारों-लाखों वर्षों से एक ही प्रकार के मकान, रहन-सहन, बैलगाड़ी लिए चले आते हैं और इनमें रत्ती भर भी परिवर्तन करने की आवश्यकता अनुभव नहीं की गई। वहां यूरुप में एक भी वस्तु ऐसी नहीं जिसमें वहां के लोगों ने आमूल-चूल परिवर्तन न कर दिया हो। मशीन और वैज्ञानिक उन्नति के पीछे वास्तव में वहां परिवर्तन की तीव्र अभिलाषा का ही हाथ है।

चिन्ता, और पागलपन, स्नायु-हृदय-रोग

भौतिक उन्नति और आय एवं भोग के समस्त साधन उपलब्ध होने पर भी इंगलैण्ड-यूरुप के अधिकांश लोगों के चहरों पर चिन्ता व बेचैनी रहती है, पागलपन व हृदय रोग भी वहां अधिक होता है। इसके प्रमुख कारण मेरी दृष्टिमें दो ही हैं। पहिला पारिवारिक कलह व संघर्ष और दूसरा असीमित आवश्यकतायें। पारिवारिक कलह को समाप्त करने के लिये वहां बड़े २ मनोवैज्ञानिक डाक्टर होते हैं जो पति-पत्नि को उनकी समस्याओं के समाधानार्थ सम्मति देते हैं। इस काम की बड़ी २ फीस लेते हैं। वह केवल पति-पत्नी में मेल कराने की ही सम्मति नहीं देते अपितु तलाक देने की इच्छुक पत्नी या पति को तलाक लेने की तरकीब भी बतलाते हैं।

सब कुछ होने पर भी मानव कैसे दुःखी रहता है यह आश्चर्य जनक दृश्य यूरुप में ही देखने को मिलते हैं। वास्तव में वहां के लोग भौतिक निर्धन से दुःखी नहीं अपितु मानसिक निर्धनता व चिन्ताओं से दुःखी हैं। जिस प्रकार नदी के किनारे रहता हुआ भी यदि कोई व्यक्ति प्यासा मर रहा हो उसी प्रकार सब कुछ रहते हुये भी वहां के अधिकांश लोग दुःखी व परेशान हैं।

स्वार्थपरता

भोगवाद और स्वार्थवाद मिली हुई वस्तुयें हैं। अतः इंगलैण्ड-यूरुप के समाज में स्वार्थ का सर्वत्र बोल-बाला है। इसके लिये अपने स्वार्थ का परित्याग करने की वहां के लोगो में आदत नहीं है। भारत की भांति इंगलैण्ड-यूरुप में संयुक्त परिवार कहीं नहीं है। अनाथ विधवा अन्धा-लंगड़ा व्यक्ति परिवार में नहीं—सरकार के अनाथालयों में ही शरण पाता है। अतिथि सत्कार की भावना वहां है ही नहीं। यदि कोई किसी को वहां खिलाता भी है तो खाने और खिलाने वाले दोनों ही इस बात को जानते होते हैं कि बदले में खिलाना भी होगा। यदि किन्हीं कारणों से बदले

(शेष पृष्ठ ११ पर)

श्री पं० हरिशरण जी का दुखद निधन सर्प चिकित्सक सर्प द्वारा दिवंगत

रांची पं० हरिशरण जी आर्य सार्वदेशिक सभान्तर्गत संगठित अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध समिति की ओर से १० दिसम्बर १९६६ ई० को छोटा नागपुर के हजारी बाग जिले के गिरीडीह क्षेत्र में संयोजक के रूप में पंजाब से यहां आये थे। तत्पश्चात् वे खूंटी, महुआडांड व नेतरहाट की पहाड़ियों में विदेशी मिशनरियों के विरुद्ध कार्य करते रहे। पिछले ४-५ वर्षों से वे स्वतन्त्र रूप से रांची जिले के सिमडेगा सबडिवीजन में जो यहां से १२६ मील पर स्थित है और लगभग ८०-९० प्रतिशत आदिवासी वहां के ईसाई बन चुके हैं, वहां उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया। वे निर्भीकतापूर्वक अकेले सिमडेगा में प्रचार करते रहे। बहुत से ग्रामों की उन्होंने यात्रा की। कई लोगों को उन्होंने ईसाई होने से बचाया। उन पर मिशनरियों के घातक आक्रमण भय सदा बना रहता था एक बार तो उन्हें पादरी बलि चढ़ाने के लिये, जब वे रात्रि में एक ग्राम में प्रचार कर रहे थे, पकड़ कर ले गये पर आधी रात में सहसा पुलिस की सहायता से उनके प्राण बचे। उन्हें सम्पूर्ण बाइबल कंठस्थ थी अतः वे बाइबल का खोखलापन ग्रामीणों के सामने मेलों में, बाजारों में अच्छी तरह खोला करते थे, विदेशी पादरी इनसे आतंकित थे। उनके प्रचार के कारण आर्य समाज के नाम से खुल्लमखुल्ला प्रचार समाज का वहां सम्भव है। उन्होंने ५-६ वर्षों पूर्व रांची आर्य समाज के निकट ५ महीनों से स्थापित अमेरिकन सेवेन्थ डे एडवन्टिनिस्ट मिशन के आस्ट्रेलियन पादरी डी० के० डान (D.K. Dawn) को ३० मिनट में एक शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया। फलतः वह प्रचार केन्द्र दूसरे दिन से बन्द हो गया।

वे स्वयं पाकी थे, नमक मिर्च मीठा व जूता का परित्याग कर रखा था। साइकल पर ३०-४० मील का प्रतिदिन सफर मामूली काम था। जब भी वे सुनते कि कोई गांव ईसाई हो गया, वे तुरन्त चल पड़ते। वे गुरुकुल झज्जर के स्नातक थे। वे सांपों के काटने वालों की चिकित्सा करते थे। परीक्षण के निमित्त उन्होंने कई जहरीले सांपों को पाल रखा था। विधि की विडम्बना, उनके ही पाले सांप ने अपना घातक आक्रमण ७ जुलाई ६६ को सायं ४ बजे आकस्मिक रूप से कर दिया वे उसी रात्रि १ बजे चल बसे। उनका ८ जुलाई शुक्रवार को सायं ४ बजे अन्तिम संस्कार किया गया। लगभग ६२ वर्ष की अवस्था में उनका असामयिक निधन आर्य समाज की गहरी क्षति है। वे लगातार ७ वर्षों तक अपने घर से दूर आर्य समाजका प्रचार करते रहे। उनके निधनसे आर्यसमाज के इस अनुन्नत क्षेत्र में जहां विदेशी मिशनरियां द्रुतगति से हिन्दू आदिवासियों को ईसाई बनाने की ओर अग्रसर होगी वहां आर्य समाज को अप्रत्याशित धक्का लगा है। छोटा नागपुर में कार्य कर रहे सभी प्रचारक उनकी कर्मठता के प्रशंसक थे।

आर्यसमाज के सम्बन्ध में श्री बलराज मधोक का स्पष्टीकरण

भारतीय जनसंघ के जालन्धर अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण में हुई आर्य समाज की चर्चा के विषय को लेकर आर्य जगत में असन्तोष व्याप्त हो गया था। इस पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मैंने जनसंघ के अध्यक्ष श्रीयुत बलराज जी मधोक को एक पत्र लिखकर स्थिति स्पष्टीकरण करने की प्रार्थना की थी। इसके उत्तर में मुझे उनका २२-७-६६ का लिखा हुआ पत्र मिला है जो अविकल रूप में प्रकाशित किया जाता है :—

आपका दिनांक २०-७-१९६६ का पत्र मिला। धन्यवाद।

जैसा कि आपको श्री दीनदयाल उपाध्याय ने अपने १७ मई के पत्र में सूचित किया है कि पंजाब जनसंघ के अध्यक्ष डा० बलदेव प्रकाश जी द्वारा मेरा ध्यान मेरे अध्यक्षीय भाषण की आपके द्वारा उल्लिखित पंक्ति की ओर आकृष्ट करने पर मैंने उसे तुरन्त काट दिया था और जो भाषण मैंने पढ़ा उसमें उस पंक्ति का समावेश नहीं था। मैंने उसी समय अपने कार्यालय को आदेश दिया था कि इस संशोधन की सूचना उन समाचार पत्रों को भी जहां पर भाषण की अग्रिम प्रतियां जा चुकी थी, तार द्वारा दे दी जाए। लगता है कि कुछ पत्रों मे वह पंक्ति इस संशोधन की सूचना मिलने से पूर्व छप गई थी। जिसके कारण कुछ क्षेत्रों मे भ्रान्ति पैदा हुई है। इसका मुझे खेद है।

जैसा कि आप जानते हैं मेरा सम्बन्ध आर्य समाज से अति पुराना है। वास्तव में यह मेरी पैतृक सम्पत्ति है। वैसे भी महर्षि दयानन्द की विचार धारा और भारतीय जनसंघ की विचारधारा में अति अधिक समानता है। यही कारण है कि जनसंघ बनाने वालों और चलाने वालों में आर्य समाज से प्रेरणा पाने वाले लोगों का प्रमुख हाथ रहा है। परन्तु यह खेद का विषय है कि कुछ कांग्रेसी अपनी 'भेद डालो और राज करो' की नीति के चलाने मे आर्य समाज की भी आड़ ले रहे हैं। ऐसे लोगों से हर सच्चे आर्य समाजी और ऋषिभक्त को सचेत रहना चाहिए।

आज देश जिस भयानक परिस्थिति में गुजर रहा है उसका मुकाबला करने के लिए सभी राष्ट्रवादी शक्तियों को कन्धे से कन्धा मिला कर चलना होगा। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि आर्य समाज जो सांस्कृतिक क्षेत्र में विशुद्ध भारतीय राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक चेतना का अग्रदूत है, का सहयोग भारतीय जनसंघ को जो कि राजनीतिक क्षेत्र मे उसी भावना को लेकर चल रहा है, पूर्ण रूपेण मिलता रहे। मैं इसके लिए प्रयत्नशील हूं और आशा करता हूं कि आपकी सहानुभूति और सहयोग इस मामले में मेरे साथ हैं।"

इस पत्र के प्रकाशन के पश्चात् यह विवाद समाप्त हो जाना चाहिए।

रामगोपाल सभा-मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली।

साहित्य समीक्षा

वीर संन्यासी

लेखक—प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु
डी०ए०वी० कालेज शोलापुर

प्रकाशक—श्री स्वामी सर्वानन्द जी
दयानन्द मठ, दीनानगर
(पंजाब) मूल्य ४)

यह पुस्तक पूज्य स्व० श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की जीवनी है। इस जीवनी का प्रणयन एवं प्रकाशन अब से बहुत पूर्व ही हो जाना चाहिए था। स्वामी जी के शिष्यों और प्रेमियों ने यह कार्य सम्पन्न करके अपने को एक ऋण से मुक्त आर्य साहित्य की समृद्धि में मूल्यवान योग दान किया है।

स्वामी जी आर्यसमाज की महान् हस्तियो मे थे जिन्होंने इतिहास का निर्माण किया अथवा उसे आभा प्रदान की है। ऐसे महान् व्यक्ति की जीवन-गाथा निश्चय ही प्रेरणा प्रद है। उनके निरन्तर सेवा एवं त्याग-मय जीवन से उनकी निर्भीकता, उनके जीवन की सादगी, हृदय की प्रफुल्लता तबीयत की मस्ती, कर्मठता, प्रबन्ध चातुरी, अहर्निश आर्य समाज की हित चिन्ता, जोखिम एव दायित्व पूर्ण कार्यों को हाथ मे ले लेने की तत्परता आदि २ विशेषताओं से प्रकाश मिलता रहेगा। श्री स्वामी जी ने प्रचारार्थ देश और विदेश में जितना भ्रमण (मुख्यतः पैदल चलकर) किया था उतना शायद ही किसी दूसरे ने किया हो।

उन्हें लोग उपदेशक विद्यालय के आचार्य, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रचार-अधिष्ठाता, सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान, हैदराबाद के धर्म्म युद्ध के फील्ड मार्शल और सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित गोरक्षा आन्दोलन, ईसाई प्रचार निरोध कार्य के सर्वाधिकारी के रूप में तो जानते हैं क्योंकि उनके जीवन के ये पृष्ठ खुले हुए थे परन्तु सिक्ख परिवार मे उत्पन्न हुआ केहरसिंह नामक एक व्यक्ति सुप्रसिद्ध पहलवान, फौज का एक कर्मचारी किस प्रकार कर्नल जनेल बनने के स्थान में साधु बनता, आर्य समाज की ओर आकृष्ट होता, स्वतन्त्रतानन्द बनकर अपने को तथा आर्य-समाज को चमकाता है, उनके जीवन के ये पृष्ठ खुले हुए न थे। विद्वान लेखक ने इन पृष्ठों को खोलकर स्वामी जी के जीवन की बड़ी भव्य झांकी प्रस्तुत की है।

पुस्तक ५ भागों में विभक्त है। प्रत्येक भाग में उनके जीवन-विकास एव कार्य कलाप का वर्णन है। पांचवे भाग में स्वामी जी के जीवन की अनेक शिक्षा प्रद घटनाएं दी गई हैं जिसमे उनका स्वर्णमय जीवन सुगन्धमय बना हुआ था।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

पृष्ठ १० का शेष)

में खिलाया-पिलाया नही गया तो फिर यही संघर्ष बुराई व कलह का विषय बन जाता है।

सारांश

जिस भोगवाद को एक दिन यूरुप के लोगों ने सुख, शान्ति व आनन्द की खोज में अपनाया था वही आज धीरे २ उनके सुख, शान्ति व नींद को छीनता जा रहा है। वहां के लोग यदि किसी बात के लिये बेचैन हैं तो वह मानसिक शान्ति है। मानसिक शान्ति भारत का योग-दर्शन दे सकता है ऐसा उनका विश्वास है। इसीलिये वहां योग की कक्षायें अनेकों स्थानों पर लगी हैं, और इसी खोज मे वहां के लोग भारत के साधु-महात्माओं के पास आते हैं, और ऋषिकेश, अरविन्द आश्रम आदि स्थानों के चक्कर काटते हैं। आज भी उनके हृदयों में यदि भारत की किसी वस्तु के लिये श्रद्धा व सम्मान है तो वह मानसिक शान्ति दिलाने वाला योग-दर्शन ही है।

दुर्भाग्यवश भारत की सरकार व शिक्षित वर्ग अपनी उस अमूल्य निधि की ओर ध्यान नहीं देते जिसकी ओर यूरुप और अमरीका शान्ति की खोज में देख रहे हैं। आश्चर्य इस बात का है कि भारत सरकार व भारतीय जनता अन्धी होकर उसी भोगवाद की ओर भाग रही है जिससे तंग आकर इगलैण्ड-यूरुप भारत के आध्यात्मवाद की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

श्रावणी पर्व पर

१—आर्यसमाज मन्दिरों और परिवारों में यज्ञ हों।

२—यज्ञोपवीत का व्यापक प्रचार किया जाय।

३—वेद और वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन का व्रत लें।

४—आर्य भाषा के प्रचार, प्रसार और व्यवहार की ओर पूरा ध्यान दें।

५—रागद्वेष, फूट, और वैर से दूर रहकर, प्रेम, सद्भाव और परोपकार की ओर चलने का व्रत लें।

—सम्पादक

Nothing in the realm of fashion looks more elegant. The crease stays in, the wrinkles stay out, with the new wonder fabric Te-relax, a rich blend of terylene and cotton. A texture that is luxuriously different Shoorji's Te relax is available in a variety of bold shades and designs

SHOORJI
SUITINGS

WESTERN INDIA MILLS

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पुस्तकाध्यक्ष का स्थानीय आर्यसमाजों के पुस्तकाध्यक्षों के नाम परिपत्र सं० १

आर्यसमाज के विधान के अनुसार सर्वत्र आर्यसमाजो में पुस्तकाध्यक्ष होते ही हैं और प्राय: ६० प्रतिशत आर्यसमाजों मे पुस्तकालय भी हैं। कुछ आर्यसमाजें बहुत प्राचीन हैं और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के समय के भी कुछ आर्य समाजें हैं। उन माननीय पुस्तकाध्यक्षो से सादर निवेदन है कि—

१—आपके पुस्तकालयों मे महर्षि के जीवन काल के छपे महर्षि के ग्रन्थ और वेदभाष्य जराजीर्ण अवस्था में रखे होगे उन्हे आप सार्वदेशिक सभा देहली को भेज देवें। हम आपकी ओर से आपकी भेंट की मुहर लगा कर सभा में सुरक्षित रख लेंगे। पठन पाठन मे इतने पुराने ग्रन्थ प्रयोग करने से छिन्न-भिन्न हो सकते हैं। नये छपे ग्रन्थ आप प्रयोग में लावे। इस प्रकार करने से सार्वदेशिक सभा का पुस्तकालय एक रिकार्ड आफिस के रूप में रहेगा।

२—द्वितीय निवेदन है कि महर्षि के स्वर्गवास से पूर्व के छपे वे ग्रन्थ जिनके प्रमाण महर्षि ने अपने ग्रन्थो में दिये हैं यदि आपके यहां है तो केवल आप हमे सूचना दे दे। क्योंकि आज कल के छपे ग्रन्थों से महर्षि के ग्रन्थों के प्रमाण कहीं कहीं नहीं मिलते। वे उन प्राचीन छपे ग्रन्थों में है।

३ तीसरा निवेदन है कि कहीं भी ऐसा पुस्तकालय या पुस्तक भण्डार ऐसा पडा हो जहां उनकी रक्षा सभव न हो उन्हें आप हमारी सभा के व्यय पर देहली पहुचा दें।

४—चौथा निवेदन यह है कि हम सभा के पुस्तकालय में अब हस्तलेखों का सग्रह भी चाहते हैं। प्राचीन हस्तलेख ऋषि ग्रन्थों के कहीं आपकी दृष्टि में हो तो आप हमें सूचना देवे हम उन्हें स्वयं प्राप्त कर लेंगे।

इस प्रकार हमारे आर्य जगत् के पुस्तकाध्यक्ष महानुभाव हमें सहयोग देंगे ऐसी आशा है।

आचार्य विश्वश्रवा: व्यास
पुस्तकाध्यक्ष

वर्षा कालीन वन विहार

रविवार २४ जुलाई को ९ बजे से 'आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में दिल्ली के आर्य-युवकों का वर्षा कालीन वन विहार का मनोरजक कार्य-क्रम कोटला फीरोज शाह में आयोजित किया गया। युवक भारी सख्या में सोत्साह सम्मिलित हुए। आयोजन बड़ा सफल रहा।

चार सितम्बर ६६ को याद रखें

श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु, आर्योपदेशक प्रधान आर्य युवक परिषद तथा श्री मनोहरलाल जी गुप्त कर्मठ कार्य-कर्ता परिषद ने समस्त देश वासियों से अपील की है कि सारे देश मे होने वाली "सत्यार्थ प्रकाश की चारों परीक्षायें जो ४ सितम्बर ६६ को होने जारही हैं इसमे सभी आबालवृद्ध स्त्री पुरुषो को सम्मिलित होना चाहिये। उत्तीर्ण परीक्षार्थियो को प्रमाणपत्र तथा सभी परीक्षाओं मे अलग २ प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय को पारितोषिक भी दिये जावेंगे।

श्रद्धेय श्री उपाध्याय जी

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं आर्यनेता श्रद्धेय श्री प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय आगामी ६ सितम्बर को अपनी जीवन की ८५वीं वर्ष की सन्ध्या मे प्रवेश कर रहे हैं।

माननीय श्री उपाध्याय जी की विद्वत्ता विश्व मे विख्यात है उनके लिखित ग्रन्थों की ख्याति इससे ही सिद्ध है कि उन्हे "आस्तिकवाद" पर मगलाप्रसाद पारितोषक, कम्यूनिज्म एव जीवन चक्र जिसमे उनकी स्वय की जीवनी है उत्तर प्रदेश सरकार ने ६००) ३००) रु० के पुरस्कार से सम्मानित किया है। अग्रेजी Vedic culture पर श्री ठाकुरदत्त जी अमृतधारा वालों ने पुरस्कार से विभूषित किया है।

बृहत अग्रेजी पुस्तक Philosophy of Dayanand की प्रशस्ति देशीय एव विदेशीय विद्वानो ने की है।

उनका जीवन सघर्षमय रहा है। उन्होंने समाज एव राष्ट्र सेवा करने हेतु ब्रिटिश सरकार की सेवा छोड़कर साधारण वृति पर अध्यापक का रूप स्वीकार किया। वहीं अपने अथक परिश्रम से जीविका वृति करते हुये, समाज की सेवा में लीन अनेक महत्व-पूर्ण ग्रन्थों तथा पुस्तिकाओं का प्रणयन किया। मैट्रिक के उपरान्त की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं और दो विषयों से एम० ए० किया। स्वत: के परिश्रम एव लगन से संस्कृत भाषा में अधिकार प्राप्त करके "आर्योदय काव्य तथा आर्य स्मृति" दो काव्य ग्रन्थोंसे सस्कृत का भंडार भरा।

इन दिनों अत्यधिक वृद्ध होते हुये भी जब वे ठीक से देख नहीं पाते। अंग शिथिल पड गये हैं फिर भी अपने आत्म बलसे निरन्तर ८-६ घन्टे प्रतिदिन पढते लिखते हैं। कभी व्यर्थ समय नहीं गवाते। यदि कोई उनके पास जाय तो आदर्श गुरु के समान उसे स्नेह पूर्वक उत्साहित होकर उसकी शकाओंका समाधान करते हैं।

उनके हृदय मे एक टीस है कि "ऋषि दयानन्द एव वेद का सत्य रूप जगत को ज्ञात हो जाय। उसके लिये वे अभी तक प्रयत्नशील हैं। वैदिक-धर्म के प्रचारार्थ उन्होने विदेशो की यात्रा भी की है।

ईश्वर उन महात्मा, ऋषि दयानन्द के भक्त को शक्ति दे एव चिरायु करे जिससे व हमे तथा ससार को अमूल्य निधि दे सकें।

आशा है उनकी ८५वी वर्षगांठ आर्य जगत मे विशेष उत्साह से मनाई जायेगी।

चुनाव

आर्यसमाज लोधी रोड नई दिल्ली के निर्वाचन में श्री चुन्नीलाल जी हांडा प्रधान, श्री राजकुमार शर्मा मन्त्री श्री कृष्णगोपाल जी पुस्तकाध्यक्ष, श्री रत्नप्रकाश जी गुप्त लेखा-निरीक्षक तथा श्री मुकन्दलाल चोपडा कुमार सभाध्यक्ष चुने गए।

विद्वान् चाहिये

वेदांग विद्यालय गुरुकुल शाही के लिए ऋषि दयानन्द निर्दिष्ट पाठविधि के अनुसार अष्टाध्यायी महाभाष्य पढ़ाने के लिए ब्रह्मचारी वनस्थी अथवा सन्यासी चाहिए।

प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं। अध्ययन कला में प्रवीण होना पर्याप्त हैं। निम्न पते पर लिखें.—इन्द्रदेव मंत्री आ० मा० आर्यसभा यतिपुर पो० ललोरी खेड़ा जि० पीलीभीत।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

नारायणस्वामी भवन, लखनऊ ने प्रान्त के आर्य जनों से वेद प्रचार सप्ताह, श्रावणी पर्व, बलिदान दिवस एवं श्री कृष्णजन्माष्टमी सोत्साह मनाने की अपील की है।

गोवध निरोध आंदोलन को आर्य समाज का समर्थन

नई दिल्ली, १ अगस्त (हि.स.)। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामगोपाल शालवाले ने आज यहा बताया कि आर्यसमाज गौहत्या बन्द कराने के सम्बन्ध मे चल रहे साधुओं के आन्दोलन में सक्रिय योगदान देगा। इस विषय में कार्य-क्रम की रूपरेखा निश्चित करने के लिए सभा की अन्तरग सभा की शीघ्र ही आपत्कालीन बैठक बुलाई जा रही है।

(शेष पृष्ठ ४ का)

क्षति है।

वे जितने बड़े विद्वान् थे उतने ही वैयक्तिक जीवन में महान् थे। उनके जीवन की सरलता और अकृत्रिमता बड़ी सुहावनी एव स्फूर्तिदायिनी थी। उनकी सरलता एव विनम्रता को देखकर कोई यह अनुमान भी न कर सकता था कि वे इतने बड़े और प्रतिभाशाली विद्वान् होंगे जिनके पांडित्य का सिक्का देश और उससे बाहर के विद्वत् समाज पर जमा हुआ था।

उनके लेख प्राय: देश की पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने को मिलते थे। आर्यसमाज के साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था और प्रदेश के आर्य परिवार में ही उनका जन्म हुआ, बनारस एव लखनऊ में उनकी शिक्षा दीक्षा हुई और आर्य परिवार में ही उनका विवाह हुआ था। सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य और गाजियाबाद के सुप्रसिद्ध रईस स्व० श्री लाला हरशरण दास जी के वे जामाता थे।

वे अपने पीछे ६ पुत्र, १ पुत्री और विधवा पत्नी छोड़ गए हैं। हम समस्त आर्य जगत् और सार्वदेशिक परिवार की ओर से दोनों परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल का देहान्त

वाराणसी, २७ जुलाई (प्रे ट्र.)। प्राचीन भारतीय सभ्यता, संस्कृति, कला, धर्म और दर्शन के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्याख्याता, देश के अग्रणी पुरातत्ववेत्ता, संस्कृत और हिन्दी के प्रकाण्ड पण्डित डाक्टर वासुदेव शरण अग्रवाल का आज सुबह यहां देहान्त हो गया। उनकी आयु ६२ वर्ष थी।

डाक्टर अग्रवाल बहुत दिनो से बीमार चल रहे थे और १५ दिन पहले हिन्दू विश्वविद्यालय के सुन्दरलाल अस्पताल मे दाखिल हुए थे।

डा० अग्रवाल अपने पीछे पत्नी, ६ पुत्र और एक पुत्री छोड़ गए हैं। आज तीसरे पहर ऐतिहासिक हरिश्चन्द्र घाट में उनकी अन्त्येष्टि हुई। उनके ज्येष्ठ पुत्र ने अन्तिम सस्कार, किया। दिवगत की शवयात्रा मे सैकड़ों विद्वान् साहित्यकार, प्रमुख नागरिक और शिष्यगण शामिल हुए।

डा० अग्रवाल की स्मृति में वाराणसी विश्वविद्यालय का इण्डोलाजी कालेज, आर्ट कालेज, सस्कृत कालेज, सगीन और ललितकला महाविद्यालय और काशी नागरी प्रचारिणी सभा बन्द रही।

डा० अग्रवाल स्वर्गीय महापण्डित राहुल साकृत्यायन और महामहोपाध्याय पण्डित गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, जिनका हाल में देहान्त हुआ जैसे प्रतिभाशाली विद्वानों की श्रेणी में थे। राहुल जी की भांति डा० अग्रवाल भी भारतीय सस्कृति के चलते-फिरते विश्वकोष थे।

सरलता और सौम्यता की मूर्ति डा० अग्रवाल इधर वाराणसी विश्वविद्यालय के कला विभाग के विभागाध्यक्ष थे। वह इण्डोलाजी कालेज के प्रिंसिपल भी रह चुके थे। सात वर्ष पूर्व उन्हें साहित्य अकादमी ने हिन्दी और सस्कृत सेवाओ के लिए पुरस्कृत किया था।

धर्म, वेद, पुराण, उपनिषद् इतिहास, कला, पुरातत्व, विज्ञान आदि विषयों पर उनके ८४ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। ४८ ग्रन्थों की हस्तलिपियां वह छोड़ गए हैं इनके अलावा लगभग और २०० नोट-बुकों मे उनके स्फुट विचार और टीका-टिप्पणिया लिखी पड़ी है। विदेशों से बड़े-बड़े विद्वान् और प्राच्य विद्या प्रेमी उनके पास भारतीय धर्म, दर्शन, वेद, पुराण और उपनिषदों के गूढ तत्वों की जानकारी प्राप्त करने के लिए आते थे।

हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातक बनने के बाद वासुदेवशरण अग्रवाल ने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम०ए० पी० एच० डी० और डी० लिट० की उपाधिया प्राप्तकी। 'पाणिनि कालीन भारत' उनका पहला शोध-ग्रन्थ था जिसने उनको विद्वानों की मण्डली में प्रतिष्ठित कर दिया।

उत्तर प्रदेश राजकीय संग्रहालय के वह कई वर्ष तक क्यूरेटर थे। दिल्ली के नेशनल म्यूजियम के वह सस्थापक थे। नागरी प्रचारिणी सभा की पत्रिका का कई वर्षो तक सम्पादन करके उन्होंने हिन्दी में शोध और गवेषण कार्य को बड़ी प्रेरणा दी।

नागरी प्रचारिणी सभा के कर्मचारियों और हिन्दी प्रेमियों की शोक सभा के प्रस्ताव में कहा गया है। डा० अग्रवाल को असामयिक मृत्यु से हिन्दी साहित्य, इतिहास, सस्कृति और प्राच्यविद्या के क्षेत्र में जो स्थान अचानक रिक्त हो गया है उसकी पूर्ति होना आसान नहीं है।

सार्वदेशिक सभा की समवेदना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीयुत लालारामगोपाल जी ने सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीयुत डा० वासुदेव शरण जी अग्रवाल के आकस्मिक निधन पर उनके परिजनो को समवेदना का निम्नलिखित तार दिया है—

"डाक्टर अग्रबाल का आकस्मिक निधन बड़ी राष्ट्रीय क्षति है उन जैसे विद्वान् को पाकर देश और समाज धन्य था। आप लोगों के दुख को हम हृदय से अनुभव करते हैं। हार्दिक समवेदना। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।"

वेद कथा अंक

३० अगस्त को प्रकाशित होगा।
२३ अगस्त का अवकाश रहेगा।

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की पुस्तकों का सूची पत्र

१—८—६६ से ३१—१—६७ तक
निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

- ऋग्वेद संहिता १०)
- अथर्ववेद संहिता ८)
- यजुर्वेद संहिता ४)
- सामवेद संहिता ३)
- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ३)
- संस्कारविधि १)२५
- पंच महायज्ञ विधि)२५
- कर्त्तव्य दर्पण)४०
- आर्यसमाज के प्रवेशपत्र १) सै०

निम्न प्रकाशन पर २० प्रतिशत कमीशन

- सत्यार्थप्रकाश २)५०
- कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
- उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०
- कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
- आर्यसमाज का इतिहास द्वितीय भाग ५)
- जीवन संघर्ष (महाशय कृष्ण की जीवनी) ५)
- पंचमहायज्ञ विधि भाष्यम संध्या पद्धति मीमांसा ५)
- राजधर्म ५०
- पुरुष सूक्त)४०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

- वैदिक ज्योति ७)
- शिक्षण-तरङ्गिणी ५)
- दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
- वैदिक युग और आदि मानव ४)
- वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५
- वैदिक विज्ञान विमर्श)७५

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

- वैदिक साहित्य में नारी ७)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

- वेद की इयत्ता १)५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

- ईशोपनिषद्)३७
- केनोपनिषद्)५०
- प्रश्नोपनिषद्)३७
- मुण्डकोपनिषद्)४५
- माण्डूक्योपनिषद्)२५
- ऐतरेयोपनिषद्)२५
- तैत्तिरीयोपनिषद् १)
- बृहदारण्यकोपनिषद् ३)
- योग रहस्य १)२५
- मृत्यु और परलोक १)

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

- छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
- वैदिक वन्दन ५)
- वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
- वेदान्त दर्शन (संस्कृत) १)
- वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
- ,, ,, (अजिल्द) २)
- निज जीवन वृत वनिका)७५
- बाल जीवन सोपान १)२५
- दयानन्द दिग्दर्शन)७५
- वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७२
- वैदिक योगामृत ६२
- दार्शनिक अध्यात्म तत्त्व १)५०

- वैदिक ईश वन्दना ५०
- बाल संस्कृत सुधा)५०
- वैदिक राष्ट्रीयता)२५
- भ्रम निवारण)३०

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

- आर्योदय काव्यम पूर्वार्द्ध १)५०
- ,, ,, उत्तरार्द्ध १)५०
- वैदिक संस्कृति २)०५
- सायण और दयानन्द १)
- मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
- सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
- आर्य समाज की नीति)२५
- मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

- स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)२५
- हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०
- भक्ति कुसुमाञ्जली)२५

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

- वेद सन्देश)७५
- वैदिक सूक्ति सुधा)३०
- ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

- चरित्र निर्माण १)२५
- वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
- दौलत की मार)२५
- धर्म और धन)२५
- अनुशासन का विधान २५

श्री पं० मदनमोहन जी कृत

- जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०
- संस्कार महत्व)७५
- वेदों की अन्त साक्षी का महत्व)६२
- आर्य स्तोत्र)५०
- आर्य घोष)६०

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

- आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म ६२
- सन्तति निग्रह १)२५
- नया संसार)२०
- आदर्श गुरु शिष्य)२५

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

- आर्य समाज और साम्प्रदायिकता)३०
- कांग्रेस का सिरदर्द)५०
- भारत में भयंकर ईसाई षड़यन्त्र)२५
- आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना)२०
- आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण)०६

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

- गीता विमर्श)७५
- ब्राह्मण समाज के तीन महापातक)५०
- सनातन धर्म २)७५

श्री ला० ज्ञानचन्द जी कृत

- धर्म और उसकी आवश्यकता १)
- वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १)५०
- इजहारे हकीकत उर्दू)८८

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी कृत

- इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)५०

श्री पं० देवप्रकाश जी कृत

- इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०

श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री कृत

- भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०

विविध

- वेद और विज्ञान)७०
- उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
- भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
- वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७
- हमारे घर १)
- मेरी इराक यात्रा १)
- मेरी अबीसीनिया यात्रा १)
- डाक्टर बर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
- भोज प्रबन्ध २)२५
- स्वर्ग में हड़ताल)३७
- नरक की रिपोर्ट)२५

निम्न प्रकाशन ५० प्रतिशत पर दिये जायेंगे

- आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग ६)
- बृहद् विमान शास्त्र १०)
- आर्य समाज के महाधन २)५०
- दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
- स्वराज्य दर्शन १)
- आर्य समाज का परिचय १)
- भजन भास्कर १)७५
- यमपितृ परिचय २)
- एशिया का वेनिस)७५
- आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५
- साम संगीत)५०
- दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
- आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
- ,, ,, ,, अध्यक्षीय भाषण १)
- सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
- सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
- सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५

प्रचार करने योग्य ट्रैक्ट

२५ प्रति मंगाने पर सैकड़े का भाव लगेगा।
एकप्रति)१२ पैसा सैकड़ा १०)

- सन्ध्या पद्धति
- दश नियम व्याख्या
- आर्य शब्द का महत्व
- तीर्थ और मोक्ष
- वैदिक राष्ट्रीयता
- वैदिक राष्ट्र धर्म
- अथर्ववेदीय अतिथि सत्कार
- ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा
- प्रजा पालन
- सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा में
- सत्यार्थ प्रकाश का आन्दोलन का इतिहास
- मुर्दों को क्यों जलाना चाहिये
- शंका समाधान
- भारत का एक ऋषि
- आर्य समाज
- पूजा किसकी
- धर्म के नाम पर राजनैतिक षड़यंत्र
- भारतवर्ष में जाति भेद
- चमड़े के लिए गौवध
- आर्य विवाह एक्ट
- ईसाई पादरी उत्तर दें
- रोमन कैथोलिक चर्च क्या है

नोट:—(१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूप में भेजें। (२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ साफ लिखें। (३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम में आना चाहिये। (४) जिन पुस्तकों का नेट मूल्य लिखा गया है उनपर कोई कमीशन न दिया जायगा।

व्यवस्थापक—**सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१**

कला-कौशल (टैक्नीकल) और वैदिक साहित्य का महान् भंडार

- इलैक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग बुक १५)
- इलै० गाइड पृ० ८०० हि इ गु १२)
- इलैक्ट्रिक वायरिंग ६)
- मोटरकार वायरिंग ६)
- इलैक्ट्रिक बैट्रीज ४)५०
- इलैक्ट्रिक लाइटिंग ८)२५
- इलै० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्ज १२)
- सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर ४)५०
- इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज २ भाग १६)५०
- आयल व गैस इन्जन गाइड १५)
- आयल इन्जन गाइड ८)२५
- क्रूड आयल इन्जन गाइड ६)
- वायरलैस रेडियो गाइड ८)२५
- रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक) ८)२५
- घरेलू बिजली रेडियो मास्टर ४)५०
- इलैक्ट्रिक मीटर्ज ८)२५
- टाका लगाने का ज्ञान ४)५०
- छोटे डायनेमो इलैक्ट्रिक मोटर ४)५०
- आर्मेचर वाइंडिंग (AC DC) ८)२५
- रैफरीजरेटर गाइड ८)२५
- बृहत रेडियो विज्ञान १५)
- ट्रान्सफार्मर गाइड ६)
- इलैक्ट्रिक मोटर्स ८)२५
- रलवे ट्रेन लाइटिंग ६)
- इलैक्ट्रिक सुपरवाइजरी शिक्षा ६)
- इलैक्ट्रिक वैल्डिंग ६)
- रेडियो शब्द कोष ३)
- ए० सी० जनरेटर्स ८)२५
- इलैक्ट्रिक मोटर्स आल्टरनेटर्स १६)५०
- आर्मेचर वाइंडर्स गाइड १५)
- इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १६५६ १)५०

- स्माल स्केल इन्डस्ट्रीज (हिन्दी) १४)
- स्माल स्केल इन्डस्ट्रीज (इंगलिश) १४)
- खराद शिक्षा (टर्नर गाइड) ४)५०
- वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग) ४)५०
- खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
- भवन-निर्माण कला १०)
- रेडियो मास्टर ४)५०
- विश्वकर्मा प्रकाश ७)५०
- सर्वे इन्जीनियरिंग बुक १२)
- इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग १२)
- फाउन्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई) ८)२५
- इलैक्ट्रोप्लेटिंग ६)
- वीविंग गाइड ४)५०
- हैंडलूम गाइड १५)
- फिटिंगशाप प्रैक्टिस ७)५०
- पावरलूम गाइड ५)२५
- ट्यूबवैल गाइड ३)७५
- लोकास्ट हाउसिंग टैक्निक ५)२५
- जन्त्री पैमायश चौब २)
- लोकोशैड फिटर गाइड १५)
- मोटर मैकेनिक टीचर ८)२५
- मोटर मैकेनिक टीचर गुरुमुखी ८)२५
- मोटर ड्राइविंग हिन्दी व गुरुमुखी ६)
- मोटरकार इन्स्ट्रक्टर १५)
- मोटर साइकिल गाइड ४)५०
- खेती और ट्रैक्टर ८)२५
- जनरल मैकेनिक गाइड १०)
- आटोमोबाइल इन्जीनियरिंग १२)
- मोटरकार ओवरहालिंग ६)
- प्लम्बिंग और सैनीटेशन ६)
- सर्किट डायग्राम्स आफ रेडियो ३)७५

- फर्नीचर बुक १०)
- फर्नीचर डिजायन बुक १२)
- वर्कशाप प्रैक्टिस १०)
- स्टीम ब्वायलर्स और इन्जन ८)२५
- स्टीम इन्जीनियर्स गाइड १२)
- आइस प्लांट (बर्फ मशीन) ४)५०
- सीमेंट की जालियों के डिजाइन ६)
- कारपेंट्री मास्टर ५)७५
- बिजली मास्टर ४)५०
- ट्रांजिस्टर डेटा सर्किट १०)५०
- गैस वेल्डिंग ६)
- ब्लैकस्मिथी (लोहार) ४)५०
- हैंडबुक आफ बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन ३४)५०
- हैंडबुक स्टीम इन्जीनियर २०)२५
- मोटरकार इन्जीनियर ८)२५
- मोटरकार इन्जन (पावर यूनिट) ८)२५
- मोटरकार सर्विसिंग ८)२५
- कम्पलीट मोटर ट्रेनिंग मैनुअल २४)७५
- कारपेंट्री मैनुअल ४,५०
- मोटर प्रश्नोत्तर ६)
- स्कूटर आटो साइकिल गाइड ४)५०
- मशीनशोप प्रैक्टिस १५)
- आयरन फर्नीचर १२)
- मारबल चिप्स व डिजाइन १६)५०
- मिस्त्री डिजाइन बुक ३४)५०
- फाउन्ड्री वर्क धातुओं की ढलाई ४)५०
- ट्रांजिस्टर रेडियो ४)५०
- आधुनिक टिपिकल मोटर गाइड ४,५०
- नक्काशी आर्ट शिक्षा ६)
- बढ़ई का काम ६)
- राजगिरी शिक्षा ६)

- सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो ७)५०
- विजय ट्रांजिस्टर गाइड २२)५०
- मशीनिस्ट गाइड १०,५०
- आल्टरनेटिंग करैन्ट १८)५०
- इलै. लाइनमैन वायरमैन गाइड १६)५०
- रेडियो फिजिक्स २५ ५०
- फिटर मैकेनिक ५)
- मशीन वुड वर्किंग ५)
- लेथ वर्क ६)७५
- मिलिंग मशीन ८)२५
- मशीन शाप ट्रेनिंग १०)
- एयर कन्डीशनिंग गाइड १५)
- सिनेमा मशीन आपरेटर १)
- स्प्रे पेंटिंग १२)
- पोट्रीज गाइड ४ ५०
- ट्रांजिस्टर रिसीवर्स ६)२५
- लोकल ट्रांजिस्टर रिसीवर ८)२५
- प्रैक्टीकल ट्रांजिस्टर सरकिट्स ७)५०
- बैंच वर्क एन्ड डाईफिटर ८)२५
- माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुअल ८)२५
- खराद आपरेटर गाइड ८)२५
- रिसर्च आफ टायलेट सोप १५)
- आयल इन्डस्ट्री १०)५०
- शीट मैटल वर्क ८)२५
- कैरिज एन्ड वैगन गाइड ८)२५
- इलैक्ट्रिक फिजिक्स २५ ५०
- इलैक्ट्रिक टैक्नालोजी २५)५०
- रेडियो पाकिट बुक ६)
- डिजाइनर्स सैट चित्र आर्ट ५)
- कैमीकल इन्डस्ट्रीज २५)५०
- डीजल इन्जन गाइड १५)

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई, क्लाथ बाइंडिंग-मूल्य १५) एक साथ पांच प्रति मंगाने पर ५०) रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

1. सांख्य दर्शन मूल्य २)
2. न्याय दर्शन मू० ३॥)
3. वैशेषिक दर्शन मू० ३॥)
4. योग दर्शन मू० ६)
5. वेदान्त दर्शन मू० ५॥)
6. मीमांसा दर्शन मू० ६)

सामवेद

मूलमंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित
श्री पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार ४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थीं। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है। मूल्य ४)

वैदिक-मनुस्मृति मूल्य ५॥)

बृहत् दृष्टान्त सागर

सम्पूर्ण पांचों भाग

पृष्ठ संख्या ८६८

सजिल्द मूल्य केवल १०॥)

- उपदेश-मंजरी मूल्य २॥)
- संस्कार विधि मूल्य १॥)
- आर्य समाज के नेता मूल्य ३)
- महर्षि दयानन्द मूल्य ३)
- कथा पच्चीसी मूल्य १॥)
- उपनिषद् प्रकाश मू० ६)
- हितोपदेश भाषा मू० ३)
- सत्यार्थप्रकाश २)५० [छोटे अक्षरों में]

अन्य आर्य साहित्य

1. विद्यार्थी शिष्टाचार १॥)
2. पंचतन्त्र ३॥)
3. आओ ऐ मानव १)
4. कौटिल्य अर्थशास्त्र १०)
5. चाणक्य नीति १)
6. भर्तृहरि शतक १॥)
7. कर्तव्य दर्पण १॥)
8. वैदिक सन्ध्या ४) सै०
9. हवन मन्त्र १०) सै०
10. वैदिक सत्संग गुटका १५) सै०
11. ऋग्वेद ७ जिल्दों मे ५६)
12. यजुर्वेद २ जिल्दों मे १६)
13. सामवेद १ जिल्द मे ८)
14. अथर्ववेद ४ जिल्दों मे ३२)
15. बाल्मीकि रामायण १२)
16. महाभारत भाषा १२)
17. हनुमान जीवन चरित्र ४॥)
18. आर्य संगीत रामायण ५)

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद, कृषि, बिजली, मोटर, पशुपालन टेक्नीकल, डेरीफार्म, रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३०
२६४१६१

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

...प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये ।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख प[त्र]

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१   फोन २७४७७१   ...सम्वत् २०२३   २ सितम्बर १९६६   दयानन्दाब्द १४२,   सृष्टि सम्वत् १९७२९४...

गोरक्षार्थ जीवन की आहुति देने में तत्प[र]

वेद—आज्ञा

पशुओं को सुख

यतोयत समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।

शंनः कुरु प्रजाभ्योऽभय नः पशुभ्यः । यजुर्वेद अ० ३६ । १७

पदार्थ हे भगवन ईश्वर ! आप अपने कृपाकटाक्ष से (यतोयत) जिस जिस स्थान से (समीहसे) सम्यक् चेष्टा करते हो (तत) उस २ से (न) हमको (अभयम्) भय रहित (कुरु) कीजिये (न) हमारी (प्रजाभ्य) प्रजाओं से और (न) हमारे (पशुभ्य) गौ आदि पशुओं से (शम्) सुख और (अभयम्) निर्भय (कुरु) कीजिये ।

—महर्षि दयानन्द

३२ दिन से अनशनकारी

श्री महात्मा रामचन्द्र जी वीर

दिल्ली सरकार द्वारा बंदी, आर्य हिन्दू जनता में रोष

सभा मन्त्री ला० रामगोपाल शालवाले एवं संसदसदस्य श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी की जेल में वीर जी से भेंट

वीर जी के वीर पुत्र

श्री धर्मेन्द्र जी अनशन पर

(श्री महात्मा रामचन्द्र जी वीर जेल में)

विश्वासघाती

देखिये, जो पशु निस्सार घा[स] तृण पत्ते फल फूल आदि खा[ते] और सार दूध आदि अमृत रूप[ी] रत्न देवे ... स्वामी की रक्षा के लिये तन म[न] लगावें, जिनका सर्वस्व राजा औ[र] प्रजा आदि मनुष्यों के सुख [के] लिये है, इत्यादि शुभगुणयु[क्त] सुखकारक पशुओं के गले छु[रों] से काट कर जो अपना पेट भ[र] सब संसार की हानि करते है[ं] क्या संसार में उनसे भी अधि[क] कोई विश्वासघाती अनुपकार[ी] दुःख देने वाले औ[र] पापीजन होंगे ?

—महर्षि दयान[न्द]

[व]ार्षिक ...) रु० ... [वि]देश १ पौंड ... एक प्रति १२ पैसे

अस्म बहु कुर्वीत

सम्पादक—रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री
सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

चलेन लोकस्तिष्ठति

वर्ष १
अंक ४०

शास्त्र-चर्चा

सदाचार

आर्द्रपादस्तु भुञ्जीत नार्द्रपादस्तु संविशेत्। देवर्षिर्नारद प्राह एतदाचारलक्षणम् ॥७॥

भोजन के बाद हाथ धोकर उठ रात को भीगे पैर न सोये। देवर्षि नारद इसी को सदाचार का लक्षण कहते हैं ॥७॥

शुचि देशमनड्वाहं देवगोष्ठं चतुष्पथम्। ब्राह्मण धार्मिकं चैत्यं नित्यं कुर्यात् प्रदक्षिणम् ॥८॥

अतिथीनां च सर्वेषां प्रेष्याणां स्वजनस्य च सामान्यं भोजनं भृत्यैः पुरुषस्य प्रशस्यते ॥९॥

यज्ञशाला आदि पवित्र स्थान बैल देवालय चौराहा ब्राह्मण धर्मात्मा मनुष्य तथा चैत्य इनको सदा दाहिने करके चले। गृहस्थ पुरुष को घर मे अतिथियो सेवको और स्वजनो के लिये भी एक सा भोजन बनवाना श्रेष्ठ माना गया है। ८ ९॥

सायं प्रातर्मनुष्याणामशनं वेदनिर्मितम्। नान्तरा भोजनं दृष्टमुपवासी तथा भवेत् ॥१०॥

शास्त्र में मनुष्यो के लिये साय-काल और प्रातःकाल दो ही समय भोजन करने का विधान है। बीच मे करने की विधि नहीं देखी गयी है। जो इस नियम का पालन करता है उसे उपवास का फल प्राप्त होता है ॥ १० ।

होमकाले तथा जुह्वन्नृतुकाले तथा व्रजन्। अनन्यस्त्रीजनः प्राज्ञो ब्रह्मचारी तथा भवेत् ॥११॥

जो होम के समय प्रतिदिन हवन करता ऋतु काल में स्त्री के पास जाता और परायी स्त्री पर कभी दृष्टि नहीं डालता वह बुद्धिमान् पुरुष ब्रह्मचारी के समान माना जाता है ॥

अमृतं ब्राह्मणोच्छिष्टं जनन्या हृदयं कृतम्। तज्जना पर्युपासन्ते सत्यं सन्तः समासते ॥१२॥

ब्राह्मणको भोजन कराने के बाद बचा हुआ अन्न अमृत है। वह माता के स्तन्य की भांति हितकर है। उसका जो लोग सेवन करते हैं वे श्रेष्ठ पुरुष सत्यस्वरूप परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं ॥१२।

(म० भा० अ० १९)

गोकरुणानिधि भी एक लाख

प्रकाशित कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसके दो भाग रखे हैं एक में गौ के प्रति युक्ति-युक्त एवं हार्दिक करुणा की अपील और दूसरे में गोकृष्यादि रक्षणी सभा का निर्माण। हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर रहे हैं। बढ़िया सफेद कागज पर मूल्य ३०) हजार, तीन रुपये सैंकड़ा देंगे। आशा है हजारों आर्य भाई-बहिनें हजारों की संख्या में आर्डर भेजेंगे इसका प्रचार करना बड़ा पुण्य का कार्य और राष्ट्र की महान् सेवा है।

सार्वदेशिक, नई दिल्ली-१

गोकरुणानिधि के प्रकाशन पर महत्वपूर्ण सुझाव

यदि आप गोकरुणानिधि की एक लाख से अधिक प्रतियां कृपा कर बांटें तो अधिक लाभ होगा। क्योंकि गोकरुणानिधि में सीधे-सादे और भावनापूर्ण शब्दों में समझाया गया है कि गौ आदि अत्यन्त उपयोगी पशुओं के हनन से मनुष्य समाज को हर प्रकार से हानि ही हानि है और उनके रक्षण से हर प्रकार का सुख है।

गोकरुणानिधि के प्रचार से गोरक्षा सम्बन्धी जानकारी आसानी से सबको ज्ञात हो जायेगी। यह मेरा नम्र सुझाव है।

—अमरनाथ, अमृतसरी

धन्यवाद। गोकरुणानिधि का प्रकाशन सभा द्वारा केवल ३०) रुपये हजार में उत्तम कागज पर किया जा रहा है। यह घोषणा हम सार्वदेशिक में कर चुके हैं। छप रही है। साथ ही अंग्रेजी में भी प्रकाशित कर रहे हैं उसे अमूल्य देंगे। —सम्पादक

व्यवहार भानु की भारी मांग

१००० प्रति श्री गजाधर प्रसाद जी आर्य, अध्यक्ष श्री गजाधर प्रसाद आर्य ट्रस्ट हिन्डौन सिटी।

१००० प्रति श्री प्रहलाद कुमार जी आर्य, हिन्डौन सिटी।

१००० श्री वैद्य प्रहलाद दत्त जी, प्रधान आर्यसमाज, सदर दिल्ली।

१००० प्रति श्री सत्यप्रकाश जी एम० ए०, मन्त्री, आर्य समाज (गुरुकुल विभाग) मुजफ्फरपुर।

१००० प्रति श्री त्रिलोकीनाथ जी इन्दौर।

१० हजार प्रति श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु का आर्डर पहले ही प्राप्त हो चुका है। छोटे-छोटे आर्डर बहुत आ रहे हैं।

धन्यवाद। —प्रबन्धक

विजय दशमी पर

आर्य-विजय अंक

प्रकाशित होगा। चक्रवर्ति राज्यों के संस्थापक आर्यों और विदेशी शत्रुओं का मुँह तोड़ने वाले आर्यों ने कब-कब, किस-किस प्रकार विजयश्री प्राप्त की थी—इस अंक में आप पढ़ेंगे।

इस आर्य विजय अंक के पढ़ते पढ़ते आपकी भुजाएँ फड़क उठेंगी। हृदय में वीरता के भाव जागृत होंगे। राष्ट्र की रक्षा और शत्रु दलन के उपाय भी इसमें आपको मिलेंगे।

१२० पृष्ठ और कुल तीस पैसे। भारी संख्या में आर्डर भेजें। पीछे निराश न हों।

प्रबन्धक

सार्वदेशिक, नई दिल्ली-१

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

शिक्षा आयोग और संस्कृत

शिक्षा आयोग ने जो अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है, उस पर देश मे काफी ऊहापोह हुई है। शिक्षा आयोग के निर्माण में ही मूलरूप से भूल हुई थी। उसमें विदेशों के तो अनेक विशेषज्ञ रखे गए थे, किन्तु संस्कृत का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई सुयोग्य विद्वान् नहीं रखा गया। कुछ लोगों ने शुरू में इस तथ्य की ओर सरकार का ध्यान खींचा था, परन्तु नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है। परिणाम वही हुआ, जिसकी आशा थी। शिक्षा आयोग की रिपोर्ट में सबसे अधिक कुठाराघात संस्कृत पर ही हुआ है। उसमें स्पष्ट रूप से यह निर्देश दिया गया है कि भविष्य में किसी संस्कृत विश्व विद्यालय को खोलने की अनुमति न दी जाए। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि शिक्षा आयोग के सदस्य संस्कृत भाषा के महत्व से सर्वथा अपरिचित थे।

संसार की समस्त भाषाओं के सन्दर्भ में और इनकी तुलना में संस्कृत का क्या स्थान है—जो इस बात को नहीं जानता, उसे शिक्षित कहना मुश्किल है। शिक्षा आयोग के ये सदस्य कैसे शिक्षाविद थे जो संस्कृत के महत्व से इतने अपरिचित थे? क्या इन सबके अन्तस्तल मे मैकाले की वही मूर्ति प्रतिष्ठित थी जिसने कभी कहा था कि संस्कृत का समस्त वाङ्मय अंग्रेजी की पुस्तकों की एक अल्मारी के सामने तुच्छ है? क्या आज का कोई शिक्षाविद मैकाले की इस उक्ति का समर्थन करने को तैयार होगा? शिक्षा आयोग के सदस्यों से इस अनभिज्ञता की आशा हम नहीं करते। यदि वे इतने अनभिज्ञ नहीं थे और फिर भी उन्होंने संस्कृत की उपेक्षा की है तो उन पर पक्षपात का इतना बड़ा आरोप आता है कि शिक्षा मन्त्रालय की पतितपावनी आशीर्वादमयी गंगा की अजस्र सहस्र धाराएं भी इस कलंक का प्रक्षालन नहीं कर सकतीं। फिर तो वह स्वतन्त्र भारत का शिक्षा आयोग नहीं था, प्रत्युत परतन्त्र भारत में लार्ड मैकाले द्वारा ही निर्मित, निबन्धित, निर्देशित और पथ-प्रदर्शित आयोग था।

जो लोग संस्कृत को मृतभाषा कहते हैं, वे इस तथ्य को जान कर क्या कहेंगे कि आजकल संसार के प्रत्येक अच्छे विश्व विद्यालय में संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन और अनुसन्धान की व्यवस्था है। क्या संसार की ऐसी कोई और भी मृतभाषा है जिसके पठन-पाठन और अनुसन्धान पर संसार भर में इतना अधिक बल दिया जाता हो? जो लोग दया करके संस्कृत को ग्रीक और लैटिन के समकक्ष रखा करते हैं—जैसा कि स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू किया करते थे और आधुनिक विज्ञान के युग में इन पुरातन भाषाओं के प्रति अहर्निश बढ़ती विरक्ति को लन्दन के अपने विद्यार्थी-जीवन में देखकर उन्होंने भी संस्कृत के प्रति वैसा ही विरक्तिमय रुख धारण कर लिया था, उनकी बुद्धि पर भी तरस आता है। ग्रीक और लैटिन के बोलने वाले आज यूरोप में कहां है? कहां हैं उनके पाठक, लेखक, पत्र-पत्रिकाएं और पुस्तकें? क्या आज ग्रीक और लैटिन को जानने वाला कोई व्यक्ति बिना किसी असुविधा के यूरोप का भ्रमण कर सकता है? जबकि संस्कृत के साथ ऐसी बात नहीं है। आज भी भारत के गांव गांव में संस्कृत जानने वाले, भले ही वे संस्कृत के पण्डित न हों और केवल टूटी-फूटी संस्कृत ही जानते हो, व्यक्ति मिल जायेंगे। आज भी हिन्दुओं के समस्त संस्कार और धार्मिक कृत्य संस्कृत के ही अवलम्बन से होते हैं। आज भी संस्कृत जानने वाला कोई व्यक्ति सारे भारत में बिना विशेष असुविधा के भ्रमण कर सकता है। आज भी संस्कृत की नित्य नई पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। आज भी सर्वथा अधुनातन वैज्ञानिक और राजनीतिक विषयों की धाराप्रवाह संस्कृत में विवेचना करने वाले पण्डितों की भारत मे कमी नहीं है। आज भी आर्यसमाज के मंच पर किसी भी वक्ता का भाषण बिना वेद मन्त्रों के और संस्कृत के श्लोकों के आरम्भ नहीं होता। संस्कृत को मृतभाषा कहना या ग्रीक लैटिन के समान उसे केवल पुरातत्व कालोपयोगी और आधुनिक काल विरोधी कहना अपनी अज्ञता का ही परिचय देना है।

जिस प्रकार कभी अतीत में समग्र भारत को एकता के सूत्र में ग्रथित करने का श्रेय संस्कृत को प्राप्त था, उसी प्रकार आज वर्तमान में समग्र भारत को एकता के सूत्र में आबद्ध करने का दायित्व भी संस्कृत को और उसकी अन्यतम पुत्री हिन्दी को वहन करना है। दक्षिण भारत में भी कभी कभी राजनीतिज्ञों की बदौलत हिन्दी-विरोधी स्वर भले ही सुनाई दे, परन्तु संस्कृत-विरोध का स्वर वहां भी सुनाई नहीं देगा। इसके विपरीत सचाई तो यह है कि संस्कृत के जितने प्रकाण्ड पण्डित और प्रगाढ़ विद्वान् दक्षिण भारत में मिलेंगे, उतने उत्तर भारत में नहीं। पुराने जमाने में जितने भी आचार्य हुए, वे चाहे उत्तर भारत के हों चाहे दक्षिण भारत के सबने अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए समान रूप से संस्कृत को ही माध्यम बनाया था। उसमे आर्य-अनार्य या आर्य-द्रविड़ का मतभेद भी नहीं चला। समस्त भारत को सांस्कृतिक दृष्टि से एकता के सूत्र में बांधने का श्रेय संस्कृत को ही है।

उत्तर भारत की तो सब भाषायें संस्कृत से निकली ही हैं, दक्षिण भारत की भाषाओं में भी नब्बे प्रतिशत शब्द संस्कृत से लिये गए हैं। भाषा विज्ञान के सब पण्डित इस बात पर एकमत हैं कि यूरोप की समस्त भाषाएं संस्कृत से घनिष्ट रूप से सम्बद्ध हैं। इसी लिए वे उन्हें 'इण्डो यूरोपियन' या योरोपीय भाषा परिवार की भाषाएं कहते हैं। हम इससे एक कदम आगे बढ़ कर कहते है कि केवल यूरोप ही नहीं, दक्षिण एशिया, पूर्वी एशिया और पश्चिमी एशिया की भाषाएं भी संस्कृत से ही अनुप्राणित है। बर्मा, स्याम, अनाम, इंडोचीन, इंडोनेशिया, मलयेशिया, जैसे पूर्वी एशिया के देश और अरब, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान जैसे पश्चिमी एशिया के देशों की भाषाएं भी संस्कृत से ही प्रभावित हैं। बाली में आज भी टूटी फूटी संस्कृत ही बोली जाती है। धीरे धीरे संसार के अन्य विद्वान् भी इस मत की ओर आकृष्ट होते जा रहे हैं कि संसार की सब भाषाओं का उद्गम भी कोई एक ही भाषा है, क्योंकि मानव-जाति का उद्गम भी एक ही है वह भाषा संस्कृत के सिवाय कोई और भाषा नहीं हो सकती।

जब तक संसार के अन्य विद्वान् मानव जाति की महान् विरासत के रूप में संस्कृत को पूर्णतया नहीं पहचानते, तब तक हमारा इतना निवेदन है कि भारत के तो इतिहास, भूगोल, संस्कृति, धर्म और साहित्य का अविच्छिन्न अंग है ही संस्कृत। यह भारत के जीवन का अंग है। उसके बिना भारत भारत नहीं रहेगा। यदि मानवजाति को नहीं भी, तो कम से कम भारत को, बिना संस्कृत के नहीं जाना जा सकता। यही कारण है कि शिक्षा आयोग की संस्कृत-विरोधी रिपोर्ट की राजस्थान के राज्यपाल डा० सम्पूर्णानन्द ने बिहार के राज्यपाल श्री अनन्तशयनम अय्यगर ने, उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री विश्वनाथ दास ने और दिल्ली के उपराज्यपाल श्री आदित्यनाथ झा ने तीव्र भर्त्सना की है। श्री अय्यगर का सुझाव तो यह है कि संस्कृत भारत के प्रत्येक हाई स्कूल में अनिवार्य होनी चाहिए। परन्तु स्वतन्त्र भारत के बच्चों के गलों में जिन्हें अंग्रेजी की घुट्टी जबर्दस्ती डालनी हो वे परमुखापेक्षी, परोपजीवी, परावलम्बी, मानसिक दृष्टि से दासानुदास, संस्कृत की बात क्यों करेंगे? इसलिए त्रिभाषा फार्मूले में उन्हें संस्कृत के पठन पाठन से शिकायत है। इसीलिए उन्होंने शिक्षा आयोग की रिपोर्ट में संस्कृत की इतनी अवहेलना की है। क्या यह सब शिक्षामन्त्रालय का सर्वथा पूर्वायोजित षड्यन्त्र है?

जहां तक ज्ञान-विज्ञान का प्रश्न है, वह भी संस्कृत में कम नहीं है। जब तक 'यन्त्र सर्वस्व और 'समरांगण सूत्रधार' जैसी पुस्तकें प्रकाशित नहीं हुई थीं तब अनेक लोग यह समझा करते थे कि संस्कृत में अध्यात्म, धर्म, कला और ललित साहित्य तो है, पर भौतिक यन्त्र विज्ञान नहीं है। संस्कृत में ज्ञान-विज्ञान का कितना भण्डार भरा है, इसका पता तब तक नहीं लग सकता जब तक संस्कृत के समस्त वाङमय का पूर्णतया अवगाहन न कर लिया जाए।

जब भी संस्कृत को पढ़ने के पश्चात् कोई भी छात्र जिस प्रकार सरलता से भारत की समस्त भाषाओं की आत्मा तक पहुंच सकता है, उतनी सरलता से किसी अन्य भाषा के द्वारा नहीं पहुंच सकता। समग्र भारत की भावनात्मक एकता के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि भारत के हाई स्कूलों में संस्कृत अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाए। इस प्रश्न पर साम्प्रदायिक दृष्टि से सोचने के बजाय विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टि से विचार किया जाए। हम समझते हैं कि जिस किसी के भी मानस पटल पर 'एक देश' की तस्वीर अंकित होगी, वह संस्कृत को इस एकता की निर्मात्री के रूप में ही सोचेगा। देश का विघटन या खण्डित भारत आर्य समाज को कभी अभिप्रेत नहीं रहा। वह तो सदा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का समर्थक रहा है। इसलिए उसकी दृष्टि में तो सरकार के द्वारा ऐसा कदम उठाया जाना अनिवार्य आवश्यकता है।

सामयिक-चर्चा

वैर विरोध का त्याग करो

यह बड़े दुःख एवं परिताप की बात है कि आर्य समाज का वातावरण अधिकार एवं पदलोलुपता जनित पारस्परिक फूट, कलह, घात पात एवं वैर विरोध से धूमिल एवं कलुषित बना हुआ है और दिन पर दिन बनता जा रहा है। आर्य समाज में जीवन-ज्योति है और उसके सदस्यों में लगन और उत्साह है। इस ज्योति और उत्साह का उपयोग रचनात्मक कार्य मे होना चाहिए नाकी विध्वसात्मक कार्यों मे। देश और समाज को अनेक बुराइयों के निवारण में आर्यसमाज से बड़ी २ आशाएं हैं। इन आशाओं की पूर्ति पारस्परिक सद्भाव, मिलकर काम करने और उसे बढाने से ही सम्भव हो सकती है।

आर्यसमाज की उन्नति में उन लोगों का बड़ा हाथ है जो अपने जीवन का कार्य क्रम बनाते हैं। स्वाध्याय, सदाचार, पारिवारिक कर्त्तव्यों की सुन्दररीति से पूर्ति, वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन की उत्कृष्टता, आत्मिक उन्नति और निष्काम भाव से समाज-सेवा जिनके जीवन के पुरोगम के अंग रहे या रहते हैं उनके पुरोगम में आत्म सवर्द्धन एवं स्वार्थ पूर्ति के लिए लड़ाई-झगडे सम्मिलित नही रहते।

आर्यसमाज एवं आर्यजनों को ऐसे समाज के निर्माण और विकास में योग देना है जिसमें हिंसा, वैर-विरोध घात पात और फूट तिरस्कृत हों जिसमे सदाचार सद्भाव प्रेम और सहानुभूति प्रतिष्ठित हों, जिनमें विचार पूर्वक कार्य होता हो और छोटे से छोटे व्यक्ति को साथ लेकर एकमत होकर कार्य करने की भावना विद्यमान हो।

आज सर्वत्र हिंसा, छल-कपट, पारस्परिक वैमनस्य एवं वैर-विरोध का वातावरण व्याप्त है जिन्होंने मानव-समाज को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। अन्याय से पर द्रव्य लेने वा स्वत्वापहरण की इच्छा, दूसरों का बुरा चाहना, परलोक की अपेक्षा वा नास्तिकता, कठोर और असत्य भाषण, चुगली और व्यर्थ की बकवास भारी लूटमार अशास्त्रीय विधान से अतिरिक्त हिंसा, पर स्त्री गमन, दुराचार बलात्कार हत्या एवं आत्म हत्या इन मन वचन और शरीर के अपराधों में वृद्धि हो जाने से ऐसा लगता है मानो मानव-समाज का अन्त निकट आ गया है और उसकी जीवन-नौका बिना मल्लाह के अथाह समुद्र में इधर-उधर डोल रही है।

इस निविड अन्धकार में एक रजत-रेखा देख पड़ती है। वह है वेद जिसका अन्धकार एवं संशय में ग्रस्त हो जाने पर सहारा लेने की उदात्त शिक्षा दी गई है। इसके प्रचार का महान् दायित्व आर्यसमाज पर है। यदि पारस्परिक झगड़ों, कलह एवं उत्पात के कारण हमारा लक्ष्य इस महान् कार्य की ओर से हट जाय तो यह आर्य समाज का ही नहीं अपितु समूची मानव जाति का दुर्भाग्य होगा और हम अभीष्ट समाज का निर्माण न कर सकेंगे।

आर्य समाज एक प्रजातांत्रिक सगठन है। इस प्रकार के सगठनों की शक्ति हीनता का प्रबल कारण पदों और अधिकारों के लिए दौड़-धूप और सघर्ष होता है। लिंकन ने जब यह कहा था कि अमेरिकन गणतन्त्र को सबसे बडा खतरा तब उत्पन्न होगा जब कि पदों और अधिकारों के लिए दौड-धूप एवं संघर्ष व्याप्त हो जायेंगे तब उसने एक बड़े सत्यको प्रतिष्ठित किया था। आर्यजनों को इस चेतावनी से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए और वेद की शिक्षाओं पर आचरण करना अपना ध्येय बनाना चाहिए जिनमें से एक का ऊपर निरूपण किया गया है। वेद मन्त्र इस प्रकार है—

ओ३म् नकिर्देवा मिनीमसि न किरा यो पेयामसि मन्त्र श्रुत्य चरामसि। पक्षेभिरपि कक्षेभिः सरभामहे॥ ऋ० १०।१३४।७।

'हे दिव्य गुण सम्पन्न महात्माओ न तो हम हिंसा करते हैं न घात-पात करते हैं न ही फूट डालते हैं वरन् मन्त्र के अवणानुसार आचरण करते हैं, चलते हैं तिनकों के समान तुच्छ साथियों के साथ भी एक होकर एक मत होकर मिलकर प्रेम पूर्वक कार्य करते हैं।

परिगणित वर्ग

स्वतन्त्रता के १९ वर्ष के बाद भी अस्पृश्यता विद्यमान है, यह तथ्य बड़ा दुःखदायी है। परिगणित और अनुसूचित वर्गों के कमिश्नर की रिपोर्ट में जिस पर लोक सभा मे बहस हुई है कोई नई बात नहीं कही गई है। प्रदेशीय सरकारों के विरुद्ध यह शिकायत की गई है कि वे इन वर्गों से सम्बद्ध कल्याणकारी कार्यों को बढ़ाने में बडी लापरवाही से काम लेता है। इन कार्यों के लिए निश्चित धन बिना खर्च किए पडा रहता है या अन्य मदों में व्यय कर दिया जाता है। देहातों के हरिजनों को कानून का पता ही नहीं है और उनके साथ भेद-भाव का व्यवहार किया जाता है। राज्य के हरिजन कल्याण विभाग पचायतें और सामाजिक संस्थान अस्पृश्यों के प्रति बरते जाने वाले भेद-भाव के निवारण के लिए अपना योगदान नहीं कर रही हैं।

२३ अगस्त को लोक सभा में कुछ सदस्यों ने इस बात पर जोर दिया कि परिगणित वर्गों के लोगों को सरकारी नौकरियों में लेने के कार्य को तेजी से बढाया जाय जो आबादी के अनुपात से २२-५ नौकरियों के हकदार हैं। यह ढग निषेधात्मक है। इससे उनका स्वस्थ विकास कुंठित होता है और इससे उनमे आत्म-विश्वास का उत्पन्न होना दूभर हो जाता है। नौकरियां रिजर्व कर दिए जाने से उनमें पृथकता की भावना गहरी और राष्ट्रिय एकता कुंठित हो जाती है। इस प्रकार की रियायतें अल्पकालीन काल के लिए उपयोगी हो सकती हैं परन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि कृत्रिम सहारे स्थायी शक्ति प्रदान नहीं कर सकते।

पिछले दिनों यह बात चली थी कि जिन परिगणित वर्गों की आर्थिक स्थिति में उन्नति हुई है। उन्हें परिगणित वर्गों की सूची में से निकाल दिया जाय। इसका घोर विरोध हुआ था विरोध करने वालों में स्वयं परिगणित वर्ग के लोग भी सम्मिलित थे। इस विरोध से यह बात स्पष्ट हो गई थी कि रियायतों के निरन्तर उपभोग मे पिछड़ेपन के प्रति भी ममता उत्पन्न हो जाती और निहित स्वार्थों की सृजना हो जाती है। आर्थिक उन्नति के होते हुए भी परिगणित वर्गों की सूची के छोटा बनने के स्थान में वह दिन पर दिन बड़ी बन रही है। कौन वर्ग परिगणित वर्ग मे रखा जाना चाहिए और कौन नहीं, इसके निरूपण के लिए यदि 'आर्थिक पैमाना काम मे न लाया गया तो परिगणित जातिया सदैव परिगणित बनी रहेंगी और अस्पृश्यता का उन्मूलन न हो सकेगा। लोकर कमेटी ने बताया है कि हरिजन नेताओं मे भी कुछ ऐसे नेता हैं जो राजनैतिक सुविधाओं का बना रहना पसन्द करते हैं भले ही नौकरियों का आरक्षण तथा अन्य आर्थिक सुविधाएं चली जाय। यह ठीक है कि अस्पृश्यता निवारण के आन्दोलन मे तथा कथित उच्च वर्ग और नौकर शाही अधिक सहायक सिद्ध नहीं हुए हैं परन्तु यह भी ठीक है कि हरिजनो के प्रभावशाली वर्ग अपने सकुचित स्वार्थों की पूर्ति के कारण सामाजिक भेदभाव को बनाए रखना चाहते हैं। (इन्डियन एक्सप्रेस २६-८-६६

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

हाईकोर्ट का आदेश

२४-२५ सितम्बर को दोनों सभाऐं चुनाव न करें।

इस सभा के आदेश से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का वार्षिक अधिवेशन उसके अधिकृत मन्त्री श्रीयुत डा० हरिप्रकाश जी ने २४, २५ सितम्बर १९६६ को अम्बाला में रखा था जिसकी सूचना प्रतिनिधियों को पूर्व दी जा चुकी है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कथित अधिकारियों ने अम्बाला कोर्ट के निर्णय के खिलाफ हाई कोर्ट में रिवीजन दाखिल किया था और सार्वदेशिक सभा द्वारा कराए जाने वाले निर्वाचन को रोकने के लिए निषेधाज्ञा मांगी थी। रिवीजन की सुनाई की तारीख २० सितम्बर थी। इस पर हाई कोर्ट ने दोनो सभाओं को निर्वाचन करने से रोक दिया है और सुनवाई की अगली तारीख २४ अक्टोबर नियत की है।

अतः २४, २५ सितम्बर को अम्बाला में होने वाला अधिवेशन स्थगित कर दिया गया है। प्रतिनिधिगण इन तारीखों में अम्बाला न आयें।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

हैदराबाद की स्वतन्त्रता और आर्य समाज

यहां इस बात का उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा कि उस्मान अली खां के पूर्वजों के प्रथम सूबेदार आसफ जाह निजामुल-मुल्क को दिल्ली के बादशाह ने दक्खन का सूबेदार बना कर भेजा था परन्तु आसफ जाह ने केन्द्रीय सरकार से ऐसा ही विद्रोह किया जैसा कि भारत सरकार के विरुद्ध उस्मान अली खां ने गद्दारी की थी।

कहा जाता है कि दिल्ली के बादशाह फर्रुखसियर ने १७१२ई० में मीर कमरुद्दीन को अपना सूबेदार बना कर दक्खन भेजा, जिसे कि आसफ जाह निजामुल मुल्क का खिताब दिया गया था। १७२४ ई० में आसफ जाह ने केन्द्रीय सरकार से गद्दारी करके अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा करदी और १७४८ ई० तक शासन करते रहे। १८५३ ई० में निजाम ने बरार, उस्मानाबाद, रायचूर कम्पनी को इस उद्देश्य से समर्पित किया था कि हैदराबाद में कम्पनी की फौज रहे और कम्पनी का व्यय भी इन्हीं की आय से चले। १८५७ ई० के स्वतन्त्रता संग्राम में निजाम को अंग्रेजों ने पूरे सहयोग के उपलक्ष में रायचूर और उस्मानाबाद को लौटा दिया और निजाम ने बरार को २५ लाख वार्षिक के निश्चित पट्टे पर अंग्रेज सरकार को दे दिया। जो आज महाराष्ट्र प्रदेश का भाग है। इसी परम्परा के अनुसार निजाम ने भी अपने राज्य को स्वतन्त्र घोषित किया था।

मजलिसे इत्तिहादुल्मुस्लमीन का नग्न रूप इसके पीछे है

निजाम और उसकी साम्प्रदायिक सरकार ही उन सम्पूर्ण [illegible] और अत्याचारों के लिये उत्तरदायी थी, जिनका सामना हैदराबाद की जनता को करना पड़ रहा था। मजलिसे इत्तिहादुल्मुस्लमीन [illegible] हिटलरशाही के रूप में भली प्रकार जनता के सामने आ चुकी थी। उस कठिन अवसर पर जब कि निजाम ने भारत संघ से छेड़छाड़ शुरू की थी, हैदराबाद के शान्तिप्रिय और बुद्धिमान मुसलमान, मजलिसे

आर्यों का शौर्य दीप

श्री प० नरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद व उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

(गतांक से आगे)

इत्तिहादुल्मुस्लमीन को तथा निजाम सरकार को बहुत अधिक भय और सन्देह के साथ देखने लगे थे। जब कुछ देशभक्त और न्यायप्रिय सज्जनों ने निजाम सरकार को उसकी अनुचित हलचलों के दुष्परिणामों से सूचित करना चाहा था, तब उन्हें कायर और गद्दार की उपाधि से विभूषित करके बदनाम किया गया। रियासत के नये मंत्रीमण्डल में चार, पांच मजलिसी मुसलमान अधिकार जमा चुके थे और मजलिस का नेता कासिम रजवी रजाकारों का फील्ड मार्शल बनकर भारत संघ से टक्कर लेने की योजनायें बना रहा था। हैदराबाद की तथाकथित स्वतन्त्रता को किसी भी मूल्य पर सुरक्षित रखने के लिये उस समय यहां जो-जो भयंकर कुचक्र रच रहे थे, वे सर्वथा ही अनावश्यक और हास्यास्पद थे। तथापि निजामशाही को आत्मघात करने से कौन रोक सकता था।

रजाकारों की भरती

रियासत हैदराबाद में दीर्घकाल से आर्य-हिन्दुओं पर पुलिस के अत्याचार होते चले जा रहे थे, परन्तु जब निजाम और मजलिसी नेताओं ने मिलकर हैदराबाद की तथाकथित स्वतन्त्रता की घोषणा की तब परिस्थिति और भी अधिक विषम बन गई। सरकार ने जहां अपनी फौज और पुलिस को अधिक से अधिक शक्तिशाली बनाने का यत्न किया, वहां इसके साथ ही रजाकारोंने भी लगभग१लाखरजाकार निजाम की सहायता के लिये भरती कर लिये। रियासत के सभी महत्वपूर्ण केन्द्रों में फौज और पुलिस का जाल बिछा दिया गया। और उन्हें इस बात का आदेश दे दिया कि जो कोई भी सरकार और उसकी नीति का विरोधी नजर आवे, उसे गोली मार दी जावे। इस प्रकार उन दिनों सम्पूर्ण हैदराबाद राज्य में पुलिस और फौज का राज्य हो चुका था। और जनता में भारी आतंक छाया हुआ था।

आर्य समाज के लिये सन् १९४७ ई० का समय भारी कठिनाई और परीक्षा का समय था, तथापि यह भी स्पष्ट था कि वह परीक्षा अन्तिम थी और कठिनाइयों का अन्त भी समीप ही था। परिस्थितियां प्रतिकूल और बहुत भयानक थीं। आये दिन नई-नई दुर्घटनाओं की भरमार होने लगीथी। प्रत्येक क्षण अनिश्चितता में चिन्ता करते हुए व्यतीत हो रहा था। निजाम सरकार तानाशाही हथकण्डों और पशु बल के आधार पर देश भक्त, शान्ति और स्वतन्त्रता प्रिय, प्रजातन्त्रवादी और संप्रदायवाद विरोधी शक्तियों को कुचल डालना चाहती थी। पुलिस और फौज के साथ रजाकार भी शामिल हो गये थे। और सभी मिलकर आर्य समाजियों का सफाया कर डालने का घृणित आयोजन कर रहे थे। इस अवसर पर आर्य समाज ने भी अपनी परम्परागत सत्यप्रियता, निडरता, साहस और कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया। जनता से आर्यसमाज के निकट सम्पर्क एवं आर्यसमाज के प्रति जनता के प्रबल प्रेम और विश्वास का परिचय भी इस अवसर पर मिला। जनता के इस पूर्ण सहयोग और समर्थन को पाकर आर्यसमाज भी युद्धक्षेत्र में कूद पड़ा और उसने भी तथाकथित आजाद हैदराबाद सरकार के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। क्योंकि तथाकथित आजाद हैदराबाद की योजना हिन्दू जनता के हितों के विरुद्ध थी और उनके ऊपर निजाम की अत्याचार परायण निरंकुश नीति तानाशाही को लादने वाली थी, इसलिये हैदराबाद की सम्पूर्ण

जनता उसके विरुद्ध आर्यसमाज के साथ उठ खड़ी हुई थी। आर्य समाज का पक्ष उस युद्ध में यह था कि हैदराबाद राज्य भारत संघ का एक अविभाज्य अंग है और भारत संघ में शामिल होने में ही हैदराबादी जनता का हित है। भारत संघ में शामिल होकर ही हैदराबाद की जनता प्रजातन्त्रवाद के लाभों को प्राप्त कर सकती है और विश्व चेतना से अपना उचित और आवश्यक सम्बन्ध स्थापित कर सकती है। इसलिए हैदराबाद की जनता को वे सब बलिदान करने ही चाहिये जिनकी उस समय आवश्यकता थी। (क्रमशः)

वेद कथा अंक

का बड़ा सुन्दर और सफल सम्पादन हुआ है अनेक उपयोगी एवं विद्वत्तापूर्ण लेख हैं यह अंक स्थायी साहित्य में सम्मिलित होगा। सम्पादक महोदयों को बधाई और आपकी प्रकाण्ड पटुता के लिये हार्दिक धन्यवाद

'वेद कथा' का अंक प्राप्त कर,
निश्चय अति आनन्द मिला।
भव्य भावनाओं को पढ़-पढ़,
हृदय-कुसुम भी खूब खिला।

—पद्मश्री हरिशंकर शर्मा

—आर्यसमाज [illegible] में श्रावणी पर्व धूमधाम से मनाया गया। उपस्थित महानुभावों को एक-एक प्रति वेद कथा अंक भेंट की गई। शान्ति के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

क्या हिन्दी प्रेमी निस्तेज हो रहे हैं?

३० जून १९६६ के दक्कन क्रानिकल हैदराबाद ने हिन्दी के विरोध में एक अग्रलेख लिखा है। ऐसा लगता है कि उक्त पत्र ने हिन्दी का विरोध करना अपनी नीति बना रखी है। हिंदी-विरोध का ऐसे वह अवसर ढूंढ़ा करता है। केवल हिन्दी का विरोध करने से कोई आपत्ति किसी को नहीं हो सकती, किन्तु पत्रकारिता के सामान्य स्तर से हटकर हिन्दी का विरोध खेदजनक है। उपर्युक्त अग्रलेख में दक्खन क्रानिकल ने यह दावा किया है कि एच० एस० सी०, एस० एल० एल० सी० और मल्टी पर्पज परीक्षाओं के लिए हिन्दी को अनिवार्य विषय बनाने की आवश्यकता नहीं। इसके कारण विद्यार्थियों को बहुत हानि उठानी पड़ रही है। हिन्दी आन्ध्र की ऐसी भाषा नहीं है जिसमें यहां के लोग लिखते या पढ़ते हैं, फिर इस भाषा को हाईस्कूल की उपर्युक्त परीक्षाओं में अनिवार्य विषय क्यों बनाया गया है। किन्तु इस अंग्रेजी पत्र ने अपने पक्ष में कोई ठोस आंकड़े प्रस्तुत नहीं किये हैं। हमारा विश्वास है कि दक्कन क्रानिकल के पास अपनी बात की सत्यता को सिद्ध करने के लिए आंकड़े ही नहीं हैं। यदि इस दिशा में उक्त पत्र आंकड़े इकट्ठे करने का प्रयत्न करेगा तो उसको स्वयं अपनी बात कटती दिखाई देगी। उसने लेख का प्रारंभ हिन्दी के प्रति कुछ लोगों के पूर्व ग्रहीत द्वेष को उभारने के प्रयत्न से किया है। शिक्षा-क्षेत्र में काम करने वाला हर कोई यह जानता है कि क्षेत्रीय भाषा हिन्दी में ८० प्रतिशत विद्यार्थी उत्तीर्ण होते हैं और परीक्षा में केवल क्षेत्रीय भाषा हिन्दी के कारण अनुत्तीर्ण होने वाले छात्रों की संख्या ५ प्रतिशत भी नहीं है। इसके विपरीत अंग्रेजी ही एक ऐसा विषय है जिसके प्रति विद्यार्थी अधिक सजग रहकर और अधिक धन तथा परिश्रम व्यय करके भी अधिक हानि उठाता है। केवल अंग्रेजी के कारण अनुत्तीर्ण होने वालों की संख्या केवल क्षेत्रीय भाषा हिन्दी के कारण अनुत्तीर्ण होने वालों से बहुत अधिक है। "हिन्दी-क्षेत्रीय भाषा" में छात्रों को थोड़े से परिश्रम से बहुत अधिक अंक मिलते हैं, जिसके कारण छात्रों को अपनी श्रेणी (डिविजन) सुधारने में सहायता मिलती है। छात्र इस तथ्य को जानते हैं और हिन्दी के कारण खूब लाभान्वित होते हैं। दक्कन क्रानिकलकार को अपने हिन्दी विरोध में यह तथ्य दिखाई नहीं दे रहा है। हम अपने कथन की पुष्टि में एक तथ्य पाठकों के सामने रखना चाहते हैं। विद्यार्थी हिन्दी से होने वाले लाभ और भावी उपयोगिता को लक्ष्य में रखकर ही कालेज में पहुंचने पर, जहां क्षेत्रीय भाषा का चुनाव अपनी इच्छा पर रहता है, प्रायः हिन्दी ही लेते हैं। विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में तेलुगु क्षेत्रीय भाषा को पढ़ने वालों की संख्या के बाद हिन्दी क्षेत्रीय भाषा पढ़ने वाले छात्रों की संख्या है। ये छात्र हिन्दी भाषा-भाषी कम और हिन्दीतर भाषा-भाषी अधिक संख्या में होते हैं। दक्कन क्रानिकल के सम्पादक को ये सभी तथ्य शायद ज्ञात नहीं हैं।

हमारे इस शहर के इस प्रतिष्ठित पत्र के सम्माननीय सम्पादक इतने अधिक अन्तर्राष्ट्रीय हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी की वकालत से एक सीढ़ी उतरकर राष्ट्रीय भाषा तक पहुंचना ही नहीं चाहते। हम नहीं जानते कि वे आन्ध्र प्रदेश की क्षेत्रीय भाषा के कितने पक्ष में हैं? लेकिन दक्कनक्रानिकलकार अपने हिन्दीविरोध को उजागर करके बदनामी मोल लेने की अपेक्षा हाईस्कूल और कालेज की परीक्षाओं में ६० से ८० प्रतिशत अनुत्तीर्ण होने वाले छात्रों के प्रति सच्ची सहानुभूति दर्शाने और उसके कारणों तथा उनका इलाज दर्शाने में जोर आजमाई करते तो अधिक उपयोगी होता।

हैदराबाद में दक्कन क्रानिकल जैसे हिन्दी विरोधी तत्व इस समय हर क्षेत्र में सक्रिय हैं। जितने सरकारी बोर्ड हैं, घोषणाएं हैं, जिनके लिए इससे पूर्व अंग्रेजी, तैलुगु, उर्दू के साथ-साथ हिन्दी का प्रयोग होता था, अब उन में हिन्दी का प्रयोग बन्द हो गया है। हैदराबाद और सिकन्दराबाद में हिन्दी लिखने, पढ़ने, बोलने और समझने वालों की संख्या लाखों में है। दोनों नगरों में हिन्दी की ३०-३५ शिक्षण संस्थाएं हैं, जिनमें २० हाईस्कूल हैं। शहर के सरकारी और गैरसरकारी सभी हाई स्कूलों के छात्र और कालेज के ६० प्रतिशत छात्र हिन्दी लिखना पढ़ना जानते हैं। करीब १ लाख से अधिक हिन्दी भाषी जनता है। किन्तु हिन्दी जानने वाली इस जनता की भावना, आवश्यकता और लाभ का कोई ध्यान नहीं रखा जाता। हिन्दी को धीरे-धीरे हर क्षेत्र से खिसकाया जा रहा है। चुपचाप अन्दर ही अन्दर हिन्दी-विरोधियों का एक हिन्दी-विरोधी षड़यन्त्र चल रहा है। विश्वविद्यालय में जब यह देखा गया कि हिन्दी क्षेत्रीय भाषा पढ़ने वालों की संख्या बहुत अधिक हो रही है तो एक चोट हिन्दी पर ही नहीं, सभी भारतीय भाषाओं पर लगाई गई। रूसी, जर्मन और फ्रेंच भाषाओं को भी क्षेत्रीय भाषा का दर्जा दिया गया। इस पर भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती बल्कि यह निर्णय प्रशंसनीय है। किन्तु आपत्ति इस बात की है कि इन विदेशी भाषाओं का स्तर प्राइमरी का रखा गया है और अन्य भारतीय भाषाओं का स्तर काफी ऊंचा है। अब छात्र अपनी भाषाओं को छोड़कर उपर्युक्त विदेशी भाषाएं लेने लग गये हैं। कुछ व्यक्तियों की ओर से इस बात का प्रयत्न किया गया था कि फ्रेंच, जर्मन और रूसी भाषाओं का कहीं परीक्षाओं के लिए वही स्तर रखा जाए जो भारतीय भाषाओं का स्तर है, तो इसका विश्वविद्यालय के दिग्गजों ने विरोध किया। अब दक्कन क्रानिकल का प्रस्ताव है कि हाई स्कूल से हिन्दी को क्षेत्रीय भाषा के उस स्थान से हटा दिया जाए, जो स्थान उसे आज प्राप्त है।

हिन्दी का इतना सक्रिय विरोध हो रहा है, हिन्दी प्रेमियों की यहां इतनी बड़ी संख्या है, किन्तु इस हिन्दी विरोध का कोई प्रभावकारी उत्तर नहीं दिया जा रहा है। हिन्दी-प्रेमियों की शहर में और आन्ध्र प्रदेश में इतनी बड़ी संख्या रहकर भी हिन्दी की ऐसी उपेक्षा और अवहेलना अत्यन्त खेदजनक है। क्या हिन्दी-प्रेमी निस्तेज हो रहे हैं या हिन्दी की ओर से उदासीन? दक्कन क्रानिकल के समय-समय पर होने वाले अनाप-शनाप विरोध की ओर कितनों ने ध्यान दिया और मौखिक तथा लेखी रूप में कितनों ने अपना असन्तोष प्रकट किया? हिंदी प्रेमियों की यह निस्तब्धता और चुप्पी हिन्दी के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध होगी। हिन्दी प्रचार सभा तो सरकारी कर्मचारियों के हाथों में पड़कर ऐसे अनेक महत्वपूर्ण अवसरों पर वह चुप रही, जबकि जनता उसके नेतृत्व और मार्ग-दर्शन की ओर ताकती रही। हिन्दी प्रेमी जनता को चाहिए कि हिन्दी के इस प्रकार के नामाकूल और निरर्थक विरोध का प्रभावशाली ढंग से उत्तर दें।

(श्री ए० बालरेड्डी, उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद)

श्रद्धेय श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी

विदेश से लौटने पर वेद प्रचार में संलग्न।

भारत के माथे पर सबसे बड़ा कलंक

वैदिक साहित्य में गो के लिए निम्नलिखित शब्द मिलते हैं :—

(१) अघन्या अर्थात न मारने योग्य(२)रोहणी अर्थात उन्नति का साधन (३) महिन्द्री, इन्द्रियों को पुष्टि देने वाली (गो का दूध इन्द्रियों को पुष्ट करता है) (४) ज्या अर्थात पूजा के योग्य (५) दुग्धारी दूध का भण्डार (६) इरित, माता (७) बहोला बहुत दूध देने वाली (८) शतोघन्या अर्थात एक सौ मनुष्यों को अपने दूध से तृप्त करने वाली (९) पावनी पवित्र करने वाली (१०) मद्रा अर्थात सबका भला और उपकार करने वाली। इस प्रकार अगति, ज्योति, काम, दोहा, सावित्री, सरस्वती आदि २५ शब्द गो के महानता के लिए आते हैं, जिनके अर्थों से सिद्ध होता है कि यह प्राणि कितना लाभदायक, उपयोगी माता के समान पालन करने वाला, उन्नति और समृद्धि का साधन, रक्षा और पालन के योग्य है।

बढ़ती हुई गोहत्या—

मुस्लिम राज्य में भारत में गोवध होता रहा परन्तु बहुत कम था। अंग्रेजी राज्य में इस पाप में वृद्धि हुई परन्तु अपने राज्य में पुराने तमाम रिकार्ड टूट गये हैं। बूचड़खाना के अन्दर और उनके बाहर खुले आम गोहत्या की जा रही है। भारत का बहुमत इनको नहीं चाहता परन्तु उन की भावनाओं को ठेस पहुंचाई जा रही है। वर्तमान शासन अपने पुराने वचनों को भूल गया है। स्वतन्त्रता मिलने से कुछ मास पूर्व गोवध के विरुद्ध भारत में प्रबल आन्दोलन किया गया था। उसका उद्देश्य यह था कि १५ अगस्त १९४७ की स्वतन्त्रता की घोषणा के साथ साथ कानून द्वारा भारत में गोहत्या के बन्द करने की भी घोषणा की जावे। इस आन्दोलन के बीच केवल एक दिन में ६० हजार तारें भारत के विभिन्न नगरों से सरकार को भेजी गईं। प्रस्ताव और पत्रों का अन्दाजा नहीं लगाया गया। ८ अगस्त १९४७ को पं० जवाहरलाल नेहरू ने एक प्रतिनिधि मण्डल को विश्वास दिलाया कि सरकार इस प्रश्न पर सहानुभूति पूर्ण विचार करेगा। एक समिति नियुक्त की जावगी वह समिति जो रिपोर्ट देगी उस पर अमल किया जाएगा। अतः आन्दोलन समाप्त किया जावे। इस आश्वासन पर यह देश व्यापी आन्दोलन समाप्त किया गया। १६ नवम्बर सन् १९४७ को समिति बनाई गई उसने ६ नवम्बर सन् १९४८ को गो हत्या को कानून द्वारा बन्द करने की रिपोर्ट पेश की। परन्तु सरकार ने आज तक उस पर अमल नहीं किया। ३ फरवरी को फिर एक प्रतिनिधि मण्डल गो हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के सम्बन्ध में पं० नेहरू से मिला और उनसे पुनः गो हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी आश्वासन प्राप्त किया परन्तु उस समय भारत वासियों को अत्यन्त खेद हुआ जब २ अप्रैल १९५५ को लोक सभा में पं० नेहरू ने आवेश में आकर यहां तक कह दिया कि "मैं प्रधान मन्त्री के पद से त्याग पत्र देने को तैयार हूं परन्तु गो हत्या को बन्द करने के प्रश्न पर झुकने को तैयार नहीं हू।"

निरर्थक बहाना—

भारत सरकार प० नेहरू के इस रुख के कारण भारत के इस महत्वपूर्ण प्रश्न को यह मामला प्रान्तीय सरकारों से सम्बन्ध रखता है। यदि वे चाहें तो इसके लिए कानून बना लें आज भी लोक सभा में उक्त निरर्थक तर्क को दोहराया जा रहा है और जनता को धोखा दिया जा रहा है। वरन् केन्द्रीय सरकार ने जिस कानून को पास करना चाहा वह प्रान्तीय सरकारों के विरोध के बावजूद, संविधान में संशोधन करके भी पास कर दिया। आवश्यकता है नियत साफ होने की।

गो-हत्या

श्री देवीदास आर्य, गोविन्दनगर, कानपुर

गो हत्या व गांधी हत्या -

प० जवाहर लाल नेहरू ने अपनी पुस्तक मेरी कहानी के पृष्ठ २६२ पर स्वयं लिखा है कि हिन्दू नर्म और अहिंसक है क्योंकि उसका आदर्श गाय है। महात्मा गांधी ने तो गोहत्या के प्रश्न को स्वराज्य की तरह महत्वपूर्ण बताते हुए यहां तक लिखा है कि मुझे ऐसा लगता है जब तक गो की हत्या होती है तब तक मेरी भी हत्या होती है। महात्मा जी को राष्ट्र-पिता मानने वालों और उनकी समाधी पर फूल चढ़ाने वालों से मैं एक सवाल करना चाहता हूँ कि वे उनके आदर्शों पर कहां तक चल रहे हैं?

इतिहास व गोरक्षा—

गो रक्षा की भावना हर एक हिन्दू के नस-नस में भरी हुई है इसको संसार की कोई शक्ति मिटा नहीं सकती। इतिहास इस का साक्षी है। १८५७ में गो रक्षा के प्रश्न पर ही भारत की स्वतन्त्रता का प्रथम युद्ध हुआ। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस युद्ध के चन्द साल ही बाद सबसे पहिले गो हत्या के पाप को मिटाने का बीड़ा उठाया था। वेदों ने गो की अनेक विशेषताएं लिख उसके हत्यारे को सीसे की गोली से उड़ा देने का आदेश दिया है। चक्रवर्ती आर्य महाराजा अपने हाथों से गा की सेवा करना और उसका अमृत दूध पीना अपना सौभाग्य समझते थे। इसकी रक्षा के लिए अपने प्राणों तक की आहुति देना आर्य हिन्दू राष्ट्र की परम्परा रही है। भगवान कृष्ण गो रक्षा के कारण गोपाल कृष्ण कहे जाते हैं महर्षि दयानन्द को भी गो रक्षा आन्दोलनों के कारण गोपाल दयानन्द कहा जाने लगा है।

इस्लामी काल में गो ब्राह्मण की रक्षा ही आर्य हिन्दू जातिका नारा था। मुस्लिम बादशाहों ने जब तक गो हत्या का पाप बन्द न किया उन के कदम नहीं टिक सके। बाबर ने हमायूं को जो वसीयत की थी उसमें लिखा था, "शान्ति पूर्वक राज्यकरनाहै तो हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं का आदर करके,गोहत्या बन्द कर देना।" अकबर, जहांगीर और शाहजहा के राज्य में गो हत्या बन्द रही इसीलिए उनका राज्य काफी बढ़ा। अंग्रेजी राज्य में हिन्दुओं पर अत्याचार होने लगे और गोहत्या होने लगी तो उसके विरुद्ध भी समय समय पर विद्रोह होता रहा। अन्ततः उसके भी पाव उखाड़ दिए गये। छत्रपति शिवाजी ने बाल काल में गो मांस बेचने वाले मलेच्छ कसाई को इस्लामी राज्य में ही यमपुरी में पहुचा दिया था और समर्थ गुरु रामदास के आदेशानुसार गो ब्राह्मण की रक्षा के लिए मराठा राज्य स्थापित किया था। गुरु गोविन्द-सिंह जी ने अपने जीवन का विशेष उद्देश्य गो घात हटाना बताया और प्रार्थना में सिंह गर्जना की :—

> यह देह आज्ञा तुर्कन गेह खिपाऊं
> गो घात का दोष जग से मिटाऊं।
> यह आस पूरी करो तुम हमारी,
> मिटे कष्ट गौवां छुटे खेद भारी॥

यही पवित्र गौ रक्षा का मिशन वीर बन्दा वैरागी के सामने था। उसने जिला गुरदासपुर (पंजाब) के निकट गोहत्या की सजा में एक गांव को भस्मी भूत कर दिया था और आज्ञा जारी कर दी थी कि जिस गांव में गौ हत्या होगी उसे जला दिया जायेगा। महात्मा गांधी और दूसरे हिंदुओं ने इसीलिए खिलाफत जैसे शुद्ध इस्लामी समस्या में मुसलमानों का साथ दिया था। इस पर हिन्दू मुस्लिम एकता की नींव रखी गई थी। उन दिनों बड़े बड़े मुसलमान मौलवी व मौलाने फतवा देते नहीं थकते थे कि इस्लाम व कुरान शरीफ में गो की कुरबानी नहीं है।

डालर के लिए गोहत्या—

स्वतन्त्रता के ९ वर्ष गुजर जाने के बाद भी गोहत्या का पाप जारी है। यह कितनी लज्जा की बात है और भारत के माथे पर कलंक है। कहने को तो भले ही हमारे कुछ शासक लोग मुसलमानों का बहाना पेश करें परन्तु भारत के मुसलमान आज गोहत्या पर हठ नहीं करते और न पहिले करते थे। यदि पाकिस्तानी मनोवृत्ति के कुछ मुसलमान हों भी तो उनके लिए पाकिस्तान का मार्ग खुला है। आज स्वतन्त्र भारत के धर्म निरपेक्ष राज्य में गोहत्या हो रही है—चमड़े के लिए, मांस के लिए, हड्डियों आदि के लिए। और इन चीजों के बदले लिए जाते हैं अमरीकी डालर ताकि अन्न मिल सके। आज एक करोड़ से अधिक गौओं का वध भारत में हो रहा है। यह संख्या संयुक्त भारत में (जब पाकिस्तान नहीं बना था) जितना गो-

(शेष पृष्ठ १९ पर)

महामानव कृष्ण

श्री सूर्यबली जी पाण्डेय, प्रधान
आर्य समाज जौनपुर

यों तो इस संसार में अनेक मानव नित्य जन्म लिया करते हैं और अपने जीवन के किंचित् चमत्कार दिखाकर कालान्तर में काल कवलित हो जाते हैं। न उनके जीवन काल में किसी का ध्यान उधर आकृष्ट होता है और न उनके मरणोपरांत ही कोई स्मृति अवशेष रह जाती है। पर समय २ पर विश्व ने ऐसे नर रत्नों को भी जन्म दिया है जिन्होंने न केवल अपने जीवन काल में ही मानव समाज का नेतृत्व किया है अपितु अपने अवसान के सहस्रों वर्ष पश्चात् भी विश्व के लिये मानवी आदर्शों के श्रोत बने हुए हैं। विश्व में प्रादुर्भूत ऐसे नर-रत्नों में महात्मा कृष्ण अपना शीर्ष स्थान रखते हैं। जिन पुत्रों को पाकर कोई भी मातृभूमि अपने को साभिमान पुत्रवती कह सकती है, भारत माता का सपूत, वासुदेव कृष्ण उनमें मूर्धन्य है। चाहे राजनीति हो या समाज शास्त्र, धार्मिक क्षेत्र हो या अध्यात्मवाद, शिक्षा शास्त्र हो या शस्त्र विद्या, शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का एक साथ एक ही व्यक्ति में जैसा सन्तुलित और सर्वांगीण विकास महा भाग कृष्ण के अन्दर हुआ वैसा विश्व में अन्यत्र मिलना असम्भव है। इसीलिये तो धर्म राज युधिष्ठिर द्वारा सर्व प्रथम पूज्य सर्व श्रेष्ठ मानव के सम्बन्ध में प्रश्न करने पर पितामह भीष्म ने कहा था:—"नृणां लोके हि को अन्यो अस्ति विशिष्टः केशवादृते।" स्पष्ट है कि भगवान कृष्ण अपने जीवन काल में महात्मा भीष्म के शब्दों में सर्व श्रेष्ठ विशिष्ट पुरुष थे। इस कथन की सत्यता इसलिये भी अधिक प्रमाणिक है। कि उक्त वचन महान् भीष्म ने कहीं एकान्त में नहीं अपितु राज सूय यज्ञ के अवसर पर समवेत देश देशान्तर के सभी राजाओं तथा महापुरुषों के मध्य कहा था जिसे चेदि नरेश शिशुपाल के अतिरिक्त सभी सम्भ्रांतजनों और विभिन्न राष्ट्रों के कर्णधारों ने स्वीकार किया था। पर शोक है कि वही कृष्ण कालान्तर में अविद्यान्धकार से आच्छन्न भारत वर्ष में एक ओर तो स्वयं भगवान और उसका अवतार माना जाने लगा और दूसरी ओर चोर-जार शिखामणि कामी कपटी और पता नहीं किन-किन दूषणों का जनक समझा जाने लगा। अन्ध भक्त भारतीयों ने उस महापुरुष को हमारी अनेक प्रेरणाओं का श्रोत मानव नहीं रहने दिया अपितु उसके जीवन के साथ अनेक असंगत असम्भव तथा अलौकिक चमत्कारों का सम्बन्ध जोड़कर या तो उसे अलौकिक पुरुष मानकर परम देवत्व प्रदान किया अथवा अनेक छल कपट, चोरी-जारी की कहानियों से सम्बन्धित कर उसे निम्न कोटि का क्षुद्र प्राणी बना दिया, दोनों अवस्थाओं में हमारा कृष्ण हमसे छिन गया। पहली अवस्था में वह परम पुरुष सर्वशक्ति सम्पन्न परमात्मा हुआ जिसके कारण वह हमारा आदर्श नहीं हो सकता। क्योंकि सर्वशक्ति मान सब कुछ कर सकता है। फिर हम सामान्य प्राणी उसका अनुकरण करके भी कहां तक कृत कार्य हो सकते हैं। दूसरी अवस्था में वह मानव के सामान्य स्तर से भी बहुत नीचे जाता है अतः वह औरों के लिये उपास्य और घृणास्पद के अतिरिक्त और अधिक मूल्य नहीं रखता। खेद है कि श्रीकृष्ण के उक्त दोनों स्वरूप पुराणों ने हमारे समक्ष उपस्थित किए हैं अतः इस लघुकाय निबन्ध के द्वारा पुराणों के तिमिराच्छन्न कठघरे से निकाल कर महाभारत के परम सात्विक कृष्ण का दिव्य स्वरूप सर्व साधारण के समक्ष उपस्थित करना ही अभिप्रेत है।

वंश परिचय

भगवान कृष्ण यदुवंशी नाम से विख्यात है। विविध पुराणों तथा महाभारत के मन्थन से उनके वंश के सम्बन्ध में निम्नलिखित जानकारी प्राप्त होती है। आरम्भ में महर्षि अत्रि से चन्द्रमा (सोम) हुए। चन्द्र ने महाराज बुध को जन्म दिया। महाराज बुध के साथ मनु कन्या इला व्याही गई। बुध और इला से ऐल अथवा चन्द्रवंशी सम्राट् पुरुरवा ने जन्म लिया पुरुरवा से आयु, आयु से नहुष और सम्राट नहुष से ययाति ने जन्म धारण किया। महाराज ययाति की दो रानियां थी। दानव वृष पर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा तथा प्रसिद्ध नीतिकार शुक्राचार्य की पुत्री देवयानि शर्मिष्ठा से दुह्यु अनु और पुरू तीन पुत्र हुए। देवयानि से महाराज यदु और तुर्वस ने जन्म लिया। इस प्रकार महाभारत के दोनों प्रसिद्ध वंश पौरवों और यदुवंशियों के आदि पुरुष महाराजा पुरु और यदु एक ही पिता ययाति की संतान है। यदु और पुरू दोनों भाइयों का वंश आगे चल निकला। महाराज पुरु की ३३ वीं पीढ़ी में तेजस्वी सम्राट कुरु ने जन्म लिया जिससे पुरू वंशी कौरव कहलाये। उधर यदु की लगभग पैंतीसवी पीढ़ी में राजा सतत्व हुए। उनके पुत्र सात्वत (भीम) ने अपने दो पुत्रों महाभोज अन्धक तथा विष्णि को जन्म दिया। इन दोनों पुत्रों के कारण प्रसिद्ध यदु वंश दो धाराओं में परिवर्तित हो गया जिसे क्रमशः अन्धक और विष्णि कहा जाने लगा। अन्धक की नवीं पीढ़ी में महाराज आहुक हुए। आहुक से राजा उग्रसेन और देवक ने जन्म लिया। उग्रसेन का पुत्र विख्यात कंस और देवक की पुत्री महात्मा कृष्ण की माता देवकी हुई। साथ ही दूसरी धारा विष्णि की आठवी पीढ़ी में सूर ने जन्म लिया। इन्हीं के नाम पर मथुरा के आस-पास का सारा व्रजमण्डल सूरसेन कहलाया। सूर ने कृष्ण के पिता वसुदेव तथा पृथा, श्रुतदेवा, श्रुत कीर्ति, श्रुत श्रवा और राजाधि देवी नाम की ५ पुत्रियों को जन्म दिया जो आगे चलकर भारतीय इतिहास में वीर माता के नाम से विख्यात हुई। इस प्रकार लोक नायक कृष्ण महाराजा यदु की ४५ वीं पीढ़ी में विष्णि धारा के यदुवंशी क्षत्रीये। कृष्ण के पिता वसुदेव जी की दो पत्नियां थीं। कंस के चाचा देवक की पुत्री देवकी तथा महाराजा पुरु की ३८ वीं पीढ़ी में उत्पन्न महाराजा प्रतीप की पुत्री तथा प्रसिद्ध राजा शान्तनु की बहन रोहिणी। देवकी ने कृष्ण और रोहणी ने बलराम को जन्म दिया। यही कृष्ण और बलराम की जोड़ी आगे चलकर सभी प्रकार की विचारधारा वालों के लिये एक आदर्श बनी और आज तक बनी चली जा रही है।

शिक्षा और अध्ययन

पुराणों ने भगवान कृष्ण के बचपन को तो माखन चुराने, दही छीनने और भांति-भांति के अलौकिक चमत्कारों को दिखाने में ही समाप्त कर दिया है। उस भावी महा मानव को विद्याध्ययन का अवसर ही नहीं दिया। यहां तक कि यज्ञोपवीत संस्कार भी कंसवध के पश्चात् कराया है। स्मरण रहे कि कंस जैसे शक्तिशाली का वध करते समय कृष्ण पूर्ण युवक हो चुके थे। तभी तो न केवल कंस अपितु चाणूर और मुष्टिक जैसे मल्ल तथा कुवलयापीड़ हाथी को भी पछाड़ने में समर्थ हो सके। अतः इतनी बड़ी अवस्था में यज्ञोपवीत का होना शास्त्रीय मर्यादा के प्रतीकूल है। पर पुराण कर्ताओं को इससे क्या सम्बन्ध। उन्हें तो कृष्ण को अलौकिक पुरुष सिद्ध करना था। इसी लिये तो भागवत कार ने केवल ६४ दिनों में कृष्ण के सारी विद्या सीख लेने का उल्लेख किया है। भला यही क्या कम है उसने ६४ दिन माना तो वैसे तो ६४ मिनट भी माना जा सकता था। पर वास्तविकता इसके सर्वथा विपरीत है श्री वसुदेव जी के कुल पुरोहित श्री आचार्य गर्ग ने कृष्ण और बलराम का सविधि उपनयन संस्कार कराया था। इस संस्कार के पश्चात् गायत्री मन्त्र द्वारा उन्होंने संध्या और उपासना का उपक्रम प्रारम्भ कर दिया था। इस क्रिया के पश्चात् ही वे उज्जैनी निवासी काश्यप गोत्रिय सान्दीपिन जी के आश्रम में प्रविष्ट होकर षडंग वेद, उपवेद, धर्मशास्त्र दर्शन आदि के साथ सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैत और आश्रय इन छः भेदों से युक्त राजनीति की भी दक्षता पूर्ण शिक्षा पाई थी। पुराण, महाभारत और उपनिषद् के अनुसार भगवान कृष्ण के चार गुरु थे। चारों ने चार प्रकार की शिक्षा दी थी। आचार्य गर्ग ने संस्कार द्वारा द्विजत्वमें दीक्षितकर ईशोपासना की अभिरुचि उत्पन्न की थी। गुरु सान्दीपिन ने वेद शास्त्रों की शिक्षा देकर उनका जीवन संसारोपयोगी बनाया था। छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार घोर अंगिरस ने कृष्ण को ब्रह्म विद्या की शिक्षा देकर ब्रह्मसाक्षात्कार करने की प्रेरणा प्रदान की थी और महाभारत के अनुसार महर्षि उपमन्यु ने भगवान कृष्ण को प्रभु दर्शन की प्रायोगिक शिक्षा देकर उन्हें समाधिस्थ योगी बना आत्म साक्षात्कार कराया था। इस प्रकार यदुवंशावतंस वसुदेव कृष्ण सद्शिक्षा और सद्-गुरु के प्रभाव से उत्तरोत्तर विकसित होता हुआ मानवता की परम विभूति योगिराज बना और यज्ञानुष्ठान करके परमात्म तत्व के साक्षात् करने में समर्थ हो सका।

आगरा के निकट एशिया का विशाल बूचड़खाना

प्रतिदिन हजारों पशुओं को हत्या की योजना

सभा मन्त्री, श्री लाला रामगोपाल जी द्वारा घोर विरोध

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपाल शालवाले ने उत्तर प्रदेश राज्य की मुख्य मन्त्री श्रीमती सुचेता कृपलानी को एक विशेष पत्र भेज कर आगरा के निकट हुबरतपुर ग्राम मे बनाये जाने वाले एशिया के विशाल कसाईखाने की योजना पर दु ख एव आश्चर्य प्रकट करते हुए उसे क्रियान्वित न होने देने का अनुरोध किया है।

समाचार के अनुसार सूखे मास की तैयारी के लिए यह कसाई खाना स्थापित किया जाने वाला है। पशुओ के शीघ्र वध के लिए ३२ करोड की लागत का एक स्वचालित प्लाट डेन मार्क से मगाये जाने की योजना है जिसमें एक दिन मे ३ हजार से १५ हजार तक पशु काटे जायेंगे। इस समय जब कि देश में गो-हत्या बन्द कराने का आन्दोलन उग्र रूप से चल रहा हो और बूचडखानों को बन्द कराये जाने की माग जोर पकड रही हो तब इस प्रकार के बूचडखाने का आयोजन करना देश की करोडो जनता के साथ विश्वास घात और उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुचाना है।

इस भूमि के आस पास ८० प्रति शतक जनता शाकाहारी है। इस बूचडखाने के बनाये जाने की योजना से उस क्षेत्र में बडी बेचैनी फैली हुई है। लोगों को भय है कि इसके कारण वहा का वातावरण गन्दा हो जायगा और किसानों की बहुत सी उपजाऊ भूमि उनसे छीन ली जायगी।

श्री शालवाले ने राज्य को चेतावनी दी है कि भारत की सम्पदा पशु धन के निर्मम विनाश की इस प्रकार की योजना को आर्य हिन्दू जनता कदापि सहन न कर सकेगी। और यदि इस योजना को मूर्त रूप दिये जाने की आतुर चेष्टा की गई है तो इसकी प्रतिक्रिया बडी भयावह होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और आगरा की समाजो को भी आदेश दिया गया है कि वे इस योजना के विरोध मे प्रान्त भर मे प्रबल आन्दोलन करें।

गोहत्या निषेध के लिए संसद भवन पर दिल्ली की आर्य समाजों का जोरदार धरना

आर्य केन्द्रीय सभा के आह्वान पर दिल्ली की आर्यसमाजो के हजारो कार्यकर्ताओं ने आज प्रात ९ बजे से साय ५।। बजे तक ससद भवन पर सुसगठित एव जोरदार धरना देकर गोहत्या निरोध आन्दोलन को नए चरण मे प्रविष्ट किया।

९ बजे से भारी सख्या मे आर्य देवियें और कार्यकर्ता ससद मार्ग पर स्थित सरदार पटेल की प्रतिमा के पास इकट्ठे हो गए और वहा से गौ-हत्या बन्द करो के गगन-भेदी जयकारे लगाते हुए ससद भवन की ओर जलूस के रूप में अग्रसर हुए। जलूस मे नर-नारी अपने हाथों में ओ३म् तथा गोहत्या बन्द करो के विभिन्न मोटो लिए हुए थे।

ससद भवन के सामने पार्क में विशाल यज्ञ हुआ जिसमें हजारों स्त्री-पुरुषो ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले द्वारा प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को एक स्मृति-पत्र भेंट किया गया जिसमे सम्पूर्ण देश मे वैधानिक रूप से गौ हत्या बन्द करने की प्रबल माग की गई।

ससद सदस्य श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने धरना देने वाले आर्य नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज लोकसभा मे सरकार ने गो-हत्या के विषय में जो वक्तव्य दिया है उससे गो प्रेमी लोगो को यह समझ लेना चाहिए कि सरकार इससे पहले दिये गये अपने आश्वासनो से एक कदम पीछे हट गई है। अब इस माग को मनवाने के लिए हम सब को बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिये।

—आर्य समाज हाथरस मे गो रक्षा सम्मेलन हुआ। एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने की माग की।

—आर्यसमाज धार्मिक विभाग) श्री गगानगर की ओर से आर्य हायर सेकण्डरी स्कूल मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तथा गोवध निरोध दिवस मनाया गया। नगर के अनेक विद्वानों ने गौ-रक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये। एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से गो वध की रक्षा की माग की।

—आर्य समाज चण्डीगढ सेक्टर ८ ने एक प्रस्ताव द्वारा सरकार से गो रक्षा के लिए प्रबल अनुरोध किया आगरे के पास सरकारी बूचडखाने का घोर विरोध किया।

—आर्य समाज रेस बाजार छावनी कानपुर ने पूर्ण प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से गोवध बन्द करने की माग की है। स्वामी रामचन्द्र शर्मा वीर के गिरते हुए स्वास्थ्य पर चिन्ता प्रकट की।

— आर्य समाज, बालसठ ने एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से अनुरोध किया कि वह बिना भेद भाव के तुरन्त गोवध बन्द करें।

—आर्य समाज बाबू पुरवा, किदवई नगर कानपुर ने अविलम्ब गोवध बन्दी के लिए भारत सरकार से अनुरोध किया है।

— आर्य समाज चौंडेरा मे एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से पूर्ण गोवध बन्द करने की माग की है।

—आर्य समाज पिम्परी कालोनी के तत्वावधान मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन एक विराट सभा में गोवश की रक्षा के लिए पूर्ण गोवध बन्दी की माग की है।

गऊ भक्तों को सूचना

बूचडखानों मे किस प्रकार गोवध होता है। इन सारे करुणाजनक दृश्यो की मैंने रगीन फिल्म (स्लाईडस) बनाई है जो सिनेमा की भाति पर्दे पर दिखाई जाती हैं। यदि आप जन-जन तक गौ माता की पुकार पहुचाना चाहते है तो अपने नगर मे ये प्रदर्शन (Show) अवश्य करायें।

पत्र व्यवहार का पता **आशानन्द भजनीक**
आर्यसमाज, नयाबास, दिल्ली-६

हमारा कर्त्तव्य

१—घर घर मे जाकर हवन-यज्ञ करायें, वेद सदेश पहुचायें, अपने को आर्य कहें।

२—पशुवध और मद्यपान करने वाले को कडा दण्ड दिलाना होगा।

३—सेकुलरइज्म से छुटकारा पाकर वैदिक आदर्शों पर राज्य की स्थापना करें।

४—देश मे सच्ची शान्ति के लिए प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का मार्ग अपनायें।

आर्यसमाज देवलाली कैम्प —दौलतराम आर्य प्रधान

धार्मिक परीक्षायें

सरकार से रजिस्टर्ड आर्य साहित्य मण्डल अजमेर द्वारा सचालित भारतवर्षीय आर्य विद्यापरिषद् की विद्याविनोद, विद्यारत्न, विद्याविशारद् विद्यावाचस्पति की परीक्षायें आगामी जनवरी में समस्त भारत में होंगी। कोई किसी भी परीक्षा मे बैठ सकता है। प्रत्येक परीक्षा में सुन्दर सुनहरा उपाधि-पत्र प्रदान किया जाता है। धर्म के अतिरिक्त साहित्य, इतिहास, भूगोल, समाज विज्ञान आदि का कोर्स भी इनमें सम्मिलित है। निम्न पते से पाठविधि व आवेदन पत्र मुफ्त मगाकर केन्द्र स्थापित करें।

डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए०, डी० लिट्
परीक्षा मन्त्री, आर्य विद्या परिषद्, अजमेर

Bhagwan Dayanand Saraswati and the Upanishads

by Rai Bahadur Ratan Lal, B. A., LL. B.
Formerly Common Chief Justice of 14 Malwa States
(Madhya Pradesh High Courts.)

(Contd. from last issue)

These quotations serve to clarify the meaning of a particular word (yoni in the sense of "sojourn", 1,4,27, the synonyms of akasa in the sense of brahman I. 1. 22, pancajana to designate" the created beings" in general. I.4 12, the word "cow" used in the sense of "milk", I, 4,2, the value of the term vaisvanara (I. 2,24 and 26), or else to give a detail on the fringe of an argument, to follow up an example taken from some Upanishads; many quotations aim anonymously, so to speak, at an entire hymn (I, 1,26; II,4, 8, III,3,56). The greater part figures, of course, in the more strictly philological portions of the great commentary...... There is always the same disparity between theoretical affirmations and the factual situation. We are told all the declarations of the Veda are that authuoritative (III, 2,15) and consequently, have a mean ng of their own (it is therefore, illegitimate to reject one them is arguing that it is devoid of meaning). But one also sees that the mantras are treated as a quasi-accessory element. Jayatirtha has been able to speak the truth when he presented the *advaita* point of view in this manner: " although the *mantras* and the *Brahmanas* (these texts), which were not made to know the (absolute) truth, and are in the domain of the ignorant, can support dualism, the Upanishads can base themselves only on non-dualism. For us the essential in the Vedic message would be relegated by the Sankarians to the field of error and ignorance.

Perhaps, by the very excess of these figurative resources, the *mantras* put paid to the Sankarian principle of first of all envisaging the primary meaning of words. No matter how much one may tell us that the mantras (like the *artha vaadas* be sides) can be understood in a secondary meaning (anyapara, II, 1, 13, G. Thibaut) there where, for one reason or another, their first meaning is closed, it seems rather that they are shattering the strict body of the *advaitavada*, which already has enough troubles with Upanishadic allegories. But even this principle of *mukhyarthatva* is not coherently led into Sankarian practice, which is far more nuanced, it establishes an essential hierarchy within the *Sruti*, in distinguishing between major and minor declarations. These latter have in view practical truths and accommodate very well the figures terms and secondary usages. As to the major declarations, the direct meaning being valid for the terms which refer to the brahman (non-qualified); how without that, could one compel so many words to sink (prachyavayati) to their own acceptance in order to assume the sense of brahman ? Thus the notional unification realised with a rigour, unparalleled for the Advaita, is effected in short, at the expense of language; the privileged instrument of this semantic is the lakshana with every thing that it implies of linguistic arbitrariness Thought or language; one can not simultaneously win on both fronts."

(Page 36 37 and 38 of The Destiny of the Veda in India by Louis Renou)

It is clear, however, that Shankaracharya held the view that the four Vedas are the word of God and eternal and of final authority. Ramanujachrya and Madhavacharya were others who belonged to this galaxy of Indian Philosophers. They held more or less the same views about Vedas.

In P. N. Shrinivasachariya's work on the philosophy of position about Vedas is Visistadvaita Ramanujacharya's thus summed up : The veda as the very breath of Brahma is self valid and is eternal, infallible and impersonal. It is a body of spiritual truths which are spiritually discernible, and it is in the light of the Veda which is the idea and word of God that cosmic creation proceeds. Brahma by his tapa intuits the vedic truths of the world order and creates the rsis or mantradrastas who are blessed with an insight into the inner meaning of Vedic mantras and hymns which are hidden at the end of Yugas". (Vide page 265). And the French scholar Louis Renou says :—

" The Visistadvaita in general, Ramanuja in particular have Vis-a-Vis the Veda, this same understanding attitude, of all-inclusive welcome, which it has in other fields. The entire Veda, all the shrutis, are equally authoritative and that too, across all the " Branches " in which it manifests itself. There is no difference between major declarations and minor declarations, no more also on the semantic plane between primary values and secondary values; and an end to manoeuvring with the technique lakshana. The doctrine partakes of the Mimamsa in as much as it holds the Vedas eternal and impersonal, of the Nyaya in so far as it considers them as revealed by divinity.

One could thus have expected Ramanuja to make a less miserly use of the mantras than Sankara, if only in order to illustrate, what should have been easy for him, namely his animated conception of the brahman. But, in fact, at least in the Sribhasya, the quotations are still more rare than in Sankara, and are in part, the same points of the commentary. In a passage of the Rigveda, (VI, 47;18), the Sribhasya (on I,1,1) finds a prop to uphold the non-existence of amaya, conceived as a principle of illusion";

In Chapter IX of his book '

Reign of Realism in Indian Philosophy' R Naga Raja Sharma summarises in English Madhvacharya's work 'Vishnu-Tatva-Vinirnaya. This gives the position of Madhavacharya concerning Vedas thus: The Vedas are Pramana-par-excellence. What is Pramana ? It is sometimes rendered into source of correct cognition or knowledge. At other times it is explained to be an authority or authoritative source of knowledge. It is also explained to mean reliability. There are certain objects and concepts to be known only with the help of the Vedas The concepts of Dharma and Adharma for instance can be made known only through the instrumentality of the Vedas. Pramanya in abstract is rendered into reliability-in the matter of revealing certain objects. Wherefrom does this reliability accrue to the texts ? Is it from some external source ? Or is reliability the intrinsic characteristic of the vedas ? Madhava's answer is Pramanyam svtah i. e. reliability is intrinsic in its own right. It is not derived from outside. It is non-derivative. Madhava has clearly elucidated the question. The authoritativeness or reliability of the Vedas as proclaimers and revealars of certain objec s and conccpts which are inaccessible through other means and sources should not be held to be derived or derivative. It is svatah. It is innate. It rests in its own right Knowledge is sui generis" (page 248). As regards authorship of the Vedas, Madhava puts it thus : Apaurusheya Vakyangikare-Na Kinchit Kalpyam i e , if the existence of texts not composed by any known and ascertainable agency be accepted, nothing more need be assumed or impaginarily constructed " ...Madheva writes-Veda-Karturaprasiddeh" A Veda Karta i. e. writer or composer of Veda is (apprasiddha) not known and heard of (p. 246).

Chaitanya the great Vaishnava teacher too included Vedas in the traditional account of the sources of knowledge. Accordig to him at the time of creation the Supreme remembers the constitution of the world immediately preceding the pralaya and desires to ' become manifold " i. e. give separate existence to the enjoying soul and the objects of enjoyment merged in him He creates the entire world from the great principle of Mahat down to the cosmic egg and Brahma He then manifests the Vedas in the same order and arrangement as they had before and communicates them mentally to Brahma, to whom, other stages of creation are assigned" (p. 763 of Dr. Radhakrishna's Indian Philosophy Vol 11).

As regards Ram Krishna, the French scholar Louis Renou says in ' the Destiny of the Veda in India 1965, on page 3 :-

" To the thinking of Ramakrishna. who did not fear to teach that "the truth is not in the Vedas, one should act according to the Tantras, not according to the Vedas; the latter are impure from the very of being pronounced, ctc. " Ramcakrishna compares them to the impurity caused by the ucchista), is opposed the very much more deferential attitude of Vivekananada even though with him, as with many others, Vedism comes to be dissolved in an ambiguous ensemble combining Hinduism and Buddhism."

Though he adds in the footnotes page 61 'elsewhere Ram Krishna is more moderate, or let us say, indifferent' and All the same, passages are not lacking where Vivekananda speaks like Rama Krishna; thus in the Practical Yogas, p 211, French translation, where noting that, according to certain Indian sects " the book becomes God" and " that God Himself must conform to the Vedas" he adds, in India......If I take certain passages of the Vedas, and if I juggle with the text and give it the most impossible meaning... ..all the imbeciles will follow me in a crowd".

And we may not forget what Aurobindo Ghose said of the intellectual equipment of Ram Krishna.

" Shri Ram Krishna himself but lived what many would call the man life of a mad, a man without intellectual training a man without any outward sign of culture or civilization, a man who lived on the alms of others, such a man as the English-educated Indian would ordinarily talk of as one useless to society, though not a bane to society, though not a bane to society. He will say "This man is ignorant. What does he know ? What can he teach me who has received from the West all that it can teach".

(p. 54 of' Mahavogi Shi Aurobindo')

डी० ए० वी कालेज अबोहर में

लाला लाजपतराय महिला छात्रावास का भवन निर्माण प्रारम्भोत्सव

इस अवसर पर श्री चांदीराम वर्मा एम० एल० ए०, डा० श्रीराम चौधरी प्रधान नगर पालिका, श्री कशमीरीलाल नारंग उपप्रधान नगरपालिका, मा० तेगराम पूर्व एम० एम० सी० श्री सत्यपाल ग्रोवर, श्री रामकुमार मोहता मैनेजर भवानी काटन मिल, श्री वीरेन्द्र कटारिया, श्री परमानन्द डोडा तथा श्री शंकरप्रसाद आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

श्री चान्दीराम वर्मा विधायक तथा डा० श्रीराम जी चौधरी प्रधान नगरपालिका अशोक वृक्षको सींच रहे है।

(शेष पृष्ठ ७ का)

वध अंग्रेजी राज्य में होता था उससे बहुत ज्यादा है।

स्वास्थ्य की हानि—

यह अनर्थ असह्य है। भारत से गौवंश का नाश किया जा रहा है। बैलों की जगह विदेशों से करोड़ों रुपये भेज कर ट्रैक्टर मगाये जा रहे हैं। दूध व घी के बिना टी० बी० जंगल की आग की तरह बढ़ रही है। इस रोग के निवारण के लिए घी दूध को उत्पन्न न करके टी बी के इन्जेक्शनों व दवाइयों आदि पर करोड़ों रुपए बरबाद किए जा रहे हैं। स्वास्थ्य का नाश करने और टी० बी० तक कर देने वाले वनस्पति घी की सरक्षता की जा रही है और इसको हमारे शासक स्वास्थ्यवर्धक बताते हैं। यदि हमारी सरकार गौरक्षा की ओर ध्यान देती तो अब तक भारत की आर्थिक समस्याएं, अन्न की समस्या अधिकांश रूप से हल हो गई होती।

किसी ने ठीक कहा है—

भारत में जब तक नहीं था,
दुख मूलक गोवध का नाम।
सभी सुखी थे यहां दूध का
पानी से भी कम था दाम॥

परन्तु आज उसी भारत की यह अवस्था है

जारी हुआ देश में जब से,
गोवध का घातक व्यापार।
हैं सब दुखी, रोगी, अल्पायु,
भूखा देश में दुख का हाल॥

संकल्प लो—

धार्मिक भावनाओं के कारण तथा आर्थिक दृष्टिकोण से गो माता भारत की प्राणदाता है। इस प्राणदाता के प्राण बचाना हमारा सब का मुख्य कर्तव्य है। अपना राज्य है, गो को माता के रूप में मानने वालों की संख्या ४० करोड़ है। इतने भारी बहुमत के धार्मिक भावनाओं की परवाह न करके और आर्थिक दृष्टिकोण से देश के हित को भुला कर गोहत्या को जारी रखने की आज्ञा अब न दी जानी चाहिए। यह समय हमारी परीक्षा का है। हमें दृढ़ संकल्प धारण करके कर्तव्य पालन करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। सब प्रकार के मतभेद और दलबन्दी छोड़ कर सबको निश्चय कर लेना चाहिए कि भारत से गोहत्या के कलंक को मिटा कर ही दम लेंगे। सब संगठित होकर गोरक्षा आन्दोलन को सफल बनायें और भारत के माथे पर गोहत्या के कलंक को मिटादें।

वेद [illegible] बोध

(१) मैंने वेद [illegible] बोध [illegible] और [illegible] से पढ़ा। इस प्रकार के विशेषांक बड़े उपयोगी हैं और वेद प्रचार में सहायक होते हैं।

व्यवहारभानु

(२) आपने जो व्यवहार भानु नाम की पुस्तक को बहुत बड़ी संख्या में छपवाने का विचार किया है वह बड़ा उत्तम है। यह मेरा विचार नहीं बड़ा पुराना है। जब मैं सार्वदेशिक सभा का प्रधान था उस समय इसकी घोषणा हुई थी ऐसा मुझे ध्यान है। व्यवहार भानु नाम की पुस्तक चरित्र निर्माण की दृष्टि से बड़ी उपयोगी है। आज कल जो भ्रष्टाचार फैल रहा है और अपराधों की बाढ़ आ रही है उनके निराकरण के लिए ऐसी उत्तम पुस्तक का प्रचार ही एक उत्तम साधन हो सकता है। मेरा यह भी सुझाव है कि इसका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित हो।

पूर्णचन्द्र एडवोकेट
(भूतपूर्व प्रधान सभा)

वैदिक धर्म प्रसार
और सूचनायें

आर्य वीर दल सम्मेलन

उत्तरप्रदेश आर्यवीर दल सम्मेलन दि० ५-६ नवम्बर को श्री ओ३मप्रकाश जी त्यागी की अध्यक्षता में आर्य समाज मन्दिर गंज स्टेशन रोड मुरादाबाद में आयोजित किया जा रहा है।

—आर्य समाज ७४ C नानापेट पूना मे वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में श्री स्वामी केवलानन्द जी सरस्वती के सुमधुर प्रवचन हुए। जन्माष्टमी पर्व भी उत्साह पूर्वक मनाया गया।

—आर्य समाज नंगल टाऊन शिप में वेद सप्ताह बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ। श्री स्वामी वेदानन्द सरस्वती का वेद-प्रवचन होता रहा।

—आर्य समाज शाहगञ्ज (जौनपुर) की ओर से केलवाई (सुल्तानपुर) के मलमास मेले में तीन दिन तक वैदिक धर्म प्रचार हुआ।

—आर्य वीर दल वाराणसी के अधिष्ठाता श्री आनन्दप्रकाश जी २४-२५ सितम्बर को मिरजापुर और शिवशंकरी में आर्य वीर दल के कार्य का निरीक्षण करेंगे।

—आर्य समाज खंडवा मे श्रावणी पर्व, हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया गया।

—आर्य समाज आजमगढ़ में वेद सप्ताह और श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह से मनाए।

—आर्य समाज पीपाड़ शहर मे १४ से १६ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। प्रसिद्ध विद्वान आचार्य श्रीकृष्ण जी तथा श्री ओमप्रकाश वर्मा सगीताचार्य के मधुर उपदेश और भजन हुए।

—आर्य समाज जालना में श्रावणी पर्व एवं बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

—शोलापुर की दयानन्द संस्थाओं के वार्षिक उत्सव ससमारोह सम्पन्न हुए।

—आर्य समाज मन्दिर हाथरस में आर्य समाज नयागंज द्वारा सम्मिलित रूप से वेद सप्ताह तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भारी जन उपस्थिति में मनाया गया। दस आर्य परिवारों में पारिवारिक सत्संग हुए।

—आर्य समाज, रेलवे कालोनी चोपन मे वेद प्रचार सप्ताह, श्री कृष्ण जन्माष्टमी एवं हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस धूमधाम से मनाया गया। श्री डा० एस० तोमर इञ्जीनीयर इन-चीफ महोदय के गृह पर पारिवारिक यज्ञ हुआ।

—आर्य समाज कबाड़ी बाजार, अम्बाला छावनी में वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया गया।

—आर्य समाज, चेनारी (शाहाबाद) में श्रावणी पर्व वेद सप्ताह एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर २० वेद कथा अङ्क वितरित हुए।

—आर्य समाज जगदीशपुर (बिहार) में श्रावणी उपाकर्म, वेद सप्ताह और सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया गया।

—आर्य समाज, गया ने बड़ी धूमधाम से वेद सप्ताह और कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया। इस अवसर पर बिहार सभा के उपप्रधान आचार्य श्री पं० रामानन्द जी शास्त्री द्वारा वेद कथा हुई। हजारों जनता ने लाभ उठाया।

आर्य समाज, मलाही (चम्पारन) मे वेद सप्ताह ससमारोह मनाया गया। श्री स्वामी महावीरानन्द जी का प्रशंसनीय सहयोग रहा।

चुनाव

आर्यसमाज, अजमेर का वार्षिक अधिवेशन प्रधान श्री दत्तात्रेय जी बावले आचार्य दयानन्द कालेज की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

गत वर्ष (१६०००) की आय और १४ हजार व्यय हुआ। सर्व सम्मति से श्री दत्तात्रेय जी बावले एम० ए० प्रधान एवं श्री डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० मन्त्री चुने गये। इस अवसर पर डा० सूर्यदेव जी शर्मा ने आर्य समाज मन्दिर मे लाऊड स्पीकर के लिए एक हजार दान देने की घोषणा की।

—आर्य कुमार परिषद् बीकानेर के निर्वाचन में श्री भरतराज कथूरिया प्रधान, श्री अशोक कुमार पुरोहित मंत्री, श्री भूपेन्द्र पन्त कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज पिम्परी पूना के पदाधिकारी श्री बनवारीलाल जी प्रधान, श्री मागमल जी उपप्रधान, श्री रणधीरसिंह जी मन्त्री, श्री बलवन्तसिंह जी कोषाध्यक्ष तथा श्री श्रीराम जी पुस्तकाध्यक्ष।

—आर्य समाज मिन्टोरोड नई दिल्ली के प्रधान श्री अवनीन्द्र कुमार जी विद्यालंकार उपप्रधान श्री हुकमचन्द, मन्त्री श्री मूलचन्द वर्मा कोषाध्यक्ष श्री विद्यासागर जी चुने गये।

—आर्य समाज, खतौली के चुनाव मे श्री डा० तिलकराम जी गर्ग प्रधान, श्री सोहनलाल जी नागर मन्त्री तथा डा० सत्यप्रकाश जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज, मुकरपुरी (बिजनौर) के प्रधान श्री चौ० बसन्तसिंह जी, मन्त्री श्री पं० घासीराम जी, कोषाध्यक्ष श्री बसन्तसिंह जी चुने गये।

—आर्य कुमार सभा खतौली के चुनाव में श्री विनोदकुमार जी एडवोकेट प्रधान, श्री उमेशकुमार जी मन्त्री एवं श्री विपिनकुमार जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

शुद्धि यज्ञ

अराष्ट्रीय विरोध समिति हापुड़ की ओर से फटकरी गांव (मेरठ) में ६५ ईसाई शुद्ध हुए। मांसौली ग्राम (बुलन्दशहर) में १७३ ईसाइयों के २३ परिवार शुद्ध हुए। १०४ ईसाइयों की शुद्धि भामन ग्राम (मेरठ) में होगी।

- आर्य समाज, शाहगंज (जौनपुर) ने एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से अविलम्ब गोवध बन्दी की मांग की है।

—आर्य समाज शुगर मिल्स खतौली में गो रक्षा दिवस मनाया गया। श्री चौ० गंगासहाय की अध्यक्षता में श्री सेवकराम यात्री के प्रस्ताव और श्री गिरवरसिंह के अनुमोदन पर गोरक्षा के लिए प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

श्री गुलजारीलाल जी आर्य प्रधान बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का वक्तव्य—

भारत की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए यह अनुभव करते हैं कि 'गोरक्षा का आन्दोलन' सर्वथा उचित है। स्वतन्त्र भारत की सरकार के लिए 'गोवध निरोध' का कानून स्वीकार न करना एक कलंक है। भारत जैसे कृषि प्रधान एवं संस्कृत देश मे गोरक्षा के लिए इस प्रकार के आन्दोलन करने पड़े, यह एक चिंता और लज्जा का विषय है। समय रहते सरकार को इस ओर पूर्णत: एवं अविलम्ब ध्यान देना चाहिए।

गोवध-निरोध के लिए जो महात्मागण एवं गोभक्त महानुभाव अनशन कर रहे हैं, उनके इस पुनीत कार्य एवं आन्दोलन के प्रति हमारी इस प्रांतीय प्रतिनिधि सभा की पूरी पूरी सहानुभूति है।

यदि आवश्यक हुआ तो बम्बई प्रदेश के आर्य सदस्यों की ओर से इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिए अनेक अनशनकारी गोभक्तों की टोलियां तैयार की जाएगी और उन्हें यथा स्थान भेजा जायेगा।

सरकार को चाहिए कि वह इस विषय में योग्य निर्णय की शीघ्र घोषणा करके "गोवध-निरोध" को सफल बनाए।

आदर्श वैदिक विवाह

—मोम्बासा केनिया) के पूर्व प्रधान श्री प्यारेलाल जी कपिला लिखते हैं—

श्री रामकरण जी की सुपुत्री का शुभ विवाह कार्य बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ है। श्री पं० ज्ञानचन्द्र शास्त्री, श्री पं० रणधीर जी द्वारा पौरोहित्य का कार्य संस्कृत में सम्पन्न हुआ है।

उडीसा में ६७ईसाइयों की शुद्धि

रांची, आर्य समाज रांची से प्राप्त समाचारानुसार गुरुकुल वैदिक आश्रम राहुर केला के संस्थापक स्वामी ब्रह्मानन्द जी आर्य सन्यासी द्वारा ४ सितम्बर को बारीपार (उडीसा) की धर्मशाला मे आयोजित एक शुद्धि समारोह मे १६ ईसाई परिवारों के ६७ सदस्यों ने सत्य सनातन वैदिक धर्म को ग्रहण किया। पैंतीस पुरुषों का मुण्डन किया गया और उन सभी को नवीन वस्त्र प्रदान किये गये। स्मरणीय हो कि वर्तमान अन्न संकट का लाभ उठाकर उस क्षेत्र मे सेवा व सहायता के नाम पर ईसाई मिशनरियां आदिवासियों के धर्म परिवर्तन का प्रयास कर रही है। मिशनरियों के केन्द्र स्थान में इस शुद्धि समारोह से स्थानीय हिन्दू जनता में बडा उत्साह का प्रसार हुआ है।

दयाराम
मन्त्री

धार्मिक परीक्षाएं

—भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की गत ४२ वर्ष से प्रचलित सिद्धान्त सरोज, सि०, रत्न, सि०, भास्कर, सि० शास्त्री एवं सि० वाचस्पति की परीक्षा मे बैठिये। धार्मिक और सांस्कृतिक ज्ञान वृद्धि के लिए राष्ट्र भाषा के प्रचार हेतु इन परिक्षाओं का विशेष योग रहा है।

डा० प्रेमदत्त शर्मा परीक्षा मन्त्री
आर्यकुमार परिषद् अलीगढ

सुमेरसिंह बलिदान

—आर्य समाज (गुरुकुल विभाग) फिरोजपुर छावनी की ओर से हिन्दी आन्दोलन के शहीद श्री सुमेरसिंह का बलिदान दिवस श्री लालचन्द गुप्ता की अध्यक्षता मे मनाया गया जिसमे श्री कुलबीरसिंह एम. एल. ए. श्री ओम्प्रकाश सेठी, माता परमेश्वरी देवी जी, श्री इन्द्रप्रकाश जी, प्रो० मनोहरलाल आनन्द आदि के प्रभावशाली भाषण हुए।

—आर्य वीर दल लक्ष्मणसर-अमृतसर ने आर्यसमाज जडियाला गुरु मे शहीद सुमेरसिंह दिवस मे श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

आर्य नेता श्री के० नरेन्द्र जी बैंकाक में भारी स्वागत

बैंकाक (थाईलैंड) आर्य जगत के ओजस्वी नेता, वीर अर्जुन और प्रताप के यशस्वी सम्पादक श्री के० नरेन्द्र थाईलैंड की यात्रा पर बैंकाक पधारे। हवाई अड्डे पर आर्यसमाज के अधिकारियो सदस्यों एव कार्य कर्त्ताओं ने भारी संख्या में पहुच कर माननीय नेता का हार्दिक स्वागत किया। साय ५ बजे आर्य समाज मन्दिर मे एक विराट सभा हुई जिसमें माननीय श्री के० नरेन्द्र जी का अभिनन्दन किया गया। आर्य नेता ने अपने ओजस्वी भाषण मे आर्यसमाज के कार्य, महर्षि दयानन्द का सदेश एव भारत की वर्तमान अवस्था पर विचार प्रस्तुत किये।

धर्मेन्दु चल विजयोपहार वाद विवाद

धर्म निरपेक्षता की नीति घातक

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी कक्षा ग्यारहवीं तक के छात्र छात्राओं की धर्मेन्दु चल विजयोपहार वाद विवाद प्रतियोगिता उक्त विषय पर रविवार ६ नवम्बर को मध्याह्न २ बजे से, बी और सी ब्लाक के पार्क सरोजिनी नगर नई दिल्ली-३ में बडे समारोह से होगी।

वाद विवाद मे बोलने वालो के नाम ३० अक्टूबर ६९ तक श्री अटल कुमार वर्मा, एस, पी, टी १३०, सरोजनी नगर नई दिल्ली ३ के पते पर पहुचने चाहिये।

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की पुस्तको का सूची पत्र

१—८—६६ से ३१—१—६७ तक
निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ३)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
कर्तव्य दर्पण)५०
आर्यसमाज के प्रवेशपत्र १) सैं०

निम्न प्रकाशन पर २० प्रतिशत कमीशन

सत्यार्थप्रकाश २)५०
कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)७५
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०
कुल्लियात आर्य मुसाफिर ६)
आर्यसमाज का इतिहास द्वितीय भाग ५)
जीवन संघर्ष (महाशय कृष्ण की जीवनी) ५)
पंचमहायज्ञ विधि भाष्यम्
संध्या पद्धति मीमांसा ५)
राजधर्म)५०
पुरुष सूक्त)४०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)
दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

वेद की इयत्ता १)५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७
केनोपनिषद्)५०
प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५
माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५
तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३)
योग रहस्य १)२५
मृत्यु और परलोक १)

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
" (अजिल्द) २)
निज जीवन वृत्त वनिका)७५
बाल जीवन सोपान १)२५
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
वैदिक योगामृत)६२
दार्शनिक अध्यात्म तत्त्व १)५०

वैदिक ईश वन्दना)४०
वाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
भ्रम निवारण)३०

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध १)५०
" " उत्तरार्द्ध १)५०
वैदिक संस्कृति १)२५
सायण और दयानन्द १)
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०
भक्ति कुसुमाञ्जली)७५

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)३०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

चरित्र निर्माण १)२५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
धर्म और धन)२५
अनुशासन का विधान)२५

श्री पं० मदनमोहन जी कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०
संस्कार महत्त्व)७५
वेदों की अन्त साक्षी का महत्त्व)६२
आर्य स्तोत्र)५०
आर्य घोष)६०

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म)६२
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार)१०
आदर्श गुरु शिष्य)२५

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

आर्य समाज और साम्प्रदायिकता)३०
कांग्रेस का सिरदर्द)४०
भारत में भयंकर ईसाई षड्यन्त्र)२५
आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना)२०
आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण)२६

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

गीता विमर्श)७५
ब्राह्मण समाज के तीन महापातक)५०
सनातन धर्म १)७५

श्री ला० ज्ञानचन्द जी कृत

धर्म और उसकी आवश्यकता १)
वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १)५०
इजहारे हकीकत उर्दू)८८

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी कृत

इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)५०

श्री पं० देवप्रकाश जी कृत

इञ्जील में परस्पर विरोधी [illegible]

श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री कृत

भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०

विविध

वेद और विज्ञान)७०
उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७
हमारे घर १)
मेरी इराक यात्रा १)
मेरी अबीसीनिया यात्रा १)
डाक्टर बर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)२५
स्वर्ग में हड़ताल)३७
नरक की रिपोर्ट)२५

निम्न प्रकाशन ५० प्रतिशत पर दिये जायेंगे

आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग ६)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
आर्य समाज के महाधन २)५०
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
स्वराज्य दर्शन १)
आर्य समाज का परिचय १)
भजन भास्कर १)७५
यमपितृ परिचय २)
एशिया का वेनिस)७५
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५
साम संगीत)५०
दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
" अध्यक्षीय भाषण १)
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५

प्रचार करने योग्य ट्रैक्ट

२५ प्रति मगाने पर सैकड़े का भाव लगेगा
एकप्रति)१२ पैसा सैकड़ा १०)

सन्ध्या पद्धति
दश नियम व्याख्या
आर्य शब्द का महत्त्व
तीर्थ और मोक्ष
वैदिक राष्ट्रीयता
वैदिक राष्ट्र धर्म
अथर्ववेदीय अतिथि सत्कार
ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा
प्रजा पालन
सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा में
सत्यार्थ प्रकाश का आन्दोलन का इतिहास
मुर्दों को क्यों जलाना चाहिये
शंका समाधान
भारत का एक ऋषि
आर्य समाज
पूजा किसकी
धर्म के नाम पर राजनैतिक षड्यन्त्र
भारतवर्ष में जाति भेद
चमड़े के लिए गोवध
आर्य विवाह एक्ट
ईसाई पादरी उत्तर दें
[illegible]

नोट —(१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अग्रिम रूप में भेजें। (२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ साफ लिखें। (३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम से आना चाहिये। (४) जिन पुस्तकों का नेट मूल्य लिखा गया है उनपर कोई कमीशन न दिया जायेगा।

व्यवस्थापक—**सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१**

कला-कौशल (टैक्नीकल) और वैदिक साहित्य का महान् भंडार

- इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक १५)
- इलै० गाइड पृ० ८०० हिन्दी व गुरुमुखी १२)
- इलैक्ट्रिक वायरिंग)
- मोटरकार वायरिंग ६)
- इलैक्ट्रिक बैटीज ४)५०
- इलैक्ट्रिक लाइटिंग ८)२५
- इलै० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्ज १०)
- सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर ६)५०
- इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज २ भाग १०)५०
- आयल व गैस इंजन गाइड १२)
- आयल इंजन गाइड ८)२५
- क्रूड आयल इंजन गाइड ६)
- वायरलैस रेडियो गाइड ८)२५
- रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक) ८)२५
- घरेलू बिजली रेडियो मास्टर ६)५०
- इलैक्ट्रिक मीटर्ज ८)२५
- टाका लगाने का ज्ञान ४)५०
- छोटे डायनेमो इलैक्ट्रिक मोटर ६)५०
- आर्मेचरवाइंडिंग AC DC)८)२५
- रैफरीजरेटर गाइड ८)२५
- बृहत् रेडियो विज्ञान १५)
- ट्रांसफार्मर गाइड ६)
- इलैक्ट्रिक मोटर्स ८)२५
- रेलवे ट्रेन लाइटिंग ६)
- इलैक्ट्रिक सुपरवाइजरी शिक्षा ६)
- इलैक्ट्रिक [illegible] ६)
- रेडियो शब्द कोष ३)
- ए० सी० जनरेटर्स ८)२५
- इलैक्ट्रिक मोटर्स आल्टरनेटर्स १६)५०
- आर्मेचर वाइंडिंग गाइड १५)
- इलैक्ट्रिसिटी रूल्स १९५६ १)५०

- स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज (हिन्दी) १४)
- स्माल स्केल इंडस्ट्रीज(इंगलिश) १४)
- खराद शिक्षा (टर्नर गाइड) ४)५०
- वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग) ४)५०
- खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
- भवन निर्माण कला १२)
- रेडियो मास्टर ४)५०
- विश्वकर्मा प्रकाश ७)५०
- सर्वे इंजीनियरिंग बुक १२)
- इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग १२)
- फाउन्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई) ८)२५
- इलैक्ट्रोप्लेटिंग ६)
- बीविंग गाइड ४)५०
- हैंडलूम गाइड १५)
- फिटिंगशाप प्रैक्टिस ९)५०
- पावरलूम गाइड ५)२५
- ट्यूबवैल गाइड ३)७५
- लोकास्ट हाउसिंग टैक्निक ५)२५
- जन्त्री पैमायश चौब ७)
- लोकोशैड फिटर गाइड १५)
- मोटर मैकेनिक टीचर ८)२५
- मोटर मैकेनिक टीचर गुरुमुखी ८)२५
- मोटर ड्राइविंग हिन्दी व गुरुमुखी ६)
- मोटरकार इंस्ट्रक्टर १२)
- मोटर साइकिल गाइड ४)५०
- खेती और ट्रैक्टर ८)२५
- जनरल मैकेनिक गाइड १२)
- आटोमोबाइल इंजीनियरिंग १२)
- मोटरकार ओवरहालिंग ६)
- प्लम्बिंग और सेनीटेशन ६)
- सर्किट डायग्राम्स आफ रेडियो ३)७५

- [illegible] बुक १०)
- [illegible] डिजाइन बुक १०)
- [illegible]शाप प्रैक्टिस १०)
- [illegible] बायलर और इंजन ८)२५
- स्टीम इंजीनियर्स गाइड १२)
- मार्केट पेंटिंग (सफेद मशीन) ४)५०
- सीमेंट की जालियों के डिजाइन ६)
- कारपेंट्री मास्टर ६)७५
- बिजली मास्टर ४)५०
- ट्रांजिस्टर डाटा सर्किट १०)५०
- गैस वैल्डिंग ६)
- ब्लैकस्मिथी (लोहार) ४)५०
- हैंडबुक आफ बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन ३४)५०
- हैंडबुक स्टीम इन्जीनियर २०)२५
- मोटरकार इन्जीनियर ८)२५
- मोटरकार इन्जन (पावर यूनिट) ८)२५
- मोटरकार सर्विसिंग ८)२५
- कम्पलीट मोटर ट्रेनिंग मैनुअल २४)७५
- कारपेंट्री मैनुअल ४)५०
- मोटर प्रश्नोत्तर ६)
- स्कूटर आटो साइकिल गाइड ४)५०
- मशीनशाप प्रैक्टिस १५)
- आयरन फर्नीचर १०)
- मारबल चिप्स के डिजाइन १६)५०
- बिल्डी डिजाइन बुक ३४)५०
- फाउन्ड्री वर्क—धातुओं की ढलाई ४)५०
- ट्रांजिस्टर रेडियो ४)५०
- आधुनिक टिपिकल मोटर गाइड ४)५०
- नक्काशी आर्ट शिक्षा ६)
- बढ़ई का काम)
- राजगिरी शिक्षा ६)

- सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो ७)५०
- विजय ट्रांजिस्टर गाइड २२)५०
- मशीनिस्ट गाइड १०)५०
- आल्टरनेटिंग करैन्ट १६)५०
- इले. लाइनमैन वायरमैन गाइड १६)५०
- रेडियो फिजिक्स २२)५०
- फिटर मैकेनिक ६)
- मशीन वुड वर्किंग ६)
- लेथ वर्क ५)७५
- मिलिंग मशीन ८)२५
- मशीन शाप ट्रेनिंग १०)
- एयर कण्डीशनिंग गाइड १५)
- सिनेमा मशीन आपरेटर १)
- स्प्रे पेंटिंग १२)
- फोटोग्राफी गाइड ४)५०
- ट्रांजिस्टर रिसीवर्स ६)२५
- लोकल ट्रांजिस्टर रिसीवर ८)२५
- प्रैक्टीकल ट्रांजिस्टर सरकिट्स ७)५०
- बैंच वर्क एन्ड हार्डफिटर ८)२५
- माडल ब्लैकस्मिथी मैनुअल ८)२५
- खराद आपरेटर गाइड ८)२५
- रिसर्च आफ टायलेट सोप्स १५)
- प्लास्टिक इन्डस्ट्री १०)५०
- शीट मैटल वर्क ८)२५
- कैरिज एन्ड वैगन गाइड ८)२५
- इलैक्ट्रिक फिजिक्स २५)५०
- इलैक्ट्रिक टैक्नोलोजी २५)५०
- रेडियो पाकिट बुक ६)
- डिजाइन मेट डिल वाली ६)
- कैमीकल इण्डस्ट्रीज २५)५०
- डीजल इन्जन गाइड १५)

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई, क्लाथ बाइण्डिंग-मूल्य १५) एक साथ पांच प्रति मंगाने पर ५०) रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

1. सांख्य दर्शन मूल्य २)
2. न्याय दर्शन मू० ३।)
3. वैशेषिक दर्शन मू० ३॥)
4. योग दर्शन मू० ६)
5. वेदान्त दर्शन मू० ५॥)
6. मीमांसा दर्शन मू० ६)

सामवेद

मूलमन्त्र और आर्य भाषानुवाद सहित
श्री पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार ४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थीं। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है। मूल्य ४)

वैदिक-मनुस्मृति मूल्य ४॥)

बृहत् दृष्टान्त सागर

सम्पूर्ण पांचों भाग

पृष्ठ संख्या ८६८
सजिल्द मूल्य केवल १०॥)

- **उपदेश-मंजरी** मूल्य २॥)
- **संस्कार विधि** मूल्य १॥)
- **आर्य समाज के नेता** मूल्य ३)
- **महर्षि दयानन्द** मूल्य ३)
- **कथा पच्चीसी** मूल्य १॥)
- **उपनिषद् प्रकाश** मू० ६)
- **हितोपदेश भाषा** मू० ३)
- **सत्यार्थप्रकाश** २)५० [छोटे अक्षरों में]

अन्य आर्य साहित्य

1. विद्यार्थी शिष्टाचार १॥)
2. पंचतंत्र ३।)
3. जाग रे मानव १)
4. कौटिल्य अर्थशास्त्र १०)
5. चाणक्य नीति १)
6. भर्तृहरि शतक १॥)
7. कर्तव्य दर्पण १॥)
8. वैदिक सन्ध्या ४) सै०
9. हवन मन्त्र १०) सै०
10. वैदिक सत्संग गुटका १५) सै०
11. ऋग्वेद ७ जिल्दों में ५६)
12. यजुर्वेद २ जिल्दों में १६)
13. सामवेद १ जिल्द में ८)
14. अथर्ववेद ४ जिल्दों में ३२)
15. वाल्मीकि रामायण १२)
16. महाभारत भाषा १२)
17. हनुमान जीवन चरित्र ४॥)
18. आर्य संगीत रामायण ४)

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद कृषि बिजली मोटर, पशुपालन, टेक्नीकल डरीफार्म रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१६१

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये ।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-१ फोन ४७७१ भाद्रपद कृष्ण ८ सम्वत् २०२३ सितम्बर १९६६ दयानन्दाब्द १४२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०७

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

सम्पूर्ण आर्य जगत् की शिरोमणी सभा है

अम्बाला (पंजाब) के माननीय जिला जज का महत्त्वपूर्ण निर्णय

अम्बाला में ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का २४ सितम्बर को महत्त्वपूर्ण अधिवेशन होगा

सभी सदस्य गण उसमें भाग लें।

जींद में होने वाला अधिवेशन अवैध है उसमें भाग न लें ।

विदित हुआ है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कथित अधिकारियों ने पंजाब सभा का वार्षिक अधिवेशन २४ और २५ सितम्बर ६६ को जींद में रखा है।

जैसा कि साथ के परिपत्र से विदित होगा कि पंजाब सभा का वार्षिक अधिवेशन सार्वदेशिक सभा के आदेश और उसकी व्यवस्था के अन्तर्गत २४ और २५ सितम्बर ६६ को आर्य गर्ल्स कालेज अम्बाला छावनी में होगा विज्ञापन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मान्यता प्राप्त पंजाब सभा के मन्त्री श्री डा० हरिप्रकाश जी ने जारी कर दिया है और वह आपको मिला होगा। आप इस अधिवेशन में ही भाग लें।

आपको विदित ही है कि सार्वदेशिक सभा ने पाकस्मा (१९६३) तथा चरखी दादरी (१९६४) में हुए पंजाब सभा के वार्षिक अधिवेशनों और उनमें चुने हुए अधिकारियों आदि के चुनाव को अवैध घोषित किया हुआ है। इन अधिवेशनों में चुने हुए अवैध अधिकारियों द्वारा बुलाया गया पंजाब सभा का अधिवेशन अनियमित और अवैध है और सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार ही अधिवेशन रखा जा सकता है। इसकी संपुष्टि अम्बाला के अतिरिक्त जिला जज श्री ओ० पी० शर्मा के ४-८-६६ के फैसले से भी हो गई है। अत जींद में होने वाले पंजाब सभा के अवैध एवं अनियमित वार्षिक अधिवेशन में आप कदापि भाग न लें। इस आदेश का पूर्णतया पालन होना चाहिए।

कृपया इसकी पहुंच दीजिए तथा श्री डा० हरिप्रकाश जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अलकार मेडीकल हाल, अनाज मण्डी, अम्बाला छावनी को सूचित कर दीजिए कि अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए अम्बाला कब पहुंचेंगे। ट्रेन या बस जिससे भी आप आएं उसकी सूचना भी उन्हें दे दीजिए।

भवदीय
शिवचन्द्र
सभा उपमन्त्री

वेद—आज्ञा

हमारे रक्षक

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥
ऋ० अ० १ अ० ६।व० १५ म०५॥

भावार्थ—

जो सब जगत का बनाने वाला है अर्थात जो चेतन और तस्थुष जो जड़ इन दो प्रकार के संसार का जो राजा और पालन करने वाला है जो मनुष्यों को बुद्धि और आनन्द से तृप्त करने वाला है उसकी हम लोग आह्वान अर्थात अपनी रक्षा के लिये प्रार्थना करते हैं क्योंकि वह हम को सब सुखों से पुष्ट करने वाला है। हे परमेश्वर आप अपनी कृपा से हमारे सब पदार्थों और सुखों को बढ़ाने वाले हैं, वैसे ही सब की रक्षा भी करें। जैसे आप हमारे रक्षक हैं वैसे ही सब सुख भी दीजिये ॥

—महर्षि दयानन्द

वार्षिक ७) रु० विदेश १ पौंड एक प्रति १२ पैसे | अग्न बहु कुर्वीत | सम्पादक—रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक | बलेन लोकस्तिष्ठति | वर्ष १ अंक १८

शास्त्र-चर्चा

सदाचार

युधिष्ठिर उवाच

आचारस्य विधिं तात प्रोच्यमान
मयानघ। श्रोतुमिच्छामि धर्मज्ञ
सर्वज्ञो ह्यसि मे मत ॥१॥

युधिष्ठिर ने पूछा धर्मज्ञ
पितामह! अब मैं आपके मुख से
सदाचार की विधि सुनना चाहता
हू क्योंकि आप सर्वज्ञ हैं॥१॥

भीष्म उवाच

दुराचारा दुर्विचेष्टा दुष्प्रज्ञा
प्रियसाहसा असतस्त्विति
विख्याता सन्तश्चाचारलक्षणा ॥

भीष्मजी ने कहा राजन!
जो दुराचारी बुरी चेष्टावाले
दुर्बुद्धि और दु साहस को प्रिय
मानने वाले हैं वे दुष्टात्मा कनाम
के विख्यात होते हैं। श्रेष्ठ पुरुष
तो वही हैं, जिनमें सदाचार देखा
जाय—सदाचार ही उनका लक्षण
है ॥२॥

पुरीष यदि वा मूत्र ये न
कुर्वन्ति मानवा। राजमार्गे गवा
मध्ये धान्यमध्ये च ते शुभा ॥३॥

जो मनुष्य सडकपर गौओं के
बीच मे और अनाज में मल या
मूत्र का त्याग नहीं करते हैं वे
श्रेष्ठ समझे जाते हैं ॥३॥

शौचमावश्यक कृत्वा देवताना
च तर्पणम्। धर्ममाहुर्मनुष्याणा
मुपस्पृश्य नदीं तरेत् ॥४॥

प्रतिदिन आवश्यक शौचका
सम्पादन करक आचमन करे
फिर नदी में नहाये और अपने
अधिकार के अनुसार सध्यापा
सना के अनन्तर देवता आदि
का तर्पण करे। इसे विद्वान् पुरुष
मानवमात्र का धर्म बताते हैं॥४॥

सूर्य सदोपतिष्ठेत न च सूर्यो
दये स्वपेत्। साय प्रातर्जपत् सन्ध्या
तिष्ठन् पूर्वां तथेतराम् ॥५॥

सूर्योदय के समय कभी न सोये।
सायकाल और प्रातःकाल दोनों
समय सध्योपासना करके गायत्री
मन्त्र का जप करे ॥५॥

पञ्चार्द्रो भोजन भुञ्ज्यात्
प्राङ्मुखो मौनमास्थित। न
निन्द्यादन्नमद्यारच स्वाद्वस्वादु
च भक्षयेत् ॥६॥

दोनों हाथ दोनों पैर और
मुह इन पाच अङ्गों को धोकर
पूर्वाभिमुख हो भोजन करे।
भोजन के समय मौन रहे। परोसे
हुए अन्न की निन्दा न करे। वह
स्वादिष्ट हो या न हो प्रम से
भोजन कर ले ॥

म० शान्ति पर्व अ० १९३

वेद कथा अक का सर्वत्र स्वागत

श्री डा० सूर्यदेव जी शर्मा शास्त्री सिद्धान्त वाचस्पति साहित्यालकार एम० ए० एल० टी० डी० लिट परीक्षा मन्त्री—भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद अजमेर

सार्वदेशिक का वेद कथा अक प्राप्त हुआ। रूप रग छपाई एव पृ० सख्या देख कर आश्चर्य हुआ कि केवल ८ पैसे मूल्य में इतना बडा और इतना बढिया अक आप कैसे दे रहे हैं और फिर वेद प्रेमी स्वाध्याय शील जनों के लिये तो उसमे इतनी पठन सामग्री (In Inglish Also) प्रस्तुत की गई है कि वर्षों तक वह उनका आत्मिक भोजन का काम देती रहेगी ऐसे उत्तम सकलन एव प्रकाशन पर शतश बधाई है। मैंने अपने समाज में ५० प्रतियां मगाई थे तो ५ मिनट मे ही चुकगई। अब और माग रहे हैं। पुनरपि बधाई।

वेद कथा का अक अनूठा बना सार्वदेशिक' सकेत।
वैदिक मन्त्रों की व्याख्या को पढ आयजन हर्ष समेत ॥

सार्वदेशिक

सार्वदेशिक दिन-पत्रिका

अक्तूबर में प्रकाशित हो रही है। गत वर्ष हजारों आर्य जनों को देर में आर्डर भेजने के कारण निराश होना पडा था। आप अभी से अपना बडा आर्डर भेजने मे शीघ्रता करें। नेट मूल्य ६० पैसे।

सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

योगेश्वर श्रीकृष्ण

जन्माष्टमी राष्ट्र के अद्वितीय प्रज्ञा पुरुष श्री कृष्ण का जन्म दिवस है। कंस अपने समय का सबसे अधिक आततायी और क्रूर राजा था। उसी के कारागार में माता देवकी की कोख से जन्म लेने वाले इस राष्ट्र पुरुष ने पहले अपने माता-पिता को बन्धन-मुक्त किया, फिर समग्र समाज को जीर्ण-शीर्ण रूढ़ियों के पाश से मुक्त किया। फिर अनेक छोटे छोटे राज्यों में बिकीर्ण खण्ड खण्ड हुए भारत को एक सुदृढ़ केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत लाकर राष्ट्र को अस्त-व्यस्तता और वैयक्तिक अधिनायकों से मुक्त किया और अन्त में गीता प्रतिपादित निष्काम कर्मयोग का उपदेश देकर मानवात्मा को बन्धन-मुक्त करने का मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार इस महापुरुष को सर्वांश में लोक-त्राता कहा जा सकता है।

श्रीकृष्ण जैसा बहुमुखी व्यक्तित्व संसार के अन्य किसी देश में या अन्य किसी संस्कृति में नहीं हुआ। जब आर्य जाति संस्कार-हीन हो गई तब अपनी अकर्मण्यता और विलासिता को उसने श्रीकृष्ण के जीवन पर भी आरोपित कर दिया और उनके व्यक्तित्व को अभद्र शृंगारिकता से जकड़ कर रख दिया। वह इस महापुरुष के अप्रतिम ओजस्वी और सतत संघर्षशील व्यक्तित्व का अपमान ही नहीं है, प्रत्युत समग्र जाति की हीन, कुत्सित और पराजित मनोवृत्ति का भी द्योतक है। जिस व्यक्ति को विदुर, व्यास और बाल-ब्रह्मचारी भीष्म पितामह जैसे व्यक्ति भी वीतराग, महात्मा और पुरुषोत्तम मानें, क्या वह कभी तुच्छ शृंगारिकता का उपादान बन सकता है।

काव्य-साहित्य तथा ललित कलाओं में 'रसिक शिरोमणि' का वह रूप कितना ही रस-वर्षी और आह्लादकार क्यों न हो, किन्तु आज देश को श्रीकृष्ण के उस रूप की आवश्यकता नहीं है। आज देश को श्रीकृष्ण के उस सुदर्शन-चक्रधारी रूप की आवश्यकता है जो संसार-संग्राम में पड़े इस मोहातुर, किंकर्तव्यमूढ़, क्लीब, अस्त्र संन्यासी, अहिंसा-प्रेमी, भरत-पुत्र अर्जुन रूपी भारत को महाभारत में विजय दिलवा सके और खण्डित विच्छिन्न भारत को यथार्थतः 'महाभारत' बना सके। आज पांचजन्य का वज्रघोष करने वाले, पार्थ के सारथी की आवश्यकता है। आज आवश्यकता है कंस-निकन्दन, शिशुपाल-हन्ता, पूतना-प्राणापहारक और जरासंघ के वधायोजक श्रीकृष्ण की। गोपिकाओं से रमण करने वाले, चोर-जार-शिखा-मणि, रणछोड़ की नहीं। आज उस दृढ़व्रती श्रीकृष्ण की आवश्यकता है जिसने महाभारत के उद्योगपर्व में द्रौपदी को आश्वासन देते हुए कहा था—

> चलेद्धि हिमवान् शैलो
> मेदिनी शतधा भवेत्।
> द्यौः पतेत् सनक्षत्रा वा
> न मे मोघं वचो भवेत्॥

'हे द्रौपदी, चाहे हिमालय पर्वत चलायमान हो जाए, चाहे पृथ्वी के सौ टुकड़े हो जाए, अथवा द्युलोक समस्त ग्रह-नक्षत्रों के साथ धरती पर गिर पड़े किन्तु मेरा वचन कभी व्यर्थ नहीं होगा। दुष्ट दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि और धृतराष्ट्र के कुचक्रों को तोड़कर और कौरवों का नाश कर अपने श्रम, विवेक और शौर्य से राष्ट्र-निर्माण के स्वप्न को अपनी आंखों के सामने ही सत्य सिद्ध करने वाले उस दृढ़व्रती, महान् राजनीतिज्ञ, आत्मजेता स्वप्न शिल्पी की आवश्यकता है।

ऋषि दयानन्द ने श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में लिखा है 'उन्होंने जन्म भर कोई पाप नहीं किया............ वे योगेश्वर थे।' दुष्कृतों के विनाश और साधुओं के परित्राण के द्वारा पुरुष को पुरुषोत्तम बनाने का मार्ग प्रशस्त करने वाले और इस प्रकार सृष्टि के विकास की परम्परा को अक्षुण्ण रखने वाले योगेश्वर श्रीकृष्ण का जीवनदायी जीवन-चरित्र आर्य-जाति को मानसिक व्यामोह में से निकाल कर उसी प्रकार भारत को 'महान् भारत' बनाने के लिए सन्नद्ध कर दे जैसे उनके गीतोपदेश ने अर्जुन को महाभारत विजय के लिए सन्नद्ध कर दिया था।

क्षमा-प्रार्थना

श्रावणी के अवसर पर प्रकाशित वेदकथा विशेषांक का आर्य-जनता ने जैसा स्वागत किया है, वह आशातीत है। किसी विशेषांक की १७ हजार प्रतियां छपना और वे सब की सब हाथों-हाथ निकल जाना आर्य-समाज के इतिहास की अभूतपूर्व घटना है। इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि जितनी प्रतियां हमने छापी हैं उससे ड्योढ़ी संख्या के आर्डर हमें प्राप्त हुए और अब भी प्रतिदिन नए नए आर्डर आते जा रहे हैं। जिन्होंने पहले सौ प्रतियों का आर्डर दिया था अब वे विशेषांक को देखकर पांचसौ प्रतियों का नया आर्डर भेज रहे हैं। इतना बढ़िया, इतना उपयोगी और इतना सस्ता विशेषांक देखकर आर्य जनता चकित है। जनता के प्रेम से हम स्वयं अभिभूत हो गए हैं। जनता ने 'कल्याण मार्ग के पथिक' का और शिवरात्रि पर निकाले 'बोधांक' का जिस उत्साह से स्वागत किया था, इस विशेषांक का स्वागत भी उसी परम्परा के अनुरूप है।

परन्तु हम जनता के समक्ष करबद्ध होकर क्षमा प्रार्थना करते हैं कि अब जो नए आर्डर आ रहे हैं उनकी पूर्ति हम नहीं कर सकेंगे क्योंकि सब प्रतियां समाप्त हो चुकी हैं। अलबत्ता हमने इतना प्रयत्न अवश्य किया है कि जिन्होंने सौ प्रतियां मंगाई थीं उनको बीस भेज दी और जिन्होंने पांच सौ प्रतियां मगाई थीं उनको सौ प्रतियां भेज दीं, ताकि किसी को निराश न होना पड़े। ऐसा उन्हीं के साथ किया है, जिनके आर्डर विलम्ब से प्राप्त हुए थे। यथा समय आर्डर भेजने वालों को तो पूरी प्रतियां ही भेजी गई हैं। परन्तु अब हम ग्राहकों की मांग का उक्त दसवां हिस्सा भी पूरा करने में अपने को सर्वथा असमर्थ पाते हैं।

इस प्रकार की निराशा से बचने का सीधा सरल उपाय यह है कि भविष्य में आर्य जनता इस प्रकार का आलस्य न करे, अधिक जागरूक रहे और उचित समय की अवधि के अन्दर ही आर्डर भेजे। हरेक विशेषांक का दुबारा छापना सम्भव नहीं होता हम किसी को निराश नहीं करना चाहते, परन्तु हमारी भी तो विवशता आप पहचानिए। निराश होने वाले सज्जनों से पुनः क्षमा-प्रार्थना है।

व्यवहार भानु

वेदकथा विशेषांक से ही आपको यह सूचना भी मिल गई होगी कि अब हमारी अगली योजना ऋषि दयानन्द कृत छोटी सी किन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तिका—व्यवहार भानु को एक लाख की संख्या में छापने की है। यह हमारा नया अभियान है। उसे हम ग्राहकों को आठ रु० सैकड़ा के हिसाब से देंगे। उसके लिए आपको निराश न होना पड़े, इसलिए अभी से अपना आर्डर बुक करा दीजिए। नियत आर्डर आ जाने पर हम व्यवहार-भानु के प्रकाशन की तिथि की घोषणा कर देंगे।

ग्राहकों से निवेदन

१—जिन सज्जनों का 'सार्वदेशिक' का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है अथवा जिन्होंने अभी तक अपना शुल्क नहीं भेजा है, कृपया शीघ्र ही भेजने का कष्ट करें।

२—पत्र-व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें। —प्रबन्धक

आर्य समाज परिचयांक

दीपावली पर प्रकाशित होगा। जिन महानुभावों ने अभी तक परिचय नहीं भेजे वह तुरन्त भेज दें। —प्रबन्धक

महर्षि कृत—

गोकरुणानिधि

का प्रारम्भिक भाग ३०) हजार में प्रकाशित कर रहे हैं। इसका भी लाखों-करोड़ों की संख्या में प्रचार होना चाहिए।

सामयिक-चर्चा

गोवध बन्द होना चाहिए

लोक सभा में खाद्य मन्त्री श्री सुब्रह्मन ने अपने वक्तव्य के द्वारा भारत सरकार की स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा था की गोवध बन्दी के लिए कानून बनाना केन्द्रीय सरकार का विषय नहीं है। राज्य सरकारो को अधिकार प्राप्त है कि वे कानून बनाकर गोवध रोक सकती है। इस वक्तव्य से जो परस्पर विरोधी बातों से परिपूर्ण था गो प्रेमी जनता को सन्तोष नहीं हुआ। उनका कहना है कि इस विषय मे केन्द्रीय सरकार की उपेक्षा को देखते हुए राज्य सरकार इस दिशा में कोई ठोस पग नही उठा रही है। इसलिए यह दायित्व केन्द्रीय सरकार को वहन करना ही होगा। उसे जिस प्रकार भी बने कानून बनाकर समूचे देश मे गोहत्या बन्द कर देनी चाहिए।

आर्य सस्कृति मे अश्व और गौ की बड़ी महिमा है। गऊ आर्य संस्कृति एव आर्थिक समृद्धि की प्रतीक है और इसे प्राण तुल्य माना गया है। क्योंकि यह हमारे स्वास्थ्य और सम्पदा की रक्षिका है। भारत की कृषि का यही मेरु दण्ड है। यह स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्कृष्ट दूध घृत प्रदान करती है। मानव समाज के लिए इससे बढ़कर दूसरा कोई पशु उपयोगी नही है इसलिए सृष्टि के प्रभात से ही यह अवध्या मानी जाकर इसका रक्षण परम कर्त्तव्य ठहराया हुआ है। इस सुझाव में बड़ा बल है कि गऊ राष्ट्रिय पशु उदघोषित होना चाहिए। जिस प्रकार राष्ट्रिय पक्षी मोर अवध्य है इसी प्रकार राष्ट्रिय पशु गऊ भी अवध्य होनी चाहिए। इस दृष्टि से यह प्रश्न राष्ट्रिय हो जायगा। अमेरिका में अश्व राष्ट्रिय पशु उद्घोषित किया हुआ है इसलिए वह अवध्य है। गांधी जी की उत्तराधिकारिणी सरकार यह कार्य सहज ही कर सकती है क्योंकि गांधी जी की दृष्टि में गोहत्या बन्दी स्वराज्य प्राप्ति से भी अधिक महत्त्व रखती थी। परन्तु विडम्बना यह है कि हमारी सरकार अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए गांधी जी के नाम का तो प्रयोग करती है परन्तु जिन विषयों को गांधी जी ने अपने कार्य-क्रम में सर्वाधिक महत्त्व दिया था उन पर सरकार तनिक भी ध्यान नहीं देती। जब जनता यह देखती है कि जिस गौ को गांधी जी माता कहकर पुकारते थे वह उपेक्ष्य है तो उसका उत्तेजित हो जाना स्वाभाविक है। यही बात हिन्दी के सम्बन्ध में भी है। कांग्रेस ने अपना चुनाव चिह्न बैलों की जोडी रखा हुआ है। यदि वह गोवध निषेध के प्रति उपराम बनी रहती है तो उसे इस चिह्न को बनाए रखने का नैतिक या कानूनी कोई अधिकार नहीं है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के तत्काल बाद गोवध का कलक हट जाना चाहिए था परन्तु यह कलक गहरा बन गया है। चमड़े, मांस, सीग हड्डियों आदि को व्यापार एव निर्यात का विषय बनाए रखने से गोहत्या पहले से भी बढ गई है। ब्रह्मदेश ने भारत से कुछ वर्ष पूर्व 'राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त की थी उसने बहु सख्यक बौद्ध धर्म्मावलम्बियों की भावना का सम्मान करते हुए तत्काल गोवध बन्द कर दिया था। भगवान् बुद्ध को जन्म देने वाली भारत भूमि में यह अभिशाप अभी तक विद्यमान है। क्या यह दुर्भाग्य की बात नहीं है।

जब से गोवध निषेध आन्दोलन ने बल पकड़ा है तब से इस माग का विरोध करने वाले अस्त्र शस्त्र लेकर मैदान में उतर आए हैं। आनन्द यह है कि इनमें अधिकांश हिन्दू ही हैं। एक महाशय का कहना है कि गोवध निषेध आन्दोलन उच्च भावनाओं से ओत प्रोत है (श्री वी० एस० बोला ट्रिब्यून २७-८-६६) परन्तु यदि गोवध पर प्रति बन्ध लग जाय तो हमारा देश सदैव भिखारियों का देश बना रहेगा और हमारी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो जायगी। श्री वी० कोडन्डराव (ट्रिब्यून २६-८-६६) ने हिन्दुओं की गो भक्ति की भावना पर करारा प्रहार किया है। उनकी दृष्टि में गोवध निषेध की माग धर्म्म निरपेक्षता की भावना के विरुद्ध है। उन्होंने तो यहा तक कह दिया है कि यदि हिन्दुओ की भावना सर्वोपरि मानी गई तो हमे भारत को हिन्दू राष्ट्र उद्घोषित करना होगा। क्या धर्म्म निरपेक्षता का अर्थ यह है कि १५ प्रतिशतक (अल्प सख्यक वर्ग) लोगों की धार्मिक भावना की तो रक्षा की जाय और ८५ प्रतिशतक लोगों की भावना की उपेक्षा की जाय जो धार्मिक एव आर्थिक कारणो से गोरक्षा मे आस्था रखते हैं? हिन्दू स्वभाव एव शिक्षण से धर्म्म निरपेक्ष है वह धर्म्म निरपेक्ष राज्य का पक्षपाती रहा है और है परन्तु धर्म्म निरपेक्ष राज्य का अर्थ हिन्दू विरोधी न हो सकता है और न होना ही चाहिए।

इन दिनों प्रोटीन की अधिकाधिक उपलब्धि के लिए गदहो के दूध, चूहों के मांस और गोमास की सिफारिश की जा रही है विशेषतः उन लोगों के द्वारा जो भावनाओं से ऊपर उठे हुए और अपने को विज्ञान वादी कहते हैं। इसी आधार पर वे निकम्मी गऊओं के वध पर विशेष बल देते हैं। जहा तक प्रोटीन की बहुतायत का सम्बन्ध है नवीन वैज्ञानिक खोज के अनुसार मनुष्य के लिए सर्वाधिक पौष्टिक भोजन मनुष्य का मांस है। जो लोग निकम्मी गऊओं के वध की चर्चा करते हैं क्या वे अपने बूढ़े निकम्मे बुजुर्गों का वध किया जाना पसन्द करेंगे? स्व० श्री लाल बहादुर शास्त्री के शब्दों में जो गाय दूध नहीं देती वह सर्व प्रकार से पालनीय है क्योंकि वह अपने जीवन में गोबर तथा मरणोपरान्त भी अपने हाड़ मास और चर्म का सदुपयोग देती है। ऐसी गउएं अर्थ शास्त्र की उहा पोह से बोझ नहीं अपितु पूंजी सिद्ध हो चुकी है।

गोरक्षा महर्षि दयानन्द के कार्य और उनकी शिक्षा का अविभाज्य अंग था। आर्यों जैसे शाकाहारी लोगो के लिए दूध देने वाले पशुओं विशेषतः गौ की रक्षा एक बहुत बड़ा कर्त्तव्य है। गौ का दूध शारीरिक एव मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से सर्वोपरि है इसीलिए गोरक्षा पर वेदो से लेकर आधुनिक सुरुचिपूर्ण साहित्य तक मे विशेष बल दिया गया है। विधर्मियों के शासन काल मे भोजन के लिए गोवध होना शुरु हुआ। परन्तु अकबर जैसे विचार शील मुस्लिम शासकों ने हिन्दुओं की भावना के आदर स्वरूप गोवध बन्द कर दिया था। अंग्रेजों के काल में गोवध निषेध का आन्दोलन आरम्भ करने वाले सर्व प्रथम महर्षि दयानन्द थे। उन्होने गोकरुणा निधि पुस्तक में, अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश मे तथा अपने व्याख्यानों एव पत्र व्यवहार मे गौ की उपयोगिता और गोवध की हानियों का बड़ा सजीव चित्रण किया है। आर्यसमाज ने भी यह कार्य-क्रम अपनाया हुआ है। इसी आधार पर वह वर्तमान गोवध आन्दोलन का समर्थक है और साधु महात्माओं ने त्याग और बलिदान का जो मार्ग अपनाया हुआ है उसके प्रति उसकी सहानुभूति है।

भारत जैसे गो प्रेमियों के देश मे गौ की ही दुर्दशा सबसे अधिक है। गोवध निषेध विरोधी लोग यह दलील देकर गोप्रेमियों का मजाक उड़ाया करते हैं। परन्तु इस दुर्दशा के लिए हमारा राज्य सबसे अधिक दोषी है जिसने गोपालन, गोसवर्द्धन एव बढ़िया नसल की हृष्ट-पुष्ट गऊओं की उत्पत्ति का कार्य एक प्रकार से असंभव बनाया हुआ है। सर्वत्र-चरागाहों का अभाव है। जो गऊ पालने का साहस करते या सामर्थ्य रखते हैं वे सरकारी नियमों के कारण अपने को विवश पाते हैं। यदि सरकार गोकुल के संवर्द्धन में उचित रुचि लेकर कुछ अच्छे परिणाम जनता के समक्ष रखती तब भी जनता का कुछ संतोष होता। गोसंवर्द्धन की योजनाएं कागज पर ही रहीं। इससे भी जनता के रोष में वृद्धि हुई है।

भारत का शायद ही कोई कोना हो जहां से यह माग न उठ रही हो कि भारत सरकार को अविलम्ब गोहत्या बद करदेनी चाहिए परन्तु दुख इस बात का है कि भारत सरकार समय पर नही चेतती। जब पानी सिर से उतरने लगता है और जान माल की क्षति हो चुकती है तब उसे होश आता है और वह सही कदम उठाती है। यह सरकार के वर्चस्व के लिए हानिकारक है। इससे शासको की अयोग्यता एवं अदूर दर्शिता का भद्दा दिग्दर्शन होता और निरपेक्ष व्यक्ति को यह धारणा बनाने का अवसर मिल जाता है कि हमारी सरकार अनुनय विनय एव औचित्य की भाषा नहीं अपितु तोड फोड तथा बल प्रयोग की भाषा को समझने की अभ्यस्त होगई है।

रघुनाथ प्रसाद पाठक

स्वागत योग्य

कानपुर का प्रेस ट्रस्ट द्वारा प्रचारित २६ अगस्त का समाचार है कि अखिल भारतीय हरिजन लीग के अध्यक्ष श्री भगत अमीनचन्द्र ने केन्द्रीय सरकार से विदेशी मिशनरियो पर रोक लगाने का अनुरोध किया है।

उन्होंने आरोप लगाया है कि ये मिशनरियां देश के हजारो गरीब व असहाय हरिजनो का धर्म्म परि-वर्तन कराते हैं और उनसे राष्ट्र विरोधी व सस्कृति विरोधी काम कराते हैं।

श्री भगत ने यह भी बताया कि यदि सरकार ने लीग की माग को न माना तो लीग देश-व्यापी आन्दो-लन करेगी। वह मिशनरियों के कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन करेगी और धरना देगी।

(हिन्दुस्तान ३०-८-६६)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा शिरोमणि सभा है

निवेदन है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के १९६३ में पाकस्मां में और १९६४ में चरखी दादरी में हुए वार्षिक अधिवेशनों और उनमें हुए अधिकारियों के चुनावों को अवैध घोषित किया हुआ है तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नियमित सञ्चालन एवं आगामी चुनाव का अधिकार पानीपत में चुने हुए अधिकारियों को दिया हुआ है।

अम्बाला के ऐडीशनल डिस्ट्रिक्ट जज के ४-८-६६ के फैसले से भी सार्वदेशिक सभा की उपर्युक्त कार्यवाही की सम्पुष्टि हो गई है। इस फैसले के बाद १६-८-६६ को इस सभा के कार्यालय से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को एक पत्र लिखकर आदेश दिया गया है कि पंजाब सभा के अवैध अधिकारी उक्त सभा की अन्तरंग एवं चुनाव आदि की बैठक बुलाने और बैंकों से रुपया निकालने का अधिकार नहीं रखते। अतः वे इस प्रकार की कोई कार्यवाही न करें क्योंकि उनके द्वारा ऐसा किया जाना अनियमित एवं अवैध होगा। यदि वे कोई कार्यवाही करेंगे तो उसके परिणामों के लिए वे ही उत्तरदाता होंगे। इस पत्र की प्रतिलिपि साथ है।

पंजाब सभा के वर्तमान कथित प्रधान श्री प्रो० रामसिंह जी, मंत्री व कोषाध्यक्ष आदि अधिकारियों को पंजाब सभा की संस्थाओं यथा गुरुकुलकांगड़ी, कन्या गुरुकुल देहरादून, आदि के प्रबन्ध में पंजाब सभा के प्रधान या कोषाध्यक्ष आदि की हैसियत से कोई हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। कृपया अंकित कर लीजिए। अम्बाला कोर्ट के फैसले की लिपि भी साथ है।

रामगोपाल
सभा-मन्त्री

जिसके अधिकार क्षेत्र एवं नियन्त्रण में उससे सम्बद्ध प्रांतीय सभाएं एवं आर्य समाजें हैं। इसे अपने नियमों को बनाने और आवश्यकतानुसार उनमें संशोधन करने का भी अधिकार है। इसे विविध सभाओं और उनके सदस्यों के विवादों का निपटारा करने और उन सभाओं के निर्णयों के विरुद्ध अपील सुनने का भी अधिकार प्राप्त है।

अम्बाला छावनी के अतिरिक्त जि. जज का महत्वपूर्ण फैसला

श्री ओ३म्प्रकाश शर्मा पी.सी.एस. ऐडीशनल डिस्ट्रिक्टजज,अम्बाला

सिविल अपील सं० ७।१४

सन् १९६६

अपील दायर करने की तारीख

१०-१२-१९६५

फैसले की तारीख ४-८-१९६६

१—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली द्वारा श्री रामगोपाल शालवाले, मन्त्री।

२—श्री रामगोपाल शालवाले मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली।

३—श्री डा० हरिप्रकाश अलंकार, मेडीकल हाल, सदर बाजार, अम्बाला छावनी।

४—श्री प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली। अपीलकर्ता

बनाम

१—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजिस्टर्ड) गुरुदत्त भवन, जालन्धर शहर द्वारा मन्त्री रघुवीर सिंह शास्त्री, सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली।

२—श्री रघुवीर सिंह शास्त्री मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा (रजिस्टर्ड) सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली।

रेस्पौन्डेन्ट (प्रत्यर्थी)

श्रीयुत ओ० पी० सिंहल पी० सी० ऐस, सब जज फर्स्ट क्लास अम्बाला कैन्ट के १०-११-६५ के आर्डर के विरुद्ध अपील जिसके द्वारा निचली अदालत ने रेस्पान्डेन्ट न० १ की प्रार्थना पर जो निषेधाज्ञा स्वीकार की थी उसे इन शर्तों पर कायम था कि विवादास्पद मामला अपीलैन्ट नं० १ की न्यायसभा को (अर्थात् सार्वदेशिक न्याय सभा) भेजा जाय और उसका निर्णय प्राप्त किया जाय साथ रेस्पान्डेन्ट नं० १ (अर्थात् आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब) मामले का अन्तिम निर्णय होने तक चुनाव नहीं करेगी।

अपीलकर्ताओं की प्रार्थना —

मुद्दई (आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) के पक्ष में जारी की गई निषेधाज्ञा का रद्द कराया जाना। अपील अंडर आर्डर ४३ रूल १ [आर] पी०सी० कोड।

फैसला

इस फैसले से इस अपील का साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की सम्बद्ध इस अपील के विरुद्ध अपील नं० १३।१४ आफ १९६५ का भी निर्णय हो जायगा, इन दोनों अपीलों का कारण अम्बाला छावनी के फर्स्ट क्लास सब जज श्री ओ० पी० सिंहल १०-११-६५ का आर्डर है जो उन्होंने मुद्दइयों के स्थायी निषेधाज्ञा की स्वीकृति देने विषयक अभियोग में अस्थायी निषेधाज्ञा जारी करने के प्रार्थना-पत्र पर दिया था।

२—दोनों पार्टियों के विवाद को जन्म देने वाले आवश्यक तथ्यों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :—

३—मुद्दई नं० १ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब है जो रजिस्टर्ड सभा है और जिसका मुख्य कार्यालय गुरुदत्त भवन जालन्धर में है और मुद्दई नं० २ इस सभा के वर्तमान मन्त्री हैं। इसी प्रकार मुद्दायला नं० १ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है। यह भी रजिस्टर्ड सभा है जिसका मुख्य कार्यालय महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली में है। मुद्दायला नं० २ और ४ क्रमशः उसके मन्त्री और प्रधान हैं। मुद्दायला नं० २ ने मुद्दायला नं० १ के आदेश से मुद्दई सभा के सदस्यों की साधारण सभा ५-६-६५ को बुलाने और उसमें १९६५-६६ के लिए अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों का निर्वाचन करने के निमित्त विज्ञापन जारी किया।

४—इस विज्ञापन के विरोध में मुद्दई ने स्थायी निषेधाज्ञा जारी कराने के लिए अभियोग दायर किया और हेतु यह दिया कि मुद्दई नं० १ स्वतन्त्र संस्था है। सोसाइटीज एक्ट के अन्तर्गत रजिस्टर्ड है और उसका अपना विधान है। मुद्दायला नं० १ और उसके कथित मन्त्री और प्रधान को मुद्दई सभा की प्रगतियों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है और २६-८-६५ के विज्ञापन के अनुसार जो अवैध, अनधिकृत दुर्भावनापूर्ण तथा अधिकार क्षेत्र से बाहर था और मुद्दई सभा तथा उसके अधीनस्थ समाजों पर लागू न हो सकता था उन्हें स्थायी निषेधाज्ञा द्वारा अधिवेशन करने से रोका जाय। मुद्दायलाह नं० १ ने १-४-६५ को भी इससे पूर्व इसी आशय का एक परिपत्र जारी किया था जिसको भी मुद्दई ने उपर्युक्त आधार पर पृथक् चुनौती दी थी।

५—मुद्दई की प्रार्थना पर मुद्दायलों के विरुद्ध एक पक्षीय अस्थायी निषेधाज्ञा जारी करके उन्हें ५-९-६५ को अधिवेशन करने से रोक दिया गया था। मुद्दायलों ने इस अस्थायी निषेधाज्ञा के घोर विरोध में अपनी आपत्तियां पेश की थीं।

६—यहां यह भी कहना है कि मुद्दई सभा ने भी १९६५-६६ के लिए पदाधिकारियों के निर्वाचन के लिये जींद में १३, १४ नवम्बर को बुलाए गये साधारण सभा के अधिवेशन के लिए २७-६-६५ को विज्ञापन जारी किया।

७—सुयोग्य ट्रायल कोर्ट (छोटी अदालत) ने रिकार्ड पर अंकित सामग्री और दोनों पक्षों की आपत्तियों पर विचार करने के उपरान्त दोनों पक्षों को सार्वदेशिक न्याय सभा का निर्णय होने तक चुनाव करने से रोक दिया और मुद्दायलह नं० १

अर्थात् सार्वदेशिक सभा को आदेश दिया कि वह मामला सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा को भेज दे। छोटी अदालत के १०-११-६५के उपर्युक्त निर्णय के विरुद्ध दोनों पक्षों ने अपीलें कीं।

८—इस विषय पर लम्बी बहस हुई और मैंने रिकार्ड पर अंकित तथ्यों और दोनों पक्षों के विद्वान् वकीलों द्वारा प्रस्तुत दलीलों पर बड़े ध्यान से विचार किया।

९—इस मामले में मुख्य प्रश्न जिसका निर्णय होना था, वह था कि २८-८-६५ का विवादास्पद विज्ञापन जिसके द्वारा मुद्दई सभा का १९६५-६६ का चुनाव करने के लिए साधारण सभा बुलाई गई थी अवैध, अवैधानिक और दुर्भावना पूर्ण था या नहीं जैसा कि मुद्दई सभा का कहना था और जो अस्थायी निषेधाज्ञा के जारी होने का प्रत्यक्ष आधार बना था। सुयोग्य ट्रायल कोर्ट ने अभियोग के इस महत्वपूर्ण पहलू पर अपनी सम्मति प्रकट नहीं की है। अपील के अन्तर्गत आदेश से यह ज्ञात नहीं होता है कि २६-८-६५ का विवादास्पद विज्ञापन और इससे पूर्व का १-४-६५ का परिपत्र प्रत्यक्षतः अवैध या अधिकार क्षेत्र से बाहर के थे या नहीं और न ही यह स्पष्ट होता है कि ट्रायल कोर्ट का रिकार्ड पर विद्यमान तथ्यों के आधार पर इस परिणाम पर पहुँचना कि मुद्दइयों को अस्थायी निषेधाज्ञा की स्वीकृति का दिया जाना प्रत्यक्षतः ठीक था या नहीं।

१०—मुद्दायलाह सं० २ ने मुद्दई सभा का १९६५-६६ का निर्वाचन करने के लिये साधारण सभा बुलाने के लिए जो कार्यवाही की वह मुद्दायलाह नं० १ के आदेश निर्देश से ही की थी। रिकार्ड तथा अन्य दस्तावेज़ों के अध्ययन से जिनमें सार्वदेशिक सभा का विधान भी सम्मिलित है पता लगेगा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा शिरोमणि सभा है जिसके अधिकार क्षेत्र एवं नियन्त्रण में उससे सम्बद्ध प्रान्तीय सभाएं एवं आर्य समाजें हैं। इसे अपने नियमों को बनाने और आवश्यकतानुसार उनमें सशोधन करने का भी अधिकार है। इसे विविध सभाओं और उनके सदस्यों के विवादों का निपटारा करने और उन सभाओं में निर्णयों के विरुद्ध अपील सुनने का भी अधिकार प्राप्त है। इस विषय में मुद्दायला सं० १ के विधान का नियम स० ४७ सुस्पष्ट है।

११—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अपरिचित सभा नहीं है। जब मुद्दई सभा ने १८९५ में अपना विधान बनाया था तब सार्वदेशिक सभा के निर्माण की व्यवस्था स्वीकार की गई थी। १९०८ में सार्वदेशिक सभा बनी और १९१४ में सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट के अधीन उसकी रजिस्ट्री हुई। सार्वदेशिक सभा की रजिस्ट्री के लिये जो प्रार्थना-पत्र दिया गया था उस पर हस्ताक्षर करने वालों में एक मुद्दई सभा भी थी। इस प्रकार मुद्दई सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के जन्म दाताओं में थी। मुद्दई सभा ने १९०९ में अपने को सार्वदेशिक सभा के साथ सम्बद्ध किया। आर्य प्रतिनिधि सभा यू० पी०, राजस्थान, बंगाल, बिहार, विदर्भ और बम्बई की सभाएं भी सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध हुई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्माण प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पुरुषार्थ को संयुक्त और केन्द्रित करने के लिये हुआ था और उसे उन सभाओं की सदस्यता और कार्य को नियमित का प्रत्यक्षतः अधिकार था।

१२—सार्वदेशिक सभा की सर्वोच्चता १९०८ से, जब वह स्थापित हुई थी अक्षुण्य बनी रही प्रतीत होती है। मुद्दायलों ने दिल्ली के फर्स्ट क्लास सब जज श्री बी० यश० सेखों। की अदालत के एक पूर्व अभियोग नं० ३४५, सन् १९६० में दिए हुए बयान की प्रामाणिक प्रति पेश की है जो मुद्दई सार्वदेशिक सभा की ओर से आज के अपील कर्त्ताओं ने सार्वदेशिक सभा और उसके अधिकारियों की ओर से दिया था जिसमें उन्होंने स्पष्ट एवं असंदिग्ध रूप में स्वीकार किया था कि सार्वदेशिक सभा शिरोमणि सभा है जिसे आर्य प्रतिनिधि सभाओं के कार्य और उनकी सदस्यता को नियमित करने का अधिकार है और उससे सम्बद्ध कोई सभा या आर्यसमाज उसके अधिकार को और उसके फैसलों को चुनौती नहीं दे सकता। सार्वदेशिक सभा ने मुद्दई सभा के पाकसभा और चर्खी दादरी में १९६३ व १९६४ में हुए निर्वाचनों को अवैध एवं अनियमित होने के कारण पहले ही रद्द कर दिया था। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि मुद्दई सभा ने घरेलू न्यायालय सार्वदेशिक न्याय सभा के माध्यम से इस निर्णय को चुनौती दी हो, जो इस प्रकार के समस्त विवादों के समाधान व निपटारे के लिए विद्यमान है।

१३ - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधियों का बाहुल्य रहता है। इनके अतिरिक्त सभा में प्रतिष्ठित सदस्य भी होते हैं जिन्हें सभा विशेषगुणों के कारण चुनती या सह युक्त करती है। इस प्रकार के सदस्यों की संख्या प्रान्तीय प्रतिनिधियों के सभासदों के १।८ भाग से अधिक नहीं होती।

१४—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सार्वदेशिक न्याय सभा स्थापित कर रखी है। हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज जैसे प्रसिद्ध-प्रसिद्ध विधान शास्त्री इसके सदस्य हैं और इसे विभिन्न सभाओं और उनके सभासदों के यथावस्था झगड़ों और विवादों को सुनने और उनके सुलझाने का पूर्ण अधिकार दिया हुआ है।

१५—इसके उपर्युक्त विधान को दृष्टि में रखते हुए यह कल्पना करना कठिन है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अवैध व पक्षपातपूर्ण और अपने से सम्बद्ध सभाओं के हितों के विरुद्ध कार्यवाही कर सकती है और यदि करती भी है तो घरेलू न्याय सभा में उन पर आपत्ति की जा सकती है।

१६—मुद्दईयों के विद्वान् वकील ने दलील दी है कि मुद्दई सभा (आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) ने पचमांश की राशि न देकर और अपने प्रतिनिधियों को सार्वदेशिक सभा के बम्बई और कानपुर के अधिवेशनों में भाग लेने से रोककर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से अपना संबंध विच्छेद कर दिया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा की पंचमांश आदि न देने की इस प्रकार की कार्यवाही को सम्बन्ध विच्छेद समझ लेना संदिग्ध है। जब यह सार्वदेशिक सभा में प्रविष्ट हुई थी तो, इसने सार्वदेशिक सभा के निश्चयों एवं आदेशों का सदैव पालन करना स्वीकार किया था। मुद्दई सभा का कोई ऐसा निश्चय मुझे नहीं दिखाया गया है जिसमें सार्वदेशिक सभा से सम्बन्ध विच्छेद करना तय पाया हो। इस कोर्ट को यहां यह विचार नहीं करना

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य समाज बैंगलूर (मैसूर) का

प्रार्थना-भवन

दुहिता दुर्हिता दूरेहिता भवतीति

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी.
डी. बी. कालेज, गोरखपुर)

आज जिस रूप मे समाज प्रगति कर रहा है, उसकी सामाजिक मर्यादायें स्थिर हो रही हैं उनका लक्ष्य भौतिक सुख सुविधाओं, वासनाओं और तृष्णाओं की पूर्तिमात्र प्रतीत होता है। विवाह एक पवित्र, सोद्देश्य सामाजिक कर्तव्य था। परन्तु आज समाज पर दृष्टि पात करने से विवाह एक भयकर अभिशाप के रूप में दिखाई देता है। शायद ही किसी को ऐसे दस दम्पती मिलें जो प्राय. सुखी हों। दूसरी ओर कोई शायद ही ऐसा व्यक्ति हो जिसने गलत सम्बन्धों के कारण दु खी दपती न देखे हों या जिसे ऐसे दंपतियों के पारस्परिक अभियोग या दोषारोपण सुनने को विवश न होना पड़ा हो।

स्वामी दयानन्द ने भारतवर्ष के भविष्य और वर्तमान पर विचार किया और सुखी वैवाहिक जीवन के निर्माण के लिए कुछ आवश्यक तत्वों की ओर ध्यान आकृष्ट किया। उनकी भाषा में तो यहीं पर उनके विचारों को हम इस प्रकार रख सकते हैं। "प्रेम बन्धन में बधने वाले दोनों साथियों में आत्मसम्मान की ठोस बुद्धि तथा सुविकसित सामाजिक भावना होनी चाहिए। दोनों ही को एक दूसरे को नीचा दिखा कर अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने की विकृत प्रतिद्वन्द्विता से मुक्त होना चाहिए मानसिक परिपक्वता, शारीरिक स्वास्थ्य, दृष्टिकोण में मनोवैज्ञानिक स्वतन्त्रता, प्रेमकला का ज्ञान, सामाजिक उत्तर दायित्व की भावना, वस्तुस्थिति के अनुकूल आचरण करने की योग्यता, मानसिक विकृति तथा अपने वैवाहिक साथी की परिस्थिति से पूर्ण आत्मीयता तथा उसे निरन्तर उत्साहित करते रहने की तत्परता लोगों की साधारण बाधाओं को दूर कर देती है।" यदि हमने सुखी वैवाहिक तत्वों को समझ लिया तो इन्हे प्राप्त करने के उपायों पर भी विचार करना होगा। इसके लिए हम आपको सत्यार्थप्रकाश के आधार पर कुछ बातें बतायेंगे।

सुखी वैवाहिक जीवन के लिए वर वधू का चुनाव उनकी इच्छा पर निर्भर होना चाहिए। आज कल कालेजो में, स्कूलों में या पार्कों मे घूमते हुए युवावस्था मे रूप को देख कर वासना की तृप्ति के लिए भी प्रेम हो जाता है और इस प्रक्रिया से कुछ विवाह अवश्य हो रहे हैं। पर, केवल रूप पर आश्रित होने से इनका स्थायित्व नहीं रहता। परन्तु भारतीय या वैदिक पद्धति के अनुसार स्वयवर प्रथा द्वारा विवाह होते थे। जैसा कि वेद मन्त्र शिक्षा देते हैं—

वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति यईं वहाते महिषीमिषिराम्। आस्य श्रवस्याद्रथ आ च घोषात् पुरु सहस्रापरिवर्तयाते।
ऋ० ५-३७-३

वधू की जिस वर से विवाह करने की इच्छा हो उससे विवाह करे। परन्तु प्रश्न यह होता है कि जब स्वामी जी ने यह लिखा है कि 'जो कन्या माता के कुल की ६ पीढ़ियों में न हो और पिता के गोत्र की न हो उस कन्या से विवाह करना उचित है। इसका प्रयोजन तो यही लगता है कि" परोक्ष प्रिया हि देवा: प्रत्यक्ष द्विष' (शतपथ) यह निश्चित बात है कि जैसी परोक्ष पदार्थ मे प्रीति होनी है वैसी प्रत्यक्ष में नहीं।' इसका क्या तात्पर्य है? इससे तो यही मालूम होता है कि विवाह दूर होना चाहिए। यदि दूर होगा तो लड़की और लड़का कैसे एक दूसरे के विषय में जानेंगे। एक दिन देखने और सुनने से रूप का तो आभास मिल सकता है पर स्वभाव आदि का बिल्कुल नही। अत. यह समस्या विचारणीय प्रतीत होती है।

इस समस्या का समाधान करने के लिए वैदिक काल की पद्धति यह थी कि परिवार के पुरोहित माध्यम पुरुष का कार्य करते थे। वे वर और वधू दोनों के ही गुणों को जानने वाले होते थे, अत: उन्हें चुनाव का अधिकार देना अनुचित न था और उस समय वही पुरोहित वर और कन्या की सम्मति भी ले लिया करते थे। इसी पद्धति का वैदिक काल में प्रयोग होता था और इससे वे दोनों एक साथी के रूप में उत्तम एवं आदर्श भावनाओं के साथ वैवाहिक जीवन में आबद्ध हो सकते थे। अत भविष्य सुखमय होता था। विवाह योग्य विद्वान् स्त्री पुरुषों का उल्लेख वेद मन्त्रों मे इस प्रकार किया है—

पावीरवी कन्या चित्रायुः सरस्वती वीर पत्नी धियंधात्। ग्नाभिरच्छिद्रं शरणं सजोषा दुराधर्षं गृणते शर्म यंसत्।
ऋ० ६। ४९। ७

अर्थात्—(पावीरवी) पवित्रता करने वाली (कन्या) शोभायमान (चित्रायु) विचित्र भोगों को प्राप्त करने वाले (वीर पत्नी) वीरों का पालन करने वाली (सरस्वती) विद्या-देवी (धियधात्) बुद्धि का धारण करती है (ग्नाभि·) सहचारिणियों के साथ (सजोषा) प्रेम के साथ (अच्छिद्र शरण) निर्दोष आश्रय देती है और (गृणते) उपासक को (दुराधर्ष शर्म) अटल सुख (यसत्) देती है।

इस मन्त्र में 'सरस्वती कन्या' शब्द है अत: यह मन्त्र जिस प्रकार सरस्वती विद्या विषयक है उसी प्रकार कन्या विषयक भी है। विद्या से सुसस्कृत कन्या वीरों को पति रूप में वर कर उनको संतोष देती है।

शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा ब्रह्मणां हस्तेषु प्र पृथक् सादयामि। यत्काम इदमभिषिंचामि वोऽहमिन्द्रो मरुत्वान्त्स ददातु तन्मे।

अ० ६। १२२। ५।

अर्थात् (शुद्धा) शुद्ध (पूता:) पवित्र (यज्ञिया:) पूजनीय (इमा योषित) इन स्त्रियो को (ब्रह्मणा हस्तेषु) ज्ञानियों के हाथ मे प्र पृथक्) पृथक्-पृथक् (सादयामि) देता हू (यत् काम-अह) जिस इच्छा को धारण करने वाला मैं (इद व अभिषिञ्चामि) आपका यह अभिषेक करता हू (तत्) उस कामना को (मरुत्वान् इन्द्र·) प्रभु (मे ददातु) मुझे देवे।

शुद्ध, पवित्र, पूजा योग्य तरुण स्त्रियों का पाणिग्रहण ज्ञानी पुरुष ही करें और पृथक् पृथक् एक तरुणी का पाणिग्रहण एक ही पुरुष करे

अगली बात जिसका स्वामी जी ने वैवाहिक जीवन को आनन्दमय बनाने के लिए आवश्यक बताया है वह है 'दूर विवाह का होना।' उन्होंने लिखा है। "जैसे किसी ने मिश्री के गुण सुने हों और खाई न हो तो उसका मन उसी में लग्न रहता है, जैसे किसी परोक्ष वस्तु की प्रशंसा सुनकर मिलने की उत्कट इच्छा होती है वैसे ही दूरस्थ-कन्या से विवाह होना चाहिए।" आगे उन्होंने दूर विवाह होने के लाभों का भी उल्लेख किया है। वे यह है :—

१—जो बालक बालिका बाल्यावस्था से निकट रहते, लड़ाई प्रेम करते उनका परस्पर विवाह करने से प्रेम नहीं हो सकता।

२—जैसे पानी में पानी मिलाने से विलक्षण गुण नही हो सकता वैसे ही एक गोत्र में विवाह होने से उत्तम सन्तान नहीं हो सकती।

३—जैसे दूध मे मिश्री शुंठ्यादि औषधियों के योग होने से उत्तमता होती है वैसे ही भिन्न गोत्र से भी विवाह में श्रेष्ठता आती है।

४—जैसे एक देश में रोगी हो वह दूसरे देश मे वायु और खान पान के बदलने से रोग रहित होता है वैसे ही दूर देशस्थों के विवाह होने से उत्तमता है।

५—निकट सम्बन्ध होने से एक दूसरे के निकट होने में सुख दु:ख का भान और विरोध होना भी सम्भव है दूर देशस्थों में नहीं। और दूर २ प्रेम की डोरी लम्बी पड़ जाती है निकटस्थ में नहीं।

५ – दूर २ देश में वर्तमान और पदार्थों की प्राप्ति भी दूर सम्बन्ध होने में सहजता से ही हो सकती है, निकट विवाह होने मे नहीं। इसलिए .—

"दुहिता दुर्हिता दूरेहिता भवति"

दूर देश में रहने के कारण लड़की को दुहिता कहते हैं।

७—पितृकुल मे दारिद्रय भी सम्भव है ऐसे समय जब जब लड़की अपने पिता के कुल में आएगी तब तब उसे कुछ न कुछ देना होगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, व्यावहारिक सभी दृष्टियों से दूर कुल में विवाह होने से वैवाहिक जीवन सुखी हो सकता है।

इसके अतिरिक्त स्वामी जी महाराज ने वैवाहिक जीवन को सुखी बनाने के लिए कुछ और आवश्यक बातों का उल्लेख किया है। जिनमें स्वास्थ्य को प्रमुखता दी है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

भगवान् कृष्ण की महानता

[श्री कृष्णदत्त जी प्रिंसिपल हिन्दी महाविद्यालय, हैदराबाद]

महाभारत काल में भगवान कृष्ण का चरित्र अद्वितीय और असाधारण था। वे तत्कालीन भारतीय राजनीति के केन्द्र बिन्दु और सूत्रधार थे। गीता का निर्माण करके उन्होंने धार्मिक दृष्टि से भी अमर कीर्ति और महत्व प्राप्त किया है। किसी भी दृष्टि से भगवान् कृष्ण की समता वाला कोई अन्य व्यक्ति उस समय दृष्टिगोचर नही होता है। यद्यपि भारतीयों ने उन्हें भगवान् का अवतार स्वीकार करके उनके जीवन को अलौकिकता और महान् चमत्कारों से परिपूर्ण कर दिया है, तथापि कृष्ण के अवतार को सम्पूर्ण कलाओं से युक्त बतलाकर अवतारों में भी उनके महत्व को दर्शाया गया है।

आज भगवान कृष्ण का जो स्वरूप भारतवर्ष में अत्यधिक मान्य हुआ है उससे उनके प्रति अन्ध श्रद्धा से युक्त भक्तिभाव ही उत्पन्न होता है। आज आर्य जाति की उत्तराधिकारिणी हिन्दू जाति कृष्ण के यौवनकालीन जीवन से उतनी प्रेरणा नहीं ले रही है जितना, उनक बाल्य रूप उसके लिए आनन्द-दायक बना हुआ है, जिसमें गोपियों और गोप-बालकों से रास-लीला और क्रीडा-केलि का ही वर्णन है। हमने भगवान कृष्ण के समाज और राष्ट्र के लिए जीवन तथा स्फूर्ति-दायक उस रूप को लगभग भुलासा दिया है अथवा उसको अत्यधिक अलौकिक बना दिया है जिसमे उन्होने अर्जुन की पुरुषता का और निष्क्रियताको दूर करके उसे महारथी और कर्मवादी बना दिया था। हमने कृष्ण महाराज के उस रूप को विस्मृत सा कर दिया है, जिसने तत्कालीन भारतीय राजनीति का सचालन किया था। हमने श्री कृष्ण चन्द्र जी के जीवन के उस भाग का अधिक चिंतन करना छोड दिया है जिस रूप मे हमें वे विभिन्न-राज्यों में विभक्त भारत को एक सूत्र में बांधते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। आज हम भगवान् श्रीकृष्ण के उस रूप का दर्शन करना नही चाहते, जिसमे उन्होंने दुष्ट शासकों को दण्डित करके लोक-रंजन और लोकहित का कार्य किया था। योगीराज कृष्ण के लौकिक तथा मानवीय कार्यों और स्वरूप को अलौकिक तथा अवतारी स्वरूप देकर हमने उनके जीवनको केवल आदरणीय तथा पूजा का विषय बना दिया है, उन्हें अनुकरणीय नहीं रखा। आज हम कृष्णचन्द्र जी महाराज के एक ही रूप को लेकर उसकी महत्ता का दिग्दर्शन करेंगे।

महाभारत काल में ऐसे-ऐसे व्यक्ति थे जो किसी-किसी गुण में कृष्ण जी से भी अधिक थे। धर्मपालन और सत्य भाषण में धर्मराज की समता करने वाला उस युग मे कोई नहीं था। शारीरिक शक्ति में भीम बेजोड़ था। अर्जुन और कर्ण की समता करने वाला धनुर्धारी सम्पूर्ण राष्ट्र मे कोई नहीं था। आचार्य का गौरव पद द्रोणाचार्य को ही प्राप्त था। दृढप्रतिज्ञ के रूप में भीष्म पितामह की तुलना में कोई नही ठहरता। आयु मे स्वय कृष्णजी के पिता वसुदेव और द्रुपद थे। कृष्ण द्वैपायन जैसे विद्वान ऋत्विक भी थे। उपर्युक्त गुणों की दृष्टि से कृष्णजी का जीवन उल्लिखित व्यक्तियों की समता में पृथक्-पृथक् रूप मे अधिक महत्व नहीं रखता था, किन्तु इन्द्रप्रस्थ मे पांडवों द्वारा विरचित राजसूय-यज्ञ मे जब यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि प्रधान अर्घ का अधिकारी कौन महापुरुष हो सकता है, धर्मराज, भीम, अर्जुन, भीष्माचार्य, द्रुपद, आदि मे से किसी को वह सम्मान प्राप्त नहीं हो सका। इस सम्बन्ध में युधिष्ठिर ने वयोवृद्ध भीष्मपितामह से सलाह ली और पूछा कि अर्घ किस-किसको दिया जाए और प्रधान-अर्घ का कौन अधिकारी है। इसका विस्तृत वर्णन महाभारत के सभा-पर्व के पैंतीसवें अध्याय मे अर्घाहरण-प्रकरण में मिलता है। धर्मराज के पूछने पर भीष्मपितामह ने पहले तो यह उत्तर दिया कि अर्घ अधिकारी आचार्य, ऋत्विक्, स्नातक, सम्बन्धी, मित्र और नरेश ये छः प्रकार के पुरुष हैं। प्रधान-अर्घ जिसको दिया जाता है उसका सम्मान होता है। वह एक प्रकार से सभा का शीर्ष-व्यक्ति होता है। उसकी सर्वप्रथम पूजा और सत्कार किया जाता है। अतः इस सम्बन्ध में धर्मराज का भीष्मपितामह से सलाह लेना उचित ही था। धर्मराज के पूछने पर वृष्णि-कुल में उपजे श्री कृष्णचन्द्र को भूमण्डल भर में पहले पूजा जाने के योग्य विचार के भीष्म ने कहा, "जैसे ज्योतिर्मालाओं में आदित्य सबसे तेजोवन्त है वैसे ही इन राजाओं में श्री कृष्णचन्द्र तेज, बल और पराक्रम से अति प्रकाशित दीख पड़ते हैं। सूर्य देश में सूर्य के उगने से और वायु से वर्जित स्थान मे वायु चलने से जैसा जान पड़ता है, श्रीकृष्ण के आने से हमारा यह सभा-भवन वैसे ही प्रकाशित और प्रमुदित हुआ है।" भीष्म पितामह की सलाह लेकर सहदेव ने उस राजसूय-यज्ञ मे कृष्ण-चन्द्रजी को प्रधान अर्घ दिया, जिसका शिशुपाल के सिवा किसी ने विरोध नहीं किया। यह घटना कोई सामान्य घटना नहीं थी। यह श्रीकृष्ण जी के महत्व तथा उच्च पद की ओर सकेत करने वाली घटना है। यह सम्मान श्री कृष्णजी को इस लिए प्राप्त नही हुआ था कि वे एक विस्तृत राज्य के अधिपति थे। किन्तु उनके कार्य तथा उनका जीवनादर्श ऐसा था कि इन्द्र-प्रस्थ मे उन्हें प्रधान-अर्घ दिया गया था। कृष्णजी महाराज की एक ही घटना से इस बात का परिचय मिल जाता है कि इतने महान् व्यक्ति मे सेवाभाव कितना अधिक था।

राजसूय-यज्ञ मे युधिष्ठिर ने एक एक कार्य एक व्यक्ति को सौंपा था। यथा, भोजनादि पदार्थकी देखभाल दुःशासनको सौंपी गयी थी, अश्वत्थामा ने ब्राह्मणों के स्वागत कार्य को अपने हाथ मे लिया था; सजय को राजाओं की व्यवस्था का कार्य मिला था, कृपाचार्य ने हीरे, स्वर्ण रत्नादि की रक्षा तथा दक्षिणा आदि का कार्यभार सम्भाला था, विदुर जैसे विद्वान् ने व्ययकारी बनना स्वीकार किया था, दुर्योधन के जिम्मे उपहारों के ग्रहण करने का कार्य था; भीम और द्रोणा-चार्य ने सामान्य देख-रेख का कार्य अपनी ओर रखा था। किन्तु श्रीकृष्ण जी ने अपने लिए जो साधारण कार्य स्वेच्छा से ग्रहण किया था वही उनके महान् और आदर्श-पुरुष होने का प्रमाण है। यद्यपि उन्हें कोई कार्य लेना अनिवार्य नही था, तथापि वे कोई महत्वपूर्ण कार्य अपने लिए चुन सकते थे, किन्तु उन्होंने अपने लिए ब्राह्मणों के पाव धोने का कार्य चुन लिया था। यह कार्य उन्होंने अपनी इच्छा से लिया था। महाभारत में लिखा है। "चरण क्षालने कृष्णो ब्राह्मणानां स्वयंह्यभूत्।" तात्पर्य यह कि स्वेच्छा से ही उन्होंने यह कार्य, जिसको सामान्यतः बहुत निकृष्ट और हेय समझा जाता है, चुना था। श्रीकृष्णचन्द्रजी की इसी सेवावृत्ति ने उन्हे महान् बना दिया था। जिन्होंने कृष्णजी के अवतार लेने में विश्वास किया है, वे भी यही बतलाते हैं कि निकृष्ट से निकृष्ट प्राणी की रक्षा में ऐसे दौड़े कि उन्हें अपने पीताम्बरपट और मयूर-मुकुट का भी ध्यान नही रहा।

सेवा-धर्म का बड़ा महात्म्य है। "वह मखदूम होगा करेगा जो खिदमत" की उक्ति के अनुसार जन-सेवक कृष्ण को उस राजसूय-यज्ञ में प्रधान-अर्घ प्राप्त हुआ था। इतिहास इस बात का प्रमाण है कि जो सेवक होता है उसी को महत्व और सम्मान प्राप्त होना है।

*

व्यवहार भानु के प्रकाशन पर

आर्य जगत् में भारी स्वागत

श्री त्रिलोकीनाथ जी भार्गव लिखते हैं—

"आप मेरी ओर से १००० प्रतियां लिख लीजिये। उसका मूल्य ८०) आप जब चाहें—भेज दूंगा।"

मेरा सुझाव है कि यदि सभा इस पुस्तक को केन्द्रीय शिक्षा विभाग से स्वीकृत करा सके और इसका अध्ययन स्कूलों में अनिवार्य करवा ले तो भारत में करोड़ों पुस्तकें प्रति वर्ष प्रचारित हो सकती हैं। सरकार को इसमें कोई आपत्ति नहीं हो सकती, कारण कि यह कोई साम्प्रदायिक ग्रन्थ नहीं है।

—)०(—

श्री प्रहलाद कुमार जी आर्य, मन्त्री आर्य समाज हिन्डौन सिटी लिखते हैं:—

१०० प्रति वेद कथा अंक का ६०) सेवा में प्रेषित है।

अंक बहुत सुन्दर, प्रशंसनीय, स्वागत योग्य है। ऐसे सुन्दर प्रकाशन के लिए अनेकशः धन्यवाद।

व्यवहार भानु प्रकाशन की योजना अत्यन्त साहसिक एवं विस्मयकारी है। हम भी.........हजार लेंगे।

स्मरण—पत्र

माननीय मुख्य मन्त्री जी,

आन्ध्र प्रदेश सरकार के नाम

भारत के अस्वाभाविक विभाजन के द्वारा जब पाकिस्तान का अस्तित्व निर्माण पाया तो इसी के साथ-साथ द्विराष्ट्र सिद्धान्त का भी दृष्टिकोण लोगों मे स्थान प्राप्त करने लगा, जिसका कि प्रचार स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व मुस्लिम-लीग किया करती थी। इस्लामी राज्य स्थापना का प्रयत्न भरपूर वेग द्वारा किया जाने लगा। जिन मुसलमानों ने नीतिमत्ता से भारत में ही अपना आवास निर्धारित किया था, इन्हें भारतीय सघ सरकार के विरुद्ध भड़काने और उभारने का भी पूरा पूरा प्रयास यहां से होता रहा और भारत के अन्य भाग में मुस्लिम लीग के अस्तित्व को शेष रख कर इसके द्वारा विरोधी प्रचार का कार्य भी किया जाता रहा है। तथापि भारत के विभिन्न भागों मे पाकिस्तानी मनोवृत्ति के मुसलमानो ने कुछ समय के मौन के उपरान्त पुन. उभरने और अपनी प्रवृत्तियों को क्रियात्मक रूप देने का प्रयत्न प्रारम्भ किया। और अपने कार्यक्षेत्र को विशेष रूप से विस्तीर्ण करने मे कटिबद्ध हुए। दक्षिण भारत इस दृष्टि से विशेष अभिलक्ष रहा। मद्रास, केरल और हैदराबाद अब पाकिस्तान समर्थक क्षेत्र समझे जाने लगे हैं।

पुलिस एक्शन से पूर्व हैदराबाद के रजाकार मन्त्री ने कहा था कि "हैदराबाद अपने स्थान पर स्वय एक पाकिस्तान है।" पुलिस कार्यवाही के पश्चात् भी सर्वसाधारण मुसलमानों की मनोवृत्ति मे कोई परिवर्तन नहीं आया अपितु अब तो व्यापक रूप से इसका प्रदर्शन हो रहा है। जिसका अनुमान एक पत्र से जो आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, प० नरेन्द्र जी के नाम ८ सितम्बर १९६५ को कार्यालय को प्राप्त हुआ है इस पत्र के लेखक का नाम है सैयद युसुफ अली। यह पत्र हिन्दी मे लिखा हुआ है। पत्र के लेखक का कथन है :—

हैदराबाद हमारे मुसलमानो का पाकिस्तान है इस पर हमारा जन्म-जात अधिकार है। यहां हिन्दुओ का कुछ नही चलता। भली प्रकार याद रखो! विद्रोहियो!!!

पुलिस कार्यवाही के तत्काल बाद ही पाकिस्तानी मनोवृत्ति के व्यक्तियों ने भोनगीर में एक मासूम अण्डालम्मा नामक कन्या का अपहरण कर इससे व्यभिचार किया और इसका बध कर डाला एव इसी के रक्त से "दरगाह" की दीवार पर अंकित करते हुए अपनी पाकिस्तानी प्रियता का परिचय प्रस्तुत करते हुए लिखा कि "पाकिस्तान जिन्दाबाद।"

सैनिक प्रशासन और इसके पश्चात् के प्रस्थापित जनतन्त्र प्रशासन से विशेष यह भूल हुई थी कि "इत्तेहाद-उल-मुसलमीन" जैसी साम्प्रदायिक और राष्ट्र विरोधी भावनाओं की प्रचारक विषाक्त सस्था को कानून विरोधी घोषित कर इस पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया था। जबकि इसी कट्टर सांप्रदायवादी पक्षपात समर्थक सस्था ने "आजाद हैदराबाद" का आन्दोलन प्रारम्भ कर रियासत के रहने वाले हिन्दुओं और अन्य गैर मुस्लिमों पर अत्याचार किये थे। इतना ही नही बल्कि भारतीय राष्ट्र सघ के विरुद्ध एक विद्रोही आन्दोलन खड़ा कर रखा था। इस भूल का भयानक परिणाम यह हुआ कि पुन. जब मजलिस ने नगरपालिकाएं एव विधान सभा आदि के निर्वाचन में अपने प्रत्याशी खड़े कर सक्रिय भाग लेना प्रारम्भ कर दिया तब सपूर्ण आन्ध्र प्रदेश क्षेत्र का वातावरण विक्षुब्ध कर दिया। और दिन प्रति दिन स्थिति बिगड़ती ही गयी। मजलिस इत्तेहादु-उल-मुस्लमीन की वर्तमान प्रक्रिया भी वातावरण को उत्तेजित और विक्षुब्ध करने में लगी हुई है। धार्मिक प्रक्रियाओं की स्वतन्त्रता और भाषाओं आदि के सामाजिक प्राप्त अधिकारों का जैसा दुरुपयोग इसके द्वारा हुआ और हो रहा है, वह एक लम्बी कहानी है, जो जनता और राज्य से छुपी हुई नहीं है। मेलाद-उल-नबी के पवित्र जलसों और मसजिदों में होने वाली प्रार्थना सभाओं में कांग्रेस और इसकी सरकार पर भद्दे और ओछे ढग से आक्षेप किये जाते हैं। यहां तक कि महात्मा गांधी और पं० जवाहरलाल नेहरू जैसी विश्ववन्द्य विभूतियों की घिनोने ढंग से आलोचना की जाती है जो अप्रासगिक होने के साथ सभा के उद्देश से विपरीत होते हैं। नगरपालिका एव विधान सभा के निर्वाचन में मजलिसी प्रत्याशी के समर्थन मे जो स्थान-स्थान पर भाषण दिये गये उनसे यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि मजलिस द्विराष्ट्र सिद्धात के दृष्टिकोण को ही रियासती मुसलमानों के मुक्ति का उपाय मात्र अनुभव करती है। और वह कट्टर साम्प्रदायिकता के प्रचार की घिनौनी मनोवृत्ति से विमुक्त नही होना चाहती। कांग्रेस ने भी अपने टिकिट पर जिन मुसलमानों को राष्ट्रवादी मुसलमान अनुभव कर अवसर प्रदान किया उनकी भी मजलिसी मनोवृत्ति अधिक समय तक छुपी न रह सकी। जबकि कांग्रेस को उच्च श्रेणी के शिक्षित, सभ्य और राष्ट्रवादी मुसलमान उपलब्ध हो सकते थे। विशिष्ठ प्रकार के मुसलमानों के वोटों की प्राप्ति के निमित्त कुछ ऐसे अदूरदर्शी पग उठाये जा कर उन मुसलमानो से सौदा किया गया जो किसी भी प्रकार से न तो विश्वास के योग्य थे और न इसके पात्र ही।

श्री विजयवाड़ा गोपालरेड्डी जी ने जब उर्दू से अपनी रुची प्रकट की और नुमायश क्लब में हैदराबाद-कराची मैत्री सस्था की स्थापना हुई तो इसके द्वारा पाकिस्तानी मनोवृत्ति के लोगों ने इस अवसर को देव कृपा अनुभव कर इससे पर्याप्त लाभ उठाया। इस सम्बन्ध मे बम्बई के सुप्रसद्धि साप्ताहिक "ब्लिटज" ने जब प्रकाश डाला तो लोगों को पता चला कि हमारे ही कांग्रेसी कर्णधार किस भयानक मार्ग पर देश को ले जा रहे हैं? विशेष आश्चर्य और खेद की बात तो यह है कि आज भी हमारे कांग्रेसी नेता ऐसी विषाक्त मनोवृत्ति वाले तत्वों की पुष्टि और समर्थन मे लगे हुए हैं, जिसका एक दिन परिणाम राष्ट्र की अखण्डता और शान्ति को आघात पहुंचाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा।

देश की अखण्डता और राष्ट्रीय एकता को जान-बूझ कर नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से वर्तमान में जो प्रयत्न किये गये उनमें उस आपत्तिजनक मानचित्र (नक्शा) का प्रकाशन भी सम्मिलित है जो कि स्थानिक व्यापारी कम्पनी आसाम टी० डिपो द्वारा प्रकाशित कर वितरण करवाया गया था और जिसमे कश्मीर को भी इस्लामी देशों मे दर्शाया गया।

अशान्तता के उत्पादन की घटनाओं में सशस्त्र गुण्डागर्दी को व्यापक रूप से स्थान प्राप्त होता जा रहा है। और अब स्थिति यह है कि जनता का दैनिक जीवन अत्यन्त भयावह स्थिति से व्यतीत हो रहा है। ऐसा लगता है कि जगल का कानून लागू है। पिछली घटित घटनाओं पर दृष्टिपात करने से पाकिस्तानी मनोवृत्ति विभिन्न रूपों मे स्पष्ट साकार होती दिखाई देती है। पुलिस कार्यवाही के कुछ काल बाद ही एक स्थानिक जूतो की कम्पनी द्वारा जूतों के तलवे केवल अपमान और भावनाओं को ठेस पहुंचाने के उद्देश्य से पवित्र राष्ट्रीय ध्वज के नमूने पर तिरगे बनाये गये। प्राचीन पडाऊ मन्दिरों की सपत्ति हड़पने के प्रयत्न भी होने लगे। अलि-आबाद की बस्ती के बीच बख्शीगज के कृष्ण मन्दिर के राजकीय क्षेत्र के विस्तृत भू-भाग पर अनुचित कब्जा कर मकान निर्माण किये गये एव अभी तक यह अनुचित कब्जा चला आ रहा है। पुराने मलकपेठ के हनुमान मन्दिर से मूर्तियों को उड़ा ले जाना और इन सबके अतिरिक्त वह घटना भी याद आती है जबकि श्री बी० रामकृष्णराव जी के मुख्य मन्त्रित्व काल मे सिटी कालेज के सम्मुख छात्रों के आन्दोलन का दमन करने के बहाने अशान्ति उत्पन्न करने का भी दुष्प्रयास किया गया था। अभी दो वर्ष होते हैं जब कि शिक्षण शुल्क की वृद्धि के सम्बन्ध मे विद्यार्थियों द्वारा विरोधी प्रदर्शन (Agitation) जो राजकीय प्रयत्न हुए और इसके प्रति उत्तर मे विद्यार्थियों के आन्दोलन के पीछे जो शहर के प्रमुख बाजार आबिदशाप आदि में दिन-दहाड़े तोड़ फोड़ दुकानों में की गयी उनमें जितनी भी दुकानों को लक्ष बनाया गया वह सब हिन्दु व्यापारियों की ही थीं। तदर्थ प्रान्तीय विधान सभा के सम्माननीय सदस्य श्री रामगोपाल रेड्डी जी ने विधान सभा में इस विषय को प्रस्तुत कर स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित भी करवाया था। इसके पश्चात् से विभिन्न बस्तियों याकूतपुरा, दबीरपुरा, चंचलगुडा इत्यादि में भी एक अवधि तक मुस्लिम गुण्डागर्दी का क्रम चलता रहा। प्रस्तुत घटनाओं के क्रम और रूप से पता चलता है कि अराष्ट्रीय तत्व किस भीषणता पर उतर आए हैं? जैसे :-(१) ७ जून को नेल्लूर की गीताकुमारी नामक लड़की का

अपहरण हैदरगुड़ा के मकान से अर्ध-रात्री को किया जाता है। (२) ३१ जून को शालीबण्डा में एक नवजवान शकर का वध किया जाता है। (३) पहली जुलाई को गुलजार हौज से मिट्टा के शेर तक के क्षेत्र मे बीच बाजार एक साधारण-सी बात पर एक दल शास्त्र सन्नद्ध हो कर आता है और दिन-दहाड़े दुकानदारों और रास्ता चलने वाले राहियो पर अन्धाधुन्ध आक्रमण कर अशाति उत्पन्न कर देता है। (४) ६ जुलाई को "मेलाप-उल-नबी दिवस" के अवसर पर नुमाईश मैदान मे हिन्दु अवकाफ बोर्ड की ओर से बालाजी मन्दिर मे प्रस्थापित नन्दी की मूर्ति का शिर खण्डित कर दिया गया। शहर के पुराने भाग में ७, स्थानों पर जिनमें अलियाबाद, शालीबण्डा और जलालकूंचा (हुसैनी अलम) भी सम्मिलित हैं, वह सभी गुण्डागर्दी के क्षेत्र बने हुए हैं। यहा किसी सभ्य राही का चलना दुस्तर हो गया है।

तेलगाना क्षेत्रीय जिलों के कुछेक स्थानों पर भी शहर की इन घटनाओं का प्रभाव पड़ा है। और कई एक स्थानो से शाति भंगता के समाचार उपलब्ध हो रहे हैं। पिछले वर्ष जुलाई के मास में ही मादन्नापेठ में हगामा हो गया था। इस दुर्घटना के घायल उस्मानिया चिकित्सालय से चिकित्सा के उपरात स्वास्थ्य लाभ कर निकले तो उस समय भी "पाकिस्तान जिन्दाबाद" "काग्रेस मुर्दाबाद" आदि के नारे लगाए गये। कुछ वर्ष पूर्व बोधन आदि में भी पाकिस्तानी ध्वज लहराने की दुर्घटनाए घटी थीं।

आर्य प्रतिनिधि सभा और ऐसी ही अन्य राष्ट्रवादी शाति समर्थक सस्थाओं ने इस प्रकार की सारी दुर्घटनाओं के बारे में जो समय-असमय घटती रही हैं खुले और सार्वजनिक रूप में इसकी तीव्र निन्दा करती रही हैं। और इस सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण को राज्य के कर्णधारों तक पहुचाया भी। किन्तु राज्य की उपेक्षा और विशेषकर गृह विभाग व पुलिस के पक्षपातपूर्ण व्यवहार और इसकी अकर्मण्यता ने राष्ट्र विरोधी तत्त्वों को प्रोत्साहित ही किया है। जिसके परिणाम स्वरूप अब कोई दिन खाली नहीं जाता कि कहीं न कहीं कोई छोटी बड़ी दुर्घटना न हो जाए। क्या ऐसी दुर्घटनाएं जिनका कि सक्षिप्त ऊपर उल्लेख किया गया है, हमारी राज्य व्यवस्था और अधिनियम के लिए शांति प्रस्थापन के मार्ग मे खुली चुनौती नहीं है? जो एक ज्वलन्त प्रश्न है।

घ) सरकारी भाषा विधेयक

इस विधेयक की धारा ७ में उर्दू का विशेषरूप से उल्लेख किया गया है जबकि राज्य में अन्य अल्प सख्यकों की भाषाएं जैसे मराठी, कन्नडी, तामिल, उड़िया आदि बोली जाती हैं। विधेयक में इन अल्प सख्यकों की भाषाओं का कोई उल्लेख नही है जिससे यह अनुमान होता है कि राज्य सरकार इन भाषाओं को अल्प सख्यकों की भाषाओं के रूप में स्वीकार करती भी है कि नहीं?

(क) शिक्षा विभाग आन्ध्र प्रदेश की कार्यवाही

आर० सी० न० ३७८। जे० ११-३।६५ दिनाक १३-६-१९६५

इसके द्वारा कालेज छात्रवृत्तियों के लिये मुसलमानों को सरक्षण दिये गये हैं।

(क) शिक्षा विभाग आन्ध्र प्रदेश की नियम स० १३४

इस नियम द्वारा उर्दू माध्यम के स्कूलों में शुक्रवार को पूरे दिन की छुट्टी देने की घोषणा की गयी है।

उर्दू को हिन्दुओं और मुसलमानों दोनो की भाषा कहा जाता है, परन्तु आश्चर्य है कि उर्दू माध्यम स्कूलों में शुक्रवार को पूरे दिन की छुट्टी की घोषणा कर दी गयी है।

(ख) शिक्षा विभाग आन्ध्र प्रदेश से सम्बन्धित नियम सख्या स० २०४ व २१६ (:)

इस नियम के अनुसार शिल्पकला तथा व्यावसायिक विद्यालय महा-विद्यालयों मे सम्पूर्ण मुस्लिम बालकों को आधे शुल्क की सुविधा स्वीकार की गयी है।

यह एक लज्जास्पद ऐसी सुविधा है जो खुले बन्दों पक्षपातपूर्ण साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का प्रदर्शन करती है। यहां विचारणीय विशेष यह भी है कि इन विद्यालयों में जो उर्दू माध्यम द्वारा सचालित है और उनके द्वारा कई एक गैर मुस्लिम छात्र भी लाभान्वित होते है व राज्य द्वारा यह जो शिक्षण सस्थाए, आर्थिक आदि सहयोग प्राप्त करती है इनके लिए राज्य का इस प्रकार का पक्षपातपूण साम्प्रदायिकता पोषक व्यवहार राष्ट्रीय सगठन और निष्पक्ष राष्ट्रीय सरकार के उच्चादर्शों के अनुरूप हो सकता है। स्वय दूर-दर्शी निष्पक्ष मुसलमानों ने ऐसे पक्षपातपूर्ण व्यवहार के लिए चिन्ता व्यक्त की है और इन्हें अनुचित एव अनावश्यक बताया है। साथ ही ऐसे अदूर-दर्शी प्रयत्नों ने जनता के बहुत बड़े भाग को विचारने पर विवश कर दिया है कि स्वय सत्ताधारी राज्य के कर्णाधार और हमारे अवसरवादी काग्रेसी नेता कहीं द्विराष्ट्र सिद्धांत के उस दृष्टिकोण का स्पष्ट या अस्पष्ट समर्थन तो नहीं कर रहे हैं कि जिससे दक्षिण में इनके इन्हीं प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप एक और पाकिस्तान की प्रस्थापना को प्रोत्साहन प्राप्त हो सके।

गाय के विशुद्ध आर्थिक प्रश्न के प्रति भी मुसलमानों ने इसके वध द्वारा अन्यों की भावनाओं को ठेस पहुचाने का भयावह हथियार बना लिया है। सिकन्दराबाद और हैदराबाद मे बीच बाजार गौहत्या की कई घटनाएं घटी हैं जिससे कि हिन्दुओं की भावनाओ को आघात पहुचा कर उत्तेजित किया जाए। इसके अतिरिक्त भी गौ मांस की दुकानें गली-गलीमे खोली जा रही हैं और इनमे ऐसी दुकानो की सख्या बहुतायत से है जो अपने अनुमति पत्र (Licence) नहीं रखतीं। गौहत्या को तत्काल रोकने की आवश्यकता है।

हमें किसी जाति या सम्प्रदाय के आधार पर किसी से भेद-भाव का व्यवहार अपेक्षित नही किन्तु जब राष्ट्र की अखण्डता और राष्ट्रीय सगठन पर ऐसी घटनाएं प्रभावकारक होती दिखाई दे रही हैं तो हम इस स्थिति में केवल मौन दर्शक की भांति निष्प्राण नहीं बैठ सकते। हम अन्त में माग करते हैं कि.—

१. अराष्ट्रीय सरकारी शक्तियों को रद्द किया जाए।

२. शासन व प्रबन्ध को विधिवत ठीक करने के लिए पुलिस में उपस्थित अराष्ट्रीय तत्त्वों को निकाल बाहर किया जाए।

३. पृथकीकरण की भावनाओं को फैलाने वाले जिम्मेदार लोगों के विरुद्ध ठोस कदम उठाये जाएं।

४ मजलिस इत्तिहादुल मुसलमीन पर तत्काल पाबन्दी लगा दी जाए।

यदि उपरोक्त इन मांगों की पूर्ति शीघ्र न की जाएगी तो हम राज्य की बिगड़ी हुई स्थिति को सुधारने के लिए और दूसरे उपाय सोचने पर विवश होंगे।

हम हैं आपके :—

पं० नरेन्द्र
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण, हैदराबाद।

महन्त बाबा सेवादास
मन्त्री, भारत साधु समाज, आन्ध्र प्रदेश-शाखा, हैदराबाद।

पं० हरिनारायण शर्मा
मन्त्री, श्री सनातन धर्म सभा, हैदराबाद।

पं० वी० वीरभद्रराव
प्रधान, वैदिक धर्म प्रचार नगर समिति हैदराबाद।

पं० राजाराम शास्त्री
मन्त्री, गो-हत्या बन्दी आदोलन समिति, हैदराबाद।

(पृष्ठ ६ का शेष)

है कि मुद्दई सभा के नियमों के अनुसार उसे अपनी मातृ संस्था से सम्बन्ध विच्छेद करने की अनुमति है या नहीं और इस प्रकार के पग का उठाना मुद्दई सभा के उद्देश्यों, नियमों और परम्परा के अनुरूप है या नहीं।

१७—यह तो स्पष्ट रूप से निश्चित हो चुका है कि उसके विधान में उसकी जो उच्च स्थिति है और उसे जो अधिकार प्राप्त हैं उसके आधार पर सार्वदेशिक सभा शिरोमणि सभा है। अतः विचारान्तर्गत अधिवेशन बुलाने के मामले में यह नहीं कहा जा सकता कि सार्वदेशिक सभा अपने अधिकार का अतिक्रमण कर रही थी। उसे ऐसा करने का अधिकार था और ऐसी अवस्था में अस्थायी निषेधाज्ञा द्वारा उसे ऐसा करने से रोका जाने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

१८—इस प्रकार मुद्दईयों ने जो स्थायी निषधाज्ञा की मांग की है उसका प्रत्यक्षतः कोई औचित्य नहीं है। इसके अतिरिक्त भी सिविल कोर्टों को धार्मिक संस्थाओं तथा सोसाइटियों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने में उपेक्षा बरतनी चाहिए विशेषतः उस दशा में जब कि झगड़ों के निपटारे के लिए उनकी अपनी घरेलू न्याय सभा हो। इन संस्थाओं में अदालतों द्वारा अनावश्यक हस्तक्षेप किये जाने से उनका ढांचा अस्त व्यस्त और उनका संचालन असंभव हो सकता है।

१९—मुद्दायलों के सुयोग्य वकील द्वारा प्रस्तुत अनेक प्रमाणों से मेरे इस मत का समर्थन होता है। यहां हमारे अपने हाईकोर्ट के प्रमाण का उल्लेख किया जाना उपयोगी होगा जो ए० आई० आर० १९६३ पंजाब पृष्ठ १०४ पर अंकित है जिसमें मान्य न्यायाधीश टेकचन्द जी ने यह कहा है:—

"स्थायी निषेधाज्ञाएं जारी करने में अदालतों को बड़ी सावधानी और अनुदारता से काम लेना चाहिए और उसी स्थिति में स्वीकार करनी चाहिये जब कि स्पष्टतः उसकी आवश्यकता हो और उसे अस्वीकार करने से गम्भीर कठिनाइयां उपस्थित हो कर वास्तविक कार्य ठप्प या अन्याय होता हो। यदि अदालत को सन्तोष हो जाय कि मामले की परिस्थितियों में स्थायी निषेधाज्ञा का जारी किया जाना ठीक न होगा तो अस्थायी आज्ञा भी जारी न की जानी चाहिये। निषेधाज्ञा के जारी किये जाने के लिये जो प्राथमिक बातें आवश्यक हैं उनमें से एक यह है कि निषेधाज्ञा की मांग करने वाले पक्ष को अपना अधिकार प्रमाणित करना चाहिये। यदि ऐसे अधिकार पर बल दिया जा रहा हो न्याय-संगत न हो तो अस्थायी या स्थायी निषेधाज्ञा द्वारा संरक्षण नहीं हो सकता। कार्य उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर हुआ हो।"

२१—इस प्रकार विवादास्पद विज्ञापन स्पष्टतः न तो अवैध है, न अधिकार क्षेत्र से बाहर है और न दुर्भावना पूर्ण ही है। यहां यह कहना आवश्यक है कि यह मामला ऐसा है जिसको सार्वदेशिक न्याय सभा में भेजने के लिये दोनों पक्षों को अदालत से निर्देश लेने की आवश्यकता नहीं है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विधान और सार्वदेशिक न्याय सभा के अनुसार जो हमारी फायल पर है दोनों पक्षों को यह अधिकार उपलब्ध है। जिस पक्ष को कोई

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान, संसद सदस्य
श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री

ता० ८ सितम्बर बृहस्पति वार के प्रातः वायुयान द्वारा विदेश यात्रा के लिए प्रस्थान

२०—एक अन्य मामले में जो ए० आई० आर० १९३९ मद्रास पृष्ठ १०२ पर अंकित है इस प्रकार कहा गया है:—

"यह एक मानी हुआ सिद्धान्त है कि यदि प्रबन्ध विभाग की कार्यवाही स्वयं संस्था के अधिकार क्षेत्र में हो तो सदस्यों तथा प्रबन्धकों के मध्य के झगड़ों का निर्णय नियमों में वर्णित साधन के द्वारा होना चाहिये न कि किसी न्यायालय में। कोई सदस्य सिविल कोर्ट में जाने तथा सोसायटी के किसी कार्य को रद्द कराने का तभी अधिकारी होता है जब कि सोसायटी का वह

शिकायत हो तो वह उसके निराकरण के लिए न्याय सभा में जा सकता है।

२२—इससे मुद्दायलों द्वारा की गई अपील का निर्णय हो जाता है। यह अपील अवश्य ही सफल होनी चाहिये और उनके सुयोग्य वकील की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को सर्वोच्चता और सिविल कोर्टों द्वारा उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने सम्बन्धी युक्तियां स्वीकृत होनी चाहियें।

२३—मुद्दई के वकील ने एक दूसरी अपील में यह तर्क उपस्थित किया है कि मुद्दई के विरुद्ध निषेधाज्ञा जारी करने का सिविल कोर्ट को अधिकार न था। इस तर्क में निस्सन्देह कोई बल नहीं है। सिविल प्रोसीजर कोड की ३९ वीं आज्ञा का सन्दर्भ इस विषय में बिलकुल स्पष्ट है। कहा गया है कि यह ऐच्छिक सुविधा किसी भी पक्ष को दी जा सकती है जिसमें मुद्दई और मुद्दायला दोनों सम्मिलित हैं परन्तु मेरी उपर्युक्त बहस को दृष्टि में रखते हुए पूरी निषेधाज्ञा को रद्द करना होगा। इस विषय पर और आगे बहस जरूरी नहीं है। मुद्दायलों ने मुद्दइयों के विरुद्ध कोई दावा दायर नहीं किया है। यदि मुद्दई अनधिकृत एवं नियम विरुद्ध कार्य करते हैं तो मुद्दायले सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा में पुनः जा सकते हैं जो आपस के समस्त झगड़ों के निपटारे के लिए जिसमें वर्तमान ढंग का झगड़ा भी शामिल है, स्थापित है।

२४—अतः उपर्युक्त कारण से निचली सुयोग्य अदालत द्वारा स्वीकृत अस्थायी निषेधाज्ञा को मैं पूर्णतः रद्द करता हूँ जिसके परिणाम स्वरूप मुद्दायलों द्वारा की गई अपील सफल होती है और मुद्दइयों द्वारा इससे सम्बद्ध दूसरी अपील रद्द की जाती है। क्योंकि वह अप्रामाणिक और निषेधाज्ञा पूर्णतः रद्द कर दी गई है।

मामले की विशिष्ट स्थितियों में दोनों पक्ष अपना अपना खर्च स्वयं वहन करें।

ह० एडीशनल डिस्ट्रिक्ट जज

वकील की फीस २५.०० घोषित
४-८-६६

श्रीयुत ओ३मप्रकाश शर्मा पी.सी.एस. ऐडीशनल डि०जज,अम्बाला
सिविल अपील नं० १३।१४ आफ १९६६

दायर होने की तारीख १८-११-६५
फैसले की तारीख ४-८-६६

१—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब (रजिस्टर्ड) गुरुदत्त भवन, जालन्धर शहर द्वारा श्री रघुवीरसिंह शास्त्री।

२—श्री रघुवीर सिंह शास्त्री मुद्दई सभा के मन्त्री—
अपील कर्ता
बनाम
१—सार्वदेशिक आर्य प्रति-

Government Holidays

Holidays are not only a source of enjoyment but also a source of inspiration. Our old traditional holidays mark changes of season as well as lessons to be learnt from the life of our ancestors, saints, and Mahatmas For e. g. Ram Navami comes after Navratras during which time our ancient warriors and politicians used to seriously and carefully play their porgramme for the benefit of the nation at large. At the same time Ramnavmi holds before us an ideal which when imitated would raise the morals and the effiaecy of the people That such a holiday should be reduced in importance to make room for some new holiday is extremely regrettable.

Dassera, like Ramnavami, comes after another set of Navaratra. It marks the Victory of Good over Evil.

Coconut holiday usually comes in the middle of August. It is a National holiday par excellence. It is a holiday of the learned. It is a holiday of Unity. It is a holiday of our seaborne commerce, for in old days on this day commercial people put their boats and ships in order to carry their goods to foreign countries. It is also a holiday which inspires us to treat woamenfolk with reverence and love. Now we got our freedom on the 15th of August. Our Leaders should have been careful to make announcement of freedom on the coconut holiday in 1947 And they should have continued to celebrate the Independence day accordinge to the old Indian Colendar and not according to the English Calendar

Let us also think of Baisaekhi -It marks the end of harvesting season. It is a holiday on which agriculturists, landlords and general folk have recourse to all kinds of lighter phases of life. Unfortunately on this day was perpetrated the Jalianwala tragedy. Now it no good to celebrate the National week from 6th. of April to 13th. of April. It would be better to celebrate the week in accordance with the Indian Calendar ending it on Baisakhi day.

Baisakhi day is also connected with the martyrdom of Hakikatrai in old days and with that of one Ramchand of Kashmir, who losthis life while working for the uplift of Harijans.

Baisakhi forms a very important holiday of our Sikh brothers.

A Nationalist.

(पृष्ठ ११ का शेष)

निधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला ग्राउण्ड नई दिल्ली (सम्मन तामील कराने के लिये रामगोपाल शालवाला मुद्दायला सं० १ के कथित मन्त्री।

—प्रत्यर्थी

२—श्री रामगोपाल शालवाला कथित मन्त्री मुद्दायलाह सं० १ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला ग्राउण्ड, नई दिल्ली-१

३—डा० हरिप्रकाश अलंकार मेडीकल हाल अम्बाला कैन्ट

४—श्री प्रतापसिंह शूरजी बल्लभदास कथित प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली—

—प्रत्यर्थी

श्री ओ० पी० सिंहल सब जज अम्बाला द्वारा सिविल अभियोग सं० २०० पर १७-११-६६ को दिये गये निर्णय के विरुद्ध सिविल प्रोसीजर कोड रूल १ (आर०) के अन्तर्गत आर्डर ४३ अधीन अपील।

आर्डर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सिविल अपील सं० ७।१४ के आज के फैसलेमें वर्णित विस्तृत कारणों के आधार पर जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आदि के विरुद्ध दायर की गई थी, उपर्युक्त अपील असफल रहती है इसलिए खारिज की जाती है। दोनों पक्ष अपना-अपना व्यय स्वयं वहन करें।

वकील की फीस २५) रुपया
उद्घोषित ह०ओ०पी० शर्मा
४-८-६६ एडीशनल डिस्ट्रिक्ट जज अम्बाला

(पृष्ठ ७ का शेष)

लिखा :—

महान्त्यपि समृद्धानि गोऽजाविधनधान्यतः। स्त्री सम्बन्धे दशैतानि कुलानि परिवर्जयेत्। हीनक्रियं निष्पुरुषं निश्छंदो रोमशार्शसम्। क्षय्यामया व्यपस्मारिश्वित् कुष्ठि कुलानि च।

अर्थात् अत्यन्तसमृद्ध, गौ, घोड़े और जिसके दरवाजे पर हाथी भी बन्धे हों पर ऐसे दस कुलों में कभी भी विवाह न करे। जो सत्क्रिया से हीन, सत्पुरुषों से रहित, वेदाध्ययन मे विमुख, शरीर पर बड़े बड़े लोम अथवा बवासीर, क्षयी, दमा, खांसी, आमाशय, मृगी श्वेत कुष्ठ और गलित कुष्ठ हों उन कुलों की कन्या वा वर के साथ विवाह न करना चाहिए। क्योंकि ये सब दुर्गुण और रोग विवाह करने वाले के कुल में भी प्रविष्ट हो जाते हैं। अत उत्तम कुल के लड़के और लड़कियों का विवाह होना चाहिए।" आगे उन्होंने लिखा है—

नोद्वहेत् कपिलां कन्यां नाधिकांगीम् न रोगिणीम्। नालोमिकां नातिलोमां न वाचाटान्न पिंगलाम् नर्क्षवृक्ष-नदीनाम्नीं नान्त्यपर्वतनामिकाम्। न पक्ष्यहि प्रेष्य नाम्नीं न च भीषणनामिकाम्।

इस प्रकार इन बातों का विवाह के सिलसिले मे विरोध करके अन्त में वैवाहिक जीवन सुखमय बनाने के लिए स्वामी जी लिखते हैं :—

अव्यङ्गाङ्गी सोम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीम्। तनुलोम केशदशनां मृदंगीमुद्वहेत्-स्त्रियम्।

मनु०

जिसके सरल सूधे अंग हों, विरुद्ध न हों, जिसका नाम सुन्दर यशोदा, प्रभा, सुखदा, विमला, भारती, आदि हो, हस और हथिनी के तुल्य जिसकी चाल हो, सूक्ष्म लोम, केश, और दात मुख और जिसके सब अंग कोमल हों वैसी स्त्री के साथ विवाह करना चाहिए।

अन्त में स्वामी जी ने विवाह करना माता पिता के हाथ में हो या लड़का लडकी के, उत्तर देते हुए कहा है "लडका लड़की के आधीन विवाह होना उत्तम है। जो माता पिता विवाह करना कभी विचारें तो भी लड़का लड़की की प्रसन्नता के बिना नहीं होना चाहिए। क्योंकि अप्रसन्नता के विवाह मे नित्य क्लेश ही रहता है। विवाह मे मुख्य प्रयोजन वर और कन्या का है माता पिता का नहीं। क्योंकि उन में परस्पर प्रसन्नता रहे तो उन्हीं को सुख और विरोध में उन्हीं को दुःख रहता है।

इन सब बातों के अतिरिक्त कुछ अन्य साधारण बातों की ओर भी ध्यान रखना चाहिए। जैसे एक दूसरे की रुचियों का ध्याम रखना, स्त्री और पुरुष के बीच प्रभुता और शान के लिए प्रतिद्वन्द्विता से बचना, काम प्रवृत्ति का नियन्त्रण आदि साधारण व्यावहारिक बातों पर भी हमें ध्यान रखना चाहिए तभी हमारा पारिवारिक जीवन सुखी, समृद्ध तथा सुख पूर्ण हो सकेगा। आजके युग में स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित नियमों की कितनी उपयोगिता है यह साधारण बुद्धि का व्यक्ति भी समझ सकता है।

गोहत्या भारत माता के लिए कलंक है

(श्री मधुकर सदार, प्री युनिवर्सीटी, दयानन्द भवन, नागपुर)

भारतीय संस्कृति के अनुसार हमारी तीन माताएं हैं। एक जन्म देने वाली माता या मातृशक्ति दूसरी गौमाता और तीसरी भारतमाता। ईमानदार देशभक्त इन तीनों माताओं का आदर करता है। यजुर्वेद मे भगवान से प्रार्थना की गई है —

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्।

दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्।

निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्! यजुर्वेद

अर्थात् भगवान् हमारे देश में ब्राह्मण और क्षत्रियो का निर्माण करे, गाय, सांड, घोड़े, सुन्दर तथा बलवान हों, जब आवश्यकता हो बादल बरसे, वनस्पतिया फलें फूलें, सब का योग और क्षेम हो। वैदिक काल में जब तीनों माता सुरक्षित थी संसार में भारत को सुवर्ण भूमि कहा जाता था।

लेकिन अब गोहत्या के कलक से हमारी मातृभूमि की पवित्रता नष्ट भ्रष्ट हो गई है। वैदिक काल की सुवर्ण भूमि भारत माता का गोहत्या से पतन हो रहा है। भ्रष्टाचार, दुराचार, अराजकता तेजी से बढ रही है और आज इस कलक के कारण भारत माता को भिखारी होना पड़ा है। 'मातर. सर्व भूताना गावः सर्व सुखप्रदा।' अर्थात् गाय समस्त प्राणियो की माता तथा समस्त सुखो को देने वाली हैं। धार्मिक दृष्टि से धर्म निरपेक्ष राज्य मे हमारी धार्मिक भावनाओं को दृष्टि में रखते हुए एक भी गाय, बैल, बछड़ा, बछड़ी और सांड का, चाहे वह बुड्ढा हो, बीमार हो, किसी भी आयु का हो उसका कतल करना पाप है। महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि "गौ आदि पशुओं के नष्ट हो जाने से राजा और प्रजा दोनों का नाश हो जाता है।"

स्वराज्य मिलने के पूर्व यह आशा थी की स्वराज्य के बाद गोहत्या बन्द होगी लेकिन आज नित्य तीस हजार गोवश की हत्या हो रही है जो अंग्रेजी के काल मे भी बढकर है। कांग्रेस के राज्य मे दाने खली का निर्यात तथा गोचर भूमि को समाप्त कर, भ्रष्टाचार, जातीयता, घूसखोरी को प्रोत्साहन देकर, देश मे अच्छे साडो की कमी होते हुए भी अच्छे साडों का विदेशो को निर्यात तथा गोरक्षा की की भावना को नष्ट कर आज की कांग्रेस सरकार गौ का सब से बड़ा शत्रु बन रही है। आज अपग और वृद्ध ही नहीं सर्वोत्तम नसल की नौजवान दुधारू गाय की लाखों की सख्या में हत्या होनी है और बडी सख्या में गौ की आते, गोमास आदि विदेशों को भेजा जाता है। ऐसी गोहत्या ससार के किसी भी देश में नही होती और जब कि भारत कृषि प्रधान देश है। गोहत्या करके दूध रूपी अमृत को नष्ट कर सरकार विदेशों से दूध का सूखा पाउडर मगाती है, इससे बढकर और देश का पतन क्या होगा?

कांग्रेसी कार्यकर्त्ता अपग और वृद्ध के नाम पर जनता को डराते हैं, भयभीत करते हैं। वास्तव में आर्थिक दृष्टि से अपग गाय अभिशाप नही वरदान है। प्रथम योजना राष्ट्रीय गाय रिपोर्ट १९५२, पशु सख्या विवरण १९५६, के अनुसार एक गाय के गोबर, गोमूत्र का आर्थिक मूल्य वार्षिक ४८) रुपया है और सरकारी विशेषज्ञों के मतानुसार गौसदन में गाय रखने का खर्च वार्षिक ३६) रुपया है, अर्थात् रु० १२) वार्षिक फायदा होता है। आज देश में एकड़ों जमीन ऐसी है, जिसमें मनों चारा उत्पन्न होकर नष्ट हो जाता है। इस भूमि मे गोसदन बनाकर यदि अपग, वृद्ध पशु रखे जाएं तो उनका गोबर, गोमूत्र भूमि पर पड़ने से विशेष खर्च के बिना भूमि उपजाऊ बन सकती है। गौवश देश को वार्षिक पन्द्रह बीस अरब रुपये की करीब दूध, खाद, खाल और बैलों के परिश्रम के रूप में देता है। इतना लाभ तो रेल्वे या किसी उपयोगी कारखाने से नही मिलता है।

कुछ लोग जनता को पथभ्रष्ट करते और कहते हैं कि घर घर में गाय पालों, गाय का ही दूध, घी खाओ, गाय के चमड़े से बनी चीज का उपयोग न करो, गौहत्या आप बन्द होगी। साधन सम्पन्न लोग ही ऐसा कर सकते हैं। सब लोग ऐसा करेंगे यह सम्भव नही है। आज की अपेक्षा वेदों के समय से लेकर मुसलमानों के समय तक गौ पालन के अधिक साधन थे और गौहत्यारों को दण्ड देने के कानून बने थे। अत आज भी कानून से ही गौहत्या बन्द हो सकती है, गौहत्यारे को कड़ा दण्ड देना चाहिए। दाने खली और अच्छे साड का विदेशों का निर्यात, गोचर भूमि का तुड़वाना आदि इस प्रकार की सरकारी नीति से गौ का रखना कठिन हो गया है। जो गौ रखे वही गोरक्षा की बात कहे यह कहना कोई वजन नही रखता है। ससार के जिन लोगों ने अपनी मातृभूमि स्वतन्त्र कराने का काम किया क्या वह भूमि के मालिक थे? गांधी जी, नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, नेहरूजी, शास्त्रीजी आदि के पास कोई जमीन नही थी। शास्त्रीजी के पास तो मकान की भी भूमि न थी, फिर भी यह लोग देश की चप्पे चप्पे जमीन के लिए जिए और मरे। मातृभूमि की स्वतन्त्रता की तरह ही गोरक्षा भावना का प्रश्न है। यदि देश के सब लोग कतल किए हुए चमड़े का व्यवहार छोड दें तब भी विदेशों को जो गाय, बछडों की खालें निर्यात की जाती हैं उसके लिए तो गौ का कत्ल जारी रहेगा ही। जब तक कानून के द्वारा गोहत्या बन्द नहीं होगी अच्छे पशु भी कतल होने से नहीं बचेंगे और देश तबाह हो जाएगा।

महात्मा गांधीजी व अन्य कांग्रेसी नेताओं ने स्वराज्य प्राप्त होने के पहिले कहा था कि स्वराज्य प्राप्त होते ही गोहत्या बन्द कर दी जावेगी लेकिन आज १९ वर्ष होने पर भी गोहत्या बन्द नही हुई और पहिले की अपेक्षा अधिक हो रही है। इस कलंक को मिटाने के लिये स्वामी करपात्रीजी महाराज, ब्रह्मचारी प्रभुदत्तजी, स्व० लाला हरदेवसहाय जी व अन्य महापुरुषों ने गोहत्या बन्दी आंदोलन चलाये और सरकार के गोहत्या बन्द करने के आश्वासन पर आंदोलन बन्द नहीं हुई प्रयाग में कुम्भ मेला के अवसर पर सत सम्मेलन के निश्चयानुसार रामनवमी तक सरकार का कोई उत्तर न मिलने पर देश के साधु महात्माओं ने दिल्ली में आंदोलन आरम्भ कर दिया जिनको सरकार ने तिहाड जेल में बन्द कर दिया यह सरकार का कार्य सर्वथा अनुचित है।

अब समय आ गया है भारत के इस गोहत्या कलक को मिटाने के लिये "उत्तिष्ठित जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत" अर्थात् उठो, जागो और अपने कर्तव्य को पहचानो। जो लोग निजी लाभ की अपेक्षा करके राष्ट्र के लाभ को अधिक महत्व दें, जो हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार हों, देशभक्त हों वह सगठित होकर तन, मन, धन से इस महा आंदोलन को सफल बनावें। गौमाता हमारी संस्कृति की प्रतीक है। उसकी लाज बचाना हरेक भारतीय का पवित्र कर्तव्य है। धर्म के लिये सदा बलिदान देने पड़े हैं और गोरक्षा के लिए भारतवासी सदा ही उत्सर्ग करते रहे हैं। भगवान श्रीराम और गोपाल-कृष्ण गोरक्षक थे, उन्होंने गौमाता की सेवा कर हमें आदर्श सिखाया है। उनके पथ पर चलकर आज हमें राष्ट्र का नवनिर्माण करना है। तभी वेद की आज्ञानुसार हम संसार को आर्य बना सकते हैं।
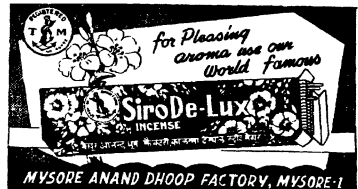
आर्य-जगत्

आर्यवीरदल नरवाना

आर्य वीरदल, नरवाना का वार्षिकोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री डा० गणेश दास जी श्री प्रो० रामप्रकाश जो एम० ए० के प्रभावशाली भाषण हुए। इस अवसर पर दल के मन्त्री श्री रामकुमार आर्य ने १०१) की थैली केन्द्रीय आर्य वीर दल को भेंट की।

दिनांक २८ अगस्त को आर्यसमाज अजमेर का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। जिसमें आचार्य श्री दत्तात्रेय बावले एम० ए० प्रधान तथा डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० सर्व सम्मति से मन्त्री निर्वाचित हुए। इस अवसर पर समाज मन्दिर में लाऊडस्पीकर लगाने के लिए डा० सूर्यदेव जी ने १०००) दान दिया। श्री डाक्टर महोदय अब तक २८०००) दान कर चुके हैं। इस शुभ दान पर उन्हें हार्दिक बधाई।

अपील

श्री सवदानन्द साधु आश्रम पुल काली नदी अलीगढ़ में आचार्य तक की शिक्षा दी जाती है। आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन की व्यवस्था है। दानी महानुभाव धन से सहायता करें और योग्य विद्यार्थी भेजें।

चुनाव

आर्यसमाज गुड़गावां छावनी के चुनाव में श्री ठा० आनन्दपाल जी प्रधान, श्री वैद्य गोविन्दलाल जी मन्त्री, श्री डा० सोमनाथ जी भाटिया कोषाध्यक्ष तथा श्री हिम्मतराय जी पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज करौल बाग

आर्यसमाज करौलबाग नई दिल्ली के चुनाव में श्री बंशीलाल जी प्रधान श्री विश्वम्भरदास जी मन्त्री तथा श्री जागेराम जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज गया

आर्यसमाज गया के चुनाव में श्री प्रयागनारायण जी प्रधान, श्री जगदम्बा प्रसाद जी एम० ए० मन्त्री तथा श्री नाथुनराम जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज मुरसानद्वार

आर्यसमाज मुरसानद्वार हाथरस की ओर से एक भारी सभा में भारत सरकार से गौवंश की रक्षा के लिए अनुरोध किया।

केन्द्रीय गोरक्षा अभियान समिति

केन्द्रीय गोरक्षा अभियान समिति भागलपुर ने निम्न महानुभावों की एक समिति निर्माण की है—सर्वश्री प्रहलादराय झुन्झुन वाला सभापति, नागेन्द्र गुप्ता, पूरनमल सोमानी उपप्रधान सीताराम चूड़ीवाला, सीताराम किशोर पुरिया संयुक्त मन्त्री, नन्दलाल तुलस्यान, शाहबदयाल उपमन्त्री, मोहनलाल माहेश्वरी कोषाध्यक्ष, श्रीनिवास हिम्मतसिंह जी, वासुदेवसिंहानिया, पूरनमल जोशी, अटलबिहारी,तथा शिवनारायण साहु सदस्य चुने गए।

शुद्धि

आर्य समाज गोहाटी (आसाम) में दो मुस्लिम परिवार तथा अन्य दो मुसलिम युवक वैदिक धर्म में दीक्षित हुए। सभा के उपदेशक पं० अमरनाथ शास्त्री ने शुद्धि संस्कार कराया।

—आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली में डौलर्डनसिंह, सुधारानी, नयलसन, रोजमेरी रिचर्ड, ट्राझीपोल, रोजलीन स्टैन्लेसिंह ईसाईमत त्याग कर वैदिक धर्म में दीक्षित हुए। शुद्धि के उपरान्त क्रमशः शिवासिंह, सुधार नी रामसिंह शकुन्तलादेवी, सरोजबाला, और राजरानी नाम रखा गया। दो मुसलमान शबीर अहमद, का नाम श्यामसुन्दर और बशीर अहमद का नाम रामसिंह रखा गया। एक देवी जुमनी चार बच्चों सहित जयदेवी हुई।

आवश्यकता

आर्यसमाज, हवड़ा ३८ क्षेत्र मित्र लेन, सलकिया के लिए एक आर्य संन्यासी अथवा वानप्रस्थी की आवश्यकता है। जो समाज में स्थायी रूप से रहकर प्रचार कर सके।

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की पुस्तकों का सूची पत्र

१—८—६६ से ३१—१—६७ तक

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

- ऋग्वेद संहिता १०)
- अथर्ववेद संहिता ८)
- यजुर्वेद संहिता ४)
- सामवेद संहिता ३)
- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ३)
- संस्कारविधि १)२५
- पंच महायज्ञ विधि)२५
- कर्त्तव्य दर्पण)४०
- आर्यसमाज के प्रवेशपत्र १) सै०

निम्न प्रकाशन पर २० प्रतिशत कमीशन

- सत्यार्थप्रकाश २)५०
- कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
- उर्दू सत्यार्थ प्रकाश १)५०
- कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
- आर्यसमाज का इतिहास द्वितीय भाग ५)
- जीवन संघर्ष (महाशय कृष्ण की जीवनी) ५)
- पंचमहायज्ञ विधि भाष्यम
- सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
- राजधर्म ५०
- पुरुष सूक्त)४०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

- वैदिक ज्योति ७)
- शिक्षण-तरङ्गिणी ५)
- दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
- वैदिक युग और आदि मानव ४)
- वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५
- वैदिक विज्ञान विमर्श)७५

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

- वैदिक साहित्य में नारी ७)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

- वेद की इयत्ता १)५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

- ईशोपनिषद्)३७
- केनोपनिषद्)५०
- प्रश्नोपनिषद्)३७
- मुण्डकोपनिषद्)४५
- माण्डूक्योपनिषद्)२५
- ऐतरेयोपनिषद्)२५
- तैत्तिरीयोपनिषद् १)
- बृहदारण्यकोपनिषद् ३)
- योग रहस्य १)२५
- मृत्यु और परलोक १)

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

- छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
- वैदिक वन्दन ५)
- वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
- वेदान्त दर्शन (संस्कृत) १)
- वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
- ,, ,, (अजिल्द) २)
- निज जीवन वृत वनिका)७५
- बाल जीवन सोपान १)२५
- दयानन्द दिग्दर्शन)७५
- वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
- वैदिक योगामृत)६२
- दार्शनिक अध्यात्म तत्त्व १)५०

- वैदिक ईश वन्दना)४०
- बाल संस्कृत सुधा)५०
- वैदिक राष्ट्रीयता)२५
- भ्रम निवारण)३०

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

- आर्योदय काव्यम पूर्वार्द्ध १)५०
- ,, ,, उत्तरार्द्ध १)५०
- वैदिक संस्कृति १)२५
- सायण और दयानन्द १)
- मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
- सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
- आर्य समाज की नीति)२५
- मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

- स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)२५
- हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०
- भक्ति कुसुमाञ्जली)२५

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

- वेद सन्देश)७५
- वैदिक सूक्ति सुधा)३०
- ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

- चरित्र निर्माण १)२५
- वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
- दौलत की मार)२५
- धर्म और धन)२५
- अनुशासन का विधान)२५

श्री पं० मदनमोहन जी कृत

- जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०
- संस्कार महत्व)७५
- वेदों की अन्त साक्षी का महत्व)६२
- आर्य स्तोत्र)५०
- आर्य घोष)६०

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

- आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म)६२
- सन्तति निग्रह १)२५
- नया संसार)२०
- आदर्श गुरु शिष्य)२५

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

- आर्य समाज और साम्प्रदायिकता)३०
- कांग्रेस का सिरदर्द)५०
- भारत में भयंकर ईसाई षड्यन्त्र)२५
- आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना)२०
- आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण)०६

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

- गीता विमर्श)७५
- ब्राह्मण समाज के तीन महापातक)५०
- सनातन धर्म २)७५

श्री ला० ज्ञानचन्द जी कृत

- धर्म और उसकी आवश्यकता १)
- वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १)५०
- इजहारे हकीकत उर्दू)८८

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी कृत

- इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)५०

श्री पं० देवप्रकाश जी कृत

- इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०

श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री कृत

- भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०

विविध

- वेद और विज्ञान)७०
- उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
- भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
- वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७
- हमारे घर १)
- मेरी इराक यात्रा १)
- मेरी अबीसीनिया यात्रा १)
- डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
- भोज प्रबन्ध २)२५
- स्वर्ग में हड़ताल)३७
- नरक की रिपोर्ट)२५

निम्न प्रकाशन ५० प्रतिशत पर दिये जायेंगे

- आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग ६)
- बृहद् विमान शास्त्र १०)
- आर्य समाज के महाधन २)५०
- दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
- स्वराज्य दर्शन १)
- आर्य समाज का परिचय १)
- भजन भास्कर १)७५
- यमपितृ परिचय २)
- एशिया का वेनिस)७५
- आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५
- साम संगीत)२०
- दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
- आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
- ,, ,, ,, अध्यक्षीय भाषण १)
- सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
- सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
- सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५

प्रचार करने योग्य ट्रैक्ट

७५ प्रति मंगाने पर सैकड़े का भाव लगेगा।
एकप्रति)१२ पैसा सैकड़ा १०)

- सन्ध्या पद्धति
- दश नियम व्याख्या
- आर्य शब्द का महत्व
- तीर्थ और मोक्ष
- वैदिक राष्ट्रीयता
- वैदिक राष्ट्र धर्म
- अथर्ववेदीय अतिथि सत्कार
- ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा
- प्रजा पालन
- सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा में
- सत्यार्थ प्रकाश का आन्दोलन का इतिहास
- मुर्दों को क्यों जलाना चाहिये
- शंका समाधान
- भारत का एक ऋषि
- आर्य समाज
- पूजा किसकी
- धर्म के नाम पर राजनैतिक षड्यंत्र
- भारतवर्ष में जाति भेद
- चमड़े के लिए गौवध
- आर्य विवाह एक्ट
- ईसाई पादरी उत्तर दें
- रोमन कैथोलिक चर्च क्या है

नोटः - (१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूप में भेजें। (२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ साफ लिखें। (३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम में आना चाहिये। (४) जिन पुस्तकों का नेट मूल्य लिखा गया है उनपर कोई कमीशन न दिया जायगा।

व्यवस्थापक—**सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१**

कला-कौशल (टैक्नीकल) और वैदिकसाहित्य का महान् भंडार

- इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक १५)
- इलै० गाइड पृ० ८००हि.इ गु १२)
- इलैक्ट्रिक वायरिंग ६)
- मोटरकार वायरिंग ६)
- इलैक्ट्रिक बैट्रीज ४)५०
- इलैक्ट्रिक लाइटिंग ८)२५
- इलै० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्ज १२)
- सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर ४)५०
- इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज २ भाग १६)५०
- आयल व गैस इंजन गाइड १५)
- आयल इंजन गाइड ८)२५
- क्रूड आयल इंजन गाइड ६)
- वायरलैस रेडियो गाइड ८)२५
- रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक) ८)२५
- घरेलू बिजली रेडियो मास्टर ४)५०
- इलैक्ट्रिक मीटर्ज ८)२५
- टांका लगाने का ज्ञान ४)५०
- छोटे डायनेमो इलैक्ट्रिक मोटर ४)५०
- ऐ.आर्मेचरवाइडिंग(AC.D.C.)८)२५
- रैफरीजरेटर गाइड ८)२५
- बृहत रेडियो विज्ञान १५)
- ट्रांसफार्मर गाइड ६)
- इलैक्ट्रिक मोटर्स ८)२५
- रेलवे ट्रेन लाइटिंग ६)
- इलैक्ट्रिक सुपरवाइजरी शिक्षा ६)
- इलैक्ट्रिक वैल्डिंग ६)
- रेडियो शब्द कोष ३)
- ए० सी० जनरेटर्स ८)२५
- इलैक्ट्रिक मोटर्स आल्टरनेटर्स १६)५०
- आर्मेचर वाइडर्स गाइड १५)
- इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १९५६ १)५०
- स्माल स्केल इंडस्ट्रीज (हिन्दी) १४)
- स्माल स्केल इंडस्ट्रीज (इंग्लिश) १४)
- खराद शिक्षा (टर्नर गाइड) ४)५०
- वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग) ४)५०
- खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ९)
- भवन-निर्माण कला १२)
- रेडियो मास्टर ४)५०
- विश्वकर्मा प्रकाश ७)५०
- सर्वे इंजीनियरिंग बुक १२)
- इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग १२)
- फाउन्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई) ८)२५
- इलैक्ट्रोप्लेटिंग ६)
- वीविंग गाइड ४)५०
- हैंडलूम गाइड १५)
- फिटिंगशाप प्रैक्टिस ७)५०
- पावरलूम गाइड ५)२५
- ट्यूबवैल गाइड ३)७५
- लोकास्ट हाउसिंग टैक्निक ५)२५
- जन्त्री पैमायश चौब २)
- लोकोशैड फिटर गाइड १५)
- मोटर मैकेनिक टीचर ८)२५
- मोटर मैकेनिक टीचर गुरुमुखी ८)२५
- मोटर ड्राइविंग हिन्दी व गुरुमुखी ६)
- मोटरकार इन्सट्रक्टर १५)
- मोटर साइकिल गाइड ४)५०
- खेती और ट्रैक्टर ८)२५
- जनरल मैकेनिक गाइड १२)
- आटोमोबाइल इंजीनियरिंग १२)
- मोटरकार ओवरहालिंग ६)
- प्लम्बिंग और सेनीटेशन ६)
- सर्किट डायग्राम्स आफ रेडियो ३)७५
- फर्नीचर बुक १२)
- फर्नीचर डिजायन बुक १२)
- वर्कशाप प्रैक्टिस १२)
- स्टीम ब्वायलर्स और इंजन ८)२५
- स्टीम इंजीनियर्स गाइड १२)
- आइस प्लांट (बर्फ मशीन) ४)५०
- सीमेंट की जालियों के डिजाइन ६)
- कारपेंट्री मास्टर ६)७५
- बिजली मास्टर ४)५०
- ट्रांजिस्टर डेटा सर्किट १०)५०
- गैस वेल्डिंग ६)
- ब्लैकस्मिथी (लोहार) ४)५०
- हैंडबुक आफ बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन ३४)५०
- हैंडबुक स्टीम इन्जीनियर २०)२५
- मोटरकार इन्जीनियर ८)२५
- मोटरकार इन्जन (पावर यूनिट) ८)२५
- मोटरकार सर्विसिंग ८)२५
- कम्पलीट मोटर ट्रेनिंग मैनुअल २४)७५
- कारपेंट्री मैनुअल ४)५०
- मोटर प्रश्नोत्तर ६)
- स्कूटर आटो साइकिल गाइड ४)५०
- मशीनशाप प्रैक्टिस १५)
- आयरन फर्नीचर १२)
- मारबल चिप्स के डिजाइन १६)५०
- मिस्त्री डिजाइन बुक ३४)५०
- फाउन्ड्री वर्क-धातुओं की ढलाई ४)५०
- ट्रांजिस्टर रेडियो ४)५०
- आधुनिक टिपिकल मोटर गाइड ४)५०
- नक्काशी आर्ट शिक्षा ६)
- बढ़ई का काम ६)
- राजगिरी शिक्षा ६)
- सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो ७)५०
- विजय ट्रांजिस्टर गाइड २२)५०
- मशीनिस्ट गाइड १६)५०
- आल्टरनेटिंग करैन्ट १६)५०
- इलै. लाइनमैन वायरमैन गाइड १६)५०
- रेडियो फिजिक्स २५)५०
- फिटर मैकेनिक ६)
- मशीन वुड वर्किंग ६)
- लेथ वर्क ६)७५
- मिलिंग मशीन ८)२५
- मशीन शाप ट्रेनिंग १०)
- एअर कन्डीशनिंग गाइड १५)
- सिनेमा मशीन आपरेटर १)
- स्प्रे पेंटिंग १२)
- पोट्रीज गाइड ४ ५०
- ट्रांजिस्टर रिसीवर्स ६)७५
- लोकल ट्रांजिस्टर रिसीवर ८ २५
- प्रैक्टीकल ट्रांजिस्टर सरकिट्स ७ ५०
- बैंच वर्क एन्ड ड्राईफ्टर ८)२५
- माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुअल ८)२५
- खराद आपरेटर गाइड ८)२५
- रिसर्च आफ टायलेट सोप्स १५)
- आयल इन्डस्ट्री १०)५०
- शीट मैटल वर्क ८)२५
- कैरिज एन्ड वैगन गाइड ८,२५
- इलैक्ट्रिक फिजिक्स २५ ५०
- इलैक्ट्रिक टैक्नोलोजी २५)५०
- रेडियो पाकिट बुक ६)
- डिजाइन गेट ग्रिल जाली ६)
- कैमीकल इण्डस्ट्रीज २५)५०
- डीजल इन्जन गाइड १५)

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई, क्लाथ बाइंडिंग-मूल्य १५) एक साथ पांच प्रति मंगाने पर ५०) रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

1. सांख्य दर्शन मूल्य २)
2. न्याय दर्शन मू० ३।)
3. वैशेषिक दर्शन मू० ३॥)
4. योग दर्शन मू० ६)
5. वेदान्त दर्शन मू० ५॥)
6. मीमांसा दर्शन मू० ६)

सामवेद

मूलमंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित
श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार ४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थीं। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है। मूल्य ४)

वैदिक-मनुस्मृति मूल्य ४॥)

बृहत् दृष्टान्त सागर

सम्पूर्ण पांचों भाग
पृष्ठ संख्या ८६८
सजिल्द मूल्य केवल १०॥)

- **उपदेश-मंजरी** मूल्य २॥)
- **संस्कार विधि** मूल्य १॥)
- **आर्य समाज के नेता** मूल्य ३)
- **महर्षि दयानन्द** मूल्य ३)
- **कथा पच्चीसी** मूल्य १॥)
- **उपनिषद् प्रकाश** मू० ६)
- **हितोपदेश भाषा** मू० ३)
- **सत्यार्थप्रकाश** २)५० [छोटे अक्षरों मे]

अन्य आर्य साहित्य

1. विद्यार्थी शिष्टाचार १॥)
2. पंचतंत्र ३॥)
3. आग ऐ मानव १)
4. कौटिल्य अर्थशास्त्र १०)
5. चाणक्य नीति १)
6. भर्तृहरि शतक १॥)
7. कर्तव्य दर्पण १॥)
8. वैदिक सन्ध्या ४) सै०
9. हवन मन्त्र १०) सै०
10. वैदिक सत्संग गुटका १५) सै०
11. ऋग्वेद ७ जिल्दो मे ५६)
12. यजुर्वेद २ जिल्दो मे १६)
13. सामवेद १ जिल्द मे ८)
14. अथर्ववेद ४ जिल्दो मे ३२)
15. बाल्मीकि रामायण १२)
16. महाभारत भाषा १२)
17. हनुमान जीवन चरित्र ४॥)
18. आर्य संगीत रामायण ५)

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद, कृषि, बिजली, मोटर, पशुपालन, टेक्नीकल, डेरीफार्म, रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३७
२६४१६१

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

4-10-66 सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये ।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-१ | फोन २७४७७१ | आश्विन कृष्णा १ सवत् २०२२ | ० सितम्बर १९६६ | दयानन्दाब्द १४ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०

श्री महात्मा रामचन्द्र शर्मा वीर जी चिंतनीय दशा

दिल्ली जेल से इरविन अस्पताल में

आर्य हिन्दू जनता मे घबराहट

अभी अभी सूचना प्राप्त हुई है कि २० दिन से गोरक्षा के लिए अनशनकारी वीरजी जिन्हे दिल्ली सरकार ने बन्दी बनाकर तिहाड जेल मे रक्खा हुआ था उनका स्वास्थ्य इतना गिर गया है कि उन्हे जेल अधिकारियो ने जेल से इरविन अस्पताल मे भेज दिया है।

सम्पादक

वेद—आज्ञा

अधर्माचरण से बचो

विश्व अद्य मरुतो विश्व ऊती,
विश्वे भवन्त्वग्नय समिद्धा ।
विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु,
विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मै ॥

यजुर्वेद अ० ३३ । ५०

— ० —

भावार्थ—मनुष्यैर्यादृशं सुखं स्वार्थमेष्टव्यं तादृशमन्यार्थं चात्र ये विद्वांसो भवेयुस्ते स्वयमधर्माचरणात्पृथग् भूत्वा ऽन्यानपि तादृशान् कुर्युः ।

— ० —

भाषा भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि जैसा सुख अपने लिये चाहे वैसा ही औरो के लिये भी इस जगत मे जो विद्वान् हो वे आप अधर्माचरण से पृथक होके औरो को भी वैसा कर।

— महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्व० दानवीर श्री ला० दीवानचन्द जी का प्रथम निवास स्थान

दीवान भवन (निकट जामा मस्जिद दिल्ली) जो कि आज ला० दीवानचन्द ट्रस्ट की सम्पत्ति है।

निन्दित कर्म

वे धर्मात्मा विद्वान लोग है जो ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव अभिप्राय सृष्टिक्रम प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरुद्ध चलके सब ससार को सुख पहुंचाते है

शोक है उन पर जो कि इनसे विरुद्ध स्वार्थी दयाहीन होकर जगत मे हानि करने के लिये वर्त्तमान हैं

पूजनीय जन वे है कि जो अपनी हानि होती हो तो भी सब के हित के करने मे अपना तन मन धन लगाते है

तिरस्करणीय वे है जो अपने ही लाभ मे सन्तुष्ट रहकर सबके सुखों का नाश करते है

ऐसा सृष्टि मे कौन मनुष्य होगा। जो सुख और दुख को स्वयं न मानता हो?

क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करे वह दुख और सुख का अनुभव न करे? जब सबका लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है तो बिना अपराध किसी प्राणी का प्राण वियोग करके अपना पोषण करना यह सत्पुरुषों के सामने निन्दित कर्म क्यों न होवे?

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

वार्षिक ७) ३० | अग्नि बहु कुर्वीत | सम्पादक—रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री, सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक | बलन लोकस्तिष्ठति | वर्ष १, अंक—४१

शास्त्र-चर्चा

धर्म क्या है

युधिष्ठिर उवाच

इमे वै मानवा सर्वे धर्मं प्रति विशङ्किता। कोऽयं धर्मः कुतो धर्मस्तन्मे ब्रूहि पितामह ॥१॥

युधिष्ठिर ने पूछा—पितामह! ये सभी मनुष्य प्रायः धर्म के विषय में संशयशील हैं, अतः मैं जानना चाहता हूँ कि धर्म क्या है? और उसकी उत्पत्ति कहां से हुई है? यह मुझे बताइये ॥१॥

धर्मस्त्वयमिहार्थः किममुत्रार्थोऽपि वा भवेत्। उभयार्थो हि वा धर्मस्तन्मे ब्रूहि पितामह ॥२॥

पितामह! इस लोक में सुख पाने के लिये जो कर्म किया जाता है, वही धर्म है या परलोक में कल्याण के लिये जो कुछ किया जाता है, उसे धर्म कहते हैं। अथवा लोक परलोक दोनों के सुधार के लिये कुछ किया जाने वाला कर्म ही धर्म कहलाता है? यह मुझे बताइये ॥

भीष्म उवाच

सदाचारः स्मृतिर्वेदास्त्रिविधं धर्मलक्षणम्। चतुर्थमर्थमित्याहुः कवयो धर्मलक्षणम् ॥३॥

भीष्म जी कहते हैं—युधिष्ठिर! वेद, स्मृति और सदाचार—ये तीन धर्म के स्वरूप को लक्षित कराने वाले हैं। कुछ विद्वान् अर्थ को भी धर्म का चौथा लक्षण बताते हैं ॥

अपि ह्युक्तानि कर्माणि व्यवस्यन्त्युत्तरावरे। लोकयात्रार्थमेवेह धर्मस्य नियमः कृतः ॥४॥

शास्त्रों में जो धर्मानुकूल कार्य बताये गये हैं, उन्हें ही प्रधान एवं अप्रधान सभी लोग निश्चित रूप से धर्म मानते हैं। लोकयात्रा का निर्वाह करने के लिये ही महर्षियों ने यहां धर्म की मर्यादा स्थापित की है ॥४॥

उभयत्र सुखोदर्क इह चैव परत्र च। अलब्ध्वा निपुणं धर्मं पापः पापेन युज्यते ॥५॥

धर्म का पालन करने से आगे चलकर इस लोक और परलोक में भी सुख मिलता है। पापी मनुष्य विचारपूर्वक धर्म का आश्रय न लेने से पाप में प्रवृत्त हो उसके दुःख रूप फल का भागी होता है।

(म० शा० अ० २५९)

कृपया ध्यान दें

१—लेख छोटा भेजना चाहिए।

२—उर्दू के पत्र भेजते समय विलम्ब से उत्तर की शिकायत न करें।

३—प्रति सप्ताह सार्वदेशिक सावधानी से डाक में देते हैं। यदि आपको न मिले तो हमें दोष न देकर पोस्ट आफिस से पूछें।

४—वेद कथा अंक का धन भेजने में शीघ्रता करें।

५—वेद सप्ताह समाप्त हुआ। अतः

आर्य विजय अंक

का आर्डर इस सप्ताह में अवश्य भेज दें। बाद में निराश होना पड़ेगा।

—प्रबन्धक

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

सिगरेट पर नियंत्रण क्यों नहीं ?

धूम्रपान कितना हानिकारक विश्वव्यापी व्यसन है, उसकी सहज ही कल्पना नहीं होती। परन्तु जब से वैज्ञानिकों ने खोज की है कि कैंसर का सबसे बड़ा कारण धूम्रपान है और कैंसर की दिन प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है, तबसे अनेक देश इस विषय में बहुत सतर्क हो गए हैं। अपने देशवासियों को इस व्यसन से विरत करने के लिए वे तरह-तरह के प्रयत्न कर रहे हैं।

रूस में सन् १९४८ से ही धूम्रपान का विरोध किया जा रहा है और अब तो यह आंदोलन वहां काफी जोर पकड़ गया है। वहां प्रत्येक नगर में धूम्रपान विरोधी विज्ञापन चिपकाए गए हैं और लोगों को समझाया जा रहा है कि यह स्वास्थ्य का सबसे बड़ा शत्रु है।

अमरीका में प्रत्येक सिगरेट पर यह छापा गया है कि धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और कैंसर की जड़ है, ताकि प्रत्येक सिगरेट पीने वाले को सिगरेट पीने के विरुद्ध चेतावनी मिलती रहे। इसके अलावा अमरीका में स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से जगह-जगह ऐसे अस्पताल और क्लिनिक खोले गए हैं जहां धूम्रपान करने वालों को मनोवैज्ञानिक तथा अन्य उपायों द्वारा धूम्रपान से विरत करने का प्रयत्न किया जाता है।

पश्चिमी जर्मनी में बाकायदा कानून बना था कि कोई मंत्री या विधायक संसद के अधिवेशन के समय सिगरेट नहीं पीएगा। पूर्वी यूरोप के देशों में सबसे अधिक धूम्रपान करने वालों का देश है पोलैण्ड। धूम्रपान के व्यसन को रोकने के लिए वहां की सरकार ने अन्य जीवनोपयोगी वस्तुओं की कीमतें तो घटा दीं किन्तु तम्बाकू और सिगरेट की कीमतें खूब बढ़ा दीं यहां अब टेलिविजन और रेफ्रिजरेटर जैसी चीजें महंगी हो गई हैं।

यहां यह प्रश्न हो सकता है कि धूम्रपान को कम करने या रोकने के लिए इन देशों की सरकारें इतनी प्रयत्नशील हैं तो इसके बजाय वे धूम्रपान पर ही प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगा देतीं। न रहे बांस, न बजे बांसुरी। आखिर उपचार से सदा एहतियात भली। रोग का उपचार करने के बजाय प्रयत्न यह होना चाहिए कि रोग होने ही न पाए।

स्वास्थ्य का मूलमंत्र तो यही है। परन्तु दुर्भाग्यवश आज के सभ्य मानव का और सभ्य देशों की सरकारों का सोचने का तरीका इससे उल्टा है। आदमी दुर्व्यसनों या बुराइयों से प्रलोभित होकर उनमें न फंसे, यह काम सरकार का नहीं धर्मोपदेशक का है ऐसा समझा जाता है। सरकार का काम तो केवल बाद मे इलाज की व्यवस्था करने का है।

हालांकि, हमारी दृष्टि में तथा कथित सभ्यजनों की यह आधुनिक विचार धारा मूलत: गलत है, और दुर्जनतोष न्याय से हम यह भी मान लेते हैं कि ऐसे भले मानव का निर्माण धर्मोपदेशक का काम है, राज्य का नहीं, परन्तु सरकारों की इस कर्तव्यच्युति के पीछे एक बहुत बड़ा रहस्य भी है जिसकी ओर शायद आम लोगों का ध्यान नहीं जाता। वह रहस्य यह है कि सिगरेट के विश्वव्यापी व्यापार से बड़े पूंजीपति अरबों रु० कमाते हैं। सरकारों को भी तम्बाकू पर लगी एकसाइज ड्यूटी (उत्पादन कर) से करोड़ों की आय होती है। ये धनकुबेर सिगरेट के आकर्षक विज्ञापनों के रूप में अखबारों को भी लाखों रु० देते हैं, जिसके कारण अखबार उनके विरुद्ध मुंह नहीं खोलते। इतना ही नहीं, ये धनकुबेर वैज्ञानिकों को भी खरीद लेते हैं और उनसे समय समय पर अखबारों में सिगरेट के समर्थन में सुर्खियां निकलवाते रहते हैं। इस प्रकार निहित स्वार्थों का एक संसार व्यापी जाल है जो संसार के समस्त राज्यों से अधिक शक्तिशाली है।

क्या अपने ही देश में वनस्पति घी के सम्बन्ध मे हमने यही हालत नहीं देखी है ? कितनी बार उसमें रंग मिलाने का फैसला किया गया है, किन्तु चांदी की चपत के शिकार वैज्ञानिक आदमी को चन्द्रलोक तक पहुंचाने की तैयारी तो दम तोड़ कर करने लगे, परन्तु आज तक वनस्पति घी में मिलाए जाने वाले रंग की खोज नहीं कर सके।

हम पहले भी कह चुके हैं और आज फिर दुहराते हैं, कि भारत के अन्न संकट का बहुत बड़ा कारण यह है कि यहां तम्बाकू गन्ना और चाय के उत्पादन पर जितना जोर दिया जाता है, उतना अनाज उत्पादन पर नहीं। किसानों की दृष्टि में ये नकद फसलें (Cash Crops) है और सरकार की दृष्टि में ये विदेशी मुद्रा को खींचने वाली फसलें हैं। इन फसलों से विदेशी मुद्रा आई और वह विदेशी मुद्रा पुन. विदेशों से अनाज मंगाने पर ही खर्च होगई। हिसाब किताब बराबर। यह दूषित चक्र है, चिन्तन की भूल है, योजनाओं के मूल मे यही विपरीत धारणा है जिसके कारण वे सफल नहीं हो पाती। और जब तक ऐसी भ्रान्त विचार-सरणि रहेगी, तब तक देश का अन्न-संकट कभी दूर नहीं हो सकता। आचार्य विनोबाभावे कितनी बार कह चुके हैं कि तम्बाकू, गन्ना और चाय यही अनाज के सब से बड़े शत्रु हैं, और एक दिन अनाज के साथ इन्हीं शत्रुओं की भयंकर लड़ाई होगी।

इन व्यसनभूत जिन्सों के उत्पादन में जितनी जमीन लगी हुई है, यदि उस जमीन पर अनाज पैदा होने लगे तो सहज ही देश का अन्न संकट दूर हो सकता है। जो किसान प्रलोभन वश इन जिन्सो के उत्पादन मे लगे हैं, उनको अनाज उत्पादन की प्रेरणा देने के लिए इतना ही काफी है कि सरकार उन्हें सिंचाई की निश्शुल्क सुविधा दे, और इन चीजों के उत्पादन पर प्रतिबन्ध लगा दे, फिर अन्न-उत्पादन का चमत्कार देखिए।

यदि सरकार इतनी दूर तक जाने को तैयार न हो तो दूसरा सुझाव यह है कि देश में भले ही तम्बाकू की खेती होती रहे, किन्तु वह सारा तम्बाकू विदेशों को भेज दिया जाए। इससे दुहरा लाभ होगा विदेशी मुद्रा भी मिलेगी और भारत की जनता का स्वास्थ्य भी खराब होने से बच जाएगा। चीन भी तो यही करता है। वहां अफीम की खूब खेती होती है, परन्तु चीन में अफीम बेचने पर प्रतिबन्ध है, वह सारी अफीम विदेशों में जाती है और करोड़ो रु० की विदेशी मुद्रा चीन को देती है। जो कभी 'अफीमचियों का देश' कहलाता था वहां अफीम आज भी उसी तरह उगती है, किन्तु अब वह देश अफीमचियों का नहीं रहा। भारत मे, कम से कम तम्बाकू के सम्बन्ध मे, यह नीति क्यों नहीं अपनाई जा सकती ? स्वर्ण-नियन्त्रण के बजाय तम्बाकू-नियन्त्रण होना चाहिए।

स्व० श्री लाला दीवानचन्द जी ठेकेदार की धर्मपत्नी

श्रीमती प्रकाशवती जी आवल अपने पूज्य पतिदेव के साथ

सामयिक-चर्चा

वैदिक रीति से मांस के कारखाने का उद्घाटन

आर्य समाज आसन सोल के प्रधान श्रीयुत चन्द्र शेखर जी ने 'विश्व मित्र' कलकत्ता की एक कतरन हमारे पास भेजी है जिसमें रांची का २४ अगस्त का एक समाचार छपा है जिसका शीर्षक है 'वैदिक रीति से सुअर के मांस के कारखाने का उद्घाटन।" पूरा समाचार इस प्रकार है:—

"कल प्रातःकाल ६ बजे रांची पशु चिकित्सा महाविद्यालय कांके (रांची) के समीप बिहार के मुख्यमन्त्री श्री कृष्ण वल्लभसहाय ने सूअर के मांस को तय्यार करने के कारखाने के भवन का शिलान्यास किया। इस कारखाने पर २७ लाख रुपया अनुमानित लागत तथा १०० सूअरों की खपत तक हो सकेगी। ३ टन रोज सूअर के मांस की आपूर्ति इस कारखाने से होगी। वैदिक रीति से शिलान्यास कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् मुख्यमन्त्री ने कहा कि देश में खाने की आदत को बदलना होगा। देश में इसी तरह के पौष्टिक पदार्थों के उत्पादन से खाद्य समस्या हल होगी। बिहार १९७१ तक गल्ले के मामले में आत्म निर्भर हो जायगा" यह समाचार सत्य ही होगा। वध शालाओं जैसे गर्हित स्थलों का धार्मिक रीति से शिलान्यास होना अत्यन्त आपत्तिजनक है विशेषतः धर्म्म निरपेक्ष राज्य के एक वरिष्ठ अधिकारी के द्वारा। क्या यह कार्य शुभ था? जो लोग इस कार्य को शुभ समझते हैं उनकी बुद्धि पर तरस आता है। शुभ कार्य का धार्मिक विधि से अनुष्ठान होना तो समझ में आता है परन्तु इस प्रकार की वध शालाओं का धार्मिक विधि से शिलान्यास किया जाना अत्यन्त निंदनीय है। विधान सभाओं आदि के उद्घाटन तथा शपथ ग्रहण करने आदि के अवसरों पर तो इन कांग्रेसियों को धार्मिक अनुष्ठान में साम्प्रदायिकता की गंध आने लगती है, और वे धर्म्म निरपेक्षता का राग अलापने लगते हैं परन्तु वधशालाओं के उद्घाटनों में साम्प्रदायिकता आदि की गंध नहीं आती। बलिहारी है इनकी बुद्धियों पर। यह तो लोगों की धार्मिक भावना के साथ खिलवाड़ करना है। जिसकी अनुमति नहीं होनी चाहिएं चाहे वह कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो। फिर वैदिक शब्द की मिट्टी पलीद क्यों की गई? क्या वध शालाओं, वेश्यालयों, कंडूखानों आदि के शिलान्यास के अशुभ एवं अशोभन कार्यों के लिए वे विधियां उपयुक्त हो सकती हैं? हो सकता है शिलान्यास का यह अनुष्ठान पौराणिक पंडितों के द्वारा हुआ हो। आर्यसमाज का कोई पंडित तो इस गर्हित आयोजन में भागीदार नहीं हो सकता। परन्तु वैदिक शब्द से भ्रम का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। आर्यसमाज रांची को स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए संसार में और देश में हिंसा का वातावरण पहले से ही काफी व्याप्त है, इस प्रकार के बूचड़खानों के आयोजन से उसमें वृद्धि करना एक बहुत बड़ा अपराध है जिससे हमारे प्रशासन को पृथक् रहना चाहिए। खाने की आदत को बदलने के नाम पर मांसाहार की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना राष्ट्रिय सेवा नहीं अपितु राष्ट्रिय अपराध है जिसका इस शाकाहार प्रधान देश में हमारे वर्तमान शासन को मूल्य चुकाना ही होगा। मांसाहार से खाद्य समस्या का हल सुगम नहीं अपितु जटिल बनता है। अन्न उपजाने वाली भूमि तथा पैदावार का बड़ा भाग मांस के लिए पाले जाने वाले पशुओं के अर्पण हो जाता है यह बात अर्थ शास्त्रियों द्वारा प्रमाणित हो चुकी है। हमारे शासकों को उन आंकड़ों का अध्ययन करना चाहिए और मांसाहार की प्रवृति को बढ़ाकर खाद्य समस्या को जटिल से जटिलतर न बनाना चाहिए और नाही अपने हाथों को मूक एवं निर्दोष प्राणियों के रक्त से रंगने देना चाहिए।

विद्वानों का सम्मान

२४ अगस्त को जयपुर में राजस्थान संस्कृत संसद् के तत्वावधान में वेद संरक्षण योजना का रक्षा मन्त्री श्री चह्वाण द्वारा उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर रवीन्द्र मंच पर संस्कृत के कुछ विद्वानों को सम्मानित किया गया जिसमें श्री वीरसेन वेदश्रमी, शृंगेरी मठ के श्री शंकराचार्य जी के प्रतिनिधि श्री काशी विश्वनाथ श्री पं० धर्म्मदेव विद्यामार्त्तण्ड तथा श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक के नाम उल्लेखनीय हैं। राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री सुखाड़िया ने इन विद्वानों को शाल तथा मुद्राएँ भेंट कीं। इन विद्वानों में तीन विद्वान् आर्यसमाज से सम्बद्ध हैं जिन्हें हम सार्वदेशिक परिवार की ओर से बधाई देते हैं।

अन्न संकट दूर करने के उपाय

श्री रामचन्द्र आर्य सिद्धान्तरत्न कोषाध्यक्ष आर्यसमाज कायमगंज (फर्रुखाबाद) उपर्युक्त शीर्षक से लिखते हैं—

"खाद्य समस्या को हल करने के लिये भारत सरकार अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करे। सरकार अपनी नीति ढंग से निर्धारित करे ऐसा कदम उठाये कि तम्बाकू की खेती बन्द करवाकर अनाज पैदा किया जाय जिससे जो अन्न की हाय हाय मची हुई है वह बन्द हो जाये और भारत सरकार जो लाखों रुपया का अन्न बाहर के विदेशों से मंगवाती है वह भी परेशानी से बचे और देश का पैसा भी देश में रहे जिससे अन्न और चारे की कमी नहीं रहेगी और सब अपना जीवन सुखप्रद बितायेंगे। दूसरे देश की करोड़ों रुपये का विदेश से अन्न मंगाने में हानि हो रही है। तम्बाकू पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये जिससे इस धन की बचत हो सके यदि कानून द्वारा तम्बाकू की खेती पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय तो लाखों एकड़ भूमि में जहां आज तम्बाकू जैसी नशीली जहरीली और हानिकारक चीज बोई जाती है उन्हीं खेतों में गेहूं, जौ, चना, मटर, मक्का आदि बोया जाय जिससे देश की खाद्य समस्या बहुत कुछ हल हो सकेगी।

सिगरेट बीड़ी का प्रचार रोकाजाय। अकेले बम्बई शहर में एक वर्ष में ५ करोड़ रुपया सिगरेट के पीने में स्वाहा हो गया। सिगरेट पीने से विनाश होता है सिगरेट पर प्रतिबन्ध लगाना बहुत आवश्यक है। तम्बाकू की खेती बन्द हो तम्बाकू से बच्चों बूढ़ों जवानों का बीड़ी सिगरेट पीने की जो बुरी आदत पड़ गई है जो मनुष्य के लिये बड़ी हानिकारक चीज है वह छूट जाय आज देश में बीड़ी सिगरेट का प्रचार बढ़ गया है जिससे नवयुवकों का स्वास्थ्य गिरता है और खर्चा बढ़ता है लाखों रुपयों की हानि होती है। आज बीड़ी के प्रचारकों का जगह जगह पर लाउडस्पीकरों द्वारा नाच गाकर प्रचार करने पर प्रतिबंध लगाया जाय ताकि लड़के बुरे परिणामों से बच सकें।

सभा प्रधान जी मद्रास में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीयुत प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास ने ६-९-६६ को प्रातः १० बजे सार्वदेशिक सभा के मद्रास स्थित उप कार्यालय का निरीक्षण किया। श्रीयुत पं० शिवदत्त जी बी० ए० तथा श्री पं० धर्मजित जी जिज्ञासु ने हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया।

उक्त दोनों महानुभावों ने उन्हें दक्षिण भारत में आर्यसमाज की स्थिति से अवगत किया। उक्त कार्यालय की प्रगतियों का भी विवरण उनके समक्ष प्रस्तुत किया गया है। प्रधान जी ने संगठित प्रचार पर बल दिया और अनेक उपयोगी सुझाव भी दिए। वे पुनः अक्टोबर के आरम्भ में कार्य के निरीक्षण के लिए मद्रास आयेंगे।

शिकायत

श्री सन्तराम जी (राकी राकी) फिजी से १९-९-६६ के पत्र लिखते हैं:—

"मैं वैदिक धर्म का प्रचार करता हूं पर भारत के पुस्तकालय वाले मेरे इस कार्य में व्यर्थ की बाधा उपस्थित कर रहे हैं। बाबू वैजनाथ प्रसाद के यहां से एक साल हुआ ना उत्तर आया ना पुस्तकें। धर्म्मवीर भंडाधारी के यहां से हवन सामग्री का यही हाल है। मैं चाहता था कि वहां से सुगन्धित हवन सामग्री मंगाकर प्रचार करूं पर भारत के भारतीय भी धर्म्म कार्य में भारी रोड़ा अटकाते हैं।" विदेश के आर्य भाइयों को इस प्रकार की शिकायत नहीं होनी चाहिए। उनकी उपर्युक्त शिकायत का शीघ्र से शीघ्र समाधान होना आवश्यक है। सम्बद्ध व्यक्ति ध्यान दें।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय—कुछ संस्मरण

श्री राधेमोहन जी, मन्त्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा, प्रयाग

जिसके रोम-रोम से महर्षि दयानन्द के जय जयकार की प्रतिध्वनी हो रही है। जिसकी वाणी के प्रत्येक स्वर में कल्याणी वाणी वेद का निनाद निनादित होता रहता है। जिसका प्रत्येक पग महर्षि दयानन्द प्रदर्शित प्रशस्त पथ की ओर ही अग्रसर होता रहा है। जिसकी ज्ञान प्रसूता लेखनी दीर्घ काल से अविराम गति से वैदिक साहित्य के भंडार की अभिवृद्धि में संलग्न है जिसके जीवन का प्रत्येक क्षण वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार में ही बीत रहा है। जिसने वैदिक सिद्धान्तों के संवर्धनार्थ व उसकी व्याप्ति में आने वाली प्रत्येक बाधाओं से निपटने के लिए देश कालानुसार यथोचित निदान प्रस्तुत किया है। जिसके ज्ञानोदधि से उद्भूत शताधिक सदग्रन्थ, सहस्राधिक व सैद्धान्तिक लेख युगायुग कोटि २ ज्ञान पिपासु आबाल वृद्ध नर-नारियों को सन्तृप्त करते रहेंगे। जिसने यथायोग्य धर्मानुसार प्रीति पूर्वक महर्षि दयानन्द के सदेशों को सुदूर देशों मे रहने वाले मनुष्यों में तद्देशीय भाषाओं से पहुंचाने में सफल प्रयत्न किया है। जिसकी गुण-गौरव गरिमा व साहित्य सेवा से समस्त आर्यजगत् ऋणी रहेगा। उपरोक्त गुणों से समलंकृत अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति साहित्य साधक, तपोनिष्ठ, ऋषिभक्त वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वान्, दार्शिक स्वनाम धन्य विद्वत-वर श्री पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय जी से शायद आप अपरिचित न होंगे।

पूज्य पंडित जी का जन्म ८५ वर्ष पूर्व जिला एटा में काली नदी के किनारे नदरई ग्राम में हुआ था। अल्प आयु में ही आप पितृहीन हो गए थे। ममतामयी मां के ऊपर ही पालन पोषण का भार आ पड़ा उस मां को क्या मालूम था कि यही लाल भविष्य में महान् लेखक होकर समस्त आर्य जगत् को अनन्त काल तक अनुप्राणित करता रहेगा।

आज पूज्य पण्डित जी के ८५ वें वर्षग्रन्थि पर उनके जीवन के कुछ स्फुट विचार चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करूंगा जो कि उनके जीवन में कुछ अन्शों पर प्रकाश डाल सकेगा।

आदर्श शिष्य

आप जब अलीगढ़ वैदिकाश्रम में पढ़ते थे उसी समय दयानन्द के ग्रन्थों ने आपके विचारों में अभूतपूर्व क्रान्ति उत्पन्न कर दी, तब से निरन्तर परम्परागत अन्धविश्वासों तथा रूढ़ीवाद से निपटने के लिए महर्षि द्वारा प्रदीप्त सत्यार्थ प्रकाश रूपी दीप शिखा के प्रकाश में संघर्ष करते रहे। आपका समस्त जीवन चक्र गुरुवर दयानन्द के ऋण से उन्मुक्त होने के लिए ही परिश्रमित होता रहा है। महर्षि दयानन्द के शिष्य के नाते महर्षि की उत्तराधिकारिणी आर्य समाज को समुन्नत करने के लिए आपने घोर परिश्रम किया है। उसकी पूर्त्यर्थ आपने कभी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा दिल्ली के मन्त्री के रूप में और कभी उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान के रूप में और कभी गुरुकुल वृन्दावन के कुलपति पदक रूप में कार्य किया है। देश विदेश की यात्राएं भी आपने इसी सदुद्देश्य की पूर्ति के लिए की है। आपके रोम-रोम से महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं की सुगन्ध सौरभ सुवासित होती रहती है जो कि समीप आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। इस प्रकार गुरुवर दयानन्द की शिक्षाओं को जनसाधारण में पहुंचाने के लिए आदर्श शिष्य के रूप में अविकल रूप में अविराम गति से अटूट श्रद्धा पूर्वक चिंतन मनन व लेखन द्वारा रत हैं।

मैं देखता हूं जिस प्रकार दयानन्द के प्रति अगाध भक्ति है उसी प्रकार उन साधारण लोगों के प्रति भी जिन्होंने कुछ भी आपके साथ उपकार किया है उसका भी ऋण अपने ऊपर मानकर सादर शिरोधार्य किया है। नीचे की घटनाएं इसकी साक्षी हैं।

१—आपको संस्कृत पढ़ने की अभिलाषा हुई। समीप के एक पाठशाला के आचार्य श्री प० सीताराम जी के घर पर पढ़ना आरम्भ किया। और कुछ दिनों में नैरन्तर्य प्रयास से शीघ्र ही संस्कृत आपकी हो गई। आपको कुछ कार्य वश कुछ दिनों के लिए शाहपुरा जाना पड़ा। तब आचार्य जी का सामीप्य भी भंग हो गया। किन्तु उनकी अनुपस्थिति में भी आपके पठन-पाठन का क्रम भंग न हुआ। फल यह हुआ कि वहीं पर आपने एक संस्कृत के छन्दों में 'आर्योदय काव्य' नामक ग्रन्थ की रचना की जिसकी उच्चकोटि के देश-विदेश के विद्वानों ने भूरि भूरि प्रशंसा की। आपकी गुरुभक्ति देखिए। आप जब प्रयाग आए तब एक थाल में मिठाई सजाकर और आर्योदय काव्यम के दोनों भाग रखकर नौकर को साथ लेकर श्री पंडित जी के निवास स्थान पर पहुंचे। आपने अत्यन्त विनीत भाव से मिठाई आचार्य जी को समर्पित करके उनका अभिनन्दन किया श्री आचार्य जी यह कृत्य देखकर दंग रह गए कि कहाँ यह आर्य जगत् का महान् विद्वान और कहां मैं एक साधारण अध्यापक। मेरे ऐसे मूर्ति पूजक आचार्य के प्रति यह भक्ति।

२—लगभग ६ वर्ष पूर्व अरबी पढ़ना आरम्भ किया। मौलवी वली उल्ला साहब आने लगे। आप बड़े आदर पूर्वक तथा नियमानुसार उनसे पढ़ने लगे। एक दिन मौलवी साहब आए, कमरे में एक ही कुर्सी थी, आप फौरन उठे और अपनी कुर्सी पर मौलवी साहब को बैठाया और दूसरी कुर्सी लाने के लिए दूसरे कमरे की ओर जाना चाहा मौलवी साहब ने बारम्बार कहा कि मैं कुर्सी ले लूंगा किन्तु आपने उन्हें कुर्सी नहीं लाने दी। मौलवी साहब ने फरमाया कि आप इतना तकल्लुफ क्यों करते हैं। आप बहुत बूढ़े हैं और मैं तो अभी मजबूत हूं और अपने ही बैठने के लिए तो कुर्सी बगल के कमरे से लेनी हैं। श्री पंडित जी ने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया, ठीक है, इससे क्या हुआ। कितना ही हो आप मेरे उस्ताद हैं। यह था मौलवी साहब के प्रति आपका आदर भाव।

३—उपरोक्त मौलवी साहब के अस्वस्थ होने पर उनके शिष्य श्री मौ०अली अकबर जी आने लगे। अली अकबर जी की आयु लगभग २२ वर्ष की थी जो कि उनके पोतों से भी कम। परन्तु उनके साथ भी आप का व्यवहार उसी प्रकार का था। मौलवी साहब से अल्पायु होने पर आपके विनय में कोई अन्तर न आया मुझसे यदाकदा मौलवी साहब से धार्मिक विषयों पर बहस हो जाया करती थी। मैंने एक बार पूज्य पंडित जी से विनय किया कि श्री अली अकबर जी आपके पास नित्य आते हैं और अमुक सिद्धान्त पर उनका यह दृष्टिकोण है यदि आप उनके विचारों में परिवर्तन ला सकें तो अच्छा होता। आपने कहा कि देखो भाई श्री मौलवी साहब इस समय मेरे गुरु हैं इसलिए मैं उन्हें छेड़ कर कोई बात अपनी ओर से नहीं चला सकता हूं? यदि वे किसी विषय पर बात आरम्भ करेंगे तो मैं अवश्य उस विषय पर सांगोपांग प्रकाश डालूंगा। कोई बड़े से बड़ा व्यक्ति आता तब आप सर्व प्रथम परिचय मौलवी साहब का कराते वह भी बड़े आदर के साथ। यह है आपकी गुरु के प्रति विनय शीलता जो आज के विद्यार्थियों में शायद ढूंढने से भी न मिले।

एक बात और महत्वपूर्ण है कि आपने पठन-पाठन काल में एक दिन भी अनध्याय नहीं किया। आपको खांसी उठ रही हैं अथवा बुखार चढ़ा है, मौलवी साहब आ जाते, उनकी हालत देखकर जाना चाहते तो आप तुरन्त कहते, आइए, आइए मौलवी साहब आप आए हैं तो अधिक न सही तो एक सतर तो पढ़ ही सकता हूं। नागा क्यों किया जाय। इसी नियम बद्धता का फल है कि आपने अरबी में अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली और एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ मसावोहुल इस्लाम की रचना की जो कि इस्लाम और मुहम्मद साहब के सम्बन्ध में एक क्रान्तिकारी पुस्तक मानी जाती है।

आदर्श गुरु

आदर्श शिष्य के साथ साथ आप आदर्श गुरु भी हैं। पढ़ाने के लिए विद्यार्थियों को आप ढूंढ २ कर पकड़ा करते थे। कटरा आर्य समाज प्रयाग में अपने व्याख्यान में आपने अपील की थी कि जो सज्जन आर्य ग्रन्थों को पढ़ना चाहते हों वे मेरे पास आएं जो लेखक बनना चाहते हों वे मेरे पास आएं, जो व्याख्यान दाता बनना चाहते हों वे मेरे पास आएं और जो शास्त्रार्थ करना चाहते हों वे मेरे पास आएं और यदि कोई सज्जन केवल गप ही करना चाहते हों तो उनके लिए भी मेरा द्वार सर्वदा सब काल खुला है। आपकी यह आकांक्षा है कि यहां आने पर किसी न किसी बहाने कुछ न कुछ पढ़ ही जाया करेगा। बतौर पढ़ाने का नमूना देखिए।

१—उपरोक्त मौलवी अकबर की अरबी के आलिम फाजिल थे। हिन्दी व अंग्रेजी ज्ञान से सर्वथा शून्य थे। एक दिन पूज्य पंडित जी ने कहा कि मौलवी साहब, केवल अरबी व उर्दू का ज्ञान आपके लिए काफी नहीं है आपको और भी आधुनिक परीक्षा (हाई स्कूल आदि) पास करना चाहिए तभी आपका जीवन सुचारु रूप से चल सकेगा। मौलवी साहब के हृदय में बात जम गई किन्तु आगे पढ़े तो कैसे? एक ओर तो हिन्दी व अंग्रेजी गणित आदि विषयों में अनभिज्ञता और दूसरी ओर आर्थिक कठिनाइयां। पंडित जी ने कहा कि आप मुझसे पढ़ा करें सभी विषय मैं पढ़ा दिया करूंगा। हाई स्कूल का फार्म भर दिया गया। आश्चर्य की बात है ८-९ महीने की ही पढ़ाई में हाई स्कूल में गुड सेकेन्ड डिवीजन में उत्तीर्ण हो गए। इन्टर में वे एक स्कूल में दाखिल हो गए और सुयोग्य पंडित जी से ही पढ़ते रहे परीक्षा हुई और इन्टर में भी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इस वर्ष उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय मे प्रवेश पा लिया है और यथाविधि पंडित जी के ही सान्निध्य मेंही आपकी शिक्षा पूर्ववत चल रही है। क्रमश:

हम क्या सेवन करें—अंडा या दूध

दो मित्रों की बातें

—चतुरसेन गुप्त

त्यागी—भोगीलाल जी नमस्ते ! आज तो बहुत दिनों में दर्शन हुए, कहीं यात्रा पर गये थे या ससुराल में।

भोगीलाल—मित्र, ससुराल तो मेरी अब कहां रही जब मैंने अपनी पत्नी को ही तलाक दे दिया।

त्यागी—तलाक क्यों दिया ? तुम तो कहा करते थे कि मेरी पत्नी बड़ी सुन्दर और बी. ए. पास है तुम्हें तो सुसराल से धन भी खूब मिला था फिर तलाक की बात क्यों हुई।

भोगीलाल—वैसे तो सब बात ठीक थी पर वह तो बी. ए. होकर भी बड़ी दकियानूसी है उसके दिमाग में निरा पाखंड भरा हुआ है।

त्यागी—दकियानूसी और पाखण्डी कैसे।

भोगीलाल—यों तो अनेक बातें हैं पर जब सवेरे मैं बेड टी बनवाता और उससे कहता कि आओ मेरे साथ चाय पीओ तो वह कह देती कि मैं स्नान और भजन पूजन से पहले न कुछ खाऊंगी न पीऊंगी। भला इससे ज्यादह: दकियानूसीपन की बात क्या हो सकती है।

त्यागी—वाह भाई, यह भी कोई बुरी बात थी। तुम्हें तो अपनी पत्नी से शिक्षा लेनी चाहिए थी और खाट पर पड़े २ चाय न पीकर शौच आदि से निवृत हो, भगवान का ध्यान कर फिर खाना पीना खाते, तो इसमें क्या हानि थी।

भोगीलाल—यार तुम भी पोंगा पंथी हो और मूर्खों की दुनियां में रहते हो। देखो—बड़े २ उन्नत देशों के लोगों को ! सब टट्टी जाने से पूर्व और खाट पर ही चाय पीते हैं। तभी तो इसे बेड टी कहते हैं।

त्यागी—भाई चलो मैं पोंगा पन्थी और मूर्ख ही सही पर तुमने इतनी सी बात पर पत्नी को तलाक क्यों दे दी ?

भोगीलाल—भाई यह तो एक बात है, ऐसी और भी बहुत सी बातें हैं।

त्यागी—वे बहुत सी बातें भी बता दो।

भोगीलाल—अभी ताजी ही घटना है—२६ जनवरी को आजादी दिवस की छुट्टी थी। कई मित्रों को मैंने चाय पर बुलाया था। मैंने पत्नी से चाय बनवाई, फिर उसे कुछ अण्डे आम्लेट बनाने को दिये, इस पर वह बिगड़ गई और बोली कि न तो मैं आप पकाऊंगी और न तुम्हें खाने दूंगी।

त्यागी—अरे ! भोगीलाल क्या तुम अण्डे भी खाने लगे।

भोगीलाल—हां मैं तो खाता हूं क्या तुम्हें इसमें भी बुराई दीखती है। अण्डा तो वैसी ही सब्जी है जैसा सफेद बैंगन ! फिर इसमें तो जीव भी नहीं होता।

त्यागी—वाह भाई भोगीलाल ! अण्डा भी तुम्हें सब्जी दीखने लगी। देखो, सोचो और समझो ! अण्डा मुर्गी आदि से उत्पन्न होता है कुछ काल में इसमें से बच्चे पैदा हो जाते हैं। फिर यह सब्जी कहां हुई। कभी आपने आलू, कचालू खरबूजा और आम में से उड़ने, कूदने फुदफुदाने वाले बच्चे पैदा होतेदेखे या सुने हैं। जब ऐसा नहीं तो फिर अण्डा सब्जी कैसे ?

भोगीलाल—जब तक इसमें से बच्चा पैदा नहीं हुआ, और इसमें जीव नहीं आया तब इसके खाने में क्या दोष।

त्यागी—अण्डे की यह दशा गर्भ की दशा है। इसे खाना गर्भ भक्षण करना है। यदि तुम इस अवस्था के अण्डे को खाने में कोई दोष नहीं मानते तो बताओ, दो मास की गर्भिणी स्त्री अथवा किसी पशु के गर्भ को आप खाना पसन्द करोगे। क्योंकि उस अवस्था में तो उसमें भी जीव नहीं होता—गर्भ का एक लोथड़ा मात्र ही होता है। अतः भोगीलाल जी गर्भ भक्षण के पाप से बचो।

भोगीलाल—त्यागी जी ! हमारी सरकार के बड़े २ अधिकारी भी अण्डे खाने की प्रेरणा देते हैं और एक अण्डे में आधसेर दूध की शक्ति बतलाते हैं। और इससे तो खाद्य समस्या का समाधान भी होता है।

त्यागी—देखो भोगीलाल जी ! अण्डे से खाद्य समस्या का समाधान नहीं हो सकता, दूध से होता है। एक मनुष्य प्रतिदिन केवल १॥ सेर दूध पर जीवन भर जी सकता है किन्तु तीन अण्डे पर एक दिन भी नहीं। जब ऐसा है तब अण्डे से खाद्य समस्या का समाधान कहां हुआ।

भोगीलाल—भाई त्यागी जी ! यह युक्ति तो ठीक है। वास्तव में ऐसा एक भी मनुष्य नहीं है जो अन्न, दूध, फल आदि न खाकर केवल दो चार अण्डों पर ही निर्वाह करता हो। हां, एक बात यह है कि अण्डे में विटेमिन बहुत ज्यादह होते हैं जो जीवन शक्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं।

त्यागी—भोगीलाल जी, कोई वस्तु इसीलिए खाने योग्य नहीं होती क्योंकि उसमें विटेमिन बहुत हैं। अच्छा सुनो, यदि मैं आपको अण्डे से भी अधिक विटेमिन वाली ऐसी वस्तु बताऊं जिस पर एक फूटी कौड़ी भी खर्च न हो और न कहीं दूर से लानी पड़े तो क्या आप उसे खाने लगेंगे।

भोगीलाल—क्यों नहीं, शरीर को पौष्टिक तत्त्व तो चाहिएं ही। फिर वह अण्डेसे मिले या अन्य वस्तुओं से। फिर आप तो अण्डे से भी अधिक पौष्टिक वस्तु और वह भी बिना मूल्य बतलाते हैं। उसे बतलाओ मैं उसका अवश्य सेवन करूंगा।

त्यागी—लो मित्र, सुनो ! डाक्टरों का कहना है कि मनुष्य के पाखाने में सबसे अधिक पौष्टिक तत्त्व (विटेमिन) हैं और प्रत्यक्ष में भी देख लो। शूअर केवल मनुष्य का पाखाना खाता है और लाल सुर्ख होता है एक बार सूअरी एक-एक दर्जन बच्चे देती है यह सब मनुष्य के पाखाने का ही तो चमत्कार है। अतः यदि आप अधिकाधिक विटेमिन खाने के शौकीन हैं तो फिर आप इसका ही सेवन किया करें। इसमें न खर्च और न लाने में परेशानी। इधर आया—उधर खाया।

भोगीलाल—छी, छी, छी किस गन्दी चीज का आपने नाम लिया।

त्यागी—वाह भाई भोगीलाल ! जिसकी प्राप्ति में न हिंसा और न खर्च, उसके लिए छी, छी करते हो किन्तु जो एक प्राणी का गर्भ है जिसमें से एक फुदफुदाता हुआ बच्चा पैदा होना है उसे चट करके डकार भी नहीं लेते। आश्चर्य है मित्र तुम्हारी बुद्धि पर और आश्चर्य है उन पर जिनके संग-दोष के कारण तुम गर्भ भक्षी बन गए हो।

भोगीलाल—भाई त्यागी जी, आज तुमने मेरी आंखें खोल दीं, वास्तव में अब जितना अधिक सोचता हूं उतना ही अण्डा-भक्षण में पाप प्रतीत होता है। मुझे तो अब ध्यान आया है कि अण्डा तो मुर्गे और मुर्गी का रज-वीर्य है। हम अब तक रज-वीर्य से बने गर्भ का भक्षण करते रहे। छी, छी, छी लानत, लानत और घोर लानत। मैं त्यागी जी ! आपका अत्यन्त आभारी हूं। मैंने अण्डे के व्यसन में फंस कर अपना जन्म भ्रष्ट किया, अनेक प्राणियों का भक्षण कर अपने पेट को कबरिस्तान बना दिया और भयंकर पाप यह हुआ कि इस अण्डे के कारण मैंने अपनी आदर्श पत्नी से झगड़ा किया और उसे तलाक के लिए अदालत में ले गया। अब मैं उस देवी से अपने पाप की क्षमा मांगूंगा और तलाक का दावा वापिस लूंगा।

अच्छा त्यागी जी, आज की बातचीत में तो आपने मेरा जीवन ही पवित्र कर दिया, मेरे उजड़े हुए घरको फिरसे हरा भरा कर दिया और मेरे द्वारा होने वाले हजारों पक्षियों की हत्या को भी आपने बचा लिया। आपका हार्दिक धन्यवाद। त्यागी जी कल फिर पधारने की कृपा करें। शायद मुझे आपसे और भी कोई मार्ग दर्शन मिले।

त्यागी—बहुत अच्छा, कल मैं इसी समय आपके दर्शन करूंगा। अच्छा नमस्ते जी।

हैदराबाद की स्वतन्त्रता और आर्य समाज

आर्यों का शौर्य दीप

श्री प० नरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद व
उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
(गतांक से आगे)

मैं निजाम सरकार की नजर में

आर्य समाज की नीति और कार्यपद्धति का ज्ञान होते ही सरकार, फौज, पुलिस और रजाकारों की चण्डाल चौकड़ी की वक्र दृष्टि आर्य समाज पर जम गई। क्योंकि वे भली प्रकार जानते थे कि आन्दोलन करने और संघर्ष चलाने में आर्यसमाज पूर्ण सिद्धहस्त है और वह सहज में ही दूसरे उपायों का अवलम्बन भी कर सकता है। इसलिए आर्य समाजी नेताओं और कार्यकर्त्ताओं को धड़ाधड़ गिरफ्तार किया जाने लगा जिससे कि उनको लोहे के सींखचों के पीछे ढकेल दिया जाय और उनकी ओर से निजाम सरकार के घृणित आयोजनों में किसी प्रकार की बाधा न पड़ने पाये। "मैं तो बहुत वर्षों तक निजाम सरकार का कृपापात्र रहता चला आ रहा था। भला ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर सरकार मुझे कैसे भूल जाती?" और मुझे स्वतन्त्र छोड़ने की भूल वह क्यों करती? सरकार ने मुझे पकड़ा और जेल भेज दिया। आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता पं० दत्तात्रेयप्रसाद जी वकील, पं० गंगाराम जी बी० एस० सी०एल० एल० बी०, श्री ए० बालरेड्डी जी, श्री एस० वैंकटस्वामी जी एडवोकेट, श्री बी० वैंकटस्वामी जी, श्री कालीचरण जी "प्रकाश" और श्री वामनराव जी को भी पकड़कर जेल भेज दिया गया।

रायकोट का हत्याकाण्ड

७ जून सन् १९४७ ई० को पुलिस और रजाकारों ने मिलकर रायकोट जिला बीदर में चौदह हिन्दुओं की हत्या कर दी और बीसियों हिन्दुओं को घायल कर दिया। इस लूट मार के बाद बाजार में आग लगा दी। इसके परिणाम स्वरूप १५४ दुकानें भस्म हो गईं। हिन्दुओं को बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ी। रायकोट के हत्याकाण्ड और लूट मार का यह समाचार सम्पूर्ण राज्य में फैल गया। स्थान-स्थान पर चिन्ता व्याप्त हो गई और जनता आत्मरक्षा के उपाय करने लगी। आर्य समाज की ओर से श्री पं० बन्सीलाल जी वकील की अध्यक्षता में एक पीड़ित सहायक समिति बनाकर सहायता का कार्य प्रारम्भ किया गया और रायकोट के बे-घर बार एवं पीड़ित लोगों को सब प्रकार की आवश्यक सहायता पहुंचाई गई।

फौज और पुलिस की छत्रछाया में रजाकार सब ओर लूट मार करने लगे। ग्रामों को उजाड़ दिया गया। घरों और दुकानों को आग लगाई जाने लगी। स्त्रियों का सतीत्व लूटा जाने लगा। और उनके शरीर पर से आभूषण उतारे जाने लगे। रजाकारों को कोई भी पूछने या रोकने वाला तक यहां न था। क्यों? क्योंकि वे मुसलमान लुटेरे और अत्याचारी थे और सशस्त्र एवं संगठित दल बनाकर, योजनानुसार रक्तपात और लूट मार कर रहे थे। सरकारी फौज और पुलिस उनकी सहायता के लिये प्रतिक्षण तत्पर रहती थी। नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में आर्य समाजियों की धर पकड़ लूटपाट, आर्य समाज मन्दिरों पर आक्रमण तथा देवियों का अपमान, हिन्दू मन्दिरों की तोड़-फोड़, ओ३म् ध्वज की नोच-खसोट, उन दिनों पुलिस, फौज और रजाकारों का प्रति दिन का कार्य था।

आर्य समाज के चमकते तारे का अस्त

श्री भाई० बंसीलाल जी वकील का देहावसान

जिन्दगी इन्सान की है,
मानिन्द मुर्गे खुशनवा।
शाख पर बैठा कोई दम,
चह चहाया, उड़ गया॥

शोक है कि निजाम सरकार के विरुद्ध जब वह अन्तिम और निर्णयकारी भीषण संग्राम चल रहा था, उसी बीच मे आर्य प्रतिनिधि सभा के तपस्वी, त्यागी और महान् अनुभवी नेता का देहावसान हो गया। वे थे आर्य जगत् के प्राण, त्यागी भाई० बंसीलाल जी वकील हाईकोर्ट। श्री प० बंसीलाल जी बारसी से अपने गुरुकुल के विद्यार्थियों के साथ अहमद नगर आ रहे थे कि मार्ग में जेऊर स्थान पर उन्हें हैजा हो गया और उसके फल स्वरूप ७ अगस्त १९४७ ई० को उनका देहान्त हो गया। देहान्त के समय श्री पंडित जी के सुपुत्र श्री वेद भूषण जी और उनके पुराने साथी श्री रामचन्द्र जी नलगीरकर भी मौजूद थे। मुझे और श्री पं० दत्तात्रेयप्रसाद जी और पं० गंगाराम जी को उनके दुःखदायक देहावसान की सूचना जेल में श्री प० कृष्णदत्त जी ने १० अगस्त १९४८ को तार द्वारा भेजी थी। श्री भाई जी के निधन से आर्य समाजी क्षेत्रों में भारी शोक छा गया। स्व० भाई जी ने आर्य समाज की जो सेवायें की थीं और जिस निडरता पूर्वक निजाम शाही के विरुद्ध वैदिक धर्म के प्रचार एवं संगठन कार्य करके आर्य समाज की प्रगतियों को जिस उत्तमरूप में आगे बढ़ाया था, सर्वत्र उसकी सराहना की जा रही थी। श्री स्व० भाई जी ने सर्वथा निःस्वार्थ एवं निस्पृहभाव से हैदराबाद की जनता की जो सेवायें की थीं, वे बहुत ही महत्वपूर्ण थीं उनको कभी भी भुलाया न जा सकेगा और आपका नाम आर्य समाज के इतिहास में अमर रहेगा।

जब पग-पग पर मौत नाचती थी

सन् १९४७ और ४८ के अन्तिम दिनों में निजाम सरकार की पुलिस और फौज के साथ ही रजाकार, अरब, पठान और दूसरे गुण्डे भी आर्य समाजियों के जानी दुश्मन बन चुके थे और उनसे जहां भी बन पड़ता था, वे आर्य समाजियों को तंग करने, हानि पहुंचाने और अवसर मिलने पर जान से मार देने से भी चूकते न थे। १६ मई सन् १९४७ ई० की टेकमाल तालुका जोगीपेठ के आर्य समाज का स्थापना उत्सव मनाया जा रहा था। उत्सव में भाग लेने के लिये श्री प० विनायकराव जी विद्यालंकार बार एट ला, श्री श्री राजरेड्डी जी, श्री मानिकराव जी, श्री रामस्वामी जी और मैं टेकमाल पहुंचे। उत्सव की सभा

में भाग लेने के बाद, हम लोग वापिस लौट रहे थे कि रात के दो बजे दो पठानों ने हम पर गोलियां चलानी आरम्भ कर दी। एक गोली श्री गंगाराम जी की कमर के नीचे के भाग में लगी और रक्त बहने लगा। दूसरी गोली मेरे सिर को छूती हुई ऊपर से निकल गई। ज्ञात पड़ता था कि यह कोई आकस्मिक घटना न थी, अपितु यह गोली-काण्ड किसी पूर्वयोजित षड्यन्त्र के अनुसार घटित हुआ था। हमने उस घटना की सूचना पुलिस को दी, परन्तु आक्रमणकारियों के विरुद्ध कोई भी कार्यवाही नहीं की गई।

अपराधी की अपेक्षा

यादगीर काण्ड

३१ मई सन् १९४७ ई० को आर्य समाज यादगीर के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री ईश्वरलाल जी भट्टड़ पर एक व्यक्ति ने खंजर से आक्रमण कर दिया। जिसके कारण वे बहुत अधिक घायल हो गये, और कई मास तक जीवन-मरण के झूले में झूलते रहे। पुलिस को इस घटना का पूरा-पूरा विवरण ज्ञात था, फिर भी आक्रमणकारी के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई। इसी प्रकार १९४२ में विजयदशमी के अवसर पर आर्यसमाज द्वारा निकलने वाले भव्य जुलूस पर पुलिस के सहयोग से यादगीर के गुण्डों ने सशस्त्र आक्रमण कर दिया। इन सशस्त्र आक्रमणकारियों का सामना प० ज्ञानेन्द्र जी शर्मा उपदेशक सभा और श्री ईश्वरलाल जी भट्टड़ ने बड़ी दृढ़ता एवं धैर्य के साथ किया। स्थानीय पुलिस ने गुण्डों के विरुद्ध कोई कार्यवाही न करते हुए श्री मल्लप्पा जी कत्लूर, श्री ज्ञानेन्द्र जी, ईश्वरलाल जी भट्टड, जगन्नाथराव जी पण्डरगी और श्री हरिदास भाई को गिरफ्तार कर लिया।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के उपदेश

प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु एम० ए० शोलापुर

केवल वैदिक धर्म :—इस समय संसार सम्प्रदायों से ऊब रहा है। वह धर्म का इच्छुक है विज्ञान के सम्मुख और पंथों का ठहरना संभव नहीं तो कठिन अवश्य है। केवल वैदिक धर्म ही है जो विज्ञान से टक्कर लेकर उसे पराजित कर सकता है अतः आर्य समाजों, प्रतिनिधि सभाओं का कर्त्तव्य है, कि वह देश देशान्तर, द्वीप द्वीपान्तर में वैदिक धर्म के प्रचार का प्रबन्ध करें। यदि ऐसा न करेंगे तो हम ऋषि ऋण से उऋण न होंगे।

हमारा प्यारा आर्यसमाज:—हमारा मुख्य काम है कि हम आर्य समाज की सेवा करें? आर्यसमाज की उन्नति के लिये जो कुछ हम से हो सकता है हम करेंगे, परन्तु इसके साथ साथ प्रत्येक आर्य की उन्नति चाहते हैं और दुनिया के अन्याचार मिटाकर सुख और शान्ति की स्थापना करना चाहते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने हमें ऐसा करने का आदेश दिया है।

'जहां यह अवस्था हो' :—व्यापारी ब्लेक मार्केट करते हैं, अफसर रिश्वतखोर हैं, ठेकेदार सरकारी कामों में गड़बड़ करते हैं, स्कूल मास्टर ट्यूशन लेने के लिये लड़कों को पढ़ाने से कतराते हैं, विद्यार्थी भी अध्यापकों को अपमानित करते हैं और पढ़ने से कतराते हैं, घर में मा बाप सन्तान से दुखी हैं और सन्तान मा बाप को कोसती है। स्त्री और पुरुष की घर में तकरार होती है, जहा यह अवस्था हो वहा शान्ति कैसे हो?"

'हमारा व्यवहार'—"अब भारत स्वतन्त्र है, स्वतन्त्रता प्राप्त भारत में ठगी का व्यापार शोभा नहीं देता। अब देश में सत्य का व्यवहार होना चाहिए। जैसे वैश्यों को सत्य का व्यवहार करना चाहिए वैसे ही ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि सबको इसी मार्ग पर चलना चाहिए।"

चोर बाजारी—"आर्यों का कर्त्तव्य है कि वे ऋषि के आदेश को मानकर अपने जीवन को उन्नत बनाते और दिखाते हुए इस चोर बाजारी और अन्याय के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करें। "कार्यं वा साधयामि देह वा पातयामि" की दृढ़ धारणा कर के इस क्षेत्र में आयें।

भ्रष्टाचार निवारण—"क्या इस अवस्था में आर्यसमाज को चुप बैठना चाहिए? मेरी सम्मति में आर्यसमाज को भ्रष्टाचार निवारण में लगना चाहिए पर इसके साथ एक बात और है—आर्यसमाज के सदस्य, वह चाहे प्रजा में हों चाहे राज्य कर्मचारियों में हों, उनमें यह दोष न हो। यदि उनमें है तो प्रथम आर्यसमाज को उनको ठीक करना होगा। यदि आर्यसमाजी दोष रहित हैं तभी वह भ्रष्टाचार निवारण में सफल हो सकते हैं।"

(श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज)

गोवंश व भारत सरकार—"यदि भारतीय सरकार अंग्रेजी ढर्रे पर चलती रही तो भारतीय संस्कृति और वैदिक सभ्यता के प्राण गो जाति के ह्रास और विनाश से भारत देश का सर्वनाश निश्चित है। ऐसी भीषण अवस्था में भारतीय जनता और भारत सरकार में टक्कर होनी रुक नहीं सकती। आज हम स्वराज्य प्राप्त कर चुके हैं किन्तु दो कार्य अभी शेष हैं। गोरक्षा और वैदिक धर्म से जाने वाले द्वार को बन्द करना तथा आने वाले द्वार को खोलना।

प्रान्तीयता का रोग—"जो लोग भाषावार प्रान्तों की मांग कर रहे है, वह देश के लिए हानिकारक है, उन्नति में बाधक हैं, राष्ट्रीय भावना के द्वेषी हैं। प्रत्येक भारतीय को उनका विरोध करना चाहिए ताकि देश का संगठन दृढ़ हो सके। भारत को जब जब पराजित होना पड़ा था। तब तब प्रान्तीय भेदों के कारण ही पराजित होना पड़ा था। अब भी यदि यही भावना भार प्रबल हो गया तो पुनः वैसी अवस्था होने की सम्भावना हो सकती है।"

संन्यासी—"सन्यासी की भावना विश्व कल्याणी होती है। संसार में दुःखी जीवों को देखकर उनके हृदय में करुणा की सरिता प्रवाहित होती है। उनकी दृष्टि प्रान्त देश और महादेश की सीमाये लांघ कर विश्व की परिधि में घूमती है। उनके आगे जाति, वर्ण या समुदाय का प्रश्न उत्पन्न नही होता। वह सम्पूर्ण प्राणियों मे अपनी आत्मा का दर्शन करते हैं। उनका जीवन अपने लिए नहीं, विश्व के लिए होता है। लोगों को सत्पथ में प्रवृत्त करना, धर्म मार्ग पर दृढ़ करना काम होता है। वह किंचित काल के लिए भी किसी का अनिष्ट नहीं सोच सकते।"

'वाणी का व्यवहार'—"यदि आप किसी के साथ उत्तम वाणी का व्यवहार करते हैं तो उसे प्रसन्नता होती है। यदि अभद्र वाणी का प्रयोग होता है तो विशेष व्यक्ति का विशेष अवस्था के अतिरिक्त उसका कुप्रभाव भी प्रत्यक्ष सिद्ध है।"

यदि स्वास्थ्य चाहो—"स्वामी जी कहा करते थे कि जो व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता है वह यौवन मे खूब खाये और अच्छी प्रकार भागे दौड़े, परिश्रम व व्यायाम करे जब बुढ़ापा आने लगे तो खाने की मात्रा कम करता जाय, धीरे चले, थोड़ा सोये तथा चिन्तन करे। स्वस्थ रहने का यही राज मार्ग है।

जीवन क्या है ?—'उत्पत्ति और विनाश, और मृत्यु प्रकाश और छाया की भांति सदा साथ-साथ रहते हैं। जीवन के सौन्दर्य की पराकाष्ठा मरण मे है। यदि पुष्प पुष्पित होकर झड़े नहीं, धान खेत में पक कर कटे नहीं तो उनका होना किस काम का? जीवन का वह सौन्दर्य द्विगुणित हो जाता है जब वह मरण किसी के जीवन के लिये होता है। प्रभु स्वयं निरपेक्ष परोपकार कर रहे हैं। करुणा निधान भगवान् के अनन्त करुण-कण अनवरत इस सृष्टि में बरस रहे हैं। जगत् के सभी पदार्थ परोपकार का, परस्पर की सहायता का उत्सर्ग और बलिदान का सन्देश सुना रहे हैं।"

बलिदान—"पीड़ितों का परित्राण करना, अन्याय का दमन करना धर्म की रक्षा करना, शक्ति का उपयोग करना है। संसार शक्तिशालियों का है यहां निरन्तर संघर्ष चल रहा है। इस संघर्ष में जो शक्तिशाली हैं वही बच पाते हैं। शरीर का सौन्दर्य और सुख शक्ति है वही बच पाते हैं। जो शरीर रोगी है उसमें सुख न शान्ति है। सहिष्णुता तो उसमें होती ही नहीं। दूसरे का उपकार क्या करेगा वह स्वयं अपने लिये ही भार स्वरूप होता है। परन्तु जिनके पास शक्ति है, जिनकी देह बलवान है, शरीर से हृष्ट पुष्ट हैं वे अपनी शक्ति का दोनों प्रकार से उपयोग कर सकते हैं वे अपने बल से किसी को पीड़ा भी दे सकते हैं। और बचा भी सकते हैं। इसमें प्रथम मार्ग दुर्जनों का है उसकी शक्ति परेशां परिपीडनाय होती है। सज्जनो की सरणि सदा दुर्जनों से विपरीत होती है उनका बल ही क्यों सर्वस्व पर-रक्षणार्थ होता है। उनकी विभूतियां परोपकाराय होती है।"

वीरता:—"वीरता मनुष्य को कर्त्तव्यारूढ़ करती है और भीरुता कर्त्तव्य से विमुख करने का साधन है। वीर व्यक्ति विघ्न बाधाओं से हट कर सफलता के दर्शन करता है, भीरु मनुष्य विघ्न बाधाओं के सम्मुख आने पर घबरा कर धर्म-पथ छोड़कर अधर्म पथ गामी हो जाता है।"

स्त्री शिक्षा:—"कन्याओं के भावी विकास को जिस प्रकार स्त्रियां समझ सकती हैं, पुरुष नहीं समझ सकते। इसलिये कन्याओं की शिक्षा का सब प्रबन्ध स्त्रियों के हाथ में ही होना चाहिए। ताकि कन्यायें भविष्य में अच्छी गृहिणी और माताएं हो सकें।

(वीर सन्यासी पुस्तक से साभार)

❋

गोरक्षा कानून केन्द्र को ही बनाना पड़ेगा

बिना केन्द्र के कानून बनाये गोहत्या बन्द नहीं हो सकती

सर्व दलीय गोरक्षा महाभियान के अध्यक्ष श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी ने सरकार की गौहत्या बन्दी सम्बन्धी नीति के विषय में पत्रकार परिषद में निम्नलिखित वक्तव्य प्रस्तुत किया:—

गौहत्या निरोध कानून के लिये हमारी एक ही मांग है। समस्त गौवंश अर्थात् गाय, बछड़ा, बछड़ी, बैल तथा सांडों का वध सम्पूर्ण रूप से बन्द हो, इसमें किसी प्रकार का विकल्प न हो और यह कानून केन्द्र द्वारा बनना चाहिये।

यह बात बार बार दुहराई जाती है कि यह विषय केन्द्र का न होकर राज्य सरकारों का है, यह एक दम मिथ्या। बात यह है कि सन १९५३ में सेठ गोविन्द दास जी ने संसद में एक गोरक्षा सम्बन्धी विधेयक पुनः प्रस्तुत किया था, हमारे स्वर्गीय नेहरू जी नहीं चाहते थे कि ऐसा कानून बने। केन्द्र की तो बात छोड़ दीजिये, वे राज्यों में भी कानून बनाने के विरुद्ध थे। जब हम लोगों ने उत्तर प्रदेशीय सरकार के सम्मुख गौ रक्षार्थ कानून बनाने को लखनऊ में सत्याग्रह किया और वहां तत्कालीन मुख्य मन्त्री बाबू सम्पूर्णानन्द जी के द्वारा कानून बन गया तब नेहरू जी ने कहा था, यू० पी० सरकार ने यह गलत कदम उठाया है। किन्तु बाबू सम्पूर्णानन्द जी दृढ़ थे, उन्होंने कुछ परवाह नहीं की। कानून बन गया। परन्तु केन्द्र में तो नेहरू जी का पूर्ण प्रभाव था, उन्होंने धमकी दी कि यदि यह कानून बना तो मैं त्यागपत्र दे दूंगा। उनके त्याग पत्र की रक्षा के लिए महाधिवक्ता (एटार्नी जनरल) से यह कहलाकर कि यह राज्य सरकारों का विषय है। उस समय बात टाल दी गई।

मैंने विधि विशेषज्ञों से पूछा है, उनका कहना है कि गौहत्या निरोध का कानून तो केन्द्रीय संघ सरकार को ही बनाना चाहिये। भारत के संविधान की हिन्दी प्रतिलिपि में जो लोक सभा द्वारा प्रामाणिक और स्वीकृत है उसमें ४७ वीं धारा अनुसूची में भी प्रथम अर्थात् संघ सूची में १७ में आता है अर्थात् संघ सरकार को क्या क्या करना चाहिये उस सन्दर्भ में यह ४८ वीं धारा है उसमें स्पष्ट निर्देश है कि

(४८) 'राज्य कृषि और पशुपालन को आधुनिक और वैज्ञानिक प्रणालियों से संघठित करने का प्रयास करेगा तथा विशेषतः गायों और बछड़ों तथा अन्य दुधारु और वाहक ढोरों की नस्ल के परिरक्षण और सुधारने के लिये तथा उनके वध का प्रतिषेध करने के लिये अग्रसर होगा।

अब यह संघ सूची धारा में है, तो इसका पालन संघ को ही करना चाहिये न कि राज्य सरकारों को। राज्य सरकारों के लिये तो १५वीं धारा पृथक है। वह राज्य सूची २ के १५ में है। वह इस प्रकार है (राज्य सरकारों को) पशु के नस्ल का परिरक्षण, संरक्षण और उन्नति तथा पशुओं के रोगों का निवारण, शालिहोत्री प्रशिक्षण और व्यवसाय।

जब १५वीं धारा में राज्यों को परिरक्षण, संरक्षण, उन्नति और रोगों के निवारण तथा व्यवसाय का ही अधिकार है, तो गौहत्या बन्द करना उसका विषय कैसे हो सकता है?

किन्तु हम कानूनी दाव पेचों में पड़ना नहीं चाहते, यदि मंत्रीगण इसे राज्य का ही विषय मानते हैं, तो वे संविधान में संशोधन करके इसे संघ का विषय बना लें संविधान में संशोधन तो उन्हें करना ही होगा, क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय ने अनुपयोगी बैलों और सांडों का वध करने की आज्ञा दी है। सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय कानून बन जाता है, हम किसी भी दशा में बैल तथा सांडों का वध स्वीकार नहीं कर सकते। इनका निषेध कानून में परिवर्तन करने से ही हो सकेगा।

वैसे केन्द्रीय सरकार निजशासित राज्यों के लिये तो कानून बना ही सकती है और उन्हें अन्य राज्यों में भी लगाने का अधिकार भी है। यदि इसे राज्यों के ही ऊपर छोड़ दिया गया, तो सम्पूर्ण देश में कभी गोहत्या बन्द नहीं हो सकती। क्योंकि उन्होंने कुछ को छोड़ कर १९ वर्ष में कोई कानून नहीं बनाये, मद्रास सरकार ने अब भी कहा है 'हमारा इरादा गोहत्या निरोध का कोई कानून बनाने का नहीं है। 'केन्द्र सरकार उन्हें विवश भी नहीं कर सकती। अतः यह कानून तो केन्द्र को ही बनाना पड़ेगा। तभी सम्पूर्ण देश से गोहत्या बन्द हो सकेगी। जो हमारी मांग है और हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। अतः केन्द्रीय सरकार को ही जैसे हो तैसे लोकसभा के अगले सत्र में ही गोहत्या निरोध का कानून बनाना चाहिये अन्यथा गोपाष्टमी से सैकड़ों लोग अनशन करके प्राण दे देंगे, इसका पाप सरकार को लगेगा।

श्री ब्रह्मचारी जी ने अन्त में कहा कि जिस प्रकार सरकार ने गोआ के भविष्य के सम्बन्ध में जनमत संग्रह करने का निश्चय किया है उसी प्रकार गोहत्या बन्दी के सम्बन्ध में भी सरकार को जनमत संग्रह करना चाहिये और जनता के मत के ऊपर निर्णय कर देना चाहिये।

"व्यवहार भानु सार लेखन प्रतियोगिता"

आर्य युवक परिषद् दिल्ली के प्रधान श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु, आर्योपदेशक ने सारे देश की जनता से अपील की है कि:--

जो महर्षि दयानन्द कृत व्यवहार भानु पुस्तक जो $\frac{२०×३०}{१६}$ साईज ४८ पृष्ठ सफैद कागज पर सार्वदेशिक सभा नये आठ पैसे में छाप रही है कि स्वाध्याय व प्रचार के लिए आर्य युवक परिषद् दिल्ली ने उक्त प्रतियोगिता कराने का सफल आयोजन किया है। हजारों की संख्या में ये पुस्तक शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले युवक, युवतियों में वितरित होनी चाहिये परिषद् की योजना है कि स्कूलों व कालेजों में पढ़ने वाले जो बालक, बालकाऐं "व्यवहार भानु" पुस्तक को पढ़ने के उपरान्त उसका सार कम से कम ३ पृष्ठों में १००० शब्दों तक शुद्ध, सुवाच्य और सुलेख लिख कर परिषद् कार्यालय १६५४, कूचा दक्खिनीराय, दरियागंज में भेज देंगे।

उन लेखों को जांचने पर सर्व श्रेष्ठ १२ स्कूल वा कालेज के छात्र छात्राओं को अलग २ पारितोषिक तथा ३३ प्रतिशत से ऊपर अङ्क पाने वाले छात्र छात्राओं को परिषद् की ओर से प्रमाणपत्र भी दिये जावेंगे। आशा है कि आर्य परिवार, आर्य शिक्षण संस्था तथा आर्यकुमारसभाऐं इस आयोजन में अपने २ बच्चों को प्रेरित कर अधिक से अधिक "सम्मिलित" करायेंगे।

हरिजनों पर अत्याचार असह्य

उ० प्र० सरकार ध्यान दे !

महान आश्चर्य का विषय है कि स्वतन्त्रता की प्राप्ति के १८ वर्ष पश्चात् भी भारत में हरिजन दयनीय अवस्था में है। और उन पर पूर्व की भांति अन्याय-अत्याचार किये जा रहे हैं। सुना गया है कि मुरादाबाद जिले के ग्राम-लहरा कमंगर में वहां जमीदार मुसलमान लोगों ने उनके धर्म मन्दिर और पीपल के वृक्ष का सफाया करके वहां जबरदस्ती कब्रिस्तान बना दिया और उनके साथ मारपीट की और उन्हें अपमानित किया। उनके इस गुण्डपन का समर्थन करने मुरादाबाद क्षेत्र के मुस्लिम एम० पी० भी गये। ग्राम में पुलिस का पहरा है परन्तु सर्वत्र आतंक छाया हुआ है। यह गांव मुस्लिम गढ़ सम्भल व सराय तरीन के साथ लगता है।

उ० प्र० सरकार का कर्तव्य हो जाता है कि वह इस प्रकार के गुण्डेपन का कड़ाई के साथ दमन करे और वहां के हरिजनों के अधिकारों की रक्षा करे। सरकार की दब्बू एवं साम्प्रदायिकता पोषक नीति का ही यह कुपरिणाम है। सरकार को इस विनाशक नीति का परित्याग कर ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये अन्यथा इसके भयंकर कुपरिणाम होंगे। हरिजनों पर अत्याचार किसी भी अवस्था में सहन नहीं किया जायगा। इस बात को भली भांति सरकार को समझ लेना चाहिये।

--ओम्प्रकाश त्यागी

श्रावणी पर्व का

वैदिक स्वरूप

श्री द्वारकानाथ जी, प्रधान आर्य समाज फिरोजपुर छावनी

श्रावणी पर्व आर्य्यों का एक प्रसिद्ध पर्व है। सभी आर्य्य समाजें इस पर्व को प्रतिवर्ष बडे उत्साह से मनाती भी हैं। प्राय.-उस पर्व को हम वेद-सप्ताह के रूप में मनाते हैं। किसी २ समाज के अन्दर तो वेद कथा कई सप्ताहों तक चलती है। यह सब कुछ होने पर भी हम वेद-पाठी बन न सके। क्यों? कारण स्पष्ट है कि हमारी समाजें उसका नियम पूर्वक आरम्भ नहीं करतीं, इस के साथ २ अधिकारी वर्ग अपना आत्म शोधन नहीं करते-सारा कार्य एक रोटीन (Routine) में ही हो रहा है। वेद मन्त्रों का उच्चारण भले ही हम ऊंचे २ स्वरों में करते रहें परन्तु जब तक हम अपने हृदय की गहनगुफा में उतरकर उन वेद मन्त्रों के अर्थों पर विचार नहीं करेंगे तब तक प्रगति होनी असम्भव है। जब हम अपना आत्म-निरीक्षण करते हुये आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे तभी हम श्रावणी पर्व जैसे पवित्र वैदिक पर्व को मनाने का सफल प्रयास भी कर पायेंगे। फिर हम महात्मा मनु के इन निम्नलिखित शब्दों का अनुसरण करते हुये आगे बढ़ते जायेंगे।

श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां वाप्युपाकृत्य यथाविधि, युक्त छन्दांस्यधीयीत मासान् विप्रोऽर्धे पञ्चमान्॥ पुष्ये तु छन्दसां कुर्याद्बहिरुत्सर्जनं द्विजः। म.घ शुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वार्द्धे प्रथमेऽहनि॥ ९५,९६ (मनुस्मृति अध्याय ४)

श्रावण की पूर्णिमा व भाद्रपद की पूर्णमासी के दिन विधियुक्त उपा कर्म करके साढ़े चार मास तक वेदों का अध्ययन करे। और इस की समाप्ति जब पुष्य नक्षत्र आवे तब ग्राम से बाहर जा कर करे या माघ मास के शुक्ल पक्ष के दिन उत्सर्जन विधि करे। इस का आरम्भ श्रावणी शुक्ला पूर्णिमा से ही है। इसीलिये यह पर्व भी श्रावणी का पर्व कहा जाने लगा अथवा उपाकर्म हो गया। वेद अध्ययन के इस समय में कुछ मत-भेद भी है। वशिष्ठ ने इस का काल कुछ अधिक अर्थात् साढ़े पांच मास कहा है "अर्धपंचम मासानर्ध-पृष्ठान्" ऐसा कहा है। तात्पर्य्य यह कि इस पर्व की महानता इसीलिये आर्य्यों में अधिक हो गई कि इस का सीधा सम्बन्ध वेद अध्ययन, आत्मनिरीक्षण व आत्म-शोधन से है। वर्षाऋतु में अपनी स्वाध्याय की कमी को पूर्ण करके अगामी वर्ष के लिये नव चेतना, नव ज्योति और नया उत्साह भरते हुये आर्य्य आगे बढ़ते हैं और जो कुछ त्रुटियां अपने आप में दिखाई देती हैं उनका सर्वथा त्याग करना ही आर्य्य अपना कर्तव्य समझते हैं।

पहिले तो श्रावणी के दिन लोग बाहर किसी तालाब या नदी आदि पर जा कर नित्यकर्मादि कृत्य करने के पश्चात् बृहद्-यज्ञ करते थे, यज्ञोपवीत परिवर्तन होता था। परस्पर प्रेम बढ़ाना, कटुता का सर्वथा त्याग करना इत्यादि २ व्रत लेकर नवस्फूर्ति का सचार करते हुये आगे बढ़ते थे और यही श्रावणी पर्व का वैदिक-स्वरूप था। आज भी आर्यजनों से यही नम्र निवेदन है कि श्रावणी पर्व के दिन अपना आत्मनिरीक्षण करें, आत्म शोधन करें, और फिर नियम-पूर्वक वेदपाठ प्रारम्भ करते हुये श्रावणी पर्व को सफल बनावें। यहां इस बात का उल्लेख करना भी आवश्यक हो गया है कि इस पर्व के साथ २ कुछ अन्य परम्पराएं भी जुड़ गई हैं, विशेष तौर पर इस पर्व को कई राखी या रक्षाबन्धन व सलोनो के रूप में भी मनाते हैं। रक्षाबन्धन के विषय में भविष्य पुराण के अन्दर महारानी शची (इन्द्र-पत्नी) ने अपने पति इन्द्र के हाथ में रक्षा-सूत्र बांध कर उसे शत्रुओं के साथ युद्ध करने के लिये भेजा था। कहते हैं तभी से इस रक्षाबन्धन पर्व को प्रति वर्ष मनाते चले आते हैं ये ऐतिहासिक सत्य है या नही, इस पर मुझे कुछ नहीं कहना, परन्तु अब समय के साथ २ इस का स्वरूप बदल गया है। अब बहिनें भाई के हाथों में राखी तो बांधती हैं परन्तु अब जहां राखी का रूप बदला वहां बहिनों व भा.यों के हृदय भी बदले। राखी का प्राचीन गौरव व आदर्श समाप्त हो गया। दिखावा मात्र रह गया अन्यथा हम भले ही मिट जाते परन्तु अपनी ही बहिनों को पाकिस्तान बनने पर मुसलमानों के लिये छोड़ न आते। इतिहास साक्षी है कि अनेकों बहिनें पाकिस्तान के अन्दर मुसलमानों की बीवियां बनी, दासियां बनी और अरब देशों के अन्दर ले जा कर गुण्डों द्वारा बिकीं और हम कुछ कर भी न सके। नवयुवक भाई जिन के हाथों में बहिने अपनी रक्षा हेतु राखियां बांधती रही, कायरों की तरह बहिनों को वहीं पाकिस्तान में छोड़ आये, रक्षा करने का प्रण तो लिया, परन्तु निभा न सके। आज की राखी सुन्दर अवश्य हैं, गोटे की राखी, कोमल रेशम की राखी, सिलमे सितारों से जड़ी हुई राखी, केवल मात्र कलाई की शोभामात्र बन कर रह गई। आज बहिन राखी बांधती है इस आशा से कि उसे कुछ धन प्राप्त होगा भाई भी कुछ मिठाई व धन दे कर केवल मात्र अपना कर्तव्य समझ कर ही इस राखी पर्व को मना लेना अपना धर्म समझते हैं। कितना विकृत रूप हो गया है इस राखी का, श्रावणी पर्व का। जहां यह पर्व प्रेरणा का सूत्र था, कायरों के अन्दर भी जोश भर जाता था, आज ह्रास बन कर रह गया। इतिहास साक्षी है राजपूत रमणियां आपत्तिकाल में राजपूत राजाओं के पास इसी राखी को भेज कर अपनी मान मर्यादा की रक्षा के लिये प्रार्थना किया करती थी तब उनकी रक्षा भी होती थी, भले ही प्राण चले जायें परन्तु राजपूत राखी की इज्जत जी जान से करते थे। बहिनों की लाज की रक्षा अवश्य होती थी। मुसलमान बादशाह भी इस राखी की इज्जत किया करते थे। पता नहीं यह ऐतिहासिक घटना कहां तक सत्य है। कहते हैं कि एक बार गुजरात के शासक बहादुर शाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। उस समय चित्तौड़ की राजपूत महारानी कर्णवती उस के आक्रमण को रोकने में असमर्थ थी। मुगल बादशाह हुमायुं को रानी कर्णवती ने राखी भेज कर सहायता के लिये पुकार की हुमायुं की फौज दूसरी ओर अफगान को विजय करने में लगी हुई थी। फिर बहादुर शाह भी तो एक मुसलमान बादशाह था। मुसलमान बादशाह अपने ही मुसलमान भाई से लड़ना नहीं चाहता था, ऐसे कठिन समय में भी हुमायुं राजपूत रानी की भेजी हुई राखी की रक्षा करना अपना कर्तव्य समझ अपनी सेना को ले कर मेवाड़ पहुंच गया और राजपूत रमणी कर्णवती का इस संकट से उद्धार किया। तात्पर्य्य यह कि ऐसे कठिन समय में भी राखी के तागों ने ही विजय पाई। अंग्रेज इतिहासकारों ने भी इस घटना को सत्य माना है।

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी के विचारों में रक्षा बन्धन व श्रावणी पर्व राजा की ओर से एक बृहद्-यज्ञ के रूप में मनाया जाता था। सभी शालाओं के विद्यार्थियों के हाथों में राजा की ओर से "रक्षा" बांधी जाती थी जिस का प्रयोजन यह होता था कि प्रजा और राजपुरुष दोनों मिल कर उन की रक्षा करें किसी प्रकार की असुविधा या कष्ट उन्हें प्राप्त न हो।

रक्षा बन्धन का दूसरा रूप सलूनो है। ऐसा प्रतीत होता है कि मुगल-बादशाहों के शासनकाल में मुसलमानों का नया साल शायद इसी दिन से आरम्भ होता था जो इसे "साले नो" अथवा नया साल कह कर इस पर्व को इसी रूप में मनाते थे। इस पर कुछ और विस्तार से न लिख कर एक अन्य गाथा का उल्लेख करना भी आवश्यक हो गया है वह है आर्य समाज का १९३९ का हैदराबाद सत्याग्रह" जो फरवरी मास १९३९ के आरम्भ में सर्वप्रथम सर्वाधिकार दे कर श्रद्धेय महात्मा नारायण स्वामी जी की कमान के अन्दर शुरू हुआ। वैसे इस सत्याग्रह की रूप रेखा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री ने १५ जनवरी को ही बना कर समस्त आर्य समाजों को, आर्य लोगों को यह प्रेरणा करते हुये सूचित कर दिया था कि २२ जनवरी को "सत्याग्रह दिवस" बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया जाये जिस का पालन भी बड़े उत्साहपूर्वक हुआ। परिणामस्वरूप रियासत के आठ सौ सत्याग्रही तो पकड़ भी लिये गये। सार्वदेशिक सभा ने फिर आदेश दिया कि "हैदराबाद दिवस" २५ जनवरी को समस्त भारत के अन्दर मनाया जाये जिस का पालन भी दृढ़ उत्साह से हुआ जिसे देख कर हैदराबाद की सरकार भी क्षुब्ध हो गई और गण्यमान्य आर्यसमाज के पच्चीस नेताओं को रियासत ने हिरासत में ले लिया। इधर सार्वदेशिक सभा ने भी घोषित कर दिया कि हमारा यह सत्याग्रह एक विशुद्ध धार्मिक होगा, सम्प्रदायिक नहीं। अब यह हमारे जीवन और मरण का प्रश्न है। इस तरह सर्वाधिकार दे कर महात्मा नारायण स्वामी जी और कुंवर चांद करण शारदा जी,

(शेष पृष्ठ १२ पर)

लेखक महानुभाव

कृपया छोटे लेख भेजा करें।

—प्रबन्धक

भूल सुधार

सार्वदेशिक ८-९-६६ के अंक में आर्य समाज बगसूर के नाम से प्रार्थना भवन का चित्र छपा था वह प्रार्थना भवन मगुलर आर्यसमाज का है।

—सम्पादक

श्री जिज्ञासु-स्मारक-समारोह स्थगित

समस्त आर्य जनों को विशेष कर स्व० श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के शिष्यों भक्तों और प्रेमी जनों को खेद पूर्वक सूचित किया जाता है कि १४-१५-१६ अक्टूबर को निर्धारित श्री जिज्ञासु स्मारक समारोह स्थगित कर दिया गया है क्योंकि आर्यसमाज पंजाबी बाग द्वारा प्रदत्त भूमि अभी तक रा० सा० कपूर ट्रस्ट को विधिवत् हस्तान्तरित नहीं हो सकी। अगली तिथियों की यथा समय पुनः सूचना दी जाएगी। भवदीय

—युधिष्ठिर मीमांसक

उत्सव

—आर्यसमाज हरदोई का ८२ वां उत्सव दि० २१-२२-२३ अक्टूबर को होना निश्चित हुआ है।

संस्कृत के विद्वान् सम्मानित

जयपुर-वेद संरक्षण के उद्घाटन के अवसर पर मुख्यमन्त्री श्री सुखाड़िया ने श्री प० वीरसेन वेदश्रमी श्री प० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड तथा श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक को शाल तथा मुद्रा भेंट कर सम्मानित किया।

—आर्य कन्या शाला इटारसी में श्रावणी उपाकर्म, समारोह पूर्वक मनाया गया।

शुद्धि

—आर्य समाज इटारसी ने ईसाई परिवार की शुद्धि की। परिवार में सात सदस्य हैं। अनेक प्रतिष्ठित महानुभाव इस शुद्धि समारोह में सम्मिलित हुए।

—आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत में जन्मत. ईसाई महिला कुमारी आदरामनो बी० ए० ने वैदिक धर्म प्रवेश किया और अनिला नाम स्वीकार किया। गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में श्री जयसिंह जी पंवार बी. ए. के साथ श्री प० सुखदेव जी शास्त्री ने विवाह संस्कार कराया।

वैदिक धर्म प्रसार और सूचनायें

शोक

स्वामी आत्मानन्द दण्डी जी के निधन पर आर्य समाज स्याना में शोक प्रकट किया है। श्री स्वामी जी ने स्याना आर्य समाज की बड़ी सेवा की थी।

निबन्ध प्रतियोगिता

श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु प्रधान आर्य युवक परिषद् ने कक्षा आठवीं तक के समस्त छात्र तथा छात्राओं से अपील की है कि "महर्षि दयानन्द और हिन्दी "भाषा" विषय पर दो प्रश्नों में ५०० शब्दों तक का निबन्ध लिख कर ३० अक्टूबर तक श्री अटल कुमार गर्ग, एल, पी, टी ३३०, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-३ के पते पर भेज देवें।

विजेता छात्र छात्राओं को पारितोषिक दिये जावेंगे।

-- सार्वदेशिक सभा के उपदेशक श्री अमरनाथ शास्त्री ने आर्यसमाज गोहाटी (आसाम) में एक मुसलिम सैनिक अफसर को सपरिवार वैदिक धर्म में दीक्षित किया। अनेक महानुभावों ने इस समारोह में भाग लिया।

वेद प्रचार

—जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, झांसी के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह, श्रावणी उपाकर्म श्री कृष्णजन्माष्टमी के समारोह पूरे जिले भर में कराये गए। सम्मिलित रूप से श्रावणी उपाकर्म आर्यसमाज सदर बाजार झांसी, श्री कृष्ण जन्माष्टमी सीपरी बाजार झांसी, एवं नगर, पुलिया नं० ६, मोठ, चिरगांव, ऋषि कुंज, आदि में किया गया। इसमें श्री पं० विश्ववर्धन जी विद्यालंकार और श्री कमलदेव शर्मा ने महत्वपूर्ण भाग लिया।

—आर्य समाज आर्य नगर खेड़ी की ओर से ग्राम सेमाडा छोटी सादड़ी में श्री प० मोहनसिंह आर्य द्वारा वैदिक धर्म प्रचार हुआ।

—आर्य समाज गया के तत्वावधान में वेद सप्ताह, श्रावणी उपाकर्म, सत्याग्रह बलिदान दिवस एवं श्री कृष्णजन्माष्टमी पर्व सोत्साह मनाये गए।

—आर्य वीर दल गाजियाबाद में श्री पी० चन्द्रा जी (भू० पू० अध्यक्ष नगर पालिका) की अध्यक्षता में शारीरिक व्यायाम, आसन, भाला-छुरा आदि का प्रदर्शन बड़ा ही सफल रहा।

—आर्य वीर दल, रायपुर (म० प्र०) की ओर से भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। स्थानीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

आर्य समाज, बगहा ने वेद प्रचार सप्ताह बड़ी धूम-धाम से मनाया। आर्य वीर दल का भी बड़ा सहयोग रहा।

—आर्य समाज, कोटद्वार में वेद प्रचार सप्ताह समारोह से मनाया गया। श्री ब्र० बालकराम जी की अध्यक्षता में यजुर्वेद द्वारा यज्ञ हुआ।

—आर्य समाज,भरथना (इटावा) में वेद प्रचार सप्ताह बड़ी-धूम-धाम से मनाया गया। वैदिक साहित्य प्रसाद रूप में वितरण किया। पूज्य श्री स्वामी परमानन्द जी दण्डी के प्रभावशाली भाषण हुए।

चुनाव

—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा नई दिल्ली के निर्वाचन में सर्व श्री दीवानचन्द जी ठेकेदार प्रधान, म० किशनचन्द्र आर० सी० सूद, दयाराम शास्त्री उपप्रधान, आशानन्द जी मन्त्री, दरबारीलाल जी गौरीशंकर जी, ओम्प्रकाश जी तलवाड़, उप-मन्त्री बृजलाल सोनी कोषाध्यक्ष एवं देवराज कोछड़ लेखा निरीक्षक चुने गए।

—आर्य समाज जौसी के चुनाव में श्री युवराज राय जी प्रधान, एवं श्री डा० बुद्धदेव जी आर्य मन्त्री चुने गए।

—आर्य कुमार सभा, कासगंज के निर्वाचन में श्री रमेशचन्द्र जी गुप्त प्रधान, श्री दिनेशचन्द्र जी बिड़ला मन्त्री तथा श्री गौरी शंकर जी माहेश्वरी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—दयानन्द बाल-सदन, चांद बावड़ी रोड अजमेर के आगामी वर्ष के लिए साठ हजार से अधिक का बजट स्वीकार हुआ।

श्री दत्तात्रेय जी बावले एम० ए० आचार्य दयानन्द कालेज अध्यक्ष, तथा श्री रमेशचन्द्र जी भार्गव एडवोकेट मन्त्री निर्वाचित हुए।

—आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के चुनाव में श्री ला० रामगोपाल शालवाले प्रधान, उपप्रधान सर्वश्री नारायणदासजी कपूर, दीवानचन्द जी रामलाल जी और रतनचन्द सूद, प्रधान मन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल, मन्त्री सर्वश्री ओम्प्रकाश जी तलवार, रामशरणदास जी और देवराज जी चड्ढा। कोषाध्यक्ष श्री बलवन्तराय जी खन्ना, लेखा निरीक्षक श्री गुमानसिंह जी चुने गए।

—आर्य समाज ईमापुर (बुलन्दशहर) ने सार्वजनिक सभा में गोवध-बन्दी के लिए प्रस्ताव स्वीकृत कर केन्द्रीय सरकार को भेजा है।

—आर्य समाज बिन्दकी ने एक विराट सभा में गोवध बन्दी के लिए प्रस्ताव स्वीकार कर भारत सरकार को भेजा।
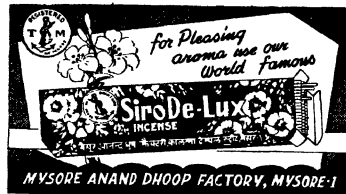
(पृष्ठ १० का शेष)

दोनों को अपना उत्तराधिकारी बना कर और चालीस सत्याग्रहियों के साथ हैदराबाद के सुलतान बाजार में सत्याग्रह करने के लिये भेज दिया जो वहां पहुंचते ही गिरफ्तार कर लिये गये। परन्तु एकाध दिन के पश्चात् हैदराबाद सरकार ने न मालूम किन कारणों से विवश हो कर उन्हें मुक्त कर दिया। महात्मा जी ने शोलापुर जा कर दो फरवरी को फिर सत्याग्रह करने की घोषणा करदी। इधर आर्य्यन कांग्रेस के अध्यक्ष श्री लोकमान्य अणे ने श्री सर अकबर हैदरी को पत्र लिखा कि आर्य्यसमाज तो अपने नागरिक अधिकार ही मांगता है। यदि यह मागे पूरी न की गई तो सम्भव है कि हिन्दु-मुस्लिम-एकता को धक्का पहुंचे, परन्तु इस का कोई असर निजाम पर जो उन दिनों H. E. H. उस्मान अली साहेब के नाम से सिंहासनारूढ़ थे, न हुआ। इस तरह यह सत्याग्रह जो सार्वदेशिक सभा द्वारा अपने उचित अधिकारों की रक्षा के लिये आरम्भ किया था, और भी जोर पकड़ गया। यहां संकेतमात्र से यह कह देना असगत न होगा कि हमारी उचित मांगे क्या थीं? साधारणतया तो हमारी चौदह मांगे थीं जो उस समय की सार्वदेशिक सभा ने रखी थीं, उन सभी का उल्लेख लेख के लम्बा हो जाने के भय से नहीं करता, परन्तु मुख्यत: आर्य समाज यह चाहता था कि जो उपदेशक बाहर से रियासत में उपदेश करने जायें उन पर कोई पाबन्दी न हो। आर्य लोग त्योहार उसी स्वतन्त्रता से मनायें जो स्वतन्त्रता मुसलमानो को प्राप्त है। हवन-यज्ञ करने के लिये या हवन कुण्ड स्थापित करने की आज्ञा की आवश्यकता न समझी जाये। जेलखानों में कैदियों को मुसलमान न बनाया जावे। सरकारी कर्मचारी जो आर्य हैं उन पर सख्ती या सम्प्रदायिकता का व्यवहार न हो। आर्यों के घरों पर, आर्यसमाज के मन्दिरो पर झण्डा लगाने की स्वतन्त्रता दी जाये। पुस्तकें बिना जांच जब्त न की जायें।

(क्रमश:)

वेद कथा अंक के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण पत्र

19 Windsor Place
NEW DELHI-1
D. 12. 9. 1966

No. 535. A.D.M.

Dear Acharya Jee.

It is kind of you to send me Ved Katha Ank. I also thank the gentleman who has made it Possible for you to distribute it as a gift among the lovers of the Vedas I have derived a great deal of benefit from it and I hope others will do the same It will be good of yau to get it translated into all languages of India so that a larger number of persons can draw inspiration from it.

I trust you are keeping fit.

Yours sincerely
(D. C. Sharma)

आर्यसमाज खासपुरा

खासपुरा आर्य समाज का ३७ वां उत्सव ८ से १० सितम्बर को हुआ। श्री डा० के० एल० साहु मन्त्री आर्यसमाज के पुरुषार्थ से ग्राम के बाहर सड़क के किनारे आर्य समाज में आम, नीम्बू और आंवले के वृक्ष लगवा दिये और ओ३म् ध्वज लहरा दिया है।

श्री म० जोधसिंह जी आर्य इस के लिए दिन रात प्रयत्नशील हैं।

—श्यामसिंह आर्य

महान् यज्ञ

गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट करतार पुर की ओर से दि० २१ से १२ अक्टूबर को यज्ञ होगा। महात्मा प्रभु आश्रित जी यज्ञ के ब्रह्मा होंगे।

क्षमा करेंगे

—अनेक महानुभाव उर्दू में पत्र भेजते रहते हैं। उनसे हिन्दी में पत्र भेजने की प्रार्थना है। यदि उर्दू में लिखा कोई समाचार न छप सके तो उसके लिए हमें क्षमा करेंगे। —प्रबन्धक

गोरक्षा आन्दोलन में केरल के आर्य नेता जेल में

भारत भर में चल रहे गोरक्षा आन्दोलन की गति को तीव्र करने के लिये आर्य यूथ लीग केरल के महामन्त्री श्री नरेन्द्र भूषण जी ने रोग शय्या से उठते ही गोरक्षा के लिये प्रदेश का तूफानी दौरा आरम्भ किया। त्रिवेन्द्रम में बूचड़खाने के विरुद्ध आपने ६ गो भक्तों के प्रचण्ड सत्याग्रह का नेतृत्व किया। श्री नरेन्द्र भूषण जी अपने ४६ साथियों सहित त्रिवेन्द्रम जेल में हैं।

—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु

—आर्यसमाज लुध्यावा रोड फिरोजपुर छावनी ने गो हत्या बन्द करने और स्वामी रामचन्द्र जी वीर तथा सन्त महात्माओं के साथ दुर्व्यवहार को बन्द करने के लिए सरकार से अनुरोध किया है।

—आर्य समाज, दयानन्द मार्ग अलवर एवं स्थानीय आर्य संस्थाओं की एक विराट सभा में सरकार से गोवध बन्द करने की मांग की है। प्रधान मन्त्री एवं गृह मन्त्री को प्रस्ताव भेजे गए।

—आर्यसमाज, नगीना (बिजनौर) ने एक प्रस्ताव द्वारा अविलम्ब गो वध बन्दी की मांग की है।

—आर्य समाज, नगल टाउनशिप ने सरकार से तुरन्त गोवध बन्दी की मांग की है। श्री स्वामी रामचन्द्र जी वीर के प्रति चिन्ता व्यक्त की है।

—आर्य समाज, शाहगंज (जौनपुर) ने एक प्रस्ताव द्वारा तुरन्त गोवध बन्द करने की मांग की है।

—आर्य समाज, अमरोहा ने एक प्रस्ताव द्वारा गोवध बन्दी के लिए सरकार से मांग की है।

—आर्य समाज एवं आर्य वीर दल रामपुर ने एक प्रस्ताव द्वारा पूर्ण गोवध बन्दी की मांग की।

—आर्य स्त्री समाज, गंगा नहर का किनारा रुड़की ने एक प्रस्ताव में महात्मा गांधी के नाम पर गोवध बन्द करने की मांग की।

—आर्य समाज, मल्हारगंज इन्दौर ने एक प्रस्ताव द्वारा सरकार से गोवध बन्दी की मांग की और सैकड़ों साधु महात्माओं के प्रति हार्दिक श्रद्धा प्रकट की है।

—आर्य समाज सल्लापुर वाराणसी ने श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर गोरक्षा आन्दोलन के प्रति पूरी सहानुभूति प्रकट करते हुए एक प्रस्ताव में सरकार से गोवध-बन्द करने की मांग की है।

—आर्य समाज इटारसी ने एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से पूर्ण गोवध बन्दी की मांग की।

साहित्य समालोचना

आर्य समाज के दिवंगत

महापुरुषों के जीवन

आन्दोलन तथा प्रवृत्तियां ३ भाग (एक ही जिल्द में)

लेखक—पं० देवप्रकाश जी पूर्व आचार्य अरबी संस्कृत विद्यालय गंडासिंह वाला अमृतसर

२०×३०/१६ पृष्ठ लगभग ५०० मू० ४)

प्रकाशक—ला० जगतराम एस-डी-ओ. १०० दयानन्द नगर अमृतसर

ग्रन्थ से पाठक को आर्य-समाज का निर्माण और उसे उन्नत करने वाले महानुभावों की सच्चरित्रता, त्याग एवं बलिदान की भावना, आर्य समाज के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा एवं कार्य कलाप से अमित प्रेरणा प्राप्त हो सकती और आर्य समाज की विविध प्रगतियों और प्रवृत्तियों का भी अच्छा बोध हो सकता है।

पृष्ठ ३८७ पर आर्य समाज की विदुषी स्त्रियां शीर्षक के अन्तर्गत श्रीमती शकुन्तला देवी गोयल मेरठ का परिचय अंकित है उनका परिचय तो दिया जाना ही चाहिए परन्तु दिवंगत देवियों में उनका परिचय दिया जाना अटपटा जान पड़ता है। परमात्मा की कृपा से वे अभी हमारे मध्य विद्यमान हैं। कुछ महानुभावों के जीवन परिचय में जन्म तिथियां अंकित नहीं हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान की तारीख नहीं दी गई। प्रतीत होता है पुस्तक का प्रकाशन मान्य पंडित जी की देख-रेख में नहीं हुआ है। अन्यथा ये त्रुटियां न रहने पातीं।

श्री पं० देवप्रकाश जी ने यह ग्रन्थ लिखकर अत्यन्त परिश्रम सिद्ध अभिनन्दनीय कार्य किया है और आर्य समाज के स्थायी साहित्य में मूल्यवान वृद्धि की है जिसके लिए वे आर्य जगत् की बधाई के पात्र हैं—पुस्तक पढ़ने एवं संग्रह करने योग्य है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

पावन पर्व

कवि कस्तूरचन्द "घनसार"
आर्य समाज पीपाड़ शहर (राज०)

श्रावणी पावन पर्व हमारा,
आर्य जनों के है प्रति प्यारा!

वेदाध्ययन, मन्त्र अनमोलें,
घर-घर हवन, ऋचायें बोले,
सुगन्ध-सरिता में मन धोले,
दुरित पाप सब मिटसी सारा—
श्रावणी—पावन—पर्व हमारा,
आर्य जनों के है प्रति प्यारा ॥१॥

ममता मन्द मिटाने वाला,
सुखद—प्रकाश बढ़ाने वाला,
पोप—पतन अजाने वाला,
त्रैविध सीमर चले सुखधारा—
श्रावणी—पावन पर्व हमारा,
आर्य जनों के है प्रति प्यारा ॥२॥

दानवता को दमन कराते,
मानवतापन, को अपनाते,
सद-पथ पर सब चलें चलाते,
विश्व का जब होत सुधारा—
श्रावणी-पावन पर्व हमारा,
आर्य जनो के है प्रति प्यारा ॥३॥

चरण चिह्नों पर चल ऋषिवर के,
भव्य-भावना उर-भर भर करके,
चलें सुपथ कदम दृढ धरके,
जब होवें मानव उद्धारा—
श्रावणी—पावन, पर्व हमारा,
आर्य जनों के है प्रति प्यारा ॥४॥

गर्जे—वेद—गगन घन घोरा।
बोलें सरल—जिज्ञासु मोरा,
बर्षे जलद ज्ञान बहु भोरा।
चलते रहें उपदेश फुंहारा—
श्रावणी-पावन पर्व हमारा,
आर्य जनों के है प्रति प्यारा ॥५॥

जीवन—फूल सरस विकसावें,
मन—मधुकर जिसपे मडरावें,
आयुस—लता—ललित लहरावें,
शोभित—श्रेष्ठ मानुष ससारा—
श्रावणी—पावन पर्व हमारा,
आर्य जनों के है प्रति प्यारा ॥६॥

महर्षि का उपकार न भूलें।
वेद-ज्ञान सुख भूले—भूलें,
जन-मन आज हर्ष में फूलें,
मुदित आज "घनसार" पियारा—
श्रावणी पावन पर्व हमारा,
आर्य जनों के है प्रति प्यारा ॥७॥

भारत भर में भव्य भवन आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली एवं अनेक संस्थाओं के निर्माता स्व० श्री ला० दीवानचन्द जी ठेकेदार की ८१ वीं पुण्य स्मृति के अवसर पर उनकी धर्मपत्नी आर्यदेवी श्रीमती प्रकाशवती जी आवल की

श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि अर्पित करतेहुए उन्होंने कहा कि स्व०लालाजी के शुभ-कार्य तथा उत्तम त्याग को अमली जामा पहनाने में समर्थ हो सकें, हमइस प्रयास में हैं। इस सद्भावना ने जीवन में एक उत्साह और धैर्य बना दिया है, जिससे एक शक्ति और शान्ति प्राप्त हो रही है। मैं अपनी ओर से तथा 'दीवानचन्द ट्रस्ट' की ओर से आप सबका आदर-सहित सत्कार करती हूं और आशा करती हूं कि यह समागम न केवल उनकी शुभ-स्मृति को ही बनाएगा, बल्कि स्वर्गीय लाला जी की उस भावना को भी सुदृढ़ बनाएगा, जो कि उनकी शिक्षा-प्रणाली में थी।

श्री लाला दीवानचन्द जी स्वतन्त्रता-प्रिय थे—जाति और देश को उठाने में वह हर समय तन-मन-धन द्वारा सदा तैयार रहते थे। पूज्य लाला लाजपतराय जी और पूज्य पण्डित मदन-मोहन मालवीय जी के साथ आपकी घनिष्ठ मित्रता थी। देश की इस मांग को देखते हुए जीवन-काल में ही वह Political Information Bureo की स्थापना करने वाले थे, और साथ ही आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल बनाने वाले थे, पर भाग्य ने साथ न दिया, सख्त-अफसोस है कि अपना राज्य, अपना देश देखने की इच्छा की पूर्त्ति किये बिना ही संसार छोड़ना पड़ा।

जैसा कि सब जानते हैं कि शुभ-इच्छाएं कभी मरती नहीं। 'दीवानचन्द ट्रस्ट' ने तथा 'लाला दीवानचन्द चैरिटेबल-ट्रस्ट' ने उनके अधूरे कार्यों को पूरा किया। स्वर्गीय लाला जी की संक्षिप्त जीवनी आपको 'दीवान चन्द ट्रस्ट' पेश कर रहा है। Diwan Chand Political Information Bureo स्वतन्त्रता के पश्चात् Diwan Chand Indian Information Centre कहलाया। अब यह और प्रगति कर रहा है। अब मैं, पूज्य श्री हंस राज जी गुप्त से प्रार्थना करूंगी कि वह इस पर पूर्णप्रकाश डालें। वह सौभाग्य से इस समय ट्रस्ट के मन्त्री हैं। बहन जी सत्यभरावाँ जी की याद साथ ताजा रहती ही है। 'सत्य भरावाँ ट्रस्ट' शीघ्र ही बहिन जी की इच्छानुसार सत्य भरावाँ हाल का निर्माण करने वाला है, जिससे निःसहाय देवियों को काफी लाभ पहुंचेगा।

भगवान् इन सब संस्थाओं को आगे चलने और बढ़ने का बल प्रदान करें—ताकि यह देश के हित और विकास में साथ दें। आप सबका फिर धन्यवाद करती हुई मैं इस वक्तव्य को समाप्त करती हूं।

"दीवान निवास" जो कि श्री लाला दीवानचन्द जी ने निवास के लिये बनाया था, और जो आज दीवानचन्द आवल नर्सिंग होम कहलाकर स्वर्गीय लालाजी की कीर्ति को अमर बना रहा है।

लाला रामगोपाल शालवाले का वक्तव्य

नई दिल्ली २८ सितम्बर।

गोरक्षार्थ आमरण अनशनकारी नेता श्री स्वामी रामचन्द्र वीर को किन्हीं कारणों से डिस्ट्रिक्ट जेल तिहाड़ से हटाकर उनकी प्रतिष्ठा के विपरीत इर्विन हस्पताल के साधारण वार्ड नं० ३ के बाहर निःसहाय अवस्था में डाल दिया है। उनके चारों ओर पुलिस का घेरा है।

श्री वीर जी से सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी ने भेंट की। उन्होंने अपने बयान में बतलाया कि वीर जी को जिस स्थिति में वहां रखा गया है उससे न केवल उन्हीं का वरन् सम्पूर्ण हिन्दू जनता और मानवता का घोर अपमान है। इससे हिन्दू जनता में भारी रोष फैल गया है।

उन्होंने आगे बतलाया कि वीर जी को रोगियों के गंदे वातावरण में रखा गया है जिससे उनको आत्मिक और मानसिक ग्लानि होना स्वाभाविक है।

ला० रामगोपाल शालवाले, मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस सम्बन्ध में श्रीमती इन्द्रा गांधी एवं गृहमन्त्री श्री गुलजारी लाल जी नन्दा को तार भेज कर उनसे प्रार्थना की है कि वे हस्तक्षेप करके स्थिति को भयंकर होने से बचालें।

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की पुस्तकों का सूची पत्र

१—८—६६ से ३१—१—६७ तक
निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता ३)
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ३)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
कर्त्तव्य दर्पण)५०
आर्यसमाज के प्रवेशपत्र १) सै०

निम्न प्रकाशन पर २० प्रतिशत कमीशन

सत्यार्थप्रकाश २)५०
कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश ३)५०
कुल्लियात आर्य मुसाफिर ६)
आर्यसमाज का इतिहास द्वितीय भाग ५)
जीवन संघर्ष (महाशय कृष्ण की जीवनी)
राजधर्म)५०
पुरुष सूक्त)४०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)
दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

वेद की इयत्ता १)५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७
केनोपनिषद्)५०
प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५
माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५
तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३)
योग रहस्य १)२५
मृत्यु और परलोक १)

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
,, ,, (अजिल्द) ३)
निज जीवन वृत वर्णिका)७५
बाल जीवन सोपान १)२५
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
वैदिक योगामृत)६२
दार्शनिक अध्यात्म तत्त्व १)५०
वैदिक ईश वन्दना)४०
बाल संस्कृत सुधा)५०

वैदिक राष्ट्रीयता)२५
भ्रम निवारण)३०

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध १)५०
,, ,, उत्तरार्द्ध १)५०
वैदिक संस्कृति १)७५
सायण और दयानन्द १)
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १ २५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)५०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

चरित्र निर्माण १)२५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
धर्म और धन)२५
अनुशासन का विधान २५

श्री पं० मदनमोहन जी कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०
संस्कार महत्त्व)७५
वेदों की अन्त साक्षी का महत्त्व)६२
आर्य स्तोत्र)५०
आर्य घोष)६०

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म)६२
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार)२०
आदर्श गुरु शिष्य)२५

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

आर्य समाज और साम्प्रदायिकता)३०
कांग्रेस का सिरदर्द)५०
भारत में भयंकर ईसाई षडयन्त्र)२५
आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना)२०
आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण)०६

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

गीता विमर्श)७५
ब्राह्मण समाज के तीन महापातक)५०
सनातन धर्म ७)७५

श्री डा० ज्ञानचन्द जी कृत

धर्म और उसकी आवश्यकता १)
वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १)५०
इजहारे हकीकत उर्दू)८८

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी कृत

इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)५०

श्री पं० देवप्रकाश जी कृत

इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाए)५०

श्री पं० सिद्धेश्वरनाथ जी शास्त्री कृत

भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०

विविध

वेद और विज्ञान)७०
उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७
हमारे घर १)
मेरी इराक यात्रा १)
मेरी अबीसीनिया यात्रा १)
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)७५
स्वर्ग में हड़ताल)३०
नरक की रिपोर्ट)२५

निम्न प्रकाशन ५० प्रतिशत पर दिये जायेंगे

आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग ६)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
आर्य समाज के महा धन ७)५०
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर ७)५०
स्वराज्य दर्शन १)
आर्य समाज का परिचय १)
भजन भास्कर १)७५
यमपितृ परिचय २)
एशिया का वेनिस)७५
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५
साम संगीत)२०
दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
,, ,, अध्यक्षीय भाषण १)
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५

आचार्य विश्वश्रवाः व्यास कृत

पंचमहायज्ञ विधि भाष्यम्
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
यज्ञ पद्धति मीमांसा ३)
महर्षि की आर्षपाठविधि का वास्तविक स्वरूप)७५
चान्द्रायण पद्धति, व मैकल निर्णय)५०

प्रचार करने योग्य ट्रैक्ट

दश नियम व्याख्या
आर्य शब्द का महत्त्व
तीर्थ और मोक्ष
वैदिक राष्ट्रीयता
वैदिक राष्ट्र धर्म
अथर्ववेदीय अतिथि सत्कार
ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा
सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा में
सत्यार्थ प्रकाश का आन्दोलन का इतिहास
मुर्दों को क्यों जलाना चाहिये
शंका समाधान
भारत का एक ऋषि
आर्य समाज
पूजा किसकी
धर्म के नाम पर राजनैतिक षडयंत्र
भारतवर्ष में जाति भेद
चमड़े के लिए गौवध
आर्य विवाह एक्ट
ईसाई पादरी उत्तर दें
रोमन कैथोलिक चर्च क्या है

नोट —(१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अग्राउ रूप में भेजें। (२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ साफ लिखें। (३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम में आना चाहिये। (४) जिन पुस्तकों का नेट मूल्य लिखा गया है उनपर कोई कमीशन न दिया जावगा।

व्यवस्थापक—सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

कला-कौशल (टैक्नीकल) और वैदिक साहित्य का महान् भंडार

पुस्तक	मूल्य
इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक	१५)
इलै० गाइड पृ० ८००हि इ ग	१०)
इलैक्ट्रिक वायरिंग	६)
मोटरकार वायरिंग	६)
इलैक्ट्रिक बैट्रीज	४)५०
इलैक्ट्रिक लाइटिंग	८)२५
इलै० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्ज	१२)
सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर	४)५०
इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज २ भाग	१६)५०
आयल व गैस इंजन गाइड	१५)
आयल इंजन गाइड	८)२५
क्रूड आयल इंजन गाइड	६)
वायरलैस रेडियो गाइड	८)२५
रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक)	८)२५
घरेलू बिजली रेडियो मास्टर	४)५०
इलैक्ट्रिक मीटज	८)२५
टांका लगाने का ज्ञान	४)५०
छोट डायनमो इलैक्ट्रिक मोटर	४)५०
प्रै.आर्मेचरवाइंडिग(AC D.C)	८)२५
रैफरीजरेटर गाइड	८)२५
वृहत रेडियो विज्ञान	१५)
ट्रांसफार्मर गाइड	६)
इलैक्ट्रिक मोटर्स	८)२५
रेलवे ट्रेन लाइटिंग	२)
इलैक्ट्रिक सुपरवाइजरी शिक्षा	६)
इलैक्ट्रिक वैल्डिंग	६)
रेडियो शब्द कोष	३)
ए० सी० जनरेटर्ज	८)२५
इलैक्ट्रिक मोटर्स आल्टरनेटर्स	१६)५०
आर्मेचर वाइंडर्स गाइड	१५)
इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १९५६	१)५०
स्माल स्केल इंडस्ट्रीज (हिन्दी)	१४)
स्माल स्केल इंडस्ट्रीज(इंगलिश)	१४)
खराद शिक्षा (टर्नर गाइड)	४)५०
वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग)	४)५०
खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	६)
भवन-निर्माण कला	१२)
रेडियो मास्टर	४)५०
विश्वकर्मा प्रकाश	७)५०
सर्वे इंजीनियरिंग बुक	१२)
इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग	१२)
फाउन्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई)	८)२५
इलैक्ट्रोप्लेटिंग	६)
वीविंग गाइड	४)५०
हैंडलूम गाइड	१५)
फिटिंगशाप प्रैक्टिस	१०)५०
पावरलूम गाइड	५)२५
ट्यूबवैल गाइड	३)७५
लोकास्ट हाउसिंग टैक्निक	५)७५
जन्त्री पैमायश चौब	८)
लोकोशैड फिटर गाइड	१५)
मोटर मैकेनिक टीचर	८)२५
मोटर मैकेनिक टीचर गुरुमुखी	८)२५
मोटर ड्राइविंग हिन्दी व गुरुमुखी	६)
मोटरकार इन्स्ट्रक्टर	१५)
मोटर साइकिल गाइड	४)५०
खेती और ट्रैक्टर	८)२५
जनरल मैकेनिक गाइड	१२)
आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	१२)
मोटरकार ओवरहालिंग	६)
प्लम्बिंग और सेनीटेशन	६)
सर्किट डायग्राम्ज आफ रेडियो	३)७५
फर्नीचर बुक	१२)
फर्नीचर डिजायन बुक	१२)
वर्कशाप प्रैक्टिस	१२)
स्टीम व्यायलर्स और इंजन	८)२५
स्टीम इंजीनियर्स गाइड	१२)
आइस प्लाट (बर्फ मशीन)	४)५०
सीमेंट की जालियो के डिजाइन	६)
कारपेंट्री मास्टर	६)७५
बिजली मास्टर	४)५०
ट्रांजिस्टर डेटा सर्किट	१०)५०
गैस वेल्डिंग	६)
ब्लैकस्मिथी (लोहार)	४)५०
हैंडबुक आफ बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन	३४)५०
हैन्डबुक स्टीम इन्जीनियर	२०)७५
मोटरकार इन्जीनियर	८)२५
मोटरकार इन्जन (पावर यूनिट)	८)२५
मोटरकार सर्विसिंग	८)२५
कम्पलीट मोटर ट्रेनिंग मैनुअल	२४)७५
कारपेंट्री मैनुअल	४)५०
मोटर प्रश्नोत्तर	६)
स्कूटर आटो साइकिल गाइड	४)५०
मशीनशाप प्रैक्टिस	१५)
आयरन फर्नीचर	१२)
मारबल चिप्स के डिजाइन	१६)५०
मिस्त्री डिजाइन बुक	३४)५०
फाउण्ड्री वर्क-धातुओं की ढलाई	४)५०
ट्रांजिस्टर रेडियो	४)५०
आधुनिक टिपिकल मोटर गाइड	४)५०
नक्काशी आर्ट शिक्षा	६)
बढ़ई का काम	६)
राजगिरी शिक्षा	६)
सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो	७)५०
विजय ट्रांजिस्टर गाइड	२२)५०
मशीनिस्ट गाइड	१६)५०
आल्टरनेटिंग करैन्ट	१६)५०
इले. लाइनमैन वायरमैन गाइड	१६)५०
रेडियो फिजिक्स	२५)५०
फिटर मैकेनिक	६)
मशीन वुड वर्किंग	६)
लेथ वर्क	६)७५
मिलिंग मशीन	८)२५
मशीन शाप ट्रेनिंग	१०)
एयर कन्डीशनिंग गाइड	१५)
सिनेमा मशीन आपरेटर	१०)
स्प्रे पेंटिंग	१०)
पोट्रीज गाइड	४ ५०
ट्रांजिस्टर रिसीवर्स	६)७५
नाकल ट्रांजिस्टर रिसीवर	८)२५
प्रैक्टीकल ट्रांजिस्टर सरकिटस	७)५०
बैंच वर्क एन्ड डाइफिटर	८)२५
माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुअल	८)२५
खराद आपरेटर गाइड	८)२५
रिसर्च आफ टायलेट सोप्स	१५)
आयल इन्डस्ट्री	१०)५०
शीट मैटल वर्क	८)२५
कैरिज एन्ड वैगन गाइड	८)२५
इलैक्ट्रिक फिजिक्स	२५)५०
इलैक्ट्रिक टैक्नोलोजी	२५)५०
रेडियो पाकिट बुक	६)
डिजाइन गेट ग्रिल जाली	६)
कैमीकल्स इण्डस्ट्रीज	२५)५०
डीजल इन्जन गाइड	१५)

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

सत्यार्थप्रकाश

(इतने मोटे अक्षरों में)

पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई, क्लाथ बाइंडिंग-मूल्य १५) एक साथ पांच प्रति मंगाने पर ५०) रु० में दी जावेगी।

स्वाध्याय योग्य दर्शन-शास्त्र

१	सांख्य दर्शन	मूल्य २)
२	न्याय दर्शन	मू० ३।)
३	वैशेषिक दर्शन	मू० ३॥)
४	योग दर्शन	मू० ६)
५.	वेदान्त दर्शन	मू० ५॥)
६.	मीमांसा दर्शन	मू० ६)

सामवेद

मूलमंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित
श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् में भारी प्रशंसा हुई और चार हजार ४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थी। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है। मूल्य ४)

वैदिक-मनुस्मृति मूल्य ४॥)

बृहत् दृष्टान्त सागर

सम्पूर्ण पांचों भाग

पृष्ठ संख्या ८६८

सजिल्द मूल्य केवल १०॥)

उपदेश-मंजरी	मूल्य २॥)
संस्कार विधि	मूल्य १॥)
आर्य समाज के नेता	मूल्य ३)
महर्षि दयानन्द	मूल्य ३)
कथा पच्चीसी	मूल्य १॥)
उपनिषद प्रकाश	मू० ६)
हितोपदेश भाषा	मू० ३)
सत्यार्थप्रकाश [छोटे अक्षरों में]	२)५०

अन्य आर्य साहित्य

१	विद्यार्थी शिष्टाचार	१॥)
२.	पंचतन्त्र	३॥)
३	जाग रे मानव	१)
४.	कौटिल्य अर्थशास्त्र	१०)
५.	चाणक्य नीति	१)
६.	भर्तृहरि शतक	१॥)
७.	कर्तव्य दर्पण	१॥)
८	वैदिक सन्ध्या	४) सै०
९	हवन मन्त्र	१०) सै०
१०	वैदिक सत्संग गुटका	१५) सै०
११	ऋग्वेद ७ जिल्दों में	५६)
१२	यजुर्वेद २ जिल्दों में	१६)
१३	सामवेद १ जिल्द में	८)
१४	अथर्ववेद ४ जिल्दों में	३२)
१५	बाल्मीकि रामायण	१२)
१६	महाभारत भाषा	१२)
१७	हनुमान जीवन चरित्र	४॥)
१८	आर्य संगीत रामायण	५)

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य आर्य समाजी सभी प्रकार के साहित्य के अतिरिक्त, आयुर्वेद,कृषि,बिजली मोटर,पशुपालन, टेक्नीकल, डेरीफार्म, रेडियो आदि सभी विषयों पर हमने सैंकड़ो पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१६१

...क प्रेस दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

29-10-66 सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये ।

ओ३म् उरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ फोन २७४७७१ कार्तिक कृष्णा ३ सम्वत् २०२३, ३१ अक्तूबर १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०

सार्वदेशिक सभा द्वारा गोरक्षार्थ सत्याग्रह की घोषणा

दीपावली के दिन - आर्य जनता-

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस मनाए
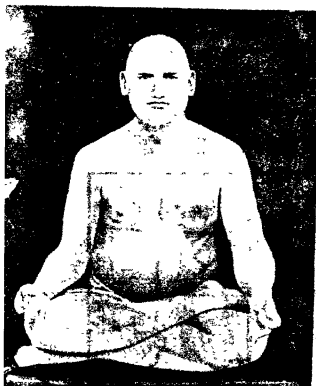
वैदिक धर्म प्रचार, आर्यभाषा, आर्य संस्कृति, आर्य सभ्यता का ..., आर्य जाति की रक्षा, विदेशी और विधर्मियों से राष्ट्र रक्षा, ...आदि पशु रक्षा, मांसाहार एवं मद्यपान का पूर्ण निषेध तथा ...नाशक सिनेमाओं का सर्वथा बहिष्कार करने में तत्पर हों ।

आर्यजगत में सर्वत्र उत्साह की लहर

हजारों आर्य नर-नारी जेल जाने के लिए तय्यार

सभा के आदेश की प्रतीक्षा

आर्य जगत के प्रभावशाली नेता सत्याग्रह करेंगे ।

श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज

सभा के आदेश पर आप सैकड़ों आर्य नर-नारियों के साथ प्रथम जत्थे का नेतृत्व करेंगे । आप सत्याग्रही स्वयंसेवकों और धन संग्रह में जुट गए हैं ।

...विक ७) रु० ...क १ पौंड ...प्रति १५ पैसे

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्... बहु कुर्वीत

सम्पादक—रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री
सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

...लेन लोकास्तिष्ठन्ति

अमरावती के सुप्रसिद्ध दानवीर—

श्री भवानीलाल जी शर्मा

श्री शर्मा जी ने सार्वदेशिक पत्र की सहायतार्थ तथा सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशनार्थ पृथक पृथक ५-५ हजार रुपये की स्थिर निधियां सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली में स्थापित की है।

बधाई

सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड के डाइरेक्टर श्री बा० ऋषिराम जी को पौत्रोत्पन्न की प्राप्ति के लिए सार्वदेशिक साप्ताहिक की ओर से बधाई। —प्रबन्धक

करनी का फल

दो मुर्गे रोज लेता हूं। हाय ! मुझे कुत्ते ने खा लिया।
रोता क्यों है ? तूने मुर्गे खाये—कुत्ते ने तुझे खाया।
जैसी करनी वैसी भरनी

वाचं वदत भद्रया

****

सम्पादकीय

****

गोहत्या पर प्रतिबन्ध अनिवार्य

गोरक्षा आन्दोलन इस समय दिन प्रतिदिन जोर पकड़ता जारहा है। ऐसा लगता है कि चिरकाल के पश्चात्-राष्ट्र की प्रसुप्त आत्मा जाग उठी है और साधु-सन्यासियों से लेकर आबाल वृद्ध नर-नारी तक अब इस बात को महसूस करने लगे हैं कि स्वतन्त्र भारत में गोहत्या जारी रखना हमारी स्वतन्त्रता के लिए कलंक-स्वरूप है।

सबसे पहले ऋषि दयानन्द ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने गोमाता की करुण पुकार सुनकर ब्रिटिश राज में गोहत्यानिरोध के लिए वैधानिक आन्दोलन का सूत्रपात किया था और गौ की उपयोगिताके सम्बन्धमें 'गोकरुणा-निधि' जैसा अमूल्य ग्रन्थ लिखा था। आज भी जो लोग गाय को आर्थिक दृष्टि से बोझ मानते हैं और गोहत्या-निरोध आन्दोलन को केवल पोंगा-पन्थियों का आन्दोलन कहते हैं, उन्हें वह पुस्तक पढ़नी चाहिए। गौ की उपयोगिता के सम्बन्ध में उनकी आंखें खुल जायेंगी।

हम यह स्वीकार करते हैं कि गोरक्षा आन्दोलन की व्यापकता के मूल में धार्मिक दृष्टि प्रधान है। अधिकांश भारतवासी गाय को माता के समान पूज्य मानते हैं। वेदादि शास्त्रों में गौ की महिमा का विशद विवेचन भी है। गौ को सब देवताओं का आवासस्थान कहा गया है। वेद ने जिस गौ को 'अघ्न्या' कहकर उस का हनन किसी भी दृष्टि से अनुचित बताया है जब उसी गौ का अतिथियों के लिए मारने की बात पाश्चात्य मनीषी वेद में से निकालते हैं, तब उनकी बुद्धि पर तरस आए बिना नहीं रहता। एक तरफ 'अघ्न्या' अर्थात् अहन्तव्या कहना और दूसरी ओर अतिथियों के लिए गाय या बछड़े को हन्तव्य बताना यह वैसे ही असंगत है जैसे यज्ञ को 'अध्वर' (हिंसाशून्य) कहकर उसमें पशुओं की बलि का विधान बताना। पशुबलि की परम्परा वाममार्गियों की करामात थी।

ईसाइयत और इस्लाम के धर्म-ग्रन्थ क्योंकि इस प्रकार की वाममार्गीय पशुबलि की प्रथा से ओत-प्रोत थे, इसलिए उनकी दृष्टि में यज्ञ का यही स्वरूप आसानी से समा गया और वेद-विरोधी लोग वेद का वैसा भाष्य करने लगे।

परन्तु हम समझते हैं कि धार्मिक दृष्टिकोण के अलावा एक व्यावहारिक राष्ट्रीय दृष्टिकोण भी है। गौरक्षा या गोहत्या विरोध को साम्प्रदायिकता का जामा पहनाना भारतीय संस्कृति से अपने अपरिचय की घोषणा करना है। यह ठीक है कि गीता गायत्री और गौ तीनों हिन्दूधर्म के पर्यायवाची माने गए हैं। परन्तु राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार करने वालों का हम आह्वान करते हैं कि वे एक बार धार्मिक दृष्टि को भुलाकर राष्ट्रीय दृष्टि से भी विचार तो करके देखें। शास्त्रों में गौ की कितनी महिमा है, गाय के दान से वैतरणी नदी पार होती है या नहीं, और ब्राह्मण को बिना गोदान किए पितरों का उद्धार होता है या नहीं यह सब ऊहापोह छोड़ दीजिए। मुख्य और व्यावहारिक बात पर आइए।

वह मुख्य बात यह है कि भारत कृषि प्रधान देश है। यहां की ८० प्रतिशत जनता खेती करती है। और हमारा कृषि-सम्बन्धी समस्त अर्थ-शास्त्र तथा हमारे समस्त ग्रामों की अर्थव्यवस्था गाय और बैल को ही केन्द्र बनाती उनके चारों ओर घूमती है। बिना गाय के बैल नहीं, बिना बैल के खेती नहीं, बिना खेती के किसान नहीं, बिना किसान के भारत नहीं।

और जब कांग्रेस ने बैलों की जोड़ी को अपना चुनाव चिह्न बनाया तब उसके सामने क्या भारत के इन्हीं ८० फीसदी लोगों के वोटों को बटोरने की बात नहीं थी? "उक्षा दाधार पृथिवीम्" बैल भूमि को धारण करता है या बैल के सींग पर यह पृथ्वी टिकी है, इसका और क्या अर्थ है? कौन माई का लाल कह सकता है कि इस दृष्टिकोण में कहीं भी साम्प्रदायिकता की गन्ध है? यही है विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टिकोण जिसे स्वतन्त्रता प्राप्ति के उषाकाल से ही कांग्रेस ने आत्मसात् कियाथा।

और यदि आज के कतिपय कांग्रेसी नेता जैसे पश्चिमी बंगाल के मुख्यमन्त्री इस मांग को साम्प्रदायिक मांग कहते हैं, तो हम कहते हैं कि ऐसे लोगोंसे बढ़कर वञ्चक और कोई नहीं हो सकता। वे जनता की भावना का शोषण तो करना चाहते हैं, परन्तु उसकी कीमत नहीं चुकाना चाहते। हमारा यह स्पष्ट मत है कि गोहत्या का समर्थन करने वाले राजनीतिक दल को बैलों की जोड़ी के नाम से जनता को ठगने का कोई अधिकार नहीं है। इस पार, या उस पार। यह दोगलापन क्यों? मां के मारे जाने की परवाह न करना और बेटों की जोड़ी दिखा दिखाकर वोट बटोरना इससे बढ़कर मक्कारी और धूर्तता हो नहीं सकती।

यहीं एक और बात की ओर ध्यान दिलाना आवश्यक है। गाय को आर्थिक दृष्टि से अनुपयोगी और अलाभकर प्राणी कहने का प्रकट उन विदेशी अर्थशास्त्रियों ने चलाया है जो भारत को अपने कृषि-उपकरण और कृत्रिम रासायनिक खाद बेचने को आतुर हैं। वे अनाज की दृष्टि से भारत को कभी भी स्वावलम्बी नहीं देखना चाहते। इसलिए वे उदारता पूर्वक भारत को अनाज देते हैं, परन्तु असल में वे अपने ट्रैक्टरों और कृत्रिम उर्वरकों से भारत-भूमि को पाट देना चाहते हैं। भारत सरकार के पास जैसे अपनी गांठ की अकल है ही नहीं उसने भी ट्रैक्टरों की और कृत्रिम खाद की चकाचौंध में अपने गोधन की तथा स्वाभाविक खाद—गोबर की उपेक्षा शुरू कर दी।

भारत की मिट्टी के लिये देसी गोबर की खाद जितनी बढ़िया है उतनी रासायनिक खाद नहीं, यह निष्कर्ष स्वयं अमेरिकन विशेषज्ञों ने ही भारत की मिट्टी का अध्ययन करके निकाला है। भारत में कृत्रिम उर्वरकोंकी उतनी जरूरत नहीं जितनी सिंचाई के साधनों की है। कृत्रिम उर्वरकों के मोह में गोबर की खाद की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। देश का लाखों मन गोबर ईंधन के रूप में प्रतिवर्ष बर्बाद हो जाता है। अपना स्वर्ण हम बरबाद करते हैं और बाहर से पीतल मंगाते हैं। यदि गोबर का पूरा उपयोग किया जा सके तो जिन बेकार गायों को मार डालने के सिवाय कोई और लाभदायक उपाय विदेशी अर्थशास्त्रियों को नहीं सूझता, वह अर्थशास्त्र भी असत्य सिद्ध हो जाएगा।

सौ बातों की एक बात—भारत की अधिकांश जनता गोहत्या के विरुद्ध है, इसलिए लोकतन्त्र की हामी सरकार को बहुमत का आदर करना ही होगा। यदि कोई सरकार बहुमत की इस प्रकार उपेक्षा करे तो बहुमत को भी उस सरकार को, अलोकतन्त्रीय कहने का पूरा अधिकार है।

हमें समझ में नहीं आता कि जिस प्रकार सरकार ने मोरको राष्ट्रीयपक्षी घोषित किया है और उसे पकड़ना तथा मारना निषिद्ध किया है और उसी प्रकार वह गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित क्यों नहीं करती और क्यों नहीं उसकी हत्या पर सर्वथा प्रतिबन्ध लगाती?

हमारे पड़ौसी राज्य नेपाल में भी गौ अवध्य है। नेपालवासी हम भारतीयों पर हंसते हैं—ये कैसे हिन्दू हैं कि कहने को गाय को अपनी माता मानते हैं, किन्तु अपने सामने ही उसकी गर्दन पर छुरी चलती देखते हैं और फिर भी इनका खून नहीं खौलता?

चाहे धार्मिक दृष्टि हो, चाहे आर्थिक और चाहे राष्ट्रीय, सभी दृष्टियों से गोहत्या पर प्रतिबन्ध अनिवार्य है।

जनता को अपने वोट की परीक्षा देने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

एक वर्ष की उपलब्धि

यह एक वर्ष देखते-देखते इतनी जल्दी कैसे समाप्त हो गया—कुछ पता ही नहीं लगा। अभी गतवर्ष दिवाली पर ही तो हमने 'सार्वदेशिक' को मासिक के स्थान पर साप्ताहिक का रूप दिया था, और अब फिर दिवाली आ रही है। दिवाली के अवसर पर व्यापारी लोग अपना साल भर का आय-व्यय का चिट्ठा तैयार करते हैं। आइए, हम भी अपने चिट्ठे पर दृष्टिपात करें।

सबसे पहले हम अपने पाठकों को यह शुभ समाचार सुनाना चाहते हैं कि इस एक वर्ष में 'सार्वदेशिक' की ग्राहक संख्या पहले से ठीक चौगुनी हो गई है। यदि विशेषांकों की अति-रिक्त ग्राहक संख्या भी जोड़ ली जाए तो यह संख्या पूर्वापेक्षया छः गुनी से कम नहीं बैठती मात्र एक वर्ष की यह उपलब्धि किसी भी दृष्टि से नगण्य नहीं है।

परन्तु सच कहें, हमें इतने से सन्तोष नहीं है। हम तो आपके 'सार्वदेशिक' की ग्राहक संख्या वर्तमान ग्राहक संख्या से कम से कम पचास-

(शेष पृष्ठ १३ पर)

सामयिक-चर्चा

संस्कृत का महत्व और हमारा कर्तव्य

संस्कृत प्रेमियों के लिए यह समाचार बड़ा आनन्द प्रद है कि जर्मन रेडियो ने संस्कृतमें नियमित समाचार प्रसारण का कार्य-क्रम प्रारम्भ किया है जिसका श्री गणेश करने वाला संसार का यही सर्व प्रथम रेडियो केन्द्र है। इसने सांस्कृतिक क्षेत्र में एक बार पुनः भारत की सांस्कृतिक महत्ता प्रतिपादित करदी है। भारतके बाहर के एक देश ने हमारी प्राचीन संस्कृति की भाषा को गौरव पूर्ण स्थान प्रदान करके उसके महत्त्व को स्वीकार किया है। परमात्मा जाने हमारा आकाश वाणी का संस्थान संस्कृत को कब उच्चासन पर प्रतिष्ठित करके अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा।

जर्मनी के इस स्तुत्य आयोजन से उन लोगों की आंखें एक बार खुल जानी चाहिए जो संस्कृत को मृतभाषा कहकर उसका तिरस्कार करते या जिनकी दृष्टिमें इसकी वर्तमान जीवन में कोई उपयोगिता नहीं है। फिर भी यह सन्तोष की बात है कि हमारे बुद्धिजीवी व्यक्तियो के विरोध और तिरस्कार के बावजूद भी राजकीय स्तर पर संस्कृत को प्रोत्साहन मिलना प्रारम्भ हो गया है।

वाराणसी मे पहले से ही संस्कृत विश्व विद्यालय विद्यमान है। दूसरा उज्जैन मे खुला हुआ है। तीसरा कलकत्ता मे स्थापित होने वाला है। राजस्थान तथा अन्य राज्यो में भी इस प्रकार के विश्व विद्यालयों की स्थापना का आयोजन विचाराधीन है। दक्षिण भारत में भी विभिन्न स्थानों पर संस्कृत शिक्षण के संस्थान है। कुछ राज्यों के हाई स्कूलों में संस्कृत अनिवार्य विषय है। संस्कृत का अध्ययन केवल इसलिए नही किया जाता कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत की भाषा है वरन् इसलिए भी किया जाता है कि इसके द्वारा विचार और मनन, ज्ञान और विज्ञान, कला और साहित्य की समृद्धतम सामग्री उपलब्ध होती है। त्रिभाषा सूत्र से संस्कृत की हानि होने की आशंका है इसलिए संस्कृत प्रेमी इस हानि के निवारण के लिए प्रयत्नशील हैं।

संस्कृत संसार की समस्त भाषाओं की जननी और पोषक भाषा है। ये भाषाएं संस्कृत से ही पोषक तत्त्व प्राप्त करती रही हैं। यदि हमें अपनी भाषाओं को समृद्ध बनाना और उन्हें साइंस और यन्त्र विद्या के विकास के साथ २ नूतन विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति में समर्थ बनाना अभीष्ट हो तो हमें उनका प्रेरणा-स्रोत संस्कृत को ही बनाना होगा।

यह अकाट्य तथ्य है कि संस्कृत ही एक मात्र वह भाषा है जो प्रत्येक क्षेत्र के वरिष्ठतम विचारों और भावों को व्यक्त करने में समर्थ होती है जिनकी मानव बुद्धि और कल्पना इस अणु युग में भी उड़ान भर सकती हैं। इसीलिए संस्कृत को आधुनिक रूप देकर उसे भारत की राजभाषा बनाए जाने की मांग बल पकड़ती जा रही है।

संस्कृत को समस्त सभ्य जगत का सम्मान प्राप्त है क्योंकि भारत की ही क्या संसार की समस्त भाषाओं के साहित्य की तुलना मे इसका साहित्य विपुल एवं समृद्ध है। संस्कृत ही भारत एवं संसार की विभिन्न संस्कृतियों को एक दूसरे के निकट लाने की क्षमता रखती है। संस्कृत के माध्यम से हम अपने को फारसी, पश्तो तथा समस्त युरोपियन और सेमेटिक भाषाओं के अधिक निकट अनुभव करते हैं। चीनी, जापानी, टोगालाग (फिलीपाइन की राष्ट्र भाषा) आदि भाषाओं पर संस्कृत की स्पष्ट छाप देख पड़ती है।

दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों यथा इंडोनेशिया, स्याम, कम्बोडिया आदि २ की भाषाओं ने दक्षिण भारतीय भाषाओं के सदृश जिनमें लंका की भाषा भी सम्मिलित है संस्कृत से इतनी अधिक सामग्री ग्रहण की है कि उन्हें भी संस्कृत की पुत्रियां कहा जा सकता है। इंडोनेशिया के प्रायः सभी नाम जिनसे हमें वास्ता पड़ रहा है संस्कृत से ग्रहण किए गए हैं। सुकर्ण स्वयं संस्कृत नाम है। उनकी नवयुवती जापानी पत्नी रत्नेश्वरी देवी है। उनकी पुत्री का नाम मेघावती है। सुबन्द्रियो, सुहरतो, सूर्य कुसुम आदि संस्कृत के ही नाम हैं। निस्सन्देह संसार की प्राचीन एवं अर्वाचीन भाषाओं में संस्कृत को अनुपम स्थान प्राप्त है। युरोप और अमेरिका में इसके अध्ययन की प्रबल उत्कण्ठा का पाया जाना इसका एक प्रमाण है।

कील विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक पाल ड्यूसन से जब एक भारतीय ने यह कहा कि 'संस्कृत मुर्दा भाषा है' तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होंने कहा—'क्या वह संस्कृत भाषा मृत भाषा है जिससे प्रकाश लेने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए हम उसकी शरण में जाते हैं? मूल संस्कृत से भारतीय दर्शन ग्रन्थों का जर्मन भाषा में अनुवाद करने वाले ये ही प्राध्यापक पहले व्यक्ति थे।

प्रोफेसर फ्रांज बोप ने संस्कृत, ग्रीक, लैटिन लियुनियन और जर्मन भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण नामक ग्रन्थ लिखा था। उनकी मान्यता थी कि "कोई समय था जब कि संस्कृत ही संसार की एक मात्र भाषा थी।" ग्रीक और लैटिन की अपेक्षा संस्कृत अधिक पूर्ण है और उसका साहित्य भंडार अधिक विस्तृत है इतना ही नहीं यह दोनो भाषाओं को मिलाकर भी अधिक संस्कृत एवं लालित्य पूर्ण है।

कुमारी कार्पेन्टर का कथन है—यद्यपि संस्कृत का मूल स्थान आर्यावर्त है तथापि अब यह प्रमाणित हो गया है कि संस्कृत प्राचीन काल मे आधुनिक युरोप के प्राय. सभी देशों की भाषा थी।

एक जर्मन आलोचक कहते हैं—"संस्कृत ग्रीक, लैटिन और जर्मन भाषाओं की जननी है इसी कारण प्रो० मैक्समूलर ने इसे आर्यों की प्राचीन भाषा का नाम दिया है।"

सर विलियम जोन्स की मान्यता है—'देवनागरी, प्राचीन नागरी अर्थात् ब्राह्मी' वह मूल स्रोत है जिससे पश्चिमी एशिया की वर्णमाला बनाई गई है। यह बात संस्कृत की प्राचीनता को प्रमाणित करने के साथ २ उस मार्ग की और संकेत करती है जिसमे होकर संस्कृत का ज्ञान विज्ञान पश्चिम की दिशा में प्रवाहित हुआ और जिसने बह गए उपकरणों को प्राप्त करके होमर, पाइथागोरस, सुकरात, प्लेटो, अफलातून, जेनो, सिसरो, वैरो और वर्जिल आदि को उत्पन्न किया जो व्यास, कपिल, गोतम, पातञ्जलि, कणाद, जैमिनी, नारद, पाणिनी और वाल्मीकिकी ख्याति के भागीदार बने।

प्रो० मैक्समूलर, गेटे और शापनहार का संस्कृत प्रेम संसार प्रसिद्ध है। प्रो० मैक्समूलर ने कहा था—'संस्कृत संसार की महानतम, पूर्णतम और आश्चर्य जनक भाषा है जिसके साहित्य और जिसकी विविधता का पार नहीं पाया जा सकता। उसका व्याकरण तो बेजोड़ है।' 'दर्शन शास्त्र और सभ्यता की कहानी (५ वाल्यम) के अमेरिकन प्रणेता विल ड्यूरन्ट कहते हैं—'भारतवर्ष हमारी जाति की मातृभूमि और संस्कृत युरोपियन भाषाओं की जननी थी। वह हमारे तत्त्व ज्ञान की माता थी, अरबों के द्वारा हमारे गणित शास्त्र की जननी थी, गौतम बुद्धके माध्यम से ईसाइयत में निहित आदर्शों की सृष्टा थी। ग्राम पंचायतों के माध्यम से वह हमारे स्वायत्त शासन और प्रजातन्त्र व्यवस्था की प्रेरिका थी। मातृ भारत अनेक रूपों में हम सबकी जननी थी।"

सोवियत रूस मे संस्कृत को अभी हाल मे नवजीवन प्राप्त हुआ है। महा भारत के अनुवादक स्व० कॅलिवर बारानिकोव और उनके शिष्यों को धन्यवाद दिए बिना नहीं रहा जा सकता। रूस, बलगेरिया आदि की भाषाएं संस्कृत से बहुत मिलती जुलती हैं।

यह है संस्कृत की वरीयता का संक्षिप्त विवेचन।

यदि राजनीतिक परतन्त्रता के काल मे संस्कृत को जीवित रखने का सत्प्रयास सम्भव हो सकता है तो स्वतन्त्रता के इस काल में सम्भव क्यों नहीं हो सकता। इस काल में तो इसकी उन्नति दिन दूनी और रात चौगुनी होनी चाहिए। परन्तु यह प्रश्न राजनैतिक दृष्टिकोण से नहीं अपितु सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिये तभी अभीष्ट की सिद्धि हो सकती है। —रघुनाथ प्रसाद पाठक

गोरक्षा आंदोलन और

उसकी मौलिक दिशाएं

श्री प०कालीचरण "प्रकाश" आर्योपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद

देशवासियों के लिए गोरक्षा आन्दोलन एक पुरानी समस्या है। देशवासी गौ तथा गौवंश की उपयोगिता से अनभिज्ञ हैं, ऐसी बात नही। फिर भी गौवध भयंकर रूप में प्रचलित है, यह महान् आश्चर्य की बात है। गौवध का यदि कोई विशुद्ध मौलिक कारण है तो अर्थ प्रधानता एव मास भक्षण। देश की मौजूदा सरकार केवल आर्थिक लाभ-हानि को विचार कर ही गौवध पर प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहती। कारण कि आज देश में गौवध से प्राप्त होने वाले पदार्थ अर्थ प्रदान करने वाले बने हुए हैं। क्या गौ मांस क्या गाय की आंत क्या गाय की अस्थिएं आदि-आदि सभी चीजें आज प्रयोग में लाई जा रही हैं, विदेशों को भेजी जा रही है, और गौ मांस का प्रयोग में लाई जा रही हैं, विदेशों को भेजी जा रही हैं, और गौ मास का प्रयोग तो दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। भले ही इसके प्रयोग से आयुर्वेद के आचार्यों के मतानुसार क्षय इत्यादि रोगों की अभिवृद्धि हो रही हो। महान् आश्चर्य तो इस बात का है कि इन पदार्थों का केमिकल ढंग से उपयोग करने वाले "गौरक्षा" का नारा लगाने वाले ही निकल जाते हैं। इसी प्रकार आंत इत्यादि भी बड़े ठेके के रूप में बन्द कर विदेशों को भेजने वाले भी ऐसे व्यवसायिक बन्धु निकलेंगे। हमें इनके सम्बन्ध में अधिक गम्भीरता से सोचना है। पूर्वकाल मे ऐसी प्रथा थी कि समाज की व्यवस्था भंग करनेवालेको सामाजिक रूप में बहिष्कृत कर दिया जाता था। चाहे वह शासक हो अथवा धनिक या और कुछ ? इसी प्रकार गो मास आदि सेवन करनेवाले को अस्पृश्य बनाकर समाज से बहिष्कृत किया जाता रहा है। इनकी सज्ञा 'अन्त्यज" शूद्र और चांडाल आदि बनती रही है। परन्तु आज विदेशी शिक्षा और विदेशी आचार-विचार चाहे वह मुसलमानों का ही अथवा क्रिश्चियनों का देश के लिए इस दिशा में मास भक्षण में पोषक ही सिद्ध हो रहा है। इसलिए मांस भक्षण की दृष्टि से हमें सोचना है कि क्या उपाय किए जाएं ?

गौ मास और गौ के शारीरिक अवयवों से बनने वाले पदार्थों की खोज करनी होगी और इसका प्रचार करना होगा कि अमुक वस्तु गौ के शारीरिक अवयव से बनी है, प्रयोग न हो। चिकित्सा कि दृष्टि से ऐलोपेथी के स्थान में आयुर्वेदिक चिकित्सा को प्रोत्साहन देना होगा। चूंकि आयुर्वेदिक चिकित्सा की दैवी प्रणाली में गौमांस या गौ के शारीरिक अवयवों के प्रयोग का कहीं आदेश नहीं है। इसके विपरीत ऐलोपेथी मे चेचक टीको से लेकर आज स्थानिक बनने वाला लीवर स्ट्रेक्ट आदि सारा गौ के शारीरिक अवयवों से निर्मित हैं।

गौ मास जो आज लोगों के भक्षण में आ रहा है, उसके प्रति सरकार को इस बात का प्रयत्न करना होगा कि खाद्य की दृष्टि से अन्न-फल दूध और मक्खन तथा घी पुष्कल मात्रा में प्रजा को पहुंचाना होगा और वह भी उससे दामों में। इससे आम लोगों को पौष्टिक तत्व और अल्प मूल्य में प्राप्त होने से वह शाकाहारिता की ओर अग्रसर होगी। इससे बड़ी ही सुगमता से मांस-हार रुककर मांस की दृष्टि से जो गोवध हो रहा है, देश में देशवासियों को भरपेट अन्न न दे पा रही है उसका यह निकम्मापन है। इससे बढ़कर उसके लिए और कोई शर्म की बात नहीं हो सकती। जो नीति इस सम्बन्ध में राज्य ने अपनाई हुई है, वह एसी कुछ शत्रुता पूर्ण घातक नीति है कि जो मीठे जहर का काम करे। इससे एक और तो प्रजा में अविश्वास हो रहा है और सरकार के लिए घृणा उत्पन्न होती जा रही है। आज यही कुछ हो रहा है। और होना स्वभाविक भी है यदि कोई पिता अपनी सन्तानों को भरपेट भोजन न दे सके तो उसे सभ्य जगत् मे क्या कहा जायगा ? विचारणीय है।

दूसरे इस आन्दोलन की एक यह भी दिशा है कि आन्दोलनकर्त्ताओं को गौरक्षा की बात स्वतन्त्रता के बाद से केवल चुनाव काल के साल दो साल प्रथम याद आती है। बाद के तीन या ४ वर्ष खाली चले जाते है। क्या हमारे आन्दोलन के लिए इतना ही कुछ पर्याप्त है ? नही बल्कि होना तो यह चाहिए कि बड़ी ही निर्भीकता से चुनावकाल के समय नही बल्कि उन ३-४ सालों मे जमकर तैयारी करें जनता मे इस प्रकार की भावना निर्माण करें कि जो गौवध समर्थक होगा उसे शासन की कुर्सी पर ही न लावें। भले ही प्रत्याशी किसी भी दल का क्यों न हो ? आन्दोलन हो और पूर्ण विशुद्धता मे आत्म विश्वास पूर्वक होना कि अवसर सिद्धि के लिए। इस दिशा मे यदि पुरोहित गौ मास भक्षक परिवार के कार्य को सम्पन्न न करावें। महन्त मन्दिरों के लिए दान लेवें और इसी प्रकार उपयोगी कार्य किये जाएं तो बहुत प्रभावकारक हो सकते हैं।

गौ और गौवंश की रक्षा और उसका पालन उसकी उपयोगिता पर निर्भर है, यह एक व्यावहारिक बात है। गौ की उपयोगिता दूध दही और मक्खन के लिए है। जो भारतीय भोजन का प्रधान अंग है। आज इस और शिक्षा तथा डालडा आदि कृत्रिम पदार्थों ने ले लिया है। इसी प्रकार गौवंश में बैल आदि की प्रधानता कृषि के लिए है। आज सरकार और जनता मौलिकतया इस दिशा में विस्मृत है। सरकार कृषि मे मशीनों और कृत्रिम खाद से पूर्ति कराने की प्रेरणा करती है और देश का अशिक्षित और भोला किसान अपने नन्दी और कामधेनु को भुलाकर 'आधुनिकता" की चका-चौंध मे भ्रमित होता जा रहा है। याद रखना है कि यदि पशु घटते जायगे तो उत्पादन मे वृद्धि किसी भी रूप मे सम्भव नहीं। यदि कृत्रिमता से होती भी है तो निश्चित जानो कि वह 'वृद्धि" कृत्रिम ही है। इसलिए आन्दोलन सरकार से ज्यादा जनता से करना योग्य है और वह भी जो बाहिर एक हैं और भीतर एक।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए

४०००) का दान

श्री जगतराम जी महाजन (१०० दयानन्द नगर) अमृतसर निवासी ने साहित्य प्रचार के लिए ४०००) के दान से सभा मे निम्नलिखित शर्तों के अनुसार स्थिर निधि स्थापित की है :—

(शर्तें आगामी अंक मे प्रकाशित करेंगे)

उड़ीसा प्रांत के कालाहांडी जिले पर दैवी प्रकोप

श्री छबीलदास जी सैनी, उपप्रधान आर्यसमाज कलकत्ता

मुझे गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास राउरकेला से स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती के कर कमलो से लिखा हुआ पत्र मिला। स्वामी जी लिखते हैं कि "अकाल ग्रस्त कालाहांडी जिले मे ईश्वर की कोप दृष्टि से सैकडों आदमी भूख से मर गये और बेघर बार हो गये हैं। सैकडों बच्चे ईसाई मिशन मे चले गये सैकडों हिन्दु बनवासी ईसाई होगये हैं। बहुतसी अल्पवयस्क देवियां मुसलमान गुण्डो के कब्जे मे चली गयी हैं। मैंने अपनी सामर्थ के अनुसार प्रचार करके उसी क्षेत्र के राज्य-परिवार में आर्य समाज स्थापित किया, बाइस अनाथ बच्चो को ईसाई मिशनरियो के कब्जे से छुडाया तथा जनता के सहयोग से पाच देवियो का मुसलमानों के घरो से उद्धार करके आर्य अनाथआश्रम की स्थापना करके वहां पर रखाया। और हमारे वयोवृद्ध प्रचारक पण्डित हरदेव तिवारी को वहां नियुक्त करके आश्रम मे आया हू। और यहां से यथाशक्ति भिक्षा करके वहां भेज रहा हू।"

इस पत्र को पढ़कर मेरे हृदय में बहुत आघात पहुंचा तथा जिन आर्य बन्धुओं को ये पत्र सुनाया उन्हें भी महान् दुख हुआ। स्वतन्त्र भारत व आर्यवर्त देश के अन्दर आर्य हिन्दू जाति की ये दुर्दशा—महान् कलक समझी जानी चाहिये। ईसाई मिशनरियां इस दैवी प्रकोप का लाभ उठा कर हिन्दू जनमानस को एक दो किलो चावल का प्रलोभन देकर विधर्मी बना रहे हैं। स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती अपनी यथाशक्ति आदिवासियों को ईसाई बनने से रोक रहे हैं। परन्तु अर्थ तथा साधनाभाव के कारण इनका प्रयत्न समुद्र को शशवत् है। कलकत्ता के कुछ आर्यबन्धु समय समय पर स्वामी जी को यथाशक्ति सहायता पहुचाते रहते हैं, लेकिन यह बहुत ही कम है। उधर ईसाई मिशनरियों के पास हर तरह के साधन होने के कारण वे अपनी योजना मे सफल हो रहे हैं। इनका मुकाबला करने की शक्ति न तो अकेले स्वामी जी मे है और न ही कलकत्ता आर्य समाज ही अकेली कुछ कर सकती है। इसलिये मैं सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों से प्रार्थना करता हूं कि वे इस ओर पूरा ध्यान देने की कृपा करें। यदि इस समय इस ओर ध्यान न दिया गया तो हमें बहुत ही पश्चाताप करना पड़ेगा। और नागालेण्ड व मिजोहिल की तरह से उड़िया प्रांत भी ईसाइयों का बहुत बडा केन्द्र बन जायेगा।

❁

आर्यसमाज नया बांस, दिल्ली

श्री प० दीनानाथ जी सिद्धान्तालकार कठोपनिषद् की सारगभित कथा २५ अक्टूबर से ३१ अक्टूबर प्रतिदिन रात्रि ८॥ बजे से करेंगे।

❁

गोरक्षा आंदोलन में सत्याग्रहियों की भरती एवं धन संग्रह करें

आर्य समाजों के नाम सभा का आदेश

श्रीयुत मन्त्री जी आर्य समाज................................

श्रीमन्नमस्ते।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने अपनी १६-१०-६६ की बैठक में गोरक्षा आन्दोलन के सम्बन्ध में विचार कर के निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया है :—

प्रस्ताव

"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग ने साधारण सभा २५-६-६६ के निश्चयानुसार गोरक्षा आन्दोलन की प्रगति पर विचार किया।

आर्य जगत और देश की जनता ने गोरक्षा आन्दोलन में जिस उत्साह से सहयोग दिया है सभा उस पर सन्तोष प्रकट करती है।

गोरक्षा आन्दोलन के लिए सर्वदलीय गोरक्षा अभियान समिति, दिल्ली के द्वारा संचालित अहिंसात्मक सत्याग्रह आन्दोलन का यह सभा समर्थन करती है।

आर्य समाजों को इस आन्दोलन की सफलता के लिए सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार तन, मन, धन से सभा को सहयोग देना चाहिए।

आर्य समाजें सत्याग्रहियों की भरती करें और सार्वदेशिक सभा की स्वीकृति से सत्याग्रह के लिए भेजें। सत्याग्रह के कार्यक्रम का निर्धारण सभा की ओर से होगा और आर्य समाज के सत्याग्रही स्वेच्छापूर्वक कार्य न करते हुए सभा के आदेशानुसार ही कार्य करेंगे।

२—सार्वदेशिक सभा की ओर से गोरक्षा आन्दोलन का संचालन करने के लिए निम्नलिखित सज्जनों की उप-समिति बनाई जाती है। यह उप-समिति सार्वदेशिक सभा के निर्देशानुसार कार्य करेगी :—

१—श्रीयुत प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास (प्रधान)
२—,, पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी०
३—,, पं० नरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य दक्षिण, हैदराबाद
४—,, डा० डी० रामजी एम० एल० ए०, भूतपूर्व वाइस चांसलर बिहार यूनिवर्सिटी पटना
५—,, सोमनाथ जी मरवाहा एडवोकेट
६—,, उमेशचन्द्र जी स्नातक, सम्पादक आर्य मित्र
७—,, ओम्प्रकाश जी त्यागी, प्रधान संचालक, आर्य वीर दल
८—,, पं० विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा, भारत गो सेवक समाज दिल्ली
९—,, लाला रामगोपाल जी शालवाले (मन्त्री)

विजय दशमी २३ अक्टूबर से आर्य समाज के सत्याग्रहियों के मुख्य शिविर के लिए आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली का स्थान निर्धारित किया जाता है। वहीं से सत्याग्रही जत्थे प्रस्थान करेंगे।

इस प्रस्ताव को आप अपनी समाज द्वारा सपुष्ट करें। यह अच्छा होगा कि सार्वजनिक सभा में इसकी संपुष्टि की जाय जिसमें सनातन धर्म जैन समाज, आदि २ गोभक्त वर्गों के प्रतिनिधि अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित हों। इस सभा की कार्यवाही समाचार पत्रों में छपाई जाय।

आप सत्याग्रहियों की भर्ती का काम तुरन्त प्रारम्भ कर दीजिए और उनकी सूची सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में भिजवाते रहिए। सूची की १ प्रति अपने पास भी रखें। सत्याग्रही जत्थे भेजने से पूर्व सार्वदेशिक सभा की अनुमति अवश्य प्राप्त की जाय। बिना अनुमति प्राप्त किए कोई जत्था न भेजा जाय। स्थानीय जत्थे का नेतृत्व किसी प्रसिद्ध आर्य द्वारा कराया जाय। इस सत्याग्रह का प्रारम्भ चोटी के आर्य नेताओं द्वारा किया जाय इसकी भी व्यवस्था की जा रही है।

इस आन्दोलन की सफलता के लिए धन संग्रह का कार्य भी प्रारम्भ हो जाना चाहिए। ज्यों २ धन एकत्र हो वह सार्वदेशिक सभा को बैंक ड्राफ्ट या मनी आर्डर द्वारा भेजते रहें।

सभा को पूर्ण आशा है कि इस अभियान की सफलता में आपकी समाज का धन-जन दोनों ही प्रकार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

इस सम्बन्ध में समय समय पर विज्ञप्तियां आपके पास पहुंचती रहेंगी।

रामगोपाल सभा-मन्त्री

आर्य समाज और गो-रक्षा

(श्री प० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री आर्योपदेशक, पजाब)

आर्यसभ्यता में गौ को बड़ा महत्त्व दिया गया है। वेदों मे तो गो-सम्मान का कितना आदेश मिलता है। यह गौ माता रुद्राणांदुहिता वसूना स्वसाऽदित्यानाममृतस्य नाभि······ वेदशब्दो में रुद्रों की माता, वसुओं की कन्या, आदित्यों की बहिन है। यह अमृत का केन्द्र है। इसको ही देवलोक की कामधेनु माना है और सत्य तो यह है कि गौ ही सुरपुर का कल्पतरु है, इसे सुरधुनी या देवगगा पुकारा जा सकता है। वेद तो यहां तक कहते हैं कि—गोस्तु मात्रा न विद्यते गाय की समानता कौन कर सकता है? यही वसिष्ठ की कामधेनु हैं, महाराज दिलीप तथा समाज्ञी सुदक्षिणा की वन्दनीया है, श्री राघवराम की प्यारी है, तपोनिधियों के तपोवनों की परम-सम्पत्ति है, श्री कृष्ण जी के स्नेह का केन्द्र है। गोदान के बिना विवाह अधूरा है, परिवार में मधुपर्क का यही आधार है। इसे देवपशु कहा जाता है। भारत में तो गौ माता है, क्योंकि विश्वजीवन का अपने सुधा-तुल्य दूध घृतादि से निर्माण करने वाली है। यह सर्वतोभावेन अवध्या व अघ्न्या है। यज्ञ का सारा कर्मकाण्ड इसी के द्वारा होता है। गौरक्षा सच्ची राष्ट्ररक्षा एव इसकी हत्या जीवन का नाश है। वैदिक काल के दण्डविधान में गोघाती को मृत्युदण्ड दिया जाता था। वेद स्वय कहता है—अन्तकाय गोघातम् गोघातक को मौत के हवाले कर दिया जाये। भारतीय जीवन मे गौ की हर स्थान पर महत्ता है।

भारतीय इतिहास मे जितने भी महापुरुष हुए हैं, सब ने गोरक्षा के प्रति परम्परा की भावना को कायम रखने का जीवन सन्देश बार २ दिया। यही कारण था कि भारत मे दूध घी की नदिया बहती थीं। लोग स्वर्ग में जो दूध-घी व शहद की नदियों की कल्पना करते हैं, वास्तव में वह स्वर्ग भूमि यही भारतवर्ष ही था, इसी धरती पर स्थान २ पर दूध घी के नदी-नद प्रवाहित होते थे। विदेशी लोगों ने तभी तो अपनी यात्रा के प्रसंगों में लिखा है कि भारत वह देवलोक है जहां पानी मांगने पर दूध दही व माखन से भरे मटके मिलतेहैं। यह सब गोसम्मान का प्रभाव था।

भारतीय जनता ने गौ के अपमान को कभी सहन नहीं किया। छत्रपति शिवा हों या राणाप्रताप, गुरु गोविन्द हों या नामधारी हों। महर्षि दयानन्द हों या महात्मा गांधी हों किसी ने भी गोरक्षा के महत्व को गौण नहीं समझा। भारतके लोगों ने नारी तथा गौ के सम्मान को प्रमुखता दी। यहां तक कि अकबर जैसे मुगल सम्राट ने भी भारतीय माग के सामने मस्तक झुका कर सारे देश में गोवध को वैधानिक रूप से बन्द करदिया। गोहत्यारे को भारी दण्ड मिलता था। वास्तव में बात यह है कि गौ से किसी एक समाज को ही लाभ नहीं होता। यह तो तमाम विश्व के प्राणिमात्र का अत्यन्त उपकारक है। माता के समान अमृतमय दूध प्रदान करती है। राजा से रक, विद्वान् से अपढ, बलवान् से निर्बल सबका पालन करने वाली है। वेद तो इसी लिए चेतावनी भरा सन्देश देता है—मा गामनागामदितिं वधिष्ठ—कि इस निष्पाप अदिति रूपा गाय का वध न करना। यह देवमाता है। आर्यसमाज के महान् प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन में गोरक्षा के लिए कितना भारी काम किया। अंग्रेजी शासन में गोहत्या को देख सुनकर उनका मन वेदनामय हो जाता था। गोकरुणा निधि जैसी सर्वागीण उत्तम पुस्तिका लिखकर देशवासियों का ध्यान इस आवश्यक बात की ओर दिलाया। आन्दोलन किया। दो करोड़ भारतीयों के उस समय मे गोवध बन्द कराने की प्रबल माग करते हुए हस्ताक्षर कराने में लगे थे। किन्तु विषपान से वह कार्य बीच मे रह गया। अपना सारा काम आर्यसमाज को सौंप गये। आर्यसमाज के विविध कार्यों में गोहत्या बन्द कराने का भी जरूरी काम साथ-साथ चलता है।

स्वराज्य का स्वप्न केवल स्वप्न होकर रह गया है। आज भारत की जो अवस्था हो रही है, नैतिकपतन की जो नगी तस्वीर दिखाई देती है, वह सामने है। विदेशी राज्य में सारे देश में जितने बूचड़खाने थे आजाद भारत मे राष्ट्र के भाग के कट जाने के बाद उससे दुगने से भी ज्यादा हो गये हैं। आज तो श्रीरामकृष्ण, दयानन्द, गाधी के भारत मे इतना और इतनी बेदर्दी से गोवध होता है, जिसे पढ़ २ सुन सुनकर लज्जा को भी लज्जा आती है। विधान मे गोहत्या बन्द करने की धाराए लिखी हैं, सर्वसम्मति से लोकसभा ने विधान को स्वीकार किया है। आज उन्नीस वर्ष बीत भी गये हैं, किन्तु गोवध बन्द होने के स्थान पर आगे से अधिक होता हैं। बूचड़खाने ज्यादा हैं। अब तो आगरा के समीप ही हजरतपुर के पास कितने एकड़ों मे बत्तीस करोड़ रुपयों में स्वचालित मशीनों से एशिया का सबसे बड़ा पशुकाटने का बूचड़-खाना बनाने की योजना तैयार की गई है। इसमे पाच से पन्द्रह हजार तक पशु दैनिक काटे जा सकेंगे। यह भारतीय जनता के जीवन पर कितना बड़ा कलक है। भावनाओं से कितनी खिलवाड़ की जाती है। घावों पर कितनी निर्लज्जता से कितना नमक छिड़का जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि आज के सत्ताधारियों ने ऐसा समझ लिया है कि भारत की आत्मा व भावना मर गई है। मुर्दा शरीर का जितना चाहो अपमान किया ज ये। चिन्ता की कोई बात नहीं है। सन्त बोलते हैं तो उनको जेलों में बन्द किया जाता है। महात्मा वीर रामचन्द्र जी जान की बाजी लगाते हैं तो उन्हें बन्दी बना लिया जाता है। लाठियों व गैसगोलों, गोलियों से जनता की भावना को दबाना देर तक सफल नही हो सकता।

लोगों ने गोहत्या को भारत मे कभी सहन सही किया जनतन्त्र का मान यह है कि बहुमत की आवाज को मानकर गोवध बन्द कर दिया जाये। टाल-मटोल से काम नहीं चलेगा। जनता अब जाग पडी है। सन्तसमाज अपना बलिदान देने अब मैदान में आ चुका है। भारत में गोवध निश्चित रूप से बन्द होगा। जनतन्त्र का अपमान न होगा। हमें बड़ा सन्तोष है कि आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा नई देहली तमाम आर्य जगत् का प्रतिनिधित्व करती हुई इस गोहत्या रोकने के महान् आन्दोलन में पूरा २ कर्त्तव्य निभा रही है। धरने में भी सहयोग है। प्रचार द्वारा भी जन जीवन को जगाने में आगे-आगे है। इसका सारा अधिकारी वर्ग काम में जुटा है। सभा के माननीय मन्त्री श्री शालवाले जी ने सर्वप्रथम आगरे के खुलने वाले बूचड़खाने का विरोध करते हुए जनता का इधर ध्यान खींचा था। सार्वदेशिक सभा का इस काम मे नेतृत्व सारे समाज को कर्त्तव्यपथ पर डालता है। अमृतसर में कैप्टन केशव चन्द्र जी की प्रधानता में केन्द्रीय आर्यसभा भी इस दिशा मे बड़ा प्रशसनीय काम कर रही है। समाजों में भी हल चल है। दैनिक पत्र प्रताप के श्री वीरेन्द्र जी ने तो गोहत्या बन्द होनी चाहिए – इस विषय पर कई प्रभावशाली लेख लिखे हैं। एक बात का खेद जरूर है कि आर्यसमाज के दो एक सन्यासियों के सिवाय और कोई सन्यासी इस दिशा में कुछ कर रहा है ऐसा मालूम नहीं पड़ता। न उनका कोई वक्तव्य प्रकाशित हुआ है। आर्यसमाज को केवल सन्ध्या हवन करने वाली तथा आकाशलोक की बातें विचारने वाली सस्था न बनाओ। इस दिशा में भी उसके महान् सस्थापक ने अपने जीवन में बड़ा काम किया है। आर्यसमाज भी इसमें पूर्णतया सहयोग देवे। एक बात और भी है।

इस दिशा में आर्यसमाज के पत्र सार्वदेशिक साप्ताहिक, आर्योदय, आर्यजगत्, आर्यमित्र, वैदिक धर्म, आर्यमार्तण्ड आदि अपने अपने काम मे लगे हैं। इस गोवध बन्द करवाने में सार्वदेशिक सभा के आदेश पर लिखते रहते हैं। दैनिक पत्रों में प्रताप का स्थान सबसे पेशपेश है।

एक बात का और भी दुःख है कि कई ऐसे पत्र भी हैं। जिनमे सिनेमा की अभिनेत्रियों की आधी नगी तस्वीरों के लिए केवल पृष्ठ ही नहीं वरन् सारा समाचार पत्र ही उसी सस्करण से भरा पड़ा होता है तथा ऐसे वैसे वासनात्मक लेखों से पृष्ठ भर दिये जाते हैं। जिनको देखते हुए लज्जा से आंखें भी नीची हो जाती हैं। यह सब पैसों के लिए किया जाता है। किन्तु बड़ा खेद है कि ऐसे पत्रों मे इतने बड़े आन्दोलन गोवध बन्द कराने के लिए एक शब्द तक भी नही लिखा जाता। ऐसी स्थिति में भी आर्यसमाज ने अपने कर्त्तव्य को निभाना है। आज के स्वतन्त्र भारत में गोहत्या बन्द करवाने के सन्त-महात्माओं के नेतृत्व मे आरम्भ किये गये जनतन्त्री आन्दोलन में तमाम आर्यजगत् उनका सहयोगी बने ताकि गोवध का [illegible]

गांधी जन्म शताब्दी और शराब

जैसे-जैसे गांधी जन्म शताब्दी निकट आ रही है भारतीय जनता मे गाधी के सपनों का भारत देखने की आकांक्षा प्रबल होती जा रही है। स्थान-स्थान पर सामाजिक और सर्वोदय कार्यकर्त्ता सभाओं और भाषणो मे इस बात पर बल दे रहे हैं कि भारत में गांधी जन्म शताब्दी समारोह तभी सार्थक माने जायेंगे जब गांधी जी के भारत की कल्पना का एक अंश तो हम साकार कर दिखा सकें। सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण अंश भारत मे पूर्ण मद्यनिषेध का है जिसे गांधी शताब्दी अर्थात् १९६९ तक हम पूरा कर दिखा सकते हैं।

संसद के लगभग १७० सदस्यों ने सरकार से अपील की है कि वह १९६९ तक जबकि महात्मा गांधी की प्रथम जन्म शताब्दी होगी सारे देश में मद्यनिषेध लागू कर दें।

भूतपूर्व वित्तमन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने इस अपील की एक प्रति संलग्न करते हुए बाकी संसद सदस्यों को एक पत्र लिखा है, कि वे भी उस पर हस्ताक्षर करें। उन्होंने बताया है कि यह अपील भारत के प्रधान मन्त्री को पेश की जायगी। सब लोगों को इस काम में सहयोग देकर मद्य-निषेध के प्रयास को सबल बनाना चाहिए।

अपील मे कहा गया है कि १९६९ मे महात्मा गाधी की जन्म शताब्दी तक सारे देश मे मद्यनिषेध लागू करना गाधी जी के प्रति हमारी सबसे बड़ी भेंट होगी। सरकार ने मद्यनिषेध लागू करने मे अब तक बहुत उत्साह नहीं दिखाया है। १९३७ मे जब पहली बार कांग्रेस की सरकार बनी थी मद्रास और बम्बई के कुछ हिस्से में इसे लागू किया गया था। इसके बाद अन्य राज्यो ने भी आंशिक तौर पर इसे स्वीकार किया।

किन्तु अपील मे इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया गया है कि आजादी के बाद कहीं भी मद्यनिषेध लागू करने की दिशा में सच्चाई से प्रगति नहीं हुई है। राष्ट्रीय सरकार जांच समितियों को ही नियुक्त करती रही है। मद्यनिषेध का काम स्थगित किया जाता रहा है। सरकार ने हाल में टेकचन्द समिति नियुक्त की। उसकी रिपोर्ट पर संसद में बहस तक नहीं हुई। यह महात्मा गांधी तथा भारत के संविधान की भावना के विपरीत तथा उसकी अवहेलना है।

मैसूर तथा महाराष्ट्र में मद्य-निषेध से पीछे हटने की हाल की कोशिशों की निन्दा करते हुए अपील में मैसूर की वित्तमन्त्री श्रीमती यशोदरा दासप्पा के त्याग पत्र का विशेष तौर पर जिक्र किया गया है। मद्यनिषेध के खिलाफ तीन निहित स्वार्थ काम कर रहे हैं। पहले वे लोग हैं जो शराब की बिक्री से मुनाफा कमाना चाहते हैं। दूसरे कुछ शिक्षित समुदाय है जो यह विश्वास करते हैं कि एक सीमा में शराब पीना हानिकारक नहीं बल्कि जीवन मे आनन्द लाने के लिए उपयोगी है। तीसरे राज्य सरकारें हैं जो शराब से अपना राजस्व बढ़ाना चाहती हैं। ये कारण उचित तर्क पर आधारित नहीं है तथा उनके

पीछे गैर सामाजिक भावना छिपी है।

आज की आपत्कालीन स्थिति में शराबबन्दी और भी अधिक आवश्यक है। अपील मे केन्द्रीय सरकार पर आरोप लगाया गया है कि वह मद्यनिषेध के मामले में दृढ़ता से कदम नहीं उठा रही है। मद्यनिषेध से राजस्व को जो घाटा पहुंचता है उसकी पूर्ति, करों तथा अन्य साधनों से की जा सकती है।

(नशा बन्दी संदेश से)

शराबी मोटर चालकों के कारण

—हमारे राष्ट्र में आये दिन दुर्घटनाएं होती हैं किन्तु यह हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य ही है कि महात्मा गांधी की अनुयायी भारत सरकार न तो मद्यनिषेध का कानून बनाती है और ना ही शराबी मोटर चालकों पर अंकुश।

उधर ब्रिटेन की सरकार ने शराबी मोटर चालकों पर पूरा नियन्त्रण करने के लिए कतिपय नियम निर्धारित किये हैं।

क्या ! भारत सरकार इस पर गम्भीरता से विचार करेगी।

—सम्पादक

भारत और ब्रिटेन के शराबी मोटर चालक

हम आये दिन समाचार पत्रों मे अनेक मोटर दुर्घटनाओं और उनमे लोगों का जीवन समाप्त होने के समाचार पढ़ते रहते हैं। कहना नहीं होगा, अधिकांश दुर्घटनाओं की जांच पड़ताल के बाद यह पता चलता है कि मोटर चालक शराब पिये हुए था। हमारे कानून के अनुसार मोटर चालक पर इसलिये मुकदमा चलाया जाता है कि उसने किसी की जान लेली है या किसी को घायल कर दिया है। उसने शराब पीकर मोटर चलाई यह कानून की दृष्टि में कोई अपराध नहीं है और यदि है भी तो तब तक यह अपराध की श्रेणी में नहीं आता जब तक इसके फल स्वरूप कोई दुर्घटना ही न हो जाए।

ब्रिटेन में वहां की सरकार ने एक श्वेत पत्र प्रकाशित कर शराब पीकर मोटर चलाने को ही अपराध नहीं माना है बल्कि मोटर चालक के रक्त और श्वास की परीक्षा का नियम लागू कर ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी है जिससे यदि उसे मोटर चलानी है तो धीरे-धीरे इस आदत को ही छोड़ देना होगा। इस श्वेत पत्र के अनुसार अब पुलिस को यह अधिकार होगा कि वह सड़क पर ही किसी भी मोटर चालक को रोक ले और एक विशेष प्लास्टिक ट्यूब द्वारा उसके रक्त और श्वास की परीक्षा कर यह मालूम कर ले कि उसने मोटर चलाते समय शराब तो नहीं पी रखी और यदि उस समय उसने नहीं पी रखी है तो शराब पीने का आदी होने की वजह से उसके रक्त और श्वास में शराब का कितना अंश मिला हुआ है। श्वेत पत्र में दिये गये इस नियम के अनुसार जुलाई महीने से लगभग एक हजार पुलिस कार तैनात होंगी जिनके पास श्वास की परीक्षा के विशेष ट्यूब होंगे। पुलिस मैन किसी भी मोटर चालक को रोक कर उससे इस विशेष ट्यूब में मुंह से हवा भरने को कहेगा। यदि उसके श्वास की इस हवा से ट्यूब में एक विशेष प्रकार का रंग आगया तो पुलिस मैन यह जान लेगा कि उसने शराब पी हुई है या आदतन शराबी है। इस पर पुलिस-मैन उसे थाने ले जायेगा जहा उसके रक्त और पेशाब की परीक्षा होगी। इसके बाद ही यह निश्चय होगा कि वे मोटर चलाने के काबिल हैं या नहीं। जो लोग मोटर चलाते हैं, चाहे वे खुद अपनी कार चलाते हों या ड्राइवर हों उनके लिये शराब पीने की एक निश्चित सीमा कर दी गयी है। इस सीमा के अनु-सार यदि उनके रक्त और श्वास में शराब का अधिक अंश पाया गया तो वे मोटर नहीं चला सकते। इस नियम के लागू होने के बाद जो स्वयं मोटर चलाते हैं वे, और ड्राइवर शराब पीकर तो मोटर चला ही नहीं सकेंगे साथ ही उन्हें शराब पीने का शौक करते समय यह भी ध्यान रखना होगा यदि कहीं उनके रक्त और श्वास में निर्धारित मात्रा से अधिक शराब का अंश पाया गया तो वे मुश्किल में पड़ जायेंगे। हो सकता है, उन्हें मोटर चलाने के अयोग्य ठहरा कर उनका लाईसेन्स ही रद्द कर दिया जाय।

जो मोटर चालक सड़क पर रुक कर ट्यूब मे फूंक भर कर अपने श्वास की परीक्षा देने के बिना कोई उचित कारण बताये इन्कार करेंगे उन पर एक सौ पौंड तक का जुर्माना हो सकता है। यह श्वेत पत्र ब्रिटेन के यातायात मन्त्री श्री टामफ्रेजर और गृह मन्त्री सर फ्रेंक सासकिस ने जारी किया है।

श्वेतपत्र में यह स्वीकार किया गया है कि सरकार यह मानती है इंगलैण्ड में यह एक सख्त कदम उठाया जा रहा है, पर एक बड़ी सामाजिक समस्या के समाधान के लिए सरकार के पास सिवाय इसके कोई चारा नहीं था। सरकार को यह भी विश्वास है कि देश के समझदार लोग इस नियम का, यह समझ कर स्वागत करेंगे कि जो लोग शराब पीकर मोटर चलाते के फलस्वरूप अपनी और दूसरों की जान खतरे में डालते हैं उन्हें किसी नियम में बांधकर नागरिकों की जान बचाना सरकार का कर्तव्य है।

हम और हमारी माता (गौ)

श्री भारतभूषण जी विद्यालंकार

महर्षि यास्क ने अपने निरुक्त में 'गो शब्द' के अनेक अर्थ बताये हैं। जिनमे से कुछ इस प्रकार हैं गाय, पृथिवी, वाणी, प्रकाश, किरणें, इन्द्रियां, स्त्रियां। अमरकोषकार ने नानार्थ वर्ग में गौ शब्द के १० अर्थ बताये हैं "स्वर्गेषुपशुवाग्वज्र दिङ्नेत्र घृणिभू जले, लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौ" शतपथ ब्राह्मण में गौ का अर्थ सिनीवाली तथा सिनीवाली का अर्थ स्त्री किया है। अतः गौ का अर्थ हमने भी स्त्री कर दिया है।

आज गो रक्षा आन्दोलन चल रहा है हमें गो शब्द से सूचित होने वाले इन सभी अर्गों व वस्तुओं की रक्षा करनी चाहिये, परन्तु प्रसंगवश हम केवल गाय पशु पर ही ध्यान देंगे।

हमारे इस कृषि प्रधान देश का आधार प्राचीन समय से गौ रही है। यही कारण था कि उसे इतना श्रेय प्राप्त हुआ कि माता का पद प्राप्त हो गया और गौ ने अब तक अपने मातृत्व को निभाया भी है। हमने उसे कभी पशु नहीं समझा। राजा और महाराजा भी गोपालक व नन्द कहलाने के श्रेय को पाने के लिए लालायित रहा करते थे। इतना ही नहीं हमने उसे इससे भी ऊंचा स्थान दिया और उसे 'कामधेनु' बना कर स्वर्ग का सदस्य बना दिया। अर्थात् जहां भी गौ का सुखपूर्वक निवास होगा वह स्थान स्वर्ग बन जायेगा। इसमें सन्देह का कोई स्थान नहीं है और उस घर के सभी सदस्यों की कामनाएं पूरी करने की सामर्थ्य उस गौ मे है। इसी से वह धेनु नहीं 'कामधेनु' है। "धेनु कामदुघामे अस्तु" की प्रार्थना इसका पुष्ट प्रमाण है।

हमारा प्राचीन साहित्य आज भी अपनी मूक भाषा मे पुकार २ कर कह रहा है। अपने कान्तासम्मित उपदेश द्वारा हमे प्रेरित कर रहा है। गौ के अपमान का फल महाराज दिलीप ने भोगा और पुनः गौ की सेवा एव प्रसन्नता का परिणाम भी हमारे सामने है। वह कामधेनु के साथ २ नन्दिनी (प्रसन्न करने वाली) भी है। कृष्ण को भगवान कृष्ण एव षोडष कला सम्पन्न करने वाली यही शक्ति थी। नन्द एव गोपाल ये उपाधियां उस नर श्रेष्ठ को मिलती थीं जो सर्वाधिक एव स्वस्थ सुपुष्ट गौओं का स्वामी होता था।

इसी प्रसंग में यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि कृष्ण चन्द्र जी महाराज के साथ जो माखन चोर या दधि मक्खन की हाडी फोडने की गाथाएं संयुक्त हैं उनका आधार स्पष्ट ही यह रहा होगा कि 'अत्याचारी कस के बृहत् साम्राज्य में धीरे २ नगर प्रदेशों में आजकल की भांति गौ पालन की प्रवृत्ति कम हो रही होगी, क्योंकि उस सम्पन्न समय में दूध दही इत्यादि सस्ता एवं सुलभ था अतः गौ सेवा के कार्यों के प्रति अरुचि बढ़ने लगी होगी। परिणाम स्वरूप नगर प्रदेशों के निकटवर्ती ग्रामों से यह अमृत तत्व बाहर जाने लगा होगा। जिससे कि ग्रामीण क्षेत्रों मे इसकी कुछ तंगी भी होने लगी होगी। ऐसे समय में नेता कृष्ण ने विचार किया होगा, कि यह सर्वोत्तम समय है। जब कि कस साम्राज्य का विनाश किया जा सकता है क्योंकि गो आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है।

भगवती श्रुति का यह आदेश उनके सम्मुख था कि "तेजो राष्ट्रस्य निर्हन्ति न वीरो जायते वृषा" (अ० ५ १०-४) अर्थात् जिस देश में गौ का आदर नहीं होता तथा वह पीडित होती है वहां बलवान वीर पुत्र पैदा नहीं होते। अतः उन्होंने एक आन्दोलन छेडा कि ग्राम के बाहर दूध दही इत्यादि न भेजा जाय तथा जो इस उद्देश्य से इस अमृत तत्व का संचार करे उसे खा पीकर समाप्त कर दो तथा बाहर मत जाने दो। इसके फलस्वरूप हमारे भाई बन्धु बलवान होंगे दुष्ट का विनाश सरल हो जायगा और इस प्रकार उन्होंने एक विशाल साम्राज्य का विध्वंस किया। जिसका मूल आधार यही आन्दोलन था। इस प्रकार यह गौ रक्षा आन्दोलन नया नहीं है इसको केवल नया रूप प्रदान किया गया है। योगीराज का कार्य ही इसके द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है और प्रत्येक धर्म प्राण देश भक्त का कर्तव्य है कि इसमें अधिक से अधिक योग दान दे।

सुख और शान्ति का आधार समृद्धि का द्योतक, तेज एव कान्ति का आगार यह दूध हमे तभी प्राप्त हो सकेगा जब हम वेद के शब्दों मे प्रार्थना करेंगे कि 'इमं गोष्ठं पशवः संस्रवन्तु" अर्थात् हमारी गौशालाएं सदा भरी पूरी रहें। परन्तु वे गौएं कैसी हों, इसका भी स्पष्टीकरण किया है—"गावो भवथ वाजिनी" हमारी गौएं सुपुष्ट एव बलवान हों, उन्हें उत्तम जल एवं चारा मिलेगा तभी हमारे घर 'क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना" होंगे। हमारा यह संसार स्वर्ग होगा और हम सब भगवान हो जायेंगे, क्योंकि "गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छाद् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः। इमा या गावः स जनास इन्द्रः इच्छामि हृदा मनसा चिदिन्द्रम्।" (अ ४। २१। ५) गौएं सेवन करने योग्य ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। सम्राट व परमात्मा मुझे गौएं प्रदान करे क्योंकि गौओं के घृत दुग्धादि का भक्षण सोम की तरह गुणकारी है। हे लोगो। ये जो गौएं हैं वे इन्द्र अर्थात् ऐश्वर्य रूप हैं "इदि परमैश्वर्ये' मैं तो हृदय एवं मन से इस गौ स्वरूप ऐश्वर्य की ही इच्छा करता हूं। भग की व्याख्या करते हुए कहा है कि "ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः। ज्ञान वैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरिणा:" और जो भगसम्पन्न होगा वह तो स्वयं भगवान हो ही जावेगा।

हम कहते तो हैं कि हम रामराज्य के इच्छुक हैं पर जनक के आदेश को हम भूल गये हैं। कथा आती है कि महाराज जनक ने अपने हाथों से हल चलाया तब उन्हें सीता की प्राप्ति हुई। सीता का अर्थ हल द्वारा खोदी हुई लकीर होता है अर्थात् जब राजा स्वय कृषि कार्य एवं गोपालन में रुचि लेगा तभी देश समृद्धि एवं धन-धान्य से परिपूर्ण होगा।

बचपन में एक कहानी सुनी थी कि एक राजा की लडकी का विवाह हुआ। अन्य दहेज के साथ गौएं भी दी गईं। राजा ने कहा कि मेरी छोटी गौशाला खोल दो, और दो मील तक के घेरे मे जितनी गौएं आयें वे सब मेरी कन्या के लिए दे दो। इसी प्रकार उपनिषद् में एक कथा आती है कि महाराज जनक ने सबसे बड़े आत्म ज्ञानी को सौ गौएं, जिनके सींग सोने से मढ़े थे देने की घोषणा की थी। इसी लिए हमारे देश के चारण अब तक राजा को "गौ ब्राह्मण प्रतिपालक' के गौरव पूर्ण सम्बोधन से सम्बोधित करते रहे हैं।

इतना ही नहीं जलालउद्दीन खिलजी का हाल लिखते हुए राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द कहते हैं कि "तवारीख फरिश्ता में लिखा है उस वक्त दिल्ली में अब के हिसाब से एक रुपये का दो मन गेहूं व तीन सेर घी बिकता था।

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने कहा था—
"गोघात का दुःख जग से हटाऊं"

महर्षि दयानन्द तो इस सम्बन्ध में एक नवीन प्रेरणा ही बन कर प्रकट हुए थे। महर्षि के चरणचिन्हों पर चलते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने तो स्पष्ट ही घोषणा की थी कि "यह अकेला गौ-सेवा का काम ही स्वराज्य को नजदीक लाने वाला है। जब तक गोवध होता है मुझे ऐसा लगता है मेरा अपना ही वध हो रहा है' यहां तक कि 'मेरी दृष्टि मे गोवध और मनुष्य वध एक ही चीज है।"

उन्होंने उस समय भी हिन्दू जाति को प्रेरणा दी थी कि "गाय को बचाने के खातिर जो अपने प्राण देने को तैयार नहीं वह हिन्दू नहीं है" गौ रक्षा का प्रेम ही हिन्दुत्व का प्रमुख लक्षण है।"

भूतपूर्व कृषि मन्त्री रफी अहमद किदवई ने स्वय इस बात को स्वीकार किया था कि गोकशी पर पाबन्दी लगाने का सवाल अब ज्यादा वक्त तक टाला नहीं जा सकता।"

सेवा की आड़ में ईसाइयों का कुचक्र

हरिजनों की अवस्था भयावह

सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुनस्थापना, प्रचार व प्रसार के निमित्त महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् १८७५ मे आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज का यह नियम है कि, सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। अपने धर्म का प्रचार व प्रसार करने की सबको पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये। परन्तु भय, लोभ, लालच व धोखा देकर किसी का धर्म छीनने का आर्य समाज कट्टर विरोधी है।

दासताकाल में विदेशी आक्रान्ताओं ने किस प्रकार भारतवासियों की भाषा, धर्म व संस्कृति को समाप्त कर अपनी भाषा, धर्म व संस्कृति की स्थापना करने का प्रयत्न किया, इसका इतिहास साक्षी है। परन्तु खेद इस बात का है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी भारत में विदेशी ईसाई मिशनरियों द्वारा यहां के निर्धन, अपढ़ एवं पिछड़े वर्ग का बलात् धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।

सेवा की आड़ में धर्म परिवर्तन

विदेशी ईसाई मिशनरी सेवा के नाम वनवासियों में स्कूल, अस्पताल, अनाथालय आदि खोलते रहे हैं, और इनके द्वारा भोले व्यक्तियों का धर्म अपहरण करते हैं। मिशनरी लोग किस प्रकार अनुचित उपायों द्वारा भोले वनवासियो का धर्म अपहरण करते हैं, इसका विस्तृत वर्णन मध्य प्रदेश सरकार द्वारा १४ अप्रैल सन् १९५४ को ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों की जांच करने के लिए नियुक्त नियोगी कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में दिया है। उसका कुछ अंश इस प्रकार हैं।

Misuse of Hospitals and Dispensaries:

"Hospitals and Dispensaries have been the favourite medium of aproach to the masses for conversion. The fact is that it is a kind of inducement held out to make the make the patients Christian. Dr.Thriumallai Pillay (Sagar No. 1) said that there was nothing wrong in a Christian Doctor presenting Christ to his patient in a Christian Hospital."

SCHOOLS:

"As regards chools, it is clear that the Roman Catholics use the primary schools in the villages for conversion. Their strategy is to catch the second generation. There have been many complaints before us about the various methods they follow for influencing the tender mind of the pupils of the primary schools. The Lutheran Mission avowedly ases schools for securing converts from among the youngsters."

ईसाइयों का राष्ट्र-विरोधी कार्य
सरकार नियोगी कमेटी पर आचरण करे

सभा प्रधान जी की गम्भीर चेतावनी

"Political aim behind conversion."

यों तो ईसाई मिशनरियों का समूचा इतिहास ही यह है कि य सदैव साम्राज्यवाद की स्थापना प्रचार व रक्षा में सहायक रहे हैं, और साम्राज्यवादी सरकारों के राजनीतिक एजन्टों के रूप में कार्य करते रहे। भारत मे भी विदेशी साम्राज्य की स्थापना व सरक्षण में इनका बड़ा हाथ रहा है। विदेशी सरकार द्वारा भी इन्हें हर प्रकार की सुविधा व सहायता दी जाती रही थी।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आशा थी कि विदेशी ईसाई मिशन अपनी मनोवृत्ति मे परिवर्तन कर अपने को सेवा व धर्म प्रचार तक ही सीमित रखेंगे, और देश की राजनीति से अपने को अलग रखेंगे। परन्तु दुर्भाग्यवश उन्होंने इस आशा के सर्वथा विपरीत कार्य किया है, और अमेरिका इंग्लैण्ड आदि देशों के इशारों पर इस देश के राजनीतिक ढांचे को लड़खड़ाने का भरसक प्रयत्न किया है। नियोगी कमेटी ने भी इनकी वर्तमान गतिविधियों का अध्ययन करने के पश्चात् यही निर्णय दिया था कि —

" It will be clear from what follows that the movement which was started in 1930, if not before, is now found flourishing in greater vigour, backed by much increased resources in men and money. In Christian Missions in Rural India it was proposed to convert 6 00,000 villages to overcome the forces of secularism, exaggerated nationalism, communism and material industrialism." (Page 127): Rev. Mcleish, a Trustee of the World Dominion Press which maintains a close liaison with International Missionary Council(Page 94,World Christian Hand Book 1952) proposed the conversion of 6 00,000 villages in the course of 10 years and the objective of the Ecumenism, Movement is to combat, besides communism. the Utopian expentations of the non-Christian Religions (Pago 28, Elements of Ecumenism)."

As the United States has no territory abroad, she tries to comPensate for this by establishing Military bases and Military Alliances. It appears that by this drive of proslytization in India, she desires to creats psychological bases."

"Missionaries behind Naga– Mizo Revolt;"

यह बात अब किसी से छिपी नहीं है कि वर्तमान नागा और मिजो जातियों के विद्रोह के पीछे विदेशी मिशनरियों का हाथ है। और वहां के ईसाई नागा व मिजो ही विद्रोह कर रहे हैं। इससे स्पष्ट प्रकट हो रहा है कि विदेशी ईसाई मिशनरी अपने स्कूल, अस्पताल व अन्य सेवा कार्यों के पीछे राजनीतिक उद्देश्य रखते हैं।

EOREIGN AID

भारत के विरुद्ध इस राजनीतिक षड्यन्त्र में विदेशों से कितना धन अमेरिका आदि देशों से इन विदेशी ईसाई मिशनों को आ रहा है, इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है। १३ दिसम्बर १९५४ को लोक सभा में श्री ए० के० गोपालन, एम० पी० के प्रश्नोत्तर में भारत के रेव्हेन्यु मिनिस्टर श्री एम० सी० शाह ने बतलाया कि जनवरी सन् १९५० से जून सन् १९५४ तक ३।। वर्षों में विदेशी मिशनरियों को बाहर से २९, २७ करोड़ रुपया मिला। इसमें केवल अमेरिका से २०, ६८ करोड़ रुपया प्राप्त हुआ। रुपये के अवमूल्यन के पश्चात् अब यह धन राशि स्वत: ५७ प्रतिशत बढ़ गई है।

PROTECTION OF TRIBES

किसी सभ्य देश में यदि वहां के निर्धन, अपढ़, कमजोर अल्प सख्यक लोगों का भय, लोभ व लालच के कारण धर्म परिवर्तन हो तो लज्जा की ही बात है। भारत सरकार ने तो विशेष रूप से अपने विधानानुसार यहां के निर्धन व पिछड़े हरिजन,

बनवासी आदि लोगों के धार्मिक, आर्थिक व सामाजिक व राजनीतिक अधिकारों के सरक्षण का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया है।

सरकार ने हरिजनों के धर्म व सस्कृति की रक्षार्थ यह नियम बनाया भी है कि जो हरिजन अपना धर्म परिवर्तन कर लेगा उसे सरकार द्वारा प्रदत्त विशेष सुविधाएं व अधिकार प्राप्त नहीं होंगे। परन्तु खेद है कि बनवासी लोगों पर यह नियम लागू नहीं किया है। उनकी केवल आर्थिक सुरक्षा पर ही सरकार बल देती है। इसके कुपरिणाम स्वरूप बनवासी अधिक संख्या में ईसाई बन रहे हैं। अवस्था यहा तक भयावह है कि सन् ६१ की जन गणना के अनुसार ईसाईयों की सख्या भारत में ३५ प्रतिशत के लगभग बढ़ी है, जब कि आर्य जाति ६ प्रतिशत ही बढी है।

आर्य समाज का कर्तव्य

वैदिक धर्म व सरक्षक होने के नाते आर्य समाज अपना कर्तव्य समझता है कि वह अपने धार्मिक बन्धुओं के साथ हो रहे इस अन्याय को रोके। आसाम, उडीसा, बिहार, मध्य प्रदेश, मद्रास आदि प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने सेवा केन्द्र खोले हैं, परन्तु ईसाई मिशनरियों के मुकाबले में यह नही के बराबर हैं। साधनों के अभाव के कारण ही सभी अपना कर्तव्य पालन करने में असमर्थता अनुभव कर रहे हैं।

दुर्भाग्यवश भारत सरकार इस विदेशी राजनीतिक षड्यन्त्र पर मौन धारण किये बैठी है। अपने ही द्वारा नियुक्त नियोगी कमेटी की रिपोर्ट को भी इसने रद्दी की टोकरी मे फाडकर फेंक दिया है। सरकार की यह उपेक्षा भारत की सुरक्षा व एकता के लिए घातक है। विदेशी ईसाई मिशनरी यदि सेवा व धर्म परिवर्तन ही करते तब भी चिन्ता की बात नहीं थी। परन्तु यह धर्म परिवर्तन के साथ लोगों को भारत का विद्रोही भी बनाते हैं, जिसे किसी भी अवस्था में सहन नही किया जा सकता है। अत. हमारी सरकार से माग है कि :—

१. नागा, मिजो आदि समस्त पहाड़ी क्षेत्रों से विदेशी ईसाई मिशनरियों का निष्कासन किया जाय।
२. हरिजनों, बनवासियों एव पिछड़े वर्गों के धर्म परिवर्तन पर तब तक के लिए प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये कि जब तक आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से अन्य वर्गों के समान स्तर पर न आ जाय।
३. हरिजनों की भाति बनवासियों पर भी यह कानून लागू करना चाहिये कि जो अपना धर्म परिवर्तन कर लेगा वह सरकार की सुविधाएं प्राप्त न कर सकेगा।
४. जो विदेशी ईसाई मिशन सेवा की आड में धर्म परिवर्तन करते हैं, उनका देश से निष्कासन होना चाहिये।
५ ईसाई स्कूलों मे गैर ईसाई माता पिता की स्वीकृति के बिना उनके बच्चों को ईसाई धर्म की शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये।
६. विदेशों से ईसाई मिशनों को प्राप्त आर्थिक सहायता आय व्यय पर सरकार का नियन्त्रण हो ताकि वह सेवा के अतिरिक्त अन्य अराष्ट्रीय गतिविधियों पर व्यय न हो सके।
७. सरकार नियोगी कमेटी की सिफारिशों को क्रियात्मक रूप देकर अपने कर्तव्य का पालन करें।

आर्य विजय अंक

अति सुन्दर, सामग्री से भरपूर, जिसके लिये आपको और आपके सहयोगियों को अनेक धन्यवाद।

– भवरलाल टांक सिरोही

वैदिक धर्म प्रसार
और सूचनायें

चुनाव

—आर्यसमाज रोहतास नगर शाहदरा के निर्वाचन में श्री सुरेन्द्र शर्मा प्रधान, श्री डा० नृसिंहदास उपप्रधान, श्री महाराज कृष्ण धवन मन्त्री एवं श्री जयपाल भंडारी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—महिला आर्यसमाज राबटसगंज के चुनाव में श्रीमती डा० किरनमई प्रधाना श्रीमती सामर देवी उपप्रधाना, श्रीमती सत्यभामा गुप्ता एम० ए० मन्त्राणी, श्रीमती शीला वाजपेयी उपमन्त्राणी, श्रीमती सावित्री देवी गुप्ता कोषाध्यक्षा, श्रीमती निर्मला निगम पुस्तकाध्यक्षा एवं श्रीमती सुधा महेश्वरी एम.ए. निरीक्षक चुनी गई

आर्यसमाजसदाफल (बिजनौर)के प्रधान श्री बा० रामकुमार, उपप्रधान श्री हरवंशलाल, मन्त्री वैद्य ओमदेव आर्य,कोषाध्यक्ष श्री रामेशसिंह एवं पुस्तकाध्यक्ष श्री रामसिंह चुने गये।

—आर्य समाज नैनीताल के प्रधान श्री पं० शिवसागर शर्मा वानप्रस्थ, उपप्रधान श्री सेवाराम जी, मन्त्री श्री मुरारीलाल जी, उपमन्त्री श्री देवीलाल शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री बिहारीलाल कंसल तथा पुस्तकाध्यक्ष श्रीगोविन्दलाल चुनेगये।

—आर्यसमाज समस्तीपुर के चुनाव में श्री बैजनाथ महता प्रधान, श्री लक्ष्मीनारायण जी जिज्ञासु मन्त्री एवं श्री शंकर प्रसाद शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये !

—आर्यसमाज फालका बाजार लश्कर में नव आर्यसमाज की स्थापना हुई। सर्वसम्मति से श्री शिवलाल जी गुप्त प्रधान, श्री सेठ शीतलप्रसाद उपप्रधान, श्री ओम्प्रकाश जी पारीख मन्त्री एवं श्री लक्ष्मीचन्द जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

उत्सव

—आर्य समाज, पलवल नगर का १३वां वार्षिकोत्सव २-३-४ दिसम्बर को होना निश्चित हुआ है।

—आर्यसमाज दानापुर का ८८ वां वार्षिकोत्सव १६ अक्टूबर ६६ से १६ अक्टूबर ६६ तक बड़े समारोह से मनाया जायगा।

—आयसमाज शाहजहांपुर का वार्षिकोत्सव ता० २८-१०-६६ से धूमधाम के साथ होगा।

—आर्य समाज फैजाबाद की हीरक जयन्ती महोत्सव १ से ७ नवम्बर तक धूमधाम से मनाई जा रही है। इस अवसर पर आर्य सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं गो रक्षा सम्मेलन होंगे।

नाम संस्करण

आर्य समाज सीयर के सदस्य श्री गुलाबचन्द स्वर्णकार के नवजात शिशु का नामकरण संस्कार श्री शुकदेव नारायण जी वकील के आचार्यत्व में वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। शिशु का नाम रणवीर कुमार रखा गया।

गंगा मेला तिगरी घाट

में आर्य उपप्रतिनिधि सभा अमरोहा (मुरादाबाद) की ओर से वैदिक धर्म प्रचार शिविर लगेगा। अनेक आर्य विद्वान् और भजनोपदेशक पधारेंगे। इस अवसर पर आर्य नगर का निर्माण होगा जिसमें छोलदारी, डेरे आदि लगेंगे। स्वयं सेवकों, जल, प्रकाश, आवास और शौचालयों का समुचित प्रबन्ध होगा। जानकारी के लिये श्री हरिश्चन्द जी आर्य मन्त्री सभा से सम्पर्क स्थापित करे।

आर्यसमाज मन्दिर के लिए अपील

बिहार राज्य, आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत सभी समाजों के मन्त्रियों से सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य समाज, सहरसा का मन्दिर निर्माण होने जा रहा है। सहरसा उत्तर बिहार में एक मुख्य नगर होते हुए भी बहुत ही पिछड़ा हुआ है। ऐसे स्थान में एक समाज मन्दिर का निर्माण होना आवश्यक प्रतीत होता है। सहरसा आर्यसमाज के प्रधान श्री मालचन्द सिंह एसी वृद्धावस्था में भी धन संग्रह के लिये यत्र तत्र भ्रमण कर रहे हैं। अतः समस्त समाजों के मन्त्रियों से निवेदन है कि वे अपने २ समाजोंसे कुछ धन की सहायता अवश्य करने की कृपा करें। सहरसा आर्य समाज के प्रधान के नाम से रुपया भेजने की कृपा करें।

बदरी नारायण शर्मा, सभा मन्त्री

कानपुर में विजय दशमी पर्व

आर्यसमाज मेस्टन रोड में, कानपुर जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० विद्याधर जी की अध्यक्षता में विजय दशमी पव बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यजमान श्रीयुत बा० वीरेन्द्र स्वरूप जी प्रधान, दयानन्द कालेज ट्रस्ट एण्ड मैनेजमेण्ट सोसायटी उत्तर प्रदेश और प्रवचन कर्ता स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती एवं डा० मुन्शीराम जी शर्मा थे। विशाल सभा में उपस्थित जन समुदाय ने धर्म और राष्ट्र रक्षा के निमित्त क्रियाशील उपासक बनने और बनाने का संकल्प किया।

गोहत्या बन्द कराने के लिए
७ नवम्बर १९६६, सोमवार को दिल्ली में
पूर्ण हड़ताल
तथा
प्रदर्शन

कांग्रेस सरकार की गो-हिंसक नीति को बदलने के लिए सामूहिक सत्याग्रह में शामिल होने की तय्यारी कीजिये।

प्रकाशवीर शास्त्री — उपप्रधान

रागोपाल शाल वाले — मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

(पृष्ठ ३ का शेष)

गुनी बढ़ी हुई देखना चाहते हैं। हमें अपने परिश्रम पर जितना भरोसा है, उससे कम भरोसा पाठकों के सहयोग पर नहीं है। असल में दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। हमें विश्वास है कि यदि हम इसी प्रकार अपने-अपने कर्तव्य-पथ पर आरूढ़ रहे तो आगामी तीन वर्ष के अन्दर हम उस मंजिल तक पहुंच जायेंगे, जो फिलहाल हमारे मन में है।

तभी यह पत्र आर्यों की शिरोमणि सभा के नाम के और काम के अनुरूप होगा और प्रत्येक आर्य अपने इस पत्र पर गर्व कर सकेगा।

हमारे इस साप्ताहिक मे अभी क्या क्या कमियां हैं, उनसे हम सुतरां अवगत हैं। फिर भी पाठकों से निवेदन है कि इस पत्र मे आर्यजगत् के शिरोमणि पत्र के रूप में वे जिन कमियों को अनुभव करते हैं, उनके सम्बन्ध में यदि वे रचनात्मक सुझाव देंगे तो हम उनका स्वागत करेंगे और उन कमियों को दूर करने का प्रयत्न करेंगे।

गतवर्ष हमने पाठकों की सेवा मे निम्न विशेषांक भेंट किए हैं—

१—श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर 'कल्याण मार्ग का पथिक।

२—शिवरात्रि के अवसर पर सचित्र ऋषि बोधांक।

३—श्रावणी के अवसर पर वेद-कथा अंक।

४—विजयदशमी के अवसर पर आर्य विजयांक।

और अब ५ दीपमाला के अवसर पर लीजिए आगामी विशेषांक ऋष्यंक।

वर्ष में पांच विशेषांक और सब एक से एक बढ़कर। 'कल्याण मार्ग के पथिक' की तो इतनी धूम और मांग रही कि हमें उसे दुबारा छापने का निश्चय करना पड़ा और अब वह दुबारा छपकर तैयार है। ऋषि बोधांक हमने १९। हजार छापा था, फिर भी हम नए ग्राहकों की मांग पूरी नहीं कर सके। इसी से उत्साहित होकर हमने श्रावणी के अवसर पर वेद कथा अंक की लगभग बीस हजार प्रतियां छापीं, परन्तु वे भी हाथों हाथ निकल गईं। आर्य समाज के इतिहास में यह अभूतपूर्व घटना थी। अब तक कभी कोई पत्र इतनी बड़ी संख्या में नहीं छपा था। आश्चर्य तो यह है कि उस अंक की मांग अभी तक बदस्तूर कायम है, हालांकि हम बारम्बार घोषणा कर चुके हैं कि अंक सर्वथा समाप्त हो चुका है। आर्य विजयांक गत सप्ताह ही पाठकों के हाथ में पहुंचा है और आगामी सप्ताह फिर विशेषांक भेंट कर रहे हैं।

जिस प्रकार इस वर्ष हमने पांच विशेषांक दिए हैं, आगामी वर्ष भी इससे कम विशेषांक नहीं देंगे। उनके सम्बन्ध में हम अभी से कुछ नहीं कहना चाहते—

हम अभी से क्या बताएं
क्या हमारे दिल में है।

अलबत्ता इतना संकेत कर देना चाहते हैं कि—उत्तम से उत्तम सामग्री और कम से कम मूल्य—यह हमारा लक्ष्य है।

हम पहले भी कई बार कह चुके हैं कि व्यापारिक लाभ की दृष्टि 'सार्वदेशिक' की नहीं है। केवल वैदिक धर्म और वैदिक साहित्य का प्रचार ही उसे अभीष्ट है। यह यज्ञीय कार्य है।

स्वयं ग्राहक बनकर तथा अपने इष्ट-मित्रों को अधिक संख्या में ग्राहक बनाकर आप इस पुण्य यज्ञ में सहयोग दे सकते हैं। हमारी समस्त प्रेरणा का आधार आपका सहयोग ही है। जिस अनुपात से आप ग्राहक बढ़ाते चलेंगे उसी अनुपात से हम नए विशेषांक तथा उत्तमोत्तम सामग्री देते चलेंगे।

❀

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री संसत्सदस्य ऋषि निर्वाणोत्सव के अध्यक्ष होंगे

नई दिल्ली। २१-१०-६६, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में शुक्रवार दिनांक ११-११-६६ को रामलीला मैदान नई दिल्ली में प्रातः ८ से १२ बजे तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का ८३ वां निर्वाणोत्सव मनाया जा रहा है।

ध्वजारोहण पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी दण्डी एटा वाले करेंगे। इस अवसरपर स्वामी आनन्द भिक्षु जी महाराज, आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री प्रो० उत्तम चन्द्र जी शरर, प्रो० सत्यभूषण जी योगी, श्री देशराज जी चौधरी तथा अन्य नेता तथा विद्वान स्वामी दयानन्द जी को श्रद्धांजलि भेंट करेंगे।

बम्बई के ओवल मैदान का नाम बदल कर पोप पाल रखना दासता का सूचक बम्बई कार्पोरेशन पुनः विचार करे

श्री गुलजारीलाल जी आर्य प्रधान मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का वक्तव्य

हमें यह जान कर आश्चर्य और खेद हुआ है कि 'ओवल मैदान का नाम' बम्बई कार्पोरेशन द्वारा बदल कर पोप पाल के नाम पर किया गया है।

जबकि स्वतन्त्र भारत में विदेशियों के नाम एवं स्मृति चिन्हों के स्थान पर राष्ट्र भक्तों के नाम रखे जा रहे हों तब ऐसे समय में इस नीति के विरुद्ध बम्बई में एक यह उदाहरण उपस्थित करना कभी भी उचित नहीं माना जायगा।

किसी राष्ट्र भक्त का नाम यदि उक्त मैदान को दिया जाता तो इस नगरी के निवासियों को उससे सन्तोष होता। किन्तु पोप पाल का नाम दिया जाना अवश्य ही आश्चर्य का कारण है।

इस नीति से किसी देश भक्त को दुःख ही होगा। क्योंकि यह कार्य हमारी राष्ट्र भावना तथा धार्मिक भावना को ठेस पहुंचाने वाला है।

इस निर्णय के विषय में पुनर्विचार करना आवश्यक है।

गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू का वार्षिकोत्सव दिनांक २६, २७ व २८ नवम्बर ६६ को समारोह पूर्वक मनाया जायगा। उत्सव में संस्कृत सम्मेलन महिला सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, छात्रों की प्रतियोगिता, भजन, व्याख्यान, उपदेश तथा अन्य विविध स्वस्थ शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक कार्यक्रम होंगे। कार्यसमिति की सफलता के लिए सुयोग्य विद्वान, नेता, संन्यासी और उपदेशक आमन्त्रित हैं।

आर्य सदस्य वही बन सकते हैं

आर्यसमाज के सदस्यों और अधिकारियों आदि का जन्म गत जातीय समाजों तथा उन संगठनों का सदस्य और अधिकारी बनना वर्जित है जहां उन्हें अपने सिद्धांतों की बलि देनी पड़ती हो या जो अवैदिक कृत्यों या अनुष्ठानों का आश्रय देते हों।

शिकायत प्राप्त हुई है कि रामलीला कमेटी के अधिकारी जो रामलीला में राम और सीता बनने वालों की आरती उतारते हैं उन्हें सिर झुकाते हैं प्रायः आर्य समाजों में घुस आए हैं। निश्चय ही ऐसे व्यक्ति आर्य समाज के सदस्य नहीं बन सकते। इस विषय में बड़ी सतर्कता वर्त्तने की आवश्यकता है। इस प्रकार के तत्त्वों का प्रवेश आर्यसमाज की विशुद्धता एवं सुदृढ़ता के लिए बड़ा भारी खतरा है। —रघुनाथप्रसाद पाठक

सभा द्वारा गोरक्षा अभियान प्रारम्भ

सभामन्त्री श्री ला० रामगोपालजी शालवाले का देश भर में तूफानी दौरा

गुड़गावां, अलीगढ़, पिलखुआ आदि अनेक स्थानों में सत्याग्रह के लिए सैकड़ों आर्य नर-नारियों ने नाम दिए

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के मुख्याधिष्ठाता माननीय

श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री

१०१ सत्याग्रहियों के साथ सत्याग्रह करेंगे।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक माननीय

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी

सैकड़ों आर्यवीरों के जत्थे का नेतृत्व करते हुए सत्याग्रह करेंगे।

सभा का आदेश प्राप्त होते ही सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान संसद्सदस्य माननीय

श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री

सत्याग्रह के लिए प्रस्थान करेंगे।

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की पुस्तकों का सूचीपत्र

१—८—६६ से ३१—१—६७ तक

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

- ऋग्वेद संहिता १०)
- अथर्ववेद संहिता ८)
- यजुर्वेद संहिता ४)
- सामवेद संहिता ३)
- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ३)
- संस्कारविधि १)२५
- पंच महायज्ञ विधि)२५
- कर्त्तव्य दर्पण)४०
- आर्यसमाज के प्रवेशपत्र १) सै०

निम्न प्रकाशन पर २० प्रतिशत कमीशन

- सत्यार्थप्रकाश २)५०
- कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)७५
- उर्दू सत्यार्थ प्रकाश १)५०
- कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
- आर्यसमाज का इतिहास द्वितीय भाग ५)
- जीवन संघर्ष (महाशय कृष्ण की जीवनी) ५)
- राजधर्म)५०
- पुरुष सूक्त)४०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

- वैदिक ज्योति ७)
- शिक्षण-तरङ्गिणी ५)
- दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
- वैदिक युग और आदि मानव ४)
- वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५
- वैदिक विज्ञान विमर्श)७५

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

- वैदिक साहित्य में नारी ७)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

- वेद की इयत्ता १)५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

- ईशोपनिषद्)३७
- केनोपनिषद्)५०
- प्रश्नोपनिषद्)३७
- मुण्डकोपनिषद्)४५
- माण्डूक्योपनिषद्)२५
- ऐतरेयोपनिषद्)२५
- तैत्तिरीयोपनिषद् १)
- बृहदारण्यकोपनिषद् ३)
- योग रहस्य १)२५
- मृत्यु और परलोक १)

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

- छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
- वैदिक वन्दन ५)
- वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
- वेदान्त दर्शन (संस्कृत) ३)
- वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
- ,, , (अजिल्द) २)
- निज जीवन वृत वनिका)७५
- बाल जीवन सोपान १)२५
- दयानन्द दिग्दर्शन)७५
- वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
- वैदिक योगामृत ६२
- दार्शनिक अध्यात्म तत्त्व १)५०
- वैदिक ईश वन्दना)४०
- बाल संस्कृत सुधा)५०

- वैदिक राष्ट्रीयता)२५
- भ्रम निवारण)३०

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

- आर्योदय काव्यम पूर्वार्द्ध १)५०
- ,, ,, उत्तरार्द्ध १)५०
- वैदिक संस्कृति १)२५
- सायण और दयानन्द १)
- मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
- सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
- आर्य समाज की नीति)२५
- मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

- स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १ २५
- हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०
- भक्ति कुसुमाञ्जली)२५

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

- वेद सन्देश)७५
- वैदिक सूक्ति सुधा)३०
- ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

- चरित्र निर्माण १)२५
- वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
- दौलत की मार)२५
- धर्म और धन)२५
- अनुशासन का विधान)२५

श्री पं० मदनमोहन जी कृत

- जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०
- संस्कार महत्त्व)७५
- वेदों की अन्त साक्षी का महत्व)६२
- आर्य स्तोत्र)५०
- आर्य घोष)५०

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

- आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म ६२
- सन्तति निग्रह १)२५
- नया संसार)२०
- आदर्श गुरु शिष्य)२५

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

- आर्य समाज और साम्प्रदायिकता)३०
- कांग्रेस का सिरदर्द)५०
- भारत में भयंकर ईसाई षड्यन्त्र)२५
- आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना)२०
- आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण)०६

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

- गीता विमर्श)७५
- ब्राह्मण समाज के तीन महापातक)५०
- सनातन धर्म १ ७५

श्री ला० ज्ञानचन्द जी कृत

- धर्म और उसकी आवश्यकता १)
- वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १)५०
- इजहारे हकीकत उर्दू)८८

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी कृत

- इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)५०

श्री पं० देवप्रकाश जी कृत

- इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०

श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री कृत

- भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०

विविध

- वेद और विज्ञान)७०
- उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
- भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
- वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७
- हमारे घर १)
- मेरी इराक यात्रा १)
- मेरी अबीसीनिया यात्रा १)
- डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
- भोज प्रबन्ध २)२५
- स्वर्ग में हड़ताल)३७
- नरक की रिपोर्ट)२५

निम्न प्रकाशन ५० प्रतिशत पर दिये जायेंगे

- आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग ६)
- बृहद् विमान शास्त्र १०)
- आर्य समाज के महाधन २)५०
- दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
- स्वराज्य दर्शन १)
- आर्य समाज का परिचय १)
- भजन भास्कर १)७५
- यमपितृ परिचय २)
- एशिया का वेनिस)७५
- आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५
- साम संगीत)५०
- दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
- आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
- ,, ,, , अध्यक्षीय भाषण १)
- सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
- सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
- सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५

आचार्य विश्वश्रवाः व्यास कृत

- पंचमहायज्ञ विधि भाष्यम
  - सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
  - यज्ञ पद्धति मीमांसा ३)
- महर्षि की आर्षपाठविधि का वास्तविक स्वरूप)२५
- चान्द्रायण पद्धति, कर्मफल निर्णय)५०

प्रचार करने योग्य ट्रैक्ट

- दश नियम व्याख्या
- आर्य शब्द का महत्व
- तीर्थ और मोक्ष
- वैदिक राष्ट्रीयता
- वैदिक राष्ट्र धर्म
- अथर्ववेदीय अतिथि सत्कार
- ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा
- सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा में
- सत्यार्थ प्रकाश का आन्दोलन का इतिहास
- मुर्दों को क्यों जलाना चाहिये
- शंका समाधान
- भारत का एक ऋषि
- आर्य समाज
- पूजा किसकी
- धर्म के नाम पर राजनैतिक षड्यंत्र
- भारतवर्ष में जाति भेद
- चमड़े के लिए गोवध
- आर्य विवाह एक्ट
- ईसाई पादरी उत्तर दें
- रोमन कैथोलिक चर्च क्या है

नोटः—(१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूप में भेजें। (२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ साफ लिखें। (३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम में आना चाहिये। (४) जिन पुस्तकों का नेट मूल्य लिखा गया है उनपर कोई कमीशन न दिया जायगा।

व्यवस्थापक—**सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१**

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये ।

ओ३म्

उरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-१ फोन २७४७७१ कार्तिक शुक्ला ११ सवत् २०२३ २३ नवम्बर १९६६ दयानन्दाब्द १४२, सृष्टि सम्वत् १९७२९४९

सार्व० सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा

७२ नर-नारियों के साथ सत्याग्रह

शासक सुनें

गो आदि पशुओं के नाश होनेसे राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है, क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है ।

—महर्षि दयानन्द

हजारो आर्यों के विराट समूह ने आर्य समाज दीवानहाल मे शानदार विदाई दी ।

आर्य सुने

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे । इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति अप्रियाचरण सदा किया करे । अर्थात् जहा तक हो सके वहा तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे । इस काम मे चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही चले जाव परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक कभी न होवे ।

—महर्षि दयानन्द

हैदराबाद दक्षिण का एक आर्य वीर श्री कृष्ण रेड्डी संसद भवन के अहाते में सरकार के बहरे कानों में उच्च स्वर से—गोवध बन्द हो - का नारा लगा रहा है।

वाचं वदत भद्रया

सम्पादकीय

अभूतपूर्व प्रदर्शन के बाद यह क्रूर दमनचक्र !

भारतवर्ष की राजधानी में सात नवम्बर को जैसा जलूस निकला उसे अनेक दृष्टियों से 'न भूतो न भविष्यति' कहा जा सकता है। उसे सही अर्थों में भारतीय जनता का प्रतिनिधित्वपूर्ण प्रदर्शन कहा जा सकता है। क्योंकि उस प्रदर्शन में देश के सभी राज्यों से और सभी धर्मों के तथा विभिन्न राजनीतिक विचार-धाराओं के लोगों ने जितनी बड़ी संख्या में भाग लिया उतना उससे पहले कभी किसी प्रदर्शन में सम्भव नहीं हुआ। और तो और पचास हजार के लगभग तो महिलाएं ही उस प्रदर्शन में शामिल थीं।

निहित स्वार्थों के वंशधर दिल्ली के अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्रों ने इस प्रदर्शन में सम्मिलित होने वाले लोगों की संख्या लाख डेढ़ लाख से अधिक नहीं बताई, क्योंकि अब तक राजधानी में जो तथाकथित विशाल प्रदर्शन हुए हैं उनमें सम्मिलित होने वालों की संख्या इससे अधिक नहीं थी, इसलिए इससे अधिक की कल्पना उनके मस्तिष्क में आ ही नहीं पाई। परन्तु प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि उस प्रदर्शन में बीस लाख से कम लोग नहीं थे। और वामपन्थी विचारों के प्रतिनिधि और गोहत्या विरोधी तथा मद्य-निषेध आदि आन्दोलनों का सदा उपहास करने वाले बम्बई के 'ब्लिटज' ने भी प्रदर्शनकारियों की संख्या सात लाख से अधिक बताई है। निष्पक्ष प्रेक्षकों के अनुसार, बीस लाख की संख्या में अत्युक्ति हो सकती है, परन्तु कुल मिलाकर प्रदर्शनकारियों की संख्या दस लाख से कम किसी भी हालत में नहीं थी।

इस संख्या के विवाद में पड़ना हमारा प्रयोजन नहीं है। प्रयोजन केवल यह बताना है कि यह प्रदर्शन अभूतपूर्व था, संख्या की दृष्टि से भी और शान्तिप्रियता की दृष्टि से भी। परन्तु सरकार ने उस दिन जैसे अविवेक का प्रदर्शन किया उसे भी सिवाय 'अभूतपूर्व' के और कुछ नहीं कहा जा सकता। लगता है कि प्रशासकों में जैसी ऊहा, तर्कणा और समय से पहले घटना की कल्पना करके उसकी तैयारी की व्यवस्था-बुद्धि होनी चाहिए थी, वैसी नहीं थी। जहां देश का विशाल जन-पारावार उमड़ा हो और अत्यन्त शान्ति प्रियता के साथ अपनी हार्दिक भावना को प्रकट कर रहा हो, वहां किसी सरकारी नेता का उसके सामने आकर आश्वासन के दो शब्द भी न कह सकना जन-भावना की अवहेलना की पराकाष्ठा है। जो नेता जनता से अपनी जय जयकार सुनने के आदी हैं, वे जनता की प्रशंसा के पात्र भी तभी तक रह सकते हैं जब तक वे जनता के दुःखी दिल पर मरहम रखने का काम करते हैं। जब वे जनता का 'दिल तोड़ देते हैं' तो जनता को भी अपनी भक्ति तोड़ने में देर नहीं लगती।

उस दिन पुलिस द्वारा लाठी चार्ज, अश्रुगैस और गोलीबारी का बेतहाशा प्रयोग किया गया।

पुलिस ने अपनी ओर से उत्तेजना में कसर नहीं छोड़ी थी। परन्तु प्रदर्शन करने वाली तो वह मूक भारतीय जनता थी जो सर्वथा निहत्थी तो थी ही, साथ ही शांति और अहिंसा जिसे सदियों की विरासत के रूप में घुट्टी में मिली थी। हम इस देश का परम सौभाग्य समझते हैं कि उस दिन वह विशाल जन-समुदाय उत्तेजित नहीं हुआ और पुलिस द्वारा गोली चलाए जाने के पश्चात् शान्ति पूर्वक तितर-बितर हो गया।

अब प्रश्न यह है कि उस दिन जो थोड़ी बहुत हिंसक घटनाएं हुईं, कई जगह आग-जनी मोटरें और बसें जलाई गईं, या पुलिस पर पथराव हुआ, वह किसने किया ? यह काम उन्हीं लोगों का किया हुआ है जो हमेशा यही काम करते हैं। इनमें कितने सामाजिक तत्त्व हैं और कितने विशिष्ट राजनीतिक विचारधारा वाले लोग—इस विवाद में हम नहीं पड़ते। हम तो केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि यह उन्हीं सधे हुए हाथों का काम है जो हमेशा तोड़-फोड़ के काम करते रहते हैं, विध्वंस जिनकी राजनीति का खास अङ्ग है और जो सदा इस काम के लिए ही पलते हैं, पाले जाते हैं। बिचारे देहाती प्रदर्शनकारी इस बात को क्या जाने कि कार का कौनसा पुर्जा कहां लगता है, कैसे मोटरों में से पेट्रोल निकाला जा सकता है और किस जगह दियासलाई दिखाने से मोटर बिना भस्म हुए नहीं रह सकती। और ये विध्वंसकारी तो प्रदर्शन प्रारम्भ होने से पहले ही सक्रिय थे और जलूस की विभिन्न शाखाओं के अपने अपने शिविरों से प्रदर्शन में शामिल होने के लिए निकलने से पहले ही मोर्चों पर जमे हुए थे।

गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा के इस्तीफा देने के पश्चात् कुछ और रहस्यपूर्ण तथ्य भी सामने आए हैं। जिस प्रकार कांग्रेस के विशिष्ट गुट ने नन्दा जी को बलि का बकरा बनाया है उससे यह और भी स्पष्ट हो गया है कि इस सारे विध्वंस की सुनिश्चित योजना थी। नन्दा जी ने जब से भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान छेड़ा था तभी से भ्रष्टाचारियों के सहयोगी ये शक्तिशाली लोग नन्दा जी के पीछे हाथ धोकर पड़े हुए थे। नन्दा जी को बदनाम करने के लिए तथा अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिए ही उन्होंने यह जघन्य षड्यन्त्र किया था। समाचार पत्रों में यह भी छपा है कि कलकत्ता और बम्बई से विध्वंसात्मक कार्यों में दक्ष अपने गुर्गे बुलाए थे। उनकी योजना यह प्रतीत होती थी कि जब गृहमन्त्री की सारी शक्ति प्रदर्शनकारियों से निपटने में लगी होगी तब ये गुर्गे जगह-जगह विध्वंसक कार्य करेंगे और इनको थोड़ी या बहुत

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक
श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी

आपको दिनांक ७ नवम्बर को रात्रि के ३ बजे दिल्ली पुलिस ने आपके निवास स्थान से बन्दी बनाकर अम्बाला कारावास में भेज दिया है। स्मरण रहे कि आप लोक सभा के लिए मुरादाबाद क्षेत्र से कांग्रेसी प्रत्याशी से टक्कर लेने की जोरदार तय्यारी कर रहे हैं।

सामयिक-चर्चा

महर्षि दयानन्द सरस्वती की गोवध तथा मांसाहार निषेध विषयक विचारधारा

गोरक्षा सर्वोत्तम है

ज्वालापुर में राव भोजखां नाम के एक धनी सज्जन निवास करते थे। वे स्वामी जी के सत्संग में आया करते थे। उन्होंने प्रार्थना की—'महाराज!' क्या गोरक्षा सब जीव-रक्षा से अच्छी है? स्वामी जी ने उत्तर दिया—'हां, गोरक्षा सर्वोत्तम है और इसमें सबसे अधिक लाभ है। गोरक्षा करना सब मनुष्यों का कर्त्तव्य है।"

राव महाशय ने स्वामीजी का कथन स्वीकार करके मांस खाना ही छोड़ दिया। (द.प्र.पृ.३८८)

गोमांस भक्षण का परित्याग

एक दिन कई पादरी महाशय स्वामी जी के निवास-स्थान पर पधारे। गोरक्षा पर बात चल पड़ी। महाराज ने जोन्स महाशय से पूछा 'भलाई क्या है।' उसने कहा 'आप ही बताने की कृपा कीजिए। तब स्वामी जी ने कहा—"जिस कर्म में अधिकांश मनुष्यों का अधिक उपकार हो उस कर्म को मैं भलाई मानता हूं।' इस सिद्धान्त को जोन्स महाशय ने भी स्वीकार कर लिया। तब फिर महाराज ने बड़ी उत्तमता से सिद्ध कर दिखाया कि गोरक्षा से अधिकांश मनुष्यों को अत्यधिक लाभ होता है। उनके उपदेशों को सुनकर जोन्स महाशय ने गोमांस भक्षण के परित्याग का वहीं प्रण धारण कर लिया।

गोमेध का अभिप्राय

फर्रुखाबाद में कुछ पौराणिक पंडितों ने महाराज के पास कुछ प्रश्न उत्तर के लिए भेजे। एक प्रश्न यह था:—

मांस खाने में पाप है अथवा नहीं। यदि पाप है तो वेद और आप्त ग्रन्थों में, यज्ञ में हिंसा का विधान क्यों है? और भक्षणार्थ मारना क्यों लिखा है?

महाराज ने उत्तर दिया—

"मांस खाने में पाप है। वेदों तथा आप्त ग्रन्थों में यज्ञादि में हिंसा करना कहीं भी नहीं लिखा। गोमेध आदि शब्दों के अर्थ वामियों ने बिगाड़े हैं। इनका वास्तविक अर्थ हिंसा-परक नहीं है। जैसे डाकू आदि दुष्टजनों को राजा लोग मारते हैं ऐसे ही हानिकारक पशुओं का मारना भी लिखा है। आजकल तो वामियों ने मिथ्या श्लोक बनाकर गोमांस तक खाना भी बताया है। जैसे मनुस्मृति में धूर्तों का मिलाया हुआ लेख है कि गोमांस का पिंड देना चाहिए। क्या कोई पुरुष ऐसे भ्रष्ट वचन मान सकता है।

अश्वमेध का अर्थ न्याय पूर्वक प्रजा पालन और गोमेध का अर्थ है अन्न का उपार्जन करना, इन्द्रियों को पवित्र बनाना, भूमि को शुद्ध रखना और मृतक का दाह कर्म करना।

मांसाहारी को योगविद्या नहीं आती

गुजरांवाला में एक दिन स्वामीजी ने मांस-भक्षण को वेद-विरुद्ध बताया। इस पर महाशय कृष्ण नारायण ने कहा—'इसके खाने में कोई हानि तो नहीं है।' स्वामीजी ने कहा—'परमात्मा की आज्ञा का पालन न करना यही एक बड़ी हानि है। तब कृष्ण नारायण ने कहा—'मैं मांस खाता हूं। यदि इससे कोई हानि होती तो मैं उसका अनुभव कर लेता।"

स्वामी जी ने उत्तर दिया—"आज्ञाएं दो प्रकार की होती हैं। एक शरीर से सम्बद्ध और दूसरी आत्मा से सम्बद्ध। शरीर के साथ सम्बद्ध रखने वाली आज्ञा को भंग करने से रोग-शोक आदि दुःख होते हैं। आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली आज्ञा के लोप से शारीरिक दुःख तो नहीं होते परन्तु आत्मा उच्चपदको प्राप्त नहीं होता। मांस खाना आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली परमात्म-आज्ञा का भंग करना है इसलिए मांस खाने वाले को योग-विद्या नहीं आती। उसे योग की सिद्धियां भी प्राप्त नहीं होतीं।

गोहत्या से बड़ी हानि हो रही है

एक दिन शाहजहांपुर में महाराज ने व्याख्यान में कहा—"गोहत्या से बड़ी हानि हो रही है परन्तु खेद है राज पुरुष इस पर कुछ भी ध्यान नहीं देते। यह दोष अधिक हमारा अपना है। हममें एकता का सर्वथा अभाव है। यदि मिलकर गोवध बन्द कराने का निवेदन करें तो क्या नहीं हो सकता? जो लोग दान करते हैं वे भी हानि लाभ को नहीं सोचते। भोले भाले भाई समझ लेते हैं कि गो संकल्प करने से वैतरणी पार हो जायेंगे। वे मर जाते हैं और गौ पुरोहित देवता के आंगन में खूंटे से बंधी रहती है प्रत्युत बार २ कई स्थानों में संकल्प कराई जाती है। बहुत से ऐसे भी कुलकपूत हैं जो तुरन्त उसे कसाई के हाथ बेच डालते हैं।

भक्ष्याभक्ष्य क्या है?

जितना हिंसा, चोरी, विश्वासघात छल-कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य और अहिंसा धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है।

यह राजपुरुषों का काम है कि जो हानि-कारक पशु वा मनुष्य हों उनको दण्ड देवें और प्राण से भी वियुक्त करदें। उनका मांस चाहे फेंकदें चाहे कुत्ते आदि मांसाहारियों को खिलादें या जला देवें अथवा कोई मांसाहारी खावे तो संसार की कुछ हानि नहीं होती किन्तु उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के

तत्वावधान में आयोजित

प्रेस सम्मेलन

गोरक्षा आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कार्य और उपदेशों का अभिन्न अंग था। गाय का संरक्षण अनिवार्य है जिसका दूध शाकाहारी भोजन का मुख्यतम अंग है। उन्होंने गो तथा अन्य दूध देने वाले पशुओं के संरक्षण का पक्ष लिया परन्तु गोरक्षा पर बहुत बल दिया इसलिए कि गो का दूध शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से श्रेष्ठतम है। इसके अतिरिक्त गो भारत के आर्थिक ढांचे का मेरुदण्ड और आर्य संस्कृति का प्रतीक है इस लिए भी गो रक्षा और उसके सम्यक पालन पोषण और वृद्धि पर विशेष बल दिया गया है और गो हत्या का घोर खण्डन किया गया है।

भोजन और व्यवसाय के लिए गो हत्या भारत वर्ष में विदेशी शासन का एक बहुत बड़ा अभिशाप रही है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने इस कलंक के विरुद्ध सबसे पहले आवाज उठाई। वे जहां गये वहां उन्होंने गौ हत्या के विरुद्ध प्रचार किया और जब कभी किसी बड़े शासक से भेंट हुई तो उन्होंने गोहत्या बन्दी के लिये प्रेरणा की। बाद में उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक गो करुणा निधि लिखी जिसमें उन्होंने पूर्ण रूप से गो हत्या के अभिशापों और गोरक्षा के वरदानों का वर्णन किया। उन्होंने महारानी विक्टोरिया और ब्रिटिश पार्लियामेन्ट को पेश किये जाने के लिए २-३ करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षरों की योजना बनाई थी जिस पर लाखों व्यक्तियों के हस्ताक्षर भी हो गए थे। परन्तु दुर्भाग्य से उनके असामयिक परम पद प्राप्त करने के कारण यह कार्य वहीं रुक गया था। यदि वे जीवित होते तो अब से बहुत पूर्व ही गोहत्या पूर्णतया बन्द होजाती।

गो रक्षा और गोहत्या निषेध प्रारम्भ से ही आर्यसमाज के कार्यक्रम का मुख्य अंग रहा है। इसके बाद महात्मा गांधी ने गोरक्षा के लिए कार्य किया और सम्पूर्ण गोहत्या बंदी को स्वराज्य की योजना का अंग बनाया। आर्यसमाज के प्रभाव और महात्मा गांधी के सक्रिय समर्थन से गोहत्या बन्दी को हमारे संविधान में स्थान प्राप्त हुआ। परन्तु यह बड़े दुःख और दुर्भाग्य की बात है स्वतन्त्र भारत के प्रशासन ने अभी तक गो हत्या बन्दी के लिए कानून नहीं बनाया और इस मामले को वह टालती रही है और यदि उसने लोकमत के दबाव में आकर कुछ राज्यों द्वारा कानून बनवाये भी हैं तो वे अपर्याप्त और निरर्थक सिद्ध हो चुके हैं। पूर्ण गो हत्या बन्दी के बिना न तो उद्देश्य की सिद्धि हो सकेगी और न संविधान की भावना की रक्षा हो सकेगी। इसलिये पूर्ण गो हत्या बन्दी की मांग उठी और उसने जोर पकड़ा। सरकार की हठधर्मी और इस विषय को राज्य सरकारों का विषय बताकर उत्तरदायित्व से बचने की कार्यवाही ने लोगों को त्याग और बलिदान का मार्ग अपनाने के लिए विवश कर दिया है।

आर्य समाज अपने कार्यक्रम परम्परा और आदर्श के प्रति निष्ठावान रहते हुए निष्क्रिय दर्शक के रूपमें खड़ा नहीं रह सकता था। अतः उसने साधु महात्माओं तथा अन्य सत्याग्रहियों के प्रति सहानुभूति और समर्थन का निश्चय किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने जो १६-१०-६६ को सभा के प्रधान श्री प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास की अध्यक्षता में दिल्ली में हुई थी सर्व दलीय गोरक्षा अभियान समिति द्वारा संचालित आन्दोलन को सक्रिय सहयोग अहिंसात्मक सत्याग्रह के रूप में देने का निश्चय किया जिसका सर्वत्र स्वागत हो रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार आर्य समाजें, उसकी बहुसंख्यक संस्थायें और नर-नारी इसकी सफलता के लिए हर प्रकार का धन-जन का बड़े से बड़ा योग देने के लिए कार्य में जुट गये हैं। हजारों के सत्याग्रह के लिये आवेदन पत्र मिले हैं और सिलसिला जारी है। वे सभा के आदेश की प्रतीक्षा में हैं। सत्याग्रह करने वाले आर्य नर-नारी सार्वदेशिक सभा के मार्ग—दर्शन, नियन्त्रण और अनुशासन में सत्याग्रह करेंगे।

सार्वदेशिक सभा ने देश की आर्य जनता से ७ नवम्बर को दिल्ली में होने वाले विशाल प्रदर्शन में भारी संख्या में भाग लेने का आवाहन किया।

संक्षेप में हमारी मांगें ये हैं:—

१ - केन्द्रिय सरकार सम्पूर्ण भारत में हिन्दुओं की भावना एवं देश की आर्थिक समृद्धि का ध्यान रखते हुए गोहत्या बन्दी का कानून बनाये और इसके लिए संविधान में आवश्यक संशोधन अनिवार्य हो तो कराये।

२ – गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय।

३—राज्य की ओर से अच्छी नस्ल की गउओं की वृद्धि और सूखी गायों के भरण पोषण का पूरा २ प्रबन्ध किया जाय।

यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि स्वतन्त्र भारत में भी यह कलंक बना हुआ है और सरकार अनुत्पादक विषय इत्यादि खाद और नैक उपायों पर ध्यान नहीं देती। खेद है कि देश के बहुमत की निर्ममता पूर्वक उपेक्षा की जा रही है।

—प्रकाशवीर शास्त्री
(एम० पी०)

गाजियाबाद की ११ आर्य महिलाओं का सत्याग्रही जत्था—
श्रीमती सरस्वती देवी जी के नेतृत्व में दीवानहाल में आया जिनमें प्रोफेसर रत्नसिंह जी एम० ए० की धर्मपत्नी भी हैं—श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले के नेतृत्व में सत्याग्रह करते हुए बन्दी और सबको दिल्ली सरकार ने एक-एक मास के लिए कारावास का दण्ड दिया।

युग द्रष्टा महर्षि दयानन्द

कपिलदेव राय, अध्यापक वेस्ली इण्टर कालेज, आजमगढ

आज दीपावली का पुनीत पर्व है। यह महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस भी है। हमने उन्हें विष पिलाया उन्होंने हमें अमृत पिलाया। 'प्रभु की इच्छा पूर्ण' कर चले गये। वह एक महान् योगी थे। जर्जरित भारत को नवजीवन प्रदान किया। महाभारत के युद्ध ने आर्य संस्कृति को विश्रृंखलित कर दिया था। वेद लुप्त हो चुके थे। कोई सुनिश्चित दिशा न थी। शिक्षित एवं प्रबुद्ध वर्ग परावलम्बी हो चुका था। सामान्य जन अज्ञान के कलुष मे निमज्जित होकर पथभ्रष्ट हो रहा था। यवन एवं आंग्ल संस्कृतियों के निर्दय प्रहार से मां भारती की वीणा मूक थी। चतुर्दिक गहन तमिस्रा व्याप्त थी। ऐसे समय योगिराज दयानन्द का आविर्भाव हुआ। अपने प्रखर ज्योति से उन्होंने सम्पूर्ण देश को ज्योतित कर दिया। वह अकेले थे। किन्तु सतेज, निर्भय एवं अचल थे। भयकर तूफान उठे। दयानन्द चट्टान की भांति खड़े रहे। डिगे नही। नास्तिक वाद का भयकर प्रलयकारी गर्जना शान्त हुई। पाखण्ड का कूडा-कर्कट ऋषि के ज्ञान की महाज्वाला में भस्मसात हो गया।

भारत रुग्ण था। एक नहीं, अनेको रोग लग गये थे। यदि सच्चे रूप मे किसी ने भारत की नब्ज पकड़ी तो वह ऋषि दयानन्द थे और केवल दयानन्द थे। उन्होने निदान भी किये। वेदो का पुनरुद्धार किया। जर्मनी से वेदो को मगाकर उसका भाष्य किया। संस्कृत भाषाकी मर्यादा स्थापित की। हिन्दी भाषा को सर्वप्रथम राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्रदान करने वाले दयानन्द ही थे। उन्होने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर बल दिया। भारतीय कांग्रेस के जन्म के वर्षों पूर्व उच्चस्वर से उदघोषित किया था। सुराज से स्वराज्य अच्छा होता है। नारी शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित किया। उन्हे वेद पढने का अधिकार प्रदान किया। वर्ण-व्यवस्था की महत्ता प्रतिपादित करके अछूतोद्धार का झण्डा बुलन्द किया। उनका लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' था। राम एवं कृष्ण के वास्तविक स्वरूप का दिग्दर्शन कराया। वेद विहित सच्चे धर्म का प्रचार किया। उन्होने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना कर अपूर्व एवं अद्भुत विद्वत्ता का परिचय दिया है।

ऋषि के कृतित्व का वर्णन शब्दो में नहीं किया जा सकता। किन्तु यह देश का दुर्भाग्य है कि आज भी भारतीय इतिहास में महर्षि दयानन्द को केवल धार्मिक सुधारक कहा जाता है। किन्तु यदि थोड़ा भी ऋषि के जीवन का अध्ययन करे तो पता चलेगा कि वे राष्ट्र के सर्वांगीण उन्नति के लिये बेताब थे। उन्हे अपने व्यक्तिगत मोक्ष की चिन्ता न थी वे तो विश्व को मुक्त कराने आये थे। यदि राष्ट्र वैदिक मार्ग का अनुसरण करता तो ऐसे दुर्दिन देखने को न मिलते। आज विश्व का कोई भी राष्ट्र होता जिसके पास अतीत की ऐसी स्वर्णिम, अमूल्य वैदिक व्यवस्था होती तो स्वतन्त्र होते ही वह इस मार्ग का अनुसरण करने लगता। निर्भ्रान्त एवं अपौरुषेय वेदो का आधार ही उस राष्ट्र का जीवन दर्शन होता। किन्तु आज अवस्था बिल्कुल विपरीत है। राम कृष्ण शिवाजी तथा प्रताप का नाम लेने वाला आज साम्प्रदायिक है।

कारखाने खुले। पुल बने। सड़कें निर्मित हुई। बडे-बडे बांध बने किन्तु मनुष्य नहीं बन सके। वर्तमान सरकार के पास न कोई निश्चित जीवन पद्धति है और न कोई उच्चादर्श। समस्याओ का महाजाल बिछा है। आज युवक किंकर्तव्य विमूढ है। आज छात्र-समस्या भी इसी का परिणाम है। किन्तु क्या कभी विद्वान् शासकों ने इसके मूल मे जाने का प्रयत्न किया है। जो नवयुवक गंदे चलचित्रों मे उच्छृंखलता, छेड़खानी के विभिन्न तरीके एवं छिछोरापन सीखता है उससे सयमित, अनुशासित एवं मर्यादित रहने की अपेक्षा करना आकाश कुसुम सदृश है। भद्दे एवं अश्लील चलचित्रो की रोक के लिये सैंसर बोर्ड से जब कहा जाता है तो उसके सिर पर जू नहीं रेंगती। कर मुक्त एवं 'केवल बालिगों वाली' फिल्मे किशोरवय बालकों के जीवन का जिस प्रकार सत्यानाश कर रही हैं वह वर्णनातीत है। महर्षि दयानन्द ने कहा है कि विद्यार्थीको पूर्ण ब्रह्मचारी रहकर ईश्वर-विश्वास के साथ विद्योपार्जन करना चाहिये। राष्ट्रीय चरित्र की इकाई व्यक्तिगत चरित्र है। किन्तु आज मानव के व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक चरित्र मे महान् अन्तर है। बिना चरित्र-निर्माण के देशोत्थान असम्भव है। चरित्र निर्माण का आधार आस्तिकता है। दैनिक प्रार्थना से आस्तिकता एवं आत्मबल की वृद्धि होती है। आत्मबल से निर्भयता आती है। निर्भयता से कर्मठता एवं सामर्थ्य से मनुष्य कठिन श्रम करके अपने एवं राष्ट्र के उत्थान मे योगदान दे सकता है। किन्तु आज की धर्म निरपेक्षता ने देश के युवकों को आदर्श विहीन कर दिया है। यदि महर्षि के बताये हुए गुरुकुल पद्धति का थोड़ा भी समावेश वर्तमान शिक्षा मे किया गया होता तो आज का युवक सच्चमुच, सयमित, अनुशासित एवं राष्ट्रभक्त बनकर विद्यालय से निकलता। महर्षि दयानन्द ने गौ करुणानिधि नामक पुस्तक मे गाय को भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरुदड बतलाया है। यदि देश के स्वतन्त्र होते ही गोवध बन्द हो गया होता और गाव-गाव में मुर्गी-शाला की जगह गोशाला खोली गई होती तो कृषि की समस्या हल हो जाती तथा पौष्टिक विटामिनों के विदेशो से आयात करने में प्रतिवर्ष व्यय होने वाले करोड़ों रुपयों की बचत होती। ऋषि ने बताया कि यज्ञ से सबल सतान एवं स्वस्थ अन्न उत्पन्न होता है। परिवार-नियोजन की विभिन्न अप्राकृतिक पद्धतियो के बजाय यदि महर्षि दयानन्द की शास्त्रोक्त विधि का प्रचार करके जनसख्या की वृद्धि रोकी जाय तो जहां एक ओर देश के वर्तमान स्त्री एवं

(शेष पृष्ठ १३ पर)

स्वामी भास्करानन्द जी सरस्वती और प्रज्ञाचक्षु श्री स्वामी बालकराम जी जो १५ सत्याग्रहियों के साथ फतहपुरी में पकडे गये।

देश का उत्थान चाहते हो तो

गोहत्या बन्द करो

(श्री वेदव्रत शास्त्री, विद्यावाचस्पति, होशियारपुर)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भारत में रामराज्य को स्थापित करना चाहते थे। वे कहा करते थे कि स्वराज्य में गौ नहीं मारी जायेगी। किन्तु अहिंसा का पाठ पढाने वाले भारत के नेता आज स्वय लाखों की सख्या में गौ मरवा रहे हैं। कहना कुछ और करना कुछ। ज्यों २ गोवध के निरोध के लिए देश में आन्दोलन किए जा रहे हैं त्यों २ हमारे ये नेता बच्चों जैसी हठ पकड़ते चले जा रहे हैं। वे अपनी हठ को न छोड़ना ही अपनी शान समझते हैं। गौ हमारी माता हैं, यह देश धर्म का नाता है। जिस गौ को महाराजा कृष्ण ने माता के नाम से पुकारा आज उस अबला माता की गर्दन पर कटार चलाई जा रही है। वह अपनी इस मूक जबान से कुछ बोल नहीं सकती। उस पर जो जुल्म कराए जा रहे हैं किसको सुनाए। उसकी करुणामयी सजल भोली-भाली डबडबाती हुई आंखें आज भारत के भाग्य पर रो रही हैं।

भारतके प्रत्येक नवयुवक आबाल वृद्धों की ओर देख रही हैं कि मेरी रक्षा कौन करेगा। सृष्टि निर्माणकाल से लेकर आज तक असख्यों मातृहीन बच्चों को गौमाता के दूध से पाला गया है। इस निर्दयी का हृदय कितना कठोर है कि जिस गौ माता को अपने घर में पालता है उसी पर कटार-चलाता है। बेईमान बन जाता है। पेट के लिए उसे बेच देता है। उसके प्यार का बदला कृतघ्नता से चुकाना चाहता है। उसकी शीतल आंखों के सामने आग जला देता है। किस प्रकार उसे कोड़े से घास का लालच देकर उसकी गर्दन पर एक दम आरा आ गिरता है। किस प्रकार गर्म २ पानी से उसकी खाल उतारी जाती है। तड़प २ कर जान खो देती है। उसके बच्चों को किस प्रकार कोड़ों से पीटा जाता है। उसकी भोली-भाली सूरत को उस समय कोई सहृदय व्यक्ति नहीं देख सकता। उसकी हालत को देखता हुआ धार्मिक भी रोता ही नहीं अपितु पतित हो जाता है। ओ मानव? वेद ने कहा था, ईश्वर ने तुझे आदेश दिया था—गा: मा हिंसी:।" गौ मत मार। तू किसी के बच्चे को मार कर अपने बच्चों को नहीं रख सकेगा। तुझे शान्ति कहां से मिलेगी। अशान्त को सुख कहां से हो सकता है। भला तू दूसरों को दुखी कर कैसे सुख पा सकता है।

आज हमारी सरकार अन्न की समस्या को अण्डे, मास, मछली और चूहों, मेंढकों तथा छिपकलियों के भक्षण से सुलझाना चाहती है। जिस देश के नौजवान चूहों को खाते होवें कितने बलवान हो सकतेहैं। यह बात विचारणीय है कि जिस के घर में एक गाय हो उसके घर में तो आटे का आधा खर्च ही घट जाता है। हमारी अन्धी सरकार तामसिक पदार्थों को बढ़ावा दे रही है जो कि और भी बढ़ते हुए भ्रष्टाचार के लिए सहायक है। जितने होटलों पर मांस और शराब का प्रयोग होता है वहां पर उतना ही अन्न भी नष्ट होता है। कुछ जूठा छोड देते हैं। स्वाद २ में अधिक खा जाते हैं। इस प्रकार के भोजन खाने वालों की बुद्धि मारी जाती हैं। सत् और असत् का विवेक नहीं रहता। तामसिक पदार्थों के प्रयोग से ही आज भ्रष्टाचार फैल रहा है। किन्तु जो व्यक्ति दूध, घी, लस्सी का सात्विक भोजन करता है वह जूठा छोडना पाप समझता है। उसके विचारों में सात्विकता आ जाती है। बच्चे स्कूल को जाते समय लस्सी से रोटी खा जाते हैं,अर्धावकाश पर वहीं से भोजन कर जाते हैं। रात्रि को भी दूध पीते हैं। उसके भोजन के साथ २ दूध चलता रहता है। दाल सब्जी के अभाव में भी काम चल जाता है। तेल का अभाव हो तो घी से काम चल जाता है। विदेशियों ने हमारी नकल करके गौ पालन शुरू किया आज उन्हें पर्याप्त मात्रा में घी दूध मिलता है। किन्तु आज सरताज भारत गौमाता के मांस और खून से भूख प्यास को मिटाना चाहता है। गौ कितना उपयोगी पशु है। सारी आयु भर देता ही रहता है।

उसके बछड़ों द्वारा अन्न उपजाया जाता है। उसका खाद खेत में डालने से हमें बनावटी मसालों की आवश्यकता नही रहती। इतना ही नहीं, मरते समय तक उसके उपकार ही उपकार हैं। अन्त मे हमें दूध पिलाने के लिए अनेको गौओं को छोड़ जाती है। गौधन अमूल्य धन है।

हमें इस प्रकार का नया भारत नहीं चाहिए, हम पुराना बूढ़ा आर्यवर्त चाहते हैं। इस राज्य की ही परिभाषा आततायी राज्य से है। कितने दुःख की बात है। आज हमारी पुकार को नहीं सुना जा रहा। देखो? गौ रक्षा के लिये हमारे गोभक्तों को यह अन्धी सरकार भ्रष्टाचार के जुर्म में गिरफ्तार कर रही है। उनकी आत्मा की आवाज को सुना नहीं जाता। कितना अन्धेर है कि सज्जन को भी चोर बनाया जा रहा है। चोरों को तथा गुंडों को यूं ही रिश्वतखोरी पर छोड़ा जा रहा है। विरोधियों पर गोली चलाई जा रही है। हा हाकार मचाई जा रही है।

जब तक देश के नौजवानों को घी दूध प्राप्त नहीं होगा तब तक वे राम, कृष्ण प्रताप और पृथ्वीराज नहीं बन सकते। इस कमजोरी ने मजबूत भारत की नींव को खोखला कर दिया है। गौहत्या को रोके बिना देश का कल्याण नहीं हो सकता। यदि गौहत्या बन्द न हुई तो याद रखो भारत का बच्चा २ धर्म की वेदी पर अपने को कुर्बान कर देगा। भारत हमारा है। हम भारत के मालिक हैं। राम, कृष्ण और दयानन्द की सभ्यता के पुजारियों? चेतो! जागो! गौहत्या बन्द हो, गौ हत्या बन्द हो॥

श्री रामनाथ जी सहगल

जिन्हें दिनांक ८ नवम्बर को दिल्ली सरकार ने बन्दी बना लिया।

आर्य समाज की उन्नति के दस सूत्र

(१) आर्य समाज की उन्नति का सबसे प्रमुख साधन इसके सदस्यों का सच्चे अर्थों में आर्य बनना है। आर्य समाज के सदस्य जितने अधिक धर्मात्मा, सदाचारी, ईश्वर भक्त कर्तव्य परायण, सत्यनिष्ठ विशाल हृदय और परोपकारी होंगे उतनी मात्रा में आर्य समाज की उन्नति हो सकेगी। आर्यों के व्यक्तिगत जीवनों की अपवित्रता तथा पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष आर्य समाज की उन्नति में सबसे अधिक बाधक हैं। समाज सम्+अज इस प्रकार बनता है। अज-गति क्षेपणयो के अनुसार समाज में लोगों के मिलकर गति करने और बुराईयों को परे फेंकने का भाव है। गति के ज्ञान, गमन और प्राप्ति अर्थ होते हैं। इस प्रकार समाज शब्द के अन्दर प्रेम पूर्वक मिलकर चारों ओर से ज्ञान प्राप्त करने, संसार के उपकार करने के उद्देश्य से गति करने और उस उद्देश्य को प्राप्त करने का भाव आता है जो अत्यन्त महत्व पूर्ण है। आर्य समाज के इस प्रकार सच्चे कर्तव्य परायण ईश्वर भक्त धर्मात्मा आर्यों का संगठित प्रेम बद्ध समुदाय बनने पर आर्यसमाज की यथेष्ट उन्नति में क्या सन्देह हो सकता है ?

आर्य समाज कैसे आगे बढ़ें ?

श्री प० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड, ज्वालापुर

(२) आर्य समाज की उन्नति का दूसरा सूत्र है तर्क के साथ श्रद्धा का समन्वय। यह तर्क वा मेधा के साथ श्रद्धा का सच्चा समन्वय ही वैदिक धर्म की बड़ी विशेषता है जिसका निर्देश 'स मे श्रद्धा च मेधा च जात-वेदा प्रयच्छतु (अथर्व १९.६४.१) इत्यादि मन्त्रों में किया गया है। धर्म ज्ञान के लिये तर्क की भी बड़ी भारी आवश्यकता है किन्तु स्वयं वेद में बताया गया है कि श्रद्धा भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।" (ऋ० १.१५१.१) अर्थात् श्रद्धा को हम धर्म के मस्तक स्थानीय बताते हैं। श्रद्धा के बिना धर्म ऐसा ही है जैसा मस्तक के बिना शरीर। जब तक आर्यों के जीवनों में तर्क के साथ श्रद्धा का समन्वय न होगा और उनके यज्ञ संस्कारादि सब कार्य श्रद्धा पूर्वक न होंगे तब तक आर्य समाज की यथेष्ट उन्नति न हो सकेगी और न वह सब साधारण जनता को अपनी ओर आकृष्ट कर सकेगा।

(३) आर्य समाज के आगे बढ़ने अथवा उसकी उन्नति का तीसरा सूत्र है कुमार-कुमारियों में उसके द्वारा विशेष प्रचार की व्यवस्था। सब आर्य समाजों के साथ आर्य कुमार सभाओं की स्थापना और उनके साथ प्रेम पूर्ण सहयोग से इस उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है। छात्र छात्राओं में वैदिक धर्म के प्रचार की व्यवस्था आर्य समाज की उन्नति के लिये अत्यावश्यक है। सुयोग्य विद्वानों और विदुषियों से उत्तम व्याख्यानों के अतिरिक्त धार्मिक परीक्षाओं, भाषण और निबन्ध प्रतियोगिताओं के आयोजन और पुरस्कारादि द्वारा प्रोत्साहन से भी बड़ा लाभ हो सकता है। उत्तम विद्वान् लेखकों द्वारा छात्रोपयोगी सदाचार और समाज सेवा वर्धक स्फूर्ति दायक साहित्य की रचना करवा कर उसे छात्र वर्ग में वितरित कराया जाए। अभी इस ओर बहुत कम ध्यान है।

(४) आर्य समाज की उन्नति के लिये महिलाओं में वैदिक धर्म के प्रचार की अत्यधिक आवश्यकता है। आर्यमहिला सभाओं और पारिवारिक सत्संगों द्वारा देवियों में प्रचार का विशेष आयोजन विदुषी देवियों को करना चाहिये। संगीत भजन तथा कथाओं का ऐसे सत्संगों में विशेष आकर्षण होना चाहिये। जब तक महिलाओं में वैदिक धर्म और आर्य समाज के प्रति सच्चा प्रेम उत्पन्न नहीं होता, तब तक आर्य समाज की प्रगति असम्भव है। केवल पुरुष वर्ग में प्रचार से भावी सन्तति आर्य नहीं बन सकती। सन्तान पर माताओं का प्रभाव विशेष होता है। महिलोपयोगी सरल भाषा और शैली में उत्तम साहित्य को भी विदुषियों द्वारा विशेष रूप से तैयार करवाकर उसका घर-घर प्रचार किया जाए।

(५) आर्यसमाज की उन्नति का पञ्चम सूत्र शिक्षित वर्ग के लिए विद्वत्ता पूर्ण प्रभाव जनक साहित्य के निर्माण और उसके प्रचार की व्यवस्था करवाना है। यह उत्तम साहित्य देश विदेश की जितनी भाषाओं में तैयार कराया जाय और जितने कम मूल्य पर प्रचारार्थ बेचा जा सके, उतना ही अधिक लाभ होगा। इसके लिये कुछ सुयोग्य विद्वानों और विशेषज्ञों को आर्थिक दृष्टि से निश्चिन्त करके उनका विशेष सहयोग लेना आवश्यक है। अपने देश की भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, फ्रेन्च, जर्मन, रशियन आदि विदेशी भाषाओं में भी इस प्रकार के साहित्य को तैयार करवाने का यत्न करना चाहिये। इसके बिना केवल मौखिक प्रचार का कभी स्थायी प्रभाव नहीं हो सकता। अभी तक संगठित रूप में इस ओर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभादि का ध्यान भी बहुत अपर्याप्त है।

(६) वैदिक धर्म के उत्साह पूर्वक प्रचार के साथ साथ हमारी शिथिलता के कारण निरन्तर अनेक रूपों में बढ़ते हुए पाखण्ड और दम्भ के निर्भयता पूर्वक खण्डन की भी मुझे अत्यन्त आवश्यकता प्रतीत होती है। खण्डन कठोर और दिल दुखाने वाले शब्दों में न हो, किन्तु प्रभाव जनक प्रमाण और तर्क द्वारा प्रेम से जनता के कल्याण की दृष्टि से उसका करना आवश्यक है। आवश्यकतानुसार मौखिक व लिखित शास्त्रार्थों के आयोजन से भी धार्मिक जागृति लाने में

(शेष पृष्ठ ११ पर)

हैदराबाद के २२ आर्यवीरों का जत्था

श्री पं० मुन्नालालजी मिश्र के नेतृत्व में संसद भवन पर गोवध बन्दी की मांग करते हुए गिरफ्तार।

हैदराबाद की स्वतन्त्रता और आर्य समाज

आर्यों का शौर्य दीप

श्री पं० नरेन्द्रजी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद व
उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

[गतांक से आगे]

श्री ए० बालरेड्डी जी को २४ सितम्बर सन् १९४७ ई० को बम तैयार करने के अपराध में पोचमपल्ली तालुका मेंड्चल में ६५ हथगोलों के साथ गिरफ्तार किया गया। अब यह प्रगट किया जा सकता है, कि निजाम सरकार के विरुद्ध क्रान्तिकारी कार्यक्रम का आरम्भ श्री ए० बालरेड्डी जी के तैयार किये हुए बमों से ही हुआ था। श्री ए० बालरेड्डी पर मुकद्दमा चलाया गया। चौदह मास के पश्चात् आप मुक्त हुए। श्री ए० बालरेड्डी जी तथा नारायणराव जी पवार की गिरफ्तारी के एक सप्ताह बाद हैदराबाद केन्द्रीय कारावास के प्रधान अधिकारी श्री सैयद हुसेन जी ने मुझे बुलाकर पूछा :—

प्रश्न :—क्या आप इन दोनों को जानते हैं ?

उत्तर :—बालरेड्डी जी को जानता हूं, नारायणबाबू को नहीं हां, नारायणराव पवार नामक व्यक्ति को तो जानता हूं।

प्रश्न :—इन दोनोंकी हिंसात्मक गतिविधियों की क्या आप पहले से ही जानकारी रखते हैं ?

उत्तर :—नहीं।

प्रश्न :—सच बताइए, क्योंकि ऊपर से इसकी जांच करने को कहा गया है।

उत्तर :—इनकी गतिविधियों से तो परिचित नहीं लेकिन उनके इस क्रान्ति के सिद्धान्त से सहमत हूं कि सत्य ही की विजय होती है अत्याचार की नहीं।

इस उत्तर के बाद मुझे अपने स्थान पर लौट जाने के लिए कहा गया।

हैदराबाद की स्वतन्त्रता के आन्दोलन की घड़ी को समीप आया जानकर, आर्य समाज ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्णय किया था। और वह निर्णय यह कि हैदराबाद स्टेट कांग्रेस और अन्यान्य स्वतन्त्रता प्रिय प्रगतियों के साथ आर्यसमाज मन, वचन और कर्म से पूरा-पूरा सहयोग करेगा। इसके साथ ही आर्य समाज ने अपने सभी सदस्यों को इस बात की भी पूरी-स्वतन्त्रता दे दी कि वे अपनी अपनी इच्छा के अनुसार जिस किसी भी राजनैतिक संस्थाओं में भाग लेना चाहें, ले सकते हैं। और ऐसा करने में सभी आर्य समाजी पूर्ण स्वतन्त्र हैं। आर्यसमाज के इस महत्वपूर्ण निर्णय से निजाम सरकार आग बबूला हो गई। हो गई तो हो जावे, आर्यसमाज के इस निर्णय का परिणाम आशा से भी बढ़कर उत्तम निकला और हैदराबाद के स्वतन्त्रता आन्दोलन को एक असाधारण शक्ति प्राप्त हो गई।

आरम्भ में हैदराबाद स्टेट कांग्रेस को अपने पूर्ण सामर्थ्य से काम करने और आंदोलन को चलाने का अवसर मिला। परन्तु जब उसके प्रमुख नेता और कार्यकर्त्ता गिरफ्तार हो गये, अथवा हैदराबाद राज्य से बाहिर चले गये, तब उनके सम्पूर्ण अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का उत्तरदायित्व भी आर्यसमाज को ही वहन करना पड़ा। परिस्थितियां दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थीं। फिर भी आर्य समाज तथा जनता के साहस और निजामशाही को उखाड़ फेंकने के दृढ़ संकल्प में किसी भी प्रकार की शिथिलता नहीं थी। विद्यार्थियों और श्रम जीवियों का उत्साह तो सभी से बढ़ चढ़कर और अत्यन्त विलक्षण था। हैदराबाद-दिवस और तिरंगा झण्डा दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों ने अपनी युवकोचित जीवन शक्ति और दृढ़ता का जो रोमांचकारी प्रदर्शन किया, उसके परिणामस्वरूप शासकीय क्षेत्रों में भारी खलबली मच गई। इसप्रकारके सभी प्रदर्शनों में आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं का पूर्ण क्रियात्मक सहयोग रहता था। और आर्य समाजियों को प्रदर्शन एवं संगठन कार्यों का जो अनुभव था, वह भी इन अवसरों पर पूरा-पूरा काम आता था। निजाम सरकार की दमन नीति और हिंसावृत्ति का जनता के ऊपर कोई भी प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ने पाता था। ३ सितम्बर को झण्डा दिवस के अवसर पर पुलिस ने जनता की भीड़ पर गोली चलाई। तालुका परकाल में लगभग दो हजार लोगों का एक जुलूस सभास्थल की ओर जा रहा था कि पुलिस ने उसके ऊपर गोली चलानी आरम्भ कर दी। १५ हिन्दू और आर्य समाजी घायल हो गये। २५० व्यक्ति उसी अवसर पर बन्दी बनाये गये। और भी विभिन्न स्थानों पर सरकार ने अपनी दमन नीति का प्रयोग कठोरता के साथ किया। इन भीषण परिस्थितियों में किसी भी संस्था की ओर से किसी भी प्रकार के जलसे, जुलूस, प्रदर्शन और आन्दोलन आदि की प्रगतियों का संचालन सम्भव नहीं था। परन्तु आर्य समाज के साहस और उत्साह के मार्ग में तो कोई भी आशंका या विभीषिका बाधा नहीं डाल सकती थी।

क्रान्ति की चिंगारियां साहस के नये मोर्चे पर

"वतन की फिकरकर नादान ! मुसीबत आनेवाली है।
तेरी बरबादियों के मशवरे हैं आसमानों में॥"

हैदराबाद के नवाब मीर उस्मान अली खां के विरुद्ध जनता में एक विशेष और बहुत उत्कट प्रकार की बेचैनी फैली हुई थी। क्योंकि जनता यह समझती थी, और यह ठीक भी था कि हैदराबाद में मजलिसे इत्तिहादुलमुस्लमीन और रजाकारों जैसे फितने जगाकर और हैदराबाद राज्य को भारत के संघ से बाहिर रखने की योजना बना कर, नवाब अपने आपको पुराने मुगल काल जैसा बादशाह या सुलतान बनने के प्रयास कर रहा था। जैसा कि उन्होंने कहा है :—

सलातीं ने सलफ सब हो गये नजरे अजल उस्मां।
फक्र मुसलमानों का तेरी सलतनत से है निशां बाकी॥

हैदराबाद की जागृत जनता यह भली प्रकार समझ चुकी थी कि निजाम की सम्पूर्ण योजनायें जनता के लिये हानिकारक है और निजाम की तानाशाही का अन्त करके, एवं प्रजातन्त्रात्मक शासन व्यवस्था चालू करके ही उन हानियों से बचा जा सकता है। रियासत में सब ओर भीषण क्रान्ति की चिंगारियां फैल चुकी थीं और वे अन्दरही अन्दर भड़क रही थी। वे अब तब में ही धू-धू करके जल उठने को प्रस्तुत होचुकी थी। अस्तु, सन् १९४७ के अन्त में, निजाम को जिन भीषण घटनाओं का सामना करना पड़ा, उनका सूत्रपात बहुत पहिले से ही हो चुका था। उस समय की घटनायें तो क्रान्ति का विस्फोट मात्र था।

निजाम की मोटर पर बम-एक आर्यवीर का अपूर्व साहस

"बातिल से दबने वाले ऐ आसमां नहीं हम।
सौ बार कर चुका है तू इम्तिहां हमारा॥"

४ दिसम्बर सन् १९४७ ई० को किंगकोठी रोड के मोड़ पर अर्थात् आलसेंस स्कूल के सामने, शाम के पौने पांच बजे निजाम की मोटर पर बम का प्रहार किया गया। इस घटना से सारे हैदराबाद में सनसनी फैल गई। बम काण्ड के प्रवर्त्तक थे श्री नारायणराव जी पवार, उर्फ नारायणबाबू, श्री गंगाराम जी उर्फ गबरैया और श्री जगदीश जी उर्फ ईश्वरैया थे। बम प्रहार के समय निजाम की मोटर चालीस मील प्रति घंटे की गति से जा रही थी। नारायणराव ने आगे बढ़कर बम फेंका। परन्तु निशाना चूक गया। बम मोटर के पिछले हिस्से से टकरा कर, सड़क पर गिरा और फट गया। तीन व्यक्ति जो कुछ दूर खड़े हुए थे, वे आहत हो गये। मोटर का पिछला हिस्सा भी खराब हो गया। मोटर रुकी और फिर घटनास्थल तक आई।

क्रमशः

दीपावली और स्वामी दयानन्द

श्री भक्तराम जी शर्मा (अफ्रीका वाले)

आर्य समाज प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मथुरा में, जहां योगेश्वर कृष्ण ने अपने पूज्य पिता श्री वसुदेव और माननीया माता देवी देवकी को कंस के बन्दी गृह से मुक्त किया था, जहां राक्षस कंस को पिछाड़ा था, जहां गौपों को वैदिक सभ्यता और आर्य संस्कृति का पाठ पढ़ाया था, यादवों को पाप से छुड़ाया था, व्याकरण के भानु दण्डी स्वामी विरजानन्द से अढ़ाई वर्ष तक (सं० १९१७) विद्या प्राप्त करके उस के प्रचार की आज्ञा मांगी और वहां (मथुरा में) यात्रा प्रारम्भ की जो दीवाली के दिन समाप्त हुई। स्वामी दयानन्द का जन्म, जीवन और मरण तीनों शिक्षाप्रद हैं। दीपावली की रात्रि भारत वर्ष में चार बातों के लिये विशेष महत्व रखती है।

१ – इस रात मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के अत्याचारी व व्यभिचारी लंका पति रावण पर विजय प्राप्त कर १४ वर्ष के वनवास की समाप्ति के पश्चात अयोध्या में लौटने के समय वहां की प्रजा ने प्रेम और भक्ति के साथ दीपमाला की थी।

२ - जैन धर्म के २४ वें और अन्तिम अवतार महावीर स्वामी दीवाली को ही मोक्ष पद को प्राप्त हुए कहे जाते हैं।

३ – महर्षि दयानन्द परम-धाम को जाने के लिए स्वर्ग-सोपान पर कार्तिक अमावस्या सम्वत् १९४० विक्रमी, मंगलवार सायंकाल के छः बजे आरूढ़ हुए।

४—श्री रामकृष्ण परम हंस के शिष्य स्वामी रामतीर्थ भी कार्तिक अमावस्या को स्वर्ग सिधारे थे अस्तु। मेरे लेख के विषय का सम्बन्ध अपने आचार्य दयानन्द से है। वह तारा जो संसार में आचार, पवित्रता और त्याग के रुप में चमका, समय आया कि वह अस्त हो गया। सदैव कौन रहा और कौन रहेगा? दीपावली का दिन प्रत्येक आर्य के लिए एक विशेष दिन है। इसी दिन ऋषि दयानन्द ने अतुल परोपकार करते हुए और घोर तप करते हुए परम धाम में विश्राम लिया था। हमें उन के गुणों को अपने अन्दर धारण करना चाहिए। यही दयानन्द स्मरणी है। निष्काम भाव से ऋषि दयानन्द ने जो उपकार देश जाति और धर्म पर किये हैं उस ऋण से हम अपना सर्वस्व देकर भी मुक्त नहीं हो सकते।

आर्य समाज ऋषि का उत्तराधिकारी है और उस का मुख्योद्देश्य "संसार का उपकार करना है" और जय-घोष है "कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।" मुख्योद्देश्य और जयघोष की तुलना में आज तक के हमारे सारे प्रयत्न दरिया में खस २ के तुल्य हैं। क्या हम नहीं देखते कि ऋषि ने जिन मत-मतांतरों का खण्डन किया था वे पहिले से भी अधिक दनदना रहे हैं और कुछ एक नये पन्थों ने जन्म ले लिया है। जिन पाखण्डों, ढोंगों और पुराने बन्धनों को तोड़ने का हमने व्रत लिया था वे बल पकड़ रहे हैं। वहम बढ़ रहे हैं, भ्रष्टाचार का खूब प्रचार है, कुरीतियां पूर्ववत् प्रचलित हैं, सोशल बुराइयां वैसी की वैसी हैं। हम खेत मे गेहूं बोते हैं और घास पात साफ कर देते हैं। परन्तु गेहूं के साथ फिर घास उग आता है। इसी प्रकार काम के साथ त्रुटियां आती ही रहती हैं। कार्यकर्त्ताओं का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वे इन को दूर करें।
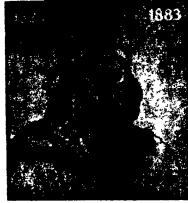
ऊपर लिखे सब रोगों का निदान करके हमारे आचार्य ने वैदिक-धर्म रूपी नुस्खा हमारे हाथों में दिया था पर हम कम्बख्त नुस्खा ही चाट गये। हमने अपने प्रारम्भिक काल (प्रचार) में आश्चर्यजनक कार्य किया कि दुनिया दंग रह गयी और यह कहने पर विवश हो गयी "यह बला कहां से आ गयी?" वेद की दुन्दुभि खूब बजी। लोग हड़बड़ा गये और निद्रा से जाग उठे समाज सुधार, कुरीति निवारण और शिक्षा प्रचार में हम ने बहुत शक्ति व्यय की परन्तु अब ढीले पड़ गये हैं, थक कर चूर हो गये हैं। नब्बे वर्ष में ही हमारी कमर दुहरी हो गयी। इतना महान कार्य हमारे सामने और हमारी यह असावधानता? आर्य समाज को जीवित रखने के लिये वैदिक धर्म का प्रचार करने की परमावश्यकता है। आर्यसमाजियों का कर्तव्य है कि वे अपने आचार्य के चरण चिन्हों पर चलते हुए उस पवित्र धर्म को फैलाने का भरसक प्रयत्न करें जिस का उनके गुरु ने उन्हें प्रसाद दिया है।

मुझे वे दिन स्मरण हैं जब भक्ति वश १५-२० सहस्र शिक्षित नर-नारी घर के काम-काज छोड़ कर अनेक प्रकार के यात्रा-कष्ट भोगते हुए गुरुकुल कांगड़ी की पवित्र भूमि में एकत्रित होते और मूर्तिवत् बैठे धर्मोपदेशों को श्रवण किया करते थे। वहां चोरी नहीं होती थी। लूट खसूट का नाम न था। आभूषण अथवा रुपयों की पोटली गुम होजाती तो स्वामीजी को वापिस कर दी जाती। लोगों की दृष्टि शुद्ध होती थी। उस दृश्य से कितना आनन्द अनुभव होता था। सैकड़ों मीलों की दूरी से खेंच कर ले आने वाला धर्मोत्साह था, भक्ति भाव था और ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धा, आर्य समाज की शक्ति के क्या कहने? बिना पलटन पुलिस के कितना सुन्दर प्रबन्ध होताथा। सत्ययुग वर्तता था। उस सत्ययुग के निर्माता देव दयानन्द के लगाये वृक्ष के फल हम खा रहे हैं। इसलिए हमारे रोम २ से कृतज्ञता का भाव प्रकट हो रहा है। पर लोग पूछते हैं कि दूसरे आचार्यों की अपेक्षा दयानन्द के काम पर तालियां अधिक क्यों बजाते हैं?

ऋषि में त्याग का इतना तप था कि उन्होंने सहस्रों आर्य बनाये, अनेक आर्य समाज स्थापित किये, आर्यों को प्रधान मन्त्री आदि उच्चासनों पर आसीन किया परन्तु स्वयं कमल की भांति पदों से निर्लेप रहे। सेवा का ऐसा पाठ पढ़ा गये कि यदि पांव को कष्ट होता था तो मद्रास में बैठा हुआ मुह हाय कर उठता था। बंगाल मे बैठी हुई भुजा सहायता के लिए दौड़ पड़ती थी। समाजी भाई प्लेग की गिलटियो को चूस२ कर रोगियों को मौत के मुंह से बचा लेते थे। हैजे और प्लेग द्वारा मृत्यु प्राप्त स्त्री पुरुषों को अपने कन्धो पर उठा कर श्मशान भूमि में पहुंचाते और अन्त्येष्टि संस्कार करते थे, रोगियों की कै हाथों पर ले लेते थे। परन्तु अब वह भावना हम में से उठ रही है। आज के भ्रष्टाचार के युग में तो क्रांतिकारी संस्था आर्य समाज की और भी आवश्यकता है। हम देश तथा जाति की वर्तमान अवस्था को देख कर आंखें बन्द नहीं कर सकते। हमारे सिर पर बड़ा भारी उत्तरदायित्व है। ठोस काम करने की आवश्यकता है, पर अब आर्य समाज उत्सवों, शोभा यात्राओं और सम्मेलनों में चमक दमक रहा है।

दीवाली आती है तो हम अपने घरों को लीप पोत कर साफ करते हैं और प्रकाश करते हैं। हा शोक। घर का इतना ध्यान पर घर के वासी (आत्मा) को शुद्ध न किया। आज हमें आत्मिक शुद्धि करनी चाहिए हमारे पदाधिकारी और नेता ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, दल-बन्दी, पद-लोलुपता, परस्पर कलह, पगड़ी उतारना, कीचड़ उछालना, टांग घसीटना, आदि दोषों से युक्त हैं। हमारा संगठन बिखर रहा है। दीवाली की हमारे लिए यही चेतावनी है कि हम आर्य-दीपक बन कर चमकें और दीवे पास २ रखे ही शोभा देते हैं। अकेला दीपक टिमटिमा कर रह जाता है। अतः हमें संगठित होकर एक पंक्तिबद्ध रहना चाहिए। हमें सब झगड़े रगड़े त्याग कर देश प्रसिद्ध वक्ता कुंवर सुखलाल जी "आर्य मुसाफिर की शिक्षा"

"उठो ऐ आर्यवीरो! फिर से अपना संगठन करके समाजों को बचाओ फूट से, कोई यत्न करके" को मूर्त रूप देते हुए दयानन्द की खेती को हरा भरा रखने का प्रण लेना चाहिये।

दयानन्द गीत ज्ञान

दया धर्म के महा प्रचारक,
याजक थे वह देशोद्धारक।

नंदन अमृत मां के प्यारे,
दयानन्द थे देव हमारे।

गीत वेद का जिसने गाया,
तज पाखंड मोक्ष को पाया।

गाथा गा ऋषिवर की हरदम,
नव युग का निर्माण करें हम।

रचयिता
भीमसेन यशवंतराव आर्य आकूर

पेज ८ का शेष

सहायता मिल सकती है।

(७) शुद्धि आन्दोलन को उत्तम उपायों से प्रेम पूर्वक चलाना आर्य समाज को आगे बढ़ाने में विशेष सहायक होगा, किन्तु इसके साथ जब तक आर्य नर-नारियां शुद्ध हुए व्यक्तियों के साथ सामाजिक सम्बन्ध रखने को तैयार न होंगी तब तक इससे विशेष लाभ न होगा। इसके लिये जन्म मूलक जाति-भेद का उन्मूलन करके अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहित करना तथा अन्य प्रकारोंसे अपनी उदारता और विशाल हृदयता का परिचय देना आवश्यक होगा। जाति भेद निवारण के आन्दोलन को प्रबल और संगठित बनाना शुद्धि आन्दोलन को सफल बनाने के लिये अत्यावश्यक होगा। आर्य समाज को, विधर्मियों को अपने अन्दर लेने और स्थिर रखने की शक्ति को बढ़ाना होगा।

(८) आर्य समाज की यथार्थ उन्नति के लिये यह भी आवश्यक है कि आर्यों में आध्यात्मिकता को विकसित किया जाय। इसके लिये अनुभवी आर्य योगियों का सहयोग लिया जाए जो आध्यात्मिक योग शिविरों और आश्रमों द्वारा सच्चे अध्यात्म मार्ग का प्रदर्शन कर सकें। इसके अभाव में जिज्ञासु लोग राधा स्वामी मत, ब्रह्मकुमारी तथा इस सम्प्रदाय आदि में शान्ति और आनन्द की खोज में भटकते फिरते हैं। वानप्रस्थाश्रमादि को सच्ची आध्यात्मिकता की शिक्षा का केन्द्र बनाया जाय।

(९) आर्य समाज की उन्नति के लिये यह भी आवश्यक है कि उसका जनता से घनिष्ठ सम्पर्क रहे और वह उसके कष्टों के निवारण तथा सेवा के कार्य में सदा तत्पर रहे। इस दृष्टि से अनाथालयों के अतिरिक्त (जिनका सचालन बड़ी सत्यनिष्ठा और सेवा भावना से करना और उनको देश के उत्तम नागरिक बनाने का लक्ष्य रखना अत्यावश्यक है) धर्मार्थ औषधालयों की भी आवश्यकतानुसार स्थापना की जानी चाहिये। केवल मौखिक प्रचार से जनता को सन्तोष नहीं हो सकता।

(१०) जन सम्पर्क बढ़ाने की दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि भ्रष्टाचार और दुराचार निवारण, मद्यमांस, धूम्रपान आदि दुर्व्यसन निवारण (जिनकी राष्ट्र में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है) अस्पृश्यता विधि वा कानून द्वारा अपराध घोषित करने पर भी ग्रामों में विशेष रूप से प्रचलित है तथा गोवध निषेध विषयक आन्दोलनों में आर्य समाज प्रमुख सक्रिय भाग ले और इन देशोपयोगी आन्दोलनों का सच्चा नेतृत्व करे। इसी के साथ राष्ट्र भाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि के तथा संस्कृत के सर्वत्र प्रचार की ओर आर्यनर-नारियों तथा विशेषतः विद्वानों को इस समय अति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। सुयोग्य आर्य राजनीति शास्त्रज्ञ विद्वान् राजनैतिक क्षेत्र में भी कार्य करतेहुए उसे वेदों तथा आर्य संस्कृति के अनुरूप बनाने का अधिक से अधिक प्रयत्न करें तो यह देश की बड़ी भारी सेवा होगी। इस दृष्टि से उत्तम राजनैतिक साहित्य का भी निर्माण उपयोगी होगा।

इस दशसूत्री के अवलम्बन से आर्य समाज आगे बढ़ सकता है, उस की वास्तविक उन्नति हो सकती है और वर्तमान शिथिलता दूर हो सकती है। इसमें अणुमात्र भी सन्देह का कारण नहीं।

५२२) भेंट

आर्य जगत के वयोवृद्ध विद्वान पूज्य श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी की सेवामें, आर्य समाज लोधी रोड नई दिल्ली का प्रतिनिधि मंडल हापुड़ में श्री पंडित जी की सेवामें पहुंचा जिनमें श्री चुन्नीलाल जी ढांडा, श्री राजकुमार जी शर्मा, श्री बलवन्तराय जी खन्ना, सुशीलादेवी जी तथा बहिन शान्तिदेवी जी सम्मिलित थी।

श्रद्धेय श्री पं० जी के स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना करते हुए श्री पं० जी की सेवामें ५२२) भेंट किये।

ब्रह्म देश में हिंदुओं की दशा

श्री बर्मा बन्धु जी

सरसरे तौर पर ब्रह्मदेश में भारत मूलक हिन्दुओं के ६ विभाग किये जा सकते हैं। १. सर्वप्रथम वे लोग हैं जो वहां विदेशी बन कर रह रहे हैं। ये लोग देर सवेर भारत ही वापस आने वाले हैं। जो तो सरकारी नौकरी पर थे या व्यापार करते थे उन्हें भारत तथा बर्मी सरकारों ने भारत जाने की सुविधा दे दी है। भारत में उनके पुनर्वास में कुछ कठिनाइयां हैं। जिन लोगों के तो सम्बन्धी वहां थे अथवा जिनका सम्पर्क भारत से बना हुआ था उन्हें तो कहीं न कहीं पैर जमाने के लिए स्थान मिल ही गया, परन्तु अनेक ऐसे हैं जिनके सम्बन्धी नहीं हैं, अथवा जम नहीं पाये हैं, ये लोग मुख्यतः मध्यम वर्ग के थे, तथा ब्रह्म देश में छोटे व्यापारी, दर या प्राइवेट नौकरियों पर थे, इन लोगों की दशा भारत आ कर बहुत सन्तोष जनक नहीं रही है, ऐसा उनसे प्राप्त पत्रों द्वारा ज्ञात होता है। उन्हें रहने को घर नहीं मिलता, व्यापार करने के साधन नहीं, उनके बच्चों को स्कूल तथा कालिजों में प्रवेश पाने के लिए धक्के खाने पर भी सफलता नहीं मिलती। आदि फिर भी उनका भारत लौट आने के सिवाय और कोई चारा नहीं, क्योंकि बर्मा में उनका अथवा उनके बच्चों का कोई भविष्य नहीं है।

२. दूसरा वर्ग उनका है, जिन्होंने यहां की नागरिकता ले रक्खी है। राजनैतिक अथवा आर्थिक दृष्टि से इनका भाग्य वहां के मूल निवासियों के साथ है। उन्हें सब सुविधाएं प्राप्त हैं जो दूसरों को, अर्थात् उनकी सन्तान उच्च शिक्षा की अधिकारी है, उन्हें नौकरियां मिल सकती हैं सिद्धान्त रूप में उनके प्रति कोई भेद भाव नहीं बरता जाता व्यवहारिक रूप भले ही हो इनकी संतान बर्मी भाषा लिख पढ़ तथा बोल सकती हैं सन्तान बर्मी भाषा लिख, पढ़ तथा बोल सकती है। पर अपनी मातृ भाषा तथा संस्कृति तथा हिन्दू धर्म का ज्ञान बहुतेरों को शून्य समान ही है। इस समुदाय में जो लोग साधन सम्पन्न थे, या जो सरकारी नौकरियों पर थे उन्हें विशेष कठिनाई नई परिस्थितियों के कारण नहीं हुई। परन्तु जो लोग व्यापारी थे, छोटी या बड़ी दुकानदारी करते थे उन्हें आजीविका प्राप्त करने में कठिनाई हो रही है। देश की समाजवादी सरकार ने सारा व्यापार, नमक, तेल, मिर्च से लेकर कपड़ा, लकड़ी, चावल, बैंक तक का राष्ट्रीयकरण कर दिया है। व्यापारी वर्ग तीन तीन वर्षों से बेकार बैठा है, उन्हें मुआवजा भी कुछ नहीं मिला है। इनमें से जो भारत जाना चाहते हैं उन्हें अनुमति प्राप्त हो जाती है। अनेक भारत में अपने भाग्य आजमाने आ रहे हैं। इन्हें भी कठिनाइयां दीखती तो हैं, पर वे उनके लिए कटिबद्ध होकर ही आते हैं। इनके बच्चों को वहां के स्कूलों में हिन्दी होने के कारण कठिनाई होती है अवश्य, पर जो एक बार कहीं प्रविष्ट हो गया वह कुछ समय में ही प्रवीण भी हो

कांग्रेस सरकार की गो-हिंसक नीति को बदलने के लिए सामूहिक सत्याग्रह में शामिल होने की तय्यारी कीजिये।

प्रकाशवीर शास्त्री
उपप्रधान

रामगोपाल शालवाले
मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वामी सन्तोषानन्द जी महाराज (रिवाड़ी) ५२ सत्याग्रहियों के साथ हौजकाजी पर पकड़े गये।

आता है, हिन्दी भाषा या देवनागरी लिपि की यह सुगमता उनके लिये एक उत्साह वर्धक विषय है।

३. तीसरा वर्ग वह है, जिन की माता ब्रह्म देश की मूल निवासिनी तथा पिता भारतमूलक थे। इस प्रकार के मिश्रित रक्त वालों की संख्या भी सहस्रों में है। इनमें से बहुत से उच्च सरकारी पदों पर डाक्टर, इन्जीनियर, अध्यापक प्रोफेसर, व्यापारी हैं। बहुत से मध्यम वर्ग के लोग हैं और हजारों ही छोटे मोटे काम करने वाले मजदूर, किसान आदि भी हैं। राजनैतिक अथवा धार्मिक या सामाजिक रूप में इन्हें संगठित करने का गम्भीर प्रयास कभी नहीं हुआ। "जाति वाले" हिन्दुओं ने इन लोगों को सदा ही हेय दृष्टि से देखा, फलस्वरूप शनैः शनैः ये लोग भारतीयों से अलग होते गये। इनका रहन सहन, खान पान, बच्चों के विवाह आदि बर्मी बौद्धों में ही हुए और वे लोग उनमें ही विलीन हो गये या हो रहे हैं। इनमें से कुछ को अपने भारतीय खून का गर्व है। परन्तु तथापि कुछ ऐसे भी हैं जो भारतीयों के 'कमीने पन' के कारण उन्हें अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते हैं। दूसरी ओर चीनियों, मुस्लिमों, ईसाइयों ने इस प्रकार की मिश्रित रक्तकी सन्तान को अपनाया। मुस्लिमों ने इसे प्रोत्साहन भी दिया तथा बर्मी मुस्लिम नामक एक सशक्त "अल्प संख्यक दल" भी बन गया है। यह समुदाय अपने धार्मिक कट्टर पन के लिए प्रख्यात भी है। इसी प्रकार क्रिश्चियनों ने भी अलग संगठन बनाये हैं। हां सिक्ख भाइयों ने अवश्यमेव ऐसे लोगों को अपने में मिलाया, फलतः ऐसी सन्तान सिक्खों में खप गई। शेष हिन्दुओं में से कुछ पंजाबी भाइयों ने आर्यसमाज के प्रभाव के कारण अपनी इस प्रकार की सन्तानको हिन्दू बनाया तथा बीसियों परिवार इस प्रकार मूल स्रोत से मिल गये। फिर भी यह कटु सत्य है कि हिन्दू मिश्रित रक्त की अधिकांश सन्तान हिन्दू नहीं रही।

४. चौथा विभाग उन लोगों का है जो व्यवसाय से कृषक हैं। इनकी तीसरी या चौथी पीढ़ी यहां बसते हो गई है। ये लोग हजारों की संख्या में कई जिलों में छोटी छोटी बस्तियां बना कर बसे हुए हैं। खेती बाड़ी करना ही इनका पेशा है। दक्षिण भारत के तमिल प्रदेश के हिन्दू बहुसंख्यक में मोलमीन, थमी, तथा डेल्टा के अन्य जिलों में बसे हुए हैं। हिन्दू संस्कृति के अनुसार ही रहते हैं। आपस में ही विवाह आदि करते हैं। बहुत थोड़े लोगों ने बर्मी स्त्रियों से विवाह किये हैं। कुछ अपनी मातृ भाषा तमिल बोलते हैं, और बहुतों की घर की बोली बर्मी हो गई है। ये लोक अशिक्षित हैं, धार्मिक पूजा कर्म के लिए कुछ पंडितों पर निर्भर हैं। पर्व त्यौहार आदि भी अपने ढंग से मनाते हैं। छोटे छोटे मन्दिर अवश्य हैं पर इनका कोई संगठन नहीं है। न कोई नेता है न धार्मिक ज्ञान ही है।

५. इसी प्रकार के हिन्दुओं का दूसरा क्षेत्र जियावड़ी और प्रान्ट हैं। यहां बिहार के आरा, चम्पारन आदि जिलों के लोग बसे हैं। इन दोनों स्थानों को अंग्रेजी सरकारने दो जमींदारों को दे दिया था, (शायद, ५७ के "सिपाही विद्रोह" में अंग्रेजों की सहायता करने के पुरस्कार स्वरूप)। इन जिमींदारों ने भारत के इन जिलों के हजारों परिवार यहां लाकर बसाये। जहां घने जंगल थे, शेर, बाघ, जंगली हाथी आदियों का राज्य था, इन लोगों ने वहां हरे भरे खेत खड़े कर दिये। धान और गन्ने की खेती होने लगी। एक चीनी की मिल लग गई। अब तो जिमींदारी का अन्त हो गया है और सारा प्रान्ट बर्मी सरकार के आधीन है। अब यह भूमि किसानों की हो गई है। तथा कुछ एक के आवेदन पत्र इसके लिए विचाराधीन ही हैं। इन सब कृषकों को वे समस्त सुविधायें प्राप्त हैं जो कि एक बर्मी किसान को मिलती हैं। यथा, सरकार से ऋण मिलना, बीज मिलना, खाद मिलना, तथा पैदावार का सरकारी मूल्य पर खरीदा जाना आदि। इस क्षेत्रकी जन संख्या ४५००० तक होगी। १९६४में राष्ट्रीय करण के पश्चात् कुछ लोग भारत जाने के लिए व्यग्र हो उठे थे, कुछ गये भी। परन्तु बाद में दोनों देशों की सरकारों ने इन कृषकों का हित बर्मामें रह जाने में ही देखा। अब किसी भी कृषक को भारत जाने की सुविधा नहीं प्राप्त होती है। जियावाड़ी, चौतगा क्षेत्र के किसान वर्षों तक अविद्या के गर्त में पड़े रहे, शोषित होते रहे रूढ़ियों के शिकार बने रहे। आज भी उनके ग्राम भारत के सब से पिछड़े हुये ग्राम से भी पीछे हैं। सन्तोष है कि पिछले दशक में इनमें कुछ युवक शिक्षा प्राप्त कर आगे बढ़े हैं। कुछ डाक्टर, इंजिनियर, अध्यापक, कालेजों में लेक्चरार भी हो गये हैं, आर्य समाज का भी प्रचार गत ५, ६ वर्षों से बढ़ रहा है। इन सब नवयुवकों में उत्साह है, भावना है, अपने साथियों को ऊपर उठाने की उत्कट आकांक्षा है... युद्ध के पूर्व तथा १९६० तक उन्नति के अच्छे अवसर थे, क्योंकि स्वर्गीय श्री प० हरिवदन शर्मा के प्रयत्नों से इस सारे क्षेत्र में ६०, ६५ प्राथमिक पाठशालाएं खुल गई थीं। इनमें हिन्दी, अंग्रेजी और बर्मी भाषा की पढ़ाई होती थी तथा भारतीय संस्कृति का प्रचार होता था। एक अच्छा हाई स्कूल भी बन गया था जिसका अढ़ाई लाख का अपना भवन था तथा १,३०० विद्यार्थी विद्या अध्ययन करते थे। परन्तु गत मास अप्रैल मास से इन समस्त पाठशालाओं का राष्ट्रीय करण हो गया और अब केवल सरकारी पाठ्यक्रम के अनुसार ही शिक्षा होती है, जिसमें हिन्दी भाषा को कोई स्थान नहीं है। इससे इन लोगों में अपने धर्म और संस्कृति का बहुत बड़ा प्रचार साधन बन्द हो गया।

[शेष फिर]

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रही

संसद भवन के अन्दर सत्याग्रह करते हुए श्री पं० मुन्नालाल जी मिश्र बन्दी हुए।

(पृष्ठ ३ का शेष)

जितनी भी सफलता मिलेगी—गृहमन्त्री को बदनाम करने के लिये उतनी ही काफी होगी। और कहना न होगा कि उनकी यह घृणित कूटनीति सफल हो गई। हम घटनाओं तथा राष्ट्रिय एवं वैयक्तिक सम्पत्ति के विनाश कार्य को अत्यन्त निंदनीय समझते हैं।

उसके बाद जो धर-पकड़ प्रारम्भ हुई उसने तो सरकार के विवेक का दिवाला ही निकाल दिया लगता है। उसने एक एक करके आर्यसमाज के, संघ के और जनसंघ के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करना शुरू कर दिया। अब तक लगभग चार हजार व्यक्ति गिरफ्तार किए जा चुके हैं। उस अभूतपूर्व प्रदर्शन के समय प्रशासन की जो अकुशलता सामने आई थी, अब उसी अकुशलता की खीजा इस प्रकार मिटाई जा रही है और इसेकेवल खीजा ही क्यों कहा जाए? सच तो यह है कि प्रशासक दल के जिस शक्तिशाली गुट ने अपनी प्रयोजनपूर्ति में बाधक समझकर गृहमन्त्री को हटाने के लिए यह सब कांड रचा, प्रतीत होता है उसी गुट ने अब समस्त दक्षिण पंथियों को कुचलने के लिए इस अवसर का लाभ उठाने के लिए सरकार को उकसाया है। आश्चर्य यह है कि जितने व्यक्ति गिरफ्तार किए गए हैं उनमें से किसी पर अदालत में कोई मुकदमा नहीं चलाया गया और इसके बिना ही अनिश्चित काल के लिए उन्हें जेल में डाल दिया गया। क्या इसी का नाम न्याय है।

इससे भी बढ़कर आश्चर्य यह है कि जो व्यक्ति सात नवम्बर वाले दिन दिल्ली में नहीं थे उनको भी उस दिन हुई वारदातों के लिए जिम्मेवार ठहराकर गिरफ्तार कर लिया गया है। जिन व्यक्तियों का किसी राजनीतिक पार्टी से कोई सम्बन्ध नहीं और केवल आर्यसमाज से ही जो सम्बद्ध है उनकी गिरफ्तारी का औचित्य कौन स्वीकार करेगा? क्या इस धर्म-निरपेक्ष राज्य में ईसायत और इस्लाम के प्रचार की ही छूट है, आर्यसमाज के प्रचार की नहीं?

जिस प्रकार का दमनचक्र इस समय खुल कर चल रहा है वैसा दमनचक्र अंग्रेजों की हकूमत के के समय भी स्मरण नहीं आता। शायद मार्शलला के दिनों से कुछ तुलना हो सके।

हमें प्रसन्नता केवल एक ही है कि इस भयंकर दमन के बावजूद जनतामें आतंक नहीं है। जनता और चौगुने उत्साह से गोहत्याविरोध आन्दोलन के लिए धन-जन जुटाने में तत्पर है। रोज सत्याग्रहियों के जत्थे आ रहे हैं, सत्याग्रह कर रहे हैं और गिरफ्तार हो रहे हैं। दमन करने वाला समझता है कि वह अपने दमन से जन-भावना को कुचल देगा। पर जो कुचली जाए, वह भावना ही क्या हुई, सिद्धान्त ही क्या हुआ?

जितना अधिक दमन होगा, यज्ञ की अग्नि उतनी ही अधिक प्रज्वलित होगी। दमनकारियो, तुम अपना दमन बढ़ाओ, इधर यज्ञ की अग्नि और प्रज्वलित होगी।

तुम अपना खंजर आजमाओ,
हम अपना जिगर आजमाएं।

आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली में गोरक्षा सत्याग्रह शिविर के सर्वाधिकारी

श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज

आपने प्रत्येक आर्य नर-नारी से गोरक्षार्थ तन-मन और धन देने की अपील की है। प्रत्येक आर्य एवं आर्य संस्थाएं इस यज्ञ मे अपने सात्विक दान की आहुति अवश्य सार्वदेशिक सभा मे तुरन्त भेजें। आपके एक-एक पैसे का गोरक्षा में महत्वपूर्ण योग दान है।

(पृष्ठ ६ का शेष)

पुरुष स्वस्थ होंगे वहां भावी सन्तान भी सबल एवं दीर्घायु होगी।

विशाल मगधराज्य जिस प्रकार अकर्मण्य भिक्षु-धर्म से समाप्त हो गया उसी प्रकार तथाकथित अहिंसा से भारत का सितारा गर्दिश में पड़ गया होता यदि चीन ने आक्रमण करके इसकी आंखें न खोल दी होती। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के ७वें नियम में घोषणा की है कि व्यवहार में यथायोग्य बर्ताव करना चाहिये। यदि वैदिक परम्परा का अनुसरण करते हुये भारत में 'अदीनाः स्याम शरद शतम्' का घोष गुंजित होता तो आज अमरीका का ५० अरब रुपये का कर्जदार बनकर यह देश दर-दर हाथ न फैलाता। वास्तव में महर्षि की प्रज्ञा ऋतम्भरा थी। ऋषिवर को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करना तभी सार्थक होगा जब कि राष्ट्र उनके द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण करे। वह एक महान् दूरदर्शी थे। किसी कवि ने कितना सुन्दर कहा है।

मरज कोई माने न माने मुसाफिर,
दयानन्द दर्देवतन की दवा था।

विविध समाचार

आर्य समाज अकोला

ने एक प्रस्ताव द्वारा गोवध को कानूनन बन्द कराने की सरकार से मांग की है।

गायत्री यज्ञ पूर्णाहुति

आर्य समाज, सदर बाजार झांसी में एक मास तक गायत्री यज्ञ की पूर्णाहुति दिनांक १३ नवम्बर की सायंकाल को हुई।

प्रस्ताव

चन्दोसी आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर आयोजित विशाल गोरक्षा सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के गोरक्षार्थ सत्याग्रह के निर्णय का स्वागत करता है और सभा को विश्वास दिलाता है कि सभा द्वारा चलाये गये इस अभियान को सफल बनाने के निमित्त चन्दोसी की आर्य हिन्दू जनता बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिये तैयार है। यह सभा निश्चय करती है कि चन्दोसी से शीघ्र ही एक विशाल सत्याग्रही जत्था दिल्ली की ओर प्रस्थान करेगा।

—ओम्प्रकाश

टंकारा सहायक समिति दिल्ली

के चुनाव में सर्वश्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट प्रधान, गंधर्व सैन जी खोसला कार्यकर्त्ता प्रधान और रामनाथ जी सहगल मन्त्री चुने गये।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दीवानहाल दिल्ली

सर्वदलीय गोरक्षा अभियान समिति दिल्ली के द्वारा चलाए जा रहे अहिंसात्मक सत्याग्रह आन्दोलन का समर्थन करती है, तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संसद के बाहर प्रतिदिन सत्याग्रह करने की घोषणा का हार्दिक स्वागत करती है और विश्वास दिलाती है कि दिल्ली की आर्य महिलाएं इस सत्याग्रह में धन, जन दोनों ही प्रकार का पूर्ण सहयोग देंगी।

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की पुस्तकों का सूचीपत्र

१—८—६६ से ३१—१—६७ तक

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

ऋग्वेद संहिता १०)
अथर्ववेद संहिता ८)
यजुर्वेद संहिता ४)
सामवेद संहिता १)
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ३)
संस्कारविधि १)२५
पंच महायज्ञ विधि)२५
कर्त्तव्य दर्पण)४०
आर्यसमाज के प्रवेशपत्र १) सै०

निम्न प्रकाशन पर २० प्रतिशत कमीशन

सत्यार्थप्रकाश २)५०
कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश १)५०
कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
आर्यसमाज का इतिहास द्वितीय भाग ५)
जीवन संघर्ष (महाशय कृष्ण की जीवनी)
राजधर्म ५०
पुरुष सूक्त)४०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

वैदिक ज्योति ७)
शिक्षण-तरङ्गिणी ५)
दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

वैदिक साहित्य में नारी ७)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

वेद की इयत्ता १)५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

ईशोपनिषद्)३७
केनोपनिषद्)५०
प्रश्नोपनिषद्)३७
मुण्डकोपनिषद्)४५
माण्डूक्योपनिषद्)२५
ऐतरेयोपनिषद्)२५
तैत्तिरीयोपनिषद् १)
बृहदारण्यकोपनिषद् ३)
योग रहस्य १)२५
मृत्यु और परलोक १)

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
वैदिक वन्दन ५)
वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
वेदान्त दर्शन (संस्कृत) १)
वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) १)५०
,, ,, (अजिल्द) २)
निज जीवन वृत वनिका)७५
बाल जीवन सोपान १)२५
दयानन्द दिग्दर्शन)७५
वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
वैदिक योगामृत)६२
दार्शनिक अध्यात्म तत्त्व १)५०
वैदिक ईश वन्दना)४०
बाल संस्कृत सुधा)५०
वैदिक राष्ट्रीयता)२५
भ्रम निवारण)३०

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध १)५०
,, ,, उत्तरार्द्ध १)५०
वैदिक संस्कृति १)७५
सायण और दयानन्द १)
मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
आर्य समाज की नीति)२५
मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)२५
हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०
भक्ति कुसुमाञ्जली)२५

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

वेद सन्देश)७५
वैदिक सूक्ति सुधा)३०
ऋषि दयानन्द वचनामृत)३०

श्री० बाबू पूरनचन्द जी एडवोकेट कृत

चरित्र निर्माण १)२५
वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
दौलत की मार)२५
धर्म और धन)२५
अनुशासन का विधान)२५

श्री पं० मदनमोहन जी कृत

जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०
संस्कार महत्त्व)७५
वेदों की अन्त साक्षी का महत्व)६२
आर्य स्तोत्र)५०
आर्य घोष)६०

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म)६२
सन्तति निग्रह १)२५
नया संसार)६०
आदर्श गुरु शिष्य)२५

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

आर्य समाज और साम्प्रदायिकता)३०
कांग्रेस का सिरदर्द)४०
भारत में भयंकर ईसाई षड्यन्त्र)२५
आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना)२०
आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण)०६

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

गीता विमर्श)७५
ब्राह्मण समाज के तीन महापातक)५०
सनातन धर्म २)७५

श्री ला० ज्ञानचन्द जी कृत

धर्म और उसकी आवश्यकता १)
वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १)५०
इजहारे हकीकत उर्दू)८८

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी कृत

इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)५०

श्री पं० देवप्रकाश जी कृत

इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०

श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री कृत

भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०

विविध

वेद और विज्ञान)७०
उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६२
भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७
हमारे घर १)
मेरी इराक यात्रा १)
मेरी अबीसीनिया यात्रा १)
डाक्टर वर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
भोज प्रबन्ध २)२५
स्वर्ग में हड़ताल)३७
नरक की रिपोर्ट)२५

निम्न प्रकाशन ५० प्रतिशत पर दिये जायेंगे

आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग ६)
बृहद् विमान शास्त्र १०)
आर्य समाज के महाधन २)५०
दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
स्वराज्य दर्शन १)
आर्य समाज का परिचय १)
भजन भास्कर १)७५
यमपितृ परिचय २)
एशिया का वेनिस)७५
आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५
साम संगीत)५०
दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
,, ,, ,, अध्यक्षीय भाषण १)
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५

आचार्य विश्वश्रवाः व्यास कृत

पंचमहायज्ञ विधि भाष्यम्
सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
यज्ञ पद्धति मीमांसा ३)
महर्षि की आर्षपाठविधि का वास्तविक स्वरूप)२५
चान्द्रायण पद्धति, कर्मफल निर्णय)५०

प्रचार करने योग्य ट्रैक्ट

दश नियम व्याख्या
आर्य शब्द का महत्व
तीर्थ और मोक्ष
वैदिक राष्ट्रीयता
वैदिक राष्ट्र धर्म
अथर्ववेदीय अतिथि सत्कार
ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा
सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा में
सत्यार्थ प्रकाश का आन्दोलन का इतिहास
मुर्दों को क्यों जलाना चाहिये
शंका समाधान
भारत का एक ऋषि
आर्य समाज

नोटः—(१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूप में भेजें। (२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ साफ लिखें। (३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम में आना चाहिये। (४) जिन पुस्तकों का नेट मूल्य लिखा गया है उनपर कोई कमीशन न दिया जायगा।

व्यवस्थापक—**सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१**

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली–१ फोन २७४७७१ मार्गशीर्ष कृष्णा १ संवत् २०२३, ३० नवम्बर १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टि सम्वत् १९७२९४

देश भर में गो रक्षा आन्दोलन चरम सीमा पर

परोपकार

सुनो बन्धुवर्गो ! तुम्हारा तन, मन, धन गाय आदि की रक्षारूप परोपकार में न लगे तो किस काम का है ? देखो, परमात्मा का स्वभाव कि जिसने सब विश्व और सब पदार्थ परोपकार ही के लिये रच रक्खे हैं, वैसे तुम भी अपना तन, मन, धन परोपकार ही के अर्पण करो।

— महर्षि दयानन्द

सरकार लोक मत को कुचलने में तत्पर

हजारों आर्य-हिन्दु नर-नारी जेल में

जगद्गुरु शंकराचार्य, ब्र० प्रभुदत्त जेल में भी अनशन पर

आर्य जाति के जीवन-मरण का प्रश्न, जगह-जगह हड़तालें और प्रदर्शन।

श्री नान जी वाल जी पाडलिया (जामनगर)

गुजरात राज्य की आर्य समाजों का प्रतिनिधित्व करते हुए गोहत्या निरोध के लिये सत्याग्रह कर रहे हैं।

वार्षिक ७) रु०
विदेश १ पौंड
एक प्रति १२ पैसे

अन्नं बहु कुर्वीत

सम्पादक— रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री
सहायक सम्पादक— रघुनाथ प्रसाद पाठक

लेन लोकास्तिष्ठन्ति

वर्ष
अंक

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत–

ARYA SAMAJ ITS CULT AND CREED

A unique and elegantly printed Book of the Day

This is the most popular and widely read first English book of Acharya Vaidya Nath Shastri, a well known Arya Samaj Scholar and author credited with writing books in Hindi of outstanding merit on religion and philosophy some of them winning prizes

The book presents a scholarly and lucid exposition of the Cult and Creed of Arya Samaj ranking among the high-class rare English literature of Arya Samaj It is a worth reading, worth preserving & worth presenting book to the English reading persons especially to the intelligentsia *Price Rs 5/-*

वैदिक ज्योति	७)
शिक्षण तरंगिणी	५)
दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश	२)५०
वैदिक विज्ञान विमर्श	)७५
वैदिक युग और आदि मानव	४)
वैदिक इतिहास विमर्श	७)२५

International Aryan League

Maharshi Dayanand Bhawan, New Delhi-1

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा स्वलिखित जीवन

कल्याण मार्ग का पथिक

छपकर तय्यार है ।

नैट मूल्य १) पोस्टेज पृथक्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-१

वाचं वदत भद्रया
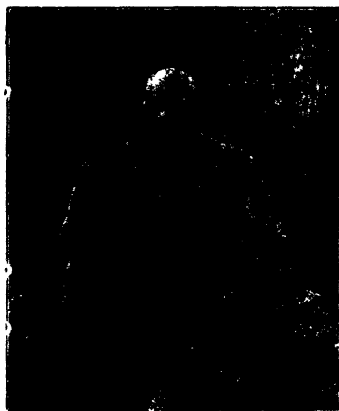
सम्पादकीय

लोक दमन करके लोकतंत्र की रक्षा ?

गोहत्या निरोध आन्दोलन को कुचलने के लिए सात नवम्बर के प्रदर्शन के बाद सरकार ने जो तीव्र दमन चक्र चलाया था, वह यद्यपि अभी तक रुका नहीं है, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि 'बूमेरांग' की तरह वह उल्टा सरकार पर ही आकर टूट कर पड़ेगा। यह तो स्पष्ट ही है कि दमन से कोई आन्दोलन रुक नहीं सकता।

मनोविज्ञान की दृष्टि से जैसे दमित वासनाएं मानसिक कुण्ठा का रूप धारण कर लेती हैं और फिर किसी मानसिक आधि या शारीरिक व्याधि के रूप में उभर कर सामने आती है, उसी प्रकार दमन के सहारे कुचला गया आन्दोलन भी जनता के अन्दर मानसिक कुण्ठा को ही जन्म देता है। और जनता की यह मानसिक कुण्ठा निश्चित रूप से सरकार के विरोध के नाना रूपों में उभर कर सामने आती है।

कोई अधिनायकवादी तानाशाह जनता की भावनाओं का आदर नहीं करता और जनभावनाओं का यह तिरस्कार ही उस तानाशाह के लिए यमराज का दूत बनकर आता है। परन्तु हम लोकतन्त्र में कभी किसी ऐसी सरकार की कल्पना नहीं कर सकते जो जनता की भावना का आदर न करे। लोकतन्त्र का सार ही यह है कि असली मालिक राजा नहीं, प्रजा होती है। जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा शासन का नाम ही तो लोकतन्त्र है। लोकतन्त्र में सत्ता का स्रोत सदा जनता होती है। शासन तो केवल जनता की इच्छा को अभिव्यक्त करने वाला माध्यम है, ऐसा माध्यम जिसे जनता ही इस काम के लिए चुनती है। जनता की इच्छा के बिना शासन का न कोई अस्तित्व है, न ही उसके हाथ में सत्ता की कोई कुंजी है।

जैसे सौरमंडल के समस्त ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर काटते हैं, सूर्य के ही प्रकाश से प्रकाशित होते हैं एवं उन सबकी शक्ति का स्रोत सूर्य ही है — "सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च" जड़-जंगम सबका आधार और शक्ति-केन्द्र सूर्य ही है, वैसे लोकतन्त्र में सरकार के समस्त विभाग जनता रूपी सूर्य से ही शक्ति ग्रहण करते हैं, वही उनका आधार है। सूर्य के बिना जैसे अन्य ग्रहों के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती, वैसे ही जनता के अभाव में शासन के अस्तित्व की भी कल्पना नहीं की जा सकती।

अपने धर्म, अपनी संस्कृति, और अपनी परम्पराओं में — और एक शब्द में कहना चाहें तो कहें कि 'भारतीयता में रुचि है।

वह ८० प्रतिशत जनसंख्या इस विवाद में भी नहीं पड़ना चाहती कि शासन के लिए लोकतन्त्र प्रणाली है, या गणतन्त्र, या राजतन्त्र या अधिनायकतन्त्र। वह तो एक बात जानती है और वह यह कि अच्छा शासन वह है जिसमें भ्रष्टाचार का स्थान न हो, जिसमें बेईमानी न हो, स्वार्थलिप्सा और अपना घर भरने की तमन्ना न हो। सबके साथ न्याय हो, किसी के प्रति पक्षपात न हो, और जनता की भावनाओं का निरादर न हो वह ८० प्रतिशत जनता राजनीतिक दलों को भी इसी बात की कसौटी पर कसती है कि किस दल के कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से जन सेवा करते हैं, त्याग-तपस्या संयम और ईमानदारी का उदाहरण पेश करते हैं, जो चरित्रवान् है और सदाचारी है। प्राचीन काल में त्यागी तपस्वी ब्राह्मणों को समाज में जो 'गुरु' का सम्माननीय दर्जा मिला था वह इन्हीं गुणों के कारण। जनता की दृष्टि में मानवीय उत्कृष्टता की कसौटी आज भी वही है जो सदियों से उसके मन में घर किए हुए है। शासन भले ही बदले हों, किन्तु जनता के मन की कसौटी नहीं बदली।

> हिन्दुस्तान में गायों के लिए इस तरह की भावना है कि उनका मारना लोग पसन्द नहीं करते यह जो बहादुरी की सलाह दी जाती है कि जितने खराब जानवर हैं उनको कतल कर दिया जाय मैं समझता हूं बहादुरी ज्यादा है बुद्धिमानी नहीं; यदि हम इस काम को करना चाहेंगे तो अपने खिलाफ एक बड़ी जमायत पैदा कर लेंगे। —राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद

यह ध्यान रहे कि उक्त बात हम केवल लोकतन्त्र को ध्यान में रखकर ही कह रहे हैं। अन्य राज्यतन्त्रों में इस प्रकार की बात नहीं। इसीलिए हम कहते हैं कि लोकतन्त्र में जनता ही सर्वोपरि है, कोई राजनीतिक दल या वर्ग विशेष नहीं, भले ही वह राजनीतिक दल शासनारूढ़ ही क्यों न हो।

इसके साथ ही हमारी एक और भी धारणा है और वह यह कि भारत की ग्राम्य जनता राजनीति प्रिय नहीं है। हम नगरों के शिक्षित और विभिन्न स्वार्थों की पूर्ति के लिए विभिन्न वर्गों में बटे अत्यल्प जनसमुदाय की बात नहीं कहते, हम उस विशाल जन-समुदाय की बात कहते हैं जो अशिक्षित है और भारत के सात लाख गांवों में फैला हुआ है, एवं देश की जनसंख्या का ८० प्रतिशत भाग वही है। देश की उस ८० प्रतिशत जन-संख्या को राजनीति में उतनी रुचि नहीं जितनी

कभी यदि जनता ने कांग्रेसी नेताओं को अपने हृदय के सिंहासन पर बिठाया था तो इसीलिए कि उसे उनके चरित्र में अपनी वह चिर-परिचित कसौटी खरी उतरती दिखाई देती थी। परन्तु महात्मा गांधी के अवसान के पश्चात् कांग्रेसी नेताओं में उत्कृष्टता के वे गुण निरन्तर ह्रास को प्राप्त होते गए। जब से स्वराज्य प्राप्त हुआ है और सबसे बड़े राजनीतिक दल के रूप में कांग्रेस ने सत्ता की बाग-डोर सभाली है तबसे मानवीय उत्कृष्टता के परिचायक गुणों के बजाय राजनीतिक छल-छन्द ही उसके नेताओं में अधिक दृष्टिगत हुए हैं।

सन्त तुलसीदास कह गए हैं— 'प्रभुता पाय काहि मद नाहिं।' ऐसा प्रतीत होता है कि लगातार १८ वर्ष तक सत्तारूढ़ रहने के कारण कांग्रेसी नेताओं में मद आ गया है। उनके एक-एक कार्य से इस मद की गन्ध आती है। अंग्रेजी की कहावत है— Power Corrupts and absolute power currupts absolutely—सत्ता भ्रष्ट बनाती है और चरम सत्ता चरम रूप से भ्रष्ट बनाती है। इतने सुदीर्घ काल तक निरवच्छिन्न रूप से शासन पर आरूढ़ रहने के बाद आज की कांग्रेस में भी 'सेवकों' के स्थान पर शासकों का बोल बाला है। वे जनता की भावनाओं को न समझते हैं न समझना चाहते हैं और समझते भी हैं तो जान-बूझकर उसके विरुद्ध आचरण करते हैं।

सच तो यह है कि जनता की भावनाओं की उन्हें कतई परवाह ही नहीं है। वे सोचते हैं कि पुलिस हमारे हाथ में है, सेना हमारे हाथ में है, संसद हमारे हाथ में है, पुरस्कार और दण्ड देने की शक्ति हमारे हाथ में है, फिर हमारी, इच्छा के विरुद्ध आचरण करने की हिम्मत किस में हो सकती है? निस्सन्देह आज की कांग्रेस न जनता की सेवक रही न जनता की विश्वास-भाजन रही, वह जनता की भावनाओं को गोलियों से कुचलने का स्वप्न देखने वाली, किसी न किसी तरह शासन की कुर्सी से चिपके रहने के लिए जोड़-तोड़ करने में माहिर एक राजनीतिक जमात भर रह गई।

एक वाक्य में कहें तो आज की कांग्रेस शासनारूढ़ दल के रूप में लोकतन्त्र की वाहन या माध्यम नहीं, प्रत्युत अधिनायक वादी मनोवृत्ति की पुंजीभूत सरकार रूप मात्र बन गई है। हमारे देश की प्रधानमन्त्री बारम्बार देश को चेतावनी देती हैं कि इस समय लोकतन्त्र को खतरा उपस्थित हो गया है, उसकी प्राणपण से रक्षा करनी चाहिए। हम कहते हैं कि 'लोक' तो वहीं का वहीं है, उसमें कोई विकार नहीं आया है, विकार आया है 'तन्त्र' में। यह तथाकथित 'तन्त्र ही आज लोकतन्त्र के लिए सबसे बड़ा खतरा है। यह जिस डाल पर बैठा है उसी को अपने हाथों से काट रहा है।

गोरक्षा और गोहत्या निरोध के प्रति प्रबल जनमत का अनादर करने की हिम्मत — हम हिमाकत ही क्यों न कहें — सरकार इसी कारण कर रही है कि आज वह लोकतन्त्र के बजाय अधिनायकतन्त्र के पथ पर अग्रसर है। परन्तु लोकतन्त्र तो क्या, बिना 'लोक' के कोई भी 'तन्त्र' कब तक टिक सकता है?

सामयिक-चर्चा

श्रीयुत वेदमित्र जी जिज्ञासु

(निधन ३-१०-६६)

श्रीयुत वेदमित्र जी जिज्ञासु के निधन का समाचार अंकित करते हुए बड़ा दुःख होता है। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आजीवन सदस्य थे। उन्होंने मथुरा शताब्दी के अवसर पर स्व० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की प्रेरणा पर ५०००) सभा को प्रदान कर अपने पिता स्व० लाला चन्द्रभान जी रईस तीतरों (सहारनपुर) निवासी की पुण्य स्मृति में 'चन्द्रभान वेद मित्र स्मारक निधि' के नाम से साहित्य प्रचार के लिए एक स्थिर निधि कायम की थी जिसके ब्याज से अब तक लगभग २२ पुस्तकें छपकर प्रचारित की जा चुकी हैं जिनमें से अधिकांश पुस्तकें श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की लिखी हुई थीं। आर्य समाज के संस्कार उन्हें अपने पिता से प्राप्त हुए थे जिन्होंने अपने क्षेत्र में आर्य समाज को एक शक्ति बनाने का श्रेय प्राप्त किया था। उन्होंने ही विशेष अनुरोध से श्री स्वामी जी महाराज से "कर्त्तव्य दर्पण" लिखवाया था और अपनी बड़ी पुत्री स्व. कृष्णा की स्मृति को कायम करने के लिए अपनी निधि के ब्याज से इसका प्रथम संस्करण छपवाया था। तब से लेकर अब तक इसके अनेक संस्करण छप चुके हैं जिसकी मांग निरंतर बनी रहती है। गतवर्ष सभा ने उनके विशेष आग्रह पर इस ग्रन्थ रत्न का मुख्यतः सैनिकों में वितरण के लिए १० हजार का संस्करण निकाला था। इसकी अब लगभग १००० प्रतियां शेष हैं। उनका आग्रह था कि शीघ्र ही नया संस्करण निकाला जाय। ५००० का संस्करण निकालने की स्वीकृति १-१०-६६ को उनके पास भेजी गई थी परन्तु किसे पता था कि वे इस संस्करण को न देख पायेंगे।

उन्होंने नारायण आश्रम रामगढ़ और वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में अपने व्यय पर कई अच्छे भवन बनाकर दान किए थे। जहां वे चिरकाल पर्यन्त परिवार सहित तथा अकेले रहकर साधना का जीवन व्यतीत किया करते थे। गत १५-२० वर्ष से वे हरिद्वार में मोहन आश्रम में तथा अम्बाला हाउस में निवास कर रहे थे। बीच में देहली भी आ जाया करते थे। गत ३-४ मास से वे देहली में ही थे और देहली को ही अपना स्थायी निवास स्थान बनाने की सोच रहे थे। परन्तु ३ अक्टोबर को ही वे हम से सदैव के लिए बिछुड़ गए। वे अरविन्दाश्रम महरौली में ठहरे थे। ३ की रात को भले चंगे सोए। अचानक हृदय की वेदना हुई और बेहोश होकर

चारपाई से नीचे आ पड़े और इसी बेहोशी में इंडियन मेडीकल इन्स्टीटयूट में भरती कराया गया परन्तु भरती कराए जाने से पूर्व ही वे चल बसे थे। समाचार पाते ही हम लोग इन्स्टीटयूट में पहुँच गए थे। उनकी बड़ी पुत्री श्रीमती गायत्री देवी एम. बी. बी. ऐस लेडी डाक्टर अनूपशहर से आकर हस्पताल पहुंच गई थीं। दूसरी पुत्री कुमारी सत्यवती एम. ए. पी. एच. डी. प्राध्यापक डी. ए. वी. गर्ल्ज़ कालेजको ट्रंकाल द्वारा कानपुर सूचना दे दी गई थी।

४-१०-६६ को सायंकाल ६ बजे के लगभग आर्य समाज दीवान हाल के प्रबन्ध में निगम बोध घाट पर उनका दाह संस्कार हुआ। उनकी आयु लगभग ७० वर्ष की थी। वे अपने पीछे २ पुत्रियां छोड़ गए हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि इन्हें इस वियोग को धैर्य पूर्वक सहन करने की क्षमता तथा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

गुरुवर विरजानन्द जी की कुटिया

मथुरा की गुरु विरजानन्द जी की कुटिया के निर्माण का कार्य द्रुतगति से हो रहा है। दयानन्द दीक्षा शताब्दि के पुण्य अवसर पर श्रीयुत सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास ने इस कार्य के निमित्त १ लाख रुपए के दानकी घोषणा की थी। उसी धन से यह निर्माण कार्य सम्पन्न हो रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के पारस्परिक परामर्श एवं सहयोग से और उनकी देख-रेख में सुप्रसिद्ध रिटायर्ड इंजीनियर श्रीयुत केदारनाथजी आर्य (इटावा) और श्री रमेशचन्द्र जी ऐडवोकेट मथुरा इस कार्य के सम्पादन में सर्वात्मना संलग्न हैं। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने यह निर्माण कार्य श्रीयुत केदारनाथ जी को सौंपा हुआ है और इस काय में श्री रमेश चन्द्र जी का मूल्यवान सहयोग प्राप्त हुआ है। इन पंक्तियों को लिखते समय तक कुटिया की पहली और दूसरी मंजिलें बनकर तय्यार हो चुकी हैं। तीसरी मंजिल के निर्माण का कार्य शीघ्र प्रारंभ होने वाला है। कुल कार्य दिसम्बर ६६ के अन्त तक हो जाने की आशा है।

इस निर्माण कार्य के सम्पन्न हो जाने पर वहां पुस्तकालय और अनुसंधान कार्यकी व्यवस्था की जायेगी। और आर्य समाज एक बहुत बड़े ऋण से उऋण होने की दिशा में अग्रसर हो जायगा। जिसका सबसे बड़ा श्रेय श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी को प्राप्त रहेगा। वे आर्य जगत के सदैव धन्यवाद के पात्र रहेंगे।

श्री केदारनाथ जी तथा श्री रमेशचन्द्र जी ऐडवोकेट जिस निस्वार्थ भाव एवं लगन से यह कार्य करा रहे हैं वह प्रशंसनीय है उसके लिए हम समस्त आर्य जगत की ओर से उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

अवैदिक तत्त्वों से सावधान रहो

यह बड़े दुःख और आश्चर्य की बात है कि आर्य समाज के दोहन के लिए अवांछनीय तत्त्व उसमें प्रवेश पा रहे हैं। कोई अवैदिक विचारधारा को लेकर आता है तो कोई विशिष्ट राजनैतिक विचारधारा के प्रसार के लिए आर्यसमाज को साधन बनाने का प्रयत्न करता है। हमारे मान्य नेताओं ने हमें एक खतरे से सावधान किया था। वह यह कि आर्य समाज जहां विशाल हिन्दू जाति के सुधार और उद्धार का कार्य करे वहां इसमें अपने अस्तित्व को विलीन न होने दे। प्रतीत होता है कि यह खतरा आर्य समाज के ऊपर आया हुआ है। इस प्रसंग में प्रमाण एवं उदाहरण की गणना कराने की आवश्यकता नहीं है। खतरा सुस्पष्ट ही है।

श्री चन्द्र नारायण जी ऐडवोकेट बरेली का एक पत्र हमारे सामने है। उससे हमारे कथन की पुष्टि होती है। कहीं २ रामलीला कमेटी के अधिकारी जो रामलीला में राम सीता और लक्ष्मण बनने वालों की आरती उतारते हैं उन्हें सिर झुकाते हैं आर्य समाजों में घुस आए हैं। ऐसे व्यक्तियों से सावधान रहना चाहिए और उन्हें आर्य समाज का सदस्य न बनाना चाहिए और न बने रहने देना चाहिए।

आर्य समाज के मंच की पवित्रता की रक्षा करना इन दिनों विशिष्ट एवं महान कार्य है। उसे तो वैदिक सिद्धान्तों के प्रसार का ही साधन बनाए रखना चाहिए। वर्तमान राजनीति के दंगल का अखाड़ा किसी भी दशा में न बनने देना चाहिए। यदि हम ऐसा कर सके तो उससे जनता को बहुत कुछ दे सकेंगे जिसकी वह आशा करती है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

गोहत्या और मांस-भक्षण

श्री हरिश्चन्द्र सिंह आर्य, प्रयाग

यह आर्यावर्त देश भारतवर्ष अनादि काल से अद्यावधि धर्म प्रधान देश रहा है। यहाकी धर्म प्राण हिन्दू जनता ने अपने बलिदान त्याग एवम् सत्य की परीक्षाओं के ज्वलत परीक्षण देकर अपनी धार्मिक आस्था का अभूतपूर्व परिचय दिया है। ऐसे ज्वलत एवम् हृदय द्रावक उदाहरण अन्य मतों या सम्प्रदायों में लेश मात्र भी नहीं मिलते। आज के युग को सभ्य युग कहा जाता है। हमारी सभ्यता अपनी चरमसीमा पर है। अत हमें आवश्यक हो जाता है कि हम सब अपने वेद शास्त्र एवम् स्मृतियों के आधार पर अपनी सभ्यता एवम् संस्कृति अक्षुण्य बनाए रक्खें तथा क्रमागत आई हुई बुराइयों का निवारण करें। इसके लिए आवश्यक हो जाता है कि हम उन अप्राकृतिक सम्कारों तथा समाज विरोधी तत्वों को समाज से दूर कर दें, जिनसे हमारे बन्धुजन दुःखित एवम् पीड़ित हैं।

दैवयोग से हमें कुछ शिष्ट एवम् विद्वान कहे जाने वाले व्यक्तियों से विचार विमर्श करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस सलापमें उन महानुभावों ने मास भक्षण एवम् गोहत्या को धर्मानुकूल एवम् वेद विहित, बताते हुए कहा कि "हमारे वेद हमें गोहत्या करने एवम् गोमास खाने तथा हिंसा करने की आज्ञा देते हैं। ऐसा करने में हमें किसी भी प्रकार के पाप का अनुभव नहीं करना चाहिए।' 'जीवहिं जीव अहार" कह कर वे प्रत्येक प्रकार की हिंसा को प्रोत्साहन देते हैं। और हिंसा जैसा जघन्य अपराध भी वेदोक्त मानते हैं। मैंने उनसे जब यह बताने की इच्छा प्रगट की कि कौनसा वेद अथवा कौन सी स्मृति हमे हिंसा तथा मास भक्षण की आज्ञा देती है। तो वे व्यास स्मृति या पुराणों का नाम लेकर मौन हो जातेहैं। कोई ठोस प्रमाण न देकर वे प्रसग बदलने के लिए इधर उधर की बातें करने लगते हैं।

'जीवधारी एक दूसरे पर निर्भर हैं उनकी इस बात का हमने समर्थन किया, किन्तु हिंसात्मक आधार को अहिंसात्मक ढग से हमने इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार से किया। सभी जीवधारी एक दूसरे पर निर्भर हैं। मनुष्य प्रकृति व जीवधारियों पर निर्भर है। किन्तु इसकी यह निर्भरता जीवों को काट कर भक्षण करने की नहीं अपितु यों हैं। जैसे — भार ढोने के लिए घोडे खच्चर, ऊट, गदभ, हाथी इत्यादि, कृषि जुताई के लिए बैलों पर, दूध के लिए गाय, भैंस, भेड, बकरी इत्यादि पर तथा ऊन प्राप्त करने के लिए भेडों एवम बकरियों पर मानव समाज पूर्ण रूपेण निर्भर है।

भूतल पर आध्यात्मिक दृष्टिकोण से वेदों में तीन प्रकार के जीव पाए जातेहैं "विषयि, साधक, सिद्ध सुजाने, त्रिविध जीव जग वेद बखाने" आत्मिक पोषण को दृष्टि में रख कर जीवों के दो उपभेद किए गए हैं। १ शाकाहारी, २ मासाहारी। पृथ्वी पर पाए जाने वाले सम्पूर्ण जीव-जन्तु शरीर को क्रियमाण रखने के लिए भोजन अवश्य ग्रहण करते हैं। जीवों मे मानव सर्वश्रेष्ठ है। जिसका कारण है उसकी विवेकशीलता एवम् सद् असद् का ज्ञान। मनुष्य का ज्ञान ही उसे जगत के अन्य जीव, पशु, पक्षी, जलचर, नभचर आदि से भिन्न करता है। बडे जीव जन्तु छोटे जीव जन्तुओं को खाकर अपनी क्षुधा पूर्ति करते हैं। यदि इसी प्रकार मनुष्य भी अन्य जीवों का वध करके भक्षण द्वारा जीवन व्यतीत करे तो क्या उसे हम मानव कह सकते हैं? कदापि नहीं। क्योंकि अविवेकी पुरुष पशुओं से भिन्न नहीं किया जा सकता है। मासाहारी जीव तो अज्ञानी होते हैं, पापी होते हैं। पशु तुल्य हैं। किन्तु मासाहारियों को पशुओं की श्रेणी में भी नहीं स्थित किया जा सकता क्योंकि उत्तम पशुओं की श्रेणी में आने वाले गाय, बैल, भैंस, भेड, बकरिया इत्यादि छोटे जीवों की कौन कहे विशालकाय हाथी भी मास नहीं खाता। यहा तक कि

आर्य संन्यासी श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज

के नेतृत्व में ५२ सत्याग्रही गिरफ्तार

दिनाक १४ नवम्बर को प्रातः ११ बजे श्री स्वामी जी के नेतृत्व ५० सत्याग्रहियों का जत्था घटाघर, फतहपुरी, खारी बावली, नया बास, लालकुआ आदि दिल्ली के प्रमुख बाजारों में गोवध बन्द करो, के गगन भेदी नारे लगाता हुआ हौज काजी के पास दिल्ली पुलिस द्वारा गिरफ्तार।

गौ हत्या बन्द कराने के लिये इस युगल जोडी की व्यग्रता का अनुमान कीजिये।

अपवित्र पशु सूअर और गदर्भ भी मास नहीं खाते। फिर मास भक्षियों को अधम पामर नीच पशुओं की श्रेणी में मान लेना अनुचित न होगा। जब पशुओं में इतना विवेक है तो मानव होकर हम जीव हिंसा एवम् मास भक्षण करें। यह कहा तक न्याय सगत कहा जा सकता है। पाठक गण सोचें और अन्य लोगों को जो मास खाने का समर्थन करते हैं—उनको बता दें कि अरे! मास भक्षियो! नेत्र खोलकर देखो और ज्ञान चक्षु से विचार करो, समझो और इन मूक शाकाहारी (हरी घास व पत्ती खाने वाले) पशुओं से शिक्षा ग्रहण करो।

एक प्रसिद्ध ब्राह्मण वशावतस श्री शास्त्री जी ने भी यह कहा कि 'वेद हमे गोहत्या एवम् मास भक्षण की आज्ञा देते हैं प्राचीन काल में यज्ञों की पूर्णाहुति पर गायों की बलि दी जाती थी" मैंने श्री शास्त्री जी से स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करने एवम् उस वेद का नाम बताने के लिए कहा जिनके आधार पर उन्होंने उपरोक्त बातों को कहने का साहस किया था। इस पर श्री शास्त्रीजी निरुत्तर होकर चुपचाप सोचने लगे और कुछ क्षणों के बाद कहा। 'बताऊ गा।

मैं श्री शास्त्री जी का ध्यान इस ओर आकर्षित कराना चाहता हू जो हमारे वेद हमें शिक्षा देते हैं उपहूताइह गाव" (यजु० ३।४३) 'हमारे घरों में गाए हों' हमारा अतीत हमें बताता है कि भारतवर्ष में असख्य गोधन था। राजा महाराजा शुभ अवसरों पर ब्राह्मणों को लाखों गायें दान दिया करते थे। पाडवों के पास १० हजार गो वर्ग थे तथा प्रत्येक गोवर्ग १० लाख गायों का था। वे सारी गाए सुन्दर स्वच्छ व अच्छी दुग्धधारी होती थीं। नौ लाख गाय वाला नन्द, दस लाख वाला वृषभानु तथा एक करोड़ वाला नन्द राज कहा जाता था। सिकन्दर अपने साथ यहा से चुनी हुई स्वस्थ, सुन्दर एक लाख गाए ले गया था।" यह सभी तथ्य इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि प्राचीन भारत का गोवश असख्य था।

यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में ही परमात्मा की आज्ञा है कि—

'अघ्न्या यजमानस्य पशून् पाहि हे पुरुष! तू इन पशुओं को कभी मत मार और यजमान अर्थात् सब के सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर।

हिंसा की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाले तथा गोहत्या के समर्थकों एव धर्म के नाम पर जीविका चलाने वाले शोषकों को मैं फिर एक बार सचेष्ट कर देना चाहता हू कि हमारे वेद किसी भी प्रकार की हिंसा करने को पाप बताते हैं। सबसे प्राचीन सृष्टि के आदि में ही महाराज मनु ने जो स्मृति रच कर हिन्दू जनता का मार्ग प्रदर्शन किया—उस मनुस्मृति में भी अहिंसा पर अधिक बल दिया गया है। "अहिंसा परमो धर्मः, श्रुति उक्त स्मार्त एव च।" एक श्लोक में मनु महाराज जी धर्म के लक्षणों का विवेचन करते हुए लिखते हैं कि—

अहिंसा सत्यमस्तेय
शौचमिन्द्रिय निग्रह।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो
दशक धर्मलक्षणम्॥

उपरोक्त धर्म के लक्षणों में अहिंसा को प्रथम स्थान दिया गया है। कविता कानन केशरी, हिन्दी साहित्य के देदीप्यमान कवि गोस्वामी तुलसीदास ने भी 'पर पीड सम नहिं अधमाई" लिख कर वर्तमान "मानस" में भी अहिंसा के पक्ष को और भी सुदृढ कर दिया है। हमारे वेद व आर्ष ग्रन्थ अहिंसा का एक मत से समर्थन करते हैं किन्तु पढ़े लिखे विद्वान् लोग भी वेदो सूक्तियों का अर्थ, अनर्थ से बदल देते हैं—तो बहुत ही क्षोभ होता है। हिंसा करना जीवों को कष्ट पहुचाना आदि सभी कार्य पाप एव दुष्कर्म हैं और इस प्रकार का कार्य करने वाला अधर्मी है और जो अधर्मी है, नास्तिक है—वह पशु तुल्य है।

आहार निद्रा भय मैथुन च
सामान्यमेतद् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो
धर्मेण हीना पशुभि समाना॥

आहार, निद्रा, भय, मैथुन इत्यादि क्रियाए मनुष्य तथा पशुओं में समान रूप से पाई जाती है। धर्म की ही एक विशेषता मनुष्य में है जो पशुओं से अलग करता है। जो धर्म से हीन है वह पशु तुल्य है।

मैं सम्पूर्ण हिन्दू जनता एव सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हू कि गोवध व हिंसात्मक कार्य बन्द हो। गौ को हम हिन्दू भाई गोमाता कहते हैं और माता की सुरक्षा के लिए हमे सर्वस्व न्यौछावर करने को निरन्तर तैयार रहना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह शीघ्रातिशीघ्र गोवध बन्दी की घोषणा कर दे। यदि सरकार गोवध बन्द नहीं करती तो हम सभी राष्ट्र प्रेमी हिन्दू भाइयों को गोमाता की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए। जिस प्रकार भारत माता की सुरक्षा के लिए हम सभी ने एकता के सूत्र में बन्ध कर अंग्रेजों को देश से निष्कासित करके मा के गौरव को बढाया है, उसी प्रकार गोमाता की सुरक्षा के लिए हम सभी बन्धुओं को सगठित होकर 'गोवध बन्द करो' के नारे को बुलन्द करना चाहिए।

अन्त में मैं अपनी ओर से तथा अपने समाज की ओर से यह अपील करते हुए विनम्र निवेदन करना चाहता हू कि गाय की सुरक्षा केवल 'आर्य समाज' या हिन्दुओं' की मर्यादा, सस्कृति एव धर्म की सुरक्षा नहीं है अपितु सम्पूर्ण भारत राष्ट्र की सुरक्षा का प्रश्न है। हमारे पूज्य महात्मा गाधी ने भी (जो अहिंसा के पुजारी थे) कहा था कि—'यद्यपि मैं अहिंसा का पुजारी हू किन्तु गोमाता की रक्षा के लिए यदि शस्त्र धारण करने की आवश्यकता पड़े तो मैं सहर्ष तैयार हू।' गाधी जी के इन वाक्यों को ध्यान में रख शीघ्रातिशीघ्र गोवध बन्दी की घोषणा सरकार को कर देनी चाहिए। 'गोमाता जिन्दाबाद'

वेदवादी दयानन्द

श्री राजेन्द्र जी, अतरौली (अलीगढ़)

हजारों वर्षों से उपेक्षित तथा शताब्दियों से त्यक्त और तिरस्कृत वेदों का पुनरुद्धार करने का श्रेय इस युग में यदि किसी को प्राप्त है तो वह केवल एकमात्र दयानन्द हैं। यह ठीक है कि इस मध्यवर्ती काल में वेदों के भाष्य भी हुए, उनका ग्रन्थों में गुणगान भी होता रहा किन्तु इन सबका परिणाम एक ही हुआ अर्थात् वेदों की उपेक्षा और उनकी निंदा। यह सब इसलिये कि वेदों का जो स्वरूप हमारे सामने आता रहा, वह अपूर्ण और विकृत था। फलतः वेद वर्णित ईश्वर, ज्ञान, कर्म, उपासना, जीवन के अवलम्ब—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, वर्णाश्रम व्यवस्था तथा संस्कार, यहां तक कि हमारा जातीय गौरवपूर्ण नाम तक नष्ट-भ्रष्ट हो गया।

आज जिस ढांचे पर बहु-सम्प्रदायमूलक हिन्दू कहा जाने वाला धर्म खड़ा है, वह वेदों से इतना ही दूर है जितने संसार के अन्य मतमतांतर। आज चाहे अपनी आत्म-प्रवंचना के लिये कोई कहले कि हिन्दूधर्ममूलतःवेदों पर आधारित है, किन्तु यह सत्य से बहुत परे है। हिन्दुओं के सभी सम्प्रदाय और उनके सिद्धांतों का मूल, पुराण हैं जिनका वेदों से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। इसका ईश्वर, उपासना-विधि, जप-तप, वर्णाश्रम, संस्कार, तीर्थ, पर्व, सब ही पुराणानुमोदित हैं। इनके अवतार, जिन्हें यह ईश्वर समझते हैं, वेद के सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, अजन्मा, सृष्टिकर्ता और कर्मफलदाता आदि गुणयुक्त ईश्वर से सर्वथा भिन्न हैं। इनकी उपासना विधि, विभिन्न जड़ मूर्तियों की अर्चना, नाम कीर्तन जप-तप, कथा-वार्ता, इन कल्पित ईश्वरों पर ही आधारित हैं। अनेक देवी-देवता, भूत प्रेत, नदी, पहाड़, वृक्ष सभी इनके उपास्य देव हैं। संस्कारों के नाम पर केवल ढोंग और आडम्बर का प्रदर्शन रह गया है। मृत्यु और उसके पश्चात् कल्पित संस्कार भी पुराणों की ही देन हैं। इनके तीर्थस्थान, आचारहीन पंडे पुजारी के व्यापार केन्द्र हैं। जहां भोली जनता को ठगकर यह लोग अपनी जीविका चलाते हैं। हिन्दू पर्वों की दुर्दशा, [illegible] किसी से छुपी नहीं है। इन अवसरों पर मद्य, भंग आदिका खुला प्रयोग, अश्लील गाली गलोज और गाने, कीचड़-धूल मिट्टी का सर्वत्र प्रयोग, पशु-बलि, अवतारों का नाट्य मंडलियों के पात्र रूप में घृणित प्रदर्शन, द्यूत क्रीड़ा, यह सब इन पर्वों के कार्यक्रम हैं। इस सब के होते हुए इसे वेदमूलक कहना न केवल वेदों का उपहास है, अपितु उनका अपमान और अनादर है।

आज जिसे हमारे भोले शिक्षित और अशिक्षित "सनातन धर्म" कहकर मन बहलाया करते हैं—यही उसका रेखा चित्र है, जिसे ऊपर प्रस्तुत किया गया है। आज ऋषि दयानन्द अनुमोदित वैदिक धर्म को यह अभागे लोग नवीन कहते हैं और अपने को 'सनातन' एवं प्राचीन कहते हैं। यह है वेदों की उपेक्षा का दुष्परिणाम जिसे ऋषि दयानन्द ने अपनी दिव्य दृष्टि से समझा।

वेदों पर बौद्धमत ने कुठाराघात किया, जैन मत ने उसके उन्मूलनका भरसक प्रयत्न किया। शंकराचार्य ने, जिन्हें भ्रमवश वेदोद्धारक कहा और समझा जाता है, यद्यपि नाम वेदों का लिया किन्तु प्रचार उपनिषद्, वेदांत और गीता का ही किया। यह प्रस्थानत्रयी जिसका मूल सिद्धांत इनकी दृष्टि में 'ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या' पर आधारित है, इनके वेद शास्त्र और स्मृति हैं। वेद इनके मत में केवल यज्ञ-यागादि में प्रयोग आने वाले कर्म-काण्ड के ग्रन्थ हैं, जिनका ब्रह्म विद्या से न कोई सम्बन्ध है और न वह वेदों में है। प्रस्थानत्रयी पर सभी शंकर भाष्य इसी का प्रतिपादन करते हैं। उन्होंने उपनिषदों को ही श्रुति नाम से, जिन्हें वह ब्रह्म विद्या मूलक कहते हैं, सर्वत्र प्रमाण दिये हैं। गीता भी इसी सिद्धांत का खुला प्रतिपादन करती है और उसे उपनिषदों का सार समझा जाता है। यही अवस्था रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैतवाद की है। माधवाचार्य का द्वैतवाद, निम्बकाचार्य का द्वैताद्वैत, जो सभी वैष्णव सम्प्रदाय की विभिन्न शाखाएं हैं, किसी न किसी रूप में इसके समर्थक हैं इन्होंने भी यत्रतत्र वेदों की प्रशंसा की है किन्तु प्रमुखता अपने ही साम्प्रदायिक सिद्धान्तों और मन्तव्यों को दी है।

हजारों वर्षों के पश्चात् ऋषि दयानन्द ने इस आवरण को हटाकर वेदों का मुख उज्ज्वल किया। वेद विरोधी सम्प्रदायों के घने अन्धकार को अपनी अलौकिक प्रतिभा द्वारा वैदिक रश्मियों से छिन्न-भिन्न किया। "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।" "*वेद स्वतः प्रमाण हैं, शेष आर्ष-ग्रन्थ वेदानुकूल होने पर ही परतः प्रमाण हैं*" की असंदिग्ध घोषणा की।

आर्य समाज ने ऋषि की इस अभिलाषा और दायित्व की वैदिक साहित्य संवृद्धि द्वारा बहुत कुछ पूर्ति की, परन्तु फिर भी वह हिन्दुओं से प्राप्त वंशानुवंश वेदों के प्रति उपेक्षा वृत्ति का सर्वथा परित्याग न कर सका। ऋषि दयानन्द के नाम की दुहाई देने वाले, आज भी, आर्यसमाज में ऐसे विद्वान् हैं जिनका खुला विश्वास है, "वेदों और ब्राह्मणों का सार हैं उपनिषद् और गीता उपनिषदों का सार है। गीता क्या है? गागर में सागर है।" तब सारभूत ७०० श्लोकों वाली गीता को छोड़कर वेदों में शिरखप्पी करनेवाले मूर्ख ही तो रहे? जब गीता रूपी अमृत घट से तृप्ति हो जाय तब वेद रूपी सागर का मंथन कोई क्यों करे? किन्तु इस गीता रूपी सार का भी सार निकालने वालों की कमी नहीं है। उनका मत है—

"राम कहो, राम कहो, राम कहो, सीता। या ही में चारों वेद, या ही में गीता"

कहिये है न यह गीता-सम्पोषकों के सार का सार? फलतः इन विद्वानों की कृपा से आर्य समाज की वेदी पर अभी वेदों को वह उच्च स्थान प्राप्त नहीं हो सका जैसा कि होना चाहिये। आज जो अन्वेषणात्मक कार्य वेदों पर होना था वह न होकर, अनेक विद्वान् गीता भाष्यों पर ही अटके हुए हैं।

मैंने इस लेख का शीर्षक, 'वेदवादी दयानन्द' जान बूझ कर रखा है। दयानन्द अन्तिम क्षणों तक वेदवाद में रत रहे। वेदों का प्रचार और भाष्य करते हुए उन्होंने अपना शरीर परित्याग किया। वह 'वेदवाद' का तात्पर्य हमारे कुछ गीता भाष्यकारों की भांति वेदों का 'अर्थाभास', अर्थात् 'उनका मर्म न समझ कर कुछ का कुछ अर्थ समझना, स्वीकार नहीं करते थे। अपितु गीता के ही शब्दों में 'वाद' का वही अर्थ उन्हें मान्य था जिसे श्रीकृष्ण ने 'वादः प्रवदतामहम्' कहकर अपनी *विभूति कहा है। "अर्थात् तर्क वितर्क में मैं वाद हूं।" जिन गीता* भाष्यकार ने 'वेदवाद' का अर्थ वेदों को अर्थाभास किया है, वही वाद का अर्थ करते हुए लिखते हैं—वादः—उसको कहते हैं जिसको राग से रहित पुरुषतत्व निर्णय के लिए करते हैं। महाभारत में अनेक स्थलों में वेदवाद और वेदवादी का 'वेदों के मर्मज्ञ' एवं वेदानुकूल आचरण करने वाले वैदिक विद्वान् ही किया है। निम्न दो श्लोकों पर दृष्टिपात कीजिये—

तान् सर्वानग्रहारेण ब्राह्मणान् वेदवादिनः। यथार्हं पूजयामि स्म पानाच्छादन भोजनैः ॥४५॥

वनपर्व अ० २३३

यदुक्तं वेदवादेषु गहनं वेददर्शिभिः। तदन्तेषु यथायुक्तं क्रमयोगेन लक्ष्यते ॥२८॥

शान्तिपर्व अ० २३२

शंकराचार्य ने भी अपने गीता-भाष्य में यही अर्थ किये हैं जो गीताकार को अभिप्रेत थे। तब

(शेषपृष्ठ १० पर)

हैदराबाद में तीन महत्वपूर्ण प्रस्ताव

प्रस्ताव स० १

गोवध-निरोध आंदोलन

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद की साधारण सभा का दिनांक ९ १० ६६ का अधिवेशन सर्वदलीय गोरक्षा अभियान केन्द्रीय समिति के तत्वावधान मे सचालित गोवध निरोध आन्दोलन के अन्तगत साधु-महात्माओ द्वारा किए जा रहे अनशनादि के प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रकट करता है और एतदर्थ साधुवाद अर्पित करता है।

अखिल भारतीय स्तर पर अभियान समिति द्वारा सचालित गोवध निरोध आन्दोलन का यह सभा पूर्ण समर्थन करता है और अपनी ओर से इस बात का आश्वासन देती है कि यह सभा इसमे पूर्णतया तन मन धन से सहयोग करेगी। साथ ही सभा समिति का ध्यान इस ओर भी आकर्षित करना चाहती है कि भारत सरकार द्वारा जो धैर्यपूर्ण नीति के प्रयोग का उपदेश किया जा रहा है वह उसकी पुरानी और टाल-मटोल की नीति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। समिति इससे भली प्रकार सतर्क रहकर इस कलक के पूर्णत समाप्त होने तक दृढता पूर्वक आदोलन को जारी रखे जिससे भारत का यह कलक दूर होकर कोटि कोटि जन जन की भावनाओं की पूर्ति हो सके।

सभा की दृष्टि मे गोवध निरोध का प्रश्न विशुद्ध धार्मिक सास्कृतिक और राष्ट्रीय एव आर्थिक प्रश्न है। इसका साम्प्रदायिकता आदि से दूर का भी सम्बन्ध नही।

प्रस्ताव स० २

संस्कृत भाषा पठन-पाठन

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद की साधारण सभा का दिनाक ९ १० ६६ का यह अधिवेशन भारत सरकार की सस्कृत भाषा के प्रति बरती जाने वाली नीति के प्रति असन्तोष प्रकट करता है। अधिवेशन का अभिमत है कि सस्कृत के पठन पाठन की व्यवस्था भारतीय सस्कृति के रक्षा की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है इस सभा को इस बात का भय है कि यदि सस्कृत को भारतीय शैक्षणिक जीवन में सक्रिय स्थान नही दिया गया तो भारत स्वय सस्कृत के लिए एक अपरिचित अजनबी देश अन्य देशो की भाति बनकर रह जायगा।

यह अधिवेशन भारत सरकार का ध्यान इस ओर भी आकर्षित कराना चाहता है कि च द लोग जो इस प्रकार क सुझ व द हे हैं कि सस्कृत को द्वितीय भाषा क रूप मे माना जाए और ठीक सस्कृत की भाति उर्दू और अर्बी आदि को भी स्थान दिया जाए, सभा इसे कदापि उचित नहीं अनुभव करती। सस्कृत का जैसा कुछ व्याकरण और सार्वभौमिक महत्व है उसकी दृष्टि में उर्दू अर्बी आदि उसकी समकक्षता नही प्राप्त कर सकती।

इस सभा का भारत सरकार से अनुरोध है कि वह सस्कृत को उसके महत्व की दृष्टि से पठन पाठन में प्रारम्भ से अनिवार्य स्थान देकर भारत की प्राचीन सस्कृति की रक्षा में योग दे।

प्रस्ताव स० ३

बीड़ दुर्घटना सबधी

भारत के कुछेक स्थानो पर योजनाबद्ध मुसलमानो द्वारा साम्प्रदायिक दुष्प्रवृत्तियो के अन्तर्गत लूट पाट, दगा एव हत्याए आदि कर वातावरण को विक्षुब्ध कर आतकित किया जा रहा है। सभा के अन्तस्थ स्थलों से जो समय-समय पर सूचनाए प्राप्त हो रही हैं वह सभा के लिए एक चिन्ता का विषय है।

हाल हाल मे महाराष्ट प्रान्त के बीड जो जिले का प्रमुख स्थल है में तथा औरगाबाद जिला के प्रमुख व्यापारीस्थल जालना की दुर्घटनाओ सम्बन्धी जो सूचनाए प्राप्त हुई हैं उनको दृष्टिगत कर आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद की साधारण सभा का दिनांक ९ १० ६६ का यह अधिवेशन सर्वसम्मति से निम्नांकित प्रस्ताव स्वीकृत करता है।

(अ) सभा जिन स्थलों पर उपर्युक्त प्रकार की दुर्घटनाए घटी वहा की प्रान्तीय सरकारों से तथा केन्द्रीय सरकार से माग करता है कि कि तत्काल योग्य कार्यवाही की जाकर विक्षुब्ध वातावरण को शांत किया जाए।

(आ) यह सभा दिनाक १-१० ६६ को बीड़ की घटी दुर्घटना के प्रति पुलिस तथा राज्य के वरिष्ठ अधिकारियो का ध्यान आकृष्ट कर मांग करती है कि इस दुर्घटना के आयोग (कमीशन) नियुक्त कर इसकी खुली जाच करवाए। सम्प्रति जो अधिकारी गण उपेक्षावृत्ति बरतने तथा इसको प्रोत्साहन देनेके जिम्मेवार ठहरें उनके प्रति कडी से कडी कार्यवाही की जाए जिससे भविष्य मे इस प्रकार की दुर्घटनाए न घट सकें और योजनाबद्ध होने वाली इन दुर्घटनाओं का अन्त हो सके।

(इ) दिनाक ३ १० ६६ को बीड़ के काड में चौकुमे की राजूरी के सरपच श्री माधवराव जी पाटील को जिन आतककारियो ने जान से मार डाला और उनके भाई को भी बुरी तरह घायल किया सम्प्रति पुलिस द्वारा जिस गति से कार्यवाही की जा रही के सम्बन्ध में असन्तोष प्रकट करती है और बल पूर्वक माग करती है कि सम्बन्धित व्यक्तियो की तत्काल गिरफ्तारी की जाकर कानून के हवाले किया जाए।

(ई) औरगाबाद जिला के जालना नगर की सार्वजनिक प्रतिमाओं पर हड्डियो का हार आदि डालकर एक वर्ग की भावनाओ को उत्तजित करने की जो दुश्चेष्टा की जाकर ठेस पहुचाई गई और वातावरण विक्षुब्ध किया गया उसकी निष्पक्ष जाच करवाई जाए।'

नरवाना आर्य समाज क युवक नेता श्री जगदीश चन्द्र वसु अपने सत्याग्रही जत्थे सहित पार्लियामेंट की ओर बढ रहे हैं।

क्षमा-याचना

आर्य विद्वानों के अनेक महत्वपूर्ण लेख और समाचार स्थानाभाव के कारण छपने से रह जाते हैं जिसका हमें खेद है। फिर भी उन्हें देर-सवेर प्रकाशित करने का प्रयत्न करते रहते हैं।

—प्रबन्धक

एक वर्ष पूरा हुआ

कृपया सार्वदेशिक साप्ताहिक का जो धन आपकी ओर शेष है उसे तुरन्त भेजने की कृपा करें। —प्रबन्धक

हैदराबाद की स्वतन्त्रता और आर्य समाज

आर्यों का शौर्य दीप

श्री पं० नरेन्द्रजी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद व
उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

[गतांक से आगे]

यदि उस समय मोटर और आगे चली जाती, तो उस पर मैथोडिस्ट स्कूल के फाटक पर खड़े हुए गंगाराम के द्वारा बम और पिस्तौल से आक्रमण करना था। क्योंकि योजना ही इस प्रकार की थी। गुलकुण्डा गली के मोड़ पर श्री जगदीश जी को भी इसी उद्देश्य से खड़ा किया गया था, परन्तु निजाम बच गया, क्योंकि वह आगे न बढ़ा।

इससे पूर्व कि नारायणराव दौड़कर आने वाले पुलिस कान्स्टेबलों पर बम फेंकते, उनको गिरफ्तार कर लिया गया। आक्रमणकारियों के पास जहर की शीशियां भी मिलीं। इनका उद्देश्य सम्भवतः यह था कि बम फेंकने के बाद यदि आवश्यकता हो तो विषपान कर लिया जावे और पुलिस के हाथों में पड़कर कष्ट भोगने से बचाया जावे। नारायणबाबू की गिरफ्तारी से तीसरे दिन रात के १२ बजे पालमाकूर में श्री गंगाराम जी भी पकड़े गये तीसरे युवक की भी खोज होती रही, परन्तु वे न मिले।

दो सप्ताह तक पुलिस जांच पड़ताल करती रही। मुकदमा अदालत में गया। फिर वह सेशन जज की अदालत में पहुँचा। दोनों युवकों ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। न्याय दान का दिन आया। नारायणबाबू को फांसी और गंगाराम को आजीवन कैद का आदेश सुना कर उन्हें केन्द्रीय कारावास भेज दिया गया। हाईकोर्ट में अपील की गई और वह नामंजूर हो गई। फिर ज्यूडीशनल कमेटी में अपील की गई। वकीलों की बहस के बाद मिसल निजाम के पास हस्ताक्षर करवाने के लिये भेजी गई। अभी यह कार्यक्रम चल ही रहा था कि भारत ने निजामशाही के विरुद्ध अपना ऐतिहासिक पुलिस एक्शन आरम्भ कर दिया। इसके लगभग एक मास बाद निजाम ने नारायणबाबू का दण्ड फांसी के स्थान पर आजीवन कैद कर दिया! और गंडेया जी को दस वर्ष की सजा दी। नारायणराव जी पवार तथा गंडेया जी के केन्द्रीय कारावास पहुँचने के बाद उन्हें दी जाने वाली यातनाओं का समाचार जब मुझे जेल में (जो मैं इसी जेल के एक भाग में नजरबन्द था) मिला तो इन युवकों को ढाढस व धैर्य देने के निमित्त जो गुप्त पत्र मैंने उन्हें भेजा था, उस पर की कुछ पंक्तियां यहां उद्धृत की जाती हैं--

"कारावास आत्म चिन्तन और स्वाध्याय के लिए एक उपयुक्त स्थल सिद्ध हो सकता है। आप हताश न हों। मुझे विश्वास है कि आपका यह साहस एवं त्याग हैदराबाद के भविष्य को एक नया आलोक प्रदान करेगा। वस्तुतः भविष्यत्
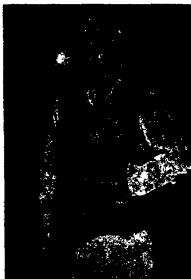
का निर्माण वर्तमान के कार्यों पर ही आधारित होता है। एक दिन आप अवश्य इस बन्धन से मुक्त हो जाएंगे और आपकी यह मुक्ति निजाम के अत्याचार से मुक्ति सिद्ध होगी मुझे आशा है कि आप दोनों पर्वत के समान अपने विचारों में अटल रहेंगे।"

जेल जीवन, संकट और छुटकारा

इन दोनों युवकों से जेल में बहुत अधिक कठोरता का व्यवहार किया गया। और इन्होंने भी प्रसन्नता पूर्वक जेल जीवन के सभी कष्टों को सहन किया। न इन्हें मृत्यु का भय था न अपमान की चिन्ता। इन पर इतनी अधिक मार-पीट और अत्याचार किया गया था कि वह भी बाद में इनके लिये कष्टदायक न रहा था। क्योंकि सभी कष्टों को सहन करने का इनको पूरा अभ्यास हो गया था। पुलिस एक्शन के बाद जब हैदराबाद में फौजी गवर्नर का राज था, तब इन दोनों युवकों को छुड़वाने के मैंने अनेक यत्न किये जिसके फलस्वरूप १० अगस्त १९४९ ई० इन दोनों युवकों को गवर्नर जयन्तनाथ जी चौधरी (जे० एन० चौधरी) के आदेश से छोड़ दिया गया।

आक्रमणकारियों का उद्देश्य

अब यह प्रगट किया जा सकता है कि नारायणराव, गंडेया और जगदीश, ये तीनों ही नवयुवक आर्यसमाजी हैं और आर्य समाज के सभी रचनात्मक कार्यक्रमों में उत्साह पूर्वक भाग लेते रहे हैं। उन्होंने बम प्रयोग द्वारा निजाम को समाप्त कर देने का भीषण उपक्रम केवल इसी लिये किया था, कि हैदराबाद रियासत को वास्तविकरूप में स्वतन्त्र कराया जावे। और इस कार्य में अपने प्राणों की आहुति भी देनी पड़े, तो दे दी जावे। न तो उनका निजाम से कोई व्यक्तिगत द्वेष था और न ही इसमें इनका कोई व्यक्तिगत स्वार्थ था। वे यह भी समझते थे कि यदि बम के आक्रमण से निजाम मर जायेगा, तो उसके बेटे गद्दी की प्राप्ति के लिये अवश्य ही आपस में झगड़ा करेंगे। और तब उनमें से कोई एक भारतसंघ की सहायता भी अवश्य ही लेगा। और यदि ऐसा न होगा, तो उस व्यक्ति को जो रियासत में अव्यवस्था, हत्याकाण्ड, अशान्ति और बहुत प्रकार के अनाचारों के लिये उत्तरदायी है, उसे अपनी तानाशाही फैलाने का अवसर मिल जावेगा। निजाम की मोटर पर बम फेंकने और निजाम की हत्या करने का क्या अर्थ है? यह वे भली प्रकार जानते समझते थे। उन्होंने रियासत की पूर्ण स्वतन्त्रता और जनता को सुख-सुविधा के लिये अपना सब कुछ बलिदान करनेका साहस कियाथा। जो बम फेंकागया था, यह वही था जिसको मैं और मेरे तीन साथी अर्थात् श्री गोपालदेव जी शास्त्री कल्याणी, श्री मानिकराव जी गोषामहल, और श्री सिद्धप्पा जी हुमनाबाद, खड़की छावनी से खरीदकर लाये थे। जो मेरे गिरफ्तार हो जाने के कारण श्री नारायणराव बाबू के हाथ वह हथगोला लग गया था। और निजाम राज्य में क्रान्ति के कार्यों को किस विधि से आरम्भ किया जाय, इसकी योजना बनाने तथा मार्ग दर्शन प्राप्त करने के लिए मैं और मेरे साथियों ने नाना पाटील "पत्री सरकार" और श्री आदरणीय सेनापति बापट जी से परामर्श किया था।

मस्त जवानों का कर्तव्य

क्रान्तिकारी योजनाओं से एक और घटना का उल्लेख यहां किया जाता है जो पाठकों के लिए स्थिति की स्पष्टता में सहायक होगा। पं० रुद्रदेव जी उपदेशक आर्य प्र० स० हैदराबाद श्री रामकोटया जी और सूर्या जी ने १९४८ ई० में बरुपालम और गेनगेरी के बीच विजयवाड़ा से आने वाली बहुत बड़ी मालगाड़ी पर बम फेंका जिससे कई डब्बे नष्ट हो गये। दूसरे दिन इस घटना के बदले घटना स्थल के समीपस्थ ग्राम को मुस्लिम गुण्डों ने जलाकर भस्म कर दिया। इस घटना की सूचना ज्यों ही श्री रुद्रदेव जी को मिली, उन्होंने विजयवाड़ा को लौटने वाली गाड़ी पर बम फेंक कर ड्राइवर के साथ सारी गाड़ी को ही जला दिया। इस घटना का प्रभाव निजाम सरकार पर बहुत गहरा पड़ा।

सरदार पटेल से भाई वंशीलाल जी की ऐतिहासिक भेंट

हैदराबाद में निजाम की पुलिस, फौज, रजाकारों और मुसलमान गुण्डों के आक्रमण जनता पर जारी ही थे। स्थिति बहुत अधिक बिगड़ चुकी थी। भारत सरकार बहुत अधिक

(शेष पृष्ठ १४ पर)

वेद प्रचार का शुभ परिणाम

श्री मोहनलाल जी मोहित, मोरिशस अफ्रीका

महर्षि दयानन्द जी ने "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म" बताया है और देश-देशान्तर में वेद प्रचार द्वारा मानवता का उत्थान करना आर्यसमाज का प्रधान उद्देश्य बताया। महर्षि के परम पुनीत जीवन से प्रेरणा लेकर आर्यसमाज के तपस्वी विद्वानों ने सात्विक तन्मयता से वेद प्रचार और समाज सुधार के कार्यों में अपने को बलिदान कर दिया। आर्यसमाज का प्रारम्भिक युग का वेद प्रचार और सामाजिक सुधार के कार्यों ने शतियों से प्रसुप्त भारत के राष्ट्र जीवन में नव चेतना दी। वेद प्रचार, समाज सुधार और शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल तथा डी० ए० वी० कालेज के द्वारा श्री महात्मा मुन्शीराम, महात्मा हंसराज, मुनिवर गुरुदत्त, ला० लाजपत राय, पं० लेखराज जी जैसे तपस्वी महापुरुषों के योगदान से आर्यसमाज ने ५० वर्ष में ही युगान्तर कारी कार्य किया। राष्ट्र का एक चौथाई भाग जो अछूत नाम से अलग पड़ा था, आर्यसमाज ने उनको शुद्ध और शिक्षित बना कर राष्ट्र का उपयोगी अंग बनाया।

बाल विवाह को निषेध कर और बाल विधवाओं के पुनर्विवाह को समर्थन देकर आर्य समाज ने हिन्दुओं के सामाजिक कलंक को दूर किया। विधर्मियों से शास्त्रार्थ में लोहा लेकर उन्हें परास्त कर आर्यसमाज ने उनके पञ्जों से हिन्दू जनता की रक्षा की।

जन्म जाति के मिथ्या अभिमान तथा नीच ऊंच का दम्भ-पाखण्ड रूपी कोढ़ को आर्य समाज ने विध्वंस कर दिया और परस्पर में भ्रातृ भाव का प्रचार कर संघ शक्ति को जन्म दिया। मानव प्राणी मात्र को विद्या-शिक्षा का अधिकार देकर हिन्दू समाज की मानसिक दासता को दूर किया। मातृ भाषा का प्रचार, वैदिक संस्कृति का प्रसार और सब को सन्ध्या का अधिकार देकर वैदिक परम्परा तथा राम, कृष्ण के वंशजों को महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज ने जीवन दान दिया। धार्मिक क्षेत्र में पौराणिक रूढ़ि-अन्ध विश्वास से निराश और हताश शिक्षित लोकमत को ज्ञान कर्मोपासना की अमृतधारा से आर्यसमाज ने नव जीवन प्रदान किया। आर्य समाज के तपस्वी विद्वानों ने देश-देशान्तर में वेद प्रचार द्वारा 'मनुः भव' की देव ध्वनि से लोक मत को जगाया। युग ने पलटा खाया। आर्य समाज के तर्क संगत विवेक से दीक्षा लेकर राष्ट्र के जाग्रत मस्तिष्कों ने अन्ध-परम्परा को तिलाञ्जलि और न्यायसंगत विचार विनिमय की शैली सीखी। और बौद्धिक एवं मानसिक दासता का अन्त हो चुका, तथा नव जागरण जगत में लोकमत के प्रगति पथ पर गतिशील है। विश्व में अब तो आर्थिक और राजनीतिक दासता को जगह नहीं रही। सम्प्रति स्वराज्य और स्वतन्त्रता की विजयध्वनि ही लोकवाणी बनी है। पिछले एक शती के युग महापुरुषों की महान् तपस्या ने अर्थ लोलुप साम्राज्यवादियों के अत्याचार और शोषण से जन-जीवन को मुक्त किया और वेद प्रचार, शिक्षा प्रसार तथा समाज सुधार के प्रबल आन्दोलन से अन्ध विश्वास तथा गुडडम का गढ़ भी गिर चुका, उत्पीड़ित एवं शोषित मानवता को अब राहत मिली, उनके नैतिक जीवन में विकास हुआ, और उनके विकसित हृदय तथा परिष्कृत मस्तिष्क अपनी व्यावहारिक-कुशलता से सामाजिक जीवन स्तर शुद्ध एवं उत्कर्ष बना रहा है। उपर्युक्त वातावरण बनाने में आर्यसमाज के प्रचार युग ने बड़ा ही योग-दिया है। आर्यसमाज के महारथी गण ने देश-देशान्तर में दौरा करके वेद प्रचार की दिव्य-ध्वनि से स्वर्णयुग का निर्माण किया और यही है वेद प्रचार का शुभ परिणाम।

उपदेशक विश्वविद्यालय की आवश्यकता

श्री० सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के तत्वावधान में 'उपदेशक विश्व वैदिक विद्यालय' संस्थान की स्थापना आवश्यक है।

जिसमें देश देशान्तर में प्रचारार्थ उच्च-कोटि का वैदिक साहित्य में पारंगत विद्वान् को दो वा तीन वर्ष के लिए उपदेशक कला का प्रशिक्षण दिया जाय।

गुरुकुलों और आर्य विद्यालयों से [illegible] तपस्वी ३० ब्रह्मचारियों को चुना जाय प्रशिक्षण के लिए और प्रशिक्षण निःशुल्क संस्थान की तरफ से दिया जाय।

देश विदेश में प्रचारार्थ विश्व की १०-१५ भाषाओं के माध्यम से प्रशिक्षण देना आवश्यक होगा। यदि सार्वदेशिक सभा शिक्षा-विशेषज्ञ प्राध्यापकों से कथित विषय पर एक कार्यक्रम तैयार कर विचार-विनिमय के लिए प्रकाशित करे तो ठीक होगा।

संस्थान को स्थायी बनाने के लिये पांच वा छ लाख की निधि की आवश्यकता है जो विश्व की आर्य समाजें श्रद्धा से करना चाहें तो एक वर्ष में ही पुष्कल धन मिल सकता है। उपर्युक्त संस्था के द्वारा ही देश-विदेश में वेद प्रचार का उद्देश्य सफल हो सकता है।

(पृष्ठ ७ का शेष)

पता नहीं कि वे विद्वान् जिनका गीता प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं है यह अर्थ कैसे और किस आधार पर करते हैं? यहां तो 'गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त' वाली कहावत ही चरितार्थ होती है।

आज आर्य समाज को वेद-वाद में रत रहने वाले विद्वानों की आवश्यकता है। जब तक आर्य विद्वानों की आसक्ति 'गागर' में रहेगी उस समय तक वे वेद रूपी सागर से रत्न नहीं निकाल सकेंगे।

आर्य महानुभावों की सेवा में—

सार्वदेशिक के मूल्य में वृद्धि नहीं

किन्तु

ग्राहक संख्या में वृद्धि चाहते हैं

कृपया इस पर भी ध्यान दें

१—दीपावली को साप्ताहिक का पूरा वर्ष हो गया।

२—इस वर्ष में पांच विशेषांक आपकी भेंट किए हैं—बलिदान अंक, बोधांक, वेद कथा अंक, आर्य विजय अंक और दीपावली पर ऋषि अंक।

३—अगले वर्ष में कई महत्वपूर्ण अंक छपेंगे। जिनमें "आर्य समाज परिचयांक" और एकादश-उपनिषद् अंक तो बड़े ही उच्चकोटि के होंगे। जो ७) देकर ग्राहक बनेंगे वे इन्हें बिना मूल्य प्राप्त कर सकेंगे।

४—जो महानुभाव प्रति सप्ताह १५ पैसे देकर सार्वदेशिक लेते हैं उन्हें विशेषांकों का विशेष धन देना ही है। अतः ७) भेजकर ग्राहकों में नाम अंकित करा लें।

५—अब तक जिन महानुभावों ने सार्वदेशिक का, अथवा विशेषांकों का धन नहीं भेजा—वह तुरन्त भेजें।

—प्रबन्धक

गोरक्षा परमावश्यक

श्री कैलाश नारायण जी पाठक भोपाल

आज हमारे भारतवर्ष के ८० प्रतिशत लोग देहातों में रहते हैं। और प्रायः वे सभी कृषि द्वारा ही अपना जीवन यापन करते हैं। यह बात तो बिना किसी विवाद के सिद्ध है कि हमारे देश में कृषि का एकमात्र जो साधन है वह बैल है। अतः भारतीय कृषक को तो गो वंश पर ही निर्भर रहना पड़ा तो यह सिद्ध है कि गो वंश ही भारत का जीवन है और हमेशा बना रहेगा।

अब तो आधुनिक वैज्ञानिक भी यह स्वीकार करने लगे हैं कि भारतवर्ष के लिए कलों का उपयोग विशेष कर लाभ नहीं है। परन्तु फिर भी आंधी में बहने वाले लोग गोरक्षा की आवश्यकता को समझ नहीं रहे हैं यह देश का दुर्भाग्य है। आज हमारे देश का नागरिक इतना सोया हुआ है कि उसे यह भी नहीं मालूम है कि जिस देश का हम पैदा किया हुआ अन्न खा रहे हैं वह किसके द्वारा पैदा किया गया है जिस के बछड़े बड़े होकर हमको खेती में जुतकर अन्न पैदा करके हमारा जीवन यापन कर रहे आज उसी कर्तव्यधारी बैल की मा का वध इस प्रकार हो रहा है जिस तरह कि हमारे लिये उसने कुछ न देकर कुछ लिया हो। यह बात इस समय और यहा पर कहने की नहीं है कि कौन नहीं जानता है कि गो माता के शरीर का एक एक अग का हिस्सा हमार जीवन में काम आ रहा है आप स्वय ही विचार कीजिये कि जो मनुष्य इस उपयोगी व मूक पशुओं को मारकर उनका मास खात है वह हिंसक कैसे सुखी रह सकता है। ऐसी परिस्थिति को देखकर मेरी कलम ने मुझे यह पद्य लिखने को कहा —

गो सेवा जब से त्यागी हमने
देश हमारा हुआ वीरान
गो सेवा को छोड़कर हमने
खुद ही घटाई अपनी शान॥

इस गो रक्षा के लिये भारतीय ऋषि मुनियों ने तो अपना बल दिया ही है। परन्तु बड़े हर्ष की बात है कि अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा कृषि विशेषज्ञ श्री राल्फ पेहनने अपनी सर्वोत्तम कलम से लिखा है कि —

Where the cow is kept and cared for civiliza fion advances lands grow rlicher, homes grow better debts grow fewer the Cow is the one of the greateot blessings to the human race

अर्थात् जिस देशमें गो सेवा, गोपालन तथा गो रक्षा होती है उसी देश में मानव धर्म तथा सस्कृति एव सभ्यता का विकास होता है और उसी देश की भूमि हरी भरी रहती है। गो माता की सेवा से ही देश समृद्धिशाली बन सकता है। गोपालक देश में कभी महगी नहीं आ सकती और गो रक्षक देश कभी ऋणी नहीं हो सकता। गाय को जगत माता कहना अतिशयोक्ति नहीं है।

आज कल के धार्मिक लोग कई मोटरें तथा कारें व अन्य आराम दायक अमूल्य वस्तुयें खरीद सकते हैं परन्तु गो पालने में अपने को असमर्थ बताते हैं और जहा लाखों रुपये वे अपनी अय्याशी पर खर्च करते हैं वहा अपने लाभ का शतांश भी गोरक्षार्थ नहीं लगाते। यदि श्री सम्पन्न व्यक्ति गोपालन पर ध्यान देवे तो गो से वाहन के लिए वृषभ कृषि के तथा गो मय एव गोबर का खाद प्राप्त होगा ही और उसके मरणोपरात उसकी त्वचा हड्डिया प्राप्त होंगी। जबकि उन कृषि के जोतने वाली मशीनों को बिगड़ने व खराब होने के उपरान्त कुछ भी प्राप्त नहीं होता

मैं फिर भी यही कहूगा कि गो वंश के पोषित हुए बिना देश में यज्ञ-यागादि का प्रचलन भी नहीं रह सकेगा। जब तक मानव हृदय मे गोसेवा की भावना जाग्रत नहीं हो सकती वह किसी भी काम मे सुपात्र नहीं हो सकता है। जिस गोमाता की पूजा वर्षों से होती आ रही है उसकी पूजा तभी पूर्ण समझी जायगी जब उसकी हम पूर्ण रूप से रक्षा कर सकें।

अजमेर के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री रामस्वरूप पाराशर जामनगर के कान जी लाल जी पाढलिया के नारों का उत्तर किस तन्मयता से दे रहे हैं पीछे डा० ब्रह्मानन्द जी पाने दिखाई दे रहे हैं।

हिंसा की पराकाष्ठा गो हिंसा में ही है। प्राचीन विधान है कि शत्रु भी यदि अपने को गाय कहदे तथा मुख मे तृण रख कर शरण आये तो वह अवध्य माना जाता है परन्तु कितना खेद का विषय है कि आज हम भारत वासी वास्तविक गाय पर भी दया नहीं करते।

राष्ट्र पूज्य श्री गाधी जी ने कहा था कि हिन्दू धर्म का बाह्य रूप गोरक्षा ही है गोरक्षा के लिये अपने प्राण भी निछावर कर देना परम धर्म पालन है।

मैं यह नोट करना चाहता हू कि जो लोग स्वय परीक्षा करना चाहें व अग्नि मे घृत तथा मास को जलाकर देखे कि अग्नि किस पदार्थ से अधिक बढ़ती है। क्योंकि जिस पदार्थ से अग्नि प्रज्वलित होगी वही पदार्थ हमारी जठराग्नि को भी प्रदीप्त कर स्वास्थ्य वर्धक होगा।

अन्त में यही आर भाइयो मे मेरी प्रार्थना है कि अगर अपने जीवन को सफल बनाना चाहते हो तो उठ खड़े हो जाओ और जिस तरह बन सके तन मन धन से इस गो माता की रक्षा करो और देश का फिर से भावी व उज्ज्वल बनाओ।

... ...क दयानन्द

श्री काशिव जी, उज्जैन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी रची पुस्तक "गोकरुणा निधि" में विस्तार से समझाया है कि गो पालन से कितने कितने लाभ हैं। जहां भारत "धर्म प्रधान" देश सृष्टि के आरम्भ से ही रहा चला आ रहा है। वहां "कृषि प्रधान देश" भी प्रसिद्ध रहा है। यह प्रसिद्धि लगभग पौने दो अरब वर्षों से चलती आती है। भारत की कृषि प्रधानता गौ माता के बल पर रही है। यह दशा भारत में अंग्रेजी राज के अन्त अर्थात् सन् १९४७ ई० तक रही। मांसाहारी मुसलिम राज्य में भी भारत में ऐसी बुरी दशा नहीं हो पाई जैसी कि आज है जब कि भारत स्वतन्त्र है। अर्थात् अपना राज्य है। यह ठीक है कि पिछले चारसौ वर्षों से गो वंश का ह्रास होते होते अब उसका परिणाम दृष्टिगोचर हो रहा है। गो वध होने का दोष मुसलमानी राज्य पर लगाया जाता है। पर मुसलिम साहित्य से हम यहां कुछ उदाहरण देते हैं कि इतनी गौ हत्या नहीं होती थी कि जितनी अंग्रेजी राज्य में बढ़ी। कारण कि गोवध व्यापारिक लाभ को ध्यान में रख कर व्यापार के हेतु से किया जाता रहा। जीवित गाय का मूल्य इतना नहीं था जितना कि उसके चमड़े सींग, हड्डी, खुर, आंत और उसके गर्भस्थ बच्चे के मूल्य से विदेशों से प्राप्त होता था। (देखें पुस्तक "चमड़े के लिये गोवध") म०दयानन्द कृत पुस्तक "गोकरुणा निधि" में दिये आंकड़े तो आश्चर्य चकित कर देते हैं। उसमें लिखा है। "एक गाय के पालन से ४, १०, ४४० मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। (देखें पुस्तक "गोकरुणा निधि") अब हम आपके समक्ष कुछ उद्धरण मुस्लिम साहित्य से रखते हैं। "तर्क कुरबानी गाय" लेखक ख्वाजा हसन निजामी देहली। गोवध इस्लामके स्वभाव में नहीं है। देखो किताब हुमायूनी जि. [illegible] कितावुलमुत पृ. ३०। जो कि [illegible] न [illegible] इस्लाम में कोई खराबी नहीं आती। (देखो फतवा हुमायूनी जिल्द १. कितावुलमुत पृ. ३०० व ३०८) सर आगा खां ने कहा "गाय की कुरबानी मुसलमानों के लिये धार्मिक दृष्टिकोण से आवश्यक नहीं।" कुरान शरीफ के भाष्य तफसीर दुरे मंसूर में लिखा है कि "गाय की बजुर्गी व सम्मान किया करो, इसलिए कि वह सब पशुओं में सरदार (सैदुल बहायम) है। इस के अतिरिक्त हजरत मुहम्मद साहिब के दामाद तथा चचेरे भाई हजरत अली ने भी "नहजुल बलागत" नामक पुस्तक में लिखा है कि:—

"पेटों को हैवानात (जानवरों) के कबरिस्तान मत बनाओ।"

जलालुद्दीन अल्लामा ने अपनी पुस्तक "अलरहमत" में लिखा है:—

"गाय के गोश्त में बीमारी और दूध में दुआ और घी में शफा (स्वास्थ) है। हजरत आयशा फरमाती हैं "फरमाया रसूल अल्लाह ने 'गाय का दूध शिफा [illegible] निताँत मर्ज (रोग) है।' आदि, आदि। महात्मा गांधी, पं० मदन मोहन मालवीय, श्री बाल गंगाधर तिलक आदि ने स्वराज्य प्राप्ति आन्दोलन के समय कहा था कि स्वराज्य प्राप्त होते ही "गोवध" बन्द कर दिया जायगा। अतएव सब हिन्दू (आर्यों) से विनय है कि "गोकरुणा निधि" और गोवध के विरोध के सम्बन्ध में जो पुस्तकें अथवा ट्रैक्ट आदि छपे हैं उन्हें अवश्य पढ़ें। महर्षि दयानन्द ने भी हजारों हस्ताक्षर कराकर गोवध बन्द कराने के हेतु बृटिश शासकों के पास भेजे थे। पर विदेशी शासन में अपने उनके स्वार्थ के आगे सुनता कौन? पर आज कल अपने शासन को बिना अनशन, प्रदर्शन और जन हस्ताक्षर करा कर भेजने के आन्दोलन के पता ही नहीं चल रहा, कि जनता गोवध बन्द कराना चाहती है। धन्य हो गोपाल दयानन्द तुमने बहुत पहिले ही मार्ग दर्शा दिया था। इत्योऽम्।

भारतवर्ष की आर्य संस्कृति

श्री डा० अर्जुननन्दन वर्मा, जौनपुर

विश्व का सबसे अधिक और प्राचीन काल से सभ्यता का शिरोमणि भारतवर्ष आज विदेश के अन्य देशों के सभ्यता की नकल कर रहा है कितनी लज्जास्पद वार्ता यह है।

एक समय वह था जब आर्यावर्त विश्व का सबसे बड़ा शिक्षा और शिक्षा का केन्द्र था परन्तु स्थिति आज कुछ दूसरीहै ऐसा क्योंहै इसका कारण क्या है।

प्रमुख कारण यह है कि भारतवर्ष धर्म प्रधान देश था यहा धर्म की प्रधानता थी, वहाँ वेद का अध्ययन अध्यापन यज्ञ हवन पूजा पाठ उपासना आदि की प्रधानता थी। परन्तु अब वर्तमान समय मे धर्म तो एक खेलवाड मात्र है, धर्म क नाम लेना एक पाप समझा जाता है। प्रत्येक मनुष्य के लिए जिस प्रकार भोजन वस्त्र एक आवश्यक चीज है, ठीक उसी तरह धर्म भी अपना एक श्रेष्ठ स्थान मानव जीवन मे रखता है। इसके प्रमाण मे कहा गया है कि—

आहार निद्रा भय मैथुन च
सामान्यमेतन् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो
धर्मेण हीनाः पशुभि समाना।

उपरोक्त श्लोक मे हम देखते हैं जिसमे कहा गया कि बिना धम के मनुष्य पशु के समान होता है यही एक लक्षण ऐसा है जिसस मनुष्य और मनुष्यता की पहचान होती है।

करीब २०० वर्षों के शासन काल में अग्रेजो ने हमें करीब करीब आधे से अधिक अपने धर्म से च्युत कर दिया जो कुछ धर्म अभी जिन्दा है उसे ये मुसलमान मुल्ला और ईसाई पादरी धर्म से च्युत करने मे व्यस्त है। हमारी वतमान सरकार को ध्यान देकर इन ईसाईयो के बढते हुये षडयन्त्रो को रोकने का प्रयास कर इन्हे देश स निकलवा देना चाहिये।

इतिहास साक्षी है कि ऋषियो और मुनियों के काल मे यज्ञ और हवन आदि से इच्छित वर्षा करवायी जाती थी इस समय प्रति वर्ष देश का कोई न कोई ऐसा भाग अवश्य होता है जहा अनावृष्टि से फसल सूख जाती है और मनुष्य भूखों मरने लगते हैं ऐसा क्यो क्या हम आज उसी तरह यज्ञ और हवन करके इच्छित वर्षा नही कर सकते। कर सकते हैं परन्तु क्यो नही करते क्योकि धम की तो कोई पूछ नही है। मैंने अपने कानो सुना है एक बार मेरे मकान पर ही कुछ लोग आये और वे लोग, वही लोग थे जो कि पैदा हुये हैं भारतवर्ष मे परन्तु बात करते इगलैन्ड की असल मे उनकी सस्कृति है आर्य सस्कृति परन्तु ऐसा कहने में शायद उन्हे लज्जा आती है, गौराग सस्कृति को वे अपने को समझते हैं और इसी मे वे अपने को श्रेष्ठ समझते हैं।

काफी बूट, सूट टाई इत्यादि लगाकर वे लोग आयें और पता नही क्यो इन वस्त्रों से मुझे घृणा हो चुकी है मैं प्रात काल का हवन करने जा रहा था एक सज्जन पूछ ही बैठे कि आप क्या कर रहे हैं दूसरे सज्जन चट जवाब देते है पडित बने है देहातियों की यही पहचान है। एक आर्य पुत्र होने के नाते मैं चट बोल पडा कि अरे गौराग महाप्रभुओ के चाटुकारों इस बूट और सूट तथा केवल दो अक्षर अग्रेजी पर तुमने अपनी सस्कृति और धर्म को बेच डाला है। यह एक दिन तुम्हे मालूम पडेगा इन्ही सब कायो के प्रभावो की परिस्थिति मे तो रैदाइश हुई है तो तुम नास्तिक क्यो न हो और इसे ढोग क्यो न समझो फिर मैंने ललकारा कि यदि तुम्हारी नास्तिकता मे कुछ दम हो तो तुम लोग मुझसे शास्त्रार्थ करो, कुछ देर तक बिना किसी तथ्य की बाते की। मैं बराबर सप्रमाण उन बातो का खडन करता रहा आखिरकार वे लोग हार मान कर मुझसे माफी मागने लगे, वे मुझस उम्र मे अवश्य बडे थे परन्तु माफी मागने पर मैंने प्रतिज्ञा करवाई कि अब कभी ऐसा किसी को न कहूगा और घर जाकर अब बराबर मैं हवन करूगा और अब वे लोग हवन इत्यादि करते हैं और सन्ध्या इत्यादि करतेहै तो भाई यह हाल है उस धर्म प्रधान देश भारतवर्ष के नागरिको का। दिन प्रतिदिन हालत और बिगडती जा रही है और पुरुष वर्ग से आगे नारी वर्ग बढता जा रहा है।

तो हे हिन्दुत्व और आर्य सस्कृति की रक्षा करने वाले आर्यसमाज के जागरूक प्रहरी अब आओ और इन नास्तिको को मिटाकर ईसाइयत का डका बजाने वाले पादरियो को देश के बाहर निकाल दिया जाय १८ फरवरी को महर्षि बोधोत्सव था और २८ फरवरी को प० लेखराम आर्य मुसाफिर बलिदान दिवस, इस पुनीत अवसर पर आओ आर्यसमाज के सेनानियों हम प्रतिज्ञा करें कि ईसाईयत को बढावा देने वाले पादरियों को हम पवित्र भूमि आर्यावर्त से शीघ्रातिशीघ्र निकाल देंगे। और इसके साथ ही "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नारा करके महर्षि के स्वप्न को पूरा करेंगे।

मेरा यह दावा है कि भारतवर्ष मे से यदि तमाम धर्म को भ्रष्ट करने वाले सस्थाओ को तोडकर यदि धर्म की ही प्रधानता मानकर चला जाय, सबका धर्म वैदिक धर्म, सबका धर्म ग्रन्थ वेद हो सभी लोग वेद नियम को माने यज्ञ, हवन सन्ध्या आदि फिर से आरम्भ हो लोग छुआछूत से रहे सब धार्मिक हो, क्षत्रिय और राजा अपना कर्त्तव्य पूरा करे, ब्राह्मण अपना कर्त्तव्य वैश्य अपना कर्त्तव्य, तथा शूद्र सभी अपने कर्त्तव्यों को पूरा करे मेरा दावा है कि वह दिन दूर नही जब फिर आर्यावर्त मे घी दूध की नदी बहने लगे और यही भारत भूमि जो कि हर बात मे दूसरे राष्ट्रो की मुह ताकती है वही फिर सोने की चिडिया होकर फिर स्वर्ग के समान हो जावे।

तो हम लोग आज फिर से यह प्रतिज्ञा करते है।

कांग्रेस सरकार की गो-हिंसक नीति को बदलने के लिए सामूहिक सत्याग्रह में शामिल होने की तय्यारी कीजिये। धन और जन भेजिए।

प्रकाशवीर शास्त्री
उपप्रधान

रामगोपाल शालवाले
मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

वैदिक धर्म प्रसार

और सूचनायें

गोवध निरोध विधेयक पारित न करने पर आन्ध्र विधान सभा से दो सदस्यों का त्याग पत्र

हैदराबाद १८ नवम्बर ६६ ई०

सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति आन्ध्र प्रदेश के अध्यक्ष तथा विधान सभा के निर्दली सदस्य पं० वन्देमातरम रामचन्द्र राव जी तथा अन्य एक गोभक्त विधान सभा सदस्य श्री रामचन्द्र राव जी देशपाण्डे आज विधान सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया है।

दोनों सदस्यों का त्यागपत्र देने का कारण यह बताया जाता है कि दोनों सदस्यों तथा अन्य विरोधी पक्ष के सदस्यों के हस्ताक्षर से विधान सभा में आज एक स्थगन प्रस्ताव गोवध निरोध विधेयक पारित करने सम्बन्धी प्रस्तुत किया गया था। प्रस्ताव पर आज सदन में चर्चा भी की गई जिसमें सर्वदलीय गोरक्षा अभियान समिति द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन पर प्रकाश डाला गया। परन्तु श्री के० ब्रह्मानन्द रेड्डी जी मुख्यमन्त्री आन्ध्र प्रदेश से इस प्रश्न पर सदन में सन्तोषजनक उत्तर न प्राप्त होने से दोनों सदस्यों ने सदस्यता से त्यागपत्र देने की घोषणा कर दी। बाद में उन्होंने विधान सभा अध्यक्ष को अपने त्यागपत्र प्रस्तुत कर दिये हैं।

अनुकरणीय दान

श्री पं० देवव्रत धर्मेन्दु, आर्योपदेशक ने आर्य युवक परिषद दिल्ली को १०००) नकद तथा १००० गोकरुणा निधि दान में दी हैं, श्री पण्डित जी ने प्रकाशन निधि के लिये सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा को २०००) नकद तथा आर्य कुमार भवन निर्माणार्थ आर्य कुमार सभा नई दिल्ली को १०००) नकद इससे पहले दान दिये थे।

आर्य समाज दीवान हाल का दहेज के विरुद्ध आन्दोलन

दिल्ली २४ अक्तूबर, आर्य समाज दीवान हाल में साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् उपप्रधान डा० गिरधारीलाल जी ढल्ला ने आर्यसमाज की गति विधियों पर प्रकाश डाला और बताया कि किस प्रकार से अच्छे२ घरानों की लड़कियां अपने माता पिता की मर्जी के विरुद्ध नौजवानों के साथ भाग जाती हैं। इस सम्बन्ध में आर्य समाज ने काफी समय के बाद ऐसी ४ कन्याओं को बचाया, उनके माता पिता अपनी कन्याओं को पाकर आर्यसमाज के बहुत आभारी हुए। आर्यसमाज चरित्र निर्माण की ओर अधिक ध्यान देगा। आपने आर्य बन्धुओं से अपील की कि स्त्री रक्षा, गोरक्षा और जानोमाल की जिम्मेदारी आर्यसमाज की है। दहेज के विरुद्ध भी आर्यसमाज को आन्दोलन करना होगा। इसके पश्चात् एक ईसाई कन्या की शुद्धि।

मन्त्री, आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली

आ०स० अमरोहा द्वारा गोवध सम्बन्धी प्रस्ताव

आर्य समाज, अमरोहा के साप्ताहिक सत्संग दिनांक १३ नवम्बर ६६ रविवार की यह सभा ७ नवम्बर सोमवार को देहली में गोरक्षा हेतु शान्त प्रदर्शन पर पुलिस द्वारा किये गये अमानुषिक अत्याचार की घोर निन्दा करती है तथा सरकार को यह बताना अपना कर्तव्य समझती है कि इस प्रकार दमन करने से यह आन्दोलन शान्त न होकर और उग्र होगा। सरकारको चाहिये कि वह तुरन्त गोवध बन्दी कानून पासकर दे।

इस अवसर पर हुए शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। प्रभु उनके शोकातुर परिवार को धैर्य एवं दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करे तथा बन्दी बनाये गये सत्याग्रहियों को रिहा करे। —मन्त्री, आर्यसमाज अमरोहा

दीवाली अभिनन्दन

मोरीशस (अफ्रीका) के आर्य सज्जन श्री मोहनलाल जी मोहित ने देश विदेश के सभी आर्य बन्धुओं को निम्न शब्दों में अभिनन्दन भेजा है।

महर्षि दयानन्द की तपस्या से जाग्रत राष्ट्र के नेताओं की छत्र छाया में पलने वाले उच्च जीवन के आकांक्षी सज्जनों को श्रद्धा और प्रेम की भेंट—

'सत्यं वद—धर्म चर'

मोहनलाल मोहित, लावेनीर, वैंपीयेर, मोरीशस

चुनाव

—आर्यसमाज बजलम (कर्नाटक) के चुनाव में श्री राजबामहाद्दु सूर्यवंशी प्रधान, श्री कमलाकर नारायणदास कुलकर्णी उपप्रधान, श्री सुरेश आप्पाराव जाधव मन्त्री, श्री अशोक भाऊराव कुलकर्णी उपमन्त्री, श्री बाबू राजबा सूर्यवंशी कोषाध्यक्ष, श्रीमन्त संभा जी जाधव ग्रन्थपाल चुने गये।

—जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा मुजफ्फरनगर के चुनाव में श्री बनारसीदास धीमान प्रधान, श्री रामचन्द्र सहाय मन्त्री, श्रीमती राजरानी देवी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुई।

—आर्यसमाज देवरिया ने गोरक्षा आन्दोलन के लिये एक समिति का निर्माण किया है जिसके प्रधान श्री चन्द्रप्रकाश जी वकील, श्री फूलचन्द जी गुप्त संयोजक तथा मन्त्री श्री नौनाथ जी शर्मा उपप्रधान तथा श्री रामजियावन जी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

— वेस्ट बोकारो कालियरी जि० हजारी बाग में आर्य समाज की स्थापना हुई। श्री सरजूसिंह प्रधान, श्री रामायन पाण्डेय मन्त्री एवं श्री राजेन्द्रप्रसाद गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज कसबा (पूर्णिया) के निर्वाचन में श्री मुन्शीलाल आर्य प्रधान, श्री कौलतप्रसाद आर्य उपप्रधान, श्री नत्थूलाल जी आर्य मन्त्री, श्री शंकरकाल आर्य उपमन्त्री एव श्री नारायण प्रसाद आर्य अर्थ मन्त्री चुने गये।

आवश्यक सूचना

गोरक्षा आन्दोलन में व्यस्तता के कारण

आर्य डायरी

के प्रकाशन का प्रबन्ध नहीं हो सकेगा।

—प्रबन्धक

(पृष्ठ ९ का शेष)

नरमी से काम ले रही थी और बहुत सम्भल-सम्भल कर चल रही थी। भारत की इस ठण्डी नीति की बहुत कटु आलोचना भी उन दिनों भारत में तथा हैदराबाद में सर्वत्र ही की जाती थी। और यह पूछा जा रहा था कि भारत की केन्द्रीय सरकार निजाम के अत्याचारों की तानाशाही कबतक चुप-चाप बैठी हुई देखती रहेगी ?

हैदराबाद के सुप्रसिद्ध नेता श्री भाई वंशीलाल जी वकील आये दिन बिगड़ती जा रही परिस्थितियों से प्रभावित होकर नई दिल्ली गये। वहां उन्होंने भारत के लोहपुरुष श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल जी, गृह मन्त्री भारत सरकार से भेंट की। उनको सब हाल बताये और इस बात पर बल दिया कि हैदराबाद के हिन्दुओं पर जो-जो चंगेजी अत्याचार इस समय हो रहे हैं, वे सहन शक्ति की सभी सीमाओं को पार कर चुके हैं। आत्म रक्षा के लिये अब हिन्दुओं को अवश्य ही कोई गम्भीर पग उठाना होगा। यदि भारत सरकार का हैदराबाद के विषय में किसी प्रकार का कोई भी पग उठाने का विचार न हो तो हमें साफ बता दिया जावे। और कम से कम इतना तो किया जाये कि हमें आवश्यक हथियार दे दिये जायें। जिससे कि हम लोग अपनी ही शक्ति से निजामशाही अत्याचारों का अन्त कर दें।

सरदार पटेल ने श्री भाई वंशीलाल जी की बातों को ध्यान से सुना फिर उत्तर में कहा — हैदराबाद की जनता अपने संघर्ष को जारी रखे और निजाम के अत्याचारों से बचने के लिये अपने तौर पर जो भी उपाय कर सके, करें। भारत सरकार हैदराबाद की जनता में हथियार तो न बांटेगी, परन्तु समय आने पर वह अपनी ओर से कुछ प्रभावशाली कार्यवाही अवश्य ही करेगी। (क्रमशः)

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की पुस्तकों का सूचीपत्र

१—८—६६ से ३१—१—६७ तक
निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

- ऋग्वेद संहिता १०)
- अथर्ववेद संहिता ८)
- यजुर्वेद संहिता ४)
- सामवेद संहिता १)
- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ३)
- संस्कारविधि १)२५
- पंच महायज्ञ विधि)२५
- कर्त्तव्य दर्पण)५०
- आर्यसमाज के प्रवेशपत्र १) सै०

निम्न प्रकाशन पर २० प्रतिशत कमीशन

- सत्यार्थप्रकाश २)५०
- कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश ३)२५
- उर्दू सत्यार्थ प्रकाश १)५०
- कुलियात आर्य मुसाफिर ६)
- आर्यसमाज का इतिहास द्वितीय भाग ५)
- जीवन संघर्ष (महाशय कृष्ण की जीवनी)
- राजधर्म)५०
- पुरुष सूक्त)४०

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

- वैदिक ज्योति ७)
- शिक्षण-तरंगिणी ५)
- दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
- वैदिक युग और आदि मानव ४)
- वैदिक इतिहास विमर्श ७)२५
- वैदिक विज्ञान विमर्श)७५

श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार कृत

- वैदिक साहित्य में नारी ७)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

- वेद की इयत्ता १)५०

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

- ईशोपनिषद्)३७
- केनोपनिषद्)५०
- प्रश्नोपनिषद्)३७
- मुण्डकोपनिषद्)४५
- माण्डूक्योपनिषद्)२५
- ऐतरेयोपनिषद्)२५
- तैत्तिरीयोपनिषद् १)
- बृहदारण्यकोपनिषद् ३)
- योग रहस्य १)२५
- मृत्यु और परलोक १)

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

- छान्दोग्योपनिषद् कथामाला ३)
- वैदिक वन्दन ५)
- वेदान्त दर्शन (हिन्दी) ३)५०
- वेदान्त दर्शन (संस्कृत) १)
- वैशेषिक दर्शन (सजिल्द) २)५०
- ,, (अजिल्द) २)
- निज जीवन वृत्त वनिका)७५
- बाल जीवन सोपान १)२५
- दयानन्द दिग्दर्शन)७५
- वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां)७५
- वैदिक योगामृत)६२
- दार्शनिक अध्यात्म तत्त्व १)५०

- वैदिक ईश वन्दना)४०
- बाल संस्कृत सुधा)५०
- वैदिक राष्ट्रीयता)२५
- भ्रम निवारण)३०

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

- आर्योदय काव्यम पूर्वार्द्ध १)५०
- ,, ,, उत्तरार्द्ध १)५०
- वैदिक संस्कृति १)७५
- सायण और दयानन्द १)
- मुक्ति से पुनरावृत्ति)३७
- सनातन धर्म और आर्य समाज)३७
- आर्य समाज की नीति)२५
- मुसाहिबे इस्लाम उर्दू ५)

श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

- स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार १)२५
- हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०
- भक्ति कुसुमाञ्जली)७५

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

- वेद सन्देश)७५
- वैदिक सूक्ति सुधा)३०
- ऋषि दयानन्द वचनामृत)२०

श्री० बाबू पूर्णचन्द जी एडवोकेट कृत

- चरित्र निर्माण १)२५
- वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)७५
- दौलत की मार)२५
- धर्म और धन)२५
- अनुशासन का विधान)७५

श्री पं० मदनमोहन जी कृत

- जन कल्याण का मूल मन्त्र)५०
- संस्कार महत्व)७५
- वेदों की अन्त साक्षी का महत्व)६२
- आर्य स्तोत्र)५०
- आर्य घोष)६०

श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक कृत

- आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म)६२
- सन्तति निग्रह १)७५
- नया संसार)२०
- आदर्श गुरु शिष्य)२५

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी कृत

- आर्य समाज और साम्प्रदायिकता)३०
- कांग्रेस का सिरदर्द)५०
- भारत में भयंकर ईसाई षडयन्त्र)७५
- आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना)२०
- आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण)०६

श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली कृत

- गीता विमर्श)७५
- ब्राह्मण समाज के तीन महापातक)५०
- सनातन धर्म १)७५

श्री ला० ज्ञानचन्द जी कृत

- धर्म और उसकी आवश्यकता १)
- वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १)५०
- इजहारे हकीकत उर्दू)८८

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी कृत

- इञ्जील में परस्पर विरोधी वचन)५०

श्री पं० देवप्रकाश जी कृत

- इञ्जील में परस्पर विरोधी कल्पनाएं)५०

श्री प० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री कृत

- भूमिका प्रकाश (संस्कृत) १)५०

विविध

- वेद और विज्ञान)७०
- उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द)६०
- भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप २)
- वैदिक ज्ञान प्रकाश)३७
- हमारे घर १)
- मेरी इराक यात्रा १)
- मेरी अबीसीनिया यात्रा १)
- डाक्टर बर्नियर की भारत यात्रा ४)५०
- भोज प्रबन्ध २)७५
- स्वर्ग में हड़ताल)३७
- नरक की रिपोर्ट)२५

निम्न प्रकाशन ५० प्रतिशत पर दिये जायेंगे

- आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग ६)
- बृहद् विमान शास्त्र १०)
- आर्य समाज के महाधन २)५०
- दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)५०
- स्वराज्य दर्शन १)
- आर्य समाज का परिचय १)
- भजन भास्कर १)७५
- यमपितृ परिचय २)
- एशिया का वेनिस)७५
- आर्य डायरेक्टरी पुरानी १)२५
- साम संगीत)५०
- दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश)३१
- आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
- ,, ,, अध्यक्षीय भाषण १)
- सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण २)
- सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
- सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५

आचार्य विश्वश्रवाः व्यास कृत

- पंचमहायज्ञ विधि भाष्यम
  - सन्ध्या पद्धति मीमांसा ५)
  - यज्ञ पद्धति मीमांसा ३)
- महर्षि की आर्षपाठविधि का वास्तविक स्वरूप)२५
- चान्द्रायण पद्धति, कर्मफल निर्णय)५०

प्रचार करने योग्य ट्रैक्ट

- दश नियम व्याख्या
- आर्य शब्द का महत्व
- तीर्थ और मोक्ष
- वैदिक राष्ट्रीयता
- वैदिक राष्ट्र धर्म
- अथर्ववेदीय अतिथि सत्कार
- ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा
- सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा में
- सत्यार्थ प्रकाश का आन्दोलन का इतिहास
- मुर्दों को क्यों जलाना चाहिये
- शंका समाधान
- भारत का एक ऋषि
- आर्य समाज

नोट —(१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूप में भेजें। (२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ साफ लिखें। (३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम में आना चाहिये। (४) जिन पुस्तकों का नेट मूल्य लिखा गया है उनपर कोई कमीशन न दिया जायगा।

—व्यवस्थापक—**सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१**

दिल्ली में आर्य सामाजिक पुस्तकों का विशाल भण्डार

पं० जयगोपाल कृत दो अमूल्य ग्रन्थ

आदर्श बाल्मीकि रामायण भाषा

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की शिक्षाप्रद सम्पूर्ण कथा को सरल व मधुर भाषा में प्रस्तुत किया है। मोटे अक्षर बड़े साइज में ६१२ पृष्ठों में छपा सुन्दर एवं सचित्र संस्करण मूल्य १२) बारह रुपये डाकव्यय माफ।

बड़ा महाभारत भाषा सम्पूर्ण अठारह पर्व

कौरव तथा पाण्डवों का सम्पूर्ण वृत्तान्त जिसमें महाभारत के युद्ध के साथ २ भीष्म पितामह के धर्मोपदेश, श्रीकृष्ण जी का गीता उपदेश तथा और भी अनेकों सुन्दर कथायें सम्मिलित हैं। सुन्दर रंगीन चित्रों सहित मोटे टाइप में प्रस्तुत किया है।

मूल्य १२) बारह रुपये डाकव्यय माफ

बृहद् दृष्टान्त सागर (सम्पूर्ण पांचों भाग)

(ले०-पं० हनूमान प्रसाद शर्मा)

इस ग्रन्थ में वैदिक, लौकिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, भक्ति ज्ञान, वैराग्य आदि सभी विषयों के अच्छे-अच्छे दृष्टान्तों का संकलन ८६८ पृष्ठों में सजिल्द मूल्य १०॥) रु० डाक व्यय २)

जाग ऐ मानव महात्मा आनन्द स्वामी

पूज्य आनन्द स्वामी जी की एक प्रेरणाप्रद कथा जो सोये हुए मानव जीवन को जगाने वाला है। मूल्य १) एक रुपया मात्र।

ऋषि मुनियों के पुण्य प्रताप का प्रसाद

स्वाध्याय योग्य दर्शन शास्त्र

प्राचीन काल के ऋषि मुनियों द्वारा लिखित छः दर्शन शास्त्र जिनको पढ़कर प्राचीन इतिहास, संस्कृति, नियम और विज्ञान से आप परिचित होंगे।

१. सांख्य दर्शन-महर्षि कपिल मुनि प्रणीत व श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज द्वारा भाष्य। प्राचीन ज्ञान का स्रोत।
मूल्य २) दो रुपया

२. न्यायदर्शन–महामुनि गौतम प्रणीत व स्वामी दर्शनानन्दजी द्वारा भाष्य। प्रमाण, तर्क, सिद्धान्त, निर्णय को सिखाने वाला।
मूल्य ३।) सवा तीन रुपया

३. वैशेषिक दर्शन–महर्षि कणाद मुनि प्रणीत व श्री स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा भाष्य, पदार्थ विज्ञान का मूल स्रोत।
मूल्य ३॥) साढ़े तीन रुपया

४ योग दर्शन–महर्षि पातञ्जलि प्रणीत व महर्षि व्यास मुनि भाष्य एवं मुक्ति का राजपथ। सजिल्द पुस्तक, मूल्य ६) छः रुपयामात्र।

५. वेदान्त दर्शन–श्रीमन्महर्षि वेद व्यास प्रणीत चेतन जगत के इस मूल स्रोत को स्वामी दर्शनानन्द जी ने अनुवाद किया है।
मूल्य ४॥) साढ़े चार रुपया

६. मीमांसा दर्शन–श्रीमन्महर्षि जैमिनी मुनि प्रणीत पं० प० आ.दे. मुनि कृत हिन्दी भाष्य। कर्म प्रधान इस शास्त्र का मूल्य ६)

नोट—छहों शास्त्रों को एक साथ मंगाने पर २५।) की बजाय २०) बीस रुपये मूल्य लगेगा। डाकव्यय ५) पांच रु० अलग।

उपनिषद् प्रकाश—स्वामी दर्शनानन्द जी। इसमें लौकिक व पारलौकिक उन्नति की महत्वपूर्ण शिक्षायें हैं। मूल्य ६) रुपया

वैदिक मनुस्मृति—सत्यकाम जी सिद्धान्त शास्त्री मनु जी लिखित धार्मिक ग्रन्थ जिसे नागरी पढ़ा लिखा साधारण व्यक्ति आसानी से समझ सकता है। मूल्य ४॥) साढ़े चार रु०

कौटिल्य अर्थशास्त्रम्—महानीतिज्ञ आचार्य चाणक्य द्वारा रचित जिसका अनुवाद पाण्डेय रामतेज शास्त्री जी ने किया है। राजनीतिक ग्रन्थ
मूल्य १२) बारह रु०

हितोपदेश भाषा—विद्वान प० विष्णु शर्मा ने राजकुमार को जो शिक्षा एवं नीति की आख्यायिकायें सुनाई थी उनका ही विद्वान प० 'अशांत' जी ने सरल भाषा में बनाया है। मूल्य ३)

प्राणायाम विधिः—महात्मा नारायण स्वामी द्वारा प्राणायाम की आवश्यकता, उपयोगिता मूल सिद्धान्त एव उसके भेद और फल, उनके करने की विधि पर प्रकाश डाला है। मू० ५० पैसे

पंचतंत्र भाषा—नीति शास्त्र का यह अमूल्य ग्रन्थ जिसकी नीति कथायें संसार भर में प्रसिद्ध है।
मूल्य ३॥) रुपया

विद्यार्थी शिष्टाचार—विद्यार्थियों की नैतिक प्रबलता के हेतु शिष्टाचार पर यह पुस्तक भावाओं में शिक्षा के अभाव की पूर्ति करेगी। मूल्य १॥)

सत्यार्थप्रकाश
(इतने मोटे अक्षरों में)

पृष्ठ संख्या ५८० बढ़िया कागज व छपाई, मजबूत जुजबन्दी की सिलाई, क्लाथ बाइण्डिंग-मूल्य १५) एक साथ पांच प्रति मंगाने पर ५०) रु० में दी जायेगी।

इज २०×२६/४

२०×३० /८ बड़े साइज का मूल्य १२)

२०×२६ /१६ छोटे साइज का मूल्य ३)

सुन्दर व सजिल्द
सामवेद गुटका

मूलमंत्र और आर्य भाषानुवाद सहित
श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

सामवेद का यह भाष्य ८ वर्ष पहले सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड ने प्रकाशित किया था जिसकी आर्य जगत् मे भारी प्रशंसा हुई और चार हजार ४००० पुस्तकें हाथों-हाथ बिक गई थीं। तब से इसकी भारी मांग थी। यह सामवेद हमने सार्वदेशिक प्रेस से छपवाया है। मूल्य ४)

उपदेश मंजरी—स्वामी दर्शनानन्द जी के उपदेश जो प्रत्येक आर्यसमाजी को अवश्य अध्ययन करने चाहिए। पूना नगर में दिए गये १५ व्याख्यान इसमें दिए हैं। मूल्य २॥) ढाई रुपया

संस्कार विधिः—चारों आश्रमों के १६ संस्कार जो हर घर में हर समय रहने चाहिए। मूल्य १॥)

आर्यसमाज के नेता—आर्य समाज के उन आठ महान् नेताओं की जीवनी जिन्होंने आर्यसमाज की नींव रखकर हिन्दू जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मूल्य ३) तीन रु०

महर्षि दयानन्द—स्वामी दयानन्द जी की जीवनी जिन्होने हिन्दूधर्म को अन्धकार में से निकाला जिनको शिवरात्रि में जो सच्चा ज्ञान हुआ और जनता को सच्चा ज्ञान कराया। मूल्य ३) रु०

हम स्वस्थ कैसे रहें—जिसमें मनुष्य दिनचर्या, व्यायाम सूर्य नमस्कार, आसन, शरीर व रोग, ब्रह्मचर्य सदाचार के नियम जो शरीर को स्वस्थ, बलवान व नीरोग बनाएगी। मूल्य ६) छः रु०

योग आसन रक्षा—स्वामी सेवानन्द जी द्वारा लिखित जिसकी सहायता से प्रातः आधा घन्टा नियमित रूप से विभिन्न प्रकार के आसनों द्वारा मनुष्य स्वस्थ व नीरोग रह सकता है। मूल्य २॥) ढाई रु०

कथा पच्चीसी—जिसमें मनुष्य जाति का उद्धार करने के हेतु ही अनेक शास्त्रों में से स्वामी दर्शनानन्द जी ने उत्तम शिक्षाप्रद पच्चीस कथाओं का संग्रह किया है। मूल्य १॥)

अन्य आर्य समाजी साहित्य

चाणक्य नीति	१)००	वैदिक सन्ध्या	४)२५ सैकड़ा
भर्तृहरि शतक	१)५०	हवन-मन्त्र बड़ा १५)	,,
कर्त्तव्य दर्पण	१)२५	वैदिक सत्संग गु० २०)	,,
विदुर नीति	१)५०	वैदिक हवन मन्त्र छोटा ६।)	,,

अन्य धार्मिक ग्रन्थ

हनूमान जीवन चरित्र	४)५०	हम स्वस्थ कैसे रहें	६)००
आर्य संगीत रामायण	५ ००	स्वास्थ्य शिक्षा	२)००
आर्य संगीत महाभारत	५)००	तीन प्रमुख योग	२ ५०

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, देहली-६

फोन २६१०३० २६४१६५

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

वाचं वदत भद्रया

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻ ✻

सम्पादकीय

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻ ✻

कहां गो-रक्षण, कहां गो-भक्षण

ज्यों-ज्यों सरकार का दमन चक्र तेज होता जाता है, त्यों-त्यों गो-रक्षा आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा है। जनता की ओर से न धन की कमी है और न जन की। प्रतिदिन सत्याग्रहियों के जत्थे गिरफ्तार हो रहे हैं। इस समय यह आन्दोलन केवल राजधानी तक ही सीमित नहीं है बल्कि अन्य राज्यों में भी लगातार उग्र होता जा रहा है। इस आन्दोलन के पीछे लोकमत की जो प्रबल भावना है, सरकार कब तक उसकी उपेक्षा करेगी, यह देखना है। असल में यह 'लोक' और 'तन्त्र' की लड़ाई है। एक तरफ तन्त्र है, और दूसरी ओर लोक। बिना लोक के तन्त्र कब तक कायम रह सकता है—इतिहास ही इस बात का निर्णय करेगा।

जगद् गुरु शंकराचार्य को मुक्त करके सरकार ने किंचित् बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है किन्तु जगद्गुरु का अनशन ज्यों का त्यों जारी है। जगद्गुरु को रिहा करने का परिणाम इतना अवश्य हुआ कि लोक नायक बापू अणे जैसे प्रतिष्ठित और वरिष्ठ राज नेता के अनशन की विभीषिका का सामना सरकार को नहीं करना पड़ा, किन्तु इससे मूल समस्या रत्ती भर हल नहीं हुई। वह समस्या तभी हल हो सकती है जब सरकार गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने के लिए केन्द्रिय कानून बनाए। मुनि सुशील कुमार ने भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त दो दिसम्बर से अनशन प्रारम्भ कर दिया है। रामचन्द्र शर्मा वीर को अनशन करते हुए साढ़े तीन माससे ऊपर का समय व्यतीत हो चुका है। उनका सांस कहां अटका है, भगवान् जाने, किसी भी दिन उनके इस आत्मिक-यज्ञ की पूर्णाहुति का समाचार मिल सकता है। इन अनशन कारियों में से किसी के भी अनशन करते-करते स्वर्गवास का समाचार जनता और सरकार दोनों के लिए अत्यन्त दुर्भाग्य का विषय होगा।

आर्यसमाज इस आन्दोलन में प्राण-पण से जुटा हुआ है और उसकी ओर से प्राय: प्रतिदिन ही सत्याग्रहियों का कोई न कोई जत्था अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा में लिए कृष्ण मन्दिर की शोभा बढ़ाने के लिए चला जाता है। आर्यसमाज के अनेक मान्य नेता पहले ही गिरफ्तार किये जा चुके हैं और अन्य अनेक नेता धैर्यपूर्वक अपनी गिरफ्तारी की प्रतीक्षा में है।

सरकार का आरोप यह है कि गो-रक्षा का आन्दोलन चुनावों से पहले एक राजनीतिक स्टन्ट मात्र है और यह धार्मिक आन्दोलन नहीं है। वर्तमान गृह-मन्त्री श्री चव्हाण ने लोकनायक अणे को एक पत्र लिख कर सरकार को कानून बनाने के लिए बाध्य करने के निमित्त किये गए अनशन के धार्मिक या आध्यात्मिक स्वरूप को मानने से इन्कार कर दिया है। यदि यही कसौटी रखी जाए तो महात्मा-गांधी के भी किसी की ऐतिहासिक उपवास को धार्मिक या आध्यात्मिक दृष्टि से उचित नहीं ठहराया जा सकता। जहां तक राजनीतिक स्टन्ट होने का आरोप है क्या हम सरकार से पूछ सकते हैं कि जगद्गुरु शंकराचार्य, मुनि सुशील कुमार और रामचन्द्र शर्मा वीर कौन से राजनीतिक दल के प्रतिनिधि बन कर चुनाव जीतने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाए हुए हैं? यह विशुद्ध धार्मिक आन्दोलन है और इसका सबसे बड़ा प्रमाण है धर्मसंघ और आर्यसमाज जैसी गैर राजनीतिक संस्थाओं का इसमें शामिल होना। यदि कुछ राजनीतिक लोग इस आन्दोलन से सहानुभूति रखने के कारण इसमें सहयोग देते हैं तो इससे यह आन्दोलन राजनीतिक नहीं बन जाता। क्या अनेक कांग्रेसी नेता भी प्रच्छन्न और प्रत्यक्ष रूप से इस आन्दोलन में सक्रिय सहयोग नहीं दे रहे हैं? यदि ऐसा है तो सात नवम्बर की हिंसात्मक घटनाओं का नाम ले लेकर अपनी गफलत को छिपाने के लिए घटना की न्यायिक जांच से इन्कार करना और जनसंघ या राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ या आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्ताओं को अन्धाधुन्ध गिरफ्तार करना कहां तक उचित है। यह लोकशाही के नाम पर तानाशाही का ताण्डव नृत्य नहीं है तो और क्या है?

इसी बीच एक और प्रवृत्ति सामने आई। राजसभा के साम्यवादी सदस्य श्री गोविन्दन नायर ने संसद के मंच से यह घोषणा की है कि प्राचीन ऋषि लोग गो मांस खाया करते थे और इसके लिए प्रमाण के रूप में उन्होंने एक पौराणिक कथा के अनुसार ऋषि विश्वामित्र द्वारा कुत्ते का मांस खाए जाने का उल्लेख किया है। प्रमाण देना है गो-मांस खाने का, दे रहे हैं कुत्ते का मांस खाने का। क्या साम्यवादियों की दृष्टि में कुत्ता और गो एक ही बात है? शायद प्राचीन ऋषि लोग जितनी श्रद्धा भक्तिसे गौओं का पालन किया करते थे उतनी ही श्रद्धा-भक्ति से आज के साम्यवादी और असाम्यवादी नेता कुत्तों का पालन करते हैं, क्या इसलिए इनके कुत्ते ही गायों के बराबर मान लिया जाएं?

श्री नायर वेदादि शास्त्रों के कितने ज्ञाता हैं यह हम नहीं जानते, परन्तु इतना अवश्य जानते हैं कि जितने वेदज्ञ लोग हैं वे सब नायर की बात का खण्डन करने को तत्पर हैं। हम जानते हैं कि श्री नायर ने ऊट-पटांग बात शायद अपने मन से न कह कर उन पाश्चात्य विद्वानों के लेखों के आधार पर कही हो जो हमारे शास्त्रों का जान-बूझ कर ऐसा भ्रष्ट अर्थ करते हैं। भारतीय इतिहास में भी वाममार्गियों ने शास्त्रों के ऐसे ही अर्थ किये थे। आधुनिक पाश्चात्य विद्वान् और उनके उच्छिष्ट-भोजी नायर जैसे लोग विशुद्ध वाममार्गियों की ही सन्तान हैं। कोई भारतवासी उनकी बात का समर्थन नहीं कर सकता। अगर श्री नायर में हिम्मत हो तो इस विषय पर [illegible] विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करके देख लें।

हम समझते हैं कि लोक सभा के मंच पर इस प्रकार के अनर्गल और प्रमाण विरुद्ध भाषणों की अनुमति ही सरासर अनुचित है। यदि गो-रक्षा आन्दोलन के प्रति लोगों की भावना को प्रभावित करने के लिये इस प्रकार के भाषण को अनुमति दी गई तो यह समझा जाएगा कि साम्यवादियों के जान-बूझ कर किए गए षड्यन्त्र में सरकार भी शामिल है।

इस देश में गोहत्या नहीं चल सकती। गाय बैल हमारे समाज में दाखिल हो गये हैं। सीधा प्रश्न यह है कि आपको देश का रक्षण करना है या नहीं, यदि करना है तो गोवध भारतीय संस्कृति के अनुकूल नहीं आता। इसका आपको ध्यान रखना चाहिये। गोहत्या जारी रही तो देश में बगावत होगी। गोहत्या बन्दी भारतीय जनता का मैनडेट या लोकाज्ञा है; और प्रधान मन्त्री महोदय को इसे मानना चाहिये।

—सन्त विनोबा भावे

आर्य जन ध्यान दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली में गोरक्षार्थ सत्याग्रह शिविर खोला हुआ है। जहां प्रतिदिन सैकड़ों सत्याग्रही वीरों के भोजन और निवास आदि का प्रबन्ध है। और यहीं से सत्याग्रही वीरों के जत्थे सत्याग्रह के लिए कूच करते हैं।

अतः गोरक्षा के इस महान् धर्म यज्ञ में आप अपना सात्विक धन मनिआर्डर या चैक द्वारा सीधे सभा के निम्न पते पर ही भेजें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

सामयिक-चर्चा

देश में प्रजातन्त्र का भविष्य

अभी हाल में साम्प्रदायिकता के विरोध में देहली में नेशनल कन्वेंशन हुआ था। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री चह्वाण ने इस कन्वेंशन में इस बात पर बल दिया कि भारत में प्रजातंत्र का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि प्रजा धर्म्म निरपेक्षता के आदर्श का दृढ़ता पूर्वक पालन करे। लोगों की मान्यता है कि साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता और दृढ़ता की जड़ें खोखली कर रही है और इस पर अंकुश न रखा गया तो यह राष्ट्रीय एकता और दृढ़ता को तहस-नहस करके रख देगी। इस कन्वेंशन में पारित एक प्रस्ताव के द्वारा मांग की गई है कि साम्प्रदायिक संगठनों पर प्रतिबन्ध लगाया जाय। यदि सरकार इस मांग में कोई कार्यवाही करना पसन्द करेगी तो उसका रूप क्या होगा। इस पर गृहमंत्री महोदय द्वारा कोई प्रकाश नहीं डाला गया है। हो सकता है कि सार्वजनिक सभाएं नीति सम्बन्धी निर्णयों के प्रकटीकरण के लिए उपयुक्त स्थान न हों। परन्तु एक महत्वपूर्ण कारण यह भी संभव हो सकता है कि प्रतिबन्ध की घोषणा करना उसको क्रियान्वित करने की अपेक्षा अधिक सुगम है।

दिल्ली के इस कन्वेंशन ने राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ का उल्लेख किया है जिसने गोवध बन्दी की मांग करने वाले एक दल के रूप में ७ नवम्बर के प्रदर्शन के आयोजन में भाग लिया था। सेमीनार के प्रस्ताव पर आलोचना करते हुए सहयोगी इण्डियन एक्सप्रेस अपने १-१२-६६ के अंक में लिखता है।

"यदि साम्प्रदायिक संगठन अपनी प्रगतियों को धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र तक सीमित रखें और अन्य धर्म्मावलम्बियों के विरुद्ध वैर विरोध फैलाने के लिए कुछ न करें तो उनकी विद्यमानता पर आपत्ति नहीं हो सकती। राजनैतिक क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाने पर ही वे खतरा बन जाती हैं। यदि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ साम्प्रदायिक संस्था है तो जन संघ क्या है। वे हाथ से हाथ मिलाकर काम करते हैं परन्तु जनसंघ का दावा है कि उसके दरवाजे समस्त जातियों के सदस्यों के लिए खुले हैं। हिन्दू महासभा भी यह दावा करती है कि वह राष्ट्रिय संस्था है साम्प्रदायिक संस्था नहीं हैं क्योंकि 'हिन्दू' शब्द में समस्त भारतीय समाविष्ट हैं।

यह सुझाव दिया गया है कि राष्ट्रियस्वयंसेवक संघ और जमायते इस्लामी राजनैतिक संस्थाएं उद्घोषित की जाकर उन पर रोक लगा देनी चाहिए। परन्तु ये दोनों ही एक मात्र साम्प्रदायिक संस्थान नहीं हैं और इन दोनों पर प्रतिबन्ध लगाए जाने से साम्प्रदायिकता का अन्त न होगा। आज कांग्रेस को साम्प्रदायिकता की बढ़ती हुई शक्तियों की अनुभूति हुई प्रतीत होती है परन्तु उसे अपने से यह प्रश्न करना चाहिए कि क्या उसने केरल में मुस्लिम लीग के साथ गठबंधन आदि के कृत्यों से साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहित नहीं किया है?

जब तक देश के हितों की दल के हितों पर बलि दी जाती रहेगी तब तक साम्प्रदायिकता का अन्त नहीं हो सकता। श्रीयुत जगजीवन राम जी ने इसी कन्वेंशन में यह कहा कि जन्म गत जात-पांत साम्प्रदायिकता के समान ही बहुत बड़ा अभिशाप है फिर भी कांग्रेसी इस अभिशाप को मिटाने में असमर्थ है। चुनाव के लिए उम्मीदवार प्रायः जात-पात के आधार पर चुने जाते और इसी आधार पर चुनाव लड़े भी जाते हैं। बिहार के प्रशासक दल में व्याप्त धड़े बंदी का आधार भी जात-पांत ही है और सरकारी नियुक्तियों में भी जात-पांत का अत्यधिक ध्यान रखा जाता है।

देश में प्रजातन्त्र के लिए खतरा साम्प्रदायिकता में निहित नहीं है खतरा राजनैतिक सत्ता और अधिकार प्राप्ति के लिए जोड़ तोड़ और संघर्ष में निहित है। सत्ता प्राप्ति के लिए साम्प्रदायिकता से गठबंधन अनिवार्य हो जाय तो उससे गठबंधन कर लिया जाता है। यदि जात-पात का सहारा लेने से काम बनता हो तो उसका सहारा ले लिया जाता है। जब तक पार्टी के हित पर देश हित की बलि चढ़ती रहेगी और शासन चरित्रवान और कुशल प्रशासकों द्वारा संचालित न होगा तब तक भारत में प्रजातंत्र को खतरा बना ही रहेगा।

कम दृष्टिवालों के लिए वरदान

सहयोगी इण्डियन एक्सप्रेस (२२५-११-६६) दिल्ली लिखता है: -

"मदुराई (मदुरा) के सरकारी हस्पताल में कम दृष्टि वाले व्यक्तियों की सहायता के लिए एक क्लीनिक (चिकित्सा स्थान) खोला गया है। इसमें उन लोगोंको सहायता दी जायगी जिनकी नेत्रों की ज्योति आपरेशन से ठीक नहीं की जा सकती। यह योजना अमेरिका के स्वास्थ्य विभाग और मदरास सरकार ने चालू की है और यह क्लीनिक भारत में अपने ढंग का पहला क्लीनिक है।

इस इलाज में इस बात पर जोर दिया जाता है कि रोगी क्या देख सकता है इस पर नहीं कि वह क्या नहीं देख सकता है। सुधार की सीमा ठीक दृष्टि वालों के लिए भले ही कोई महत्त्व न रखे खराब दृष्टि वालों के लिए तो यह खास महत्त्व रखेगी। अमेरिकन विशेषज्ञ डा० हेंजिंगर का मत है कि शायद ही कोई ऐसा जटिल केस होगा जो इस उपाय और विशेष रूप के शीशों (चश्मों) के द्वारा ठीक न हो सके।

यह क्लीनिक भारत के उन लाखों व्यक्तियों के हृदयों में आशा का संचार करेगा जिनकी आंखों की रोशनी गिर रही है और आपरेशन के द्वारा रोशनी के आने की आशा जाती रही है। प्रस्तावित इलाज सादा और सस्ता है। अमेरिका में यह सफल सिद्ध हो चुका है।

आर्य महानुभावों की सेवा में—

सार्वदेशिक के मूल्य में वृद्धि नहीं

किन्तु

ग्राहक संख्या में वृद्धि चाहते हैं

कृपया इस पर भी ध्यान दें

१—दीपावली को साप्ताहिक का पूरा वर्ष हो गया।

२—इस वर्ष में पांच विशेषांक आपकी भेंट किए हैं—बलिदान अंक, बोधांक, वेद कथा अंक, आर्य विजय अंक और दीपावली पर ऋषि अंक।

३—अगले वर्ष में कई महत्वपूर्ण अंक छपेंगे। जिनमें "आर्य समाज परिचयांक" और एकादश-उपनिषद् अंक तो बड़े ही उच्चकोटि के होंगे। जो ७) देकर ग्राहक बनेंगे वे इन्हें बिना मूल्य प्राप्त कर सकेंगे।

४—जो महानुभाव प्रति सप्ताह १५ पैसे देकर सार्वदेशिक लेते हैं उन्हें विशेषांकों का विशेष धन देना ही है। अतः ७) भेजकर ग्राहकों में नाम अंकित करा लें।

५—अब तक जिन महानुभावों ने सार्वदेशिक का, अथवा विशेषांकों का धन नहीं भेजा—वह तुरन्त भेजें।

श्रद्धा के मैं फूल चढ़ाता ओ, गो भक्त बलिदानी

श्री सुरेशचन्द्र वेदालकार एम० ए० एल० टी०,
डी० बी० कालेज, गोरखपुर

आर्य समाज की सार्वदेशिक सभा ने 'गोरक्षा' के लिए सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया है और आर्यसमाज की सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल जी शालवाले ने दिल्लीकी नृंशस पुलिस और अधिकारियों के सामने निषेधाज्ञा भग कर और उस सत्याग्रह में आहुति भी डालनी प्रारम्भ कर दी है। उनकी इस ललकार ने आर्यसमाज में एक नया जीवन, एक नई हुंकार और एक नई प्रेरणा भर दी है। यह सत्याग्रह यद्यपि आर्यसमाज के नेतृत्व में प्रारम्भ हुआ है परन्तु यह केवल आर्यसमाज का सत्याग्रह नहीं। इस सत्याग्रह का प्रारम्भ तो उसी समय से हो गया है जब ७ नवम्बर को दिल्ली के संसद भवन के सामने ७ लाख से भी अधिक शांत प्रदर्शन कारियों ने 'गोहत्या बन्द' की आवाज कांग्रेसी सरकार के बहरे कानों में डालने की चेष्टा की। किसी भी प्रजातन्त्रात्मक शासन पद्धति का आधार जनता की आवाज होती है और वह आवाज शायद विश्व के रिकार्ड को तोड़कर सबसे ऊंचे स्वर में लोकसभा और राज्यसभा की दीवारों, फौज, पुलिस और शासन के अधिकारियों को पार करके भारत के प्रधान मन्त्री के कानों में बहरे कानों में सुनाने के लिए लोग वहा एकत्र हुए। प्रधानमत्री ने उस आवाज को सुना वह आवाज एक माता की रक्षा के लिए एक माता से की गई पुकार थी। परन्तु, दिल्ली ही नहीं, भारत की शासिका माता ने बच्चे की उस पुकार का उत्तर गोली वर्षा से दिया। १५ मिनट तक २०६ राऊंड गोलियां चलाई गई और न जाने कितने स्त्री, पुरुष, बच्चे, बूढ़े, साधु और महात्मा इस गोली के शिकार हुए, सभा मंच पर बैठे हुए आध्यात्मिक नेताओं पर अश्रु गैस के गोले फेंके गए, लाठियां चलाई गई, दिल्ली की जेलें और कारागार हवालातें साधुओं से भर दी गई परन्तु उस शासिका के कानों ने यह आवाज नहीं सुनी, नहीं सुनी।

दूसरे ही दिन उसने कहा 'गोमाता की रक्षा की आवाज ही चुनाव से पूर्व ही क्यों उठती है ? क्या विचित्र उत्तर था। शायद इसे बुद्धि का दिवालियापन समझा जाय तो अनुचित न होगा। अरे भारत के प्रधान मन्त्री, लोकतन्त्र की प्रतिदिन दुहाई देने वाली कांग्रेस की नेतृ, क्या चुनाव से पहले रक्षा की आवाज उठाना अनुचित है ? तुझे साल में कभी भी यह आवाज सुनाई नहीं दे सकती। यही तो उपयुक्त समय है जब तेरी कुर्सियां हिलने लगती हैं। तेरे सामने न राष्ट्र है, न जनता है, न जनता की भलाई है। तुझे तो केवल अपनी पार्टी की कुर्सियों की चिन्ता है और इसी चिन्ता के कारण तू मुसलमानों के वोटों को प्राप्त करने के तथाकथित विचार से 'गोवध बन्द' होने का कानून नहीं बना रही है। परन्तु याद रख। आर्यसमाज अब इस मैदान में कूद पड़ा है। न केवल आर्यसमाज अपितु राष्ट्रभक्त और गोभक्त प्रत्येक हिन्दू, मुसलमान और अन्य धर्मावलम्बी भी इस आन्दोलन में कूद पड़े हैं। अब यह निश्चित है कि इस देश से गोवध बन्द होकर रहेगा। तुम्हारी ये गोलियां उस आन्दोलन को न रोक सकेंगी। तुम्हारे ये कारागार हमें अपने पेट मे रख तो सकेंगे परन्तु पचा न सकेंगे।

याद रखो ७ नवम्बर को तुम्हारी बर्बर पुलिस ने जिन घातक अस्त्रो का प्रयोग करके निहत्थी जनता को अपना शिकार बनाकर इस आन्दोलन को कुचलने का दावा किया है, वह इस आन्दोलन को कुचल न सकेंगी और यह सत्य याद रखो —

बलिदानों का इतिहास
नहीं काली स्याही लिख पाती है।
इसे लिखने के लिए तो।
खून की नदी बहाई जाती है।

आर्यसमाज ने सदा बलिदान किए हैं। आर्य समाज का इतिहास बलिदानों का इतिहास है। आर्यसमाज की परम्परायें बलिदान की परम्परायें हैं। इतिहास के पृष्ठों को खोलकर देखिए वह स्वर्णिम अक्षरों में अंकित बलिदानों के इतिहास के पृष्ठ हमें बता रहे हैं कि इसके संस्थापक ने मानव जाति के कल्याण के लिए, अन्धकार की रूढ़ियों, अन्ध-विश्वासों दासता और गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए विष खाकर अपना बलिदान किया, इसके शिष्य पं० लेखराम ने छुरा खाकर अपने प्राण दिए। स्वामी श्रद्धानन्द ने धर्मकी रक्षा के लिए घातक की तीन गोलियां अपनी छाती में खाईं। महाशय राजपाल छुरे के शिकार हुए, हैदराबाद के नवाब के खूनी शासन में अन्याय को मिटाने के लिए न जाने कितने वीरों ने हंसते-हंसते अपने प्राणों का बलिदान किया, लाला लाजपतराय ने सीने पर घातकों की लाठी के प्रहार सहन कर बलिदान की प्रेरणा दी, अभी कुछ वर्ष पहले स्वतन्त्र भारत में कैरों के शासन काल में पंजाब में हिन्दी रक्षा सत्याग्रह के समय आर्यसमाज ने जो त्याग और उत्साह प्रदर्शित किया उसके अनेक नवयुवकों ने प्राणों का बलिदान किया, शहीद सुमेरसिंह ने अपने खून से आर्यसमाज के इतिहास का एक नया पृष्ठ लिखा वह क्या तुम्हारी सरकार भूल गई है ? तो आज दिल्ली में गोमाता और शांत निहत्थी जनता पर तुमने जो गोलियां चलाई हैं, इससे यह आन्दोलन शांत होगा यह समझना भारी भूल है।

हमारा यह विश्वास है कि बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता। क्या बीज जो अपने को मिट्टी में मिला देता है उसका यह बलिदान पौधे में के रूप में प्रगट होकर एक के स्थान पर अनेक बीजों को प्रगट करते हुए तुमने नहीं देखा ? क्या दीपक की बत्ती जब तक अपने को जलाकर खाक नहीं कर देती क्या ससार को प्रकाश दे सकती है ? ठीक इसी प्रकार बलिदान तो सत्कर्मों को प्रेरणा देने वाले होते हैं दिल्ली के यह बलिदान व्यर्थ नहीं जायेंगे।

भारत के प्रधान मन्त्री ! आज तुम्हारी यह पोल भी खुल गई है कि तुम्हारे शासन यन्त्र ने रेडियो ने और दूसरे प्रचार साधनों ने दिल्ली की घटना की जो जिम्मेदारी प्रदर्शनकारियों पर डालने का प्रयत्न किया था उस समय के गृहमन्त्री श्री नन्दा ने स्पष्ट कह दिया है कि उस हिंसाकांड का उत्तरदायित्व तुम पर और तुम्हारी सरकार पर है। इस आन्दोलन के बढ़ते हुए प्रभाव और अपनी कुर्सियों के छीनने के भय से तुमने राष्ट्रविरोधी कम्युनिस्टों एवं उनके पक्षपातियों से हाथ मिलाकर स्वयं षड्यन्त्र किया है और इसका दोष दूसरों पर मढने का प्रयत्न भी किया है। पर, सत्य हमेशा विजयी होता है और अब जनता तुम्हारी इस चाल को भी समझ गई है। अब तो वह समय आ गया है कि आर्यसमाज के सत्याग्रह में भारत की गौभक्त जनता तन मन धन से अपने को समर्पित करने को तत्पर हो गई है।

दिल्ली के प्रदर्शनकारियों में जिनका बलिदान हुआ है यदि हम उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना चाहते हैं, यदि हम उनके उद्देश्य और कार्यों से पूर्णरूप से सहमत हैं तो हमें आर्यसमाज के इस सत्याग्रह में तन मन धन जो भी दे सकें उससे सहयोग करना आवश्यक है। आज यह बलिदान सरकार को एक और चुनौती भी दे रहा है और वह यह है कि यह सरकार मुसलमान और दूसरे सम्प्रदायों के हितों का अनुचित रूप में और संतुष्टिकरण की नीति को अपना कर पोषण करती है तथा वह हिन्दुओं और उनसे सम्बन्धित धर्मों को, उनकी परम्पराओं को उनके रीतिरिवाजों को नष्ट करने का भी षड्यन्त्र जो कर रही है उस की यह अनुचित नीति भी अब देश में नहीं चलने पाएगी। हिन्दू आज इस गोमाता के माध्यम से संगठित और एकत्र होकर अपने उद्देश्यों को अवश्य ही प्राप्त करने में सफल होंगे।

आर्यसमाजियों, सनातन धर्मियों, साधुओं, भारतवासियों आओ अपने सभी भेद भाव भुलाकर इस निरीह उपकारी जीव की रक्षा का व्रत लो। इसका वध बन्द कराने के लिए आर्य समाज के 'गोवध विरोधी सत्याग्रह में कूद पड़ो और वह समय हम शीघ्र ही देखेंगे जब हमारी विजय होगी।

भारत के प्रधान मन्त्री ने 'गोवध बन्द' के नारे के विषय में व्यंग्य कसते हुए कहा—यह आंदोलन गोमाता की रक्षा के लिए था तो क्यों इसमें इतनी हिंसा की गई ? परन्तु यह सत्य नहीं। इसकी हिंसा का उत्तरदायित्व देश द्रोही तत्वों, कम्युनिस्टों नन्दा विरोधी कांग्रेसियों पर है। पर, इस समय हमारा इन सबसे कोई मतलब नहीं। हम सच्चे हैं, हमारा लक्ष्य हमारे सामने हैं और उस लक्ष्य की

(शेष पृष्ठ १२ पर)

गो माता का प्रश्न

श्री हरिदास 'ज्वाल' एम० ए० डिप-इन-एड, जहानाबाद

गोरक्षा के पूर्णतः पालन और गोहत्या निरोध के प्रश्न पर अभी कितने ही लोगों को हिचक है। वे इस प्रश्न को साधारण प्रश्न समझते हैं। कुछ लोग इसको उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। भारतीय नागरिक की हैसियत से इस समस्या पर सभी धर्म वालों का ध्यान जाना चाहिए। यह केवल हिन्दुओं से सम्बन्धित प्रश्न नहीं है। यह भारतीय राष्ट्र से अबाध रूप से ग्रथित है। जिस प्रकार कुछ मुस्लिम बन्धुओं ने गोहत्या निरोध का समर्थन किया है, उसी प्रकार ईसाई पारसी आदि बन्धुओं को भी अपने मत का एलान इस विषय में करना चाहिए। इससे गोरक्षा आन्दोलन में बल आयेगा और इसकी पुष्टि होगी। विशाल हिन्दू धर्म के अन्तर्गत जैन, बौद्ध, वैष्णवादि जो अहिंसा के प्रथम पुजारी माने जाते हैं, उनको इस आन्दोलन का अगुआ होना चाहिए। इसी प्रकार सिक्खों को भी जिन के गुरुओं ने धर्म के आगे सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था, आगे बढ़ना कर्तव्य हो जाता है। सर्वदलीय गोरक्षाभियान को यद्यपि सभी सम्प्रदायों का समर्थन प्राप्त है फिर भी पृथक् पृथक् जमायतों के बल लगाने पर इसमें बल की वृद्धि होगी। गोरक्षा आन्दोलन की नींव अहिंसा पर आधारित है इसलिए इसमें अपना त्याग बलिदान करना ही परम धर्म होगा। धर्म के आगे प्राण समर्पित करेंगे। फल मिलेगा, अवश्यमेव मिलेगा क्योंकि भगवान कृष्ण ने कहा है:—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

यह भी जान लेना आवश्यक है कि गोरक्षा पालन हमारे नित्य के जीवन से जुड़ा हुआ है। गो के संरक्षण के लिए हमें गोपालन करना होगा। इसके वंश की वृद्धि और विकास के लिए उपाय करना होगा। केवल गोहत्या निरोध का कानून बनवाकर हम निश्चिन्त न हो सकते हैं। हम गोप गोपाल और नन्द बने बैठे हैं, परन्तु गो की रक्षा न करें तो यह तो हमारे नाम का मखौल ही होगा। कृष्ण वंशज, की पदवी धारण करने वाले हिन्दुओ! तुमने तो अपने जीवन में संकल्प कर लिया था कि गोपालन ही हमारा धर्म होगा फिर मनु ने कहा है कि वैश्यों का प्रधान कर्म कृषि, गोपालन, व्यापार, दान और यज्ञ है। इसलिए गोपालन परम्परा भी है और आज की नैतिक एवं आर्थिक मांग भी है। ऐ वैश्य बन्धुओ तो तुम फिर सोये क्यों हो? तुम समाज के स्रष्टा और पालन कर्ता हो। तुम पर ही इसका भरण-पोषण निर्भर है। इसलिए तुम जाग उठो।

आज पैसा प्राप्त करने के पाप ने हमसे जघन्य से जघन्य कार्य करवा दिया है। हम विदेशी मुद्रा की प्राप्ति के लिए गोहत्या करके मांस, चमड़े और हड्डी का रोजगार बढ़ा रहे हैं। इसके लिए फैक्टरियां खुली हैं और खुल रही हैं। इसमें सरकार का हाथ तो है ही परन्तु स्वतन्त्र भारतीय नागरिक भी इस व्यापार से वंचित नहीं हैं। गोमाता के सपूतो यह कैसे सम्भव है कि गाय को माता भी कहो, उसका दूध भी पिओ जिससे अधिक दिन जिओ और उसकी तथा उसके बछड़ों की जान भी लो। अपनी माता जिसका दूध पीकर तुमने अपना जीवन धारण किया है क्या उसकी हत्या की भावना तुम में जगती है! यदि नहीं तो फिर गोमाता की हत्या पर तुम्हारी आंखों में क्रोधाग्नि क्यों नहीं भड़क उठती? हमें अपने चमकीले जूतों और चटकीले अटैचियों के लालच में गोवत्सों की हत्या में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायक नहीं होना होगा। गोमाता के दूध, दही घी, गोबर और मूत्र से अहर्निश लाभ उठाने वाले किसानों, उठो-उठो। बिना तुम्हारे उठे काम नहीं चलेगा। मजदूरो, गोमाता तुम्हें संरक्षण दे रही है फिर तुम क्यों अण्डे, मुर्गी और मांस पर लुब्ध हो। कृषि के अमानवीय और पशु भक्षक यन्त्रों को त्याग कर गोवंशों की सहायता से कृषि के उत्कृष्ट मार्ग को अपनाकर इस संसार में स्वर्ग का साम्राज्य फैलाओ। यन्त्र और कारखाने मनुष्य और पशुओं का भक्षण कर रहे हैं।

गावः विश्वस्य मातरः—गाय विश्व की माता है केवल हिन्दुओं या भारतीयों की नहीं। फिर इसकी अवहेलना क्यों हो रही है? हालैण्ड, बेलजियम आस्ट्रेलिया और अमेरिका में गोवंश की वृद्धि और विकास से गोपालन के कार्यक्रम का ही पालन हुआ है। पर इतने ही से काम पूरा न होने को है। गोहत्या निरोध के विरोधियों के मन मस्तिष्क में इस पर विचार करने को थोड़ी भी जगह नहीं है। क्या उनका व्यस्त जीवन जरा भी इसके लिए अवकाश नहीं पाता?

यह प्रश्न आज का नहीं है। युग युग से इस पर विचार होता आया है। युग पुरुषों ने इस पर लेखनी भी उठायी, विचार का प्रचार भी किया, कर्त्तव्य का पालन भी किया और समय आया तो बलिदान भी चढ़ाया। गो ब्राह्मण पालक छत्रपति शिवाजी का जगमगाता हुआ इतिहास इसका साक्षी है। सिक्ख गुरुओं ने जब मुगलियां सल्तनत के आगे यह प्रश्न उपस्थित किया तो उन्हें भी झुकना पड़ा। यह ठीक है कि सिक्ख गुरुओं को बलिदान के लिए अपना तथा अपने प्रियों का मुण्डमाल भी समर्पण करना पड़ा। गोहत्या के प्रश्न पर ही सन् १८५७ का भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथम युद्ध छिड़ा था। इसमें हिन्दू-मुस्लिम दोनों ने कंधा भिड़ाकर लड़ा था। आज हम स्वतन्त्र हो गये पर प्रश्न ज्यों का त्यों बना है। बापू ने कहा था, स्वतंत्रता मिलने पर सबसे पहले गोहत्या निरोध, शराबबन्दी और टैक्स कम कर दिया जावेगा। परन्तु बापू के सपूतों के राज्य में तीनों प्रश्न दिन व दिन उग्र रूप धारण करते जा रहे हैं। बापू के तथाकथित अग्रगामी सपूतों और अहिंसा के पुजारियों में विपरीत बुद्धि हो रही है। वे मांस अंडा को पूजा का मिष्टान्न बनाकर नित्य प्रातः सायं भोग लगा रहे हैं। यह लीला अहिंसा और शांति के अवतार के योग्यतम सपूतों की है। गांधी जी के नाम पर झूठे झूठे उदाहरण देकर आज वे जो करें थोड़ा है। बापू की आत्मा कराह रही होगी, कोस रही होगी परन्तु इनको जरा भी दया नहीं आ रही है। मालूम होता है इनका विश्वास धर्म कर्म से उठ गया है। भला भौतिक जीवन के रस भोगी जीव को रस भोगी जीव को भावना, धर्म कर्म और सत्य का आभास मिले भी तो कैसे! ये तो यावत् जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत का पाठ चारवाक के समय से ही पढ़ते आ रहे हैं। पाश्चात् योरपीय गुरुजनो ने उनके उस पाठ का अंग्रेजी संस्करण खाओ, पिओ, मौज करो (Eat. drink and be merry) का पाठ रटवा कर याद करवा दिया है। इसलिए शायद उनका नाम भी सिक्ख गुरुओं की तरह प्रसिद्ध हो जाय। सिक्ख गुरुओं ने तो सर दिया परन्तु सिर ना दिया था। अब वे भी अपने को अमरत्व प्रदान करने को भारतीय साधु-संन्यासी गृहस्थ, वानप्रस्थी और ब्रह्मचारियों का मुण्डमाल लेकर ही दम लेंगे। मुण्डमाला तैयार हो रही है। दिल्ली की बलिवेदी सजायी जा रही है। बलिदानियों की पुकार की भेरी बज गयी है। इसलिए ओ गोमाता के लाड़लों तैयार हो जाओ, तैयार हो जाओ। गोमाता अपने सपूतों का बलिदान चाहती है। अपने लिए, अपने लिए—कदापि नहीं।

उन नर पिशाचों के लिए जो बलि के भूखे हैं और केवल नर पिशाचों के लिए नहीं बल्कि चण्डी, दुर्गा काली रूपिणी देवियों की राज्य पिपासा की शान्ति के लिए। राज्य श्री की प्राप्ति के लिए गोहत्या निरोध निश्चय ही हेय है। नेपाल राज्य ने गोघातक को नरघातक को समानता देकर उसके दण्ड की समान व्यवस्था करने की जो प्रथा चलायी है वह स्वतन्त्रता के सूर्य हिन्दू राष्ट्र के न्याय का उज्ज्वल प्रतीक है। हम अपने स्वतंत्र राज्य में परतन्त्रता की अवस्था से भी गिरती अवस्था में जीवन यापन कर रहे हैं—यह उन्नति हुई या अवनति, ह्रास हुआ या विकास। योजना और प्रगति के कुचक्र में अन्धा बन जाने वाली शक्ति सम्हाल कर चलो, चेत कर देखो। हमारे कुकृत्यों के प्रायश्चित स्वरूप प्रकृति ने प्रकोप दिखलाया है। अकाल मुंह बाये खड़ा है। पृथ्वी सूखा से ग्रस्त हो रही है। गोहत्या का पाप सिर पर मंडरा रहा है। यह भारतीयता पर कोढ़ है, कलंक है और है, और है आज जिसे जड़-मूल से मिटाना है। यह प्रश्न अब धीरे-धीरे का रहा ही नहीं मिनटों के प्रश्न को हल करने में एक कम बीस वर्षे

(शेष पृष्ठ १३ पर)

गोभक्तों पर गोलीकाण्ड

सरकार को कड़ी चुनौती

श्री प्रकाशवीर शास्त्री आदि द्वारा न्यायिक जांच पर बल गोहत्या बन्दी की मांग

लोक सभा मे गृहमन्त्री के गोहत्या बन्दी सम्बन्धी वक्तव्य पर जो उन्होंने विगत ४ नवम्बर को सदन मे दिया था, बहस प्रारम्भ करते हुए श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने कहा कि सरकार इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्न को अपनी प्रतिष्ठा का विषय न बनाए ।

उन्होंने आगे कहा कि पुरी के शंकराचार्य और ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी तथा १०५ दिन से अनशन कर रहे रामचन्द्र वीर की दशा प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। अब तो जैन मुनि सुशीलकुमार जी ने भी प्राणों की बाजी लगा दी है और भी अनेक सन्त इसी पथ पर बढ़ जा रहे हैं। स्थिति की भयकरता को देखते हुये सरकार को संविधान में संशोधन करके देश भर मे गोवंश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए।

उन्होंने इस सम्बन्ध में पुराने इतिहास पर प्रकाश डालते हुये कहा कि मुगल सम्राट् बाबर ने भी अपने वसीयतनामे में हुमायूं को गोहत्या रोकने का उपदेश दिया था। ब्रिटिश युग में १८५७ की क्रांति कूका विद्रोह तो गोरक्षा सम्बन्धी प्रबल प्रयास के ज्वलंत प्रमाण हैं। अतः प्रधान मन्त्री द्वारा यह कहना कि चुनाव के पूर्व ही यह आन्दोलन क्या हुआ ठीक नहीं है। इसका समर्थक कोई भी धर्माचार्य चुनाव में प्रत्याशी नहीं होगा।

उन्होंने आंकड़े पेश करते हुए कहा कि विदेशों को विगत २० वर्षों मे लगभग ६५ करोड़ रु० का गोमास ही भेजा गया था। निरन्तर गोधन का विनाश होता रहा है। इसलिए वर्तमान खाद्य संकट है। अतः संविधान में आवश्यक संशोधन और कानून द्वारा गोहत्या पर देश भर में प्रतिबन्ध लगाना अत्यावश्यक हो गया है।

श्री शास्त्री ने ७ नवम्बर की दुर्घटनाओं की न्यायिक जांच पर बल दिया जिसमे सारा रहस्य ही प्रकट हो जाये। उस विशाल प्रदर्शन का नेतृत्व सन्त महात्मा कर रहे थे जिनका किसी राजनीतिक दल से सम्बन्ध नहीं था। मैं ७ नवम्बर के गोली काड के विषय में सरकार को पंजाब केशरी की अन्तिम चेतावनी का स्मरण कराता हूं जो उन्होंने पुलिस की लाठियों पर ब्रिटिश सरकार को कहीं थी। निश्चय ही यह अन्यायकारी शासन टिक नहीं सकता।

प्रधान मंत्री के नाम पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्रीयुत शिवचन्द्र जी ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी को एक विशेष पत्र भेजकर सम्पूर्ण देश मे कानून गोहत्या बन्दी कराने की प्रेरणा की है साथ ही गोहत्या बन्दी के सम्बन्ध में आर्यसमाज की स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा कि गोरक्षण और गोहत्या बन्दी आर्यसमाज का उसके जन्म दिवस से मुख्य कार्यक्रम रहा है और अब भी है।

पत्र अविकल रूप में इस प्रकार है:—

"इस पत्र के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग दिनांक १६-१०-६६ की बैठक के निश्चय स० १५ की प्रतिलिपि सूचना तथा उचित कार्य के लिए भेजता हूं।

सभा को आशा थी कि आपके नेतृत्व में भारत सरकार सम्पूर्ण भारत में गोहत्या बन्दी के लिए कानून बना कर बहुसंख्यक लोगों की भावना, संविधान के आदेश का आदर करने और भारत के भव्य भाल पर लगे कलंक को धोने का श्रेय प्राप्त करेगी और जनता सीधी कार्यवाही करने के लिए विवश न होगी। परन्तु सभा को और आर्य जनता को भारत सरकार के रवैये से इस सम्बन्ध में निराशा देख पड़ रही है फलतः सभा को अपने उपर्युक्त निश्चय को बड़े दुःख के साथ क्रियान्वित करना पड़ रहा है।

गोहत्या बन्दी के सम्बन्ध में आर्य समाज की वही स्थिति है जो उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की थी और जिसकी एक झांकी उनके आवेदन पत्र से मिल जाती है जो उन्होंने महारानी विक्टोरिया को भेजने के लिए तैयार किया था। गो हत्या के अभिशापों और गोरक्षा के वरदानों का उनकी गोकरुणा निधि पुस्तक में सजीव चित्र अंकित है जिस की १ प्रति साथ है। गोहत्या बन्दी उनके उपदेशों और कार्य का प्रमुख अंग था। उन्होंने ही सर्वप्रथम गोहत्या बन्दी के आन्दोलन का सूत्रपात किया था। तभी से यह आर्य समाज के कार्यक्रम का मुख्य अंग बना हुआ है।

आर्य समाज हिंसा और तोड़-फोड़ की प्रवृत्ति का परम विरोधी है और उसे एक क्षण के लिए भी आश्रय नहीं देता। अतः आर्य समाज का सत्याग्रह आन्दोलन नितान्त शान्त और अहिंसक और बलिदान एवं त्याग से ओत-प्रोत रहेगा। उसकी दृष्टि में राष्ट्रीय या व्यक्तिगत सम्पत्ति को क्षति पहुंचाना वा हिंसा का आश्रय लेना बड़ा निन्दनीय कृत्य है जैसा सभा प्रधान जी ने ९ तारीख के अपने वक्तव्य में स्पष्ट कर दिया है। ७ नवम्बर को दिल्ली में जो कुछ हुआ वह बड़ा शरमनीय है इसके लिए कौन दोषी है इसकी निष्पक्ष जांच कराई जाय तो एक गम्भीर विवाद का अन्त हो जाय।

अन्त में मैं आपसे निवेदन करता कि आप सीधे या संविधान में आवश्यक परिवर्तन कराके गो हत्या बन्दी का श्रेय प्राप्त करें जिससे आप की कीर्ति अमर रहे।

शुद्धि

—आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल आसाम के तत्वावधान में रामेश्वरपुर ग्राम में कुछ दिन पूर्व मुसलमान हुए एक हिन्दू परिवार का पुनः वैदिकधर्म प्रवेश कराया गया। परिवार में छः सदस्य हैं। शुद्धि संस्कार श्री रामनगीना पाण्डेय द्वारा सम्पन्न हुआ।

कांग्रेस सरकार की गो-हिंसक नीति को बदलने के लिए सामूहिक सत्याग्रह में शामिल होने की तय्यारी कीजिये। धन और जन भेजिए।

प्रकाशवीर शास्त्री
उपप्रधान

रामगोपाल शालवाले
मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

ज्योतिर्मय-पिता

डा० बद्रीप्रसाद पंचोली विजय निवास, मदनगंज, किशनगढ

अव स्मृधि पितरं योधि विद्वान् पुत्रो यस्ते सहसः सून ऊहे।
कदा चिकित्वो अभिचक्षसे नो अग्ने कदां ऋतचिद् यातयासे॥
(ऋग्वेद ५। ३। ९)

[१]

(सहसः सूनो) हे बल द्वारा उत्पन्न होने वाले अग्निदेव! (पुत्रः पितरं ते) जैसे पिता की सेवा पुत्र करता है उसी तरह तुझ पितृस्वरूप की पुत्ररूप (यः विद्वान् ऊहे) जो विद्वान् सेवा करता है, उसे तू (अव स्मृधि) संकटो से पार कर और (योधि) पाप से अलग कर। (चिकित्वः अग्ने) हे चेतनावान् या प्रज्ञावान् अग्निदेव? (नः) हमको (कदा अभिचक्षसे) कब कृपादृष्टि से देखोगे? (ऋतचित्) हे ऋत के प्रेरक, हमे (कदा यातयासे) कब सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दोगे?

[२]

इस मन्त्र में साधक ज्योतिर्मय-अग्नि से सन्मार्ग पर चलने के लिए पथप्रदर्शन करने की प्रार्थना करता है। इसके लिए वह अग्नि को पितृ-स्वरूप मान कर उसकी पुत्रवत् सेवा करने के लिए तत्पर है।

मन्त्र का देवता अग्नि घट-घट में समिद्ध होने वाला है और ब्रह्मा-ण्डव्यापी चैतन्य-तत्त्व—ब्रह्म से अभिन्न है। यहां इसका त्रिष्टुप् छन्द मे अवतरण हुआ है। त्रिष्टुप् मे ४४ अक्षर होते हैं। अक्षरो का अक्षर-चैतन्य से सम्बन्ध होता है। त्रिष्टुप् अन्तरिक्ष लोक और माध्यन्दिन-सवन से सम्बद्ध छन्द है। इसे इन्द्र-रूप माना जाता है। शक्ति-संवर्द्धन का कार्य त्रिष्टुप् द्वारा होता है। यास्क के अनुसार यह तीर्णतम (तैरने में उत्तम-रूप से सहायक) छन्द है और त्रिवृद् वज्र का स्तोभन करता है (निरुक्त ७। ३। ८)। यह त्रि पूर्वक स्तम्भु-धातु से व्युत्पन्न शब्द है और इसका भाव है जो तीन प्रकार से रोके। वज्र का अर्थ भी वर्जित करना है। इस प्रकार त्रिष्टुप् छन्द द्वारा तीन—काम, क्रोध और लोभ से बच कर इस बचाव में सहायक शक्ति की स्तुति की जाती है।

मन्त्र के अर्थ को सूत्ररूप में सूचित करने वाला मन्त्र के द्रष्टा—ऋषि का नाम आत्रेय वसुश्रुत है। आत्मबल को वसुश्रुत कहा जाता है—वसु श्रुतं यस्य सः। इसी तरह अत्रि का अर्थ है—जितेन्द्रिय या काम-क्रोधादि से मुक्त—अविद्यमाना. त्रयो कामक्रोधलोभाः यस्य स। छन्द के त्रिष्टुप् नाम के साथ अत्रि की संगति बैठ जाती है।

मन्त्र में चार क्रियाओ का प्रयोग हुआ है। इसमें से स्पर्द्ध और युध का सम्बन्ध क्रोध से, अभि+चक्ष् का काम से और यातय् (या का णिजन्त-रूप) का सम्बन्ध लोभवृत्ति से है और इन तीनों वृत्तियों का उदात्तीकरण करने की ओर मन्त्र में संकेत किया गया जान पड़ता है। इष्टदेव तो आदर्श (स्वयं अर्थ भी आशु और आदर्शवाद के आदर्श अर्थ भी) है जिसको समर्पित भावनाएं उदात्तीकृत रूप में पुनः साधक-समर्पयिता में आकर शक्तिवर्द्धन मे कारण बनती है। क्रोधवृत्ति का समर्पण कर देने पर वह पुनरावर्तित होकर संकटों और पापबुद्धि पर विजय पाने में सहायक बन जायगा। यहां साधक कहना तो यही चाहता है कि मैं क्रोध-वृत्ति को आपको समर्पित करता हूं। इससे उत्पन्न शक्ति से मैं संकटों पर विजय पा लूंगा और पापों को दूर हटा दूंगा, परन्तु इसमे अहंभाव भी न रह जाये, इसलिए वह अपनी इस क्षमता का श्रेय इष्टदेव को ही देता हुआ कहता है कि 'आप मुझे संकटों से पार करो तथा पापों से अलग करो।'

काम का सम्बन्ध इन्द्रियों से है

स्त्री आर्यसमाज दीवानहाल की सत्याग्रही आर्य महिलाएं।

आर्यसमाज छपरौली (बागपत) के तपस्वी स्वामी जी महाराज तथा चौ० मनसाराम जी आर्य पुलिस अफसर को गौरक्षा आन्दोलन की वास्तविकता से परिचित कराते हुए सत्याग्रह कर रहे हैं।

जिसका प्रतीक चक्षु है। यहां चक्षु क्रिया ऐन्द्रिक व्यापार की प्रतीक है। साधक अपने ऐन्द्रिकव्यापार के काम्य-भूत काम को इष्टदेव को समर्पित कर देता है जिससे उसके दर्शन, श्रवण, स्पर्शनादि में विशेष प्रज्ञा का जागरण हो और वह समझने लगे कि वह जिन व्यापारों को अपना कहता है, वे वस्तुतः परमेश्वर की प्रेरणा से सम्पन्न होते हैं। वह तो साधनमात्र है। ऐसा समझने पर वह निष्काम (कामनारहित, फलरहित नहीं) कर्म करने लगता है। श्रीमद्भगवद्गीता मे वासुदेव कृष्ण ने निष्कामकर्म करने की प्रेरणा देते हुए भारत के इस जातीय दर्शन का व्याख्यान किया है।

मानव-जीवन की सभी क्रियाएं लोभवृत्ति से प्रेरित जान पड़ती हैं। इस वृत्ति को इष्टदेव के प्रति समर्पित कर देने पर जीवन, जिसको गति कहा जा सकता है, भगवत्प्रेरणा का विषय न जाता है।

इस प्रकार का समर्पण विवेक के बिना सम्भव नहीं है। इसलिए वसुश्रुत के दर्शन में विवेक पूर्वक अपनी त्रिविध-वृत्तियों को अग्निदेव को समर्पित करके करके उनसे अपने जीवन में प्रेरणा प्राप्त करते रहने और इसके लिए अग्नि को पिता और स्वयं को पुत्र मानने की बात कही गई है।

[३]

मन्त्र मे अग्निदेव के तीन विशेषण प्रयुक्त हुए हैं—'सहसः सूनु', चिकित्वान् और ऋतचित्। अग्नि का प्रथम विशेषण भूताग्नि से सम्बद्ध है व दूसरा तथा तीसरा प्राणाग्नि से। साधक बल की याचना करता है—सकटों मे पार होने और पापों से बचने के लिए। इसके लिए भूताग्नि का ज्वलनशील रूप सहायक होता है। जैसे अग्नि में घास, फूस, वृक्षादि जल जाते हैं वैसे ही उससे प्राप्त बल से संकट और पाप जल जायेंगे। इस कामना के साथ वह अग्नि को 'सहसः सूनुं' कहकर प्रार्थना करता है। अग्नि घर्षण से उत्पन्न होता है। इसी तरह साधक के संघर्ष रत होने पर उसका जीवन अवश्य ही सुकर, सकटमुक्त और निष्पाप हो जायगा।

श्री स्व० प्रभु हृदयानन्द ... ब्रह्मचारी के अन्तिम दर्शन।

आर्य संन्यासी श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज, अनेक हरियाणा के आर्यवीरों के साथ सत्याग्रह करते हुए।

चिकित्वान् शब्द चिती-सज्ञाने धातु से व्युत्पन्न है और इसका अर्थ है—पूर्ण ज्ञानी, चेतनावान् साधक जिस दिव्यदर्शन के लिए प्रयत्नशील है, उसकी प्राप्ति चेतना या प्रज्ञा से सम्पन्न शक्ति ही कर सकती है। प्राणरूप अग्नि को प्रज्ञा और चेतना से सम्पन्न मान कर उससे इनकी याचना करने के लिए उसे इस सार्थक विशेषण से सम्बोधित किया गया है।

ऋतचित् का तात्पर्य है—ऋत का प्रेरक। सत्य और उसका साधक यज्ञ ऋत कहे गये हैं। उत्तम कर्म की सज्ञा यज्ञ है। यह श्रद्धा और एक के सम्मिलन से सम्पन्न होता है। जीवन-यज्ञ का यथोचित रूप से सम्पादन करने के लिए साधक अग्निदेव को 'ऋतचित्' विशेषण से सम्बोधित करता है।

अग्निदेव से साधक जिन जिन बातों की याचना करता है, उनमें से एक है—सकटों से उबरने और पापों पर विजय पाने की शक्ति, दूसरी है—ऐन्द्रिक व्यापार और लोक-व्यवहार मे सुरुचि और सुदक्षता से सम्पन्न होने के लिए प्रज्ञाशक्ति या विवेक और तीसरी है—उत्तममार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा। जीवन के सारे व्यापार दृढ़-सकल्प से पूरे होते हैं। सकल्प में दृढ़ता तब आती है जब व्यक्ति निर्भय होकर शुभकार्यों को करने के लिए तत्पर हो जाये, विघ्न-बाधाओं से न घबराये और कार्यकाल में अशुभ प्रवृत्तियों से बचा रहे। यहां साधक की प्रथम मांग सकल्प में दृढता लाने के लिए संकल्प को निर्बल बनाने वाले तत्त्वों से बचने के सम्बन्ध में है। दूसरी उस विवेक-पूर्ण दृष्टि की प्राप्ति के लिए है जो सकल्प को क्रियात्मक रूप देने में पद-पद पर सहायक हुआ करती है। तीसरी मांग क्रिया करने और उसकी सफलतापूर्वक समाप्ति के लिए प्रेरणा और उत्तम मार्ग सुझाने के लिए है।

ये मांगें कोई शुभचिन्तक ही पूरी कर सकता है। पिता से अधिक शुभ-

चिन्तक कौन होगा। जो विद्वान् अपने को पुत्र मान कर पितृवत् अग्नि का स्नेहाकांक्षी बनने का विचार रखता है (ऊहे क्रिया का तात्पर्य विचार करना, वितर्क करना आदि है), उसे ही अग्निदेव इन भावों की पूर्ति का वरदान देता।

इस प्रकार मन्त्र का भाव होगा—

हे बलदाता, ज्ञानदाता और सत्य-कर्म के प्रेरक अग्निवत् तेजस्वी परमात्मन् हमें शक्ति दे कि हम संकटों से उबर जायें, पापों से बचें; हमें विवेक सम्पन्न करो जिससे हम शुभकर्मों में प्रवृत्त हों और हमें सत्य-कर्म की प्रेरणा दो। हम तुम्हारे पुत्र हैं और तुम उपकारी पिता हो।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज बड़ाबाजार एवं आर्य ट्रस्ट बड़ाबाजार की सभा श्री सूरजमल जी गुप्त की अध्यक्षता में हुई जिसमें आर्य समाजके कर्णधार श्री सीताराम जी आर्य की असामयिक मृत्यु पर महान शोक प्रकट किया गया। परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करते हुए उनके परिवार तथा हम आर्यों को इस महान कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—आर्यसमाज भरतपुर के मन्त्री श्री प्रोफेसर डा० ओम्प्रकाश जी वेदालंकार के पूज्य पिताजी श्री ऋषि भूषण जी विद्यालंकार का देहावसान २-१-६६ को हो गया, जिसके लिए समस्त आर्य जगत् हार्दिक सम्वेदना और सहानुभूति प्रकट करता है और दिवंगत आत्मा की शांति व सद्‌गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है।

—श्री सीताराम जी आर्य का निधन दिनांक १२-१०-६६ को उनके निवास स्थान सीतापुर में हो गया जहां स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे। आप आर्यसमाज तथा कांग्रेसके कर्मठ कार्य-कर्ता थे। आर्य समाज जोड़ासाकू की ओर से धर्मतल्ला मैदान में उनके निधन पर १ मिनट का मौन धारण किया गया और शोक प्रस्ताव पारित किये गये।

ग्राम मामन में शुद्धि-समारोह

हापुड़ जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश की अराष्ट्रीय प्रचार निरोध समिति की ओर से।

ग्राम मामन तहसील खुर्जा जिला बुलन्दशहर में १०५ जाटव भाईयों ने जो कुछ दिन से उन्होंने ईसाई मजहब को अपना लिया था। उसको अपनी खुशी से छोड़ कर वैदिक धर्म में प्रवेश किया।

जो भाई वैदिक धर्म मे दीक्षित हुवे उन्होंने हापुड़ तथा बुलन्दशहर तथा कन्या ग्राम के भाई जो बाहर से आये थे सभी को दोपहर का भोजन बड़े ही प्रेम से खिलाया। तथा चाय आदि से भी अच्छा सत्कार किया। इस समिति के तत्वावधान में अब तक ३७३ जाटव भाई ईसाई धर्म को छोड़ कर वैदिक धर्म में प्रवेश कर चुके हैं।

—आर्य समाज कुर्आं में गुरुकुल महाविद्यालय स्थापित करने के लिए श्री नर्मदाप्रसाद जी तिवारी की अध्यक्षता में गुरुकुल गोष्ठी सम्पन्न हुई। तदर्थ २१ सदस्यों की एक योजना समिति बनाई गई। समिति के प्रधान श्री सुखदेव भाई उपप्रधान श्री प० राजारामजी आर्य मन्त्री श्री राजपाल जी आर्य, उपमन्त्री श्री पं० देवदत्तजी, कोषाध्यक्ष, श्री बालूभाई-नान्द्रा एव निरीक्षक श्री आदित्यपालसिंह आर्य सरपंच चुने गए।

प्रस्तावित गुरुकुल का उद्‌घाटन जून मास में होगा।

श्री वेचनसिंह संचालक

आर्य वीर दल, वाराणसी सूचित करते हैं—

१—आर्य वीर दल बबहा में शाखा का कार्य उत्साहपूर्वक है।

२—आर्य वीर कदवा में उपस्थिति २५ हैं।

३—शाहगज (जौनपुर) में दल की शाखा नित्य लगती है।

४—जौनपुर में प्रातः शाखा में ६५ की उपस्थिति थी।

५—केराकत और जौनपुर से १०० और ५०) प्राप्त हुआ।

—श्री विश्वनाथ जी आर्य वीर दल बीराला ने आर्य वीर दलों के संगठन एवं गो रक्षा के लिए आर्य-समाज, बागपत, अग्रवाल मंडी टटीरि, अमीपुर, कपसाड़, पलौडा तथा मुजफ्फरनगर शहर में भाषण दिये। आपके साथ श्री प्रेमप्रकाश जी वर्मा आर्य समाज ब्रह्मपुरी मेरठ भी थे। श्री मुरारीलाल आर्य सिद्धान्त शास्त्री द्वारा लिखित वेद प्रश्नोत्तरी वितरण की गई।

❀

मन्त्रद्रष्टा—ऋषि दयानन्द

दर्शनाचार्य श्री पं० जगदीशचन्द्र जी शास्त्री, यमुनानगर

वेद के मन्त्रों को देखने से पता लगता है कि प्रत्येक मन्त्र का कोई न कोई द्रष्टा अवश्य हुआ है क्योंकि प्रत्येक मन्त्र के विषय में आज तक यह माना है कि इसका अमुक देवता अमुक ऋषि अमुक छन्द और अमुक स्वर है, वेद के किसी भी छपे हुए पुस्तक मे आप इसका उल्लेख देख सकते हैं, मन्त्र का द्रष्टा होने से जिस ऋषि का नाम मन्त्र के साथ सम्बद्ध है उस २ ऋषि ने उस २ मन्त्र के यथार्थ स्वरूप का साक्षात्कार किया है इसी लिये उसकी स्मृति में आजतक उस २ ऋषि का मन्त्र के साथ स्मरण किया जाता है।

ऋषि दयानन्द ने भी वेदो का भाष्य और भावार्थ प्रकाशित किया है। ऋग्वेद के बड़े भारी भाग पर उन्होंने भाष्य किया है, यजुर्वेद के तो सारे अध्यायों और प्रत्येक मन्त्र पर भाष्य किया है, समयाभाव और काल के दुर्विपाक के कारण सामवेद और अथर्ववेद पर भाष्य किये बिना ही वे ससार से विदा हो गये।

मन्त्र द्रष्टा के रूप में जितने भी ऋषियों के नामों का पता लगता है कितने आश्चर्य की बात है कि उनमें से किसी भी ऋषि के कार्यों और कृतियो का कुछ भी इतिहास उपलब्ध नही होता, इसीलिये लाख यत्न करने पर भी उस २ ऋषि के जीवन कार्यों की विशेषता का भी कुछ पता नहीं लगता कि उस मन्त्र द्रष्टा ऋषि ने अपने जीवन काल में उस मन्त्र का मनन करके अमुक सिद्धान्त का प्रचार किया और उस मन्त्र की दृष्टि को सामने रख कर अमुक सशोधन अथवा सुधार का कार्य किया।

दयानन्द ने भी वेद के सहस्रों मन्त्रों का भाष्य किया है परन्तु कुछ मन्त्र ऐसे हैं जिनका साक्षात्कार करने से उनके जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ा और उन मन्त्रों का यथार्थ दर्शन करके उन्होंने उनका चिरकाल तक मनन और निदिध्यासन किया, ऐसे अनेकों मन्त्रों को आदर्श मान कर दयानन्द ने अपने जीवन का कार्यक्रम निश्चय किया।

ऐसे मन्त्र यद्यपि साठ सत्तर अवश्य होंगे जिनका दयानन्द ने यथार्थ साक्षात्कार किया और उनको अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया था और उनके प्रकाश में ससार के सुधार का कार्य करना निश्चय किया था, तथापि उन मन्त्रों में से कुछ मन्त्र ऐसे हैं जिनका साक्षात्कार दयानन्द ने ही किया और उनके वही द्रष्टा ऋषि कहला सकते हैं। सर्वसाधारण और विद्वानों की जानकारी के लिये नमूने के रूप मे उनमें से पाच मन्त्रों का परिचय दिया जाता है। ध्यान देने की कृपा करें—

पहिला मन्त्र

'ओ३म् विश्वानिदेव सवित' इत्यस्य मन्त्रस्य दयानन्दः ऋषिः।

अर्थ—हे सवितः देव जगदुत्पादक परमात्मदेव! समस्त दुर्गुणों दुर्व्यसनों और दुष्टविचारों को हमसे दूर हटा दीजिये और कल्याणकारी शुभगुणों को हमें प्राप्त कराईये।

ऋषि दयानन्द ने इस मन्त्र का दर्शन करके अपने जीवन को वैदिक जीवन का रूप दे दिया और अपने जीवन में प्रवेश पा जाने वाले अनेकों दुर्गुणों को सर्वथा दूर हटा दिया तथा जिन कुसगी जनों के सग से दुर्गुण आते थे उनका भी परित्याग कर दिया। इस मन्त्र को जीवन मे चरितार्थ करते हुए ऋषि ने तम्बाकू और भाग का सर्वथा त्याग कर दिया। मिथ्या अभिमान और मिथ्या सिद्धांतों का भी परित्याग कर दिया। इसके साथ ही यत्र तत्र सर्वत्र सभी दुर्गुणों और मिथ्या सिद्धान्तों का प्रबल खण्डन किया। ऋषि ने इसी मन्त्र के दर्शन से सत्य और शुभ कर्मों के ग्रहण करने तथा असत्य आचरण और पाप कर्मों के परित्याग करने का सुवर्ण सिद्धान्त ससार के सामने उपस्थित किया। ऋषि को असत्य मतों के खण्डन और सत्य सनातन वैदिक धर्म के मण्डन की प्रबल प्रेरणा भी इसी मन्त्र के दर्शन से प्राप्त हुई।

यह सवितृदेवताक गायत्री मन्त्र ऋषि दयानन्द को इतना अच्छा इतना प्यारा और इतना प्रभावशाली प्रतीत हुआ कि ऋषि ने इस मन्त्र को चारों वेदो से सगृहीत ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना स्वस्तिवाचन शान्तिप्रकरण के मन्त्रों में भी सब से मुख्य स्थान दिया। न केवल यही किन्तु अपने वेदभाष्य के प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में भी 'विश्वानिदेव०' मन्त्र पाठ करते हुए मगलाचरण किया।

यह मन्त्र ऋषि दयानन्दके पवित्र जीवन और उनकी पवित्र कृतियों के कारण हमारे सामने आया अतः इस मन्त्र का यथार्थ दर्शन करने वाला ऋषि दयानन्द ही था।

'ओ३म् न तस्य प्रतिमा अस्ति'इत्यस्यमन्त्रस्य दयानन्दः ऋषिः।

अर्थ—उस परमेश्वर की कोई प्रतिमा अथवा मूर्ति नहीं है, सहस्रों वर्षों से यह मन्त्र प्रचलित था। वेद सहिता में विद्यमान था। विद्वान् पढ़ते पढ़ाते थे और आप भी करते थे परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि इधर यह मन्त्र पढ़ा पढ़ाया और कण्ठस्थ किया जा रहा था और उधर परमेश्वर की प्रतिमायें बनाई जा रही थीं, मन्दिरों में स्थापित की जा रही थीं उनमें मन्त्र पाठपूर्वक प्राण डाले जा रहे थे तथा प्राण प्रतिष्ठा और धूप दीप नैवेद्य से पूजा की जा रही थी। किसी भी पंडितम्मन्य विद्वान् को यह साहस नहीं हुआ कि इस अनर्थकारी और वेद विरुद्ध प्रकरण पर आख खोल कर दृष्टिपात करता और इसके प्रतिवाद करने पर ध्यान देता। मूर्तिपूजा जड़ जमाती चली गई और विद्वान् लोग पुजारी पण्डे बन कर चढ़ावा लेते और भोग भोगते रहे।

ऋषि दयानन्द ही था जिसने यह मन्त्र पढ़ा और इसका यथार्थ दर्शन किया और वेद के वास्तविक तात्पर्य को जानकर मूर्ति-पूजा को वेद विरुद्ध घोषित किया। ऋषि ने बड़े २ पन्डे पुजारियों और विद्वान् पंडितों को ललकार ललकार कर समझाया कि इस मन्त्र की दृष्टिसे मूर्ति पूजा करना वेद विरुद्ध है क्योंकि परमेश्वर की कोई प्रतिमा नहीं है। ऋषि ने इसी मन्त्र के साक्षात्कार का बल पाकर बड़े से बड़े मूर्ति-पूजा समर्थक विद्वानों को शास्त्रार्थ का आह्वान किया—एक बार नहीं अनेकों बार अनेक महान् विद्वानों से शास्त्रार्थ किये और उनकी विचारधारा के प्रवाह को बदल डाला। ऋषि से पूर्व सायण महीधर और शंकराचार्य जैसे अद्भुत तथा उद्भट विद्वान् हो चुके थे किन्तु किसी को इस मन्त्र का यथार्थ दर्शन नहीं हुआ था न ही किसी ने मूर्ति-पूजा के विरुद्ध इतना मौलिक प्रहार करने का साहस किया था। इसी लिये हम कहते हैं कि इस मन्त्र का जीवन भर प्रचार करने वाला और मन्त्र का साक्षात्कार करने वाला मन्त्र द्रष्टा ऋषि दयानन्द ही था।

तीसरा मन्त्र

ओ३म् "स पर्यगात् शुक्रमकायम्" इत्यस्य मन्त्रस्य दयानन्दः ऋषि।

अर्थ—वह परमेश्वर सर्वत्र-व्यापक और सर्वशक्तिमान् है वह शरीर और नस नाड़ी के बन्धनो से रहितहै सर्वथा अज्ञानान्धकार से रहित है। सर्वज्ञ है, निष्पाप निष्कलंक है, सर्वान्तर्यामी स्वयम्भू और सर्वत्र परिपूर्ण है, उसने अपनी अनन्त और अनादि प्रजा जीवात्माओं के लिये जैसी आवश्यक थी वैसी ही सृष्टि की रचना की है।

ऐसे सर्वथा स्पष्ट वेदमन्त्र के होते हुए और उसको पढ़ते पढ़ाते हुए विद्वान् लोग जनता को अवतारवाद के चक्र पर चढ़ा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहे। किसी ने भी मूर्ति पूजा के मूलाधार ईश्वरके शरीर धारण का विरोध करने का साहस नहीं किया। वेदमन्त्र में "अकायम्" शब्द स्पष्ट दिखाई दे रहा था परन्तु विद्वान् लोग ध्यान नहीं दे रहे थे। आंखें बन्द किये कहते जा रहे थे कि ईश्वर शरीरधारण करता है। एकबार नहीं ईश्वर को दस बार शरीरधारण करने की डौंडी पीटी जाती रही, किसी २ ने जैनियों को देखा देखी ईश्वर के चौबीस बार जन्म लेने का आविष्कार कर दिया। किसी ने ईश्वर के अवतारधारण का षड्यन्त्र रच कर संसार को यह समझाना आरम्भ किया कि राम कृष्ण आदि के रूप में ईश्वर ही शरीरधारण करके आया था। दुःख और खेद का बात तो यह है कि मन्त्रके "अकायम्" पद के होते हुए भी अवतार वाद का प्रचार किया जाता रहा।

ऋषिदयानन्द ने इस मन्त्र केप्रत्येक पद का साक्षात्कार किया और यथार्थ दर्शन करने के अनन्तर 'अकायम्' परिभूः 'स्वयम्भूः' पदों का प्रबल बल पाकर अवतारवादी विद्वानों की विद्वत्ता को ललकारा हिलाया और झिझोड़ा, ऋषि ने समझाया कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् और सर्वान्तर्यामी होने से अपने सभी काम बिना शरीर

आरम्भ किये ही प्रभावाव कर सकता है अतः उसे अवतार लेने की कोई आवश्यकता नहीं और अवतार लेना उसके गुण कर्म स्वभाव के विरुद्ध भी है तथा अवैदिक सिद्धान्त है।

इसी लिये हम कहते हैं कि इस मन्त्र का जीवन भर प्रचार करने वाला और मन्त्र का साक्षात्कार करने वाला मन्त्र द्रष्टा ऋषि दयानन्द ही था।

चौथा मन्त्र

ओ३म् 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया' इत्यस्य मन्त्रस्य दयानन्दः ऋषिः।

अर्थ—जीवात्मा और परमात्मा दोनों चेतन परस्पर घनिष्ठ मित्र हैं और प्रत्येक शरीर में इस प्रकार बैठे हैं जैसे किसी वृक्ष पर दो पक्षी बैठे हों, उन दोनों पक्षियों में से एक पक्षी तो उस वृक्ष के फलों को स्वाद ले लेकर खा रहा हो और दूसरा पक्षी स्वयं फलों को न खाता हुआ फल खाने खाने वाले दूसरे पक्षी की भोग क्रियाओं को केवल निरीक्षण कर रहा हो। इसी प्रकार जीवात्मा की भोग क्रियाओं को ईश्वर सदा निरीक्षण करता है परन्तु स्वयम् कुछ भी भोग आदि क्रिया नहीं करता।"

इस मन्त्र को देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि जीवात्मा और परमात्मा में प्रत्यक्ष मौलिक भेद है और दोनों के गुण कर्म स्वभाव में महान् अन्तर है। इतना होने पर भी सहस्रों वर्षों तक बड़े २ वैदिक विद्वान् और शंकराचार्य जैसे शास्त्रार्थी अद्वैत वाद जैसे अवैदिक मत का प्रचार करते रहे और जीव ब्रह्म के भेद का ही खण्डन करते रहे। किसी को यह नहीं सूझा कि वेद में दोनों का परस्पर भेद वर्णन किया गया है। यह दयानन्द ही था जिस ने इस मन्त्र का साक्षात्कार किया और डंके की चोट से अद्वैतवाद को वेदविरुद्ध सिद्ध किया। इस मन्त्र के साक्षात्कार करने के अनन्तर ऋषि दयानन्द ने नवीन वेदान्ती सन्यासी विद्वानों को समझाया कि इस मन्त्र को मानते हुए जीवब्रह्म को एक नहीं कहा जा सकता और न ही अद्वैतवाद को वेदानुमोदित माना जा सकता है। ऋषि ने यावज्जीवन तथाकथित वेदान्ती ब्रह्मवादियों को इस मन्त्र के बल पर अनेक बार शास्त्रार्थों में परास्त किया। ऋषि ने मन्त्र का यथार्थ दर्शन करके अद्वैतवादियों के मन्तव्यों में मौलिक विरोध दिखाते हुए मन्त्र के चार पदों पर यथार्थ प्रकाश डाला और बतलाया कि एक नहीं दो नहीं तीन नहीं किन्तु चार चार पदों का प्रयोग कोई गम्भीर तात्पर्य रखता है जिस से सिद्ध होता है कि जीव ब्रह्म के परस्पर भेद के चार कारण हैं। ऋषि ने मन्त्र में 'द्वा' पद देखा और कहा कि दो की संख्या कहने से अद्वैत अथवा अभेद का सर्वथा निषेध होता है। 'सुपर्णा' कहने से दोनों के ज्ञानस्वरूप होने पर भी कोई ऐसा मौलिक अन्तर अवश्य है जिससे दोनों को एक नहीं माना जा सकता। 'सयुजा' पद का मनन करके ऋषि ने समझाया कि दो विभिन्न तत्व ही संयुक्त हो सकते हैं—एक वस्तु मे संयोग शब्द का प्रयोग ही असम्भव है। 'सखाया' पद पर पूर्वापर विचार करने के अनन्तर ऋषि ने कहा कि सखा अथवा मित्र स्वयं अपने आपका नहीं हो सकता किन्तु कोई विभिन्न दो व्यक्ति ही एक दूसरे के सखा या मित्र कहे जा सकते हैं।

न केवल यही किन्तु ऋषि ने देखा कि मन्त्र में "तयोः अन्य" उन दोनों में से एक ऐसा पद सूर्य के समान चमक रहा है और अगले भाग में पुनः 'अन्यः' पद की आवृत्ति भी की गई है अतः जीव ब्रह्म के भेद की कभी भी और किसी भी स्थिति में उपेक्षा नहीं की जा सकती। ऋषि ने देखा कि मन्त्र जीवब्रह्म के भेद को सिद्ध करने वाले जहां इतने पद हैं वहां इन मौलिक भेद को परिपुष्ट करने वाले और भी महान् प्रभावशाली पद विद्यमान हैं। ऋषि ने देखा कि जीव ब्रह्म के भेद को स्पष्ट करने वाले जहां गुणदर्शक पद हैं वहां दोनों के कर्मों में भी महान् भेद है। मन्त्र में कहा गया है कि "अन्यः पिप्पलं स्वादु अत्ति" अर्थात् एक उस शरीर रूपी वृक्ष के फलों को स्वाद ले लेकर खाता है और 'अन्यः अभिचाकशीति' अर्थात् दूसरा केवल निरीक्षण कर रहा है। कर्मकर्ता और फलभोक्ता तो जीवात्मा है और जीव के कर्मों का निरीक्षण करने वाला साक्षी ईश्वर है।

अतः हम कहते हैं कि इस मन्त्र का जीवन भर प्रचार करने वाला और जीवब्रह्म के यथार्थ स्वरूप का दर्शन करने वाला और मन्त्र द्रष्टा ऋषि दयानन्द ही था।

पांचवां मन्त्र

ओ३म् यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्य—इत्य मन्त्रस्य दयानन्दः ऋषिः।

अर्थ—(ईश्वर उपदेश देता है कि) जैसे मैं वेद की कल्याण कारिणी वाणी को मनुष्यमात्र के लिये उपदेश करता हूं वैसे ही हे मनुष्यो! तुम लोग भी मनुष्यमात्र अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अतिशूद्र भृत्य तथा स्त्रियों को उपदेश दिया करो।

सहस्रों वर्ष से यह मन्त्र पढ़ा जाता था और यज्ञादि में विनियुक्त भी होता आ रहा था परन्तु वेद के पढ़ने पढ़ाने का अधिकार मनुष्यमात्र को नहीं था। विशेषतः स्त्री और शूद्र तो वेदाध्ययन से सर्वथा वंचित थे। किसी स्वार्थान्ध धूर्त ने तो यहां तक प्रसिद्ध कर दिया था कि "स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्" अर्थात् स्त्रियों और शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है, और किसी दुष्ट व्यक्ति ने तो यहां तक लिख डाला कि—

तस्य श्रुति मुपशृण्वतः त्रपुजतुभ्यां श्रोत्र परिपूर्णम्।

यदि वह शूद्रादि वेद के मन्त्रों को सुन ले तो उसके कानों में लाख और सिक्का पिघला कर भर देना चाहिये। उच्चारणे जिह्वाछेदः - यदि मन्त्रों का उच्चारण करे तो उसकी जिह्वा काट देनीचाहिये। धारणे हृदय विदारणम्—यदि कण्ठस्थ कर ले तो उसका हृदय फाड़डालना चाहिये।

स्वामी शंकराचार्य जैसे, सबको ब्रह्म मानने का दिन रात प्रचार करने वाले, भी अपने वेदान्त शारीरिक भाष्य में उपर्युक्त वचनों को महत्व देते हुए स्त्री शूद्रों को वेदाध्ययन से सर्वथा वंचित ही रखते रहे। ऐसे उद्भटवक्ताओर परमविद्वान्मेंभी इतना साहस नहीं हुआ कि वेद का अध्ययन करके इस अत्याचारी और निकृष्टतम सिद्धान्त का विरोध करते और शताब्दियों से चले आ रहे इस कलंक को दूर करते।

यह तो दयानन्द ही था जिसने दिन रात परिश्रम करके वेदों का अध्ययन किया और महान् परिश्रम करके मन्त्रों का मन्थन और मनन करके वेद के वास्तविक अभिप्राय को समझा और समझ कर अनर्थकारी सिद्धान्तों को वेद विरुद्ध सिद्ध किया। ऋषि ने मन्त्र का साक्षात्कार करने के अनन्तर मनुष्यमात्र को वेदाधिकार से वंचित करने वालों को अनेकों बार शास्त्रार्थों में परास्त तथा लज्जित किया। ऋषि ने इस मन्त्र के प्रकाश में स्त्रियों तथा शूद्रादि को पुन वेदाध्ययन का अधिकार दिया। ऋषि ने स्थान २ पर कन्यापाठशाला तथा गुरुकुल खोलने की योजनायें प्रस्तुत की और भारी जनता मे उच्चघोष से सभी वर्णों और मतवादियों को मन्त्र सुनाकर चकित कर दिया।

इसी लिये हम कहते हैं कि जिसने इस मन्त्र के अनुसार जीवन भर वेद प्रचार किया और मनुष्यमात्र को वेदाध्ययन का अधिकार दिलाया वह मन्त्र का यथार्थ द्रष्टा ऋषि दयानन्द ही था।

हमने उपर्युक्त पाच मन्त्र नमूने के रूप में उद्धृत किये हैं। अन्य भी अनेकों मन्त्र हैं जिनका साक्षात्कार दर्शन ऋषि दयानन्द ने ही किया। किसी और लेख में उन पर प्रकाश डाला जावेगा। ओम् शम्।

(पृष्ठ ५ का शेष)

प्राप्ति के लिए हम बढ़ते चले जायेंगे। हमारे मार्ग में कठिनाइयां आयेंगी, यह हमें पता है। पर हम उन पर अवश्य ही विजयी होंगे। आज प्रदर्शन के समय पुलिस की अमानुषीय बर्बर गोली वर्षा की हम निन्दा करतेहैं और स्वागत भी करते हैं कि उसने हमारे आन्दोलन को बल दिया। आज उन बलिदानियों के प्रति हमारे हृदय में जो श्रद्धा के भाव हैं उन्हें इन्हीं शब्दों मे हम प्रस्तुत कर सकते हैं।

श्रद्धा के मैं फूल चढ़ाता,
ओ गोभक्त बलिदानी

आर्य समाज ने सत्याग्रह के रूप में फूल चढ़ाना प्रारम्भ किया है। आर्य जनता अपनी पुष्पांजलि उस सत्याग्रह में भाग लेकर अर्पित करेगी यह हमारा विश्वास है।

'गो वध बन्द' हो यही हमारा नारा है।

प्रो० रामनाथ वेदालंकार डाक्टरेट उपाधि से सम्मानित

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो० रामनाथ वेदालंकार एम० ए० को आगरा विश्वविद्यालय ने इस वर्ष 'वेदों की वर्णनशैलियां' विषयक उनके महत्वपूर्ण मौलिक शोध-प्रबन्ध पर पी० एच० डी० उपाधि से सम्मानित किया है। आपने अपने प्रबन्धमें वैदिक संहिताओं से विविध शैलियों के प्रसंग चयन कर उनकी नूतन व्याख्यायें प्रस्तुत की हैं तथा शैली-विचार की उपयोगिता पर प्रकाश डाला है।

वैदिक धर्म प्रसार

और सूचनायें

उत्सव

—आर्य समाज, पटना सिटी का ६२ वां वार्षिक महोत्सव २३ दिसम्बर से होने जा रहा है।

—आर्य समाज बिसौली (बदायूं) का ७० वां महोत्सव दिनांक १० दिसम्बर से बड़े समारोह के साथ मनाया जावेगा। अनेक आर्य विद्वान् पधारेंगे।

—आर्य समाज असदपुर (बदायूं) का महोत्सव ससमारोह सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर श्री जयलालसिंह आर्य प्रधान, श्री सोहनलाल जी गुप्त उपप्रधान, श्री कुंवर सुराजवीरसिंह आर्य मन्त्री, श्री सहीरामसिंह उपमन्त्री, श्री प० बाबूराम कोषाध्यक्ष, श्री मा० रघुवीरसिंह पुस्तकाध्यक्ष तथा श्री शंकरलाल आर्य बी० ए० निरीक्षक निर्वाचित हुए।

चुनाव

—पूना केन्द्रीय आर्य समाज प्रचार मंडल के निर्वाचन में श्री तेजपाल बजाज प्रधान श्री श्यामलाल आर्य मन्त्री, श्री कृष्णचन्द्र कोषाध्यक्ष तथा श्री जयदेव बन्धु निरीक्षक चुने गए।

—आर्य समाज विश्वाजितपुर (सुल्तानपुर) में श्री रूपनारायण जी प्रधान तथा त्रिभुवननाथ मन्त्री चुने गए।

—आर्य समाज फोर्ट बम्बई के वार्षिक चुनाव में सर्व श्री एम० के० अमीन प्रधान, वासुदेव शेट्टी बी० एम० उद्यागर और एच०एम, शालिवाहन उपप्रधान, एच० श्यामराव प्रधानमन्त्री, श्रीनिवास कपूर सहायक मन्त्री, एच० शीना पुजारी प्रधान कोषाधिकारी, के० चन्द्र बंगेर सहायक कोषाधिकारी, एस० ए० कोटियान पुस्तकाध्यक्ष चुने गए।

—जमशेदपुर—श्री प्रेमसुख जी शास्त्री गायनाचार्य परिवारों में प्रचार का उत्तम कार्य कर रहे हैं। अनेक स्थानों में नवीन आर्य समाजें स्थापित की हैं।

वेद प्रचार दिवस

आर्य समाज हसपुरा का वेद प्रचार दिवस २३-२४-२५ नवम्बर को बड़े धूम-धाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर गोरक्षा सम्मेलन में अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए श्री रामनारायण शर्मा ने कहा—गोहिंसा भारत के लिए महान कलंक है। अगर आन्दोलन के निमित्त गिरफ्तार किए गए लोगों को सरकार अविलम्ब नहीं छोड़ेगी तो फिर पछताना पड़ेगा। बरधिघा निवासी डा० दामोदर राम वर्मा ने कहा—अगर भारतसे गोहिंसा जैसे पाप को नहीं हटाया जायेगा; हम दम नहीं लेंगे।

सम्मेलन में चार प्रस्तावों द्वारा सरकार से प्रबल मांग की कि कानूनन गोहत्या बन्द करे। साधु-महात्माओं को रिहा करे। ७ नवम्बर की घटना की जांच कराए और कृषि की वृद्धि के लिए पशुधन और देशी खाद की वृद्धि करे।

शोक प्रस्ताव

—आर्य समाज राणाप्रताप बाग दिल्ली ने समाज के प्रधान श्री नारायणदास जी के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया। शोक सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक सहानुभूति तथा परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

—आर्य समाज गाजीपुरा जबलपुर के प्रधान श्री रामनाथ जी चोपड़ा के निधन पर आर्य जनों में शोक की घटा छा गई। शवयात्रा में नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति थे। श्री अभयशरण जी आयुर्वेदालंकार, श्रीब्रह्मानन्दजी आयुर्वेदालंकार तथा श्री शिवकरण लाल जी आर्य सि० शास्त्री ने वैदिक विधिपूर्वक दाह संस्कार कराया। शोक सभा में दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

—आर्य समाज गया ने पूर्व मन्त्री श्री लखनलाल जी आर्य के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया।

भारतीय संस्कृति का प्राण गौ

गौ भारतीय संस्कृति का प्राण और कृषि प्रधान देश के जीवन का आधार है। वेद शास्त्रों ने गौ को अघन्या प्रतिपादित किया है और उसका वध करने वालों को प्राणदण्ड का विधान किया है।

महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम गोकरुणानिधि लिखकर धार्मिक, नैतिक व आर्थिक दृष्टिकोणों से उसके महत्व पर प्रकाश डाला और ब्रिटिश पार्लियामेन्ट को मैमोरियल भेजने का भी उपक्रम किया था। स्थान २ गोशाला बनाने का भी आदेश दिया था।

महात्मा गांधी जी ने भी गो वध बन्द करने पर विशेष बल दिया था।

विश्वास था कि देश स्वतन्त्र होने पर गोवध पर पूर्ण प्रतिबंध लगेगा। और कांग्रेसी सरकार गोसंवर्धन और उसके वंश की रक्षा के निमित्त कोई पग उठा न रखेगी किन्तु आज १९ वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी इस दिशा में कोई समुचित पग नहीं उठाया गया।

गोहत्या निरोध का कानून न बनाकर सरकार उसके वध करने का प्रोत्साहन ही देती रही। करोड़ों रुपयों का गोमांस व चर्म का व्यापार भी यह सरकार करती आ रही है। यह नितांत दुःख और लज्जा का विषय है।

आज गोरक्षा के निमित्त भारत की जनता को सत्याग्रह भी करना पड़ेगा इसका तो कभी स्वप्न में भी अनुमान न था।

७ नवम्बर को गोरक्षा अभियान समिति ने जो विशाल व शांत प्रदर्शन का आयोजन किया उससे सरकार का आसन हिल उठा। गोघातियों और गोमांस भक्षिकों को तथा मांस व चर्म का व्यापार करने वालों को प्रदर्शन असफल करने हेतु उभारा तक दिया गया।

७ नवम्बर के दिल्ली के उपद्रव इसके जीते-जागते और बोलते हुये प्रमाण हैं।

उन उपद्रवों के कारण आन्दोलन बंद होने वाला नहीं। ऐसा अनुमान लगाने वाली सरकार भारी भ्रम में है।

गोवर्धन पीठ के श्री शंकराचार्य जी तथा ब्रह्मचारी प्रभुदत्त को जो आमरण अनशन पर बैठे हैं गिरफ्तार करना सरकार की बौखलाहट का स्पष्ट परिणाम है।

२५ नवम्बर की देशव्यापी हड़ताल ने बतला दिया है कि जनता सरकार के रवैय्ये से सर्वथा असन्तुष्ट है।

आंदोलन व्यापक रूप पकड़ता जा रहा है और आर्यसमाज, सनातन धर्म, जैन आदि वर्गों के नेता एक मना इस पुण्य कार्य में जुट गये हैं।

जनसंघ व हिन्दु सभा की भी शक्ति इस ओर लगी हुई है।

सरकार को समय रहते इस दिशा में अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहिये नहीं तो परिस्थिति बिगड़ती चली जायगी और आगामी निर्वाचन के समय कांग्रेसी सरकार को इसका प्रतिफल भुगतना पड़ेगा।

शिवदयालु

पूर्व प्रधानमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, पूर्व प्रधान जिला कांग्रेस मेरठ, वर्तमान अध्यक्ष आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर।

(पृष्ठ ६ का शेष)

(१९४७ से १९६६) लग गये। ऐसी अवस्था में सरकार और जनता दोनों को अपने पथ पर आरूढ़ होना है। प्रश्न टालने से नहीं टल सकता। उपेक्षा नीति घातक होगी।

महाराज तिलक ने कहा था, गोहत्या का प्रश्न है जो स्वतन्त्रता होते ही हल हो जायेगा। इसीलिये वे, स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, पर बल देते रहे। परन्तु हाय! आज वह क्यों कि त्यों अटका है। इसी कारण हमारी बुद्धि भटकी है। हम अन्धेरे में भटकी मार रहे हैं। ज्ञान की ज्योति जलाओ हमारे करणधार!

आर्य समाज सदर बाजार (दिल्ली) का सत्याग्रही जत्था श्री होरीलाल जी गुप्त (बीच में माला पहने हुए) जैन मुनि सुशील कुमार जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

आर्य समाज सदर बाजार (दिल्ली) के जत्थे का एक दृश्य। बायें से दायें, श्रीमती कलावती जी शर्मा, श्री अमर नाथ जी श्री होरी लाल गुप्त (मंत्री, आ० स० सदर बाजार) श्री पं० मुरलीधर जी तथा वानप्रस्थी श्री भगवानदेव जी।

हरयाणा का जत्था गोरक्षा सत्याग्रह करने से पूर्व। स्वामी शांतानन्द जी सरस्वती ब्यावर वाले के नेतृत्व में।

आर्य समाज सत्याग्रहियों का एक जत्था
आर्योपदेशक श्री देवकीनन्दन जी शर्मा के नेतृत्व में
पार्लियामेंट स्ट्रीट पर।

...ा सत्याग्रह में महिलाएं भी पीछे नहीं रहेंगी।
...देव्य महिला सभा का जत्था माता कौशल्या दे...
के नेतृत्व में। गौ हमारी माता है।

चौध... देव जी के नेतृत्व में
रोहतक के ... ही संसद भवन जाते हुए

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि
सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली । फोन ० म गशी ष शुक्ला १ मवम् दयानन्दाब्द १४२ सृष्टि सम्वत् १६७२९४

ंब तक देश में पूर्ण गोवध बन्द नहीं होगा तबतक

आर्यसमाज लगातार जत्थे भेजता रहे

पचास हजार आर्य वीर आदेश की प्रतीक्षा में

सार्वदेशिक सभा का सत्याग्रही शिविर आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली में प्रतिदिन सैकड़ों सत्याग्रही जेल की ओर

सभामंत्री श्री ला० रामगोपाल शालवाले कारावास से मु

और गुड़गांवा, सोहना, पलवल आदि में भारी स्वागत ।

वैद्य ब्रह्मानन्द जी प्रधान आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले का स्वागत करते हुए ।

गुड़गांवा जेल के द्वार पर श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले का स्वागत करते हुए आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली के मन्त्री श्री ओ० पी० जोशी एडवोकेट उपमन्त्री श्री विश्वबन्धु जी आदि ।

यज्ञ बहु कुर्वीत

यज्ञेन लोकस्तिष्ठति

जन–जन में गोरक्षा की प्रबल भावना जाग्रत ।

आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली के मन्त्री श्री ला० गमगोपाल जी मन्त्री सभा को थैली भेंट करते हुए ।

श्रीमती रुकमणि शारदा बीकानेर (राजस्थान) के सत्याग्रही जत्थे में अपने एक वर्ष के बच्चे के साथ नारे लगाती हुई अपने दृढ़ निश्चय के साथ जेल यात्रा के पथ पर ।

तन मन धन न्यौछावर कर जेल जाते हुए

आर्य समाज फालन (मथुरा) श्री शिवचरण लाल नेता डा० के० एल० कुमार कोसीकलां

[illegible] (उ०प्र०) के पुजारी का पद उत्साही जत्था गोपाल कृष्ण शर्मा के नेतृत्व में । ईश्वर के नाते से गोहत्या का कलंक मिटाने को तैयार ।
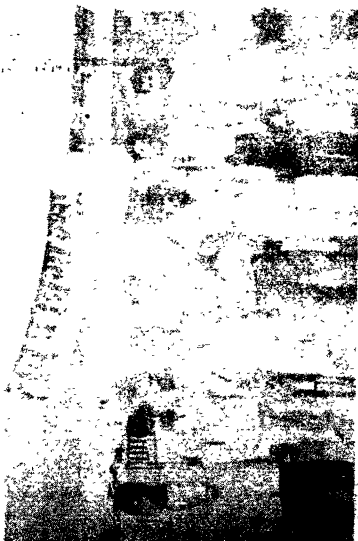
सम्पादकीय—

यह आश्वासन है या कोरी जिद ?

पांच दिसम्बर को, लोकसभा के शरदकालीन अधिवेशन की समाप्ति वाले दिन, भारत के गृहमंत्री श्री यशवन्तराव बलवन्त राव चह्वाण ने यह आश्वासन दिया कि वे संविधान के निर्देशक सिद्धान्त के अनुसार गौरक्षा के लिए पूर्ण प्रयत्न करेंगे और जिन राज्यों में गोवध पर प्रतिबन्ध का कानून नहीं है उनसे वैसा कानून बनाने का आग्रह करेंगे। परन्तु संविधान में संशोधन करके केन्द्र के द्वारा ही कानून बनाने की बात से उन्होंने स्पष्ट इन्कार कर दिया।

गृहमन्त्री के इस आश्वासन को यह समझा गया कि उन्होंने गौ वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध को सिद्धान्तरूप से स्वीकार कर लिया। इसी आधार पर कतिपय कांग्रेसी नेताओं और संसद् सदस्यों ने इस आन्दोलन को वापस लेने और अनशनकारियों से अनशन छोड़ देने की अपील कर डाली। मुनि सुशील कुमार ने अपना अनशन तोड़ भी दिया किन्तु पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य गृहमन्त्री के इस आश्वासन से संतुष्ट नहीं हुए और उनका अनशन अभी तक जारी है।

शंकराचार्य की हालत गिरती जा रही हैं, उनका वजन घटता जा रहा है और उनके प्राण संकट में देखकर सारे देश की जनता में बेचैनी पैदा हो गई है। रामचन्द्र शर्मा वीर का अनशन जारी है ही और उनके अनशन को लगभग चार महीने पूरे होने वाले हैं। श्री रामचन्द्र शर्मा वीर का यह अनशन अनशनों के इतिहास में अभूतपूर्व सिद्ध होगा।

प्रश्न यह है कि गृहमंत्री के आश्वासन के पश्चात् गोरक्षा आन्दोलन वापिस ले लिया जाना चाहिए या नहीं और अनशन कारियों को अपना अनशन तोड़ देना चाहिए या नहीं। शंकराचार्य का कहना है कि जब तक प्रधानमंत्री और गृहमंत्री गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध के सिद्धान्त को मानकर केन्द्रीय कानून बनाने की तत्परता नहीं दिखाते या वैसा लिखित आश्वासन नहीं देते तब तक मैं अपना अनशन नहीं छोड़ूंगा। इस पर सरकार का रुख यह है कि लोकसभा में गृहमन्त्री ने जो कुछ आश्वासन दे दिया है, उसके अलावा वह और कुछ लिखने या कहने को तैयार नहीं है।

हम अनावश्यक रूप से सरकार को उलझन में नहीं डालना चाहते और न ही जनता कोई उत्तेजनात्मक परामर्श देना चाहते हैं। किन्तु यदि यही स्थिति है तो हमारी समझ में नहीं आता कि गोवध निषेध के लिए आन्दोलन शुरू करने से पहले जो स्थिति थी, उसमें और इसमें कौन सा अन्तर है? जहां तक आश्वासनों का प्रश्न है, वे तो पहले भी कम नहीं दिए गए, किन्तु मुख्य बात तो केन्द्रीय कानून बनाने की थी और उसे सरकार ने अभी तक स्वीकार नहीं किया। इसलिए राज्यों से आग्रह करने की बात का क्या अर्थ रह जाता है? क्या इससे पहले राज्यों से आग्रह नहीं किया गया था? और कुछ राज्यों ने इस विषय को केवल अपने अधिकार-क्षेत्र के अन्तर्गत समझ कर केन्द्र के परामर्श को ठुकरा नहीं दिया था? क्या वही स्थिति फिर दोहराई जाएगी?

यहाँ एक बात और विचारणीय है। संविधान में इस विषय को 'स्टेट सब्जैक्ट' (State-subject) कहा गया है। यहां 'स्टेट' शब्द के एक वचन में होने के कारण उसका अभिप्राय केन्द्रीय शासन से ही है। इसलिए इस विषय को राज्यों की मर्जी पर छोड़ देने की बजाय स्वयं केन्द्र को ही कानून बनाना चाहिए। पिछले बीस सालों का अनुभव यही कहता है कि केन्द्रीय सरकार अपनी जिम्मेवारी से बचने के लिए इसे राज्यों पर टालती रही है और राज्य इस टालमटोल के अन्दर छिपी हुई केन्द्र की भावना को पहचान कर गोवध-निषेध का कानून बनाने से कतराते रहे हैं।

इस समय जो हजारों सत्याग्रही जेलों में गए और हिन्दू समाज के नेताओं ने अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी तो उसके पीछे केवल एक ही मांग थी कि स्वयं केन्द्रीय सरकार गोवध निषेध का कानून बनाए जो सारे देश पर समान रूप से लागू हो।

यदि सरकार के विधि वेत्ता इसी बात पर अड़े रहें कि यह विषय राज्यों के ही अधिकार-क्षेत्र का है, तो हमारा निवेदन है कि सरकार की गोवध के प्रतिबन्ध के सिद्धांत को मान लेने की खरी कसौटी यही है कि वह संविधान में संशोधन करके इसे केन्द्र का विषय घोषित करे और फिर कानून बनाए। जब सरकार ने और जरा-जरा सी बातों के लिए संविधान में बारम्बार संशोधन किए हैं तब इतनी महत्वपूर्ण बात के लिए, जिसका सम्बन्ध देश की समग्र जनता के साथ है संविधान में संशोधन करने में संकोच क्यों?

केन्द्रीय खाद्य और कृषि मंत्री श्री सुब्रह्मण्यम ने जिस स्पष्टता के साथ गोवध निषेध के लिए केन्द्रीय कानून बनाने से इन्कार कर दिया है और जिस प्रकार कतिपय कांग्रेसी नेताओं ने इस आंदोलन को वापस लेने की अपीलें शुरू कर दी हैं उससे रह रह कर हमारे मन में यह बात उठती है कि कहीं यह सब आम चुनाव जीतने के लिए कांग्रेसियों का षड्यन्त्र ही तो नहीं है! गृहमंत्री के आश्वासन के नाम पर वे आन्दोलन को समाप्त करवा देना चाहते हैं और जनता पर यह असर डालना चाहते हैं कि सरकार ने गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध के सिद्धांत को स्वीकार तो कर ही लिया है, समय आने पर वह कानून भी बना ही देगी। परन्तु हम जानते हैं कि वह समय कभी नहीं आएगा। आम चुनाव जीतने के बाद सरकार फिर अंगूठा दिखा देगी और पांच साल के लिए पुनः अपना निरंकुश शासन लाद देगी यदि सरकार ईमानदार है तो अभी कानून क्यों नहीं बनाती? उसके मार्ग में कौनसी बाधा है?

सरकार के शब्द जाल में आकर इस समय इस आन्दोलन को समाप्त कर देना बुद्धिमत्ता नहीं होगी। इस समय आन्दोलन अपनी परमावस्था पर है और यदि शासनारूढ़ दल को जनता से वोट प्राप्त करने हैं तो उसे जनता की भावना का आदर करना ही होगा। चुनावों से ऐन पहले का ही समय ऐसा होता है जब सरकार के कान में उचित आवाज पड़ सकती है, अन्यथा चुनाव जीतने के पश्चात् तो वह बहरी हो जाती है।

आन्दोलन को प्राणपण से चलाने का यही अवसर है। प्रत्येक राष्ट्रवासी को यह समझ लेना चाहिए कि इस समय की स्थिति को देखते हुए एक ही नारा है—

अभी या कभी नहीं॥

हम प्रत्येक आर्यसमाजी से और प्रत्येक भारतवासी से अपील करते हैं कि जिस हार्दिकता के साथ वे अभी तक इस आन्दोलन को चलाने के लिए धन-जन की सहायता करते रहे हैं उसमें और तेजी लाएं इस समय धन भी चाहिए, जन भी चाहिए।

गोरक्षा के प्रति हमारी जो धार्मिक भावना है वह इस समय कसौटी पर है। अपनी भावना के प्रति ईमानदारी दिखाकर ही हम सरकार को भी ईमानदारी दिखाने के लिए विवश कर सकते हैं। यदि हमारे प्रयत्न में कहीं कमी रह गई तो सरकार टस से मस नहीं होगी, वह वैसी ही जिद्दी बनी रहेगी जैसी अब है। हमारे धार्मिक विश्वास और सरकार की जिद की टक्कर है।

श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती उत्साहपूर्वक मनावें

श्री रामगोपाल शालवाले की आर्य जगत से अपील

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री लाला रामगोपाल शालवाले ने आर्य जगत् से अपील की है कि २५ दिसम्बर को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की ४० वीं बलिदान जयन्ति बड़े उत्साह के साथ मनाई जावे। उस दिन प्रभात फेरियां, जलूस और सार्वजनिक सभाओं का विशाल पैमाने पर आयोजन किया जाए।

वक्तव्य में कहा गया है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भारत राष्ट्र के अराष्ट्रीय दिमागों का राष्ट्रीयकरण करने के लिए शुद्धि आन्दोलन का शंख नाद बजाया था किन्तु बलिदानी सन्यासी की राष्ट्रीय प्रवृत्ति का दमन करने के लिए राष्ट्र घातक अब्दुल रशीद ने गोलियां दाग कर अपनी कायरता का परिचय दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य धर्म का बन्द दरवाजा खोलकर हिन्दु जाति को पतित होने से बचा लिया और पतितों को वैदिक धर्म की दीक्षा देकर भारत में सच्ची राष्ट्रीयता की नींव रखी। यदि उस समय के नेताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द का अनुकरण किया होता तो पाकिस्तान न बनता।

सामयिक-चर्चा

हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दजी

२३ दिसम्बर को समस्त आर्य-जगत मे श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती मनाई जायगी।

स्वामी जी महाराज आर्य समाज की उन विशिष्ट एव इनीगिनी हस्तियों में से थे जिन पर आर्यसमाज को गर्व है और जिन्होंने आर्यसमाज के क्षेत्र से बाहर आर्यसमाज को गौरवान्वित किया है।

उनको साहस, वीरता, उदारता नेतृत्व की प्रतिभा अपने उच्च कुल से विरासत में प्राप्त हुई थीं। वे शहर कोतवाल के लाड़ले और पथ-भ्रष्ट बेटे थे। बरेली में महर्षि दयानन्द के साक्षात्कार और सदुपदेश से उनकी जीवन-धारा सुधार की ओर अग्रसर हो गई थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को महर्षि दयानन्द की समाज के लिए उत्कृष्ट देन कह दिया जाय तो इसमें अत्युक्ति न होगी। महर्षि के उपकार के प्रति उनके निम्न उद्गार ध्यान देने योग्य हैं।

"ऋषिवर! तुम्हारी दिव्यमूर्ति मेरे हृदय पटपर अबतक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अति-रिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है।"

सती साध्वी पति परायणा पत्नी की अनुपम सहिष्णुता और सेवा तथा त्याग-भावना ने उनसे मदिरापान छुड़ाया था। सत्यार्थप्रकाश के १० वें समुल्लास के अध्ययन ने सदैव के लिए मांस भक्षण को तिलांजलि दिलाई। आर्यसमाज की शिक्षाओं से प्रभावित होकर वे नास्तिक से आस्तिक बने, मूर्ति पूजा को छोड़ा। अपने पुत्र पुत्रियों के अन्तर्जातीय विवाह करके समाज-सुधार एव रूढ़ियों के बन्धनों को तोड़ने की दिशा में क्रियात्मक पग बढ़ाया। शुद्धि के कार्य को अपनाकर हिन्दूजाति के सगठन मे मूल्यवान योग दान किया। एकबार पौराणिक भाइयों के अत्यन्त रुष्ट हो जाने पर सुधार बादी मुन्शीराम (स्वा० श्रद्धानन्द जी) ने अपने पिता के समक्ष उनके व्यंगों का यह उत्तर दिया था.—

"मैं पिता जी के नाम को डुबोऊंगा नहीं वरन रोशन करूंगा।' यह बात अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई और पिताजी को अपने जीवन काल में ही इसकी अनुभूति हो गई थी। जातीय एकता के लिए उन्होंने हिन्दी प्रचार में जो योग दिया वह बड़ा अमूल्य है। वे जिस बात को सत्य मानते थे उस पर अडिग रह कर क्रिया रत रहते थे। नेतृत्व की स्वाभाविक प्रतिभा और सत्य के लिए वीरता आदि के गुणो के कारण वे प्राय आगे की पंक्ति में ही रहे। आर्य समाज के काम को आगे बढ़ाने, और उस पर आई विपत्तियों का निवारण करने में सदैव अग्रसर रहे। उनका समस्त जीवन आर्य समाज के अर्पण रहा और उसके लिए उन्होंने अपने सर्वस्व की ही नहीं अपितु जीवन की भी बलि दे दी।

गुरुकुल कांगड़ी उनका अनूठा स्मारक है जिसकी संस्थापना, और जिसकी उन्नति में उनकी शक्ति, योग्यता और पुरुषार्थ का अधिकांश भाग लगा। इस गुरुकुल की अपनी विशेषता बनी रहने पर ही स्व० स्वामी जी की आत्मा संतुष्ट रह सकेगी इस बात पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। इससे प्रेरणा प्राप्त करने वालों की आशाओं को भी सामने रखना होगा।

वे जीवन पर्यन्त शहीद रहे और अन्त में शहीद ही हुए। यही उनकी शहादत की विशिष्टता है।

श्री ला० दीवानचन्द जी

श्रीयुत ला० दीवानचन्द जी की मृत्यु से देश एक सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री और आर्य समाज अपने एक रत्न से वंचित हो गया है। उनको लम्बा और यशस्वी जीवन प्राप्त हुआ था। मृत्यु के समय उनकी आयु लग-भग ८२ वर्ष की थी।

उनका समस्त जीवन आर्यसमाज के अर्पण रहा। आर्यसमाज की स्वेच्छया त्याग पूर्ण निस्पृह सेवा का जो व्रत लिया था आजीवन उन्होंने उसे सुन्दरता से निबाहा। यदि वे सरकारी सर्विस में होते तो रुपयों मे खेलते। सरकार की ओर से उन्हें कई बार शिक्षा-विभाग में उच्च-पद ग्रहण करने का प्रस्ताव प्राप्त हुआ परन्तु उन्होंने निर्वाह मात्र धन लेकर आर्य समाज की सेवा को प्राथमिकता दी। और त्यागमय जीवन का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

कानपुर के डी० ए० वी० कालेज को आज शिक्षा संस्थानों में जो उच्च स्थान प्राप्त है और जिसमें सहस्रों छात्र शिक्षा प्राप्त करते रहे हैं। उसका सबसे अधिक श्रेय श्री ला० दीवानचन्द जी को प्राप्त है। उसकी एक २ ईंट में, उनकी जीवन साधना प्रति लक्षित हो रही है। उनके शिष्यों पट शिष्यों की संख्या बे शुमार है जिनमें से अनेक सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों में उच्च पदों पर आसीन है और डी०ए०वी कालेज के नाम को उज्ज्वल कर रहे हैं।

स्वर्गीय लालाजी दार्शनिक प्रवृत्ति के महानुभाव थे जो अपनी विचार-धारा में मग्न और आस पास के वातावरण से प्रायः अप्रभावित रहते हैं। दर्शन-शास्त्र विषयक उनके कई ग्रन्थ शिक्षा विभाग के पाठ्य-क्रम में समाविष्ट रहे हैं और अब भी समाविष्ट हैं। उनकी लाजिक विषय पर लिखी हुई पुस्तकें बड़े मार्के की हैं। आर्य-समाज के विषय में भी उन्होंने कई उत्तम ग्रन्थ लिखे थे। वे बड़े सहृदय और सभ्य थे। उनका एक पत्र इन पंक्तियों के लेखक के पास सुरक्षित है। जो १९२४ में लेखक के एक पत्र के उत्तर में प्राप्त हुआ था। हमने डी० ए० वी० कालेज में प्रवेश की और छात्रवृत्ति की प्रार्थना की थी। स्व० ला० जी ने अपने हाथ से लिखे हुए पोस्ट कार्ड में लिखा:—

'No guarantee can be given. I shall however try to do some thing for you' कोई गारण्टी नहीं दी जा सकती फिर भी मैं तुम्हारे लिए कुछ करने का यत्न करूंगा। यह प्रोत्साहन मूल्यवान सिद्ध हुआ।

वस्तुतः उनके निधन से आर्य-समाज एक बड़ी हस्ती से वंचित हो गया है। हम आर्य जगत और सार्वदेशिक परिवार की ओर से उनके परिजनों एवं असंख्य मित्रों के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

चन्दा समाप्त हो गया।
७) शीघ्र भेजिये।

आर्य जन ध्यान दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली में गोरक्षार्थ सत्याग्रह शिविर खोला हुआ है। जहां प्रतिदिन सैकड़ों सत्याग्रही वीरों के भोजन और निवास आदि का प्रबन्ध है। और यहीं से सत्याग्रही वीरों के जत्थे सत्याग्रह के लिए कूंच करते हैं।

अतः गोरक्षा के इस महान् धर्म यज्ञ में आप अपना सात्विक धन मनिआर्डर या चक द्वारा सीधे सभा के निम्न पते पर ही भेजें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

गांधीजी के देश [illegible]

लोक सभा में श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री की सिंह गर्जना

सभापति महोदय,

भारतवर्ष में गाय के प्रति आस्था वैदिक काल से चली आ रही है। वेदों में गाय के सम्बन्ध में ये शब्द लिखे हुए हैं—"माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसा आदित्यानाम्।" हमने प्रारम्भ से ही गाय के सम्बन्ध में वे पवित्र सम्बन्ध रखे हैं, जो पुत्र और माता, भाई और बहिन पिता और पुत्री में होते हैं।

जब से इस देश में गाय की हत्या प्रारम्भ हुई, उसी समय से उसकी हत्या को बन्द कराने के लिए आन्दोलन भी प्रारम्भ हुआ। मैं बहुत लम्बे-चौड़े उदाहरण न देते हुए मुगल-काल का केवल एक ही उदाहरण देना चाहता हूं। बाबर के अपने हाथ से लिखा हुआ वसीयतनामा भोपाल की लायब्रेरी में सुरक्षित है। उसमें बाबर ने अपने पुत्र हुमायूं को कहा कि अगर हिन्दुस्तान में देर तक हुकूमत करनी है, तो ये दो काम कभी न करना—एक तो गाय की हत्या न होने देना और दूसरे, हिन्दू धर्म-मन्दिरों का विनाश न करना। इससे पता चलता है कि मुगल काल में भी मुगल शासक इस बात के लिए कितने सतर्क रहते थे कि गाय का वध न हो और उसकी रक्षा की यथेष्ट व्यवस्था हो।

ब्रिटिश काल में भी समय समय पर इस प्रकार के आन्दोलन चले। अमृतसर का कूका आन्दोलन एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक घटना है, जिसमें सद्गुरु रामसिंह का बलिदान हुआ। १८५७ की क्रान्ति के पीछे जो कारण थे, उनमें से एक यह था कि उस समय बन्दूकों के लिए जो गोली दी गई, उसमें गाय की चरबी इस्तेमाल होती थी, जिससे हिन्दू सिपाहियों की भावनाएं उमड़ीं और उससे प्रभावित होकर १८५७ की क्रान्ति की चिनगारियां जगह जगह फैल गईं।

१८५७ की क्रान्ति के बाद जब राजस्थान के पोलीटिकल एजेन्ट कर्नल ब्रुक्स, राजस्थान से विदा होकर जाने लगे, तो स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भरी सभा में कर्नल ब्रुक्स को कहा कि महारानी विक्टोरिया को जाकर कहना कि अगर गौ हत्या का कलंक इस देश में से जल्दी न मिटा तो इस देश में १८५७ की पुनरावृत्ति फिर भी हो सकती है। उसके बाद स्वामी जी ने इस सम्बन्ध में लगभग दो करोड़ हस्ताक्षर करा कर १८८३ के करीब ब्रिटिश पार्लियामेण्ट को भेजने का प्रयत्न किया, लेकिन उनकी जीवन लीला बीच में ही रह जाने से उनका वह उद्देश्य पूरा न हो सका।

इसी तरह गाय के प्रश्न को लेकर १८९२ में बलिया में एक क्रान्ति हुई, जिसको देखने के लिए ब्रिटिश पार्लियामेंट से एक डेलीगेशन आया। उसके बाद गाय के प्रश्न को लेकर १९१७ में एक बड़ा आन्दोलन हुआ, जब कटारपुर में एक केस हुआ।

मैं इस संसद् के माध्यम से यह सारा इतिहास सरकार को इसलिये बता रहा हूं कि कहीं यह न समझ लिया जाये कि गाय की हत्या को बन्द कराने का आन्दोलन कोई नया है। इस आन्दोलन को सबसे अधिक बल उस समय मिला, जब महात्मा गांधी ने इस आन्दोलन को अपने हाथों में लिया और इस आन्दोलन में मुसलमानों को सम्मिलित करने के लिये उन्होंने खिलाफत आन्दोलन का साथ दिया। मेरे हाथ में यह १९२४ की छपी हुई पुस्तक है, जिसमें लिखा हुआ है कि खिलाफत आन्दोलन के सम्बन्ध में किसी ने जब गांधी जी से पूछा कि विदेशों के आन्दोलन से हमारा क्या मतलब और आप तिलक स्वराज्य फण्ड का हमारा पैसा खिलाफत आन्दोलन में क्यों लगा रहे हैं? तो गांधी जी ने उत्तर दिया कि मैं मुहम्मद अली और शौकत अली की खिलाफत मैया का इस लिए साथ दे रहा हूँ, जिससे वे मेरी गाय मैया को बचायें।

> गाय की गर्दन पर छुरी रखकर आजादी नहीं चाहता। —महात्मा गांधी

जिस समय हमारे देश में विभाजन की मांग बल पकड़ रही थी, तो मुस्लिम लीग से यह पूछा गया कि क्या वह किसी शर्त पर विभाजन की मांग छोड़ सकती है? महादेव देसाई ने अपनी डायरी में यह घटना लिखी है कि मि० जिन्ना की ओर से जो तेरह शर्तें गांधी जी के पास आई, उनमें से एक शर्त यह थी कि आजाद हिन्दुस्तान में मुसलमानों को गौकुशी की खुली छूट रहेगी। महादेव देसाई लिखते हैं कि गांधी जी ने यह कह कर उन शर्तों का पर्चा वापस कर दिया कि मैं गाय की गर्दन पर छुरी रखकर हिन्दुस्तान की आजादी नहीं लेना चाहता हूं।

मैंने यह पृष्ठभूमि इसलिये बताई है, ताकि गाय की रक्षा के आन्दोलन को नया न माना जाय। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के पराधीन भारत में ये शब्द थे कि गाय के प्रश्न को लेकर हिन्दू ज्यादा रोष में न आयें, जिस दिन देश स्वतन्त्र होगा, उसी दिन एक कलम से गौहत्या को रोक दिया जायगा और भारतवर्ष में पहला कानून जो बनेगा, वह गोवध बन्दी का होगा।

बीस वर्ष की निरन्तर इन्तजार के बाद जब इस देश में इस प्रकार की स्थिति नहीं आई। तब राजनैतिक दलों से ऊपर उठे हुए कुछ सन्तों ने, जिनमें जगद्गुरु शंकराचार्य, जैनमुनि सुशील कुमार और प्रभुदत्त ब्रह्मचारी आदि व्यक्ति सम्मिलित हैं इस आन्दोलन को अपने हाथ में लिया।

हमारे देश में गौहत्या से कितना बड़ा ह्रास होता हुआ चला जा रहा है। मैं उसका मामूली सा उदाहरण आपको देना चाहता हूं। १९५० में इस देश में गाय का दूध ७५१७ हजार टन होता था सरकारी आंकड़ों के हिसाब से १९६१ में गाय का दूध हो रहा है ८५३८ टन। यानी इन तीन सालों में गाय का दूध केवल हजार टन ही बढ़ पाया है। इससे ही अनुमान लगा लिया जाये कि इस देश में गोधन का कितना बड़ा ह्रास हो चुका है।

जहां तक संख्या की दृष्टि से गोवंश की हानि का सम्बन्ध है, १९५१ में इस देश में १५५३ लाख गायें थीं, जबकि १९६१ में यह संख्या १७५५ लाख है, यानी इस अवधि में गोवंश की वृद्धि केवल मात्र १२ प्रतिशत हुई है, जबकि दुनिया का रिकार्ड देखने से पता लगता है कि इसमें ८० प्रतिशत की वृद्धि अवश्य होनी चाहिए थी। उसका दुष्परिणाम यह है कि हमारे देश में आज सब मिलाकर गाय, भैंस, बकरी वगैरह का जो दूध होता है उसमें प्रति व्यक्ति खपत सब मिला कर है ४.६ ग्राम लगभग २ छटांक दूध प्रति व्यक्ति के हिस्से में आता है। लेकिन गाय का दूध तो इससे भी कम है। वह ३.२८ औंस आकर पड़ता है। इससे आप अन्दाजा लगाइये कि हमारे देश में गोवंश का कितना ह्रास हुआ है जिसका दुष्परिणाम यह है कि आज खेती का यह हाल है कि ट्रैक्टर लगाने के लिये पैसा किसान के पास नहीं है और इतनी जमीन किसान के पास नहीं है कि वह ट्रैक्टर चलाये। पचास पचास साठ साठ बीघे खेत में कहां वह ट्रैक्टर चलायेगा। बैलों की जोड़ी इतनी महंगी हो गई है कि पन्द्रह-पन्द्रह सौ, दो दो हजार रुपये में बैलों की एक जोड़ी आ रही है। आर्थिक दृष्टि से एक ओर सरकार कह रही है हम अन्न का उत्पादन बढ़ायें और दूसरी ओर इस प्रकार की दुरवस्था होती जा रही है। सरकार को ऐसा लाभ क्या है जिसके आकर्षण में आकर सरकार गौहत्या को चालू रखना चाहती है? सरकार ने अभी एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि ६५-६६ में जो विदेशों को गाय का मांस भेजा गया वह कितना था। सरकार उत्तर देती है कि ६५-६६ में ३२५ लाख रुपये का यानी ३ करोड़ २५ लाख रुपये का गोमांस विदेशों को भेजा गया। अगर इसी हिसाब से हम आंकड़े लगायें तो २० वर्षों में ६५ करोड़ के आंकड़े गोमांस के विदेशों में भेजने के आते हैं।

गांधी जी के देश के लिये आज इससे बड़ी

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ ६ का शेष)

लज्जा और शर्म की बात दूसरी नहीं हो सकती। इसी तरह से खालों के चक्कर में आ करके हमारे देश से लगभग २४० करोड़ रुपये की खाल गायों की विदेशों में भेजी गई। इस विदेशी मुद्रा के चक्कर में आ करके सरकार किस तरह से हमारे गोवंश का ह्रास जान बूझ कर करती जा रही है उसके मैंने कुछ प्रमुख आंकड़े दिये हैं।

एक और बात मैं कहना चाहता हूं। प्रधान मन्त्री ने अभी राज्य सभा में एक भाषण देते हुए कहा कि समझ में नहीं आता कि गौहत्या बन्द करने का आन्दोलन चुनावों से पहले क्यों उठाया जाता है? मैं पूछना चाहता हूँ कि चुनावों से पहले अगर केवल विरोधी दल के लोगों ने यह आन्दोलन उठाया होता तो कहा जा सकता था कि चुनावों को प्रभावित करने के लिये उठाया लेकिन कोई देखे चलकर जगद् गुरु शंकराचार्य को कौन सा चुनाव लड़ना है, जैन-मुनि सुशीलकुमार जी को कौन सा चुनाव लड़ना है। आचार्य विनोबा भावे को कौन सा चुनाव लड़ना है? जयप्रकाश नारायण को कौन सा चुनाव लड़ना है। जो यह कह कर इस आन्दोलन की पवित्रता को नष्ट किया जाता है कि चुनावों से पहले इस आन्दोलन को छेड़ा गया है। इसके अतिरिक्त अगर इसके दूसरे पक्ष को देखा जाय तो क्या जनता आप लोगों से यह पूछ सकती है। हमने सुना है, पुराणों में एक नदी की चर्चा आती है। वैतरणी नदी पार करने के लिये गाय की पूंछ पकड़ कर उसे पार करते हैं, आज तक मैंने देखा नहीं, वैतरणी नदी कहां है। लेकिन सरकार या सत्तारूढ़ दल हर चुनाव को गाय के बच्चों की, बैलों की पूंछ पकड़ करके चुनाव की वैतरणी नदी पार करता है। तो यह चुनाव में अनुचित लाभ उठा रहे हैं या वह लोग अनुचित लाभ उठा रहे हैं जो चुनाव से कोसों दूर रहना चाहते हैं?

एक बात बड़ी विचित्र कही जाती है कि अगर हम गोवध को बन्द कर दें तो उसका दुष्परिणाम यह होगा कि सूखी गायों और बूढ़े बैलों का भार देश पर आकर पड़ेगा। मेरे पास विस्तृत समय नहीं है कि जिससे मैं विस्तार से समझाऊं लेकिन मेरा अपना एक सुझाव है। गांधी जी के एक शिष्य थे बंगाल के। उनका नाम था सतीशचन्द्र दास। उन्होंने बड़े अध्ययन के बाद एक पुस्तक लिखी थी—काऊ। उसका अनुवाद हिन्दी में भी गाय नाम से छपा है। उसमें उन्होंने लिखा है कि सूखी गायों और बूढ़े बैलों का भार सामूहिक रूप से पालन किया जाय तो वह देश पर कभी भार नहीं पड़ेंगे। बल्कि देश के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। ऐसा उन्होंने सिद्ध किया है। लेकिन सरकार ने इस प्रकार की आवश्यकता को कभी अनुभव ही नहीं किया। दूसरा मेरा कहना यह है कि आज जो हिन्दू भावना में भर कर यह मांग करते हैं कि इस देश में गौहत्या बन्द होनी चाहिये उनसे आप यह कह सकते हैं कि आपके मन्दिरों में खर्च के अतिरिक्त जितनी आय है उस आय को आप इस गोवंश के पालन के निमित्त दीजिये ताकि सरकार पर इनका बोझ न पड़े और उस आय से हम इस देश के अन्दर सूखी गायों और बूढ़े बैलों का पालन कर सकें। फिर उनकी हार्दिक भावना भी देखिये कि केवल गौहत्या बन्द करने का आन्दोलन ही वह करना चाहते हैं या उनकी हार्दिक इच्छा भी सक्रिय रूप में इसके साथ है।

अन्तिम बात एक विशेषरूपसे कहना चाहता हूं और वह यह कि प्रधान मन्त्री ने मेरे पत्र के उत्तर में लिखा है कि राज्य सरकारों की जिम्मेदारी यह है। संविधान की धारा ४८ में जहां यह लिखा है कि राज्य सरकारें गोवध को बन्द करेंगी वहां राज्य की व्याख्या जो है वह संविधान की धारा १२ में है। संविधान की धारा १२ में जो राज्य की व्याख्या है उसमें स्पष्ट लिखा है कि राज्य से अभिप्राय विधान मण्डल प्रान्तों की सरकार, पार्लियामेन्ट और केन्द्र की सरकार यह सारे के सारे राज्य शब्द के अन्दर आ जाते हैं। तो यह कह कर सरकार अपनी जिम्मेदारी से क्यों भागना चाहती है? लेकिन इसके बाद भी अगर संविधान में संशोधन करने की आवश्यकता हो तो मैं कहता हूँ देश के इतने बड़े जनमत का आदर करते हुए सरकार यह निर्णय ले सकती है। संविधान में जहां उन्होंने २१-२२ बार संशोधन किया है वहां एक संशोधन यह भी अगर करते हैं तो उसमें क्या कठिनाई है? अगर गोआ के अन्दर जनभावना जानने के लिए एक विधेयक लाकर के गोआ में जनमत कराया जा सकता है तो देश में कितनी जनता आज इस प्रकार की है कि जो गोवध बन्द करने के पक्ष में है इसको जानने के लिए देश में जनता का मत क्यों नहीं जाना जा सकता? गृहमन्त्री ने ४ नवम्बर को कहा हमने राज्य सरकारों को पत्र लिखा है। लेकिन शिंदे उप खाद्यमन्त्री ने २६ नवम्बर को जवाब दिया है कि ६ में से ३ राज्यों ने अभी तक उत्तर दिये हैं। यानी राज्य सरकारों को पत्र लिखा गया ४ नवम्बर से पहले और २६ नवम्बर को इन्हीं की सरकार का एक जिम्मेदार मन्त्री कहता है कि ६ में से ३ राज्यों ने उत्तर दिया है। इससे मालूम पड़ता है कि कितनी राज्य सरकारों की लापरवाही इसमें चल रही है? राज्य सरकारें इसमें तत्परता से काम नहीं ले रही हैं तो देश की भावना का आदर करते हुए क्यों नहीं केन्द्र इस प्रकार का कानून बनाता है जिससे इस प्रकार की स्थिति बने और गो-वंश की हत्या बन्द हो?

दूसरी सबसे बड़ी बात यह है कि संघ शासित क्षेत्रों में अब तक क्या किया? इनमें जब केन्द्रीय सरकार स्वयं कानून लागू कर सकती है तो अब तक क्यों नहीं लागू किया? इससे केन्द्रीय सरकार के मन का चोर मालूम पड़ता है।

एक बात और यहां विशेष रूप से कहना चाहता हूं और वह यह कि मेरे मित्र श्री हुकमचन्द कछवाहा ने कहा कि ७ नवम्बर की जो घटना घटी है उसकी न्यायिक जांच कराने से जो सरकार हट रही है उससे लोगों के मन में तरह तरह के भ्रम पैदा होते जा रहे हैं कि सरकार जान बूझकर इससे बच रही है क्योंकि उसमें सरकार के कुछ जिम्मेदार व्यक्ति फसेंगे, सरकार के कुछ विभाग फसेंगे, सरकार के कुछ जिम्मेदार अधिकारी फसेंगे। इसी से न्यायिक जांच कराने में सरकार डर रही है। मैं एक बात आपके माध्यम से सरकार से अवश्य कहना चाहूंगा कि ७ नवम्बर के प्रदर्शन में, दिल्ली के अन्दर पार्लियामेन्ट हाउस के सामने इतने प्रदर्शन हुए, लेकिन आज तक इतनी भारी संख्या में गोली चलना, इतने लोगों का मारा जाना, इस तरह का खून बहना, यह अपने ढंग की पहली घटना थी।

पंजाब में ला० लाजपतराय की कमर में सात लाठियां लगीं थीं और ला० लाजपत राय ने मरते समय कहा था कि मेरी कमर पर पड़ी हुई एक एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में एक एक कील बन कर गड़ेगी। वही बात मैं दोहराना चाहता हूं। ७ नवम्बर को पार्लियामेण्ट हाउस के सामने जो साधुओं का खून बहा है वह इस गवर्नमेण्ट के अत्याचार को ही नहीं, इस गवनमेण्ट को भी समाप्त करके छोड़ेगा जो गोहत्या के प्रश्न पर इतनी जिद पकड़े हुए हैं और देश की भावना का आदर करने के लिये तैयार नहीं है।

इन शब्दों के साथ में इसको उपस्थित करता हूं और यह कहना चाहता हूं कि गृहमन्त्री और भारत सरकार इस प्रश्न को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाये और देश में गाय के प्रश्न पर जो एक भयंकर तनाव की स्थिति बनने जा रही है वह न बनने दें। जगद्-गुरु शंकराचार्य पुरी वालों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है। ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी को आपने गिरफ्तार किया। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने उनको इलाहाबाद आने के लिये आर्डर देकर सरकार के मुंह पर करारी चपत दी है। मगर सरकार की समझ में नहीं आया। १०७ के अन्दर गायके प्रतिसहानुभूति रखनेवाले जिन लोगों को दिल्ली के अन्दर गिरफ्तार किया था दिल्ली हाई कोर्ट ने उनको भी छोड़कर सरकार के मुंह पर करारी चपत दी। लेकिन इसके बाद भी केन्द्रीय सरकार सही रास्ते पर आने के लिए तैयार नहीं है। मैं चाहता हूं कि गाय जैसे पवित्र प्रश्न को हठ का और प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाया जाय बल्कि इस पर शान्ति और गम्भीरता के साथ विचार किया जाय और जल्दी ही इस प्रश्न का समाधान कर लिया जाय। जिससे साधु महात्मा जो इस अनशन और उपवास के मार्ग पर चलने के लिए विवश हो गये हैं, उनको इस प्रकार की आवश्यकता न पड़े।

(पृष्ठ ७ का शेष)

तक समझने का यत्न नहीं किया है। यही कारण है कि यह समस्या जो संविधान बनने के एक वर्ष के अन्दर ही सुलझ जानी चाहिए थी अभी तक १८ वर्षों में भी नहीं सुलझ पाई किन्तु अधिक गम्भीर बनती जा रही है।

कई वर्षों से देश में अन्न का अभाव है और उसे प्राप्त करने के लिए वह भारत जो कभी योरूप तथा अन्य देशों को अन्न देता था, कुछ वर्षों से संसार के सामने भिखारी बन गया है। यदि महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत 'गोकरुणानिधि' पुस्तक जिसे मैं आपकी सेवा में अपने गत पत्र के साथ भेज चुका हूं, उसके आधार पर गोवंश का सरक्षण तथा संवर्धन किया जाता तो भारत में खाद्य पदार्थों का अभाव हो ही नहीं सकता था और प्राचीन कहावत के अनुसार इस देश में आज वास्तव में घी और दूध की नदियां बहती होती।

सृष्टि के प्रारम्भिक ज्ञान 'वेद' में गौ के संरक्षण के विषय में कई स्थानों पर उल्लेख है। इस पत्र में विषय से सम्बन्धित वेद का एक ही मन्त्र आपकी तथा आपकी सरकार की जानकारी के लिए उद्धृत करता हूं। अथर्व वेद १।१।६४ में स्पष्ट है:—

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथानो सौ अवीरहा॥

अर्थात् यदि तू गाय, घोड़े अथवा मनुष्य का वध करेगा तो तुझे सीसे की गोली से बींध दिया जावेगा। इससे स्पष्ट है कि वेद की दृष्टि में गौ की उपयोगिता किसी प्रकार भी मनुष्य से कम नहीं है।

वेद के इन्हीं प्रकार के आदेशों के आधार पर महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गत शताब्दी में गोरक्षा आन्दोलन का सर्वप्रथम सूत्रपात किया था। आर्यसमाज इस आन्दोलन को इस समय भी चलाने की प्रेरणा पवित्र वेद तथा उसके परमोद्धारक महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती से ले रहा है।

आर्य समाज सदा की भांति इस बात का भरसक प्रयत्न कर रहा है तथा भविष्य में भी करेगा कि वह अपने द्वारा चलाये किसी आन्दोलन को पूर्ण रूपेण शान्त, अहिंसात्मक तथा आत्म बलिदान के आधार पर चलाए। परन्तु हमें भय है कि जिन साधु-महात्माओं ने इस विषय में अनशन आरम्भ किया हुआ है अथवा भविष्य में करेंगे उससे जनता में किसी प्रकार की हिंसात्मक प्रवृत्ति उत्पन्न न हो जावे कि जिसके दुष्परिणामों से देश में अधिक अनिष्ट हो जावे। अतः भारत सरकार का कर्त्तव्य है कि वह समय रहते ही सजग होकर अपने कर्त्तव्य का पालन करे और अधिसंख्यक भारतीय नागरिकों के धन्यवाद का पात्र बने।

आपको इस विषय में महात्मा गांधी के विचार ज्ञात होंगे ही। महात्मा जी ने गोवध के विरुद्ध एक बार यंग इण्डिया में लिखा था।

मेरे निकट गोवध और मनुष्य वध एक ही वस्तु है।

मैं मुसलमानों के जहां तक हो सके दुःख सहने को तैयार हुआ हूं उसका कारण स्वराज्य मिलने की छोटी बात तो थी ही, साथ ही गौ को बचाने की बड़ी बात भी उसमें थी।

हिन्दुस्तान में हिन्दुओं के साथ रह कर गोवध करना हिन्दुओं की हत्या करने के बराबर है।

जब तक गौ की हत्या होती है, तब तक मेरी हत्या होती है।

जो गौ को बचाने को तैयार नहीं वह हिन्दू नहीं।

मेरे विचार के अनुसार गोरक्षा का प्रश्न स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नहीं है। कई बातों में मैं उसे स्वराज्य के प्रश्न से भी बड़ा मानता हूं।"

महात्मा गांधी को भारत सरकार राष्ट्रपिता मानती है। उनके उपर्युक्त विचारों को सामने रखते हुए तो उनकी मुख्य अनुयायी कांग्रेस की केन्द्रीय सरकार को देश के स्वतन्त्र होते ही सर्वप्रथम समस्त देश में गोवध निषेधात्मक विधेयक बना देना था। परन्तु उसने अभी तक ऐसा नहीं किया। आप यदि इस कलंक को भारत के भाल स्थल से सदा के लिए मिटा दें तो बहुत बड़ा श्रेय होगा।

अन्त में मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप माननीय राष्ट्रपति महोदय को प्रेरणा करें कि वह अविलम्ब गोवध निषेध सम्बन्धी अध्यादेश जारी करने की कृपा करें और यदि यह आपकी दृष्टि में राज्यों का विषय है तो इसे केन्द्रीय विषय बनाया जावे और एतदर्थ यदि विधान में किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता है तो संसद् के भावी अधिवेशन में संविधान में आवश्यक संशोधन कर उसे विधेयक के रूप में पास कर दिया जाये।

यदि आप इस विषयक हमारी बातें किसी निश्चित तिथि और समय पर सुनने का अवसर प्रदान करेंगी तो सुविधानुसार सूचना मिलने पर आपकी सेवा में हम उपस्थित भी हो जावेंगे।

आशा है आप उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए इस विषय में अविलम्ब आवश्यक पग उठायेंगी। भवदीय

शिवचन्द्र, उपमन्त्री

प्रधान मन्त्री नेहरू द्वारा—

प्रधान मन्त्री इन्दिरा को सीख

जनमत के आगे झुको

इन्दिरा जी के नाम एक पत्र में नेहरू जी ने लोकमत के सम्बन्ध में लिखा था कि—

"......मैंने तुम्हें कई मौकों पर यह बताया है कि राजधर्म के बारे में प्राचीन भारतीय धारणा क्या थी? प्राचीन काल से अशोक के समय तक और अर्थशास्त्र के समय से शुक्राचार्य के 'नीतिसार' तक में यह बात बार-बार कही गई है कि—

राजा को लोकमत के सामने सिर झुकाना चाहिये। लोकमत ही सबसे बड़ा मालिक है।

(विश्व इतिहास की झलक पृ० २८५)

क्या भारत की सरकार गोरक्षा करके लोकमत का आदर नहीं करेगी।

आर्य महानुभावों की सेवा में—

सार्वदेशिक के मूल्य में वृद्धि नहीं

किन्तु

ग्राहक संख्या में वृद्धि चाहते हैं!

कृपया इस पर भी ध्यान दें

१—दीपावली को साप्ताहिक का पूरा वर्ष हो गया।

२—इस वर्ष में पांच विशेषांक आपकी भेंट किए हैं—बलिदान अंक, बोधांक, वेद कथा अंक, आर्य विजय अंक और दीपावली पर ऋषि अंक।

३—अगले वर्ष में कई महत्वपूर्ण अंक छपेंगे। जिनमें "आर्य समाज परिचयांक" और एकादश-उपनिषद् अंक तो बड़े ही उच्चकोटि के होंगे। जो ७) देकर ग्राहक बनेंगे वे इन्हें बिना मूल्य प्राप्त कर सकेंगे।

४—जो महानुभाव प्रति सप्ताह १५ पैसे देकर सार्वदेशिक लेते हैं उन्हें विशेषांकों का विशेष धन देना ही है। अतः ७) भेजकर ग्राहकों में नाम अंकित करा लें।

५—अब तक जिन महानुभावों ने सार्वदेशिक का, अथवा विशेषांकों का धन नहीं भेजा—वह तुरन्त भेजें।

—प्रबन्धक

गोरक्षक आर्य वीर सेनानी सत्याग्रह करते हुए

आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली मे सत्याग्रह करने के लिए आर्य वीरों की टोलियां

महात्मा हीरालाल वानप्रस्थी के नेतृत्व में सोनीपत (रोहतक) के जत्थे मे चार महिलायें भी हैं।

आर्यसमाज फ़लावदा (मेरठ) का सत्याग्रही जत्था श्री राजवत जी के नेतृत्व में दीवानहाल से

वेद प्रचार मण्डल सोनीपत का जत्था श्री हीरालाल वानप्रस्थी के नेतृत्व में दीवानहाल

आर्य हिन्दी विद्यालय चर्खी दादरी (महेन्द्रगढ़) १७ सत्याग्रहियों का जत्था, श्री स्वामी शान्तानन्द जी और आचार्य शिवकरण जी शास्त्री के नेतृत्व में

भारत के राष्ट्र पुरुष—

अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

जो महर्षि के दर्शनों पवित्र, वेद की बेदी पर जिनका तन, मन, धन न्योछावर। भारत मां की पुकार पर अमृतसर कांग्रेस का नेतृत्व, दिल्ली की जामा मस्जिद में उपदेष्टा, गोरों की संगीनों के सामने सीना तान कर चलने वाले महावीर, हरिजनों और बिछुड़ों को गले लगाने वाले और अन्त में भारतमाता की बलिवेदी पर अपने खून से खूंख्वार को तृप्त करने वाले अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जिन्हें आज के कृतघ्न कांग्रेसी नेता भूल गये। २३ दिसम्बर उनका बलिदान दिवस है धूमधाम से मनाईं।

सभा-मन्त्री श्री रामगोपाल शालवाले

गुड़गांवां जेल से रिहा

जेल के द्वार पर हजारों जनसमूह द्वारा विराट् स्वागत

आर्यनेता ला० रामगोपाल शालवाले ने, जो १० दिसम्बर को गुड़गांवां जेल से अपने १७० साथियों सहित रिहा हुए आज यहां एक सम्वाददाता सम्मेलन में कहा कि अब गोहत्या विरोधी आन्दोलन और तेज कर दिया जायेगा।

आपने कहा कि हमारे पास अब इतनी शक्ति है कि हम कई मास तक यह आन्दोलन जारी रख सकते है। कोई बड़े से बड़ा आर्य समाजी भी पीछे नहीं रहेगा, बल्कि आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लेगा।

एक प्रश्न के उत्तर में आपने कहा कि आन्दोलन तब तक जारी रहेगा, जब तक सरकार द्वारा यह विश्वास नहीं दिला दिया जाता कि भारत में गोहत्या कानूनी तौर पर बन्द कर दी जायगी।

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में आपने कहा कि जैन मुनि सुशील कुमार द्वारा अनशन तोड़ देने से इस आन्दोलन में न तो किसी प्रकार की कमजोरी आई है और न इसकी तीव्रता में ही कोई अन्तर पड़ा है, बल्कि और भी तीव्रतर हो गया है।

आपने कहा कि जो गोभक्त जेलों से रिहा होकर आये हैं, वे अपने घरों में आकर आराम से नहीं बैठ जायेंगे, बल्कि अपने क्षेत्रों में जाकर प्रचार करेंगे और फिर बड़े जत्थे लेकर आयेंगे। आपने बताया कि सत्याग्रह में भाग लेने के लिये महिलायें बहुत बड़ी संख्या में तैयार हैं। शीघ्र ही इनके जत्थे भेजने शुरू कर दिये जायेंगे।

आपने बताया कि उत्तर प्रदेश, बिहार, बम्बई, राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश व आन्ध्र प्रदेश से तो जत्थे आ ही रहे हैं, परन्तु शीघ्र ही दूर के राज्यों से भी जत्थे आने शुरु हो जायेंगे। वे केवल गोरक्षा महाभियान समिति के आदेश की ही प्रतीक्षा में है इन्हें अब तक अनुमति इसलिए नहीं दी गई थी क्योंकि दूर से आने में इनका बहुत अधिक रुपया व्यय होता।

शालवाले का स्वागत

ला० रामगोपाल शालवाले का आज दीवान हाल में आयोजित एक सभा में नागरिकों द्वारा स्वागत किया गया। सभा की अध्यक्षता श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी ने की।

सभा में जगद्गुरु शंकराचार्य, श्री स्वामी कृष्णबोध आश्रम, स्वामी करपात्री जी, श्री स्वामी गुरुचरनदास, स्वामी गणेशानन्द, श्री बसन्तराव ओक, और श्री बी० पी० जोशी आदि नेताओं ने भाषण दिये और इस बात को दोहराया कि जब तक गोहत्या पर पूर्णतः प्रतिबन्ध नहीं लगेगा, गोरक्षा आन्दोलन जारी रखा जायगा।

भारत साधु समाज के अध्यक्ष श्री स्वामी गुरुचरणदासजी ने भावपूर्ण शब्दों में कहा कि मैंने दो लाला देखे हैं—एक लाला लाजपत राय और दूसरे ला० रामगोपाल।

"भारी करतल ध्वनि और गो-माता अमर रहे" के नारों से आकाश गूंज उठा।

श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले का जेल से मुक्त होने पर गुड़गांव में भव्य स्वागत।

देश, धर्म की रक्षार्थ तन मन धन बलिदान करने मे अग्रस

आर्य नर नारियों के सत्याग्रही जत्थे

वेदप्रचार मण्डल पाकसमा (रोहतक) का जत्था श्री पं० रामचन्द्र जी और देवप्रकाश आर्य के नेतृत्व में दीवान हाल से सदर बाजार, चांदनी चौक, फतेहपुरी पर गिरफ्तार।

गो हमारी माता है। गो का वध हमारा वध है। भारत मां के मस्तक से गोहत्या का कलंक धोने के लिए राजस्थान की महिलाओं का एक जत्था श्रीमती दुर्गादेवी के नेतृत्व में। जत्थे ने ८ दिसम्बर को सत्याग्रह किया।

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) पो० कुमही २८ सत्याग्रहियों का जत्था। जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारी बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं कुछ खड़े हुए हैं।
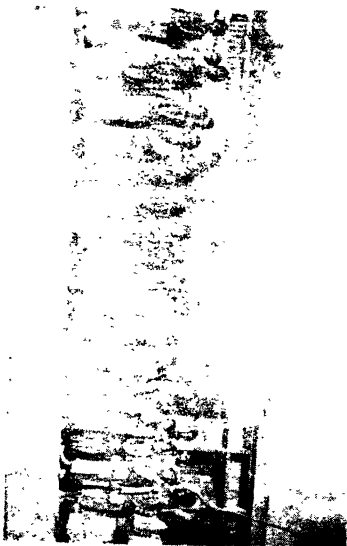
गुरुकुल मटिण्डू (रोहतक) का सत्याग्रही जत्था श्री केशवानन्द शास्त्री के नेतृत्व में जिसमें ८ साल से १५ वर्ष के विद्यार्थी जेल जाने को तैयार खड़े हैं।

आर्य समाज के वीर सेनानी गोरक्षा आन्दोलन में।
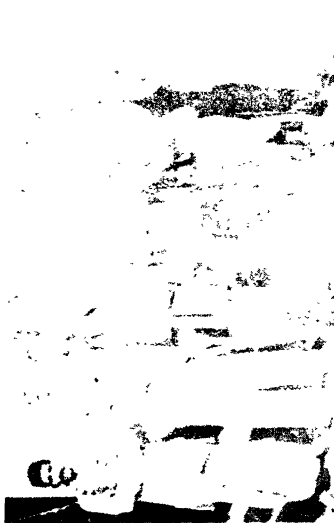
धर्म है तो जीवन है। गो है तो भारत है। गोमाता की हत्या हमारी हत्या है।
इस हत्या को बन्द करो। शाहदरा (दिल्ली) के सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व कर रहे हैं श्री परमेश्वरी दास जी भूतपूर्व कौंसलर नगर निगम दिल्ली।

सोनीपत (रोहतक) का जत्था गौरीशंकर मन्दिर, चांदनी चौक दिल्ली में गिरफ्तार।

गोवध बंद कराकर ही चैन से बैठेंगे।
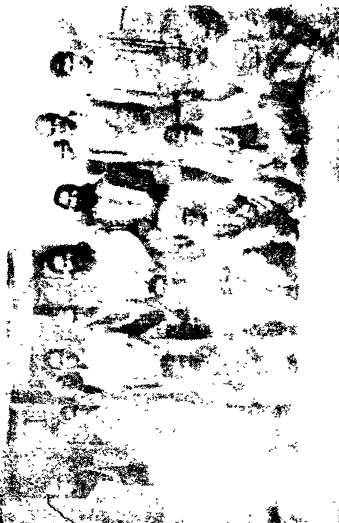
उज्जैन (म०प्र०) के गो-रक्षियों का यह जत्था श्री शंकरलाल शर्मा के नेतृत्व में गोहत्या बन्द कराने के लिए पार्लियामेंट स्ट्रीट पर सफल प्रदर्शन किया।

आर्यसमाज, कलंजरी मेरठ, यमक्द अम्बाला, बादली रोहतक के सम्मिलित जत्थे।

सार्वदेशिक प्रेस, [illegible] दिल्ली में मुद्रित [illegible] प्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।